हयातुस्सहाबा

(भाग-3)

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कांधलवी (रह०)

हयातुस्सहाबा

(भाग-3)

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कांधलवी (रह०)

हयातुस्सहाबा (भाग–3)

Hayat-us-Sahabah (Vol. 3)

लेखक : हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कांधलवी (रह०)

अनुवादक : अहमद नदीम नदवी

प्रकाशनः 2013

ISBN 81-7101-213-2

TP-256-13

ISBN: 81-7101-213-2 (Vol. 3)
ISBN: 81-7101-214-0 (Set)

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: 2695 6832 Fax: +91-11-6617 3545
Email: **sales@idaraimpex.com**
Visit us at: **www.idarastore.com**

Designed & Printed in India

Typesetted at: **DTP Division**
IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT
P.O. Box 9795, Jamia Nagar, New Delhi-110025 (India)

क्या ? कहां ?

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

विषय-सूची

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम किस तरह ग़ैब पर ईमान लाया करते थे और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बताई हुई ख़बरों के मुक़ाबले में मिटने वाली लज़्ज़तों, इंसान की अपनी आंखों देखी हुई चीज़ों, वक़्ती तौर पर महसूस की गई बातों और माद्दी (भौतिक) तजुर्बों को छोड़ देते थे और ऐसा लगता था जैसे उन्होंने ग़ैबी मामलों को अपनी आंखों से देख लिया था और अपनी आंखों देखी चीज़ों को वे झुठला दिया करते थे **26-158**

- ईमान की अज़्मत (महानता) 26
- ईमान की मज्लिसें 36
- ईमान ताज़ा करना 38
- अल्लाह और रसूल की बात को सच्चा मानना और उसके मुक़ाबले में इंसानी तजुर्बों और उसकी अपनी आंखों देखी बातों को ग़लत समझना 38
- ईमान की हक़ीक़त और उसका कमाल 55
- अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात पर ईमान लाना 59
- फ़रिश्तों पर ईमान लाना 70
- तक़्दीर पर ईमान लाना 73
- क़ियामत की निशानियों पर ईमान लाना 79

क्या ? कहां ?

- क़ब्र और आलमे बरज़ख़ में जो कुछ होता है, उस पर ईमान लाना 81
- आख़िरत पर ईमान लाना 87
- क़ियामत के दिन जो कुछ होगा, उस पर ईमान लाना 90
- शफ़ाअत पर ईमान लाना 96
- जन्नत और जहन्नम पर ईमान लाना 102
- अल्लाह के वायदों पर यक़ीन 119
- अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिन चीज़ों की ख़बर दी है, उन पर यक़ीन करना 125
- आमाल का बदला मिलने का यक़ीन 140
- सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु का ईमान पक्का था 145

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम किस तरह मस्जिदों में नमाज़ों के लिए जमा होते थे, ख़ुद उन्हें नमाजों का कितना शौक़ था और दूसरों को नमाज़ की कितनी तर्ग़ीब देते थे और नमाज़ों के वक़्तों के बदलने से यह समझते थे कि हमारा असल काम एक ख़ुदावन्दी हुक्म से दूसरे हुक्म में और एक भले अमल से दूसरे भले अमल में लगना है और उन्हें इन कामों का हुक्म दिया जाता था कि वे ईमान और ईमानी सिफ़तों को पक्का करें, इल्म और इल्म वाले कामों को फैलाएं और अल्लाह के ज़िक्र को ज़िन्दा करें और दुआ करें और उसके क़ुबूल होने की शर्तों को क़ायम करें, चुनांचे वे किस तरह से इन कामों की वजह से

क्या ? कहां ?

अपने दुनिया के मश्ग़लों को छोड़ दिया करते थे, ऐसा लगता था कि उन्हें ज़ाहिरी शक्लों की ओर कोई तवज्जोह नहीं है, बल्कि ये तो उस ज़ात से सीधे-सीधे फ़ायदा हासिल करते हैं जो तमाम चीज़ों और शक्लों को पैदा करने वाली और उनमें तसर्रुफ़ करने वाली है। 159-270

- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नमाज़ पर उभारना और ताकीद करना 160
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का नमाज़ की तर्ग़ीब देना 166
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नमाज़ का शौक़ और नमाज़ का बहुत ज़्यादा एहतिमाम 169
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का नमाज़ का शौक़ और उसका बहुत ज़्यादा एहतिमाम करना 178
- मस्जिदें बनाना 184
- मस्जिदों को पाक-साफ़ रखना 191
- मस्जिदों की तरफ़ पैदल चलना 192
- मस्जिदें क्यों बनाई गईं और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम उनमें कौन-से आमाल करते थे 195
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किन बातों को मस्जिद में अच्छा नहीं समझते थे 205
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ि॰ का अज़ान का एहतिमाम करना 210
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का नमाज़ का इन्तिज़ार करना 216

क्या ? कहां ?

- जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने की ताकीद और उसका एहतिमाम 220
- सफ़ों को सीधा करना और उनकी तर्तीब बनाना 225
- इमाम का इक़ामत के बाद मुसलमानों की ज़रूरतों में मश्ग़ूल होना 230
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के ज़माने में इमामत और इक़्तिदा 231
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ि० का नमाज़ में रोना 243
- नमाज़ में ख़ुशूअ-ख़ुज़ूअ 245
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुअक्कदा सुन्नतों का एहतिमाम फ़रमाना 247
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ि० का मुअक्कदा सुन्नतों का एहतिमाम करना 250
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ि० का तहज्जुद की नमाज़ का एहतिमाम करना 253
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ि० का सूरज निकलने से लेकर ज़वाल तक के वक़्त के दर्मियान नफ़्लों का एहतिमाम करना 260
- ज़ुहर और अस्र के दर्मियान नफ़्लों का एहतिमाम 262
- मग़रिब और इशा के दर्मियान नफ़्लों का एहतिमाम 262
- घर में दाख़िल होते वक़्त और घर से निकलते वक़्त नफ़्लों का एहतिमाम 264
- तरावीह की नमाज़ 264
- सलातुत्तौबा 267
- सलातुल हाजत 268

क्या ? कहां ?

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम किस तरह इल्मे इलाही हासिल करने का शौक़ रखते थे और दूसरों को उसकी तर्ग़ीब देते थे और इल्मे इलाही में जो ईमान व अमल है, उनको किस तरह ख़ुद सीखते और दूसरों को सिखाते थे और सफ़र व हज़र, ख़ुशहाली और बदहाली हर हाल में किस तरह इल्मे इलाही के सीखने, सिखाने में लगते थे और किस तरह मदीना मुनव्वरा अला साहिबिहा अल्फ़ु अलिफ़ सलातनि व तहीयतिन में आने वाले मेहमानों को सिखाने का एहतिमाम करते थे और किस तरह इल्म, जिहाद और कमाई इन तीनों कामों को जमा करते थे और अलग-अलग शहरों में इल्म फैलाने के लिए आदमियों को भेजा करते थे और किस तरह अपने अन्दर इन सिफ़तों के पैदा करने का एहतिमाम करते थे, जिनकी वजह से इल्म अल्लाह के यहां क़ुबूल होता है। 271-461

- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इल्म की तर्ग़ीब देना 272
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ि० का इल्म की तर्ग़ीब देना 275
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ि० का इल्मी वलवला और शौक़ 283

क्या ? कहां ?

- इल्म की हक़ीक़त और जिस चीज़ पर इल्म का लफ़्ज़ बोला जाता है 288
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लाए हुए इल्म के अलावा दूसरे इल्म में मशग़ूल होने पर इन्कार और सख़्ती 292
- अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इल्म से असर लेना 297
- जो आलिम दूसरों को न सिखाए और जो जाहिल ख़ुद न सीखे, उन दोनों को डराना और धमकाना 302
- जो भी इल्म और ईमान हासिल करना चाहेगा अल्लाह तआला उसे ज़रूर अता फ़रमाएंगे 304
- ईमान और इल्म व अमल को एक साथ इकट्ठा सीखना 307
- जितने दीनी इल्म की ज़रूरत हो, उतना हासिल करना 308
- दीन इस्लाम और फ़राइज़ सिखाना 309
- नमाज़ सिखाना 313
- अज़्कार और दुआएं सिखाना 315
- मदीना मुनव्वरा आने वाले मेहमानों को सिखाना 321
- सफ़र के दौरान इल्म हासिल करना 324
- जिहाद और इल्म को जमा करना 328
- कमाई और इल्म को जमा करना 328
- कमाई से पहले दीन सीखना 332
- आदमी का अपने घरवालों को सिखाना 332
- दीनी ज़रूरत की वजह से दुश्मनों की ज़ुबान वग़ैरह सीखना 333
- इमाम का अपने किसी साथी को लोगों के सिखाने के लिए छोड़कर जाना 335
- क्या वक़्त का इमाम इल्मी ज़रूरत की वजह से अपने साथियों में से किसी को अल्लाह के रास्ते में जाने से रोक सकता है ? 336

क्या ? कहां ?

- सहाबा किराम रज़ि० को सिखाने के लिए अलग-अलग इलाक़ों में भेजना 338
- इल्म हासिल करने के लिए सफ़र करना 342
- इल्म को भरोसे के क़ाबिल इल्म वालों से हासिल करना और जब इल्म नाअह्लों के पास होगा तो फिर इल्म का क्या हाल होगा ? 347
- तालिबे इल्म को ख़ुश आमदीद कहना और ख़ुशख़बरी सुनाना 351
- इल्मी मज्लिसें और उलेमा के साथ उठना-बैठना 354
- इल्मी मज्लिस का एहतिराम और उसकी ताज़ीम 360
- उलेमा और तलबा के आदाब 361
- आदमी का इस वजह से इल्म की मज्लिस में आना छोड़ देना ताकि दूसरे लोग इल्म हासिल कर सकें 371
- इल्म का पढ़ना-पढ़ाना और इल्म को आपस में दोहराना और किन चीज़ों का पूछना मुनासिब है और किन का मुनासिब नहीं 374
- क़ुरआन सीखना और सिखाना और पढ़कर लोगों को सुनाना 386
- हर मुसलमानों को कितना क़ुरआन सीखना चाहिए 391
- जिसे क़ुरआन पढ़ना मुश्किल हो वह क्या करे 392
- क़ुरआन की मश्ग़ूली को तर्जीह देना 392
- क़ुरआन की वे आयतें, जिनकी मुराद अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता, उनके बारे में सवाल करने वाले पर सख़्ती 393
- क़ुरआन के सीखने-सिखाने पर उजरत लेने को नापसन्द समझना 397
- लोगों में क़ुरआन के बहुत ज़्यादा फैल जाने के वक़्त इख़्तिलाफ़ पैदा होने का डर 400
- क़ुरआन के क़ारियों को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० की नसीहतें 402

क्या ?	कहां ?

- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हदीसों में मश्गूल होना और हदीसों में मश्गूल होने वाले को क्या करना चाहिए ? 408
- इल्म के एहतिमाम से ज़्यादा अमल का एहतिमाम होना चाहिए 416
- सुन्नत की पैरवी और पुराने नेक लोगों की पैरवी और दीन में अपनी तरफ़ से ईजाद किए हुए काम पर इंकार 421
- जिस राय का क़ुरआन व हदीस से सबूत न हो, ऐसी बे-असल राय से बचना 428
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० का इज्तिहाद करना 430
- फ़त्वा देने में एहतियात से काम लेना और सहाबा रज़ि० में कौन फ़त्वा दिया करते थे 433
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के उलूम 438
- रब्बानी उलेमा और बुरे उलेमा 453
- इल्म का चला जाना और उसे भूल जाना 458
- ऐसे इल्म का दूसरे तक पहुंचाना, जिस पर ख़ुद अमल न कर रहा हो और नफ़ा न देने वाले इल्म से पनाह मांगना 461

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को अल्लाह के ज़िक्र का कितना शौक़ था और वे किस तरह सुबह और शाम, दिन और रात, सफ़र और हज़र में ज़िक्र की पाबन्दी करते थे और वे किस तरह दूसरों को इसकी तर्ग़ीब देते थे और उसका शौक़ दिलाते थे और उनके अज़्कार कैसे थे **462-536**

क्या ? कहां ?

- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अल्लाह के ज़िक्र की तर्ग़ीब देना 462
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ि० का ज़िक्र की तर्ग़ीब देना 466
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िक्र करने का शौक़ 468
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का ज़िक्र करने का शौक़ 471
- अल्लाह के ज़िक्र की मज्लिसें 473
- मज्लिस का कफ़्फ़ारा 477
- क़ुरआन मजीद की तिलावत 479
- दिन और रात में, सफ़र और हज़र में क़ुरआन की सूरतों का पढ़ना 483
- दिन और रात में सफ़र और हज़र में क़ुरआनी आयतों का पढ़ना 487
- कलिमा तैयिबा ला इला-ह इल्लल्लाहु का ज़िक्र 490
- सुब-हानल्लाहि, वल-हम्दु लिल्लाहि, वला इला-ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक्बर व ला हौ-ल व ला क़ू-व-त इल्लाहि बिल्लाहि के अज़्कार 494
- ज़्यादा अज़्कार के बजाए उन जामे अज़्कार को अख़्तियार करना जिनके लफ़्ज़ कम और मानी ज़्यादा हों 502
- नमाज़ों के बाद के अज़्कार और सोने के वक़्त के अज़्कार 507
- सुबह और शाम के अज़्कार 513
- बाज़ारों में और ग़फ़लत की जगहों में अल्लाह का ज़िक्र करना 514
- सफ़र के अज़्कार 515
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजना 517
- इस्तिग़फ़ार करना 524

क्या ? कहां ?

- ज़िक्र में कौन-कौन-सी चीज़ें शामिल हैं ? 528
- ज़िक्र की निशानियां और उसकी हक़ीक़त 529
- धीमी आवाज़ से ज़िक्र करना और ऊंची आवाज़ से ज़िक्र करना 531
- ज़िक्र और तस्बीहात को गिनना और तस्बीह का सबूत 534
- ज़िक्र के आदाब और नेकियों का बढ़ना 535

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम किस तरह दुआ में अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाया करते थे और किन कामों के लिए दुआ किया करते थे और किस वक़्त दुआ किया करते थे और उनकी दुआएं कैसी हुआ करती थीं ? 537-649

- दुआ के आदाब 537
- दुआ में दोनों हाथ उठाना और फिर चेहरे पर दोनों हाथ फेरना 540
- इज्तिमाई दुआ करना और ऊंची आवाज़ से दुआ करना और आमीन कहना 542
- नेक लोगों से दुआ कराना 543
- गुनाहगारों के लिए दुआ करना 548
- वे कलिमे जिनसे दुआ शुरू की जाती है 549
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अपनी उम्मत के लिए दुआएं 555
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चारों ख़लीफ़ों के लिए दुआएं 557

क्या ? कहां ?

- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास और हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हुमा के लिए दुआएं 560
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अपने घरवालों के लिए दुआएं 561
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हज़रात हसनैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के लिए दुआएं 562
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके बेटों के लिए दुआएं 564
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब, उनकी औलाद, हज़रत ज़ैद बिन हारिसा और हज़रत इब्ने रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए दुआएं 566
- हज़रत यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ानदान, हज़रत अबू सलमा और हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआएं 567
- हज़रत अम्र बिन आस, हज़रत हकीम बिन हिज़ाम हज़रत जरीर और आले बुस्र रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआएं 568
- हज़रत बरा बिन मारूर, हज़रत साद बिन उबादा और हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआएं 570
- हज़रत अनस बिन मालिक और दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआएं 572
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपने कमज़ोर सहबा रज़ि० के लिए दुआएं 573

क्या ? कहां ?

- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ के बाद की दुआएं 574
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुबह और शाम की दुआएं 579
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोने की वक़्त की और सोकर उठने के वक़्त की दुआएं 584
- मज्लिसों में और मस्जिद में और घर में दाख़िल होने और दोनों से निकलने के वक़्त की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआएं 589
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सफ़र में दुआएं 592
- सहाबा किराम रज़ि० को रुख़सत करते वक़्त की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआएं 595
- खाने-पीने और कपड़े पहनने के वक़्त की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआएं 597
- चांद देखने, कड़क सुनने, बादल आने और तेज़ हवा चलने के वक़्त की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआएं 598
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वे दुआएं, जिनका वक़्त मुक़र्रर नहीं था 601
- जामेअ दुआएं, जिनके लफ़्ज़ कम और मानी ज़्यादा हैं 607
- अल्लाह की पनाह चाहना 609
- जिन्नों से अल्लाह की पनाह चाहना 613
- रात को जब नींद न आए या घबरा जाए तो क्या कहे 615
- बेचैनी, परेशानी और रंज व ग़म के वक़्त की दुआएं 617
- ज़ालिम बादशाह से डर के वक़्त की दुआएं 619
- क़र्ज़ की अदाएगी की दुआएं 622
- क़ुरआन के हिफ़्ज़ की दुआ 625

क्या ? कहां ?

- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की दुआएं 628
- सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की एक दूसरे के लिए दुआएं 648

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम किस तरह जुमों में, जमाअतों में, हज और लड़ाइयों में और तमाम हालात में बयान किया करते थे और लोगों को अल्लाह का हुक्म मानने की तर्ग़ीब दिया करते थे, चाहे अल्लाह के हुक्म, मुशाहदे और तजुर्बे के ख़िलाफ़ क्यों न हों और किस तरह लोगों के दिलों में दुनिया और उसकी फ़ानी लज़्ज़तों की बे-रग़बती और आख़िरत और उसकी हमेशा रहने वाली लज़्ज़तों का शौक़ पैदा किया करते थे और गोया कि वे पूरी उम्मते मुस्लिमा को मालदार और ग़रीब को, ख़वास और अवाम को इस बात पर खड़ा करते थे कि अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से जो अहकाम उनकी तरफ़ मुतवज्जह हैं, वे अपनी जान लगाकर, अपना माल ख़र्च करके इन अहकाम को पूरा करें, और वे उम्मते मुस्लिमा को फ़ानी माल और ख़त्म हो जाने वाले सामान पर खड़ा नहीं करते थे 650-827

- हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पहला बयान 651

क्या ? | कहां ?

- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जुमा का ख़ुत्बा 653
- लड़ाइयों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बयान 655
- रमज़ान के आने पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बयानात 659
- जुमा की नमाज़ की ताकीद के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान 662
- हज में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बयानात और ख़ुत्बे 663
- दज्जाल, मुसैलमा कज़्ज़ाब, याजूज-माजूज और ज़मीन में धंसाए जाने के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बयानात 673
- ग़ीबत की बुराई में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान 681
- भलाइयों का हुक्म देने और बुराइयों से रोकने के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान 681
- बुरे अख़्लाक़ से बचाने के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान 682
- बड़े गुनाहों से बचाने के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान 683
- शुक्र के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान 684
- बेहतरीन ज़िंदगी के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान 685
- दुनिया की बे-रग़बती के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान 687
- हश्र के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान 689

क्या ? कहां ?

- तक़्दीर के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान 690
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिश्तेदारी के फ़ायदा देने के बारे में हुज़ूर सल्ल० का बयान 692
- हुक्काम और सदक़ों की वसूली का काम करने वालों के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान 692
- अंसार के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान 694
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुख़्तलिफ़ बयान 695
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जामे बयान, जिनके लफ़्ज़ कम और मानी ज़्यादा हैं 698
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आख़िरी बयान 705
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़ज्र से मग़रिब तक बयान 708
- बयान के वक़्त नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हालत 709
- अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के बयान 709
- अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के बयान 727
- अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान 759
- अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु के बयानात 767
- अमीरुल मोमिनीन हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा के बयान 795

क्या ? कहां ?

- अमीरुल मोमिनीन हज़रत मुआविया बिन अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हुमा का बयान 800
- अमीरुल मोमिनीन हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के बयानात 802
- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के बयानात 809
- हज़रत उत्बा बिन ग़ज़वान रज़ियल्लाहु अन्हु के बयानात 812
- हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हु के बयानात 813
- हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान 815
- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का बयान 815
- हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान 816
- हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान 817
- हज़रत हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा का बयान 821
- हज़रत यज़ीद बिन शजरा रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान 823
- हज़रत उमैर बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान 825
- हज़रत उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिद हज़रत साद बिन उबैद अल-क़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान 826
- हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान 826
- हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान 827

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम किस तरह सफ़र और हज़र में लोगों को वाज़ व नसीहत किया करते थे और दूसरों की नसीहत क़ुबूल किया करते थे और किस तरह दुनिया की ज़ाहिरी चीज़ों और उसकी लज़्ज़तों से निगाह हटा कर

क्या ?	कहां ?
आख़िरत की नेमतों और लज़्ज़तों की तरफ़ फेर लेते थे और अल्लाह से इस तरह डराते थे कि आंखों से आंसू जारी हो जाते और दिल डरने लग जाते, गोया कि आख़िरत उनके सामने एक नुमायां और खुली हुई हक़ीक़त थी और महशर के हालात उनकी आंखों के सामने हर वक़्त रहते थे और वे किस तरह अपने वाज़ व नसीहत के ज़रिए उम्मते मुहम्मदिया के हाथों को पकड़ कर उन्हें आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले की तरफ़ मुतवज्जह करते और इस तरह अपने वाज़ व नसीहत के ज़रिए शिर्के जली और ख़फ़ी की तमाम बारीक रगों को काट देते।	828-889
• नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नसीहतें	829
• अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें	836
• अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें	843
• हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें	846
• हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें	848
• हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें	850
• हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें	857
• हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें	860
• हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें	870
• हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें	872
• हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें	875

क्या ? कहां ?

- हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें 878
- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की नसीहतें 879
- हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की नसीहतें 880
- हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की नसीहतें 881
- हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा की नसीहतें 881
- हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें 883
- हज़रत जुन्दुब बजली रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें 883
- हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें 884
- हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें 889

जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने माद्दी अस्बाब को छोड़ दिया और रूहानी अस्बाब को मज़बूती से पकड़ लिया और हुज़ूर सल्ल० की तरह से सहाबा किराम रज़ि० को दुनिया की क़ौमों की हिदायत का और उन्हें दावत देने का फ़िक्र था और वे हज़रात दावत व जिहाद के सिलसिले में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़्लाक़ व आदात के साथ मुत्तसिफ़ हो गए थे, तो किस तरह से उन्हें हर वक़्त ग़ैबी ताईद हासिल रहती थी। 890-1127

- फ़रिश्तों के ज़रिए मदद 890
- फ़रिश्तों का मुश्रिकों को क़ैद करना और उनसे लड़ना 896
- सहाबा किराम रज़ि० का फ़रिश्तों को देखना 905

क्या ?	कहां ?
• फ़रिश्तों का सहाबा किराम रज़ि० को सलाम करना और उनसे मुसाफ़ा करना	908
• सहाबा किराम रज़ि० का फ़रिश्तों से बातें करना	909
• सहाबा किराम रज़ि० का फ़रिश्तों की बातें सुनना	910
• फ़रिश्तों का सहाबा किराम रज़ि० की ज़ुबान पर बोलना	910
• सहाबा किराम रज़ि० के क़ुरआन को सुनने के लिए फ़रिश्तों का उतरना	913
• फ़रिश्तों का सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के जनाज़ों का ख़ुद ग़ुस्ल देना	914
• फ़रिश्तों का सहाबा किराम रज़ि० के जनाज़ों का इक्राम करना	916
• दुश्मनों के दिलों में सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का रौब	919
• अल्लाह की तरफ़ से सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के दुश्मनों की पकड़	920
• कंकरियां और मिट्टी फेंकने से सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के दुश्मनों की हार	925
• सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को दुश्मनों का कम दिखाई देना	927
• पुरवा हवा के ज़रिए सहाबा किराम रज़ि० की मदद	927
• दुश्मनों का ज़मीन में धंस जाना और हलाक होना	929
• सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की बद-दुआ से बीनाई का चला जाना	929
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की दुआ से आंख की रोशनी का वापस आ जाना	933

क्या ?	कहां ?
• सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के ला इला-ह इल्लल्लाहु और अल्लाहु अक्बर कहने से दुश्मनों के बालाख़ानों का हिल जाना	937
• बहुत दूर के इलाक़ों तक सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की आवाज़ का पहुंच जाना	946
• सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का ग़ैबी आवाज़ें सुनना, जिनका बोलने वाला नज़र नहीं आता था	949
• जिन्नात और ग़ैबी आवाज़ों का सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की मदद करना	952
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए जिन्नों और शैतानों का सधा हुआ होना	974
• सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का जमादात यानी बेजान चीज़ों की आवाज़ें सुनना	983
• सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का क़ब्र वालों की बातें सुनना	989
• सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का अज़ाब में पड़े लोगों के अज़ाब को देखना	991
• सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का मरने के बाद बातें करना	992
• सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के मुर्दों का ज़िंदा होना	997
• सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के शहीदों में ज़िंदगी की निशानियां	998
• सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की क़ब्रों से मुश्क की ख़ुश्बू का आना	1003

क्या ? कहां ?

- मक़्तूल सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का आसमान की तरफ़ उठाया जाना 1003
- मरने के बाद सहाबा किराम रज़ि० के जिस्म की हिफ़ाज़त 1005
- दरिन्दों का सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के ताबे होना और उनसे बातें करना 1009
- सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए दरियाओं और समुंदरों का मुसख़्ख़र होना 1014
- आग का सहाबा किराम की इताअत करना 1026
- सहाबा किराम रज़ि० के लिए रोशनी का चमकना 1028
- बादलों का सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन पर साया करना 1033
- सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की दुआओं से बारिश का होना 1033
- आमसान से आने वाले डोल के ज़रिए पानी पिलाया जाना 1040
- पानी में बरकत 1043
- लड़ाइयों के सफ़र के दौरान खाने में बरकत 1051
- जगह पर रहते हुए सहाबा किराम रज़ि० के खाने में बरकत 1055
- सहाबा किराम के ग़ल्लों और फलों में बरकत 1060
- सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के दूध और घी में बरकत 1068
- गोश्त में बरकत 1074
- जहां से रोज़ी मिलने का गुमान न हो, वहां से रोज़ी मिलना 1075
- सहाबा किराम रज़ि० का ख़्वाब में पानी पीकर सेराब हो जाना 1085
- ऐसी जगह से माल का मिल जाना, जहां से मिलने का गुमान न हो 1086
- सहाबा किराम रज़ि० के माल में बरकत 1089
- तक्लीफ़ों और बीमारियों का (इलाज के बग़ैर) दूर हो जाना 1091

क्या ? कहां ?

- ज़हर के असर का चले जाना 1095
- गर्मी और सर्दी का असर न करना 1096
- भूख के असर का चले जाना 1099
- बुढ़ापे के असर का चले जाना 1099
- सदमे के असर का चले जाना 1103
- दुआ के ज़रिए बारिश से हिफ़ाज़त 1104
- टहनी का तलवार बन जाना 1104
- दुआ से शराब का सिरका बन जाना 1105
- क़ैदी का क़ैद से रिहा हो जाना 1106
- सहाबा किराम रज़ि० को तक्लीफ़ें पहुंचाने की वजह से नाफ़रमानों पर क्या-क्या मुसीबतें आईं 1107
- सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के क़त्ल होने की वजह से पूरी दुनिया के निज़ाम में क्या-क्या तब्दीलियां आईं 1113
- सहाबा किराम रज़ि० के क़त्ल होने पर जिन्नात का नौहा करना 1115
- सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाहि तआला अजमईन का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखना 1118
- सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का एक दूसरे को ख़्वाब में देखना 1122

किन वज्हों से सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की ग़ैबी मदद हुआ करती थी और वे किस तरह उन वज्हों के साथ चिमटे रहते थे और इन लोगों ने किस तरह अपनी निगाह माद्दी अस्बाब और फ़ानी सामान से हटा रखी थी **1128-1170**

क्या ?	कहां ?
• नागवारियों और सख़्तियों को बरदाश्त करना	1128
• ज़ाहिर के ख़िलाफ़ अल्लाह के हुक्म को पूरा करना	1131
• अल्लाह पर तवक्कुल करना और बातिल वालों को झूठा समझना	1133
• अल्लाह ने जिन कामों से इज़्ज़त दी है उन कामों से इज़्ज़त तलाश करना	1135
• ग़लबा व इज़्ज़त की हालत में भी ज़िम्मियों की रियायत करना	1139
• जो लोग अल्लाह के हुक्म को छोड़ दें, उनकी बुरी हालत से सबक़ हासिल करना	1140
• नीयत को अल्लाह के लिए ख़ालिस करना और आख़िरत को मक़्सूद बनाना	1141
• अल्लाह से कुरआन मजीद और अज़्कार के ज़रिए मदद चाहना	1144
• नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक बाल के ज़रिए मदद तलब करना	1149
• फ़ज़ीलत वाले आमाल में एक दूसरे से आगे बढ़ने का शौक़	1150
• दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत को बे-क़ीमत समझना	1150
• दुश्मन की तायदाद और उनके सामान के ज़्यादा होने की तरफ़ तवज्जोह न करना	1159
• सहाबा किराम रज़ि० के ग़ालिब आने के बारे में दुश्मनों ने क्या कहा ?	1160

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम किस तरह ग़ैब पर ईमान लाया करते थे और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बताई हुई ख़बरों के मुक़ाबले में मिटने वाली लज़्ज़तों, इंसान की अपनी आंखों देखी हुई चीज़ों, वक़्ती तौर पर महसूस की गई बातों और माद्दी (भौतिक) तजुर्बों को छोड़ देते थे और ऐसे लगता था जैसे उन्होंने ग़ैबी मामलों को अपनी आंखों से देख लिया था और अपनी आंखों देखी चीज़ों को वे झुठला दिया करते थे

ईमान की अज़्मत (महानता)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चारों ओर बैठे हुए थे और कुछ साथियों समेत हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा भी हमारे साथ थे। हुज़ूर सल्ल० हमारे बीच में से उठकर चले गए। आपको वापस आने में काफ़ी देर हो गई। हमें इस बात का डर हुआ कि हम हुज़ूर सल्ल० के साथ नहीं हैं, आप अकेले गए हैं। अकेले होने की वजह से आपको किसी दुश्मन की ओर से कोई तक्लीफ़ न

पहुंच जाए, इसलिए हम सब घबरा कर खड़े हो गए।

सबसे पहले मैं घबरा कर उठा और हुज़ूर सल्ल० को खोजने निकला। चलते-चलते अंसार के क़बीला बनू नज्जार के एक बाग़ के पास पहुंचा और मैंने उस बाग़ का चक्कर लगाया, ताकि मुझे बाग़ का कोई दरवाज़ा मिल जाए, लेकिन मुझे कोई दरवाज़ा न मिला, फिर मुझे एक नाली नज़र आई जो बाहर के एक कुंएं से बाग़ के अन्दर जा रही थी। मैं सिमट कर (उस नाली से) अन्दर चला गया तो देखा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहाँ मौजूद थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अबू हुरैरह ! तुम हो ?

मैंने कहा, जी हां, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हें क्या हुआ ?

मैंने कहा, आप हमारे बीच तशरीफ़ रखते थे, फिर उठकर आप चले गए, फिर काफ़ी देर गुज़र गई, लेकिन आप वापस न आए। हमें इस बात का डर हुआ कि आप अकेले हैं। हममें से कोई आपके साथ नहीं है तो इस अकेले में आपको कोई तक्लीफ़ न पहुंचा दे, इस ख़्याल से हम सब घबरा गए। सबसे पहले मैं घबरा कर वहां से उठा और आपको ढूंढने लग गया। ढूंढते-ढूंढते मैं इस बाग़ तक पहुंच गया। (बाग़ का दरवाज़ा मुझे मिला नहीं, इसलिए) मैं लोमड़ी की तरह सिकुड़ कर (नाली से) अन्दर आ गया हूं और वे तमाम लोग मेरे पीछे-पीछे आ रहे हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने मुझे अपने दो जूते (निशानी के तौर पर) देकर फ़रमाया, मेरे ये दोनों जूते ले जाओ और इस बाग़ के बाहर तुम्हें जो यह गवाही देता हुआ मिले कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और वह दिल से इस पर यक़ीन कर रहा हो, उसे जन्नत की ख़ुशख़बरी दे देना।

मुझे सबसे पहले हज़रत उमर रज़ि० मिले, उन्होंने पूछा, ऐ अबू हुरैरह रज़ि० ! ये जूते क्या हैं ? मैंने कहा, ये दोनों जूते हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हैं, जिन्हें देकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे भेजा है कि मुझे जो भी यह गवाही देता हुआ मिले कि अल्लाह

के सिवा कोई माबूद नहीं और दिल से इस पर यक़ीन कर रहा हो, मैं उसे जन्नत की ख़ुशख़बरी दे दूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने मेरे सीने पर (इस ज़ोर से) मारा कि मैं चूतड़ों के बल पर ज़मीन पर गिर पड़ा और हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ अबू हुरैरह रज़ि० ! वापस जाओ।

मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस गया और रोकर फ़रियाद करने लगा। हज़रत उमर रज़ि० मेरे पीछे-पीछे आ रहे थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अबू हुरैरह ! तुम्हें क्या हुआ ?

मैंने कहा, मुझे उमर रज़ि० बाहर मिले थे, जो ख़ुशख़बरी देकर आपने मुझे भेजा था, वह मैंने उन्हें सुनाई, तो उन्होंने मेरे सीने पर इस ज़ोर से दो हाथ मारे कि मैं चूतड़ों के बल गिर गया और उन्होंने मुझसे कहा, वापस चले जाओ। (इतने में हज़रत उमर रज़ि० भी वहां पहुंच गए।) हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उमर रज़ि० से फ़रमाया, ऐ उमर रज़ि० ! तुमने ऐसा क्यों किया ?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, क्या आपने अपने दो जूते देकर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० को इसलिए भेजा है कि उन्हें जो आदमी इस बात की गवाही देता हुआ मिले कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और वह दिल से इसका यक़ीन कर रहा हो तो यह उसे जन्नत की बशारत दे दें ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां।

हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया, आप ऐसा न करें, क्योंकि मुझे इस बात का डर है कि लोग इस ख़ुशख़बरी को सुनकर उसी पर भरोसा कर लेंगे। (और ज़्यादा नेक अमल करना छोड़ देंगे।) आप लोगों को अमल करने दें। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अच्छा, इन्हें अमल करने दो।[1]

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक रात मैं बाहर निकला तो देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अकेले जा रहे

---

1 जमउल फ़वाइद, भाग 1, पृ० 7

हैं, आपके साथ कोई नहीं है। मैंने अपने दिल में कहा, शायद आपके साथ चलने से आपको नागवारी हो, इसलिए मैं थोड़ी दूर से ऐसी जगह चलने लगा, जहां चांद की रोशनी नहीं पड़ रही थी। इतने में हुज़ूर सल्ल० ने मुड़कर देखा और फ़रमाया, यह कौन है?

मैंने कहा, अल्लाह मुझे आप पर क़ुरबान करे, मैं अबूज़र हूं।

आपने फ़रमाया, ऐ अबूज़र! इधर आओ। मैं कुछ देर आपके साथ चला, फिर आपने फ़रमाया, ज़्यादा माल वाले क़ियामत के दिन कम सवाब वाले होंगे, अलबत्ता जिसको अल्लाह ने ख़ूब माल दिया और उसने दाएं-बाएं, आगे-पीछे माल ख़ूब लुटाया और नेकी के कामों में ख़ूब ख़र्च किया, तो वह मालदार भी क़ियामत के दिन ज़्यादा अज्र व सवाब वाला होगा। फिर मैं हुज़ूर सल्ल० के साथ थोड़ी दूर और चला, इसके बाद आपने मुझसे फ़रमाया, तुम यहां बैठ जाओ और हुज़ूर सल्ल० ने मुझे एक लम्बे-चौड़े हमवार मैदान में बिठा दिया जिसके चारों ओर पत्थर ही पत्थर थे। आपने मुझसे फ़रमाया, मेरे वापस आने तक यहीं बैठे रहना।

यह फ़रमाकर हुज़ूर सल्ल० ने एक पथरीले मैदान में चलना शुरू कर दिया और चलते-चलते इतनी दूर चले गए कि मुझे नज़र नहीं आ रहे थे। फिर काफ़ी देर के बाद आप वापस आए तो मैंने दूर से सुना कि आप फ़रमा रहे थे, अगरचे वह ज़िना करे और चोरी करे। जब आप मेरे पास पहुंच गए तो मुझसे रहा न गया, और मैंने आपसे पूछा, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल०! अल्लाह मुझे आप पर क़ुरबान करे, आप इस पथरीले मैदान में किससे बातें कर रहे थे, मुझे तो आपकी बातों का जवाब देता हुआ कोई सुनाई न दिया?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह जिब्रील अलैहिस्सलाम थे, जो उस पथरीले मैदान के किनारे में मेरे सामने आए थे और उन्होंने कहा था कि आप अपनी उम्मत को यह ख़ुशख़बरी सुना दें कि जो इस हाल में मरे कि वह अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करता हो, वह जन्नत में दाख़िल होगा। मैंने कहा कि ऐ जिब्रील! अगरचे वह ज़िना करे और

चोरी करे। हज़रत जिब्रील ने कहा, जी हां।

(हज़रत अबूज़र रज़ि० फ़रमाते हैं कि) मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगरचे वह चोरी करे और ज़िना करे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जी हां, अगरचे वह शराब पिए।[1]

बुख़ारी, मुस्लिम और तिर्मिज़ी की इस जैसी एक रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने चौथी बार में फ़रमाया, चाहे अबूज़र की नाक ख़ाक में मिल जाए। (यानी ऐसा ही होगा, अगरचे अबूज़र रज़ि० की राय यह है कि ऐसा न हो।)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बूढ़े देहाती थे, जिन्हें अलक़मा बिन उलासा कहा जाता था, उन्होंने एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं बहुत बूढ़ा हूं, अब इस उम्र में क़ुरआन नहीं सीख सकता हूं, लेकिन मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं और मुझे इसका पक्का यक़ीन है।

जब वह बड़े मियां चले गए, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह आदमी बड़ा समझदार है या फ़रमाया, तुम्हारा यह साथी बड़ा समझदार है।[2]

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि मैं ऐसा कलिमा जानता हूं कि जो आदमी भी उसे सच्चे दिल से कहेगा, वह आग पर ज़रूर हराम हो जाएगा। इस पर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, क्या मैं आपको बताऊं, वह कलिमा कौन-सा है? यह वह कलिमा इख़्लास है, जिस पर अल्लाह ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके सहाबा को जमाए रखा और यह वह तक़्वा वाला कलिमा है, जिसकी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

1 जमउल फ़वाइद, भाग 1, पृ० 7

2 कंज़, भाग 1, पृ० 70, इसाबा, भाग 2, पृ० 500

सल्लम ने अपने चचा अबू तालिब को मरते वक़्त बहुत तर्ग़ीब दी थी, यानी इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं।[1]

हज़रत याला बिन शद्दाद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मेरे वालिद हज़रत शद्दाद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे यह वाक़िया सुनाया, उस वक़्त हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु भी उस मज्लिस में मौजूद थे और वह मेरे वालिद की तस्दीक़ कर रहे थे। मेरे वालिद ने फ़रमाया कि एक दिन हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास थे। आपने फ़रमाया, क्या तुममें कोई अजनबी यानी अह्ले किताब (यहूदी) में से है? हमने अर्ज़ किया, नहीं, या अल्लाह के रसूल सल्ल० !

फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, दरवाज़ा बन्द कर दो। (हमने दरवाज़ा बन्द कर दिया) फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अपने हाथ ऊपर उठाओ और 'ला इला-ह इल्लल्लाह' कहो। इसलिए हमने कुछ देर अपने हाथ उठाए रखे। (हुज़ूर सल्ल० भी हाथ उठाए हुए थे), फिर हुज़ूर सल्ल० ने अपने हाथ नीचे किए (और हमने भी नीचे किए), फिर आपने फ़रमाया, अल-हम्दु लिल्लाह, ऐ अल्लाह! तूने मुझे यह कलिमा देकर भेजा और इस (पर ईमान लाने) का हुक्म दिया और इस पर जन्नत का तूने वायदा किया और तू वायदा ख़िलाफ़ी कभी नहीं करता। फिर फ़रमाया, ग़ौर से सुनो, तुम्हें ख़ुशख़बरी हो, क्योंकि अल्लाह तआला ने तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमा दी है।[2]

हज़रत रिफ़ाआ जुहनी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ वापस आ रहे थे, जब हम कदीद या क़ुदैद नामी जगह पर पहुंचे तो कुछ लोग आपसे अपने घरवालों के पास जाने की इजाज़त मांगने लगे। हुज़ूर सल्ल० उनको इजाज़त देने लगे, फिर खड़े होकर हुज़ूर सल्ल० ने अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, इन लोगों को क्या हो गया है कि उनको

1. मज्मा, भाग 1, पृ० 15, कंज़, भाग 1, पृ० 74
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 19

पेड़ का वह हिस्सा जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़रीब है, दूसरे हिस्से से ज़्यादा नापसन्द है।

बस इस बात के सुनते ही सब रोने लगे, कोई ऐसा नज़र नहीं आ रहा था जो रो न रहा हो। एक आदमी ने कहा, इसके बाद जो इजाज़त मांगेगा, वह यक़ीनन बड़ा नादान होगा। हुज़ूर सल्ल० ने फिर अल्लाह की हम्द व सना बयान की और ख़ैर की बात की और फ़रमाया, मैं अल्लाह के यहां इस बात की गवाही देता हूं कि जो बन्दा इस हाल में मरेगा कि वह इस बात की सच्चे दिल से गवाही दे रहा हो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूं और फिर वह ठीक-ठाक चलता रहे, तो वह ज़रूर जन्नत में दाख़िल होगा और मेरे रब ने मुझसे वायदा किया है कि वह मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार आदमी जन्नत में हिसाब-किताब और अज़ाब के बग़ैर दाख़िल करेगा और मुझे उम्मीद है कि आप लोग और आप लोगों के नेक मां-बाप और नेक बीवी-बच्चे जन्नत में पहले अपने ठिकानों में पहुंच जाएंगे; फिर वे सत्तर हज़ार जन्नत में दाख़िल होंगे।[1]

एक रिवायत में यह है कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा था कि इसके बाद आपसे जो इजाज़त मांगेगा, वह यक़ीनन बड़ा नादान होगा।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ फ़्लां! तुमने ऐसे और ऐसे किया है? उसने कहा, नहीं। उस ज़ात की क़सम, जिसके अलावा कोई माबूद नहीं, मैंने ऐसे नहीं किया।

चूंकि हुज़ूर सल्ल० को मालूम था कि उसने यह काम किया है, इसलिए आपने उससे कई बार पूछा, (लेकिन वह हर बार यही जवाब देता रहा।) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, चूंकि तुम 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' की तस्दीक़ कर रहे हो, इसलिए तुम्हारे इस गुनाह को मिटा दिया गया।[2]

---

1 हैसमी, भाग 1, पृ० 20, कंज़, भाग 5, पृ० 287

2 हैसमी, भाग 10, पृ० 83,

एक रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हारे 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' की तस्दीक़ करने की वजह से तुम्हारे झूठ का कफ़्फ़ारा हो गया।[1]

हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि एक आदमी ने झूठी क़सम खाई और यों कहा कि उस अल्लाह की क़सम, जिसके अलावा कोई माबूद नहीं! तो (झूठी क़सम खाने का) गुनाह माफ़ कर दिया गया, (क्योंकि उसने क़सम के साथ ला इला-ह इल्ला हु-व के शब्द भी कह दिए तो इन शब्दों की बरकत से वह गुनाह माफ़ हो गया।)

हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जहन्नमी लोग जब जहन्नम में इकट्ठे हो जाएंगे और उनके साथ कुछ क़िबले को मानने वाले यानी कुछ मुसलमान भी होंगे, तो वे काफ़िर मुसलमानों से कहेंगे कि क्या तुम लोग मुसलमान नहीं थे? वे मुसलमान जवाब देंगे, क्यों नहीं हम तो मुसलमान थे।

कुफ़्फ़ार कहेंगे, तुम्हारे इस्लाम का तुम्हें क्या फ़ायदा हुआ? तुम भी हमारे साथ जहन्नम में आ गए? मुसलमान जवाब में कहेंगे, हमारे कुछ गुनाह थे, जिनकी वजह से हम पकड़े गए और जहन्नम में डाल दिए गए। मुसलमानों के इस जवाब को अल्लाह सुनेंगे और (फ़रिश्तों को) हुक्म देंगे। चुनांचे जहन्नम में जितने क़िबले को मानने वाले मुसलमान होंगे, वे सब उसमें से निकाल दिए जाएंगे।

जब जहन्नम में बाक़ी रह जाने वाले काफ़िर यह मंज़र देखेंगे, तो वे कहेंगे, ऐ काश! हम भी मुसलमान होते, तो जैसे ये निकल गए, हम भी जहन्नम से निकल जाते। फिर हुज़ूर सल्ल० ने 'अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम०' पढ़कर ये आयतें पढ़ीं—

1 हैसमी, भाग 10, पृ० 83

الٓرٰ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَ قُرْآنٍ مُّبِيْنٍ ۝ رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ

'अलिफ़-लाम-रा- ये आयतें हैं कि एक कामिल किताब और वाज़ेह कुरआन की। काफ़िर लोग बार-बार तमन्ना करेंगे, क्या ख़ूब होता, अगर वे मुसलमान होते।'[1] (सूरः हिज्र, आयत 1-2)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि 'लाइला-ह इल्लल्लाह' वालों में से कुछ लोग अपने गुनाहों की वजह से जहन्नम में चले जाएंगे, तो लात और उज़्ज़ा (बुतों) को मानने वाले उनसे कहेंगे कि जब तुम भी हमारे साथ जहन्नम की आग में हो, तो 'लाइला-ह इल्लल्लाहु' कहने का तुम्हें क्या फ़ायदा हुआ? इस पर अल्लाह को मुसलमानों के हक़ में गुस्सा आ जाएगा, तो अल्लाह उन्हें वहां से निकाल कर नहरे हयात में डाल देंगे जिससे उनके जिस्म जहन्नम की जलन से ऐसे साफ़ हो जाएंगे, जैसे कि चांद गरहन से निकल कर साफ़ हो जाता है और जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे और जन्नत में ये लोग जहन्नमी के नाम से पुकारे जाएंगे।[2]

एक रिवायत में यह है कि चूंकि उनके चेहरों में कुछ स्याही होगी, इसलिए ये लोग जन्नत में जहन्नमी के नाम से पुकारे जाएंगे। वे अर्ज़ करेंगे, ऐ रब! तू हमारा यह नाम ख़त्म कर दे। अल्लाह उन्हें जन्नत की नहर में नहाने का हुक्म देंगे, वे उस नहर में नहाएंगे, तो (वह स्याही चली जाएगी और) उनका यह नाम ख़त्म हो जाएगा।[3]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इस्लाम भी ऐसे पुराना हो जाएगा, जैसे कपड़े के बेल-बूटे पुराने हो जाते हैं। किसी को मालूम न होगा कि रोज़ा, सदक़ा और क़ुरबानी क्या चीज़ है? अल्लाह की किताब यानी कुरआन पर एक रात ऐसी आएगी कि उसकी एक आयत भी ज़मीन पर बाक़ी न

1 तबरानी
2 तबरानी
3 तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 546

रहेगी। (फ़रिश्ता सारी ज़मीन से सारा क़ुरआन उठाकर ले जाएगा) और लोगों की अलग-अलग जमाअतें बाक़ी रह जाएंगी, जिनके बूढ़े मर्द और बूढ़ी औरतें कहेंगी, हमने अपने बाप-दादों को इस कलिमे 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' पर पाया था, हम भी यही कलिमा पढ़ते हैं।

हज़रत सिला (रिवायत करने वाले) ने पूछा कि जब वे लोग नहीं जानते होंगे कि रोज़ा, सदक़ा और क़ुरबानी क्या चीज़ है, तो 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' पढ़ने से उन्हें क्या फ़ायदा होगा? हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने उनसे मुंह फेर लिया। हज़रत सिला ने दोबारा पूछा, तो हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने फिर मुंह फेर लिया। जब तीसरी बार पूछा तो हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने उनकी ओर मुतवज्जह होकर फ़रमाया, ऐ सिला! यह कलिमा उन्हें आग से निजात देगा, यह कलिमा उन्हें आग से निजात देगा, यह कलिमा उन्हें आग से निजात देगा।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि लोगों में से अल्लाह के साथ सबसे ज़्यादा मामला साफ़ रखने वाला और अल्लाह को सबसे ज़्यादा जानने वाला वह आदमी है जो 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' वालों से सबसे ज़्यादा मुहब्बत करने वाला और उनकी सबसे ज़्यादा इज़्ज़त करने वाला हो।[2]

हज़रत सालिम बिन अबिल जाद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु को किसी ने बताया कि हज़रत अबू साद बिन मुनब्बह ने सौ ग़ुलाम आज़ाद किए हैं। हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने फ़रमाया, एक आदमी के माल में से सौ ग़ुलाम बहुत ज़्यादा हैं, लेकिन अगर तुम कहो तो मैं तुम्हें इससे भी ज़्यादा फ़ज़ीलत वाले (अमल) बता दूं—एक तो वह ईमान जो दिन और रात हर वक़्त दिल से चिमटा हुआ हो और दूसरे यह कि हर वक़्त तुम्हारी ज़ुबान अल्लाह के ज़िक्र से तर रहे।[3]

---

1 हाकिम, भाग 4, पृ० 545,

2 कंज़, भाग 1, पृ० 76,

3 हुलीया, भाग 1, पृ० 21, तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 55

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जैसे अल्लाह ने तुम्हारी रोज़ी को तुम्हारे बीच बांट दिया है, उसी तरह अख़्लाक़ को भी तुम्हारे बीच बांट दिया है और अल्लाह माल तो उसे भी दे देते हैं जिससे मुहब्बत हो और उसे भी दे देते हैं जिससे मुहब्बत न हो, लेकिन ईमान सिर्फ़ उसे ही देते हैं जिससे मुहब्बत हो।

चुनांचे अल्लाह जब किसी बन्दे से मुहब्बत करते हैं, तो उसे ईमान दे देते हैं, इसलिए जो कंजूसी की वजह से माल न ख़र्च कर सकता हो और बुज़दिली की वजह से दुश्मन से जिहाद न कर सकता हो और रातों को मेहनत न कर सकता हो, उसे चाहिए कि वह—

'ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर, वलहम्दु लिल्लाहि व सुब्हानल्लाहि' ज़्यादा से ज़्यादा कहा करे।[1]

ईमान की मज्लिसें

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के किसी सहाबी से मिलते तो उससे कहते, आओ, थोड़ी देर अपने रब पर ईमान को ताज़ा करें।

एक दिन उन्होंने यह बात एक आदमी से कही, उसे गुस्सा आ गया और उसने जाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या आपने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० को नहीं देखा कि वह आपके ईमान को छोड़कर एक घड़ी का ईमान अख़्तियार कर रहे हैं? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह इब्ने रवाहा पर रहम फ़रमाए, यह उन मज्लिसों को पसन्द करते हैं जिन पर फ़रिश्ते फ़ख़्र करते हैं।[2]

---

1 हैसमी, भाग 10, पृ० 90, तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 95

2 तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 63, बिदाया, भाग 4, पृ० 258,

हज़रत अता बिन यसार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने एक साथी से कहा, आओ हम एक घड़ी अपना ईमान ताज़ा कर लें। उसने कहा, क्या हम पहले से मोमिन नहीं हैं? हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा, हैं, लेकिन हम अल्लाह का ज़िक्र करेंगे, तो इससे हमारा ईमान बढ़ जाएगा।

हज़रत शुरैह बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु अपने किसी साथी का हाथ पकड़ कर कहते, आओ, हमारे साथ कुछ देर रहो, ताकि हम ईमान ताज़ा कर लें और ज़िक्र की मज्लिस में (अल्लाह की ज़ात और उसकी सिफ़तों का आपस में ज़िक्र करने) बैठ जाएं।[1]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु मेरा हाथ पकड़ कर कहा करते, आओ हम कुछ देर अपना ईमान ताज़ा कर लें, क्योंकि दिल उस हांडी से भी जल्दी पलट जाता है जो ख़ूब ज़ोर-शोर से उबल रही हो।[2]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु मुझसे मिलते, तो मुझे कहते, ऐ उवैमिर! ज़रा बैठ जाओ, कुछ देर (ईमान का) मुज़ाकरा कर लें। चुनांचे हम बैठकर मुज़ाकरा कर लेते, फिर मुझसे फ़रमाते, यह ईमान की मज्लिस है। ईमान तुम्हारे कुरते की तरह है, जिसे तुम पहने हुए होते हो, फिर तुम उसे उतार लेते हो। उतारा हुआ होता है, फिर तुम उसे पहन लेते हो और दिल उस हांडी से भी जल्दी पलट जाता है जो ख़ूब ज़ोर-शोर से उबल रही हो।[3]

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने साथियों में एक दो का हाथ पकड़ लेते और

---

1 बैहक़ी,
2 हाफ़िज़ अबुल क़ासिम,
3 कंज़, भाग 1, पृ० 101,

फ़रमाते, हमारे साथ कुछ देर रहो, ताकि हम अपना ईमान बढ़ा लें और फिर हम अल्लाह (की ज़ात और उसकी सिफ़तों) का ज़िक्र करते।[1]

हज़रत अस्वद बिन बिलाल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हम लोग हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ चल रहे थे कि इतने में उन्होंने फ़रमाया, आओ कुछ देर बैठकर ईमान ताज़ा करें।[2]

ईमान ताज़ा करना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अपना ईमान ताज़ा करते रहो। सहाबा रज़ि० ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम अपना ईमान कैसे ताज़ा करें? आपने फ़रमाया, 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' ज़्यादा से ज़्यादा कहा करो।[3]

अल्लाह और रसूल की बात को सच्चा मानना और उसके मुक़ाबले में इंसानी तजुर्बों और उसकी अपनी आंखों देखी बातों को ग़लत समझना

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि मेरे भाई को दस्त आ रहे हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उसे शहद पिलाओ, (क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है कि शहद में लोगों के लिए शिफ़ा है।) वह आदमी गया और उसने जाकर अपने भाई को शहद पिलाया और फिर आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने उसे शहद पिलाया, इससे दस्त और ज़्यादा आने लगे हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जाओ और उसे शहद पिलाओ। उसने जाकर शहद पिलाया और फिर आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! उसको दस्त तो और ज़्यादा आने लगे। हुज़ूर सल्ल० ने

1 कंज़, भाग 10, पृ० 207

2 हुलीया, भाग 1, पृ० 235,

3 हैसमी, भाग 1, पृ० 82, तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 75

फ़रमाया, अल्लाह सच फ़रमाते हैं और तुम्हारे भाई का पेट ग़लत कहता है, जाओ, उसे शहद पिलाओ, अब जाकर उसने भाई को शहद पिलाया तो वह ठीक हो गया।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० जब ज़रूरत पूरी करके घर वापस आते और दरवाज़े पर पहुंचते तो खंखारते और थूकते, ताकि ऐसा न हो कि वे अचानक अन्दर आएं और हमें किसी नामुनासिब हालत में देख लें।

चुनांचे वह एक दिन आए और उन्होंने खंखारा। उस वक़्त मेरे पास एक बूढ़ी औरत थी जो पित्त का मंत्र पढ़कर मुझ पर दम कर रही थी। मैंने उसे पलंग के नीचे छिपा दिया। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० अन्दर आकर मेरे पास बैठ गए। उनको मेरी गरदन में एक धागा नज़र आया। उन्होंने कहा, यह धागा कैसा है? मैंने कहा, इस पर मंत्र पढ़कर किसी ने मुझे दिया है।

उन्होंने धागा पकड़ कर काट दिया और फ़रमाया, अब्दुल्लाह के घरवालों को शिर्क की कोई ज़रूरत नहीं। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि मंत्र, तावीज़ और गंडा, यह सब शिर्क है (बशर्तेकि इन चीज़ों को ही ख़ुद असर करने वाला समझे।) मैंने उनसे कहा, आप यह कैसे कह रहे हैं? मेरी आंख दुखने आ गई थी। मैं फ़्लां यहूदी के पास जाया करती थी, वह दम किया करता था। जब भी वह दम करता, मेरी आंख ठीक हो जाती।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने फ़रमाया, यह सब कुछ शैतान की तरफ़ से था। शैतान तुम्हारी आंख पर हाथ से कूचा मारता था, (जिससे आंख दुखने लग जाती थी), जब वह यहूदी दम करता तो वह अपना हाथ पीछे हटा लेता, (जिससे आंख ठीक हो जाती।) तुम्हें यह काफ़ी था कि तुम इस मौक़े पर यह दुआ पढ़ लेतीं जो कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

1 तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 575,

सल्लम पढ़ा करते थे—

أَذْهِبِ الْبَأْسَ رَبَّ النَّاسِ اشْفِ وَأَنْتَ الشَّافِي لَا شِفَاءَ إِلَّا شِفَاؤُكَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا

'अज़्-हबिल बा-स रब्बन्नासि इश्फ़ि व अन्तश्शाफ़ी ला शिफ़ा-अ इल्ला शिफ़ाउ-क शिफ़ाउन ला युग़ादिरु स-क़मन'[1]

हज़रत इक्रिमा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी बीवी के पहलू में लेटे हुए थे। उनकी बांदी घर के कोने में (सो रही) थी। यह उठकर उसके पास चले गए और उसमें मश्ग़ूल हो गए। उनकी बीवी घबरा कर उठी और उनको बिस्तर पर न पाया तो उठकर बाहर चली गई और उन्हें बांदी में मश्ग़ूल देखा। वह अन्दर वापस आई और छुरी लेकर बाहर निकली। इतने में यह फ़ारिग़ होकर खड़े हो चुके थे और अपनी बीवी को रास्ते में मिले। बीवी ने छुरी उठाई हुई थी।

उन्होंने पूछा, क्या बात है? बीवी ने कहा, हां, क्या बात है? अगर मैं तुम्हें वहां पा लेती, जहां मैंने तुम्हें देखा था, तो मैं तुम्हारे कंधों के दर्मियान यह छुरी घोंप देती। हज़रत इब्ने रवाहा रज़ि० ने कहा, तुमने मुझे कहां देखा था? उन्होंने कहा, मैंने तुम्हें बांदी के पास देखा था।

हज़रत इब्ने रवाहा रज़ि० ने कहा, तुमने मुझे वहां नहीं देखा था। (मैं बांदी के पास नहीं गया। मैंने उसके साथ कुछ नहीं किया। अगर मैं उसके साथ कुछ किए होता, तो मैं जुनुबी (नापाक) होता) और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नापाकी की हालत में क़ुरआन पढ़ने से हमें मना फ़रमाया है। (और मैं अभी क़ुरआन पढ़कर तुम्हें सुना देता हूं।) उनकी बीवी ने कहा, अच्छा क़ुरआन पढ़ो।

उन्होंने ये शेर (पद) इस तरह पढ़े कि उनकी बीवी क़ुरआन समझती रही। (मुहब्बत बढ़ाने के लिए मियां-बीवी का आपस में झूठ बोलना जायज़ है।)

أَتَانَا رَسُولُ اللّٰهِ يَتْلُو كِتَابَهُ   كَمَا لَاحَ مَشْهُورٌ مِنَ الْفَجْرِ سَاطِعُ

---

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 494.

'हमारे पास अल्लाह के रसूल आए जो अल्लाह की ऐसी किताब पढ़ते हैं जो कि रोशन और चमकदार सुबह की तरह चमकती है।

أتى بالهدى بعد العمى فقلوبنا   به موقنات أن ما قال واقع

'आप लोगों के अंधेपन के बाद हिदायत लेकर आए और हमारे दिलों को यक़ीन है कि आपने जो कुछ कहा है, वह होकर रहेगा।'

يبيت يجافي جنبه عن فراشه   إذا استثقلت بالمشركين المضاجع

'जब मुश्रिक बिस्तरों पर गहरी नींद सो रहे होते हैं, उस वक़्त आप इबादत में सारी रात गुज़ार देते हैं और आपका पहलू बिस्तर से दूर रहता है।'

ये शेर सुनकर उनकी बीवी ने कहा, मैं अल्लाह पर ईमान लाती हूं और मैं अपनी निगाह को ग़लत क़रार देती हूं। फिर सुबह को हज़रत रवाहा रज़ि० ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में जाकर यह वाक़िया सुनाया, तो हुज़ूर सल्ल० इतना हंसे कि आपके मुबारक दांत नज़र आने लगे।[1]

हज़रत हबीब बिन अबी साबित रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं हज़रत अबू वाइल रज़ियल्लाहु अन्हु से कुछ पूछने गया, तो उन्होंने कहा कि हम जंगे सिफ़्फ़ीन में थे, तो एक आदमी ने कहा, क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की किताब की ओर बुलाए जा रहे हैं? इस पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हां, (मैंने उन्हें देखा है।)

हज़रत सह्ल बिन हुनैफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने (उस आदमी को) कहा, अपने आप को क़ुसूरवार ठहराओ, क्योंकि हमने हुदैबिया के समझौते के दिन, जिस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुश्रिकों के बीच समझौता हुआ था, यह देखा था कि अगर हम लड़ना फ़ायदेमंद समझते, तो हम मुश्रिकों से लड़ सकते थे। (लेकिन हमने फ़ायदेमंद न समझा। समझौते के बाद) हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने (हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में) अर्ज़ किया, क्या हम हक़ पर और ये मुश्रिक बातिल पर नहीं हैं? क्या हमारे शहीद जन्नत में और उनके मारे गए

1. दार क़ुत्नी, पृ० 44-45, तालीक़ुल मुग़्नी, पृ० 45,

लोग जहन्नम में नहीं जाएंगे ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्यों नहीं ?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, फिर हमें हमारे दीन में क्यों दबाया जा रहा है ? और अभी अल्लाह ने हमारे दर्मियान फ़ैसला नहीं फ़रमाया, तो हम वापस क्यों जा रहे हैं ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ इब्नुल ख़त्ताब ! मैं अल्लाह का रसूल हूं, मुझे अल्लाह हरगिज़ बर्बाद नहीं होने देंगे।

(इससे हज़रत उमर रज़ि० का ग़ुस्सा ठंडा न हुआ, बल्कि) वह ग़ुस्से में भरे सीधे हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अनहु के पास गए और उनसे कहा, ऐ अबूबक्र रज़ि० ! क्या हम हक़ पर और ये मुश्रिक बातिल पर नहीं ?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ इब्ने ख़त्ताब रज़ि० ! यह अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह इन्हें हरगिज़ बर्बाद नहीं होने देंगे। फिर सूर: फ़त्ह उतरी।[1]

एक रिवायत में यह है कि हज़रत सह्ल बिन हुनैफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, ऐ लोगो ! अपनी राय को अधूरी समझो। मैंने हज़रत अबू जन्दल रज़ियल्लाहु अनहु (को मुश्रिकों की तरफ़ वापस किए जाने) के दिन देखा (कि जब हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें मुश्रिकों की तरफ़ वापस करने को मान लिया, तो मुझ पर यह इतना बड़ा बोझ बना) कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात के इंकार की अगर मुझमें ताक़त होती तो उस दिन मैं ज़रूर इंकार कर देता।

एक रिवायत में है कि फिर सूर: फ़त्ह उतरी तो हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को बुलाया और उन्हें सूर: फ़त्ह पढ़कर सुनाई।[2] और 'दावत इलल्लाहि' के बाब में हुदैबिया-समझौते के क़िस्से में बुख़ारी की लम्बी हदीस गुज़र चुकी है, जिसे हज़रत मिस्वर बिन मख़्रमा और हज़रत मरवान रज़ियल्लाहु अन्हुमा रिवायत करते हैं, उसमें यह भी है कि हज़रत अबू जन्दल रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, ऐ मुसलमानो ! मैं तो

1. बुख़ारी, मुस्लिम, नसई
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 200

मुसलमान होकर आया था और अब मुझे मुश्रिकों की तरफ़ वापस किया जा रहा है, क्या तुम देख नहीं रहे हो कि मैं कितनी मुसीबतें उठा रहा हूं? और वाक़ई उन्हें अल्लाह की ख़ातिर सख़्त मुसीबतें पहुंचाई गई थीं।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया कि क्या आप अल्लाह के सच्चे नबी नहीं हैं? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हूं।

फिर मैंने कहा कि क्या हम हक़ पर और हमारा दुश्मन बातिल पर नहीं है? आपने फ़रमाया, हां, तुम ठीक कहते हो।

मैंने कहा, फिर हम क्यों इतना दब कर समझौता करें? आपने फ़रमाया, मैं अल्लाह का रसूल हूं, उसकी नाफ़रमानी नहीं कर सकता और वही मेरा मददगार है।

मैंने कहा, क्या आपने हमसे यह नहीं फ़रमाया था कि हम बैतुल्लाह जाकर उसका तवाफ़ करेंगे? आपने फ़रमाया, हां, मैंने कहा था, लेकिन क्या मैंने तुमको यह भी कहा था कि हम इसी साल बैतुल्लाह जाएंगे? मैंने अर्ज़ किया, नहीं। आपने फ़रमाया, तुम बैतुल्लाह ज़रूर जाओगे और उसका तवाफ़ करोगे।

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गया और उनसे कहा, ऐ अबूबक्र रज़ि०! क्या यह अल्लाह के सच्चे नबी नहीं हैं? उन्होंने कहा, हैं। मैंने कहा, क्या हम हक़ पर और हमारा दुश्मन बातिल पर नहीं है? हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, तुम ठीक कहते हो।

मैंने कहा, फिर हम इतना दब कर क्यों सुलह करें? हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, ऐ आदमी! वह अल्लाह के रसूल हैं और वह अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं कर सकते और अल्लाह उनका मददगार है। तुम उनका दामन मज़बूती से थामे रखो, अल्लाह की क़सम! वह हक़ पर हैं।

मैंने कहा, क्या उन्होंने हमसे यह नहीं फ़रमाया था कि हम बैतुल्लाह जाकर उसका तवाफ़ करेंगे? उन्होंने कहा, हां, उन्होंने कहा था, लेकिन

क्या उन्होंने तुमसे यह भी कहा था कि तुम इसी साल बैतुल्लाह जाओगे? मैंने कहा, नहीं। उन्होंने कहा, तुम बैतुल्लाह ज़रूर जाओगे और उसका तवाफ़ करोगे।

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, मैंने अपनी इस गुस्ताख़ी की माफ़ी के लिए बहुत-से नेक काम किए।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुदैबिया से वापसी पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह आयत उतरी—

لِيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ

'ताकि अल्लाह आपकी सब अगली-पिछली ख़ताएं माफ़ कर दें।'

(सूरः फ़त्ह, आयत 2)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आज मुझ पर एक आयत उतरी है जो मुझे धरती की तमाम चीज़ों से प्रिय है। फिर हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा को यह आयत सुनाई।

सहाबा रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के नबी! आपको यह ख़ुशख़बरी मुबारक हो। अल्लाह ने बता दिया है कि आपके साथ क्या मामला फ़रमाएंगे, लेकिन यह न पता चला अल्लाह हमारे साथ क्या मामला फ़रमाएंगे? इस पर हुज़ूर सल्ल० पर यह आयत उतरी—

لِيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ

से लेकर

فَوْزًا عَظِيمًا

तक 'ताकि अल्लाह मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को ऐसी बहिश्त में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जिनमें वे हमेशा रहेंगे, ताकि उनके गुनाह दूर कर दे और यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी कामियाबी है।'[1]

(सूरः फ़त्ह, आयत 5)

1. तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 183

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुदैबिया से वापसी में यह आयत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतरी—

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا

'बेशक हमने आपको एक खुल्लम खुल्ला जीत दी।'

(सूरः फ़त्ह, आयत 1)

हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० को (बैतुल्लाह के क़रीब पहुंच कर) उमरा करने से रोक दिया गया था और हुज़ूर सल्ल० और सहाबा रज़ि० ने हुदैबिया में क़ुरबानी के जानवर ज़िब्ह कर दिए थे और सब पर बहुत ज़्यादा रंज व ग़म छाया हुआ था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुझ पर एक ऐसी आयत उतरी है जो मुझे सारी दुनिया से ज़्यादा प्यारी है और फिर हुज़ूर सल्ल० ने ये आयतें पढ़कर सुनाईं—

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا لِيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ

से लेकर

عَزِيزًا

तक। हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! आपको मुबारक हो। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[1]

हज़रत मुजम्मा बिन जारिया अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु पूरा क़ुरआन पढ़े हुए क़ारियों में से थे। वह फ़रमाते हैं कि हम हुदैबिया-समझौते के वक़्त मौजूद थे। जब हम वहां से वापस हुए तो लोग ऊंटों को दौड़ा रहे थे। कुछ लोगों ने दूसरों से पूछा कि इन लोगों को क्या हुआ? (ये ऊंटों को इतनी तेज़ क्यों दौड़ा रहे हैं?)

उन लोगों ने बताया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वह्य उतरी है, तो हम भी लोगों के साथ सवारियां तेज़ दौड़ाने लगे। जब हुज़ूर सल्ल० के पास पहुंचे तो हुज़ूर सल्ल० कुराउल ग़मीम नामी

---

1. इब्ने जरीर, भाग 26, पृ० 44

जगह के नज़दीक अपनी सवारी पर तशरीफ़ रखते थे। धीरे-धीरे लोग आपके पास जमा हो गए। फिर आपने 'इन्ना फ़तह्ना ल-क फ़त्हम मुबीना०' पढ़कर सुनाई।

हुज़ूर सल्ल० के सहाबा में से एक सहाबी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या यह फ़त्ह (जीत) थी ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है, यह यक़ीनी तौर पर ज़बरदस्त जीत थी। आगे और भी हदीस है।[1]

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि तुम लोग मक्का की जीत को बड़ी जीत समझते हो। मक्का की जीत भी बड़ी जीत है, लेकिन हम हुदैबिया-समझौते के दिन जो 'बैअतुर्रिज़्वान' हुई थी, उसे सबसे बड़ी जीत समझते हैं। आगे और भी हदीस है।[2]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं हम बड़ी जीत सिर्फ़ हुदैबिया-समझौते ही को समझते थे।

हज़रत क़ैस बिन हज्जाज रहमतुल्लाहि अलैहि अपने एक उस्ताद से नक़ल करते हैं कि जब मुसलमानों ने मिस्र जीत लिया और मिस्री महीनों में से बूना नामी महीना शुरू हो गया तो मुसलमानों के अमीर हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु के पास मिस्र वाले आए और उन्होंने कहा, ऐ अमीर साहब ! हमारी इस नील नदी के जारी रहने के लिए एक पुरानी रस्म है। वह रस्म हम अदा न करें, तो नील नदी का पानी सूख जाता है।

हज़रत अम्र रज़ि० ने फ़रमाया, वह रस्म क्या है ?

मिस्र वालों ने कहा, वह रस्म यह है, जब इस (बूना) महीने की बारह तारीख़ हो जाती है तो हम एक कुंवारी लड़की की खोज करते हैं, जो अपने मां-बाप के साथ रहती हो। फिर उसके मां-बाप को (बहुत-सा माल देकर) राज़ी करते हैं। फिर उस लड़की को सबसे अच्छा गहना

1. तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 183
2. तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 182, इब्ने जरीर, भाग 26, पृ० 44,

और कपड़े पहनाते हैं, फिर उसे नील नदी में डाल देते हैं।

हज़रत अम्र रज़ि० ने उनसे फ़रमाया, यह काम इस्लाम में नहीं हो सकता। इस्लाम अपने से पहले के तमाम ग़लत कामों को ख़त्म कर देता है। वे मिस्री लोग बूना महीने में वहां ही रहे। नील नदी में पानी बिल्कुल नहीं था। आख़िरकार मिस्रियों ने मिस्र छोड़कर जाने का इरादा कर लिया।

हज़रत अम्र रज़ि० ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त में यह सारी तफ़्सील लिखकर भेजी। हज़रत उमर रज़ि० ने जवाब में यह लिखा कि तुमने जो किया, वह बिल्कुल ठीक है और मैं इस ख़त के साथ एक परचा भेज रहा हूं, उसे नील नदी में डाल दो। फिर आगे और हदीस भी हैं, जैसे कि ताईदाते ग़ैबीया (ग़ैबी ताईद) के बाब में नदियों पर क़ाबू पाने के तहत आएगी।

उसके आख़िर में यह है कि हज़रत अम्र रज़ि० ने यह परचा नील नदी में डाल दिया, (यह जुमा का दिन है) सनीचर के दिन सुबह को लोगों ने जाकर देखा तो वे हैरान रह गए कि एक ही रात में अल्लाह ने नील नदी में पानी सोलह हाथ चढ़ा दिया था और यों अल्लाह ने मिस्र वालों की इस ग़लत रस्म को ख़त्म कर दिया और आज तक वह ख़त्म है। (इसके बिना ही नील नदी में बराबर पानी चल रहा है।)[1]

हज़रत सह्म बिन मिनजाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हम अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ एक लड़ाई में गए। हम चलते-चलते दारैन (द्वीप) के पास पहुंच गए। हमारे और दारैन वालों के दर्मियान समुद्र था। हज़रत अला रज़ि० ने यह दुआ मांगी—

يَا عَلِيْمُ يَا حَلِيْمُ يَا عَلِيُّ

'या अलीमु, या हलीमु, या अलीयु, या अज़ीमु' हम तेरे बन्दे हैं और तेरे रास्ते में हैं। तेरे दुश्मन से लड़ने आए हैं। ऐ अल्लाह ! दुश्मन तक पहुंचने का हमारे लिए रास्ता बना दे। इसके बाद हज़रत अला रज़ि०

1. इब्ने असाकिर

हमें लेकर समुद्र में उतर गए और हम भी उनके साथ घुस गए, लेकिन समुद्र का पानी हमारी ज़ीन के नमदों तक नहीं पहुंचा और हम लोग उन तक पहुंच गए।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से भी इस जैसी हदीस नक़ल की गई है। उसमें यह मज़्मून भी है कि किसरा के गवर्नर इब्ने मुकाबिर ने जब हमें (यों समुद्र में चलकर आते हुए) देखा तो उसने कहा, नहीं, अल्लाह की क़सम ! हम इन लोगों से नहीं लड़ सकते। (इनके साथ अल्लाह की ग़ैबी मदद है) फिर वह नाव में बैठकर फ़ारस चला गया।[2]

और बहुत जल्द क़ादसिया की लड़ाई के दिन हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु के दजला नदी पार करने के बारे में हदीसें आएंगी और उनमें हज़रत हुज्र बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हु की यह बात भी आएगी कि आप लोगों को पार करके दुश्मन तक पहुंचने से सिर्फ़ पानी की यह बूंद यानी दजला नदी रोक रही है, फिर यह आयत पढ़ी—

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتَابًا مُّؤَجَّلًا (سورت آل عمران آیت ١٤٥)

'और किसी आदमी को मौत आना मुम्किन नहीं अल्लाह के हुक्म के अलावा, इस तौर से कि उसकी तै मुद्दत लिखी हुई रहती है।'

(सूरः आले इम्रान, आयत 145)

फिर हज़रत हुज्र बिन अदी रज़ि० ने अपना घोड़ा दजला नदी में डाल दिया। जब उन्होंने डाला तो तमाम लोगों ने अपने जानवर नदी में डाल दिए। जब दुश्मन के लोगों ने उनको (यों नदी पर चलकर आते हुए) देखा तो वे कहने लगे, 'देव आ गए, देव आ गए।' और दुश्मन के लोग (आख़िरकार) भाग गए।[3]

हज़रत मुआविया बिन हरमल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार (मदीना मुनव्वरा के पथरीले मैदान) हर्रा में आग निकली तो हज़रत

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 7
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 8, दलाइल, पृ० 208
3. इब्ने अबी हातिम,

उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत तमीम रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए और उनसे फ़रमाया कि उठो और इस आग का इन्तिज़ाम करो।

हज़रत तमीम रज़ि० ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मैं कौन हूं? मैं क्या हूं? (ख़ाकसारी दिखाते रहे।) हज़रत उमर रज़ि० उनसे बराबर कहते रहे, यहां तक कि हज़रत तमीम रज़ि० खड़े हो गए और दोनों आग की तरफ़ चल पड़े और मैं उनके पीछे चलने लगा।

वहां पहुंच कर हज़रत तमीम रज़ि० आग को अपने हाथ से धक्का देते रहे कि वह आग (उस) घाटी में दाख़िल हो गई, (जिसमें से निकलकर आई थी) और आग के पीछे हज़रत तमीम रज़ि० भी घाटी के अन्दर चले गए। यह देखकर हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाने लगे कि जिसने यह मंज़र नहीं देखा, वह देखने वाले के बराबर नहीं हो सकता। (क्योंकि इसे देखकर ईमान ताज़ा हो गया है।)

बहरैन के एक साहब अबू सकीना रहमतुल्लाहि अलैहि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी से रिवायत करते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़न्दक़ (खाई) खोदने का हुक्म दिया, तो (ख़न्दक़ खोदते हुए) सहाबा के सामने एक चट्टान आ गई, जिसने सहाबा रज़ि० को ख़न्दक़ खोदने से रोक दिया। हुज़ूर सल्ल० ख़न्दक़ के एक किनारे चादर रखकर खड़े हो गए और कुदाल लेकर यह आयत (सूर: अनआम, आयत 115) पढ़ी—

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ

और आपने ज़ोर से कुदाल चट्टान पर मारी। उससे चट्टान का तिहाई हिस्सा टूटकर गिर पड़ा। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए देख रहे थे। हुज़ूर सल्ल०के कुदाल मारने के साथ एक चमक ज़ाहिर हुई। फिर आपने दोबारा वही आयत पढ़कर कुदाल मारी तो चट्टान का दूसरा तिहाई हिस्सा भी टूटकर गिर पड़ा और फिर दोबारा एक चमक ज़ाहिर हुई, जिसे हज़रत सलमान रज़ि० ने देखा।

हुज़ूर सल्ल० ने तीसरी बार वही आयत पढ़कर कुदाल मारी तो चट्टान का आख़िरी तीसरा हिस्सा भी टूटकर गिर गया और हुज़ूर सल्ल० ख़न्दक़ से बाहर तशरीफ़ ले आए और अपनी चादर लेकर बैठ गए। हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने देखा कि आप जब भी चट्टान पर चोट मारते तो उसके साथ एक चमक ज़ाहिर होती।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ सलमान ! क्या तुमने उसे देख लिया? हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, हां, मैंने उसे देखा है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब मैंने पहली बार चोट मारी थी, तो उस वक़्त किसरा का शहर मदाइन और उसके आस-पास के इलाक़े और बहुत सारे शहर मेरे सामने ज़ाहिर कर दिए गए, जिन्हें मैंने अपनी आंखों से देखा।

वहां जो सहाबा रज़ि० उस वक़्त मौजूद थे, उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप अल्लाह से यह दुआ करें कि वह ये तमाम शहर जितवा कर हमें दे दे और उनकी औलाद को हमारे लिए माले ग़नीमत बना दे और उनके शहरों को हमारे हाथों उजाड़ दे।

चुनांचे आपने यह दुआ फ़रमाई और फ़रमाया, फिर मैंने दूसरी बार चोट मारी तो क़ैसर के शहर और उसके आस-पास के इलाक़े मेरे सामने ज़ाहिर कर दिए गए, जिन्हें मैंने अपनी आंखों से देखा। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप अल्लाह से यह दुआ करें कि वह ये तमाम इलाक़े जितवा कर हमें दे दे और उनकी औलाद को हमारे लिए माले ग़नीमत बना दे और उनके शहरों को हमारे हाथों उजाड़ दे।

चुनांचे आपने यह दुआ फ़रमाई और फ़रमाया, फिर मैंने तीसरी बार चोट मारी, तो हब्शा के शहर और उसके आस-पास के इलाक़े मेरे

सामने ज़ाहिर किए गए, जिन्हें मैंने अपनी आंखों से देखा। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब तक हब्शा वाले तुम्हें छोड़े रखें, तुम भी उन्हें छोड़े रखो और जब तक तुर्क तुम्हें छोड़े रखें, तुम भी उन्हें छोड़े रखो। (यह हुक्म शुरू में था, बाद में यह हुक्म मंसूख़ हो गया और हर मुल्क में जाने का हुक्म आ गया।)[1]

हज़रत अम्र बिन औफ़ मुज़नी रज़ियल्लाहु अन्हु एक हदीस ज़िक्र फ़रमाते हैं जिसमें यह मज़्मून है कि फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु से कुदाल लेकर इस ज़ोर से चट्टान पर मारी कि वह टुकड़े-टुकड़े हो गई और उसमें से एक रोशनी निकली जिससे सारा मदीना रोशन हो गया और ऐसे लगा जैसे कि अंधेरी रात में चिराग़ जल रहा हो और हुज़ूर सल्ल० ने ऐसी तक्बीर कही जैसे दुश्मन पर जीत के वक़्त कही जाती है और मुसलमानों ने भी तक्बीर कही।

हुज़ूर सल्ल० ने दोबारा कुदाल मारी तो फिर ऐसे ही हुआ, हुज़ूर सल्ल० ने तीसरी बार कुदाल मारी तो फिर ऐसे ही हुआ। फिर हज़रत सलमान रज़ि० और मुसलमानों ने हुज़ूर सल्ल० से इसका तज़्किरा किया और उस रोशनी के बारे में हुज़ूर सल्ल० से पूछा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, पहली चोट लगाने से मेरे सामने हियरा नामी जगह के महल और किसरा का मदाइन ऐसे रोशन हो गया जैसे कुत्ते के नोकदार दांत चमकते हैं और हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने मुझे बताया कि मेरी उम्मत उन पर ग़लबा हासिल करेगी और दूसरी चोट लगाने से रूम के लाल महल ऐसे रोशन हो गए जैसे कि कुत्ते के नोकदार दांत चमकते हैं और हज़रत जिब्रील ने मुझे बताया कि मेरी उम्मत उन पर ग़लबा हासिल करेगी और तीसरी चोट लगाने से सनआ के महल ऐसे रोशन हो गए जैसे कि कुत्ते के नोकदार दांत चमकते हैं और हज़रत जिब्रील ने मुझे बताया कि मेरी उम्मत उन पर ग़लबा

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 102,

हासिल करेगी। इसलिए तुम सब ख़ुशख़बरी हासिल करो।

यह सुनकर तमाम मुसलमान बहुत ख़ुश हुए और उन्होंने कहा, अल-हम्दु लिल्लाह, सच्चा वायदा है और जब कुफ़्फ़ार की जमाअतें ख़न्दक़ पर पहुंचीं, तो मुसलमानों ने कहा, यह तो वह हो रहा है, जिसकी हमें अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ने ख़बर दी थी और अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ने सच फ़रमाया था। (इस पर अल्लाह ने फ़रमाया)

इस वाक़िए ने मुसलमानों के ईमान और इताअत को और बढ़ा दिया और मुनाफ़िक़ों ने कहा, तुम्हारे रसूल तुम्हें यह बता रहे हैं कि यह यसरब से यानी मदीना से ही हियरा के महल और किसरा का मदाइन देख रहे हैं और वे जीत कर तुम्हें मिलेंगे और तुम्हारा हाल यह है कि तुम लोग ख़ंदक़ खोद रहे हो और तुम लोग तो मैदान में उनके सामने जा ही नहीं सकते। इस पर मुनाफ़िक़ों के बारे में यह आयत उतरी—

وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللَّهُ

وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا (سورت احزاب آیت ۱۲)

'और जबकि मुनाफ़िक़ और वे लोग जिनके दिलों में रोग है, यों कह रहे थे कि हमसे तो अल्लाह ने और उसके रसूल ने सिर्फ़ धोखे का वायदा कर रखा है।'[1] (सूरः अहज़ाब, आयत 12)

ताईदाते ग़ैबी के बाब में लड़ाइयों में खाने की बरकत के उन्वान में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की एक लम्बी हदीस आ रही है, जिसमें यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुझे छोड़ो सबसे पहले मैं इस पत्थर पर चोट मारूंगा। चुनांचे आपने बिस्मिल्लाह पढ़ी और उस पत्थर पर ऐसी चोट मारी जिससे उसका एक तिहाई हिस्सा टूटकर गिर गया और आपने फ़रमाया, अल्लाहु अकबर, रब्बे काबा की क़सम! रूम के महल।

आपने फिर उस पर ऐसी चोट मारी जिससे एक और टुकड़ा टूटकर गिर पड़ा। आपने फ़रमाया, अल्लाहु अकबर! रब्बे काबा की क़सम!

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 100

फ़ारस के महल ! इस पर मुनाफ़िक़ों ने कहा कि हम तो (अपनी जान बचाने के लिए) अपने आस-पास ख़ंदक़ खोद रहे हैं और यह हमसे फ़ारस और रूम के मुहल्लों का वायदा कर रहे हैं।[1]

और बहुत जल्द ताईदाते ग़ैबीया के बाब में ज़हर के असर न होने के उन्वान में यह मज़्मून आएगा कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने ज़हर पिया और फ़रमाया, कोई इंसान अपने वक़्त से पहले नहीं मर सकता और यह भी आएगा कि अम्र रज़ि० ने कहा, ऐ अरबों की जमाअत ! जब तक तुम्हारे तबक़े (यानी सहाबा) का एक आदमी भी बाक़ी रहेगा, तुम जिस काम या मुल्क का इरादा करोगे, उसके मालिक बन जाओगे और यह भी आएगा कि अम्र रज़ि० ने हियरा वालों से कहा, मैंने आज जैसा साफ़ दलील वाला दिन कभी नहीं देखा और अल्लाह की मदद की वजहों के बाब में आएगा कि हज़रत साबित बिन अक़रम रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, ऐ अबू हुरैरह रज़ि० ! ऐसे लग रहा है कि आप दुश्मन की बहुत ज़्यादा फ़ौजें देख रहे हैं। (हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं) मैंने कहा, जी हां।

हज़रत साबित रज़ि० ने कहा, आप हमारे साथ बद्र की लड़ाई में शरीक नहीं थे। (अल्लाह की ओर से) हमारी मदद तायदाद ज़्यादा होने की वजह से नहीं होती (वह तो ईमान और अमल और दावत देने के जज़्बे की वजह से होती है) और यह भी आएगा कि एक आदमी ने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, आज रूमी कितने ज़्यादा और मुसलमान कितने कम हैं।

हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कहा, नहीं रूमी कितने कम और मुसलमान कितने ज़्यादा हैं, फ़ौज ख़ुदा की मदद से ज़्यादा होती है और ख़ुदा की मदद से महरूम हों, तो कम हो जाती है। ज़्यादा और कम का दारोमदार इंसानों की तायदाद पर नहीं है, अल्लाह की क़सम ! मेरी तमन्ना है कि मेरा अशक़र नामी घोड़ा तन्दुरुस्त हो जाए और रूमियों की तायदाद

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 132,

दोगुनी हो जाए और यह भी आएगा कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को यह ख़त लिखा—

अम्माबादु ! तुम्हारा ख़त मेरे पास आया, जिसमें तुमने लिखा है कि रूमियों की फ़ौजें बहुत ज़्यादा जमा हो गई हैं। याद रखो, अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हमारी मदद सामान की ज़्यादती और फ़ौजों के ज़्यादा होने की वजह से नहीं की थी, हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ लड़ाई में जाया करते थे और हमारे साथ सिर्फ़ दो घोड़े होते थे और कुछ लड़ाइयों में ऊंट इतने कम होते थे कि हम बारी-बारी ऊंट पर सवार होते थे और उहुद की लड़ाई के दिन हम हुज़ूर सल्ल० के साथ थे। हमारे पास सिर्फ़ एक घोड़ा था, जिस पर हुज़ूर सल्ल० सवार थे और अल्लाह हमारे तमाम मुख़ालिफ़ों के ख़िलाफ़ सहारा देते थे और हमारी मदद करते थे।

और पहले यह भी गुज़र चुका है कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने बड़े सख़्त हालत के बावजूद हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ौज रवाना फ़रमाई थी। हर ओर से अरब उन पर टूट पड़े थे, (कुछ क़बीलों के सिवा) सारे अरब वाले मुर्तद हो गए थे और निफ़ाक़ खुल गया था और यहूदी व ईसाई मत गरदन उठाने लगा था और चूंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इंतिक़ाल का सदमा ताज़ा था और सहाबा रज़ि० की तायदाद कम थी और उनके दुश्मन की तायदाद ज़्यादा थी, इस वजह से सहाबा रज़ि० की हालत उस बकरी जैसी थी जो कड़ी सर्दी वाली रात में बारिश में भीग गई हो।

और सहाबा किराम रज़ि० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को यह मश्विरा दिया था कि वह हज़रत उसामा रज़ि० की फ़ौज को रोक लें, लेकिन हज़रत अबूबक्र रज़ि० चूंकि सहाबा रज़ि० में सबसे ज़्यादा समझदार और दूरंदेश थे, इस वजह से उन्होंने कहा, क्या मैं उस फ़ौज को रोक लूं जिसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भेजा था? अगर मैं ऐसा करूं तो यह मेरी बहुत बड़ी जसारत (हिम्मत) होगी। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, सारे अरब मुझ पर टूट पड़ें,

यह मुझे इससे ज़्यादा पसन्द है कि मैं उस फ़ौज को जाने से रोक दूं, जिसे हुज़ूर सल्ल० ने रवाना फ़रमाया था। ऐ उसामा रज़ि० ! तुम अपनी फ़ौज को लेकर वहां जाओ जहां जाने का तुम्हें हुक्म हुआ था और फ़लस्तीन के जिस इलाक़े में जाकर लड़ने का हुज़ूर सल्ल० ने तुम्हें हुक्म दिया था, वहां जाकर मूता वालों से लड़ो, तुम जिन्हें यहां छोड़कर जा रहे हो, अल्लाह उनके लिए काफ़ी हैं।

और मूता की लड़ाई के दिन के बयान में यह गुज़र चुका है कि जब दुश्मन की तायदाद दो लाख हो गई तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, ऐ मेरी क़ौम ! अल्लाह की क़सम ! जिस शहादत को तुम पसन्द नहीं कर रहे हो (सच में) तुम उसी की खोज में निकले हो। हम लोगों से लड़ाई तायदाद, ताक़त और कसरत की बुनियाद पर नहीं लड़ते, बल्कि हम तो लोगों से लड़ाई उस दीन की बुनियाद पर लड़ते हैं, जिसके ज़रिए अल्लाह ने हमें इज़्ज़त दी है, इसलिए चलो दो कामियाबियों में एक कामियाबी तो ज़रूर मिलेगी या तो दुश्मन पर ग़लबा या अल्लाह के रास्ते की शहादत।

इस पर लोगों ने कहा, अल्लाह की क़सम ! इब्ने रवाहा ने बिल्कुल ठीक कहा है। इस बारे में सहाबा रज़ि० के कितने क़िस्से इस किताब में जगह-जगह मौजूद हैं, बल्कि हदीसों, लड़ाइयों और सीरत की किताबों में भी बहुत ज़्यादा मौजूद हैं। इसलिए उन्हें दोबारा ज़िक्र करके हम इस किताब को और ज़्यादा लम्बा नहीं करना चाहते।

ईमान की हक़ीक़त और उसका कमाल

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में तशरीफ़ ले गए तो वहां हज़रत हारिस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु सो रहे थे, हुज़ूर सल्ल० ने उनको पांव से हिलाया और फ़रमाया, अपना सर उठाओ। उन्होंने सर उठाकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ हारिस बिन मालिक ! तुमने किस हाल

में सुबह की? उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने पक्का-सच्चा मोमिन होने की हालत में सुबह की है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हर हक़ बात की कोई हक़ीक़त हुआ करती है, जो तुम कह रहे हो, इसकी क्या हक़ीक़त है?

हज़रत हारिस रज़ि० ने कहा, मैंने अपने आपको दुनिया से हटा लिया और दिन को मैं प्यासा रहता हूं यानी रोज़ा रखता हूं और रात को जागता हूं और मुझे ऐसे मालूम होता है कि जैसे मैं अपने रब के अर्श को देख रहा हूं और जन्नत वालों को जन्नत में एक दूसरे की ज़ियारत करते हुए देख रहा हूं और जहन्नम वालों को एक दूसरे पर भौंकते हुए देख रहा हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, अल्लाह ने तुम्हारा दिल नूरानी बना दिया है और तुमने (ईमान की हक़ीक़त को) पहचान लिया है, इसलिए तुम इस (ईमानी कैफ़ियत) पर पक्के रहो।[1] एक रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुमने (हक़ीक़त को) देख लिया है, अब इसको मज़बूती से पकड़ लो, फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इस बन्दे के दिल में अल्लाह ने ईमान को रोशन किया है।

उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी ! आप मेरे लिए अल्लाहसे शहादत की दुआ फ़रमा दें। हुज़ूर सल्ल०ने दुआ फ़रमा दी। चुनांचे एक दिन एलान हुआ कि ऐ अल्लाह के सवारो ! (घोड़ों पर सवार हो जाओ।) इस पर यही सबसे पहले सवार हुए और यही सबसे पहले शहीद हुए।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले जा रहे थे कि सामने से एक अंसारी नवजवान आए। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, ऐ हारिस ! तुमने किस हाल में सुबह की? उन्होंने कहा, मैंने अल्लाह पर पक्का ईमान लाने की हालत में सुबह की है।

---

1. इब्ने असाकिर,
2. मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 160

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम देख लो, क्या कह रहे हो? क्योंकि हर क़ौल की हक़ीक़त हुआ करती है। उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने अपना दिल दुनिया से हटा लिया है। फिर आगे अस्करी जैसी हदीस ज़िक्र की है और साथ ही कुछ और मज़्मून भी है।[1]

और एक रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हर क़ौल की कोई हक़ीक़त हुआ करती है, तुम्हारे ईमान की क्या हक़ीक़त है?[2]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुमने किस हाल में सुबह की? हज़रत मुआज़ रज़ि० ने कहा, मैंने आप पर ईमान लाने की हालत में सुबह की।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हर बात की सच्चाई की कोई दलील होती है और हर हक़ बात की एक हक़ीक़त होती है, तुम्हारी बात की सच्चाई की क्या दलील है?

हज़रत मुआज़ रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! जब भी सुबह होती है, मैं यह समझता हूं कि मैं शाम नहीं कर सकूंगा और जब भी शाम होती है, मैं यह समझता हूं कि सुबह नहीं कर सकूंगा और जब भी कोई क़दम उठाता हूं, तो यह गुमान करता हूं कि मैं दूसरा क़दम नहीं उठा सकूंगा और गोया कि मैं उन तमाम उम्मतों की ओर देख रहा हूं जो घुटनों के बल बैठी हुई हैं और उन्हें उनके आमालनामे की ओर बुलाया जा रहा है और उनके साथ उनके नबी भी हैं और उनके साथ वे बुत भी हैं, जिनकी वे अल्लाह के अलावा इबादत किया करते थे और गोया कि मैं जहन्नम वालों की सज़ा और जन्नत वालों के अज्र व सवाब को देख रहा हूं।

---

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 161,
2. इसाबा, भाग 1, पृ० 289, हैसमी, भाग 1, पृ० 57

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने (ईमान की हक़ीक़त) पहचान ली, अब उसी पर जमे रहना।[1]

अल्लाह और उसके रसूल की ओर दावत देने के बाब में हज़रत सुवैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु की यह हदीस गुज़र चुकी है कि वह फ़रमाते हैं कि मैं अपनी क़ौम के सात आदमियों का वफ़्द लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गया। जब हम आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और हमने आपसे बात-चीत की तो आपको हमारे बात करने का अन्दाज़, उठने-बैठने का तरीक़ा और पहनावा पसन्द आया। आपने फ़रमाया, तुम कौन लोग हो?

हमने कहा, मोमिन (ईमान वाले) हैं। इस पर आप मुस्कराने लगे और फ़रमाया, हर बात की एक हक़ीक़त और निशानी हुआ करती है, तुम्हारे इस क़ौल और ईमान की क्या हक़ीक़त और निशानी है?

हज़रत सुवैद रज़ि० फ़रमाते हैं, हमने कहा पन्द्रह ख़स्लतें हैं, इनमें से पांच ख़स्लतें तो वे हैं जिनके बारे में आपके क़ासिदों ने हमें हुक्म दिया कि हम उन पर ईमान लाएं और उनमें से पांच ख़स्लतें वे हैं जिनके बारे में आपके क़ासिदों ने हमें हुक्म दिया कि हम उन पर अमल करें और उनमें से पांच ख़स्लतें वे हैं जिनको हमने जाहिलियत के ज़माने में अख़्तियार किया था और हम अब तक उन पर क़ायम हैं, लेकिन अगर उनमें से किसी को आप नागवार समझें तो हम उसे छोड़ देंगे। फिर आगे अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों पर और अच्छी-बुरी तक़्दीर पर ईमान लाने और इस्लाम के अर्कान और अच्छे अख़्लाक़ के बारे में हदीस ज़िक्र की है।

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठा हुआ था कि इतने में क़बीला बनू हारिसा के हज़रत हरमला बिन ज़ैद अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु आए और उन्होंने हुज़ूर सल्ल० के सामने बैठकर हाथ से ज़ुबान की

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 242

ओर इशारा करते हुए अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ईमान यहां पर है और सीने पर हाथ रखकर कहा, और यहां निफ़ाक़ है और यह दिल अल्लाह का ज़िक्र बहुत कम करता है। हुज़ूर सल्ल० ख़ामोश रहे। हज़रत हरमला ने अपनी बात फिर दोहराई।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत हरमला की ज़ुबान का किनारा पकड़ कर कहा, ऐ अल्लाह ! इसकी ज़ुबान को सच बोलने वाला और इसके दिल को शुक्र करने वाला बना दे और इसे मेरी मुहब्बत नसीब फ़रमा और जो मुझसे मुहब्बत करे उसकी मुहब्बत भी इसे नसीब फ़रमा और इसके मामले को ख़ैर की तरफ़ मोड़ दे।

हज़रत हरमला रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे बहुत-से भाई मुनाफ़िक़ हैं। मैं उनका सरदार था। क्या मैं आपको उनका नाम न बता दूं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो भी हमारे पास इस तरह आएगा, जिस तरह तुम हमारे पास आए, हम उसके लिए ऐसे ही इस्तग़फ़ार करेंगे जैसे हमने तुम्हारे लिए किया और जो निफ़ाक़ पर डटा रहेगा, तो अल्लाह ही उससे ख़ुद निमट लेंगे।[1]

अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात पर ईमान लाना

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक आदमी को एक फ़ौज का अमीर बनाकर भेजा, वह जब भी अपने साथियों को नमाज़ पढ़ाता तो 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' ज़रूर पढ़ता। जब वे लोग वापस आए तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से उसका तज़्किरा किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उससे पूछो, वह ऐसा क्यों करता है?

उन लोगों ने उससे पूछा तो उसने बताया कि चूंकि इस सूर: में रहमान की सिफ़तों का तज़्किरा है, इसलिए इसका पढ़ना मुझे पसन्द है।

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 256, इसाबा, भाग 1, पृ० 320,

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उसे बता दो कि अल्लाह उससे मुहब्बत करते हैं।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक यहूदी आलिम ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा, 'ऐ मुहम्मद सल्ल० !' या कहा, 'ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह ने आसमानों को एक उंगली पर और ज़मीनों को दूसरी उंगली पर रखा और पहाड़ों, पेड़ों, पानी और गीली मिट्टी को तीसरी उंगली पर और बाक़ी सारी मख़्लूक़ (जीव-जन्तु) को चौथी उंगली पर रखा और अल्लाह इन तमाम चीज़ों को बुलाकर फ़रमाते हैं कि मैं ही बादशाह हूं।

हुज़ूर सल्ल० उस यहूदी आलिम की इस बात की तस्दीक़ करते हुए इतना हंसे कि आपके मुबारक दांत दिखाई देने लगे। फिर आपने यह आयत आख़िर तक पढ़ी—

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيَامَةِ (سورت زمر آیت ۶۷)

'और (अफ़सोस है कि) उन लोगों ने ख़ुदा की कुछ बरतरी न मानी जैसा कि बरतरी माननी चाहिए थी, हालांकि (इसकी वह शान है कि) सारी ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी क़ियामत के दिन और तमाम आसमान लिपटे होंगे उसके दाहिने हाथ में। वह पाक और बरतर है उनके शिर्क से।'[2]

(सूरः ज़ुमर, आयत 67)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने पूछा कि क़ियामत के दिन काफ़िर को कैसे मुंह के बल उठाया जाएगा? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जिस ज़ात ने उसे दुनिया में पांव के बल चलाया, वह इस बात की भी क़ुदरत रखता है कि उसे क़ियामत के दिन मुंह के बल चलाए।[3]

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन उसैद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार

1. बैहक़ी, पृ० 208,
2. बैहक़ी, पृ० 235,
3. बैहक़ी, पृ० 356, कंज़, भाग 7, पृ० 228,

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने खड़े होकर (अपनी क़ौम से) कहा, ऐ बनू ग़िफ़ार! तुम बात किया करो और क़सम न खाया करो, क्योंकि सादिक़ व मस्दूक़ (यानी जो ख़ुद भी सच बोलते थे और उनसे फ़रिश्ता भी सच बात आकर कहता था, यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मुझे यह बताया है कि (क़ियामत के दिन) लोगों को तीन जमाअतों में उठाया जाएगा—

एक जमाअत तो सवार होगी और ये लोग खाते-पीते और कपड़े पहने हुए होंगे और एक जमाअत पैदल भाग रही होगी और एक जमाअत को फ़रिश्ते मुंह के बल घसीट कर (जहन्नम की) आग के पास जमा कर रहे होंगे।

उनमें से एक आदमी ने पूछा कि दो जमाअतों को तो हमने पहचान लिया है, लेकिन जो लोग पैदल भाग रहे होंगे उनका यह हाल क्यों होगा?

हज़रत अबूज़र रज़ि० ने कहा, अल्लाह सवारी पर आफ़त डाल देंगे और एक सवारी भी बाक़ी न रहेगी, यहां तक कि एक आदमी के पास एक पसन्दीदा बाग़ होगा। वह यह बाग़ देकर पालान वाली बूढ़ी ऊंटनी लेना चाहेगा, लेकिन वह भी उसे न मिल सकेगी।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के मांजाए भाई हज़रत तुफ़ैल बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने ख़्वाब में देखा कि नसारा की एक जमाअत से मेरी मुलाक़ात हुई। मैंने उनसे कहा कि अगर तुम लोग यह दावा न करो कि हज़रत मसीह अल्लाह के बेटे हैं, तो तुम लोग बहुत अच्छे हो। उन्होंने कहा, अगर तुम लोग यह न कहो कि जैसे अल्लाह ने चाहा, और जैसे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने चाहा, तो तुम भी बहुत अच्छे हो जाओ।

फिर मेरी यहूदियों की एक जमाअत से मुलाक़ात हुई। मैंने उनसे कहा, अगर तुम लोग यह दावा न करो कि हज़रत उज़ैर (अलैहिस्सलाम) अल्लाह के बेटे हैं, तो तुम लोग बहुत अच्छे हो। उन्होंने कहा, तुम लोग

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 65, हाकिम, भाग 4, पृ० 564

थे तो यह कहते हो कि जैसे अल्लाह ने चाहा, और जैसे मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) ने चाहा।

मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर यह ख़्वाब सुनाया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने यह ख़्वाब किसी को बताया है? मैंने कहा, जी हां।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने अल्लाह की हम्द व सना बयान फ़रमाकर यह इर्शाद फ़रमाया, तुम्हारे भाई ने यह ख़्वाब देखा, जिसका मज़्मून तुम तक पहुंच चुका है, इसलिए तुम लोग यह न कहा करो, बल्कि यह कहा करो, जैसे अल्लाह वह्दहू ला शरीक लहू ने चाहा।[1]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुसलमानों में से एक आदमी ने ख़्वाब में देखा कि अह्ले किताब में से एक आदमी उसे मिला जिसने कहा कि तुम लोग अगर शिर्क न करते और जैसे अल्लाह और मुहम्मद ने चाहा न कहते, तो तुम लोग बहुत अच्छे होते। उस आदमी ने उस ख़्वाब का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ज़िक्र किया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आप लोगों की यह बात मुझे भी पसन्द नहीं थी, इसलिए आगे आप लोग यों कहा करें, जैसे अल्लाह ने चाहा, फिर जैसे फ़्लां ने चाहा, यानी अल्लाह और रसूल दोनों को एक जुम्ले (वाक्य) में इकट्ठा मिलाकर न लाओ, बल्कि अलग-अलग जुम्लों में लेकर आओ।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक आदमी ख़िदमत में हाज़िर होकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी काम के बारे में बात करने लगा और बात करते-करते उसने यों कह दिया जैसे अल्लाह और आप चाहें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुमने मुझे अल्लाह के बराबर बना दिया है? बल्कि यों कहो, जैसा अकेला अल्लाह चाहे।[3]

1. बैहक़ी, पृ० 110
2. बैहक़ी, पृ० 110
3. बैहक़ी, पृ० 110

हज़रत औज़ाई रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक यहूदी ने आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मशीयत के बारे में पूछा (कि किसके चाहने से काम होता है)। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, काम तो अल्लाह ही के चाहने से होता है।

उस यहूदी ने कहा कि मैं खड़ा होना चाहता हूं, तो खड़ा हो जाता हूं (यानी मेरे चाहने से हुआ।) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह ने भी तुम्हारे खड़े होने को चाह लिया था, (इसलिए तुम खड़े हो सके) फिर उस यहूदी ने कहा, मैं बैठना चाहता हूं, (तो बैठ जाता हूं।) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह ने भी तुम्हारे बैठने को चाह लिया था।

उस यहूदी ने कहा, मैं खजूर के इस पेड़ को काटना चाहता हूं, (तो काट लेता हूं) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह ने चाह लिया था कि तुम उस पेड़ को काट लो। उस यहूदी ने कहा, मैं उस पेड़ को बाक़ी रखना चाहता हूं, (तो वह बाक़ी रह जाता है) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह ने चाह लिया था कि तुम उसे बाक़ी रखो।

हज़रत औज़ाई कहते हैं कि फिर हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए और कहा कि अल्लाह ने आपको यह दलील सुझाई जैसे कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को सुझाई थी। यही मज़्मून लेकर क़ुरआन की यह आयत उतरी—

وَمَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَائِمَةً عَلٰى
اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِىَ الْفَاسِقِيْنَ (سورة حشر آيت ٥)

'जो खजूरों के पेड़ के तने तुमने काट डाले या उनको उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया हो, सो (दोनों बातें) ख़ुदा ही के हुक्म (और रिज़ा के) मुताबिक़ हैं और ताकि काफ़िरों को ज़लील करे।'[1] (सूरः हश्र, आयत 5)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हुदैबिया से वापस आ रहे थे तो आपने रात के आख़िरी हिस्से में एक जगह पड़ाव डाला और फ़रमाया,

1. बैहक़ी, पृ० 111

हमारा पहरा कौन देगा? मैंने कहा, मैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम? तुम तो सोते रह जाओगे? फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अच्छा, तुम ही पहरा दो।

चुनांचे मैं पहरा देने लगा। जब सुबह सादिक़ होने लगी, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात पूरी हो गई और मुझे नींद आ गई और जब सूरज की गर्मी हमारी पीठ पर पड़ी, तब हम लोगों की आंख खुली।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० उठे और ऐसे मौक़े पर जो किया करते थे, वह किया, फिर आपने सुबह की नमाज़ पढ़ाई। फिर फ़रमाया, अगर अल्लाह चाहते तो तुम यों सोते न रह जाते और तुम्हारी नमाज़ क़ज़ा न होती, लेकिन अल्लाह ने चाहा कि तुम्हारे बाद आने वालों में से कोई सोता रह जाए या नमाज़ पढ़ना भूल जाए, तो उसके लिए अमली नमूना सामने आ जाए।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हुमा वुज़ू वाले बरतन की हदीस में अपने वालिद से नक़ल करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया (कि नमाज़ क़ज़ा हो जाने के मौक़े पर) जब अल्लाह ने चाहा तुम्हारी रूहों को क़ब्ज़ फ़रमा लिया और जब चाहा, वापस कर दिया। फिर सहाबा रज़ि० ने सूरज की रोशनी के सफ़ेद होने तक (वुज़ू, इस्तिंजा वग़ैरह की) अपनी ज़रूरतें पूरी कीं, फिर खड़े होकर हुज़ूर सल्ल० ने नमाज़ पढ़ाई।[2]

हज़रत तारिक़ बिन शिहाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक यहूदी ने आकर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि ज़रा यह तो बताएं कि अल्लाह ने फ़रमाया है—

وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ (سورت آل عمران آیت ۱۳۳)

'और जन्नत जिसकी समाई ऐसी है जैसे सब आसमान व ज़मीन'

(सूरः आले इम्रान, आयत 133)

---

1. बैहक़ी, पृ० 109
2. बैहक़ी, पृ० 109

(जब सब जगह जन्नत हो गई) तो फिर जहन्नम कहां हैं? हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० से फ़रमाया कि इसे जवाब दो, लेकिन उनमें से किसी के पास इसका जवाब न था।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ज़रा तुम यह बताओ कि जब रात आकर सारी ज़मीन पर छा जाती है, तो दिन कहां चला जाता है? उस यहूदी ने कहा, जहां अल्लाह चाहते हैं, वहां चला जाता है। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐसे ही जहन्नम भी वहां है जहां अल्लाह चाहता है। इस पर उस यहूदी ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अल्लाह की उतारी गई किताब में भी उसी तरह है जैसे आपने फ़रमाया।[1]

हज़रत जाफ़र बिन मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि अपने वालिद (बाप) (हज़रत मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि) से नक़ल करते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बताया गया कि यहां एक आदमी है जो मशीयत और इरादे के बारे में बातें करता है, तो हज़रत अली रज़ि० ने उससे कहा, ऐ अल्लाह के बन्दे! अल्लाह ने जैसे चाहा, तुम्हें वैसे पैदा किया, या जैसे तुमने चाहा (तुम्हें वैसे पैदा किया?)

उसने कहा, नहीं, बल्कि जैसे अल्लाह ने चाहा वैसे पैदा किया। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, जब वह चाहता है, तुम्हें बीमार करता है या जब तुम चाहते हो? उसने कहा, नहीं, बल्कि जब वह चाहता है। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, फिर जब वह चाहता है, तुम्हें शिफ़ा देता है या जब तुम चाहते हो? उसने कहा, नहीं, बल्कि जब वह चाहता है।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, जहां तुम चाहते हो, अल्लाह तुम्हें वहां दाख़िल करेगा या जहां वह चाहता है? उसने कहा, जहां वह चाहता है। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! अगर तुम इसके अलावा कुछ और कहते तो मैं तुम्हारे इस दो आंखों वाले सर

1 कंज़, भाग 7, पृ० 277,

को तलवार से उड़ा देता।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जब हम आपके पास होते हैं तो हमारी बड़ी अजीब ईमानी हालत होती है, लेकिन जब हम आपसे जुदा होते हैं, तो वह हालत नहीं रहती। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम्हारा अपने रब के साथ क्या मामला है? सहाबा रज़ि० ने कहा, हम तंहाई में भी और लोगों के सामने भी अल्लाह ही को अपना रब समझते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, फिर यह निफ़ाक़ नहीं है।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक देहाती ने आकर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क़ियामत के दिन मख़्लूक़ का हिसाब कौन लेगा? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह !

उस देहाती ने कहा, काबा के रब की क़सम ! फिर तो हम नजात पा गए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ देहाती ! कैसे? उसने कहा, करीम ज़ात जब किसी पर क़ाबू पा लेती है, तो माफ़ कर देती है।[3]

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को क़बीला बनू किलाब में सदक़े वसूल करने के लिए भेजा। उन्होंने (वहां जाकर सदक़े वसूल करके) उन्हीं में बांट दिए और (अपने लिए) कोई चीज़ न छोड़ी और अपना जो टाट लेकर गए थे, उसे ही अपनी गरदन पर रखे हुए वापस आए तो उनकी बीवी ने उनसे पूछा कि सदक़े वसूल करने वाले अपने घरवालों के लिए जो हदिए लाया करते हैं और आप भी वे लाए हैं, वे कहां हैं?

---

1 तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 211
2 तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 397,
3 कंज़, भाग 7, पृ० 270

हज़रत मुआज़ रज़ि० ने कहा, मेरे साथ (मुझे) दबा कर रखने वाला एक निगरान था (इसलिए हदिए नहीं ला सका।) उनकी बीवी ने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के यहां तो अमीन (अमानतदार) थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपके साथ दबा कर रखने वाला एक निगरान भेज दिया, (क्या वह आपको अमीन नहीं समझते?)

उनकी बीवी ने अपने ख़ानदान की औरतों में इसका बड़ा शोर मचाया और हज़रत उमर रज़ि० की शिकायत की।

जब हज़रत उमर रज़ि० को यह ख़बर पहुंची तो उन्होंने हज़रत मुआज़ रज़ि० को बुलाकर पूछा, क्या मैंने तुम्हारे साथ कोई निगरान भेजा था? हज़रत मुआज़ रज़ि० ने कहा, मुझे अपनी बीवी से माज़रत करने के लिए और कोई बहाना न मिला। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० हंसे और उन्हें कोई चीज़ दी और फ़रमाया, (यह देकर) उसे राज़ी कर लो।

इब्ने जरीर कहते हैं कि निगरान से हज़रत मुआज़ रज़ि० की मुराद अल्लाह हैं।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जो तमाम आवाज़ों को सुन लेता है। एक औरत अपना झगड़ा लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आई और हुज़ूर सल्ल० से बातें करने लगी, हालांकि मैं कमरे के एक कोने में थी, लेकिन मुझे उसकी बात सुनाई नहीं दे रही थी (और अल्लाह ने उसकी आवाज़ सुन ली।), फिर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِیْ تُجَادِلُكَ فِیْ زَوْجِهَا آخر تک (سورت مجادلہ آیت ۱)

आख़िर तक

'बेशक अल्लाह ने उस औरत की बात सुन ली, जो आपसे अपने शौहर के मामले में झगड़ती थी, और (अपने रंज व ग़म की) अल्लाह से

1 कंज़, भाग 7, पृ० 87

शिकायत करती थी और अल्लाह तुम दोनों की बातें सुन रहा था। (और) अल्लाह (तो) सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है।'[1]

(सूरः मुजादला, आयत 1)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, बरकत वाली है वह ज़ात जो हर चीज़ को सुन लेती है। मैं हज़रत ख़ौला बिन्त सालबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा की बात सुन रही थी, लेकिन कभी उनकी आवाज़ मुझे आती थी और कभी नहीं आती थी। वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपने ख़ाविंद की शिकायत यों कर रही थीं कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे ख़ाविंद ने मेरा सारा माल खा लिया और मेरी जवानी ख़त्म कर दी और मेरे पेट से उसके बहुत से बच्चे हुए यहां तक कि जब मेरी उम्र ज़्यादा हो गई और मेरे बच्चे होने बन्द हो गए, तो उसने मुझसे ज़िहार कर लिया। (ज़िहार तलाक़ की एक क़िस्म है।) ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे उसकी शिकायत करती हूं।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हज़रत ख़ौला रज़ि० अभी वहां से उठी नहीं थीं कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम—

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ فِي زَوْجِهَا

वाली आयत लेकर आ गए। हज़रत ख़ौला रज़ि० के ख़ाविन्द हज़रत औस बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु थे।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात हुई तो हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, ऐ लोगो ! अगर मुहम्मद (सल्ल०) तुम्हारे माबूद थे, जिनकी तुम इबादत किया करते थे, तो सुन लो, उनका इंतिक़ाल हो चुका और अगर तुम्हारा माबूद वह ज़ात है जो आसमान में है, तो फिर तुम्हारे माबूद का इंतिक़ाल नहीं हुआ। फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने यह आयत पढ़ी—

---

1 तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 318, बैहक़ी, पृ० 136,

2 तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 318

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ (سورت آل عمران آیت ۴۴)

'और मुहम्मद निरे रसूल ही तो हैं, आपसे पहले और भी बहुत-से रसूल गुज़र चुके हैं।' (आले इम्रान, आयत 44)[1]

'सहाबा किराम का हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त पर इत्तिफ़ाक़' के बाब में हज़रत अबूबक्र रज़ि० का ख़ुत्बा गुज़र चुका है, उसमें यह है कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इतनी उम्र अता फ़रमाई और उनको इतना अर्सा दुनिया में बाक़ी रखा कि उस अर्से में आपने अल्लाह के दीन को क़ायम कर दिया, अल्लाह के हुक्म को ग़ालिब कर दिया, अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा दिया और अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया, फिर आपको अल्लाह ने इसी हालत पर वफ़ात दी और हुज़ूर सल्ल० तुम्हें एक (साफ़ और खुले) रास्ते पर छोड़कर गए हैं, अब जो भी हलाक होगा, वह इस्लाम की खुली दलीलों और (कुफ़्र व शिर्क से) शिफ़ा देने वाले क़ुरआन को देखकर ही होगा। जिस आदमी के रब अल्लाह हैं, तो अल्लाह हमेशा ज़िंदा हैं, जिन पर मौत नहीं आ सकती और जो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की इबादत किया करता था और उनको माबूद का दर्जा दिया करता था तो (वह सुन ले कि) उसका माबूद मर गया। इसलिए ऐ लोगो ! अल्लाह से डरो और अपने दीन को मज़बूत पकड़ो और अपने रब पर भरोसा करो, क्योंकि अल्लाह का दीन मौजूद है और अल्लाह की बात पूरी है और जो अल्लाह (के दीन) की मदद करेगा, अल्लाह उसकी मदद फ़रमाएंगे और अपने दीन को इज़्ज़त अता फ़रमाएंगे और अल्लाह की किताब हमारे पास है जो कि नूर और शिफ़ा है। इस किताब के ज़रिए अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हिदायत अता फ़रमाई और इस किताब में अल्लाह की हराम और हलाल की हुई चीज़ों का ज़िक्र है। अल्लाह की क़सम, अल्लाह की मख़्लूक़ में से जो भी हमारे ऊपर फ़ौज लाएगा, हम उसकी परवाह नहीं

1 कंज़, भाग 4, पृ० 51,

करेंगे। बेशक अल्लाह की तलवारें सुती हुई हैं और हमने अभी उनको रखा नहीं और जो हमारी मुख़ालफ़त करेगा, हम उससे जिहाद करेंगे जैसे कि हम हुज़ूर सल्ल० के साथ जिहाद किया करते थे।

यह हदीस बैहक़ी ने हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है।

हज़त अलक़मा रहमतुल्लाहि अलैहि अपनी वालिदा से नक़ल करते हैं कि एक औरत हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर आई और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुजरे (जिसमें हुज़ूर सल्ल० दफ़न हैं, उस) के पास नमाज़ पढ़ने लगी। वह बिल्कुल ठीक-ठाक थी। जब सज्दे में गई तो उसने सज्दे से सर न उठाया, बल्कि इसी हाल में मर गई।

हज़रत आइशा ने (उसके यों अचानक मर जाने पर) फ़रमाया कि तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जो ज़िंदा करता है और मौत देता है और (मेरे भाई) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा (की अचानक मौत) के मसले में मुझे उस औरत के इस क़िस्से से बड़ा सबक़ मिला। हज़रत अब्दुर्रहमान दोपहर को अपनी जगह सोए थे, जब लोग उन्हें जगाने लगे तो देखा कि उनका इंतिक़ाल हो चुका है। (चुनांचे उनको जल्दी से ग़ुस्ल देकर दफ़न कर दिया गया।) इससे मेरे मन में यह बात बैठ गई थी कि इनके साथ शरारत की गई है और वह ज़िंदा थे, लेकिन जल्दी में उन्हें दफ़न कर दिया गया है। अब जो मैंने इस औरत को यों एकदम मरते देखा तो इससे मुझे बड़ा सबक़ हुआ और हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० के बारे में जो मेरा ग़लत ख़्याल था, वह जाता रहा।[1]

फ़रिश्तों पर ईमान लाना

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह ने पानी के ख़ज़ाने पर फ़रिश्ता मुक़र्रर फ़रमा रखा है। उस फ़रिश्ते के हाथों में एक पैमाना है और उस पैमाने में से गुज़र कर ही पानी की हर बूंद ज़मीन पर

1 हाकिम, भाग 3, पृ० 476,

आती है, लेकिन हज़रत नूह अलैहिस्सलाम (के तूफ़ान) वाले दिन ऐसा न हुआ, बल्कि अल्लाह ने सीधे पानी को हुक्म दिया और पानी को संभालने वाले फ़रिश्तों को हुक्म न दिया, जिस पर वे फ़रिश्ते पानी को रोकते रह गए, लेकिन पानी न रुका, बल्कि फ़रिश्तों पर ज़ोर करके चल पड़ा।

अल्लाह का फ़रमान है—

إِنَّا لَمَّا طَغَى الْمَاءُ (سورت حاقہ آیت ۱۱)

'जबकि (नूह अलैहिस्सलाम के वक़्त में) पानी की बाढ़ हुई।'

(सूरः हाक़्क़ा, आयत 11)

इस फ़रमान का मतलब यही है कि पानी (ख़ुदा का फ़रमांबरदार था, लेकिन) फ़रिश्ते पर सरकश हो गया था और (इसी तरह से अल्लाह ने हवा के ख़ज़ाने पर फ़रिश्ता मुक़र्रर फ़रमा रखा है) उस फ़रिश्ते के हाथ में एक पैमाना है, हवा उसमें से गुज़र कर ज़मीन पर आती है लेकिन आद क़ौम की हलाक़त वाले दिन ऐसा न हुआ, बल्कि अल्लाह ने हवा को सीधे (चलने का) हुक्म दिया और हवा को संभालने वाले फ़रिश्तों को हुक्म न दिया। इस पर वे फ़रिश्ते हवा को रोकते रह गए, लेकिन हवा ज़ोर करके चल पड़ी। अल्लाह का फ़रमान है—

بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ (سورت حاقہ آیت ۶)

'एक तेज़ व तुंद हवा' (सूरः हाक़्क़ा, आयत 6) वह हवा इन फ़रिश्तों की नाफ़रमान हो गई थी, (और ख़ुदा की फ़रमांबरदार थी।)[1]

हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी हज़रत बुक़ैरा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, जब हज़रत सलमान की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन्होंने मुझे बुलाया, उस वक़्त वह एक बालाख़ाने में थे, जिसके चार दरवाज़े थे और मुझसे कहा, ऐ बुक़ैरा! इन दरवाज़ों को खोल दो, क्योंकि आज मेरे पास कुछ मिलने वाले आएंगे और मुझे यह मालूम नहीं है कि वे कौन-से दरवाज़े से मेरे पास आएंगे?

---

1 कंज़, भाग 1, पृ० 273

फिर अपना मशक मंगवा कर मुझसे कहा, इसे एक छोटे बरतन में पानी में घोल कर लाओ, मैं घोल कर ले आई, तो मुझसे कहा, यह मशक वाला पानी मेरे बिस्तर के चारों ओर छिड़क दो, फिर नीचे चली जाओ और वहां थोड़ी देर ठहरी रहो। फिर जब तुम ऊपर आओगी, तो तुम मेरे बिस्तर पर (कोई चीज़) देखोगी। (चुनांचे मैंने ऐसे ही किया और) जब मैं ऊपर आई तो देखा कि उनकी रूह निकल चुकी है और वह ऐसे लग रहे थे कि जैसे वह अपने बिस्तर पर सो रहे हों।[1]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया, तो उन्होंने अपनी घरवाली से कहा, मैंने जो मुश्क वाली थैली तुम्हें छिपा कर रखने के लिए दी थी, वह ले आओ। वह कहती है, मैं वह मुश्क की थैली ले आई।

उन्होंने कहा, एक प्याले में पानी ले आओ (मैं प्याले में पानी ले आई) उन्होंने उसमें मुश्क डालकर उसे अपने हाथ से घोला, फिर कहा, इसे मेरे चारों ओर छिड़क दो, क्योंकि मेरे पास अल्लाह की ऐसी मख़्लूक़ आने वाली है जो ख़ुश्बू तो सूंघ लेती है, लेकिन खाना नहीं खाती। फिर तुम दरवाज़ा बन्द करके नीचे उतर जाओ।

उनकी घरवाली कहती हैं कि मैंने पानी छिड़का और नीचे आ गई और थोड़ी देर ही बैठी थी कि मैंने आहट सुनी। मैं ऊपर गई तो देखा कि उनका इंतिक़ाल हो चुका था।[2]

इब्ने साद ही में हज़रत अता बिन साइब रहमतुल्लाहि अलैहि की रिवायत है कि जिसमें यह क़िस्सा थोड़े में है। उसमें यह मज़्मून है कि हज़रत सलमान रज़ि० ने फ़रमाया, आज रात मेरे पास फ़रिश्ते आएंगे जो ख़ुश्बू तो सूंघ लेते हैं, लेकिन खाना नहीं खाते और इसी तरह के और क़िस्से ग़ैबी ताईदों के बाब में फ़रिश्तों के ज़रिए मदद के सिलसिले में इनशाअल्लाह आएंगे।

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 92
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 92

तक़्दीर पर ईमान लाना

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अंसार के एक बच्चे के जनाज़े के लिए बुलाया गया। मैंने कहा, उस बच्चे के लिए ख़ुशख़बरी हो, यह जन्नत की चिड़ियों में से एक चिड़िया है और इसने कोई गुनाह नहीं किया और न गुनाह का ज़माना इसने पाया, (यानी बालिग़ नहीं हुआ)।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ आइशा रज़ि० ! तुम जो कुछ कह रही हो, हक़ इसके अलावा कुछ और है। अल्लाह ने जन्नत को पैदा फ़रमाया और जन्नत के लिए कुछ लोग पैदा किए, और उनके जन्नत में जाने का फ़ैसला अल्लाह ने उस वक़्त किया, जबकि वे अपने बाप की पीठों में थे और अल्लाह ने जहन्नम की आग को पैदा किया और उसमें जाने के लिए कुछ लोगों को पैदा किया और अल्लाह ने उनके लिए जहन्नम का फ़ैसला उस वक़्त किया जबकि वे अपने बाप की पीठों में थे।[1]

हज़रत वलीद बिन उबादा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं (अपने वालिद) हज़रत उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में गया, वह बीमार थे। मेरा अन्दाज़ा यह था कि उनका इस बीमारी में इन्तिक़ाल हो जाएगा। मैंने कहा, ऐ अब्बा जान ! ज़रा कोशिश करके मुझे वसीयत फ़रमा दें।

उन्होंने फ़रमाया, मुझे बिठा दो। जब लोगों ने उन्हें बिठा दिया, तो फ़रमाया, ऐ मेरे बेटे ! तुम ईमान का मज़ा उस वक़्त चख सकोगे और अल्लाह के इल्म की हक़ीक़त के हक़ तक उस वक़्त पहुंच सकोगे जब तुम अच्छी और बुरी तक़्दीर पर ईमान ले आओगे।

मैंने कहा, ऐ अब्बा जान ! मुझे यह कैसे पता चलेगा कि कौन-सी तक़्दीर अच्छी है और कौन-सी बुरी है ? उन्होंने फ़रमाया, तुम यह समझ लो कि जो अच्छाई या बुराई तुम्हें नहीं पहुंची, वह तुम्हें पहुंचने वाली

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 268,

नहीं थी और जो तुम्हें पहुंची है, वह तुम्हें छोड़ने वाली नहीं थी। ऐ मेरे बेटे! मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि अल्लाह ने सबसे पहले क़लम पैदा फ़रमाया, फिर उससे फ़रमाया, लिख।

चुनांचे उसने उसी वक़्त वह सब कुछ लिख दिया जो क़ियामत तक होने वाला है। ऐ मेरे बेटे! अगर तुम इस हाल पर मरे कि तुम्हारे दिल में यह यक़ीन न हुआ तो तुम जहन्नम की आग में दाख़िल हो जाओगे।[1]

हज़रत अबू नज़रा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में से एक आदमी जिनको अबू अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु कहा जाता था, वह बीमार थे, उनके साथी उनकी बीमारपुर्सी करने आए, तो देखा कि वह रो रहे हैं। साथियों ने उनसे पूछा, आप क्यों रो रहे हैं? क्या आपसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह नहीं फ़रमाया था कि अपनी मूंछों को कतरवाओ और फिर उसी पर जमे रहो, यहां तक कि तुम मुझसे (क़ियामत के दिन) आ मिलो। (इसमें आपके ईमान पर ख़ात्मे की और क़ियामत के दिन हुज़ूर सल्ल० से मुलाक़ात की ख़ुशख़बरी है।)

उन्होंने कहा, हां, हुज़ूर सल्ल० ने यह फ़रमाया था, लेकिन मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह भी फ़रमाते हुए सुना है कि अल्लाह ने (इंसानों की) एक मुट्ठी दाहिने हाथ में ली और दूसरी मुट्ठी दूसरे हाथ में ली और फ़रमाया कि इस (दाहिनी) मुट्ठी वाले इस (जन्नत) के लिए हैं और इस (दूसरी) मुट्ठी वाले इस (जहन्नम) के लिए हैं और मुझे कोई परवाह नहीं (कि कौन किस मुट्ठी में है और वह कहां जाएगा?) तो मुझे मालूम नहीं कि मैं कौन-सी मुट्ठी में हूं? (अल्लाह की ज़ात तो बहुत बे-नियाज़ है, उस पर किसी का ज़ोर नहीं चलता।)[2]

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त जब

---

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 268,
2. हैसमी, भाग 7, पृ० 186

क़रीब आया, तो वह रोने लगे, तो उनसे किसी ने पूछा, आप क्यों रो रहे हैं ?

हज़रत मुआज़ रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! न तो मैं मौत से घबरा कर रो रहा हूं और न ही दुनिया को पीछे छोड़कर जाने के ग़म में रो रहा हूं, बल्कि इस वजह से रो रहा हूं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि (इंसानों की) दो मुट्ठियां हैं, एक मुट्ठी जहन्नम की आग में जाएगी और दूसरी जन्नत में और मुझे मालूम नहीं है कि मैं इन दोनों मुट्ठियों में से किस में हूं ?[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से किसी आदमी ने कहा कि एक आदमी हमारे पास आया है जो तक़्दीर को झुठलाता है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० उस वक़्त अंधे हो चुके थे। उन्होंने फ़रमाया, मुझे उसके पास ले जाओ। लोगों ने कहा, ऐ अबू अब्बास ! आप उसके साथ क्या करेंगे ?

उन्होंने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर वह मेरे क़ाबू में आ गया, तो मैं उसकी नाक दांतों से ऐसे काटूंगा कि वह कटकर अलग हो जाए और अगर उसकी गरदन मेरे क़ाबू में आ गई तो मैं उसे कुचल दूंगा, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि गोया कि मैं बनू फ़िह्र की मुश्रिक औरतों को ख़ज़रज का तवाफ़ करते हुए और उनके सुरीन हिलते हुए देख रहा हूं और यह (तक़्दीर को झुठलाना) इस उम्मत का पहला शिर्क है। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, पहले तो यह कहेंगे कि शर अल्लाह के मुक़द्दर करने से नहीं है, फिर उनका यह बुरा और ग़लत ख़्याल उन्हें इस पर ले आएगा कि ख़ैर भी अल्लाह के मुक़द्दर करने से नहीं है।[2]

हज़रत अता बिन अबी रबाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमत में आया। वह

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 187
2. अहमद,

ज़मज़म (के कुंएं) से पानी निकाल रहे थे, जिससे उनके कपड़ों का निचला हिस्सा गीला हो चुका था। मैंने उनसे कहा, कुछ लोगों ने तक़्दीर पर एतराज़ किया है। उन्होंने फ़रमाया, अच्छा क्या लोगों ने ऐसा कर लिया है? मैंने कहा, जी हां।

उन्होंने फ़रमाया, तक़्दीर पर एतराज़ करने वालों के बारे में ही ये आयतें उतरी हैं—

ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ (سورت قمر آیت ۴۸، ۴۹)

'तो उनसे कहा जाएगा कि दोज़ख़ (की आग) के लगने का मज़ा चखो। हमने हर चीज़ को अन्दाज़े से पैदा किया।'

(सूरः क़मर, आयत 48, 49)

यही लोग उम्मत में सबसे बुरे हैं, न तो इनके बीमारों की बीमारपुर्सी करो और न इनके मुर्दों के जनाज़े की नमाज़ पढ़ो। अगर मुझे इनमें से कोई नज़र आ गया तो मैं अपनी इन दो उंगलियों से उसकी दोनों आंखें फोड़ दूंगा।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मेरा दिल यह चाहता है कि अगर तक़्दीर के इंकार करने वालों में से कोई मेरे पास आ जाए तो मैं उसके सर को कुचल दूं। लोगों ने पूछा, क्यों?

उन्होंने फ़रमाया, इस वजह से कि अल्लाह ने लौहे महफ़ूज़ को एक सफ़ेद मोती से पैदा किया। उस लौहे महफ़ूज़ के दोनों तरफ़ के पट्ठे लाल याक़ूत के हैं। उसका क़लम नूर है, उसकी किताब नूर है, उसकी चौड़ाई आसमान और ज़मीन के बीच के फ़ासले के बराबर है। हर दिन अल्लाह उसे तीन सौ साठ बार देखते हैं और हर बार देखने पर (न जाने कितनी मख़्लूक़ को) पैदा करते हैं, ज़िंदा करते हैं और मौत देते हैं, इज़्ज़त देते हैं और ज़िल्लत देते हैं और जो चाहते हैं, करते हैं।[2]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर

---

1. तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 267
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 325

रज़ियल्लाहु अन्हुमा का एक दोस्त शाम का रहने वाला था, जिससे उनका पत्र-व्यवहार रहता था। एक बार हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने उसे लिखा कि मुझे यह ख़बर पहुंची है कि तुम तक़्दीर के बारे में कुछ एतराज़ करने लग गए हो। ख़बरदार! आगे मुझे कभी ख़त न लिखना, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि मेरी उम्मत में ऐसे लोग होंगे जो तक़्दीर को झुठलाएंगे।[1]

हज़रत नज़्ज़ाल बिन सबरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! यहां कुछ लोग ऐसे हैं, जो यह कहते हैं कि जो काम आगे होने वाला है, उसका पता अल्लाह को उस वक़्त चलता है जब वह काम हो जाता है।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, उनकी मांएं उनको गुम करें, यानी वे मर जाएं। ये लोग यह बात कहां से कह रहे हैं? तो लोगों ने बताया कि वह क़ुरआन की इस आयत से यह बात निकालते हैं—

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَالصَّابِرِيْنَ
وَنَبْلُوَا اَخْبَارَكُمْ (سورت محمد آیت ۳۱)

'और हम ज़रूर तुम सबके अमलों की आज़माइश करेंगे, ताकि हम उन लोगों को मालमू कर लें जो तुममें जिहाद करने वाले हैं और साबित क़दम रहने वाले हैं और ताकि तुम्हारी हालतों की जांच कर लें।' (सूरः मुहम्मद, आयत 31) (यों कहते हैं कि अल्लाह को मालूम नहीं है, आज़माने से अल्लाह को मालूम होगा। (नऊज़ुबिल्लाहि मिन ज़ालिक)

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, जो इल्म हासिल न करे, वह हलाक हो जाएगा, फिर हज़रत अली रज़ि० मिंबर पर तशरीफ़ लाए और अल्लाह की हम्द व सना के बाद फ़रमाया, ऐ लोगो! इल्म हासिल करो और उस पर अमल करो और वह इल्म दूसरों को सिखाओ और जिसे अल्लाह की किताब में से कोई बात समझ में न आए, वह मुझसे पूछ ले। मुझे

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 268

यह पता चला है कि कुछ लोग यह कहते हैं कि जो काम आगे होने वाला है, उसका पता अल्लाह को उस वक़्त चलता है, जब वह हो जाता है, क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है—

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ

'और हम ज़रूर तुम सबके कामों की आज़माइश करेंगे, ताकि हम उन लोगों को मालूम कर लें जो तुममें जिहाद करने वाले हैं।'

हालांकि अल्लाह के फ़रमान 'हम मालूम कर लें' का मतलब यह है कि हम देख लें कि जिन लोगों पर जिहाद करना और जमे रहना फ़र्ज़ क़रार दिया गया है, क्या उन्होंने जिहाद किया है? और मैंने उनके बारे में जिन मुसीबतों और हादसों के आने का फ़ैसला किया था, क्या उन्होंने उन पर सब्र किया है?[1]

'अल्लाह पर भरोसा करने' के बाब में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का यह फ़रमान गुज़र चुका है कि ज़मीन पर उस वक़्त तक कोई चीज़ नहीं हो सकती, जब तक कि आसमान में उसके होने का फ़ैसला न हो जाए और हर इंसान पर दो फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जो हर बला को उससे दूर करते रहते हैं और उसकी हिफ़ाज़त करते रहते हैं, यहां तक कि उसकी तक़्दीर का लिखा आ जाए और जब तक़्दीर का कोई फ़ैसला आ जाता है तो ये दोनों फ़रिश्ते उसके और तक़्दीर के बीच से हट जाते हैं और अल्लाह की ओर से मेरी हिफ़ाज़त का बड़ा मज़बूत इंतिज़ाम है। जब मेरी मौत का वक़्त आ जाएगा तो वह इन्तिज़ाम मुझसे हट जाएगा और आदमी को ईमान की मिठास उस वक़्त तक नहीं मिल सकती, जब तक कि उसको यक़ीन न हो जाए कि जो कुछ अच्छा या बुरा उसे पहुंचा है, वह उससे टलने वाला नहीं था और जो उससे टल गया, वह उसे पहुंचने वाला नहीं था।

अबू दाऊद ने इसे तक़्दीर में रिवायत किया है।

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर

1. कंज़, भाग 1, पृ० 265

बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु मिंबर पर बयान फ़रमाते हुए ये शेर बहुत पढ़ा करते थे—

خَفِّضْ عَلَيْكَ فَإِنَّ الْأُمُوْرَ بِكَفِّ الْإِلٰهِ مَقَادِيْرُهَا

'अपने साथ आसानी का मामला करो (और घबराओ मत), क्योंकि तमाम कामों की तक़्दीरें अल्लाह की हथेली में हैं।'

فَلَيْسَ يَأْتِيْكَ مَنْهِيُّهَا وَلَا قَاصِرٌ عَنْكَ مَأْمُوْرُهَا

'जिस काम को अल्लाह ने मना कर दिया, वह तुम्हारे पास आ नहीं सकता और जिसके होने का हुक्म दे दिया, वह तुमसे टल नहीं सकता।'[1]

क़ियामत की निशानियों पर ईमान लाना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब यह आयत—

فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُوْرِ (سورت مدثر آیت ٨)

'फिर जिस वक़्त सूर फूंका जाएगा' (सूरः मुद्दस्सिर, आयत 8) उतरी, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं ज़िंदगी आराम व राहत से कैसे गुज़ारूं, जबकि सूर (फूंकने) वाला (फ़रिश्ता) सूर अपने मुंह में रख चुका है और वह अपनी पेशानी झुकाए इन्तिज़ार कर रहा है कि कब उसे (अल्लाह की ओर से) हुक्म मिले और वह सूर फूंक दे।

हुज़ूर सल्ल० के सहाबा ने अर्ज़ किया, फिर हम क्या दुआ करें। आपने फ़रमाया, यह दुआ पढ़ा करो, 'हस्बुनल्लाहु व निअमल वकीलु अलल्लाहि तवक्कलना'।[2]

एक रिवायत में यह है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा ने यह सुना तो उन पर यह बात बहुत बोझ हुई। उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम क्या करें? आपने फ़रमाया, आप लोग यह कहो 'हस्बुनल्लाहु व निअमल वकीलु'

1. अल-अस्मा वस्सिफ़ात, पृ० 243
2. कंज़, भाग 7, पृ० 270

'औरतों के रहन-सहन' के बाब में यह रिवायत गुज़र चुकी है कि हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा, काना (दज्जाल) निकल आया है। उन्होंने कहा, अच्छा। यह सुनकर वह बहुत ज़्यादा घबरा गईं और कांपने लगीं। फिर उन्होंने कहा, मैं कहां छिपूं?

हज़रत हफ़सा रज़ि० ने कहा, उस ख़ेमे में छिप जाओ। वहां खजूर के पत्तों का बना हुआ एक ख़ेमा था जिसमें लोग छिपते थे। यह जाकर उसमें छिप गईं। उसमें गर्द व गुबार और मकड़ी के जाले बहुत थे।

फिर आगे हदीस ज़िक्र की, उसमें यह है कि फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहां तशरीफ़ ले गए तो देखा कि हज़रत सौदा रज़ि० कांप रही हैं। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे पूछा, ऐ सौदा! तुम्हें क्या हुआ? उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! काना निकल आया है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह अभी निकला तो नहीं लेकिन निकलेगा ज़रूर। फिर हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें बाहर निकाला और उनके कपड़ों और जिस्म से गर्द व गुबार और मकड़ी के जालें साफ़ किए।

इस रिवायत को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आज़ाद की हुई बांदी और हज़रत रज़ीना रज़ियल्लाहु अन्हा से अबू याला और तबरानी ने नक़ल किया है।

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, क्या इराक़ में ख़ुरासान नाम की कोई जगह है?

लोगों ने कहा, जी हां, है। आपने फ़रमाया, दज्जाल वहां से निकलेगा।

नईम बिन हम्माद ने फ़ितन में यह रिवायत ज़िक्र की है कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मर्व (शहर) के यहूदी फ़िर्क़े में से दज्जाल निकलेगा।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं सुबह को हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के

1. कंज़, भाग 7, पृ० 263,

पास गया। उन्होंने कहा, आज रात मुझे सुबह तक नींद नहीं आई। मैंने पूछा, क्यों?

उन्होंने कहा, लोग कह रहे थे कि दुमदार सितारा निकल आया तो मुझे इसका डर हुआ कि यह कहीं (वह) धुवां न हो (जिसे क़ियामत की निशानियों में से बताया गया है।) इस वजह से मुझे सुबह तक नींद नहीं आई।[1]

हाकिम की रिवायत में यह है कि मुझे डर हुआ कि कहीं दज्जाल न निकल आया हो।

क़ब्र और आलमे बरज़ख़ में जो कुछ होता है उस पर ईमान लाना

हज़रत उबादा बिन नुसइ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया, तो उन्होंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया, मेरे इन कपड़ों को धोकर मुझे इन्हीं में कफ़न दे देना, क्योंकि (मरने के बाद) तुम्हारे बाप की दो हालतों में से एक हालत होगी, या तो इससे भी अच्छे कपड़े (जन्नत के) पहनाए जाएंगे या ये कफ़न के कपड़े भी बुरी तरह छीन लिए जाएंगे।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया, तो मैंने (ग़म ज़ाहिर करने के लिए) यह शेर पढ़ा—

لَعَمْرُكَ مَا يُغْنِي الثَّرَاءُ عَنِ الْفَتَى   إِذَا حَشْرَجَتْ يَوْمًا وَضَاقَ بِهَا الصَّدْرُ

'आपके उम्र की क़सम! जिस दिन मौत के वक़्त सांस उखड़ने लगे और उसकी वजह से सीना घुटने लगे, तो उस वक़्त जवान आदमी को माल की ज़्यादती नफ़ा नहीं देती।'

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ मेरी बिटिया! ऐसे न कहो, बल्कि

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 139, हाकिम, भाग 4, पृ० 459,
2. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 363,

यह कहो—

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ (سورت ق آیت ۱۹)

'और मौत की सख़्ती (क़रीब) आ पहुंची। यह (मौत) वह चीज़ थी, जिससे तू बिदकता था।' (सूरः क़ाफ़, आयत 19) फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मेरे ये दो कपड़े देख लो। इन्हें धोकर मुझे इन्हीं में कफ़न दे देना, क्योंकि नए कपड़े को मुर्दे से ज़्यादा ज़िंदा को ज़रूरत है। इन कपड़ों को तो मुर्दे के जिस्म की पीप और ख़ून ही लगेगा। (या ये कपड़े तो थोड़ी देर के लिए हैं, कुछ दिन में गल-सड़ कर ख़त्म हो जाएंगे।)[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की बीमारी और बढ़ गई तो मैं रोने लगी, फिर वह बेहोश हो गए तो मैंने यह शेर पढ़ा——

مَنْ لَا يَزَالُ دَمْعُهُ مُقَنَّعًا فَإِنَّهُ مِنْ دَمْعِهِ مَدْفُوقٌ

'जिसके आंसू हमेशा रुके रहे हों, उसके आंसू एक दिन ज़रूर बहेंगे।'

फिर उनको होश आया, तो फ़रमाया, बात वैसे नहीं है जैसे तुमने कही, ऐ मेरी बिटिया! बल्कि सही बात वह है जिसे इस आयत में बताया गया है—

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ

फिर पूछा कि हुज़ूर सल्ल० का किस दिन इंतिक़ाल हुआ था? मैंने कहा, पीर (सोमवार) के दिन। फ़रमाया, आज कौन-सा दिन है? मैंने कहा, पीर का दिन। फ़रमाया, मुझे अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि अब से लेकर रात तक के वक़्त में किसी वक़्त मैं इस दुनिया से चला जाऊंगा। चुनांचे मंगल की रात को उनका इंतिक़ाल हुआ था और यह भी फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल० को कितने कपड़ों में कफ़न दिया गया था?

मैंने कहा, हमने हुज़ूर सल्ल० को यमन के सहूल बस्ती के बुने हुए तीन सफ़ेद और नए कपड़ों में कफ़न दिया था। इन कपड़ों में न कुरता

---

1. अहमद, इब्ने साद,

था और न अमामा। उन्होंने फ़रमाया, मेरे इस कपड़े पर ज़ाफ़रान का धब्बा लगा हुआ है, उसे धो लो और इसके साथ दो नए कपड़े और शामिल कर लेना। मैंने कहा, यह कपड़ा तो पुराना है।

फ़रमाया, ज़िंदा को मुर्दे से ज़्यादा नए कपड़े की ज़रूरत है। कफ़न के कपड़े तो जिस्म से निकलने वाले ख़ून और पीप से ख़राब हो जाएंगे।[1]

हज़रत यह्या बिन अबी राशिद नसरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो अपने बेटे से फ़रमाया, ऐ मेरे बेटे! जब मुझे मौत आने लगे तो मेरे जिस्म को (दाहिने पहलू की ओर) मोड़ देना और अपने दोनों घुटने मेरी कमर के साथ लगा देना और अपना दाहिना हाथ मेरी पेशानी पर और अपना बायां हाथ मेरी ठोढ़ी पर रख देना और जब मेरी रूह निकल जाए तो मेरी आंखें बन्द कर देना और मुझे दर्मियाने क़िस्म का कफ़न पहनाना, क्योंकि अगर मुझे अल्लाह के यहां ख़ैर मिली, तो फिर अल्लाह मुझे इससे बेहतर कफ़न दे देंगे और अगर मेरे साथ कुछ और हुआ तो इस कफ़न को मुझसे जल्दी से छीन लेंगे और मेरी क़ब्र दर्मियानी क़िस्म की बनाना, क्योंकि अगर मुझे अल्लाह के यहां ख़ैर (भलाई) मिली तो फिर तो क़ब्र को, जहां तक नज़र आए, बढ़ा दिया जाएगा और अगर मामला इसके ख़िलाफ़ हुआ तो फिर क़ब्र मेरे लिए इतनी तंग कर दी जाएगी कि मेरी पसलियां एक दूसरे में घुस जाएंगी। मेरे जनाज़े के साथ कोई औरत न जाए और जो ख़ूबी मुझमें नहीं है, उसे मत बयान करना, क्योंकि अल्लाह मुझे तुम लोगों से ज़्यादा जानते हैं और जब तुम मेरे जनाज़े को लेकर चलो, तो तेज़ चलना, क्योंकि अगर मुझे अल्लाह के यहां से भलाई मिलने वाली है, तो तुम मुझे उस भलाई की ओर ले जा रहे हो, (इसलिए जल्दी करो) और अगर मामला इसके ख़िलाफ़ है, तो तुम एक बुराई को उठाकर ले जा रहे हो, उसे अपनी गरदन से जल्द उतारो।[2]

---

1. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 362, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 197
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 358, मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 427

ख़िलाफ़त के मामले की सलाहियत रखने वाले लोगों के मश्विरे पर ख़िलाफ़त के मामले को मौक़ूफ़ कर देने के बाब में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का यह फ़रमान गुज़र चुका है कि जब हज़रत उमर रज़ि० ने समझ लिया कि अब तो मौत आने वाली है, तो अब अगर मेरे पास सारी दुनिया हो, तो मैं उसे मौत के बाद आने वाले भयानक मंज़र की घबराहट के बदले में देने को तैयार हूं।

उन्होंने अपने बेटे से कहा, ऐ अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ! मेरे गाल को ज़मीन पर रख दो। (हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं) मैंने उनका सर अपनी रान से उठाकर अपनी पिंडुली पर रख दिया, तो फ़रमाया, नहीं, मेरे गाल को ज़मीन पर रख दो।

चुनांचे उन्होंने अपनी दाढ़ी और गाल को उठाकर ज़मीन पर रख लिया और फ़रमाया, ओ उमर ! अगर अल्लाह ने तेरी मग़फ़िरत न की, तो फिर ऐ उमर ! तेरी भी हलाकत है और तेरी मां की भी हलाकत है। इसके बाद उनकी रूह निकल गई, रहिमहुल्लाहु।

इस वाक़िए को तबरानी ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से एक लंबी हदीस में नक़ल किया है।[1]

रोने के बाब में यह हदीस गुज़र चुकी है कि हज़रत हानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अनहु किसी क़ब्र पर खड़े होते, तो इतना रोते कि दाढ़ी तर हो जाती। उनसे किसी ने पूछा कि आप जन्नत और जहन्नम का ज़िक्र करते हैं, तो नहीं रोते हैं, लेकिन क़ब्र को याद करके रोते हैं? आगे पूरी हदीस ज़िक्र की। तिर्मिज़ी ने इस हदीस को नक़ल किया है और इसे हदीस हसन क़रार दिया है।

हज़रत ख़ालिद बिन रबीअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की बीमारी बढ़ी तो यह ख़बर उनकी जमाअत और अंसार तक पहुंची। ये लोग आधी रात को या सुबह के क़रीब हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० के पास आए। (मैं भी उनके साथ आया था)

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 76

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने पूछा, अब क्या वक़्त है? हमने कहा, आधी रात है या सुबह के क़रीब।

उन्होंने कहा, मैं जहन्नम की सुबह से अल्लाह की पनाह चाहता हूं। क्या तुम लोग मेरे कफ़न के लिए कुछ लाए हो? हमने कहा, जी हां। उन्होंने कहा, कफ़न महंगा न बनाना, क्योंकि अल्लाह के यहां मेरे लिए भलाई हुई तो मुझे उस कफ़न से बेहतर कपड़ा मिल जाएगा और अगर दूसरी सूरत हुई तो यह कफ़न मुझसे जल्दी छीन लिया जाएगा।[1]

हज़रत अबू वाइल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की बीमारी बढ़ गई तो बनू अब्स के कुछ लोग उनके पास आए। हज़रत ख़ालिद बिन रुबैअ अब्सी ने मुझे बताया, हज़रत हुज़ैफ़ा मदाइन में थे। हम आधी रात को उनके पास गए। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[2]

हज़रत सिला बिन ज़ुफ़र रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे और अबू मस्ऊद को भेजा। हमने उनके कफ़न के लिए दो धारीदार कढ़ी हुई चादरें तीन सौ दिरहम में ख़रीदीं। उन्होंने हमसे कहा, तुमने मेरे लिए जो कफ़न ख़रीदा है, वह ज़रा मुझे दिखाओ। हमने उन्हें वह कफ़न दिखाया।

उन्होंने कहा, यह कफ़न तो मेरे लिए (मुनासिब) नहीं है। मेरे लिए तो दो सफ़ेद आम चादरें काफ़ी थीं, उनके साथ क़मीज़ की भी ज़रूरत नहीं, क्योंकि मुझे क़ब्र में थोड़ी देर ही गुज़रेगी कि या तो इन दो चादरों से बेहतर कफ़न मुझे मिल जाएगा, या फिर इनसे भी ज़्यादा बुरे कपड़े पहना दिए जाएंगे। चुनांचे हमने उनके लिए दो सफ़ेद चादरें ख़रीदीं।[3]

अबू नुऐम की दूसरी रिवायत में यह मज़्मून है कि हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने कफ़न देखकर फ़रमाया, तुम इस कफ़न का क्या करोगे? अगर

---

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० 72
2. मुस्तदरक, भाग 3, पृ० 370
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 282, 283

तुम्हारा यह साथी नेक हुआ, तो अल्लाह इसके बदले में अच्छा कफ़न दे देंगे और अगर यह नेक न हुआ तो क़ब्र के दोनों किनारे इसे क़ियामत तक (गेंद की तरह) फेंकते रहेंगे।[1]

हाकिम की रिवायत में यह है कि अगर तुम्हारा यह साथी नेक न हुआ तो फिर अल्लाह यह कफ़न क़ियामत के दिन उसके चेहरे पर मारेंगे।

हज़रत ज़ह्हाक बिन अब्दुर्रहमान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन्होंने अपने जवानों को बुलाकर उनसे कहा, जाओ और मेरे लिए ख़ूब गहरी और चौड़ी क़ब्र खोदो। वे गए और वापस आकर उन्होंने कहा कि हम ख़ूब चौड़ी और गहरी क़ब्र खोद आए हैं।

फिर उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! क़ब्र में दो क़िस्म के हालात में से एक तरह के हालात ज़रूर पेश आएंगे। या तो मेरी क़ब्र को इतना फैला दिया जाएगा कि उसका हर कोना चालीस हाथ लम्बा हो जाएगा, फिर मेरे लिए जन्नत की तरफ़ एक दरवाज़ा खोल दिया जाएगा और मैं उसमें से अपनी बीवियों और जो कुछ अल्लाह ने मेरे इकराम व एज़ाज़ के लिए वहां तैयार कर रखा है, वह सब देखूंगा और आज मुझे जितना अपने घर का रास्ता आता है, उससे ज़्यादा मुझे अपने उस ठिकाने का रास्ता आता होगा और क़ब्र से उठाए जाने तक जन्नत की हवा और राहत का सामान मुझ तक पहुंचता रहेगा और अगर ख़ुदा न करे, दूसरी हालत हुई और उससे हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं, तो मेरी क़ब्र को मुझ पर इतना तंग कर दिया जाएगा कि जैसे नेज़े की लकड़ी नेज़े के फल में तंग होती है, वह क़ब्र इससे भी ज़्यादा तंग होगी।

फिर मेरे लिए जहन्नम के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा खोल दिया जाएगा और मैं उसमें से अपनी ज़ंजीरों, बेड़ियों और जहन्नम के क़ैदी

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 380

साथियों को देखूंगा और आज मुझे जितना अपने घर का रास्ता आता है, उससे ज़्यादा मुझे जहन्नम में अपने ठिकाने का रास्ता आता होगा और क़ब्र से उठाए जाने तक जहन्नम की गर्म हवा और गर्म पानी का असर मुझ तक पहुंचता रहेगा।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ज़ीलत वाले लोगों में से थे। वह कहा करते थे कि मैं तीन हालतों में जैसा होता हूं, अगर मैं हर वक़्त वैसा रहूं, तो मैं यक़ीनन जन्नत वालों में से हो जाऊं और मुझे इसमें कोई शक न रहे—

एक वह हालत, जबकि मैं ख़ुद क़ुरआन पढ़ रहा हूं या कोई और क़ुरआन पढ़ रहा हो और मैं सुन रहा हूं।

दूसरी वह हालत, जबकि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़ुत्बा सुन रहा हूं।

तीसरी वह हालत, जबकि मैं किसी जनाज़े में शरीक होता हूं, तो अपने दिल में सिर्फ़ यही सोचता हूं कि इस जनाज़े के साथ क्या होगा और यह जनाज़ा कहां जा रहा है।[2]

आख़िरत पर ईमान लाना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हमने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जब हम आपको देखते हैं तो हमारे दिल नर्म हो जाते हैं और आख़िरत की फ़िक्र वाले बन जाते हैं, लेकिन जब हम आपसे जुदा हो जाते हैं, तो हमें दुनिया अच्छी लगने लगती है और बीवियों और बच्चों में मश्ग़ूल हो जाते हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम मेरे पास जिस हालत पर होते हो, अगर तुम हर वक़्त उस हालत पर रहो, तो फ़रिश्ते अपने हाथों से तुमसे मुसाफ़ा करने लगें और तुम्हारे घरों में तुमसे मिलने

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 262,
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 138

आएं। अगर तुम गुनाह न करो तो अल्लाह ऐसे लोगों को ले आएंगे, जो गुनाह करेंगे (और इस्तिग़्फ़ार करेंगे) ताकि अल्लाह उनकी मग़्फ़िरत फ़रमाए।

हमने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमें जन्नत के बारे में बताएं कि उसकी इमारत किस चीज़ से बनी हुई है? आपने फ़रमाया, एक ईंट सोने की है और एक ईंट चांदी की है। उसका गारा ख़ूब महकते हुए मुश्क का है। उसकी कंकड़ियां मोती और याक़ूत हैं। उसकी मिट्टी ज़ाफ़रान है। जो जन्नत में जाएगा, वह हमेशा ऐश में रहेगा, कभी बदहाल न होगा और हमेशा रहेगा, कभी उसे मौत नहीं आएगी और न ही उसके कपड़े पुराने होंगे और न कभी उसकी जवानी ख़त्म होगी।

तीन आदमी ऐसे हैं जिनकी दुआ कभी रद्द नहीं होती, एक इंसाफ़ पसन्द बादशाह, दूसरा रोज़ेदार, जब तक रोज़ा न खोल ले। तीसरे मज़्लूम की बद-दुआ, जिसे बादलों से ऊपर उठा लिया जाता है और इसके लिए आसमानों के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, फिर अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाते हैं, मेरी इज़्ज़त की क़सम ! मैं तेरी ज़रूर मदद करूंगा, अगरचे उसमें कुछ देर हो जाए।[1]

हज़रत सुवैद बिन ग़फ़ला रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु पर एक बार फ़ाक़ा आया तो उन्होंने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा कि अगर तुम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में जाकर कुछ मांग लो, तो अच्छा है। चुनांचे हज़रत फ़ातिमा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के पास गईं। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० के पास हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा मौजूद थीं।

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने दरवाज़ा खटखटाया तो हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि० से फ़रमाया, यह खटखटाहट तो फ़ातिमा रज़ि० की है। आज इस वक़्त आई है, पहले तो कभी इस वक़्त नहीं आया करती थी। फिर हज़रत फ़ातिमा रज़ि० (अन्दर आ गईं और उन्हों) ने

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 49

अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इन फ़रिश्तों का खाना 'ला इला-ह इल्लल्लाहु', 'सुब्हानल्लाह' और 'अल-हम्दु लिल्लाहि' कहना है, हमारा खाना क्या है?

आपने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसने मुझे हक़ देकर भेजा है, मुहम्मद के घराने के किसी घर में तीस दिन से आग नहीं जली। हमारे पास कुछ बकरियां आई हैं। अगर तुम चाहो तो पांच बकरियां तुम्हें दे दूं और अगर चाहो तो तुम्हें वे पांच कलिमे सिखा दूं जो हज़रत जिब्रील अलै० ने मुझे सिखाए हैं।

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने अर्ज़ किया, नहीं, बल्कि मुझे तो वही पांच कलिमे सिखा दें जो आपको हज़रत जिब्रील ने सिखाए हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम यह कहा करो—

يَا اَوَّلَ الْاَوَّلِيْنَ وَيَا آخِرَ الْآخِرِيْنَ وَيَا ذَا الْقُوَّةِ الْمَتِيْنَ وَيَا رَاحِمَ
الْمَسَاكِيْنَ وَيَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

'या अव्वलल अव्वलीन व या आख़िरल आख़िरीन व या ज़ल क़ूवतिल मतीन व या राहिमल मसाकीन व या अर-हमर्राहिमीन०'

फिर हज़रत फ़ातिमा रज़ि० वापस चली गईं। जब हज़रत अली रज़ि० के पास पहुंचीं तो हज़रत अली रज़ि० ने पूछा, क्या हुआ? हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने कहा, मैं आपके पास से दुनिया लेने गई थी लेकिन वहां से आख़िरत लेकर आई हूं। हज़रत अली रज़ि० ने कहा, फिर तो यह दिन तुम्हारा सबसे बेहतरीन दिन है।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग एक सफ़र में हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ थे, उन्होंने लोगों को बातें करते हुए और बेहतरीन ज़ुबान में बात-चीत करते हुए सुना, तो फ़रमाया, ऐ अनस ! मुझे इनकी बातों से क्या ताल्लुक़? आओ हम अपने रब का ज़िक्र करें, क्योंकि ये लोग तो अपनी ज़ुबान से खाल ही उतार देंगे।

1. कंज़, भाग 1, पृ० 302, हुलीया, भाग 1, पृ० 259

फिर मुझसे फ़रमाया, ऐ अनस! किस चीज़ ने इन लोगों को आख़िरत से पीछे कर दिया और किस चीज़ ने इन्हें आख़िरत से रोक दिया? मैंने कहा, ख़्वाहिशों ने और शैतान ने। हज़रत अबू मूसा रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं। अल्लाह की क़सम! नहीं, बल्कि इन्होंने इस वजह से आख़िरत को छोड़ दिया कि दुनिया तो सामने है और आख़िरत बाद में आएगी। अगर ये आंखों से आख़िरत देख लेते तो इससे न हटते और शक न करते।[1]

क़ियामत के दिन जो कुछ होगा, उस पर ईमान लाना

हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब 'या ऐयुहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम' से लेकर 'वला किन-न अज़ाबल्लाहि शदीद०' يَاأَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ से ले कर وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ तक दो आयतें उतरीं (सूरः हज्ज, आयत 1-2) (ऐ लोगो! अपने रब से डरो (क्योंकि) यक़ीनन क़ियामत (के दिन) का ज़लज़ला बड़ी भारी चीज़ होगी, जिस दिन तुम लोग इस (ज़लज़ले) को देखोगे तमाम दूध पिलाने वालियां (मारे हैबत के) अपने दूध पीते बच्चे को भूल जावेंगी और तमाम हमल वालियां अपना हमल (दिन पूरे होने से पहले) डाल देंगी और (ऐ मुख़ातब!) तुझको लोग नशे की-सी हालत में दिखाई देंगे। हालांकि वे (सच में) नशे में न होंगे, लेकिन अल्लाह का अज़ाब है ही सख़्त चीज़।)'

तो उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़र में थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम लोग जानते हो, यह कौन-सा दिन है? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ज़्यादा जानते हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह वह दिन है जिस दिन अल्लाह हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) से फ़रमाएंगे, आग में जाने वालों को भेज दो। वह अर्ज़ करेंगे, ऐ मेरे रब! आग में जाने वाले कितने हैं? अल्लाह फ़रमाएंगे, नौ सौ निन्नानवे तो आग में जाएंगे और एक आदमी जन्नत में

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 259,

जाएगा। यह सुनकर सारे मुसलमान रोने लग पड़े।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बीच का रास्ता अपनाओ और ठीक-ठीक चलते रहो। हर नुबूवत से पहले जाहिलियत का ज़माना हुआ करता था, तो पहले यह तायदाद उन जाहिलियत वालों से पूरी की जाएगी, फिर मुनाफ़िक़ों से पूरी की जाएगी। तुम्हारी और बाक़ी तमाम उम्मतों की मिसाल ऐसी है जैसे किसी जानवर के पांवों में उभरी हुई ग़दूद हो या जैसे ऊंट के पहलू में तिल हो।

फिर फ़रमाया, मुझे उम्मीद है कि आप लोग जन्नत में जाने वालों में से चौथाई होंगे। इस पर सहाबा किराम रज़ि० ने अल्लाहु अकबर कहा। फिर फ़रमाया, मुझे उम्मीद है कि आप लोग जन्नत में जाने वालों का तिहाई हिस्सा होंगे। इस पर सहाबा रज़ि० ने फिर अल्लाहु अकबर कहा। फिर आपने फ़रमाया, मुझे उम्मीद है कि आप लोग जन्नत में जाने वालों में से आधे होंगे। सहाबा रज़ि० ने फिर अल्लाहु अकबर कहा।

रिवायत करने वाले कहते हैं, मुझे मालूम नहीं कि हुज़ूर सल्ल० ने दो तिहाई भी फ़रमाया या नहीं। (लेकिन तबरानी और तिर्मिज़ी की दूसरी रिवायत में यह है कि यह उम्मत जन्नत वालों का दो तिहाई होगी, यानी अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० की उम्मीद से ज़्यादा कर दिया।)[1]

इसी आयत की तफ़्सीर में बुख़ारी में यह रिवायत है कि हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह क़ियामत के दिन फ़रमाएंगे, ऐ आदम! वह अर्ज़ करेंगे, ऐ हमारे रब! मैं हाज़िर हूं, हर ख़िदमत के लिए तैयार हूं, फिर उनको ऊंची आवाज़ से कहा जाएगा कि अल्लाह आपको हुक्म दे रहे हैं कि अपनी औलाद में से आग में जाने वालों को निकाल लें।

हज़रत आदम अलै० पूछेंगे, आग में जाने वाले कितने हैं? अल्लाह फ़रमाएंगे, हर हज़ार में से नौ सौ निन्नानवे, तो उस वक़्त हर हमल वाली अपना हमल डाल देगी और बच्चा-बूढ़ा हो जाएगा—

1. तिर्मिज़ी, इमाम अहमद, इब्ने अबी हातिम,

وَتَرَى النَّاسَ سُكَارٰى وَمَا هُمْ بِسُكَارٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ

(तर्जुमा गुज़र चुका) यह सुनकर सहाबा रज़ि० पर ऐसा रंज व ग़म छा गया कि उनके चेहरे (ग़म के मारे) बदल गए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, याजूज-माजूज में से नौ सौ निन्नानवे होंगे, (जो जहन्नम में जाएंगे) और तुममें से एक होगा (जो जन्नत में जाएगा) तुम बाक़ी लोगों में से एक हो जैसे सफ़ेद बैल के पहलू में काला बाल या काले बैल के पहलू में सफ़ेद बाल। मुझे उम्मीद है कि तुम जन्नत वालों का चौथाई हिस्सा होगा। इस पर हमने अल्लाहु अकबर कहा।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम जन्नत वालों का तिहाई होगे, हमने अल्लाहु अकबर कहा। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम जन्नत वालों के आधे होगे, फिर हमने अल्लाहु अकबर कहा।[1] एक रिवायत में यह है कि यह बात सहाबा पर बड़ा बोझ हुई और उन पर रंज व ग़म छा गया।

हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब—

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ (سورت زمر آیت ۳۱)

'फिर क़ियामत के दिन तुम मुक़दमे अपने रब के सामने पेश करोगे (उस वक़्त अमली फ़ैसला हो जावेगा)' उतरी, तो हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या मुक़दमे बार-बार पेश किए जाएंगे ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने कहा, फिर तो मामला बड़ा सख़्त होगा।

ऐसे ही इस हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है, इसमें आगे यह मज़्मून भी है कि जब 'सुम-म ल-तुस-अलुन-न यौ-म इज़िन अनिन्नईम०' (सूरः तकासुर, आयत 8) 'फिर (और बात सुनो कि) उस दिन तुम सबसे नेमतों की पूछ होगी' तो हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमसे किस नेमत का सवाल होगा ? हमारे पास तो सिर्फ़ ये दो सरदार नेमतें हैं, खजूर और पानी।[2]

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 204, हाकिम, भाग 3, पृ० 568
2. तिर्मिज़ी, इब्ने माजा,

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब यह सूरः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतरी—

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُم مَّيِّتُونَ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِندَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ

'आपको भी मरना है और इनको भी मरना है, फिर क़ियामत के दिन तुम मुक़दमे अपने रब के सामने पेश करोगे। (उस वक़्त अमली फ़ैसला हो जावेगा)' (सूरः ज़ुमर, आयत 30-31)

तो हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ख़ास-ख़ास गुनाहों के साथ हम पर वे झगड़े भी बार-बार पेश किए जाएंगे जो दुनिया में हमारे आपस में थे ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां। ये मुक़दमे बार-बार पेश किए जाते रहेंगे, यहां तक कि हर हक़ वाले को उसका हक़ मिल जाए। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम ! फिर तो मामला बहुत सख़्त है।[1]

हज़रत क़ैस बिन अबी हाज़िम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी बीवी की गोद में सर रखे हुए थे कि इतने में रोने लगे, फिर उनकी बीवी भी रोने लगीं। हज़रत इब्ने रवाहा ने कहा, तुम क्यों रो रही हो ? उन्होंने कहा, मैंने आपको रोते हुए देखा, इसलिए मैं भी रोने लगी।

हज़रत इब्ने रवाहा रज़ि० ने कहा, मुझे अल्लाह का यह फ़रमान याद आ गया—

وَإِن مِّنكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا (سورت مریم آیت ۷۱)

'और तुममें से कोई नहीं जिसका इस (जहन्नम) पर से गुज़र न हो।' (सूरः मरयम, आयत 71) अब मुझे मालूम नहीं है, मैं जहन्नम से निजात पा सकूंगा या नहीं।

एक रिवायत में यह है कि हज़रत इब्ने रवाहा रज़ि० उस वक़्त बीमार थे।[2]

---

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 52, मुस्तदरक, भाग 4, पृ० 572,
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 38,

हज़रत उबादा बिन मुहम्मद बिन उबादा बिन सामित रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया, तो उन्होंने फ़रमाया, मेरा बिस्तर घर के सेहन में बाहर निकाल दो, फिर फ़रमाया, मेरे सारे गुलाम, नौकर और पड़ोसी और वे तमाम आदमी यहां जमा कर दो, जो मेरे पास आया करते थे।

जब ये सब उनके पास जमा हो गए तो फ़रमाया, मेरा तो यही ख़्याल है कि आज का दिन मेरी दुनिया की ज़िंदगी का आख़िरी दिन और आज की रात मेरी आख़िरत की पहली रात है और मुझे मालूम तो नहीं, लेकिन हो सकता है कि मेरे हाथ से या मेरी ज़ुबान से तुम लोगों के साथ कोई ज़्यादती हो गई हो और उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मुझे क़ियामत के दिन इसका बदला देना पड़ेगा। मैं पूरे ज़ोर से तुम लोगों से दरख़्वास्त करता हूं कि तुम लोगों में से किसी के दिल में अगर ऐसी कोई बात हो तो वह मेरी जान के निकलने से पहले मुझसे बदला ले ले। उन सबने कहा, नहीं। आप तो हमारे लिए बाप की तरह थे और हमें अदब सिखाते थे।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि उन्होंने कभी किसी नौकर को बुरा-भला नहीं कहा था।

फिर उन्होंने कहा, जो कुछ भी हुआ हो, क्या तुमने मुझे माफ़ कर दिया है? सबने कहा, जी हां। फ़रमाया, ऐ अल्लाह! तू गवाह हो जा, फिर फ़रमाया, अगर ऐसी कोई बात नहीं है, तो फिर मेरी वसीयत याद रखना। मैं ज़ोरदार ताकीद करता हूं कि तुममें से कोई भी मेरे मरने पर हरगिज़ न रोए, बल्कि जब मेरी जान निकल जाए तो तुम वुज़ू करना और अच्छी तरह वुज़ू करना और फिर तुममें से हर आदमी मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़े, फिर उबादा के लिए यानी मेरे लिए और अपने लिए इस्तग़फ़ार करे, क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है—

اِسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ (سورت بقره آیت ۴۵ و ۱۵۳)

'सब्र और नमाज़ से सहारा हासिल करो।' (सूरः बक़रः, आयत 45-143) फिर मुझे क़ब्र की तरफ़ जल्दी-जल्दी ले जाना, मेरे जनाज़े के

पीछे आग लेकर न चलना और न मेरे नीचे अरग़वानी रंग का कपड़ा डालना ।[1]

बैतुलमाल में से अपने ऊपर और अपने रिश्तेदारों पर ख़र्च करने में एहतियात करने के बाब में यह क़िस्सा गुज़र चुका है कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु से चार हज़ार दिरहम उधार मांगे, तो हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० के क़ासिद से कहा, जाकर हज़रत उमर रज़ि० से कह दो कि अभी वह बैतुलमाल से चार हज़ार ले लें, फिर बाद में वापस कर दें।

जब क़ासिद ने वापस आकर हज़रत उमर रज़ि० को उनका जवाब बताया तो हज़रत उमर रज़ि० को बड़ा बोझ हुआ। फिर जब हज़रत उमर रज़ि० की हज़रत अब्दुर्रहमान से मुलाक़ात हुई, तो उनसे कहा, तुमने कहा था कि उमर चार हज़ार बैतुलमाल से उधार ले ले, अगर मैं (बैतुलमाल से उधार लेकर तिजारती क़ाफ़िले के साथ भेज दूं और फिर) तिजारती क़ाफ़िले की वापसी से पहले मर जाऊं तो तुम लोग कहोगे कि अमीरुल-मोमिनीन ने चार हज़ार लिए थे, अब उनका इंतिक़ाल हो गया है, इसलिए यह उनके चार हज़ार छोड़ दो, (तुम लोग तो छोड़ दोगे) और मैं उनके बदले क़ियामत के दिन पकड़ा जाऊंगा।

और बहुत जल्द अल्लाह के इल्म से और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इल्म से असर लेने के बाब में यह क़िस्सा आएगा कि जब हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु क़ारी, आलिम, मालदार और अल्लाह के रास्ते में शहीद होने वाले के बारे में अल्लाह के (इख़्लास न होने की वजह से दोज़ख़ में जाने के) फ़ैसले वाली हदीस ज़िक्र करते तो इतना ज़्यादा रोते कि बेहोश हो जाते और चेहरे के बल गिर जाते, यहां तक कि हज़रत शुफ़ा अस्बही उन्हें सहारा देते और बहुत देर तक उनका यही हाल रहता और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु

1. कंज़, भाग 7, पृ० 79

जब यह हदीस सुनते तो इतना ज़्यादा रोते कि लोग यह समझते कि उनकी तो अब जान निकल जाएगी।

शफ़ाअत पर ईमान लाना

हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक सफ़र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आख़िर रात में एक जगह पड़ाव डाला। हम भी आपके साथ थे। हम में से हर आदमी अपने कजावे की हत्थी के साथ टेक लगाकर सो गया। कुछ देर बाद मेरी आंख खुली तो मुझे हुज़ूर सल्ल० अपने कजावे के पास नज़र न आए, इससे मैं घबरा गया और हुज़ूर सल्ल० को खोजने चल पड़ा।

ढूंढते-ढूंढते एक जगह मुझे हज़रत मुआज़ बिन जबल और हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हुमा मिले। वे दोनों भी इसी वजह से घबराए हुए थे, जिस वजह से मैं घबराया हुआ था। हम लोग यों ही ढूंढ रहे थे कि अचानक हमें घाटी के ऊपर के हिस्से से चक्की चलने जैसी आवाज़ सुनाई दी। (हम लोग उस आवाज़ की ओर गए, तो देखा हुज़ूर सल्ल० रो रहे हैं।) फिर हमने हुज़ूर सल्ल० को अपनी बात बताई।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आज रात मेरे पास मेरे रब की ओर से एक फ़रिश्ता आया और उसने मुझे दो बातों में अख़्तियार दिया या तो मैं शफ़ाअत करूं या मेरी आधी उम्मत जन्नत में चली जाए। मैंने शफ़ाअत को अख़्तियार कर लिया।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! मैं आपको अल्लाह का और आपकी सोहबत में रहने का वास्ता देकर अर्ज़ करता हूं कि आप हमें भी अपनी शफ़ाअत वालों में शामिल कर लें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आप लोग तो मेरी शफ़ाअत वालों में हो ही।

फिर हम लोग हुज़ूर सल्ल० के साथ चल पड़े, यहां तक कि हम लोगों के पास पहुंच गए, तो वे भी हुज़ूर सल्ल० को अपनी जगह न पाकर घबराए हुए थे, यह देखकर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मेरे पास मेरे रब की ओर से एक फ़रिश्ता आया और उसने मुझे इन दो बातों में

अख़्तियार दिया कि या तो मैं शफ़ाअत अख़्तियार कर लूं या मेरी आधी उम्मत जन्नत में दाख़िल हो जाए। चुनांचे मैंने शफ़ाअत को अख़्तियार कर लिया।

सहाबा रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि हम आपको अल्लाह का और आपकी सोहबत में रहने का वास्ता देकर अर्ज़ करते हैं कि आप हमें भी अपनी शफ़ाअत वालों में शामिल कर लें। जब तमाम सहाबा आपके पास जमा हो गए, तो आपने फ़रमाया, मैं तमाम हाज़िर लोगों को इस बात का गवाह बनाता हूं कि मेरी शफ़ाअत मेरी उम्मत में से हर उस आदमी के लिए है जो इस हाल में मरे कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराता हो।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी अक़ील रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं क़बीला सक़ीफ़ के वफ़्द के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास गया। जब हमने दरवाज़े के पास सवारियां बिठाईं तो उस वक़्त जिस ज़ात के पास जा रहे थे, हमारे नज़दीक उनसे ज़्यादा ग़ज़ब का शिकार और कोई इंसान न था, लेकिन जब उनकी ख़िदमत में हाज़िरी देकर बाहर आए तो उस वक़्त हमारे नज़दीक उस ज़ात से ज़्यादा महबूब और कोई इंसान नहीं था, जिनकी ख़िदमत में हम गए थे।

हम में से एक आदमी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने अपने रब से हज़रत सुलैमान जैसा देश क्यों न मांग लिया? इस पर हुज़ूर सल्ल० हंस पड़े और फ़रमाया, हो सकता है, तुम्हारे नबी को अल्लाह के यहां सुलैमान अलैहि० के देश से बेहतर कोई चीज़ मिल जाए, अल्लाह ने जो नबी भी भेजा, उसे एक ख़ास दुआ ज़रूर अता फ़रमाई।

किसी नबी ने वह दुआ मांग कर दुनिया ले ली, किसी नबी की क़ौम नाफ़रमान थी, तो उसने अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ बद-दुआ की, तो वह सारी क़ौम हलाक हो गई और अल्लाह ने मुझे भी वह ख़ास दुआ

1. कंज़, भाग 7, पृ० 271,

अता फ़रमाई, लेकिन मैंने वह दुआ अपने रब के यहां छिपा कर रखी हुई है और वह दुआ यह है कि मैं क़ियामत के दिन अपनी उम्मत के लिए शफ़ाअत करूंगा।[1]

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं अपनी उम्मत के बुरे लोगों के लिए बेहतरीन आदमी हूं तो क़बीला मुज़ैना के एक आदमी ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जब आप उम्मत के बुरों के लिए ऐसे हैं, तो उनके नेकों के लिए कैसे हैं ?

आपने फ़रमाया, मेरी उम्मत के नेक लोग अपने आमाल की बरकत से जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे और मेरी उम्मत के बुरे लोग मेरी शफ़ाअत का इन्तिज़ार करेंगे। ग़ौर से सुनो ! मेरी शफ़ाअत क़ियामत के दिन मेरी उम्मत के तमाम लोगों के लिए होगी सिवाए उन लोगों के जो मेरे सहाबा में कमी निकालता हो।[2]

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं अपनी उम्मत के लिए शफ़ाअत करता रहूंगा, यहां तक कि मेरा रब मुझे पुकार कर पूछेगा, ऐ मुहम्मद ! क्या तुम राज़ी हो गए ? मैं कहूंगा, जी हां, मैं राज़ी हो गया।

फिर हज़रत अली रज़ि० ने (लोगों की ओर) मुतवज्जह होकर फ़रमाया, तुम इराक़ वाले यह कहते हो कि क़ुरआन में सबसे ज़्यादा उम्मीद वाली आयत यह है—

يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ (سورت زمر آیت ۵۳)

'आप कह दीजिए कि ऐ मेरे बन्दो ! जिन्होंने (कुफ़्र व शिर्क करके) अपने ऊपर ज़्यादतियां की हैं कि तुम ख़ुदा की रहमत से नाउम्मीद न हो, यक़ीनी तौर पर ख़ुदा तमाम (पिछले) गुनाहों को माफ़ फ़रमा देगा, वाक़ई

1. कंज़, भाग 7, पृ० 272, इसाबा, भाग 2
2. कंज़, भाग 7, पृ० 272,

वह बड़ा बख़्शने वाला, बड़ी रहमत वाला है।' (सूरः ज़ुमर, आयत 53)

मैंने कहा, हम तो यही कहते हैं। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, लेकिन हम अहले बैत यह कहते हैं कि अल्लाह की किताब में सबसे ज़्यादा उम्मीद वाली आयत—

وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ـ (سورت ضحیٰ آیت ۵)

'और बहुत जल्द अल्लाह आपको (आख़िरत में ज़्यादा से ज़्यादा नेमतें) देगा, सो आप ख़ुश हो जाएंगे।' (सूरः ज़ुहा, आयत 5) और इस देने से मुराद शफ़ाअत है।[1]

हज़रत इब्ने बुरैदा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मेरे वालिद हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए, वहां उस वक़्त एक आदमी बात कर रहा था। हज़रत बुरैदा रज़ि० ने कहा, क्या आप मुझे बात करने की इजाज़त देते हैं? हज़रत मुआविया रज़ि० ने कहा, जी हां, इजाज़त है। हज़रत मुआविया रज़ि० का ख़्याल था कि हज़रत बुरैदा रज़ि० भी वैसी बात करेंगे जैसी दूसरा कर रहा था।

हज़रत बुरैदा रज़ि० ने कहा, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि मुझे उम्मीद है कि मैं क़ियामत के दिन इतने लोगों की शफ़ाअत करूंगा जितने ज़मीन पर पेड़ और पत्थर हैं। फिर हज़रत बुरैदा रज़ि० ने कहा, ऐ मुआविया रज़ि० ! आप तो इस शफ़ाअत के उम्मीदवार हैं और हज़रत अली रज़ि० इस शफ़ाअत के उम्मीदवार नहीं हैं।[2]

हज़रत तलक़ बिन हबीब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं लोगों में सबसे ज़्यादा शफ़ाअत को झुठलाया करता था, यहां तक कि एक दिन मेरी हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मुलाक़ात हुई और (अपनी बात को साबित करने के लिए) मैंने उनको वे तमाम आयतें

---

1. कंज़, भाग 7, पृ० 273,
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 56

पढ़कर सुना दीं जो मुझे आती थीं और जिनमें अल्लाह ने जहन्नम वालों के जहन्नम में हमेशा रहने का ज़िक्र किया है।

हज़रत जाबिर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ तलक़ ! क्या तुम यह समझते हो कि तुम मुझसे ज़्यादा अल्लाह की किताब को पढ़ने वाले हो और मुझसे ज़्यादा अल्लाह के रसूल सल्ल० की सुन्नत को जानने वाले हो ? तुमने जो आयतें पढ़ी हैं, उनसे मुराद तो वे जहन्नम वाले हैं जो मुश्रिक हों और शफ़ाअत उन लोगों के बारे में है जो (मुसलमान थे, लेकिन वह) बहुत से गुनाह कर बैठे और उन्हें (जहन्नम में) अज़ाब दिया जाएगा, फिर उनको (हुज़ूर सल्ल० की शफ़ाअत पर) जहन्नम से निकाला जाएगा।

फिर हज़रत जाबिर रज़ि० ने अपने दोनों हाथ अपने कानों को लगाकर कहा, ये दोनों कान बहरे हो जाएं, अगर मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए न सुना हो कि जहन्नम में डालने के बाद उनको उसमें से निकाला जाएगा, जैसे तुम क़ुरआन पढ़ते हो, हम भी वैसे ही पढ़ते हैं।[1]

हज़रत यज़ीदुल फ़क़ीर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा हदीसें बयान फ़रमा रहे थे। मैं उनकी मज्लिस में जाकर बैठ गया। उन्होंने यह बयान किया कि कुछ लोग जहन्नम की आग से बाहर निकलेंगे। उन दिनों मैं इस बात को नहीं मानता था इसलिए मुझे ग़ुस्सा आ गया और मैंने कहा और लोगों पर तो मुझे ताज्जुब नहीं है, लेकिन ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० ! मुझे आप लोगों पर बड़ा ताज्जुब है, आप लोग यह कह रहे हैं कि अल्लाह आग से कुछ लोगों को निकालेगा, हालांकि अल्लाह फ़रमाते हैं—

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخَارِجِيْنَ مِنْهَا (سورت مائدہ آیت ۳۷)

'इस बात की ख़्वाहिश करेंगे कि दोज़ख़ से निकल आवें और वे इससे कभी न निकलेंगे।'

(सूर: माइदा, आयत 37)

---

1. इब्ने मर्दूया,

हज़रत जाबिर रज़ि० के साथी मुझे डांटने लगे। हज़रत जाबिर रज़ि० ख़ुद इनमें सबसे ज़्यादा बुर्दबार थे। उन्होंने फ़रमाया, इस आदमी को छोड़ दो और फ़रमाया, यह आयत तो कुफ़्फ़ार के बारे में है, फिर यह आयत पढ़ी—

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ

से लेकर

وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ (سورت مائده آيت ۳۶، ۳۷)

तक। 'यक़ीनन जो लोग काफ़िर हैं, अगर उनके पास तमाम दुनिया भर की चीज़ें हों और इन चीज़ों के साथ इतनी चीज़ें और भी हों ताकि वे उसको देकर क़ियामत के अज़ाब से छूट जावें, तब भी वे चीज़ें हरगिज़ उनसे क़ुबूल न की जावेंगी और उनको दर्दनाक अज़ाब होगा। इस बात की ख़्वाहिश करेंगे कि दोज़ख़ से निकल आवें और वे उससे कभी न निकलेंगे और उनको हमेशा का अज़ाब होगा।'

(सूरः माइदा, आयत 36-37)

फिर हज़रत जाबिर रज़ि० ने कहा, क्या तुम क़ुरआन नहीं पढ़ते हो? मैंने कहा, पढ़ता हूं, बल्कि मैंने क़ुरआन याद किया हुआ है। उन्होंने कहा, क्या अल्लाह ने यह नहीं फ़रमाया—

وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَّكَ عَسَىٰ أَن يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا

'और किसी क़दर रात के हिस्से में, सो उसमें तहज्जुद पढ़ा कीजिए जो कि आपके लिए (फ़र्ज़ नमाज़ों के अलावा) ज़्यादा चीज़ है, उम्मीद है कि आपका रब आपको महमूद मुक़ाम में जगह देगा। यही वह मुक़ाम है (जो शफ़ाअते कुबरा का है) अल्लाह कुछ लोगों को उनके गुनाहों की वजह से कुछ दिनों जहन्नम में रखेंगे और उनसे बात भी न फ़रमाएंगे और जब उनको वहां से निकालना चाहेंगे, निकाल लेंगे।'

(सूरः बनी इस्राईल, आयत 79)

हज़रत यज़ीदुल फ़क़ीर कहते हैं, इसके बाद मैंने कभी शफ़ाअत को

नहीं झुठलाया।[1]

जन्नत और जहन्नम पर ईमान लाना

हज़रत हंज़ला कातिब उसैदी रज़ियल्लाहु अन्हु, जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कातिबों में से थे, वह फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूर सल्ल० के पास थे। हुज़ूर सल्ल० ने हमारे सामने जन्नत और जहन्नम का ज़िक्र इस तरह फ़रमाया कि गोया हम दोनों को आंखों से देख रहे हैं। फिर मैं उठकर बीवी-बच्चों के पास चला गया और उनके साथ हंसने-खेलने लग गया।

फिर मुझे वह हालत याद आई जो (हुज़ूर सल्ल० के सामने) हमारी थी (कि हम दुनिया भूले हुए थे और जन्नत और जहन्नम दोनों आंखों के सामने थे और अब वह न रहे थे।) यह सोचकर मैं बाहर निकला तो हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु मुझे मिले। मैंने कहा, ऐ अबूबक्र ! मैं तो मुनाफ़िक़ हो गया।

उन्होंने कहा, क्या बात हुई? मैंने कहा, हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास होते हैं, हुज़ूर सल्ल० हमारे सामने जन्नत और जहन्नम का ज़िक्र इस तरह फ़रमाते हैं कि गोया हम दोनों को आंखों से देख रहे हैं। जब हम आपके पास से बाहर आते हैं और बीवी-बच्चों और काम-काज में लग जाते हैं, तो हम (जन्नत-जहन्नम सब) भूल जाते हैं। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, हमारा भी यही हाल है।

फिर मैंने जाकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में यह सारी बात ज़िक्र की। आपने फ़रमाया, ऐ हंज़ला ! तुम्हारी जो हालत मेरे पास होती है, वही हालत अगर घरवालों के पास जाकर भी रहे तो फ़रिश्ते तुमसे बिस्तरों पर और रास्तों में मुसाफ़ा करने लगें, लेकिन हंज़ला ! बात यह है कि कभी-कभी, कभी-कभी।[2]

---

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 54
2. कंज़, भाग 1, पृ० 107,

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक रात हमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाग कर गुज़ारी और सुबह हम हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गए। आपने फ़रमाया, आज रात मुझे सपने में अंबिया अलैहिमुस्सलाम और उनकी ताबेदार उम्मतें दिखाई गईं। एक-एक नबी मेरे पास से गुज़रता था, कोई नबी एक जमाअत में होता, किसी के साथ तीन आदमी होते, किसी के साथ कोई भी न होता। हज़रत क़तादा ने यह आयत पढ़ी—

اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ (سورت ہود آیت ۷۸)

'क्या तुममें कोई भी (माक़ूल आदमी और) भला मानुष नहीं।'

(सूरः हूद, आयत 78)

फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, फिर मेरे पास से हज़रत मूसा बिन इम्रान अलैहिस्सलाम बनी इसराईल की एक बहुत बड़ी जमाअत के साथ गुज़रे। हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते हैं, मैंने पूछा, यह कौन हैं? अल्लाह ने फ़रमाया, यह आपके भाई हज़रत मूसा बिन इम्रान और उनके ताबेदार उम्मती हैं। मैंने अर्ज़ किया, ऐ मेरे रब! मेरी उम्मत कहां है? अल्लाह ने फ़रमाया, अपने दाहिने ओर टीलों में देखो।

मैंने वहां देखा तो बहुत-से आदमियों के चेहरे नज़र आए। फिर अल्लाह ने फ़रमाया, क्या तुम राज़ी हो? मैंने कहा, ऐ मेरे रब! मैं राज़ी हो गया। अल्लाह ने फ़रमाया, अब अपनी बाईं ओर आसमान के किनारे में देखो। मैंने वहां देखा, तो बहुत-से आदमियों के चेहरे नज़र आए।

अल्लाह ने फ़रमाया, क्या आप राज़ी हो गए? मैंने कहा, ऐ मेरे रब! मैं राज़ी हो गया। अल्लाह ने फ़रमाया, इनके साथ सत्तर हज़ार और भी हैं जो जन्नत में हिसाब के बग़ैर दाख़िल होंगे, फिर क़बीला बनू असद के हज़रत उकाशा बिन मिह्सन रज़ियल्लाहु अन्हु, जो कि बदरी थे, कहने लगे, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल०! अल्लाह से मेरे लिए दुआ करें कि अल्लाह मुझे उनमें शामिल कर दे।

हुज़ूर सल्ल० ने दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह! इसे इनमें शामिल फ़रमा दे।

फिर एक और आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! अल्लाह से दुआ करें, अल्लाह मुझे भी उनमें शामिल कर दे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इस दुआ में उकाशा तुमसे आगे निकल गए। फिर हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा रज़ि० से फ़रमाया, मेरे मां-बाप तुम पर क़ुरबान हों, अगर तुम सत्तर हज़ार वालों में से हो सकते हो, तो उनमें से ज़रूर हो जाओ। अगर यह न हो सके तो टीले वालों में से हो जाओ और अगर यह भी न हो सके, तो फिर उनमें से हो जाओ जिनको मैंने आसमान के किनारे में देखा था, क्योंकि मैंने ऐसे बहुत-से आदमी देखे हैं, जिनके हालात इन तीन क़िस्म के इंसानों के ख़िलाफ़ हैं।

फिर आपने फ़रमाया, मुझे उम्मीद है कि तुम जन्नत वालों का चौथाई हिस्सा होगे, इस पर हमने अल्लाहु अक्बर कहा। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुझे उम्मीद है कि तुम लोग जन्नत वालों में आधे होगे। हमने फिर अल्लाहु अक्बर कहा, फिर हुज़ूर सल्ल० ने यह आयत पढ़ी—

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ (سورت واقعہ آیت ۳۹،۴۰)

'उनका एक बड़ा गिरोह अगले लोगों में होगा और एक बड़ा गिरोह पिछले लोगों में से होगा।' (सूरः वाक़िया, आयत 39-40)

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हम आपस में यह बात करने लगे कि ये सत्तर हज़ार कौन हैं? हमने कहा, ये वह लोग हैं जो इस्लाम में पैदा हुए और उन्होंने ज़िंदगी में कभी शिर्क नहीं किया। होते-होते यह बात हुज़ूर सल्ल० के पास पहुंची, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, ये तो वह लोग हैं जो (इलाज के लिए) जिस्म पर दाग़ नहीं लगाएंगे और कभी मंत्र नहीं पढ़ेंगे और न कभी बद फ़ाली (अपशकुन) लेंगे और अपने रब पर भरोसा करेंगे।[1]

हज़रत सुलैम बिन आमिर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा कहा करते थे अल्लाह हमें देहाती लोगों के सवालों से बड़ा नफ़ा पहुंचाते हैं। चुनांचे एक दिन एक

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 293, मुस्तरक, भाग 4, पृ० 578

देहाती आया और उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह ने जहन्नत में एक ऐसे पेड़ का ज़िक्र किया है, जिससे इंसान को तक्लीफ़ होती है।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, वह कौन-सा पेड़ है ? उसने कहा, बेरी का पेड़, क्योंकि उसमें तक्लीफ़ देने वाले कांटे होते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या अल्लाह ने यह नहीं फ़रमाया—

فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ (سورت واقعہ آیت۲۸)

'वे उन बाग़ों में होंगे जहां बिना कांटों की बेरियां होंगी।' (सूरः वाक़िआ, आयत 28) अल्लाह ने उसके कांटे दूर कर दिए हैं और हर कांटे की जगह फल लगा दिया है। इस पेड़ में ऐसे फल लगेंगे कि हर फल में बहत्तर क़िस्म के मज़े होंगे और हर मज़ा दूसरे से अलग होगा।[1]

हज़रत उत्बा बिन अब्द सुलमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठा हुआ था कि इतने में एक देहाती आदमी आया। उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने आपसे जन्नत में एक ऐसे पेड़ का ज़िक्र सुना है कि मेरे ख़्याल में उससे ज़्यादा कांटे वाला पेड़ और कोई नहीं होगा, यानी बबूल का पेड़।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह उसके हर कांटे की जगह भरे हुए गोश्त वाले बकरे के ख़सीए के बराबर फल लगा देंगे और उस फल में सत्तर क़िस्म के मज़े होंगे और हर मज़ा दूसरे से अलग होगा।[2]

हज़रत उत्बा बिन अब्द सुलमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक देहाती हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया और उसने हुज़ूर सल्ल० से हौज़ के बारे में पूछा और जन्नत का ज़िक्र किया। फिर उस देहाती ने कहा, क्या उसमें फल भी होंगे? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, उसमें एक पेड़ है जिसे तूबा कहा जाता है।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने किसी और चीज़ का

1. इब्नुनज्जार
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 288,

भी ज़िक्र किया, लेकिन मुझे मालूम न हो सका कि वह क्या चीज़ थी? उस देहाती ने कहा, हमारे इलाक़े के किस पेड़ से मिलती-जुलती है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हारे इलाक़े के किसी पेड़ जैसा नहीं है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम शाम गए हो? उसने कहा, नहीं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह शाम के एक पेड़ से मिलता-जुलता है, जिसको अख़रोट कहा जाता है, एक तने पर उगता है और उसके ऊपर वाली शाखाएं फैली हुई हैं। फिर उस देहाती ने कहा, गुच्छा कितना बड़ा होगा? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, काले-उजले दाग़ों वाला कौवा बिना रुके एक महीना लगातार उड़ कर जितनी दूरी तै करता है, वह गुच्छा उस दूरी के बराबर होगा।

फिर उस देहाती ने कहा, उस पेड़ की जड़ कितनी मोटी होगी? आपने फ़रमाया, तुम्हारे घरवालों के ऊंटों में से एक जवान ऊंट चलना शुरू करे और चलते-चलते बूढ़ा हो जाए और बूढ़ा होने की वजह से उसकी हंसली की हड्डी टूट जाए, फिर भी वह उसकी जड़ का एक चक्कर नहीं लगा सकेगा।

फिर उस देहाती ने पूछा, क्या जन्नत में अंगूर होंगे? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, उसने पूछा, अंगूर का दाना कितना बड़ा होगा? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तेरे बाप ने कभी अपनी बकरियों में से बड़ा बकरा ज़िब्ह किया है? उसने कहा, जी, किया है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, फिर उसने उसकी खाल उतार कर तेरी मां को दे दी हो और उससे कहा हो कि खाल का हमारे लिए डोल बना दे? उस देहाती ने कहा, जी हां।

(हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह दाना उस डोल के बराबर होगा।) फिर उस देहाती ने कहा, (जब वह दाना डोल के बराबर होगा) फिर तो एक दाने से मेरा और मेरे घरवालों का पेट भर जाएगा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, बल्कि तेरे सारे ख़ानदान का पेट भर जाएगा।[1]

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 290

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हब्शा का एक आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो चाहे, पूछो। उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपको शक्ल, सूरत, रंग और नुबूवत की वजह से हम पर फ़ज़ीलत हासिल है, ज़रा यह बताएं कि अगर मैं उन तमाम चीज़ों पर ईमान ले आऊं, जिन पर आप ईमान ले आए हैं और वह तमाम अमल करूं जो आप कर रहे हैं, तो क्या मैं भी जन्नत में आपके साथ हो सकता हूं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बिल्कुल ज़रूर, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, काले हब्शी की सफ़ेदी जन्नत में हज़ार साल की दूरी से नज़र आएगी। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो आदमी 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहे, वह अल्लाह की ज़िम्मेदारी में आ जाता है और जो 'सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही' कहे, उसके लिए एक लाख चौबीस हज़ार नेकियां लिखी जाती हैं।

इस पर एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इसके बाद हम कैसे हलाक होंगे? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन एक आदमी इतने आमाल लेकर आएगा कि अगर वे आमाल किसी पहाड़ पर रख दिए जाएं तो पहाड़ को भारी लगने लगें। फिर उन आमाल के मुक़ाबले में अल्लाह की नेमतें आएंगी और वे उन सारे आमाल को ख़त्म करने के क़रीब होंगी, अलबत्ता अगर अल्लाह उसे अपनी रहमत से ढांप ले तो उसके आमाल बच सकेंगे और जब यह सूरः

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ

से लेकर

مُلْكًا كَبِيْرًا (سورت دہر آیت ۱تا۲۰)

तक उतरी, यानी 'बेशक इंसान पर ज़माने में ऐसा वक़्त भी आ चुका है, जिसमें वह ज़िक्र के क़ाबिल कोई चीज़ न था (यानी इंसान न था, बल्कि नुत्फ़ा था) (सूरः दह्र, आयत 1-20) तो उस हब्शी ने कहा, मेरी आंखें भी जन्नत में वह सब कुछ देखेंगी जो आपकी आंखें देखेंगी ?

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, हां। यह सुनकर (खुशी के मारे) वह रोने लगा, और इतना रोया कि उसकी जान निकल गई। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि हुज़ूर सल्ल० अपने हाथ से उसे क़ब्र में उतार रहे थे।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन वह्ब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हमें बताया कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सललम पर 'हल अता अलल इन्सानि हीनुम मिनद्दहि' वाली सूरः उतरी तो उस वक़्त आपके पास एक काला आदमी बैठा हुआ था। हुज़ूर सल्ल० ने यह सूरः पढ़कर सुनाई। जब हुज़ूर सल्ल० इस सूरः में जन्नत की नेमतों के ज़िक्र पर पहुंचे, तो उसने एक लम्बा सांस ज़ोर से लिया और उसकी जान निकल गई। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जन्नत के शौक़ ने तुम्हारे साथी और तुम्हारे भाई की जान ले ली।[2]

हज़रत अबू मतर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाते हुए सुना कि जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को अबू लूलूवा ने घायल किया तो मैं उनके पास गया, वह रो रहे थे। मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप क्यों रोते हैं। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैं आसमान के फ़ैसले की वजह से रो रहा हूं, मुझे मालूम नहीं कि मुझे जन्नत में ले जाया जाएगा या जहन्नम में?

मैंने उनसे कहा, आपको जन्नत की ख़ुशख़बरी हो, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहुत बार फ़रमाते हुए सुना है कि अबूबक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा जन्नत के बड़ी उम्र के लोगों के सरदार हैं और दोनों बड़े अच्छे आदमी हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अली रज़ि०! क्या तुम मेरे जन्नती होने के गवाह हो? मैंने कहा, जी हां और ऐ हसन! तुम अपने बाप के

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 457
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 453

गवाह रहना कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उमर रज़ि० जन्नत वालों में से है।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़ोह्द के बाब में गुज़र चुका है कि उन्होंने अपनी एक मेहमानी के मौक़े पर फ़रमाया कि हमें तो यह खाना मिल गया, लेकिन वे मुसलमान फ़क़ीर, जिनका इस हाल में इंतिक़ाल हुआ कि उनको पेट भर जौ की रोटी भी न मिलती थी, उनको क्या मिलेगा? हज़रत उमर बिन वलीद ने कहा, उन्हें जन्नत मिलेगी। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० की आंखें डबडबा आईं। और फ़रमाया, अगर हमारे हिस्से में दुनिया का यह माल व मता है और वे जन्नत ले जाएं, तो वे हमसे बहुत आगे निकल गए और बड़ी फ़ज़ीलत हासिल कर ली।[2]

हज़रत मुसअब बिन साद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब मेरे वालिद (हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु) की जान निकल रही थी, उनका सर मेरी गोद में था, मेरी आंखों में आंसू आ गए। उन्होंने मेरी ओर देखा और फ़रमाया, ऐ मेरे बेटे! क्यों रोते हो? मैंने कहा, आपके मुक़ाम की वजह से और आपको मरते हुए देखकर रो रहा हूं।

मेरे वालिद ने कहा, मुझे मत रोओ, क्योंकि अल्लाह मुझे कभी अज़ाब नहीं देंगे और मैं यक़ीनन जन्नत वालों में से हूं और मोमिन बन्दे जब तक अल्लाह के लिए अमल करेंगे अल्लाह उनको नेकियों का बदला देगा और कुफ़्फ़ार की नेकियों की वजह से उनके अज़ाब में कमी होगी और ईमान वालों के वे अमल जो उन्होंने अल्लाह के लिए किए थे, जब वे ख़त्म हो जाएंगे, तो उनसे कहा जाएगा जिसके लिए अमल किया था, हर एक उसका सवाब भी उसी से ले ले।[3]

हज़रत इब्ने शुमासा महरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हम लोग हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० की ख़िदमत में गए और उनकी जान

1. अब्द बिन हुमैद,
2. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 438,
3. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 147

निकल रही थी। उन्होंने अपना चेहरा दीवार की ओर फेर लिया और काफ़ी देर रोते रहे। उनका बेटा उनको कहता रहा, आप क्यों रो रहे हैं? क्या आपको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह और यह ख़ुशख़बरी नहीं दी? लेकिन वह दीवार की ओर मुंह किए रोते रहे। फिर हमारी ओर मुंह करके फ़रमाया, तुम जो फ़ज़ीलतें गिन रहे हो, इन सबसे अफ़ज़ल तो कलिमा शहादत—

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

हैं, लेकिन मेरी ज़िंदगी के तीन दौर हैं—

1. पहला दौर तो वह था कि मुझे उस ज़माने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ज़्यादा बुरा कोई नहीं था और हुज़ूर सल्ल० पर क़ाबू पाकर क़त्ल कर देने से ज़्यादा पसन्दीदा और कोई काम नहीं था। अगर मैं इस हाल में मर जाता, तो मैं जहन्नम वालों में से होता।

2. फिर अल्लाह ने मेरे दिल में इस्लाम की सच्चाई डाल दी और मैं बैअत होने के लिए हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप अपना दाहिना हाथ बढ़ाएं, ताकि मैं आपसे बैअत हो जाऊं। हुज़ूर सल्ल० ने अपना मुबारक हाथ बढ़ा दिया। मैंने अपना हाथ पीछे कर लिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हें क्या हुआ? मैंने कहा, मैं कुछ शर्त लगाना चाहता हूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या शर्त लगाना चाहते हो? मैंने कहा, यह शर्त लगाना चाहता हूं कि मेरी मग़फ़िरत हो जाए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अम्र रज़ि० ! क्या तुम नहीं जानते कि इस्लाम अपने से पहले के तमाम गुनाहों को मिटा देता है और हिजरत करने से भी पहले के तमाम गुनाह माफ़ हो जाते हैं और हज करने से भी पहले के तमाम गुनाह माफ़ हो जाते हैं और फिर मेरा यह हाल हो गया कि हुज़ूर सल्ल० से ज़्यादा मुझे कोई महबूब नहीं था और मेरी निगाह में हुज़ूर सल्ल० से ज़्यादा और कोई अज़मत वाला नहीं था। अगर कोई मुझसे कहता कि हुज़ूर सल्ल० का हुलिया बयान करो, तो मैं बयान नहीं कर सकता था,

क्योंकि मैं हुज़ूर सल्ल० की अज़्मत और हैबत की वजह से आपको आंखें भरकर देख नहीं सकता था। अगर मैं उस हालत पर मर जाता तो मुझे यक़ीन था कि मैं जन्नत वालों में से होता।

3. इसके बाद हमें बहुत-से काम करने पड़े। अब मुझे मालूम नहीं कि इन कामों के करने के बाद अब मेरा क्या हाल होगा। इसलिए जब मैं मर जाऊं तो मेरे जनाज़े के साथ न कोई नौहा करने वाली औरत जाए और न आग और जब तुम मुझे दफ़न कर लो तो मेरे ऊपर अच्छी तरह मिट्टी डालना और दफ़न करके मेरी क़ब्र के पास इतनी देर ठहरे रहना जितनी देर में ऊंट को ज़िब्ह करके उसका गोश्त बांट दिया जाता है। तुम लोगों के क़रीब रहने से मुझे उन्स रहेगा, यहां तक कि मुझे पता चल जाए कि मैं अपने रब के क़ासिदों के सवालों का क्या जवाब देता हूं।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन शमासा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया, तो वह रोने लगे। उनसे उनके बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, आप क्यों रो रहे हैं? क्या आप मौत से घबरा रहे हैं?

हज़रत अम्र रज़ि० ने कहा, नहीं, अल्लाह की क़सम! नहीं, (मौत की वजह से नहीं रो रहा हूं) बल्कि मौत के बाद जो हालात आने वाले हैं, उनकी वजह से रो रहा हूं। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने उनसे कहा, आपने तो ख़ैर भलाई का ज़माना गुज़ारा है, फिर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० उन्हें याद कराने लगे कि आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहे हैं। आपने शाम में बड़ी जीतें हासिल की हैं।

हज़रत अम्र रज़ि० ने फ़रमाया, तुमने उन सबसे अफ़ज़ल चीज़ को तो छोड़ दिया और वह है कलिमा शहादत 'अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु'। फिर आगे हदीस को थोड़े में ज़िक्र किया और उसके आख़िर में यह मज़्मून है कि जब मैं मर जाऊं तो कोई औरत बैन न करे और न कोई तारीफ़ करने वाला मेरे जनाज़े के साथ जाए और न

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 258, मुस्लिम, भाग 1, पृ० 76,

(जाहिलियत के दस्तूर के मुताबिक़) मेरे जनाज़े के साथ आग हो। अब मेरी लुंगी अच्छी तरह मज़बूती से बांध दो, क्योंकि (जान निकालते वक़्त) फ़रिश्ते मुझसे झगड़ा करेंगे (तो कहीं इस हालत में सतर न खुल जाए) और मेरे ऊपर दोनों तरफ़ अच्छी तरह मिट्टी डालना, क्योंकि मेरा दायां पहलू बाएं पहलू से ज़्यादा मिट्टी का हक़दार नहीं है और मेरी क़ब्र में कोई लकड़ी और पत्थर इस्तेमाल न करना, (ताकि क़ब्र शानदार न बने।)[1]

एक रिवायत में यह है कि इसके बाद हज़रत अम्र रज़ि० ने अपना चेहरा दीवार की ओर फेर लिया और कहने लगे, ऐ अल्लाह! तूने हमें बहुत-से हुक्म दिए, लेकिन हमने तेरी नाफ़रमानी की और वे हुक्म पूरे न किए और तूने हमें बहुत-से कामों से रोका, लेकिन हम न रुके, इसलिए हमारी नजात की बस एक ही शक्ल है कि तू हमें माफ़ कर दे।

और एक रिवायत में यह है कि उन्होंने अपना हाथ अपने गले पर इस तरह रखा जैसे कि गले में तौक़ डाला जाता है, फिर आसमान की ओर सर उठाकर कहा, ऐ अल्लाह! मैं ताक़तवर भी नहीं कि बदला ले सकूं और न बेक़ुसूर हूं कि उज़्र पेश कर सकूं और न ही मुझे अपनी ग़लतियों और गुनाहों से इंकार है, बल्कि मैं तो इस्तग़फ़ार करता हूं, 'ला इला-ह इल्ला अन-त', वे ये कलिमे बार-बार कहते रहे, यहां तक कि उनका इंतिक़ाल हो गया।

(और इब्ने साद की रिवायत के आख़िर में ये लफ़्ज़ हैं कि) फिर हज़रत अम्र रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह! तूने हमें बहुत-से हुक्म दिए, जिन्हें हमने पूरा न किया और तूने हमें बुरे कामों से रोका, लेकिन हमने अपने आपको बर्बाद कर दिया। न तो मैं बे-क़सूर हूं कि उज़्र पेश करूं और न ऐसा ज़ोरदार हूं कि बदला ले सकूं। 'ला इला-ह इल्लल्लाह' इंतिक़ाल तक इन्हीं कलिमों को दोहराते रहे।[2]

---

1. बिदाया, भाग 8, पृ० 26,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 260

नुसरत के बाब में गुज़र चुका है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अंसार से फ़रमाया, तुम्हारे ऊपर जो हमारी नुसरत का हक़ था, वह तुमने पूरा-पूरा कर दिया। अब अगर तुम चाहो तो तुम यों कर लो कि अपना ख़ैबर का हिस्सा तुम ख़ुशी-ख़ुशी मुहाजिरों को दे दो और (मदीना के बाग़ों के) सारे फल ख़ुद रख लिया करो (और मुहाजिरों को अब उनमें से कुछ न दिया करो, यों मदीने का सारा फल तुम्हारा हो जाएगा और ख़ैबर का सारा फल मुहाजिरों का हो जाएगा।)

अंसार ने कहा, हमें मंज़ूर है। आपने हमारे ज़िम्मे अपने कई काम लगाए थे, वे हमने सारे कर दिए, अब हम चाहते हैं कि हमारी चीज़ हमें मिल जाए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह जन्नत तुम्हें ज़रूर मिलेगी। इसे बज़्ज़ार ने रिवायत किया है।

और जिहाद के बाब में यह गुज़र चुका है कि बद्र के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लड़ने के लिए उभारा, तो हज़रत उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, वाह! वाह! क्या मेरे और जन्नत में दाख़िल होने के दर्मियान सिर्फ़ यही चीज़ रोक है कि ये (काफ़िर) लोग मुझे क़त्ल कर दें? यह कहकर खजूरें हाथ से फेंक दीं और तलवार लेकर काफ़िरों से लड़ना शुरू किया, यहां तक कि शहीद हो गए।

दूसरी रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम वाह-वाह क्यों कह रहे हो? उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! अल्लाह की क़सम सिर्फ़ इस उम्मीद पर कह रहा हूं कि मैं भी जन्नत वालों में से हो जाऊं। आपने फ़रमाया, तुम जन्नत वालों में से हो। फिर वह अपनी झोली में से निकालकर खजूरें खाने लगे, फिर कहने लगे, इन खजूरों के खाने तक मैं ज़िंदा रहूं, यह तो बड़ी लम्बी ज़िंदगी है। यह कहकर उन खजूरों को फेंक दिया और शहीद होने तक काफ़िरों से लड़ते रहे। इस हदीस को इमाम अहमद वग़ैरह ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।

और जिहाद के बाब में घायल होने के उन्वान में यह गुज़र चुका है

कि हज़रत अनस बिन नज़्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, वाह ! वाह ! जन्नत की ख़ुश्बू और हवा क्या ही उम्दा है जो मुझे उहुद पहाड़ के पीछे से आ रही है। फिर उन्होंने काफ़िरों से लड़ाई शुरू कर दी, यहां तक कि शहीद हो गए और सहाबा किराम के अल्लाह के रास्ते में शहीद होने के शौक़ में यह गुज़र चुका है कि जब हज़रत साद बिन ख़ैसमा रज़ियल्लाहु अन्हु से उनके वालिद ने कहा, अब हम दोनों में से एक का रहना यहां ज़रूरी हो गया है तो हज़रत साद रज़ि० ने कहा, अगर जन्नत के अलावा कोई और चीज़ होती तो मैं (हुज़ूर सल्ल० के साथ जाने में) आपको अपने से आगे रखता। मैं अपने इस सफ़र में शहादत की उम्मीद लगाए हुए हूं और हज़रत साद बिन रबीअ रज़ियल्लाहु अन्हु का क़िस्सा भी गुज़र चुका है कि हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे कहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम्हें सलाम कहते हैं और तुमसे पूछते हैं कि बताओ, तुम अपने आपको कैसा पा रहे हो? तो हज़रत साद रज़ि० ने उनसे कहा, तुम हुज़ूर सल्ल० से कह देना कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरा हाल यह है कि मैं जन्नत की ख़ुश्बू पा रहा हूं और यह भी गुज़र चुका है कि बेरे मऊना की लड़ाई के दिन हज़रत हराम बिन मलहान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा था कि रब्बे काबा की क़सम ! मैं कामियाब हो गया यानी जन्नत मिलने की कामियाबी मिल गई और हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की बहादुरी के उन्वान में यह गुज़र चुका है कि हज़रत अम्मार रज़ि० ने कहा, ऐ हाशिम ! आगे बढ़ो, जन्नत तलवारों के साए के नीचे है और मौत नेज़ों के किनारों में है। जन्नत के दरवाज़े खोले जा चुके हैं और बड़ी आंखों वाली हूरें सज चुकी हैं। आज मैं अपने महबूब दोस्तों हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनकी जमाअत से मिलूंगा, फिर हज़रत अम्मार रज़ि० और हज़रत हाशिम रज़ि० दोनों ने ज़ोरदार हमला किया और दोनों शहीद हो गए।

और हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अनहु की बहादुरी के उन्वान में यह भी गुज़र चुका है कि हज़रत अम्मार रज़ि० ने कहा, ऐ मुसलमानो ! क्या

तुम जन्नत से भाग रहे हो? मैं अम्मार बिन यासिर हूं, क्या तुम जन्नत से भाग रहे हो? मैं अम्मार बिन यासिर हूं, मेरी ओर आओ और इमारत कुबूल करने से इंकार करने के बाब में यह गुज़र चुका है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि इससे पहले कभी मेरे दिल में दुनिया का ख्याल नहीं आया था। मैंने सोचा कि इनसे जाकर यह कहूं कि इस ख़िलाफ़त की उम्मीद और लालच वह आदमी कर रहा है, जिसने आपको और आपके बाप को इस्लाम की वजह से मारा था और (मार-मारकर) तुम दोनों को इस्लाम में दाख़िल किया था। (इससे हज़रत उमर रज़ि० अपनी ज़ात मुराद ले रहे हैं) लेकिन फिर मुझे जन्नतें और नेमतें याद आ गईं, तो मैंने उनसे यह बात कहने का इरादा छोड़ दिया।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने यह बात उस वक़्त कही थी जब दौमतुल जन्दल में हज़रत मुआविया रज़ि० ने कहा, कौन ख़िलाफ़त का लालच और उम्मीद रखता है? और हज़रत सईद बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु का क़िस्सा पहले गुज़र चुका है कि जब उन्होंने सदक़ा किया तो कुछ लोगों ने उनको कहा कि आपके घरवालों का आप पर हक़ है, आपकी ससुराल वालों का भी आप पर हक़ है, तो हज़रत सईद रज़ि० ने कहा, मैंने उनके हक़ों की अदाएगी में कभी किसी को उन पर तर्जीह नहीं दी। मैं मोटी आंखों वाली हूरें हासिल करना चाहता हूं, इसलिए मैं किसी इंसान को इस तरह ख़ुश नहीं करना चाहता कि उससे हूरों के मिलने में कमी आए या वे न मिल सकें, क्योंकि जन्नत की अगर एक भी हूर आसमान से झांक ले, तो उसकी वजह से सारी ज़मीन ऐसे चमकने लगेगी जैसे सूरज चमकता है।

दूसरी रिवायत में यह है कि हज़रत सईद रज़ि० ने अपनी बीवी से कहा, ऐसे ही आराम से बैठी रहो, मेरे कुछ साथी थे, जो थोड़े दिनों पहले मुझसे जुदा हो गए, (इस दुनिया से चले गए) अगर मुझे सारी दुनिया भी मिल जाए तो भी मुझे उनका रास्ता छोड़ना पसन्द नहीं है। अगर जन्नत की ख़ुबसूरत हूरों में से एक हूर दुनिया के आसमान से झांक ले, तो सारी ज़मीन उसके नूर से रोशन हो जाए और उसके चेहरे का नूर

चांद-सूरज की रोशनी पर ग़ालिब आ जाए और जो दोपट्टा उसे पहनाया जाता है वह दुनिया और जो कुछ उसमें है, उससे ज़्यादा क़ीमती है। अब मेरे लिए यह तो आसान है कि इन हूरों की वजह से तुझे छोड़ दूं, लेकिन तेरी ख़ातिर उसे नहीं छोड़ सकता। यह सुनकर वह नर्म पड़ गई और राज़ी हो गई।

बीमारियों पर सब्र करने के बाब में यह क़िस्सा गुज़र चुका है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक अंसारी औरत से यह फ़रमाया, तुमको इन दो बातों में से कौन-सी बात पसन्द है, एक यह कि मैं तुम्हारे लिए दुआ कर दूं और तुम्हारा बुख़ार चला जाए, दूसरी यह कि तुम सब्र करो और तुम्हारे लिए जन्नत वाजिब हो जाए? तो उस अंसारी औरत ने तीन बार कहा, अल्लाह की क़सम! ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं सब्र करूंगी और फिर कहा, मैं अल्लाह की जन्नत को ख़तरे में नहीं डाल सकती।

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु का क़िस्सा गुज़र चुका है कि जब वह बीमार हुए तो उनके साथियों ने उनसे कहा, आप क्या चाहते हैं? हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने कहा, मैं जन्नत चाहता हूं।

और औलाद के मरने पर सब्र करने के बाब में हज़रत उम्मे हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु का क़िस्सा गुज़र चुका कि जब उनका बेटा हज़रत हारिसा रज़ि० बद्र के दिन शहीद हुआ तो उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप मुझे बताएं हारिसा रज़ि० कहां है? अगर वह जन्नत में है तो मैं सब्र करूंगी, वरना अल्लाह भी देख लेंगे कि मैं क्या करती हूं? यानी कितना नौहा करती हूं। उस वक़्त नौहा करना हराम नहीं हुआ था।

दूसरी रिवायत में यह है कि हज़रत उम्मे हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर मेरा बेटा जन्नत में है तो मैं न रोऊंगी और न ग़म ज़ाहिर करूंगी और अगर वह जहन्नम में है तो मैं जब तक दुनिया में ज़िंदा रहूंगी, रोती रहूंगी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया,

ऐ उम्मे हारिसा ! वहां एक जन्नत नहीं है, बल्कि कई जन्नतें हैं और (तुम्हारा बेटा) हारिस (प्यार की वजह हारिसा की जगह फ़रमाया) तो फ़िर्दौसे आला में है। इस पर वह हंसती हुई वापस गईं और कह रही थीं वाह ! वाह ! ऐ हारिस ! तेरे क्या कहने।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक बार में जहन्नम को याद करके रोने लगी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ आइशा ! तुम्हें क्या हुआ ? मैंने कहा, मैं जहन्नम याद करके रो रही हूं, क्या आप क़ियामत के दिन अपने घरवालों को याद रखेंगे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तीन जगहों पर कोई किसी को याद नहीं रखेगा। एक तो आमाल के तराज़ू के पास, जब तक यह न मालूम हो जाए कि उसका तराज़ू (नेक आमाल की वजह से) हलका होगा या (गुनाहों की वजह से) भारी ? दूसरे आमालनामा मिलने के वक़्त जिसे दाहिने हाथ में मिलेगा, वह कहेगा, लो मेरा आमालनामा, पढ़ लो, यहां तक कि उसे मालूम हो जाए कि आमालनामा उसके दाहिने हाथ में आएगा या बाएं में और (सामने से मिलेगा) या पीठ के पीछे से।

तीसरे पुले सिरात के पास—जब पुले सिरात जहन्नम की पीठ पर रखा जाएगा, उसके दोनों किनारे पर बहुत सारे आंकड़े और कांटे होंगे। अल्लाह अपनी मख़्लूक़ में से जिसे चाहेंगे, इन आंकड़ों और कांटों में फंसा कर रोक लेंगे, यहां तक कि यह मालूम हो जाए कि उससे निजात पाता है या नहीं।[1]

हज़रत अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी दाऊद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे यह रिवायत पहुंची है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयत पढ़ी—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ

'ऐ ईमान वालो ! तुम अपने आपको और अपने घरवालों को (दोज़ख़ की) उस आग से बचाओ, जिसका ईंधन (और सोख़्ता) आदमी

---

1. हाकिम, भाग 4, पृ० 578,

और पत्थर है।' (सूरः तहरीम, आयत 6) उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० के पास कुछ सहाबा बैठे हुए थे, उनमें से एक बड़े मियां भी थे। बड़े मियां ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जहन्नम के पत्थर दुनिया के पत्थर जैसे होंगे?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जहन्नम की चट्टानों में से एक चट्टान दुनिया के तमाम पहाड़ों से ज़्यादा बड़ी है। यह सुनकर वह बड़े मियां बेहोश होकर गिर पड़े। हुज़ूर सल्ल० ने उसके दिल पर हाथ रखा, तो वह ज़िंदा था। हुज़ूर सल्ल० ने उसे पुकार कर कहा, ऐ बड़े मियां ! 'ला इला-ह इल्लल्लाह' पढ़ो। उसने कलिमा पढ़ा। हुज़ूर सल्ल० ने उसे जन्नत की ख़ुशख़बरी दी। हुज़ूर सल्ल० के सहाबा ने कहा, यह ख़ुशख़बरी हम में से सिर्फ़ इसी के लिए है? हुज़ूर सल्ल० ने कहा, हां ! अल्लाह फ़रमाते हैं—

ذٰلِکَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِیْ وَخَافَ وَعِیْدِ (سورت ابراہیم آیت ۱۴)

'यह हर उस आदमी के लिए (आम) है जो मेरे सामने खड़े होने से डरे और मेरी धमकी से डरे।' (सूरः इब्राहीम, आयत 14)[1]

हाकिम की एक रिवायत में बड़े मियां के बजाए एक नवजवान के बेहोश गिरने का ज़िक्र है।

अल्लाह से डरने के बाब में यह क़िस्सा गुज़र चुका है कि एक अंसारी नवजवान के दिल में अल्लाह का डर इतना ज़्यादा बैठ गया था कि जब भी उसके सामने जहन्नम का ज़िक्र होता, तो वह रोने लग जाता और इस कैफ़ियत के छाए रहने की वजह से, वह हर वक़्त ही घर रहने लगा और बाहर निकलना छोड़ दिया। किसी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इसका तज़्किरा किया तो आप उसके घर तशरीफ़ ले गए। जब उस नवजवान की हुज़ूर सल्ल० पर निगाह पड़ी तो वह खड़े होकर हुज़ूर सल्ल० के गले लग गया और इसी हाल में उसकी जान निकल गई और वह मरकर नीचे गिर पड़ा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम अपने साथी का

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 391,

कफ़न-दफ़न करो। जहन्नम के डर ने इसके जिगर के टुकड़े कर दिए।[1]

और शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु अन्हु का क़िस्सा भी गुज़र चुका है कि जब वह बिस्तर पर लेटते तो करवटें बदलते रहते और उनको नींद न आती और यों फ़रमाते, ऐ अल्लाह! जहन्नम ने मेरी नींद उड़ा दी है। फिर खड़े होकर नमाज़ शुरू कर देते और सुबह तक उसमें लगे रहते।

इस बाब के कुछ क़िस्से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा के रोने के बाब में गुज़र चुके हैं और मूता की लड़ाई के दिन के कुछ वाक़ियों में यह गुज़र चुका है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु रोने लगे और कहने लगे कि ग़ौर से सुनो, अल्लाह की क़सम! न तो मेरे दिल में दुनिया की मुहब्बत है और न तुम लोगों से ताल्लुक़ और लगाव, बल्कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़ुरआन की इस आयत को पढ़ते हुए सुना, जिसमें दोज़ख़ की आग का तज़्किरा है—

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا (سورت مریم آیت ۷۱)

'और तुममें से कोई भी नहीं जिसका इस पर से गुज़र न हो। यह आपके रब के एतबार से ज़रूरी है जो (ज़रूर) पूरा होकर रहेगा।' (सूरः मरयम, आयत 11) अब मुझे मालूम नहीं कि इस आग पर पहुंचने के बाद वापसी किस तरह होगी?

अल्लाह के वायदों पर यक़ीन

हज़रत नियार बिन मुकरम अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब यह आयत उतरी—

الٓمّٓ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ۝ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ۝
فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ (سورت روم آیت ۱ تا ۴)

'अलिफ़-लाम-मीम, रूम वाले एक क़रीब के मौक़े में मग़लूब हो गए और वे अपने मग़लूब होने के बाद बहुत जल्द तीन साल से लेकर नौ

1. हाकिम

साल के अन्दर-अन्दर ग़ालिब आ जाएंगे।' (सूरः रूम, आयत 1-4)

तो उस वक़्त फ़ारस वाले रूम वालों पर ग़ालिब आए हुए थे और मुसलमान यह चाहते थे कि रूम वाले फ़ारस वालों पर ग़ालिब आ जाएं, क्योंकि मुसलमान और रूम वाले अह्ले किताब थे और इस बारे में अल्लाह का यह फ़रमान है—

وَيَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ○ بِنَصْرِ اللّٰهِ يَنْصُرُ مَنْ

يَّشَآءُ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ○ (سورت روم آیت ۴ تا ۵)

'उस दिन मुसलमान अल्लाह की इस मदद पर ख़ुश होंगे। वह जिसको चाहे ग़ालिब कर देता है और वह ज़बरदस्त है (और) रहम करने वाला है।' (सूरः रूम, आयत 4-5)

और क़ुरैश चाहते थे कि फ़ारस वाले रूम वालों पर ग़ालिब रहें, क्योंकि क़ुरैश और फ़ारस वाले दोनों न तो अह्ले किताब थे और न उन्हें मरने के बाद दोबारा ज़िंदा होने का यक़ीन था। जब अल्लाह ने यह आयत उतारी तो हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का के अलग-अलग इलाक़ों में जाकर ऊंची आवाज़ से यह आयत पढ़ने लगे, तो क़ुरैश के कुछ लोगों ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से कहा, यह आयत हमारे और तुम्हारे बीच फ़ैसला कर देगी। आपके हज़रत यह कहते हैं कि रूम वाले फ़ारस वालों पर तीन से लेकर नौ साल के अन्दर-अन्दर ग़ालिब आ जाएंगे, क्या हम आपके साथ इस बात पर शर्त न लगा लें?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, ठीक है और यह शर्त लगाने के हराम होने से पहले का वाक़िया है। चुनांचे हज़रत अबूबक्र रज़ि० और मुश्रिकों ने शर्त लगाई और हारने पर जो चीज़ देनी पड़ेगी, उसे तै किया और मुश्रिकों ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से कहा, आप तीन साल से लेकर नौ साल तक की मुद्दत में कितने साल तै करते हैं? आप हमारे और अपने बीच कोई मुद्दत तै कर दें, ताकि उसके पूरा होने पर पता चले शर्त कौन हारता है, कौन जीतता है?

चुनांचे उन्होंने छः साल तै कर दिए, फिर छः साल गुज़रने पर भी

रूमी लोग ग़लबा न पा सके, तो मुश्रिकों ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० की शर्त लगाई हुई चीज़ ले ली, फिर जब सातवां साल शुरू हुआ तो रूम वाले फ़ारस वालों पर ग़ालिब आ गए। मुसलमान हज़रत अबूबक्र रज़ि० पर छः साल मुक़र्रर करने पर अब एतराज़ करने लगे, क्योंकि अल्लाह ने तो यह कहा था कि तीन साल से नौ साल के अंदर-अंदर। जब नौ साल से पहले-पहले रूम वालों ने फ़ारस वालों पर ग़लबा हासिल कर लिया, तो इस पर बहुत से लोग मुसलमान हो गए।[1]

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब—

الٓمٓ غُلِبَتِ الرُّومُ فِيٓ أَدْنَى الْأَرْضِ وَهُم مِّنۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُونَ

उतरी तो मुश्रिकों ने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अनहु से कहा, क्या आप नहीं देख रहे कि आपके हज़रत क्या कह रहे हैं? यों कह रहे हैं कि रूम वाले फ़ारस वालों पर ग़ालिब आ जाएंगे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, मेरे हज़रत बिल्कुल सच कहते हैं। उन मुश्रिकों ने कहा, क्या आप हमसे इस पर शर्त लगाने को तैयार हैं?

चुनांचे हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने रूम वालों के ग़ालिब आने की मुद्दत मुक़र्रर कर दी, लेकिन वह मुद्दत गुज़र गई और रूमी फ़ारस वालों पर ग़ालिब न आ सके। जब हुज़ूर सल्ल० को इसकी ख़बर हुई तो आपने नागवारी ज़ाहिर की। यह शर्त लगाकर साल मुक़र्रर कर देना हुज़ूर सल्ल० को पसन्द न आया। आपने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से फ़रमाया, तुमने ऐसा क्यों किया?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अर्ज़ किया, मैंने अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० को सच्चा समझते हुए ऐसा किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अब मुश्रिकों के पास जाओ और शर्त में जो चीज़ मुक़र्रर की है, उसकी मिक़दार भी बढ़ा दो और मुद्दत भी बढ़ा दो। चुनांचे हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने जाकर मुश्रिकों से कहा, क्या आप लोग दोबारा शर्त लगाओगे? क्योंकि दोबारा शर्त पहले से ज़्यादा अच्छी होगी।

1. तिर्मिज़ी

मुश्रिकों ने कहा, ठीक है। (चुनांचे दोबारा जो मुद्दत तै की थी) उस मुद्दत के पूरा होने से पहले ही रूम ने फ़ारस पर ग़लबा पा लिया और उन्होंने अपने घोड़े मदायन में बांध दिए और रूमिया शहर की बुनियाद रखी। फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० शर्त वाला माल लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आए और अर्ज़ किया कि यह हराम माल है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह दूसरों को दे दो।[1]

हज़रत काब बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हियरा वालों के वफ़्द के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने हम पर इस्लाम पेश किया। हम मुसलमान हो गए और हियरा वापस आ गए। कुछ दिन गुज़रे थे कि हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात की ख़बर आ गई, जिससे मेरे साथी तो शक में पड़ गए और कहने लगे, अगर वह नबी होते तो उनका इंतिक़ाल न होता।

मैंने कहा, नहीं, इनसे पहले और नबियों का भी तो इंतिक़ाल हो चुका है। मैं इस्लाम पर पक्का रहा। मैं फिर मदीना के इरादे से चल पड़ा। रास्ते में मेरा गुज़र एक राहिब के पास से हुआ। हम उससे पूछे बग़ैर कोई फ़ैसला नहीं करते थे। मैंने जाकर उससे कहा, जिस काम का मैंने इरादा किया है, उसके बारे में बताओ, इस बारे में मेरे दिल में कुछ खटक-सी है।

उस राहिब ने कहा, अपने नाम की कोई चीज़ लाओ। मैं टख़ने की हड्डी ले आया (अरबी में टख़ने की हड्डी को काब कहते हैं, और उनका नाम भी काब था। उसने कुछ बाल निकाले और कहा, इस हड्डी को इन बालों में डाल दो। मैंने वह हड्डी उन बालों में डाल दी, तो मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बिल्कुल उसी शक्ल में नज़र आए जिसमें मैंने आपको देखा था और मौत का मंज़र भी सारा उसी तरह नज़र आया जिस तरह हुआ था। (ज़ाहिर में जादू के ज़ोर से यह सब कुछ नज़र आया) इससे मेरे ईमान की रोशनी और बढ़ गई।

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 423

मैंने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर होकर यह सारा क़िस्सा सुनाया और उनके पास ठहर गया। फिर उन्होंने मुझे (स्कन्दरिया के बादशाह) मुक़ौक़िस के पास भेजा, वहां से वापस आया तो फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे मुक़ौक़िस के पास भेजा, और यरमूक की लड़ाई के बाद हज़रत उमर रज़ि० का ख़त लेकर मुक़ौक़िस के पास पहुंचा। मुझे यरमूक की लड़ाई की उस वक़्त तक ख़बर नहीं थी।

मुक़ौक़िस ने कहा, मुझे पता चला है कि रूमियों ने अरबों को क़त्ल कर दिया है और उन्हें हरा दिया है। मैंने कहा, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। उसने कहा, क्यों? मैंने कहा, क्योंकि अल्लाह ने अपने नबी से यह वायदा फ़रमाया है कि उनको तमाम दीनों पर ग़ालिब करेंगे और अल्लाह वायदा ख़िलाफ़ी नहीं करते, इस पर उसने कहा, अल्लाह की क़सम! अरबों ने रूमियों को ऐसे क़त्ल किया है, जैसे आद क़ौम को क़त्ल किया गया था और तुम्हारे नबी ने बिल्कुल सच कहा है।

फिर उसने मुझसे बड़े-बड़े सहाबा रज़ि० के बारे में पूछा और मुझे उनके लिए हदिए दिए। मैंने कहा, उन नबी सल्ल० के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ज़िंदा हैं, उनके साथ भी अच्छा सुलूक और व्यवहार करो।

हज़रत काब रज़ि० कहते हैं, मैं तिजारत वग़ैरह में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का शरीक था। जब हज़रत उमर रज़ि० ने अतीयों का रज़िस्टर बनाया तो मुझे (अपने ख़ानदान) बनू अदी बिन काब में गिन करके मेरा भी हिस्सा मुक़र्रर किया।[1]

इस्लाम से मुंह मोड़ने वालों से लड़ाई लड़ने के बाब में हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का यह क़ौल गुज़र चुका है, अल्लाह की क़सम, मैं अल्लाह की बात को लेकर खड़ा रहूंगा और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करता रहूंगा, यहां तक कि अल्लाह अपने वायदे को पूरा फ़रमा दे और अपने अह्द को हमारे लिए पूरा फ़रमा दे। चुनांचे हम में

1. इसाबा, भाग 3, पृ० 298,

से जो मारा जाएगा, वह शहीद होकर जन्नत में जाएगा और हम में से जो बाक़ी रहेगा, वह अल्लाह की ज़मीन में अल्लाह का ख़लीफ़ा और अल्लाह की इबादत का वारिस बनकर रहेगा। अल्लाह ने हक़ को मज़बूत फ़रमाया, अल्लाह ने फ़रमाया है और उनके फ़रमान के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता—

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ آمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوْا الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ (سورت نور آیت ۵۵)

'(ऐ उम्मत का मज्मूआ!) तुममें से जो लोग ईमान लाएं और नेक अमल करें, उनसे अल्लाह वायदा फ़रमाता है कि उनको (इस पैरवी की बरकत से) ज़मीन में हुकूमत अता फ़रमाएगा, जैसा इनसे पहले (हिदायत वाले) लोगों को हुकूमत दी थी।' (सूरः नूर, आयत 55)

और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का जिहाद और अल्लाह के रास्ते में निकलने के लिए तर्ग़ीब देने के बाब में उनका यह फ़रमान गुज़र चुका है कि जो मुहाजिरीन अल्लाह के दीन के लिए एकदम दौड़कर आया करते थे, वे आज अल्लाह के वायदे से कहां दूर जा पड़े हैं? तुम उस धरती में जिहाद के लिए चलो, जिसके बारे में अल्लाह ने तुमसे क़ुरआन में वायदा किया है कि वह तुम्हें इस ज़मीन का वारिस बनाएगा, क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है—

لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهِ (سورت توبہ آیت ۳۳)

'ताकि उसको तमाम (बाक़ी) दीनों पर ग़ालिब कर दे।'

(सूरः तौबा, आयत 33)

अल्लाह अपने दीन को ज़रूर ग़ालिब करेंगे और अपने मददगार को इज़्ज़त देंगे और अपने दीन वालों को तमाम क़ौमों का वारिस बनाएंगे। अल्लाह के नेक बन्दे कहां हैं? और जिहाद के लिए तर्ग़ीब देने के बाब में हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु का यह क़ौल गुज़र चुका है कि अल्लाह हक़ हैं और बादशाहत में उनका कोई शरीक नहीं, उनकी किसी बात के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता और अल्लाह ने फ़रमाया—

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ

(سورت انبیاء آیت ۱۰۵)

'और हम (सब आसमानी) किताबों में लौहे महफ़ूज़ (में लिखने) के बाद लिख चुके हैं कि इस ज़मीन (जन्नत) के मालिक मेरे नेक बन्दे होंगे।' (सूरः अंबिया, आयत 105)

यह ज़मीन तुम्हारी मीरास है और तुम्हारे रब ने तुम्हें यह देने का वायदा किया हुआ है और तीन साल से अल्लाह ने तुम्हें इस ज़मीन को इस्तेमाल करने का मौक़ा दिया हुआ है, तुम ख़ुद भी इसमें से खा रहे हो और दूसरों को भी खिला रहे हो और यहां के रहने वालों को क़त्ल कर रहे हो और उनका माल समेट रहे हो और आज तक उनकी औरतों और बच्चों को क़ैद कर रहे हो। ग़रज़ यह कि पिछली तमाम लड़ाइयों में तुम्हारे नामी लोगों ने उनको बड़ा नुक़्सान पहुंचाया है और अब तुम्हारे सामने उनकी यह बहुत बड़ी फ़ौज जमा होकर आ गई है। (इस फ़ौज की तायदाद दो लाख बताई जाती है) और तुम अरब के सरदार और इज़्ज़तदार लोग हो और तुममें से हर एक अपने क़बीले का बेहतरीन आदमी है और तुम्हारे पीछे रह जाने वालों की इज़्ज़त तुमसे ही जुड़ी हुई है। अगर तुम दुनिया की बे-रग़बती और आख़िरत का शौक़ पैदा करो तो अल्लाह तुम्हें दुनिया और आख़िरत दोनों दे देंगे।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिन चीज़ों की ख़बर दी है, उन पर यक़ीन करना

हज़रत उमारा बिन ख़ुज़ैमा बिन साबित रहमतुल्लाहि अलैहि अपने चचा से नक़ल करते हैं जो कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी हैं कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक देहाती आदमी से घोड़ा ख़रीदा और उसे अपने पीछे आने के लिए कहा, ताकि उसे घोड़े की क़ीमत दे दें। हुज़ूर सल्ल० तेज़-तेज़ चलते हुए आगे निकल गए। वह देहाती धीरे-धीरे चल रहा था। लोगों को मालूम नहीं था कि हुज़ूर सल्ल० ने उससे यह घोड़ा ख़रीद लिया है, इसलिए लोग

उससे इस घोड़े का सौदा करने लगे।

होते-होते एक आदमी ने उस घोड़े की क़ीमत हुज़ूर सल्ल० से ज़्यादा लगा दी, तो उसने हुज़ूर सल्ल० को आवाज़ देकर कहा, अगर आप यह घोड़ा ख़रीदना चाहते हैं, तो ख़रीद लें, वरना मैं इसे बेचने लगा हूं। हुज़ूर सल्ल० ने जब उस देहाती की यह बात सुनी तो रुक गए। जब देहाती आपके पास पहुंचा तो आपने उससे कहा, क्या मैंने तुमसे यह घोड़ा ख़रीद नहीं लिया ?

उसने कहा, नहीं, अल्लाह की क़सम ! मैंने आपको यह घोड़ा नहीं बेचा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, मैं तुमसे यह घोड़ा ख़रीद चुका हूं। हुज़ूर सल्ल० और वह देहाती आपस में बात करने लगे तो दोनों के पास लोग जमा हो गए। फिर वह देहाती कहने लगा, आप अपना कोई गवाह लाएं जो इस बात की गवाही दे कि मैंने आपके हाथ यह घोड़ा बेचा है। जो भी मुसलमान वहां आता, वह इस देहाती को यही कहता, तेरा नास हो। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो हमेशा हक़ बात ही कहते हैं, यहां तक कि हज़रत ख़ुज़ैमा बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु भी आ गए और उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की और देहाती की बातों को सुना।

वह देहाती कह रहा था कि आप अपना कोई गवाह लाएं, जो इस बात की गवाही दे कि मैंने यह घोड़ा आपके हाथ बेचा है। हज़रत ख़ुज़ैमा रज़ि० ने फ़ौरन कहा, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि तुमने हुज़ूर सल्ल० के हाथ यह घोड़ा बेचा है। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत ख़ुज़ैमा रज़ि० की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, तुम किस बुनियाद पर गवाही दे रहे हो ?

हज़रत ख़ुज़ैमा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं इस बुनियाद पर गवाही दे रहा हूं कि मैं आपको सच्चा मानता हूं, फिर हुज़ूर सल्ल० ने अकेले हज़रत ख़ुज़ैमा रज़ि० की गवाही दो आदमियों की गवाही के बराबर क़रार दे दी।[1]

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 378, अबू दाऊद, पृ० 508,

हज़रत मुहम्मद बिन उमारा बिन ख़ुज़ैमा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ ख़ुज़ैमा! तुम तो हमारे साथ नहीं थे तो तुम किस बुनियाद पर गवाही दे रहे हो? उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! जब मैं आपको आसमान की बातों में सच्चा मानता हूं तो आप यह जो बात कह रहे हैं, इसमें आपको सच्चा कैसे न मानूं? चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उनकी गवाही दो मर्दों के बराबर क़रार दे दी।[1]

इब्ने साद की दूसरी रिवायत में यह है कि हज़रत ख़ुज़ैमा रज़ि० ने कहा, मुझे इस बात का यक़ीन है कि आप हमेशा सिर्फ़ हक़ ही कहते हैं, हम इससे भी बेहतर बात यानी दीनी मामलों में आप पर ईमान ला चुके हैं। हुज़ूर सल्ल० ने उनकी गवाही को दुरुस्त क़रार दिया।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेराज की रात में मस्जिद अक़्सा तशरीफ़ ले गए, तो लोग इस बारे में बातें करने लगे और जो लोग आप पर ईमान लाए थे और आपकी तस्दीक़ कर चुके थे, उनमें से कुछ लोग मुर्तद हो गए। फिर ये लोग हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए और उनसे जाकर कहा, आपका अपने हज़रत के बारे में क्या ख़्याल है, वह यह कह रहे हैं कि वह आज रात बैतुल मक़्दिस गए थे।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, क्या उन्होंने यह बात कही है? लोगों ने कहा, जी हां। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, अगर उन्होंने यह बात कही है, तो बिल्कुल सच है। लोगों ने कहा, तो क्या आप इस बात की तस्दीक़ करते हैं कि वह आज रात बैतुल मक़्दिस गए थे और सुबह से पहले वापस भी आ गए? हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, जी हां। मैं तो इससे भी दूर दिखाई पड़ने वाले मामलों में भी उनकी तस्दीक़ करता हूं। वह सुबह और शाम जो आसमान की ख़बरें बताते हैं, मैं उनमें उनकी तस्दीक़ करता हूं। इसी वजह से हज़रत अबूबक्र रज़ि० का नाम सिद्दीक़

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 372,

रखा गया।[1]

एक रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्ल० पर जो लोग ईमान ला चुके थे, उनमें से कुछ लोग इस मौक़े पर मुर्तद हो गए थे और इनमें से बहुत-से लोगों ने इस वाक़िए की तस्दीक़ की थी। बहरहाल यह वाक़िया भी बहुत बड़ी आज़माइश था।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु मेराज की रात का वाक़िया तफ़्सील से ज़िक्र करते हैं। आख़िर में यह है कि जब मुश्रिकों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात सुनी तो वह हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए और उनसे कहा, ऐ अबूबक्र! आपका अपने हज़रत के बारे में क्या ख़्याल है? वह यह बता रहे हैं कि वह आज रात एक महीने की दूरी पर गये थे और फिर रात ही को वापस आ गए थे। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून है।[3]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में एक साल टिड्डियां कम हो गईं। हज़रत उमर रज़ि० ने टिड्डियों के बारे में बहुत पूछा, लेकिन कहीं से कोई ख़बर न मिली, तो वह इससे बहुत परेशान हुए। चुनांचे उन्होंने एक सवार उधर यानी यमन भेजा और दूसरा शाम और तीसरा इराक़ भेजा, ताकि ये सवार पूछकर आएं कि कहीं टिड्डी नज़र आई है या नहीं।

जो सवार यमन गया था, वह वहां से टिड्डियों की एक मुट्ठी लेकर आया और लाकर हज़रत उमर रज़ि० के सामने डाल दीं। हज़रत उमर रज़ि० ने जब उन्हें देखा तो तीन बार अल्लाहु अक्बर कहा। फिर फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि अल्लाह ने एक हज़ार क़िस्म की मख़्लूक़ पैदा की है, छः सौ

---

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 21
2. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 353,
3. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 71,

समुद्र में और चार सौ ख़ुश्की में और उनमें से सबसे पहले टिड्डी ख़त्म होगी। जब टिड्डियां ख़त्म हो जाएंगी तो फिर और मख़्लूक़ात भी ऐसे आगे-पीछे हलाक होनी शुरू हो जाएंगी, जैसे मोतियों की लड़ी का धागा टूट गया हो।[1]

हज़रत फ़ुज़ाला बिन अबी फ़ुज़ाला अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु यम्बुअ में बीमार थे और बीमारी काफ़ी ज़ोरों पर थी, मैं अपने वालिद के साथ उनकी बीमारपुर्सी के लिए यम्बुअ गया। मेरे वालिद साहब ने उनसे कहा, आप यहां क्यों ठहरे हुए हैं? अगर आपका यहां इंतिक़ाल हो गया तो आपके पास सिर्फ़ जुहैना के देहाती होंगे। आप थोड़ी-सी तक्लीफ़ फ़रमाकर मदीना तशरीफ़ ले चलें। अगर आपका वहां इंतिक़ाल हुआ तो आपके साथी आपके पास होंगे जो आपकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ेंगे।

(मेरे वालिद) हज़रत अबू फ़ुज़ाला रज़ियल्लाहु अन्हु बद्री सहाबा में से थे (इसलिए हज़रत अली की निगाह में उनका बड़ा मुक़ाम था) हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे यक़ीन है कि मेरा इस बीमारी में इंतिक़ाल नहीं होगा, क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे बताया था कि जब तक मैं अमीर न बनाया जाऊं और मेरी यह दाढ़ी मेरे इस सर के ख़ून से रंगी न जाए, उस वक़्त तक मैं नहीं मरूंगा।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ऊंट की रकाब में पांव रख चुका था कि इतने में हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे पास आए और कहने लगे, आप कहां जा रहे हैं? मैंने कहा, इराक़। उन्होंने कहा, अगर आप वहां गए तो आपको कोई तलवार मार देगा। हज़रत अली रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! मैंने इनसे पहले यह बात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुनी हुई है।[3]

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 131
2. मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 59
3. मुंतख़ब

हज़रत मुआविया बिन जरीर हज़रमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि घोड़े सवार मेरे सामने से गुज़रें (चुनांचे सवार गुज़रने लगे।) फिर हज़रत अली रज़ि० के पास से इब्ने मुलजिम गुज़रा। हज़रत अली रज़ि० ने उसका नाम और नसब पूछा। उसने अपने बाप के अलावा किसी और का नाम बता दिया। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, तुम ग़लत कहते हो। फिर उसने अपने बाप का नाम लिया।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, अब तुमने ठीक कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे बताया था कि मेरा क़ातिल यहूदियों जैसा होगा। यह इब्ने मुलजिम यहूदी था। हज़रत अली रज़ि० ने उससे कहा, चले जाओ।[1]

हज़रत उबैदा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु इब्ने मुलजिम को देखते, तो यह शेर (पद) पढ़ते—

أُرِيْدُ حِبَاءَهُ وَيُرِيْدُ قَتْلِي   عَذِيْرَكَ مِنْ خَلِيْلِكَ مِنْ مُرَادٍ

'मैं उसे अतीया देना चाहता हूं, वह मुझे क़त्ल करना चाहता है। तुम क़बीला मुराद में से अपना वह दोस्त लाओ, जो तुम्हारा उज़्र बयान करे।' (मुराद इब्ने मुलजिम का क़बीला था।)[2]

हज़रत अबू तुफ़ैल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास था। उनके पास अब्दुर्रहमान बिन मुलजिम आया। हज़रत अली रज़ि० ने हुक्म दिया कि इसे अतीया दिया जाए, फिर अपनी दाढ़ी की ओर इशारा करते हुए फ़रमाया, इस दाढ़ी को ऊपर के हिस्से (के ख़ून) से रंगने से इस बद-बख़्त को कोई नहीं रोक सकता। फिर हज़रत अली रज़ि० ने ये शेर पढ़े—

أُشْدُدْ حَيَازِيْمَكَ لِلْمَوْتِ   فَإِنَّ الْمَوْتَ آتِيْكَ

'तू मौत के लिए अपनी कमर कस ले, क्योंकि मौत तुम्हें ज़रूर आएगी।'

---

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 62
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 61

وَلَا تَجْزَعْ مِنَ الْقَتْلِ إِذَا حَلَّ بِوَادِيكَا

'और जब क़त्ल तुम्हारी घाटी में उतर जाए तो फिर क़त्ल होने से न घबराना।'[1]

हज़रत उम्मे अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हा, जिन्होंने हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु की परवरिश की थी, वह बयान करती हैं कि एक बार हज़रत अम्मार रज़ि० बीमार हो गए, तो कहने लगे, इस बीमारी में मुझे मौत नहीं आएगी, क्योंकि मेरे महबूब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे बताया था कि मुसलमानों की दो जमाअतों में लड़ाई होगी और मैं उन दो जमाअतों के दर्मियान शहीद होकर ही मरूंगा।[2]

सहाबा किराम रज़ि० के अल्लाह के रास्ते में शहादत के शौक़ के क़िस्सों में हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु का यह क़ौल गुज़र चुका है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया था कि दुनिया में तुम्हारा आख़िरी तोशा दूध की लस्सी होगी (और वह मैं पी चुका हूं और मैं अब दुनिया से जाने वाला हूं।) सिफ़्फ़ीन की लड़ाई के दिन हज़रत अम्मार रज़ि० जब लड़ रहे थे, लेकिन शहीद नहीं हो रहे थे, उस वक़्त उनके हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जाने का क़िस्सा भी गुज़र चुका है और उनका यह क़ौल भी गुज़र चुका है कि ऐ अमीरुल मोमिनीन! यह फ़्लां दिन है। (यानी हुज़ूर सल्ल० ने मुझे जिस दिन शहीद होने की ख़ुशख़बरी दी थी, वह दिन यही है।)

हज़रत अली रज़ि० जवाब में फ़रमाते, अरे, अपने इस ख़्याल को जाने दो। इस तरह तीन बार हुआ। फिर उनके पास दूध लाया गया, जिसे उन्होंने पी लिया, फिर फ़रमाया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि दूध ही वह चीज़ है जिसे मैं दुनिया से जाते वक़्त सबसे आख़िर में पियूंगा, फिर खड़े होकर लड़ाई में शरीक हुए, यहां तक कि शहीद हो गए।

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 59
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 247

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत हिशाम बिन वलीद बिन मुग़ीरह की बेटी रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु की देख-भाल किया करती थीं, वह कहती है कि हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अम्मार रज़ि॰ की बीमारपुर्सी के लिए आए। जब हज़रत मुआविया रज़ि॰ उनके पास से बाहर गए, तो कहने लगे, ऐ अल्लाह! इनकी मौत हमारे हाथों न हो, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्ल॰ को यह फ़रमाते हुए सुना है कि अम्मार रज़ि॰ को एक बाग़ी जमाअत क़त्ल करेगी।[1]

हज़रत इब्राहीम बिन अश्तर रहमतुल्लाहि अलैहि अपने वालिद से नक़ल करते हैं कि जब हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया, तो उनकी बीबी रोने लगी। उन्होंने अपनी बीवी से कहा, तुम क्यों रो रही हो? उसने कहा, मैं इसलिए रो रही हूं कि मुझमें आपको दफ़न करने की ताक़त नहीं और न ही मेरे पास इतना कपड़ा है जो आपके दफ़न के लिए काफ़ी हो।

हज़रत अबूज़र रज़ि॰ ने कहा, मत रोओ, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कुछ लोगों को फ़रमाते हुए सुना और उन लोगों में मैं भी था, आपने फ़रमाया, तुम लोगों में से एक आदमी की मौत जंगल-बयाबान में आएगी और उसके जनाज़े में मुसलमानों की एक जमाअत शरीक होगी। अब उन लोगों में से हर एक का इंतिक़ाल किसी न किसी बस्ती में और मुसलमानों के मज्मे में हुआ है, इसलिए अब मैं ही ऐसा हूं कि जिसे जंगल बयाबान में मौत आएगी। अल्लाह की क़सम! न तो मैं ग़लत कह रहा हूं और न हुज़ूर सल्ल॰ ने मुझसे ग़लत बात कही है, इसलिए आने-जाने के आम रास्ते की तरफ़ देखो।

उनकी बीवी ने कहा, हाजियों के क़ाफ़िले वापस जा चुके हैं और रास्ते बन्द हो चुके हैं। बहरहाल वह टीले पर चढ़ कर खड़ी हो जातीं और रास्ते की ओर देखतीं। (जब कोई नज़र न आता तो) वापस आकर

1. मुंतख़ब कंज़, भाग 5, पृ॰ 247

फिर उनकी देख-भाल और ख़िदमत में लग जातीं और फिर टीले पर चढ़कर देखतीं। वह ऐसे ही कर रही थीं कि अचानक उन्होंने देखा कि एक जमाअत है जिसे उनकी सवारियां तेज़ी से लिए चले आ रही हैं और वे अपने कजावों में बैठे हुए ऐसे लग रहे थे जैसे गिध हों।

उनकी बीवी ने कपड़े से उनकी ओर इशारा किया, तो वे देखकर उनकी ओर आए, यहां तक कि उनके पास आकर खड़े हो गए और पूछा, क्या बात है? उनकी बीवी ने कहा, एक मुसलमान मर रहा है, क्या आप उसके कफ़न का इंतिज़ाम कर सकते हैं? उन लोगों ने पूछा, वह कौन हैं? उन्होंने बताया, वह हज़रत अबूज़र हैं।

यह सुनते ही वे सब कहने लगे कि हमारे मां-बाप हज़रत अबूज़र रज़ि० पर क़ुर्बान हों और कोड़े मार कर सवारियां तेज़ दौड़ाईं और हज़रत अबूज़र रज़ि० के पास पहुंच गए। हज़रत अबूज़र रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हें ख़ुशख़बरी हो और फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली वही हदीस सुनाई, फिर फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि जिन दो मुसलमानों के दो या तीन बच्चे मर जाएं और वे सवाब की नीयत से उस पर सब्र कर लें, तो फिर दोनों को जहन्नम के देखने से भी अल्लाह बचा लेंगे। तुम लोग सुन रहे हो, अगर मेरे पास कफ़न के लिए कोई कपड़ा होता तो मुझे उसी में कफ़न दिया जाता, ऐसे ही अगर मेरी बीवी के पास मेरे कफ़न के क़ाबिल कोई कपड़ा होता, तो मुझे उसी में कफ़न दिया जाता, (हमारे पास कफ़न का कपड़ा तो है नहीं, इसलिए आप कोई कफ़न का कपड़ा दें) लेकिन मैं अल्लाह का और इस्लाम का वास्ता देकर कहता हूं कि तुममें से जो आदमी अमीर या चौधरी या नम्बरदार या क़ासिद रहा हो, वह मुझे कफ़न न दे।

तो उन लोगों में से हर आदमी उनमें से किसी न किसी मंसब पर रह चुका था, सिर्फ़ एक अंसारी जवान ऐसा था जिसने इनमें से कोई भी काम न किया था, उसने कहा, मैं आपको कफ़न दूंगा, क्योंकि आपने जितनी बातें कही हैं मैंने उनमें से कोई काम नहीं किया। मैंने यह चादर ओढ़ रखी है और मेरे थैले में दो कपड़े हैं, जिन्हें मेरी मां ने कात कर मेरे

लिए बुना था। मैं इन तीन कपड़ों में आपको कफ़न दूंगा।

हज़रत अबूज़र रज़ि० ने कहा, हां, तुम ज़रूर मुझे कफ़न देना। चुनांचे उस अंसारी ने उन्हें कफ़न दिया। रिवायत करने वाले हज़रत इब्राहीम कहते हैं कि उस जमाअत में हज़रत हिज्र बिन अदबर और मेरे वालिद मालिक अश्तर भी थे और ये सब लोग यमन के थे।[1]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु को रबज़ा बस्ती की ओर देश निकाला दे दिया और तक़्दीर की लिखी मौत उनको आने लगी और उस वक़्त उनके पास सिर्फ़ उनकी बीवी और उनका एक गुलाम था, तो उन्होंने उन दोनों को वसीयत की कि (जब मेरा इंतिक़ाल हो जाए तो) तुम दोनों मुझे ग़ुस्ल देना और मुझे कफ़न देना, फिर मेरे जनाज़े को रास्ते के दर्मियान में रख देना। जो भी पहला क़ाफ़िला आप लोगों के पास से गुज़रे, उन्हें बता देना कि यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, उनके दफ़्न करने में हमारी मदद करो।

चुनांचे जब उनका इंतिक़ाल हो गया, तो उन दोनों ने ग़ुस्ल देकर कफ़न पहना कर उनका जनाज़ा रास्ते के दर्मियान में रख दिया कि इतने में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इराक़ की एक जमाअत के साथ वहां पहुंचे। ये लोग उमरा करने जा रहे थे। उनके ऊंट जनाज़े पर चढ़ने ही लगे थे कि वे लोग जनाज़ा रास्ते में देखकर घबरा गए। हज़रत अबूज़र रज़ि० के ग़ुलाम ने खड़े होकर कहा, यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, इनके दफ़्न करने में हमारी मदद करो।

यह सुनकर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० चीख़ मारकर रोने लगे और फ़रमाने लगे, हुज़ूर सल्ल० ने सच फ़रमाया था कि (ऐ अबूज़र!) तू अकेला चलेगा और अकेला मरेगा और अकेला उठाया जाएगा, फिर

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 233, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 157

वह और उनके साथी सवारियों से उतरे और उन्हें दफ़न किया। फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० ने अपने साथियों को हज़रत अबूज़र रज़ि० वाली हदीस सुनाई और हुज़ूर सल्ल० ने तबूक जाते हुए हज़रत अबूज़र रज़ि० को जो कुछ कहा था, वह भी बताया।[1]

हज़रत हुमैद बिन मनहब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मेरे दादा हज़रत ख़ुरैम बिन औस रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं हिजरत करके हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर चला और जब आप तबूक से वापस आए, उस वक़्त मैं आपकी ख़िदमत में पहुंचा और मैं इस्लाम में दाख़िल हो गया। मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना कि मुझे यह सफ़ेद हियरा (शहर) दिखाया गया है और यह शीमा बिन्त बुक़ैला अज़्दिया सफ़ेद ख़च्चर पर सवार काला दोपट्टा ओढ़े हुए गोया कि मुझे नज़र आ रही है।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर हम हियरा में दाख़िल हों और जो मंज़र आपने शीमा का बताया है, उस मंज़र में हमें शीमा मिले, तो क्या वह मुझे मिल जाएगी? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, वह तुम्हारी (बांदी) है। फिर (हुज़ूर सल्ल० के इन्तिक़ाल के बाद) बहुत-से लोग मुर्तद हो गए, लेकिन हमारे क़बीला बनू तै में कोई मुर्तद न हुआ।

चुनांचे हम हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हियरा के इरादे से चले। जब हम हियरा में दाख़िल होने लगे तो हमें सबसे पहले शीमा बिन्त बुक़ैला उसी हाल में मिली, जो हुज़ूर सल्ल० ने बताया था, सफ़ेद ख़च्चर पर सवार, काला दोपट्टा ओढ़े हुए थी। मैंने उस पर फ़ौरन क़ब्ज़ा कर लिया और मैंने कहा, मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसका सारा हाल बताया था (और आपने मुझे यह दे दी थी।) हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने मुझसे गवाह तलब किए।

चुनांचे हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा अंसारी और हज़रत मुहम्मद बिन बशीर अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हुमा मेरे गवाह बने, जिस पर हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने मुझे शीमा दे दी। फिर उस शीमा के पास उसका भाई

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 234,

अब्दुल मसीह बिन बुक़ैला सुलह के इरादे से आया और उसने मुझसे कहा, शीमा को मेरे हाथ बेच दो। मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! उसकी क़ीमत दस सौ से कम नहीं लूंगा। चुनांचे उसने मुझे हज़ार दिरहम दे दिए और मैंने शीमा उसके सुपुर्द कर दी। मेरे साथियों ने मुझसे कहा, अगर तुम सौ हज़ार या लाख कहते तो वह लाख भी तुम्हें दे देता, (उसके पास तो पैसे बहुत थे) मैंने कहा, मुझे मालूम नहीं था कि दस सौ से भी बड़ी गिनती होती है।[1]

हज़रत जुबैर बिन हैया रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि अजमी काफ़िर सरदार बुन्दा रिफ़ान ने यह पैग़ाम भेजा कि ऐ अरब के लोगो! अपने में से एक आदमी मेरे पास भेजो, ताकि हम उससे बात करें। चुनांचे लोगों ने इस काम के लिए हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु को चुना। हज़रत जुबैर कहते हैं कि मैं उनको देख रहा था कि उनके लम्बे-लम्बे बाल थे और वह काने थे। चुनांचे वह उस सरदार के पास गए। जब वह वहां से वापस आए तो हमने उनसे पूछा कि उस सरदार से क्या बात हुई?

उन्होंने बताया, पहले मैंने अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर मैंने कहा, (जाहिलियत के ज़माने में) हम लोग तमाम लोगों से ज़्यादा दूर घरवाले थे, (आबादी दूर-दूर थी) और सबसे ज़्यादा भूखे थे और सबसे ज़्यादा बदहाल थे और तमाम लोगों में हर ख़ैर से सबसे ज़्यादा दूर थे, यहां तक कि अल्लाह ने हमारे पास एक रसूल भेजा जिसने हमसे दुनिया में अल्लाह की मदद का और आख़िरत में जन्नत का वायदा किया और जबसे वह रसूल हमारे पास आए हैं, उस वक़्त से हम अपने रब की ओर से लगातार कामियाबी और मदद ही देख रहे हैं और अब हम तुम्हारे पास आ गए हैं और अल्लाह की क़सम, हमें यहां बादशाही और शानदार ज़िंदगी नज़र आ रही है। हम इसे छोड़कर बदहाली की ओर कभी वापस नहीं जाएंगे, बल्कि या तो तुम पर ग़ालिब आकर, जो

1. दलाइल, पृ० 196, इसाबा, भाग 2, पृ० 224, भाग 3, पृ० 371

कुछ तुम्हारे क़ब्ज़े में है, वह सब कुछ ले लेंगे या फिर यहां ही शहीद हो जाएंगे।[1]

हज़रत जुबैर बिन हैया रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत नोमान बिन मुक़र्रन रज़ियल्लाहु अन्हु के अहवाज़ वालों के पास आदमी भेजने के बारे में लम्बी हदीस ज़िक्र की है। उसमें यह भी है कि अहवाज़ ने मांग की कि उनके पास कोई आदमी भेजें। चुनांचे हज़रत नोमान रज़ि० ने हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा। उन लोगों के तर्जुमान ने कहा, तुम लोग कौन हो?

हज़रत मुग़ीरह रज़ि० ने कहा, हम अरब के कुछ लोग हैं। हम सख़्त बदहाली में थे और बहुत लम्बे समय से परेशानियों और मुसीबतों में पड़े हुए थे। हम भूख की वजह से खाल और गुठली चूसा करते थे, ऊन और बालों के कपड़े पहना करते थे, पेड़ों और पत्थरों की पूजा किया करते थे। हमारा यही हाल चल रहा था कि आसमानों और ज़मीन के रब ने हमारे पास हम में से एक नबी भेजा, जिसके मां-बाप को हम पहचानते थे। हमारे नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें इस बात का हुक्म दिया कि जब तक तुम लोग एक अल्लाह की इबादत न करो या जिज़या अदा न करो, हम तुमसे लड़ते रहें और हमारे नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें अल्लाह के सारे पैग़ाम पहुंचाए। उनमें एक पैग़ाम यह था कि हममें से जो आदमी क़त्ल (शहीद) होगा, वह जन्नत में और ऐसी नेमतों में जाएगा कि उन जैसी नेमतें उसने कभी नहीं देखी होंगी और हम में से जो ज़िंदा रह जाएगा, वह तुहारी गरदनों का मालिक होगा, तुम पर ग़लबा पाएगा।[2]

हज़रत तल्क़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी ने आकर हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, ऐ अबुद्दर्दा रज़ि० ! आपका घर जल गया। उन्होंने फ़रमाया, मेरा घर नहीं जल सकता। फिर दूसरे

1. दलाइल, पृ० 198,
2. दलाइल, पृ० 199

आदमी ने आकर वही बात कही, तो उन्होंने कहा, नहीं मेरा घर नहीं जल सकता। फिर तीसरे आदमी ने आकर भी वही बात कही तो उसको भी यही कहा कि मेरा घर नहीं जल सकता। फिर चौथे आदमी ने आकर कहा, आग तो भड़की थी और आपके घर तक भी पहुंच गई थी, लेकिन वहां जाकर बुझ गई थी। उन्होंने फ़रमाया, मुझे यक़ीन था कि अल्लाह ऐसा नहीं करेंगे, (यानी मेरे घर को जलने नहीं देंगे)।

उस आदमी ने कहा, ऐ अबुद्दर्दा ! हमें पता नहीं चल रहा कि आपकी कौन-सी बात ज़्यादा अजीब है। पहले आपने कहा, मेरा घर नहीं जल सकता, फिर आपने कहा, मुझे यक़ीन था कि अल्लाह ऐसा नहीं करेंगे। उन्होंने फ़रमाया, मैंने कुछ कलिमे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुने हैं, जो आदमी सुबह को ये कलिमे कह लेगा, शाम तक उसे कोई मुसीबत नहीं पहुंचेगी, वे कलिमे ये हैं—

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ عَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَ اَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ وَ مَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ وَ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ وَّ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ اَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ

'ऐ अल्लाह ! तू मेरा रब है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। तुझ पर मैंने भरोसा किया, तू मोहतरम अर्श का रब है। जो अल्लाह ने चाहा, वह हुआ और जो नहीं चाहा, वह नहीं हुआ। बुराइयों से बचने की ताक़त और नेकी करने की ताक़त सिर्फ़ बुज़ुर्ग व बरतर अल्लाह से ही मिलती है। मैं इस बात को जानता हूं कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखते हैं और अल्लाह हर चीज़ को जानते हैं। ऐ अल्लाह ! मैं अपने नफ़्स के शर से और हर उस जानवर के शर से तेरी पनाह चाहता हूं, जिसकी पेशानी को तू पकड़ने वाला है। बेशक मेरा पालनहार सीधे रास्ते पर है।[1]

दावत के बाब में गुज़र चुका है कि हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में

1. अस्मा वस्सिफ़ात, पृ० 12,

मेरी जान है, तीसरी बात भी ज़रूर होकर रहेगी, इसलिए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमा चुके हैं।

सहाबा किराम का जमाअतों को दावत के लिए भेजने के बाब में यह गुज़र चुका है कि हज़रत हिशाम बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने जबला बिन ऐहम को कहा, अल्लाह की क़सम! यह दरबार जहां तुम बैठे हुए हो, यह भी हम तुमसे ज़रूर ले लेंगे और इनशाअल्लाह (तुम्हारे) बड़े बादशाह (हिरक़्ल) का मुल्क (रूम) भी ज़रूर ले लेंगे, क्योंकि हमें इसकी ख़बर हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी है।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का अल्लाह के रास्ते में फ़ौज भेजने का एहतिमाम करने के बाब में यह गुज़र चुका है कि हज़रत अली रज़ि० ने कहा, मेरी राय यह है कि चाहे आप ख़ुद जाएं, चाहे किसी और को उनके पास भेज दें, इनशाअल्लाह कामियाबी आपको ही होगी, आपकी मदद ज़रूर होगी। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह तुम्हें ख़ैर की बशारत दे। यह तुम्हें कहां से पता चल गया (कि कामियाबी तो हमें ही मिलेगी और हमारी मदद ज़रूर होगी।)

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि यह दीन अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आकर रहेगा, यहां तक कि यह दीन मज़बूती से खड़ा हो जाएगा और दीन वालों को ग़लबा मिल जाएगा। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने ताज्जुब से फ़रमाया, सुब्हानल्लाह! यह हदीस कितनी उम्दा है। तुमने यह हदीस सुनाकर मुझे ख़ुश कर दिया। अल्लाह तुम्हें हमेशा ख़ुश रखे।

और ताईदाते ग़ैबीया के बाब में हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का यह क़ौल आएगा कि जब हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने शेर का कान पकड़ कर मरोड़ा और उसको रास्ते से हटाया तो उसको कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुम्हारे बारे में ग़लत नहीं कहा है। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि इब्ने

आदम जिस चीज़ से डरता है, अल्लाह वह चीज़ इब्ने आदम पर मुसल्लत कर देंते हैं और अगर इब्ने आदम अल्लाह के अलावा किसी से न डरे, तो अल्लाह उस पर अपने अलावा किसी और को मुसल्लत नहीं होने देते।

आमाल का बदला मिलने का यक़ीन

हज़रत अबू अस्मा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ दोपहर का खाना खा रहे थे कि इतने में यह आयत उतरी—

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ (سورت زلزال آیت ۷۔۸)

'सो जो आदमी (दुनिया में) ज़र्रा बराबर नेकी करेगा, वह (वहां) उसको देख लेगा और जो आदमी ज़र्रा बराबर बदी करेगा, वह उसको देख लेगा।' (सूरः ज़िल ज़ाल, आयत 7-8) यह सुनकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने खाना खाना छोड़ दिया और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम जो भी बुरा काम करेंगे क्या हमें उसका बदला ज़रूर मिलेगा? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आप लोग जो नागवारियां (दुनिया में) देखते हो, यह बुरे अमलों का बदला है और अच्छे आमाल का बदला बाद में आख़िरत में दिया जाएगा।[1]

हज़रत अबू इदरीस ख़ौलानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अबूबक्र ! तुम (दुनिया में) जो नागवारियां देखते हो, वे बुरे कामों की वजह से पेश आती हैं और नेक कामों का बदला जमा किया जा रहा है जो तुम्हें क़ियामत के दिन दिया जाएगा और इस बात की तस्दीक़ अल्लाह की किताब की इस आयत से होती है—

وَمَا اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْ عَنْ كَثِيْرٍ (سورت شوریٰ آیت ۳۰)

'और तुमको (ऐ गुनहगारो !) जो कुछ मुसीबत पहुंचती है, तो वह

1. हाकिम,

तुम्हारे ही हाथों के किए हुए कामों से (पहुंचती है) और बहुत-से तो दरगुज़र ही कर देता है।'[1] (सूरः शूरा, आयत 30)

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास था, तो यह आयत उतरी—

مَنْ يَّعْمَلْ سُوْءًا يُّجْزَ بِهٖ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا (سورت نساء آیت ۱۲۳)

'जो आदमी कोई बुरा काम करेगा, वह इसके बदले में सज़ा दिया जाएगा और उस आदमी को अल्लाह के सिवा न कोई यार मिलेगा, न मददगार मिलेगा।' (सूरः निसा, आयत 123)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अबूबक्र! मुझ पर जो आयत उतरी, क्या वह तुम्हें मैं न पढ़ा दूं? मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! ज़रूर पढ़ा दें। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने मुझे वह आयत पढ़ा दी। यह आयत सुनते ही मुझे ऐसा महसूस हुआ कि जैसे मेरी कमर टूट गई है, जिसकी वजह से मैंने अंगड़ाई ली।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबूबक्र! तुम्हें क्या हुआ? मैंने कहा, हम में से कौन ऐसा है जिसने बुरे काम न किए हों? और हम जो भी बुरा काम करेंगे, क्या हमें उसका बदला ज़रूर मिलेगा? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबूबक्र! तुम्हें और ईमान वालों को बुरे कामों का बदला तो दुनिया ही में मिल जाएगा और तुम अपने रब से इस हाल में मुलाक़ात करोगे (यानी मरते वक़्त यह हालत होगी) कि तुम पर कोई गुनाह न होगा और दूसरों के गुनाहों को जमा किया जाता रहेगा और उन्हें उन गुनाहों का बदला क़ियामत के दिन दिया जाएगा।[2]

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! 'मंय्यअमलु सूअंय्युज-ज़ बिही०' वाली आयत के बाद हाल किस तरह ठीक हो सकता है? क्योंकि हमने जो भी बुरा काम किया है, उसका बदला हमें ज़रूर मिलेगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु

1. कंज़, भाग 1, पृ० 275
2. तिर्मिज़ी,

अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अबूबक्र ! अल्लाह तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए, क्या तुम बीमार नहीं होते ? क्या तुम कभी थकते नहीं ? क्या तुम्हें कोई ग़म पेश नहीं आता ? क्या तुम्हें कभी कोई मशक़्क़त नहीं उठानी पड़ती ? क्या तुम्हें कभी कोई मुसीबत पेश नहीं आती ?

मैंने अर्ज़ किया, जी, यह सब कुछ पेश आता है ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यही गुनाहों का बदला है जो तुम्हें दुनिया में मिल रहा है।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन मुन्तशिर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, मुझे अल्लाह की किताब में एक ऐसी आयत मालूम है जो कि बहुत सख़्त है। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० उसकी ओर बढ़े और उसे कोड़ा मारा। (ज़ाहिरी लफ़्ज़ क़ुरआन के अदब के ख़िलाफ़ थे) और फ़रमाया, तुम्हें क्या हुआ ? क्या तुमने इस आयत की गहरी तहक़ीक़ कर ली है, जिससे तुम्हें इस (के बहुत सख़्त होने) का पता चल गया है ?

वह आदमी चला गया। अगले दिन हज़रत उमर रज़ि० ने उस आदमी से कहा, जिस आयत का कल तुमने ज़िक्र किया था, वह कौन-सी है ? उस आदमी ने कहा, वह यह है—

وَمَنْ يَعْمَلْ سُوْءًا يُّجْزَ بِهٖ

इसलिए हमसे जो भी कोई बुरा काम करेगा, उसे उसका ज़रूर बदला मिलेगा। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, जब यह आयत उतरी थी, तो उस वक़्त हमें कुछ दिनों तक (परेशानी की वजह से) खाना-पीना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। इसके बाद अल्लाह ने रियायत वाली आयत उतार दी, (फिर वह हमारी परेशानी ख़त्म हुई) वह आयत यह है—

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ
غَفُوْرًا رَّحِيْمًا (سورت نساء، آيت ١١٠)

'और जो आदमी कोई बुराई करे या अपनी जान का नुक़्सान करे,

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 239

फिर अल्लाह से माफ़ी चाहे, तो वह अल्लाह को बड़ा माफ़ करने वाला, बड़ी रहमत वाला पाएगा।"[1] (सूरः निसा, आयत 110)

हज़रत सालबा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अम्र बिन समुरा बिन हबीब बिन अब्दे शम्स रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने फ़्लां क़बीले का एक ऊंट चोरी किया है। मुझे (उस गुनाह से) पाक कर दें। हुज़ूर सल्ल० ने उस क़बीले वालों के पास आदमी भेजकर पता कराया। उन्होंने बताया, हां, हमारा एक ऊंट गुम है।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० के फ़रमाने पर हज़रत अम्र बिन समुरा रज़ि० का हाथ काटा गया। हज़रत सालबा रज़ि० कहते हैं, जब हज़रत अम्र रज़ि० का हाथ कट कर नीचे गिरा, उस वक़्त मैं उन्हें देख रहा था। उन्होंने (अपने हाथ को ख़िताब करते हुए) कहा, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझे तुझसे पाक कर दिया, वरना तूने तो मेरे जिस्म को जहन्नम में दाख़िल करने का इरादा कर लिया था।[2]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के जिस्म में एक बीमारी थी। उनके कुछ साथी उनके पास आए और उनमें से एक ने कहा, आपके जिस्म में हम जो बीमारी देख रहे हैं, उसकी वजह से हमें बहुत रंज व सदमा है। हज़रत इम्रान रज़ि० ने फ़रमाया, तुम जो बीमारी देख रहे हो, उसकी वजह से ग़मगीन न हो, क्योंकि जो बीमारी तुम देख रहे हो, वह गुनाहों की वजह से है और जिन गुनाहों को अल्लाह वैसे ही माफ़ फ़रमा देते हैं, वे तो इनसे कहीं ज़्यादा हैं। फिर उन्होंने यह आयत पढ़ी[3]—

وَمَا اَصَابَكُمْ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ـ

1. कंज़, भाग 1, पृ० 239
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 56,
3. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 116

हज़रत अबू ज़मरा बिन हबीब बिन ज़मरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के एक बेटे की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया, तो वह एक तकिए की ओर देखने लगा। जब उसका इंतिक़ाल हो गया, तो लोगों ने कहा, हमने देखा था कि आपका बेटा कनखियों से उस तकिए की ओर देख रहा था। जब लोगों ने उसे उठाया तो तकिए के नीचे पांच या छः दीनार मिले।

यह देखकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० अफ़सोस करने लगे और बार-बार 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०' पढ़ते रहे और फ़रमाते रहे, मेरे ख़्याल में तो तुम्हारी खाल इन दीनारों की सज़ा नहीं सह सकती (कि तुमने इनको जमा करके रखा और इन्हें ख़र्च न किया)[1]

और मुसलमान को गाली देने के उन्वान में यह गुज़र चुका है कि एक आदमी ने ख़िदमत में हाज़िर होकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपने ग़ुलामों (को सज़ा देने) के बारे में पूछा, तो आपने फ़रमाया कि जब क़ियामत का दिन होगा तो इन ग़ुलामों ने जो तुमसे ख़ियानत की और तेरी नाफ़रमानी की और तुझसे झूठ बोला, उसका हिसाब किया जाएगा और तुमने उनको जो सज़ा दी, उसका भी हिसाब किया जाएगा। अगर तुम्हारी सज़ा इनके जुर्म के बराबर होगी, तो मामला बराबर-सराबर हो जाएगा। तुम्हें इनाम मिलेगा, न सज़ा और अगर तुम्हारी सज़ा उनके जुर्म से कम निकली तो तुम्हें उन पर फ़ज़ीलत हो जाएगी और अगर तुम्हारी सज़ा उनके जुर्म से ज़्यादा होगी तो इस ज़्यादा सज़ा का तुमसे बदला लिया जाएगा।

वह आदमी यह सुनकर एक ओर होकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लग गया। हुज़ूर सल्ल० ने उसको फ़रमाया, क्या तुम अल्लाह का यह इर्शाद नहीं पढ़ते—

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ (سورت انبیاء آیت ۴۷)

'और वहां क़ियामत के दिन हम अदल की मीज़ान क़ायम करेंगे

1. कंज़, भाग 2, पृ० 145

(और सबके आमाल का वज़न करेंगे) सो किसी पर असलन ज़ुल्म न होगा और अगर (किसी का) अमल राई के दाने के बराबर भी होगा तो हम उसको (वहां) हाज़िर कर देंगे और हम हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं।

(सूरः अंबिया, आयत 47)

तो उस आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे अपने लिए और इन ग़ुलामों के लिए इससे बेहतर शक्ल नज़र नहीं आ रही है कि मैं इनसे अलग हो जाऊं, इसलिए मैं आपको गवाह बनाता हूं कि ये सब ग़ुलाम आज़ाद हैं।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का ईमान पक्का था

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब यह आयत उतरी—

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (سورت بقرہ آیت ۲۸۴)

'अल्लाह ही की मिल्कियत हैं सब, जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं और जो बातें तुम्हारे नफ़्सों में हैं, उनको अगर तुम ज़ाहिर करोगे या कि छिपाए रखोगे, अल्लाह तुमसे हिसाब लेंगे, फिर (कुफ़्र व शिर्क के अलावा) जिसके लिए मंज़ूर होगा बख़्श देंगे और जिसको मंज़ूर होगा, सज़ा देंगे और अल्लाह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखने वाले हैं।' (सूरः बक़रः आयत 284)

तो इससे सहाबा किराम रज़ि० को बहुत गरानी और परेशानी हुई और आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में दो ज़ानू होकर बैठ गए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमें कुछ ऐसे आमाल का ज़िम्मेदार बनाया गया है जो हमारे बस में हैं, जैसे नमाज़, रोज़ा, जिहाद और सदक़ा, लेकिन अब आप पर यह आयत उतरी है, और इसमें हमें ऐसे आमाल का ज़िम्मेदार बनाया गया है, जो हमारे बस में नहीं हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि क्या तुम चाहते हो कि तुम इस आयत

को सुनकर 'समिअना व असैना' (हमने अल्लाह का हुक्म सुन लिया, लेकिन हम उसे मानेंगे नहीं) कहो जैसे कि तुमसे पहले तौरात और इंजील वालों ने कहा था? नहीं, बल्कि तुम—

سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ

'समिअना व अतअना ग़ुफ़रा-न-क व इलैकल मसीर॰'

कहो, यानी 'हमने सुन लिया और मान लिया, ऐ हमारे रब! हम तेरी मग़फ़िरत चाहते हैं और तेरे पास ही लौट कर जाना है।'

चुनांचे सहाबा रज़ि॰ ने यह दुआ मांगनी शुरू कर दी और जब उनकी ज़ुबानें इस दुआ से मानूस हो गईं, तो अल्लाह ने इसके बाद यह आयत उतारी—

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ مَلٰٓئِكَتِهٖ

وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ وَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ (سورت بقرہ آیت ۲۸۵)

'एतक़ाद रखते हैं रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उस चीज़ का जो उनके पास उनके रब की ओर से उतारी गई है और ईमान वाले भी सबके सब अक़ीदा रखते हैं अल्लाह के साथ और उसके फ़रिश्तों के साथ और उसकी किताबों के साथ और उसके पैग़म्बरों के साथ कि हम उसके पैग़म्बरों में से किसी में भेद-भाव नहीं करते और इन सबने यों कहा, हमने (आपका इर्शाद) सुना और ख़ुशी से माना, हम आपकी बख़्शिश चाहते हैं, ऐ हमारे परवरदिगार! और आप ही की तरफ़ (हम सबको) लौटना है।' (सूर: बक़र:, आयत 285)

जब सहाबा रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ के इर्शाद के मुताबिक़ इस तरह किया तो अल्लाह ने पहली आयत (के हुक्म) को मंसूख़ कर दिया और यह आयत उतारी—

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ

عَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا اِنْ نَّسِيْنَا اَوْ اَخْطَاْنَا

से लेकर आख़िर तक।

तर्जुमा, 'अल्लाह किसी आदमी को ज़िम्मेदार नहीं बनाता, मगर उसी का जो उसकी ताक़त (और अख़्तियार) में हो, उसको सवाब भी उसी का मिलेगा जो इरादे से करे और उस पर अज़ाब भी उसी को होगा जो इरादे से करे, ऐ हमारे रब ! हमारी पकड़ न फ़रमाइए, अगर हम भूल जाएं या चूक जाएं।' (आख़िर आयत तक)[1] (सूरः बक़रः, आयत 286)

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि ऐ अबू अब्बास ! मैं हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास था, उन्होंने यह आयत पढ़ी और पढ़कर रोने लगे। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने पूछा, कौन-सी आयत ? मैंने कहा—

وَإِنْ تُبْدُوا مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ

'व इन तुब्दू मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम अव तुख़्फ़ूहु०'

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया, जब यह आयत उतरी थी, तो इससे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० बड़े ग़मगीन और बहुत ज़्यादा परेशान हुए थे। उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम तो हलाक हो गए। पहले तो हम ज़ुबान से जो बोलते थे और जो अमल करते थे, उसी पर हमारी पकड़ होती थी और अब इस आयत में यह आ गया है कि दिल में जो ख़्याल आएगा, उस पर भी हमारी पकड़ होगी और हमारे दिल हमारे हाथ में नहीं हैं, (अब जो अच्छा या बुरा ख़्याल ख़ुद से हमारे दिल में आएगा, उस पर भी हमारी पकड़ होगी, तो हम हलाक हो जाएंगे।)

इस पर हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, तुम तो यों कहो, 'समिअना व अतअना' चुनांचे सहाबा रज़ि० ने 'समिअना व अतअना' कहना शुरू कर दिया। फिर—

آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ

से लेकर

1. अहमद, मुस्लिम

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ

तक आयतें उतरीं, जिनसे पहला हुक्म मंसूख़ हो गया और दिल में जो बुरे ख़्याल आते हैं, उनको माफ़ कर दिया गया और सिर्फ़ आमाल की पकड़ रह गई ।[1]

दूसरी रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम तो यों कहो—

سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا وَ سَلَّمْنَا

'समिअना व अतअना व सल्लमना' यानी हमने सुना, मान लिया और तस्लीम किया' इस पर अल्लाह ने उनके दिलों में ईमान डाल दिया ।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब—

وَ لَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ

'(जो लोग ईमान रखते हैं) और अपने ईमान को ज़ुल्म के साथ मिलाते नहीं, (ऐसों ही के लिए अम्न है और वही राह पर चल रहे हैं) ।' (सूरः अनआम, आयत 82) उतरी, तो यह आयत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा पर बहुत बोझ हुई और वे इससे बहुत परेशान हुए और उन्होंने (हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में) अर्ज़ किया, हम में से कौन ऐसा है, जिसने ज़ुल्म न किया हो ? (छोटे-बड़े गुनाह तो हो ही जाते हैं ।)

हुज़ूर सल्ल०ने फ़रमाया, तुम जो समझे हो, यहां ज़ुल्म से मुराद वह नहीं है, (बल्कि यहां ज़ुल्म से मुराद शिर्क है) जैसे हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे को कहा था—

يَا بُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ (سورت لقمان آیت ۱۳)

'बेटा ! ख़ुदा के साथ किसी को शरीक न ठहराना । बेशक शिर्क करना बड़ा भारी ज़ुल्म है ।'[3]

(सूरः लुक़मान, आयत 13)

1. अहमद,
2. तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 1, पृ० 338,
3. बुख़ारी,

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब—

اَلَّذِیْنَ آمَنُوا وَ لَمْ یَلْبِسُوْۤا اِیْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ

आयत उतरी, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुझे अल्लाह की तरफ़ से) कहा गया कि आप भी उनमें से हैं।[1]

हज़रत सफ़िया बिन्त शैबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाती हैं कि हम हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास बैठी थीं। हमने क़ुरैश की औरतों का तज़्किरा किया और उनकी फ़ज़ीलतें बयान कीं। हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, वाक़ई क़ुरैश की औरतों को बड़ी फ़ज़ीलतें हासिल हैं, लेकिन अल्लाह की क़सम ! अल्लाह की किताब की तस्दीक़ करने और उस पर ईमान लाने में अंसार की औरतों से आगे बढ़ा हुआ मैंने किसी को नहीं देखा। जब सूरः नूर की यह आयत उतरी—

وَلْیَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰی جُیُوْبِهِنَّ (سورت نور آیت ۳۱)

'और अपने दोपट्टे अपने सीनों पर डाले रहा करें।'

(सूरः नूर, आयत 29)

तो अंसार मर्दों ने वापस घर जाकर अपनी औरतों को वह हुक्म सुनाया जो अल्लाह ने इस आयत में उतारा। हर आदमी अपनी बीवी, अपनी बहन और अपनी हर रिश्तेदार औरत को यह आयत पढ़कर सुनाता। इनमें से हर औरत सुनते ही अल्लाह की उतारी हुई आयत पर ईमान लाने और उनकी तस्दीक़ करने के लिए फ़ौरन खड़ी होकर नक़्शदार चादर लेकर उसमें लिपट जाती। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० के पीछे फ़ज्र की नमाज़ में ये सब चादरों में ऐसी लिपटी हुई आतीं कि गोया उनके सरों पर कौवे बैठे हुए हैं।[2]

हज़रत मक्हूल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बहुत बूढ़ा आदमी जिसकी दोनों भवें उसकी आंखों पर आ पड़ी थीं, उसने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! एक ऐसा आदमी जिसने बहुत

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 153,
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 284,

बद-अहदी और बदकारी की और अपनी जायज़-नाजायज़ हर ख़्वाहिश पूरी की और उसके गुनाह इतने ज़्यादा हैं कि अगर तमाम ज़मीन वालों में बांट दिए जाएं तो वे सबको हलाक कर दें, तो क्या उसके लिए तौबा की कोई गुंजाइश है?

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या तुम मुसलमान हो चुके हो? उसने कहा, जी हां। मैं कलिमा शहादत—

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

(अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक-क लहू व अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०) पढ़ता हूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब तक तुम ऐसे (कलिमा शहादत) पढ़ते रहोगे, अल्लाह तुम्हारी तमाम बद-अह्दियां और बदकारियां माफ़ करते रहेंगे और तुम्हारी बुराइयों को नेकियों से बदलते रहेंगे।

उस बूढ़े ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी तमाम बद-अह्दियां और बदकारियां माफ़? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, तुम्हारी तमाम बद-अह्दियां और बदकारियां माफ़ हैं? यह सुनकर वह बड़े मियां 'अल्लाहु अक्बर, ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहते हुए पीठ फेरकर (ख़ुशी-ख़ुशी) वापस चले गए।[1]

हज़रत अबू फ़रवा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप ज़रा यह बताएं कि एक आदमी ने सारे गुनाह किए हैं, कोई छोटा-बड़ा गुनाह नहीं छोड़ा है, क्या उसकी तौबा क़ुबूल हो सकती है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम मुसलमान हो गए हो? मैंने कहा, जी हां।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अब नेकियां करते रहो और बुरे काम छोड़ दो, तो अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को नेकियां बना देंगे। मैंने कहा, मेरी तमाम बद-अह्दियां और बदकारियां भी माफ़ हो जाएंगी? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां। इस पर हज़रत अबू फ़रवा चल पड़े और हुज़ूर सल्ल०

1. इब्ने अबी हातिम,

की निगाहों से ओझल होने तक अल्लाहु अक्बर कहते रहे।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक औरत मेरे पास आई और उसने मुझसे कहा, क्या मेरी तौबा क़ुबूल हो सकती है? मैंने ज़िना किया था जिससे मेरे यहां बच्चा पैदा हुआ, फिर मैंने उस बच्चे को क़त्ल कर डाला। मैंने कहा, नहीं (तुमने दो बड़े गुनाह किए हैं, इसलिए) न तो तुम्हारी आंख कभी ठंडी हो और न तुझे शराफ़त व करामत कभी हासिल हो। इस पर वह औरत अफ़सोस करती हुई उठकर चली गई।

फिर मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी और उस औरत ने जो कुछ कहा था और मैंने उसे जो जवाब दिया था, वह सब हुज़ूर सल्ल०को बताया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने उसे बुरा जवाब दिया, क्या तुम यह आयत—

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ

से लेकर

اِلَّا مَنْ تَابَ

इल्ला मनता-ब आख़िर आयत तक नहीं पढ़ते?

तर्जुमा : 'और जो कि अल्लाह के साथ किसी और माबूद की परस्तिश नहीं करते और जिस आदमी के क़त्ल करने को अल्लाह ने हराम फ़रमाया है, उसको क़त्ल नहीं करते, हां, मगर हक़ पर और वे ज़िना नहीं करते और जो आदमी ऐसे काम करेगा तो उसे सज़ा भुगतनी पड़ेगी कि क़ियामत के दिन उसका अज़ाब बढ़ता चला जाएगा और वे उस (अज़ाब) में हमेशा-हमेशा ज़लील (व ख़्वार) होकर रहेगा, मगर जो (शिर्क और नाफ़रमानी से) तौबा कर ले और ईमान (भी) ले आए और नेक काम करता रहे तो अल्लाह ऐसे लोगों के (पिछले) गुनाहों की जगह नेकियां इनायत फ़रमाएगा और अल्लाह ग़फ़ूर व रहीम है।'

(सूरः फ़ुरक़ान, आयत 68-70)

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 328,

फिर मैंने ये आयतें उस औरत को पढ़कर सुनाईं। उसने कहा, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने मेरी ख़लासी की सूरत बना दी।[1]

इब्ने जरीर की एक रिवायत में यह है कि वह अफ़सोस करती हुई उनके पास से चली गईं और वह कह रही थी, हाय अफ़सोस! क्या यह हुस्न जहन्नम के लिए पैदा किया गया है।

इस रिवायत में आगे यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० वापस आए और उन्होंने मदीना के तमाम मुहल्लों और घरों में उस औरत को ढूंढना शुरू किया, उसे बहुत ढूंढा, लेकिन वह औरत कहीं न मिली।

अगली रात को वह ख़ुद हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० के पास आई, तो हुज़ूर सल्ल० ने जो फ़रमाया था वह हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने उसे बता दिया, वह फ़ौरन सज्दे में गिर गई और कहने लगी, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने मेरे लिए ख़लासी की शक्ल बना दी और जो गुनाह मुझसे हो गया था, उससे तौबा का रास्ता बना दिया और उस औरत ने अपनी एक बांदी और उसकी बेटी आज़ाद की और अल्लाह के सामने सच्ची तौबा की।[2]

हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु के ग़ुलाम हज़रत अबुल हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब 'वश-शुअराउ यत्तबिअहुमुल ग़ाऊन' वाली आयत उतरी 'और शायरों की राह तो बे-राह लोग चला करते हैं', (सूरः शुअरा, आयत 224) तो (मुसलमान शुअरा) हज़रत हस्सान बिन साबित, हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा और हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हुम रोते हुए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि जब अल्लाह ने इस आयत को उतारा, तो उन्हें मालूम था कि हम लोग शुअरा (कविगण) हैं, (इसलिए इतनी कड़ी धमकी तो हमारे लिए हुई) इस पर हुज़ूर सल्ल० ने

1. इब्ने अबी हातिम, इब्ने जरीर,
2. तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 328,

यह आगे वाली आयत तिलावत फ़रमाई—

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

'मगर जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए।'

हुज़ूर सल्ल०ने फ़रमाया, ये दोनों बातें तुम लोगों में मौजूद हैं। 'व ज़-क-रुल्ला-ह कसीरा०' (और उन्होंने (अपने अशआर में) ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र किया।') हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह सिफ़त भी तुममें मौजूद है 'वन-त-स-रू मिन-बादि मा ज़ुलिमू' (और उन्होंने इसके बाद कि उन पर ज़ुल्म हो चुका है, (इसका) बदला लिया।' हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह ख़ूबी भी तुममें है, (इसलिए यह धमकी तुम मुसलमान शुअरा के लिए नहीं है।)[1]

हज़रत अता बिन साइब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि सबसे पहले दिन जो मैंने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा, उसकी शक्ल यह हुई कि मैंने देखा कि एक गधे पर एक बड़े मियां एक जनाज़े के पीछे-पीछे जा रहे हैं, उनके सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद हैं। मैंने सुना कि वह कह रहे हैं कि मुझे फ़्लां बिन फ़्लां सहाबी ने बताया कि उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि जो अल्लाह से मिलना पसन्द करता है, अल्लाह उससे मिलने को पसन्द फ़रमाते हैं और जो अल्लाह से मिलने को नापसन्द करता है, अल्लाह उससे मिलने को नापसन्द करते हैं।

यह सुनकर सब लोग रोने लग गए। उन्होंने पूछा कि आप लोग क्यों रो रहे हैं? लोगों ने कहा, हम सब ही (अल्लाह से मिलने, यानी) मौत को नापसन्द करते हैं। उन्होंने फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० के फ़रमान का मतलब यह नहीं है, बल्कि इंसान के मरने का वक़्त जब क़रीब आता है, तो अल्लाह का फ़रमान है—

فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّةُ نَعِيمٍ (سورت واقعہ آیت ۸۸، ۸۹)

'फिर जब (क़ियामत आएगी, तो) जो व्यक्ति मुक़र्रबीन में से होगा,

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 354, हाकिम, भाग 3, पृ० 488,

उसके लिए तो राहत है और (फ़राग़त के) खाने हैं और आराम की जन्नत है।' (सूरः वाक़िआ, आयत 88-89) तो जब उसे (फ़रिश्तों की ओर से) इन नेमतों की ख़ुशख़बरी दी जाती है, तो वह इंसान अल्लाह से मिलने को पसन्द करने लग जाता है और अल्लाह उसकी मुलाक़ात को उससे ज़्यादा पसन्द करने लग जाते हैं और अल्लाह का दूसरा फ़रमान यह है—

وَاَمَّا اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ

(سورت واقعہ آیت ۹۲-۹۳)

'और जो आदमी झुठलाने वालों (और) गुमराहों में से होगा तो खौलते हुए पानी से उसकी दावत होगी और दोज़ख में दाख़िल होना होगा।'

(सूरः वाक़िआ, आयत 92-93)

तो उसे जब इन तक्लीफ़ों की ख़ुशख़बरी दी जाती है, तो वह अल्लाह से मुलाक़ात को नापसन्द करने लग जाता है और अल्लाह उससे मिलने को उससे ज़्यादा नापसन्द करने लग जाते हैं।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब—

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا نازل ہوئی (سورت زلزال آیت ۱)

'जब ज़मीन अपनी सख़्त जुंबिश से हिलाई जाएगी।'

(सूरः ज़िल ज़ाल, आयत 1)

उतरी, तो उस वक़्त हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु वहां (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास) बैठे हुए थे, वह यह सूरः सुनकर रोने लगे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबूबक्र रज़ि० ! क्यों रोते हो? उन्होंने अर्ज़ किया, मुझे इस सूरः ने रुला दिया है। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, अगर तुम लोग ग़लतियां और गुनाह नहीं करोगे (और फिर इस्तग़फ़ार नहीं करोगे) ताकि अल्लाह तुम्हें बख़्श दे, तो फिर ऐसे लोगों को पैदा करेंगे जो ग़लतियां और गुनाह करेंगे (और

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 301

इस्तग़फ़ार करेंगे) फिर अल्लाह उन्हें माफ़ कर देंगे।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया, ऐ उमर! तुम्हारा उस वक़्त क्या हाल होगा, जब तुम चार हाथ लम्बी और दो हाथ चौड़ी ज़मीन (यानी क़ब्र) में होगे और तुम मुन्किर-नकीर को देखोगे? मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मुन्किर-नकीर कौन है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ये क़ब्र में इम्तिहान लेने वाले (दो फ़रिश्ते) हैं, जो क़ब्र को अपने दांतों से कुरेदेंगे और उनके बाल इतने लम्बे होंगे कि वे अपने बालों को रौंदते हुए आएंगे, उनकी आवाज़ ज़ोरदार गरज की तरह होगी और उनकी आंखें उचकने वाली बिजली की तरह चमक रही होंगी। इन दोनों के पास इतना बड़ा हथौड़ा होगा कि सारे मिना वाले मिलकर उसे उठा न सकें। हुज़ूर सल्ल० के हाथ में एक छड़ी थी, जिसे आप हिला रहे थे। आपने उसकी ओर इशारा करते हुए फ़रमाया, लेकिन इन दोनों के लिए उसे उठाना मेरी उस छड़ी से भी ज़्यादा आसान होगा। वे दोनों तुम्हारा इम्तिहान लेंगे। अगर तुम जवाब न दे सके या तुम लड़खड़ा गए, तो फिर वह तुम्हें वह हथौड़ा इस ज़ोर से मारेंगे कि तुम राख बन जाओगे।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या उस वक़्त मैं अपनी हालत पर हूंगा? (यानी उस वक़्त मेरे होश व हवास ठीक होंगे) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां। मैंने कहा, फिर मैं इन दोनों से निमट लूंगा।[2]

एक रिवायत में इसके बाद यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसने मुझे हक़ देकर भेजा है, मुझे हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने बताया है कि वे दोनों तुम्हारे पास आएंगे और तुमसे सवाल करेंगे तो तुम जवाब में कहोगे कि मेरा रब अल्लाह है, तुम बताओ, तुम दोनों का रब कौन है? और (हज़रत)

---

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 540,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 121

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मेरे नबी हैं, तुम दोनों के नबी कौन हैं? और इस्लाम मेरा दीन है, तुम दोनों का दीन क्या है? इस पर वे दोनों कहेंगे, देखो, क्या अजीब बात है? हमें पता नहीं चल रहा है कि हमें तुम्हारे पास भेजा गया है या तुम्हें हमारे पास भेजा गया है।[1]

हज़रत अबू बहरीया किन्दी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि एक दिन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर तशरीफ़ लाए तो देखा कि एक मज्लिस है, जिसमें हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु भी हैं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हारे साथ एक ऐसा आदमी बैठा हुआ है कि अगर उसका ईमान किसी बड़े लश्कर में बांट दिया जाए, तो उन सबको काफ़ी हो जाएगा। इससे हज़रत उमर रज़ि० की मुराद हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० थे।[2]

और 'सहाबा किराम की ख़ूबियों के बारे में सहाबा किराम के क़ौल' के उन्वान में यह गुज़र चुका है कि जब हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से पूछा गया कि क्या नबी करीम के सहाबा हंसा करते थे? उन्होंने फ़रमाया, हां, मगर ईमान उनके दिलों में पहाड़ों से भी बड़ा था और 'मशक़्क़तें और तक्लीफ़ें बरदाश्त करने' के उन्वान में यह गुज़र चुका है कि हज़रत उम्मार रज़ि० को मुश्रिकों ने पकड़ा और उस वक़्त तक नहीं छोड़ा जब तक उन्होंने उनके माबूदों की तारीफ़ न की, तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया कि मुझे इतनी तक्लीफ़ पहुंचाई गई कि आख़िर मुझे मजबूर होकर आपकी गुस्ताख़ी करनी पड़ी और उनके माबूदों की तारीफ़ करनी पड़ी।

आपने फ़रमाया, तुम अपने दिल को कैसा पाते हो? उन्होंने कहा, मैं अपने दिल को मुतमइन पाता हूं।[3]

और अमीर का किसी को अपने बाद ख़लीफ़ा बनाने के उन्वान में

---

1. रियाज़ुन्नज़रा, भाग 2, पृ० 34,
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 8
3. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 587

गुज़र चुका है कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, क्या तुम लोग मुझे मेरे रब से डराते हो? मैं कह दूंगा, ऐ अल्लाह! मैंने तेरी मख़्लूक़ में से सबसे बेहतरीन आदमी को उनका ख़लीफ़ा बनाया था।

दूसरी रिवायत में यह है कि आपने फ़रमाया कि मैं अल्लाह को और हज़रत उमर रज़ि० को तुम दोनों से ज़्यादा जानता हूं और बैतुलमाल के सारे माल को तक़्सीम कर देने के उन्वान में यह गुज़र चुका है कि एक आदमी ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! हो सकता है कि कभी दुश्मन हमलावर हो जाए या मुसलमानों पर अचानक कोई मुसीबत आ पड़े तो इन ज़रूरतों के लिए अगर आप इस माल में से कुछ बचाकर रख लें तो अच्छा होगा।'

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हारी ज़ुबान पर शैतान बोल रहा है और इसका जवाब अल्लाह मुझे सिखला रहा है और उसके शर से मुझे बचा रहा है और वह यह है कि मैंने उन तमाम ज़रूरतों के लिए वही सब कुछ तैयार किया हुआ है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तैयार किया था और वह है अल्लाह और उसके रसूल की इताअत, (हर मुसीबत का इलाज और हर ज़रूरत का इन्तिज़ाम अल्लाह और रसूल को मानना है।)

दूसरी रिवायत में है कि कल को पेश आने वाली ज़रूरत के लिए मैं आज अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं कर सकता और एक रिवायत में यह है कि मैंने मुसलमानों (की ज़रूरतों) के लिए अल्लाह का तक़्वा तैयार किया हुआ है। अल्लाह ने फ़रमाया है—

وَمَنْ يَتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا (سورت طلاق آیت ۲،۳)

'और जो आदमी अल्लाह से डरता है, अल्लाह उसके लिए (नुक़्सानों से) निजात की शक्ल निकाल देता है और उसको ऐसी जगह से रोज़ी पहुंचाता है, जहां उसका गुमान भी नहीं होता।' (सूरः तलाक़, आयत 2-3)

सहाबा के माल ख़र्च करने के शौक़ के बाब में यह गुज़र चुका है कि जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने मांगने वाले को सदक़ा देने

का इरादा किया तो हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा, वह छः दिरहम तो आपने आटे के लिए रखवाए थे। हज़रत अली रज़ि० ने कहा, किसी भी बन्दे का ईमान उस वक़्त तक सच्चा साबित नहीं हो सकता, जब तक कि उसको जो चीज़ उसके पास है, उससे ज़्यादा भरोसा उस चीज़ पर न हो जाए जो अल्लाह के ख़ज़ानों में है।

और माल वापस करने के बाब में यह गुज़र चुका है कि हज़रत आमिर बिन रबीआ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, मुझे तुम्हारे ज़मीन के इस टुकड़े की कोई ज़रूरत नहीं, क्योंकि आज एक ऐसी सूरः उतरी, जिसने हमें दुनिया ही भुला दी है और वह सूरः यह है—

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ (سورت انبیاء آیت ۱)

'इन (इंकार करने वाले) लोगों से उनके हिसाब (का वक़्त) नज़दीक आ पहुंचा और ये (अभी) ग़फ़लत (ही) में (पड़े हुए और) एराज़ किए हुए हैं।'

(सूरः अंबिया, आयत 1)

और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की हदीस गुज़र चुकी है कि हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु बड़ी फ़ज़ीलत वाले लोगों में से थे। वह कहा करते थे कि मैं तीन हालतों में जैसा होता हूं, अगर मैं हर वक़्त वैसा रहूं तो मैं यक़ीनी तौर पर जन्नत वालों में से हो जाऊं और मुझे इसमें कोई शक न रहे। एक वह हालत जबकि मैं ख़ुद क़ुरआन पढ़ रहा हूं या कोई और क़ुरआन पढ़ रहा हो और मैं सुन रहा हूं। दूसरी वह हालत जबकि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम का ख़ुत्बा सुन रहा हूं, तीसरी वह हालत जबकि मैं किसी जनाज़े में शरीक हूं और जब भी मैं किसी जनाज़े में शरीक होता हूं तो अपने दिल में सिर्फ़ यही सोचता हूं कि इस जनाज़े के साथ क्या होगा और यह जनाज़ा कहां जा रहा है?[1]

---

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 288

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम किस तरह मस्जिदों में नमाज़ों के लिए जमा होते थे, ख़ुद उन्हें नमाजों का कितना शौक़ था और दूसरों को नमाज़ की कितनी तर्ग़ीब देते थे और नमाज़ों के वक़्तों के बदलने से यह समझते थे कि हमारा असल काम एक ख़ुदावन्दी हुक्म से दूसरे हुक्म में और एक भले अमल से दूसरे भले अमल में लगना है और उन्हें उन कामों का हुक्म दिया जाता था कि वे ईमान और ईमानी सिफ़तों को पक्का करें, इल्म और इल्म वाले आमाल को फैलाएं और अल्लाह के ज़िक्र को ज़िन्दा करें और दुआ करें और उसके क़ुबूल होने की शर्तों को क़ायम करें, चुनांचे वह किस तरह से इन आमाल की वजह

से अपने दुनिया के मशग़लों को छोड़ दिया करते थे, ऐसा लगता था कि उन्हें ज़ाहिरी शक्लों की ओर कोई तवज्जोह नहीं है, बल्कि वे तो उस ज़ात से सीधे-सीधे फ़ायदा हासिल करते हैं जो तमाम चीज़ों और शक्लों को पैदा करने वाली और उनमें तसर्रुफ़ करने वाली है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नमाज़ पर उभारना और ताकीद करना

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत हारिस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक दिन हज़रत उस्मान रज़ि० बैठे हुए थे। हम भी उनके साथ बैठे हुए थे। इतने में मुअज़्ज़िन आया, तो हज़रत उस्मान रज़ि० ने एक बरतन में पानी मंगवाया, मेरा ख़्याल है कि उसमें एक मुद्द (लगभग 14 छटांक) पानी आता होगा, उससे वुज़ू किया।

फिर फ़रमाया कि जैसा मैंने अब वुज़ू किया है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मैंने ऐसा ही वुज़ू करते हुए देखा, फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो मेरे इस वुज़ू जैसा वुज़ू करेगा, फिर खड़े होकर ज़ुहर की नमाज़ पढ़ेगा तो उसके ज़ुहर और फ़ज्र के दर्मियान के गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे, फिर वह अस्र की नमाज़ पढ़ेगा तो उसके अस्र और ज़ुहर के दर्मियान के गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे, फिर वह मग़रिब पढ़ेगा तो मग़रिब और अस्र के दर्मियान के गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे, फिर वह इशा पढ़ेगा, तो इशा और मग़रिब के दर्मियान के गुनाह माफ़

कर दिए जाएंगे, फिर वह सारी रात बिस्तर पर करवटें बदलते हुए गुज़ार देगा, फिर वह उठकर वुज़ू करके फ़ज्र की नमाज़ पढ़ेगा तो उसके फ़ज्र और इशा के दर्मियान के गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे, यही वे नेकियां हैं जो गुनाहों को दूर कर देती हैं।

मज्लिस के साथियों ने पूछा, ऐ उस्मान! ये तो हसनात हो गईं तो बाक़ियात सालिहात क्या होंगी? हज़रत उस्मान रज़ि० ने कहा, बाक़ियात सालिहात ये कलिमे हैं—

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

'ला इला-ह इल्लल्लाहु व सुब्हानल्लाहि अलहम्दु लिल्लाहि वल्लाहु अक्बर व ला हौ-ल व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहि'०[1]

हज़रत अबू उस्मान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ एक पेड़ के नीचे था। उन्होंने इस पेड़ की एक सूखी डाल पकड़ कर उसको हरकत दी, जिससे उसके पत्ते गिर गए, फिर मुझसे कहने लगे कि अबू उस्मान! तुमने मुझसे यह न पूछा कि मैंने इस तरह क्यों किया? मैंने कहा, बता दीजिए कि क्यों किया?

उन्होंने कहा कि मैं एक बार नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक पेड़ के नीचे था। आपने भी पेड़ की एक सूखी डाल पकड़ कर इसी तरह किया था जिससे उस डाल के पत्ते झड़ गए थे, फिर हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया था कि सलमान! पूछते नहीं कि मैंने इस तरह क्यों किया? मैंने अर्ज़ किया कि बता दीजिए कि क्यों किया?

आपने इर्शाद फ़रमाया था कि जब मुसलमान अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर पांचों नमाज़ें पढ़ता है, तो उसकी ख़ताएं उससे ऐसे ही गिर जाती हैं जैसे ये पत्ते गिरते हैं, फिर आपने यह आयत पढ़ी—

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَ زُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ اِنَّ

الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ (سورت ہود آیت ۱۱۴)

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 203, हैसमी, भाग 1, पृ० 297

'आप नमाज़ की पाबन्दी रखिए, दिन के दोनों सिरों पर और रात के कुछ हिस्सों में बेशक नेक काम मिटा देते हैं, बुरे कामों को। यह बात एक नसीहत है नसीहत मानने वालों के लिए।' (सूरः हूद, आयत 114)[1]

हज़रत आमिर बिन साद बिन अबी वक़्क़ास रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत साद रज़ि० और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को यह वाक़िया बयान करते हुए सुना कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में दो भाई थे। उनमें से एक दूसरे से अफ़ज़ल और ज़्यादा नेक था तो जो अफ़ज़ल था, उसका तो इंतिक़ाल हो गया और दूसरा एक अर्से तक ज़िन्दा रहा, फिर उसका भी इंतिक़ाल हो गया।

फिर किसी ने हुज़ूर सल्ल० के सामने यह कहा कि पहला भाई दूसरे से फ़ज़ीलत और नेकी में ज़्यादा था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या दूसरा नमाज़ नहीं पढ़ता था? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! पढ़ता था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हें क्या मालूम उसे उसकी नमाज़ ने कहां तक पहुंचा दिया?

फिर हुज़ूर सल्ल० ने इस मौक़े पर फ़रमाया कि नमाज़ की मिसाल ऐसी है कि किसी के दरवाज़े पर एक नहर हो, जिसका पानी जारी, गहरा और मीठा हो और वह हर दिन उसमें पांच बार नहाए तो तुम्हारा क्या ख़्याल है कि क्या उसकी मैल में से कुछ बाक़ी रहेगा?[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़बीला क़ुज़ाआ की शाख़ बनू बली के दो आदमी एक साथ मुसलमान हुए। उनमें से एक साहब जिहाद में शहीद हो गए और दूसरे साहब का एक साल के बाद इंतिक़ाल हो गया। हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने ख़्वाब में देखा कि वह साहब जिनका एक साल बाद इंतिक़ाल हुआ था, उन शहीद से भी पहले जन्नत में दाख़िल हो गए, तो

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 201,
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 208, तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 206,

मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ (कि शहीद का दर्जा तो बहुत ऊंचा है, वह जन्नत में पहले दाख़िल होते।)

मैंने हुज़ूर सल्ल० से ख़ुद अर्ज़ किया या किसी और ने अर्ज़ किया तो हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिन साहब का बाद में इंतिक़ाल हुआ, उनकी नेकियां नहीं देखते, कितनी ज़्यादा हो गईं, एक रमज़ानुल मुबारक के पूरे रोज़े भी उनके ज़्यादा हो गए और छः हज़ार और इतनी-इतनी रक्अतें नमाज़ की एक साल में उनकी बढ़ गईं।[1]

इब्ने माजा और इब्ने हिब्बान की रिवायत के आख़िर में यह भी है कि इन दोनों के दर्जों में इतना फ़र्क़ है जितना ज़मीन-आसमान के दर्मियान।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग मस्जिद में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ का इन्तिज़ार कर रहे थे कि एक आदमी ने खड़े होकर हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया कि मुझसे गुनाह हो गया है। हुज़ूर सल्ल० ने उससे मुंह फेर लिया। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो उस आदमी ने खड़े होकर दोबारा वही बात कही।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुमने हमारे साथ यह नमाज़ नहीं पढ़ी और क्या तुमने उस नमाज़ के लिए अच्छी तरह वुज़ू नहीं किया? उसने कहा, क्यों नहीं? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह नमाज़ तेरे इस गुनाह का कफ़्फ़ारा है।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर पूछा कि सबसे अफ़ज़ल अमल कौन-सा है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नमाज़। उसने पूछा, फिर क्या? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया,

---

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 208,
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 301,

नमाज़। उसने पूछा, फिर क्या? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नमाज़। तीन बार हुज़ूर सल्ल० ने यही जवाब दिया। जब उसने हुज़ूर सल्ल० से बार-बार यही सवाल किया तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नमाज़ के बाद अफ़ज़ल अमल अल्लाह के रास्ते का जिहाद है। उस आदमी ने कहा, मेरे मां-बाप ज़िंदा हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं तुम्हें मां-बाप के साथ अच्छे बर्ताव का हुक्म देता हूं। उस आदमी ने कहा, उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको हक़ देकर और नबी बनाकर भेजा है, मैं जिहाद ज़रूर करूंगा और दोनों को छोड़ जाऊंगा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसे तुम मुझसे ज़्यादा जानते हो (कि तुम्हारे मां-बाप ख़िदमत के मुहताज हैं या नहीं और तुम्हारे अलावा कोई और ख़िदमत करने वाला है या नहीं?[1]

हज़रत अम्र बिन मुर्रा जुह्नी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! ज़रा मुझे यह बताएं कि अगर मैं इस बात की गवाही दूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप अल्लाह के रसूल हैं और पांचों नमाज़ें पढ़ूं और ज़कात अदा करूं और रमज़ान शरीफ़ के रोज़े रखूं और उसमें रात को नफ़्ल नमाज़ भी पढ़ूं तो मैं किन लोगों में गिना जाऊंगा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, सिद्दीक़ीन और शुहदा में।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि वफ़ात के वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बार-बार यही वसीयत फ़रमाते रहे कि नमाज़ का और अपने ग़ुलामों का ख़्याल रखना। आप यह वसीयत फ़रमाते रहे, यहां तक कि ग़रग़रे की हालत शुरू हो गई और ज़ुबान से ये कलिमे साफ़ अदा नहीं हो रहे थे।[3]

इमाम अहमद ने यही हदीस हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से इस

---

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 301, तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 211,
2. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 200
3. बैहक़ी, नसई, इब्ने माजा

तरह नक़ल की है कि इंतिक़ाल के वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बार-बार यही वसीयत फ़रमाते रहे कि नमाज़ का और अपने ग़ुलामों का ख़्याल रखना। आप यह वसीयत फ़रमाते रहे, यहां तक कि सीने में सांस उखड़ गया और आपकी ज़ुबान ये लफ़्ज़ पूरे तौर पर अदा नहीं हो रहे थे।

और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में यों है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे इस बात का हुक्म दिया कि मैं उनके पास बड़ी तश्तरी जैसी कोई चीज़ लाऊं जिस पर हुज़ूर सल्ल० यह बात लिखवा दें जिसके बाद हुज़ूर सल्ल० की उम्मत गुमराह न हो सके।

हज़रत अली रज़ि० कहते हैं कि मुझे यह ख़तरा हुआ कि कहीं मेरे जाने के बाद हुज़ूर सल्ल० का इंतिक़ाल न हो जाए, इसलिए मैंने अर्ज़ किया, मैं आपकी बात ज़ुबानी समझ लूंगा और याद रख लूंगा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं नमाज़, ज़कात और ग़ुलामों का ख़्याल रखने की वसीयत करता हूं।[1]

इब्ने साद ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से भी इसी जैसी हदीस रिवायत की है और उसमें यह भी है कि फिर हुज़ूर सल्ल० नमाज़, ज़कात और ग़ुलामों के ख़्याल रखने की लगातार वसीयत फ़रमाते रहे, यहां तक कि आपका इंतिक़ाल हो गया और इसी तरह रूह निकलने तक आप कलिमा शहादत 'अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू' पढ़ने की वसीयत फ़रमाते रहे और यह भी फ़रमाया, जो भी (शहादत की) इन दोनों बातों की गवाही देगा, उसे आग पर ज़रूर हराम कर दिया जाएगा।

हज़रत अली रज़ि० की दूसरी हदीस में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आख़िरी बात यह फ़रमाई नमाज़, नमाज़ और ग़ुलामों के बारे में अल्लाह से डरो।[2]

---

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 238, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 243,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 180

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का नमाज़ की तर्ग़ीब देना

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नमाज़ पढ़ने से इंसान ज़मीन पर अल्लाह के हिफ़्ज़ व अमान में आ जाता है।[1]

हज़रत अबुल मलीह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु को मिंबर पर यह फ़रमाते हुए सुना कि जो नमाज़ न पढ़े, उसका कोई इस्लाम नहीं।[2]

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आदमी का अपने घर में (नफ़्ल) नमाज़ पढ़ना नूर है और जब आदमी नमाज़ के लिए खड़ा होता है, तो उसके गुनाह उसके ऊपर लटका दिए जाते हैं और वह जब भी सज्दा करता है तो इस सज्दे की वजह से अल्लाह उसकी ख़ताएं मिटा देते हैं।[3]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि बन्दा जब वुज़ू करता है और अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर नमाज़ के लिए खड़ा हो जाता है, तो अल्लाह उसकी तरफ़ मुतवज्जह होकर उससे सरगोशी करते हैं और जब तक बन्दा दूसरी तरफ़ मुतवज्जह न हो और दाएं-बाएं न देखे, उस वक़्त तक अल्लाह उसकी ओर मुतवज्जह रहते हैं।[4]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि नमाज़ बहुत बड़ी नेकी है और मुझे इसकी कोई परवाह नहीं कि मेरे साथ नमाज़ में कौन शरीक हुआ?[5]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जो भी मुसलमान किसी ऊंची ज़मीन में जाकर या पत्थरों से बनी हुई मस्जिद में जाकर नमाज़

1. कंज़, भाग 4, पृ० 186,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 180
3. कंज़, भाग 4, पृ० 181,
4. कंज़, भाग 4, पृ० 181
5. कंज़, भाग 4, पृ० 181,

पढ़ता है, तो ज़मीन यह कहती है कि इस मुसलमान ने अल्लाह की ज़मीन पर अल्लाह के लिए नमाज़ पढ़ी। (ऐ बन्दे !) जिस दिन तू अल्लाह से मुलाक़ात करेगा, उस दिन मैं तेरे हक़ में गवाही दूंगी।[1]

हज़रत इब्ने अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की गरदन में फोड़ा निकल आया। उन्होंने नमाज़ पढ़ी, तो वह फोड़ा नीचे उतर कर सीने पर आ गया। हज़रत आदम ने फिर नमाज़ पढ़ी, वह कोख में आ गया, उन्होंने फिर नमाज़ पढ़ी तो वह टख़ने में आ गया। उन्होंने फिर नमाज़ पढ़ी तो अंगूठे में आ गया। उन्होंने फिर नमाज़ पढ़ी तो वह चला गया।[2]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब तक तुम नमाज़ में होते हो, बादशाह का दरवाज़ा खटखटाते हो और जो बादशाह का दरवाज़ा खटखटाता है उसके लिए दरवाज़ा ज़रूर खुलता है।[3]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, अपनी ज़रूरतें फ़र्ज़ नमाज़ों पर उठा रखो, यानी फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद अपनी ज़रूरतें अल्लाह से मांगो।[4]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं, जब तक आदमी बड़े गुनाहों से बचता रहेगा, उस वक़्त तक एक नमाज़ से लेकर दूसरी नमाज़ तक के दर्मियान जितने गुनाह किए होंगे, वे सारे गुनाह अगली नमाज़ से माफ़ हो जाएंगे।[5]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नमाज़ें बाद वाले गुनाहों के लिए कफ़्फ़ारा होती हैं। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के पांव के अंगूठे में एक फोड़ा निकल आया था, फिर वह फोड़ा चढ़कर पांव की

1. इब्ने असाकिर
2. कंज़, भाग 4, पृ० 181,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 130
4. अब्दुर्रज़्ज़ाक़,
5. अब्दुर्रज़्ज़ाक़,

जड़ यानी एड़ी में आ गया, फिर चढ़कर घुटनों में आ गया, फिर कोख में आ गया, फिर चढ़कर गरदन की जड़ में आ गया, फिर हज़रत आदम अलैहि० ने खड़े होकर नमाज़ पढ़ी तो वह फोड़ा कंधों से नीचे आ गया। उन्होंने फिर नमाज़ पढ़ी, तो वह उतर कर उनकी कोख पर आ गया, फिर नमाज़ पढ़ी तो उतर कर घुटनों पर आ गया, फिर नमाज़ पढ़ी तो उतर कर क़दमों में आ गया, फिर नमाज़ पढ़ी तो वह फोड़ा ख़त्म हो गया।[1]

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब बन्दा नमाज़ के लिए खड़ा होता है, तो उसकी ख़ताएं उसके सर पर रख दी जाती हैं और जब वह नमाज़ से फ़ारिग़ होता है, तो उसकी ख़ताएं उससे ऐसी जुदा हो चुकी होती हैं, जैसे खजूर की टहनियां दाएं-बाएं गिरकर पेड़ से अलग हो जाती हैं।[2]

हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब बन्दा नमाज़ पढ़ने लगता है, तो उसके गुनाह उसके सर के ऊपर जमा हो जाते हैं, फिर जब वह सज्दा करता है, तो वे गुनाह पेड़ के पत्तों की तरह गिरने लग जाते हैं।[3]

हज़रत तारिक़ बिन शिहाब रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु की इबादत में मेहनत को देखने के लिए उनके पास एक रात गुज़ारी तो उन्होंने यह देखा कि हज़रत सलमान रज़ि० रात भर सोते रहे और रात के आख़िरी हिस्से में उन्होंने खड़े होकर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ी। हज़रत सलमान रज़ि० की ज़्यादा से ज़्यादा इबादत का जैसा ख़्याल हज़रत तारिक़ का था, वैसा उन्होंने न देखा तो उन्होंने हज़रत सलमान रज़ि० से उसका तज़्किरा किया। हज़रत सलमान रज़ि० ने फ़रमाया, पांच नमाज़ों की पाबन्दी करो, क्योंकि जब तक आदमी क़त्ल कर देने वाले गुनाह यानी बड़े गुनाह नहीं करता, उस वक़्त तक ये

1. कंज़, भाग 8, पृ० 181,
2. अब्दुर्रज़्ज़ाक़
3. इब्ने जरीर,

नमाज़ें तमाम गुनाहों के लिए कफ़्फ़ारा होती हैं। जब रात होती है तो लोग तीन जमाअतों में बंट जाते हैं। एक जमाअत तो वह है जिसके लिए यह रात रहमत है, वबाल नहीं है। दूसरी जमाअत वह है जिसके लिए यह रात वबाल है, रहमत नहीं है, तीसरी जमाअत वह है जिसके लिए वह रात न रहमत है न वबाल। जिस आदमी ने रात के अंधेरे और लोगों की ग़फ़लत को ग़नीमत समझा और खड़े होकर सारी रात नमाज़ पढ़ता रहा, उसके लिए तो यह रात रहमत है, वबाल नहीं और जिस आदमी ने लोगों की ग़फ़लत और रात के अंधेरे को ग़नीमत समझा और बे-सोचे समझे गुनाहों में मशग़ूल रहा, उसके लिए यह रात वबाल है, रहमत नहीं है और जो आदमी इशा पढ़कर सो गया, उसके लिए यह रात न रहमत है न वबाल। इबादत में ऐसी रफ़्तार से बचो जो तुम्हें थका दे और फिर तुम उसे निभा न सको। बीच का रास्ता अपनाओ और नेक अमल पाबन्दी से करो।[1]

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम (गुनाहों की बदौलत) अपनी जानों पर आग जला लेते हैं, फिर जब हम फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ लेते हैं, तो वह नमाज़ पहले के तमाम गुनाहों के लिए कफ़्फ़ारा बन जाती है, फिर हम अपनी जानों पर आग जला लेते हैं, फिर जब हम नमाज़ पढ़ लेते हैं तो वह नमाज़ पहले के तमाम गुनाहों के लिए कफ़्फ़ारा बन जाती है।[2]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नमाज़ का शौक़ और नमाज़ का बहुत ज़्यादा एहतिमाम

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ख़ुश्बू और औरतें मेरे लिए महबूब बना दी गई हैं और मेरी आंखों की ठंडक नमाज़ में रखी गई है।[3]

---

1. कंज़, भाग 4, पृ० 181, हैसमी, भाग 1, पृ० 300
2. कंज़, भाग 4, पृ० 182
3. अहमद व नसई

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया, नमाज़ आपके लिए महबूब बना दी गई है, इसलिए आप इसमें से जितना चाहें, अपना हिस्सा ले लें।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक दिन तशरीफ़ रखते थे और लोग भी आपके आस-पास बैठे हुए थे, आपने फ़रमाया कि अल्लाह ने हर नबी को किसी न किसी अमल का ज़्यादा शौक़ अता फ़रमाया था, मुझे रात को नमाज़ पढ़ने का बहुत ज़्यादा शौक़ है, इसलिए जब मैं नमाज़ में खड़ा हो जाऊं तो कोई मेरे पीछे हरगिज़ नमाज़ न पढ़े और अल्लाह ने हर नबी के लिए आमदनी का कोई न कोई ज़रिया बनाया था और मेरी आमदनी का ज़रिया मालेग़नीमत का पांचवां हिस्सा है। जब मेरा इंतिक़ाल हो जाए, फिर यह पांचवां हिस्सा मेरे बाद के ख़लीफ़ों के लिए है।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खड़े होकर अल्लाह की इतनी इबादत की कि आपके दोनों क़दम सूज गए। इस पर आपकी ख़िदमत में अर्ज़ किया गया कि क्या अल्लाह ने आपके अगले-पिछले गुनाह माफ़ नहीं कर दिए? आपने फ़रमाया, तो क्या मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूं?[3]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ा करते, यहां तक कि आपके दोनों क़दम सूज जाते।[4]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को इतनी नमाज़ पढ़ा करते कि आपके दोनों क़दम

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 58, हैसमी, भाग 2, पृ० 270
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 271
3. कंज़, भाग 4, पृ० 36, हैसमी, भाग 2, पृ० 271,
4. हैसमी, भाग 2, पृ० 271,

सूज जाते, फिर पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[1]

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को इबादत में इतना ज़्यादा खड़े रहते कि आपके दोनों क़दम फट जाते, फिर पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को इबादत में इतना ज़्यादा खड़े रहते कि आपके क़दम वरम की वजह से फट जाते। मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जब आपकी मग़फ़िरत हो चुकी है, तो फिर आप यह क्यों करते हैं? फिर पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[3]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इबादत में इतने ज़्यादा खड़े रहा करते थे कि आपके दोनों क़दम फट जाते।[4]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह की इतनी ज़्यादा इबादत की कि आप पुरानी मशक की तरह हो गए। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप ऐसा क्यों करते हैं? क्या अल्लाह ने आपके अगले-पिछले गुनाह माफ़ नहीं कर दिए? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, कर दिए हैं, लेकिन क्या मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूं?[5]

हज़रत हुमैद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की

1. तबरानी
2. मज्मा, भाग 2, पृ० 271,
3. रियाज़, पृ० 429
4. इब्नुन्नज्जार
5. कंज़, भाग 4, पृ० 36

रात की नमाज़ के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने फ़रमाया कि हम हुज़ूर सल्ल० को रात के जिस हिस्से में भी, नमाज़ पढ़ता हुआ देखना चाहते थे देख लेते थे और रात के जिस हिस्से में भी सोता हुआ देखना चाहते थे, देख लेते थे, यानी कभी आप रात के शुरू में नमाज़ पढ़ते, कभी बीच में और कभी आख़िरी हिस्से में और आप किसी महीने इतने ज़्यादा रोज़े रखा करते थे कि हम कहते कि इस महीने में आप एक भी रोज़ा नहीं छोड़ेंगे और किसी महीने में आप बिल्कुल न रखते, यहां तक कि हम कहते कि आप एक दिन भी रोज़ा नहीं रखेंगे।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक रात मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ पढ़नी शुरू की, लेकिन आपने इतना लम्बा क़ियाम फ़रमाया कि मैंने बुरे काम का इरादा कर लिया था। हमने पूछा, आपने किस काम का इरादा कर लिया था? उन्होंने फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्ल० को छोड़कर बैठने का इरादा कर लिया था।[2]

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सारी रात नमाज़ में खड़े रहे और फ़ज्र तक यही आयत पढ़ते रहे—

إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِنْ
تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (سورت مائده آیت ۱۱۸)

'अगर आप इनको सज़ा दें तो ये आपके बन्दे हैं और अगर आप उनको माफ़ फ़रमा दें, तो आप ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं।'

(सूरः माइदा, आयत 118)[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कुछ तक्लीफ़ हो गई। जब सुबह हुई तो किसी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! तक्लीफ़ का

1. मुस्लिम, बुख़ारी
2. सिफ़तुस्सफ़वा, भाग 1, पृ० 75
3. बिदाया, भाग 6, पृ० 58,

असर आप पर बिल्कुल साफ़ है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम जो मुझ पर तक्लीफ़ का असर देख रहे हो, मैंने इसके बाद भी आज रात सात लम्बी सूरतें पढ़ी हैं।[1]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने एक रात नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ पढ़नी शुरू की। हुज़ूर सल्ल० ने सूरः बक़रः शुरू फ़रमाई। मैंने कहा, सौ आयतों पर रुकूअ कर देंगे, लेकिन आप पढ़ते रहे। फिर मैंने कहा, आप इस सूरः को दो रक्अतों में पढ़ेंगे, लेकिन आप पढ़ते रहे। फिर मैंने कहा, आप इसे ख़त्म करके रुकूअ कर देंगे, लेकिन आपने सूरः निसा शुरू कर दी। उसे ख़त्म करके सूरः आले इम्रान शुरू कर दी और उसे भी पूरा पढ़ लिया।

आप (क़ुरआन) ठहर-ठहर कर पढ़ा करते थे। आप जब किसी ऐसी आयत के पास से गुज़रते, जिसमें तस्बीह का ज़िक्र होता तो आप 'सुब्हानल्लाह' कहने लगते और जब ऐसी आयत के पास से गुज़रते जिसमें (अल्लाह से) मांगने का ज़िक्र होता तो आप अल्लाह से मांगते और जब ऐसी आयत के पास से गुज़रते, जिसमें पनाह मांगने का ज़िक्र होता तो आप पनाह मांगते।

फिर आपने रुकूअ किया और 'सुब्हा-न रब्बियल अज़ीम' कहने लगे और आपका रुकूअ क़ियाम जैसा लम्बा था, फिर 'समिअल्लाहु लिमन हमिदह' फ़रमा कर खड़े हो गए और लगभग रुकूअ जितनी देर खड़े रहे, फिर सज्दा किया और 'सुब्हा-न रब्बियल आला' कहने लगे और आपका सज्दा भी क़ियाम जितना लम्बा था।[2]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप नमाज़ पढ़ रहे थे, मैंने पीछे खड़े होकर नमाज़ शुरू कर दी। आपको मालूम नहीं था (कि मैं भी आपकी नमाज़ में शामिल हो गया हूं।) आपने सूरः

---

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 274
2. सिफ़तुस्सफ़्वा, भाग 1, पृ० 75

बक़रः शुरू फ़रमा रखी थी। मेरा ख़्याल था कि यह सूरः ख़त्म करके आप रुकूअ कर लेंगे, लेकिन आप पढ़ते ही रहे।

हज़रत सिनान रिवायत करने वाले कहते हैं कि मेरे इल्म के मुताबिक़ हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने यही फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल० ने चार रक्अत नमाज़ पढ़ी। हुज़ूर सल्ल० का रुकूअ क़ियाम की तरह लम्बा होता था। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने (नमाज़ के बाद) हुज़ूर सल्ल० को बताया कि मैं भी आपके पीछे नमाज़ पढ़ रहा था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने मुझे क्यों नहीं बताया? मैंने अर्ज़ किया, उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, अब तक मेरी कमर में दर्द हो रहा है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर मुझे पता चल जाता कि तुम मेरे पीछे हो, तो मैं नमाज़ छोटी कर देता।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को बताया गया कि कुछ लोग एक रात में सारा क़ुरआन एक बार या दो बार पढ़ लेते हैं। उन्होंने फ़रमाया, उन लोगों का पढ़ना, न पढ़ना बराबर है। मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सारी रात खड़ी रहती थी। आप सूरः बक़रः, सूरः आले इम्रान और सूरः निसा पढ़ा करते थे। ख़ौफ़ वाली आयत पर गुज़रते तो दुआ मांगते और अल्लाह की पनाह चाहते और बशारत वाली आयत पर गुज़रते तो दुआ मांगते और उसका शौक़ ज़ाहिर करते।[2]

हज़रत अस्वद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हम लोग हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास थे। हमने नमाज़ की अहमियत, अज़्मत और पाबन्दी का तज़्किरा किया तो हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मरज़ुल वफ़ात शुरू हुआ, नमाज़ का वक़्त आया, हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने अज़ान दी तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अबूबक्र से कहो, वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं।

---

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 275,
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 272,

हुज़ूर सल्ल० की एक बीवी ने अर्ज़ किया, हज़रत अबूबक्र रज़ि० तो बड़े नर्मदिल हैं, जल्द रो पड़ते हैं। जब आपकी जगह खड़े होंगे, तो लोगों को नमाज़ नहीं पढ़ा सकेंगे। हुज़ूर सल्ल०ने वही बात दोबारा फ़रमाई। उसने अपनी बात दोबारा अर्ज़ कर दी। हुज़ूर सल्ल० ने तीसरी बार फ़रमाया, तुम तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की साथिन (ज़ुलैख़ा) की तरह हो (ऊपर से कुछ और अन्दर से कुछ) ऊपर से कह रही हो कि अबूबक्र रज़ि० बहुत रोते हैं और अन्दर दिल में यह है कि हुज़ूर सल्ल० की जगह खड़े होने से लोग बदफ़ाली लेंगे, जैसा कि ज़ुलैख़ा ने ऊपर से तो औरतों का इक्राम किया और अन्दर से मक़्सूद उन्हें हज़रत यूसुफ़ अलै० को दिखाना था) अबूबक्र रज़ि० से कहो कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं। चुनांचे अबूबक्र रज़ि० नमाज़ पढ़ाने चले गए।

फिर हुज़ूर सल्ल०ने अपनी बीमारी में कुछ कमी महसूस की तो कमज़ोरी की वजह से आप दो आदमियों के सहारे मस्जिद गए और गोया कि मैं अब भी देख रही हूं कि आपके दोनों क़दम ज़मीन पर घसिटते हुए जा रहे हैं। (हुज़ूर सल्ल० को तशरीफ़ लाते हुए देखकर) हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने पीछे हटने का इरादा किया। हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें इशारा से फ़रमाया, वहीं अपनी जगह रहो। फिर हुज़ूर सल्ल० जाकर उनके पहलू में बैठ गए।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बार-बार कहा (कि अबूबक्र रज़ि० नमाज़ नहीं पढ़ा सकते) और मैंने बार-बार इस वजह से कहा कि मुझे डर था कि हुज़ूर सल्ल० की जगह खड़े होने से लोग अबूबक्र रज़ि० से बद-फ़ाली लेंगे, क्योंकि मुझे यक़ीन था कि जो भी हुज़ूर सल्ल० की जगह खड़ा होगा, लोग उससे ज़रूर बद-फ़ाली लेंगे, इसलिए मैंने चाहा कि हुज़ूर सल्ल० अबूबक्र रज़ि० के अलावा किसी और को खड़ा कर दें।[2]

---

1. बुख़ारी
2. बुख़ारी,

मुस्लिम की रिवायत में यह है कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हज़रत अबूबक्र रज़ि० बड़े नर्म दिल आदमी हैं, जब क़ुरआन पढ़ेंगे तो आंसू नहीं रोक सकेंगे, इसलिए अगर आप उनके बजाए किसी और को फ़रमा दें तो अच्छा है।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि अल्लाह की क़सम ! मैंने यह बात सिर्फ़ इस वजह से कही थी मैं इसे अच्छा नहीं समझती थी कि हुज़ूर सल्ल० की जगह सबसे पहले खड़े होने की वजह से हज़रत अबूबक्र रज़ि० से लोग बद-फ़ाली लें। इसलिए मैंने यह बात दो या तीन बार हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ की, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ने आख़िर में यही फ़रमाया कि अबूबक्र रज़ि० लोगों को नमाज़ पढ़ाएं, तुम तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की साथिन (ज़ुलैख़ा) की तरह हो।[1]

हज़रत उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि आप हमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीमारी के बारे में कुछ नहीं बतातीं? उन्होंने फ़रमाया, क्यों नहीं? ज़रूर। जब हुज़ूर सल्ल० की बीमारी बढ़ गई तो आपने पूछा कि क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली? हमने कहा, नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! वह आपका इन्तिज़ार कर रहे हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मेरे लिए लगन में पानी डालो। हमने पानी डाला, हुज़ूर सल्ल० ने ग़ुस्ल किया, फिर आप खड़े होने लगे तो बेहोश हो गए। फिर जब कुछ तबियत संभली, तो आपने पूछा, क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली? हमने कहा, नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! वे आपका इन्तिज़ार कर रहे हैं। आपने फ़रमाया, मेरे लिए लगन में पानी रखो। हमने पानी रखा, हुज़ूर सल्ल० ने ग़ुस्ल किया, फिर आप खड़े होने लगे तो बेहोश हो गए।

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 232,

फिर जब तबियत संभली, तो आपने पूछा, क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली? हमने कहा, नहीं। ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! वे आपका इन्तिज़ार कर रहे हैं। आपने फ़रमाया, मेरे लिए लगन में पानी रखो। हमने पानी रखा, हुज़ूर सल्ल० ने ग़ुस्ल किया। फिर आप खड़े होने लगे, तो बेहोश हो गए। फिर जब तबियत संभली, तो आपने पूछा, क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली? हमने कहा, नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! वे आपका इन्तिज़ार कर रहे हैं और वाक़ई लोग मस्जिद में बैठे हुए इशा की नमाज़ के लिए हुज़ूर सल्ल० का इन्तिज़ार कर रहे थे।

इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास यह पैग़ाम भेजा कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं। हज़रत अबूबक्र रज़ि० बड़े नर्म दिल आदमी थे, इसलिए उन्होंने कहा, ऐ उमर रज़ि० ! आप लोगों को नमाज़ पढ़ाएं। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, नहीं, इसके आप ज़्यादा हक़दार हैं। चुनांचे उन दिनों हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने नमाज़ पढ़ाई। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० के बाहर आने का ज़िक्र किया जैसे पहले गुज़र चुका।[1]

हज़रत अनस रज़ि० से बुख़ारी में नक़ल किया गया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मरज़ुल वफ़ात के ज़माने में हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों को नमाज़ पढ़ा रहे थे। जब सोमवार आया और सहाबा किराम सफ़ें बनाकर नमाज़ में खड़े थे, हुज़ूर सल्ल० हुजरे का परदा हटाकर हमें देखने लगे। आप खड़े हुए थे और आपका चेहरा क़ुरआन के पन्नों की तरह चमक रहा था। आप मुस्करा रहे थे (कि उम्मत इज्तिमाई काम में लगी हुई है, जिसमें उन्होंने लगाया था।)

हुज़ूर सल्ल० को देखकर हमें इतनी ज़्यादा ख़ुशी हुई कि बस हम लोग नमाज़ तोड़ने ही लगे थे, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु सफ़ में खड़े होने के लिए एड़ियों के बल पीछे हटने लगे, फिर हुज़ूर सल्ल० ने हमें इशारे

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 233, बैहक़ी, भाग 8, पृ० 151, कंज़, भाग 4, पृ० 59, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 18,

से फ़रमाया कि अपनी नमाज़ पूरी करो और परदा डालकर वापस अन्दर तशरीफ़ ले गए और उसी दिन हुज़ूर सल्ल० का विसाल हो गया।

दूसरी सनद से बुख़ारी में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से (रिवायत) नक़ल की गई है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन दिन बाहर तशरीफ़ नहीं लाए। (पीर यानी सोमवार के दिन) नमाज़ की इक़ामत हो रही थी, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु आगे बढ़ने लगे कि इतने में हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, परदा उठाओ। साथ वालों ने परदा उठा दिया।

जब हुज़ूर सल्ल० का चेहरा अन्दर नज़र आया तो ऐसा अजीब मंज़र हमने कभी नहीं देखा था। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को इशारे से आगे बढ़ने को फ़रमाया और परदा डाल दिया, फिर इसके बाद हुज़ूर सल्ल० की (आम) ज़ियारत न हो सकी और आपका इंतिक़ाल हो गया।[1]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का नमाज़ का शौक़ और उसका बहुत ज़्यादा एहतिमाम करना

हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गया (वह बेहोश थे और) उनके ऊपर कपड़ा डाला हुआ था। मैंने पूछा, आप लोगों की इनके बारे में क्या राय है? उन लोगों ने कहा, जैसे आप मुनासिब समझें। मैंने कहा, आप लोग इन्हें नमाज़ का नाम लेकर पुकारें (नमाज़ का नाम सुनते ही होश में आ जाएंगे) क्योंकि नमाज़ ही एक ऐसी चीज़ है जिसकी वजह से ये सबसे ज़्यादा घबराएंगे।

चुनांचे लोगों ने कहा, अमीरुल मोमिनीन! नमाज़ (का वक़्त हो गया

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 235, कंज़, भाग 4, पृ० 57, मज्मा, भाग 5, पृ० 181, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 152, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 216,

है)। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! जो आदमी नमाज़ छोड़ दे, उसका इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने नमाज़ पढ़ी और उनके ज़ख़्म में से ख़ून बह रहा था।[1]

हज़रत मिस्वर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को नेज़ा मारा गया तो उन पर ग़शी छाने लगी। किसी ने कहा, अगर यह ज़िन्दा हैं तो फिर यह नमाज़ के नाम से जितनी जल्दी घबरा कर उठेंगे, उतनी जल्दी और किसी चीज़ के नाम से नहीं उठेंगे। किसी ने कहा, अमीरुल मोमिनीन! नमाज़, नमाज़ हो चुकी है। इस पर हज़रत उमर रज़ि० फ़ौरन होश में आ गए और फ़रमाया, नमाज़। अल्लाह की क़सम, जिसने नमाज़ छोड़ दी, उसका इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[2]

हज़रत मुहम्मद बिन मिस्कीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब बाग़ियों ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को घेर लिया तो उनकी बीवी ने उनसे कहा, तुम इन्हें क़त्ल करना चाहते हो? इनको चाहे तुम क़त्ल कर दो, चाहे इन्हें छोड़ दो, ये सारी रात नमाज़ पढ़ा करते थे और एक रक्अत में सारा क़ुरआन पढ़ लिया करते थे।[3]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब बाग़ियों ने हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद कर दिया, तो उनकी बीवी ने कहा, तुम लोगों ने इनको क़त्ल कर दिया है, हालांकि ये सारी रात इबादत किया करते थे और एक रक्अत में सारा क़ुरआन पढ़ लिया करते थे।[4]

हज़रत उस्मान बिन अब्दुर्रहमान तैमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मेरे वालिद ने कहा, मैं ज़ोर लगाकर मुक़ामे इब्राहीम पर ही आज रात

---

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 295,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 350,
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 94, हुलीया, भाग 1, पृ० 57
4. हुलीया, भाग 1, पृ० 57

इबादत करूंगा। वह कहते हैं, जब मैं इशा की नमाज़ पढ़ चुका, तो मुक़ामे इब्राहीम पर आकर मैं अकेला खड़ा हो गया। मैं खड़ा हुआ था कि इतने में एक आदमी आया और उसने अपना हाथ मेरे दोनों कंधों के दर्मियान में रख दिया। मैंने देखा तो वह हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० थे।

फिर उन्होंने उम्मुल क़ुरआन यानी सूरः फ़ातिहा से पढ़ना शुरू किया और क़ुरआन ख़त्म किया, फिर रुकूअ और सज्दा किया, फिर (नमाज़ पूरी करके) अपने जूते उठाए (और चले गए) अब मुझे मालूम नहीं कि उन्होंने इससे पहले कोई नमाज़ पढ़ी थी या नहीं।[1]

हज़रत उस्मान बिन अब्दुर्रहमान तैमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक रात मैंने मुक़ामे इब्राहीम के पास हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि वह आगे बढ़े तो एक रक्अत में सारा क़ुरआन ख़त्म करके अपनी नमाज़ पूरी की।[2]

हज़रत अता बिन रबाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार लोगों को नमाज़ पढ़ाई, फिर वह मुक़ामे इब्राहीम के पीछे खड़े हुए और वित्र की एक रक्अत में सारा क़ुरआन पढ़ दिया। हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु सारी रात अल्लाह की इबादत करते थे और एक रक्अत में सारा क़ुरआन ख़त्म कर लिया करते थे।[3]

हज़रत मुसय्यिब बिन राफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की निगाह जाती रही तो एक आदमी ने ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि अगर आप मेरे कहने पर सात दिन इस तरह सब्र से गुज़ारें तो उनमें आप चित लेटकर इशारे

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 56,
2. मुंतख़ब, भाग 9, पृ० 9
3. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 75, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 9,

से नमाज़ पढ़ें, तो मैं आपका इलाज करूंगा इनशाअल्लाह, आप ठीक हो जाएंगे।

इस पर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने हज़रत आइशा रज़ि०, हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हुमा और दूसरे बहुत-से सहाबा किराम रज़ि० से आदमी भेजकर इस बारे में पूछा। हर एक ने यही जवाब में कहा कि अगर आपका इन सात दिनों में इंतिक़ाल हो गया, तो फिर आप उस नमाज़ का क्या करेंगे? इस पर उन्होंने अपनी आंखों को ऐसे ही रहने दिया और उनका इलाज न करवाया।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब मेरी आंख की रोशनी चली गई तो किसी ने मुझसे कहा, हम आप (की आंख) का इलाज कर देते हैं, लेकिन आप कुछ दिन नमाज़ पढ़ना छोड़ दें। मैंने कहा, नहीं, क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि जो आदमी नमाज़ छोड़ेगा, वह अल्लाह से इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह उससे नाराज़ होंगे।[2]

हज़रत अली बिन अबी हमला और औज़ाई रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अली बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुम हर दिन हज़ार रक्अत पढ़ा करते थे।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु नफ़्ली रोज़े नहीं रखा करते थे और फ़रमाते थे, जब मैं रोज़ा रखता हूं तो कमज़ोरी हो जाती है और इसकी वजह से नमाज़ में कमी आ जाती है और मुझे रोज़े से ज़्यादा नमाज़ से मुहब्बत है। वह अगर रोज़ा रखते तो महीने में सिर्फ़ तीन दिन रखा करते थे।[4]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि

---

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 546,
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 295,
3. हैसमी, भाग 2, पृ० 258
4. हैसमी, भाग 2, पृ० 257

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत कम रोज़े रखते थे। इस बारे में किसी ने उनसे वजह पूछी, तो उन्होंने जवाब में वही बात कही, जो पिछली हदीस में गुज़री।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से कम रोज़ा रखने वाला कोई फ़क़ीह नहीं देखा, तो किसी ने उनसे पूछा कि आप रोज़े क्यों नहीं रखते? उन्होंने फ़रमाया, मुझे नमाज़ रोज़े से ज़्यादा पसन्द है? रोज़े रखता हूं तो कमज़ोर हो जाता हूं और फिर नमाज़ की हिम्मत नहीं रहती।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक रात इशा के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आने में मुझे देर हो गई। जब मैं आपके पास गई तो आपने मुझसे फ़रमाया, तुम कहां थीं? मैंने कहा, आपके एक सहाबी मस्जिद में क़ुरआन पढ़ रहे थे, हम उसे सुन रही थीं। मैंने उस जैसी आवाज़ और उस जैसी क़िरात आपके किसी सहाबी रज़ि० की नहीं सुनी। आप अपनी जगह से उठे। आपके साथ मैं भी उठी और जाकर आपने कुछ देर वह क़िरात सुनी, फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, यह हज़रत अबू हुज़ैफ़ा के ग़ुलाम सालिम हैं, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मेरी उम्मत में इस जैसे आदमी बनाए।[3]

हज़रत मस्रूक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हम लोग एक सफ़र में हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ थे। हमें एक रात खेती वाले बाग़ में गुज़ारनी पड़ी। हम वहां उस बाग़ में रुके। हज़रत अबू मूसा रज़ि० रात को खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगे। हज़रत मस्रूक़ कहते हैं कि उनकी आवाज़ बड़ी दिलकश और क़िरात बहुत उम्दा थी और जैसी आयत पर गुज़रते, उसी तरह की दुआ वग़ैरह करते।

1. कंज़, भाग 4, पृ० 181,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 155
3. हाकिम, भाग 3, पृ० 225

फिर यह दुआ पढ़ी, ऐ अल्लाह! तू तमाम ऐबों से पाक है और तेरी तरफ़ से ही सलामती मिलती है और तू ही अम्न देने वाला है और ईमानदार को तू पसन्द करता है और तू ही निगहबानी करने वाला है और तू निगहबानी करने वाले को पसन्द करता है और तू ही सच्चा है और तू सच्चे को पसन्द करता है।[1]

हज़रत अबू उस्मान नहदी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु का सात रात मेहमान बना, तो वह और उनका ख़ादिम और उनकी बीवी तीनों बारी-बारी रात को इबादत करते थे और इसके लिए उन्होंने रात के तीन हिस्से कर रखे थे।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु अपने एक बाग़ में (नफ़्ल) नमाज़ पढ़ रहे थे कि इतने में एक चिड़िया उड़ी और वह रास्ते की खोज में इधर-उधर चक्कर लगाने लगी, लेकिन उसे रास्ता नहीं मिल रहा था। (क्योंकि बाग़ बहुत घना था।) यह मंज़र उन्हें पसन्द आया और वह उसे कुछ देर देखते रहे। फिर उन्हें अपनी नमाज़ का ख़्याल आया, तो अब उन्हें यह याद न रहा कि वह कितनी रक्अत नमाज़ पढ़ चुके हैं तो कहने लगे कि इस बाग़ की वजह से यह मुसीबत पेश आई है और फ़ौरन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपनी नमाज़ का सारा क़िस्सा सुनाकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! (इस बाग़ की वजह से यह मुसीबत पेश आई है, इसलिए) यह बाग़ अल्लाह के नाम पर सदक़ा है, आप इसे जहां चाहें ख़र्च फ़रमा दें।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक अंसारी मदीना की क़ुफ़ घाटी में अपने एक बाग़ में नमाज़ पढ़ रहे थे। खजूरें पकने का ज़माना ज़ोरों पर था और ख़ोशे खजूरों के बोझ की

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 259
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 383,
3. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 316

वजह से झुके पड़े थे। उनकी निगाह उन ख़ोशों पर पड़ी और खजूरों की ज़्यादती की वजह से वह अच्छे मालूम हुए, फिर उन्हें नमाज़ का ख़्याल आया तो यह याद न रहा कि कितनी रकअत नमाज़ पढ़ चुके हैं, तो वह कहने लगे कि इस बाग़ की वजह से यह मुसीबत पेश आई है।

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० की ख़िलाफ़त का ज़माना था। उन अंसारी ने हज़रत उस्मान रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर होकर सारा क़िस्सा सुनाया और अर्ज़ किया, यह बाग़ अल्लाह के लिए सदक़ा है, इसे आप किसी ख़ैर के काम में ख़र्च कर दें। चुनांचे उसे हज़रत उस्मान रज़ि० ने पचास हज़ार में बेचा, उस बाग़ का नाम ख़मसीन यानी पचासा पड़ गया।[1]

हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि इब्ने ज़ुबैर रज़ि० रात भर अल्लाह की इबादत करते और दिन भर रोज़ा रखते और (चूंकि वह मस्जिद में ज़्यादा रहते थे, इसलिए) उनका नाम मस्जिद का कबूतर पड़ गया था।[2]

हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब भी किसी नमाज़ का वक़्त आता है तो मैं उस नमाज़ की तैयारी कर चुका होता हूं और मेरे अन्दर उस नमाज़ का शौक़ पूरे ज़ोर पर होता है।[3]

मस्जिदें बनाना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम मस्जिद बनाने के लिए कच्ची ईंट उठाकर ला रहे थे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी उनके साथ थे। (यह ख़ैबर की लड़ाई के बाद का वाक़िया है, जबकि मस्जिदे नबवी की दूसरी बार तामीर हुई।) हुज़ूर सल्ल० अपने पेट पर एक ईंट चौड़ाई में रखे हुए ला रहे थे। सामने से मैं आया तो मैं समझा कि इस ईंट को उठाने में

1. अवजज़ भाग 1, पृ० 315,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 335
3. कंज़, भाग 7, पृ० 80, इसाबा, भाग 2, पृ० 468,

आपको कठिनाई हो रही है इसलिए मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह ईंट मुझे दे दें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरह ! तुम कोई और ईंट ले लो, क्योंकि असल ज़िंदगी तो आख़िरत की है।[1]

हज़रत तल्क़ बिन अली (यमामी) रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मस्जिद बनाई। हुज़ूर सल्ल० (मेरे बारे में किसी सहाबी रज़ि० से) फ़रमा रहे थे कि इस यमामी को गारे की तरफ़ बढ़ाओ, क्योंकि इसे तुम सबसे ज़्यादा अच्छी तरह गारा मिलाना आता है और इसके कंधे भी तुम सबसे ज़्यादा मज़बूत हैं, यानी तुम सबसे ज़्यादा ताक़तवर भी है।[2]

हज़रत तल्क़ बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० मस्जिद बना रहे थे। हुज़ूर सल्ल० को सहाबा का यह काम कुछ पसन्द नहीं आ रहा था। मैं फावड़ा लेकर उससे गारा मिलाने लग गया। हुज़ूर सल्ल० को मेरा फावड़ा लेकर उससे गारा मिलाना पसन्द आया, तो फ़रमाया, इस हनफ़ी (क़बीला बनू हनीफ़ा के आदमी) को गारा बनाने में लगा रहने दो, क्योंकि यह तुमसे ज़्यादा अच्छा गारा बनाने वाला है।[3]

जब हज़रत इब्ने अबी औफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी का इंतिक़ाल हुआ, तो वह फ़रमाने लगे कि इसका जनाज़ा उठाओ और ख़ूब शौक़ से उठाओ, क्योंकि यह और इसकी रिश्तेदार औरतें रात को इस मस्जिद के पत्थर उठाती थीं, जिसकी बुनियाद तक़्वा पर रखी गई है और हम (मर्द) दिन में दो-दो पत्थर उठाते थे।[4]

---

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 9,
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 9
3. हैसमी, भाग 2, पृ० 9
4. हैसमी, भाग 2, पृ० 10

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अंसार ने आपस में कहा कि कब तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खजूर की टहनियों (से बनी हुई मस्जिद) में नमाज़ पढ़ते रहेंगे। इस पर अंसार ने हुज़ूर सल्ल० के लिए बहुत-से दीनार जमा किए और वे लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आए और अर्ज़ किया कि हम इस मस्जिद को ठीक करना चाहते हैं और इसे मुज़य्यन (सजा हुआ) बनाना चाहते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं अपने भाई मूसा अलैहिस्सलाम के तरीक़े से हटना नहीं चाहता। मेरी मस्जिद का छप्पर ऐसा हो जैसा कि हज़रत मूसा अलैहि० का था।[1]

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अंसार ने बहुत-सा माल जमा किया और उसे लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इस माल से मस्जिद बनाएं और इसे बहुत ज़ेब व ज़ीनत वाली बनाएं, हम कब तक खजूर की टहनियों के बीच नमाज़ पढ़ते रहेंगे? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं अपने भाई मूसा के तरीक़े से नहीं हट सकता, ऐसा छप्पर हो, जैसा मूसा का था।[2]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का छप्पर इतना ऊंचा था कि जब वह अपना हाथ उठाते, तो छप्पर को लग जाता था।

हज़रत इब्ने शिहाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में मस्जिद के स्तून खजूर के तने के थे और उसकी छत खजूर की टहनियों की और पत्तों की थी और छत पर कोई ख़ास मिट्टी भी नहीं थी, जब बारिश हुआ करती थी तो सारी मस्जिद कीचड़ से भर जाती थी, और आपकी मस्जिद तो बस छप्पर जैसी ही थी।[3]

---

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 16,
2. दलाइल, बैहक़ी
3. बैहक़ी,

बुख़ारी में लैलतुल क़द्र की हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि मुझे ख़्वाब में (लैलतुल क़द्र की) यह निशानी दिखाई गई है कि मैं कीचड़ में सज्दा कर रहा हूं, इसलिए जिसने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एतकाफ़ किया था, वह अब फिर एतकाफ़ करे। चुनांचे हमने दोबारा एतकाफ़ शुरू कर दिया। उस वक़्त हमें आसमान में बादल का कोई टुकड़ा नज़र नहीं आ रहा था, लेकिन थोड़ी देर के बाद एक बादल आया और बारिश हुई और इतनी हुई कि मस्जिद की छत ख़ूब टपकी। मस्जिद की छत खजूर की टहनियों की थी और नमाज़ खड़ी हो गई तो मैंने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कीचड़ में सज्दा कर रहे हैं, यहां तक कि मैंने आपके माथे पर कीचड़ का असर देखा।[1]

हज़रत ख़ालिद बिन मादान रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा और हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास एक बांस था जिससे वह मस्जिद नाप रहे थे कि इतने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास बाहर तशरीफ़ लाए और उनसे फ़रमाया, तुम दोनों क्या कर रहे हो? उन दोनों ने अर्ज़ किया कि हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद शाम देश के ढंग की बनाना चाहते हैं और उसका जितना ख़र्च होगा, वह अंसार पर बांट दिया जाएगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह बांस मुझे दो। आपने इन दोनों से वह बांस लिया, फिर चल पड़े और दरवाज़े पर पहुंच कर आपने वह बांस फेंक दिया और फ़रमाया, हरगिज़ नहीं (शामदेश की तरह मस्जिद की शानदार इमारत नहीं बनानी) बस घास-फूस और छोटी-छोटी लकड़ियां और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जैसा साइबान हो और (मौत का) मामला इससे भी ज़्यादा क़रीब है।

किसी ने पूछा, हज़रत मूसा अलैहि० का साइबान कैसा था? आपने

1. वफ़ाउल वफ़ा, भाग 1, पृ० 242,

फ़रमाया, जब वह खड़े होते तो उनका छत सर को लग जाता।[1]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने स्तून से लेकर मक़्सूरा (इमाम के लिए बनाए जाने वाले कमरे) तक मस्जिद बढ़ायी और फ़रमाया, अगर मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद न सुना होता कि हमें अपनी मस्जिद को बढ़ाना चाहिए तो मैं हरगिज़ न बढ़ाता।[2]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने उन्हें बताया कि मस्जिद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में कच्ची ईंट से बनी हुई थी, उसकी छत खजूर की टहनियों की थी और उसके स्तून खजूर के तनों के थे। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने मस्जिद में कोई इज़ाफ़ा न किया, अलबत्ता हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसमें इज़ाफ़ा किया और हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में जैसी कच्ची ईंट और खजूर की टहनियों से बनी हुई थी, वैसी ही बनाई और उसके स्तून लकड़ी के ही बनाए। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे बदल दिया और उसमें बहुत ज़्यादा इज़ाफ़ा किया और उसकी दीवारें नक़्क़ाशी किए हुए पत्थरों से और चूने से बनाईं और उसके स्तून नक़्क़ाशी किए हुए पत्थरों के और उसकी छत साखू की लकड़ी की बनाई।[3]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में आपकी मस्जिद में स्तून खजूर के तनों के थे और मस्जिद पर खजूर की टहनियों से साया किया हुआ था। फिर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में ये खजूर के तने और टहनियां पुरानी होकर टुकड़े-टुकड़े होने लगीं, तो इन्हें हटाकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने नए खजूर के तने और नई टहनियां लगा दीं।

1. वफ़ाउल वफ़ा, भाग 1, पृ० 241,
2. अहमद,
3. बुख़ारी व अबू दाऊद,

फिर ये स्तून हज़रत उस्मान की खिलाफ़त के ज़माने में पुराने हो गए तो उन्हें हटाकर हज़रत उस्मान रज़ि० ने उनकी जगह पक्की ईंटें लगा दीं जो अब तक लगी हुई हैं।[1]

मुस्लिम में यह रिवायत है कि हज़रत महमूद बिन लबीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मस्जिद बनाने का इरादा किया, तो लोगों ने उसे पसन्द न किया, क्योंकि वे चाहते थे कि मस्जिद को उसी हालत पर रहने दें, तो हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जो अल्लाह के लिए मस्जिद बनाएगा, अल्लाह उसके लिए उसी जैसा महल जन्नत में बनाएगा।

हज़रत मुत्तलिब बिन अब्दुल्लाह बिन हंतब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब सन् 24 हि० में हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० ख़लीफ़ा बने, तो लोगों ने उनसे मस्जिद बढ़ाने की बात की और यह शिकायत की कि जुमा के दिन जगह बहुत तंग हो जाती है, यहां तक कि उन्हें मस्जिद से बाहर मैदान में नमाज़ पढ़नी पड़ती है। हज़रत उस्मान रज़ि० ने इस बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के राय और मश्विरा देने वाले सहाबा रज़ि० से मश्विरा किया तो सबकी यही राय थी कि पुरानी मस्जिद को गिराकर इसमें बढ़ा दिया जाए।

चुनांचे हज़रत उस्मान रज़ि० ने लोगों को ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई, फिर मिंबर पर तशरीफ़ लाकर पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान फ़रमाई, फिर फ़रमाया, ऐ लोगो ! मैंने इस बात का इरादा कर लिया है कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल की मस्जिद को गिराकर उसमें इज़ाफ़ा कर दूं और मैं गवाही देता हूं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना कि जो अल्लाह के लिए मस्जिद बनाएगा, अल्लाह उसके लिए जन्नत में महल बनाएंगे और यह काम मुझसे पहले एक बड़ी शख़्सियत कर भी चुकी है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु

1. अबू दाऊद

ने मस्जिद को बढ़ाया भी था और उसे नए सिरे से बनाया भी था और मैं इस बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को राय व मश्विरा देने वाले सहाबा से मश्विरा कर भी चुका हूं। इन सबका इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि मस्जिद को गिराकर नए सिरे से बनाया जाए और उसमें बढ़ा भी दिया जाए, तो लोगों ने इस बात को ख़ूब पसन्द भी किया और उनके लिए दुआ भी की।

अगले दिन सुबह को हज़रत उस्मान रज़ि० ने काम करने वालों को बुलाया (और उन्हें काम में लगाया) और ख़ुद भी इस काम में लगे, हालांकि हज़रत उस्मान रज़ि० हमेशा रोज़ा रखा करते थे और रात भर नमाज़ पढ़ा करते थे और मस्जिद से बाहर नहीं जाया करते थे और आपने हुक्म दिया कि बत्ने नख़्ल में छना हुआ चुना तैयार किया जाए।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने रबीउल अव्वल सन् 29 हि० में मस्जिद की तामीर का काम शुरू किया जो मुहर्रम सन् 30 हि० में ख़त्म हुआ। यों दस महीने में काम पूरा हुआ।[1]

हज़रत जाबिर बिन उसामा जुहनी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सहाबा रज़ि० के साथ बाज़ार में थे। मेरी आपसे मुलाक़ात हुई। मैंने पूछा, हुज़ूर सल्ल० कहां जाने का इरादा फ़रमा रहे हैं? लोगों ने बताया कि हुज़ूर सल्ल० तुम्हारी क़ौम के लिए मस्जिद की जगह की निशानदेही करना चाहते हैं। चुनांचे मैं जब वहां पहुंचा तो हुज़ूर सल्ल० मस्जिद की जगह की निशानदेही कर चुके थे और आपने क़िब्ले की निशानी के लिए एक लकड़ी ज़मीन में गाड़ी हुई थी।[2]

हज़रत उस्मान बिन अता रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने बहुत-से शहर जीत लिए तो उन शहरों के गवर्नरों को ख़त लिखे। चुनांचे हज़रत अबू मूसा

---

1. वफ़ाउल वफ़ा, भाग 1, पृ० 355,
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 15, कंज़, भाग 4, पृ० 263,

अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु बसरा के गवर्नर थे। उन्हें ख़त में यह लिखा कि सारे शहर के लिए जुमा की नमाज़ के लिए एक जामा मस्जिद बनाएं और हर क़बीले के लिए अलग-अलग मस्जिद बनाएं। (हर क़बीले वाले पांचों नमाज़ें अपनी मस्जिद में पढ़ा करें, लेकिन) जुमा के दिन सब जामा मस्जिद में आकर वहां जुमा पढ़ा करें।

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु कूफ़ा के गवर्नर थे, उन्हें भी हज़रत उमर रज़ि० ने यही लिखा। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु मिस्र के गवर्नर थे उन्हें भी यही लिखा और लश्करों के अमीरों को यह लिखा कि देहात में रिहाइश न रखें, बल्कि शहरों मे रहें और हर शहर में एक ही मस्जिद बनाएं और जैसे कूफ़ा, बसरा और मिस्र वालों ने मस्जिदें बनाई हैं, उसी तरह हर क़बीला वाले अपनी मस्जिद न बनाएं। चुनांचे लोग हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस फ़रमान के पाबन्द थे।[1]

मस्जिदों को पाक-साफ़ रखना

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी रज़ि० से यह नक़ल करते हैं कि हुज़ूर सल्ल० हमें अपने मुहल्लों में मस्जिदें बनाने और उन्हें अच्छी तरह बनाने और उन्हें पाक रखने का हुक्म देते थे।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस बात का हुक्म दिया कि मुहल्लों में मस्जिदें बनाई जाएं और उनकी सफ़ाई की जाए और उन्हें ख़ुश्बूदार बनाया जाए।[3]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक औरत मस्जिद में से कूड़ा वग़ैरह उठाया करती थी, फिर उसका इन्तिक़ाल हो गया और उसके दफ़न होने की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को

1. कंज़, भाग 4, पृ० 259
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 11
3. मिश्कात, पृ० 61

ख़बर न हुई। (जब आपको पता चला, तो) आपने फ़रमाया, जब तुममें से कोई मर जाया करे, तो तुम मुझे इसकी ख़बर किया करो और आपने उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ी और फ़रमाया, मैंने इसे जन्नत में देखा कि वह मस्जिद में से कूड़ा वग़ैरह उठा रही है।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हर जुमा के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद को ख़ुश्बू की धूनी दिया करते थे।[2]

मस्जिदों की तरफ़ पैदल चलना

हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक साहब मस्जिद नबवी से इतना दूर रहते थे कि मेरे इल्म में और कोई उनसे ज़्यादा दूर नहीं रहता था, लेकिन वह हर नमाज़ मस्जिदे नबवी में पढ़ते थे, उनकी कोई नमाज़ नहीं जाती थी। उनसे किसी ने कहा, क्या ही अच्छा हो अगर आप कोई गधा ख़रीद लें और अंधेरे में और सख़्त गर्मी में उस पर सवार होकर (मस्जिदे नबवी को) आया करें।

उन्होंने कहा, मुझे इससे बिल्कुल ख़ुशी नहीं होगी कि मेरा घर बिल्कुल मस्जिद के पहलू में हो। मैं तो चाहता हूं कि मेरा मस्जिद की तरफ़ पैदल चलकर जाना और अपने घर वापस आना (मेरे आमालनामे में) लिखा जाए। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह ने तुम्हारे आने-जाने का सारा सवाब लिख दिया है।[3]

हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक अंसारी का घर मदीने में (मस्जिदे नबवी से) सबसे ज़्यादा दूर था, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ की कोई नमाज़ उनसे फ़ौत न होती थी। मुझे उन पर बड़ा तरस आया, इसलिए मैंने उनसे कहा, ऐ फ़्लाने! अगर तुम गधा ख़रीद लो तो सख़्त गर्मी से भी और ज़मीन के

---

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 10
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 11
3. अहमद, मुस्लिम, दारमी,

कीड़ों-मकोड़ों से भी हिफ़ाज़त हो जाएगी।

उस अंसारी ने कहा, अरे मियां! ज़रा ग़ौर से सुनो, अल्लाह की क़सम! मुझे तो यह भी पसन्द नहीं कि मेरा घर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर के बिल्कुल साथ हो। मुझे उनकी यह बात बड़ी गरां लगी और मैंने जाकर हुज़ूर सल्ल० को बता दी। हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें बुलाकर पूछा तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० के सामने भी वही बात कह दी और यह भी बताया कि मुझे दूर से मस्जिद पैदल आने-जाने में सवाब की उम्मीद है। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, तुम जिस सवाब की उम्मीद लगा रहे हो, वह तुम्हें ज़रूर मिलेगा।

हुमैदी की रिवायत में यह भी है कि हुज़ूर सल्ल० ने यह भी फ़रमाया कि यह जो क़दम भी मस्जिद की तरफ़ उठाते हैं, उसके बदले में उन्हें एक दर्जा मिलता है।[1]

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ पैदल चल रहा था। हम नमाज़ के लिए (मस्जिद) जा रहे थे। हुज़ूर सल्ल० छोटे-छोटे क़दम रख रहे थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम जानते हो कि मैं क्यों छोटे-छोटे क़दम रख रहा हूं? मैंने कहा, अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ज़्यादा जानते हैं।

आपने फ़रमाया, आदमी जब तक नमाज़ की कोशिश में लगा रहता है, वह नमाज़ ही में समझा जाता है।[2]

दूसरी रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूं, ताकि नमाज़ की कोशिश में मेरे क़दम ज़्यादा हो जाएं।

हज़रत साबित रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार मैं हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ (बसरा के क़रीब) ज़ाविया

---

1. मुस्लिम, इब्ने माजा, अबू दाऊद,
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 32,

नामी बस्ती में चला जा रहा था कि इतने में उन्होंने अज़ान की आवाज़ सुनी, तो आवाज़ सुनते ही छोटे-छोटे क़दम रखने शुरू कर दिए, यहां तक कि मैं (उनके साथ) मस्जिद में दाख़िल हो गया, फिर फ़रमाया, ऐ साबित! क्या तुम जानते हो कि मैं इस तरह क्यों चला? मैंने कहा, अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं। हज़रत अनस रज़ि० ने फ़रमाया, ताकि नमाज़ की खोज में मेरे क़दम ज़्यादा हो जाएं।[1]

क़बीला बनू तै के एक साहब अपने वालिद से नक़ल करते हैं कि हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद जाने के लिए घर से निकले और तेज़-तेज़ चलने लगे तो किसी ने उनसे कहा, आप तो उस तरह चलने से मना करते हैं और ख़ुद इस तरह चल रहे हैं? उन्होंने फ़रमाया, मैं चाहता हूं कि मुझे नमाज़ का इब्तिदाई किनारा यानी तक्बीरे ऊला मिल जावे।[2]

हज़रत सलमा बिन कुहैल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियलल्लाहु अन्हु तेज़ी से चल रहे थे। किसी ने उनसे इसकी वजह पूछी, तो फ़रमाया, जिन चीज़ों की तरफ़ तुम तेज़ी से चलते हो, क्या उनमें से नमाज़ इसकी सबसे ज़्यादा हक़दार नहीं है?[3]

हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे कि इतने में हुज़ूर सल्ल० ने अपने पीछे कुछ लोगों का शोर सुना। जब आप नमाज़ पूरी कर चुके तो फ़रमाया, तुम्हें क्या हुआ? उन लोगों ने कहा, हम लोग नमाज़ के लिए तेज़ी से चलकर आ रहे थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐसा न करो, बल्कि आराम से चलो और जितनी नमाज़ मिल जाए उसे पढ़ लो और जितनी रह जाए, उसे क़ज़ा कर लो।[4]

---

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 32
2. तबरानी,
3. हैसमी, भाग 2, पृ० 32,
4. हैसमी, भाग 2, पृ० 31,

मस्जिदें क्यों बनाई गईं और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम उनमें कौन-से आमाल करते थे

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मस्जिद में बैठे हुए थे कि इतने में एक देहाती आया और खड़े होकर मस्जिद में पेशाब करने लगा, तो हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० ने कहा, अरे, अरे, ठहरो, ठहरो। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उसे पेशाब से न रोको, उसे छोड़ दो। चुनांचे सहाबा रज़ि० ने उसे छोड़ दिया और उसने पेशाब पूरा कर लिया।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने उसे बुलाकर फ़रमाया, इन मस्जिदों में पेशाब या गन्दगी वाला कोई काम करना किसी तरह ठीक नहीं है। ये मस्जिदें तो अल्लाह के ज़िक्र, नमाज़ और क़ुरआन पढ़ने के लिए बनी हैं या जैसे हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया। फिर हुज़ूर सल्ल० ने लोगों में से एक आदमी को हुक्म दिया। उसने पानी का डोल लाकर उस पेशाब पर बहा दिया।[1]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु एक बार घर से बाहर आए और मस्जिद में गए तो वहां एक हलक़ा लगा हुआ था। हज़रत मुआविया रज़ि० ने उनसे पूछा, आप लोग यहां क्यों बैठे हुए हैं? उन लोगों ने कहा, हम बैठे हुए अल्लाह का ज़िक्र कर रहे हैं। हज़रत मुआविया रज़ि० ने कहा, क्या अल्लाह की क़सम! आप लोग सिर्फ़ इस वजह से बैठे हैं? उन लोगों ने कहा, वाक़ई हम सिर्फ़ इसी वजह से बैठे हैं?

हज़रत मुआविया रज़ि० ने कहा, मैंने किसी बदगुमानी की वजह से तुम लोगों को क़सम नहीं दी, (बल्कि इस वजह से क़सम दी, जो आगे हदीस में आ रही है) और कोई सहाबी ऐसा नहीं है जिसका हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मेरे जैसा ख़ास ताल्लुक़ हो और वह हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ से हदीसें मुझसे कम बयान करता हो। (यानी

1. मुस्लिम, भाग 1, पृ० 138, तहावी, भाग 1, पृ० 8

मेरा हुज़ूर सल्ल० से ताल्लुक़ भी ख़ास था, लेकिन मेरी आदत हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ से हदीसें बहुत कम बयान करने की है, फिर भी इस मौक़े की एक हदीस तुम लोगों को सुना देता हूं।)

एक बार हुज़ूर सल्ल० मस्जिद में बाहर तशरीफ़ लाए और मस्जिद में सहाबा किराम हलक़ा लगा कर बैठे हुए थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा, आप लोग क्यों बैठे हुए हैं? उन्होंने अर्ज़ किया कि हम बैठकर अल्लाह का ज़िक्र कर रहे हैं और इस बात पर अल्लाह की तारीफ़ कर रहे हैं कि उसने हमें इस्लाम की हिदायत दी और इस्लाम की दौलत से हमें नवाज़ा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या अल्लाह की क़सम, सिर्फ़ इसी वजह से बैठे हो? उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह की क़सम! हम सिर्फ़ इसी वजह से बैठे हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैंने किसी बदगुमानी की वजह से तुम्हें क़सम नहीं दी, बल्कि अभी जिब्रील मेरे पास आए थे और यह ख़बर सुना गए कि अल्लाह तुम लोगों की वजह से फ़रिश्तों पर फ़ख़्र फ़रमा रहे हैं।[1]

हज़रत अबू वाक़िद हारिस बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में तशरीफ़ रखते थे और लोग भी आपके साथ थे कि इतने में तीन आदमी आए, उनमें से दो तो आपकी तरफ़ चले और एक चला गया। वे दोनों हुज़ूर सल्ल० के पास जाकर खड़े हो गए। उनमें से एक को हलक़े में ख़ाली जगह नज़र आई। वह जाकर उस जगह बैठ गया और दूसरा लोगों के पीछे बैठ गया और तीसरा पीठ फेरकर चला गया।

जब आप हलक़े से फ़ारिग़ हुए, तो आपने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें इन तीन आदमियों के बारे में न बताऊं? एक ने तो अल्लाह के पास अपनी जगह बनाई, तो अल्लाह ने उसे (अपनी रहमत में) जगह दे दी और दूसरा शरमा गया तो अल्लाह ने भी उसके साथ हया का मामला किया। (अपनी रहमत से महरूम न फ़रमाया) और तीसरे ने (अल्लाह

1. रियाज़ुस्सालिहीन, पृ० 516, जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 249,

से) मुंह फेरा, तो अल्लाह ने भी उससे मुंह फेर लिया।[1]

हज़रत अबुल क़ुमरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हम लोग मस्जिद में अलग-अलग हलक़ों में बैठे हुए आपस में हदीसों का मुज़ाक़रा कर रहे थे कि इतने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने एक हुजरे से बाहर मस्जिद में तशरीफ़ लाए और तमाम हलक़ों पर नज़र डाली और फिर क़ुरआन वालों के साथ बैठ गए, (जो क़ुरआन सीख-सिखा रहे थे) और फ़रमाया, मुझे इस मज्लिस (में बैठने) का हुक्म दिया गया है।[2]

हज़रत कुलैब बिन शिहाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने मस्जिद में बहुत ज़्यादा शोर की आवाज़ें सुनीं। लोग क़ुरआन पढ़-पढ़ा रहे थे, तो हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, उन लोगों को ख़ुशख़बरी हो, यही लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब थे।[3]

हज़रत कुलैब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कूफ़ा की मस्जिद में थे। उन्होंने वहां बहुत ज़्यादा शोर की आवाज़ें सुनीं, तो उन्होंने पूछा, ये लोग कौन हैं? तो साथियों ने बताया कि ये लोग क़ुरआन पढ़ रहे हैं और एक दूसरे से क़ुरआन सीख रहे हैं। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, ग़ौर से सुनो! इन्हीं लोगों से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सबसे ज़्यादा मुहब्बत थी।[4]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु एक बार मदीने के बाज़ार से गुज़रे तो खड़े होकर ऊंची आवाज़ से कहा, ऐ बाज़ार वालो! तुम लोग कितने ज़्यादा आजिज़ हो? बाज़ार वालों ने कहा, ऐ अबू हुरैरह! क्या बात है? उन्होंने कहा, बात यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

---

1. रियाज़ुस्सालिहीन, पृ० 515, जमउल फ़वाइद, भाग 1, पृ० 21,
2. इसाबा, भाग 4, पृ० 160, इस्तीआब, भाग 4, पृ० 104, कंज़, भाग 1, पृ० 219
3. मज्मा, भाग 7, पृ० 166, कंज़, भाग 1, पृ० 218
4. मज्मा, भाग 7, पृ० 162, हैसमी, भाग 7, पृ० 166

सल्लम की मीरास बंट रही है और तुम लोग यहां बैठे हो तो क्या तुम लोग जाकर उसमें से अपना हिस्सा नहीं ले लेते? लोगों ने पूछा, कहां बंट रही है? उन्होंने फ़रमाया, मस्जिद में।

चुनांचे वे बाज़ार वाले सब तेज़ी से मस्जिद गए और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० वहां ठहरे रहे। थोड़ी देर में लोग वापस आ गए तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने उनसे पूछा, तुम्हें क्या हुआ? (कि जल्दी से वापस आ गए।) उन्होंने कहा, ऐ अबू हुरैरह! हम मस्जिद गए थे। हमने अन्दर जाकर देखा तो हमें वहां कोई चीज़ बंटती नज़र न आई।

अबू हुरैरह रज़ि० ने उनसे पूछा, क्या तुमने मस्जिद में कोई आदमी नहीं देखा? उन्होंने कहा, हमने बहुत-से आदमी देखे, कुछ लोग नमाज़ पढ़ रहे थे और कुछ लोग क़ुरआन पढ़ रहे थे और कुछ लोग हराम व हलाल का मुज़ाकरा कर रहे थे, तो उनसे हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हारा भला हो, मस्जिद के यही आमाल तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मीरास हैं।[1]

हज़रत इब्ने मुआविया किन्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि शाम देश में मैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उन्होंने मुझसे लोगों के बारे में पूछा कि शायद ऐसे होता होगा कि आदमी बिदके हुए ऊंट की तरह मस्जिद में आता होगा। अगर उसे अपनी क़ौम की मज्लिस नज़र आती होगी और जान-पहचान वाले लोग नज़र आते होंगे तो उनके पास बैठ जाता होगा, वरना नहीं।

मैंने कहा, नहीं, ऐसे नहीं है, बल्कि मुख़्तलिफ़ मज्लिसें मस्जिद में होती हैं (और हर मज्लिस में अलग-अलग क़ौमों के लोग होते हैं) और लोग उनमें बैठकर ख़ैर के आमाल सीखते हैं और उनके बारे में मुज़ाकरा करते हैं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, जब तुम ऐसे रहोगे, ख़ैर पर रहोगे।[2]

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 66,
2. कंज़, भाग 5, पृ० 229

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन हम लोग मस्जिद में बैठे हुए थे कि इतने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास बाहर तश्रीफ़ लाए और फ़रमाया, आओ यहूदियों के पास चलें। चुनांचे (आप सहाबा रज़ि० को लेकर उनके पास गए और) उनसे फ़रमाया, इस्लाम ले आओ, सलामती पा लोगे। इन यहूदियों ने कहा, आपने (अल्लाह का पैग़ाम) पहुंचा दिया। आपने फ़रमाया, मैं भी यही चाहता हूं, लेकिन फिर भी तुम लोग इस्लाम ले आओ, सलामती में रहोगे।

उन्होंने फिर कहा, आपने पैग़ाम पहुंचा दिया। आपने फ़रमाया, मैं भी यही चाहता हूं, लेकिन फिर भी तुम लोग इस्लाम ले आओ, सलामती में रहोगे। फिर आपने फ़रमाया, अच्छी तरह समझ लो ज़मीन अल्लाह और उसके रसूल की है। अब मैं तुम्हें उस धरती से देश निकाला देना चाहता हूं, इसलिए तुममें से जिसकी जो चीज़ बिक सकती है, वह उसे बेच दे, वरना अच्छी तरह समझ लो, यह ज़मीन अल्लाह और उसके रसूल की है।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि ख़ंदक़ की लड़ाई के दिन हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ज़ख़्मी हुए। उनको क़ुरैश के हिब्बान बिन अरिक़ा नामी काफ़िर ने तीर मारा था, जो उनके बाज़ू की अक्हल नामी रग में लगा था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके लिए मस्जिद में ख़ेमा लगवाया था, ताकि वह हुज़ूर सल्ल० के क़रीब रहें और उनकी बीमारपुर्सी के लिए बार-बार जाने में आसानी रहे।

जब हुज़ूर सल्ल० ख़ंदक़ की लड़ाई से वापस आए तो आपने हथियार रख दिए और ग़ुस्ल फ़रमाया, फिर हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम अपने सर से धूल झाड़ते हुए आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, आपने तो हथियार रख दिए, लेकिन अल्लाह की क़सम ! मैंने तो अभी नहीं रखे, आप उनकी तरफ़ तशरीफ़ ले चलें। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, कहां ? तो जवाब में हज़रत जिब्रील अलैहि० ने बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ इशारा किया।

---

1. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 44,

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० उनके पास तशरीफ़ ले गए, तो वह आपके फ़ैसले पर रज़ामंद हो गए। हुज़ूर सल्ल० ने उनका फ़ैसला हज़रत साद रज़ि० के ज़िम्मे लगा दिया, तो हज़रत साद रज़ि० ने कहा, इसके बारे में मेरा फ़ैसला यह है कि इनमें से जो लड़ने के क़ाबिल हैं, उनको क़त्ल कर दिया जाए और उनकी औरतों और बच्चों को क़ैदी बना लिया जाए और उनके सारे माल को (मुसलमानों में ग़नीमत के माल के तौर पर) बांट दिया जाए।

हज़रत हिशाम रिवायत करने वाले कहते हैं कि मेरे वालिद ने मुझे हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की तरफ़ से नक़ल करते हुए यह बताया कि हज़रत साद रज़ि० ने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! तुझे मालूम है कि मुझे इस क़ौम से जिहाद करने से किसी और से जिहाद करना ज़्यादा पसन्दीदा नहीं है, जिस क़ौम ने तेरे रसूल को झुठलाया और उन्हें (उनके वतन मक्का से) निकाला। (इससे मुराद क़बीला क़ुरैश है।) ऐ अल्लाह ! अब मेरा ख़्याल तो यह है कि तूने हमारे और इस क़ौम के दर्मियान लड़ाई ख़त्म कर दी है, यानी इस ख़ंदक़ की लड़ाई के बाद अब इनसे लड़ाई नहीं होगी, लेकिन अगर क़ुरैश से कोई लड़ाई अभी होने वाली है, तो तू तो फिर मुझे उनके लिए ज़िंदा रख, ताकि तेरी रिज़ा की ख़ातिर मैं उनसे लड़ूं और अगर तूने उनसे लड़ाई ख़त्म कर दी है तो मेरी इस रग के ज़ख़्म को जारी कर और उसी से मुझे मौत नसीब फ़रमा।

चुनांचे उनके सीने के ज़ख़्म से फिर ख़ून बहने लगा और मस्जिद में बनू ग़िफ़ार का भी एक ख़ेमा लगा हुआ था। यह ख़ून बहकर उनके ख़ेमा तक पहुंच गया, जिससे वे लोग घबरा गए तो उस ख़ेमे वालों ने कहा, ऐ ख़ेमे वालो ! यह ख़ून क्या है जो तुम्हारी तरफ़ से हमारी तरफ़ आ रहा है? जाकर देखा तो हज़रत साद के ज़ख़्म में से ख़ून बह रहा था, जिससे उनका इंतिक़ाल हो गया।[1]

हज़रत यज़ीद बिन अब्दुल्लाह बिन क़ुसैत रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते

1. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 52

हैं कि सुफ़्फ़ा (चबूतरे) वाले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वह सहाबी थे जिनका (मदीना में) कोई घर नहीं था, इसलिए वे हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में मस्जिद में सोया करते थे और दिन भर उसी में रहते थे। उनका मस्जिद के अलावा और कोई ठिकाना न था। रात को जब खाने का वक़्त आता तो हुज़ूर सल्ल० उन्हें बुलाकर अपने सहाबा रज़ि० में बांट देते। फिर भी उनमें से कुछ लोग हुज़ूर सल्ल० के साथ रात का खाना खाते। यह सिलसिला यों ही चलता रहा, यहां तक कि अल्लाह ने वुसअत अता फ़रमा दी।[1]

हज़रत अस्मा बिन्त यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत किया करते थे। जब वह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत से फ़ारिग़ होते तो जाकर मस्जिद में ठहर जाते और यह मस्जिद ही उनका घर था। उसी में लेटा करते थे।

एक रात हुज़ूर सल्ल० मस्जिद में तशरीफ़ ले गए तो हज़रत अबूज़र रज़ि० को मस्जिद में ज़मीन पर लेटे हुए पाया। आपने उन्हें अपने मुबारक पांव से ज़रा हिलाया। वह उठकर सीधे बैठ गए तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें (मस्जिद में) सोते हुए नहीं देख रहा हूं? हज़रत अबूज़र रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! फिर मैं कहां सोऊं? क्या मेरा मस्जिद के अलावा कोई घर है? आगे हदीस ख़िलाफ़त के मामले में ज़िक्र की।[2]

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत किया करते थे और जब हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत से फ़ारिग़ हो जाते तो आकर मस्जिद में लेट जाते।[3]

और अल्लाह के रास्ते के मेहमानों की मेहमानी के बाब में मस्जिद

1. तबक़ात, भाग 2, पृ० 20
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 22
3. तबरानी, हैसमी

में सोने के बारे में हज़रत अबूज़र रज़ि० और दूसरे सहाबा के क़िस्से गुज़र चुके हैं।

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से मस्जिद में दोपहर को आराम करने के बारे में पूछा गया, तो फ़रमाया, मैंने हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़िलाफ़त के ज़माने में मस्जिद में दोपहर में आराम करते हुए देखा।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हम कुछ नवजवान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में मस्जिद में रात को सोया करते थे।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हम जुमा की नमाज़ पढ़कर वापस आते और फिर दोपहर को आराम किया करते।[3]

हज़रत ज़ोहरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जब कोई आदमी मस्जिद में ज़्यादा देर तक बैठे तो उसके लिए कमर सीधी करने के लिए लेटने में कोई हरज नहीं है, क्योंकि इस तरह लेटने से उसका दिल नहीं उकताएगा।[4]

हज़रत ख़लीद अबू इस्हाक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से मस्जिद में सोने के बारे में पूछा, तो उन्होंने फ़रमाया, अगर तुम नमाज़ और तवाफ़ की वजह से सोना चाहते हो, तो फिर कोई हरज नहीं।[5]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब किसी रात को तेज़ हवा और आंधी चला करती, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घबरा कर एकदम मस्जिद तशरीफ़ ले जाते और आंधी ख़त्म होने

1. कंज़, भाग 4, पृ० 261,
2. इब्ने अबी शैबा,
3. कंज़, भाग 4, पृ० 261
4. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 294,
5. कंज़, भाग 4, पृ० 261

तक वहां ही रहा करते और जब आसमान में सूरज गरहन या चांद गरहन होता तो आप घबरा कर नमाज़ पढ़ने की जगह या ईदगाह तशरीफ़ ले जाते।[1]

हज़रत अता रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि याला बिन उमैया रज़ियल्लाहु अन्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत हासिल थी, वह जब थोड़ी देर के लिए भी मस्जिद में बैठा करते, तो एतिकाफ़ की नीयत कर लिया करते।[2]

हज़रत अतीया बिन सुफ़ियान बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़बीला सक़ीफ़ का वफ़्द रमज़ान में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया तो हुज़ूर सल्ल० ने उनके लिए मस्जिद में ख़ेमा लगवाया, फिर जब वह मुसलमान हो गए तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० के साथ रोज़े रखने शुरू कर दिए।[3]

हज़रत उस्मान बिन अबिल आस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़बीला सक़ीफ़ का वफ़्द हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया तो हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें मस्जिद में ठहराया, ताकि उससे उनके दिल ज़्यादा नर्म हों, उससे आगे और हदीस ज़िक्र की जैसे अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ दावत के बाब में क़बीला सक़ीफ़ के इस्लाम लाने के क़िस्से में गुज़र चुका है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रजियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक दिन हमने मस्जिद में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ भुना हुआ गोश्त खाया, फिर नमाज़ खड़ी हो गई तो हमने सिर्फ़ कंकड़ियों से हाथ पोंछे (और कुछ नहीं किया और नमाज़ में शामिल हो गए।)[4]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मस्जिद फ़ज़ीख

1. कंज़, भाग 4, पृ० 289
2. हुलीया, भाग 3, पृ० 312,
3. हैसमी, भाग 2, पृ० 28
4. हैसमी, भाग 2, पृ० 21

में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में फ़ज़ीख लाया गया, जिसे आपने पिया। इसी वजह से उस मस्जिद का नाम फ़ज़ीख पड़ गया। फ़ज़ीख अधपकी खजूर के शरबत को कहा जाता है।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मस्जिद फ़ज़ीख में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अधपके खजूर के शरबत फ़ज़ीख के मटके में लाए गए। आपने उस शरबत को पिया और इसी वजह से उसका नाम फ़ज़ीख रखा गया।[2] और इससे पहले मस्जिद में अलग-अलग कामों के क़िस्से गुज़र चुके हैं।

माल ख़र्च करने के बाब में खाना और माल बांटने के क़िस्से और बैअत के बाब में मस्जिद में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत का क़िस्सा और सहाबा के आपसी इत्तिहाद और इत्तिफ़ाक़े राय के बाब में मस्जिद में हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत का क़िस्सा और अल्लाह की तरफ़ दावत देने के बाब में हज़रत ज़माम रज़ियल्लाहु अन्हु को मस्जिद में दावत देने और उनके इस्लाम लाने का क़िस्सा और मस्जिद में हज़रत काब बिन ज़ुहैर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने और मशहूर क़सीदा पढ़ने का क़िस्सा और सहाबा रज़ि० के आपसी इत्तिहाद और इत्तिफ़ाक़े राय के बाब में मस्जिद में अह्ले शूरा के मश्विरे के लिए बैठने का क़िस्सा और माल ख़र्च करने के बाब में सुबह के वक़्त मस्जिद में सहाबा रज़ि० का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बैठने का क़िस्सा और दुनिया की वुस्अत और कसरत से डरने के बाब में मस्जिद में नमाज़ों के बाद लोगों की ज़रूरत के लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बैठने का क़िस्सा और अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की मुहब्बत को मज़बूती से पकड़ लेने के बाब से मस्जिद में हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे सहाबा के रोने का क़िस्सा।

---

1. अहमद,
2. अबी याला, हैसमी

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किन बातों को मस्जिद में अच्छा नहीं समझते थे

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु के एक ग़ुलाम फ़रमाते हैं कि एक बार मैं (अपने आक़ा) हज़रत अबू सईद रज़ि० के साथ था, वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जा रहे थे, इतने में हम लोग मस्जिद में दाख़िल हो गए तो हमने देखा कि मस्जिद के बीच में एक आदमी पीठ और टांगों को कपड़े से बांधकर बैठा हुआ है और दोनों हाथों की उंगलियां एक दूसरे में डाल रखी हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने उसे इशारे से समझाने की कोशिश की, लेकिन वह न समझ सका, तो हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबू सईद रज़ि० की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया कि जब तुममें से कोई मस्जिद में हो, तो अपनी उंगलियां हरगिज़ एक दूसरे में न डाले, क्योंकि यह शैतानी हरकत है और जब तुममें से कोई आदमी मस्जिद में होता है तो वह मस्जिद से बाहर जाने तक नमाज़ ही में समझा जाता है।[1]

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ैबर जीत चुके तो लोग लहसुन पर टूट पड़े और उसे ख़ूब खाने लगे। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो यह बदबूदार सब्ज़ी खाए, वह हरगिज़ हमारी मस्जिद के क़रीब न आए।[2]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हुमा जुमा का ख़ुत्बा दे रहे थे। उन्होंने ख़ुत्बे में फ़रमाया, फिर ऐ लोगो! तुम ये दो बदबूदार चीज़ें प्याज़ और लहसुन खाते हो, हालांकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सलल्म को देखा है कि जब हुज़ूर सल्ल० को मस्जिद में किसी से इन दोनों की बू महसूस होती, तो आपके फ़रमाने पर उसे बक़ीअ की तरफ़ निकाल दिया जाता, इसलिए जो इन्हें खाना चाहता है, वह इन्हें पका कर

---

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 25,
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 17,

इनकी बू ख़त्म कर ले।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बयान फ़रमा रहे थे कि बयान के दौरान आपने मस्जिद के सामने वाली दीवार पर खंकार पड़ा हुआ देखा तो आपको लोगों पर बड़ा ग़ुस्सा आया। फिर आपने उसे खुरचा और ज़ाफ़रान मंगाकर उस जगह मल दिया और फ़रमाया, जब तुममें से कोई आदमी नमाज़ पढ़ता है तो अल्लाह उसके चेहरे के सामने होते हैं। चुनांचे उसको अपने सामने थूकना नहीं चाहिए।[2]

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है कि फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ग़ुस्से से लोगों की तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़रमाया, क्या तुममें से कोई यह बात पसन्द करता है कि कोई आदमी उसके सामने आकर उसके चेहरे पर थूक दे? तुममें से कोई आदमी जब नमाज़ में खड़ा होता है तो वह अपने रब के सामने होता है और फ़रिश्ता उसके दाईं तरफ़ होता है, इसलिए उसे न अपने सामने थूकना चाहिए और न दाईं तरफ़।[3]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जैसे गोश्त का टुकड़ा या खाल आग में सिकुड़ जाती है, ऐसे ही खंकार मस्जिद में फेंकने से मस्जिद सिकुड़ जाती है। (यानी यह काम मस्जिद को बहुत बुरा लगता है, यह मस्जिद के अदब के ख़िलाफ़ है।)[4]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत बन्ना जोहनी रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें बताया कि मस्जिद में कुछ लोगों पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का गुज़र हुआ। आपने देखा कि वे नंगी तलवार एक दूसरे को दे रहे हैं। तो आपने फ़रमाया, जो ऐसा करे, उस

---

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 188,
2. बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद
3. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 163,
4. कंज़, भाग 4, पृ० 260

पर अल्लाह लानत फ़रमाए, क्या मैंने तुम्हें इससे रोका नहीं? जब तुममें से किसी ने नंगी तलवार पकड़ी हुई हो और वह अपने साथी को देना चाहे तो उसे चाहिए कि वह तलवार को म्यान में डालकर उसे दे।[1]

हज़रत सुलैमान बिन मूसा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, किसी आदमी ने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मस्जिद में तलवार नंगी करने के बारे में पूछा, तो उन्होंने फ़रमाया, हम इसे अच्छा नहीं समझते थे। एक आदमी मस्जिद में तीर सदक़ा किया करता था, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे हुक्म दिया कि वह जब भी मस्जिद में तीर लेकर गुज़रे तो वह तीरों के फलों को अच्छी तरह से पकड़ कर गुज़रे।[2]

हज़रत मुहम्मद बिन उबैदुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हम लोग मस्जिद में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु के पास थे तो एक आदमी ने अपना तीर पलटा, तो हज़रत अबू सईद रज़ि० ने कहा, क्या उसे मालूम नहीं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मस्जिद में हथियार उलटने-पलटने से मना फ़रमाया है।[3]

हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने मस्जिद में गुमशुदा जानवर का एलान किया और यह कहा, कौन है वह (जिसने लाल ऊंट देखा हो? और वह उसके मालिक को) लाल ऊंट देने के लिए बुला रहा हो? इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हें तुम्हारा ऊंट न मिले। मस्जिदें तो जिन कामों के लिए बनाई गई हैं, बस उन्हीं के लिए इस्तेमाल होनी चाहिए (और गुमशुदा चीज़ का एलान इन कामों में से नहीं है।)[4]

हज़रत इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि या कोई और साहब बयान करते हैं कि हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मस्जिद में एक

1. कंज़, भाग 4, पृ० 262,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 262,
3. अवसत, भाग 2, पृ० 26,
4. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 167

आदमी को गुमशुदा चीज़ का एलान करते हुए सुना तो हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने उसे डांट कर ख़ामोश कर दिया और फ़रमाया, हमको इससे रोका गया है।[1]

हज़रत इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक आदमी को मस्जिद में अपनी गुमशुदा चीज़ का एलान करते हुए सुना तो हज़रत उबई रज़ि० उस पर नाराज़ हुए, तो उस आदमी ने कहा, ऐ अबुल मुंज़िर! आप तो ऐसी सख़्त बात नहीं किया करते थे, तो फ़रमाया (मस्जिद में गुमशुदा चीज़ का एलान करने वाले पर) ऐसे ही (गुस्सा) करने का हमें हुक्म दिया गया है।[2]

हज़रत साइब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार मैं मस्जिद में सोया हुआ था। किसी ने मुझे कंकरी मारी, (जिससे मेरी आंख खुल गई) तो मैंने देखा कि वह हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। उन्होंने फ़रमाया, जाओ और इन दोनों को मेरे पास ले आओ। चुनांचे मैं इन दोनों को हज़रत उमर रज़ि० के पास ले आया। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, तुम दोनों कौन हो? उन्होंने कहा, हम तायफ़ के हैं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अगर तुम दोनों उस शहर के होते, तो मैं तुमको दर्दनाक सज़ा देता। तुम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में आवाज़ बुलन्द कर रहे हो?[3]

हज़रत इब्राहीम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक आदमी की (ऊंची) आवाज़ मस्जिद में सुनी, तो फ़रमाया, क्या तुम जानते हो कि तुम कहां हो? क्या तुम जानते हो कि तुम कहां हो? और आवाज़ ऊंची करने पर हज़रत उमर रज़ि० ने यों नागवारी ज़ाहिर फ़रमाई।[4]

---

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 167
2. कंज़, भाग 4, पृ० 260
3. बुख़ारी व बैहक़ी
4. कंज़, भाग 4, पृ० 259

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जब भी मस्जिद तशरीफ़ ले जाते तो ऊंची आवाज़ से यह एलान फ़रमाते कि मस्जिद में शोर करने से बचो।

दूसरी रिवायत में यह है कि हज़रत उमर रज़ि० ऊंची आवाज़ में फ़रमाते, मस्जिद में बेकार बातों से बचो।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मस्जिद में शोर करने से मना फ़रमाया और फ़रमाया, हमारी इस मस्जिद में आवाज़ बुलन्द न की जाए।[2]

हज़रत सालिम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मस्जिद के साथ एक चबूतरा बनाया, जिसका नाम बुतैहा रखा और फ़रमाते थे कि जो आदमी शोर मचाना चाहे या शेर पढ़ना चाहे या आवाज़ बुलन्द करना चाहे, उसे चाहिए कि वह (मस्जिद से) बाहर उस चबूतरे पर चला जाए।[3]

हज़रत तारिक़ बिन शिहाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि किसी जुर्म में पकड़ कर एक आदमी को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास लाया गया, तो उन्होंने फ़रमाया, तुम दोनों इसे मस्जिद से बाहर ले जाओ और वहां इसे मारो।[4]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़ज्र की अज़ान और इक़ामत के दर्मियानी वक़्त में कुछ लोगों को मस्जिद में क़िब्ले वाली दीवार के साथ कमर लगाकर बैठे हुए देखा तो फ़रमाया, तुम लोग फ़रिश्तों और उनकी नमाज़ के दर्मियान रोक न बनो।[5]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर अलहानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते

---

1. अब्दुर्रज़्ज़ाक़, इब्ने अबी शैबा, बैहक़ी,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 259
3. कंज़, भाग 4, पृ० 259
4. कंज़, भाग 4, पृ० 260
5. हैसमी, भाग 2, पृ० 23,

हैं कि हज़रत हाबिस बिन साद ताई रज़ियल्लाहु अन्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत का शरफ़ हासिल था। एक बार वह सेहरी के वक़्त मस्जिद में गए, तो उन्होंने देखा कि कुछ लोग मस्जिद के अगले हिस्से में नमाज़ पढ़ रहे हैं, तो फ़रमाया, काबा के रब की क़सम! ये लोग तो रियाकार हैं। इन्हें डराओ, जो इन्हें डराएगा, वह अल्लाह और रसूल की इताअत करने वाला गिना जाएगा। चुनांचे कुछ लोग उनके पास गए और उन्हें बाहर निकाल दिया, तो हज़रत हाबिस रज़ि० ने फ़रमाया कि फ़रिश्ते सेहरी के वक़्त मस्जिद के अगले हिस्से में नमाज़ पढ़ते हैं।[1]

हज़रत मुर्रा हमदानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने अपने दिल में सोचा कि मैं कूफ़ा की मस्जिद के हर स्तून के पीछे दो रक्अत नमाज़ पढ़ूंगा। मैं नमाज़ पढ़ रहा था कि इतने में हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद में आ गए। मैं अपनी यह बात उनको बताने गया तो एक आदमी मुझसे पहले उनके पास चला गया और मैं जो कुछ कर रहा था, वह उस आदमी ने उनको बता दिया, इस पर हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया, अगर उसको यह मालूम होता अल्लाह सबसे क़रीबी स्तून के पास भी हैं तो नमाज़ पूरी होने तक उस स्तून से आगे न बढ़ता। (यानी मस्जिद के हर स्तून के पास नमाज़ का पढ़ना कोई ख़ास सवाब का काम नहीं है। सवाब में नमाज़ के सारे स्तून बराबर हैं।)[2]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ि० का अज़ान का एहतिमाम करना

हज़रत अबू उमैर बिन अनस रहमतुल्लाहि अलैहि अपने अंसारी चाचों से नक़ल करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ के बारे में बड़ा फ़िक्र हुआ कि इसके लिए लोगों को कैसे जमा करें। किसी ने तज्वीज़ पेश की कि नमाज़ का वक़्त शुरू होने पर एक

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 16, कंज़, भाग 4, पृ० 262, इब्ने साद, भाग 7, पृ० 431
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 16,

झंडा खड़ा कर दिया करें। लोग जब झंडे को देखा करेंगे तो एक दूसरे को बता दिया करेंगे, लेकिन आपको यह राय पसन्द न आई। फिर किसी ने यहूदियों के बिगुल का तज़्किरा किया, आपको यह भी पसन्द न आया और फ़रमाया, यह तो यहूदियों का काम है। फिर किसी ने आपसे घंटे का ज़िक्र किया, तो आपने फ़रमाया, यह तो ईसाइयों का काम है। हुज़ूर सल्ल० की ज़्यादा फ़िक्र की वजह से हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को बहुत ज़्यादा फ़िक्र हो गया। वह जब घर गए तो उन्हें सपने में अज़ान दिखाई गई। आगे और हदीस भी ज़िक्र की।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ की ख़बर देने के बारे में फ़िक्र हुआ। जब नमाज़ का वक़्त आता तो हुज़ूर सल्ल० किसी आदमी को ऊपर चढ़ा देते जो हाथ से इशारा करता। जो इशारा देख लेता, वह आ जाता और न देखता, उसे नमाज़ का पता न चलता। इसका हुज़ूर सल्ल० को बहुत ज़्यादा फ़िक्र था।

कुछ सहाबियों ने आपकी ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर आप (नमाज़ के वक़्त) घंटा बजाने का हुक्म दे दें, तो अच्छा है। आपने फ़रमाया, यह तो ईसाइयों का काम है। फिर उन्होंने अर्ज़ किया, अगर आप बिगुल बजाने का हुक्म दे दें, तो अच्छा है। आपने फ़रमाया, नहीं, यह तो यहूदियों का काम है।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि मैं अपने घर वापस गया और हुज़ूर सल्ल० को इस बारे में फ़िक्रमंद देखने की वजह से मैं बहुत परेशान था। रात को फ़ज्र से पहले मुझे कुछ ऊंघ आ गई। मैं नींद और जागने की दर्मियानी हालत में था। मैंने एक आदमी को देखा, जिसने दो हरे कपड़े पहने हुए थे, वह मस्जिद की छत पर खड़ा हुआ और दोनों कानों में उंगलियां डालकर अज़ान देने लगा।[2]

---

1. अबू दाऊद,
2. अबू दाऊद

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में नमाज़ का वक़्त आता तो एक आदमी रास्ते में तेज़-तेज़ चलता हुआ जाता और एलान करता 'अस्सलातु-अस्सलातु' (नमाज़-नमाज़) यह काम लोगों को मुश्किल लगा तो उन्होंने अर्ज़ किया, अगर हम एक घंटा बना लें, आगे बाक़ी हदीस ज़िक्र की।[1]

हज़रत नाफ़ेअ बिन जुबैर, हज़रत उर्व; हज़रत ज़ैद बिन अस्लम, और हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहिम कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में अज़ान का हुक्म मिलने से पहले हुज़ूर सल्ल० का एक एलानची यह एलान करता 'अस्सलातु जामिअतुन' (नमाज़ का वक़्त हो गया, सब जमा हो जाएं।) जब क़िब्ला (बैतुल मक़्दिस से) काबा की तरफ़ तब्दील हुआ तो अज़ान का हुक्म आ गया। इसकी शक्ल यह हुई कि हुज़ूर सल्ल० को नमाज़ के वक़्त की इत्तिला देने का बहुत फ़िक्र था।

नमाज़ के लिए लोगों को जमा करने के लिए सहाबा रज़ि० ने बहुत-सी चीज़ों का ज़िक्र किया, किसी ने बिगुल का नाम लिया और किसी ने घंटे का। आगे बाक़ी हदीस ज़िक्र की और उसके आख़िर में यह है कि अज़ान का हुक्म मिल गया और 'अस्सलातु जामिअतुन' का एलान इस मक़्सद के लिए रह गया कि लोगों को जमा करके उन्हें किसी ख़ास वाक़िया, किसी फ़त्ह वग़ैरह की इत्तिला कर दी जाती या उन्हें कोई नया हुक्म बता दिया जाता और 'अस्सलातु जामिअतुन' के ज़रिए इस मक़्सद के लिए जमा करने के लिए एलान किया जाता, चाहे वह वक़्त नमाज़ का न होता।[2]

हज़रत साद क़रज़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जिस वक़्त भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ुबा तशरीफ़ लाते, तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ान देते, ताकि लोगों को पता चल जाए

1. कंज़, भाग 4, पृ० 263, 265
2. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 246,

कि हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ लाए हैं और लोग हुज़ूर सल्ल० के साथ जमा हो जाएं। चुनांचे एक दिन हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ लाए। हज़रत बिलाल रज़ि० आपके साथ नहीं थे तो हब्शी लोग एक दूसरे को देखने लगे। मैंने एक पेड़ पर चढ़कर अज़ान दी।

हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे पूछा, ऐ साद! तुमने ऐसा क्यों किया? मैंने अर्ज़ किया, मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों। मैंने देखा कि आपके साथ थोड़े से लोग हैं और हज़रत बिलाल रज़ि० साथ नहीं हैं और मैंने देखा कि ये हब्शी लोग एक दूसरे को देख रहे हैं और फिर आपको भी देख रहे हैं, इसलिए मुझे इनकी तरफ़ से आप पर हमले का ख़तरा हुआ, इसलिए मैंने अज़ान दी।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने ठीक किया, जब तुम मेरे साथ बिलाल रज़ि० को न देखा करो, तो अज़ान दे दिया करो। चुनांचे हज़रत साद रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की ज़िन्दगी में तीन बार अज़ान दी।[1]

हज़रत अबुल वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, क़ियामत के दिन अल्लाह के यहां अज़ान देने वालों का (अज्र व सवाब में से) हिस्सा जिहाद करने वालों के हिस्से जैसा होगा और मुअज़्ज़िन, अज़ान और इक़ामत के दर्मियान उस शहीद की तरह होता है जो अल्लाह के रास्ते में अपने ख़ून में लथ-पथ हो।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, अगर मैं मुअज़्ज़िन होता, तो हज, उमरा, जिहाद न करने की कोई परवाह न करता।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, अगर मैं मुअज़्ज़िन होता तो मेरा (दीनी) काम पूरा हो जाता और मैं रात की इबादत के लिए न उठने की और दिन को रोज़े न रखने की परवाह न करता। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि ऐ अल्लाह! अज़ान देने वालों की मग़्फ़िरत फ़रमा। ऐ अल्लाह! अज़ान देने वालों की मग़्फ़िरत फ़रमा।

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 336

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने हमें इस हाल पर पहुंचा दिया कि हम तो अब अज़ान के लिए एक दूसरे से तलवारों से लड़ेंगे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हरगिज़ नहीं, ऐ उमर ! बल्कि बहुत जल्द एक ऐसा ज़माना आएगा कि लोग अज़ान कमज़ोरों के लिए छोड़ेंगे, हालांकि अल्लाह ने अज़ान देने वालों के गोश्त को जहन्नम की आग पर हराम कर दिया है।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि यह क़ुरआन की आयत है—

وَ مَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا اِلَى اللّٰهِ وَ عَمِلَ صَالِحًا وَّ قَالَ اِنَّنِیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ

'और उससे बेहतर किसकी बात हो सकती है जो (लोगों को) अल्लाह की ओर बुलाए और (ख़ुद भी) नेक अमल करे और कहे कि मैं फ़रमांबरदारों में से हूं।' (सूरः हामीम-सज्दा, आयत 33)

और इससे मुराद मुअज़्ज़िन है। जब वह 'हय-य अलस्सलात' कहता है तो उसने अल्लाह की ओर बुलाया और जब नमाज़ पढ़ता है, तो उसने ख़ुद नेक अमल किया और जब वह 'अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहता है तो वह फ़रमांबरदार मुसलमानों में गिना जाता है।[1]

हज़रत अबू माशर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मुझे यह बात पहुंची है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अगर मैं मुअज़्ज़िन होता तो मैं फ़र्ज़ हज तो ज़रूर अदा करता, बाक़ी नफ़्ली हज और उमरा न करने की कोई परवाह न करता और अगर फ़रिश्ते आसमान से इंसानी शक्ल में उतरा न करते तो अज़ान देने में कोई उनसे आगे न निकल सकता।[2]

हज़रत क़ैस बिन अबी हाज़िम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हम लोग हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए तो उन्होंने फ़रमाया, तुम्हारे मुअज़्ज़िन कौन लोग हैं? हमने कहा, हमारे ग़ुलाम और

---

1. कंज़, भाग 4, पृ० 266,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 265

आज़ाद किए हुए ग़ुलाम। तो फ़रमाया, यह तो तुम्हारी बहुत बड़ी कमज़ोरी है। अगर मेरे बस में होता तो ख़लीफ़ा न बनता, बल्कि मुअज़्ज़िन बनता।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे इस बात पर बहुत अफ़सोस है कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के लिए अज़ान क्यों नहीं मांग ली। अगर मैं मांगता तो हुज़ूर सल्ल० दोनों को मुअज़्ज़िन बनाते।[2]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मुझे यह पसन्द नहीं है कि तुम्हारे मुअज़्ज़िन नाबीना (अंधे) लोग हों (कि वे तहारत का और नमाज़ के सही वक़्त का ख़्याल नहीं रख सकेंगे) या क़ारी लोग हों (कि उनके पढ़ाने और तालीम का हरज होगा।)[3]

हज़रत यह्या बक्का रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से कहा कि मैं आपसे अल्लाह के लिए मुहब्बत करता हूं। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, लेकिन मैं तो तुमसे अल्लाह के लिए बुग़्ज़ रखता हूं। उस आदमी ने पूछा, क्यों? हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्योंकि तुम अज़ान में गाने की आवाज़ बनाते हो और अज़ान पर उजरत भी लेते हो।[4]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को यमन भेजा और फ़रमाया, अगर तुम किसी बस्ती के पास से गुज़रो और तुम्हें वहां से अज़ान की आवाज़ सुनाई न दे तो (हमला करके) उन लोगों को क़ैदी बना लेना, चुनांचे क़बीला बनू ज़ुबैद के पास से उनका गुज़र हुआ तो उन्होंने वहां से अज़ान की आवाज़ न सुनी, इस पर उन्होंने उस क़बीला को क़ैदी बना

1. कंज़, भाग 4, पृ० 265
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 326
3. हैसमी, भाग 2, पृ० 2
4. हैसमी, भाग 2, पृ० 3

लिया। फिर हज़रत अम्र बिन मादी कर्ब रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ि० के पास आए और उन्होंने उनसे उस क़बीले के बारे में बात की, तो हज़रत ख़ालिद ने वे क़ैदी उनको हिबा कर दिए।[1]

हज़रत तलहा बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान बिन अबूबक्र रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु जब अपने अमीरों को इस्लाम से फिरे लोगों के लिए भेज रहे थे, तो उनको यह हुक्म दे रहे थे कि जब तुम किसी इलाक़े का घेराव कर लो तो अगर तुम्हें वहां अज़ान सुनाई दे तो (लड़ाई से) हाथ रोक लो और उनसे पूछ लो कि तुम्हें हमारी किन बातों पर एतराज़ है? और अगर अज़ान सुनाई न दे तो उन पर चारों ओर से छापा मारो और उन्हें क़त्ल करो और (उनकी खेतियां) जलाओ और उन्हें ख़ूब अच्छी तरह क़त्ल करो और ज़ख़्मी करो और तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इंतिक़ाल की वजह से तुममें किसी क़िस्म की कमज़ोरी नज़र न आए।[2]

हज़रत ज़ोहरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम से फिरे लोगों से लड़ने के लिए सहाबा को भेजा, तो उनसे फ़रमाया, रात को शब ख़ून मारो, लेकिन जहां अज़ान सुनो, वहां हमला करने से रुक जाओ, क्योंकि अज़ान ईमानी शिआर है।[3]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का नमाज़ का इन्तिज़ार करना

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब मस्जिद में नमाज़ खड़ी होती, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम देखते, अगर थोड़े होते तो आप बैठ जाते और नमाज़ न पढ़ाते और जब देखते कि लोग

1. कंज़, भाग 2, पृ० 298,
2. बैहक़ी,
3. कंज़, भाग 3, पृ० 141,

ज़्यादा जमा हो गए हैं, तो नमाज़ पढ़ा देते।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सललम जब तक जूते की आहट सुनते रहते, उस वक़्त तक इन्तिज़ार फ़रमाते रहते।[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार एक फ़ौज तैयार की, उसमें आधी रात हो गई। फिर आप नमाज़ के लिए बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, और लोग तो नमाज़ पढ़कर घरों को वापस जा चुके, लेकिन तुम नमाज़ का इन्तिज़ार कर रहे हो। ग़ौर से सुनो, जब तक तुम नमाज़ का इन्तिज़ार करोगे, उस वक़्त तक तुम नमाज़ ही में गिने जाओगे।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मग़रिब की नमाज़ पढ़ाई। इसके बाद कुछ लोग वापस चले गए और कुछ वहां मस्जिद में ठहरे रहे। फिर हुज़ूर सल्ल० उनके पास बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, यह तुम्हारे रब ने आसमान के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा खोला हुआ है और तुम्हारी वजह से फ़रिश्तों पर फ़ख्र फ़रमा रहे हैं और कह रहे हैं कि मेरे बन्दों ने एक फ़रीज़ा अदा कर दिया और दूसरे का इन्तिज़ार कर रहे हैं।[4]

हज़रत अबू उमामा सक़फ़ी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाने के बाद हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु दोबारा मस्जिद में आए। (हम लोग मस्जिद में बैठे हुए थे) और लोगों से कहा, आप लोग अपनी जगह बैठे रहें, मैं अभी आता हूं। चुनांचे वह फिर थोड़ी देर बाद फिर हमारे पास आए, उस वक़्त उन्होंने चादर ओढ़ रखी थी। जब वह अस्र की नमाज़ पढ़ा चुके तो उन्होंने कहा, क्या मैं

1. अबू दाऊद,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 246
3. कंज़, भाग 4, पृ० 193,
4. कंज़, भाग 4, पृ० 245, तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 246,

आप लोगों को वह काम न बताऊं जो ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किया है? हमने कहा, जी, ज़रूर बताएं।

हज़रत मुआविया रज़ि० ने कहा, एक बार सहाबा किराम रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० के साथ ज़ुहर की नमाज़ पढ़ी, फिर मस्जिद में बैठे रहे, फिर हुज़ूर सल्ल० उनके पास से बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, अभी तक तुम लोग मस्जिद से गए नहीं? उन्होंने अर्ज़ किया, जी नहीं। आपने फ़रमाया, चूंकि तुम नमाज़ का इंतिज़ार कर रहे हो, इसलिए काश तुम देख लेते कि तुम्हारे रब ने आसमान का एक दरवाज़ा खोला और तुम्हारी वजह से फ़ख़्र फ़रमाते हुए अपने फ़रिश्तों को तुम्हें बैठे हुए दिखाया।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक रात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशा की नमाज़ आधी रात तक मुअख़्ख़र फ़रमाई, फिर नमाज़ पढ़ाने के बाद आप सहाबा रज़ि० की तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़रमाया, और लोग तो नमाज़ पढ़कर सो चुके हैं, लेकिन तुम जब से नमाज़ का इन्तिज़ार कर रहे हो, उस वक़्त से तुम नमाज़ ही में गिने जा रहे हो।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुममें से जो आदमी जब तक नमाज़ की वजह से मस्जिद में रुका रहता है, उस वक़्त तक वह नमाज़ ही में गिना जाता है और फ़रिश्ते उसके लिए यह दुआ करते रहते हैं, ऐ अल्लाह! इसकी मग़फ़िरत फ़रमा, ऐ अल्लाह! इस पर रहम फ़रमा और यह सिलसिला उस वक़्त तक जारी रहता है, जब तक वह अपनी नमाज़ की जगह से खड़ा न हो जाए या उसका वुज़ू न टूट जाए।[3]

मुस्लिम और अबू दाऊद की एक रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब तक बन्दा अपनी नमाज़

---

1. मज्मा, भाग 2, पृ० 38,
2. बुख़ारी,
3. बुख़ारी,

की जगह में बैठकर अगली नमाज़ का इन्तिज़ार करता रहता है, उस वक़्त तक वह नमाज़ ही में गिना जाता है और फ़रिश्ते उसके लिए यह दुआ करते रहते हैं, ऐ अल्लाह ! इसकी मग़फ़िरत फ़रमा, ऐ अल्लाह ! इस पर रहम फ़रमा ! और यह सिलसिला उस वक़्त तक रहता है जब तक वह वापस न चला जाए या उसका वुज़ू न टूट जाए। किसी ने पूछा कि वुज़ू टूट जाने की क्या शक्ल है ? आपने फ़रमाया, उसकी हवा आवाज़ के साथ या बग़ैर आवाज़ के ख़ारिज हो जाए।[1]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें वह अमल न बताऊं जिनकी वजह से अल्लाह ग़लतियों को मिटा देते हैं और गुनाहों को ख़त्म कर देते हैं ? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ज़रूर बताएं। आपने फ़रमाया, नागवारियों के बावजूद वुज़ू पूरा करना और मस्जिदों की तरफ़ क़दम ज़्यादा उठाना और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना। यही है दुश्मन की सरहद पर पहरा देना (यहां दुश्मन से मुराद शैतान है।)[2]

हज़रत दाऊद बिन सालेह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मुझसे हज़रत अबू सलमा रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया, ऐ मेरे भतीजे ! क्या तुम जानते हो कि आयत—

اِصْبِرُوْا وَ صَابِرُوْا وَ رَابِطُوْا

'ख़ुद सब्र करो और मुक़ाबले में सब्र करो और मुक़ाबले के लिए मुस्तैद रहो।' (आले इम्रान, आयत 200) किस बारे में उतरी है ? मैंने कहा, नहीं।

उनहोंने फ़रमाया, मैंने हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाते हुए सुना है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में दुश्मन की सरहद पर पहरा देने के लिए कोई लड़ाई नहीं होती थी

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 245,
2. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 247,

(जिसमें हर वक़्त पहरा देने और मुक़ाबले के लिए मुस्तैद रहना पड़े।) बल्कि दुश्मन से मुक़ाबले के लिए हर वक़्त मुस्तैद रहने की शक्ल यह थी कि एक नमाज़ के बाद (मस्जिद में बैठकर) दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार किया जाए।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यह आयत—

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ (سورت سجدہ آیت ۱۶)

'इनके पहलू ख़्वाबगाहों से अलग होते हैं।' (सूरः सज्दा, आयत 16) उस नमाज़ के इन्तिज़ार के बारे में उतरी है जिसे अत्मा कहा जाता है, यानी 'इशा'[2] की नमाज़।

जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने की ताकीद और उसका एहतिमाम

हज़रत अम्र बिन उम्मे मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं नाबीना (अंधा) हूं मेरा घर दूर है और मेरा हाथ पकड़ कर ले जाने वाला तो एक आदमी है, लेकिन उसका मुझसे जोड़ नहीं। वह मेरी बात नहीं मानता तो क्या आप मुझे इस बात की इजाज़त देते हैं कि मैं घर में नमाज़ पढ़ लिया करूं? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या तुम अज़ान की आवाज़ सुनते हो? मैंने कहा, जी हां। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, फिर इजाज़त देने की गुंजाइश नहीं।[3]

इमाम अहमद की एक रिवायत में यह है कि हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद तशरीफ़ लाए। आपको नमाज़ियों की तायदाद में कुछ कमी नज़र आई, तो आपने फ़रमाया, मेरा इरादा हो रहा है कि मैं

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 251
2. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 246,
3. अबू दाऊद, इब्ने माजा,

मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने के लिए लोगों का किसी को इमाम बनाऊं और मैं ख़ुद मस्जिद से बाहर जाऊं और जो आदमी मुझे जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना छोड़कर घर बैठा हुआ मिले, मैं उस पर उसका घर जला दूं।

इस पर मैंने अर्ज़ किया, मेरे और मस्जिद के बीच खजूर के पेड़ और कुछ और पेड़ हैं और हर वक़्त कोई मुझे लेकर आने वाला मिलता नहीं। क्या मेरे लिए इस बात की गुंजाइश है कि मैं घर में नमाज़ पढ़ लिया करूं? हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, क्या तुम इक़ामत की आवाज़ सुनते हो? मैंने अर्ज़ किया, जी हां। आपने फ़रमाया, तो फिर नमाज़ के लिए मस्जिद में आया करो।[1]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जिसको इस बात की ख़ुशी हो कि वह कल क़ियामत के दिन अल्लाह की बारगाह में मुसलमान बनकर हाज़िर हो, उसे चाहिए कि इन नमाज़ों को उस जगह अदा करने का एहतिमाम करे, जहां अज़ान होती है, यानी मस्जिद में, इसलिए कि अल्लाह ने तुम्हारे नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के लिए ऐसी सुन्नतें जारी फ़रमाई हैं जो सरासर हिदायत हैं, उन्हीं में से ये जमाअत की नमाज़ें भी हैं।

अगर तुम लोग अपने घरों में नमाज़ पढ़ने लगोगे जैसा कि फ़्लां आदमी पढ़ता है तो तुम अपने नबी की सुन्नत छोड़ने वाले बन जाओगे और अगर तुम अपने नबी की सुन्नत को छोड़ दोगे तो तुम गुमराह हो जाओगे। जो आदमी अच्छी तरह वुज़ू करे और फिर किसी मस्जिद के इरादे से चले तो अल्लाह हर क़दम पर उसके लिए एक नेकी लिखेंगे और एक दर्जा बुलन्द करेंगे और एक गुनाह माफ़ कर देंगे और हम तो अपना यह हाल देखते थे कि जो आदमी खुल्लम खुल्ला मुनाफ़िक़ होता, वह तो जमाअत से रह जाता था, (वरना हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में आम मुनाफ़िक़ को भी जमाअत छोड़ने की हिम्मत नहीं होती थी) वरना

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 238,

जो शख़्स दो आदमियों के सहारे से घसिटता हुआ जा सकता था वह भी सफ़ में खड़ा कर दिया जाता था।

दूसरी रिवायत में यह है कि हम तो अपना यह हाल देखते थे कि जो आदमी खुल्लम खुल्ला मुनाफ़िक़ होता या बीमार होता, वह तो जमाअत से रह जाता, वरना जो आदमी दो आदमियों के सहारे से चल सकता था, वह भी नमाज़ में आ जाता था।

फिर हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें ऐसी सुन्नतें सिखाई हैं जो सरासर हिदायात हैं, उन सुन्नतों में से एक सुन्नत उस मस्जिद में नमाज़ पढ़ना भी है, जहां अज़ान होती हो।[1]

तयालसी की रिवायत में यह भी है कि इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं देख रहा हूं कि तुममें से हर एक ने अपने घर में नमाज़ की एक जगह बना रखी है, जिसमें वह नमाज़ पढ़ रहा है। अगर तुम लोग मस्जिदों को छोड़कर घरों में नमाज़ पढ़ने लग जाओगे, तो तुम अपने नबी की सुन्नत छोड़ने वाले हो जाओगे।

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जो आदमी यह चाहे कि वह अल्लाह के दरबार में अम्न के साथ हाज़िर हो, वह इन पांच नमाज़ों को ऐसी जगह अदा करे जहां अज़ान होती है, इसलिए कि यह काम ऐसी सुन्नतों में से है जो सरासर हिदायत हैं और उसे तुम्हारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुन्नत क़रार दिया है और कोई यह न कहे कि मेरे घर में नमाज़ की जगह है। मैं उसमें नमाज़ पढ़ा करूंगा, क्योंकि अगर तुम ऐसा करोगे तो तुम अपने नबी की सुन्नत छोड़ने वाले हो जाओगे और अगर तुम अपने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत को छोड़ दोगे तो गुमराह हो जाओगे।[2]

---

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 224, कंज़, भाग 4, पृ० 181, तयालसी, पृ० 40,
2. हलीया, भाग 1. पृ० 235.

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हम अगर किसी को फ़ज्र और इशा में मस्जिद में न पाते तो उसके बारे में हमें बद-गुमानी हो जाती।[1]

हज़रत अबूबक्र बिन सुलैमान बिन अबी हस्मा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक दिन हज़रत सुलैमान बिन हस्मा रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़ज्र की नमाज़ में न पाया। फिर हज़रत उमर रज़ि० बाज़ार गए। हज़रत सुलैमान रज़ि० का घर मस्जिद और बाज़ार के बीच में था। हज़रत उमर रज़ि० हज़रत सुलैमान रज़ि० की मां हज़रत शिफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास से गुज़रे तो उनसे फ़रमाया, आज सुबह की नमाज़ में मैंने सुलैमान रज़ि० को नहीं देखा।

हज़रत शिफ़ा रज़ि० ने कहा कि वह रात को तहज्जुद की नमाज़ पढ़ते रहे, इसलिए सुबह उनकी आंख लग गई। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, फ़ज्र की जमाअत में शरीक होना मुझे सारी रात इबादत करने से ज़्यादा महबूब है।[2]

हज़रत इब्ने अबी मुलैका रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़बीला बनी अदी बिन काब की हज़रत शिफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हा रमज़ान में हज़रत उमर रज़ि० के पास आई तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे पूछा कि क्या बात है, आज मैंने सुबह की नमाज़ में (तुम्हारे शौहर) अबू हस्मा को नहीं देखा? हज़रत शिफ़ा रज़ि० ने कहा, आज रात उन्होंने अल्लाह की इबादत में बहुत ज़ोर लगाया, जिसकी वजह से वह थक गए और सुस्ती की वजह से फ़ज्र की नमाज़ के लिए मस्जिद न गए, घर में नमाज़ पढ़कर सो गए। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! उनका सुबह की नमाज़ में शरीक होना मुझे सारी रात इबादत में ज़ोर लगाने से ज़्यादा महबूब है।[3]

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 232, कंज़, भाग 4, पृ० 244, मज्मा, भाग 2, पृ० 40
2. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 235,
3. अब्दुर्रज़्ज़ाक़

हज़रत शिफ़ा बिन्त अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक बार रमज़ान के महीने में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे पास मेरे घर आए और उन्होंने मेरे क़रीब दो मर्दों को सोते हुए पाया, तो उन्होंने फ़रमाया, इन दोनों को क्या हुआ? इन्होंने हमारे साथ नमाज़ नहीं पढ़ी।

मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! इन दोनों ने लोगों के साथ इशा और तरावीह की नमाज़ पढ़ी और सुबह तक नमाज़ पढ़ते रहे और फिर सुबह की नमाज़ पढ़कर सो गए। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, सुबह की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ना मुझे सारी रात इबादत करने से ज़्यादा महबूब है।[1]

हज़रत उम्मे दरदा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक दिन हज़रत अबुदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे पास आए। वह गुस्से में भरे हुए थे। मैंने पूछा, आपको गुस्सा क्यों आ रहा है। उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! मुझे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीन में से सिर्फ़ इसी अमल का पता है कि मुसलमान इकट्ठे होकर जमाअत से नमाज़ पढ़ते हैं (और अब उसमें सुस्ती शुरू हो गई।)[2]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की इशा की नमाज़ जमाअत से छूट जाती तो फिर वह बाक़ी सारी रात इबादत करते रहते।[3]

एक रिवायत में यह है कि जब हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की कोई नमाज़ जमाअत से छूट जाती, तो अगली नमाज़ तक बराबर नमाज़ पढ़ते रहते।[4]

हज़रत अम्बसा बिन अज़हर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि कुछ

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 243,
2. बुख़ारी,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 303,
4. इसाबा, भाग 2, पृ० 349

लोगों का दस्तूर था कि जब उनमें से किसी की शादी होती तो वह कुछ दिन छिपा रहता और फ़ज्र की नमाज़ के लिए बाहर न आता, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सोहबत पाए हुए सहाबी हज़रत हारिस बिन हस्सान रज़ियल्लाहु अन्हु की शादी हुई। वह फ़ज्र की नमाज़ के लिए घर से बाहर आए तो किसी ने उनसे कहा कि आज रात ही तो आपकी रुख़्सती हुई है और आप जमाअत से नमाज़ पढ़ने के लिए घर से बाहर आ रहे हैं? उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! जो औरत मुझे सुबह की नमाज़ जमाअत से पढ़ने से रोके, वह बुरी औरत है।[1]

सफ़ों को सीधा करना और उनकी तर्तीब बनाना

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़ के किनारे पर तशरीफ़ ले जाते और लोगों के सीने और कंधों को सीधा कराते और फ़रमाते, सफ़ें टेढ़ी न बनाओ, वरना तुम्हारे दिल टेढ़े हो जाएंगे। अल्लाह पहली सफ़ वालों पर रहमत भेजते हैं और उसके फ़रिश्ते उसके लिए रहमत की दुआ करते हैं।[2]

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़ में एक किनारे से दूसरे किनारे तक तशरीफ़ ले जाते और हाथ लगाकर हमारे सीनों और कंधों को सीधा करते और फ़रमाते, सफ़ें टेढ़ी न बनाओ। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[3]

हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक दिन हमारे पास बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, क्या तुम लोग ऐसे सफ़ें नहीं बनाते जैसे फ़रिश्ते अपने रब के पास सफ़ें बनाते हैं? हमने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! फ़रिश्ते अपने रब के पास सफ़ें कैसे बनाते हैं? आपने फ़रमाया, वे पहली सफ़ों को पूरा करते हैं, (फिर दूसरी सफ़ें बनाते हैं)

1. मज्म उज़्ज़वाइद, भाग 2, पृ० 41
2. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 282
3. अबू दाऊद

और सफ़ों में मिल-मिलकर खड़े होते हैं।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन हमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी, फिर आपने हमें इशारे से बैठने को फ़रमाया, तो हम बैठ गए, फिर आपने फ़रमाया, तुम लोग सफ़ें ऐसे क्यों नहीं बनाते, जैसे फ़रिश्ते बनाते हैं। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[2]

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारी सफ़ों को ऐसा सीधा करते थे कि गोया उनके ज़रिए तीर सीधे किए जाएंगे। करते-करते आपको अन्दाज़ा हुआ कि हम सफ़ें सीधा करने की बात अच्छी तरह समझ गए हैं (और हम ख़ुद ही सफ़ें सीधी बनाने लग गए हैं तो आपने सफ़ें सीधी कराना छोड़ दीं।)

फिर एक दिन आप बाहर तशरीफ़ लाए और नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़े हो गए और आप तक्बीर कहने ही वाले थे कि आपने देखा कि एक आदमी का सीना सफ़ से बाहर निकला हुआ है तो आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह के बन्दो! अपनी सफ़ें सीधी करो, वरना अल्लाह तुम्हारे चेहरे बदल देंगे। (या तुममें आपस की मुख़ालफ़त पैदा कर देंगे।)[3]

एक रिवायत में यह है कि हज़रत नोमान फ़रमाते हैं कि इसके बाद मैंने देखा कि वह आदमी अपना कंधा अपने साथी के कंधे के साथ और अपना घुटना उसके घुटने के साथ और अपना टख़ना उसके टख़ने के साथ मिला रहा है।[4]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु सफ़ें सीधी करने का हुक्म देते (और उसके लिए कुछ

---

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 283,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 255
3. बुख़ारी
4. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 289.

आदमी भेजते जो सफ़ें सीधी कराते) जब वे लोग वापस आकर बताते कि सफ़ें सीधी हो गई हैं तो फिर हज़रत उमर रज़ि० तक्बीर कहते ।[1]

हज़रत अबू उस्मान नह्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु सफ़ें सीधी करने का हुक्म देते और फ़रमाते, ऐ फ़्लाने ! आगे बढ़ जा, ऐ फ़्लाने ! ज़रा आगे हो जा और शायद यह भी फ़रमाते थे कि कुछ लोग पीछे हटते रहेंगे, यहां तक कि अल्लाह उन्हें पीछे कर देंगे ।[2]

हज़रत अबू उस्मान नह्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मैंने देखा कि वह जब नमाज़ पढ़ाने के लिए बढ़ते, तो लोगों के कंधे और पांव देखा करते ।[3]

हज़रत अबू नज़रा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब नमाज़ खड़ी होने लगती तो हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते, सीधे हो जाओ, ऐ फ़्लाने ! आगे हो जा, ऐ फ़्लाने, पीछे हो जा, तुम लोग अपनी सफ़ें सीधी करो। अल्लाह चाहते हैं कि तुम लोग सफ़ें बनाने में फ़रिश्तों वाला तरीक़ा अख़्तियार करो, फिर यह आयत पढ़ते—

وَإِنَّا لَنَحْنُ الصَّافُّونَ وَإِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ (سورت صافات آیت ۱۶۵-۱۶۶)

'और (ख़ुदा के हुज़ूर में हुक्म सुनने के वक़्त या इबादत के वक़्त) हम सफ़ें बांधकर खड़े होते हैं और हम (ख़ुदा की) पाकी बयान करने में भी लगे रहते हैं ।'[4] (सूरः साफ़्फ़ात, आयत 165-166)

हज़रत मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ था और उनसे बात कर रहा था कि वह मेरे लिए कुछ वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दें कि इतने में नमाज़ की इक़ामत हो गई। मैं उनसे बात करता रहा और वह अपनी जूतियों से कंकरियां बराबर करते रहे, यहां तक कि वे लोग आ गए जिनके ज़िम्मे

1. मालिक, बैहक़ी,
2. अब्दुर्रज़्ज़ाक़
3. कंज़, भाग 4, पृ० 254.

हज़रत उस्मान रज़ि० ने सफ़ें सीधी करना लगाया हुआ था, और उन्होंने बताया कि सफ़ें सीधी हो गईं, तो हज़रत उस्मान रज़ि० ने मुझसे फ़रमाया, तुम भी सफ़ में सीधे खड़े हो जाओ। इसके बाद हज़रत उस्मान रज़ि० ने तक्बीर कही।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, सीधे हो जाओ, तुम्हारे दिल सीधे हो जाएंगे और मिल-मिलकर खड़े हो, तो तुम पर रहम किया जाएगा।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हमने अपना हाल तो यह देखा था कि जब तक सफ़ें मुकम्मल न हो जातीं, नमाज़ न खड़ी होती।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह उन लोगों पर रहमत भेजते हैं जो सफ़ों में नमाज़ की पहली सफ़ की तरफ़ आगे बढ़ते हैं और उसके फ़रिश्ते उनके लिए रहमत की दुआ करते हैं।[4]

हज़रत अब्दुल अज़ीज़ बिन रुफ़ैअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िलाफ़त के ज़माने में मक्का में मुक़ामे इब्राहीम के पास हज़रत आमिर बिन मस्ऊद क़ुरशी रज़ियल्लाहु अन्हु ने पहली सफ़ में मुझसे आगे बढ़ने की कोशिश की, तो मैंने उनसे पूछा, क्या यह कहा जाता था कि पहली सफ़ में ख़ैर है?

उन्होंने फ़रमाया, हां, अल्लाह की क़सम! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अगर लोगों को पहली सफ़ के अज्र व सवाब का पता चल जाए, तो क़ुरआ से ही वे पहली सफ़ में खड़े हो सकें।[5]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि तुम लोग

1. कंज़, भाग 4, पृ० 255
2. कंज़, भाग 4, पृ० 255,
3. हैसमी, भाग 2, पृ० 90
4. हैसमी, भाग 2, पृ० 92
5. हैसमी, भाग 2, पृ० 92

पहली सफ़ को लाज़िम पकड़ो और पहली सफ में दाईं तरफ़ को लाज़िम पकड़ो और स्तूनों के दर्मियान सफ़ बनाने से बचो, (क्योंकि वहां सफ़ की जगह नहीं होती ।)[1]

हज़रत क़ैस बिन अब्बाद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं एक बार मदीना मुनव्वरा गया, जब नमाज़ खड़ी हुई तो मैं आगे बढ़कर पहली सफ़ में खड़ा हो गया। फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु बाहर तशरीफ़ लाए और सफ़ों को चीरते हुए आगे बढ़े। उनके साथ एक आदमी भी आया था जिसका रंग गंदुमी और दाढ़ी हल्की थी। उसने लोगों के चेहरे पर एक नज़र डाली और जब उसने मुझे देखा तो मुझे पीछे हटा दिया और मेरी जगह ख़ुद खड़ा हो गया। यह बात मुझ पर बड़ी गरां गुज़री।

नमाज़ से फ़ारिग़ होकर वह मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुए और कहा, तुम मेरे इस रवैए का बुरा न मनाओ, और इसका ग़म न करो। क्या यह बात तुम पर गरां गुज़री है? मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि पहली सफ़ में सिर्फ़ मुहाजिर और अंसार ही खड़े हों। मैंने पूछा, यह साहब कौन हैं? लोगों ने बताया, यह हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।[2]

हज़रत क़ैस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक दिन मैं मदीना मुनव्वरा की मस्जिदे नबवी में अगली सफ़ में नमाज़ पढ़ रहा था कि इतने में एक आदमी मेरे पीछे से आया और उसने मुझे ज़ोर से खींचकर पीछे कर दिया और ख़ुद मेरी जगह खड़ा हो गया। सलाम फेरकर वह मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुए तो वह हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु थे। उन्होंने फ़रमाया, ऐ नवजवान! अल्लाह तुम्हें ग़मज़दा न करे। यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से हमें हुक्म था, फिर पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[3]

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 92
2. मुस्तदरक, भाग 3, पृ० 303
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 252,

इमाम का इक़ामत के बाद मुसलमानों की ज़रूरतों में मशग़ूल होना

हज़रत उसामा बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि कभी-कभी नमाज़ खड़ी हो जाती थी और कोई आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपनी ज़रूरत की बात करने लग जाता, और हुज़ूर सल्ल० के और क़िब्ले के दर्मियान खड़ा हो जाता और खड़े होकर हुज़ूर सल्ल० से बातें करता रहता। मैं कभी-कभी देखता कि हुज़ूर सल्ल० के ज़्यादा देर खड़े रहने की वजह से कुछ लोग ऊंघने लगते।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि कभी-कभी इशा की नमाज़ खड़ी हो जाती तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी आदमी के साथ खड़े होकर बात करने लग जाते (ज़्यादा देर हो जाने की वजह से) बहुत-से सहाबा रज़ि० सो जाते, फिर वे नमाज़ के लिए उठते।[2]

हज़रत उर्व: रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुअज़्ज़िन जब इक़ामत कह देता और लोग चुप हो जाते तो उसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कोई आदमी ज़रूरत की बात करने लगता। हुज़ूर सल्ल० उसकी ज़रूरत पूरी करते और हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने बताया कि हुज़ूर सल्ल० की एक छड़ी थी, जिस पर आप टेक लगा लिया करते।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत रहमदिल थे। जो भी आपके पास आता (और सवाल करता और आपके पास कुछ न होता) तो उससे आप वायदा कर लेते (कि जब कुछ आएगा, तो तुम्हें ज़रूर दूंगा) और अगर कुछ पास होता तो उसी वक़्त उसे दे देते।

---

1. कंज़, भाग 4, पृ० 234, 273,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 273,
3. कंज़, भाग 4, पृ० 273,

एक बार नमाज़ की इक़ामत हो गई। एक देहाती ने आकर आपके कपड़े को पकड़ लिया और कहा, मेरी थोड़ी-सी ज़रूरत बाक़ी रह गई है और मुझे डर है कि मैं उसे भूल जाऊंगा। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० उसके साथ खड़े हो गए, जब उसकी ज़रूरत से फ़ारिग़ हुए, तो फिर आगे बढ़कर नमाज़ पढ़ाई।[1]

हज़रत अबू उस्मान नह्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि कभी-कभी नमाज़ खड़ी हो जाती थी, फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने कोई आदमी आकर उनसे बात शुरू कर देता, तो कभी-कभी हज़रत उमर रज़ि० के ज़्यादा खड़े रहने की वजह से हममें से कुछ आदमी बैठ जाते।[2]

हज़रत मूसा बिन तलहा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु मिंबर पर थे और मुअज़्ज़िन नमाज़ के लिए इक़ामत कर रहा था, उस वक़्त मैंने सुना कि वह लोगों से हालात और चीज़ों के भाव पूछ रहे थे।[3] सफ़ें सीधी करने के उन्वान में यह क़िस्सा गुज़र चुका है कि हज़रत मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ था और उनसे बात कर रहा था कि इतने में नमाज़ खड़ी हो गई।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के ज़माने में इमामत और इक़्तिदा

सुलेह हुदैबिया का समझौता और मक्का की फ़त्ह के बारे में हज़रत इक्रिमा रहमतुल्लाहि अलैहि की एक लम्बी हदीस है, उसमें यह है कि हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, ऐ अबू सुफ़ियान! मुसलमान हो जाओ, सलामती

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० 43
2. कंज़, भाग 4, पृ० 230,
3. कंज़, भाग 4, पृ० 234, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 59

पाओगे। इस पर हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि० मुसलमान हो गए। फिर हज़रत अब्बास रज़ि० उन्हें अपनी क़ियामगाह पर ले गए। जब सुबह हुई तो लोग वुज़ू के लिए दौड़ने-भागने लगे।

हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि० ने यह मंज़र देखकर कहा, ऐ अबुल फ़ज़्ल ! इन लोगों को क्या हुआ ? क्या इन्हें कोई हुक्म मिला है ? हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, नहीं। यह तो नमाज़ की तैयारी कर रहे हैं। हज़रत अब्बास रज़ि० ने उन्हें हुक्म दिया तो उन्होंने भी वुज़ू कर लिया, फिर हज़रत अब्बास रज़ि० उन्हें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास ले गए।

हुज़ूर सल्ल० जब नमाज़ शुरू करने लगे, तो आपने अल्लाहु अक्बर कहा, इस पर लोगों ने भी अल्लाहु अक्बर कहा, फिर हुज़ूर सल्ल० रुकूअ में गए तो लोग भी चले गए। फिर हुज़ूर सल्ल० ने सर उठाया, तो लोगों ने भी उठाया, तो हज़रत अबू सुफ़ियान ने कहा कि आज जैसा दिन मैंने कभी नहीं देखा कि ये मुसलमान यहां से लेकर वहां तक सारे हुज़ूर सल्ल० की जितनी इताअत कर रहे हैं, उनसे ज़्यादा इताअत न तो फ़ारस के शरीफ़ों में देखी और न सदियों से हुक्मरानी करने वाले रूमियों में। हज़रत अबू सुफ़ियान ने कहा, ऐ अबुल फ़ज़्ल ! तुम्हारा भतीजा तो बड़े मुल्क वाला हो गया, तो हज़रत अब्बास रज़ि० ने उनसे कहा, नहीं, यह मुल्क और बादशाहत नहीं, बल्कि नुबूवत है।[1]

हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा फ़त्हे मक्का की लड़ाई बयान करती हैं, तो उसमें यह भी फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खड़े होकर वुज़ू करने लगे तो सहाबा रज़ि० वुज़ू के पानी पर झपटने लगे और पानी लेकर अपने चेहरों पर मलने लगे। हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि० ने कहा, ऐ अबुल फ़ज़्ल ! तुम्हारे भतीजे की बादशाही तो बड़ी हो गई। हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, नहीं, यह बादशाहत नहीं है, बल्कि नुबूवत है, इसी वजह से उन लोगों में इतना शौक़ है।[2]

1. कंज़, भाग 5, पृ० 300,
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 164,

हज़रत उर्व: रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि यह रात हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गुज़ारी। सुबह को हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि० ने देखा कि लोग नमाज़ की तैयारी कर रहे हैं। इस्तिंजा और तहारत के लिए इधर-उधर आ जा रहे हैं, तो वे डर गए (कि मुसलमान शायद हमला करने लगे हैं।) और उन्होंने हज़रत अब्बास रज़ि० से पूछा, इन लोगों को क्या हुआ?

हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, इन लोगों ने अज़ान सुन ली, इसलिए नमाज़ की तैयारी के लिए लोग इधर-उधर आ जा रहे हैं। फिर जब नमाज़ हुई और हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि० ने देखा कि हुज़ूर सल्ल० के रुकूअ करने पर तमाम सहाबा रुकूअ में चले गए और हुज़ूर सल्ल० के सज्दा करने पर सबने सज्दा किया, तो उन्होंने कहा, ऐ अब्बास रज़ि० ! हुज़ूर सल्ल० इन्हें जिस बात का हुक्म देते हैं, ये उसे फ़ौरन करते हैं? हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, जी हां। अल्लाह की क़सम ! अगर हुज़ूर सल्ल० इन्हें खाना-पीना छोड़ने का हुक्म दे दें, तो ये उसे भी पूरा कर देंगे।[1]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नमाज़ के शौक़ के बाब में हज़रत आइशा की हदीस गुज़र चुकी है। उसमें यह है कि इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास यह पैग़ाम भेजा कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं। हज़रत अबूबक्र रज़ि० बहुत नर्म दिल आदमी थे, इसलिए उन्होंने कहा, ऐ उमर ! आप लोगों को नमाज़ पढ़ाएं। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, नहीं। इसके आप ज़्यादा हक़दार हैं। चुनांचे उन दिनों हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने नमाज़ पढ़ाई।

बुख़ारी में हज़रत आइशा रज़ि० की हदीस में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अबूबक्र रज़ि० से कहो कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं। किसी ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि अबूबक्र रज़ि० तो दिल के बहुत नर्म हैं, जल्द रो पड़ते हैं। जब आपकी जगह खड़े होंगे तो लोगों को नमाज़ नहीं पढ़ा सकेंगे।

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 291,

उसने दोबारा वही बात कही, तो हुज़ूर सल्ल० ने दोबारा यही जवाब दिया, बल्कि तीसरी बार भी यही जवाब दिया और फ़रमाया, तुम तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की साथिन (ज़लीख़ा) की तरह हो (कि अन्दर से कुछ और, ऊपर से कुछ और। ऊपर से कह रही हो कि अबूबक्र रोते बहुत हैं और अन्दर दिल में यह है कि हुज़ूर सल्ल० की जगह खड़े होने से लोग बदफ़ाली लेंगे) जैसे कि ज़ुलैख़ा ने ऊपर से तो औरतों का इक्राम किया और अन्दर से मक़्सूद उन्हें हज़रत यूसुफ़ को दिखाना था) अबूबक्र से कहो कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़मआ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीमारी बढ़ चुकी थी। मैं आपके पास बैठा हुआ था और मुसलमान भी थे। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्ल० को नमाज़ की इत्तिला दी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, किसी से कहो कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ा दे। चुनांचे मैं वहां से बाहर गया तो देखा कि लोगों में हज़रत उमर रज़ि० तो हैं और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु नहीं हैं।

मैंने कहा, ऐ उमर रज़ि० ! आप खड़े हों और लोगों को नमाज़ पढ़ाएं। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० खड़े हो गए। हज़रत उमर रज़ि० की ऊंची आवाज़ थी। जब उन्होंने अल्लाहु अक्बर कहा, तो हुज़ूर सल्ल० ने उनकी आवाज़ सुनकर फ़रमाया, अबूबक्र कहां हैं? अल्लाह और मुसलमान इसका इंकार कर रहे हैं। अल्लाह और मुसलमान इसका इंकार कर रहे हैं। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास आदमी भेजकर बुलाया। हज़रत उमर रज़ि० ने यह नमाज़ पढ़ाई।

इसके बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि० आए और फिर उन्होंने लोगों को नमाज़ पढ़ानी शुरू की। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़मआ रज़ि० कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने मुझसे कहा, तेरा भला हो, ऐ इब्ने ज़मआ! तुमने यह क्या किया? अल्लाह की क़सम! जब तुमने मुझे नमाज़ पढ़ाने को कहा तो मैं तो यही समझा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे इसका हुक्म दिया है। अगर यह बात न होती तो मैं

कभी नमाज़ न पढ़ाता।

मैंने कहा, अल्लाह की क़सम ! हुज़ूर सल्ल० ने मुझे इसका हुक्म नहीं दिया, लेकिन जब मुझे हज़रत अबूबक्र रज़ि० नज़र न आए तो हाज़िर लोगों में से आप ही मुझे नमाज़ पढ़ाने के सबसे ज़्यादा हक़दार नज़र आए।[1]

दूसरी रिवायत में यह है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु की आवाज़ सुनी, तो हुज़ूर सल्ल० ने हुजरे से सर बाहर निकालकर फ़रमाया, नहीं, नहीं लोगों को सिर्फ़ (अबूबक्र) इब्ने अबी क़हाफ़ा ही नमाज़ पढ़ाएं। यह बात आपने बहुत गुस्से में फ़रमाई।[2]

हज़रात सहाबा किराम रज़ि० का ख़िलाफ़त के मामले में हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को मुक़द्दम समझने के बाब में यह गुज़र चुका है कि हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैं उस आदमी से आगे नहीं बढ़ सकता जिसे हुज़ूर सल्ल० ने (नमाज़ में) हमारा इमाम बनने का हुक्म दिया हो और उन्होंने हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल तक हमारी इमामत की हो और हज़रत अली और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, हम अच्छी तरह से समझते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के बाद लोगों में ख़िलाफ़त के सबसे ज़्यादा हक़दार हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। यह हुज़ूर सल्ल० के ग़ार के साथी हैं और (क़ुरआन के लफ़्ज़ों के मुताबिक़) 'सानियस्नैन' (दो में से दूसरे) हैं हम इनकी शराफ़त और बुज़ुर्गी को ख़ूब पहचानते हैं और हुज़ूर सल्ल० ने अपनी ज़िंदगी में इन्हीं लोगों को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दिया था।

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो गया, तो अंसार ने कहा, एक अमीर हममें से हो और एक अमीर तुम मुहाजिरीन में से हो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अंसार के पास गए और उनसे कहा, क्या आप

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 232, हाकिम, भाग 3, पृ० 641,
2. बिदाया, भाग 5, पृ० 232,

लोगों को मालूम नहीं है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया था कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं? इसलिस तुममें से किसका दिल इस बात से ख़ुश हो सकता है कि वह आगे होकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० का इमाम बने? तमाम अंसार ने कहा, हम हज़रत अबूबक्र रज़ि० से आगे बढ़कर इमाम बनने से अल्लाह की पनाह चाहते हैं।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया था कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं और मैं वहां मौजूद था, ग़ायब नहीं था और बीमार भी नहीं था। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने जिस आदमी को हमारे दीन यानी नमाज़ की इमामत के लिए पसन्द फ़रमाया, उसी को हमने अपनी दुनिया के लिए पसन्द कर लिया।[2]

हज़रत अबू लैला किन्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु बारह या तेरह सवारों के साथ आए। ये तमाम सवार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में से थे। जब नमाज़ का वक़्त आया तो लोगों ने कहा, ऐ अबू अब्दुल्लाह! (नमाज़ पढ़ाने के लिए) आगे बढ़ें। हज़रत सलमान रज़ि० ने फ़रमाया, हम आप लोगों के इमाम नहीं बनते और आप लोगों की औरतों से निकाह नहीं करते, क्योंकि अल्लाह ने हमें आपके ज़रिए हिदायत अता फ़रमाई है।

चुनांचे उन लोगों में से एक आदमी आगे बढ़ा और उसने चार रक्अत नमाज़ पढ़ाई। जब उसने सलाम फेरा तो हज़रत सलमान रज़ि० ने फ़रमाया, हमें चार रक्अत की ज़रूरत नहीं थी, हमें चार की आधी यानी दो रक्अत नमाज़ काफ़ी थी। हम तो सफ़र में हैं, इसलिए हमें रुख़सत पर अमल करने की ज़्यादा ज़रूरत है।[3]

---

1. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 206,
2. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 354,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 189, हैसमी, भाग 2, पृ० 156,

हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उसैद रज़ियल्लाहु अनहु के बेटों के ग़ुलाम हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु ने खाना तैयार किया, फिर उन्होंने हज़रत अबूज़र, हज़रत हुज़ैफ़ा और हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हुम को खाने के लिए बुलाया। ये लोग तशरीफ़ ले आए, इतने में नमाज़ का वक़्त हो गया तो हज़रत अबूज़र रज़ि० नमाज़ पढ़ाने के लिए आगे बढ़े तो उनसे हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने कहा, घर का मालिक आपके पीछे खड़ा है, वह इमामत का ज़्यादा हक़दार है।

हज़रत अबूज़र रज़ि० ने कहा, ऐ इब्ने मस्ऊद रज़ि० ! क्या बात इसी तरह है? उन्होंने कहा, जी हां। इस पर अबूज़र रज़ि० पीछे आ गए। हज़रत अबू सईद रह० कहते हैं कि हालांकि मैं ग़ुलाम था, लेकिन उन्होंने मुझे आगे किया। आख़िर मैंने इन सबकी इमामत कराई।[1]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मदीना के एक किनारे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ज़मीन थी। वहां एक मस्जिद में नमाज़ खड़ी होने लगी। मस्जिद के इमाम एक ग़ुलाम थे। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० नमाज़ में शरीक होने के लिए उस मस्जिद में दाख़िल हुए तो उस ग़ुलाम ने उनसे कहा, आप आगे तशरीफ़ ले चलें और नमाज़ पढ़ाएं। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम अपनी मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने के ज़्यादा हक़दार हो। चुनांचे उस ग़ुलाम ने नमाज़ पढ़ाई।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हंज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग हज़रत क़ैस बिन साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हुमा के घर में थे। हमारे साथ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ सहाबा रज़ि० भी थे। हमने हज़रत क़ैस रज़ि० से कहा, आप (नमाज़ पढ़ाने के लिए) आगे बढ़ें। उन्होंने कहा, मैं ऐसा करने के लिए तैयार

1. अब्दुर्रज़्ज़ाक़,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 246,

नहीं हूं। मैंने कहा, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया है, आदमी अपने बिस्तर के अगले हिस्से का, अपनी सवारी के अगले हिस्से का और अपने घर में इमाम बनने का ज़्यादा हक़दार है। चुनांचे उन्होंने अपने एक ग़ुलाम को हुक्म दिया। उसने आगे बढ़कर नमाज़ पढ़ाई।[1]

हज़रत अलक़मा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु को मिलने उनके घर गए। वहां नमाज़ का वक़्त आ गया। हज़रत अबू मूसा रज़ि० ने कहा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान! आप (नमाज़ पढ़ाने के लिए) आगे बढ़ें, क्योंकि आपकी उम्र भी ज़्यादा है और इल्म भी।

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने कहा, नहीं आप आगे बढ़ें, क्योंकि हम आपके पास आपके घर में और आपकी मस्जिद में आए हैं, इसलिए आप ज़्यादा हक़दार हैं। चुनांचे हज़रत अबू मूसा रज़ि० आगे बढ़े और उन्होंने अपनी जूती उतारी और नमाज़ पढ़ाई। जब उन्होंने सलाम फेरा तो हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने उनसे फ़रमाया कि आपने जूते क्यों उतारे? क्या आप (हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तरह) मुक़द्दस घाटी में हैं।[2]

और तबरानी की एक रिवायत में यह है कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने उनसे कहा, ऐ अबू मूसा! आप जानते ही हैं कि यह बात सुन्नत में से है कि घर वाला (नमाज़ पढ़ाने के लिए) आगे बढ़े, लेकिन हज़रत अबू मूसा रज़ि० ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया और इन दोनों हज़रात में से किसी एक के ग़ुलाम ने आगे बढ़कर नमाज़ पढ़ाई।

हज़रत क़ैस बिन ज़ुहैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं हज़रत हंज़ला बिन रबीअ रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हज़रत फ़ुरात बिन हय्यान रज़ियल्लाहु अन्हु की मस्जिद में गया, वहां नमाज़ का वक़्त आ गया। हज़रत फ़ुरात रज़ि० ने हज़रत हंज़ला रज़ि० से कहा, आप (नमाज़ पढ़ाने

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 65
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 66

के लिए) आगे बढ़ें। हज़रत हंज़ला रज़ि० ने कहा, मैं आपके आगे नहीं खड़ा हो सकता, क्योंकि उम्र में आप मुझसे बड़े हैं और आपने हिजरत भी मुझसे पहले की थी और फिर मस्जिद भी आपकी अपनी है।

हज़रत फ़ुरात रज़ि० ने कहा, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आपके बारे में एक बात फ़रमाते हुए सुना था, (उसके सुनने के बाद) मैं कभी आपके आगे नहीं हूंगा। हज़रत हंज़ला रज़ि० ने कहा, तायफ़ की लड़ाई में, जिस दिन मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गया था और आपने मुझे जासूस बनाकर भेजा था, क्या आप उस दिन वहां मौजूद थे?

हज़रत फ़ुरात रज़ि० ने कहा, जी हां। फिर हज़रत हंज़ला आगे बढ़े और उन लोगों को नमाज़ पढ़ाई। इसके बाद हज़रत फ़ुरात रज़ि० ने कहा, ऐ क़बीला बनू अज्ल वालो! मैंने इनको (इमामत के लिए) इसलिए आगे बढ़ाया, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० ने तायफ़ की लड़ाई के दिन इनको जासूस बनाकर तायफ़ भेजा था। वापस आकर इन्होंने हुज़ूर सल्ल० को हालात बताए थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था कि तुम सच कहते हो। अब अपने पड़ाव पर वापस चले जाओ, क्योंकि आज रात तुम जागते रहे हो। जब हज़रत हंज़ला रज़ि० वहां से चल पड़े तो हुज़ूर सल्ल० ने हमसे फ़रमाया, इनकी और इन जैसे लोगों की इक़्तिदा किया करो।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मक्का मुकर्रमा गया, तो मक्का के अमीर हज़रत नाफ़ेअ बिन अलक़मा रज़ियल्लाहु अन्हु ने बाहर आकर हमारा इस्तिक़बाल किया। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, आप अपने पीछे मक्का वालों का अमीर किसे बनाकर आए हैं? हज़रत नाफ़ेअ रज़ि० ने कहा, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आपने तो मक्का में एक ग़ुलाम को ऐसे

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 65, कंज़, भाग 7, पृ० 28,

लोगों का अमीर बना दिया है जो क़ुरैश में से हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी हैं। हज़रत नाफ़ेअ रज़ि० ने कहा, जी हां। मैंने हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० को सबसे ज़्यादा और सबसे अच्छा क़ुरआन पढ़ने वाला पाया और मक्का ऐसी सरज़मीन है जहां सारी दुनिया के लोग आते हैं तो मैंने चाहा कि लोग (नमाज़ में) ऐसे आदमी से क़ुरआन सुनें जो अच्छा क़ुरआन पढ़ता है। हज़रत उमर रज़ि०ने फ़रमाया, तुमने बहुत अच्छा किया, वाक़ई अब्दुर्रहमान बिन अबज़ा रज़ि० उन लोगों में से हैं जिनको अल्लाह क़ुरआन की वजह से बुलन्द करते हैं।[1]

हज़रत उबैद बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज के मौसम में मक्का के पास एक चश्मे पर एक जमाअत जमा हो गई। जब नमाज़ का वक़्त आया तो अबुस्साइब के ख़ानदान का एक आदमी नमाज़ पढ़ाने के लिए आगे बढ़ा। उसकी ज़ुबान फ़सीह और साफ़ नहीं थी तो हज़रत मिस्वर बिन मख़्रमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे पीछे कर दिया और दूसरे आदमी को आगे कर दिया। यह बात हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु तक पहुंच गई, वहां तो हज़रत उमर रज़ि० ने उन्हें कुछ न कहा। जब मदीना मुनव्वरा पहुंच गए तो हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत मिस्वर रज़ि० से पूछ-ताछ की।

हज़रत मिस्वर रज़ि० ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप ज़रा मुझे मोहलत दें। बात यह है कि उसकी ज़ुबान फ़सीह और साफ़ नहीं थी और मौसम हज का था तो मुझे यह ख़तरा हुआ कि हाजी लोग उसकी क़िरात को सुनकर उसे ही अख़्तियार कर लेंगे। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अच्छा क्या तुमने इस वजह से उसे पीछे किया था? हज़रत मिस्वर रज़ि० ने कहा, जी हां। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, फिर तुमने ठीक किया।[2]

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुछ लोगों को नमाज़ पढ़ाई और नमाज़ के बाद उन लोगों से कहा, मैं इमामत के लिए

---

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 216,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 246,

आगे बढ़ने से पहले आप लोगों से पूछना भूल गया, क्या आप लोग मेरे नमाज़ पढ़ाने पर राज़ी हैं? उन लोगों ने कहा, जी हां। और ऐ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ास सहाबी रज़ि०! आपके नमाज़ पढ़ाने को कौन नापसन्द कर सकता है?

हज़रत तलहा रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना कि जो लोगों को नमाज़ पढ़ाए और लोग उसके नमाज़ पढ़ाने पर राज़ी न हों तो उसकी नमाज़ कानों से भी ऊपर नहीं जाती, यानी अल्लाह उसे क़ुबूल नहीं फ़रमाते।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कभी-कभी हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि के पीछे नमाज़ न पढ़ा करते थे, (क्योंकि शुरू में यह भी बनू उमैया के ख़लीफ़ों की तरह कभी-कभी नमाज़ को इतनी देर से पढ़ते थे कि नमाज़ का वक़्त ख़त्म हो जाता था। बाद में जब यह ख़ुद ख़लीफ़ा बने थे, तो फिर सही वक़्त पर पढ़ने लग गए थे) तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे पूछा कि आप ऐसा क्यों करते हैं? हज़रत अनस रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ते हुए देखा है। जब तुम उन जैसी नमाज़ पढ़ते हो, तो मैं तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ता हूं और जब तुम उन जैसी नमाज़ नहीं पढ़ते हो, तो अपनी नमाज़ पढ़कर घर चला जाता हूं।[2]

हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु कभी-कभी मरवान बिन हकम के साथ नमाज़ नहीं पढ़ते थे, तो उनसे मरवान ने पूछा, आप ऐसा क्यों करते हैं? हज़रत अबू अय्यूब ने फ़रमाया, मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ते हुए देखा है। अगर तुम उन जैसी नमाज़ पढ़ते हो, तो मैं तुम्हारे साथ पढ़ता हूं और अगर तुम उन जैसी नहीं पढ़ते हो तो मैं अपनी नमाज़ पढ़कर घर चला जाता हूं।[3]

---

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 68,
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 68,
3. हैसमी, भाग 2, पृ० 68,

हज़रत अबू ख़ालिद बजली रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा, क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप लोगों को इसी तरह नमाज़ पढ़ाया करते थे? हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुम्हें मेरी नमाज़ में कोई इश्काल है? मैंने कहा, मैं उसी के बारे में पूछना चाहता हूं। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने कहा, हां, हुज़ूर सल्ल० मुख़्तसर नमाज़ पढ़ाते थे और हुज़ूर सल्ल० का क़ियाम इतनी देर होता था जितनी देर में अज़ान देने वाला मीनार से उतर कर सफ़ में पहुंच जाए।[1]

एक रिवायत में यह है कि हज़रत अबू ख़ालिद कहते हैं, मैंने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० को मुख़्तसर नमाज़ पढ़ाते हुए देखा।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ (इतनी मुख़्तसर) नमाज़ पढ़ा करते थे कि अगर आज तुममें से कोई इतनी मुख़्तसर नमाज़ पढ़ा दे, तो तुम उसे बहुत बड़ा ऐब समझो।[2]

हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु एक मज्लिस में तशरीफ़ ले गए। इतने में नमाज़ खड़ी हो गई। उन लोगों के इमाम ने आगे बढ़कर नमाज़ पढ़ाई। वह इमाम साहब नमाज़ में काफ़ी देर बैठे रहे। वह जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो हज़रत अदी रज़ि० ने फ़रमाया, तुममें से जो हमारा इमाम है, उसे चाहिए कि वह रुकूअ-सज्दा तो पूरा करे (लेकिन क़ियाम और क़ादे को लम्बा न करे) क्योंकि उसके पीछे छोटे, बड़े, बीमार, मुसाफ़िर और ज़रूरतमंद हर तरह के लोग हैं।

इसके बाद जब अगली नमाज़ का वक़्त आया तो हज़रत अदी रज़ि० ने आगे बढ़कर नमाज़ पढ़ाई, रुकूअ-सज्दा पूरा किया और बाक़ी नमाज़ (यानी क़ियाम और क़ादा) को मुख़्तसर किया और नमाज़ से फ़ारिग़ होकर फ़रमाया, हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 71
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 71

पीछे इसी तरह नमाज़ पढ़ा करते थे।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ि० का नमाज़ में रोना

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात गुज़ारा करते थे, फिर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ान देकर हुज़ूर सल्ल० को बुलाया करते थे, फिर हुज़ूर सल्ल० खड़े होकर ग़ुस्ल करते। अब भी मुझे पानी हुज़ूर सल्ल० के गालों और बालों पर गिरता हुआ नज़र आ रहा है, फिर हुज़ूर सल्ल० बाहर तशरीफ़ ले जाते और नमाज़ पढ़ाते। मैं हुज़ूर सल्ल० के रोने की आवाज़ सुना करती। आगे और हदीस भी ज़िक्र की।[2]

हज़रत उबैद बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि आपने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सबसे ज़्यादा जो अजीब बात देखी है, वह हमें बता दें, पहले तो ख़ामोश हो गईं, फिर फ़रमाया, एक रात हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ आइशा रज़ि० ! मुझे छोड़ो, आज रात मैं अपने रब की इबादत करूं। मैंने अर्ज़ किया, अल्लाह की क़सम ! मुझे आपका क़ुर्ब भी पसन्द है और जिस काम से आपको ख़ुशी हो, वह भी पसन्द है।

चुनांचे हुज़ूर उठे और वुज़ू किया, फिर खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगे और नमाज़ में रोते रहे और इतना रोए कि आपकी गोद गीली हो गई और बैठकर इतना रोए कि आपकी दाढ़ी आंसुओं से तर हो गई (फिर (सज्दे में) इतना रोए कि ज़मीन तर हो गई। फिर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्ल० को नमाज़ की इत्तिला देने आए। जब उन्होंने हुज़ूर सल्ल० को रोते हुए देखा तो अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप रो रहे हैं, हालांकि अल्लाह ने आपके अगले-

---

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 73,
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 89

पिछले तमाम गुनाह माफ़ कर दिए हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तो क्या मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूं? आज रात मुझ पर ऐसी आयत उतरी है कि जो आदमी उसे पढ़े और उसमें ग़ौर व फ़िक्र न करे, उसके लिए हलाकत है। वह आयत यह है—

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ

से लेकर आख़िर तक (सूरः आले इम्रान, आयत 190)

तर्जुमा—'बेशक आसमानों के और ज़मीन के बनाने में और एक के बाद एक रात और दिन के आने-जाने में दलीलें हैं अक़्ल वालों के लिए।'[1]

हज़रत मुतर्रिफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि के वालिद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ते हुए देखा और आपके सीने से रोने की ऐसी आवाज़ आ रही थी, जैसे चक्की के चलने की होती है।[2]

नसई की रिवायत में यह है कि सीने से रोने की ऐसी आवाज़ आ रही थी, जैसे हंडिया पकने की होती है।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन शद्दाद बिन अलहाद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं सुबह की नमाज़ में आख़िरी सफ़ में था। मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के रोने की आवाज़ सुनी, वह सूरः यूसुफ़ पढ़ रहे थे। पढ़ते-पढ़ते इस आयत तक पहुंचे।[4]

إِنَّمَا أَشْكُو بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ (سورت یوسف آیت ۸۶)

(सूरः यूसुफ़, आयत 86) हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पीछे नमाज़ पढ़ी, तो मैंने तीन सफ़ पीछे से उनके रोने की आवाज़ सुनी।[5]

---

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 32,
2. अबू दाऊद
3. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 315, हाफ़िज़, भाग 2, पृ० 141
4. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 387
5. हुलीया, भाग 1, पृ० 52,

नमाज़ में ख़ुशूअ-ख़ुज़ूअ

हज़रत सह्ल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु नमाज़ में इधर-उधर मुतवज्जह नहीं हुआ करते थे।[1]

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा नमाज़ में इस तरह खड़े होते, जैसे कि वह लकड़ी हों और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु भी ऐसे ही किया करते थे। हज़रत मुजाहिद रह० कहते हैं, यह है नमाज़ में ख़ुशूअ।[2]

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा जब नमाज़ में खड़े होते तो ऐसा मालूम होता, जैसे वह कोई लकड़ी हों। (बिल्कुल हरकत न करते) और यह कहा जाता था कि यह बात नमाज़ के ख़ुशूअ में से है।[3]

हज़रत इब्ने मुन्कदिर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, अगर तुम हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को नमाज़ पढ़ते हुए देख लो तो तुम कहोगे, यह किसी पेड़ की डाल हैं जिसे हवा हिला रही है और मिन जनीक़ के पत्थर इधर-उधर गिरा करते थे, लेकिन वह नमाज़ में इन पत्थरों की बिल्कुल परवाह न करते।[4]

हज़रत ज़ैद बिन अब्दुल्लाह शैबानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को देखा कि जब वह नमाज़ के लिए जाते तो बहुत ही धीरे चलते। अगर कोई चींटी उनके साथ चलती तो वह उस चींटी से भी आगे न निकल सकते।[5]

हज़रत वासे बिन हिब्बान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा नमाज़ में यह चाहते थे कि उनके जिस्म

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 347
2. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 360
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 335, इसाबा, भाग 2, पृ० 310
4. हुलीया, भाग 1, पृ० 335
5. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 154,

की हर चीज़ क़िब्ला रुख़ रहे, यहां तक कि वह अपने अंगूठे को भी क़िब्ला रुख़ रखते थे।[1]

हज़रत अता रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा जब नमाज़ पढ़ा करते तो (बिल्कुल हरकत न करते और) ऐसा मालूम होता कि वह कोई उभरी हुई चीज़ हैं जिसे ज़मीन में गाड़ा हुआ है।[2]

हज़रत आमश रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु जब नमाज़ पढ़ते तो ऐसा लगता जैसे वह पड़ा हुआ कपड़ा हों।[3]

हज़रत ताऊस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की तरह नमाज़ में क़िब्ला रुख़ रहने में बहुत ज़्यादा एहतिमाम करते हुए किसी को नहीं देखा (वह नमाज़ में अपना चेहरा, हाथ और पांव क़िब्ला रुख़ रखने का सख़्ती से एहतिमाम करते थे।)[4]

हज़रत अबू बुरदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पहलू में खड़े होकर नमाज़ पढ़ी। मैंने उन्हें सज्दे में यह कहते हुए सुना, ऐ अल्लाह! तू मेरा सबसे ज़्यादा महबूब बन जा और मुझे हर चीज़ से ज़्यादा अपने से डरने वाला बना दे और उन्हें सज्दे में यह कहते हुए भी सुना, ऐ मेरे रब! चूंकि आपने मुझ पर बड़े-बड़े इनाम फ़रमाए हैं, इसलिए मैं कभी भी मुजरिमों की मदद नहीं करूंगा।[5]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की वालिदा हज़रत उम्मे रोमान

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 157
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 335, हैसमी, भाग 2, पृ० 136,
3. हैसमी, भाग 2, पृ० 136,
4. हुलीया, भाग 1, पृ० 304
5. अबू नुऐम

रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं एक बार नमाज़ पढ़ रही थी। नमाज़ में इधर-उधर झुकने लगी। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने देख लिया तो मुझे इस ज़ोर से डांटा कि मैं (डर की वजह से) नमाज़ तोड़ने के क़रीब हो गई, फिर इर्शाद फ़रमाया कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि जब कोई आदमी नमाज़ में खड़ा हो तो अपने तमाम बदन को बिल्कुल सुकून से रखे, यहूदियों की तरह हिले नहीं। बदन के तमाम अंगों का नमाज़ में बिल्कुल सुकून से रहना नमाज़ के पूरा होने का हिस्सा है।[1]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुअक्कदा सुन्नतों का एहतिमाम फ़रमाना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत नमाज़ों के बारे में पूछा, तो उन्होंने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल० ज़ुहर से पहले मेरे घर में चार रक्अत नमाज़ पढ़ते, फिर बाहर तशरीफ़ ले जाकर लोगों को नमाज़ पढ़ाते, फिर मेरे घर वापस आकर दो रक्अत नमाज़ पढ़ते। आप लोगों को मग़रिब की नमाज़ पढ़ाते, फिर मेरे घर वापस आकर दो रक्अत नमाज़ पढ़ते, फिर आप लोगों को इशा की नमाज़ पढ़ाते, फिर मेरे घर आकर दो रक्अत नमाज़ पढ़ते, फिर रात को नौ रक्अत नमाज़ पढ़ते, जिनमें वित्र की नमाज़ भी शामिल होती और रात को कभी बहुत देर तक खड़े होकर नमाज़ पढ़ते और कभी बहुत देर तक बैठकर नमाज़ पढ़ते। जब खड़े होकर क़िरात फ़रमाते तो खड़े होकर ही रुकूअ सज्दा फ़रमाते और जब बैठकर क़िरात फ़रमाते तो बैठकर ही रुकूअ सज्दा फ़रमाते और जब सुबह-सादिक़ हो जाती और फ़ज्र का वक़्त हो जाता तो आप दो रक्अत नमाज़ पढ़ते, फिर बाहर तशरीफ़ ले जाते और लोगों को फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाते।[2]

1. हुलीया, भाग 9, पृ० 304, कंज़, भाग 4, पृ० 230
2. सिफ़तुस्सफ़वा, भाग 1, पृ० 75, जमउल फ़वाअद, भाग 1, पृ० 110,

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़ज्र की दो सुन्नतों से ज़्यादा और किसी सुन्नत का एहतिमाम नहीं फ़रमाते थे।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़ज्र से पहले की दो रक्अतों के लिए जितनी जल्दी करते हुए देखा है, ख़ैर के किसी काम में और ग़नीमत के माल में उतनी जल्दी करते हुए नहीं देखा।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़ुहर से पहले चार रक्अत और सुबह से पहले दो रक्अत कभी नहीं छोड़ते थे।[3]

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु सुबह की नमाज़ की इत्तिला देने के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए। हज़रत आइशा रज़ि० उनसे कुछ बात पूछने लग गईं, जिसमें देर हो गई और सुबह का चांदना ज़्यादा हो गया। हज़रत बिलाल रज़ि० ने खड़े होकर हुज़ूर सल्ल० को ख़बर की और बराबर ख़बर करते रहे, लेकिन हुज़ूर सल्ल० फ़ौरी तौर पर बाहर तशरीफ़ न लाए, बल्कि थोड़ी देर के बाद बाहर आए और लोगों को नमाज़ पढ़ाई।

फिर हज़रत बिलाल रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० को बताया कि हज़रत आइशा रज़ि० मुझसे कुछ पूछने लग गई थीं, जिसकी वजह से मुझे देर हो गई थी। फिर मैंने आपको बार-बार इत्तिला दी, लेकिन आप फ़ौरन तशरीफ़ न लाए, बल्कि कुछ देर में आए, इसकी क्या वजह है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैंने फ़ज्र की दो रक्अत सुन्नत पढ़ी थी, इस वजह से मुझे बाहर आने में देर हो गई।

हज़रत बिलाल रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! (आप

1. बुख़ारी, मुस्लिम,
2. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 361,
3. बुख़ारी,

सुन्नत न पढ़ते, क्योंकि) सुबह तो बहुत ज़्यादा रोशन हो गई थी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर सुबह इससे भी ज़्यादा रोशन हो जाती तो भी मैं यह दो रक्अत नमाज़ ज़रूर पढ़ता और बहुत अच्छे और उम्दा तरीक़े से पढ़ता।[1]

हज़रत क़ाबूस रहमतुल्लाहि अलैहि नक़ल करते हैं कि मेरे वालिद ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास यह पैग़ाम भेजा कि किस नमाज़ को पाबन्दी से पढ़ना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ज़्यादा पसन्द था? हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० ज़ुहर से पहले चार रक्अत पढ़ते थे और उनमें लम्बा क़ियाम फ़रमाते और रुकूअ-सज्दा अच्छी तरह करते।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन साइब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़ुहर से पहले और ज़वाल के बाद चार रक्अत नमाज़ पढ़ते थे और फ़रमाया करते थे कि यह ऐसी घड़ी है जिसमें आसमान के दरवाज़े खुलते हैं। मैं यह चाहता हूं कि इस घड़ी में मेरा कोई नेक अमल ऊपर चला जाए।[3]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़ुहर से पहले चार और ज़ुहर के बाद दो रक्अत पढ़ा करते थे।[4]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब ज़ुहर से पहले चार रक्अत नमाज़ न पढ़ सकते तो उन्हें ज़ुहर के बाद पढ़ा करते थे।[5]

हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु

---

1. अबू दाऊद, भाग 2, पृ० 259, रियाज़ुस्सालिहीन, पृ० 416,
2. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 364,
3. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 364,
4. तिर्मिज़ी, पृ० 57
5. तिर्मिज़ी, पृ० 57

अलैहि व सल्लम मेरे मेहमान बने, तो मैंने देखा कि आप हमेशा ज़ुहर से पहले चार रक्अत पढ़ा करते थे और फ़रमाया करते थे कि जब सूरज ढल जाता है, तो आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते और ज़ुहर तक उनमें से कोई दरवाज़ा बन्द नहीं होता, इसलिए मैं चाहता हूं कि उस घड़ी में मेरे लिए ख़ैर का कोई अमल ऊपर चला जाए।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अस्र से पहले चार रक्अत नमाज़ पढ़ते थे। चार रक्अत के दर्मियान बैठकर अत्तहीयात पढ़ते और उसमें (अस्सलातु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन०) कहकर मुक़र्रब फ़रिश्तों और मुसलमानों और मोमिनों पर सलाम भेजते।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अस्र से पहले दो रक्अत नमाज़ पढ़ा करते थे।[3]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मग़्रिब के बाद दो रक्अत नमाज़ पढ़ते थे और उनमें इतनी लम्बी क़िरात फ़रमाते थे कि मस्जिद वाले सहाबा (अपनी-अपनी नमाज़ पूरी करके) इधर-उधर बिखर जाते थे।[4]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ि० का मुअक्कदा सुन्नतों का एहतिमाम करना

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़ज्र से पहले की सुन्नतों के बारे में फ़रमाया कि ये दो रक्अतें मुझे लाल ऊंटों से ज़्यादा पसन्द हैं।[5]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 364, कंज़, भाग 4, पृ० 189
2. तिर्मिज़ी, पृ० 58
3. रियाज़, पृ० 519, मज्मा, भाग 2, पृ० 221
4. हैसमी, भाग 2, पृ० 230,
5. कंज़, भाग 4, पृ० 201

कि मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। वह ज़ुहर से पहले नमाज़ पढ़ रहे थे। मैंने पूछा, यह कौन-सी नमाज़ है? हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह नमाज़ तहज्जुद की नमाज़ की तरह गिनी जाती है।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उत्बा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने ज़ुहर से पहले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ उनके घर में चार रक्अत नमाज़ पढ़ी।[2]

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन उसैद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने देखा कि जब ज़वाल का वक़्त हो जाता तो हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु चार रक्अत नमाज़ बहुत लम्बी पढ़ते। मैंने उनसे इन रक्अतों के बारे में पूछा तो फ़रमाया कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ये रक्अतें पढ़ते हुए देखा है। आगे हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु जैसी हदीस ज़िक्र की है।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन यज़ीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से सबसे ज़्यादा ताल्लुक़ रखने वाले एक आदमी ने मुझे बताया कि जब सूरज ढल जाता तो हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० खड़े होकर चार रक्अत नमाज़ पढ़ते और उनमें (सौ से ज़्यादा आयतों वाली मिएन सूरतों में से दो सूरतें पढ़ते, फिर जब मुअज़्ज़िन अज़ान देते तो पूरे कपड़े पहनते और नमाज़ के लिए चले जाते।[4]

हज़रत अस्वद, हज़रत मुर्रा और हज़रत मस्रूक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, दिन की नमाज़ों में से सिर्फ़ ज़ुहर की नमाज़ से पहले की चार रक्अतें रात की

1. कंज़, भाग 4, पृ० 189
2. कंज़, भाग 4, पृ० 189
3. कंज़, भाग 4, पृ० 189
4. हैसमी, भाग 2, पृ० 221

तहज्जुद के बराबर हैं और दिन की तमाम नमाज़ों पर इन चार रक्अतों को ऐसी फ़ज़ीलत है जैसे जमाअत की नमाज़ को अकेले की नमाज़ पर।[1]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि सहाबा किराम रज़ि० दिन की नमाज़ों में से सिर्फ़ ज़ुहर से पहले की चार रक्अतों को रात की तहज्जुद के बराबर समझते थे और यह कहते थे कि ये चार रक्अतें रात की चार रक्अतों के बराबर हैं।[2]

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु ज़ुहर से पहले चार रक्अत नमाज़ पढ़ा करते थे और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से भी यही रिवायत है।[3] जब सूरज ढल जाता तो हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा मस्जिद में जाकर ज़ुहर से पहले बारह रक्अत नमाज़ पढ़ते, फिर बैठ जाते। हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ज़ुहर से पहले आठ रक्अत और ज़ुहर के बाद चार रक्अत पढ़ते।[4]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे तीन कामों का हुक्म दिया। मैं जब तक ज़िंदा रहूंगा, उन्हें कभी नहीं छोड़ूंगा। इनमें से एक काम यह है कि मैं अस्र से पहले चार रक्अत पढ़ा करूं, इसलिए मैं जब तक ज़िंदा रहूंगा, ये रक्अतें ज़रूर पढ़ा करूंगा।[5]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, अल्लाह उस आदमी पर रहम फ़रमाए जो अस्र से पहले चार रक्अत नमाज़ पढ़े।[6]

हज़रत अबू फ़ाख़ता रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अली

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 221, तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 365
2. कंज़, भाग 4, पृ० 189
3. कंज़, भाग 4, पृ० 189,
4. कंज़, भाग 4, पृ० 189
5. इब्नुन्नज्जार
6. कंज़, भाग 4, पृ० 191,

रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मग़रिब और इशा के बीच वाली नमाज़ का नाम 'सलातुल ग़फ़लति' है। फिर हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, लेकिन अब तुम उस नमाज़ के बारे में ग़फ़लत में पड़ चुके हो (कि पढ़ते नहीं हो।)[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, जो मग़रिब के बाद चार रक्अत नमाज़ पढ़े, वह लड़ाई के बाद लड़ाई करने वाले की तरह गिना जाएगा।[2]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ि० का तहज्जुद की नमाज़ का एहतिमाम करना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी क़ैस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया, तहज्जुद की नमाज़ न छोड़ना, क्योंकि हज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कभी तहज्जुद की नमाज़ नहीं छोड़ा करते थे और हुज़ूर सल्ल० जब बीमार होते या थके हुए होते तो बैठकर तहज्जुद पढ़ लेते।[3]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब आयत—

يَا أَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ قُمِ اللَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا (سورت مزمل آيت ۱-۲)

'ऐ कपड़ों में लिपटने वाले रात को (नमाज़ में) खड़े रहा करो, मगर थोड़ी-सी रात' (सूरः मुज़्ज़म्मिल, आयत 1-2) उतरी तो तहज्जुद की नमाज़ हम पर फ़र्ज़ हो गई और हम रात को इतनी तहज्जुद पढ़ते कि हमारे पांव सूज जाते, फिर अल्लाह ने यह आयत उतार कर छूट दे दी—

عَلِمَ أَنْ سَيَكُونُ مِنْكُمْ مَرْضَى

से लेकर आख़िर तक (सूरः मुज़्ज़म्मिल, आयत 20)

---

1. कंज़, भाग 4, पृ० 192,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 193,
3. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 401

'उसको (यह भी) मालूम है कि कुछ आदमी तुममें बीमार होंगे।' (इस आयत के उतरने पर तहज्जुद का फ़र्ज़ होना ख़त्म हो गया, लेकिन नफ़्ल नमाज़ों में सबसे अफ़ज़ल होना बाक़ी रहा।)[1]

हज़रत साद बिन हश्शाम रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपनी बीवी को तलाक़ दे दी और फिर मदीना मुनव्वरा गए, ताकि अपनी वहां की सारी जायदाद बेचकर घोड़े और हथियार ख़रीदें और मरते दम तक रूम वालों से जिहाद करते रहें। रास्ते में उनकी अपनी क़ौम के कुछ लोगों से मुलाक़ात हुई। उन लोगों ने उन्हें बताया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में उनकी क़ौम के छः आदमियों ने भी ऐसा करने का इरादा किया था, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया था कि आप लोग मेरे अच्छे तरीक़े पर नहीं चलते और उन्हें ऐसा करने से मना फ़रमा दिया था।

इस पर हज़रत साद रज़ि० ने अपनी बीवी से रुजू कर लिया और उन लोगों को अपने इस रुजू पर गवाह बनाया, फिर हमारे पास वापस आए और हज़रत साद रज़ि० ने हमें बताया कि मैं हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास गया था और उनसे वित्र के बारे में पूछा था, तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें ऐसा आदमी न बताऊं जो तमाम धरती वालों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वित्र को सबसे ज़्यादा जानने वाला है?

मैंने कहा, ज़रूर बताएं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने कहा, हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास जाओ और उनसे पूछो और वह जो जवाब दें, वह वापस आकर मुझे भी बताना, चुनांचे मैं हज़रत हकीम बिन अफ़लह के पास गया और मैंने उनसे अर्ज़ किया कि वह मेरे साथ हज़रत आइशा रज़ि० के पास चलें। हज़रत हकीम ने कहा, नहीं, मैं तो उनके क़रीब भी नहीं जाऊंगा, क्योंकि मैंने उन्हें (हज़रत अली और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हुमा की) इन दो जमाअतों के बारे में

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 251

कुछ फ़रमाने से मना किया था, लेकिन वह न मानीं और इस बारे में बहुत कुछ कर गुज़रीं।

हज़रत साद कहते हैं कि मैंने हज़रत हकीम को क़सम दी, तो वह मेरे साथ चल पड़े। चुनांचे हम दोनों हज़रत आइशा रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हज़रत आइशा रज़ि० ने हज़रत हकीम को पहचान लिया और फ़रमाया, क्या तुम हकीम हो? हज़रत हकीम ने कहा, जी हां। हज़रत आइशा रज़ि० ने पूछा, यह तुम्हारे साथ कौन है? हज़रत हकीम ने कहा, यह साद बिन हश्शाम हैं।

हज़रत आइशा रज़ि० ने पूछा, इनके वालिद कौन-से हश्शाम हैं? हज़रत हकीम ने कहा, वह इब्ने आमिर हैं। इस पर हज़रत आइशा रज़ि० ने हज़रत आमिर रज़ि० के लिए रहमत की दुआ की और फ़रमाया, आमिर तो बहुत अच्छे आदमी थे। फिर मैंने कहा, ऐ उम्मुल मोमिनीन! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़्लाक़ के बारे में आप मुझे बताएं। हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुम क़ुरआन नहीं पढ़ते हो? मैंने कहा, जी हां, पढ़ता हूं। हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० के अख़्लाक़ क़ुरआन के मुताबिक़ थे।

यह जवाब सुनकर मैंने मज्लिस से उठने का इरादा किया, लेकिन फिर ख़्याल आया कि हुज़ूर सल्ल० के रात के क़ियाम के बारे में भी पूछ लूं, तो मैंने अर्ज़ किया, ऐ उम्मुल मोमिनीन! आप मुझे हुज़ूर सल्ल० के रात के क़ियाम के बारे में भी बताएं। हजरत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुम सूरः मुज़्ज़म्मिल नहीं पढ़ते हो? मैंने कहा, जी हां पढ़ता हूं। हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, इस सूरः के शुरू में अल्लाह ने रात का क़ियाम फ़र्ज़ किया था।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० और आपके सहाबा रज़ि० साल भर बराबर रात को इतना लम्बा क़ियाम करते रहे कि उनके पांव सूज गए और अल्लाह ने बारह महीने तक इस सूरः की आख़िरी आयत को आसमान में रोके रखा। फिर अल्लाह ने आख़िरी हिस्से को नाज़िल फ़रमाकर रात

के क़ियाम में कमी कर दी। चुनांचे रात का क़ियाम पहले फ़र्ज़ था, फिर बाद में नफ़्ल हो गया।

यह जवाब सुनकर मैंने उठने का इरादा किया, लेकिन फिर ख़्याल आया कि हुज़ूर सल्ल० के वित्र के बारे में भी पूछ लूं तो मैंने कहा, ऐ उम्मुल मोमिनीन! आप मुझे हुज़ूर सल्ल० के वित्र के बारे में भी बताएं। हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, हम हुज़ूर सल्ल० के लिए मिस्वाक और वुज़ू का पानी तैयार करके रख देते थे, तो फिर रात को जब अल्लाह आपको उठाते तो आप मिस्वाक करके वुज़ू करते, फिर आठ रकअत पढ़ते और उनमें सिर्फ़ आठवीं रक्अत के बाद बैठते और बैठकर ज़िक्र व दुआ करते और सलाम फेरे बग़ैर खड़े हो जाते और नवीं रक्अत पढ़ते। इसके बाद बैठकर (अत्तहीयात में) ज़िक्र व दुआ करते और फिर इतनी आवाज़ से सलाम फेरते जो हमें सुनाई देता, फिर सलाम के बाद बैठकर दो रक्अत नमाज़ पढ़ते। इस तरह ऐ मेरे बेटे! हुज़ूर सल्ल० की ग्यारह रक्अत हो जातीं।

फिर जब हुज़ूर सल्ल० की उम्र ज़रा ज़्यादा हो गई और आपका जिस्म भारी हो गया तो आप सात रक्अत पढ़कर सलाम फेरते और फिर बैठकर दो रक्अत पढ़ते। ऐ मेरे बेटे! इस तरह यह कुल नौ रक्अत हो जातीं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब कोई नमाज़ शुरू फ़रमाते तो आपको यह पसन्द था कि उसे पाबन्दी से पढ़ें, इसलिए अगर नींद की ज़्यादती या दर्द या किसी बीमारी की वजह से आपका रात का क़ियाम रह जाता तो आप दिन में बारह रक्अत पढ़ते और मुझे यह मालूम नहीं है कि हुज़ूर सल्ल० ने कभी सारी रात फ़ज्र तक क़ुरआन पढ़ा हो या रमज़ान के अलावा किसी सारे महीने के रोज़े रखे हों।

हज़रत साद रज़ि० कहते हैं कि मैं फिर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमत में गया और उन्हें हज़रत आइशा रज़ि० की सारी हदीस सुनाई तो उन्होंने फ़रमाया कि हज़रत आइशा रज़ि० ने ठीक फ़रमाया। अगर मेरा इनके यहां आना-जाना होता तो मैं ख़ुद

जाकर उनसे सीधे-सीधे यह हदीस सुनता।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब सूरः मुज़्ज़म्मिल का शुरू का हिस्सा उतरा तो सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम रात को इतनी नमाज़ पढ़ते, जितनी रमज़ान के महीने में रात को पढ़ा करते थे और इस सूरः के शुरू के हिस्से के और आख़िरी हिस्से के उतरने में एक साल का वक़्फ़ा था।[2]

हज़रत यह्या बिन सईद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु रात के शुरू में वित्र पढ़ लेते थे और फिर जब रात को तहज्जुद के लिए उठते तो दो-दो रक्अत नमाज़ पढ़ते।[3]

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु, जितनी देर अल्लाह चाहते, रात को नमाज़ पढ़ते रहते। जब रात आधी हो जाती तो अपने घरवालों को नमाज़ के लिए उठाते और फ़रमाते नमाज़ और यह आयत

وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ

'वामुर अह्ल-क बिस्सलाति' से लेकर

وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى

'वल आक़िबतु लित्तक़्वा' तक (सूरः ताहा, आयत 132) पढते।

तर्जुमा—और अपने से मुताल्लिक़ लोगों को (यानी ख़ानदान वालों को या ईमान वालों को) भी नमाज़ का हुक्म करते रहिए और ख़ुद भी उसके पाबन्द रहिए। हम आपसे (और दूसरों से) मआश (कमवाना) नहीं चाहते। मआश तो आपको हम देंगे और बेहतर अंजाम तो परहेज़गारी ही का है।[4]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उस्मान बिन अबुल आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु

---

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 435,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 281
3. कंज़, भाग 4, पृ० 279
4. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 380

अन्हु (के इंतिक़ाल के बाद इन) की एक बीवी से शादी की और शादी के मौक़े पर उन्होंने कहा, मैंने इनसे शादी माल और औलाद के शौक़ में नहीं की, बल्कि इस वजह से की है कि वह मुझे हज़रत उमर रज़ि० की रात (के मामूलात) के बारे में बताएं, चुनांचे शादी के बाद उनसे पूछा कि हज़रत उमर रज़ि० की रात की नमाज़ किस तरह होती थी? उन्होंने कहा, वह इशा की नमाज़ पढ़ा करते और हमें इस बात का हुक्म देते कि उनके सर के पास पानी का बरतन रखकर ढक दें। (चुनांचे हम ऐसा करते) वह रात को उठते और पानी में हाथ डालकर उसे अपने चेहरे और हाथों पर फेरते, फिर अल्लाह का ज़िक्र करते (फिर सो जाते) इस तरह बार-बार उठते और अल्लाह का कुछ ज़िक्र करते, यहां तक कि उनकी तहज्जुद की नमाज़ का वक़्त हो जाता।

हज़रत इब्ने बुरैदा (रिवायत करने वाले) ने (हज़रत हसन रज़ि० से) पूछा, आपको यह वाक़िया किसने सुनाया? उन्होंने कहा, हज़रत उस्मान बिन अबिल आस रज़ि० की बेटी ने। हज़रत इब्ने बुरैदा रज़ि० ने कहा, वह तो भरोसे के क़ाबिल हैं।[1]

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु आधी रात को नमाज़ पढ़ना पसन्द करते।[2]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रात को काफ़ी देर तक नमाज़ पढ़ते, फिर पूछते, ऐ नाफ़ेअ! क्या रात का आख़िरी हिस्सा आ गया? मैं कहता, नहीं, तो फिर नमाज़ पढ़ने लगते, फिर कहते, ऐ नाफ़ेअ! क्या रात का आख़री हिस्सा आ गया? मैं कहता, जी हां, तो बैठकर सुबह सादिक़ तक दुआ-ए-इस्तिग़फ़ार में लगे रहते।[3]

हज़रत मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने उमर

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 73,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 279
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 303, इसाबा, भाग 2, पृ० 349

रज़ियल्लाहु अन्हुमा जब भी रात को उठते, तो नमाज़ शुरू कर देते ।[1]

हज़रत अबू ग़ालिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा मक्का में हमारे यहां ठहरा करते और रात को तहज्जुद पढ़ा करते । एक रात सुबह सादिक़ से कुछ देर पहले मुझसे फ़रमाया, ऐ अबू ग़ालिब ! क्या तुम खड़े होकर नमाज़ नहीं पढ़ते ? क्या ही अच्छा हो, अगर तुम तिहाई क़ुरआन पढ़ लो ? मैंने कहा, सुबह होने वाली है, मैं इतनी देर में तिहाई क़ुरआन कैसे पढ़ सकता हूं ? उन्होंने फ़रमाया, सूरः इख़्लास 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' तिहाई क़ुरआन के बराबर है ।[2]

हज़रत अलक़मा बिन क़ैस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ एक रात गुज़ारी । शुरू रात में वह सो गए, फिर खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगे और क़ुरआन तर्तील से ऐसे ठहर-ठहर कर पढ़ रहे थे जैसे कि मुहल्ले की मस्जिद में इमाम पढ़ता है और गाने जैसी आवाज़ न थी और इतनी ऊंची आवाज़ से पढ़ रहे थे कि आस-पास वाले सुन लें और आवाज़ को गले में घुमा नहीं रहे थे । जब सुबह सादिक़ में इतना वक़्त रह गया जितना मग़रिब की अज़ान से लेकर मग़रिब की नमाज़ के ख़त्म होने तक का होता है, तो फिर उन्होंने वित्र पढ़ें ।[3]

हज़रत तारिक़ बिन शिहाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु के यहां एक रात यह देखने के लिए गुज़ारी कि वह रात को इबादत में कितनी मेहनत करते हैं, तो यही देखा कि उन्होंने रात के आख़िरी हिस्से में तहज्जुद की नमाज़ पढ़ी और जैसा उनके बारे में गुमान था, वैसा नज़र न आया । आख़िर मैंने यह बात ख़ुद उनसे ज़िक्र की तो फ़रमाने लगे कि उन पांच नमाज़ों की पाबन्दी करो, क्योंकि ये पांच नमाज़ें उन छोटे-मोटे ज़ख़्मों (यानी छोटे गुनाहों) को मिटा देती हैं, बशर्तेकि कोई जान-लेवा ज़ख़्म (यानी बड़ा गुनाह) न हो ।

1. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 304,
2. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 304,
3. हैसमी, भाग 2, पृ० 266,

जब लोग इशा की नमाज़ पढ़ लेते हैं तो तीन हिस्सों में बंट जाते हैं। कुछ लोग तो वे हैं जिनके लिए यह रात वबाल है, रहमत नहीं और कुछ लोग वे हैं, जिनके लिए रहमत है, वबाल नहीं और कुछ लोग वे हैं, जिनके लिए न वबाल है, न रहमत।

जो लोग रात के अंधेरे और लोगों की ग़फ़लत को ग़नीमत समझकर बे-धड़क गुनाहों में लग जाते हैं, उनके लिए यह रात वबाल है, रहमत नहीं और जिनके लिए यह रात रहमत है, वबाल नहीं, ये वह लोग हैं जो रात के अंधेरे और लोगों की ग़फ़लत को ग़नीमत समझकर खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लग जाते हैं। यह रात उनके लिए रहमत है, वबाल नहीं और जिनके लिए न रहमत है, न वबाल, ये वह लोग हैं, जो इशा पढ़कर सो जाते हैं, उनके लिए न रहमत है, न वबाल। तुम तेज़ रफ़्तारी से बचो और बीच का रास्ता अख़्तियार करो और जितना करो, उसे पाबन्दी से करो।[1]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ि० का सूरज निकलने से लेकर ज़वाल तक के वक़्त के दर्मियान नफ़्लों का एहतिमाम करना

हज़रत उम्मे हानी फ़ाख़्ता बिन्त अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मक्का की जीत के मौक़े पर मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गई। हुज़ूर सल्ल० उस वक़्त ग़ुस्ल फ़रमा रहे थे। जब आप ग़ुस्ल से फ़ारिग़ हुए तो आपने आठ रक्अत नमाज़ पढ़ी और यह चाश्त का वक़्त था।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चाश्त के वक़्त चार रक्अत पढ़ा करते थे और कभी उससे ज़्यादा भी पढ़ते।[3]

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 401,
2. रियाज़, पृ० 424,
3. रियाज़, पृ० 424,

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को चाश्त की छः रक्अत नमाज़ पढ़ते देखा। इसके बाद मैंने ये रक्अतें कभी नहीं छोड़ीं।[1]

हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का की जीत के दिन मेरे पास तशरीफ़ लाए और चाश्त की छः रक्अत नमाज़ पढ़ीं।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने चाश्त की दो रक्अत नमाज़ पढ़ी तो उनकी बीवी ने उनसे कहा, आपने तो दो रक्अत पढ़ी है। उन्होंने फ़रमाया, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जीत की ख़ुशख़बरी मिली थी, उस वक़्त भी आपने चाश्त की दो रक्अत नमाज़ पढ़ी थी और जब आपको अबू जह्ल के सर की ख़ुशख़बरी मिली थी, उस वक़्त भी दो रक्अत पढ़ी थी।[3]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब पढ़ते-पढ़ते मैं इस आयत पर गुज़रा, 'बिल अशीयि वल इशराक़ि' (सूरः स्वाद, आयत 18) (शाम और सुबह तस्बीह किया करें), तो मुझे पता नहीं चलता था कि इसका क्या मतलब है? यहां तक कि हज़रत उम्मे हानी बिन्त अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हा ने मुझे बताया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे पास आए और एक प्याले में वुज़ू का पानी मंगवाया। मैं देख रही थी कि इस प्याले में आटे का असर था। हुज़ूर सल्ल० ने वुज़ू किया और फिर चाश्त की नमाज़ पढ़ी, फिर फ़रमाया, ऐ उम्मे हानी! यह इशराक़ की नमाज़ है।[4]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक लश्कर भेजा। वह बहुत-सा ग़नीमत का माल लेकर बहुत ही जल्द वापस आ गया। एक आदमी ने अर्ज़ किया, ऐ

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 237,
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 238,
3. हैसमी, भाग 2, पृ० 238,
4. हैसमी, भाग 2, पृ० 238,

अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमने ऐसी फ़ौज कभी नहीं देखी जो इससे ज़्यादा जल्दी वापस आ गई हो और इससे ज़्यादा ग़नीमत का माल लेकर आई हो। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें इससे जल्दी वापस आने वाला और इससे ज़्यादा ग़नीमत का माल हासिल करने वाला आदमी न बताऊं? यह वह आदमी है, जो अच्छी तरह से वुज़ू करे, फिर मस्जिद में जाकर सुबह की नमाज़ पढ़े फिर उसके बाद चाश्त की नमाज़ पढ़े, तो यह आदमी बहुत ज़्यादा ग़नीमत का माल लेकर बहुत जल्द वापस आ गया है।[1]

हज़रत अता अबू मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को मस्जिद में चाश्त की नमाज़ पढ़ते हुए देखा।[2]

हज़रत इक्रिमा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा एक दिन चाश्त की नमाज़ पढ़ते और दस दिन छोड़ देते।[3]

हज़रत आइशा बिन्त साद रहमतुल्लाहि अलैहिमा कहती हैं, हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु चाश्त की आठ रक्अत नमाज़ पढ़ा करते थे।[4]

ज़ुहर और अस्र के दर्मियान नफ़्लों का एहतिमाम

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु चाश्त की नमाज़ नहीं पढ़ते थे, बल्कि ज़ुहर और अस्र के बीच नफ़्ल पढ़ते थे और रात को बड़ी लम्बी तहज्जुद पढ़ते।[5]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ज़ुहर से अस्र तक नमाज़ पढ़ते थे।[6]

---

1. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 428, भाग 1, पृ० 427
2. कंज़, भाग 4, पृ० 281,
3. कंज़, भाग 4, पृ० 281,
4. कंज़, भाग 4, पृ० 283
5. हैसमी, भाग 2, पृ० 258
6. हुलीया, भाग 1, पृ० 304,

मग़रिब और इशा के दर्मियान नफ़्लों का एहतिमाम

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास गया और हुज़ूर सल्ल० के साथ मग़रिब की नमाज़ पढ़ी, फिर हुज़ूर सल्ल० इशा तक नमाज पढ़ते रहे।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन अम्मार बिन यासिर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को मग़रिब के बाद छः रक्अत नमाज़ पढ़ते हुए देखा और हज़रत अम्मार रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने अपने महबूब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मग़रिब के बाद छः रक्अत नमाज़ पढ़ते हुए देखा और हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जो मग़रिब के बाद छः रक्अत नमाज़ पढ़ेगा उसके तमाम गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे, चाहे वे समुद्र की झाग के बराबर हों।[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक वक़्त ऐसा है जिसमें मैं जब भी हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गया, उन्हें नमाज़ पढ़ते हुए ही पाया और वह है मग़रिब और इशा के बीच का वक़्त। मैंने हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० से पूछा, एक वक़्त ऐसा है, जिसमें मैं जब भी आपके पास आता हूं, तो आपको नमाज़ पढ़ते हुए पाता हूं। उन्होंने फ़रमाया कि यह फ़ुर्सत का वक़्त है (या यह ग़फ़लत की घड़ी है, उस वक़्त लोग अपने खाने वग़ैरह में लग जाते हैं और अल्लाह से ग़ाफ़िल हो जाते हैं, इसलिए मैं ग़फ़लत की इस घड़ी में इबादत करता हूं।)[3]

हज़रत अस्वद बिन यज़ीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ग़फ़लत की घड़ी यानी मग़रिब और इशा के दर्मियान नफ़्ल नमाज़ पढ़ना बेहतरीन अमल है।[4]

---

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 369,
2. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 368,
3. हैसमी, भाग 2, पृ० 231,
4. हैसमी, भाग 2, पृ० 230,

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, फ़रिश्ते उन लोगों को घेर लेते हैं जो मग़्रिब और इशा के दर्मियान नफ़्ल पढ़ते हैं और यह अव्वाबीन की नमाज़ है।[1]

घर में दाख़िल होते वक़्त और घर से निकलते वक़्त नफ़्लों का एहतिमाम

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु (के बाद उन) की बीवी से शादी की। उसने उनकी बीवी से उनके किसी ख़ास अमल के बारे में पूछा, उसने कहा, वह जब भी घर से बाहर जाने का इरादा करते तो दो रक्अत नमाज़ पढ़ते और जब भी घर में दाख़िल होते तो भी दो रक्अत नमाज़ पढ़ते, अपने इस मामूल को कभी नहीं छोड़ते थे।[2]

तरावीह की नमाज़

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रमज़ान में रात को तरावीह पढ़ने की तर्ग़ीब देते थे, लेकिन उसके वाजिब होने का हुक्म नहीं देते थे, चुनांचे फ़रमाते थे जो रमज़ान की रातों में तरावीह ईमान व यक़ीन के साथ सवाब हासिल करने के शौक़ में पढ़ेगा, उसके पिछले तमाम गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे।[3]

एक रिवायत में यह है कि फिर हुज़ूर सल्ल० का इन्तिक़ाल हो गया और यह सिलसिला यों ही चलता रहा और फिर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के शुरू ज़माने में यह सिलसिला इसी तरह चलता रहा।[4]

---

1. कंज़, भाग 4, पृ० 193
2. इसाबा, भाग 2, पृ० 306,
3. मुस्लिम,
4. जमउल फ़वाइद

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार रमज़ान में बाहर तशरीफ़ लाए तो आपने देखा कि कुछ लोग मस्जिद के एक कोने में नमाज़ पढ़ रहे हैं। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, ये लोग कौन हैं? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, इनमें क़ुरआन का हाफ़िज़ कोई नहीं है, इसलिए हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु उन्हें नमाज़ पढ़ा रहे हैं और ये उनके पीछे पढ़ रहे हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उन्होंने ठीक किया और उनका यह काम बहुत अच्छा है।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अब्द क़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, रमज़ान की एक रात में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मस्जिद में गया, लोग अलग-अलग टोलियों में बंटे हुए थे, कोई अपनी नमाज़ पढ़ रहा था और एक जमाअत उसके साथ पढ़ रही थी। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मेरा ख़्याल यह हो रहा है कि अगर मैं इन सबको क़ुरआन के एक हाफ़िज़ के पीछे खड़ा कर दूं तो यह ज़्यादा बेहतर रहेगा। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने इसका पक्का इरादा कर लिया और इन सबको हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु के पीछे जमा कर दिया। फिर मैं हज़रत उमर रज़ि० के साथ दूसरी रात फिर गया, लोग अपने क़ारी (हज़रत उबई बिन काब रज़ि०) के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह बहुत अच्छी बिदअत है, लेकिन तुम शुरू रात में तो तरावीह पढ़ते हो और आख़िर रात में तहज्जुद छोड़कर सो जाते हो। मेरे नज़दीक तहज्जुद तरावीह से अफ़ज़ल है।[2]

हज़रत नौफ़ुल बिन इयास हुज़ली रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हम लोग हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में रमज़ान में अलग-अलग जमाअतों में तरावीह पढ़ा करते थे। एक जमाअत यहां तरावीह पढ़ रही है और एक वहां। जिस इमाम की आवाज़ ज़्यादा अच्छी

1. अबू दाऊद
2. मालिक, बुख़ारी, इब्ने ख़ुज़ैमा,

होती, लोग उसकी तरफ़ ज़्यादा चले जाते। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मेरे ख़्याल में लोगों ने क़ुरआन को गाने की चीज़ बना लिया है। ग़ौर से सुनो, अल्लाह की क़सम! मेरा बस चला तो इस सूरतेहाल को ज़रूर बदल दूंगा, चुनांचे तीन ही दिन के बाद हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया और उन्होंने तमाम लोगों को इकट्ठा करके तरावीह की नमाज़ पढ़ाई। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने आख़िरी सफ़ में खड़े होकर फ़रमाया, है तो यह (तरावीह का एक जमाअत बनकर पढ़ना) बिदअत, लेकिन है बहुत उम्दा।[1]

हज़रत अबू इस्हाक़ हमदानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु रमज़ान की पहली रात में बाहर तश्रीफ़ लाए तो देखा कि क़न्दीलें रोशन हैं और अल्लाह की किताब पढ़ी जा रही है। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ इब्ने ख़त्ताब रज़ि०! जैसे तुमने अल्लाह की मस्जिदों को क़ुरआन से मुनव्वर किया है, ऐसे ही अल्लाह तआला तुम्हारी क़ब्र को मुनव्वर फ़रमाए।[2]

हज़रत उर्वः रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने रमज़ान में तरावीह को एक बड़ी जमाअत में पढ़ने का सिलसिला शुरू किया और मर्दों के लिए हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु को इमाम मुक़र्रर किया और औरतों के लिए हज़रत सुलैमान बिन अबी हसमा रज़ियल्लाहु अन्हु को।[3]

हज़रत उमर बिन अब्दुल्लाह अन्सी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उबई बिन काब और हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हुमा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जगह खड़े होकर मर्दों को तरावीह की नमाज़ बारी-बारी पढ़ाया करते थे और हज़रत सुलैमान बिन अबी हसमा रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद के सेहन में औरतों को तरावीह

1. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 59
2. कंज़, भाग 4, पृ० 284, मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 387
3. कंज़, भाग 4, पृ० 283

पढ़ाया करते थे। जब हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा बने तो उन्होंने मर्दों और औरतों, सबके लिए एक ही इमाम मुक़र्रर कर दिया यानी हज़रत सुलैमान बिन अबी हसमा रज़ियल्लाहु अन्हु को और हज़रत उस्मान रज़ि० के फ़रमाने पर तरावीह के बाद औरतों को रोक लिया जाता, जब मर्द चले जाते, फिर उन्हें छोड़ा जाता।[1]

हज़रत अरफ़जा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों को रमज़ान में तरावीह पढ़ने का हुक्म देते और मर्दों के लिए एक इमाम मुक़र्रर करते और औरतों के लिए दूसरे। चुनांचे मैं औरतों का इमाम हुआ करता।[2]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आज रात मुझसे एक काम हो गया और यह वाक़िया रमज़ान का है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उबई ! क्या हुआ ?

उन्होंने अर्ज़ किया, मेरे घर में कुछ औरतें थीं। उन औरतों ने कहा, हमने क़ुरआन नहीं पढ़ा, हम आपके पीछे तरावीह की नमाज़ पढ़ेंगी। चुनांचे मैंने उन्हें आठ रक्अत नमाज़ पढ़ाई और वित्र भी पढ़ाए। हुज़ूर सल्ल० ने इस पर कुछ न फ़रमाया। इस तरह आपकी रज़ामंदी की बुनियाद पर यह सुन्नत हुई।[3]

सलातुत्तौबा

हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन सुबह के वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाकर फ़रमाया, ऐ बिलाल ! तुम किस अमल की वजह से मुझसे पहले जन्नत में चले गए? आज रात मैं जन्नत में दाख़िल हुआ तो मैंने

1. इब्ने साद, भाग 5, पृ० 26,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 284,
3. हैसमी, भाग 2, पृ० 74

अपने आगे तुम्हारे चलने की आहट सुनी। उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जब भी मुझसे गुनाह हो जाता है, तो मैं फ़ौरन दो रक्अत सलातुत्तौबा पढ़ता हूं और जब भी मेरा वुज़ू टूटता है, तो मैं उसी वक़्त फ़ौरन वुज़ू करके दो रक्अत नफ़्ल (तहीयतुल वुज़ू) पढ़ता हूं।[1]

सलातुल हाजत

हज़रत सुमामा बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु के बाग़ का माली कड़ी गर्मी के ज़माने में उनके पास आया और उनसे मौसम के सूखेपन और वर्षा के न होने की शिकायत की। हज़रत अनस रज़ि० ने पानी मंगवाकर वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ी, फिर मालिक से कहा, क्या तुम्हें कोई बादल आसमान में नज़र आ रहा है? उसने कहा, कोई नज़र नहीं आ रहा है।

हज़रत अनस रज़ि० ने अन्दर जाकर फिर नमाज़ पढ़ी, फिर उससे कहा, इस तरह तीन चार बार हुआ। तीसरी या चौथी बार उस मालिक को देखने को कहा, तो उसने कहा, परिन्दे के पर जितना बादल नज़र आ रहा है। हज़रत अनस रज़ि० नमाज़ पढ़ते रहे और दुआ मांगते रहे, यहां तक कि बाग़ के ज़िम्मेदार ने अन्दर जाकर उनको बताया कि आसमान पर बादल छा गए और बारिश हो चुकी, तो उससे फ़रमाया, जो घोड़ा बिश्र बिन शग़ाफ़ ने भेजा है, उस पर सवार होकर जाओ और देखो, बारिश कहां तक हुई है।

चुनांचे वह देखकर आया और उसने बताया कि बारिश मुसय्यिरीन के महलों और ग़ज़बान के महल से आगे नहीं हुई। (यानी हज़रत अनस रज़ि० के बाग़ों में ही हुई है, इससे आगे नहीं हुई है।)[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मुझे एक बार बहुत दर्द

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 437,
2. इब्ने साद, भाग 7, पृ० 21

हुआ। मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गया (और अपनी तक्लीफ़ हुज़ूर सल्ल० को बताई) हुज़ूर सल्ल० ने मुझे अपनी जगह बिठाया और ख़ुद खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लग गये और अपने कपड़े का एक किनारा मेरे ऊपर डाल दिया, फिर फ़रमाया, ऐ इब्ने अबी तालिब ! कोई बात नहीं, तुम ठीक हो जाओगे। मैंने अल्लाह से अपने लिए जो चीज़ भी मांगी, वही मैंने तुम्हारे लिए भी मांगी और अल्लाह से मैंने जो चीज़ भी मांगी, वह अल्लाह ने मुझे ज़रूर अता फ़रमाई। अलबत्ता मुझे यह कहा गया कि तुम्हारे बाद कोई नबी नहीं होगा। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, मैं वहां से खड़ा हुआ तो सारा दर्द ख़त्म हो चुका था और ऐसे लग रहा था कि जैसे मुझे कोई तक्लीफ़ ही न हुई हो।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी की कुन्नियत अबू मिअलक़ थी और वह ताजिर थे, अपने और दूसरों के माल से तिजारत किया करते थे और वह बहुत इबादत गुज़ार और परहेज़गार थे। एक बार वह सफ़र में गए, उन्हें रास्ते में एक हथियारों से मुसल्लह डाकू मिला। इसने कहा, अपना सारा सामान यहां रख दो, मैं तुम्हें क़त्ल करूंगा। उस सहाबी ने कहा, तुमने माल लेना है, वह ले लो। डाकू ने कहा, नहीं मैं तो तुम्हारा ख़ून बहाना चाहता हूं। उस सहाबी ने कहा, मुझे ज़रा मोहलत दो, मैं नमाज़ पढ़ लूं।

उसने कहा, जितनी पढ़नी है, पढ़ लो। चुनांचे उन्होंने नमाज़ पढ़ी और यह दुआ तीन बार मांगी—

يَا وَدُوْدُ يَا ذَا الْعَرْشِ الْمَجِيْدِ يَا فَعَّالًا لِّمَا يُرِيْدُ اَسْئَلُكَ بِعِزَّتِكَ الَّتِىْ لَا تُرَامُ وَمُلْكِكَ

الَّذِىْ لَا يُضَامُ وَبِنُوْرِكَ الَّذِىْ مَلَاَ اَرْكَانَ عَرْشِكَ اَنْ تَكْفِيَنِىْ شَرَّ هٰذَا اللِّصِّ يَا مُغِيْثُ اَغِثْنِىْ

तो अचानक एक घोड़सवार ज़ाहिर हुआ, जिसके हाथ में एक नेज़ा था जिसे उठाकर उसने अपने घोड़े के कानों के दर्मियान बुलन्द किया हुआ

---

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 43,

था। उसने उस डाकू को नेज़ा मारकर क़त्ल कर दिया। फिर वह ताजिर की तरफ़ मुतवज्जह हुआ, ताजिर ने पूछा, तुम कौन हो? अल्लाह ने तुम्हारे ज़रिए से मेरी मदद फ़रमाई है। उसने कहा, मैं चौथे आसमान का फ़रिश्ता हूं।

जब आपने (पहली बार) दुआ की तो मैंने आसमान के दरवाज़ों की घड़घड़ाहट सुनी। जब आपने दोबारा दुआ की तो मैंने आसमान वालों की चीख़ व पुकार सुनी। फिर आपने तीसरी बार दुआ की तो किसी ने कहा, यह एक मुसीबत के मारे की दुआ है। मैंने अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ किया कि इस डाकू को क़त्ल करने का काम मेरे ज़िम्मे करें। फिर उस फ़रिश्ते ने कहा, आपको ख़ुशख़बरी हो कि जो आदमी भी वुज़ू करके चार रक्अत नमाज़ पढ़े और फिर यह दुआ मांगे, उसकी दुआ ज़रूर क़ुबूल होगी चाहे वह मुसीबत का मारा हो या न हो।[1]

---

1. इसाबा, भाग 4, पृ० 182

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम किस तरह इल्मे इलाही हासिल करने का शौक़ रखते थे और दूसरों को उसकी तर्ग़ीब देते थे और इल्मे इलाही में जो ईमान व अमल हैं, उनको किस तरह ख़ुद सीखते और दूसरों को सिखाते थे और सफ़र व हज़र, ख़ुशहाली और बदहाली हर हाल में किस तरह इल्मे इलाही के सीखने, सिखाने में लगते थे और किस तरह मदीना मुनव्वरा अला साहिबिहा अल्फ़ु अल्फ़ि सलातनि व तहीयतिन में आने वाले मेहमानों को सिखाने का एहतिमाम करते थे और किस तरह इल्म, जिहाद और कमाई इन तीनों कामों को जमा करते थे और अलग-अलग शहरों में इल्म फैलाने के लिए आदमियों को भेजा करते थे और किस

तरह अपने अन्दर उन सिफ़तों के पैदा करने का एहतिमाम करते थे, जिनकी वजह से इल्म अल्लाह के यहां क़ुबूल होता है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इल्म की तर्ग़ीब देना

हज़रत सफ़वान बिन अस्साल मुरादी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्ल० उस वक़्त अपनी धारीदार लाल चादर पर तकिया लगाकर बैठे हुए थे। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं इल्म हासिल करने आया हूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ख़ुश आमदीद हो तालिब इल्म को। तालिब इल्म को फ़रिश्ते अपने परों से घेर लेते हैं और फिर एक दूसरे पर सवार होते रहते हैं, यहां तक कि वे आसमाने दुनिया तक पहुंच जाते हैं और वे उस इल्म से मुहब्बत की वजह से ऐसा करते हैं, जिसे यह तालिब इल्म हासिल कर रहा है।[1]

हज़रत क़बीसा बिन मुख़ारिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सललम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, क्यों आए हो ? मैंने अर्ज़ किया, मेरी उम्र ज़्यादा हो गई है, मेरी हड्डियां कमज़ोर हो गई हैं, यानी मैं बूढ़ा हो गया हूं। मैं आपकी ख़िदमत में इसलिए हाज़िर हुआ हूं ताकि मुझे आप वह चीज़ सिखाएं जिससे अल्लाह मुझे नफ़ा दे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम जिस पत्थर, पेड़ और ढेले के पास से गुज़रे हो, उसने तुम्हारे लिए मग़्फ़िरत की दुआ की है। ऐ क़बीसा ! सुबह

---

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 59,

की नमाज़ के बाद तीन बार 'सुब्हानल्लाहिल अज़ीमि व बिहम्दिही' कहो, इससे तुम अंधेपन, कोढ़ीपन और फ़ालिज से बचे रहोगे। ऐ क़बीसा ! यह दुआ भी पढ़ा करो—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِمَّا عِنْدَكَ وَاَفِضْ عَلَیَّ مِنْ فَضْلِكَ وَانْشُرْ عَلَیَّ مِنْ رَّحْمَتِكَ
وَاَنْزِلْ عَلَیَّ مِنْ بَرَكَتِكَ

'अल्लाहुम-म इन्नी असअलु-क मिम्मा अिन्दि-क व अफ़ीज़ु अलय-य मिन फ़ज़्लि-क वन्शुर अलय-य मिर-रहमति-क व अन्ज़िल अलय-य मिम बरकतिक'

(ऐ अल्लाह ! मैं उन नेमतों में से मांगता हूं जो मेरे पास हैं और अपने फ़ज़्ल की मुझ पर बारिश कर और अपनी रहमत मुझ पर फैला दे और अपनी बरकत मुझ पर उतार दे।)[1]

हज़रत सख़बरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार बयान फ़रमा रहे थे। आपके पास से दो आदमी गुज़रे। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, तुम दोनों बैठ जाओ, तुम ख़ैर पर हो। जब हुज़ूर सल्ल० खड़े हुए और सहाबा सब हुज़ूर सल्ल० के पास से इधर-उधर चले गए, तो उन दोनों ने खड़े होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने हमसे फ़रमाया था, तुम दोनों बैठ जाओ, तुम ख़ैर पर हो। यह सिर्फ़ हम दोनों के लिए है या तमाम लोगों के लिए है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो बन्दा भी इल्म हासिल करता है तो यह इल्म का हासिल करना उसके पिछले तमाम गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाता है।[2]

हज़रत अबू उमामा बाहली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सललम के सामने दो आदमियों का तज़्किरा हुआ, जिनमें से एक आबिद था, दूसरा आलिम। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आलिम को आबिद पर ऐसी फ़ज़ीलत हासिल है, जैसी मुझे तुम्हारे मामूली आदमी पर। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो आदमी

1. जमउल फ़वाइद, भाग 1, पृ० 21,
2. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 60

लोगों को ख़ैर सिखाता है, अल्लाह उस पर रहमत भेजते हैं और अल्लाह के फ़रिश्ते और तमाम आसमानों वाले, यहां तक कि चींटियां अपने बिलों में और मछलियां उसके लिए रहमत की दुआ करती हैं।[1]

दूसरी रिवायत में दो आदमियों का ज़िक्र नहीं है अलबत्ता यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, आलिम को आबिद पर ऐसी फ़ज़ीलत हासिल है जैसी मुझे तुम्हारे मामूली आदमी पर। फिर हुज़ूर सल्ल० ने यह आयत पढ़ी—

إِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَآءُ (سورت فاطر آیت ۲۸)

'ख़ुदा से उसके वही बन्दे डरते हैं जो (उसकी अज़्मत का) इल्म रखते हैं।' (सूरः फ़ातिर, आयत 28) और आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[2]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उन दो आदमियों के बारे में पूछा गया, जो बनी इसराईल में थे। उनमें से एक आलिम था और फ़र्ज़ नमाज़ पढ़कर बैठ जाता और लोगों को ख़ैर की बातें सिखाता रहता और दूसरा दिन भर रोज़ा रखता और रात भर इबादत करता, इन दोनों में से कौन अफ़ज़ल है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह आलिम जो फ़र्ज़ नमाज़ पढ़कर बैठ जाता था और लोगों को ख़ैर की बातें सिखाता रहता था, उसे उस आबिद पर जो दिन भर रोज़ा रखता था, और रात भर इबादत करता था, ऐसी फ़ज़ीलत हासिल है, जैसी मुझे तुम्हारे मामूली आदमी पर।[3]

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ लाए। हम लोग सुफ़्फ़ा में बैठे हुए थे। आपने फ़रमाया, तुममें से कौन आदमी इसको पसन्द करता है कि सुबह-सवेरे बाज़ार बुतहान या अक़ीक़ में जाए और ऊंचे कोहान

---

1. तिर्मिज़ी,
2. दारमी,
3. मिश्कात 62, 28

वाली अच्छी से अच्छी दो ऊंटनियां किसी क़िस्म के गुनाह और रिश्ते काटे बग़ैर पकड़ लाए? हमने अर्ज़ किया, हम सब इसे पसन्द करते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मस्जिद में जाकर दो आयतों का पढ़ना या पढ़ा देना दो ऊंटनियों से और तीन आयतों का तीन ऊंटनियों से उसी तरह चार का चार से अफ़ज़ल है और उनके बराबर ऊंटों से अफ़ज़ल है।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में दो भाई थे। उनमें से एक कमाई करता था और दूसरा हर वक़्त हुज़ूर सल्ल० के साथ रहता था और हुज़ूर सल्ल० से सीखता था। कमाने वाले भाई ने हुज़ूर सल्ल० से अपने भाई (के न कमाने) की शिकायत की। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, शायद तुम्हें इस (न कमाने वाले) भाई की बरकत से रोज़ी मिलती है।[2]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ि० का इल्म की तर्ग़ीब देना

हज़रत अबू तुफ़ैल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे, अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलामु के सबसे ज़्यादा क़रीब वह आदमी है जो उनके लाए हुए दीन को सबसे ज़्यादा जानने वाला हो, फिर यह आयत पढ़ा करते थे—

إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَٰذَا النَّبِيُّ (سورت آل عمران آیت ۶۸)

'बेशक सब आदमियों में ज़्यादा ख़ुसूसियत रखने वाले (हज़रत) इब्राहीम के साथ, अलबत्ता वे लोग थे जिन्होंने उनकी पैरवी की थी और यह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं।' (सूरः आले इम्रान, आयत 68)

यानी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनकी पैरवी करने वाले सहाबा रज़ि०, इसलिए तुम उसको तब्दील न करो,

---

1. मिश्कात 175, हुलीया, भाग 1, पृ० 341,
2. जमउल फ़वाइद, भाग 1, पृ० 20, जामेअ, बयानुल इल्म, भाग 1, पृ० 59, मुस्तदरक, भाग 1, पृ० 94

इसलिए मुहम्मद सल्ल० का दोस्त वह है जो अल्लाह की इताअत करे और मुहम्मद सल्ल० का दुश्मन वह है जो अल्लाह की नाफ़रमानी करे, अगरचे वह हुज़ूर सल्ल० का क़रीबी रिश्तेदार ही क्यों न हो।[1]

हज़रत कुमैल बिन ज़ियाद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु मेरा हाथ पकड़ कर मुझे सेहरा की तरफ़ ले चले। जब हम सेहरा में पहुंच गए तो हज़रत अली रज़ि० बैठ गए और एक लंबा सांस लेकर फ़रमाया, ऐ कुमैल बिन ज़ियाद, दिल बरतन हैं। इनमें से बेहतरीन बरतन वह है जो (अपने अन्दर की चीज़ को) ज़्यादा हिफ़ाज़त में रखने वाला हो। मैं तुम्हें जो बात कह रहा हूं, वह याद रखना। इंसान तीन क़िस्म के हैं, एक आलिम रब्बानी, दूसरे वह इल्म हासिल करने वाला, जो नजात के रास्ते पर चल रहा है, तीसरे वे कमीने और ज़लील लोग, जो हर शोर मचाने वाले के पीछे चल पड़ते हैं और जिधर की हवा चले, उधर को ही रुख़ कर लेते हैं, न तो इल्म के नूर से कुछ रोशनी हासिल की और न किसी मज़बूत मददगार की पनाह हासिल की। इल्म माल से बेहतर है, इल्म तुम्हारी हिफ़ाज़त करता है और माल की हिफ़ाज़त तुम्हें करनी पड़ती है। इल्म अमल करने से बढ़ता है और माल ख़र्च करने से घटता है। आलिम की मुहब्बत दीन है, जिसका अल्लाह के यहां से बदला मिलेगा। इल्म की वजह से आलिम की ज़िंदगी में उसकी बात मानी जाती है और उसके मरने के बाद उसका अच्छाई से तज़्किरा किया जाता है। जब माल चला जाता है तो माल की कारीगरी और माल की बुनियाद पर चलने वाले काम भी ख़त्म हो जाते हैं। माल के ख़ज़ाने जमा करने वाले ज़िंदा भी हों, तो भी वह (रूह और दिल के एतबार से) मुर्दा गिने जाते हैं और उलेमा (मरने के बाद भी) जब तक ज़माना रहेगा, बाक़ी रहेंगे, (उनका अच्छा ज़िक्र होता रहेगा) उनके जिस्म दुनिया से चले जाएंगे, लेकिन उनकी अज़्मत के निशान दिलों में बाक़ी रहेंगे।

1. कंज़, भाग 1, पृ० 208

और यह बात ग़ौर से सुनो और सीने की तरफ़ इशारा करके हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, इस जगह एक ज़बरदस्त इल्म है। काश, इस इल्म को उठाने वाले मुझे मिल जाते। अब या तो ऐसे लोग मिलते हैं जिनकी समझ तो तेज़ है लेकिन (तक़्वा और तहारत (पाकी) न होने की वजह से) उन पर इत्मीनान नहीं। ये दीन के अस्बाब को दुनिया के लिए इस्तेमाल करते हैं और क़ुरआन में अल्लाह ने जो दलीलें बयान की हैं, उनसे क़ुरआन के ख़िलाफ़ ही साबित करते हैं (क्योंकि इल्म का नूर उन्हें हासिल नहीं है) और अल्लाह की नेमतों को उसके बन्दों के ख़िलाफ़ इस्तेमाल करते हैं या फिर ऐसे लोग मिलते हैं जो हक़ वालों के फ़रमांबरदार तो हैं, लेकिन उन्हें दीन के ज़िंदा करने की कोई समझ नहीं है और मामूली सा शुबहा पेश आते ही उनके दिल में शक पैदा हो जाता है, न इस तरफ़ तबीयत जमती है, न उस तरफ़ या फिर ऐसे लोग मिलते हैं, जो लज़्ज़तों में पड़े हुए हैं और आसानी से ख़्वाहिशों की बात मान लेते हैं या फिर ऐसे लोग मिलते हैं जो माल जमा करने और ज़ख़ीरा करने ही का जज़्बा रखते हैं और ये आख़िरी दो क़िस्म के इंसान दीन के दाई (दावत देने वाले) भी नहीं हैं (पहले दो दीन की दावत देने वाले तो थे, लेकिन इनमें और ख़राबियां थीं) और चरने वाले जानवर इन दोनों से ज़्यादा मिलते-जुलते हैं और इल्म वालों के मरने से इल्म भी ख़त्म हो जाएगा, लेकिन यह बात भी है कि ज़मीन कभी भी अल्लाह के ऐसे बन्दों से ख़ाली नहीं होती जो इसलिए दलीलें लेकर खड़े होते हैं, ताकि अल्लाह की दलीलें और वाज़ेह हुक्म बेकार और मुअत्तल न क़रार दिए जाएं। इन बन्दों की तायदाद चाहे बहुत कम हो, लेकिन अल्लाह के यहां उनका दर्जा सबसे बड़ा है और अल्लाह की हुज्जतों यानी क़ुरआनी आयतों पर जो ग़लत एतराज़ किए जाते हैं, उनको अल्लाह उन बन्दों के ज़रिए दूर फ़रमाते हैं, यहां तक कि वे इन हुज्जतों को अपने जैसे बन्दों तक पहुंचाकर उनके दिलों में उतार देते हैं और कमाल वाले इल्म की वजह से हर अम्र की हक़ीक़त उन पर वाज़ेह हो जाती है और जिस अम्र की हक़ीक़त ऐश व इशरत वालों को मुश्किल

नज़र आती है, वह उनके लिए बहुत आसान होती है और जिन कामों से जाहिल लोग घबराते हैं और वहशत महसूस करते हैं, उनमें उनका दिल लगता है।

ये लोग अपने जिस्म से तो दुनिया में रहते हैं, लेकिन उनकी रूहों का ताल्लुक़ मंज़रे आला यानी आख़िरत से होता है। यही लोग अल्लाह की ज़मीन पर उसके ख़लीफ़ा हैं और उसके दीन की दावत देने वाले हैं। हाय! हाय! मुझे इन लोगों के देखने का कितना शौक़ है। मैं अपने लिए और तुम्हारे लिए अल्लाह से इस्तग़फ़ार करता हूं, अब अगर तुम चाहो तो जा सकते हो।[1]

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, इल्म सीखो, क्योंकि अल्लाह के लिए इल्म सीखना अल्लाह से डरना है। इल्म को तलाश करना इबादत है और उसका आपस में मुज़ाकरा करना तस्बीह का सवाब दिलाना है और (समझने के लिए) उसमें बहस करना जिहाद है और न जानने वाले को सिखाना सदक़ा है और जो लोग इल्म के अह्ल हैं, उन पर ख़र्च करना अल्लाह के तक़र्रुब का ज़रिया है, क्योंकि इल्म के ज़रिए से हलाल व हराम मालूम होता है और इल्म जन्नत वालों के लिए (जन्नत के रास्ते का) मीनार है और वहशत में उन्स का ज़रिया है। मुसाफ़री में साथी, तंहाई में बात करने वाला, नफ़ा व ख़ुशी के नुक़्सान और ग़म के कामों को बताने वाला, दुश्मनों के ख़िलाफ़ हथियार और दोस्तों के नज़दीक इंसान की ज़ीनत का ज़रिया है। अल्लाह इसके ज़रिए कुछ लोगों को बुलन्द मर्तबा करते हैं और उनको ख़ैर के कामों में पेशरो और इमाम बनाते हैं। उनके तरीक़ों को लोग अख़्तियार करते हैं और उन कामों में उनकी पैरवी करते हैं और उनकी राय और फ़ैसले पर सब मुतमइन हो जाते हैं। फ़रिश्ते उनकी दोस्ती और उनके साथ रहने का शौक़ रखते हैं और अपने परों को उन पर मलते हैं। और हर तरह की मख़्लूक़ उनकी

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 79, कंज़, भाग 5, पृ० 231, जामेअ बयानुल इल्म, भाग 2, पृ० 114,

मग़्फ़िरत के लिए दुआ करती है, यहां तक कि समुद्र की मछलियां और दूसरे जानवर और ख़ुश्की के दरिंदे और जानवर भी अब उनके मग़्फ़िरत की दुआ करते हैं क्योंकि इल्म दिलों को जिहालत से निकाल कर ज़िंदगी बख़्शता है और अंधेरे में निगाह को बसीरत अता करता है। इंसान इल्म के ज़रिए से बेहतरीन लोगों के मर्तबे को दुनिया और आख़िरत के बुलन्द दर्जे को पा लेता है। उसमें ग़ौर व फ़िक्र करने से रोज़ा रखने का और उसे पढ़े-पढ़ाने, रातों को इबादत करने का सवाब मिलता है। इल्म की वजह से इंसान सिलारहमी करता है और हलाल और हराम का फ़र्क़ जानता है। इल्म अमल का इमाम है। अमल उसके ताबेअ है। ख़ुशक़िस्मत लोगों के दिलों में इल्म का इल्हाम होता है और बदक़िस्मत लोग इल्म से महरूम रहते हैं।[1]

हज़रत हारून बिन रिबाब कहते हैं कि हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे, तुम सुबह इस हाल में करो कि या तो (सिखाने वाले) आलिम हो या सीखने वाले हो, इसके अलावा कुछ और न हो, क्योंकि इसके अलावा तो आदमी जाहिल होता है और जो आदमी इल्म हासिल करने की हालत में सुबह करता है, उसके इस अमल को पसन्दीदा समझने की वजह से फ़रिश्ते उसके लिए अपने पर खोल देते हैं।[2]

हज़रत ज़ैद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुम इस हाल में सुबह करो कि या तो तुम (सिखाने वाले) आलिम हो या सीखने वाले हो और ऐसे आदमी न बनो जिसकी अपनी कोई राय न हो और वह हर एक के पीछे चल पड़े।[3]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, ऐ लोगो ! इल्म उठने से पहले इल्म हासिल कर लो और उसके उठने की शक्ल यह होगी कि

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 239, जामेअ बयानुल इल्म, भाग 1, पृ० 55, तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 58,
2. जामेअ बयानुल इल्म, भाग 1, पृ० 29
3. जामेअ, भाग 1, पृ० 29

इल्म वाले दुनिया से चले जाएंगे और तुम लोग इल्म हासिल करो, क्योंकि तुम्हें मालूम नहीं है कि तुम्हें अपने इल्म की कब ज़रूरत पड़ जाए और इल्म हासिल करो लेकिन इल्म में मुबालग़ा और ग़ुलू से बचो और पुराना तरीक़ा अख़्तियार करो (जो सहाबा किराम में था) क्योंकि बहुत जल्द ऐसे लोग आएंगे जो अल्लाह की किताब को तो पढ़ेंगे लेकिन उसे अपनी पीठ के पीछे फेंक देंगे। (उस पर अमल नहीं करेंगे।)[1]

हज़रत अबुल अह्वस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, आदमी आलिम बनकर पैदा नहीं होता, बल्कि इल्म तो सीखने से आता है।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, तुम आलिम बनो या इल्म सीखने वाले बनो, इन दो के अलावा कुछ और न बनो। अगर ऐसा नहीं कर सकते तो उलेमा से मुहब्बत करो, उनसे बुग़्ज़ न रखो।[3]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, या तो (सिखाने वाले) आलिम बनो या तालिबे इल्म बनो या उलेमा से मुहब्बत करने वाले और उनकी पैरवी करने वाले बनो। (इन चार के अलावा) पांचवें क़िस्म के न बनो, वरना हलाक हो जाओगे।

रिवायत करने वाले हज़रत हुमैद रह० कहते हैं कि मैंने हज़रत हसन रह० से पूछा, पांचवें क़िस्म से कौन मुराद है? उन्होंने कहा, अपनी तरफ़ से दीन में नई बातें ईजाद करने वाला।[4]

हज़रत ज़ह्हाक रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ऐ दमिश्क़ वालो! तुम लोग मेरे दीनी भाई हो, इलाक़े के पड़ोसी हो और दुश्मनों के ख़िलाफ़ मेरे मददगार हो, लेकिन

1. हैसमी, भाग 46, जामेअ, भाग 1, पृ० 87
2. जामेअ, भाग 1, पृ० 100,
3. हैसमी, भाग 1, पृ० 122,
4. जामेअ, भाग 1, पृ० 28,

तुम मुझसे दोस्ती क्यों नहीं रखते? हालांकि मेरा ख़र्चा भी तुम्हारे ज़िम्मे नहीं है, दूसरों पर है। मैं देख रहा हूं कि तुम्हारे उलेमा जा रहे हैं और तुम्हारे जाहिल लोग उनसे इल्म नहीं सीख रहे हैं और मैं देख रहा हूं कि अल्लाह ने जिस रोज़ी की ज़िम्मेदारी ले रखी है, तुम उसके पीछे पड़े हुए हो और अल्लाह ने तुम्हें जिन कामों का हुक्म दिया है, उन्हें छोड़ रखा है। ग़ौर से सुनो! कुछ लोगों ने बड़ी मज़बूत इमारतें बनाईं और बहुत माल जमा किया और बड़ी दूर की उम्मीदें लगाईं, लेकिन फिर उनकी इमारतें गिरकर क़ब्रस्तान बन गईं और उनकी उम्मीदें धोखा साबित हुईं और ऐसे लोग ख़ुद ही हलाक हो गए। ग़ौर से सुनो! इल्म सीखो और सिखाओ, क्योंकि इल्म सीखने वाला और सिखाने वाला दोनों अज्र में बराबर हैं, अगर ये दोनों न हों, तो फिर लोगों में कोई ख़ैर नहीं।[1]

हज़रत हस्सान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने दमिश्क़ वालों से फ़रमाया, क्या तुम इस बात पर राज़ी हो गए कि वर्षों और सालों गेहूं की रोटी पेट भरकर खाते रहो? तुम्हारी मज्लिसों में अल्लाह का नाम नहीं लिया जाता। तुम्हें क्या हो गया, तुम्हारे उलेमा जा रहे हैं, लेकिन तुम्हारे जाहिल इल्म हासिल नहीं कर रहे? अगर तुम्हारे उलेमा चाहते तो उनकी तायदाद में इज़ाफ़ा हो सकता था। अगर तुम्हारे जाहिल इल्म को खोजते तो वे उसे ज़रूर पा लेते, नुक़सान देने वाली चीज़ों के बजाए अपने फ़ायदे वाली चीज़ें अख़्तियार करो। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जो उम्मत भी हलाक हुई है, उसकी हलाकत की दो ही वजहें थीं। एक तो वे अपनी ख़्वाहिशों पर चल रहे थे और दूसरे वे अपनी तारीफ़ किया करते थे।[2]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं, इल्म के उठने से पहले इसे हासिल कर लो और इल्म के उठने की शक्ल यह होगी कि उलेमा दुनिया से चले जाएंगे और इल्म सिखाने वाले और सीखने वाले दोनों

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 213,
2. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 222,

अज्र में बराबर हैं। इंसान कहलाने के हक़दार दो ही आदमी हैं, इल्म सिखाने वाला आलिम या इल्म सीखने वाला। इन दो के अलावा बाक़ी इंसानों में कोई ख़ैर नहीं।[1]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जो भी सुबह-सवेरे मस्जिद को कोई ख़ैर की बात सीखने या सिखाने जाता है, उसके लिए उस मुजाहिद का अज्र लिखा जाता है जो ग़नीमत का माल लेकर वापस आता है।[2]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जो आदमी यह समझे कि सुबह और शाम इल्म के लिए जाना जिहाद नहीं है, वह कम अक़्ल और नाक़िस राय वाला है।[3]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इल्म सीखने ही से हासिल होता है।[4]

हज़रत अबूज़र और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि आदमी का इल्म का एक बाब सीख लेना हमें उसके हज़ार रक्अत नफ़्ल पढ़ने से ज़्यादा महबूब है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है, जो तालिब इल्म तालिब इल्मी की हालत में मरेगा, वह शहीद होगा।[5]

एक रिवायत में इन दोनों का यह इर्शाद नक़ल है कि इल्म का एक बाब सिखाना हमें सौ रक्अत नफ़्ल से ज़्यादा महबूब है, इस पर अमल हो रहा हो या न हो रहा हो।

हज़रत अली अज़्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से जिहाद के बारे में पूछा, तो उन्होंने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें ऐसा अमल न बता दूं जो तुम्हारे लिए जिहाद से बेहतर है?

---

1. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 213,
2. जामेअ, भाग 1, पृ० 32
3. जामेअ, भाग 1, पृ० 31
4. जामेअ, भाग 1, पृ० 100
5. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 61, जामेअ, भाग 1, पृ० 25,

तुम किसी मस्जिद में जाकर क़ुरआन, फ़िक़्ह या सुन्नत सिखाओ ।[1]

हज़रत अली अज़्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से जिहाद के बारे में पूछा, तो उन्होंने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें वह अमल न बता दूं जो तुम्हारे लिए जिहाद से बेहतर है ? तुम एक मस्जिद बनाओ और उसमें क़ुरआन, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतें और दीन के फ़िक़्ही मस्अले सिखाओ ।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, लोगों को ख़ैर सिखाने वाले के लिए हर चीज़ मग़्फ़िरत की दुआ करती है, यहां तक कि समुद्र की मछलियां भी उसके लिए मग़्फ़िरत की दुआ करती हैं ।[3]

हज़रत ज़िर बिन हुबैश रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत सफ़वान बिन अस्साल मुरादी रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में सुबह-सुबह गया तो उन्होंने पूछा, ऐ ज़िर ! तुम सुबह-सुबह किस लिए आए हो ? मैंने कहा, इल्म हासिल करने आया हूं । फ़रमाया, या तो इल्म सिखाने वाले आलिम बनो या सीखने वाले बनो । इन दो के अलावा और कुछ न बनो ।[4]

हज़रत सफ़वान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जो अपने घर से इल्म हासिल करने निकलता है, तो फ़रिश्ते इस इल्म सीखने वाले और उसे इल्म सिखाने वाले के लिए अपने पर बिछाते हैं ।[5]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ि० का इल्मी वलवला और शौक़

जब हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो फ़रमाया, देखो, क्या सुबह सादिक़ हो गई है ? एक

1. कंज़, भाग 5, पृ० 230,
2. जामेअ, भाग 1, पृ० 63
3. जामेअ, भाग 1, पृ० 124,
4. हैसमी, भाग 1, पृ० 122
5. हैसमी, भाग 1, पृ० 123,

आदमी ने आकर बताया कि अभी नहीं हुई, फिर फ़रमाया, देखो, क्या सुबह सादिक़ हो गई है? फिर किसी ने आकर बताया कि अभी नहीं हुई। आख़िरकार एक आदमी ने आकर बताया कि सुबह सादिक़ हो गई है, तो फ़रमाया मैं उस रात से अल्लाह की पनाह मांगता हूं जिसकी सुबह दोज़ख़ की आग की तरफ़ ले जाए। ख़ुश आमदीद हो मौत को, ख़ुश आमदीद हो उस मेहमान को जो बहुत लम्बे अर्से के बाद मिलने आया है जिससे मुझे बहुत मुहब्बत है, लेकिन वह ऐसे वक़्त आया है, जबकि मेरे यहां फ़ाक़ा है। ऐ अल्लाह ! मैं ज़िंदगी भर तुझसे डरता रहा, लेकिन आज तेरी रहमत का उम्मीदवार हूं। ऐ अल्लाह ! तुझे अच्छी तरह मालूम है कि मुझे दुनिया से और उसमें ज़्यादा अर्से तक रहने से इस वजह से मुहब्बत नहीं है, ताकि मैं नहरें खोदूं और पेड़ लगाऊं, बल्कि इस वजह से है, ताकि मैं सख़्त गर्मी की दोपहर में प्यास बरदाश्त करूं, यानी गर्मियों में रोज़े रखूं और मशक़्क़त के मौक़ों पर मशक़्क़त उठाऊं और इल्म के हलक़ों में उलेमा की ख़िदमत में दोज़ानू बैठूं।[1]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अगर तीन काम न हों, तो मैं इसे पसन्द करता कि दुनिया में और न रहूं। रिवायत करने वाले कहते हैं कि मैंने पूछा कि वे तीन काम कौन-से हैं? उन्होंने कहा, एक तो दिन और रात में अपने पैदा करने वाले के सामने सर धरती पर रखना, जो मेरी आख़िरत की ज़िन्दगी में आगे जमा हो रहा है। दूसरे सख़्त गर्मियों की दोपहर में रोज़ा रखकर प्यासा रहना। तीसरे ऐसे लोगों के साथ बैठना जो अच्छे कलाम को ऐसे चुनते हैं जैसे कि फल चुना जाता है। आगे और भी हदीस है।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ, तो मैंने एक अंसारी आदमी से कहा, आज सहाबा बहुत बड़ी तायदाद में मौजूद हैं। आओ,

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 239, जामेअ, भाग 1, पृ० 51
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 212,

इनसे पूछ-पूछकर कुरआन व हदीस जमा कर लें। उन्होंने कहा, ऐ इब्ने अब्बास ! आप पर बड़ा ताज्जुब है। क्या आप यह समझते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इतने बड़े-बड़े सहाबा के होते हुए भी लोगों को आपकी ज़रूरत पड़ेगी ?

(उन्होंने मेरी बात न मानी और इसके लिए तैयार न हुए तो) मैंने उन्हें छोड़ दिया और हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० से पूछने लगा और मुझे पता चला कि फ़्लां सहाबी फ़्लां हदीस बयान करते हैं, तो मैं उनके दरवाज़े पर जाता, वह दोपहर को आराम कर रहे होते, मैं उनके दरवाज़े पर चादर पर टेक लगाकर बैठ जाता और हवा की वजह से मिट्टी मुझ पर पड़ती रहती, वह सहाबी (आराम से फ़ारिग़ होकर) बाहर आते तो मुझे देखते और कहते, ऐ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचेरे भाई ! आपका कैसे आना हुआ ? आप ख़ुद क्यों आए ? आप किसी को मेरे पास भेज देते, मैं आपके पास आ जाता, मैं कहता, नहीं (मुझे आपसे इल्म हासिल करना है, इसलिए) मेरा हक़ बनता है कि मैं आपकी ख़िदमत में आऊं, फिर मैं उनसे हदीस के बारे में पूछता (इस तरह मैंने तफ़्सीर और हदीसों का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा जमा कर लिया, जिन्हें हासिल करने के लिए लोग मेरे पास आने लगे) वह अंसारी भी बहुत अर्से तक ज़िंदा रहे और उन्होंने देखा कि लोग मेरे आस-पास जमा हैं और मुझसे कुरआन व हदीस के बारे में पूछ रहे हैं, इस पर उन्होंने कहा, यह नवजवान वाक़ई मुझसे ज़्यादा समझदार निकला।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, जब दुनिया के बहुत से शहर जीत लिए गए तो लोग दुनिया की तरफ़ मुतवज्जह हो गए और मैंने अपनी सारी तवज्जोह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु (से क़ुरआन व हदीस लेने) की तरफ़ लगा दी। रिवायत करने वाले कहते हैं कि इसी वजह से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० की अक्सर हदीसें हज़रत

1. मुस्तदरक, भाग 1, पृ० 106, इसाबा, भाग 2, पृ० 331, हैसमी, भाग 9, पृ० 277, जामेअ, भाग 1, पृ० 85, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 182,

उमर रज़ि० ही से नक़ल की गई है।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया, जिस तरह मेरे साथी मुझसे ग़नीमत का माल मांगते हैं, तुम नहीं मांगते। मैंने अर्ज़ किया, मैं तो आपसे यह मांगता हूं कि जो इल्म आपको अल्लाह ने अता फ़रमाया है, आप उसमें से मुझे भी सिखाएं। इसके बाद मैंने कमर से धारीदार चादर उतार कर अपने और हुज़ूर सल्ल० के बीच बिछा दी और यह मंज़र मुझे ऐसा याद है कि अब भी मुझको उस पर जुएं चलती हुई नज़र आ रही हैं।

फिर आपने मुझे हदीस सुनाई। जब मैंने वह हदीस पूरी सुन ली तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अब उस चादर को समेट कर अपने जिस्म से बांध लो। (मैंने ऐसा ही किया) इसके बाद हुज़ूर सल्ल० जो भी इर्शाद फ़रमाते, मुझे उसमें से एक हर्फ़ भी नहीं भूलता था।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, लोग यह कहते हैं कि अबू हुरैरह रज़ि० हदीसें बहुत ज़्यादा बयान करता है। हम सबको अल्लाह के पास जाना है (अगर मैं ग़लत हदीस बयान करूंगा, तो अल्लाह मेरी पकड़ फ़रमाएंगे और जो मेरे बारे में ग़लत गुमान रखते हैं, अल्लाह उनसे भी पूछेंगे और लोग यह भी कहते हैं, दूसरे मुहाजिरीन और अंसार सहाबा अबू हुरैरह रज़ि० जितनी हदीसें बयान नहीं करते। मेरे मुहाजिर भाई तो बाज़ारों में ख़रीद-फ़रोख़्त में लगे रहते थे और मेरे अंसारी भाइयों को अपनी ज़मीनों और मवेशियों की मशग़ूली थी और मैं एक मिस्कीन नादार आदमी था और हर वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पेट भर खाने पर क़नाअत करके हाज़िर रहता था। अंसार व मुहाजिरीन जब हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत से चले जाते, तो मैं फिर भी ख़िदमत में हाज़िर रहता। वे हुज़ूर सल्ल० से सुनकर अपने कामों में लगकर भूल जाते, मैं सब कुछ याद रखता।

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 161,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 381,

एक दिन हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुममें से जो आदमी भी अपना कपड़ा मेरे सामने फैलाएगा और जब मैं अपनी बात पूरी कर लूं, वह उसे समेट कर अपने सीने से लगाएगा वह कभी भी मेरी कोई बात नहीं भूलेगा। मैंने फ़ौरन अपनी धारीदार चादर बिछा दी। मेरी कमर पर उसके अलावा और कोई कपड़ा नहीं था। फिर जब हुज़ूर सल्ल० ने अपनी यह बात पूरी फ़रमा ली तो मैंने चादर समेट कर अपने सीने से लगा ली। उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, मुझे इसमें से एक बात भी आज तक नहीं भूली। अल्लाह की क़सम! अगर अल्लाह की किताब (कुरआन) में ये दो आयतें न होतीं (जिनमें इल्म को छिपाने से मना किया गया है) तो आप लोगों को कभी कोई हदीस न बयान करता—

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ

से लेकर अर-रजीम तक (सूरः बक़रः आयत 159-160)

तर्जुमा—जो लोग छिपाते हैं उन मज़्मूनों को, जिनको हमने उतारा है जो कि (अपनी ज़ात में) वाज़ेह हैं और (दूसरों को) हादी हैं, इसके बाद कि हम उनको किताबे इलाही (तौरात व इंजील) में आम लोगों पर ज़ाहिर कर चुके हों। ऐसे लोगों पर अल्लाह भी लानत फ़रमाते हैं और (दूसरे बहुतेरे) लानत करने वाले भी उन लोगों को लानत भेजते हैं, मगर जो लोग तौबा कर लें और इस्लाह कर दें और (इन मज़्मूनों को) ज़ाहिर कर दें तो ऐसे लोगों पर मैं मुतवज्जह हो जाता हूं और मेरी तो ज़्यादा से ज़्यादा आदत है, तौबा कुबूल कर लेना और मेहरबानी फ़रमाना।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, लोग कहते थे कि अबू हुरैरह रज़ि० बहुत ज़्यादा हदीसें बयान करते हैं, असल बात यह है कि मैं हर वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहता था और सिर्फ़ पेट भर खाने पर गुज़ारा कर लेता था, उन दिनों न ख़मीरी रोटी मुझे मिलती थी और न पहनने को रेशम और न ख़िदमत करने वाला कोई मर्द मेरे पास था और न कोई औरत और कभी-कभी मैं भूख

1. बुख़ारी, भाग 1, पृ० 316,

की तेज़ी की वजह से अपना पेट कंकरियों के साथ चिमटा देता था (ताकि कंकरियों की ठंडक से भूख की गर्मी में कमी आ जाए) और कभी ऐसा भी होता था कि कुरआन की आयत मुझे मालूम होती थी, लेकिन मैं किसी आदमी से कहता कि यह आयत मुझे पढ़ा दो, ताकि वह मुझे अपने साथ घर ले जाए और मुझे कुछ खिला दे और मिस्कीनों के हक़ में सबसे बेहतर हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु थे, वे हमें घर लिए जाते और जो कुछ घर में होता, वह सब कुछ हमें खिला देते, यहां तक कि कभी-कभी वह शहद या घी की कुप्पी ही हमारे पास बाहर ले आते। इस कुप्पी में कुछ होता नहीं था, तो हम उसे फाड़ कर उसके भीतर जो होता, उसे चाट लेते।[1]

इल्म की हक़ीक़त और जिस चीज़ पर इल्म का लफ़्ज़ बोला जाता है

हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, अल्लाह ने मुझे जो हिदायत और इल्म देकर भेजा है, उसकी मिसाल उस बारिश जैसी है जो बहुत ज़्यादा हुई हो और एक ज़मीन पर बरसी हो, जिसका एक टुकड़ा बहुत उम्दा और ज़रख़ेज़ था, उस टुकड़े ने बारिश के पानी को अपने अन्दर जज़्ब कर लिया, जिससे घास और चारा ख़ूब उगा। उस ज़मीन में एक बंज़र और सख़्त टुकड़ा था, जिसने उस पानी को रोक लिया, न अपने अन्दर जज़्ब किया और ढलान न होने की वजह से न उसे जाने दिया) तो अल्लाह ने उस पानी से लोगों को नफ़ा पहुंचाया। चुनांचे उन्होंने उसे पिया और अपने जानवरों को पिलाया और उससे खेती की और उस ज़मीन का तीसरा टुकड़ा चटयल मैदान था, जिसमें पानी भी (ढलान की वजह से) न रुका और घास वग़ैरह भी न उगी।

यह मिसाल उस आदमी की है जिसने अल्लाह के दीन में समझ

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 175,

हासिल की और अल्लाह ने जो मुझे देकर भेजा है, उससे उसको नफ़ा हुआ। उसने ख़ुद सीखा और दूसरों को सिखाया और उस आदमी की मिसाल है, जिसने तकब्बुर की वजह से उस इल्म व हिदायत की तरफ़ तवज्जोह न की और अल्लाह की जो हिदायत देकर मुझे भेजा गया है, उसे बिल्कुल क़ुबूल न किया।[1]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुझसे पहले अल्लाह ने जिस नबी को भी उसकी उम्मत में भेजा तो उस उम्मत में उसके हवारी और ख़ास सहाबी ज़रूर होते जो उसकी हर सत् को मज़बूती से पकड़ते और ठीक-ठीक उसकी पैरवी करते और उसके दीन को, जैसा कि वह है, वैसे ही महफ़ूज़ रखते, लेकिन बाद में ऐसे नालायक़ लोग पैदा हो जाते जो उन कामों का दावा करते, जो उन्होंने किए नहीं होते थे और जिन कामों का हुक्म नहीं दिया गया था, उन कामों को करते थे। (मेरी उम्मत में भी ऐसे लोग आगे होंगे) जो इन लोगों के ख़िलाफ़ अपने हाथ से जिहाद करे, वह भी मोमिन है और जो अपनी ज़ुबान से जिहाद करे, वह भी मोमिन है और जो अपने दिल से जिहाद करे, वह भी मोमिन है। इसके बाद राई के दाने के बराबर भी ईमान नहीं है।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सललम ने फ़रमाया, असल इल्म तीन चीज़ें हैं, मुहकम आयत (यानी क़ुरआन मजीद), क़ायम व दायम सुन्नत, यानी हुज़ूर सल्ल० की वह हदीस जो भरोसेमंद सनद से साबित हो और क़ुरआन व हदीस के बराबर दर्जा रखने वाले फ़राइज़ यानी इज्माअ और क़ियास। इनके अलावा जो कुछ है, वह ज़ाइद इल्म है (उसे हासिल करना ज़रूरी नहीं है)।[3]

1. मिश्कात, पृ० 20
2. मिश्कात, पृ० 21
3. मिश्कात, पृ० 27, जामेअ, भाग 2, पृ० 23,

हज़रत अम्र बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुममें ऐसी दो चीज़ें छोड़कर जा रहा हूं कि जब तक तुम उन दोनों को मज़बूती से थामे रहोगे, कभी गुमराह नहीं होगे, एक अल्लाह की किताब और दूसरी उसके नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक दिन मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो देखा कि बहुत सारे लोग एक आदमी पर जमा हैं। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, यह कौन है? लोगों ने कहा, यह एक अल्लामा है। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, उसके अल्लामा होने का क्या मतलब? लोगों ने कहा, यह अरबों के नसब, अरबी ज़ुबान, शेर व शायरी और अरबों का जिन चीज़ों में इख़्तिलाफ़ है, उन सबको तमाम लोगों से ज़्यादा जानने वाला है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह ऐसा इल्म है, जिसके जानने से कोई फ़ायदा नहीं और इसके मालूम न होने में कोई नुक़्सान नहीं।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि इल्म तीन चीज़ें हैं, हक़ बोलने वाली किताब यानी क़ुरआन मजीद, वह सुन्नत जो क़ियामत तक चलेगी और जो बात न आती हो, उसके बारे में यह कह देना कि मैं इसे नहीं जानता।[3]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, असल इल्म अल्लाह की किताब और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत है। इन दोनों को छोड़कर जो भी अपनी राय से कुछ कहेगा, उसका पता नहीं कि वह उसे अपनी नेकियों में पाएगा या अपनी बुराइयों में।[4]

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार हम

1. इब्ने अब्दुल बिर्र, भाग 1, पृ० 24,
2. जामेअ, भाग 2, पृ० 23,
3. जामेअ, भाग 2, पृ० 24,
4. जामेअ, भाग 2, पृ० 26,

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के शागिर्द, हज़रत अता, हज़रत ताऊस और हज़रत इक्रिमा बैठे हुए थे और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० खड़े होकर नमाज़ पढ़ रहे थे कि इतने में एक आदमी आया और उसने कहा, क्या यहां कोई मुफ़्ती है? मैंने कहा, पूछो, क्या पूछते हो? उसने कहा, मैं जब भी पेशाब करता हूं, तो उसके बाद मनी निकल आती है। हमने कहा, वही मनी, जिससे बच्चा बनता है? उसने कहा, जी हां। हमने कहा, इससे तुम्हें ग़ुस्ल करना पड़ेगा। वह 'इन्ना लिल्लाहि' पढ़ता हुआ पीठ फेरकर वापस चला गया।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने जल्दी-जल्दी नमाज़ पूरी की और सलाम फेरते ही कहा, ऐ इक्रिमा! उस आदमी को मेरे पास ले आओ। चुनांचे हज़रत इक्रिमा उसे ले आए तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० हमारी तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़रमाया, तुमने जो इस आदमी को मस्अला बताया है, वह तुमने अल्लाह की किताबा से लिया है? हमने कहा, नहीं। उन्होंने फ़रमाया, क्या तुमने यह मस्अला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत से लिया है? हमने कहा, नहीं। उन्होंने फ़रमाया, क्या तुमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० से लिया है? हमने कहा, नहीं। उन्होंने फ़रमाया, फिर किससे लिया है? हमने कहा, हमने अपनी राय से उसे बताया है? उन्होंने फ़रमाया, इसी वजह से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि एक फ़क़ीह शैतान पर हज़ार आबिदों (इबादत करने वालों) से ज़्यादा भारी है।

फिर उस आदमी की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, ज़रा यह बताओ, पेशाब के बाद जब मनी निकलती है तो क्या उस वक़्त तुम्हारे दिल में शहवत होती है? उसने कहा, नहीं। फ़रमाया, उसके निकलने के बाद तुम अपने जिस्म में सुस्ती महसूस करते हो? उसने कहा, नहीं, तो फ़रमाया, यह मनी मेदे की ख़राबी की वजह से निकलती है, इसलिए तुम्हारे लिए वुज़ू काफ़ी है।[1]

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 118,

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लाए हुए इल्म के अलावा दूसरे इल्म में मशग़ूल होने पर इंकार और सख़्ती

हज़रत अम्र बिन यह्या बिन जादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक किताब लाई गई जो किसी जानवर के कंधे की हड्डी पर लिखी हुई थी। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, किसी क़ौम के बेवक़ूफ़ और गुमराह होने के लिए यह काफ़ी है कि अपने नबी के लाए हुए इल्म को छोड़कर दूसरे नबी के इल्म की तरफ़ मुतवज्जह हों या अपने नबी की किताब के अलावा किसी और किताब की तरफ़ मुतवज्जह हों, इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ (سورت عنکبوت آیت ٥١)

'क्या यह बात उन लोगों को काफ़ी नहीं हुई कि हमने आप पर यह किताब उतारी, जो उनको सुनाई जाती रहती है।'[1]

(सूरः अनकबूत, आयत 51)

हज़रत ख़ालिद बिन उर्फ़ुता रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार मैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बैठा हुआ था कि इतने में क़बीला अब्दुल क़ैस का एक आदमी उनके पास लाया गया, जो सूस शहर में रहता था (यह ख़ूज़िस्तान का एक शहर है जिसमें हज़रत दानियाल अलैहिस्सलाम की क़ब्र है।) हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम फ़्लां बिन फ़्लां अब्दी हो? उसने कहा, जी हां। हज़रत उमर रज़ि० के पास एक लाठी थी, वह उन्होंने उसे मारी।

उसने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मेरा क्या क़ुसूर? हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, बैठ जाओ। वह बैठ गया। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने ये आयतें तीन बार पढ़ीं—

---

1. जामेअ बयानुल इल्म, भाग 2, पृ० 40

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ (سورت یوسف آیت ۱-۳)

'अलिफ़-लाम-रा, ये आयतें हैं एक वाज़ेह किताब की, हमने इसको उतारा है, क़ुरआन अरबी ज़ुबान का, ताकि तुम समझो। हमने जो यह क़ुरआन आपके पास भेजा है उसके ज़रिए से हम आपसे एक बड़ा अच्छा क़िस्सा बयान करते हैं और इसके पहले आप सिर्फ़ बेख़बर थे।'

(सूरः यूसुफ़, आयत 1-3)

और उसे तीन बार लाठी मारी। उस आदमी ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन। मेरा क्या क़सूर? हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुमने ही हज़रत दानियाल अलैहिस्सलाम की किताबें लिखी हैं। उस आदमी ने कहा, इस बारे में आप मुझे जो फ़रमाएंगे, मैं वही करूंगा। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, जाओ और जाकर उन पर गर्म पानी डालकर सफ़ेद ऊन से मलकर उनको मिटा दो, न ख़ुद पढ़ो और न किसी को पढ़ाओ। अगर मुझे पता चला कि तुमने ख़ुद पढ़ी हैं या किसी को पढ़ाई है, तो मैं तुम्हें सख़्त सज़ा दूंगा, फिर उससे फ़रमाया, यहां बैठो। वह हज़रत उमर रज़ि० के सामने आकर बैठ गया।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, एक बार मैं गया और अह्ले किताब की एक किताब नक़ल की और उसे एक खाल पर लिखकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लाया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उमर रज़ि० ! यह तुम्हारे हाथ में क्या है? मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह किताब मैं इसलिए लिखकर लाया हूं, ताकि हमारे इल्म में इज़ाफ़ा हो जाए। यह सुनते ही हुज़ूर सल्ल० को ग़ुस्सा आ गया और इतना ग़ुस्सा आया कि आपके दोनों गाल लाल हो गए, फिर (हुज़ूर सल्ल० के इर्शाद पर लोगों को जमा करने के लिए 'अस्सलातु जामिअतुन' कहकर एलान किया गया। अंसार ने कहा, तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किसी वजह से सख़्त

ग़ुस्सा आया हुआ है, इसलिए हथियार लगाकर चलो, हथियार लगाकर चलो।

चुनांचे अंसार तैयार होकर आए और आकर हुज़ूर सल्ल० के मिंबर को चारों ओर से घेर लिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ लोगो! मुझे ऐसे कलिमे दिए गए हैं, जिनके अलफ़ाज़ कम और मानी बहुत ज़्यादा हैं और वे सर की तरह आख़िरी दर्जे के और फ़ैसला कर देने वाले क़िस्म के कलिमे हैं और अल्लाह ने बहुत मुख़्तसर करके मुझे अता फ़रमाए हैं और मैं तुम्हारे पास ऐसी मिल्लत लेकर आया हूं जो बिल्कुल वाज़ेह और साफ़-सुथरी है, इसलिए तुम हैरत और परेशानी में मत पड़ो और न हैरत में पड़ने वालों यानी अह्ले किताब से धोखा खाओ।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने फ़ौरन खड़े होकर अर्ज़ किया, मैं अल्लाह के रब होने पर, इस्लाम के दीन होने पर और आपके रसूल होने पर बिल्कुल राज़ी हूं, फिर हुज़ूर सल्ल० मिंबर से नीचे तशरीफ़ ले आए।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को अह्ले किताब से एक किताब मिली, वे उसे लेकर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मुझे अह्ले किताब से एक बहुत अच्छी किताब मिली है। यह सुनते ही हुज़ूर सल्ल० को ग़ुस्सा आ गया और फ़रमाया, ऐ इब्ने ख़त्ताब! क्या तुम अभी तक इस्लाम के मामलों के बारे में हैरान व परेशान हो? उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है! मैं तुम्हारे पास एक ऐसी मिल्लत को लेकर आया हूं जो बिल्कुल वाज़ेह और साफ़-सुथरी है। तुम अह्ले किताब से कुछ न पूछो, क्योंकि हो सकता है कि वे जवाब में तुम्हें हक़ बात कह दें और तुम उसे झुठला दो या वे ग़लत बात कह दें और तुम उसे सच्चा मान लो। (उनके यहां हक़ और बातिल आपस में मिला हुआ है) उस ज़ात की

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 182, कंज़, भाग 1, पृ० 94,

क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ज़िंदा होते तो उनको भी मेरी ही पैरवी करनी पड़ती, (इसके अलावा उनके लिए भी कामियाबी का और कोई रास्ता न होता।)[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरा अपने एक भाई के पास से गुज़र हुआ, जो कि क़बीला बनू क़ुरैज़ा में से है, उसने मुझे तौरात में से जामेअ बातें लिखकर दी हैं, क्या मैं उन्हें आपके सामने पेश करूं ?

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं, यह सुनते ही ग़ुस्से की वजह से हुज़ूर सल्ल० का चेहरा बदल गया, तो मैंने कहा, (ऐ उमर ! क्या तुम हुज़ूर सल्ल० के चेहरे पर ग़ुस्से की निशानी नहीं देख रहे हो ? उन्होंने अर्ज़ किया, हम अल्लाह के रब होने पर, इस्लाम के दीन होने पर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रसूल होने पर राज़ी हैं, इस पर हुज़ूर सल्ल० का ग़ुस्सा ख़त्म हो गया और फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर तुममें हज़रत मूसा अलै० होते और तुम मुझे छोड़कर उनकी पैरवी कर लेते तो तुम गुमराह हो जाते, दूसरी उम्मतों में से तुम मेरे हिस्से में आए हो और दूसरे नबियों में से मैं तुम्हारे हिस्से में आया हूं।[2]

हज़रत मैमून बिन मेहरान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया और उसने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! हमने जब मदाइन शहर जीता, तो मुझे एक किताब मिली, जिसकी बातें मुझे बहुत पसन्द आईं। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, क्या उसकी बातें अल्लाह की किताब से ली हुई हैं। उस आदमी ने कहा, नहीं। हज़रत उमर रज़ि० ने कोड़ा मंगाकर उसे मारना

1. जामेअ बयानुल इल्म, भाग 2, पृ० 42, हैसमी, भाग 1, पृ० 174
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 174

शुरू किया और ये आयतें उसे पढ़कर सुनाईं।

الٓر تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ إِنَّا أَنْزَلْنٰهُ قُرْآنًا

से लेकर—

وَإِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الْغَافِلِينَ

तक (सूरः यूसुफ़, आयत 1-3) (तर्जुमा इसी बाब के शुरू में गुज़र चुका है।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुमसे पहले लोग सिर्फ़ इस वजह से हलाक हुए कि वे अपने उलेमा और पादरियों की किताबों की तरफ़ मुतवज्जह हो गए और उन्होंने तौरात और इंजील को छोड़ दिया, यहां तक कि ये दोनों किताबें बोसीदा हो गईं और दोनों में जो इल्मे इलाही था, वह सब जाता रहा।[1]

हज़रत हुरैस बिन ज़ुहैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अह्ले किताब से कुछ भी न पूछा करो, क्योंकि वे ख़ुद गुमराह हो चुके हैं, इसलिए तुम्हें कभी भी हिदायत की बात नहीं बताएंगे, बल्कि हो सकता है कि वह शायद हक़ बात बयान करें और तुम उसे झुठला दो और वे ग़लत बात बयान करें और तुम उसकी तस्दीक़ कर दो।[2]

अब्दुर्रज़्ज़ाक़ की रिवायत में यह भी है कि हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया, अगर तुमने उनसे ज़रूर पूछना है, तो फिर यह देखो कि जो अल्लाह की किताब के मुताबिक़ हो, वह ले लो और जो उसके ख़िलाफ़ हो, उसे छोड़ दो।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि तुम अह्ले किताब से कोई बात कैसे पूछते हो जबकि तुम्हारी यह किताब जो अल्लाह ने अपने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारी है, तुम्हारे सामने मौजूद है। तमाम किताबें बहुत ज़माना पहले अल्लाह के

1. कंज़, भाग 1, पृ० 95,
2. जामेअ बयानुल इल्म, भाग 2, पृ० 40, 42, हैसमी, भाग 1, पृ० 192

पास से आई हैं और यह अभी-अभी अल्लाह के यहां से आई है, बिल्कुल तर व ताज़ा है। इसमें बाहर की कोई चीज़ मिलाई नहीं जा सकी। क्या अल्लाह ने तुम्हें अपनी किताब में यह नहीं बताया कि इन अह्ले किताब ने अल्लाह की किताब (तौरात और इंजील) को बदल दिया है और उसमें तह्रीफ़ (घटाने-बढ़ाने का काम) की है और बहुत-सी बातें अपने पास से लिखकर उसमें शामिल कर दी हैं और शामिल करके यों कहने लगे कि यह अल्लाह के पास से आया है। यह इसलिए किया ताकि कुछ थोड़ा-सा दुन्यावी फ़ायदा हासिल हो जाए। वह इल्मे इलाही जो तुम्हारे पास है, क्या वह तुम्हें इनसे पूछने से रोकता नहीं? (कुरआन व हदीस के होते हुए अह्ले किताब से पूछने की ज़रूरत नहीं है) अल्लाह की क़सम! हमने तो कभी नहीं देखा कि अह्ले किताब का कोई आदमी उस इल्म के बारे में पूछ रहा हो जो अल्लाह ने तुम्हारे पास नाज़िल फ़रमाया है।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, तुम अह्ले किताब से उनकी किताबों के बारे में पूछते हो, हालांकि तुम्हारे पास अल्लाह की किताब है जो तमाम किताबों के बाद सबसे आख़िर में अभी-अभी अल्लाह के पास से आई है, तुम उसे पढ़ते भी हो और वह बिल्कुल तर व ताज़ा है और उसमें कोई और चीज़ अभी तक मिलाई भी नहीं जा सकी।[2]

अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इल्म से असर लेना

हज़रत वलीद बिन अबिल वलीद अबू उस्मान मदनी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उक़्बा बिन मुस्लिम ने उनसे बयान किया कि हज़रत शुफ़ै अस्बही ने उनसे बयान किया कि मैं मदीना मुनव्वरा गया तो मैंने देखा कि एक आदमी के पास बहुत-से लोग जमा हैं। मैंने पूछा,

1. जामेअ, भाग 2, पृ० 42,
2. जामेअ, भाग 2, पृ० 42

यह साहब कौन हैं? लोगों ने बताया कि यह हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। मैं उनके क़रीब जाकर उनके सामने बैठ गया। वह लोगों को हदीसें सुना रहे थे।

जब वह ख़ामोश हो गए और सब लोग चले गए और वह अकेले रह गए तो मैंने अर्ज़ किया कि मेरे आप पर जितने हक़ बनते हैं (कि मैं मुसलमान हूं, मुसाफ़िर हूं और तालिबे इल्म हूं) उन सबका वास्ता देकर मैं दरख़्वास्त करता हूं कि आप मुझे वह हदीस सुनाएं जो आपने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुनी है और ख़ूब अच्छी तरह समझी है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया, ज़रूर, वह हदीस मैं तुम्हें ज़रूर सुनाऊंगा, जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे बयान फ़रमाई और मैंने उसे ख़ूब अच्छी तरह समझा है, फिर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने ऐसे ज़ोर से सिसकी ली कि बेहोश होने के क़रीब हो गए। हम कुछ देर ठहरे रहे, फिर उन्हें इफ़ाक़ा हुआ तो फ़रमाया, मैं तुम्हें वह हदीस ज़रूर सुनाऊंगा, जो हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे इसी घर में बयान फ़रमाई थी और उस वक़्त मेरे और हुज़ूर सल्ल० के अलावा और कोई नहीं था। फिर इतनी ज़ोर से सिसकी ली कि बेहोश ही हो गए, फिर वह संभले और उन्होंने अपना चेहरा पोंछा और फ़रमाया, मैं तुम्हें वह हदीस .जरूर सुनाऊंगा जो हुज़ूर सल्ल० ने उस वक़्त मुझसे बयान फ़रमाई थी जबकि हम दोनों उस घर में थे और हम दोनों के अलावा और कोई नहीं था। इसके बाद फिर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने इतने ज़ोर से सिसकी ली कि बेहोश हो गए और मुंह के बल ज़मीन पर गिरने लगे, लेकिन मैंने उन्हें संभाल लिया और बहुत देर तक उन्हें सहारा लेकर संभाले रखा।

फिर उन्हें इफ़ाक़ा हुआ तो फ़रमाया कि मुझसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह बयान फ़रमाया कि क़ियामत के दिन अल्लाह बन्दों के दर्मियान फ़ैसला करने की तरफ़ मुतवज्जह होंगे और उस वक़्त किसी में अल्लाह के सामने खड़े होने की ताक़त न होगी, बल्कि हर जमाअत घुटनों के बल सर झुकाए हुए होगी और अल्लाह पहले तीन

आदमियों को बुलाएंगे—एक वह आदमी जिसने सारा क़ुरआन याद किया और दूसरा वह आदमी जिसे अल्लाह के रास्ते में शहीद किया गया और तीसरा मालदार आदमी। फिर अल्लाह क़ुरआन के क़ारी को फ़रमाएंगे, जो वह्य मैंने अपने रसूल पर नाज़िल की थी, क्या मैंने तुझे वह नहीं सिखाई थी? वह कहेगा, ऐ मेरे रब! सिखाई थी। अल्लाह फ़रमाएंगे, तूने जो कुछ सीखा था, उस पर क्या अमल किया? वह कहेगा, मैं रात-दिन उसकी तिलावत करता था। अल्लाह उससे फ़रमाएंगे, तू ग़लत कहता है और फ़रिश्ते भी कहेंगे तू ग़लत कहता है और अल्लाह फ़रमाएंगे, तूने यह सब कुछ इसलिए किया ताकि लोग तुझे क़ारी कहें, सो यह तुझे कहा जा चुका (और तेरा मक़सद हासिल हो चुका) फिर मालदार को लाया जाएगा और अल्लाह उससे फ़रमाएंगे, क्या मैंने तुझे इस क़दर ज़्यादा वुसअत नहीं दी थी कि तू किसी का मुहताज नहीं था? वह कहेगा, जी हां, बहुत वुसअत दी थी। अल्लाह फ़रमाएंगे, जब मैंने तुझे इतना ज़्यादा दिया तो तूने उसके मुक़ाबले में क्या अमल किए? वह कहेगा, मैं सिलारहमी करता था और सदक़ा ख़ैरात देता था। अल्लाह फ़रमाएगा, तू ग़लत कहता है और फ़रिश्ते भी कहेंगे, तू ग़लत कहता है। फिर अल्लाह कहेंगे, तूने यह सब कुछ इसलिए किया था ताकि लोग कहें कि फ़्लां बहुत सख़ी है और यह कहा जा चुका और फिर अल्लाह के रास्ते में शहीद होने वाले को लाया जाएगा और अल्लाह उससे फ़रमाएंगे, तुम्हें किस वजह से क़त्ल किया गया? वह कहेगा, तूने अपने रास्ते में जिहाद करने का हुक्म दिया था, इस वजह से मैंने कुफ़्फ़ार से जंग की, यहां तक कि मुझे क़त्ल कर दिया गया। अल्लाह उससे फ़रमाएंगे, तू ग़लत कहता है और फ़रिश्ते भी कहेंगे, तू ग़लत कहता है, अल्लाह फ़रमाएंगे, तूने यह सब कुछ इसलिए किया था ताकि यह कहा जाए कि फ़्लां बहुत बहादुर है और यह कहा जा चुका। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे घुटनों पर हाथ मारकर फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरह रज़ि० ! अल्लाह की मख़्लूक़ में यही तीन आदमी हैं, जिनके ज़रिए क़ियामत के दिन सबसे पहले आग को

भड़काया जाएगा। यह हदीस हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से सुनकर हज़रत शफ़ै हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में गए और उन्हें यह हदीस सुनाई।

हज़रत अबू उस्मान कहते हैं कि हज़रत अला बिन अबी हकीम रहमतुल्लाहि अलैहि हज़रत मुआविया रज़ि० के तलवार बरदार थे। उन्होंने मुझे यह वाक़िया सुनाया कि एक आदमी ने हज़रत मुआविया रज़ि० के पास आकर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की तरफ़ से यह हदीस सुनाई। इसे सुनकर हज़रत मुआविया रज़ि० ने फ़रमाया, जब इन तीनों के साथ यह किया जाएगा तो बाक़ी लोगों के साथ क्या होगा?

फिर हज़रत मुआविया रज़ि० ने रोना शुरू किया और इतना ज़्यादा रोए कि हमें गुमान होने लगा कि शायद वह हलाक हो जाएंगे और हमने कहा, यह आदमी तो हमारे पास बड़ी ख़तरनाक ख़बर लेकर आया है। फिर हज़रत मुआविया रज़ि० को इफ़ाक़ा हुआ और उन्होंने अपना चेहरा साफ़ किया और फ़रमाया, अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ने सच फ़रमाया है—

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

(سورت ہود آیت ۱۵،۱۶)

'जो आदमी (अपने भलाई के आमाल से) सिर्फ़ दुन्यवी ज़िंदगी (के फ़ायदे) और उसकी रौनक़ (को हासिल करना चाहता है, तो हम इन लोगों के (इन) आमाल (की जज़ा) उनको दुनिया ही में पूरे तौर से भुगता देते हैं और उनके लिए दुनिया में कुछ कमी नहीं होती और ये ऐसे लोग हैं कि इनके लिए आख़िरत में दोज़ख़ के अलावा और कुछ (सवाब वग़ैरह) नहीं और उन्होंने जो कुछ किया था, वह आख़िरत में सबका सब नाकारा (साबित) होगा और (सच तो यह है कि वे) जो कुछ कर रहे हैं, वह अब भी बे-असर है।'[1]

1. तिर्मिज़ी, भाग 2, पृ० 61, तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 28,

हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मर्वः पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुम की आपस में मुलाक़ात हुई। वे दोनों कुछ देर आपस में बात करते रहे, फिर अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० चले गए और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० वहां रोते रह गए, तो एक आदमी ने उनसे पूछा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान ! आप क्यों रो रहे हैं ?

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह साहब यानी अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० अभी बता कर गए हैं कि उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी तकब्बुर होगा, अल्लाह उसे चेहरे के बल आग में डाल देंगे।[1]

बनू नौफ़ुल के आज़ाद किए हुए गुलाम हज़रत अबुल हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब सूरः ता-सीम-मीम, शुअरा उतरी, तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा और हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हुमा रोते हुए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्ल० यह आयत पढ़ रहे थे—

وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ

'और शायरों की राह तो बे राह लोग चला करते हैं।' फिर हुज़ूर—

وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

'हां, मगर जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए' तक पहुंचे, तो आपने फ़रमाया, तुम हो ये लोग, फिर पढ़ा—

وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا

'और उन्होंने (अपने शेरों में) कसरत से अल्लाह का ज़िक्र किया।' आपने फ़रमाया, तुम हो ये लोग, फिर पढ़ा—

وَانْتَصَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا ظُلِمُوا

1. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 345

'और उन्होंने बाद इसके कि उन पर ज़ुल्म हो चुका है, (इसका) बदला लिया।' (सूरः शुअरा, आयत 224-227)[1]

फिर फ़रमाया, तुम हो ये लोग।

हज़रत अबू सालेह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में यमन वाले आए और उन्होंने कुरआन सुना तो वे रोने लगे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने (तवाज़ुअन) फ़रमाया, हम भी ऐसे थे, फिर सख़्त दिल हो गए। अबू नुऐम साहिबे किताब कहते हैं, दिल सख़्त हो जाने का मतलब यह है कि अल्लाह को पहचान कर दिल ताक़तवर और मुतमइन हो गए।[2]

जो आलिम दूसरों को न सिखाए और जो जाहिल ख़ुद न सीखे, उन दोनों को डराना और धमकाना

हज़रत अब्ज़ा ख़ुज़ाई अबू अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान फ़रमाया और मुसलमानों की कुछ जमाअतों की ख़ूब तारीफ़ की, फिर आपने फ़रमाया, क्या बात है, कुछ लोग ऐसे हैं जो न अपने पड़ोसियों में दीन की समझ पैदा करते हैं और न उनको सिखाते हैं और न उन्हें समझदार बनाते हैं और न उनको भलाई का हुक्म देते हैं और न उन्हें बुराई से रोकते हैं? और क्या बात है, कुछ लोग ऐसे हैं, जो अपने पड़ोसियों से दीन की समझ हासिल नहीं करते और उनसे सीखते नहीं और समझ और अक़्ल की बातें हासिल नहीं करते? अल्लाह की क़सम! या तो ये लोग अपने पड़ोसियों को सिखाने लग जाएं और उन्हें समझदार बनाने लग जाएं और उनमें दीन की समझ पैदा करने लग जाएं और उन्हें भलाई का हुक्म देने और बुराई से रोकने लग जाएं और दूसरे लोग अपने पड़ोसियों से सीखने लग जाएं और उनसे समझ व अक़्ल की बातें हासिल करने लग जाएं

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 488,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 224

और दीन की समझ हासिल करने लग जाएं, वरना मैं उन्हें इस दुनिया में जल्द सज़ा दूंगा। फिर मिंबर से नीचे तशरीफ़ लाए और अपने घर तशरीफ़ ले गए, लोग एक दूसरे से कहने लगे कि क्या ख़्याल है, हुज़ूर सल्ल० ने किन लोगों की तरफ़ इशारा फ़रमाया है? तो कुछ लोगों ने कहा, हमारे ख़्याल में तो क़बीला अशअर के लोगों की तरफ़ इशारा फ़रमाया है, क्योंकि वे ख़ुद दीन की समझ रखते हैं और उनके कुछ पड़ोसी हैं जो चश्मों पर ज़िंदगी गुज़ारने वाले, देहाती और उजड्ड लोग हैं।

जब यह ख़बर उन अशअरी लोगों तक पहुंची तो उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने बहुत से लोगों की तो तारीफ़ फ़रमाई, लेकिन हमारे बारे में आपने कुछ नहीं फ़रमाया है, तो हमारी क्या कमी है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, लोगों को चाहिए कि वे अपने पड़ोसियों को सिखाएं, उनमें दीन की समझ पैदा करें और उन्हें समझदार बनाएं और उन्हें नेकी का हुक्म करें और उन्हें बुराई से रोकें और ऐसे ही दूसरे लोगों को चाहिए कि वे अपने पड़ोसियों से सीखें और उनसे समझ व अक़्ल की बातें हासिल करें, और दीन की समझ हासिल करें, नहीं तो मैं इन सबको दुनिया ही में जल्द सज़ा दूंगा।

उन अशअरी लोगों ने अर्ज़ किया, क्या दूसरों की ग़लती पर हम पकड़े जाएंगे? हुज़ूर सल्ल० ने अपनी वही बात दोबारा इर्शाद फ़रमाई, तो उन्होंने फिर अर्ज़ किया, क्या हम दूसरों की ग़लती पर पकड़े जाएंगे? हुज़ूर सल्ल० ने फिर वही इर्शाद फ़रमाया, तो उन्होंने अर्ज़ किया, हमें एक साल की मोहलत दे दें, चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें एक साल की मोहलत दी, ताकि वे इन पड़ोसियों को सिखाएं, उनमें दीन की समझ पैदा करें और उन्हें समझदार बनाएं। फिर हुज़ूर सल्ल० ने यह आयत तिलावत फ़रमाई—

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَ عِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّ كَانُوْا يَعْتَدُوْنَ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ (سورت مائدہ آیت ۷۸-۷۹)

'बनी इसराईल में जो लोग काफ़िर थे, उन पर लानत की गई थी दाऊद और ईसाइ बिन मरयम की ज़ुबान से। यह लानत इस वजह से हुई कि उन्होंने हुक्म की मुख़ालफ़त की और हद से निकल गए। जो बुरा काम उन्होंने कर रखा था, उससे बाज़ न आते थे, वाक़ई उनका काम बेशक बुरा था।'[1] (सूरः माइदा, आयत 78-79)

जो भी इल्म और ईमान हासिल करना चाहेगा, अल्लाह तआला उसे ज़रूर अता फ़रमाएंगे

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलमा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया और रोने लगा। हज़रत मुआज़ रज़ि० ने फ़रमाया, क्यों रोते हो? उस आदमी ने कहा, न तो मैं इस वजह से रोता हूं कि मेरे और आपके दर्मियान कोई रिश्तेदारी है और न इस वजह से रोता हूं कि मुझे आपसे कुछ दुनिया मिला करती थी (जो आपके इंतिक़ाल के बाद मुझे नहीं मिलेगी), बल्कि इस वजह से रोता हूं कि मैं आपसे इल्म हासिल किया करता था और अब मुझे डर है कि यह इल्म हासिल करने का सिलसिला ख़त्म हो जाएगा।

हज़रत मुआज़ रज़ि० ने फ़रमाया, मत रो, क्योंकि जो भी इल्म और ईमान हासिल करना चाहेगा, अल्लाह उसे ज़रूर अता फ़रमाएगा जैसे कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अता फ़रमाया था, हालांकि उस वक़्त इल्म और ईमान न था।[2]

हज़रत यज़ीद बिन अमीरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उनके आस-पास बैठे हुए लोग रोने लगे, हज़रत मुआज़ रज़ि० ने फ़रमाया, क्यों रोते हो? उन्होंने कहा, हम उस इल्म की वजह से रोते हैं, जिसके हासिल करने का सिलसिला आपके इंतिक़ाल पर टूट जाएगा।

1. कंज़, भाग 2, पृ० 139
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 234,

हज़रत मुआज़ रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं, इल्म और ईमान क़ियामत तक अपनी जगह रहेंगे, जो इन दोनों को तलाश करेगा, वह इन्हें क़ुरआन व सुन्नते रसूल सल्ल० में से ज़रूर पा लेगा (चूंकि क़ुरआन मजीद मेयार है, इसलिए) हर कलाम को क़ुरआन पर पेश करो और क़ुरआन को किसी कलाम पर पेश मत करो। हज़रत उमर, हज़रत उस्मान और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हुम से इल्म हासिल करो। अगर ये लोग न मिलें, तो फिर इन चार से हासिल करो—हज़रत उवैमिर (अबुद्दर्दा), हज़रत इब्ने मस्ऊद, हज़रत सलमान, हज़रत इब्ने सलाम रज़ियल्लाहु अन्हुम। यह इब्ने सलाम वही हैं, जो यहूदी थे, फिर मुसलमान हो गए थे, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि ये जन्नत में बिना हिसाब जाने वाले दस आदमियों में से हैं और आलिम की लग़्ज़िश से बचो और जो भी हक़ बात लेकर आए उसे क़ुबूल कर लो और जो ग़लत बात लेकर आए, उसे क़ुबूल न करो, चाहे वह कोई भी हो।[1]

हज़रत यज़ीद बिन अमीरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु का मरज़ुल वफ़ात शुरू हुआ तो कभी वह बेहोश हो जाते थे और कभी उन्हें इफ़ाक़ा हो जाता था। एक बार तो ऐसा बेहोश हुए कि हम समझे कि उनका इंतिक़ाल हो गया है। फिर उन्हें इफ़ाक़ा हुआ तो मैं उनके सामने बैठा हुआ रो रहा था। उन्होंने फ़रमाया, क्यों रो रहे हो?

मैंने कहा, मैं न तो इस वजह से रो रहा हूं कि मुझे आपसे कोई दुनिया मिला करती थी, जो अब मुझे नहीं मिला करेगी और न इस वजह से रो रहा हूं कि मेरे और आपके दर्मियान कोई रिश्तेदारी है, बल्कि इस वजह से रो रहा हूं कि आपसे इल्म की बातें और सही फ़ैसले सुना करता था, वह सब अब जाता रहेगा।

हज़रत मुआज़ रज़ि० ने फ़रमाया, मत रोओ, क्योंकि इल्म और ईमान अपनी जगह रहेंगे, जो उन्हें तलाश करेगा, वह उन्हें ज़रूर पा लेगा,

1. कंज़, भाग 7, पृ० 87

इसलिए इल्म को वहां खोजो, जहां हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने तलाश किया था, क्योंकि वह जानते नहीं थे, तो उन्होंने अल्लाह से सवाल किया था, जैसे कि क़ुरआन में है—

إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ (سورت صافات آیت ۹۹)

'मैं तो अपने रब की तरफ़ चला जाता हूं, वह मुझको (अच्छी जगह) पहुंचा ही देगा।' (सूरः साफ़्फ़ात, आयत 99)

मेरे बाद इन चार आदमियों से इल्म हासिल करना। अगर इनमें से किसी से न मिले तो फिर मशहूर और अच्छे लोगों से इल्म के बारे में पूछना। वे चार ये हैं—हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम, हज़रत सलमान और हज़रत उवैमिर अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हुम और हकीम आदमी की लग़्ज़िश से और मुनाफ़िक़ के फ़ैसले से बचकर रहना।

मैंने पूछा, मुझे किस तरह हकीम आदमी की लग़्ज़िश का पता चल सकता है? हज़रत मुआज़ रज़ि० ने फ़रमाया, वह गुमराही का कलिमा जिसे शैतान किसी आदमी की ज़ुबान पर इस तरह जारी कर देता है, जिसे वह बेसोचे-समझे फ़ौरन बोल देता है और मुनाफ़िक़ भी कभी हक़ बात कह देता है, इसलिए इल्म जहां से भी आए, तुम उसे ले लो, क्योंकि हक़ बात में नूर होता है और जिन बातों का हक़ और बातिल होना वाज़ेह न हो, उनसे बचो।[1]

हज़रत अम्र बिन मैमून रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हम लोग यमन में रहा करते थे, वहां हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु आए और फ़रमाया, ऐ यमन वालो! इस्लाम ले आओ, सलामती पा लोगे। मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से तुम्हारी तरफ़ क़ासिद बनकर आया हूं। हज़रत अम्र रह० कहते हैं कि मेरे दिल में उनकी मुहब्बत ऐसी बैठी कि मैं उनके इंतिक़ाल तक उनसे अलग नहीं हुआ, उनके साथ ही रहा, जब उनके इंतिक़ाल का वक़्त

1. हाकिम, भाग 4, पृ० 466.

आया तो मैं रोने लगा। हज़रत मुआज़॰ रज़ि॰ ने फ़रमाया, क्यों रोते हो? मैंने कहा, मैं उस इल्म की वजह से रोता हूं जो आपके साथ चला जाएगा। हज़रत मुआज़ रज़ि॰ ने फ़रमाया, नहीं। इल्म और ईमान क़ियामत तक दुनिया में रहेगा। आगे और हदीस ज़िक्र की।[1]

ईमान और इल्म व अमल को एक साथ इकट्ठा सीखना

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैंने अपनी ज़िंदगी का बड़ा वक़्त इस तरह गुज़ारा है कि हम में से हर एक क़ुरआन से पहले ईमान सीखता था और जो भी सूरः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतरती थी, हर एक उसके हलाल व हराम ऐसे सीखता था जैसे तुम क़ुरआन को सीखते हो और जहां वक़्फ़ करना मुनासिब होता था, उसको भी सीखता था।

फिर अब मैं ऐसे लोगों को देख रहा हूं जो ईमान से पहले क़ुरआन हासिल कर लेते हैं और सूरः फ़ातिहा शुरू से आख़िर तक सारी पढ़ लेते हैं और उन्हें पता नहीं चलता कि सूरः फ़ातिहा किन कामों का हुक्म दे रही है और किन कामों से रोक रही है और इस सूरः में कौन-सी आयत ऐसी है जहां जाकर रुक जाना चाहिए और सूरः फ़ातिहा को रद्दी खजूर की तरह बिखेर देता है, यानी जल्दी-जल्दी पढ़ता है।[2]

हज़रत जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे, हम नवउम्र लड़के हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हुआ करते थे। पहले हमने ईमान सीखा, फिर हमने क़ुरआन सीखा, जिससे हमारा ईमान और ज़्यादा हो गया।[3]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में एक आयत या कुछ आयतें या पूरी सूरः उतरती तो उससे मुसलमानों का ईमान और ख़ुशूअ और बढ़ जाता और

1. कंज़, भाग 7, पृ॰ 87,
2. हैसमी, भाग 1, पृ॰ 165,
3. इब्ने माजा, पृ॰ 11,

वह आयत या सूरः जिस काम से रोकती, सारे मुसलमान उससे रुक जाते ।[1]

हज़रत अबू अब्दुर्रहमान सुलमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जो सहाबा हमें पढ़ाते थे, उन्होंने हमें बताया कि वे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दस आयतें पढ़ते और अगली दस आयतें तब शुरू करते, जब पहली दस आयतों में जो इल्म व अमल है, उसे अच्छी तरह जान लेते, चुनांचे यों हम इल्म व अमल दोनों सीखते ।[2]

हज़रत अबू अब्दुर्रहमान से उसी जैसी दूसरी रिवायत में यह मज़्मून भी नक़ल किया गया है कि हम क़ुरआन को और उस पर अमल को सीखते थे और हमारे बाद ऐसे लोग क़ुरआन के वारिस बनेंगे, जो पानी की तरह सारा क़ुरआन पी जाएंगे, लेकिन यह क़ुरआन उनकी हंसुली की हड्डी से नीचे नहीं उतरेगा और हलक़ की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया, बल्कि इससे भी नीचे नहीं जाएगा ।[3]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क़ुरआन की दस आयतें सीखते तो बाद वाली आयतें तब सीखते जब पहली आयतों में जो कुछ होता, उसे अच्छी तरह सीख लेते । हज़रत शरीक रिवायत करने वाले से पूछा गया, क्या इससे मुराद यह है कि पहली आयतों में जो अमल होता उसे सीख लेते ? हज़रत शरीक ने कहा, जी हां ।[4]

जितने दीनी इल्म की ज़रूरत हो, उतना हासिल करना

हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, ऐ क़बीला बनू अब्स वाले ! इल्म तो बहुत ज़्यादा है और उम्र बहुत थोड़ी है, इसलिए दीन पर अमल करने के लिए जितने इल्म की

1. कंज़, भाग 1, पृ० 232,
2. अहमद, भाग 5, पृ० 410, हैसमी, भाग 1, पृ० 165, कंज़, भाग 1, पृ० 232
3. इब्ने साद, भाग 6, पृ० 172
4. कंज़, भाग 1, पृ० 232,

ज़रूरत पड़ती जाए, उतना इल्म हासिल करते जाओ और जिसकी ज़रूरत नहीं, उसे छोड़ दो और उसके हासिल करने की मशक़्क़त में न पड़ो।[1]

हज़रत अबुल बख़्तरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि क़बीला बनू अब्स का एक आदमी हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ सफ़र में रहा। उस आदमी ने दजला नदी से पानी पिया। हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उससे फ़रमाया और पी लो। उसने कहा, नहीं। मैं सेर हो चुका हूं। हज़रत सलमान रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हारा क्या ख़्याल है? तुम्हारे पानी पीने से दजला नदी में कोई कमी आई है? उस आदमी ने कहा, मैंने जितना पानी पिया है उससे इस नदी में क्या कमी आएगी? हज़रत सलमान रज़ि० ने फ़रमाया, इल्म भी उसी दरिया की तरह है, इसलिए जितना इल्म तुम्हें फ़ायदा दे, उतना हासिल कर लो।[2]

हज़रत मुहम्मद बिन अबी क़ैला रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को ख़त लिखकर इल्म के बारे में पूछा। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने उसे यह जवाब लिखा कि तुमने मुझे ख़त लिखकर इल्म के बारे में पूछा है, इल्म तो बहुत ज़्यादा है। मैं सारा लिखकर तुम्हें नहीं भेज सकता, अलबत्ता तुम इस बात की पूरी कोशिश करो कि तुम्हारी अल्लाह से मुलाक़ात इस हाल में हो कि तुम्हारी ज़ुबान मुसलमानों की आबरू से रुकी हुई हो और तुम्हारी कमर पर उनके नाहक़ ख़ून का बोझ न हो और तुम्हारा पेट उनके माल से ख़ाली हो और तुम मुसलमानों की जमाअत से चिमटे हुए हो।[3]

दीन इस्लाम और फ़राइज़ सिखाना

हज़रत अबू रिफ़ाआ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंचा, तो आप बयान

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 189,
2. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 188,
3. कंज़, भाग 5, पृ० 230

फ़रमा रहे थे। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! एक अजनबी परदेसी आदमी अपने दीन के बारे में पूछने आया है, जिसे कुछ मालूम नहीं है कि उसका दीन क्या है?

हुज़ूर सल्ल० बयान छोड़कर मेरे पास तशरीफ़ लाए, फिर एक कुर्सी लाई गई। मेरा ख़्याल यह है कि उसके पाए लोहे के थे और उस पर हुज़ूर सल्ल० बैठकर मुझे अल्लाह का इल्म सिखाने लगे, फिर मिंबर पर वापस जाकर अपना बयान पूरा फ़रमाया।[1]

हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक देहाती आदमी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया और अर्ज़ किया, मुझे इस्लाम सिखा दें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और रमज़ान के रोज़े रखो और हज बैतुल्लाह करो और लोगों के लिए वही पसन्द करो जो तुम अपने लिए पसन्द करते हो और उनके लिए वही चीज़ नापसन्द करो जो अपने लिए नापसन्द करते हो।[2]

हज़रत मुहम्मद बिन उमारा बिन ख़ुज़ैमा बिन साबित रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत फ़रवा बिन मुसैक मुरादी रज़ियलल्लाहु अन्हु किन्दा के बादशाह को छोड़कर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी करने के लिए अपनी क़ौम के नुमाइंदे बनकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आए और हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु के मेहमान बने और वह क़ुरआन, इस्लाम के फ़राइज़ और शरई हुक्म सीखते थे। आगे और हदीस ज़िक्र की है।[3]

1. मुस्लिम, भाग 1, पृ० 287, अदबुल मुफ़रद, पृ० 171, कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 232,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 76
3. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 327

हज़रत ज़ुबाआ बिन्त ज़ुबैर बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाती हैं कि यमन से बहरा क़बीले का वफ़्द आया जो कि तेरह आदमी थे। वे अपने ऊंटों की नकेल पकड़कर चलते रहे, यहां तक कि बनू जदीला क़बीला के मुहल्ले में हज़रत मिक़्दाद बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु के दरवाज़े पर पहुंच गए। हज़रत मिक़्दाद रज़ि० ने बाहर आकर उन्हें ख़ुश आमदीद कहा, और अपने घर के एक हिस्से में ठहराया। वे लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर मुसलमान हुए और फ़राइज़ सीखे और कुछ दिन क़ियाम फ़रमाया और फिर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अल-विदाअ कहने के लिए हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा रज़ि० को हुक्म दिया कि उन्हें अब जाते हुए हदिए दे दिए जाएं। फिर वे लोग अपने इलाक़े को वापस चले गए।[1]

हज़रत इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा लोगों को इस्लाम सिखाया करते थे और यह फ़रमाया करते थे कि अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करो और जो नमाज़ अल्लाह ने तुम पर फ़र्ज़ की है, उसे वक़्त पर अदा करो, क्योंकि नमाज़ में कोताही करना हलाकत है और दिल की ख़ुशी के साथ ज़कात अदा करो और रमज़ान के रोज़े रखो और जिसे अमीर बनाया जाए, उसकी बात सुनो और मानो।[2]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि एक देहाती हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया और अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मुझे दीन सिखा दें। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं और नमाज़

1. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 331,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 69

क़ायम करो और ज़कात अदा करो और हज बैतुल्लाह करो और रमज़ान के रोज़े रखो और लोगों के ज़ाहिरी अमल देखो, और उनके पोशीदा और छिपे हुए आमाल को मत तलाश करो और हर उस काम से बचो जिसके करने से शर्म आती हो (और ये तमाम काम बिल्कुल हक़ और सच हैं, इसलिए) जब अल्लाह से मुलाक़ात हो तो कह देना कि उमर रज़ि० ने मुझे इन कामों का हुक्म दिया था।[1]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक देहाती आदमी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया और अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मुझे दीन सिखा दें। इसके बाद पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया और आख़िर में यह मज़्मून भी है कि फिर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह के बन्दे! इन तमाम कामों को मज़बूती से थाम लो, और जब अल्लाह से मिलो तो जो दिल में आए, कह देना।[2]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास एक आदमी आया और उसने कहा, ऐ अमीरुलमोमिनीन! मैं देहात का रहने वाला हूं और मुझे बहुत काम होते हैं, इसलिए मुझे ऐसे अमल बताएं जिन पर पूरी तरह भरोसा कर सकूं और जिनके ज़रिए मैं मंज़िले मक़्सूद यानी अल्लाह तक या जन्नत तक पहुंच सकूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अच्छी तरह समझ लो और अपना हाथ मुझे दिखाओ, उसने अपना हाथ हज़रत उमर रज़ि० के हाथ में दे दिया। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करो और नमाज़ क़ायम करो और फ़र्ज़ ज़कात अदा करो और हज और उमरा करो और (अमीर की) फ़रमांबरदारी करो और लोगों के ज़ाहिरी आमाल और हालात देखो और उनके पोशीदा

1. बैहक़ी, अस्बहानी,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 76,

और छिपे हुए आमाल और हालात मत तलाश करो और हर वह काम करो कि जिसकी ख़बर लोगों में फैल जाए तो तुम्हें न शर्म उठानी पड़े और न रुसवाई सहनी पड़े और हर उस काम से बचो कि जिसकी ख़बर लोगों में फैल जाए तो तुम्हें शर्म भी उठानी पड़े और रुसवा भी होना पड़े।

उस आदमी ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं इन तमाम बातों पर अमल करूंगा और जब अपने रब से मिलूंगा तो कह दूंगा कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने मुझे ये काम बताए थे, हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, इन तमाम कामों को ले जाओ और जब अपने रब से मिलो तो जो दिल चाहे कह देना।[1]

नमाज़ सिखाना

हज़रत अबू मालिक अशजई के वालिद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब कोई आदमी मुसलमान होता, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसे सबसे पहले नमाज़ सिखाते।[2]

हज़रत हकम बिन उमैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमें सिखाते और फ़रमाते थे कि जब तुम नमाज़ के लिए खड़े होने लगो, तो पहले अल्लाहु अक्बर कहो और अपने हाथों को उठाओ, लेकिन कानों से ऊपर न ले जाओ और फिर यह पढ़ो—

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَ تَبَارَكَ اسْمُكَ وَ تَعَالٰى جَدُّكَ وَ لَا إِلٰهَ غَيْرُكَ

सुब-हा-न-कल्लाहुम-म व बिहम्दि-क व तबारकस्मु-क व तआला जद्दु-क व ला-इला-ह ग़ैरु-क०

'ऐ अल्लाह ! तू पाक है, हम तेरी तारीफ़ करते हैं, तेरा नाम बरकत वाला है, तेरी बुज़ुर्गी बुलंद है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।'[3]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हमें हज़रत

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 208,
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 293,
3. कंज़, भाग 4, पृ० 203

अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु मिंबर पर इस तरह अत्तहीयात सिखाते थे जैसे कि उस्ताद मक्तब में बच्चों को सिखाता है।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे अत्तहीयात सिखाई और इर्शाद फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी उनका हाथ पकड़ कर उन्हें अत्तहीयात सिखाई थी—

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ الصَّلَوَاتُ الطَّيِّبَاتُ الْمُبَارَكَاتُ لِلّٰهِ

'अत्तहीयातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तय्यिबातुल मुबारकातु लिल्लाहि०'[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अब्द क़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि उन्होंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को मिंबर पर लोगों को अत्तहीयात सिखाते हुए सुना, फ़रमा रहे थे, ऐ लोगो ! कहो, 'अत्तहीयातु लिल्लाहि' से लेकर आख़िर तक।[3]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमें अत्तहीयात इस तरह सिखाते थे जैसे हमें क़ुरआन की कोई सूरः सिखाते थे।[4]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से भी ऐसी ही हदीस नक़ल हुई है।[5]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे अत्तहीयात इस तरह सिखाई, जिस तरह मुझे आप क़ुरआन की कोई सूरः सिखाया करते थे और उस वक़्त मेरा हाथ हुज़ूर सल्ल० के हाथों में था, फिर उसके बाद अत्तहीयात का ज़िक्र किया।[6]

---

1. कंज़, भाग 4, पृ० 217
2. कंज़, भाग 4, पृ० 217
3. मालिक, शाफ़ई,
4. इब्ने अबी शैबा,
5. इब्ने अबी शैबा,
6. इब्ने अबी शैबा

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमें सूरतों का शुरू वाला हिस्सा और क़ुरआन सिखाते थे। चुनांचे हमें हुज़ूर सल्ल० ने नमाज़ का ख़ुत्बा और निकाह वग़ैरह किसी ज़रूरत व ख़ुत्बा भी सिखाया, फिर अत्तहीयात का ज़िक्र किया।[1]

हज़रत अस्वद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु हमें अत्तहीयात इस तरह सिखाते थे जिस तरह हमें क़ुरआन की कोई सूरः सिखाते थे, इसमें हमारी अलिफ़ (अ) और वाव (व) की ग़लती भी पकड़ते थे।[2]

हज़रत ज़ैद बिन वह्ब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद में तशरीफ़ ले गए तो देखा कि एक आदमी नमाज़ पढ़ रहा है, लेकिन रुकूअ-सज्दा पूरा नहीं कर रहा। जब वह नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ, तो हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने उससे पूछा, कितने अर्से से तुम ऐसी नमाज़ पढ़ रहे हो? उसने कहा, चालीस साल से।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने फ़रमाया, तुमने चालीस साल से ठीक नमाज़ नहीं पढ़ी और अगर तुम ऐसी नमाज़ पढ़ते हुए मरोगे, तो तुम इस हालत पर नहीं मरोगे, जिस पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पैदा किए गए थे, फिर उसकी तरफ़ मुतवज्जह होकर उसे सिखाने लगे। फिर फ़रमाया, आदमी को चाहिए कि चाहे वह नमाज़ में क़ियाम मुख़्तसर करे, लेकिन रुकूअ-सज्दा पूरा करे।[3]

अज़्कार और दुआएं सिखाना

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया, मैं तुम्हें पांच हज़ार बकरियां दे दूं या ऐसे पांच कलिमे सिखा दूं जिनसे तुम्हारा दीन और दुनिया दोनों ठीक हो जाएं। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के

---

1. अस्करी (अम्साल)
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 218-219
3. कंज़, भाग 4, पृ० 235,

रसूल सल्ल० ! पांच हज़ार बकरियां तो बहुत ज़्यादा हैं, लेकिन आप मुझे वे कलिमे ही सिखा दें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह कहो,

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ذَنْبِيْ وَوَسِّعْ لِيْ خُلُقِيْ وَطَيِّبْ لِيْ كَسْبِيْ وَقَنِّعْنِيْ
بِمَا رَزَقْتَنِيْ وَلَا تُذْهِبْ قَلْبِيْ اِلٰى شَيْءٍ صَرَفْتَهٗ عَنِّيْ

'ऐ अल्लाह ! मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा और मेरे अख़्लाक़ वसीअ (फैला हुआ) फ़रमा और मेरी कमाई को पाक फ़रमा और जो रोज़ी तू मुझे अता फ़रमाए, इस पर मुझे क़नाअत नसीब फ़रमा और जो चीज़ तू मुझसे पहले हटा ले, उसकी तलब मुझमें बाक़ी रहने न दे।'[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा अपनी बेटियों को ये कलिमे सिखाते और उन्हें उनके पढ़ने की ताकीद करते और फ़रमाते, मैंने ये कलिमे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से सीखे हैं और हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया था कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कोई परेशानी या मुश्किल काम पेश आता तो आप ये कलिमे पढ़ते—

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَهٗ تَبَارَكَ اللّٰهُ رَبُّ
الْعَالَمِيْنَ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

'अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं जो बड़ा बुर्दबार और बड़े करम वाला है। वह तमाम ऐबों से पाक है। अल्लाह बरकत वाला है जो तमाम जहानों का रब है और बड़े अर्श का रब है और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है।'[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझसे फ़रमाया, ऐ मेरे भतीजे ! मैं तुम्हें ऐसे कलिमे सिखाऊंगा, जो मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुने हैं, मौत के वक़्त जो इन कलिमों को कहेगा, वह जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगा।

1. कंज़, भाग 1, पृ० 305,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 298,

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ

'ला इलाह-इल्लल्लाहुल हलीमुल करीम'

'अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं जो बड़ा बुर्दबार, बड़े करम वाला है।' तीन बार,

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

'अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन'

'तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए जो तमाम जहानों का रब है।' तीन बार,

تَبَارَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ يُحْيِىْ وَ يُمِيْتُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيْرٌ

'तबारकल्लज़ी बियदिहिल मुल्कु युह्यी व युमीतु व हु-व अला कुल्लि शैइन क़दीर०'

'वह ज़ात बा बरकत है, जिसके क़ब्ज़े में तमाम बादशाही है, वह ज़िंदा करता है, और मारता है और वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है।'[1]

हज़रत साद बिन जुनादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि तायफ़ वालों में से मैं सबसे पहले नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और तायफ़ के दक्खिन में वाक़े पहाड़ी सिलसिले के ऊपरी हिस्से से सुबह-सुबह चला और अस्त्र के वक़्त मिना में पहुंचा, फिर पहाड़ पर चढ़ा और उतर कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मुसलमान हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने मुझे 'क़ुल हुवल्लाहु अहद०' और 'इज़ा ज़ुल ज़िलत' सिखाई और ये कलिमे भी सिखाए—

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ

'सुब्हानल्लाहि, वलहम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर०' और फ़रमाया यही वह नेक कलिमे हैं जो बाक़ी रहने वाले हैं।[2]

1. कंज़, भाग 8, पृ० 111,
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 86,

हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमें सिखाते कि सुबह को हम यह दुआ पढ़ें—

أَصْبَحْنَا عَلَى فِطْرَةِ الْإِسْلَامِ وَ كَلِمَةِ الْإِخْلَاصِ وَ سُنَّةِ نَبِيِّنَا

مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَ مِلَّةِ إِبْرَاهِيْمَ حَنِيْفًا وَّ مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ

'अस्बहना अला फ़ितरतिल इस्लामि व कलिमतिल इख़्लासि व सुन्नति नबीयिना मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व मिल्लति इब्राही-म हनीफ़ंव-व मा का-न मिनल मुश्रिकीन०'

'हमने फितरते इस्लाम, कलिमा-ए-इख़्लास अपने नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत और इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मिल्लत पर सुबह की, सबसे यकसू होकर एक अल्लाह के हो गए थे और वह मुश्रिकों में से नहीं थे,

और शाम को भी यह दुआ पढ़ें (सिर्फ़ 'अस्बहना' की जगह 'अम्सैना' कर लें।)[1]

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमें ये कलिमे इस तरह सिखाते थे, जिस तरह उस्ताद बच्चों को लिखना सिखाता है।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِإِخْوَانِنَا وَ أَخَوَاتِنَا وَ أَصْلِحْ ذَاتَ بَيْنِنَا وَ أَلِّفْ بَيْنَ قُلُوْبِنَا اَللّٰهُمَّ هٰذَا عَبْدُكَ فُلَانُ بْنُ فُلَانٍ وَ لَا نَعْلَمُ إِلَّا خَيْرًا وَ أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَ لَهُ

अल्लाहु-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिनल बुख़्ल व अऊज़ु बि-क मिनल जुब्नि व अऊज़ु-बि-क अन उरुद-द इला अरज़लिल उमुरि व अऊज़ु बि-क मिन फ़ित-न तिद-दुनिया व अज़ाबिल क़ब्रि०

'ऐ अल्लाह ! मैं बुख़्ल से तेरी पनाह मांगता हूं और बुज़दिली से तेरी पनाह मांगता हूं और मैं इस बात से तेरी पनाह मांगता हूं कि मुझे नाकारा उम्र की तरफ़ पहुंचा दिया जाए और दुनिया के फ़िलों से और

1. कंज़, भाग 1, पृ० 294

क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह मांगता हूं।'[1]

हज़रत हारिस बिन नौफ़ुल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें मर जाने वाले के लिए यह दुआ सिखाई—

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِإِخْوَانِنَا وَأَخَوَاتِنَا وَأَصْلِحْ ذَاتَ بَيْنِنَا وَأَلِّفْ بَيْنَ قُلُوبِنَا اَللّٰهُمَّ هٰذَا عَبْدُكَ
فُلَانُ بْنُ فُلَانٍ وَلَا نَعْلَمُ إِلَّا خَيْرًا وَأَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَلَهُ

'ऐ अल्लाह ! हमारे भाई और बहनों की मग़फ़िरत फ़रमा और हमारे आपस के ताल्लुक़ात को ठीक फ़रमा और हमारे दिलों में एक दूसरे की मुहब्बत पैदा फ़रमा। ऐ अल्लाह ! यह तेरा बन्दा फ़्लां बिन फ़्लां है। हमें तो यही मालूम है कि यह बहुत नेक था और आप इसे हमसे ज़्यादा जानते हैं। आप हमारी और इसकी मग़फ़िरत फ़रमा दें।'

अपनी जमाअत में मैं सबसे छोटा था। मैंने अर्ज़ किया, अगर मुझे इसकी कोई नेकी मालूम न हो तो? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तो तुम वही कहो जो तुम्हें मालूम है।[2]

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब रमज़ान शरीफ़ आता तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमें दुआ के ये कलिमे सिखाते थे—

اَللّٰهُمَّ سَلِّمْنِي لِرَمَضَانَ وَسَلِّمْ رَمَضَانَ لِي وَسَلِّمْهُ لِي مُتَقَبَّلًا

अल्लाहुम-म सल्लिमनी लि र-मज़ा-न व सल्ल-म रम ज़ा-न नी व सल्लमहू ली मु-तक़ब्बलन

'ऐ अल्लाह ! मुझे रमज़ान के लिए सही सालिम रख और रमज़ान को मेरे लिए सही सालिम रख (यानी चांद वक़्त पर नज़र आए, बादल वग़ैरह न हों) और फिर उसे क़ुबूल भी फ़रमा।[3]

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 207,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 114
3. कंज़, भाग 4, पृ० 323

हज़रत सलामा किन्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद पढ़ने के लिए ये कलिमे सिखाते थे—

اَللّٰهُمَّ دَاحِيَ الْمَدْحُوَّاتِ وَ
بَارِئَ الْمَسْمُوْكَاتِ وَ جَبَّارَ الْقُلُوْبِ عَلٰى فِطْرَتِهَا شَقِيِّهَا وَ سَعِيْدِهَا اِجْعَلْ شَرَائِفَ صَلَوَاتِكَ
وَ نَوَامِيَ بَرَكَاتِكَ وَرَأْفَةَ تَحَنُّنِكَ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَ رَسُوْلِكَ الْخَاتِمِ لِمَا سَبَقَ وَ الْفَاتِحِ
لِمَا اُغْلِقَ وَالْمُعِيْنِ عَلَى الْحَقِّ بِالْحَقِّ وَالدَّامِغِ لِجَيْشَاتِ الْاَبَاطِيْلِ كَمَا حُمِّلَ فَاضْطَلَعَ بِاَمْرِكَ
بِطَاعَتِكَ مُسْتَوْفِزًا فِيْ مَرْضَاتِكَ غَيْرَ نَكِلٍ عَنْ قُدُمٍ وَ لَا وَهِنٍ فِيْ عَزْمٍ وَاعِيًا لِوَحْيِكَ حَافِظًا
لِعَهْدِكَ مَاضِيًا عَلٰى نَفَاذِ اَمْرِكَ حَتّٰى اَوْرٰى قَبَسًا لِقَابِسٍ بِهٖ هُدِيَتِ الْقُلُوْبُ بَعْدَ خَوْضَاتِ
الْفِتَنِ وَالْاِثْمِ وَاَبْهَجَ مُوْضِحَاتِ الْاَعْلَامِ وَ مُنِيْرَاتِ الْاِسْلَامِ وَ نَائِرَاتِ الْاَحْكَامِ فَهُوَ اَمِيْنُكَ
الْمَامُوْنُ وَ خَازِنُ عِلْمِكَ الْمَخْزُوْنِ وَ شَهِيْدُكَ يَوْمَ الدِّيْنِ وَ بَعِيْثُكَ نِعْمَةً وَرَسُوْلُكَ بِالْحَقِّ
رَحْمَةً اَللّٰهُمَّ افْسَحْ لَهٗ مَفْسَحًا فِيْ عَدْنِكَ وَاجْزِهٖ مُضَاعَفَاتِ الْخَيْرِ مِنْ فَضْلِكَ مُهَنَّآتٍ غَيْرَ
مُكَدَّرَاتٍ مِنْ فَوْزِ ثَوَابِكَ الْمَمْلُوْلِ وَ جَزِيْلِ عَطَائِكَ الْمَخْزُوْنِ اَللّٰهُمَّ اَعْلِ عَلٰى بِنَاءِ النَّاسِ
بِنَاءَهٗ وَاَكْرِمْ مَثْوَاهُ لَدَيْكَ وَ نُزُلَهٗ وَاَتْمِمْ لَهٗ نُوْرَهٗ وَاجْزِهٖ مِنِ ابْتِعَاثِكَ لَهٗ مَقْبُوْلَ الشَّهَادَةِ وَ
مَرْضِيَّ الْمَقَالَةِ ذَا مَنْطِقٍ عَدْلٍ وَ كَلَامٍ فَصْلٍ وَ حُجَّةٍ وَ بُرْهَانٍ عَظِيْمٍ

'ऐ अल्लाह ! ऐ बिछी हुई ज़मीनों के बिछाने वाले, बुलन्द आसमानों को पैदा करने वाले ! बदबख़्त और नेक बख़्त दिलों को उनकी फ़ितरत पर पैदा करने वाले, अपनी मुअज़्ज़म रहमतें, बढ़ने वाली बरकतें और अपनी ख़ास मेहरबानी और शफ़क़त हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल फ़रमा जो कि तेरे बन्दे और रसूल हैं और जो नुबूवतें पहले गुज़र चुकी हैं, उनके लिए मुहर हैं और बन्द सआदतों को खोलने वाले हैं और सही तरीक़े से हक़ की मदद करने वाले हैं और जिस तरह उन्हें ज़िम्मेदारी दी गई, उस तरह उन्होंने बातिल की फ़ौजों को नेस्त व नाबूद कर दिया और तेरी इताअत के लिए हुक्म को लेकर खड़े हो गए और तुझे ख़ुश करने के लिए हर दम मुस्तैद रहे। उन्होंने आगे बढ़ने में बिल्कुल सुस्ती न की और न अज़्म व इरादे में कुछ कमज़ोरी

ज़ाहिर की, तेरी वह्य को ख़ूब याद किया और तेरे अह्द की हिफ़ाज़त की और तेरे हर हुक्म को लागू किया, यहां तक कि रोशनी लेने वालों के लिए नूरे इस्लाम का शोला रोशन कर दिया। आप ही के ज़रिए दिलों को फ़ित्नों और गुनाहों में ग़ोते खाने के बाद हिदायत मिली और आपने खुली और वाज़ेह निशानियों को, इस्लाम की रोशन दलीलों को और मुनव्वर हुक्मों को ख़ूब अच्छी तरह वाज़ेह कर दिया, वे तेरे मासूम और महफ़ूज़ अमीन हैं और तेरे इल्मी ख़ज़ाने के ख़ज़ानची और हिफ़ाज़त करने वाले हैं और क़ियामत के दिन तेरे गवाह हैं। तूने उन्हें नेमत बनाकर भेजा है और वे तेरे सच्चे रसूल हैं जो रहमत बनकर आए हैं। ऐ अल्लाह! अपनी जन्नत अद्न में उनको खूब कुशादा जगह अता फ़रमा और बार-बार दिए जाने वाले सवाब में से और बड़ी अता के ख़ज़ानों में से ख़ूब बढ़ाकर साफ़-सुथरी जज़ा उन्हें अता फ़रमा। ऐ अल्लाह! उनकी इमारत को तमाम लोगों की इमारत से ऊंचा फ़रमा और अपने यहां उनके ठिकाने और मेहरबानी को ख़ूब उम्दा फ़रमा और अपने नूर को उनके लिए पूरा फ़रमा और तू उनको यह बदला दे कि जब उनको क़ियामत के दिन उठाए तो उनकी गवाही क़ुबूल हो और उनकी बात मेरी पसन्द के मेहमानी हो और अद्ल व इंसाफ़ वाली हो और उनका कलाम सही और ग़लत में तमीज़ करने वाला हो और वह मज़बूत हुज्जत और बड़ी दलील वाले हों।[1]

मदीना मुनव्वरा आने वाले मेहमानों को सिखाना

हज़रत शिहाब बिन अब्बाद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, क़बीला अब्दुल क़ैस का जो वफ़्द हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गया था, उनमें से एक साहब को अपने सफ़र की तफ़्सील बताते हुए इस तरह सुना कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंचे। आप हमारे आने से बहुत ज़्यादा ख़ुश हुए। जब हम हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस वालों तक पहुंच गए तो उन्होंने

1. कंज़, भाग 1, पृ० 214, तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 509

हमारे लिए कुशादा जगह बना दी। हम वहां बैठ गए।

हुज़ूर सल्ल० ने हमें ख़ुश आमदीद कहा, और हमे दुआ दी, फिर हमारी तरफ़ देखकर फ़रमाया, तुम्हारा सरदार और ज़िम्मेदार कौन है? हम सबने मुन्ज़िर बिन आइज़ की तरफ़ इशारा किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या यह अशज सरदार है? (अशज उसे कहते है जिसके सर या चेहरे पर किसी ज़ख़्म का निशान हो) उनके चेहरे पर गधे के खुर लगने के ज़ख़्म का निशान था और यह सबसे पहला दिन था, जिसमें उनका नाम अशज पड़ा। यह बाक़ी लोगों से पीछे रह गए थे। उन्होंने अपने वफ़्द की सवारियों को बांधा और उनका सामान संभाला, फिर अपना बैग निकाला और सफ़र के कपड़े उतार कर नए कपड़े पहने, फिर वह हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ आए। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० ने पांव फैलाकर तकिया लगा रखा था।

जब हज़रत अशज रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के क़रीब पहुंचे तो लोगों ने उनके लिए जगह बना दी और यों कहा, ऐ अशज! यहां बैठ जाओ।

हुज़ूर सल्ल० पांव समेट कर सीधे बैठ गए और फ़रमाया, ऐ अशज! यहां आ जाओ। चुनांचे वह हुज़ूर सल्ल० के दाएं तरफ़ आराम से बैठ गए। हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें ख़ुश आमदीद कहा और बहुत शफ़क़त और मेहरबानी का मामला किया। फिर हुज़ूर सल्ल० ने उनसे उनके इलाक़े के बारे में पूछा और हिज्र की एक-एक बस्ती सफ़ा, मुशक़्क़र वग़ैरह का नाम लिया। हज़रत अशज रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, आप तो हमारी बस्तियों के नाम हमसे ज़्यादा जानते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं तुम्हारे इलाक़े में गया हूं और मैंने ख़ूब घूम-फिरकर देखा है।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने अंसार की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, अपने इन भाइयों का इक्राम करो, क्योंकि ये तुम्हारी तरह मुसलमान भी हैं, लेकिन इनके बालों और खाल की रंगत तुमसे बहुत ज़्यादा मिलती-जुलती है, अपनी ख़ुशी से इस्लाम लाए हैं, इन पर ज़बरदस्ती नहीं करनी

पड़ी और यह भी नहीं कि मुसलमानों के लश्कर ने हमला करके उन पर ग़लबा पा लिया हो और उनका माल ग़नीमत का माल बना लिया हो या उन्होंने इस्लाम से इंकार किया हो और उन्हें क़त्ल किया गया हो। (वह वफ़्द अंसार के यहां रहा)।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने उस वफ़्द से पूछा, तुमने अपने भाइयों के इक्राम और मेहमानी को कैसा पाया? उन्होंने कहा, ये हमारे बहुत अच्छे भाई हैं। इन्होंने रात को हमें नर्म-नर्म बिस्तरों पर सुलाया और अच्छे खाने खिलाए और सुबह को हमें हमारे रब की किताब और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतें सिखाईं। हुज़ूर सल्ल० को अंसार का यह रवैया बहुत पसन्द आया और आप उससे बहुत ख़ुश हुए और फिर आपने हममें से हर एक की तरफ़ तवज्जोह दिलाई और हमने जो कुछ सीखा-सिखाया था, उसका अन्दाज़ा लगाया, तो हममें से किसी ने अत्तहीयात सीख ली थी, किसी ने सूरः फ़ातिहा, किसी ने एक सूरः, किसी ने दो सूरतें, किसी ने एक सुन्नत, किसी ने दो सुन्नतें। आगे लम्बी हदीस ज़िक्र की।[1]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे कि इतने में आपने फ़रमाया, तुम्हारे पास अब्दुल क़ैस का वफ़्द आ रहा है, लेकिन हमें कोई नज़र नहीं आ रहा था। थोड़ी ही देर गुज़री थी कि वाक़ई वह वफ़्द पहुंच गया, उन्होंने आकर हुज़ूर सल्ल० को सलाम किया। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे पूछा कि तुम्हारे तोशे की खजूरों में से कुछ बाक़ी है? उन्होंने कहा, जी हां।

फिर हुज़ूर सल्ल० के इर्शाद फ़रमाने पर चमड़े का एक दस्तरख़्वान बिछा दिया गया और उन्होंने अपनी बची हुई खजूरें उस पर डाल दीं, हुज़ूर सल्ल० ने अपने सहाबा रज़ि० को जमा फ़रमा लिया और इस वफ़्द से मुख़्तलिफ़ खजूरों के बारे में फ़रमाने लगे। तुम इस खजूर को

---

1. इमाम अहमद, भाग 4, पृ०206, तर्ग़ीब, भाग 4, पृ०152, हैसमी, भाग 8, पृ०178,

बरफ़ी और इसे यह और इसे यह कहते हो। उन्होंने कहा, जी हां।

फिर आपने उस वफ़्द को तक़्सीम कर दिया कि (मदीना के रहने वाले) मुसलमान इनमें से एक एक को ले जाएं और अपने यहां ठहराएं और इन्हें क़ुरआन व हदीस पढ़ाएं और नमाज़ सिखाएं, एक हफ़्ता वे यों ही सीखते रहे, फिर हुज़ूर सल्ल० ने सारे वफ़्द को बुलाया (और उनका इम्तिहान लिया) तो आपने देखा कि अभी पूरा सीखे और समझे नहीं हैं, कुछ कमी है।

फिर उन्हें दूसरे मुसलमानों के हवाले कर दिया और एक हफ़्ता उनके यहां रहने दिया, फिर उन्हें बुलाया (और उनका इम्तिहान लिया) तो देखा कि उन्होंने सब कुछ पढ़ लिया है और पूरी तरह समझ लिया है। फिर उस वफ़्द ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह ने हमें बड़ी ख़ैर सिखा दी है और दीन की समझ अता फ़रमा दी है, अब हम अपने इलाक़े को जाना चाहते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ज़रूर चले जाओ।

फिर उन लोगों ने कहा, हम अपने इलाक़े में जो शराब पीते हैं, अगर हम उसके बारे में हुज़ूर सल्ल० से पूछ लें। इसके बाद आगे हदीस में इस बात का ज़िक्र है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कद्दू के तोंबे और पेड़ की खोखली जड़ से बनाए हुए बरतन और रोग़नी मर्तबान में नबीज़ बनाने से मना फ़रमाया।[1]

सफ़र के दौरान इल्म हासिल करना

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नौ साल मदीना मुनव्वरा में रहे और इस अर्से में आपने कोई हज नहीं किया, फिर आपने लोगों में एलान करवाया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस साल हज करेंगे तो बहुत सारे लोग मदीना मुनव्वरा आ गए। हर आदमी यह चाहता था कि वह हुज़ूर सल्ल० की पैरवी करे और वही काम करे जो हुज़ूर सल्ल० करें।

1. कंज़, भाग 3, पृ० 113,

जब ज़ीक़ादा में पांच दिन बाक़ी रह गए, तो आप हज के लिए तशरीफ़ ले गए। हम भी आपके साथ थे। जब आप ज़ुल हुलैफ़ा पहुंचे, तो हज़रत अस्मा बिन्त उमैस रज़ियल्लाहु अन्हा के यहां हज़रत मुहम्मद बिन अबी बक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा पैदा हुए। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पैग़ाम भेजा कि मैं अब क्या करूं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, पहले ग़ुस्ल करो, फिर किसी कपड़े की लंगोटी बांध लो, फिर एहराम बांध लो और ऊंची आवाज़ से लब्बैक कहो। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहां से तशरीफ़ ले चले, यहां तक कि जब आपकी ऊंटनी आपको लेकर बीदा नामी ऊंची जगह पर पहुंची तो आपने इन लफ़्ज़ों में लब्बैक पढ़ी—

لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ
لَا شَرِيْكَ لَكَ

लब्बैक अल्लाहुम-म लब्बैक लब्बैक ला शरी-क ल-क लब्बैक इन्नल हम-द वन्-निअ्-म-त ल-क वल-मुल्कु ला शरी-क ल-क

'ऐ अल्लाह! हाज़िर हूं। हाज़िर हूं, हाज़िर हूं, तेरा कोई शरीक नहीं। हाज़िर हूं, तमाम तारीफ़ें, तमाम नेमतें और सारी बादशाही तेरे लिए है, तेरा कोई शरीक नहीं।' और लोगों ने भी लब्बैक पढ़ी और कुछ लोग ज़ल मआरिज जैसे कलिमे पढ़ा रहे थे और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुन रहे थे, लेकिन आपने उनसे कुछ न फ़रमाया। फिर मैंने हुज़ूर सल्ल० के सामने निगाह डाली, तो मुझे दूर-दूर तक आदमी ही आदमी नज़र आए, कोई सवार था, कोई पैदल और यही हाल आपके दाएं-बाएं और पीछे था।

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे दर्मियान थे। आप पर क़ुरआन उतरता था। आप उसकी तफ़्सीर भी जानते थे और क़ुरआन पर जैसा अमल आप करते थे वैसा हम भी करते थे, आगे और हदीस भी ज़िक्र की है।[1]

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 146,

आगे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हज के ख़ुत्बे के उन्वान के ज़ैल में हुज़ूर सल्ल० के सहाबा किराम को हज के सफ़र में सिखाने के वाक़िए आ जाएंगे और जिहाद में निकलकर सीखने-सिखाने के बाब में इस बाब के कुछ वाक़िए गुज़र चुके हैं।

हज़रत जाबिर बिन अज़रक़ ग़ाज़िरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में सवारी पर अपना सामान लेकर हाज़िर हुआ। मैं आपके साथ-साथ चलता रहा, यहां तक कि हम मंज़िल पर पहुंच गए। हुज़ूर सल्ल० ने सवारी से उतर कर चमड़े के एक ख़ेमे मे क़ियाम फ़रमाया और आपके ख़ेमे के दरवाज़े पर तीस कोड़े बरदार आदमी खड़े हो गए। एक आदमी मुझे धक्के देने लगा।

मैंने कहा, अगर तुम मुझे धक्के दोगे तो मैं भी तुम्हें धक्के दूंगा और अगर तुम मुझे मारोगे तो मैं भी तुम्हें मारूंगा। उस आदमी ने कहा, ओ सबसे बुरे आदमी ! मैंने कहा, अल्लाह की क़सम ! तुम मुझसे ज़्यादा बुरे हो। उसने कहा, कैसे ? मैंने कहा, मैं यमन के आस-पास से इसलिए आया हूं ताकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हदीसें सुनूं और वापस जाकर अपने पीछे वालों को वे सारी हदीसें सुनाऊं और तुम मुझे रोकते हो। उस आदमी ने कहा, तुमने ठीक कहा, अल्लाह की क़सम ! वाक़ई मैं तुमसे ज़्यादा बुरा हूं।

फिर हुज़ूर सल्ल० सवारी पर सवार हुए और मिना में जमरा अक़्बा के पास से लोग आपके साथ चिमटने लगे और उनकी तायदाद बढ़ती गई। ये सब लोग हुज़ूर सल्ल० से अलग-अलग्र बातें पूछना चाहते थे, लेकिन तायदाद ज़्यादा होने की वजह से कोई भी आप तक पहुंच नहीं सकता था। इतने में एक आदमी आया जिसने अपने बाल कटवा रखे थे। उसने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे लिए रहमत की दुआ फ़रमा दें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह बाल मुंडवाने वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाए। उस आदमी ने फिर कहा, मेरे लिए रहमत की दुआ

फ़रमा दें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह बाल मुंडवाने वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाए। उस आदमी ने फिर कहा, मेरे लिए रहमत की दुआ फ़रमा दें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह बाल मुंडवाने वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाए। यह दुआ आपने तीन बार फ़रमाई तो वह आदमी गया और जाकर उसने अपने बाल मुंडवा दिए। इसके बाद मुझे जो भी नज़र आया, उसके बाल मुंडे हुए थे।[1]

अल्लाह तआला ने फ़रमाया है—

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنْفِرُوا كَافَّةً فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِنْهُمْ طَائِفَةٌ لِيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ
وَلِيُنْذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ (التوبہ آیت ۱۲۲)

'(हमेशा के लिए) मुसलमानों को यह (भी) न चाहिए कि (जिहाद के वास्ते) सबके सब (ही) निकल खड़े हों, सो ऐसा क्यों न किया जाए कि उनकी हर बड़ी जमाअत में से एक छोटी जमाअत (जिहाद में) जाया करे ताकि बाक़ी लोग दीन की समझ-बूझ हासिल करते रहें और ताकि ये लोग अपनी (इस) क़ौम को, जबकि वे उनके पास वापस आवें, डरावें ताकि वे (उनसे दीन की बातें सुनकर बुरे कामों से) एहतियात रखें।'

(अत-तौबा, आयत 122)

इसकी तफ़्सीर के बारे में अल्लामा इब्ने जरीर फ़रमाते हैं कि इस आयत की तफ़्सीर में उलेमा के अलग-अलग क़ौल हैं, लेकिन उनमें सबसे ज़्यादा क़ौल उन उलेमा का है जो फ़रमाते हैं कि जिहाद के लिए निकलने वाली छोटी जमाअत जिहाद के सफ़र में दीन की समझ-बूझ हासिल करके आएंगे, क्योंकि वे अपनी आंखों से देखेंगे कि अल्लाह दुश्मनों और कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ अपने दीन वालों की और अपने रसूल सल्ल० के सहाबा रज़ि० की मदद फ़रमाते हैं, तो इस तरह इस्लाम की हक़ीक़त और उसके तमाम दीनों पर ग़लबा पाने का इल्म इन निकलने वालों को भी हासिल हो जाएगा जिनको पहले से यह इल्म हासिल नहीं था और जब ये लोग अपनी क़ौम में जाकर उनको अल्लाह

1. कंज़, भाग 3, पृ० 49, इसाबा, भाग 1, पृ० 211,

की इस ग़ैबी मदद के वाक़िए सुनाएंगे जिसकी वजह से मुसलमान काफ़िर मुश्रिकों पर ग़ालिब आए और अल्लाह की नाफ़रमानी की वजह से काफ़िरों पर अल्लाह के अज़ाब उतरने के आंखों देखे वाक़िए सुनाएंगे तो बाक़ी बचे लोग इन वाक़ियों को सुनकर बुरे कामों से और ज़्यादा एहतिमाम करने लगेंगे और अल्लाह और रसूल सल्ल० पर ईमान और ज़्यादा बढ़ जाएगा।[1]

जिहाद और इल्म को जमा करना

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग ग़ज़्वे में जाया करते थे और एक दो आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसें सुनने और याद रखने के लिए छोड़ जाते थे। जब हम ग़ज़्वे से वापस आते तो वे हुज़ूर सल्ल० की बयान की हुई तमाम हदीसें हमें सुना देते और उनसे सुनने की बुनियाद पर हम हदीस आगे बयान करते वक़्त यों कह देते कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।[2]

कमाई और इल्म को जमा करना

हज़रत साबित बुनानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि अंसार के सत्तर आदमी ऐसे थे जो रात होते ही अपने एक मुअल्लिम के पास मदीना में चले जाते और रात भर उससे क़ुरआन पढ़ते रहते और सुबह को उनमें से जो ताक़तवर और सेहतमंद होते, वे जंगल से लकड़ियां काट कर लाते और पीने का मीठा पानी भरकर लाते और जिनके पास माल की गुंजाइश होती, वे बकरी ज़िब्ह करके उसका गोश्त बनाते और गोश्त के टुकड़े हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुजरों पर टांग देते।

जब हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हु को (मक्का में) शहीद कर दिया गया तो इन सत्तर आदमियों को हुज़ूर सल्ल० ने भेजा। उनमें मेरे मामूं

1. इब्ने जरीर, भाग 11, पृ० 51
2. कंज़, भाग 5, पृ० 240

हज़रत हराम बिन मलहान रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। यह क़बीला बनू सुलैम के एक क़बीले के पास आए। हज़रत हराम रज़ि० ने उस जमाअत के अमीर से कहा, क्या मैं जाकर उन लोगों को यह न बता दूं कि हम उनसे लड़ने के इरादे से नहीं आए? इस तरह वह हमें छोड़ देंगे। जमाअत वालों ने कहा, ठीक है।

चुनांचे हज़रत हराम रज़ि० ने जाकर उन लोगों को यह बात कही। इस पर एक आदमी ने उन्हें ऐसा नेज़ा मारा जो पार निकल गया। जब हज़रत हराम रज़ि० ने देखा कि नेज़ा पेट में पहुंच गया है तो उन्होंने कहा, अल्लाहु अक्बर! रब्बे काबा की क़सम! मैं तो कामियाब हो गया। इसके बाद वे क़बीला वाले उन तमाम लोगों पर टूट पड़े और सबको क़त्ल कर दिया और एक भी बाक़ी न रहा, जो वापस आकर हुज़ूर सल्ल० को ख़बर कर सके। उस जमाअत की शहादत पर मैंने हुज़ूर सल्ल० को जितना दुखी देखा उतना किसी जमाअत पर नहीं देखा। चुनांचे मैंने देखा कि हुज़ूर सल्ल० जब भी फ़ज्र की नमाज़ पढ़ते तो हाथ उठाकर उस क़बीले के लिए बद-दुआ करते।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि कुछ लोगों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर कहा, हमारे साथ कुछ आदमी भेज दें, जो हमें क़ुरआन व सुन्नत सिखाएं। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उनके साथ अंसार के सत्तर आदमी भेज दिए, जिनको (क़ुरआन के हाफ़िज़ होने की वजह से) क़ारी कहा जाता था। इनमें मेरे मामूं हज़रत हराम रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। ये लोग क़ुरआन पढ़ते थे और रात को एक दूसरे से सुनते-सुनाते थे और इल्म हासिल करते थे और दिन में पानी लाकर मस्जिद में रख देते और जंगल से लकड़ियां काट कर लाते और उन्हें बेचकर सुफ़्फ़ा वाले और फ़क़ीर सहाबा के लिए खाना ख़रीद कर लाते।

हुज़ूर सल्ल० ने इन हज़रात को उन लोगों के पास भेज दिया, वे

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 123,

लोग उनके आड़े आए और उस जगह पहुंचने से पहले ही क़त्ल कर दिया तो उन लोगों ने कहा, ऐ अल्लाह ! हमारी तरफ़ से हमारे नबी को यह पैग़ाम पहुंचा दे कि हम तेरे पास पहुंच गए हैं और हम तुझसे राज़ी हैं और तू हमसे राज़ी है और पीछे से आकर मेरे मामूं हज़रत हराम रज़ि० को एक आदमी ने नेज़ा मारा जो पार निकल गया, हज़रत हराम रज़ि० ने कहा, रब्बे काबा की क़सम ! मैं तो कामियाब हो गया। हुज़ूर सल्ल० ने अपने भाइयों से फ़रमाया, तुम्हारे भाई शहीद कर दिए गए हैं और उन्होंने यह दुआ मांगी है कि ऐ अल्लाह ! हमारी तरफ़ से हमारे नबी को यह पैग़ाम पहुंचा दे कि हम तेरे पास पहुंच गए हैं और हम तुझसे राज़ी हैं और तू हमसे राज़ी है।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैं और मेरा एक अंसारी पड़ोसी हम दोनों क़बीला बनू उमैया बिन ज़ैद के मुहल्ले में रहते थे जो कि मदीना के इलाक़े अवाली में था और हम दोनों बारी-बारी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में जाते थे। एक दिन वह जाता और एक दिन मैं। जब मैं जाता तो उस दिन की वह्य वग़ैरह की तमाम ख़बरें लाकर मैं उस अंसारी को सुना देता। जब वह जाता तो वह आकर उस दिन की तमाम ख़बरें मुझे सुना देता।

चुनांचे मेरा अंसारी साथी अपनी बारी वाले दिन हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गया और वापस आकर उसने बहुत ज़ोर से मेरा दरवाज़ा खटखटाया और ज़ोर से कहा, क्या उमर अंदर हैं? मैं घबरा कर उसके पास बाहर आया। उसने कहा, बहुत बड़ी बात पेश आ गई है (कि हुज़ूर सल्ल० ने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी है) मैं हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास गया तो वह रो रही थीं। मैंने पूछा, क्या तुम सबको हुज़ूर सल्ल० ने तलाक़ दे दी है? उन्होंने कहा, मुझे मालूम नहीं। फिर मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गया और मैंने

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 514,

खड़े-खड़े अर्ज़ किया, क्या आपने अपनी औरतों को तलाक़ दे दी है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं। मैंने (ख़ुशी से) कहा, अल्लाहु अक्बर।[1]

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम सबने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हर हदीस नहीं सुनी, क्योंकि हमारी जायदाद और दुन्यावी मश्ग़ले भी थे (जिनको वक़्त देना पड़ता था) और उस ज़माने में लोग झूठ नहीं बोलते थे, इसलिए जो मज्लिस में हाज़िर होकर हुज़ूर सल्ल० से हदीस सुन लेता, वह ग़ायब को सुना देता।[2]

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हमने हर हदीस हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नहीं सुनी, (कुछ सुनी हैं और कुछ नहीं सुनी हैं) हम लोग ऊंट चराने में लगे रहते थे। हमारे साथी हुज़ूर सल्ल० से हदीस सुनते थे, फिर वे हमें सुना दिया करते थे।[3]

हज़रत अबू अनस मालिक बिन अबी आमिर अस्बही रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु के पास था कि इतने में एक आदमी उनके पास अन्दर आया और उसने कहा, ऐ अबू मुहम्मद! अल्लाह की क़सम! हमें मालूम नहीं कि यह यमनी आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ज़्यादा जानता है या आप लोग? यह तो हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ से ऐसी बातें नक़्ल करते हैं जो हुज़ूर सल्ल० ने नहीं फ़रमाई हैं। वह आदमी यह बात हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में कह रहा था।

हज़रत तलहा रज़ि० ने फ़रमाया, इस बात में कोई शक नहीं है कि उन्होंने (यानी हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने) हुज़ूर सल्ल० से वे हदीसें सुनी हैं, जो हमने नहीं सुनीं और उन्हें हुज़ूर सल्ल० के वे हालात मालूम हैं जो हमें मालूम नहीं हैं। इसकी वजह यह है कि हम मालदार लोग थे, हमारे घर और बाल-बच्चे थे। हम हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में सुबह-शाम

---

1. बुख़ारी, भाग 1, पृ० 19,
2. मुस्तदरक, भाग 1, पृ० 127
3. मारफ़ते उलूमिल हदीस, पृ० 14, हैसमी, भाग 1, पृ० 154, कंज़, भाग 5, पृ० 238,

हाज़िरी देते थे और फिर वापस चले जाते। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० मिस्कीन आदमी थे, न उनके पास माल था और न बीवी-बच्चे। उन्होंने अपना हाथ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ में दे रखा था। जहां हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ ले जाते, वह साथ जाते, इसलिए हमें इस बात में कोई शक नहीं है कि उन्हें वह कुछ मालूम है जो हमें मालूम नहीं और इन्होंने वह कुछ सुन रखा है जो हमने नहीं सुना और हममें से कोई भी उन पर यह इलज़ाम नहीं लगा सकता कि उन्होंने अपने पास से बनाकर ये बातें हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ से बयान की हैं, जो हुज़ूर सल्ल० ने नहीं फ़रमाई हैं।[1]

कमाई से पहले दीन सीखना

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हमारे इस बाज़ार में वही कारोबार करे, जिसने दीन की समझ हासिल कर ली हो।[2]

आदमी का अपने घरवालों को सिखाना

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह के फ़रमान—

قُوٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا (سورت تحریم، آیت ۶)

'तुम अपने को और अपने घरवालों को (दोज़ख़ की) आग से बचाओ।' (सूरः तहरीम, आयत 6) के बारे में फ़रमाया, अपने आपको और अपने घरवालों को भलाई वाले आमाल सिखाओ।[3]

एक रिवायत में यह है कि उन्हें तालीम दो और अदब सिखाओ।[4]

हज़रत मालिक बिन हुवैरिस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम कुछ हमउम्र नवजवान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वा सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हम आपके यहां बीस दिन ठहरे। फिर आपको

1. मुस्तदरक, भाग 3, पृ० 512
2. कंज़, भाग 2, पृ० 218
3. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 85,
4. तफ़्सीरे तबरी, भाग 28, पृ० 107

अन्दाज़ा हुआ कि हमारे दिलों में घर जाने का शौक़ पैदा हो गया है तो आपने हमसे पूछा कि घर किन-किन को छोड़कर आए हो?

आप बहुत शफ़ीक़, नरम और रहमदिल थे, इसलिए आपने फ़रमाया, अपने घर वापस चले जाओ और उन्हें (जो सीखा है, वह) सिखाओ और उन्हें (नेक आमाल का) हुक्म दो और जैसे मुझे नमाज़ पढ़ते हुए देखा है, वैसे नमाज़ पढ़ो और जब नमाज़ का वक़्त आए तो तुममें से कोई एक अज़ान दे दिया करे और जो तुममें सबसे बड़ा हो, वह तुम्हारी इमामत किया करे।[1]

दीनी ज़रूरत की वजह से दुश्मनों की ज़ुबान वग़ैरह सीखना

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए, तो मुझे हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पेश किया गया और लोगों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह लड़का क़बीला बनू नज्जार का है और जितना क़ुरआन आप पर उतर चुका है, उसमें से सत्तरह सूरतें पढ़ चुका है। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० को मैंने क़ुरआन पढ़कर सुनाया, तो हुज़ूर सल्ल० को बहुत पसन्द आया, तो आपने फ़रमाया, ऐ ज़ैद ! तुम मेरे लिए यहूद की लिखाई सीख लो, क्योंकि अल्लाह की क़सम ! मुझे लिखाई के बारे में यहूदियों पर कोई इत्मीनान नहीं है।

चुनांचे मैंने यहूदी की ज़ुबान को और उनकी लिखाई को सीखना शुरू कर दिया। मुझे आधा महीना नहीं गुज़रा था कि मैं उनकी ज़ुबान का माहिर हो गया। चुनांचे फिर मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से यहूदियों के नाम ख़त लिखा करता था और जब यहूदी हुज़ूर सल्ल० के नाम ख़त लिखकर भेजते, तो मैं हुज़ूर सल्ल० को पढ़कर सुनाता।[2]

---

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० 33,
2. अबू याला, इब्ने असाकिर,

हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया, क्या तुम सुरयानी ज़ुबान अच्छी तरह जानते हो, क्योंकि मेरे पास सुरयानी में ख़त आते हैं? मैंने कहा, नहीं। आपने फ़रमाया, उसे सीख लो। चुनांचे मैंने सत्तरह दिन में सुरयानी ज़ुबान अच्छी तरह सीख ली।[1]

हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया, मेरे पास (यहूदियों के) ख़त आते हैं। मैं नहीं चाहता कि हर आदमी उन्हें पढ़े। क्या तुम इब्रानी या सुरयानी ज़ुबान की लिखाई सीख सकते हो? मैंने कहा, जी हां। चुनांचे मैंने वह ज़ुबान सत्तरह दिन में अच्छी तरह सीख ली।[2]

हज़रत उमर बिन क़ैस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के सौ ग़ुलाम थे, उनमें से हर ग़ुलाम अलग ज़ुबान में बात करता था और हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० उनमें से हर एक से उसी की ज़ुबान में बात करते थे। मैं जब उनके दुन्यावी मश्ग़लों पर नज़र डालता तो ऐसे लगता कि जैसे कि उनका पलक झपकने जितना भी आख़िरत का इरादा नहीं है और जब मैं उनकी आख़िरत वाले आमाल की मश्ग़ूली पर निगाह डालता तो ऐसे लगता कि जैसे कि उनका पलक झपकने जितना भी दुनिया का इरादा नहीं है।[3]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, सितारों का इतना इल्म हासिल करो जिससे तुम ख़ुश्की और समुन्दर में सही रास्ता मालूम कर सको। इससे ज़्यादा न हासिल करो।[4]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, सितारों का इतना इल्म हासिल करो जिससे तुम रास्ता मालूम कर सको और नसब भी इतने

---

1. इब्ने अबी दाऊद
2. मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 185, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 174,
3. मुस्तदरक, भाग 3, पृ० 549, हुलीया, भाग 1, पृ० 334,
4. इब्ने अबी शैबा और इब्ने अब्दुल बर्र

मालूम करो जिससे तुम रिश्ते जोड़ सको।[1]

हज़रत सासआ बिन सूहान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक देहाती आदमी हज़रत अली बिन अबी तालिब की ख़िदमत में आया और उसने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप यह आयत किस तरह पढ़ते हैं?

لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ

इसका तर्जुमा यह है कि 'इसे सिर्फ़ क़दम उठाने वाले ही खाएंगे।'

इसक़ाल यह होता है कि अल्लाह की क़सम! क़दम तो हर आदमी उठाता है। यह सुनकर हज़रत अली रज़ि० मुस्कराए और फ़रमाया, यह आयत इस तरह है—

لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ

इसका तर्जुमा यह है कि 'यह खाना नाफ़रमान लोग ही खाएंगे।'

उस देहाती ने कहा, आपने ठीक फ़रमाया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! अल्लाह ऐसे नहीं हैं कि अपने बन्दे को यों ही (दोज़ख़ में) जाने दें।

हज़रत अली रज़ि० ने हज़रत अबुल अस्वद दौउली की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, अब तो तमाम अजमी लोग अल्लाह के दीन में दाख़िल हो गए हैं, इसलिए तुम उनके लिए ऐसी निशानियां मुक़र्रर करो, जिनसे वे अपनी ज़ुबान से सही क़िरात कर सकें। चुनांचे उन्होंने इसके लिए पेश, ज़बर-ज़ेर की इस्तिलाहें मुक़र्रर कीं, (जो इल्मे नह्व (ग्रामर) में पढ़ाई जाती हैं, इस तरह अरबी की इल्मे नह्व की शुरुआत हुई।)[2]

इमाम का अपने किसी साथी को लोगों के सिखाने के लिए छोड़कर जाना

हज़रत उर्व: रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का से हुनैन तशरीफ़ ले गए, तो अपने पीछे हज़रत

1. कंज़, भाग 5, पृ० 234,
2. कंज़, भाग 5, पृ० 237

मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु को मक्का वालों पर अमीर बनाकर छोड़ गए और उन्हें हुक्म दिया कि वह मक्का में लोगों को क़ुरआन सिखाएं और उनमें दीन की समझ पैदा करें। फिर जब वहां से मदीना जाने लगे तो दोबारा हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० को मक्का वालों पर मुक़र्रर फ़रमाया।[1]

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मक्का से हुनैन की तरफ़ तशरीफ़ ले गए तो अपने पीछे हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० को छोड़ गए ताकि वह मक्का वालों में दीन की समझ पैदा करें और उन्हें क़ुरआन पढ़ाएं।[2]

क्या वक़्त का इमाम इल्मी ज़रूरत की वजह से अपने साथियों में से किसी को अल्लाह के रास्ते में जाने से रोक सकता है?

हज़रत क़ासिम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जिस सफ़र में तशरीफ़ ले जाते, तो अपने पीछे हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी जगह ज़िम्मेदार बना जाते। हज़रत उमर रज़ि० ने और लोगों को तमाम इलाक़ों में बांट दिया था, (हज़रत ज़ैद रज़ि० को अपने पास रखा हुआ था) हज़रत ज़ैद रज़ि० को बहुत ही ज़रूरी काम की वजह से भेजते।

हज़रत उमर रज़ि० से जब नाम लेकर आदमियों के भेजने की मांग होती और यों कहा जाता कि हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० को भेज दें तो फ़रमाते हैं, मैं हज़रत ज़ैद रज़ि० के मर्तबे से अनजान नहीं हूं, लेकिन इस शहर (मदीना) वालों को हज़रत ज़ैद रज़ि० की ज़रूरत है, क्योंकि मदीना वालों को पेश आने वाले मसलों में जैसा अच्छा जवाब हज़रत ज़ैद रज़ि० से मिलता है, ऐसा किसी और से नहीं मिलता।[3]

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 270,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 164
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 174,

हज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जिस दिन हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु का इंतिक़ाल हुआ, उस दिन हम लोग हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के साथ थे। मैंने कहा, आज लोगों के बहुत बड़े आलिम का इंतिक़ाल हो गया है। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने कहा, अल्लाह, आज उन पर रहमत नाज़िल फ़रमाए। यह तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में भी लोगों के बहुत बड़े आलिम थे। हज़रत उमर रज़ि० ने लोगों को तमाम इलाक़ों में बिखेर दिया था और उन्हें अपनी राय से फ़त्वा देने से मना कर दिया था, लेकिन हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० मदीना ही में रहे और मदीना वालों को और बाहर से आने वालों को फ़त्वा दिया करते थे।[1]

हज़रत अबू अब्दुर्रहमान सुलमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को क़ुरआन पढ़कर सुनाया। इस पर उन्होंने मुझसे फ़रमाया, इस तरह तो तुम मुझे लोगों के कामों के बारे में ग़ौर व फ़िक्र करने से हटा दोगे, इसलिए तुम हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु के पास चले जाओ, क्योंकि उन्हें इस काम के लिए मुझसे ज़्यादा फ़ुर्सत है और उन्हें पढ़कर सुनाओ, मेरी और उनकी क़िरात एक ही है, कोई फ़र्क़ नहीं है।[2]

और पहले भाग में इब्ने साद की यह रिवायत गुज़र चुकी है कि हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु शाम देश की ओर रवाना हो गए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि हज़रत मुआज़ रज़ि० के शाम जाने से मदीना वालों को फ़िक़्ही मसलों में और फ़त्वा लेने में बड़ी दिक़्क़त पेश आ रही है, क्योंकि हज़रत मुआज़ रज़ि० मदीने में लोगों को फ़त्वा दिया करते थे। मैंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से, अल्लाह

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 176,
2. मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 184

उन पर रहमत नाज़िल फ़रमाएं, यह बात की थी कि वह हज़रत मुआज़ रज़ि० को मदीना में रोक लें, क्योंकि लोगों को (फ़त्वा में) उनकी ज़रूरत है, लेकिन उन्होंने मुझे इंकार कर दिया और फ़रमाया कि एक आदमी उस रास्ते में जाकर शहीद होना चाहता है, तो मैं उसे नहीं रोक सकता। आगे और हदीस भी ज़िक्र की है।

सहाबा किराम रज़ि० को सिखाने के लिए अलग-अलग इलाक़ों में भेजना

हज़रत आसिम बिन उमर बिन क़तादा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, क़बीला जदीला की दो शाख़ों अज़ल और क़ारा के कुछ लोग उहुद की लड़ाई के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आए और कहने लगे, हमारे इलाक़े में लोग मुसलमान हो चुके हैं। आप हमारे साथ अपने कुछ साथी भेज दें, जो हमें क़ुरआन पढ़ाएं और हममें दीन की समझ पैदा करें। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उनके साथ छः आदमी भेज दिए, जिनमें हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु के हलीफ़ (मित्र) हज़रत मरसद बिन अबी मरसद रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे और यही उनके अमीर थे। फिर इसके बाद ग़ज़वा रजीअ का मुख़्तसर क़िस्सा ज़िक्र किया।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यमन के कुछ लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए और कहने लगे, हममें ऐसा आदमी भेज दें, जो हममें दीन की समझ पैदा करे और हमें सुन्नतें सिखाए और अल्लाह की किताब के मुताबिक़ हमारे झगड़ों के फ़ैसले करे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अली ! यमन चले जाओ और उनमें दीन की समझ पैदा करो और उनको सुन्नतें सिखाओ और उनके झगड़ों के फ़ैसले अल्लाह की किताब के मुताबिक़ करो।

मैंने अर्ज़ किया, यमन वाले तो उजड्ड लोग हैं और वे ऐसे मुक़दमे

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 222,

मेरे पास लाएंगे जिनका सही फ़ैसला मुझे मालूम नहीं होगा, तो फिर मैं क्या करूंगा? हुज़ूर सल्ल० ने मेरे सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया, जाओ, अल्लाह तुम्हारे दिल को (सही फ़ैसले की) हिदायत दे देगा और तुम्हारी ज़ुबान को (सही फ़ैसले पर) जमा देगा। चुनांचे (हुज़ूर सल्ल० की इस दुआ का यह असर हुआ कि) उस दिन से लेकर आज तक मुझे कभी दो आदमियों के दर्मियान फ़ैसला करने में कोई शक या तरद्दुद नहीं हुआ।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यमन वाले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आए और अर्ज़ किया, हमारे साथ ऐसा आदमी भेज दें जो हमें क़ुरआन सिखाए। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़ कर उन्हें यमन वालों के साथ भेज दिया और फ़रमाया, यह उस उम्मत के अमीन हैं।[2]

इब्ने साद की रिवायत में यह है कि यमन वालों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह मांग की कि हुज़ूर सल्ल० उनके साथ एक आदमी ऐसा भेज दें जो उन्हें सुन्नत और इस्लाम सिखाए।

हज़रत अबूबक्र बिन मुहम्मद बिन अम्र बिन हज़्म रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि यह हमारे पास हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तहरीर है जो हुज़ूर सल्ल० ने लिखकर हज़रत अम्र बिन हज़्म रज़ियल्लाहु अन्हु को उस वक़्त अता फ़रमाई थी, जब हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें इसलिए यमन भेजा था ताकि वहां वालों में दीन की समझ पैदा करें और उन्हें सुन्नत सिखाएं और उनसे सदक़े वसूल करें और उन्हें तहरीर लिखकर दी और उन्हें हिदायतें भी दीं। तहरीर में यह था—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' यह अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से तहरीर है—

---

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 37,
2. मुस्तदरक, भाग 3, पृ० 267, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 299

يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا أَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ (سورت مائده آيت ۱)

'ऐ ईमान वालो ! अह्दों को पूरा करो ।' (सूरः माइदा, आयत 1)

(हज़रत) मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अम्र बिन हज़्म को यमन भेज रहे हैं और उनसे यह अह्द ले रहे हैं कि वह अपनी तमाम बातों में अल्लाह से तक़्वा अख़्तियार करेंगे, क्योंकि अल्लाह उन लोगों के साथ है जो तक़्वा अख़्तियार करें और नेक किरदार हों ।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुआज़ और हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हुमा को यमन भेजा और दोनों को हुक्म दिया कि वे लोगों को क़ुरआन सिखाएं ।[2]

हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ैस के एक क़बीले की तरफ़ भेजा, ताकि मैं उन्हें इस्लाम के अह्काम सिखाऊं। मैंने वहां जाकर देखा तो वे तो बिदके हुए ऊंटों की तरह थे । उनकी निगाहें हर वक़्त ऊपर उठी रहती थीं और उनको ऊंटों और बकरी के अलावा और कोई फ़िक्र नहीं था, इसलिए मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस आ गया, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अम्मार ! क्या करके आए हो ? (अपनी कारगुज़ारी सुनाओ) ।

मैंने उनके तमाम हालात सुनाए और उनमें जो लापरवाही और ग़फ़लत थी, वह भी बताई । हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अम्मार ! क्या मैं तुम्हें इनसे भी ज़्यादा अजीब लोग न बताऊं जो कि उन बातों को जानते थे जिन्हें ये नहीं जानते, लेकिन फिर भी वे इनकी तरह ग़फ़लत में पड़े हुए हैं ।[3]

हज़रत हारिसा बिन मुज़र्रिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो ख़त कूफ़ा वालों को भेजा था, वह मैंने पढ़ा था, उसमें लिखा हुआ था, अम्मा बादु ! मैं तुम्हारे पास हज़रत

1. तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 3,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 256,
3. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 91,

अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु को अमीर बनाकर और हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु को उस्ताद और वज़ीर बनाकर भेज रहा हूं। ये दोनों हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चीदा और बरगज़ीदा सहाबा में से हैं। इन दोनों की बात सुनो और इन दोनों की पैरवी करो और हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० को भेजकर मैंने बड़ी क़ुरबानी दी है, क्योंकि मुझे उनकी यहां ज़रूरत थी, लेकिन मैंने तुम्हारी ज़रूरत को मुक़द्दम रखा।

हज़रत अबुल अस्वद दुअली रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं बसरा गया तो वहां इम्रान बिन हसन अबू नुजैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा तशरीफ़ रखते थे, उन्हें हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने बसरा इसलिए भेजा था, ताकि वह बसरा वालों में दीन की समझ पैदा करें।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन काब क़ुरज़ी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में अंसार में से सिर्फ़ पांच आदमियों ने सारे क़ुरआन को याद किया था—1. हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि०, 2. हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि०, 3. हज़रत उबई बिन काब रज़ि०, 4. हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० और 5. हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि०।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने उन्हें ख़त लिखा कि शाम वाले बहुत ज़्यादा मुसलमान हो गए हैं और सारे शहर उनसे भर गए हैं और उन्हें ऐसे आदमियों की शदीद ज़रूरत है जो उन्हें क़ुरआन सिखाएं और उनमें दीन की समझ पैदा करें। ऐ अमीरुल मोमिनीन! सिखाने वाले आदमी भेजकर आप मेरी मदद करें।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने इन पांचों हज़रात को बुलाया और उनसे फ़रमाया, तुम्हारे शामी भाइयों ने मुझसे मदद मांगी है कि मैं उनके पास ऐसे आदमी भेजूं, जो इन्हें क़ुरआन सिखाएं और इनमें दीन की समझ पैदा करें। अल्लाह आप लोगों पर रहम फ़रमाए। आप लोग अपने में से तीन आदमी इस काम के लिए देकर मेरी मदद करें। अब अगर आप

1. इब्ने साद, भाग 6, पृ० 7

लोग चाहें तो क़ुरआअन्दाज़ी कर लें या फिर जो अपना नाम ख़ुद से पेश कर दे, वह चला जाए।

इन लोगों ने कहा, नहीं, क़ुरआअन्दाज़ी की ज़रूरत नहीं है। यह हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० तो बहुत बूढ़े हैं और यह हज़रत उबई बिन काब रज़ि० बीमार हैं, चुनांचे हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि०, हज़रत उबादा रज़ि० और अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हुम शाम देश गए, उनसे हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हम्स शहर से शुरू करो क्योंकि तुम लोगों को अलग-अलग वाला भी पाओगे। कुछ ऐसे भी होंगे जो जल्दी सीख जाएंगे, जब तुम्हें कोई ऐसा आदमी नज़र आए तो दूसरे लोगों को उसकी तरफ़ मुतवज्जह कर दो (कि वे उससे इल्म हासिल करें) जब तुम हिम्स वालों के बारे में मुतमइन हो जाओ, तो फिर तुममें से एक वहां ही ठहर जाए और एक दमिश्क़ चला जाए और एक फ़लस्तीन।

चुनांचे ये हज़रात हिम्स तशरीफ़ ले गए और वहां ठहर कर उन्हें सिखाते रहे। जब उनके बारे में इत्मीनान हो गया तो हज़रत उबादा रज़ि० वहां ठहर गए और हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० दमिश्क़ और हज़रत मुआज़ रज़ि० फ़लस्तीन चले गए। हज़रत मुआज़ रज़ि० का तो अमवास के ताऊन में इंतिक़ाल हो गया। बाद में हज़रत उबादा रज़ि० फ़लस्तीन चले गए। उनका भी वहीं इंतिक़ाल हो गया, अलबत्ता अबुद्दर्दा रज़ि० दमिश्क़ ही रहे और उनका वहां ही इंतिक़ाल हुआ।[1]

इल्म हासिल करने के लिए सफ़र करना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अक़ील रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा को यह फ़रमाते हुए सुना कि मुझे यह ख़बर पहुंची कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एक हदीस सुनी है। (और मैंने वह हदीस हुज़ूर सल्ल० से नहीं सुनी थी और पता चला कि वह सहाबी शाम में रहते हैं, इसलिए) मैंने ऊंट ख़रीदा और उस पर कजावा कसा

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ०172, कंज़, भाग 1, पृ० 281, तारीख़ सग़ीर, पृ०22,

और एक माह का सफ़र करके शाम देश पहुंचा।

वहां जाकर मालूम हुआ कि वह सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। मैंने उनके दरबान से कहा, उनसे जाकर कहो कि दरवाज़े पर जाबिर आया है। उन्होंने कहा, क्या अब्दुल्लाह के बेटे? मैंने कहा, जी हां। वह यह सुनते ही एकदम अपना कपड़ा घसीटते हुए बाहर आए और मेरे गले लग गए और मैंने भी उन्हें गले लगा लिया। फिर मैंने कहा, मुझे यह ख़बर मिली है कि आपने क़सास के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एक हदीस सुनी है, तो मुझे यह डर हुआ कि कहीं उसके सुनने से पहले आपका या मेरा इन्तिक़ाल न हो जाए। (इसलिए मैं इतना लम्बा सफ़र करके सिर्फ़ इसी हदीस को सुनने आया हूं।)

उन्होंने कहा, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है कि अल्लाह क़ियामत के दिन तमाम लोगों को हर हाल में जमा करेंगे कि सब नंगे बदन बग़ैर ख़त्ने के ख़ाली हाथ होंगे। हमने पूछा, ख़ाली हाथ होने का क्या मतलब है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उनके साथ दुनिया की कोई चीज़ न होगी। फिर अल्लाह उनमें ऐसी आवाज़ से एलान फ़रमाएंगे जिसे दूर वाला भी उसी तरह सुन लेगा जैसे नज़दीक वाला। मैं बदला लेने वाला हूं और मैं (हर चीज़ का) मालिक हूं, जिस दोज़ख़ी पर किसी जन्नती का कोई हक़ है, वह उस वक़्त तक दोज़ख़ में नहीं जा सकता जब तक मैं उस दोज़ख़ी से उस जन्नती का बदला न ले लूं और जिस जन्नती पर किसी दोज़ख़ी का कोई हक़ है वह उस वक़्त तक जन्नत में नहीं जा सकता जब तक मैं उससे उस दोज़ख़ी का बदला न ले लूं और इसमें मैं किसी की रियायत बिल्कुल नहीं करूंगा। अगर सिर्फ़ थप्पड़ ही ज़ुल्म के तौर पर मारा होगा तो भी उससे थप्पड़ का बदला लूंगा।

हमने पूछा, अल्लाह बदला किस तरह लेकर देंगे जबकि हम इस हाल में आएंगे कि हम नंगे बदन, बग़ैर ख़त्ने के और ख़ाली हाथ होंगे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह बदला नेकियों और बुराइयों के ज़रिए

होगा (मज़्लूम को ज़ालिम की नेकियां मिल जाएंगी या मज़्लूम के गुनाह ज़ालिम पर डाल दिए जाएंगे।)[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे क़सास के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एक हदीस पहुंची और लोगों में हदीस बयान करने वाले सहाबी मिस्र में थे, चुनांचे मैंने एक ऊंट ख़रीदा और सफ़र करके मिस्र पहुंचा और उस सहाबी के दरवाज़े पर गया। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[2]

हज़रत मस्लमा बिन मुख़ल्लद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जिस ज़माने में मैं मिस्र का अमीर था तो एक दिन दरबान ने आकर कहा कि दरवाज़े पर एक देहाती आदमी ऊंट पर आया है, अन्दर आने की इजाज़त तलब कर रहा है। मैंने पूछा, आप कौन हैं? उन्होंने कहा, जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी। मैंने बालाख़ाने से झांक कर कहा, मैं नीचे आ जाऊं या आप ऊपर आएंगे। उन्होंने कहा, न आप नीचे उतरें और न मुझे ऊपर चढ़ने की ज़रूरत है। मुझे यह ख़बर मिली है कि आप मुसलमान के ऐब छिपाने के बारे में एक हदीस हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं, मैं उसे सुनने आया हूं।

मैंने कहा, मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना कि जो आदमी मुसलमान के ऐब पर परदा डालेगा, तो गोया उसने क़ब्र में ज़िंदा गाड़ी गई लड़की को ज़िंदा कर दिया। यह हदीस सुनकर हज़रत जाबिर रज़ि० ने वापस जाने के लिए सवारी को हांका।[3]

हज़रत मुनीब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मेरे चचा ने फ़रमाया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी को यह ख़बर मिली कि हुज़ूर सल्ल० के एक और सहाबी रज़ि० हुज़ूर सल्ल० से यह रिवायत बयान करते हैं कि जो आदमी अपने मुसलमान भाई (के

---

1. हैसमी, भाग 1, पृ०133, अल-फ़त्ह, भाग 1, पृ० 127, जामेअ बयानुल इल्म, भाग 1, पृ०93, मुस्तदरक, भाग 4, पृ० 574,
2. हाफ़िज़, तबरानी, ख़तीब
3. हैसमी, इब्ने हिब्बान

ऐब) पर दुनिया में परदा डालेगा, अल्लाह क़ियामत के दिन उस (के गुनाहों) पर परदा डालेंगे।

वह रिवायत बयान करने वाले सहाबी मिस्र में थे तो पहले सहाबी सफ़र करके उनके पास मिस्र गए और उनसे इस हदीस के बारे में पूछा। उन्होंने कहा, जी हां। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सललम को यह फ़रमाते हुए सुना कि जो आदमी अपने मुसलमान भाई (के ऐब) पर दुनिया में परदा डालेगा, अल्लाह क़ियामत के दिन उस (के गुनाहों पर परदा डालेंगे)। पहले सहाबी रज़ि० ने कहा, मैंने भी यह हदीस हुज़ूर सल्ल० से सुनी है।[1]

हज़रत इब्ने जुरैज रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु सवारी पर सफ़र करके मिस्र हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए और फ़रमाया, मैं आपसे एक ऐसी हदीस के बारे में पूछना चाहता हूं कि इस हदीस के मौक़े पर जितने सहाबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे, अब उनमें सिर्फ़ मैं और आप बाक़ी रह गए हैं। आपने मुसलमान की परदा पोशी के बारे में हुज़ूर सल्ल० को क्या फ़रमाते हुए सुना?

हज़रत उक़्बा रज़ि० ने कहा, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि जो दुनिया में किसी मुसलमान (के ऐब) पर परदा डालेगा, अल्लाह क़ियामत के दिन उस (के गुनाहों) पर परदा डालेंगे। यह सुनकर हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० मदीना वापस लौट गए और जब तक यह हदीस बयान न कर दी, उस वक़्त तक अपना कजावा न खोला।[2]

हज़रत इब्ने जुरैज रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने मदीने के एक बड़े मियां हज़रत अबू सईद आमा रहमतुल्लाहि अलैहि को यह सुना कि वह हज़रत अता रहमतुल्लाहि अलैहि से यह वाक़िया बयान कर रहे थे कि हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उक़्बा बिन

---

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 134,
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 134,

आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से मिलने के लिए (मिस्र का) सफ़र किया। जब वह मिस्र पहुंच गए, तो लोगों ने उनके आने का तज़्किरा हज़रत उक़्बा रज़ि० से किया। हज़रत उक़्बा रज़ि० उनके पास बाहर आए, फिर उसके बाद पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।

इसके बाद यह है कि यह हदीस सुनकर हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० अपनी सवारी के पास आए और उस पर सवार होकर मदीना वापस लौट गए और अपना कजावा भी नहीं खोला।[1]

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत मस्लमा बिन मुख़ल्लद रज़ियल्लाहु अन्हु से मिलने गए, तो उनके और दरबान के बीच कुछ झगड़ा हो गया। हज़रत मस्लमा ने अन्दर से उनकी आवाज़ सुन ली और अन्दर आने की इजाज़त दे दी। हज़रत उक़्बा रज़ि० ने कहा, मैं आपको मिलने नहीं आया, बल्कि किसी ज़रूरत से आया हूं और वह यह है कि क्या आपको वह दिन याद है जिस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि जिसे अपने भाई की किसी बुराईका पता चले और वह उस पर परदा डाल दे, तो अल्लाह क़ियामत के दिन उस पर परदा डालेंगे। हज़रत मस्लमा ने कहा, जी हां। हज़रत उक़्बा रज़ि० ने कहा, बस मैं इसीलिए आया था।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुरैदा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक सहाबी ने सिर्फ़ एक हदीस सुनने के लिए हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास मिस्र का सफ़र किया।[3]

दारमी में इसके बाद यह मज़्मून है कि वह सहाबी रज़ि० जब हज़रत फ़ुज़ाला रज़ि० के पास पहुंचे, तो वह अपनी ऊंटनी को जौ मिला हुआ पानी पिला रहे थे, उन्हें आता हुआ देखकर हज़रत फ़ुज़ाला रज़ि० ने ख़ुश आमदीद कहा। उन्होंने कहा, मैं आपसे सिर्फ़ मिलने नहीं आया,

1. जामेअ बयानुल इल्म, भाग 1, पृ० 93
2. हैसमी भाग 1, पृ० 134,
3. फ़त्हुल बारी, भाग 1, पृ० 128, दारमी, भाग 55,

बल्कि इस वजह से आया हूं कि मैंने और आपने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एक हदीस सुनी थी। मुझे उम्मीद है कि वह आपको भी याद होगी। हज़रत फ़ुज़ाला रज़ि० ने पूछा, वह कौन-सी हदीस है? उन्होंने कहा, उस हदीस में यह और यह मज़्मून है।

हज़रत उबैदुल्लाह बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे पता चला है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास एक हदीस है तो मुझे इस बात का डर हुआ कि कहीं अगर हज़रत अली रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया तो फिर शायद मुझे यह हदीस किसी और के पास न मिल सके। इसलिए मैं सफ़र करके उनके पास इराक़ गया।[1]

इब्ने असाकिर में इसके बाद यह मज़्मून है कि मैंने उनसे इस हदीस के बारे में पूछा। उन्होंने मुझे वह हदीस सुनाई और मुझसे यह अह्द लिया कि मैं यह हदीस आगे किसी और से बयान न करूं। अगर वह ऐसा न करते तो मैं वह हदीस आप लोगों को सुना देता।

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का फ़रमान आगे आ रहा है, जो बुख़ारी में नक़ल किया गया है कि अगर मुझे किसी के बारे में पता चल जाए कि वह मुझसे ज़्यादा अल्लाह की किताब को जानता है तो मैं ज़रूर सफ़र करके उसके पास जाऊं और इब्ने असाकिर में उनका यह फ़रमान नक़ल किया गया है कि अगर मुझे किसी के बारे में यह पता चले कि ऊंट मुझे उस तक पहुंचा सकते हैं और वह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल होने वाले इल्मों को मुझसे ज़्यादा जानता है तो मैं ज़रूर उसके पास जाऊं, ताकि मेरे इल्म में और बढ़ोत्तरी हो सके।

इल्म को भरोसे के क़ाबिल इल्म वालों से हासिल करना और जब इल्म नाअहलों के पास होगा तो फिर इल्म का क्या हाल होगा?

हज़रत अबू सालबा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर

1. फ़त्ह, भाग 10, पृ० 128, कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 239

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिला। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे ऐसे आदमी के हवाले फ़रमा दें, जो अच्छी तरह सिखाने वाला हो। आपने मुझे हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले फ़रमा दिया और इर्शाद फ़रमाया, मैंने तुम्हें ऐसे आदमी के हवाले किया है जो तुम्हें अच्छी तरह तालीम देगा और अच्छी तरह अदब सिखाएगा।[1]

तबरानी में इसके बाद यह मज़्मून है कि जब मैं हज़रत अबू उबैदा रज़ि० की ख़िदमत में पहुंचा तो वह और हज़रत बशीर बिन साद अबू नोमान रज़ियल्लाहु अन्हु आपस में बातें कर रहे थे। मुझे देखकर वे दोनों हज़रात ख़ामोश हो गए। मैंने कहा, ऐ अबू उबैदा ! अल्लाह की क़सम ! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तो इस तरह मुझे बयान नहीं किया था, यानी वह तो मुझे देखकर ख़ामोश नहीं हुए थे। उन्होंने कहा, बैठ जाओ, हम तुमको हदीस सुनाएंगे। फिर फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया, तुममें तो इस वक़्त नुबूवत का दौर है, फिर नुबूवत के तर्ज़ पर ख़िलाफ़त होगी, फिर बादशाहत और जब्र होगा।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! भलाइयों का हुक्म देना और बुराई से रोकना कब छोड़ा जाएगा? आपने फ़रमाया, जब तुममें वे बातें ज़ाहिर हो जाएंगी, जो तुमसे पहले बनी इसराईल में ज़ाहिर हुई थीं। मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! वे बातें क्या हैं? आपने फ़रमाया, जब तुम्हारे नेक और बेहतरीन आदमियों में सुस्ती और तुम्हारे बुरे लोगों में बेहयाई ज़ाहिर हो जाएगी और बादशाहत तुम्हारे छोटों में और दीनी इल्म तुम्हारे कमीनों में मुंतक़िल हो जाएगा।[3]

हज़रत अबू उमैया जुमही रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर

1. कंज़, भाग 7, पृ० 95,
2. हैसमी, भाग 5, पृ० 189
3. कंज़, भाग 2, पृ० 139, जामेअ बयानुल इल्म, भाग 1, पृ० 157

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क़ियामत की निशानियों के बारे में पूछा गया, आपने फ़रमाया, क़ियामत की एक निशानी यह है कि इल्म छोटों के पास तलाश किया जाने लगेगा।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उकैम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे, ग़ौर से सुनो। सबसे सच्ची बात अल्लाह की है और सबसे अच्छा तरीक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का है और सबसे बुरे काम वे हैं जो नए ईजाद किए जाएं। ग़ौर से सुनो, लोग उस वक़्त तक ख़ैर पर रहेंगे, जब तक उनके पास इल्म उनके बड़ों की तरफ़ से आएगा।[2]

हज़रत बिलाल बिन यह्या रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मुझे मालूम है कि लोग कब सुधरते हैं और कब बिगड़ते हैं? जब इल्म छोटे की तरफ़ से आएगा तो बड़ा उसकी नाफ़रमानी करेगा और जब इल्म बड़े की तरफ़ से आएगा तो छोटा उसकी पैरवी करेगा और दोनों हिदायत पा जाएंगे।[3]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि लोग उस वक़्त तक नेकोकार और अपने दीन पर पुख़्ता रहेंगे, जब तक उनके पास इल्म हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा की तरफ़ से और उनके अपने बड़ों की तरफ़ से आएगा और जब उनके पास इल्म उनके छोटों की तरफ़ से आने लगेगा, तो फिर लोग हलाक हो जाएंगे।[4]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, लोग उस वक़्त तक ख़ैर पर रहेंगे, जब तक वे इल्म अपने बड़ों से हासिल करेंगे और जब इल्म अपने छोटों और अपने बड़ों से हासिल करने लगेंगे, तो हलाक हो जाएंगे।[5]

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 135,
2. जामेअ इल्म, भाग 1, पृ० 158,
3. जामेअ इल्म, भाग 1, पृ० 158
4. हैसमी, भाग 1, पृ० 135, जामीअिल इल्म, भाग 1, पृ० 159,
5. इब्ने अब्दुल बर्र, भाग 1, पृ० 159

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, तुम लोग उस वक़्त तक ख़ैर पर रहोगे, जब तक इल्म तुम्हारे बड़ों में रहेगा और जब इल्म तुम्हारे छोटों में आ जाएगा तो छोटे बड़ों को बेवक़ूफ़ बनाएंगे।[1]

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि सबसे ज़्यादा गुमराह करने वाला इंसान वह है जो क़ुरआन पढ़े और उसके मानी और मतलब को न समझे, फिर वह बच्चे, ग़ुलाम, औरत और बांदी को क़ुरआन सिखाए, फिर ये सब मिलकर क़ुरआन के ज़रिए इल्म वालों से झगड़ा करें।[2]

हज़रत अबू हाज़िम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, इस उम्मत पर मुझे किसी मोमिन की तरफ़ से कोई ख़तरा नहीं है, क्योंकि उसे उसका ईमान बुरे काम से रोक लेगा और उस फ़ासिक़ से भी कोई ख़तरा नहीं है जिसका फ़ासिक़ होना खुला और वाज़ेह हो। मुझे तो इस उम्मत पर उस आदमी की तरफ़ से ख़तरा है जिसने क़ुरआन तो पढ़ा है, लेकिन ज़ुबान से अच्छी तरह पढ़कर वह सही रास्ते से फिसल गया यानी ज़ुबान से पढ़ने को ही असल समझ लिया और क़ुरआन की सही तफ़्सीर छोड़कर उसने अपनी ओर से उसका मतलब बना लिया।[3]

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु के इंतिक़ाल का वक़्त जब क़रीब आया तो उन्होंने फ़रमाया, ऐ मेरे बेटो! मैं तुम्हें तीन बातों से रोकता हूं, उन्हें अच्छी तरह से याद रखना—(1) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से हदीस सिर्फ़ एतबार वाले और भरोसेमंद आदमी से ही लेना, किसी और से न लेना, और (2) क़र्ज़ा लेने की आदत न बना लेना, चाहे चोग़ा पहन कर गुज़ारा करना पड़े, अशआर लिखने में न लग जाना, वरना इनमें तुम्हारे दिल ऐसे मश्ग़ूल हो जाएंगे

1. इब्ने अब्दुल बर्र, भाग 1, पृ० 159
2. जामेअ बयानुल इल्म, भाग 2, पृ० 194,
3. जामेअ बयानुल इल्म, भाग 2, पृ० 194,

कि क़ुरआन से रह जाओगे ।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने जाबिया नामी जगह में लोगों में बयान फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो ! तुममें से जो क़ुरआन के बारे में कुछ पूछना चाहता है, वह हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जाए और जो मीरास के बारे में पूछना चाहता है, वह हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जाए और जो कोई फ़िक़्ही मसअले पूछना चाहता है वह हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जाए और जो माल लेना चाहता है, वह मेरे पास आ जाए, क्योंकि अल्लाह ने मुझे माल का वाली और उसका तक़्सीम करने वाला बनाया है ।[2]

तालिबे इल्म को ख़ुश आमदीद कहना और ख़ुशख़बरी सुनाना

हज़रत सफ़वान बिन अस्साल मुरादी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ । आप उस वक़्त मस्जिद में अपनी लाल धारियों वाली चादर पर टेक लगाए हुए थे । मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं इल्म हासिल करने आया हूं । आपने फ़रमाया, तालिबे इल्म को ख़ुश आमदीद हो । फिर आगे और हदीस ज़िक्र की जैसे कि बाब के शुरू में गुज़र चुकी है ।[3]

हज़रत अबू हारून रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हम हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में जाते, तो फ़रमाते, ख़ुश आमदीद हो उन लोगों को जिनके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वसीयत फ़रमाई थी । हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, लोग तुम्हारे

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 140,
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 135
3. तबरानी व अहमद

ताबेअ होंगे और ज़मीन के आख़िरी किनारों से तुम्हारे पास दीन की समझ हासिल करने आएंगे। जब वे तुम्हारे पास आएं तो उनके साथ अच्छा सुलूक करने की वसीयत मुझसे क़ुबूल कर लो।[1]

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़ल करते हैं, तुम्हारे पास मश्रिक़ की ओर से लोग इल्म हासिल करने आएंगे। जब वे तुम्हारे पास आएं तो तुम उनके साथ अच्छा सुलूक करना। रिवायत करने वाले कहते हैं, चुनांचे हज़रत अबू सईद रज़ि० जब हमें देखते तो फ़रमाते, ख़ुश आमदीद हो उन लोगों को जिनके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें वसीयत फ़रमाई थी।[2]

तिर्मिज़ी की एक रिवायत में आगे यह भी है कि अल्लाह ने तुम्हें जो इल्म अता फ़रमा रखा है, वह इन्हें भी सिखाओ। एक रिवायत में यह है कि अलग-अलग दूर-दूर के इलाक़ों के लोग आएंगे जो तुमसे दीन के बारे में पूछेंगे। जब वह तुम्हारे पास आएं तो उनके लिए जगह में गुंजाइश पैदा करो और उनके साथ अच्छा सुलूक करने की वसीयत क़ुबूल करो और उन्हें सिखाओ।

इब्ने असाकिर की रिवायत में यह है कि उन्हें सिखाओ और उन्हें कहो, ख़ुश आमदीद, ख़ुश आमदीद, क़रीब हो जाओ।[3]

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जब यह नव-उम्र जवान आते, तो फ़रमाते, ख़ुश आमदीद हो उन लोगों को जिनके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें वसीयत फ़रमाई थी। हमें हुज़ूर सल्ल० ने हुक्म दिया था कि हम उनके लिए मज्लिस में गुंजाइश पैदा करें और उनको हदीस समझाएं, क्योंकि आप लोग ही हमारे बाद जगह संभालने वाले हैं और हदीसें दूसरों को सुनाने वाले हैं और उन

---

1. तिर्मिज़ी,
2. इब्ने माजा, पृ० 37, हाकिम, भाग 1, पृ० 88
3. कंज़, भाग 5, पृ० 245,

नवजवानों से फ़रमाया करते थे, अगर तुम्हें कोई बात समझ में न आए, तो मुझसे समझ लेना, क्योंकि तुम समझकर उठो, यह मुझे इससे ज़्यादा महबूब है कि तुम बे-समझे उठ जाओ।[1]

हज़रत इस्माईल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हम लोग हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि के पास इयादत के लिए गए। हमारी तायदाद इतनी ज़्यादा थी कि सारा घर भर गया, तो उन्होंने अपने पांव समेट कर फ़रमाया, हम लोग हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की इयादत करने गये। हमारी तायदाद इतनी ज़्यादा थी कि सारा घर भर गया। उन्होंने अपने पांव समेट कर फ़रमाया, हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इयादत करने गए और हमारी तायदाद इतनी ज़्यादा थी कि सारा घर भर गया। आप पहलू के बल लेटे हुए थे।

जब आपने हमें देखा तो अपने पांव समेट लिए और फ़रमाया, मेरे बाद तुम्हारे पास बहुत से लोग इल्म हासिल करने आएंगे, तुम उन्हें ख़ुश आमदीद कहना और उनसे सलाम और मुसाफ़ा करना और उन्हें ख़ूब सिखाना।

हज़रत हसन कहते हैं, अल्लाह की क़सम! हमें तो ऐसे लोग मिले जिन्होंने न तो हमें ख़ुश आमदीद कहा और न हमसे सलाम और मुसाफ़ा किया और न हमें सिखाया, बल्कि जब हम उनके पास गए तो हमारे साथ जफ़ा का मामला किया। (हज़रत हसन बसरी रह० सहाबा रज़ि० के बाद वाले लोगों की शिकायत कर रहे हैं।)[2]

हज़रत उम्मे दरदा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब भी हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु कोई हदीस बयान करते तो ज़रूर मुस्कराते, तो मैंने उनसे कहा, मुझे इस बात का डर है कि इस तरह लोग आपको बेवक़ूफ़ समझने लगेंगे। उन्होंने फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब भी बात फ़रमाते, ज़रूर मुस्कराते।[3]

---

1. कंज़, भाग 5, पृ० 243
2. इब्ने माजा, पृ० 37
3. हैसमी, भाग 1, पृ० 131,

इल्मी मज्लिसें और उलेमा के साथ उठना-बैठना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमारे पास बैठने वालों में कौन सबसे बेहतरीन है? आपने फ़रमाया, जिसके देखने से तुम्हें अल्लाह याद आए और जिसकी बातों से तुम्हारा इल्म बढ़े और जिसके अमल से तुम्हें आख़िरत याद आए।[1]

हज़रत क़ुर्रा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मज्लिस में तशरीफ़ रखते होते, तो आपके सहाबा रज़ि० आपके पास कई हलक़े बनाकर बैठ जाते (और आपस में सीखने- सिखाने लग जाते और जब ज़रूरत पड़ती तो हुज़ूर सल्ल० से पूछ लेते।)[2]

हज़रत यज़ीद रक़ाशी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु हमें हदीस सुनाते, तो यह भी फ़रमाते, यह हदीस ऐसे नहीं सीखी जाती थी, जिस तरह तुम और तुम्हारे साथी करते हैं कि एक आदमी बैठ जाता है और सब उसके गिर्द जमा हो जाते हैं और वह उनमें बयान करता है, बल्कि सहाबा किराम रज़ि० फ़ज्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर कई हलक़े बना लेते और इन हलक़ों में क़ुरआन पढ़ते और फ़राइज़ और सुन्नतें सीखते।[3]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं मुहाजिरीन की एक जमाअत में उनके साथ बैठा हुआ था और हमारे पास कपड़े बहुत कम थे, जिसकी वजह से हम एक दूसरे की ओट में बैठे हुए थे। हमारे एक क़ारी क़ुरआन पढ़ रहे थे और हम सब अल्लाह की किताब सुन रहे थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने मेरी उम्मत में ऐसे लोग भी बनाए हैं कि मुझे अपने आपको उनके साथ बिठाए रखने का हुक्म दिया गया है।

1. मुंज़री, भाग 1, पृ० 76,
2. बज़्ज़ार, अहमद
3. मज़्मउज़्ज़वाइद, भाग 1, पृ० 132,

हुज़ूर सल्ल० के तशरीफ़ लाने पर गोल हलक़ा बन गया और सबने चेहरे हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ कर लिए, लेकिन आपने मेरे अलावा और किसी को नहीं पहचाना, फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ फ़ुक़रा मुहाजिरीन! तुम्हें ख़ुशख़बरी हो कि तुम्हें क़ियामत के दिन पूरा नूर हासिल होगा और तुम मालदारों से आधा दिन पहले जन्नत में दाख़िल हो जाओगे और यह आधा दिन पांच सौ वर्ष का होगा।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपनी मस्जिद में दो हलक़ों पर गुज़र हुआ। एक हलक़े वाले दुआ में अल्लाह से राज़ व नियाज़ की बातों में लगे हुए थे और दूसरे हलक़े वाले दीनी इल्म सीख-सिखा रहे थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, दोनों हलक़ों वाले ख़ैर पर हैं, लेकिन एक हलक़े वाल दूसरे से बेहतर हैं। ये तो अल्लाह से दुआ कर रहे हैं कि उससे राज़ व नियाज़ में लगे हुए हैं। अगर अल्लाह चाहेगा तो उनको देगा और अगर चाहेगा तो नहीं देगा। ये दूसरे हलक़े वाले सीख रहे हैं और जिसे नहीं आता, उसे सिखा रहे हैं और मुझे तो सिखाने वाला बनाकर ही भेजा गया है, फिर आप आकर उनके पास बैठ गए।[2]

हज़रत अबूबक्र बिन अबी मूसा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु इशा के बाद हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, कैसे आना हुआ? हज़रत अबू मूसा रज़ि० ने कहा, आपसे कुछ बात करना चाहता हूं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, इस वक़्त? हज़रत अबू मूसा ने कहा, हां। एक ज़रूरी दीनी मसला है। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० उनके पास बैठ गए और दोनों बहुत देर तक बातें करते रहे। जब बातों से फ़ारिग़ हुए तो हज़रत अबू मूसा रज़ि० ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! तहज्जुद की नमाज़ पढ़ लें। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हम तो

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 57, हुलीया, भाग 1, पृ० 342,
2. जामिउल इल्म, भाग 1, पृ० 16

नमाज़ में ही थे।[1]

हज़रत जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह बजली रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं इल्म हासिल करने मदीना आया, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में दाख़िल हुआ तो मैंने देखा कि लोग हलक़े बनाकर बैठे हुए हैं और बातें कर रहे हैं। मैं हलक़ों के पास से गुज़रता रहा और चलते-चलते एक हलक़े के पास पहुंचा तो उसमें एक साहब थे, जिनका रंग बदला हुआ था और उनके जिस्म पर दो कपड़े थे, ऐसे लग रहा था कि जैसे अभी सफ़र से आए हों। मैंने उन्हें फ़रमाते हुए सुना, रब्बे काबा की क़सम! लोगों से बैअत लेने वाले बादशाह हलाक हो गए और मुझे उनका ग़म नहीं और यह बात उन्होंने कई बार कही। मैं उनके पास बैठ गया, वह काफ़ी देर तक हदीसें बयान फ़रमाते रहे, इसके बाद वह खड़े हो गए।

उनके खड़े होने के बाद मैंने उनके बारे में पूछा कि यह कौन हैं? लोगों ने बताया, यह मुसलमानों के सरदार हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। मैं उनके पीछे हो लिया, यहां तक कि वह अपने घर में दाख़िल हो गए। उनका घर बिल्कुल पुराना-सा था, उसकी शक्ल व सूरत बोसीदा-थी और उनमें दुनिया की रग़बत बिल्कुल न थी, बिल्कुल दुनिया से अलग-थलग थे। उनकी तमाम बातें आपस में मिलती-जुलती थीं। मैंने उन्हें सलाम किया। उन्होंने सलाम का जवाब दिया। फिर मुझसे पूछा, तुम किन लोगों में से हो?

मैंने कहा, इराक़ वालों में से। उन्होंने फ़रमाया, इराक़ वाले तो मुझसे बहुत ज़्यादा सवाल करते हैं। जब उन्होंने यह फ़रमाया, तो मुझे गुस्सा आ गया और मैंने घुटने के बल बैठकर अपने हाथ-चेहरे तक उठा लिए और क़िब्ले की ओर मुंह कर लिया और मैंने यह दुआ करनी शुरू की, ऐ अल्लाह! हम तुझसे ही उन लोगों की शिकायत करते हैं कि हमने बहुत माल ख़र्च किया और अपने जिस्मों को ख़ूब थकाया और अपनी

1. कंज़, भाग 5, पृ० 228,

सवारियों को चलाया और यह सब कुछ हमने इल्म हासिल करने के लिए किया। जब हमारी इनसे मुलाक़ात हुई, तो ये हमें कड़वेपन से मिले और हमें ऐसे सख़्त कलिमे कह दिए, यह सुनकर हज़रत उबई रज़ि० रोने लगे और मुझे राज़ी करने लगे और फ़रमाने लगे, तेरा भला हो! मेरा मतलब यह नहीं था, हरगिज़ नहीं था, फिर फ़रमाने लगे, ऐ अल्लाह! अगर तूने मुझे अगले जुमा तक ज़िंदा रखा, तो मैंने जो कुछ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुन रखा है, वह सब ज़रूर बयान कर दूंगा और किसी की मलामत की परवाह नहीं करूंगा।

इसके बाद मैं उनके पास से वापस आ गया और अगले जुमा का इन्तिज़ार करने लगा, लेकिन जुमेरात को मैं किसी काम से बाहर आया, तो मैंने देखा कि तमाम गलियां लोगों से भरी हुई हैं। जिस गली में जाता हूं, वहां लोग ही लोग नज़र आते हैं। मैंने पूछा, इन लोगों को क्या हुआ? लोगों ने कहा, हमारा ख़्याल है कि आप अजनबी मुसाफ़िर हैं। मैंने कहा, जी हां। लोगों ने कहा, मुसलमानों के सरदार हज़रत उबई बिन काब रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया है।

हज़रत जुन्दुब कहते हैं, मैं इराक़ वापस आया, तो मेरी मुलाक़ात हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु से हुई और मैंने उन्हें हज़रत उबई रज़ि० की सारी बात बताई। उन्होंने फ़रमाया, हाय अफ़सोस! काश वह ज़िंदा रह जाते, ताकि हमें उनकी वह ख़ास बात पहुंच जाती।[1]

हज़रत बिलाल बिन यसाफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं बसरा गया और एक मस्जिद में दाख़िल हुआ, तो मैंने देखा, एक बड़े मियां, जिनके सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद हैं, एक स्तून से टेक लगाकर लोगों में हदीस बयान कर रहे हैं। मैंने पूछा, यह कौन हैं? लोगों ने बताया, यह हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं।[2]

हज़रत अबू सालेह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत इब्ने

---

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 501
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 28,

अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ऐसी ज़बरदस्त मज्लिस देखी है कि सारे क़ुरैश वाले उस पर फ़ख़्र करें तो बजा है। यह वाक़ई फ़ख़्र के क़ाबिल मज्लिस है। मैंने एक दिन देखा कि बहुत-से लोग उनके घर के बाहर रास्ते पर जमा हैं और इतने ज़्यादा हैं कि आने-जाने की बिल्कुल जगह नहीं है। मैंने अन्दर जाकर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० को बताया कि दरवाज़े पर बहुत-से लोग आए हुए हैं। उन्होंने फ़रमाया, मेरे लिए वुज़ू का पानी रखो।

चुनांचे वह वुज़ू करके बैठ गए और फ़रमाया, बाहर जाओ और लोगों में एलान करो कि जो क़ुरआन और उसके हर्फ़ों और उसकी किसी चीज़ के बारे में कुछ पूछना चाहता है, वह अन्दर आ जाए। चुनांचे मैंने बाहर जाकर यह एलान किया तो एक बहुत बड़ी तायदाद अन्दर आई, जिससे सारा घर और हुजरा भर गया और उन्होंने जो बात भी पूछी, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने उसका जवाब दिया और जितना उन्होंने पूछा, उतना बल्कि उससे कहीं और ज़्यादा अपने पास से उन्हें बताया, फिर फ़रमाया, अब अपने दूसरे भाइयों को अन्दर आने का मौक़ा दे दो। चुनांचे वे लोग बाहर चले गए।

फिर मुझसे फ़रमाया, बाहर जाकर यह एलान करो कि जो क़ुरआन की तफ़्सीर और शरह के बारे में कुछ पूछना चाहता है, वह अन्दर आ जाए। चुनांचे मैंने बाहर जाकर यह एलान किया तो एक बहुत बड़ी तायदाद अन्दर आई, जिससे सारा घर और हुजरा भर गया और उन्होंने जो बात भी पूछी, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने उसका जवाब दिया और जितना उन लोगों ने पूछा, उतना, बल्कि उससे भी ज़्यादा अपने पास से बयान कर दिया, फिर फ़रमाया, अब अपने दूसरे भाइयों को अन्दर आने का मौक़ा दे दो, चुनांचे वे लोग चले गए।

फिर मुझसे फ़रमाया, बाहर जाकर यह एलान कर दो कि जो हलाल-हराम और फ़िक़्ही मसले पूछना चाहता है, वह अन्दर आ जाए। चुनांचे मैंने बाहर जाकर यह एलान कर दिया, तो बहुत बड़ी तायदाद अन्दर आई, जिससे सारा घर और हुजरा भर गया और उन लोगों ने जो भी पूछा, उसका उन्हें जवाब दिया और उतना ही और अपने पास से बयान

कर दिया फिर उनसे फ़रमाया, अब अपने दूसरे भाइयों को मौक़ा दे दो। चुनांचे ये लोग बाहर चले गए।

फिर मुझसे फ़रमाया, बाहर जाकर यह एलान कर दो कि जो मीरास वग़ैरह जैसे मसले पूछना चाहता है, वह अन्दर आ जाए। चुनांचे मैंने बाहर जाकर यह एलान कर दिया तो बहुत बड़ी तायदाद अन्दर आई, जिससे सारा घर और हुजरा भर गया और उन लोगों ने जो भी पूछा, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने उसका जवाब दिया और उतना ही अपने पास से बयान कर दिया। फिर फ़रमाया, अब अपने दूसरे भाइयों को मौक़ा दे दो। चुनांचे ये लोग बाहर चले गए।

फिर मुझसे फ़रमाया, बाहर जाकर एलान कर दो जो अरबी ज़ुबान, शेर (पद) और अनोखे कलाम के बारे में पूछना चाहता है, वह अन्दर आ जाए। मैंने बाहर जाकर यह एलान कर दिया जिस पर एक बहुत बड़ी तायदाद अन्दर दाख़िल हुई, जिससे सारा घर और हुजरा भर गया और उन लोगों ने जो बात भी पूछी, उसका हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने जवाब दिया और उतना ही और अपने पास से बयान कर दिया। अगर सारे क़ुरैश हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० की इस मज्लिस पर फ़ख़्र करें तो उन्हें फ़ख़्र करने का हक़ पहुंचता है और मैंने उस जैसा मंज़र और किसी के यहां नहीं देखा।[1]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, बेहतरीन मज्लिस वह है जिसमें हिक्मत की बातें बयान की जाएं।[2]

दूसरी रिवायत में ये लफ़्ज़ हैं कि बेहतरीन मज्लिस वह है जिसमें ख़ूब हिक्मत के मोती बिखेरे जाएं और अल्लाह की रहमत की पूरी उम्मीद हो। (क्योंकि उसमें ऐसे आमाल किए गए हैं जिनकी वजह से अल्लाह की रहमत नाज़िल होती है।)[3]

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 320, हाकिम, भाग 3, पृ० 538,
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 167,
3. जामिउल इल्म, भाग 1, पृ० 50

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है, मुत्तक़ी लोग सरदार हैं और फ़क़ीह लोग उम्मत के रहनुमा हैं और उनके साथ बैठने से (ईमान और इल्म में) इज़ाफ़ा होता है।[1]

हज़रत अबू हुजैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि क़ीमती और कारामद नसीहत के तौर पर यह कहा जाता था कि बड़ी उम्र वालों के पास बैठा करो और उलेमा से दोस्ती, लगाव और हिक्मत वाले समझदार लोगों से मेल-जोल रखो। हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आदमी के दीनी समझ रखने की एक निशानी यह भी है कि उसका चलना और आना-जाना इल्म वालों के पास हो।[2]

एक रिवायत में और ज़्यादा ये लफ़्ज़ (शब्द) भी हैं और उसका बैठना भी उनके साथ हो।[3]

इल्मी मज्लिस का एहतराम और उसकी ताज़ीम

हज़रत अबू हाज़िम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत सह्ल रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी क़ौम की मज्लिस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसें बयान कर रहे थे कि कुछ लोग आपस में एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर बातें करने लगे। उन्हें ग़ुस्सा आ गया और फ़रमाया, मैं इन्हें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वे हदीसें सुना रहा हूं जिन्हें मेरी आंखों ने देखा है और मेरे कानों ने सुना है और मैं यह देख रहा हूं कि ये लोग आपस में एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह हैं (और हदीस नहीं सुन रहे हैं।) ग़ौर से सुनो, अल्लाह की क़सम ! अब मैं तुम्हारे दर्मियान में से चला जाऊंगा और कभी भी तुम्हारे पास वापस नहीं आऊंगा।

मैंने उनसे पूछा, आप कहां चले जाएंगे? उन्होंने कहा, मैं अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने चला जाऊंगा। मैंने कहा, अब जिहाद करना

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 126,
2. जामेअ, भाग 1, पृ० 126,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 211,

आपके बस में नहीं है, क्योंकि न आप घोड़े पर बैठ सकते हैं, न तलवार चला सकते हैं और न नेज़ा मार सकते हैं। (आप बहुत ही बूढ़े और कमज़ोर हो चुके हैं।) उन्होंने फ़रमाया, ऐ अबू हाज़िम ! मैं जाकर जिहाद की सफ़ में खड़ा हो जाऊंगा। कोई नामालूम तीर या पत्थर आकर मुझे लगेगा और इस तरह अल्लाह तआला मुझे शहादत का दर्जा अता फ़रमा देंगे।[1]

उलेमा और तलबा के आदाब

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़ुरैश का एक नवजवान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे ज़िना की इजाज़त दे दें, तमाम लोग उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो गए और उसे डांटने लगे और कहने लगे, ऐसी बात न कहो, ऐसी बात न कहो। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ज़रा क़रीब आ जाओ। वह हुज़ूर सल्ल० के क़रीब आ गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम ज़िना को अपनी मां के लिए पसन्द करते हो ? उसने कहा, बिल्कुल नहीं। अल्लाह की क़सम ! अल्लाह मुझे आप पर क़ुरबान करे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, न ही दूसरे लोग इसे अपनी मां के लिए पसन्द करते हैं।

फिर आपने फ़रमाया, क्या तुम इसे अपनी बेटी के लिए पसन्द करते हो ? उसने कहा, बिल्कुल नहीं। अल्लाह की क़सम ! ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह मुझे आप पर क़ुरबान करे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, और न ही दूसरे और लोग इसे अपनी बेटियों के लिए पसन्द करते हैं।

फिर आपने फ़रमाया, क्या तुम इसे अपनी बहन के लिए पसन्द करते हो ? उसने कहा, बिल्कुल नहीं। अल्लाह की क़सम ! ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह मुझे आप पर क़ुरबान करे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, न ही दूसरे लोग इसे अपनी बहनों के लिए पसन्द करते हैं।

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 155,

फिर आपने फ़रमाया, क्या तुम इसे अपनी फूफी के लिए पसन्द करते हो? उसने कहा, बिल्कुल नहीं। अल्लाह की क़सम! ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह मुझे आप पर क़ुरबान करे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, और न ही दूसरे लोग इसे अपनी फूफियों के लिए पसन्द करते हैं। फिर आपने फ़रमाया, क्या तुम इसे अपनी ख़ाला के लिए पसन्द करते हो? उसने कहा, बिल्कुल नहीं, अल्लह की क़सम! ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह मुझे आप पर क़ुरबान करे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, और न ही दूसरे लोग इसे अपनी ख़ालाओं के लिए पसन्द करते हैं।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने अपना हाथ उस पर रखकर यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! इसके गुनाह माफ़ फ़रमा और इसके दिल को पाक फ़रमा और इसकी शर्मगाह की हिफ़ाज़त फ़रमा।

हज़रत अबू उमामा रज़ि० फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्ल० के समझाने और दुआ फ़रमाने के बाद उस जवान की तवज्जोह उस तरफ़ से बिल्कुल हट गई।[1]

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब कोई बात इर्शाद फ़रमाते, तो उसे तीन बार कहते, ताकि सुनने वाले अच्छी तरह समझ लें।[2]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने मदीना वालों के वाइज़ हज़रत इब्ने अबी साइब रहमतुल्लाहि अलैहि से फ़रमाया, तीन कामों में मेरी बात मानो, वरना मैं तुमसे सख़्त लड़ाई करूंगी। हज़रत इब्ने अबी साइब रह० ने अर्ज़ किया, वे तीन काम क्या हैं? ऐ उम्मुल मोमिनीन! मैं आपकी बात ज़रूर मानूंगा।

हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, पहली बात यह है कि तुम दुआ में तकल्लुफ़ वाली क़ाफ़िया बन्दी से बचो, (यानी पूरी बनावटी मेहनत के साथ बने-संवरे लफ़्ज़ों में दुआ मांगने से बचो) क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 129
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 129,

अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा इस तरह जान-बूझकर नहीं किया करते और दूसरी बात यह है कि हफ़्ते में एक बार लोगों में बयान किया करो और ज़्यादा करना चाहो तो दो बार, वरना ज़्यादा से ज़्यादा तीन बार किया करो, इससे ज़्यादा न करो, वरना लोग (अल्लाह की) इस किताब से उकता जाएंगे और तीसरी बात यह है कि ऐसा हरगिज़ न करना कि तुम किसी जगह जाओ और वहां वाले आपस में बात कर रहे हों और तुम उनकी बात काटकर अपना बयान शुरू कर दो, बल्कि उन्हें अपनी बात करने दो और जब वे तुम्हें मौक़ा दें और कहें, तो फिर उनमें बयान करो।[1]

हज़रत शक़ीक़ बिन सलमा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु एक दिन हमारे पास बाहर तश्रीफ़ लाए और फ़रमाया, मुझे ख़बर मिल जाती है कि आप लोग बाहर बैठे हैं, लेकिन कभी-कभी मैं जान-बूझकर आप लोगों के पास बाहर नहीं आता, ताकि मेरे ज़्यादा बयानों और ज़्यादा हदीसों के सुनाने की वजह से आप लोग उकता न जाएं, क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाज़ और बयान में हमारा ख़्याल फ़रमाते थे, ताकि हम उकता न जाएं।[2]

हज़रत आमश रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का एक आदमी पर गुज़र हुआ, जो एक क़ौम में वाज़ कर रहा था। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ वाज़ व नसीहत करने वाले, लोगों को (अल्लाह की रहमत से) ना-उम्मीद न करना।[3]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें दीन की समझ रखने वाला हक़ीक़ी आलिम न बताऊं? यह वह आलिम है जो लोगों को अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न करे और न अल्लाह की

---

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 191
2. जामेअ, भाग 1, पृ० 105,
3. हैसमी, भाग 1, पृ० 191

नाफ़रमानी की उन्हें खुली छुट्टी दे और न उन्हें अल्लाह की पकड़ से बे-ख़ौफ़ और बेफ़िक्र होने दे और न क़ुरआन के अलावा किसी और चीज़ में ऐसा लगे कि क़ुरआन छूट जाए। उस इबादत में ख़ैर नहीं, जिसमें दीनी इल्म न हो और उस दीनी इल्म में ख़ैर नहीं है, जिसे आदमी समझा न हो या जिसके साथ परहेज़गारी न हो और क़ुरआन की उस तिलावत में कोई ख़ैर नहीं, जिसमें इंसान क़ुरआन के मानी और मतलब में ग़ौर व फ़िक्र न करे।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुआज़ बिन जबल और हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हुमा को यमन भेजा तो उन दोनों को ये हिदायतें दीं कि आपस में एक दूसरे की मदद करना और एक दूसरे की बात मानना और लोगों को ख़ुशख़बरियां सुनाना और लोगों को मत भगाना।

चुनांचे (यमन जाकर) हज़रत मुआज़ रज़ि० ने लोगों में बयान फ़रमाया और उन्हें इस्लाम लाने की और दीनी समझ हासिल करने की और क़ुरआन पढ़ने-पढ़ाने की तर्ग़ीब दी और फ़रमाया, मैं तुम्हें जन्नत वाले और दोज़ख़ वाले बता देता हूं। जब किसी आदमी का भलाई के साथ ज़िक्र हो तो समझ लो कि वह जन्नत वालों में से है और जब किसी का बुराई के साथ ज़िक्र हो तो समझ लो वह दोज़ख़ वालों में से है।[2]

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ि० जब आपस में बैठा करते थे, तो उनकी बातें दीनी मामलों के बारे में ही होती थीं, या फिर ख़ुद कोई सूरः पढ़ते या किसी को पढ़ाते।[3]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, आदमी इल्म के

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 77, कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 231, जामेअउल इल्म, भाग 2, पृ०44,
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 166,
3. हाकिम, भाग 1, पृ० 94

ऊंचे मर्तबे पर उस वक़्त होगा जब अपने से ऊपर वाले से हसद न करे और अपने से नीचे वाले को हक़ीर न समझे और इल्म के बदले में कोई क़ीमत न चाहे।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, ख़ुद इल्म सीखो और लोगों को सिखाओ और इल्म के लिए वक़ार और सुकून और इत्मीनान सीखो और जिससे इल्म सीखो, उसके सामने भी तवाज़ोअ अख़्तियार करो और घमंडी न बनो, इस तरह तुम्हारा जह्ल तुम्हारे इल्म के सामने नहीं ठहर सकेगा, बल्कि ख़त्म हो जाएगा।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया (तुम्हें सिखाने वाले) आलिम का यह हक़ है कि तुम उससे सवाल ज़्यादा न करो और उसे जवाब देने की मशक़्क़त में न डालो, यानी उसे मजबूर न करो और जब वह तुमसे मुंह दूसरी ओर फेर ले तो फिर उस पर इसरार न करो और जब वह थक जाए तो उसके कपड़े न पकड़ो, और न हाथ से उसकी तरफ़ इशारा करो और न आंखों से और उसकी मज्लिस में कुछ न पूछो और उसकी लग़्ज़िशें तलाश न करो और अगर उससे कोई लग़्ज़िश हो जाए तो तुम उस लग़्ज़िश से उसके रुजू का इंतिज़ार करो और जब वह रुजू कर ले तो तुम उसे क़ुबूल कर लो और यह कभी न कहो कि फ़्लां ने आपकी बात के ख़िलाफ़ बात कही है और उसके किसी भेद को न खोलो और उसके पास किसी की ग़ीबत न करो। उसके सामने और उसकी पीठ पीछे दोनों हालतों में उसके हक़ का ख़्याल करो और तमाम लोगों को सलाम करो, लेकिन उसे भी ख़ास तौर से करो और उसके सामने बैठो। अगर उसे कोई ज़रूरत हो तो दूसरों से आगे बढ़कर उसकी ख़िदमत करो और उसके पास जितना वक़्त भी तुम्हारा गुज़र जाए, तंगदिल न होना, क्योंकि यह आलिम खजूर के पेड़ की तरह है जिससे हर वक़्त किसी न किसी फ़ायदे के हासिल होने का इन्तिज़ार

1. हुलीया, भाग 6, पृ० 306,
2. जामेअ, भाग 1, पृ० 135, कंज़, भाग 5, पृ० 238,

रहता है और यह आलिम उस रोज़ेदार के दर्जे में है जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद कर रहा हो। जब ऐसा आलिम मर जाता है तो इस्लाम में ऐसी दराड़ पड़ जाती है जो क़ियामत तक भर नहीं सकती और आसमान के सत्तर हज़ार मुक़र्रब फ़रिश्ते तालिब इल्म के साथ (इक्राम के लिए) चलते हैं।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्मे वलद बांदी हज़रत जमीला रहमतुल्लाहि अलैहि कहती हैं कि जब हज़रत साबित बुनानी रहमतुल्लाहि अलैहि हज़रत अनस रज़ि० की ख़िदमत में आते तो हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते, ऐ लौंडिया ! ज़रा ख़ुश्बू लाना ताकि मैं अपने हाथों को लगा लूं, यह साबित की मां का बेटा यानी ख़ुद हज़रत साबित जब तक मेरे दोनों हाथों को चूम नहीं लेगा, उस वक़्त तक राज़ी नहीं होगा।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से एक बात पूछना चाहता था, लेकिन उनके रौब और हैबत की वजह से मैं उनसे दो साल तक न पूछ सका, यहां तक कि हज के सफ़र या उमरा के सफ़र में हज़रत उमर रज़ि० किसी ज़रूरत के लिए मर्रज़्ज़हरान की घाटी में अराक मुक़ाम पर अपने साथियों से पीछे रह गए और मुझे तंहाई का मौक़ा मिल गया, तो मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं आपसे दो साल से एक बात पूछना चाहता हूं, लेकिन सिर्फ़ आपकी हैबत की वजह से न पूछ सका।

उन्होंने कहा, ऐसा मत करो, जब किसी बात के मुझसे पूछने का इरादा हुआ करे तो फ़ौरन पूछा लिया करो। अगर मुझे वह बात मालूम होगी तो मैं तुम्हें बता दूंगा वरना कह दूंगा कि मुझे मालूम नहीं। फिर तुम उस आदमी से पूछ लेना जो उसे जानता हो। मैंने कहा, वे दो औरतें कौन हैं जिनके बारे में अल्लाह ने (सूरः तहरीम में) फ़रमाया है कि वे

---

1. कंज़, भाग 5, पृ० 242, मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 73, कंज़, भाग 5, पृ० 229
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 130

दोनों हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुक़ाबले में एक दूसरे की मददगार बनी थीं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, वह हज़रत आइशा और हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हुमा थीं। इसके बाद और लम्बी हदीस ज़िक्र की है।[1]

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत साद बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूं, लेकिन आपसे डर भी लगता है। हज़रत साद रज़ि० ने कहा, ऐ मेरे भतीजे! मुझसे न डरो, जब तुम्हें मालूम हो कि वह चीज़ मुझे मालूम है तो तुम मुझसे ज़रूर पूछ लो।

मैंने अर्ज़ किया, जब तबूक की लड़ाई में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने पीछे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को छोड़कर गए थे तो उनसे क्या फ़रमाया था? हज़रत साद रज़ि० ने कहा, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था, ऐ अली रज़ि० ! क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि तुम मेरे लिए ऐसे हो जाओ, जैसे कि हज़रत हारून अलैहिस्सलाम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लिए थे। (तूर पहाड़ पर जाते वक़्त हज़रत मूसा अलै० हज़रत हारून अलैहि० को पीछे छोड़ गए थे।)[2]

हज़रत उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन मौहब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत ज़ुबैर बिन मुतइम रज़ियल्लाहु अन्हु का पानी के एक चश्मे पर गुज़र हुआ। उस चश्मे वालों ने उनसे मीरास के बारे में पूछा। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे मालूम नहीं, लेकिन तुम लोग किसी को मेरे साथ भेज दो, मैं मालूम करके उसे जवाब बता दूंगा। चुनांचे चश्मे वालों ने उनके साथ एक आदमी भेज दिया।

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने जाकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से उसके बारे में पूछा, हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, जो आलिम और फ़क़ीह बनना चाहता है, उसे ऐसे ही करना चाहिए जैसे कि हज़रत ज़ुबैर बिन

1. जामेअ, भाग 1, पृ० 112,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 24,

मुतइम रज़ि० ने किया। उनसे ऐसी बात पूछी गई जो उन्हें मालूम नहीं थी, तो यों कह दिया, 'अल्लाहु आलमु' अल्लाह जानते हैं, (मैं नहीं जानता।)[1]

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि किसी ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से औलाद की मीरास के बारे में पूछा। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे मालूम नहीं। किसी ने उनसे कहा, आप इसका जवाब क्यों नहीं देते? उन्होंने फ़रमाया, इब्ने उमर रज़ि० से वह चीज़ पूछी गई जो उसे मालूम नहीं। उसने कह दिया, मैं नहीं जानता, (ठीक तो किया)।[2]

हज़रत उर्वः रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से किसी चीज़ के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने फ़रमाया, मुझे मालूम नहीं। जब वह पूछने वाला पीठ फेरकर चल पड़ा तो हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने अपने आपसे कहा, इब्ने उमर रज़ि० से ऐसी चीज़ पूछी गई जो उसे मालूम नहीं, तो उसने कह दिया, मुझे मालूम नहीं।[3]

हज़रत उक़्बा बिन मुस्लिम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं लगातार चौंतीस महीने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की सोहबत में रहा, कई बार ऐसा हुआ कि आपसे कोई चीज़ पूछी जाती, तो आप कह देते, मैं नहीं जानता और फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाते, क्या तुम जानते हो? ये लोग क्या चाहते हैं? ये लोग हमारी पीठों को जहन्नम तक जाने के लिए पुल बनाना चाहते हैं।[4]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से किसी ने एक मस्अला पूछा। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने अपना सर झुका लिया और कोई जवाब न दिया, यहां तक कि

1. कंज़, भाग 5, पृ० 241,
2. जामेअ, भाग 2, पृ० 52,
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 144,
4. जामिउल इल्म, भाग 2, पृ० 54,

लोग यह समझे कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने उसका सवाल ही नहीं सुना, इसलिए उस आदमी ने कहा, अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए, क्या आपने मेरा सवाल नहीं सुना?

उन्होंने फ़रमाया, सुना है, लेकिन शायद आप लोग यह समझते हैं कि आप लोग हमसे जो कुछ पूछ रहे हैं, अल्लाह हमसे उसके बारे में पूछ-ताछ नहीं करेगा। अल्लाह तुम पर रहम करे, हमें ज़रा मोहलत दो, ताकि हम तुम्हारे सवाल के बारे में सोच लें। अगर हमें उसका कोई जवाब समझ में आ गया, तो हम तुम्हें बता देंगे और अगर न आया तो तुम्हें बता देंगे कि हमें मालूम नहीं।[1]

हज़रत इब्ने मस्ऊद ने फ़रमाया, ऐ लोगो! जिस आदमी से ऐसी बात पूछी जाए जो उसे मालूम है, तो वह उसे बता दे और जिसे मालूम नहीं है, वह कह दे, अल्लाह ज़्यादा जानता है, (मैं नहीं जानता), क्योंकि यह भी इल्म में से है कि जिस बात को आदमी नहीं जानता उसके बारे में कह दे कि अल्लाह ज़्यादा जानता है। ख़ुद अल्लाह ने अपने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इर्शाद फ़रमाया है—

قُلْ مَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّ مَآ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ (سورت ص آیت۸۶)

'आप कह दीजिए कि मैं तुमसे इस क़ुरआन (की तब्लीग़ पर) न कुछ मुआवज़ा चाहता हूं और न मैं बनावट करने वालों में से हूं।'[2]

(सूरः साद, आयत 86)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बशीर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु से एक मस्अला पूछा गया, तो उन्होंने फ़रमाया, मुझे मालूम नहीं, फिर फ़रमाया, इस बोल से मेरे जिगर को बहुत ज़्यादा ठंडक पहुंची है कि मुझसे ऐसी बात पूछी गई जो मुझे मालूम नहीं, और मैंने कह दिया, मुझे मालूम नहीं।[3]

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 168,
2. जामिउल इल्म, भाग 2, पृ० 51
3. कंज़, भाग 5, पृ० 241-243,

हज़रत यह्या बिन सईद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, जब कोई आलिम, 'मैं नहीं जानता' कहना छोड़ देता है, तो समझ लो, वह अपनी हलाकत की जगह पर पहुंच गया है।

हज़रत मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अनहुमा फ़रमाया करते थे कि जब कोई आलिम मैं नहीं जानता कहने से चूक जाए, तो समझ लो कि वह अपनी हलाकत की जगह पर पहुंच गया है।[1]

हज़रत मक्हूल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों को हदीसें सुनाते और जब देखते कि ये थक गए हैं और उकता गए हैं तो उन्हें पौधे लगाने में मश्ग़ूल कर देते।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुसअब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, औरतों का मह्र चालीस ऊक़िया (एक ऊक़िया चालीस दिरहम का होता है) से ज़्यादा मुक़र्रर न करो, चाहे ज़िलग़ुस्सा क़ैस बिन हुसैन हारिसी (जैसे सरदार) की बेटी क्यों न हो। जो इससे ज़्यादा मुक़र्रर करेगा, मैं वह ज़्यादा रक़म लेकर बैतुलमाल में जमा कर दूंगा। इस पर औरतों की सफ़ में से एक औरत खड़ी हुई, जिसका क़द लम्बा था और नाक चिपटी थी और उसने कहा, आपको ऐसा करने का अख़्तियार नहीं है। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्यों? उस औरत ने कहा, क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है—

وَاٰتَيْتُمْ اِحْدٰهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَاْخُذُوْا مِنْهُ شَيْئًا (سورت نساء آیت ۲۰)

'और तुम इस एक को अंबार का अंबार माल दे चुके हो तो तुम इसमें से कुछ भी मत लो।' (सूरः निसा, आयत 20) तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़ौरन कहा, औरत ने ठीक कहा, मर्द ने ग़लती की, यानी उमर रज़ि० ने।[3]

1. जामेअ बयानुल इल्म, भाग 2, पृ० 54
2. कंज़, भाग 5, पृ० 241,
3. जामिउल इल्म, भाग 1, पृ० 131

हज़रत मुहम्मद बिन काब कुरज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से कोई मस्अला पूछा। हज़रत अली रज़ि० ने उसका कुछ जवाब दिया। उस आदमी ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मस्अला इस तरह नहीं है, बल्कि इस तरह है। हज़रत अली रज़ि० ने फ़ौरन कहा, तुमने ठीक कहा, मेरी बात ग़लत थी—

وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ (سورت یوسف آیت ۷۶)

'और हर जानने वाले के ऊपर उससे ज़्यादा जानने वाला होता है।'[1]

(सूरः यूसुफ़, आयत 76)

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि कभी-कभी हज़रत उमर बिन ख़त्ताब और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुमा का आपस में किसी मस्अले में इतना झगड़ा हो जाता था कि देखने वाला यों समझता था कि शायद अब दोनों कभी आपस में इकट्ठे नहीं होंगे, लेकिन वे दोनों जब उस मज्लिस से उठते तो ऐसे लगता कि कोई बात हुई ही नहीं थी, बिल्कुल ठीक-ठाक होते।[2]

आदमी का इस वजह से इल्म की मज्लिस में आना छोड़ देना ताकि दूसरे लोग इल्म हासिल कर सकें

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं बारह सवारों की जमाअत में (अपनी बस्ती से) चला और सफ़र करके मदीना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंचा। हम आपके यहां ठहर गए। मेरे साथियों ने कहा, हमारे ऊंट कौन चराएगा? ताकि (वह तो हमारे ऊंट लेकर चला जाए और फ़ारिग़ होकर) हम जाकर हुज़ूर सल्ल० से इल्म की रोशनी हासिल कर सकें और शाम को जब वह ऊंट चरा कर वापस आएगा तो हमने जो कुछ दिन भर में हुज़ूर सल्ल० से सुना होगा, वह सब उसे बता देंगे?

1. कंज़, भाग 5, पृ० 241,
2. कंज़, भाग 5, पृ० 241,

मैं ऊंट चराने के लिए तैयार हो गया और कुछ दिन ऊंट चराता रहा। फिर मैंने दिल में सोचा, कहीं मेरा नुक़्सान तो नहीं हो रहा, क्योंकि मेरे साथी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वे हदीसें सुनते हैं जो मैं नहीं सुनता और आपसे वह कुछ सीख रहे हैं जो मैं नहीं सीख रहा।

चुनांचे एक दिन (मैं ऊंट लेकर नहीं गया और दूसरे साथी अपने-अपने ऊंट लेकर गए और) मैं मज्लिस में हाज़िर हुआ तो मैंने एक आदमी को यह कहते हुए सुना कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो पूरा वुज़ू करेगा, वह अपने गुनाहों से ऐसे पाक-साफ़ हो जाएगा जैसे आज ही उसकी मां ने उसे जना हो, मैं यह फ़ज़ीलत सुनकर बहुत ख़ुश हुआ और वाह-वाह करने लगा।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, अरे मियां! अगर तुम इससे पहले वाला कलाम सुन लेते तो और ज़्यादा हैरान होते। मैंने कहा, अल्लाह मुझे आप पर क़ुरबान करे, ज़रा मुझे वह कलाम तो सुना दें। उन्होंने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो इस हाल में मरे कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराता हो, तो अल्लाह उसके लिए जन्नत के सारे दरवाज़े खोल देंगे कि जिससे चाहे, दाख़िल हो जाए और जन्नत के आठ दरवाज़े हैं। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० हमारे पास बाहर तश्रीफ़ लाए। मैं आपके सामने बैठ गया, लेकिन आपने मुझसे मुंह फेर लिया और तीन बार हुज़ूर सल्ल० ने ऐसे ही फ़रमाया। जब आपने चौथी बार भी ऐसे ही किया, तो मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, आप मुझसे क्यों मुंह फेर रहे हैं? इस पर आपने मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, तुम्हें एक आदमी (का मज्लिस में आना) ज़्यादा पसन्द है या बारह (का)? जब मैंने यह मंज़र देखा तो मैं उसी वक़्त अपने साथियों के पास वापस चला गया।[1]

हज़रत उस्मान बिन अबिल आस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं

1. कंज़, भाग 1, पृ० 77, हुलीया, भाग 9, पृ० 307

सक़ीफ़ के वफ़्द के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हमने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरवाज़े पर अपने नए जोड़े पहने। मेरे साथियों ने कहा, हमारी सवारियों को कौन थाम कर रखेगा? लेकिन सबको हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में फ़ौरन हाज़िरी देने का शौक़ था और कोई भी इस काम के लिए ठहरना नहीं चाहता था। मैं इन सबमें छोटा था। मैंने कहा, अगर आप लोग चाहें तो मैं सवारियों के लिए यहां ठहरने के लिए तैयार हूं, लेकिन शर्त यह है कि जब आप लोग अन्दर से बाहर आ जाएं, तो फिर आप लोगों को मेरी सवारी की वजह से यहां रुकना होगा।

उन्होंने कहा, ठीक है और वे सब अन्दर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में चले गए और वहां से फ़ारिग़ होकर बाहर वापस आए और कहने लगे, आओ चलें। मैंने कहा, कहां? तुम्हारे घर। मैंने कहा, मैंने अपने घर से इतना सफ़र किया, लेकिन जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरवाज़े पर पहुंचा तो हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िरी दिए बग़ैर मैं वापस चला जाऊं, हालांकि आप लोगों ने मुझसे वायदा किया था जैसे कि आप लोगों को मालूम है। इस पर साथियों ने कहा, अच्छा जल्दी करो। हम हुज़ूर सल्ल० से हर बात पूछकर आए हैं, तुम्हें अब कुछ पूछने की ज़रूरत नहीं।

चुनांचे मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप मेरे लिए अल्लाह से दुआ फ़रमा दें कि मुझे इल्म और दीन की समझ अता फ़रमा दे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने क्या कहा? मैंने अपनी दरख़्वास्त दोबारा पेश की, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने ऐसी फ़रमाइश की है कि वैसी तुम्हारे साथियों में से किसी ने नहीं की। जाओ, अब तुम ही अपने इन साथियों के भी अमीर हो और तुम्हारी क़ौम में से जो भी तुम्हारे पास आए, तुम उसके अमीर हो।[1] आगे और हदीस भी ज़िक्र की है।

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 371

दूसरी मुख़्तसर रिवायत में यह है कि मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्ल० के पास एक क़ुरआन रखा हुआ था। वह मैंने हुज़ूर सल्ल० से मांगा, हुज़ूर सल्ल० ने मुझे अता फ़रमा दिया।

इल्म का पढ़ना-पढ़ाना और इल्म को आपस में दोहराना और किन चीज़ों का पूछना मुनासिब है और किन का मुनासिब नहीं

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे और कभी हमारी तायदाद साठ तक भी हो जाती थी। हुज़ूर सल्ल० हम लोगों में हदीस बयान फ़रमाते। फिर अपनी किसी ज़रूरत से अन्दर तशरीफ़ ले जाते। हम लोग बैठकर उसे आपस में इतना दोहराते कि जब हम वहां से उठते तो वह हदीस हमारे दिल में बैठ चुकी होती।[1]

हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब फ़ज्र की नमाज़ पढ़ लेते तो हम सब आपकी तरफ़ मुतवज्जह हो जाते। हम में से कोई आपसे क़ुरआन के बारे में पूछता, कोई फ़र्ज़ों के बारे में पूछता और कोई ख़्वाब की ताबीर (स्वप्न फल) पूछता।[2]

हज़रत फ़ुज़ाला बिन उबैद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जब उनके साथी आया करते तो उनसे फ़रमाया करते कि मिलकर पढ़ा करो, बशारतें सुनाया करो और (इल्म को) बढ़ाओ, अल्लाह तुम्हारी ख़ैर को बढ़ाए और तुमसे मुहब्बत करे और जो तुमसे मुहब्बत करता है, उससे भी मुहब्बत करे और मस्अलों को हमारे सामने दोहराते रहा करो, क्योंकि मस्अलों के आख़िरी हिस्से का सवाब पहले हिस्से की तरह है और अपनी बात-चीत में इस्तग़फ़ार शामिल कर लिया करो।[3]

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 161,
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 159
3. हैसमी, भाग 1, पृ० 161

हज़रत अबू नज़रा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि आप हमें हदीसें लिखकर दे दें। फ़रमाया, हरगिज़ लिखकर नहीं देंगे। हम हरगिज़ हदीस को क़ुरआन नहीं बनाएंगे, बल्कि तुम हमसे हदीसें ऐसे लो जैसे हमने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से (बग़ैर लिखे हुए ज़ुबानी) ली थीं और हज़रत अबू सईद रज़ि० यह भी फ़रमाया करते थे कि हदीसें आपस में दोहराया करो, क्योंकि इस तरह पक्की याद हो जाती है।[1]

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हदीसों का आपस में मुज़ाकरा करते रहा करो इससे हदीसें अच्छी तरह याद हो जाती हैं।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हदीसों का आपस में मुज़ाकरा करते रहा करो, क्योंकि अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो तुम तमाम हदीसें भूल जाओगे।[3]

इब्ने अब्दुल बर्र की रिवायत के शुरू में यह भी है कि आपस में एक दूसरे से मिलते रहा करो।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हदीसों का आपस में मुज़ाकरा करते रहो, क्योंकि मुज़ाकरा करने से हदीसें ज़िंदा रहती हैं यानी याद रहती हैं।[4]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, इल्म का पढ़ना-पढ़ाना नफ़्ल नमाज़ का सवाब दिलाता है और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, रात के कुछ हिस्से में इल्म का आपस में मुज़ाकरा करना मुझे रात भर इबादत करने से ज़्यादा महबूब है।[5]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर

---

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 161
2. हाकिम, भाग 1, पृ० 62, जामिउल इल्म, भाग 1, पृ० 111,
3. हाकिम, भाग 1, पृ० 95, जामिउल इल्म, भाग 1, पृ० 101,
4. हाकिम, भाग 1, पृ० 95,
5. इल्म, भाग 1, पृ० 22

बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, ऐ अबू हसन! कई बार आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में मौजूद होते थे और हम ग़ायब होते थे और कभी हम मौजूद होते थे और आप ग़ैर-हाज़िर! तीन बातें मैं आपसे पूछना चाहता हूं, क्या आपको मालूम है? हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, वे तीन बातें क्या हैं?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, एक आदमी को एक आदमी से मुहब्बत होती है, हालांकि उसने उसमें कोई ख़ैर की बात नहीं देखी होती और एक आदमी को एक आदमी से दूरी होती है, हालांकि उसने उसमें कोई बुरी बात नहीं देखी होती। इसकी क्या वजह है?

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, हां, इसका जवाब मुझे मालूम है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि इंसानों की रूहें अज़ल में एक जगह इकट्ठी रखी हुई हैं। वहां वे एक दूसरे के क़रीब आकर आपस में मिलती हैं, जिनमें वहां आपस में तआरूफ़ (परिचय) हो गया, उनमें यहां दुनिया में उलफ़त हो जाती है और जिनमें वहां अजनबीयत (अनजानापन) रही, वे यहां दुनिया में एक दूसरे से अलग रहते हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह एक बात का जवाब मिल गया। दूसरी बात यह है कि आदमी हदीस बयान करता है, कभी उसे भूल जाता है, कभी याद आ जाती है, इसकी क्या वजह है?

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि जैसे चांद का बादल होता है, ऐसे दिल के लिए भी बादल है। चांद ख़ूब चमक रहा होता है, बादल उसके सामने आ जाता है, तो अंधेरा हो जाता है और जब बादल हट जाता है, तो चांद फिर चमकने लगता है। ऐसे ही आदमी एक हदीस बयान करता है, वह बादल उस पर छा जाता है, तो वह हदीस भूल जाता है और जब उससे वह बादल हट जाता है तो उसे वह हदीस याद आ जाती है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, दो बातों का जवाब मिल गया, तीसरी बात यह है कि आदमी ख़्वाब देखता है, तो कोई ख़्वाब सच्चा होता है, कोई झूठा, इसकी क्या वजह है?

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, जी हां, इसका जवाब भी मुझे मालूम है। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि बन्दा या बन्दी गहरी नींद सो जाता है, तो उसकी रूह को अर्श तक चढ़ाया जाता है। जो रूह अर्श पर पहुंच कर जागती है, उसका ख़्वाब तो सच्चा होता है और जो इससे पहले जाग जाती है, उसका ख़्वाब झूठा होता है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मैं इन तीन बातों की तलाश में एक अर्से से लगा हुआ था, अल्लाह का शुक्र है कि मैंने मरने से पहले उनको पा लिया।[1]

हज़रत इब्राहीम तैमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक दिन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु तंहाई में बैठे हुए थे और अपने दिल में कुछ सोच रहे थे। फिर आदमी को भेजकर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुलाया। जब वह आ गए तो उनसे फ़रमाया, इस उम्मत में कैसे इख़्तिलाफ़ हो सकता है, जबकि उनकी किताब एक है और उनका नबी एक है और उनका क़िब्ला एक है?

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! हम पर क़ुरआन उतरा, हमने उसे पढ़ा और हमें मालूम है कि क़ुरआन की यह आयत किसके बारे में उतरी है, लेकिन हमारे बाद के लोग क़ुरआन तो पढ़ेंगे, लेकिन उन्हें यह नहीं मालूम होगा कि यह आयत किसके बारे में उतरी है। इस तरह हर जमाअत की इस बारे में अलग-अलग राय होगी। जब हर जमाअत की अलग-अलग राय होगी, तो इनमें इख़्तिलाफ़ हो जाएगा और जब इनमें इख़्तिलाफ़ हो जाएगा, तो फिर आपस में लड़ पड़ेंगे।

---

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 164,

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० उन पर बरसे और उन्हें ख़ूब डांटा। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० वापस चले गए, लेकिन हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने जो बात कही थी, वह बाद में हज़रत उमर रज़ि० की समझ में आ गई, तो उन्हें बुलाया और उनसे फ़रमाया, वह अपनी बात ज़रा दोबारा कहना।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, आज रात मैंने एक आयत पढ़ी, जिसकी वजह से मुझे सारी रात नींद नहीं आई, वह आयत यह है—

أَيَوَدُّ أَحَدُكُمْ أَن تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ الآية (سورت بقره آيت٢٦٦)

'भला तुममें से किसी को यह बात पसन्द है कि उसका एक बाग़ हो खजूरों का और अंगूरों का, उसके (पेड़ों के) नीचे नहरें चलती हों। उस आदमी के यहां उस बाग़ में और भी हर क़िस्म के (मुनासिब) मेवे हों और उस आदमी का बुढ़ापा आ गया हो और उसके बाल-बच्चे भी हों जिनमें (कमाने की) ताक़त नहीं। सो उस बाग़ पर एक बगोला आवे, जिसमें आग (का माद्दा) हो, फिर वह बाग़ जल जावे।' (सूरः बक़रः, आयत 266)

मैं सारी रात यह सोचता रहा कि अल्लाह इस आयत में क्या कहना चाहते हैं, इससे मुराद क्या है? एक आदमी ने कहा, अल्लाह ज़्यादा जानते हैं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह तो मैं भी जानता हूं कि अल्लाह ज़्यादा जानते हैं, लेकिन मैं इसलिए पूछ रहा हूं कि अगर आप लोगों में से किसी को कुछ मालूम है, या उसने इसके बारे में कुछ सुन रखा है, तो वह बता दे।

और लोग तो चुप रहे, लेकिन मैंने धीमी आवाज़ से कुछ कहा, इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने मुझसे फ़रमाया, कहो, ऐ मेरे भतीजे! कहो, अपने आपको इतने कम दर्जे का न समझो। मैंने कहा, इस मिसाल से मुराद अमल है। उन्होंने फ़रमाया, अमल मुराद लेने की क्या दलील है?

1. कंज़, भाग 1, पृ० 228

मैंने कहा, (दलील तो कोई नहीं है, लेकिन) मेरे दिल में यह बात आई है जो मैंने कह दी है।

इस पर हज़रत उमर रज़ि० मुझे छोड़कर ख़ुद तफ़्सीर करने लगे और फ़रमाया, ऐ मेरे भतीजे ! तुमने ठीक कहा, वाक़ई इससे अमल ही मुराद है। इब्ने आदम जब बूढ़ा हो जाता है और उसके बाल-बच्चे ज़्यादा हो जाते हैं, तो उसे अपने बाग़ की बहुत ज़्यादा ज़रूरत होती है। ऐसे ही क़ियामत के दिन उसे अमल की सबसे ज़्यादा ज़रूरत होगी, ऐ मेरे भतीजे ! तुमने ठीक कहा।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मुझे बद्र की लड़ाई में शरीक होने वाले बड़े-बूढ़ों के साथ अपनी मज्लिस में शरीक फ़रमाया करते थे। एक बार उनसे हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, आप इस नवजवान को हमारे साथ शरीक करते हैं, हालांकि इस जितने तो हमारे बेटे हैं?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह उन लोगों में से है जिनको तुम जानते हो। एक दिन हज़रत उमर रज़ि० ने उन्हें भी बुलाया और मुझे भी बुलाया। मैं समझ गया कि मुझे सिर्फ़ इसलिए बुलाया है, ताकि वे लोग मेरी (इल्मी) हैसियत देख लें और फ़रमाया, आप लोग अल्लाह के उस फ़रमान के बारे में क्या कहते हैं और फिर—

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ

से लेकर आख़िर तक सारी सूरः पढ़ी।

तर्जुमा—'(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम !) जब ख़ुदा की मदद और (मक्का की) जीत (अपनी निशानियों के साथ) आ पहुंचे (यानी वाक़े हो जाए) और (निशानियां जो इससे निकलने वाली हैं, ये हैं कि) आप लोगों को अल्लाह के दीन (यानी इस्लाम में) झुंड के झुंड दाख़िल होता हुआ देख लें तो अपने रब की तस्बीह व तह्मीद कीजिए और उससे इस्तग़फ़ार की दरख़्वास्त कीजिए। वह बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला है।'

1. कंज़, भाग 1, पृ० 234, हाकिम, भाग 3, पृ० 542,

उनमें से किसी ने कहा, अल्लाह ने हमें इस बात का हुक्म दिया है कि जब अल्लाह की मदद आ जाए और हमें जीत मिल जाए तो हम उसकी तारीफ़ करें और उससे मग़्फ़िरत तलब करें और किसी ने कहा, हमें मालूम नहीं। कुछ लोगों ने कुछ नहीं कहा, बल्कि ख़ामोश रहे। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने मुझसे फ़रमाया, ऐ इब्ने अब्बास रज़ि० ! क्या तुम भी ऐसे ही कहते हो? मैंने फ़रमाया, नहीं। उन्होंने फ़रमाया, फिर तुम क्या कहते हो?

मैंने कहा, इसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुनिया से तशरीफ़ ले जाने की तरफ़ इशारा है। अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० को बताया है कि जब अल्लाह की मदद आ जाए और मक्का की फ़त्ह हो जाए और तुम लोगों को देख लो, तो यह आपके दुनिया से जाने के क़रीब आने की निशानी है, इसलिए आप अपने रब की तस्बीह व तह्मीद कीजिए और उससे मग़्फ़िरत तलब कीजिए। वह बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला है। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे भी इस सूरः के बारे में इतना ही मालूम है, जितना तुम्हें मालूम है।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से अल्लाह के इस फ़रमान के बारे में पूछा—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ (سورت مائده آيت ۱۰۱)

'ऐ ईमान वालो ! ऐसी (बेकार) बातें मत पूछो कि अगर तुमसे ज़ाहिर कर दी जाएं तो तुम्हारी नागवारी की वजह बने।' (सूरः माइदा 101)

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, कुछ मुहाजिरीन को अपने नसब में कुछ शुबहा था। एक दिन ये लोग आपस में कहने लगे, अल्लाह की क़सम ! हमारा दिल चाहता है कि हमारे नसब के बारे में अल्लाह कुछ क़ुरआन नाज़िल फ़रमा दें, तो क्या ही अच्छा हो। इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी जो तुमने अभी पढ़ी थी। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 276, हुलीया, भाग 1, पृ० 317, हाकिम, भाग 3, पृ० 530

मुझसे फ़रमाया, तुम्हारे ये साथी यानी हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु अगर अमीर बन गए तो ये ज़ाहिद तो होंगे, लेकिन मुझे ख़ुदबीनी का डर है कि कहीं उसमें मुबतला न हो जाएं।

मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! हमारे साथी (के फ़ज़ाइल और दर्जे) को तो आप जानते हैं। अल्लाह की क़सम! आप क्या फ़रमा रहे हैं? (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुनिया से तशरीफ़ ले जाने के बाद) उनमें कोई तब्दीली नहीं आई और जितने दिन वह हुज़ूर सल्ल० के साथ रहे, कभी हुज़ूर सल्ल० को नाराज़ नहीं किया।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के होते हुए हज़रत अली रज़ि० ने अबू जह्ल की बेटी को शादी का पैग़ाम देना चाहा था, जिस पर हुज़ूर सल्ल० को गरानी हुई थी। मैंने कहा, अल्लाह ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की नाफ़रमानी के क़िस्से में फ़रमाया है—

وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا (سورت طٰہٰ آیت ۱۱۵)

'हमने (इस हुक्म के एहतिमाम में) उनमें पुख़्तगी (और साबित क़दमी) न पाई।' (सूरः ताहा, आयत 115)

ऐसे ही हमारे साथी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नाराज़ करने में पुख़्तगी न दिखाई, (बल्कि ज्यों ही पता चला कि यह काम हुज़ूर सल्ल० को पसन्द नहीं है, उन्होंने फ़ौरन इस इरादे को छोड़ दिया।) और ये तो दिल के वे ख़्यालात हैं, जिनके आने को कोई रोक नहीं सकता और अल्लाह के दीन की समझ रखने वाले फ़क़ीह और अल्लाह के हुक्मों के जानने वाले आलिम से भी कभी लग़्ज़िश हो जाती हैं, लेकिन जब उसे इस पर मुतनब्बह किया जाए तो फ़ौरन उसे छोड़कर अल्लाह की तरफ़ रुजू कर लेता है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ इब्ने अब्बास रज़ि०! जो यह चाहता है कि तुम्हारे (इल्मों के) समुद्रों में घुसकर तुम्हारे साथ ग़ोता लगाए और गहराई तक पहुंचे, वह ऐसा काम करना चाहता है जो उसके बस में नहीं।

(यानी तुमने अपनी दलीलों से मुझे लाजवाब कर दिया है।)[1]

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास बैठा हुआ था कि इतने में सामने से मक़्सूरा वाले हज़रत ख़ब्बाब रहमतुल्लाहि अलैहि ज़ाहिर हुए और कहने लगे, ऐ अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ! क्या आपने वह हदीस सुनी है जो हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु बयान कर रहे हैं? वह कह रहे हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि जो घर से ही जनाज़े के साथ चले और उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़े और दफ़न तक उसके पीछे रहे, उसको दो क़ीरात बदला मिलेगा। एक क़ीरात उहुद पहाड़ के बराबर होता है और जो नमाज़ जनाज़ा पढ़कर वापस आ जाए उसको उहुद पहाड़ के बराबर अज्र (बदला) मिलेगा, यानी एक क़ीरात अज्र मिलेगा।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० को हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास भेज दिया कि उनसे हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की इस हदीस के बारे में पूछो और वह जो जवाब दें, वह आकर बताओ। फिर हज़रत इब्ने उमर रज़ि० एक मुट्ठी मस्जिद की कंकरियां लेकर हाथ में उलट-पुलट करते रहे, यहां तक कि वह क़ासिद यानी हज़रत ख़ब्बाब वापस आ गए और आकर बताया कि हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमा रही हैं कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने ठीक कहा है, तो हाथ में जो कंकड़ियां थीं, उन्हें हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने ज़मीन पर फेंककर कहा, फिर तो हमने अज्र व सवाब के बहुत-से क़ीरात खो दिए।[2]

हाकिम की रिवायत में इसके बाद यह भी है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हमें न तो ज़मींदारा की मश्ग़ूली थी और न बाज़ार के कारोबार और तिजारत की, जिसकी वजह से हमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को छोड़कर जाना पड़ता हो। मेरी चाहत

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 229,
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 302, हाकिम, भाग 3, पृ० 510,

तो बस इतनी थी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझे या तो कोई कलिमा और बात सिखा दें या खाने का कोई लुक़्मा खिला दें। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरह! वाक़ई तुम हम सबसे ज़्यादा हुज़ूर सल्ल० को चिमटे रहते थे, इसी वजह से तुम हम सबसे ज़्यादा हुज़ूर सल्ल० की हदीसों को जानने वाले हो।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा से बेहतर कोई क़ौम नहीं देखी कि उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात तक हुज़ूर सल्ल० से सिर्फ़ तेरह मस्अले ही पूछे, जिनका क़ुरआन में इन लफ़्ज़ों के साथ ज़िक्र है,

يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ وَ يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَ الْمَيْسِرِ وَ يَسْئَلُوْنَكَ
عَنِ الْيَتَامٰى وَ يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ وَ يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ

'सहाबा रज़ि० आपसे क़ाबिले एहतराम महीने, शराब और जुए यतीमों, हैज़ और माले ग़नीमत के बारे में पूछते हैं।'

وَيَسْئَلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ

'सहाबा आपसे पूछते हैं कि वे क्या ख़र्च करें।'

और वे सिर्फ़ अपने फ़ायदे की बात ही पूछा करते थे। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने यह भी फ़रमाया, बैतुल्लाह का सबसे पहले फ़रिश्तों ने तवाफ़ किया था और हजरे अस्वद और रुक्ने यमानी के नज़दीक कई नबियों की क़ब्रें हैं। जब किसी नबी को उसकी क़ौम बहुत ज़्यादा तक्लीफ़ देने लगती, तो वह उन्हें छोड़कर बैतुल्लाह के पास आ जाता, तो फिर वफ़ात तक यहां ही अल्लाह की इबादत करता रहता।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि अंसार की औरतें बहुत अच्छी हैं। दीनी मस्अला पूछने और दीन की समझ हासिल करने

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 332
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 158,

में हया नहीं करती हैं।[1]

हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ौजा मोहतरमा हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा की पड़ोसिन थी। मैंने (उनके घर में जाकर) अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ज़रा यह बताएं कि जब कोई औरत ख़्वाब में यह देखे कि उसके शौहर ने उससे सोहबत की है, तो क्या उसे ग़ुस्ल करना पड़ेगा? यह सुनकर हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने कहा, ऐ उम्मे सुलैम रज़ि० ! तुम्हारे हाथ धूल से भरें, तुमने तो अल्लाह के रसूल सल्ल० के सामने औरतों को रुसवा कर दिया। मैंने कहा, अल्लाह हक़ बात बयान करने से हया नहीं करते। हमें जब किसी मसले में मुश्किल पेश आए, तो उसे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछ लेना, इससे बेहतर है कि हम ऐसे ही अंधेरे में रहें।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उम्मे सुलैम रज़ि० ! तुम्हारे हाथ धूल में सनें, अगर उसे (कपड़ों पर या जिस्म पर) पानी नज़र आए तो उसे ग़ुस्ल करना पड़ेगा। हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने कहा, क्या औरत का भी पानी होता है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तो फिर बच्चा मां से मिलता-जुलता कैसे हो सकता है? ये औरतें मिज़ाज और तबीयत में मर्दों जैसी हैं।[2]

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कोई बात इर्शाद फ़रमा देते तो कुछ लोग एक दूसरे से उसके बारे में बहुत ज़्यादा सवाल करते और फिर हुज़ूर सल्ल० से पूछने लग जाते, जब पूछना शुरू करते तो उस वक़्त तो वह चीज़ हलाल होती, लेकिन वह हुज़ूर सल्ल० से उसके बारे में इतने सवाल करते कि आख़िर वह चीज़ अल्लाह की तरफ़ से हराम कर दी जाती।[3]

1. इल्म, भाग 1, पृ० 88
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 165
3. हैसमी, भाग 1, पृ० 158,

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि लिआन की आयतें ज़्यादा सवाल करने की वजह से उतरीं।[1]

एक दिन लोगों ने हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से बहुत ज़्यादा सवाल किए, तो उन्होंने हज़रत हारिस बिन क़ैस रहमतुल्लाहि अलैहि से फ़रमाया, ऐ हार बिन क़ैस (मुहब्बत में हारिस को हार कहकर पुकारा) तुम्हारा क्या ख़्याल है, ये लोग इतना ज़्यादा पूछकर क्या करना चाहते हैं? हज़रत हारिस रज़ि० ने कहा, ये लोग तो बस सीख कर छोड़ देंगे। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके अलावा कोई माबूद नहीं, तुमने ठीक कहा।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, ऐ लोगो! जो चीज़ अभी हुई नहीं, उसके बारे में मत पूछो, क्योंकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उस आदमी पर लानत भेजते थे जो उस चीज़ के बारे में पूछे जो अभी हुई नहीं।[3]

हज़रत ताऊस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, किसी के लिए यह बात हलाल नहीं है कि वह उस चीज़ के बारे में पूछे जो अभी हुई नहीं, क्योंकि अल्लाह ने उनके तमाम मामलों के बारे में फ़ैसला फ़रमा रखा है जो आगे होने वाले हैं।[4]

हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ैद बिन साबित रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मेरे वालिद हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु से जब कोई चीज़ पूछी जाती थी तो उस वक़्त तक उसके बारे में अपनी समझ से कोई जवाब न देते थे, जब तक यह न पूछ लेते कि यह बात हो चुकी है या नहीं? अगर वह हुई न होती तो उसका जवाब न देते और अगर हो

1. बज़्ज़ार, हैसमी,
2. तबरानी, हैसमी,
3. इल्म, भाग 2, पृ० 143,
4. इब्ने अब्दुल बर्र

चुकी होती तो फिर उसके बारे में बात-चीत फ़रमाते और जब उनसे कोई मस्अला पूछा जाता तो पूछते, क्या यह पेश आ चुका है? तो कोई आदमी उनसे कहता, ऐ अबू सईद! अभी पेश तो नहीं आया, लेकिन हम पहले से इसका जवाब तैयार कर रहे हैं, यह फ़रमाते, इसे छोड़ दो और पेश आ चुका होता तो उसका जवाब बता देते।

हज़रत मस्रूक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु से एक मस्अला पूछा, तो उन्होंने फ़रमाया, क्या यह पेश आ चुका है? मैंने कहा, नहीं, तो फ़रमाया, जब तक यह पेश न आ जाए, उस वक़्त तक मुझे आराम से रहने दो।[1] इब्ने साद की रिवायत में इस तरह है कि हज़रत उबई रज़ि० ने फ़रमाया कि जब तक यह पेश न आ जाए, उस वक़्त तक हमें आराम से रहने दो। जब यह पेश आ जाएगा, तब हम तुम्हारे लिए कोशिश करके अपनी राय बता देंगे।

हज़रत आमिर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु से एक मस्अला पूछा गया, तो पूछा, क्या यह मस्अला पेश आ चुका है? लोगों ने कहा, नहीं, तो फ़रमाया, जब तक यह पेश न आ जाए, उस वक़्त तक हमें छोड़े रखो। जब यह पेश आ जाएगा, तब ज़ोर लगाकर उसका सही जवाब निकालकर तुम्हें बताएंगे।[2]

क़ुरआन सीखना और सिखाना और पढ़कर लोगों को सुनाना

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैंने फ़्लां क़बीले का हिस्सा ख़रीदा तो मुझे उसमें इतना और इतना नफ़ा हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया; क्या मैं तुम्हें इससे ज़्यादा नफ़ा की सूरत न बताऊं? उसने कहा, क्या इससे

1. इब्ने अब्दुल बर्र, भाग 2, पृ० 142, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 500
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 256,

ज़्यादा नफ़ा हो सकता है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां। आदमी दस आयतें सीख ले (तो उसे इससे ज़्यादा नफ़ा मिल जाएगा) चुनांचे वह आदमी गया, और उसने दस आयतें सीखीं और आकर हुज़ूर सल्ल० को इसकी ख़बर दी।[1]

हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें ऐसी सूर: न सिखाऊं कि इस जैसी सूर: तौरात, इंजील, ज़बूर और क़ुरआन (किसी आसमानी किताब) में नहीं उतरी, मैंने कहा, ज़रूर सिखाएं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उम्मीद है इस दरवाज़े से निकलने से पहले ही तुम इस सूर: को सीख लोगे। फिर हुज़ूर सल्ल० खड़े हो गए और आपके साथ मैं भी खड़ा हो गया। फिर आप मुझसे बातें करने लगे। मेरा हाथ आपके हाथ में था और मैं इस ख़्याल से पीछे हटने लगा कि हुज़ूर सल्ल० कहीं मुझे बताने से पहले बाहर न चले जाएं।

जब मैं दरवाज़े के क़रीब पहुंच गया, तो मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! वह सूर: जिसका आपने मुझसे वायदा किया था। आपने फ़रमाया, जब तुम नमाज़ के लिए खड़े होते हो, तो क्या पढ़ते हो? मैंने कहा, सूर: फ़ातिहा। आपने फ़रमाया, बस यही है। यही वे सात आयतें हैं जिनको नमाज़ में बार-बार पढ़ा जाता है, जिनके बारे में अल्लाह ने फ़रमाया है—

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ (سورت حجر آیت ۸۷)

'और हमने आपको सात आयतें दीं जो (नमाज़ में) बार-बार पढ़ी जाती हैं और क़ुरआन अज़ीम दिया।' (सूर: हिज्र, आयत 87) यही वह चीज़ है, जो मुझे ख़ास तौर से दी गई है।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु सामने से आए, तो देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 165
2. कंज़, भाग 1, पृ० 220,

अलैहि व सल्लम खड़े हुए चबूतरे वालों को क़ुरआन पढ़ा रहे हैं और आपने भूख की वजह से मुबारक पेट पर पत्थर का टुकड़ा बांधा हुआ है, ताकि कमर सीधी हो जाए।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घर में बैठे हुए थे। धीरे-धीरे बहुत सारे लोग उनके पास जमा हो गए, तो वह उनके सामने क़ुरआन पढ़ने लगे। इतने में एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं आपको हज़रत अबू मूसा रज़ि० की अजीब बात न बताऊं। वह घर में बैठे हुए थे, फिर उनके पास लोग जमा हो गए, तो वे उनके सामने क़ुरआन पढ़ने लगे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम यह कर सकते हो कि तुम मुझे ऐसी जगह बिठा दो, जहां उनमें से मुझे कोई न देख सके? उसने कहा, जी हां। हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ ले गए और उस आदमी ने हुज़ूर सल्ल० को ऐसी जगह बिठा दिया, जहां हुज़ूर सल्ल० को उनमें से कोई न देख सकता था और वहां से हुज़ूर सल्ल० हज़रत अबू मूसा रज़ि० की तिलावत को सुनने लगे। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के लेहजे जैसी आवाज़ में क़ुरआन पढ़ रहे हैं।[2]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास भेजा। हज़रत उमर रज़ि० ने मुझसे फ़रमाया, अशअरी भाई को किस हाल में छोड़कर आए हो? मैंने कहा, मैंने उनको इस हाल में छोड़ा कि वह लोगों को क़ुरआन सिखा रहे थे। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ज़रा ग़ौर से सुनो। वह बहुत समझदार आदमी हैं, लेकिन यह बात उन्हें न सुनाना।

फिर फ़रमाया, तुमने देहातियों को किस हाल में छोड़ा? मैंने कहा,

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 342,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 360, कंज़, भाग 7, पृ० 94,

अशअरी क़बीला वाले? आपने फ़रमाया, नहीं, बल्कि बसरा वाले। मैंने कहा, अगर यह बात बसरा वाले सुन लें तो उन्हें बहुत बुरी लगेगी। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह बात उन्हें न बताना, लेकिन हैं वे लोग देहाती ही, अलबत्ता इनमें से जिसे अल्लाह जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह की तौफ़ीक़ दे दे (तो वह देहाती नहीं रहेगा।)[1]

हज़रत अबू रजा उतारिदी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु बसरा की उस मस्जिद में बार-बार तशरीफ़ लाते और एक-एक हलक़े में बैठते और उनका यह मंज़र अब भी मेरी आंखों के सामने है कि उन्होंने दो सफ़ेद चादरें पहनी हुई हैं और मुझे क़ुरआन पढ़ा रहे हैं और मैंने सूरः 'इक़रअ् बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़-लक़' उनसे ही सीखी थी और यह सूरः हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सबसे पहले उतरी थी।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो गया तो मैंने क़सम खाई कि दो पट्ठों के दर्मियान जो क़ुरआन है, जब तक मैं इस सारे को जमा नहीं कर लूंगा, उस वक़्त तक मैं अपनी पीठ से चादर नहीं उतारूंगा, यानी आराम नहीं करूंगा। चुनांचे जब तक मैंने सारा क़ुरआन जमा नहीं कर लिया यानी याद न कर लिया, अपनी पीठ से चादर नहीं उतारी, बिल्कुल आराम नहीं किया।[3]

हज़रत मैमून रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने चार साल में सूरः बक़रः सीखी।[4]

क़बीला अशजअ के एक साहब बयान करते हैं कि मदाइन शहर में लोगों ने सुना कि हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद में हैं तो लोग उनके पास आने लगे, यहां तक कि उनके पास एक हज़ार के क़रीब

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 164
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 256,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 67
4. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 121,

आदमी जमा हो गए। हज़रत सलमान रज़ि० खड़े होकर कहने लगे, बैठ जाओ, बैठ जाओ। जब सब बैठ गए तो उन्होंने सूरः यूसुफ़ पढ़नी शुरू कर दी। धीरे-धीरे लोग बिखरने लगे और जाने लगे और लगभग सौ के क़रीब रह गए, तो हज़रत सलमान रज़ि० को गुस्सा आ गया और फ़रमाया, तुम लोग चिकनी-चुपड़ी ख़ुशनुमा बातें सुनना चाहते हो। मैंने तुम्हें अल्लाह की किताब सुनानी शुरू की, तो तुम चले गए।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु आदमी को एक आयत पढ़ाते और फ़रमाते जितनी चीज़ों पर सूरज की रोशनी पड़ती है, या धरती पर जितनी चीज़ें हैं, यह आयत उन सबसे बेहतर है। इस तरह आप पूरा क़ुरआन सिखाते और हर आयत के बारे में यह इर्शाद फ़रमाते और एक रिवायत में यह है कि जब सुबह होती तो लोग हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास उनके घर आने लगते। यह उनसे फ़रमाते, सब अपनी जगह बैठ जाएं।

फिर उन लोगों के पास से गुज़रते जिन्हें क़ुरआन पढ़ा रहे होते और उनसे फ़रमाते, ऐ फ़्लाने! तुम कौन-सी सूरः तक पहुंच गए हो? वह उस सूरः की आयत बताता, तो यह उससे आगे वाली सूरः उसे पढ़ाते, फिर फ़रमाते, इस आयत को सीख लो। यह तुम्हारे लिए उन चीज़ों से बेहतर है जो ज़मीन और आसमान के दर्मियान हैं और किसी काग़ज़ पर सिर्फ़ एक आयत लिखी हो, उसे देखना भी दुनिया और उसकी चीज़ों से बेहतर है। फिर दूसरी आयत पढ़ाते और यही इर्शाद फ़रमाते और इन सब लोगों को यही बात कहते।[2]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे, इस क़ुरआन को अपने ऊपर ज़रूरी समझो, क्योंकि यह अल्लाह का दस्तरख़्वान है। अल्लाह के इस दस्तरख़्वान से हर एक को ज़रूर लेना चाहिए और इल्म सीखने से ही हासिल होता है।[3]

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 203,
2. हैसमी, भाग 7, पृ० 167,
3. हैसमी, भाग 1, पृ० 129

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, यह क़ुरआन अल्लाह का दस्तरख़्वान है, जो आदमी इसे जितना ज़्यादा सीख सकता है, उसे उतना सीखना चाहिए। ख़ैर से सबसे ज़्यादा ख़ाली घर वह है जिसमें अल्लाह की किताब में से कुछ न हो और जिस घर में अल्लाह की किताब में से कुछ नहीं, वह उस उजाड़ और वीरान घर की तरह है जिसमें रहने वाला कोई न हो और जिस घर में सूरः बक़रः पढ़ी जाती है, उस घर से शैतान निकल जाता है।[1]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दरवाज़े पर बहुत ज़्यादा आया करता था। हज़रत उमर रज़ि० ने उससे फ़रमाया, जा अल्लाह की किताब सीख। चुनांचे वह चला गया और कई दिन तक हज़रत उमर रज़ि० को नज़र न आया, फिर उससे हज़रत उमर रज़ि० की मुलाक़ात हुई तो हज़रत उमर रज़ि० ने न आने पर उस पर कुछ ग़ुस्सा ज़ाहिर किया, तो उसने कहा, मुझे अल्लाह की किताब में वह कुछ मिल गया है, जिसके बाद उमर रज़ि० के दरवाज़े की ज़रूरत नहीं रही।[2]

हर मुसलमान को कितना क़ुरआन सीखना चाहिए

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हर मुसलमान के लिए कम से कम छः सूरतें सीखना ज़रूरी है। दो सूरतें फ़ज्र की नमाज़ के लिए, दो सूरतें मग़रिब की नमाज़ के लिए और दो सूरतें इशा की नमाज़ के लिए।[3]

हज़रत मिस्वर बिन मख़्रमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को यह फ़रमाते हुए सुना, सूरः बक़र, सूरः निसा, सूरः माइदा, सूरः हज और सूरः नूर ज़रूर सीखो, क्योंकि अल्लाह ने जो आमाल फ़र्ज़ किए हैं, वे सब इन सूरतों में ज़िक्र किए गए हैं।[4]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 38,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 217
3. कंज़, भाग 1, पृ० 217
4. हाकिम, बैहक़ी,

हज़रत हारिसा बिन मुज़र्रिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु ने हमें ख़त में यह लिखा कि सूरः निसा, सूरः अहज़ाब और सूरः नूर सीखो।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, सूरः बरात सीखो और अपनी औरतों को सूरः नूर सिखाओ और उन्हें चांदी के ज़ेवर पहनाओ।[2]

जिसे क़ुरआन पढ़ना मुश्किल हो, वह क्या करे

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी हज़रत अबू रैहाना रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया और आपकी ख़िदमत में यह शिकायत की कि क़ुरआन मेरे हाथ से निकल जाता है, याद नहीं रहता और उसे पढ़ना भी मुश्किल है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐसे काम की ज़िम्मेदारी मत उठाओ, जो तुम्हारे बस में नहीं और तुम सज्दे ज़्यादा करो, यानी नफ़्ल नमाज़ ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ा करो।

हज़रत उमैरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबू रैहाना रज़ि० अस्क़लान तशरीफ़ लाए थे और वह सज्दे बहुत ज़्यादा किया करते थे।[3]

क़ुरआन की मश्ग़ूली को तर्जीह देना

हज़रत क़रज़ा बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम इराक़ के इरादे से (मदीना से) निकले तो हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु भी हमारे साथ हिरा मुक़ाम तक चले (जो मदीना से तीन मील की दूरी पर है।) फिर आपने वुज़ू करके फ़रमाया, क्या आप लोग जानते हैं कि मैं आप लोगों के साथ क्यों चला? साथियों ने कहा, जी हां। हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा हैं, इसलिए आप हमारे साथ चले हैं।

---

1. अबू उबैद,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 224,
3. इसाबा, भाग 2, पृ० 156,

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, (वह वजह तो ख़ैर है ही, लेकिन असल में मैं आप लोगों को एक ख़ास बात कहना चाहता था और वह यह है कि) तुम लोग ऐसे इलाक़े में जा रहे हो कि वहां के लोग शहद की मक्खी जैसी धीमी आवाज़ से क़ुरआन पढ़ते हैं, उनके सामने हदीसें बयान न करना, वरना वे (क़ुरआन को छोड़कर) तुम्हारे साथ (हदीसों में) मश्गूल हो जाएंगे, बल्कि क़ुरआन को (हदीसों से) अलग-थलग रखो और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से रिवायत कम करो और अब जाओ, मैं तुम्हारे साथ (अज्र में) शरीक हूं। जब हज़रत क़रज़ा (इराक़) पहुंचे तो लोगों ने कहा, आप हमें हदीसें सुनाएं। फ़रमाया, हज़रत इब्ने ख़त्ताब रज़ि० ने हमें इस काम से रोका है।[1]

इब्ने अब्दुल बर्र की एक रिवायत में यह है, उनको हदीसें न सुनाना वरना तुम उनको उन्हीं में मश्गूल कर दोगे और क़ुरआन अच्छे तरीक़े से पढ़ना।

दूसरी रिवायत में यह है कि फिर हज़रत उमर रज़ि० ने हमसे फ़रमाया, क्या तुम जानते हो, मैं आप लोगों के साथ क्यों निकला? हमने कहा, आप हमें रुख़सत करना चाहते हैं और हमारा इक्राम करना चाहते हैं। उन्होंने फ़रमाया, यह तो है ही, लेकिन मैं एक और ज़रूरत की वजह से निकला हूं और वह यह है कि तुम ऐसे इलाक़े में जा रहे हो और फिर आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[2]

क़ुरआन की वे आयतें जिनकी मुराद अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता, उनके बारे में सवाल करने वाले पर सख़्ती

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के एक आज़ाद किए हुए ग़ुलाम कहते हैं कि सबीग़ इराक़ी मुल्क शाम की मुसलमान फ़ौजों में क़ुरआन की (इन) चीज़ों के बारे में पूछने लगा (जिनकी मुराद अल्लाह

1. हाकिम, भाग 1, पृ० 102, जामिउल इल्म, भाग 2, पृ० 120
2. इब्ने साद, भाग 6, पृ० 7

के सिवा कोई नहीं जानता) वह चलते-चलते मिस्र पहुंच गया तो हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास भेज दिया, जब उनका क़ासिद ख़त लेकर हज़रत उमर रज़ि० के पास आया तो हज़रत उमर रज़ि० ने ख़त पढ़कर फ़रमाया, वह आदमी कहां है? क़ासिद ने कहा, क़ियामगाह में है। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, उस पर निगाह रखना, वह कहीं चला न जाए, वरना तुम्हें सख़्त सज़ा दूंगा।

क़ासिद उसे हज़रत उमर रज़ि० के पास ले आया। हज़रत उमर रज़ि० ने उससे पूछा, तुम क्या पूछते हो? उसने अपने सवाल बताए। हज़रत उमर रज़ि० ने मेरे पास पैग़ाम भेजा कि खजूर की टहनी लाओ (मैंने जाकर उनको टहनी दी) उन्होंने सबीग़ को उस टहनी से इतना मारा कि उसकी पीठ ज़ख़्मी हो गई। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने उसे छोड़ दिया। जब उसकी पीठ ठीक हो गई, तो उसे फिर टहनी से इतना मारा कि उसकी पीठ ज़ख़्मी हो गई और उसे छोड़ दिया। जब उसकी पीठ ठीक हो गई और उसे मारने के लिए तीसरी बार बुलाया तो सबीग़ ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! अगर आप मुझे क़त्ल करना चाहते हैं, तो अच्छी तरह क़त्ल करें और अगर आप मेरा इलाज करना चाहते हैं, तो अब मैं ठीक हो गया हूं, (क़ुरआन की मुतशाबेह आयतों के बारे में पूछने और बात करने से मैंने तौबा कर ली है।)

इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने उसे अपने इलाक़े में जाने की इजाज़त दे दी और (वहां के गवर्नर) हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु को लिखा कि सबीग़ के साथ कोई मुसलमान न बैठा करे। इससे सबीग़ बहुत ज़्यादा परेशान हुआ। फिर हज़रत अबू मूसा रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० को लिखा कि अब सबीग़ की हालत ठीक हो गयी है। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने उन्हें लिखा कि अब लोगों को उसके साथ उठने-बैठने की इजाज़त दे दो।[1]

1. दारमी, इब्ने असाकिर,

हज़रत सुलैमान बिन यसार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि बनू तमीम के एक आदमी को सबीग़ बिन इस्ल कहा जाता था। वह मदीना मुनव्वरा आया। उसके पास कुछ किताबें थीं और वह क़ुरआन की मुतशाबेह आयतों के बारे में पूछा करता था, (जिनकी मुराद अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता) हज़रत उमर रज़ि० को इसकी ख़बर मिली तो उसके लिए खजूर की टहनियां तैयार कराईं और आदमी भेजकर उसे बुलाया। जब वह हज़रत उमर रज़ि० के पास आया, तो उससे पूछा, तू कौन है?

उसने कहा, मैं अल्लाह का बन्दा सबीग़ हूं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मैं अल्लाह का बन्दा उमर हूं। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने इशारा करके उसे टहनियों से मारना शुरू किया और इतना मारा कि उसका सर ज़ख़्मी हो गया और ख़ून उसके चेहरे पर बहने लग गया, तो सबीग़ ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! अब बस कर दें, अल्लाह की क़सम! मेरे दिमाग़ में जो (शैतान) घुसा हुआ था, वह अब जाता रहा।[1]

अबू उस्मान की रिवायत में यह है कि हज़रत उमर रज़ि० ने हमें लिखा कि उसके साथ न बैठो, चुनांचे जब वह आता और हम सौ आदमी भी होते तो हम बिखर जाते।

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि सबीग़ तमीमी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया और उसने सूरः ज़ारियात के बारे में उनसे पूछा, आगे और हदीस ज़िक्र की।[2]

इब्ने अंबारी की रिवायत में यह है कि पहले तो सबीग़ अपनी क़ौम का सरदार था, लेकिन इस वाक़िए के बाद उसकी क़ौम में उसकी कोई हैसियत न रही।[3]

हज़रत हसन रहमुतल्लाहि अलैहि कहते हैं, कुछ लोग मिस्र में हज़रत

1. कंज़, भाग 1, पृ० 288,
2. दारेकुत्नी
3. इसाबा, भाग 2, पृ० 198,

अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मिले और उनसे कहा, हमें अल्लाह की किताब में ऐसी चीज़ें नज़र आ रही हैं, जिन पर अमल करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है, लेकिन उन पर अमल नहीं हो रहा, इसलिए हम इस बारे में अमीरुल मोमिनीन से मिलना चाहते हैं।

चुनांचे हज़रत इब्ने अम्र रज़ि० मदीना आए और ये लोग भी उनके साथ मदीना आए। हज़रत इब्ने अम्र रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात की और अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! कुछ लोग मुझसे मिस्र में मिले थे और उन्होंने कहा था कि हमें अल्लाह की किताब में ऐसी चीज़ें नज़र आ रही हैं, जिन पर अमल करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है, लेकिन उन पर अमल नहीं हो रहा, इसलिए इस बारे में वह आपसे मिलना चाहते हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, इन्हें इकट्ठा करके मेरे पास ले आओ। चुनांचे हज़रत इब्ने अम्र रज़ि० उन्हें इकट्ठा करके हज़रत उमर रज़ि० के पास ले आए, उनमें से जो हज़रत उमर रज़ि० के सबसे ज़्यादा क़रीब था, उसे हज़रत उमर रज़ि० ने बुलाया और फ़रमाया, मैं तुम्हें अल्लाह और इस्लाम का वास्ता देकर पूछता हूं, क्या तुमने सारा क़ुरआन पढ़ा है? उसने कहा, जी हां।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुमने सारा दिल में जमा लिया है? उसने कहा, नहीं, हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुमने सारा निगाह में बिठा लिया है? उसने कहा, नहीं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुमने सारा क़ुरआन याद कर लिया है? क्या तुमने सारे पर अमल कर लिया है? फिर उनमें से एक-एक को बुलाकर हर एक से यही सवाल किए, फिर फ़रमाया, उमर को उसकी मां गुम करे। क्या तुम उमर रज़ि० को इस बात का ज़िम्मेदार बनाते हो कि वह तमाम लोगों को क़ुरआन पर अमल करने के लिए खड़ा कर दे। हमारे रब को पहले से मालूम है कि इससे ख़ताएं भी होंगी, फिर यह आयत पढ़ी—

إِنْ تَجْتَنِبُوا كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَ
نُدْخِلْكُمْ مُدْخَلًا كَرِيمًا (سورت نساء، آیت ۳۱)

'जिन कामों से तुमको मना किया जाता है, उनमें जो भारी-भरी काम हैं, अगर तुम उनसे बचते रहे, तो हम तुम्हारी हल्की बुराइयां तुमसे दूर फ़रमा देंगे और हम तुमको एक इज़्ज़तदार जगह में दाख़िल कर देंगे।'

(सूरः निसा, आयत 31)

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या मदीना वालों को मालूम है कि तुम लोग किस वजह से आए हो? उन्होंने कहा, नहीं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अगर इन्हें मालूम होता तो मैं तुम्हारे ऊपर रखकर उनको भी यही नसीहत करता।[1]

क़ुरआन के सीखने-सिखाने पर उजरत लेने को नापसन्द समझना

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ख़ुद तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (इज्तिमाई कामों में) ज़्यादा मश्ग़ूल रहते थे। इसलिए जब कोई आदमी आपके पास हिजरत करके आता तो उसे क़ुरआन सिखाने के लिए हम में से किसी के हवाले फ़रमा देते। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने एक आदमी मेरे हवाले किया। वह घर में मेरे साथ रहता था। मैं उसे रात को घर में खाना खिलाता और उसे क़ुरआन पढ़ाता। वह अपने घर वापस चला गया। उसे यह ख़्याल हुआ कि उस पर (मेरा) कुछ हक़ है, इसलिए उसने मुझे एक कमान हदिए में दी कि मैंने उससे अच्छी लकड़ी वाली और उससे अच्छी मुड़ने वाली कमान कभी नहीं देखी थी।

मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आपका (इस कमान के बारे में) क्या ख़्याल है? आपने फ़रमाया, अगर तुम इसे गले में लटकाओगे तो यह तुम्हारे दोनों कंधों के दर्मियान एक चिंगारी होगी।[2]

1. कंज़, भाग 1, पृ० 228
2. कंज़, भाग 1, पृ० 231, हाकिम, भाग 3, पृ० 356,

हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक आदमी को क़ुरआन की एक सूरः सिखाई। उसने हज़रत उबई रज़ि० को एक कपड़ा या चादर हदिए में दी। हज़रत उमर रज़ि० ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उसका तज़्किरा किया, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुम उसे लोगे तो तुम्हें आग का कपड़ा पहनाया जाएगा।[1]

हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ुरआन पढ़ाया। मैंने उन्हें हदिए में एक कमान दी। वह उसे गले में लटका कर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उबई! यह कमान तुम्हें किसने दी? उन्होंने कहा, हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र रज़ि० ने, मैंने उन्हें क़ुरआन पढ़ाया था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम इसे गले में डाल लो, लेकिन है यह जहन्नम का एक टुकड़ा।

हज़रत उबई रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम इनका खाना भी खाते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो खाना किसी और के लिए पकाया जाता हो, लेकिन मौक़े पर तुम भी पहुंच गए तो उसके खाने में हरज नहीं है और जो तुम्हारे ही लिए पकाया जाता हो तो अगर तुम उसे खाओगे तो आख़िरत में तुम्हारा उतना हिस्सा कम हो जाएगा।[2]

हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरे साथ एक आदमी था, जिसे मैं क़ुरआन सिखाता था। उसने मुझे एक कमान हदिए में दी। मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उसका तज़्किरा किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ औफ़! क्या तुम यह चाहते हो कि तुम अल्लाह से इस हाल में मिलो कि तुम्हारे दोनों कंधों के दर्मियान जहन्नम की चिंगारी हो।[3]

हज़रत मुसन्ना बिन वाइल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं हज़रत

1. कंज़, भाग 1, पृ० 230, 231
2. कंज़, भाग 1, पृ० 231, हैसमी, भाग 4, पृ० 95,
3. कंज़, भाग 1, पृ० 232, मज्मा, भाग 4, पृ० 96,

अब्दुल्लाह बिन बुस्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उन्होंने मेरे सर पर हाथ फेरा और मैंने उनके बाज़ू पर अपना हाथ रखा। उनसे एक आदमी ने (क़ुरआन) सिखाने वाले की तंख़ाह के बारे में पूछा। उन्होंने फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक आदमी अंदर आया, जिसने अपने कंधे पर कमान डाली हुई थी। वह कमान हुज़ूर सल्ल० को बहुत पसन्द आई।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हारी कमान बहुत अच्छी है। क्या तुमने यह ख़रीदी है? उस आदमी ने कहा, नहीं, मैंने एक आदमी के बेटे को क़ुरआन पढ़ाया था, उसने मुझे यह हदिए में दी है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम यह चाहते हो, अल्लाह आग की कमान तुम्हारे गले में डाले? उसने कहा, नहीं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तो फिर उसे वापस कर दो।[1]

हज़रत उसैर बिन अम्र रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़बर मिली कि हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा है कि जो क़ुरआन सारा पढ़ लेगा, उसे मैं दो हज़ार वज़ीफ़ा लेने वालों में शामिल कर दूंगा। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ओह! ओह! क्या अल्लाह की किताब पर वज़ीफ़ा दिया जाएगा?[2]

हज़रत साद बिन इब्राहीम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने एक गवर्नर को ख़त लिखा कि लोगों को क़ुरआन सीखने पर कुछ वज़ीफ़ा दो, तो उस गवर्नर ने हज़रत उमर रज़ि० को लिखा कि आपने मुझे लिखा कि लोगों को क़ुरआन सीखने पर कुछ वज़ीफ़ा दो, इस तरह तो वह भी क़ुरआन सीखने लगेगा जो सिर्फ़ वज़ीफ़ा के रजिस्टर में इन्दिराज करवाना चाहता होगा। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने उन्हें लिखा कि अच्छा लोगों को (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की) सोहबत और (हुज़ूर सल्ल०

---

1. हैसमी, भाग 4, पृ० 96,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 228,

की) दोस्ती की बुनियाद पर दो ।[1]

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ऐ इल्म और क़ुरआन वालो ! इल्म और क़ुरआन पर क़ीमत मत लो, वरना ज़िनाकार लोग तुमसे पहले जन्नत में चले जाएंगे ।[2]

(चूंकि दूसरी हदीसों में क़ुरआन पढ़ाने पर उजरत लेने की इजाज़त भी आई है, इसलिए बेहतर यह है कि उजरत न ले और अगर ले तो पढ़ाने में जो वक़्त ख़र्च हुआ है, उजरत को उसका बदल समझे, पढ़ाने के अमल का बदल न समझे ।)

लोगों में क़ुरआन के बहुत ज़्यादा फैल जाने के वक़्त इख़्तिलाफ़ पैदा होने का डर

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बैठा हुआ था कि इतने में उनके पास एक ख़त आया, जिसमें लिखा हुआ था कि कूफ़ा वालों में से बहुत-से लोगों ने इतना-इतना क़ुरआन पढ़ लिया। यह पढ़कर (ख़ुशी की वजह से) हज़रत उमर रज़ि० ने अल्लाहु अक्बर कहा, अल्लाह उन पर रहम फ़रमाए। मैंने कहा, इनमें इख़्तिलाफ़ हो जाएगा। उन्होंने फ़रमाया, ओहो ! तुम्हें यह कहां से पता चल गया? और हज़रत उमर रज़ि० को ग़ुस्सा आ गया तो मैं अपने घर चला गया।

इसके बाद उन्होंने मेरे पास बुलाने के लिए आदमी भेजा। मैंने उन्हें कोई उज्र कर दिया, फिर उन्होंने यह कहला कर भेजा कि मैं तुम्हें क़सम देकर कहता हूं कि तुम्हें ज़रूर आना होगा। चुनांचे मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उन्होंने फ़रमाया, तुमने कोई बात कही थी। मैंने कहा, अस्तग़्फ़िरुल्लाह ! अब वह बात दोबारा नहीं कहूंगा। फ़रमाया, मैं तुम्हें

1. कंज़, भाग 1, पृ० 229,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 229

क़सम देकर कहता हूं कि तुमने जो बात कही थी, वह दोबारा कहनी होगी।

मैंने कहा, आपने फ़रमाया था कि मेरे पास ख़त में यह लिखा हुआ आया था कि कूफ़ा वालों में से बहुत-से लोगों ने इतना-इतना क़ुरआन पढ़ लिया है, इस पर मैंने कहा था कि इनमें इख़्तिलाफ़ हो जाएगा। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हें यह कहां से पता चला? मैंने कहा, मैंने यह आयत—

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ

से लेकर—

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ

तक पढ़ी।

'और कोई-कोई आदमी ऐसा भी है कि आपको उसकी बातें जो सिर्फ़ दुनिया की ग़रज़ से होती हैं, मज़ेदार मालूम होती हैं और वह अल्लाह को हाज़िर व नाज़िर बताता है, उस पर जो कुछ उसके ज़मीर में है, हालांकि वह (आपकी मुख़ालफ़त में) निहायत शदीद है और जब पीठ फेरता है तो इस दौड़-धूप में फिरता रहता है कि शहर में फ़साद कर दे और (किसी के) खेत या जानवरों को तलफ़ कर दे या अल्लाह फ़साद को पसन्द नहीं फ़रमाते।' (सूरः बक़रः 204-205)

जब लोग इस तरह करेंगे तो क़ुरआन वाला सब्र नहीं कर सकेगा। फिर मैंने यह आयत पढ़ी—

وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِىْ
نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ (سورت بقرہ آیت ۲۰۶، ۲۰۷)

'और जब उससे कोई कहता है कि ख़ुदा का ख़ौफ़ कर, तो नख़वत उसको उस गुनाह पर (दोगुना) तैयार कर देती है, सो ऐसे आदमी की काफ़ी सज़ा जहन्नम है और वह बुरी ही आरामगाह है और कोई-कोई आदमी ऐसा भी है कि अल्लाह की रिज़ा पाने में अपनी जान तक लगा देता है और अल्लाह ऐसे बन्दों के हाल पर निहायत मेहरबान हैं।'

(सूरः बक़रः आयत 206-207)

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, तुमने ठीक कहा।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उबैद बिन उमैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, एक बार मैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ था और मैंने उनका हाथ पकड़ रखा था, हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मेरा ख़्याल यह है कि क़ुरआन लोगों में बहुत ज़्यादा फैल गया है।

मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मुझे तो यह बात बिल्कुल पसन्द नहीं है। हज़रत उमर रज़ि० ने मेरे हाथ में से अपना हाथ खींचकर फ़रमाया, क्यों? मैंने कहा, इसलिए कि जब सब लोग क़ुरआन पढ़ेंगे (और सही मतलब समझने की इस्तेदाद नहीं होगी) तो अपने तौर से मानी और मतलब तलाश करने लगेंगे और जब मानी और मतलब तलाश करने लगेंगे तो इनमें इख़्तिलाफ़ हो जाएगा और जब इनमें इख़्तिलाफ़ हो जाएगा, तो एक दूसरे को क़त्ल करने लगेंगे।

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ने मुझे छोड़ दिया और अलग बैठ गए। पस वह दिन मैंने कैसी परेशानी में गुज़ारा, यह अल्लाह ही जानता है। फिर ज़ुहर के वक़्त उनका क़ासिद मेरे पास आया और उसने कहा, अमीरुल मोमिनीन बुला रहे हैं, चलो। मैं उनके पास गया, तो उन्होंने फ़रमाया, तुमने क्या बात कही थी? मैंने अपनी सारी बात दोहरा दी। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, (समझता तो मैं भी इसे था, लेकिन) मैं लोगों से यह बात छिपाता था।[2]

क़ुरआन के क़ारियों को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० की नसीहतें

हज़रत किनाना अदवी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मुल्क शाम

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 540,
2. हाकिम,

में मुसलमानों की जो फ़ौजें थीं, उनके सरदारों को हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़त में यह लिखा कि क़ुरआन के तमाम हाफ़िज़ों की फ़ेहरिस्त मेरे पास भेज दो, ताकि मैं उनका वज़ीफ़ा बढ़ाऊं और दुनिया के चारों तरफ़ लोगों को क़ुरआन सिखाने के लिए भेज दूं, इस पर हज़रत (अबू मूसा) अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा है कि हमारे यहां हाफ़िज़ों की तायदाद तीन सौ से ज़्यादा हो गई है। जवाब में हज़रत उमर रज़ि० ने उन हाफ़िज़ों को ये नसीहतें लिखीं—

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० यह ख़त अल्लाह के बन्दे उमर की तरफ़ से हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़ैस (अबू मूसा अशअरी) और उनके साथ क़ुरआन के जितने हाफ़िज़ हैं, उन सबके नाम है सलामुन अलैकुम, अम्मा बादु, यह क़ुरआन तुम्हारे लिए अज्र की और शरफ़ व इज़्ज़त की वजह और (आख़िरत में काम आने वाला) ज़ख़ीरा है, इसलिए तुम इसके पीछे चलो (अपनी ख़्वाहिशों को क़ुरबान करके इस पर अमल करो) क़ुरआन तुम्हारे पीछे न चले (यानी क़ुरआन को अपनी ख़्वाहिशों के ताबे न बनाओ) क्योंकि क़ुरआन जिसके पीछे चलेगा, तो क़ुरआन उसे गुद्दी के बल गिरा देगा, फ़िर उसे आग में फेंक देगा और जो क़ुरआन के पीछे चलेगा, क़ुरआन उसे जन्नतुल फ़िरदौस में ले जाएगा। तुम इस बात की पूरी कोशिश करो कि क़ुरआन तुम्हारा सिफ़ारिशी बने और तुमसे झगड़ा न करे, क्योंकि क़ुरआन जिसकी सिफ़ारिश करेगा, वह जन्नत में दाख़िल होगा और जिससे क़ुरआन झगड़ा करेगा, वह आग में दाख़िल होगा।

और यह जान लो कि क़ुरआन हिदायत का सर चश्मा और इल्म की रौनक़ है और यह रहमान के पास से आने वाली सबसे आख़िरी किताब है। इसके ज़रिए से अल्लाह अंधी आंखों को, बहरे कानों को और परदा पड़े हुए दिलों को खोलते हैं और जान लो कि बन्दा जब रात को खड़ा होता है और मिस्वाक करके वुज़ू करता है, फिर तक्बीर कहकर (नमाज़ में) क़ुरआन पढ़ता है, तो फ़रिश्ता उसके मुंह पर अपना मुंह रखकर कहता है और पढ़, और पढ़। तुम ख़ुद पाकीज़ा हो और क़ुरआन तुम्हारे

लिए पाकीज़ा है और अगर वह वुज़ू करे, लेकिन मिस्वाक न करे, तो फ़रिश्ता उसकी हिफ़ाज़त करता है और उसी तक महदूद रहता है, इससे आगे कुछ नहीं कहता। ग़ौर से सुनो! नमाज़ के साथ क़ुरआन का पढ़ना महफ़ूज़ ख़ज़ाना और अल्लाह का मुक़र्रर किया हुआ बेहतरीन अमल है, इसलिए जितना हो सके ज़्यादा से ज़्यादा क़ुरआन पढ़ो।

नमाज़ नूर है और ज़कात दलील है और सब्र रोशन और चमकदार अमल है और रोज़ा ढाल है और क़ुरआन तुम्हारे लिए हुज्जत होगा या तुम्हारे ख़िलाफ़, इसलिए क़ुरआन का इक्राम करो और उसकी तौहीन न करो, क्योंकि जो क़ुरआन का इक्राम करेगा, अल्लाह उसका इक्राम करेगा और जो उसकी तौहीन करेगा, अल्लाह उसकी तौहीन करेगा और जान लो कि जो क़ुरआन पढ़ेगा और उसे याद करेगा और उस पर अमल करेगा और जो उसमें है, उसकी पैरवी करेगा, तो उसकी दुआ अल्लाह के यहां क़ुबूल होगी। अगर अल्लाह चाहेगा, तो उसकी दुआ दुनिया में पूरी कर देगा, वरना वह दुआ आख़िरत में उसके लिए ज़ख़ीरा होगी और जान लो कि जो कुछ अल्लाह के पास है, वह उन लोगों के लिए बेहतर और हमेशा रहने वाला है जो ईमान वाले और अपने रब पर तवक्कुल करने वाले हैं।[1]

हज़रत अबू किनाना रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ुरआन के हाफ़िज़ों को जमा किया। उनकी तायदाद लगभग तीन सौ थी। फिर हज़रत अबू मूसा रज़ि० ने क़ुरआन की अज़्मत बयान की और फ़रमाया, यह क़ुरआन तुम्हारे लिए अज्र की वजह होगा और यह भी हो सकता है कि तुम्हारे लिए बोझ और वबाल बन जाए, इसलिए तुम क़ुरआन की पैरवी करो। (अपनी ख़्वाहिशों पर क़ुर्बान करके उस पर अमल करो) क़ुरआन को अपने ताबेअ (आधीन) न करो, क्योंकि जो क़ुरआन के ताबेअ होगा, उसे क़ुरआन जन्नत के बाग़ों में ले जाएगा और जो क़ुरआन को अपने ताबेअ करेगा तो उसे गुद्दी के

1. कंज़, भाग 1, पृ० 217

बल गिराकर आग में फेंक देगा।[1]

हज़रत अबू अस्वद दियली रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ुरआन के हाफ़िज़ों को जमा किया और फ़रमाया, मेरे पास अन्दर सिर्फ़ क़ुरआन के हाफ़िज़ों को ही लाओ। चुनांचे हम लगभग तीन सौ हाफ़िज़ उनकी ख़िदमत में अन्दर गए। फिर उन्होंने हमें नसीहत की और फ़रमाया, तुम लोग शहर वालों के हाफ़िज़ हो। कहीं ऐसे न हो कि लम्बी मुद्दत गुज़र जाने पर तुम्हारे दिलों में सख़्ती आ जाए, जैसे कि अह्ले किताब के दिल सख़्त हो गए थे।

फिर फ़रमाया, एक सूरः नाज़िल हुई थी जो सूरः बरात जितनी लम्बी थी और सूरः बरात की तरह उसमें सख़्ती और डांट-डपट थी। इस वजह से हम कहते थे कि यह सूरः बरात से मिलती-जुलती है। उसकी एक आयत मुझे याद है, जिसका तर्जुमा यह है कि अगर इब्ने आदम को सोने की दो घाटियां मिल जाएं तो वह तीसरी घाटी की तमन्ना करने लगेगा और इब्ने आदम के पेट को सिर्फ़ (क़ब्र की) मिट्टी ही भर सकती है और एक और सूरः भी उतरी थी, जिसके बारे में हम कहते थे कि यह सूरः मुसब्बिहात जैसी है, क्योंकि वह भी 'सब्ब-ह लिल्लाहि' से शुरू होती थी। उसकी एक आयत मुझे याद है—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ (سورت صف آیت ۲)

'ऐ ईमान वालो ! ऐसी बात क्यों कहते हो जो करते नहीं हो।'

(सूरः सफ़्फ़, आयत 2)

हर बात गवाही बनाकर तुम्हारी गरदनों में डाली जाएगी, फिर क़ियामत के दिन उसके बारे में तुमसे पूछ होगी।[2]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास कूफ़ा के कुछ लोग आए। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने उन्हें सलाम किया और उन्हें इस बात की ताकीद की कि वे अल्लाह से डरें और क़ुरआन के बारे में

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 257
2. अबू नुऐम,

आपस में झगड़ा न करें, क्योंकि क़ुरआन में इख़्तिलाफ़ नहीं है और न उसे छोड़ा जा सकता है, न उसे ज़्यादा पढ़ने से दिल उकताता है और क्या आप देखते नहीं हैं कि शरीअत इस्लाम के हुदूद, फ़राइज़ और अवामिर सब एक ही हैं। अगर क़ुरआन में एक जगह किसी काम का हुक्म होता और दूसरी जगह उसे मना किया गया होता, तो फिर तो क़ुरआन में इख़्तिलाफ़ होता। तमाम मज़्मून एक दूसरे की ताईद करने वाले हैं और मुझे यक़ीन है कि तुम लोगों में इल्म और दीन की समझ और लोगों से ज़्यादा है और अगर मुझे किसी आदमी के बारे में यह मालूम हो जाए कि वह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतरने वाले इल्मों को मुझसे ज़्यादा जानने वाला है और ऊंट मुझे उस तक पहुंचा सकते हैं, तो मैं (उससे इल्म हासिल करने के लिए) ज़रूर उसके पास जाता, ताकि मेरे इल्म में इज़ाफ़ा हो जाए।

मुझे ख़ूब मालूम है कि हुज़ूर सल्ल० पर हर साल क़ुरआन एक बार पेश किया जाता था और जिस साल आपका इंतिक़ाल हुआ उस साल आप पर दो बार पेश किया गया था। (रमज़ान में हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हुज़ूर सल्ल० को सारा क़ुरआन सुनाते थे और हुज़ूर सल्ल० हज़रत जिब्रील अलै० को) और मैं जब भी हुज़ूर सल्ल० को क़ुरआन पढ़कर सुनाता तो हुज़ूर सल्ल० हमेशा फ़रमाते कि मैंने क़ुरआन बहुत अच्छा पढ़ा है, इसलिए जो मेरी तरह क़ुरआन पढ़ता है, वह मेरी तरह पढ़ता रहे और उसे ग़लत समझकर छोड़े नहीं और हुज़ूर सल्ल० से और भी कई तरह क़ुरआन पढ़ना साबित है जो उनमें से किसी एक तरह क़ुरआन पढ़ता है, वह उसे न छोड़े, क्योंकि जो इनमें से किसी एक तरह का इंकार करेगा, वह बाक़ी तमाम का इंकार करने वाला गिना जाएगा।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु के साथियों में से हमदान के रहने वाले एक साहब बयान करते हैं कि जब हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० का मदीना मुनव्वरा जाने का इरादा हुआ तो उन्होंने अपने साथियों को

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 232,

जमा करके फ़रमाया, मुझे उम्मीद है कि अब आप लोगों में दीन, दीनी समझ और क़ुरआन का इल्म, मुसलमानों की बाक़ी तमाम फ़ौजों से ज़्यादा हो चुका है, उसके बाद आगे लम्बी हदीस ज़िक्र की है, जिसमें यह भी है कि इस क़ुरआन में किसी क़िस्म का इख़्तिलाफ़ नहीं और न यह ज़्यादा पढ़ने से पुराना होता है और न इसकी अज़्मत दिल में कम होती है।[1]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि क़ुरआन के हाफ़िज़ में नीचे लिखी निशानियां होनी चाहिएं, जिनसे वह पहचाना जाए। (उस ज़माने में क़ुरआन का हर हाफ़िज़ क़ुरआन का आलिम भी होता था।) रात को लोग जब सो रहे हों, तो वह अल्लाह की इबादत कर रहा हो, दिन को लोग बग़ैर रोज़ा के हों, तो वह रोज़ेदार हो और जब लोग ख़ुश हो रहे हों तो वह (उम्मत के ग़म में) ग़मगीन हो और जब लोग हंस रहे हों तो वह (अल्लाह के सामने) रो रहा हो और जब लोग आपस में मिलकर इधर-उधर की बातें कर रहे हों, तो वह ख़ामोश हो और जब लोग अकड़ रहे हों तो वह आजिज़ और मिस्कीन बना हुआ हो और इसी तरह क़ुरआन के हाफ़िज़ को रोने वाला, ग़मगीन, हिक्मत वाला, बुर्दबार, इल्म वाला और ख़ामोश रहने वाला होना चाहिए और बदसुलूक, ग़ाफ़िल, शोर मचाने वाला, चीख़ने वाला और तेज़ मिज़ाज नहीं होना चाहिए।[2]

और एक रिवायत में यह है कि तुम इसकी पूरी कोशिश करो कि तुम सुनने वाले बनो, (यानी सुनाने से ज़्यादा अच्छे लोगों की सुना करो) और जब तुम सुनो कि अल्लाह फ़रमा रहे हैं, ऐ ईमान वालो ! तो अपने कान उसके हवाले कर दो (यानी पूरे ग़ौर से उसे सुनो) क्योंकि या तो अल्लाह ख़ैर के काम का हुक्म दे रहे होंगे या किसी बुरे काम से रोक रहे होंगे।[3]

1. इमाम अहमद, भाग 1, पृ० 405,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 130,
3. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 130

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों में मश्ग़ूल होना और हदीसों में मश्ग़ूल होने वाले को क्या करना चाहिए?

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मज्लिस में लोगों से बात फ़रमा रहे थे कि इतने में एक देहाती ने आकर कहा, क़ियामत कब होगी? हुज़ूर सल्ल० (ने उसे कोई जवाब न दिया, बल्कि) बात फ़रमाते रहे, (क्योंकि हदीस के दर्स का अदब यह है कि बीच में सवाल न करना चाहिए और न जवाब देना चाहिए।) कुछ लोगों ने कहा, हुज़ूर सल्ल० ने इसकी बात तो सुन ली है, लेकिन हुज़ूर सल्ल० को पसन्द नहीं आई है और कुछ लोगों ने कहा, हुज़ूर सल्ल० ने उसकी बात सुनी ही नहीं। जब आपने बात पूरी फ़रमा ली, तो फ़रमाया, क़ियामत के बारे में पूछने वाला कहां है? उसने कहा, मैं यहां हूं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने फ़रमाया, जब अमानत को बर्बाद कर दिया जाए, तो तुम क़ियामत का इन्तिज़ार करो, उस देहाती ने पूछा, अमानत का बर्बाद करना किस तरह होगा? आपने फ़रमाया, जब काम ना-अह्ल के सुपुर्द कर दिया जाए तो तुम क़ियामत का इन्तिज़ार करो।[1]

हज़रत वाबिसा रज़ियल्लाहु अन्हु रक़ा शहर की सबसे बड़ी मस्जिद में ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा के दिन खड़े होकर इर्शाद फ़रमाते। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज्जतुल विदा में लोगों को ख़ुत्बा दिया था। उस वक़्त मैं भी वहां मौजूद था। आपने फ़रमाया, ऐ लोगो ! कौन-सा महीना सबसे ज़्यादा एहतराम के क़ाबिल है? लोगों ने कहा, यही (हज वाला महीना)। फिर आपने फ़रमाया, कौन-सा शहर सबसे ज़्यादा एहतराम के क़ाबिल है? लोगों ने कहा, यही (मक्का शहर), फिर आपने फ़रमाया, तुम्हारे ख़ून, तुम्हारे माल और तुम्हारी इज़्ज़तें ऐसे ही एहतराम के क़ाबिल हैं जैसे कि तुम्हारा यह (हज का) दिन, तुम्हारा यह

1. बुख़ारी, भाग 1, पृ० 14,

(हज वाला) महीना और तुम्हारा यह शहर (मक्का मुकर्रमा) एहतराम के क़ाबिल है और यह उस दिन तक एहतराम के क़ाबिल हैं, जिस दिन तुम अपने रब से मुलाक़ात करोगे, क्या मैंने (अल्लाह का पैग़ाम सारा) पहुंचा दिया? लोगों ने कहा, जी हां। फिर आपने अपने दोनों हाथ आसमान की तरफ़ उठाकर फ़रमाया, ऐ अल्लाह! तू गवाह हो जा। फिर फ़रमाया, ऐ लोगो! तुममें से जो यहां मौजूद है, वह जो यहां मौजूद नहीं है, उन तक पहुंचाए। (इसके बाद हज़रत वाबसा रज़ि० ने कहा, ऐ लोगो!) तुम भी मेरे क़रीब आ जाओ, ताकि हम (हुज़ूर सल्ल० का दीन) तुम तक पहुंचाएं, जैसा कि हुज़ूर सल्ल० ने हमसे फ़रमाया था।[1]

हज़रत मक्हूल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हिम्स में मैं, हज़रत इब्ने अबी ज़करीया और हज़रत सुलैमान बिन अबी हबीब, हम तीनों हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्हें सलाम किया। उन्होंने फ़रमाया, तुम्हारा यह (हमारे साथ) बैठना अल्लाह की तरफ़ से तुम तक दीन के पहुंचने का ज़रिया है और अल्लाह की तुम पर हुज्जत है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुद (अल्लाह का दीन) पहुंचाया, इसलिए तुम दूसरों तक पहुंचाओ।[2]

एक रिवायत में हज़रत सुलैम बिन आमिर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हम लोग हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बैठा करते। वह हमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से बहुत-सी हदीसें सुनाया करते। जब ख़ामोश होने लगते, तो फ़रमाते, क्या तुम लोग समझ गए? जैसे तुम तक ये हदीसें पहुंचाई गई हैं, ऐसे ही तुम भी आगे दूसरों तक पहुंचाओ।[3]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! मेरे

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 139
2. तबरानी,
3. हैसमी, भाग 1, पृ० 140

ख़ुलीफ़ों और नायबों पर रहम फ़रमा। हमने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपके ख़ुलफ़ा कौन हैं? आपने फ़रमाया, ये वह लोग हैं जो मेरे बाद आएंगे और मेरी हदीसों की रिवायत करेंगे और लोगों को हदीसें सिखाएंगे।[1]

हज़रत आसिम बिन मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि अपने वालिद हज़रत मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि से नक़ल करते हैं कि मैंने हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि वह जुमा के दिन बाहर तशरीफ़ लाते और मिंबर के दो मुट्ठों को पकड़ कर खड़े हो जाते और फ़रमाते, हमें अबुल क़ासिम रसूलुल्लाह अस्सादिक़ु वल मस्दूक़ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह हदीस बयान की और फिर लगातार हदीसें बयान करते रहते। जब इमाम के नमाज़ के लिए बाहर आने पर हुजरे के दरवाज़े के खुलने की आवाज़ सुनते, तो फिर बैठते।[2]

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में अर्ज़ किया करते कि आप हमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से हदीस बयान फ़रमा दें, तो वे फ़रमाते, मुझे इस बात का डर है कि मैं कहीं कोई हर्फ़ घटा या बढ़ा न दूं और हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया है, जो जान-बूझकर मेरे बारे में झूठ बोलेगा, वह आग में जाएगा।[3]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन हातिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के किसी सहाबी को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से ज़्यादा मुकम्मल और ज़्यादा अच्छे तरीक़े से हदीस बयान करने वाला नहीं देखा, लेकिन फिर भी वह हदीस बयान करने से डरते थे।[4]

---

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 74, कंज़, भाग 5, पृ० 240
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 512,
3. कंज़, भाग 5, पृ० 239
4. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 9

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से हदीस न बयान करने की वजह यह नहीं है कि मैं आपके सहाबा में (आपकी हदीसों का) सबसे ज़्यादा हाफ़िज़ नहीं हूं, बल्कि इसकी वजह यह है कि मैं इस बात की गवाही देता हूं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जो मेरे बारे में ऐसी बात कहे, जो मैंने नहीं कही है, तो वह अपना ठिकाना आग में बना ले और एक रिवायत में यह है कि जो मेरे बारे में झूठी बात कहे, तो वह अपना घर आग में बना ले।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं जब तुम्हें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से हदीस बयान करता हूं तो (एहतियात में कमाल की वजह से) मेरी यह हालत हो जाती है कि आसमान से ज़मीन पर गिर जाना मुझे इससे ज़्यादा महबूब हो जाता है कि मैं हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ से ऐसी बात कह दूं जो आपने न फ़रमाई हो और जब मैं तुमसे आपस के मामलों के बारे में बात करता हूं तो फिर यह हालत नहीं होती (और उसमें इतनी एहतियात की ज़रूरत नहीं होती) क्योंकि इंसानों से लड़ाई तो तदबीर व हिक्मत और दांव ही से जीती जा सकती है।[2]

हज़रत अम्र बिन मैमून रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि कभी-कभी पूरा साल गुज़र जाता, लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से कोई हदीस बयान न करते। चुनांचे एक साल ऐसा ही गुज़रा, इसके बाद एक हदीस बयान की तो एकदम परेशान हो गए और पेशानी पर पसीना बहने लगा और फ़रमाने लगे, यही लफ़्ज़ हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाए थे या इन जैसे या इनके क़रीब लफ़्ज़ थे।[3]

---

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 143
2. कंज़, भाग 5, पृ० 240,
3. हाकिम, भाग 3, पृ० 314,

हज़रत मस्रूक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु एक दिन हदीस बयान करने लगे और फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना (फिर हदीस बयान की) तो कांपने लगे और कपकपी की वजह से कपड़े हिलने लगे और फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० ने यही लफ़्ज़ फ़रमाए थे या इन जैसे या इनसे मिलते-जुलते लफ़्ज़ थे।[1]

हज़रत अबू इदरीस ख़ौलानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने देखा कि हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से हदीस बयान करने से फ़ारिग़ हो जाते, तो फ़रमाते कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने या तो यही लफ़्ज़ फ़रमाए थे या इन जैसे या इनसे मिलते-जुलते लफ़्ज़ थे।[2]

इब्ने अब्दुल बर्र की रिवायत में यह है कि आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! अगर ये लफ़्ज़ नहीं हैं तो इन जैसे लफ़्ज़ थे।[3]

हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से हदीस बयान कर लेते, तो फ़रमाया करते कि या तो हुज़ूर सल्ल० ने यही लफ़्ज़ फ़रमाए थे, या फिर जैसे आपने इर्शाद फ़रमाया।[4]

हज़रत इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से बहुत कम हदीस बयान किया करते और जब बयान करते, आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[5]

---

1. जामिउल इल्म, भाग 1, पृ० 79, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 156,
2. मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 1, पृ० 141, जामेअ, भाग 1, पृ० 78,
3. कंज़, भाग 5, पृ० 242,
4. जामिउल इल्म, भाग 1, पृ० 79
5. कंज़, भाग 5, पृ० 240,

हज़रत अबू जाफ़र मुहम्मद बिन अली रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कोई सहाबी हुज़ूर सल्ल० से हदीस सुनकर उसके बयान करने में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से ज़्यादा एहतियात बरतने वाला नहीं था। यह हदीस के लफ़्ज़ न बढ़ाते थे और न घटाते थे और न उनमें कुछ तब्दीली करते थे।[1]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक साल हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के साथ मेरी बैठक रही। मैंने उन्हें इस मुद्दत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से एक भी हदीस बयान करते हुए नहीं सुना।[2]

हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत-सी हदीसें सुनी हैं जो मुझे याद भी हैं, लेकिन मैं उन्हें सिर्फ़ इस वजह से बयान नहीं करता कि मेरे साथ के सहाबा इन हदीसों में मेरी मुख़ालफ़त करेंगे।[3]

हज़रत मुतर्रिफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझसे हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, ऐ मुतर्रिफ़! (मुझे बहुत ज़्यादा हदीसें याद हैं।) अल्लाह की क़सम! मुझे इसका यक़ीन है कि अगर मैं चाहूं तो दो दिन लगातार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से हदीसें इस तरह बयान कर सकता हूं कि कोई हदीस दो बार बयान न हो, लेकिन मुझे ज़्यादा हदीसें बयान करना पसन्द भी नहीं और मैं ज़्यादा बयान भी नहीं करता और इसकी वजह यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ सहाबा भी इसी तरह (हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस में) हाज़िर हुआ करते थे, जिस तरह मैं हाज़िर हुआ करता था और उन्होंने भी (हुज़ूर सल्ल०) से इसी तरह सुना जिस

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 144,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 145,
3. तबरानी, हैसमी

तरह मैंने सुना, लेकिन वे कुछ हदीसें ऐसी बयान करते हैं, जिनके लफ़्ज़ कुछ आगे-पीछे हो गए हैं।

चुनांचे हज़रत इम्रान रज़ि० कभी-कभी तो यों फ़रमाते कि अगर आप लोगों को मैं यह हदीस बयान करूं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस तरह फ़रमाते हुए सुना है, तो मुझे यक़ीन है कि मैं इन लफ़्ज़ों में बिल्कुल सच्चा हूंगा और कभी पूरे भरोसे से कहते कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस तरह फ़रमाते हुए सुना।[1]

हज़रत सुलैमान बिन अबी अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाते हुए सुना, अल्लाह की क़सम ! मैं जान-बूझकर आप लोगों को हदीसें नहीं सुनाता और यों नहीं कहता कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हां, अगर आप लोग कहो, तो मैं हुज़ूर सल्ल० की लड़ाइयों में शरीक हुआ हूं और उनमें बहुत कुछ देखा है, यह सब कुछ सुनाने को तैयार हूं, लेकिन यों कहूं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है, इसके लिए तैयार नहीं हूं।[2]

हज़रत मक्हूल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक दिन मैं और हज़रत अबुल अज़हर दोनों हज़रत वासिला बिन अस्क़अ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ अबुल अस्क़अ ! हमें ऐसी हदीस सुनाएं जो आपने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुनी हो, जिसमें न तो वह्म हो, न कमी-ज़्यादती हो।

उन्होंने फ़रमाया, क्या तुममें से किसी ने आज रात कुछ क़ुरआन पढ़ा है ? हमने कहा, जी हां। लेकिन हमें क़ुरआन अच्छी तरह याद नहीं है, अ या व की ज़्यादती हो जाती है, तो फ़रमाया, यह क़ुरआन कितने दिनों से तुम्हारे बीच है और तुम लोग अब तक इसे अच्छी तरह याद

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 141,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 229, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 203,

नहीं कर सके हो और तुम लोग समझते हो कि तुम लोगों से क़ुरआन में कमी-ज़्यादती हो जाती है, तो फिर तुम्हारा उन हदीसों के बारे में क्या ख़्याल है जिन्हें हमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है, क्योंकि हो सकता है, हमने हुज़ूर सल्ल० से वह हदीस एक बार ही सुनी हो, इसलिए हुज़ूर सल्ल० वाले लफ़्ज़ ठीक वही बयान करना तो हमारे लिए बहुत मुश्किल है, अलबत्ता इन लफ़्ज़ों का मानी और मतलब हम बयान कर सकते हैं, तुम इसी को काफ़ी समझो।[1]

हज़रत इब्राहीम बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इंतिक़ाल से पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इन सहाबा के पास आदमी भेजकर उन्हें दुनिया के कोने-कोने से (मदीना मुनव्वरा में) जमा किया, वह सहाबा ये हैं—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा, हज़रत अबुद्दर्दा, हज़रत अबूज़र और हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हुम। जब ये लोग आ गए तो इनसे हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, आप लोगों ने दुनिया के कोने-कोने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से यह क्या हदीसें फैला दी हैं? उन्होंने कहा, क्या आप हमें (हदीसें बयान करने से) रोकना चाहते हैं?

आपने फ़रमाया, नहीं, बल्कि तुम लोग मेरे पास रहो। अल्लाह की क़सम! जब तक मैं ज़िंदा हूं, आप लोग मुझसे जुदा नहीं हो सकते। (यहां रहकर ये हदीसें बयान करें) और इसकी वजह यह है कि हम भी हदीसें ख़ूब जानते हैं, इसलिए आप लोगों की हदीसों को देखेंगे कि कौन-सी लेनी चाहिए और कौन-सी छोड़नी चाहिए। चुनांचे ये लोग हज़रत उमर रज़ि० के इंतिक़ाल तक इनके पास ही (मदीना मुनव्वरा में) रहे, इनसे जुदा न हुए।[2]

हज़रत इब्राहीम बिन अब्दुर्रहमान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं,

---

1. जामिउल इल्म, भाग 1, पृ० 79
2. कंज़, भाग 5, पृ० 239

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत इब्ने मसऊद, हज़रत अबू मसऊद अन्सारी और हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हुम के पास पैग़ाम भेजकर उन्हें बुलाया और उनसे फ़रमाया, आप लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से हदीसें कसरत से क्यों बयान कर रहे हैं? फिर शहीद होने तक हज़रत उमर रज़ि० ने उन्हें (वहीं मदीना में) रोके रखा।[1]

हज़रत इब्ने अबी औफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हम लोग हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया करते कि हमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से हदीस बयान फ़रमा दें। वह फ़रमाते, अब हम ज़्यादा बूढ़े हो गए हैं और भूलने लग गए हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से हदीस बयान करना बड़ी ज़िम्मेदारी का काम है। (अगर इसमें ग़लती हो गई, तो कड़ी पकड़ होगी।)[2]

इल्म के एहतिमाम से ज़्यादा अमल का एहतिमाम होना चाहिए

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम जो चाहे सीखो, लेकिन अल्लाह की तरफ़ से फ़ायदा तभी होगा जब तुम सीखे हुए पर अमल करोगे।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम जितना चाहे, इल्म हासिल कर लो, तुम्हें इल्म हासिल करने का सवाब तब मिलेगा, जब उस पर अमल करोगे।[4]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ग़नम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मुझे

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 153,
2. कंज़, भाग 5, पृ० 239
3. इब्ने अदी, और ख़तीब
4. अबुल हसन बिन अख़रम मदीनी,

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस सहाबा ने यह वाक़िया बयान किया कि हम मस्जिद क़ुबा में इल्म सीख-सिखा रहे थे कि इतने में हुज़ूर सल्ल० हमारे पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, तुम जितना चाहे इल्म हासिल करो। इसके बाद पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि एक आदमी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! कौन-सी चीज़ मेरी जिहालत की हुज्जत को ख़त्म करेगी ? आपने फ़रमाया, इल्म। फिर उसने पूछा, कौन-सी चीज़ इल्म की हुज्जत को ख़त्म करेगी ? आपने फ़रमाया, अमल।[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अल्लाह की किताब (क़ुरआन) सीखो, इसकी वजह से तुम्हारी पहचान होगी और इस पर अमल करो, इससे तुम अल्लाह की किताब वाले हो जाओगे।[3]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, इल्म हासिल करो, इससे तुम्हारी पहचान होगी और जो इल्म हासिल किया है, उस पर अमल करो, इससे तुम इल्म वाले हो जाओगे, क्योंकि तुम्हारे बाद ऐसा ज़माना आएगा जिसमें हक़ के दस हिस्सों में से नौ का इंकार कर दिया जाएगा और उस ज़माने में सिर्फ़ वह नजात पा सकेगा जो गुमनाम और लोगों से अलग-थलग रहने वाला होगा। यही लोग हिदायत के इमाम और इल्म के चिराग़ होंगे। ये लोग जल्दबाज, बुरी बात फैलाने वाले और बातूनी नहीं होंगे।[4]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ऐ इल्म का बोझ उठाए हुए लोगो ! (यानी ऐ उलेमा !) इल्म पर अमल करो, क्योंकि आलिम वह है जो इल्म हासिल करे, फिर उस पर अमल करे और उसका अमल उसके इल्म के मुताबिक़ हो। बहुत जल्द ऐसे लोग होंगे जो इल्म हासिल

---

1. इल्म, भाग 2, पृ० 6,
2. कंज़, भाग 5, पृ० 229
3. कंज़, भाग 5, पृ० 229
4. कंज़, भाग 5, पृ० 229

करेंगे, लेकिन उनका इल्म उनकी हंसुली की हड्डी से आगे नहीं जाएगा (या अल्लाह के यहां नहीं पहुंचेगा) उनका बातिन ज़ाहिर के ख़िलाफ़ होगा और उनका अमल उनके इल्म के ख़िलाफ़ होगा। वे अपने-अपने हलक़े में बैठेंगे और एक दूसरे पर फ़ख़्र करेंगे और उनके हलक़े में बैठने वाला उन्हें छोड़कर दूसरे के पास अगर बैठेगा तो ये उस पर नाराज़ होंगे, उनकी मज्लिसों में उनके जो आमाल होंगे, वे अल्लाह की ओर ऊपर नहीं जाएंगे।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ऐ लोगो! इल्म हासिल करो और आदमी जो इल्म हासिल करे, उस पर अमल भी करे।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उकैम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने उस मस्जिद में हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को सुना कि उन्होंने बात-चीत से पहले क़सम खाकर फ़रमाया तुममें से हर आदमी अपने रब से तंहाई में अकेले मिलेगा जैसे कि तुममें से हर एक चौदहवीं का चांद तंहाई में अलग देखता है, फिर अल्लाह फ़रमाएंगे, ऐ इब्ने आदम! तुझे किस चीज़ ने मेरे बारे में धोखे में डाल दिया? (कि मेरी नाफ़रमानी करता रहा) ऐ इब्ने आदम! तूने रसूलों को (उनकी दावत का) क्या जवाब दिया? ऐ इब्ने आदम! तूने जो इल्म हासिल किया था उस पर क्या अमल किया?

हज़रत अदी बिन अदी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जो इल्म हासिल न करे, उसके लिए एक बार हलाकत है और अगर अल्लाह चाहते तो उसे इल्म अता फ़रमा देते और जो इल्म हासिल करे और उस पर अमल न करे, उसके लिए सात बार हलाकत है।[3]

---

1. इब्न अब्दुल बर्र, भाग 2, पृ० 7, कंज़, भाग 5, पृ० 233,
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 164, हुलीया, भाग 1, पृ० 131,

   भाग 1, पृ० 2

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, बातें तो तमाम लोग अच्छी करते हैं, लेकिन जिसका अमल उसके क़ौल के मुताबिक़ होगा, वही कामियाब होगा और जिसका अमल क़ौल के ख़िलाफ़ होगा, वह (क़ियामत के दिन) अपने आपको मलामत करेगा।[1]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जो (लोगों से बेनियाज़ होकर) अल्लाह (के काम) में मश्ग़ूल हो जाएगा, तमाम लोग उसके मुहताज हो जाएंगे और जो उस इल्म पर अमल करेगा, जो अल्लाह ने उसे दिया है, तो तमाम लोग उस इल्म के मुहताज हो जाएंगे जो उसके पास है।[2]

हज़रत लुक़्मान बिन आमिर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबुदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे, मैं अपने रब से इस बात से डरता हूं कि क़ियामत के दिन मुझे तमाम मख़्लूक़ के सामने बुलाकर फ़रमाए, ऐ उवैमिर ! मैं कहूं, लब्बैक, ऐ मेरे रब ! फिर वह फ़रमाए, तुमने जो इल्म हासिल किया था, उस पर क्या अमल किया था ?[3]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मुझे सबसे ज़्यादा डर इस बात का है कि क़ियामत के दिन मुझे यह कहा जाए, ऐ उवैमिर ! क्या तुमने इल्म हासिल किया था या जाहिल ही रहे थे? अगर मैं कहूंगा कि मैंने इल्म हासिल किया था तो नेक काम का हुक्म देने वाली हर आयत और बुरे काम से रोकने वाली हर आयत अपने हक़ की मांग करेगी। हुक्म देने वाली आयत कहेगी, क्या तूने मेरा हुक्म माना था? और रोकने वाली आयत कहेगी, क्या तू उस बुरे काम से रुक गया था? मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूं उस इल्म से जो नफ़ा न दे और उस नफ़्स से जो सेर न हो और उस दुआ से जो सुनी न जाए ?[4]

---

1. जामिउल इल्म, भाग 2, पृ० 6
2. इब्ने अब्दुल बर्र, भाग 2, पृ० 10, कंज़, भाग 5, पृ० 243,
3. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 90, हुलीया, भाग 1, पृ० 214,
4. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 214

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, इंसान उस वक़्त तक मुत्तक़ी नहीं बन सकता जब तक इल्म न हासिल करे और इल्म के ज़रिए से हुस्न व जमाल तब हासिल हो सकता है, जब उस पर अमल करे।[1]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अल्लाह के नज़दीक क़ियामत के दिन लोगों में सबसे बुरे मर्तबे वाला वह आलिम होगा जिसने अपने इल्म से फ़ायदा न उठाया हो (यानी उस पर अमल न किया हो)।[2]

हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन किसी बन्दे के दोनों क़दम उस वक़्त तक अपनी जगह से नहीं हिल सकेंगे, जब तक उससे चार बातें न पूछ ली जाएं। उसने अपने जिस्म को किन कामों में इस्तेमाल किया? अपनी उम्र कहां लगाई? और माल कहां से कमाया और कहां ख़र्च किया? और अपने इल्म पर क्या अमल किया?[3]

हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुम इल्म तो जो चाहो सीख लो, लेकिन अल्लाह तुम्हें इल्म पर अज्र तब देंगे जब तुम उस पर अमल करोगे।[4]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुम इल्म तो जो चाहे सीख लो, लेकिन अल्लाह तुम्हें इल्म पर अज्र तब देंगे, जब तुम उस पर अमल करोगे। उलेमा का असल मक़्सद तो इल्म की हिफ़ाज़त करना है (कि उसे याद रखा जाए और उस पर अमल किया जाए) और नादान लोगों का मक़्सद तो ख़ाली आगे बयान कर देना है।[5]

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 211, 213,
2. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 223,
3. जामिउल इल्म, भाग 2, पृ० 3, हुलीया, भाग 1, पृ० 236
4. इब्ने अब्दुल बर्र, भाग 2, पृ० 6
5. जामिउल इल्म, भाग 2, पृ० 6,

सुन्नत की पैरवी और पुराने नेक लोगों की पैरवी और दीन में अपनी तरफ़ से ईजाद किए हुए काम पर इंकार

हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि तुम लोग (अल्लाह वाले) सही रास्ते और सुन्नत को लाज़िम पकड़ लो, क्योंकि इस ज़मीन पर जो बन्दा भी सही रास्ते पर और सुन्नत पर होगा, फिर वह अल्लाह का ज़िक्र करेगा और उसके डर से उसकी आंखों में आंसू आ जाएंगे तो उसे अल्लाह हरगिज़ अज़ाब नहीं देंगे और इस ज़मीन पर जो बन्दा भी सही रास्ते और सुन्नत पर होगा, फिर वह अपने दिल में अल्लाह को याद करेगा और अल्लाह के डर से उसके रोंगटे खड़े हो जाएंगे तो उसकी मिसाल उस पेड़ जैसी हो जाएगी जिसके पत्ते सूख गए हों और तेज़ हवा चलने से उसके पत्ते बहुत ज़्यादा गिरने लगें तो ऐसे ही उसके गुनाहों को अल्लाह बहुत ज़्यादा गिराने लग जाएंगे और अल्लाह के रास्ते और सुन्नत पर दर्मियानी रफ़्तार से चलना इससे बेहतर है कि इंसान अल्लाह के रास्ते के ख़िलाफ़ और सुन्नत के ख़िलाफ़ बहुत ज़्यादा मेहनत करे, इसलिए तुम देख लो चाहे तुम ज़्यादा मेहनत करो, चाहे दर्मियानी रफ़्तार से चलो, लेकिन तुम्हारा हर अमल अंबिया अलैहिमुस्सलाम के तरीक़े और सुन्नत के मुताबिक़ होना चाहिए।[1]

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु जब मदीना तश्रीफ़ लाए तो बयान के लिए खड़े हुए और अल्लाह की हम्द व सना के बाद फ़रमाया, ऐ लोगो ! तुम्हारे लिए सुन्नतें जारी हो चुकी हैं और फ़र्ज़ मुक़र्रर हो चुके हैं और तुम्हें एक साफ़ और वाज़ेह रास्ता दे दिया गया है। अब तुम लोग ही उस रास्ते से दाएं-बाएं को हटकर लोगों को गुमराह कर दो तो यह अलग बात है।[2]

1. कंज़, भाग 10, पृ० 97, हुलीया, भाग 1, पृ० 153
2. जामिउल इल्म, भाग 2, पृ० 187

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु जुमारात के दिन खड़े होकर फ़रमाते, असल चीज़ें दो हैं, एक ज़िंदगी गुज़ारने का तरीक़ा और दूसरा कलाम। सबसे अफ़ज़ल और सबसे ज़्यादा सच्चा कलाम अल्लाह का है और सबसे उम्दा तरीक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का है और तमाम कामों में सबसे बुरे काम वे हैं जो नए ईजाद किए जाएं और हर नया काम (जो क़ुरआन व हदीस से न निकाला गया हो, वह) बिदअत है, ग़ौर से सुनो ! ऐसा न हो कि मुद्दत लम्बी हो जाए और उससे तुम्हारे दिल सख़्त हो जाएं और लंबी उम्मीदें तुम्हें (आख़िरत से) ग़ाफ़िल कर दें, क्योंकि जो चीज़ आने वाली है, वह क़रीब है और जो आने वाली नहीं है, वह दूर है।[1]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, सुन्नत पर बीच का रास्ता अपनाना बिदअत पर ज़्यादा मेहनत करने से अच्छा है।[2]

हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, क़ुरआन भी नाज़िल हुआ और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी सुन्नतें मुक़र्रर फ़रमाईं, फिर हज़रत इम्रान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुम लोग हमारी पैरवी करो (क्योंकि हमने क़ुरआन व सुन्नत को पूरा अख़्तियार किया हुआ है) अगर ऐसा नहीं करोगे तो गुमराह हो जाओगे।[3]

हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने एक आदमी से कहा, तुम मूर्ख हो, क्या तुम्हें अल्लाह की किताब में यह साफ़ तौर से लिखा हुआ मिलता है कि ज़ुहर की नमाज़ में चार रक्अतें हैं और उसमें क़िरात ऊंची आवाज़ से न करो? फिर हज़रत इम्रान रज़ि० ने बाक़ी नमाज़ों और ज़कात वग़ैरह का नाम लिया (कि क्या इनके तफ़्सीली हुक्म क़ुरआन में हैं?) क्या तुम्हें इन अमलों की तफ़्सील अल्लाह की किताब में मिलती है? अल्लाह की किताब में ये तमाम चीज़ें इज्मालन ज़िक्र

1. इल्म, भाग 2, पृ० 181,
2. हाकिम, भाग 1, पृ० 103, मज्मा, भाग 1, पृ० 173
3. हैसमी, भाग 1, पृ० 173,

हुई हैं और रसूल सल्ल० की सुन्नत ने इन सबको खोलकर तफ़्सील से बयान किया है।[1]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुममें से जो किसी की इक़्तिदा (पैरवी) करना चाहता है, तो उसे चाहिए कि वह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा की पैरवी करे, क्योंकि वे इस उम्मत में सबसे ज़्यादा नेक दिल, सबसे ज़्यादा गहरे इल्म वाले, सबसे कम तकल्लुफ़ वाले, सबसे ज़्यादा सीधे तौर-तरीक़े वाले और सबसे ज़्यादा अच्छी हालत वाले थे। इन लोगों को अल्लाह ने अपने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत के लिए और अपने दीन को क़ायम करने के लिए चुना था, इसलिए तुम इनके फ़ज़ाइल व दरजात का एतराफ़ करो और इनके नक़्शे क़दम पर चलो, क्योंकि वे सीधी राह पर थे।[2]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे, ऐ उलेमा की जमाअत ! अल्लाह से डरो और अपने से पहले लोगों के रास्ते को पकड़े रखो। मेरी ज़िंदगी की क़सम ! अगर तुम इस रास्ते पर चलोगे तो तुम दूसरों से बहुत आगे निकल जाओगे और अगर तुम इसे छोड़कर दाएं-बाएं चले जाओगे तो तुम बहुत ज़्यादा भटक जाओगे।[3]

हज़रत मुस्अब बिन साद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मेरे वालिद जब मस्जिद में नमाज़ पढ़ते, तो मुख़्तसर पढ़ते, अलबत्ता रुकूअ और सज्दा पूरा करते और घर में जब नमाज़ पढ़ते, तो नमाज़, रुकूअ और सज्दा सब कुछ लम्बा करते। मैंने कहा, अब्बा जान ! जब आप मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हैं तो मुख़्तसर पढ़ते हैं और जब घर में नमाज़ पढ़ते हैं तो लम्बी पढ़ते हैं? उन्होंने कहा, ऐ मेरे बेटे ! हम इमाम हैं। लोग हमारे पीछे चलते हैं, हमारी पैरवी करते हैं।[4]

---

1. इल्म, भाग 2, पृ० 191,
2. जामिउल इल्म, भाग 2, पृ० 97, हुलीया, भाग 1, पृ० 305,
3. इल्म, भाग 2, पृ० 97, कंज़, भाग 5, पृ० 233,
4. हैसमी, भाग 1, पृ० 182,

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुम अपने से पहले लोगों के पीछे चलो, अपनी तरफ़ से नए-नए तरीक़े मत चलाओ। (तुम्हें अक़्ल लड़ाने की ज़रूरत नहीं है) अल्लाह के रसूल सल्ल० और सहाबा रज़ि० तुम्हें सब कुछ करके दे गए हैं।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मुहब्बत करना और उनकी फ़ज़ीलत का एतराफ़ करना दोनों सुन्नत में से है।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अपने ज़माने के लोगों के नक़्शे क़दम पर चलने से बचो, क्योंकि एक आदमी जन्नत वालों के अमल करता है, फिर अल्लाह के इल्म के मुताबिक़ वह पलटा खा जाता है और दोज़ख़ वालों के अमल करने लग जाता है और वह दोज़ख़ी बनकर मरता है और एक आदमी दोज़ख़ वालों के अमल कर रहा होता है, फिर वह अल्लाह के इल्म के मुताबिक़ पलटा खा जाता है और जन्नत वालों के अमल करने लग जाता है और जन्नती बनकर मरता है। अगर तुम्हें ज़रूर ही किसी के पीछे चलना है, तो फिर तुम अपने लोगों के पीछे चलो, जिनका ख़ात्मा ईमान और भले आमाल पर हो चुका है और वे दुनिया से जा चुके हैं, जो अभी ज़िंदा हैं, उनके पीछे न चलो (क्योंकि किसी ज़िंदा इंसान के बारे में इत्मीनान नहीं किया जा सकता, न जाने कब गुमराह हो जाए।)[3]

हज़रत अबुल बख़्तरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को बताया कि कुछ लोग मग़्रिब के बाद से मस्जिद में बैठे हुए हैं और उनमें एक आदमी है, जो कह रहा है, इतनी बार 'अल्लाहु अक्बर', इतनी बार 'सुब्हानल्लाह' और इतनी बार 'अल-हम्दु लिल्लाहि' कहो। हज़रत अब्दुल्लाह ने पूछा,

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 181
2. इल्म, भाग 2, पृ० 187
3. इल्म, भाग 2, पृ० 115,

फिर क्या वे लोग कह रहे हैं? उस आदमी ने कहा, जी हां। फ़रमाया, आगे जब तुम उन्हें ऐसा करते हुए देखो तो मुझे आकर बताना। (चुनांचे उसने आकर बताया, तो) हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० उनके पास गए और उन्होंने टोपी वाला जुब्बा पहन रखा था और उनके पास जाकर बैठ गए।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ज़रा तेज़ मिज़ाज आदमी थे। जब उन्होंने इन लोगों को वे कलिमे इस तर्तीब से कहते हुए सुना, तो खड़े होकर फ़रमाया, मैं अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० हूं। उस अल्लाह की क़सम, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, तुमने इस बिदअत को लाकर बड़ा ज़ुल्म किया है और तुम इस तरह तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा से इल्म में आगे निकल गए हो, (वे तो इस तरह ज़िक्र नहीं किया करते थे।)

हज़रत मुअ-ज़िद ने कहा, हम तो कोई बिदअत लाकर ज़ुल्म नहीं करना चाहते और न इल्म में हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० से आगे निकल गए हैं। फिर अम्र बिन उत्बा ने कहा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान! हम अल्लाह से माफ़ी मांगते हैं। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया, तुम सही रास्ते पर चलते रहो, बल्कि उसे ही चिमटे रहो। अल्लाह की क़सम, अगर तुम ऐसा करोगे तो तुम बहुत आगे निकल जाओगे और रास्ते से हटकर दाएं-बाएं हो जाओगे, तो बहुत ज़्यादा भटक जाओगे।[1]

हज़रत अबुल बख़्तरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़बर मिली कि कुछ लोग मग़रिब और इशा के दर्मियान बैठते हैं। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया और बाद में यह है कि हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया, तुमने इस बिदअत को शुरू करके बड़ा ज़ुल्म किया है, क्योंकि अगर यह बिदअत नहीं है तो फिर हमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा को (नऊज़ु बिल्लाहि मिन ज़ालिक) गुमराह क़रार देना पड़ेगा। इस पर हज़रत अम्र बिन उत्बा बिन फ़रक़द ने कहा, मैं अल्लाह से माफ़ी

1. हुलीया, भाग 4, पृ० 381,

मांगता हूं ऐ इब्ने मसऊद ! और इस काम से तौबा करता हूं। फिर आपने उन्हें बिखर जाने का हुक्म दिया।

हज़रत अबुल बख़्तरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कूफ़ा की मस्जिद में दो हलक़े देखे तो उन दोनों के दर्मियान खड़े हो गए और फ़रमाया, कौन-सा हलक़ा पहले शुरू हुआ था। एक हलक़े वालों ने कहा, हमारा, तो दूसरे हलक़े वालों से फ़रमाया, तुम लोग उठकर इसी में आ जाओ और यों दो हलक़ों को एक कर दिया।[1]

तबरानी की एक सही और मुख़्तसर रिवायत में यह है कि फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कपड़ा ओढ़े हुए आए और फ़रमाया, जो मुझे जानता है, वह तो मुझे जानता ही है और जो नहीं जानता, तो मैं तआरूफ़ करा देता हूं कि मैं अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० हूं। क्या तुम लोग हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके सहाबा से भी ज़्यादा हिदायत पाए हुए हो या तुमने गुमराही की दुम पकड़ रखी है?

हज़रत अम्र बिन सलमा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हम लोग मग़रिब और इशा के दर्मियान हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियलाहु अन्हु के दरवाज़े पर बैठे हुए थे कि इतने में हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु आए और फ़रमाया, ऐ अबू अब्दुर्रहमान ! ज़रा हमारे पास बाहर आएं। चुनांचे हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० बाहर आए और फ़रमाया, ऐ अबू मूसा ! आप इस वक़्त क्यों आए?

हज़रत अबू मूसा रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! मैंने एक ऐसा काम देखा है जो है तो ख़ैर, लेकिन उसे देखकर मैं परेशान हो गया हूं। है तो वह ख़ैर, लेकिन उसने मुझे चौंका दिया है। कुछ लोग मस्जिद में बैठे हुए हैं और एक आदमी कह रहा है, इतनी बार सुब्हानल्लाह कहो, इतनी बार अल-हम्दु लिल्लाह कहो।

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 181,

चुनांचे हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० उसी वक़्त चल पड़े और हम भी उनके साथ गए, यहां तक कि उन लोगों के पास पहुंच गए और फ़रमाया, तुम लोग कितनी जल्दी बदल गए हो, हालांकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० अभी ज़िंदा हैं और हुज़ूर सल्ल० की बीवियां अभी जवान हैं और हुज़ूर सल्ल० के कपड़े और बरतन अभी अपनी असली हालत पर हैं, उनमें कोई तब्दीली नहीं आई। तुम अपनी बुराइयां गिनो, मैं इस बात की ज़मानत देता हूं कि अल्लाह तुम्हारी नेकियां गिनने लगेंगे।[1]

हज़रत आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं अपने वालिद (हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उन्होंने पूछा, तुम कहां थे? मैंने कहा, मुझे कुछ लोग मिले थे। मैंने उनसे बेहतर आदमी कभी नहीं देखे। वे लोग अल्लाह का ज़िक्र कर रहे थे। फिर उनमें से एक आदमी कांपने लगा और थोड़ी देर में अल्लाह के डर से बेहोश हो गया। इसलिए मैं उनके साथ बैठ गया था। उन्होंने कहा, इसके बाद उनके साथ कभी न बैठना।

जब उन्होंने देखा कि उनकी इस बात का मैंने असर नहीं लिया, तो फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़ुरआन पढ़ते हुए देखा है और मैंने हज़रत अबूबक्र, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को भी क़ुरआन पढ़ते हुए देखा है। इन लोगों पर तो ऐसी हालत तारी नहीं होती थी, तो तुम्हारा क्या ख़्याल है? ये लोग हज़रत अबूबक्र रज़ि० हज़रत उमर रज़ि० से भी ज़्यादा अल्लाह से डरने वाले हैं? इस पर बात मुझे समझ में आ गई कि बात यों ही है और मैंने इन लोगों को छोड़ दिया?[2]

हज़रत अबू सालेह सईद बिन अब्दुर्रहमान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि इब्ने इत्र तुजैबी खड़े होकर लोगों में क़िस्से बयान कर रहा

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 181,
2. हुलीया, भाग 3, पृ० 167

था, तो उससे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी हज़रत सिला बिन हारिस ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अह्द को छोड़ा नहीं है और कोई रिश्तेदारी भी नहीं तोड़ी है, तो फिर तुम और तुम्हारे साथी कहां से हमारे बीच (क़िस्सा कहने के लिए) खड़े हो गए हो (और अपनी बड़ाई ज़ाहिर करने के लिए यह क़िस्से बयान कर रहे हो।)[1]

हज़रत अम्र बिन ज़ुरारह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं बयान कर रहा था कि इतने में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु आकर खड़े हो गए और फ़रमाया, तुमने गुमराही वाली बिदअत ईजाद की है या तुम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके सहाबा रज़ि० से ज़्यादा हिदायत वाले हो गए हो। मैंने देखा कि यह बात सुनते ही तमाम लोग उठकर इधर-उधर चले गए और मेरी जगह पर एक आदमी भी न रहा।[2]

जिस राय का क़ुरआन व हदीस से सबूत न हो, ऐसी बे-असल राय से बचना

हज़रत इब्ने शिहाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मिंबर पर फ़रमाया, ऐ लोगो! हतमी और दुरुस्त राय तो सिर्फ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही की थी, क्योंकि अल्लाह ही उन्हें यह राय समझाते थे और हमारी राय तो बस गुमान और तकल्लुफ़ ही है, (उसका सही होना ज़रूरी नहीं)।[3]

हज़रत सदक़ा बिन अबी अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे, अपनी राय पर चलने वाले सुन्नतों के दुश्मन हैं, सुस्ती की वजह से सुन्नतें याद नहीं

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 189, इसाबा, भाग 2, पृ० 193,
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 189
3. जामिउल इल्म, भाग 2, पृ० 134,

कीं और जितनी याद की थीं, उन्हें महफ़ूज़ नहीं रखा और जब उनसे ऐसी बात पूछी गई जिसका जवाब नहीं आता था, तो शर्म के मारे यह नहीं कहा कि हम नहीं जानते, इसलिए सुन्नतों के मुक़ाबले में अपनी राय ले आए, ऐसे लोगों से बिल्कुल बच के रहना।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि सुन्नत तो वह है जिसे अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुक़र्रर फ़रमाया, तुम अपनी ग़लत राय को उम्मत के लिए सुन्नत मत बनाओ।[2]

कंज़ की रिवायत में इसके बाद यह भी है—

إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا (سورت نجم آیت ۲۸)

'और यक़ीनन बे-असल ख़्यालात अम्रे हक़ (के इस्बात) में ज़रा भी फ़ायदेमंद नहीं हुए।' (सूरः नज्म, आयत 28)

हज़रत अम्र बिन दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, अल्लाह ने आपको जो कुछ समझाया है, आप उसके मुताबिक़ फ़ैसला करें। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐसी बात न कहो, क्योंकि यह तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ुसूसियत थी (कि उनकी हर बात अल्लाह की तरफ़ से होती थी। हमारे दिल में जो बात आती है, वह शैतान की तरफ़ से भी हो सकती है। यह हज़रत उमर रज़ि० की ख़ाकसारी है।)[3]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, यों मत कहा करो कि बताएं आपकी क्या राय है? बताएं आपकी क्या राय है? क्योंकि तुमसे पहले वाले इस तरह कहने की वजह से हलाक हुए और एक चीज़ पर दूसरी चीज़ का क़ियास न किया करो, वरना तुम्हारे क़दम जमने के बाद फिसल जाएंगे और जब तुममें से किसी से ऐसी बात पूछी जाए, जो वह न जानता हो तो कह दे कि अल्लाह ही जानते हैं, क्योंकि यह

1. इब्ने अब्दुल बर्र, भाग 2, पृ० 135,
2. इब्ने अब्दुल बर्र, भाग 2, पृ० 136, कंज़, भाग 5, पृ० 241,
3. कंज़, भाग 5, पृ० 241,

(कहना) भी एक तिहाई इल्म है।[1]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हर आने वाला साल पहले साल से बुरा होगा, (अपनी ज़ात के एतबार से तो) कोई साल किसी साल से बेहतर नहीं। कोई जमाअत किसी जमाअत से बेहतर नहीं, लेकिन होगा यों कि तुम्हारे उलेमा और तुम्हारे भले और बेहतरीन लोग चले जाएंगे और फिर ऐसे लोग आ जाएंगे जो अपनी राय से तमाम कामों में क़ियास करने लग जाएंगे, इस तरह इस्लाम में शिगाफ़ पड़ जाएगा और वह गिर जाएगा।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, (दीन में) असल तो अल्लाह की किताब और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत है, इसके बाद जो अपनी राय से कुछ कहेगा, तो मुझे मालूम नहीं कि इसे वह अपनी नेकियों में पाएगा या बुराइयों में।[3]

हज़रत अता रहमतुल्लाहि अलैहि अपने वालिद से नक़ल करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी से किसी चीज़ के बारे में पूछा गया, उन्होंने फ़रमाया, मुझे अपने रब से इस बात से हया आती है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के बारे में अपनी राय से कुछ कहूं।[4]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० का इज्तिहाद करना

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे यमन भेजा, तो फ़रमाया, जब तुम्हारे सामने कोई मुक़दमा पेश होगा तो तुम किस तरह फ़ैसला करोगे? मैंने कहा, अल्लाह की किताब के मुताबिक़। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया,

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 180,
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 180, इल्म, भाग 2, पृ० 135
3. इल्म, भाग 2, पृ० 136
4. इल्म, भाग 2, पृ० 33,

अगर तुम उसे अल्लाह की किताब में न पाओ, तो फिर? मैंने कहा, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के मुताबिक़।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुम उसे अल्लाह के रसूल सल्ल० की सुन्नत में न पाओ, तो फिर? मैंने कहा, तो फिर मैं अपनी राय से इज्तिहाद करूंगा और (सोच-विचार में) कोई कमी नहीं करूंगा। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने मेरे सीने पर हाथ मारकर फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने अल्लाह के रसूल सल्ल० के क़ासिद को उस चीज़ की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई जिससे अल्लाह के रसूल सल्ल० ख़ुश हैं।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद कोई आदमी हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से ज़्यादा इस चीज़ से डरने वाला नहीं था, जिसे वह न जानता हो और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के बाद कोई आदमी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से ज़्यादा डरने वाला नहीं था। एक बार हज़रत अबूबक्र रज़ि० के सामने एक मस्अला पेश हुआ। उन्होंने इसके लिए अल्लाह की किताब में कोई असल न पाई और न ही सुन्नत में कोई निशान पाया, तो फ़रमाया, अब मैं अपनी राय से इज्तिहाद करूंगा। अगर ठीक फ़ैसला हुआ तो अल्लाह की ओर से और अगर ग़लत फ़ैसला हुआ तो मेरी ओर से और मैं अल्लाह से इस्तग़फ़ार करता हूं।[2]

हज़रत शुरैह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें यह ख़त लिखा कि जब तुम्हारे पास कोई मुक़दमा आए तो तुम उसमें अल्लाह की किताब के मुताबिक़ फ़ैसला करो और अगर तुम्हारे पास ऐसा मुक़दमा आए जो अल्लाह की किताब में नहीं है, तो फिर उसमें अल्लाह के रसूल की सुन्नत के मुताबिक़ फ़ैसला करो और अगर ऐसा मुक़दमा आए जो न अल्लाह की किताब में है और न अल्लाह के रसूल सल्ल० की सुन्नत में, तो फिर वह फ़ैसला

1. मिश्कात, भाग 2, पृ० 316
2. कंज़, भाग 5, पृ० 241,

करो जिस पर उलेमा का इज्माअ और इत्तिफ़ाक़ हो और अगर ऐसा मुक़दमा आए जो न अल्लाह की किताब में है, और न अल्लाह के रसूल की सुन्नत में और न उसमें किसी आलिम ने कोई बात की है, तो फिर दो बातों में से एक बात अख़्तियार कर लो, चाहो तो आगे बढ़कर अपनी राय से इज्तिहाद करके फ़ैसला कर लो और चाहो तो पीछे हट जाओ (और कोई फ़ैसला न करो) और मेरे ख़्याल में पीछे हटना तुम्हारे लिए बेहतर ही है।[1]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जिसे किसी मामले में फ़ैसला करने की ज़रूरत पेश आ जाए, तो उसे चाहिए कि अल्लाह की किताब के मुताबिक़ फ़ैसला करे और अगर ऐसा मामला हो जो अल्लाह की किताब में नहीं है, तो उसमें वह फ़ैसला करे जो अल्लाह के नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किया और अगर ऐसा मामला पेश आ जाए जो न अल्लाह की किताब में हो और न उसके बारे में अल्लाह के नबी सल्ल० ने कोई फ़ैसला किया हो, तो उसमें वह फ़ैसला करे जो नेक लोगों ने किया हो और अगर ऐसा मामला पेश आ जाए जो न अल्लाह की किताब में हो और न अल्लाह के नबी सल्ल० और नेक बन्दों ने उसके बारे में कोई फ़ैसला किया हो, तो फिर अपनी राय से इज्तिहाद करे और अपनी इस बात पर पक्का रहे और शर्माए नहीं।

दूसरी रिवायत में यह है कि फिर अपनी राय से इज्तिहाद करे और यह हरगिज़ न कहे, मेरा तो ख़्याल ऐसा है, अलबत्ता मैं डरता भी हूं, क्योंकि हलाल भी वाज़ेह है और हराम भी वाज़ेह है, अलबत्ता इन दोनों के दर्मियान बहुत-से शुबहे वाले मामले हैं, (जिनका हलाल या हराम होना वाज़ेह नहीं है) इसलिए वह काम छोड़ दो, जिनमें किसी क़िस्म का शक है और वह काम अख़्तियार करो जिनमें कोई शक नहीं।[2]

1. इल्म, भाग 2, पृ० 56,
2. इल्म, भाग 2, पृ० 57

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी यज़ीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का यह मामूल देखा कि जब उनसे कोई चीज़ पूछी जाती और वह अल्लाह की किताब में होती तो वह फ़रमा देते और वह अल्लाह की किताब में न होती, लेकिन इसके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुछ नक़ल किया गया होता तो वह फ़रमा देते और अगर वह अल्लाह की किताब में न होती और हुज़ूर सल्ल० से भी कुछ नक़ल न किया गया होता, लेकिन हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० की तरफ़ से कुछ नक़ल हुआ होता तो वह फ़रमा देते और अगर वह अल्लाह की किताब में न होती और हुज़ूर सल्ल० से और हज़रत अबूबक्र रज़ि० व हज़रत उमर रज़ि० से भी कुछ नक़ल न हुआ होता, तो फिर अपनी राय से इज्तिहाद करते।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब हमारे पास हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ से कोई मज़बूत दलील आ जाती, तो हम उसके बराबर किसी को न समझते। (बल्कि उसी को अख़्तियार कर लेते।)[2]

हज़रत मसरूक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु से किसी चीज़ के बारे में पूछा, तो फ़रमाया, क्या यह चीज़ पेश आ चुकी है? मैंने कहा, नहीं, तो फ़रमाया, जब तक यह पेश न आ जाए, उस वक़्त तक हमें आराम करने दो। जब पेश आ जाएगी, तो फिर हम कोशिश करके अपनी राय बता देंगे।[3]

फ़त्वा देने में एहतियात से काम लेना और सहाबा रज़ि० में कौन फ़त्वा दिया करते थे

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं,

1. इल्म, भाग 2, पृ० 57
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 181,
3. इल्म, भाग 2, पृ० 58,

मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सौ बीस सहाबा रज़ि० को मस्जिद में पाया कि उनमें जो हदीस बयान करने वाले थे, वे यह चाहते थे कि उनका कोई भाई हदीस बयान कर दे और उन्हें हदीस न बयान करनी पड़े और उनमें जो भी मुफ़्ती थे, वे यह चाहते थे कि उनका भाई फ़त्वा दे और ख़ुद उन्हें फ़त्वा न देना पड़े।[1]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, वह आदमी पागल है कि उससे जो भी फ़त्वा पूछा जाए, वह फ़ौरन फ़त्वा दे दे।[2]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, लोगों को फ़त्वा देने वाले आदमी तीन तरह के हैं। एक तो वह आदमी, जो क़ुरआन के नासिख़ व मंसूख़ को जानता है, दूसरा वह अमीरे जमाअत, जिसे फ़त्वा दिए बग़ैर चारा नहीं, तीसरा अहमक़।[3]

हज़रत इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अबू मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, क्या मुझे यह ख़बर नहीं मिली कि तुम अमीर नहीं हो, फिर भी तुम लोगों को फ़त्वा देते हो? जिसे इमारत की राहत मिली है, उसे ही इमारत की मशक़्क़त भी उठाने दो, यानी जो अमीर हैं, उसे ही फ़त्वा की ज़िम्मेदारी उठाने दो, तुम फ़त्वा न दो।[4]

हज़रत अबू मिन्हाल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत ज़ैद बिन अरक़म और हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हुम से सोने-चांदी के ख़रीदने-बेचने के बारे में पूछा, तो मैंने जिससे भी पूछा, उसने यही कहा, तुम दूसरे से पूछ लो, क्योंकि वह मुझसे बेहतर और मुझसे ज़्यादा जानने वाला है। इसके बाद सोने-चांदी के ख़रीदने-बेचने के बारे में हदीस ज़िक्र की।[5]

---

1. जामेअ, भाग 2, पृ० 163, इब्ने साद, भाग 6, पृ० 110
2. जामिउल इल्म, भाग 2, पृ० 165, हैसमी, भाग 1, पृ० 183
3. जामिउल इल्म, भाग 2, पृ० 166
4. जामिउल इल्म, भाग 2, पृ० 166, भाग 2, पृ० 143,
5. जामिउल इल्म, भाग 2, पृ० 166

हज़रत अबू हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अब तो हर आदमी इस मस्अले में फ़त्वा दे रहा है, हालांकि अगर यह मस्अला हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने पेश होता तो उसके लिए वे तमाम बदरी सहाबा रज़ि० को जमा कर लेते (और फिर उनके मश्विरे से फ़त्वा देते।)[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से पूछा गया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में कौन फ़त्वा दिया करता था? उन्होंने फ़रमाया, हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा और मेरे इल्म में इन दो के अलावा और कोई नहीं है?[2]

हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि०, हज़रत उस्मान रज़ि०, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में फ़त्वा दिया करते थे।[3]

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अबी अब्दुल्लाह बिन दीनार अपने वालिद से नक़ल करते हैं कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु उन सहाबा में से थे जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में और हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुम के ज़माने में हुज़ूर सल्ल० से सुनी हुई हदीसों के मुताबिक़ फ़त्वा दिया करते थे।[4]

हज़रत अबू अतीया हमदानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बैठा हुआ था कि इतने में एक आदमी आया और उसने एक मस्अला पूछा। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुमने यह मस्अला मेरे

1. कंज़, भाग 5, पृ० 241,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 151,
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 151,
4. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 157, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 77

अलावा किसी और से भी पूछा है? उस आदमी ने कहा, हां। मैंने हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु से भी पूछा और उन्होंने इसका यह जवाब दिया था। जवाब सुनकर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने उसकी मुख़ालफ़त की। इस पर हज़रत अबू मूसा रज़ि० खड़े हुए और फ़रमाया, जब तक ये बड़े आलिम तुममें हैं, मुझसे कुछ न पूछा करो।[1]

हज़रत अबू अम्र शैबानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जब तक यह बड़े आलिम हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु तुममें हैं, मुझसे कुछ न पूछा करो।[2]

हज़रत सह्ल बिन अबी ख़स्मा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में फ़त्वा देने वाले लोगों में तीन मुहाजिरों में से थे और तीन अंसार में से थे—हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत उबई बिन काब, हज़रत मुआज़ बिन जबल और हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हुम।[3]

हज़रत मसरूक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में से फ़त्वा देने वाले लोग ये थे—हज़रत उमर, हज़रत अली, हज़रत इब्ने मसऊद, हज़रत ज़ैद, हज़रत उबई बिन काब और हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हुम।[4]

हज़रत क़बीसा बिन ज़ुवैब बिन हलहला रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुमा के ज़माने में और जब तक हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना में रहे, उस वक़्त तक वह मदीना में क़ज़ा, फ़त्वा, क़िरात और फ़राइज़ व मीरास में इमाम थे और हज़रत अली रज़ि० के मदीना से चले जाने के बाद भी वह पांच साल और इमाम

1. इब्ने साद, भाग 5, पृ० 77
2. फ़त्वा, भाग 1, पृ० 149,
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 167
4. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 168

रहे। फिर सन् चालीस में हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा बने तो भी यही इमाम थे, यहां तक कि सन् 45 हि० में हज़रत ज़ैद रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया।[1]

हज़रत अता बिन यसार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर और उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुलाया करते थे और वह भी बद्री सहाबा रज़ि० के साथ मश्विरा दिया करते थे और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा हज़रत उमर रज़ि० और हज़रत उस्मान रज़ि० के ज़माने में फ़त्वा दिया करते थे और फिर इंतिक़ाल तक हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का यही मश्ग़ला रहा।[2]

हज़रत ज़ियाद बिन मीना रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि०, हज़रत इब्ने उमर रज़ि०, हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि०, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि०, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि०, हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि०, हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज रज़ि०, हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ि०, हज़रत अबू वाक़िद लैसी और हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुहैना रज़ियल्लाहु अन्हुम और इन जैसे और सहाबा रज़ि० मदीना में फ़त्वा दिया करते थे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से हदीसें बयान किया करते थे।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के इंतिक़ाल पर ये दोनों दीनी ख़िदमतें इन लोगों को मिलीं और ये सब अपने इंतिक़ाल तक इनमें ही लगे रहे और फिर इनमें से फ़त्वा में ज़्यादा भरोसे के क़ाबिल हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि०, हज़रत इब्ने उमर रज़ि०, हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि०, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० और हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० थे।[3]

हज़रत क़ासिम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत अबूबक्र, हज़रत उमर और हज़रत उस्मान

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 175,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 181,
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 187

रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में मुस्तक़िल फ़त्वा दिया करती थीं और फिर इंतिक़ाल तक उनका यही मश्ग़ला रहा। अल्लाह उन पर रहमत नाज़िल फ़रमाए, मैं हर वक़्त उनके साथ रहा करता था और वह मेरे साथ बहुत अच्छा सुलूक फ़रमाया करती थीं। (हज़रत क़ासिम हज़रत आइशा रज़ि० के भतीजे थे) आगे और हदीस ज़िक्र की।[1]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के उलूम

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमें इस हाल में छोड़कर गए कि आसमान में जो भी परिंदा अपने दोनों परों को हिलाता है, उससे हमें (हुज़ूर सल्ल० का सिखाया हुआ) कोई न कोई इल्म याद आ जाता है।

तबरानी की रिवायत में इसके बाद यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो चीज़ भी जन्नत से क़रीब करने वाली और दोज़ख़ की आग से दूर करने वाली है, वह तुम्हारे लिए बयान कर दी गई है।[2]

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एक हज़ार मिसालें (कहावतें) समझी हैं।[3]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने एक हदीस ज़िक्र की, जिसमें यह भी फ़रमाया कि (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के मौक़े पर) जिस चीज़ के बारे में सहाबा किराम रज़ि० में इख़्तिलाफ़ हो जाता, तो मेरे वालिद (हज़रत अबूबक्र रज़ि०) ऐसी हदीस सुनाते, जिसे सुनकर सब मुतमइन हो जाते और फ़ैसला कर देने वाली बात सामने आ जाती।

सहाबा रज़ि० ने यह सवाल किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहां दफ़न किया जाए? तो इस बारे में हमें किसी के पास

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 175
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 263, 264, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 170
3. हैसमी, भाग 8, पृ० 264

कोई इल्म (क़ुरआन और हदीस का) न मिल सका, लेकिन हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि नबी की जिस जगह रूह क़ब्ज़ की जाती है, उसी जगह उसे दफ़न किया जाता है।

ऐसे ही हुज़ूर सल्ल० की मीरास के बारे में सहाबा रज़ि० में इख़्तिलाफ़ हुआ तो हमें इस बारे में किसी के पास कोई इल्म न मिल सका, लेकिन हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि नबी की जिस जगह रूह क़ब्ज़ की जाती है, उसी जगह उसे दफ़न किया जाता है। ऐसे ही हुज़ूर सल्ल० की मीरास के बारे में सहाबा रज़ि० में इख़्तिलाफ़ हुआ तो हमें इस बारे में किसी के पास कोई इल्म न मिल सका, लेकिन हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते सुना कि हम अंबिया की जमाअत किसी को वारिस नहीं बनाते, और जो कुछ हम छोड़ते हैं, वह सदक़ा हुआ करता है।[1]

हज़रत अबू वाइल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि अगर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इल्म को तराज़ू के एक पलड़े में रखा जाए और तमाम ज़मीन वालों के इल्म को दूसरे पलड़े में रखा जाए, तो हज़रत उमर रज़ि० के इल्म वाला पलड़ा झुक जाएगा।

हज़रत आमश कहते हैं, मेरे दिल ने इस बात को क़ुबूल न किया। मैंने जाकर हज़रत इब्राहीम रह० से इसका ज़िक्र किया, तो उन्होंने कहा, तुम इसे नहीं मान रहे हो और अल्लाह की क़सम! हज़रत अब्दुल्लाह रह० ने तो इससे आगे की भी बात कह रखी है। उन्होंने फ़रमाया है कि जिस दिन हज़रत उमर रज़ि० दुनिया से गए, उस दिन इल्म के दस हिस्सों में से नौ हिस्से चले गए।[2]

---

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 346,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 69, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 153,

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात के बारे में एक लम्बी हदीस में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का यह इर्शाद नक़ल किया गया है कि हज़रत उमर रज़ि० हममें अल्लाह को सबसे ज़्यादा जानने वाले, अल्लाह की किताब को हम सबसे ज़्यादा पढ़ने वाले और अल्लाह के दीन की हम सबसे ज़्यादा समझ रखने वाले थे ।[1]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का इल्म इतना ज़्यादा था कि उसके सामने तमाम लोगों का इल्म इतना कम लगता था कि जैसे वह किसी सूराख़ में छिपा कर रखा हुआ हो ।[2]

मदीना के एक साहब कहते हैं, मैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गया तो मुझे उनके सामने फ़ुक़हा बच्चों की तरह नज़र आए। वह दीनी समझ और इल्म की वजह से तमाम फ़ुक़हा पर हावी थे ।[3]

हज़रत अबू इस्हाक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी की, तो हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि आपने मेरी इनसे शादी कर दी है, इनकी आंखें कमज़ोर हैं, पेट बड़ा है। (शक्ल व सूरत अच्छी नहीं है।)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैंने तुम्हारी उनसे शादी की है, उनकी फ़ज़ीलतें ये हैं—

यह मेरे सहाबा में से सबसे पहले इस्लाम लाए और इनका इल्म उन सब में ज़्यादा है और यह उनमें सबसे ज़्यादा बुर्दबार हैं। (ऐ फ़ातिमा! सूरत न देखो, सीरत देखो।)[4]

हज़रत माक़िल बिन यसार की रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, (ऐ फ़ातिमा) क्या तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि मैंने तुम्हारी

---

1. मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 9, पृ० 69
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 153
3. इब्ने साद, वही,
4. हैसमी, भाग 9, पृ० 101, 102

शादी ऐसे आदमी से की है जो मेरी उम्मत में सबसे पुराने इस्लाम लाने वाले, सबसे ज़्यादा इल्म वाले और सबसे ज़्यादा बुर्दबार हैं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह की क़सम ! जो आयत भी नाज़िल हुई उसके बारे में मुझे मालूम है कि किस मामले में नाज़िल हुई? और कहां नाज़िल हुई? और किन लोगों के बारे में नाज़िल हुई? मेरे रब ने मुझे समझदार दिल और ख़ूब बोलने वाली फ़सीह ज़ुबान दी है।[1]

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उस मुश्किल मस्अले से अल्लाह की पनाह मांगते थे, जिसके हल के लिए हज़रत अबू हसन यानी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु मौजूद न हों।[2]

हज़रत मस्रूक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जो सूरः भी नाज़िल हुई, मुझे मालूम है कि वह किस बारे में नाज़िल हुई? अगर मुझे मालूम हो जाए कि कोई आदमी मुझसे ज़्यादा अल्लाह की किताब को जानने वाला है और ऊंट और सवारियां मुझे उस तक पहुंचा सकती हैं, तो मैं उसके पास ज़रूर जाऊंगा।[3]

हज़रत मस्रूक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा की मज्लिसों में बहुत बैठा हूं। मैंने उन्हें (दीनी फ़ैज़ान में) तालाब की तरह पाया। किसी तालाब से एक आदमी प्यास बुझाता है और किसी तालाब से दो और किसी से दस और किसी से सौ आदमी अपनी प्यास बुझाते हैं और कुछ तालाब इतने बड़े होते हैं कि सारी ज़मीन वाले उससे अपनी प्यास बुझा लें। मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को उसी बड़े तालाब

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 154
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 154,
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 159,

की तरह पाया। (उनसे सारी दुनिया अपनी प्यास बुझाती थी।)[1]

हज़रत ज़ैद बिन वह्ब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक दिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बैठे हुए थे कि सामने से हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु आए। जब हज़रत उमर रज़ि० ने उन्हें आते हुए देखा तो फ़रमाया, यह दीन की समझ और इल्म से भरी हुई कोठी हैं।

हज़रत असद बिन वदाआ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़िक्र फ़रमाया और फ़रमाया, यह तो इल्म से भरी हुई कोठी है और उन्हें क़ादसिया भेजकर मैंने क़ादसिया वालों को अपने पर तर्जीह दी है।[2]

हज़रत अबुल बख़्तरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हम लोग हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में गए और हम उनसे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० के बारे में पूछने लगे। उन्होंने फ़रमाया, किस सहाबी के बारे में पूछते हो? हमने कहा, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में हमें कुछ बता दें। उन्होंने फ़रमाया, उन्होंने क़ुरआन व हदीस का इल्म हासिल किया और इल्म की इंतिहा को पहुंच गए और यही बात उनके ज़्यादा इल्म वाला होने के लिए काफ़ी है।

फिर हमने अर्ज़ किया, हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में कुछ फ़रमा दें, फ़रमाया, उन्हें इल्म में अच्छी तरह रंगा गया, फिर इल्म में अच्छे तरह रंगे होकर बाहर निकले, फिर हमने अर्ज़ किया, हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के बारे में कुछ बता दें। फ़रमाया, वे ऐसे मोमिन हैं जो भूल गए थे और जब उन्हें याद दिलाया गया तो उन्हें याद आ गया था।

फिर हमने अर्ज़ किया, हमें हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० के बारे में कुछ फ़रमा दें, फ़रमाया, वह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में मुनाफ़िक़ों को सबसे ज़्यादा जानने वाले थे। फिर हमने अर्ज़

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 159,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 161,

किया, हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में कुछ बता दें। फ़रमाया, उन्होंने इल्म तो ख़ूब अच्छी तरह हासिल किया था और ख़ूब याद था, लेकिन फिर उसके फैलाने में कामियाब न हो सके। (आख़िर में तबियत में सख़्ती ज़्यादा हो गई थी।)

फिर हमने अर्ज़ किया, हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में कुछ बताएं। फ़रमाया, उन्होंने पहला इल्म भी हासिल किया था (जो पहले नबी लेकर आए थे) और बाद वाला इल्म भी हासिल किया (जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लेकर आए थे।) वह इल्म का ऐसा समुन्दर हैं, जिसकी गहराई का अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता और वह हमारे घराने में से हैं।

फिर हमने अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! अब आप अपने बारे में कुछ बता दें, फ़रमाया, तुम लोग असल में यह बात पूछना चाहते थे। मैं जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुछ पूछता तो आप उसका जवाब इर्शाद फ़रमा देते और जब मैं ख़ामोश हो जाता, तो आप खुद से बात की शुरुआत फ़रमाते।[1]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु मुक़्तदा थे और अल्लाह के फ़रमांबरदार थे और सब तरफ़ से यकसू होकर एक अल्लाह के हो गए थे और वह मुश्रिकों में से नहीं थे। (हज़रत फ़रवा बिन नौफ़ुल अशजई कहते हैं) मैंने अर्ज़ किया, अबू अब्दुर्रहमान यानी हज़रत इब्ने मस्ऊद से ग़लती हो गई है। ये लफ़्ज़ तो अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बारे में इस्तेमाल फ़रमाए हैं—

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ حَنِيفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ (سورت نحل آیت ۱۲۰)

'बेशक इब्राहीम बड़े मुक़्तदा थे, अल्लाह के फ़रमांबरदार थे, बिल्कुल एक तरफ़ के हो रहे थे और वह शिर्क करने वालों में से न थे।'

(सूरः नह्ल, आयत 120)

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 162,

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने दोबारा इर्शाद फ़रमाया, हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० मुक़्तदा थे और अल्लाह के फ़रमांबदार थे और सब तरफ़ से यकसू होकर एक अल्लाह के हो गए थे और वह मुश्रिकों में से न थे, इस पर मैं समझा कि वह हज़रत मुआज़ रज़ि० के बारे में ये लफ़्ज़ जान-बूझ कर इस्तेमाल कर रहे हैं। इस पर मैं ख़ामोश हो गया।

फिर उन्होंने फ़रमाया, क्या तुम जानते हो, लफ़्ज़ उम्मत का क्या मतलब है? लफ़्ज़ क़ानित का क्या मतलब है? मैंने कहा, अल्लाह ही जानते हैं, (मैं नहीं जानता।) फ़रमाया, उम्मत वह इंसान है जो लोगों को भलाई और ख़ैर सिखाए और क़ानित वह है जो अल्लाह और रसूल का फ़रमांबरदार हो, तो हज़रत मुआज़ रज़ि० लोगों को ख़ैर सिखाया करते थे और अल्लाह और रसूल के फ़रमांबरदार थे।[1]

हज़रत मसरूक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० को ग़ौर से देखा तो मैंने देखा कि सहाबा रज़ि० का इल्म छः लोगों पर पहुंच कर ख़त्म हो गया, हज़रत उमर, हज़रत अली, हज़रत अब्दुल्लाह, हज़रत मुआज़, हज़रत अबुद्दर्दा और हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हुम। फिर मैंने इन छः हज़रात को ग़ौर से देखा तो इनका इल्म हज़रत अली रज़ि० और हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० पर पहुंच कर ख़त्म हो गया।[2]

हज़रत मस्रूक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं मदीना गया और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० के बारे में पूछा, तो मुझे हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु मज़बूत इल्म वालों में से नज़र आए।[3]

हज़रत मस्रूक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अगर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 165,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 167
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 176,

अन्हुमा (छोटी उम्र के न होते और) हमारी उम्र को पा लेते तो हममें से कोई आदमी उनके (इल्म के) दसवें हिस्से को न पा सकता। इस रिवायत में हज़रत नज़्र रिवायत करने वाले ने यह भी बढ़ाया है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० क़ुरआन के बेहतरीन तर्जुमान हैं।[1]

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि ज़्यादा इल्म की वजह से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को समुन्दर कहा जाता था।[2]

हज़रत लैस बिन अबू सुलैम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत ताऊस रहमतुल्लाहि अलैहि से कहा, इसकी क्या वजह है कि आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अकाबिर (बड़े) सहाबा रज़ि० को छोड़कर इन नव-उम्र (सहाबी) यानी हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के साथ हर वक़्त रहते हैं? उन्होंने कहा, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सत्तर सहाबा रज़ि० को देखा कि जब उनमें किसी चीज़ के बारे में इख़्तिलाफ़ हो जाता तो वे हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० के क़ौल की तरफ़ रुजू करते।[3]

हज़रत आमिर बिन साद बिन अबी वक़्क़ास रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने अपने वालिद (हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु) को फ़रमाते हुए सुना कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से ज़्यादा हाज़िर दिमाग़, ज़्यादा समझदार, ज़्यादा इल्म वाला और ज़्यादा बुर्दबार कोई नहीं देखा और मैंने देखा है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु उन्हें मुश्किल मस्अलों के लिए बुलाया करते और उनसे फ़रमाते, तैयार हो जाओ, यह मुश्किल मस्अला तुम्हारे पास आया है। (और उनके सामने वह मुश्किल मस्अला रखते) फिर हज़रत उमर रज़ि० उन्हीं के क़ौल पर फ़ैसला कर देते, हालांकि उनके

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 181
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 181,
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 181,

आस-पास बहुत-से बद्री मुहाजिर और अंसारी सहाबा रज़ि० बैठे हुए होते ।[1]

हज़रत अबू ज़िनाद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुख़ार हो गया, तो हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु उनके पास बीमारपुर्सी के लिए तश्रीफ़ ले गए और फ़रमाया, तुम्हारी बीमारी की वजह से हमारा बड़ा नुक़्सान हो रहा है। अल्लाह ही से मदद तलब करता हूं ।[2]

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को (अल्लाह की तरफ़ से) बड़ी समझ, अक़्ल और बहुत इल्म दिया गया था। मैंने कभी नहीं देखा कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने किसी (की राय) को उन (की राय) पर तर्जीह दी हो ।[3]

हज़रत मुहम्मद बिन उबई बिन काब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बैठे हुए थे, फिर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० उठकर चले गए, तो मैंने हज़रत उबई बिन काब रज़ि० को फ़रमाते हुए सुना कि यह इस उम्मत के बहुत बड़े आलिम बन जाएंगे, क्योंकि इन्हें (अल्लाह की तरफ़ से) अक़्ल और समझ भी ख़ूब मिली है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके लिए यह दुआ फ़रमाई है कि अल्लाह उन्हें दीन की समझ अता फ़रमाए ।[4]

हज़रत ताऊस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा तमाम लोगों में इल्म के एतबार से ऐसे ऊंचे थे, जैसे खजूर के छोटे पेड़ों में लम्बा पेड़ होता है ।[5]

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 183,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 185,
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 185,
4. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 185,
5. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 185,

हज़रत अबू वाइल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं और मेरा साथी हज पर गए। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा हज के अमीर थे। वह सूरः नूर पढ़ने लगे और साथ के साथ उसकी तफ़्सीर करने लगे जिसे, सुनकर मेरे साथी ने कहा, 'सुब्हानल्लाह', इस आदमी के सर से क्या कुछ निकल रहा है? अगर तुर्क लोग इसे सुन लें तो मुसलमान हो जाएं।[1]

दूसरी रिवायत में यह है कि हज़रत अबू वाइल कहते हैं। (तफ़्सीर सुनकर) मैंने कहा, इन जैसी बातें न तो मैंने किसी आदमी से सुनी हैं और न कहीं देखी हैं। अगर फ़ारस और रूम वाले इसे सुन लेते, तो मुसलमान हो जाते।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उन्होंने मुझसे एक मस्अला पूछा, जो उन्हें यमन से हज़रत याला बिन उमैया रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा था, मैंने उन्हें इसका जवाब दिया तो फ़रमाया, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि तुम नुबूवत के घराने से बोलते हो।[2]

हज़रत अता रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि कुछ लोग हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के पास अशआर के लिए आते, कुछ लोग नसब मालूम करने आते और कुछ लोग अरब के वाक़िए मालूम करने आते, वे हर तरह के लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होते और जिस तरह चाहते, ख़ूब बातें करते।[3]

हज़रत उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, कई अच्छी ख़ूबियों की वजह से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा तमाम लोगों पर बरतरी रखते थे, वह पुराने इल्मों

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 537,
2. इब्ने साद, भाग 2, पृ० 184
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 182

को ख़ूब जानते थे और जब उनके मश्विरे की ज़रूरत होती तो बहुत समझदारी का मश्विरा देते और बुर्दबारी और फ़ैयाज़ी उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। मैंने कोई आदमी ऐसा नहीं देखा जो उनसे ज़्यादा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों को और हज़रत अबूबक्र रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि० और हज़रत उस्मान रज़ि० के फ़ैसलों को जानने वाला हो और उनसे ज़्यादा समझदारी की राय वाला हो और अशआर को, अरबी लुग़त को, क़ुरआन की तफ़्सीर को, हिसाब और मीरास को और पुराने वाक़िओं को उनसे ज़्यादा जानने वाला हो और उनसे ज़्यादा ठीक राय वाला हो। किसी दिन वह अपनी मज्लिस में बैठते तो सिर्फ़ दीन की समझ के बारे में बात करते और किसी दिन सिर्फ़ क़ुरआन की तफ़्सीर के बारे में बात करते और किसी दिन सिर्फ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लड़ाइयों के बारे में बात करते और मैंने यही देखा कि जो आलिम भी उनकी मज्लिस में आया, वह आख़िरकार उन (की इल्मी अज़्मत) के सामने ज़रूर झुक गया और जो भी उनसे कुछ पूछने आया, उसे अपने सवाल का जवाब ज़रूर मिला।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुहाजिर और अंसारी बड़े-बड़े सहाबा के साथ हर वक़्त रहा करता था और मैं उनसे हुज़ूर सल्ल० की लड़ाइयों के बारे में और उन लड़ाइयों के मुताल्लिक़ उतरने वाले क़ुरआन के बारे में ख़ूब सवाल करता था और मैं उनमें से जिसके पास जाता, वह मेरे आने से बहुत ख़ुश होता, क्योंकि मैं हुज़ूर सल्ल० का रिश्तेदार (चचेरा भाई) था। हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु मजबूत और पक्के इल्म वालों में से थे। मैंने उनसे एक दिन मदीना में उतरने वाली सूरतों के बारे में पूछा, तो उन्होंने फ़रमाया, मदीना में सत्ताईस सूरतें उतरीं और बाक़ी मक्का में।[2]

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 183
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 186,

हज़रत इक्रिमा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाते हुए सुना कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा गुज़रे हुए इल्मों और वाक़िओं को हम सबसे ज़्यादा जानने वाले हैं और जो नया मस्अला पेश आ जाए और उसके बारे में क़ुरआन व हदीस में कुछ न आया हो, उसके बारे में वह सबसे ज़्यादा दीनी समझ रखने वाले हैं।

हज़रत इक्रिमा रज़ि० कहते हैं, मैंने यह बात हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० को बताई तो उन्होंने फ़रमाया, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० के पास बहुत इल्म है, क्योंकि वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हलाल व हराम के बारे में ख़ूब पूछा करते थे। (यानी हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० उनकी फ़ज़ीलतों को मान रहे हैं)[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हज की रातों में देखा कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के आस-पास बहुत-से हलक़े हैं और उनसे हज के मनासिक (रस्मों) के बारे में लोग ख़ूब पूछ रहे हैं तो हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, अब जितने सहाबा रज़ि० बाक़ी रह गए हैं, यह उनमें सबसे ज़्यादा हज के मनासिक को जानने वाले हैं।[2]

हज़रत याक़ूब बिन ज़ैद रहमतुल्लाहि अलैहि अपने वालिद से नक़ल करते हैं कि जब हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा को हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के इंतिक़ाल की ख़बर मिली तो उन्होंने एक हाथ दूसरे हाथ पर मारा और फ़रमाया, लोगों में सबसे ज़्यादा इल्म वाले और सबसे ज़्यादा बुर्दबार इंसान का इंतिक़ाल हो गया है और उनके इंतिक़ाल से इस उम्मत का ऐसा नुक़्सान हुआ है, जिसकी भरपाई कभी नहीं हो सकेगी।[3]

हज़रत अबूबक्र बिन मुहम्मद बिन अम्र बिन हज़्म रहमतुल्लाहि

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 186,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 184,
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 186,

अलैहि कहते हैं, जब हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का इंतिक़ाल हुआ तो हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, आज उस शख़्सियत का इंतिक़ाल हो गया जिसके इल्म के पूरब से लेकर पच्छिम तक के तमाम लोग मुहताज थे।[1]

हज़रत अबू कुलसूम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा दफ़न हो गए तो हज़रत इब्ने हनफ़ीया रहमतुल्लाहि अलैहि ने कहा, इस उम्मत के रब्बानी आलिम का इंतिक़ाल हो गया।[2]

हज़रत अम्र बिन दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा नवउम्र फ़ुक़हा में गिने जाते थे।[3]

हज़रत ख़ालिद बिन मादान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि अब मुल्क शाम में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में से कोई सहाबी हज़रत उबादा बिन सामित और हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु अन्हुमा से ज़्यादा भरोसेमंद, ज़्यादा दीनी समझ रखने वाला और उनसे ज़्यादा पसंदीदा बाक़ी नहीं रहा।[4]

हज़रत हंज़ला बिन अबी सुफ़ियान रहमतुल्लाहि अलैहि अपने उस्तादों से यह नक़ल करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नवउम्र सहाबा में से कोई सहाबी हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से ज़्यादा दीन की समझ रखने वाला नहीं है।[5]

मरवान बिन हकम के मुंशी अबू ज़ोअज़आ कहते हैं कि मरवान ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और मुझे तख़्त के पीछे बिठा दिया। मरवान उनसे पूछने लगा और मैं उनके जवाब लिखने

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 187,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 183,
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 187
4. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 188,
5. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 118,

लगा। जब एक साल हो गया तो मरवान ने उन्हें बुलाकर परदे के पीछे बिठाया और उनसे वही पिछले साल वाले सवाल करने लगा। उन्होंने ठीक वही पिछले साल वाले जवाब दिए, न कोई हर्फ़ कम किया और न ज़्यादा और न आगे किया और न पीछे।[1]

हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० को किसी चीज़ में शक हुआ और उन्होंने उसके बारे में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा, तो उन्हें उनके पास उस चीज़ का इल्म ज़रूर मिला।[2]

हज़रत क़बीसा बिन ज़ुवैब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा जानने वाली थीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अकाबिर सहाबा उनसे पूछा करते थे।[3]

हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से ज़्यादा हुज़ूर सल्ल० की सुन्नतों को जानने वाला और ज़रूरत के मौक़े पर उनसे ज़्यादा समझदारी की राय देने वाला, आयत के उतरने की वजह को और मीरास को उनसे ज़्यादा जानने वाला कोई नहीं देखा।[4]

हज़रत मसरूक़ रहमतुल्लाहि अलैहि से पूछा गया, क्या हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा मीरास के इल्म को अच्छी तरह जानती थीं? उन्होंने कहा, जी हां, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बुज़ुर्ग अकाबिर सहाबा को देखा कि वह हज़रत आइशा रज़ि० से मीरास के बारे में पूछा करते थे।[5]

---

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 510
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 189
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 189
4. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 189
5. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 189, हैसमी, भाग 9, पृ० 242

हज़रत महमूद बिन लबीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तमाम पाक बीवियों को हुज़ूर सल्ल० की बहुत-सी हदीसें याद थीं, लेकिन हज़रत आइशा और हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा जैसी कोई न थी और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत उमर और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुमा के ज़माने में फ़त्वा दिया करती थीं और फिर इन्तिक़ाल तक उनका यह मश्ग़ला रहा। अल्लाह उन पर रहमत नाज़िल फ़रमाए और हुज़ूर सल्ल० के अकाबिर सहाबा हज़रत उमर और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुमा हुज़ूर सल्ल० के बाद उनके पास आदमी भेजकर सुन्नतें पूछा करते थे।[1]

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, अल्लाह की क़सम! मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से ज़्यादा फ़सीह, बलीग़ और उनसे ज़्यादा अक़्लमंद कोई ख़तीब नहीं देखा।[2]

हज़रत उर्वः रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने कोई औरत ऐसी नहीं देखी जो हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से ज़्यादा तिब्ब, फ़िक़्ह और अशआर को जानने वाली हो।[3]

हज़रत उर्वः रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमत में अर्ज़ किया, मैं आपके मामले में जितना सोचता हूं, उतना ही मुझे ताज्जुब होता है। आप मुझे तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा दीन की समझ रखने वाली नज़र आती हैं, तो मैं कहता हूं, हममें क्या बात है? आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहतरमा बीवी हैं और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की साहबज़ादी हैं। (आपको दीन की सबसे ज़्यादा समझ वाला होना ही चाहिए) आप मुझे अरब की लड़ाइयों को, उनके नसब नामों को और उनके अशआर को जानने वाली नज़र आती हैं तो मैं कहता हूं इसमें

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 189,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 243
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 242

क्या बात है? आपके वालिद (हज़रत अबूबक्र रज़ि०) क़ुरैश के बहुत बड़े आलिम थे (इसलिए उनकी बेटी को ऐसा होना ही चाहिए) लेकिन मुझे इस बात पर ताज्जुब है कि आप तिब भी जानती हैं। यह आपने कहां से सीख ली?

उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर (प्यार से नाम बदलकर) कहा, ऐ उरैया! जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीमारियां ज़्यादा हो गईं, तो अरब व अजम के अतिब्बा (डाक्टर) उनके पास दवाइयां भेजने लगे। इस तरह मैंने इल्मे तिब (डाक्टरी) सीख लिया।

अहमद की रिवायत में यह है कि मैं इन दवाइयों से हुज़ूर सल्ल० का इलाज किया करती थी। यहां से मैंने तिब्ब सीखी। (हज़रत उर्वः हज़रत आइशा रज़ि० के भांजे थे।)[1]

रब्बानी उलेमा और बुरे उलेमा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने साथियों से फ़रमाया, तुम इल्म के चश्मे, हिदायत के चिराग़, अक्सर घरों में रहने वाले, रात के चिराग़, नए दिल वाले, पुराने कपड़ों वाले बनो, आसमान में पहचाने जाओगे और ज़मीन वालों पर पोशीदा (छिपे) रहोगे।[2]

अबू नुऐम में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में ज़मीन वालों पर पोशीदा रहने के बजाए ये लफ़्ज़ हैं कि इन सिफ़तों की वजह से तुम्हारा ज़मीन पर भी भला ज़िक्र होगा।

हज़रत वहब बिन मुनब्बिह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को ख़बर मिली कि बाब बनी सहम के पास कुछ लोग तक़दीर के बारे में झगड़ रहे हैं, वह उठकर उनकी तरफ़ चले और अपनी छड़ी हज़रत इक्रिमा को दी और अपना एक हाथ उस छड़ी पर रखा और दूसरा हाथ हज़रत ताऊस पर रखा। जब उनके पास

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 242,
2. जामिउल इल्म, भाग 1, पृ० 126, हुलीया, भाग 1, पृ० 77

पहुंचे तो उन लोगों ने ख़ुश आमदीद कहा और अपनी मज्लिस में उनके बैठने के लिए जगह बनाई, लेकिन वह बैठे नहीं, बल्कि उनसे फ़रमाया, तुम अपना नसब नामा बयान करो, ताकि मैं तुम्हें पहचान लूं।

उन सबने या उनमें से कुछ ने अपना नसब नामा बयान किया, तो फ़रमाया, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि अल्लाह के कुछ बन्दे ऐसे हैं जो गूंगे और बोलने से आजिज़ नहीं हैं, बल्कि अल्लाह के डर से ख़ामोश रहते हैं। यही लोग फ़साहत वाले, फ़ज़ीलत वाले, अल्लाह की क़ुदरत के वाक़िओं को जानने वाले उलेमा हैं। जब इन्हें अल्लाह की अज़्मत का ध्यान आता है, तो इनकी अक़्लें उड़ जाती हैं, इनके दिल टूट जाते हैं और इनकी ज़ुबानें बन्द हो जाती हैं। जब इनको इस कैफ़ियत से इफ़ाक़ा होता है तो वे पाकीज़ा आमाल के ज़रिए से अल्लाह की तरफ़ तेज़ी से चलते हैं, हालांकि वह अक़्लमंद और ताक़तवर होंगे, लेकिन फिर भी वे अपने आपको कोताही करने वालों में गिनेंगे और इसी तरह वे नेक और ख़ताओं से पाक होंगे, लेकिन अपने आपको ज़ालिम और ख़ताकार लोगों में गिनेंगे और अल्लाह के लिए ज़्यादा (आमाल और क़ुरबानी) को ज़्यादा नहीं समझेंगे और अल्लाह के लिए कम पर वे राज़ी नहीं होंगे और आमाल में अल्लाह के सामने नख़रे नहीं करेंगे। तुम उन्हें जहां भी मिलोगे, वे एहतिमाम और फ़िक्र से चलने वाले, डरने वाले और कपकपाने वाले होंगे।

हज़रत वह्ब फ़रमाते हैं, ये बातें इर्शाद फ़रमा कर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ वहां से उठे और अपनी मज्लिस में वापस तशरीफ़ ले आए।[1]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अगर इल्म वाले इल्म की हिफ़ाज़त करते और जो इल्म के अह्ल हैं, उन्हीं को इल्म देते तो अपने ज़माने वालों के सरदार हो जाते, लेकिन उन्होंने दुनिया वालों के सामने अपना इल्म रख दिया ताकि उनकी दुनिया में से कुछ हासिल कर लें। इस वजह से इल्म वाले दुनिया वालों की निगाह में बे-क़ीमत हो गए। मैंने तुम्हारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना

1. हुलीया, भाग 1, पृ॰ 325

कि जो तमाम फ़िक्रों की एक फिक्र यानी आख़िरत की फ़िक्र बना देगा, अल्लाह उसकी तमाम फ़िक्रों की किफ़ायत फ़रमाएंगे और जिसे दुन्यवी फ़िक्रों ने परागन्दा कर दिया तो अल्लाह को भी इस बात की परवाह नहीं होगी कि वह दुनिया की किस घाटी में हलाक हो गया।[1]

हज़रत सुफ़ियान बिन उऐना रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हमें हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की तरफ़ से उनका यह इर्शाद पहुंचा कि अगर इल्म वाले, इल्म को उसके हक़ के साथ लेते और उसके मुनासिब जो आदाब हैं, उन्हें अख़्तियार करते, तो अल्लाह, उसके फ़रिश्ते और नेक लोग उनसे मुहब्बत करते और लोगों के दिलों में उनकी हैबत होती, लेकिन उन्होंने इल्म के ज़रिए दुनिया हासिल करने की कोशिश की, जिसकी वजह से वे अल्लाह के यहां मब्गूज़ बन गए और लोगों की निगाह में भी बे-हैसियत हो गए।[2]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुम्हारा उस वक़्त क्या हाल होगा, जब तुममें एक ज़बरदस्त फ़ित्ना उठेगा, जिसमें कम उम्र तो बढ़ जाएगा और ज़्यादा उम्र वाला बूढ़ा हो जाएगा और नए तरीक़े ईजाद करके अख़्तियार कर लिए जाएंगे और अगर किसी दिन उन्हें बदलने (और सही और मस्नून तरीक़ा लाने) की कोशिश की जाएगी तो लोग कहने लगेंगे, यह तो बिल्कुल अजनबी और ऊपरी तरीक़ा है।

इस पर लोगों ने पूछा, ऐसा फ़ित्ना कब होगा? हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने फ़रमाया, जब तुम्हारे अमीन लोग कम हो जाएंगे और अमीर और हाकिम ज़्यादा हो जाएंगे और तुम्हारे दीन की समझ रखने वाले कम हो जाएंगे और तुम्हारे कुरआन पढ़ने वाले ज़्यादा हो जाएंगे और दीन के ग़ैर यानी दुनिया के लिए दीनी इल्म हासिल किया जाएगा और आख़िरत वाले अमल से दुनिया तलब की जाएगी।[3]

---

1. कंज़, भाग 5, पृ० 243, जामिउल इल्म, भाग 1, पृ० 187,
2. इल्म, भाग 1, पृ० 188
3. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 82, इल्म, भाग 1, पृ० 188,

और एक रिवायत में यह है कि नए तरीक़े गढ़े जाएंगे, जिस पर लोग चलने लगेंगे और जब उसमें कुछ तब्दीली की जाने लगेगी, तो वे लोग कहेंगे, हमारा जाना-पहचाना तरीक़ा बदला जा रहा है और यह भी है कि तुम्हारे दीन की समझ रखने वाले कम हो जाएंगे और तुम्हारे अमीर व हाकिम ख़ज़ाने भरने लगेंगे।[1]

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, यह बात अच्छी तरह जान लो कि ये हदीसें, जिनमें असल यह है कि उनके ज़रिए से अल्लाह की रज़ामन्दी हासिल की जाए, अगर उन्हें कोई दुनिया का सामान हासिल करने के लिए सीखेगा, तो वह कभी जन्नत की ख़ुश्बू नहीं पा सकेगा।[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत काब रहमतुल्लाहि अलैहि (जो कि तौरात के भी बड़े आलिम थे) से पूछा, जब उलेमा इल्म को याद कर लेंगे और अच्छी तरह समझ लेंगे, तो फिर कौन-सी चीज़ उनके दिलों से इल्म को ले जाएगी? हज़रत काब ने कहा, दो चीज़ें, एक तो दुनिया का लालच, दूसरे लोगों के सामने अपनी ज़रूरतें ले जाना।[3]

एक बार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन फ़ित्नों का ज़िक्र किया जो आख़िरी ज़माने में होंगे, तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे पूछा, ऐ अली रज़ि० ! ये फ़ित्ने कब होंगे? फ़रमाया, जब ग़ैर दीन यानी दुनिया के लिए दीनी इल्म हासिल किया जाएगा और अमल के ग़ैर यानी इज़्ज़त और माल के लिए इल्म सीखा जाएगा और आख़िरत के अमल से दुनिया तलब की जाएगी।[4]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैं तुम्हारे बारे में दो आदमियों से डरता हूं, एक तो वह आदमी जो क़ुरआन की ग़लत तफ़्सीर करेगा और दूसरे वह आदमी जो मुल्क के बारे में अपने भाई से

---

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 82, इल्म, भाग 1, पृ० 188,
2. इल्म, भाग 1, पृ० 187,
3. इल्म, भाग 2, पृ० 6
4. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 82,

आगे बढ़ने की कोशिश करेगा।[1]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, बसरा का वफ़्द हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया, उनमें अह्नफ़ बिन क़ैस भी थे और सबको तो हज़रत उमर रज़ि० ने जाने दिया, लेकिन हज़रत अह्नफ़ बिन क़ैस को रोक लिया और उन्हें एक साल रोके रखा। इसके बाद फ़रमाया, तुम्हें मालूम है मैंने तुम्हें क्यों रोका था? मैंने इस वजह से रोका था कि हमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर मुनाफ़िक़ से डराया जो आलिमाना ज़ुबान वाला हो। मुझे डर हुआ कि शायद तुम भी उनमें से हो, लेकिन (मैंने एक साल रखकर देख लिया कि) इनशाअल्लाहु तुम उनमें से नहीं हो।[2]

हज़रत अबू उस्मान नह्दी कहते हैं, मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को मिंबर पर फ़रमाते हुए सुना कि उस मुनाफ़िक़ से बचो, जो आलिम हो। लोगों ने पूछा, मुनाफ़िक़ कैसे आलिम हो सकता है? फ़रमाया, बात तो हक़ कहेगा, लेकिल अमल मुन्करात (ग़लत बातों) पर करेगा।[3]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हम यह बात कहा करते थे कि इस उम्मत को वह मुनाफ़िक़ हलाक करेगा जो ज़ुबान का आलिम होगा।[4]

हज़रत अबू उस्मान नह्दी कहते हैं, मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को मिंबर पर यह फ़रमाते हुए सुना कि इस उम्मत पर सबसे ज़्यादा डर उस मुनाफ़िक़ से है जो आलिम हो, लोगों ने पूछा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मुनाफ़िक़ कैसे आलिम हो सकता है? फ़रमाया, वह ज़ुबान का तो आलिम होगा, लेकिन दिल और अमल का जाहिल होगा।[5]

1. इल्म, भाग 2, पृ० 194, कंज़, भाग 5, पृ० 233,
2. कंज़, भाग 5, पृ० 232,
3. बैहक़ी,
4. इब्ने असाकिर
5. कंज़, भाग 5, पृ० 233,

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, ऐसी जगहों से बचो जहां खड़े होने से इंसान फ़ित्नों में पड़ जाता है। किसी ने पूछा, ऐ अबू अब्दुल्लाह ! फ़ित्नों की ये जगहें कौन-सी हैं? फ़रमाया, अमीरों और हाकिमों के दरवाज़े। आदमी किसी हाकिम या गवर्नर के पास जाता है और ग़लत बात में उसकी तस्दीक़ करता है और उसकी तारीफ़ में ऐसी ख़ूबियां ज़िक्र करता है जो उसमें नहीं हैं।

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जैसे ऊंटों के बैठने की जगह में ऊंट होते हैं, ऐसे बादशाहों के दरवाज़ों पर फ़ित्ने होते हैं। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, तुम उन बादशाहों से जितनी दुनिया हासिल कर लोगे, वे बादशाह तुम्हारे दीन में उतनी कमी कर देंगे या उससे दोगुनी कमी कर देंगे।[1]

इल्म का चला जाना और उसे भूल जाना

हज़रत औफ़ बिन मालिक अशजई रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आसमान की तरफ़ देखा और फ़रमाया, इस वक़्त मुझे वह वक़्त बताया गया है जिसमें इल्म उठा लिया जाएगा। इब्ने लबीद नामी एक अंसारी सहाबी रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जब इल्म किताबों में लिख दिया जाएगा और दिल उसे समझ लेंगे, और महफ़ूज़ कर लेंगे तो इल्म कैसे उठा लिया जाएगा?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं तो तुम्हें मदीना वालों में सबसे ज़्यादा समझदार आदमी समझता था, फिर हुज़ूर सल्ल० ने इस बात का ज़िक्र किया कि यहूदियों और ईसाइयों के पास अल्लाह की किताब है, लेकिन फिर भी गुमराह हैं।

रिवायत करने वाले कहते हैं, फिर मेरी हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हुई तो, मैंने हज़रत औफ़ बिन मालिक

1. इल्म, भाग 1, पृ० 167

रज़ि० वाली हदीस उन्हें सुनाई। हज़रत शद्दाद रज़ि० ने फ़रमाया, हज़रत औफ़ रज़ि० ने ठीक कहा। क्या मैं तुम्हें वह चीज़ न बताऊं जो इल्म में सबसे पहले उठाई जाएगी? मैंने कहा, ज़रूर। फ़रमाया ख़ुशूअ, यहां तक कि कोई ख़ुशूअ वाला नज़र न आएगा।[1]

इब्ने अब्दुल बर्र की रिवायत में यह है कि एक अंसारी सहाबी ने अर्ज़ किया, जिन्हें ज़ियाद बिन लबीद कहा जाता था, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इल्म हममें से उठा लिया जाएगा, जबकि हममें अल्लाह की किताब होगी और हम वह अपने बेटों और औरतों को सिखाएंगे।

एक रिवायत में यह है कि हज़रत शद्दाद ने फ़रमाया, क्या तुम जानते हो कि इल्म के उठाए जाने की क्या शक्ल होगी? मैंने कहा, मैं तो नहीं जानता। फ़रमाया, इल्म के बरतन यानी उलेमा उठ जाएंगे और क्या तुम जानते हो कि इल्म की कौन-सी सिफ़त उठा ली जाएगी? मैंने कहा, नहीं जानता। फ़रमाया, ख़ुशूअ ! कोई ख़ुशूअ वाला नज़र नहीं आएगा।[2]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह तौरात और इंजील यहूद व नसारा के पास है, लेकिन उनके किस काम आ रही है?

हज़रत वहशी रज़ि० की रिवायत में है कि वे यहूदी और ईसाई तौरात व इंजील की तरफ़ बिल्कुल तवज्जोह नहीं करते हैं और हज़रत इब्ने लबीद रज़ि० की रिवायत में है कि इन यहूदियों और ईसाइयों को तौरात और इंजील से कोई फ़ायदा नहीं हो रहा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा, तुम लोग जानते हो कि इस्लाम कैसे कम होगा? लोगों ने कहा, जैसे कपड़े का रंग और जानवर का मोटापा कम हो जाता है और ज़्यादा छिपाए और दबाए रखने से दिरहम कम हो जाता है।

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने फ़रमाया, इस्लाम के कम होने की भी

1. हाकिम, भाग 1, पृ० 99, मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 1, पृ० 200, इल्म, भाग 1, पृ० 152
2. हाकिम, तबरानी

यही शक्ल होगी, लेकिन उसके कम होने की इससे ज़्यादा बड़ी वजह उलेमा का इंतिक़ाल कर जाना और दुनिया से चले जाना है।[1]

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु के जनाज़े में शरीक था, जब उनको क़ब्र में दफ़न कर दिया गया तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, ऐ लोगो ! जो यह जानना चाहता है कि इल्म कैसे चला जाएगा, तो यह इल्म इस तरह जाएगा, अल्लाह की क़सम ! आज बहुत ज़्यादा इल्म चला गया।[2]

हज़रत अम्मार बिन अबी अम्मार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु का इंतिक़ाल हुआ तो हम झोंपड़ी के साए में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमत में जाकर बैठ गए। उन्होंने फ़रमाया, इस तरह इल्म चला जाता है, आज बहुत ज़्यादा इल्म दफ़न हो गया।[3]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया, यों इल्म चला जाता है। एक आदमी एक चीज़ को जानता है, उस चीज़ को और कोई नहीं जानता। जब यह आदमी मर जाता है, तो जो इल्म उसके पास था, वह भी चला जाता है।[4]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, तुम जानते हो इल्म कैसे जाता है, उसके जाने की शक्ल यह है कि उलेमा ज़मीन से चले जाएं।[5]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं यह समझता हूं

---

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 202,
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 202,
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 177
4. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 177
5. मज्मा, भाग 1, पृ० 202

कि आदमी इल्म सीख कर भूल जाता है, इसकी वजह गुनाहों में पड़ा होना है।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, इल्म की आफ़त उसे भूल जाना है।[2]

ऐसे इल्म का दूसरों तक पहुंचाना, जिस पर ख़ुद अमल न कर रहा हो और नफ़ा न देने वाले इल्म से पनाह मांगना

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हमसे हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हमें यह इल्म दिया गया है, अब हम यह इल्म तुम तक पहुंचा रहे हैं, अगरचे हम इस पर ख़ुद न अमल कर रहे हों।[3]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْاَرْبَعِ مِنْ عِلْمٍ لَّا يَنْفَعُ وَ قَلْبٍ لَّا يَخْشَعُ وَ نَفْسٍ لَّا تَشْبَعُ وَ دُعَاءٍ لَّا يُسْمَعُ

'अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिनल अरबअि, मिन अिल्मिन ला यनफ़उ व क़ल्बि-ल्ला यख़शअु व नफ़्सिन ला तशबअु व दुआइन ला युस्मअु०'

(ऐ अल्लाह ! मैं चार चीज़ों से तेरी पनाह चाहता हूं, उस इल्म से जो नफ़ा न दे और उस दिल से जिसमें ख़ुशूअ न हो और उस नफ़्स से जो सेर न हो और उस दुआ से जो सुनी न जाए।)[4]

---

1. जामिउल इल्म, भाग 1, पृ० 108
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 131, हैसमी, भाग 1, पृ० 199, तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 92
3. कंज़, भाग 7, पृ० 24,
4. हाकिम, भाग 1, पृ० 401,

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को अल्लाह के ज़िक्र का कितना शौक़ था और वे किस तरह सुबह और शाम, दिन और रात, सफ़र और हज़र में ज़िक्र की पाबन्दी करते थे और वे किस तरह दूसरों को इसकी तर्ग़ीब देते थे और उसका शौक़ दिलाते थे और उनके अज़्कार कैसे थे

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अल्लाह के ज़िक्र की तर्ग़ीब देना

हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम एक सफ़र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जा रहे थे, इतने में मुहाजिरीन ने कहा कि जब सोने और चांदी के बारे में क़ुरआन नाज़िल हो चुका (जिसमें बताया गया कि जो लोग माल व दौलत इकट्ठी करें और ज़कात वग़ैरह न दें, अल्लाह के रास्ते में ख़र्च न करें, उन्हें दर्दनाक अज़ाब होगा) तो अब हमें किसी तरह पता चल जाए कि कौन-सा माल बेहतर है? इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अगर आप लोग कहो तो मैं आप लोगों को यह बात हुज़ूर सल्ल० से पूछ दूं। उन्होंने कहा, ज़रूर।

हज़रत उमर रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ चल दिए। मैं भी अपने

ऊंट को तेज़ दौड़ाता हुआ उनके पीछे चल पड़ा। हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अभी सोने और चांदी के बारे में क़ुरआन की आयतें नाज़िल हुई हैं, इस पर मुहाजिरीन कह रहे हैं, जब सोने और चांदी के बारे में क़ुरआन उतर चुका तो अब हमें किसी तरह पता चल जाए कि कौन-सा माल बेहतर है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम अपनी ज़ुबान को ज़िक्र करने वाला और दिल को शुक्र करने वाला बना लो और ऐसी मोमिन औरत से शादी करो, जो ईमान (वाले कामों) में तुम्हारी मदद करे, दूसरी रिवायत में यह है कि वह आख़िरत (वाले कामों) में तुम्हारी मदद करे।[1]

अल्लाह का फ़रमान है—

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ (سورت توبہ آیت ۳۴)

'जो लोग सोना-चांदी जमाकर कर रखते हैं उनको अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते, सो आप उनको एक बड़ी दर्दनाक सज़ा की ख़बर सुना दीजिए।' (सूरः तौबा, आयत 34)

इसके बारे में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन बार इर्शाद फ़रमाया, हलाकत हो सोने के लिए, हलाकत हो चांदी के लिए। यह फ़रमान हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० पर बड़ा गरां गुज़रा और उन्होंने अर्ज़ किया, अब हम किस चीज़ को माल बनाकर अपने पास रखें? इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, आगे पिछली हदीस से मुख़्तसर हदीस ज़िक्र की।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का के रास्ते में तशरीफ़ ले जा रहे थे। आपका गुज़र एक पहाड़ के पास से हुआ जिसे जुमदान कहा जाता है। आपने फ़रमाया, चलते रहो, यह जुमदान है। मुफ़र्रिदून आगे निकल

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 182,
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 351,

गए। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुफ़र्रिदून कौन लोग हैं? आपने फ़रमाया, अल्लाह का बहुत ज़्यादा ज़िक्र करने वाले मर्द और औरतें।[1]

तिर्मिज़ी में है कि सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुफ़र्रिदून कौन लोग हैं? आपने फ़रमाया, जो लोग अल्लाह के ज़िक्र में लगे रहते हों और ज़िक्र उनके सारे बोझ उतार देगा और वे क़ियामत के दिन बिल्कुल हल्के-फुल्के होकर अल्लाह के सामने हाज़िर होंगे।[2]

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जा रहे थे कि इतने में आपने इर्शाद फ़रमाया, कहां है आगे निकल जाने वाले? सहाबा ने अर्ज़ किया, कुछ लोग आगे जा चुके हैं और कुछ लोग पीछे रह गए हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, (सफ़र में आगे निकल जाना मुराद नहीं है, बल्कि) वे आगे निकल जाने वाले कहां हैं जो अल्लाह के ज़िक्र में लगे रहते हों? जो जन्नत के बाग़ों में चरना चाहता है, उसे चाहिए कि वह अल्लाह का ज़िक्र ज़्यादा करे।[3]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि क़ियामत के दिन अल्लाह के नज़दीक कौन-से बन्दे सबसे अफ़ज़ल दर्जा वाले होंगे? आपने फ़रमाया, जो अल्लाह का बहुत ज़्यादा ज़िक्र करने वाले होंगे। हज़रत अबू सईद रज़ि० फ़रमाते हैं, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह के रास्ते में लड़ाई लड़ने वालों से भी ज़्यादा अफ़ज़ल होंगे? आपने फ़रमाया, हां। अगर ग़ाज़ी अपनी तलवार कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन पर इतनी ज़्यादा चलाए कि वह टूट जाए और वह ख़ुद ख़ून में

1. मुस्लिम
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 59, मज्मा, भाग 10, पृ० 75,
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 75

रंगा जाए तो भी अल्लाह का बहुत ज़्यादा ज़िक्र करने वाले उससे दर्जे में अफ़ज़ल होंगे।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, किसी आदमी ने कोई अमल ऐसा नहीं किया जो अल्लाह के ज़िक्र से ज़्यादा अज़ाब से निजात देने वाला हो। किसी ने अर्ज़ किया कि क्या अल्लाह के रास्ते में जिहाद भी अल्लाह के ज़िक्र से ज़्यादा निजात देने वाला नहीं? आपने फ़रमाया, नहीं, सिवाए इसके कि मुजाहिद अपनी तलवार इतनी चलाए कि वह टूट जाए।[2]

हज़रत मुआज़ बिन अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एक आदमी ने पूछा, कौन-सा मुजाहिद सबसे ज़्यादा अज्र वाला है? आपने फ़रमाया, जो इनमें अल्लाह का सबसे ज़्यादा ज़िक्र करने वाला है। फिर उसने पूछा, कौन-सा नेक बन्दा सबसे ज़्यादा अज्र वाला है? आपने फ़रमाया, जो अल्लाह का सबसे ज़्यादा ज़िक्र करने वाला है। फिर उसने नमाज़, ज़कात, हज और सदक़ा में से हर एक अमल का ज़िक्र किया। हुज़ूर सल्ल० हर एक के जवाब में यही फ़रमाते रहे कि जो अल्लाह का सबसे ज़्यादा ज़िक्र करने वाला है। इस पर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, ऐ अबू हफ़्स! ज़िक्र वाले तो सारी ख़ैर ले गए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बिल्कुल।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने अर्ज़ किया कि इस्लाम के नफ़्ली आमाल बहुत ज़्यादा हैं। आप मुझे कोई ऐसा अमल बताएं, जिसे मैं मज़बूती से पकड़ लूं। आपने फ़रमाया, तुम्हारी ज़ुबान हर वक़्त अल्लाह की ज़ुबान से तर रहे।[4]

---

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 56
2. मुंज़री, भाग 2, पृ० 56, हैसमी, भाग 10, पृ० 74, मज्मा, भाग 10, पृ० 73
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 74
4. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 54

हज़रत मालिक बिन युख़ामिर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने साथियों से फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जुदाई के वक़्त मेरी जो आख़िरी बात-चीत हुज़ूर सल्ल० से हुई, वह यह थी कि मैंने अर्ज़ किया, कौन-सा अमल अल्लाह को सबसे ज़्यादा महबूब है? आपने फ़रमाया, तुम्हारी मौत इस हाल में आए कि तुम्हारी ज़ुबान अल्लाह के ज़िक्र से तर हो।[1]

बज़्ज़ार की रिवायत में है कि मुझे सबसे अफ़ज़ल और अल्लाह के सबसे ज़्यादा क़रीब अमल बताएं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ि० का ज़िक्र की तर्ग़ीब देना

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अपने आपको इंसानों के तज़्किरे में मश्ग़ूल न करो, क्योंकि यह तो बला और मुसीबत है, बल्कि अल्लाह का ज़िक्र एहतिमाम से करो।[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अल्लाह का ज़िक्र पाबन्दी से करो, क्योंकि यह तो सरासर शिफ़ा है और इंसानों के तज़्किरे से बचो, क्योंकि यह सरासर बीमारी है।[3]

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अगर हमारे दिल पाक होते, तो अल्लाह के ज़िक्र से कभी न उकताते।[4]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अल्लाह का ज़िक्र ज़्यादा से ज़्यादा करो और इसमें भी कोई हरज नहीं है कि तुम ऐसे आदमी के साथ रहो जो अल्लाह के ज़िक्र में तुम्हारी मदद करे (असल

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 74, तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 55, कंज़, भाग 1, पृ० 208
2. इब्ने अबिद्दुन्या
3. कंज़, भाग 1, पृ० 207
4. कंज़, भाग 1, पृ० 218,

यह है कि इंसान उसूल व आदाब के साथ सबसे मिल-जुलकर रहे और यही अफ़ज़ल है और जो सब्र न कर सके तो मजबूरी की वजह से अलग-थलग रहा करे।)[1]

हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अगर एक आदमी रात भर गोरी-चिट्टी बांदियां बांटता रहे और दूसरा आदमी रात भर क़ुरआन पढ़ता रहे और अल्लाह का ज़िक्र करता रहे तो यह ज़िक्र वाला अफ़ज़ल होगा।[2]

हज़रत हबीब बिन उबैद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि मुझे कुछ वसीयत फ़रमा दें। हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने फ़रमाया, तुम ख़ुशी में अल्लाह को याद रखो, अल्लाह तक्लीफ़ में तुम्हें याद रखेगा और जब तुम्हारा दिल दुनिया की किसी चीज़ की तरफ़ झांके, तो तुम उसमें ग़ौर करो कि उसका अंजाम क्या होगा।[3]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें वह अमल न बता दूं जो तुम्हारे आमाल में सबसे बेहतर है और तुम्हारे मालिक यानी अल्लाह को सबसे ज़्यादा महबूब और तुम्हारे दर्जों को सबसे ज़्यादा बढ़ाने वाला है और उससे भी बेहतर है कि तुम दुश्मन से लड़ाई करो और वे तुमको क़त्ल करें और तुम उनको क़त्ल करो और दिरहम व दीनार बांट देने से भी बेहतर है? लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अबुद्दर्दा! वह अमल कौन-सा है? फ़रमाया, अल्लाह का ज़िक्र और अल्लाह का ज़िक्र सबसे बड़ी नेकी है।[4]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जिन लोगों की ज़ुबानें हर वक़्त अल्लाह के ज़िक्र से तर रहेंगी, उनमें से हर आदमी जन्नत में

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 208
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 204
3. सफ़वा, भाग 1, पृ० 158,
4. हुलीया, भाग 1, पृ० 219,

हंसता हुआ दाख़िल होगा।[1]

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, किसी आदमी ने कोई अमल ऐसा नहीं किया जो अल्लाह के ज़िक्र से ज़्यादा अल्लाह के अज़ाब से निजात देने वाला हो। लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अबू अब्दुर्रहमान! क्या अल्लाह के रास्ते का जिहाद भी इससे ज़्यादा निजात दिलाने वाला नहीं? फ़रमाया, नहीं, क्योंकि अल्लाह तआला अपनी किताब में फ़रमाते हैं—

وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ (سورت عنکبوت آیت ٥٤)

'और अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज़ है।' (सूरः अंकबूत, आयत 54), हां अगर मुजाहिद इतनी तलवार चलाए कि वह टूट जाए (तो यह उससे ज़्यादा निजात दिलाने वाला है।)[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, सुबह और शाम अल्लाह का ज़िक्र करना अल्लाह के रास्ते में तलवारें तोड़ देने से और माल लुटा देने से ज़्यादा अफ़ज़ल है।[3]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िक्र करने का शौक़

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं ऐसी जमाअत के साथ बैठूं जो फ़ज्र की नमाज़ के बाद से लेकर सूरज निकले तक अल्लाह का ज़िक्र करती रहे, यह मुझे इस्माईल अलैहि० की औलाद में से ऐसे चार ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा महबूब है जिनमें से हर एक का ख़ूंबहा बारह हज़ार हो और मैं ऐसी जमाअत के साथ बैठूं जो अस्र की नमाज़ के बाद से लेकर सूरज डूबने तक अल्लाह का ज़िक्र करती रहे, यह मुझे इस्माईल

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 219,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 235
3. कंज़, भाग 1, पृ० 207

अलैहि० की औलाद में से ऐसे चार गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा महबूब है जिनमें से हर एक का ख़ूंबहा बारह हज़ार हो।[1]

अहमद और अबू याला हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो अस्र पढ़कर बैठ जाए और शाम होने तक ख़ैर की बातों का इमला कराए, यह उस आदमी से अफ़ज़ल है जो इस्माईल की औलाद में से आठ गुलाम आज़ाद करे और अबू याला की दूसरी रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं ऐसे लोगों के साथ बैठूं जो सुबह से लेकर सूरज निकलने तक अल्लाह का ज़िक्र करते रहें, यह मुझे उन तमाम चीज़ों से ज़्यादा महबूब है जिन पर सूरज निकलता है।[2]

हज़रत सह्ल बिन साद साइदी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं सुबह की नमाज़ में शरीक होकर सूरज निकलने तक बैठकर अल्लाह का ज़िक्र करता रहूं, यह मुझे इससे ज़्यादा महबूब है कि मैं सूरज निकलने तक अल्लाह के रास्ते में (मुजाहिदों को) उम्दा घोड़े देता रहूं।[3]

हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं सुबह की नमाज़ से लेकर सूरज निकलने तक (अल्लाह के ज़िक्र के लिए) बैठा रहूं, यह मुझे इस्माईल की औलाद में से चार गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा महबूब है।[4]

बज़्ज़ार और तबरानी की रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं सुबह की नमाज़ पढ़कर सूरज निकलने तक अल्लाह का ज़िक्र करता रहूं, यह मुझे अल्लाह के रास्ते में सूरज

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 105
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 105,
3. मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 10, पृ० 105

निकलने तक घोड़ा दौड़ाने से ज़्यादा महबूब है।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ

'सुब्हानल्लाहि, वल हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक्बर' कहना मुझे उन तमाम चीज़ों से ज़्यादा महबूब है, जिन पर सूरज निकलता है।[2]

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं (फ़ज्र के बाद) बैठकर सूरज निकलने तक अल्लाह का ज़िक्र करता रहूं और—

اَللّٰهُ أَكْبَرُ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

'अल्लाहु अक्बर, वल्हम्दु लिल्लाहि व सुब्हानल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहता रहूं यह मुझे इस्माईल की औलाद में से दो गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा महबूब है। और अस्र के बाद सूरज डूबने तक ये कलिमे कहता रहूं, यह मुझे इस्माईल की औलाद में से चार गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा महबूब है और एक रिवायत में यह है कि मैं सूरज निकलने तक अल्लाह का ज़िक्र करता रहूं—

اَللّٰهُ أَكْبَرُ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ

'अल्लाहु अक्बर व ला इला-ह इल्लल्लाहु व सुब्हानल्लाहि' कहता रहूं यह मुझे इस्माईल की औलाद में से चार गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा महबूब है और अस्र की नमाज़ से लेकर सूरज डूबने तक अल्लाह का ज़िक्र करना मुझे इस्माईल की औलाद में से इतने और इतने गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा महबूब है।[3]

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 106
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 84,
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 104

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का ज़िक्र करने का शौक़

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं सुबह से लेकर शाम तक सारा दिन अल्लाह का ज़िक्र करता रहूं, यह मुझे इससे ज़्यादा महबूब है कि मैं सुबह से लेकर शाम तक सारा दिन लोगों को सवारी के लिए उम्दा घोड़े देता रहूं।[1]

हज़रत अबू उबैदा बिन अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को अल्लाह के ज़िक्र के अलावा कोई और बात करने से बहुत गरानी होती थी।[2]

तबरानी की एक रिवायत में यह है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सुबह सादिक़ से लेकर फ़ज्र की नमाज़ तक किसी को बात करते हुए सुनते तो उससे उनको बहुत गरानी होती।

तबरानी की दूसरी रिवायत में यह है कि हज़रत अता रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर आए तो देखा कि फ़ज्र के बाद कुछ लोग बातें कर रहे हैं, उन्होंने इन लोगों को बात करने से मना किया और फ़रमाया, तुम लोग यहां नमाज़ के लिए आए हो, इसलिए या तो नमाज़ पढ़ो या चुप रहो।[3]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, सौ बार अल्लाहु अक्बर कहना मुझे सौ दीनार सदक़ा करने से ज़्यादा पसन्द है।[4]

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, सुबह से लेकर रात तक अल्लाह का ज़िक्र करना मुझे इससे ज़्यादा महबूब है कि

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 104
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 219
3. हैसमी, भाग 2, पृ० 219
4. हुलीया, भाग 1, पृ० 219

मैं सुबह से लेकर रात तक अल्लाह के रास्ते में (मुजाहिदों को) अच्छे घोड़े सवारी के लिए देता रहूं।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग एक सफ़र में हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ चल रहे थे। उन्होंने लोगों को फ़सीह और बलीग़ बातें करते हुए सुना, तो फ़रमाया, ऐ अनस! मुझे उन लोगों से क्या ताल्लुक़? आओ हम अपने रब का ज़िक्र करें, क्योंकि ये लोग तो अपनी ज़ुबान से खाल उधेड़ देंगे। इसके बाद आगे वैसी हदीस ज़िक्र की, जैसी आख़िरत पर ईमान लाने के बाब में गुज़र चुकी है।[2]

हज़रत मुआज़ बिन अब्दुल्लाह बिन राफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं एक मज्लिस में था, जिसमें हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी उमैरा रज़ियल्लाहु अन्हुम भी थे। हज़रत इब्ने अबी उमैरा ने फ़रमाया, मैंने हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाते हुए सुना कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि दो कलिमे ऐसे हैं कि उनमें से एक तो अर्श तक पहुंच कर ही रुकता है, इससे पहले उसे कोई रोकने वाला नहीं और दूसरा ज़मीन आसमान के दर्मियान के ख़ला को भर देता है और वे हैं—

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ

'ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर'

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने हज़रत इब्ने अबी उमैरा रज़ि० से कहा, क्या आपने ख़ुद उनको फ़रमाते हुए सुना? उन्होंने कहा, जी हां। इस पर हज़रत इब्ने उमर रज़ि० इतना रोए कि आंसुओं से उनकी दाढ़ी तर हो गई। (उन्हें इस बात का ग़म था कि मुझे अब तक हुज़ूर सल्ल० की यह बात मालूम क्यों नहीं थी) फिर फ़रमाया, हमें इन दोनों कलिमों से बहुत

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 235,
2. हुलीया, भाग १, पृ० 259

ताल्लुक़ और मुहब्बत है।[1]

हज़रत जुवैरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने ज़ाति इर्क़ मुक़ाम से एहराम बांधा और फिर एहराम खोलने तक हमने उन्हें अल्लाह के ज़िक्र के अलावा और कोई बात करते हुए नहीं सुना। एहराम खोलकर मुझसे फ़रमाया, ऐ भतीजे ! एहराम इस तरह हुआ करता है।[2]

अल्लाह के ज़िक्र की मज्लिसें

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआला क़ियामत के दिन फ़रमाएंगे, बहुत जल्द हश्र वालों को पता चल जाएगा कि करम वाले कौन हैं ? किसी ने हुज़ूर सल्ल० से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! करम वाले कौन हैं ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ज़िक्र की मज्लिसों वाले।[3]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नज्द की तरफ़ एक लश्कर भेजा। यह लश्कर बहुत-सा ग़नीमत का माल लेकर जल्द ही वापस आ गया। एक आदमी जो उस लश्कर के साथ नहीं गया था, उसने कहा, हमने इस जैसा कोई लश्कर नहीं देखा जो इतना ज़्यादा ग़नीमत का माल लेकर इतनी जल्दी लौट आया हो। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें ऐसे लोग न बता दूं जो इनसे ज़्यादा ग़नीमत का माल लेकर उनसे भी जल्दी वापस आ गए हों ? ये वह लोग हैं जो सुबह की नमाज़ में शरीक होकर फिर अपनी जगहों में बैठकर सूरज निकलते तक अल्लाह का ज़िक्र करते रहें। ये हैं वे लोग जो उनसे ज़्यादा ग़नीमत का माल लेकर उनसे भी ज़्यादा जल्दी वापस आ गए हैं।

एक रिवायत में यह है कि ये वह लोग हैं जो सुबह की नमाज़ पढ़ें, फिर

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 94, हैसमी, भाग 10, पृ० 86,
2. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 22
3. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 63, हैसमी, भाग 10, पृ० 76,

अपनी जगहों में बैठकर सूरज निकलने तक अल्लाह का ज़िक्र करते रहें, फिर दो रक्अत नमाज़ पढ़कर अपने घर वापस जाएं। ये हैं वे लोग जो इनसे ज़्यादा ग़नीमत का माल लेकर उनसे ज़्यादा जल्दी वापस आ गए हैं।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन सह्ल बिन हुनैफ रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घर में थे। आप पर यह आयत नाज़िल हुई—

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ (سورت كهف آيت ۲۸)

'और आप अपने को उन लोगों को साथ बांध के रखा कीजिए जो सुबह व शाम (यानी हमेशा) अपने रब की इबादतें सिर्फ़ उसकी रिज़ा-जूई के लिए करते हैं।' (सूरः कहफ़, आयत 28)

हुज़ूर सल्ल० उनको खोजने निकले तो देखा कि कुछ लोग अल्लाह का ज़िक्र कर रहे हैं और उनमें से कुछ लोगों के सर के बाल बिखरे हुए हैं और कुछ लोगों की खालें सूखी हैं और कुछ लोगों के पास सिर्फ़ एक ही कपड़ा है। आप उनके पास बैठ गए और फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा किए, जिनके पास बैठने का मुझे हुक्म दिया।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु पर गुज़र हुआ। वह अपने साथियों में बयान कर रहे थे, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ग़ौर से सुनो, तुम लोग ही वह जमाअत हो जिनके पास बैठने का अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है। फिर आपने यह आयत पढ़ी—

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ

से लेकर

وَكَانَ أَمْرُهُ فُرُطًا

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 298, हैसमी, भाग 10, पृ० 107
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 81,

तक। ग़ौर से सुनो, तुम लोग जितने बैठे हो, उतने ही तुम्हारे साथ फ़रिश्ते भी बैठे हुए हैं। अगर तुम 'सुब्हानल्लाह' कहोगे, तो वे भी 'सुब्हानल्लाह' कहेंगे और अगर तुम 'अल-हम्दु लिल्लाहि' कहोगे तो वे भी 'अल-हम्दु लिल्लाहि' कहेंगे। अगर तुम 'अल्लाहु अक्बर' कहोगे, तो वे भी 'अल्लाहु अक्बर' कहेंगे। फिर (मज्लिस ख़त्म हो जाने पर) वे फ़रिश्ते अल्लाह के पास ऊपर चले जाएंगे, हालांकि अल्लाह उनसे ज़्यादा जानते हैं, लेकिन फिर भी वे अर्ज़ करेंगे, ऐ हमारे रब ! तेरे बन्दे 'सुब्हानल्लाह' कहते रहे, तो हम भी 'सुब्हानल्लाह' कहते रहे और वे अल्लाहु अक्बर कहते रहे, तो हम भी 'अल्लाहु अक्बर' कहते रहे और वे अल-हम्दु लिल्लाह कहते रहे, तो हम 'अल-हम्दु लिल्लाहि' कहते रहे, फिर हमारे रब फ़रमाएंगे, ऐ मेरे फ़रिश्तो ! मैं तुम्हें इस बात पर गवाह बनाता हूं कि मैंने उनकी मग़फ़िरत कर दी है। वे फ़रिश्ते अर्ज़ करेंगे कि इनमें तो फ़्लां-फ़्ला ख़ताकार भी थे। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, ये ऐसे लोग हैं कि उनके साथ बैठने वाला भी महरूम नहीं रहता।[1]

हज़रत साबित बुनानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु एक जमाअत में बैठे हुए थे जो अल्लाह का ज़िक्र कर रहे थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास से गुज़रे तो उन्होंने ज़िक्र करना छोड़ दिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आप लोग क्या कर रहे थे? उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम अल्लाह का ज़िक्र कर रहे थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ज़िक्र करते रहो, क्योंकि मैंने आप लोगों पर रहमत को उतरते हुए देखा है, इसलिए मैंने चाहा कि मैं भी इस रहमत में आप लोगों के साथ शामिल हो जाऊं, फिर फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मेरी उम्मत में ऐसे लोग बनाए जिनके साथ बैठने का मुझे हुक्म दिया गया है।[2]

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 76,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 342

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ऐ लोगो ! अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों की बहुत-सी जमाअतें मुक़र्रर फ़रमा रखी हैं, जो कि ज़मीन पर अल्लाह के ज़िक्र की मज्लिसों में उतरती है और उनके पास ठहरती हैं, इसलिए तुम जन्नत के बाग़ों में चरा करो।

सहाबा रज़ि० ने पूछा, जन्नत के बाग़ कहां हैं? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ज़िक्र की मज्लिसें (जन्नत के बाग़ हैं।) सुबह-शाम अल्लाह का ज़िक्र किया करो, बल्कि अपने आपको हमेशा अल्लाह के ज़िक्र में मश्ग़ूल रखो। जो यह जानना चाहता है कि अल्लाह के पास उसका क्या मर्तबा है तो उसको चाहिए कि वह यह देख ले कि उसके नज़दीक अल्लाह का क्या मर्तबा है? क्योंकि बन्दा अल्लाह को अपने नज़दीक जो दर्जा देता है, अल्लाह तआला भी अपने यहां उस बन्दे को वही दर्जा देते हैं।[1]

हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सुबह की नमाज़ पढ़ लेते तो बैठ जाते और सूरज निकलने तक अल्लाह का ज़िक्र करते रहते।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ज़िक्र की मज्लिसों का सवाब क्या है? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ज़िक्र की मज्लिसों का सवाब जन्नत है जन्नत।[3]

हज़्रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ज़िक्र की मज्लिसें इल्म के ज़िंदा होने का ज़रिया हैं और ये मज्लिसें दिलों में ख़ुशूअ पैदा करती हैं।[4]

---

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 65, हैसमी, भाग 10, पृ० 77
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 107
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 78, मुंज़री, भाग 3, पृ० 65,
4. कंज़, भाग 1, पृ० 208

मज्लिस का कफ़्फ़ारा

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी मज्लिस में बैठते या नमाज़ पढ़ लेते तो कुछ कलिमे पढ़ा करते। मैंने हुज़ूर सल्ल० से इन कलिमों के बारे में पूछा, तो फ़रमाया कि इन कलिमों का फ़ायदा यह है कि आदमी ने अगर ख़ैर की बात की हो, तो ये कलिमे उस पर क़ियामत के दिन तक के लिए मुहर बन जाएंगे और अगर बुरी बातें की हों, तो ये कलिमे उनके लिए कफ़्फ़ारा बन जाते हैं और वे कलिमे ये हैं—

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَآ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ

'सुब-हा-न-कल्लाहुम-म व बिहम्दि-क ला इला-ह इल्ला अन-त अस्तग़्फ़िरु-क व अतू-बु इलैक०'

(ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पाकी और तेरी तारीफ़ बयान करता हूं, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, मैं तुझसे मग़्फ़िरत तलब करता हूं और तेरी तरफ़ तौबा करता हूं।)[1]

हज़रत अबू बरज़ा अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मज्लिस से उठने का इरादा फ़रमाते, तो आख़िर में यह दुआ पढ़ते—

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ

'सुब-हा-न-कल्लाहुम-म व बिहम्दि-क ला इला-ह इल्ला अन-त अस्तग़्फ़िरु-क व अतू-बु इलैक०'

तो एक आदमी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप कुछ कलिमे पढ़ते हैं पहले तो आप ये कलिमे नहीं पढ़ा करते थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मज्लिस में जो ग़लतियां हो जाती हैं, ये कलिमे उनके लिए कफ़्फ़ारा हैं।[2]

---

1. हाकिम, बैहक़ी
2. अबू दाऊद, नसई, तबरानी

तबरानी ने हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज रज़ियल्लाहु अन्हु से इस जैसी हदीस ज़िक्र की है। उसमें 'व अतूबु इलैक' के बाद ये कलिमे भी हैं—

عَمِلْتُ سُوْءً، اَوْظَلَمْتُ نَفْسِی فَاغْفِرْلِیْ اِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

'अमिलतु सूअन अव ज़लम्तु नफ़्सी फ़ग्फ़िर ली इन्नहू ला यग़्फ़िरुज़्-ज़ुनू-ब इल्ला अन-त'

(और मैंने जो भी बुरा काम किया या अपनी जान पर ज़ुल्म किया तो उसे माफ़ कर दे, तेरे सिवा और कोई भी गुनाहों को माफ़ नहीं करता।)

हम लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ये कलिमे आपने अभी कहने शुरू किए हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जी हां। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरे पास आए थे और उन्होंने कहा था, ये कलिमे मज्लिस का कफ़्फ़ारा हैं।[1]

हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जब हम आपके पास से उठकर चले जाते हैं तो हम जाहिलियत के ज़माने की बातें शुरू कर देते हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब तुम ऐसी मज्लिसों में बैठो जिनमें तुम्हें अपने बारे में डर हो (कि तुमसे ग़लत बातें हो गई होंगी) तो उस मज्लिस से उठते वक़्त ये कलिमे पढ़ लिया करो—

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ نَشْهَدُاَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ نَسْتَغْفِرُكَ وَ نَتُوْبُ اِلَيْكَ

'सुब-हा-न-कल्लाहुम-म व बिहम्दि-क, नश्हदु अल-ला इला-ह इल्ला अन-त नस्तग़्फ़िरु-क व नतुबू इलै-क०'

उस मज्लिस में जो कुछ हुआ होगा, ये कलिमे उसके लिए कफ़्फ़ारा बन जाएंगे।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, कुछ कलिमे ऐसे हैं कि जो आदमी भी किसी हक़ की या बातिल की

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 72,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 142,

मज्लिस से उठते वक़्त इन कलिमों को तीन बार पढ़ लेगा, तो ये कलिमे उसकी तरफ़ से (उस मज्लिस की तमाम ग़लतियों का) कफ़्फ़ारा हो जाएंगे और अगर (उस मज्लिस में उससे कोई ग़लती न हुई हो, बल्कि) वह मज्लिस ख़ैर की और ज़िक्र की थी तो फिर अल्लाह इन कलिमों के ज़रिए ऐसे मुहर लगा देते हैं जैसे अंगूठी से लिखी हुई तहरीर पर मुहर लगाई जाती है। फिर आगे हज़रत आइशा रज़ि० जैसी हदीस ज़िक्र की।[1]

क़ुरआन मजीद की तिलावत

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे कुछ वसीयत फ़रमा दें। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह से डरने को अपने लिए ज़रूरी समझो, क्योंकि यह तमाम कामों की जड़ है। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! कुछ और वसीयत फ़रमा दें। आपने फ़रमाया, क़ुरआन की तिलावत को ज़रूरी समझो, क्योंकि तिलावत ज़मीन पर तुम्हारे लिए नूर और आसमान में तुम्हारे लिए सवाब का ज़ख़ीरा है।[2]

हज़रत औस बिन हुज़ैफ़ा सक़फ़ी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम क़बीला सक़ीफ़ का वफ़्द बनकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हममें से जो अख़्लाफ़ी थे, वे हज़रत मुग़ीरह बिन शोबी रज़ियल्लाहु अन्हु के यहां ठहरे और मालिकी हज़रात को हुज़ूर सल्ल० ने अपने ख़ेमे में ठहराया।

हुज़ूर सल्ल० इशा के बाद हमारे पास तशरीफ़ लाते और हमसे (खड़े-खड़े) बातें करते और इतनी देर खड़े रहते कि आप (थक जाते और) बारी-बारी दोनों पांवों पर आराम फ़रमाते, ज़्यादातर आप क़ुरैश की शिकायत करते और फ़रमाते, मक्का में हमें कमज़ोर समझा जाता था। जब हम मदीना आ गए, तो हमने उनसे बदला लेना शुरू कर दिया

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 72
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 8

और लड़ाइयों में कभी वे जीतते और कभी हम।

हुज़ूर सल्ल० रोज़ाना जिस वक़्त हमारे पास तशरीफ़ लाते, एक रात उससे देर से तशरीफ़ लाए, तो हमने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप रोज़ाना जिस वक़्त हमारे पास तशरीफ़ लाया करते थे, आज उससे देर से तशरीफ़ लाए हैं, (इसकी क्या वजह है?) आपने फ़रमाया, मैंने क़ुरआन की एक मिक़्दार रोज़ाना पढ़ने के लिए मुक़र्रर कर रखी है, वह आज किसी वजह से पहले पूरी न हो सकी, इसलिए मैंने चाहा कि इसे पूरा करके फिर आप लोगों के पास आऊं।

अगले दिन सुबह को हमने हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० से पूछा कि इन्होंने क़ुरआन ख़त्म करने के कितने हिस्से बना रखे हैं? उन्होंने बताया कि (क़ुरआन ख़त्म करने के लिए सात हिस्से बना रखे हैं?) पहले हिस्से में सूरः फ़ातिहा के बाद वाली तीन सूरतें, दूसरे हिस्से में उसके बाद वाली पांच सूरतें, तीसरे हिस्से में उसके बाद वाली सात सूरतें, चौथे हिस्से में उसके बाद वाली नौ सूरतें, पांचवें हिस्से में उसके बाद वाली ग्यारह सूरतें, छठे हिस्से में उसके बाद वाली तेरह सूरतें और सातवें हिस्से में मुफ़स्सल वाली सूरतें।[1]

अबू दाऊद की रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसे पूरा किए बग़ैर मैं आ जाऊं, इसे मैंने अच्छा न समझा।[2]

हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का और मदीना के दर्मियान ठहरे हुए थे कि इतने में एक आदमी ने हुज़ूर सल्ल० से अन्दर आने की इजाज़त मांगी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, रोज़ाना मैं जितना क़ुरआन पढ़ता था, आज रात वह रह गया है, इस पर मैं किसी चीज़ को तर्जीह नहीं दे सकता। (मैं वह पढ़ रहा हूं, इसलिए अभी इजाज़त नहीं है।)[3]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 232, अबू दाऊद, भाग 2, पृ० 310
2. कंज़, भाग 1, पृ० 226,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 258,

हज़रत अबू सलमा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया करते, हमें हमारे रब की याद दिलाओ, तो हज़रत अबू मूसा रज़ि० क़ुरआन पढ़कर सुनाया करते।[1]

हज़रत हबीब बिन अबी मरज़ूक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हमें यह रिवायत पहुंची है कि कभी-कभी हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया करते हमें हमारे रब की याद दिलाओ, तो हज़रत अबू मूसा रज़ि० क़ुरआन पढ़ा करते। वह बहुत अच्छी आवाज़ से क़ुरआन पढ़ा करते थे।

हज़रत अबू नज़रा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अबू मूसा रज़ि० से फ़रमाया, हमें हमारे रब का शौक़ दिलाओ। वह क़ुरआन पढ़ने लगे। लोगों ने कहा, नमाज़, हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या हम नमाज़ में नहीं हैं?

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु जब घर तशरीफ़ ले जाते, तो क़ुरआन खोल कर उसे पढ़ा करते।[2]

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैं यह चाहता हूं कि जो दिन या रात आए, मैं उसमें क़ुरआन देखकर पढ़ा करूं।[3]

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अगर तुम्हारे दिल पाक होते, तो तुम लोग कभी भी अल्लाह तआला के कलाम से सेर न होते।[4]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अगर दिल पाक होते तो हम अपने रब के कलाम से कभी सेर न होते और मुझे यह

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 109
2. कंज़, भाग 1, पृ० 224,
3. कंज़, भाग 1, पृ० 225,
4. कंज़, भाग 1, पृ० 218,

पसन्द नहीं है कि मेरी ज़िंदगी में कोई दिन ऐसा आए, जिसमें मैं देखकर क़ुरआन न पढ़ूं। चुनांचे हज़रत उस्मान रज़ि० देखकर इतना ज़्यादा क़ुरआन पढ़ा करते थे कि उनके इंतिक़ाल से पहले ही उनका क़ुरआन फट गया था।[1]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हमेशा देखकर क़ुरआन पढ़ा करो।[2]

हज़रत हबीब बिन शहीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि से किसी ने पूछा कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा अपने घर में क्या-क्या करते थे। उन्होंने कहा, जो वह किया करते थे, लोग उसे नहीं कर सकते। वे हर नमाज़ के लिए वुज़ू करते और हर दो नमाज़ों के दर्मियान क़ुरआन पढ़ा करते।[3]

हज़रत इब्ने अबी मुलैका रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इक्रिमा बिन अबी जह्ल रज़ियल्लाहु अन्हु क़ुरआन लेकर अपने चेहरे पर रखा करते और रोने लग जाते और फ़रमाते, यह मेरे रब का कलाम है, यह मेरे रब की किताब है।[4]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर एक बार दरूद भेजता है, उसके लिए दस नेकियां लिखी जाती हैं और यह भी फ़रमाया कि जब तुममें से कोई आदमी बाज़ार से अपने घर वापस आए तो उसे चाहिए कि वह क़ुरआन खोल कर पढ़ा करे, क्योंकि उसे हर हर्फ़ के बदले दस नेकियां मिलेंगी।[5]

दूसरी रिवायत में यह है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह तआला इसके लिए हर हर्फ़ के बदले दस नेकियां लिखेंगे। मैं

---

1. अल अस्मा वस्सिफ़ात, पृ० 182
2. कंज़, भाग 1, पृ० 226,
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 176
4. हाकिम, भाग 3, पृ० 243,
5. इब्ने अबी दाऊद,

यह नहीं कहता हूं कि अलिफ़-लाम-मीम पर दस नेकियां मिलेंगी, बल्कि अलिफ़ पर दस नेकियां मिलेंगी और लाम पर दस और मीम पर दस।[1]

दिन और रात में, सफ़र और हज़र में क़ुरआन की सूरतों का पढ़ना

हज़रत उक़्बा बिन आमिर जुह्नी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मेरी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाक़ात हुई तो हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया, ऐ उक़्बा बिन आमिर! जो तुमसे ताल्लुक़ तोड़े, तुम उससे ताल्लुक़ जोड़ो, जो तुम्हें महरूम रखे (और तुम्हें न दे) तुम उसे दो और जो तुम पर ज़ुल्म करे, तुम उसे माफ़ कर दो।

इसके बाद मेरी हुज़ूर सल्ल० से फिर मुलाक़ात हुई, तो मुझसे फ़रमाया, ऐ उक़्बा बिन आमिर! क्या मैं तुम्हें कुछ ऐसी सूरतें न सिखा दूं कि इन जैसी सूरतें अल्लाह ने तौरात, ज़बूर, इंजील और क़ुरआन किसी में भी नहीं नाज़िल फ़रमाईं और मैं हर रात उन्हें ज़रूर पढ़ता हूं—

'क़ुल हुवल्लाहु अहद', क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़', और 'क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नासि'

जब से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे इन सूरतों के पढ़ने का हुक्म दिया है, उस वक़्त से मैं हर रात उनको ज़रूर पढ़ता हूं और जब हुज़ूर सल्ल० ने मुझे उनके पढ़ने का हुक्म दिया है, तो मुझ पर वाज़िब हो गया है कि उन्हें न छोड़ूं।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब रात को अपने बिस्तर पर तशरीफ़ लाते, तो 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' और 'क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़' पढ़कर दोनों हाथों को मिलाकर उन पर दम करते और जहां तक हो सकता, दोनों हाथ सारे जिस्म पर फेरते। अपने सर, चेहरे और जिस्म के अगले हिस्से से उसकी

1. कंज़, भाग 1, पृ० 219
2. कंज़, भाग 1, पृ० 223

शुरूआत फ़रमाते और इस तरह तीन बार फ़रमाते ।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब बिस्तर पर तशरीफ़ लाते तो 'कुल हुवल्लाहु अहद' और मुअव्व-ज़तैन ('कुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़' और कुल अऊज़ु बिरब्बिन्नासि') पढ़कर दोनों हाथों पर दम करते और उन्हें चेहरे, बाज़ू, सीने और जिस्म पर जहां तक हाथ पहुंचते, फेरते। जब हुज़ूर सल्ल० की बीमारी बढ़ गई तो आपने मुझे हुक्म दिया कि मैं आपके साथ इस तरह करूं ।[2]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब तक—

'अलिफ़-लाम-मीम तंज़ील' और 'तबारकल्लज़ी बियदिहिल मुल्कु' दोनों सूरतें न पढ़ लेते, न सोते।

हज़रत ताऊस कहते हैं, ये दोनों सूरतें क़ुरआन की हर सूरः पर सत्तर नेकियां ज़्यादा फ़ज़ीलत रखती हैं ।[3]

हज़रत इरबाज़ बिन सारिया रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब बिस्तर पर लेटते तो सोने से पहले मुसब्बिहात पढ़ते यानी वे सूरतें पढ़ते, जिनके शुरू में 'सब्ब-ह' या 'युसब्बिहु' आता है और हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इन सूरतों में एक ऐसी आयत है जो हज़ार आयतों से अफ़ज़ल है ।[4]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सूरः ज़ुमर और सूरः बनी इसराईल पढ़ न लेते, सोया न करते ।[5]

---

1. नसई,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 68,
3. जमउल फ़वाइद, भाग २, पृ० 76,
4. तिर्मिज़ी, अबू दाऊद,
5. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 260

हज़रत फ़रवः बिन नौफ़ुल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे कोई ऐसी चीज़ बताएं जिसे मैं लेटते वक़्त पढ़ लिया करूं। आपने फ़रमाया 'क़ुल या ऐयुहल काफ़िरून' पढ़ा करो, क्योंकि इस सूरः में शिर्क से बेज़ारी है।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, आदमी के पास उसकी क़ब्र में अज़ाब के फ़रिश्ते आएंगे। वे पांव की तरफ़ से आएंगे, तो पांव कहेंगे, तुम्हारे लिए हमारी तरफ़ से कोई रास्ता नहीं है, क्योंकि यह सूरः मुल्क पढ़ा करता था। फिर वे सीने की तरफ़ से आएंगे तो सीना कहेगा, तुम्हारे लिए मेरी तरफ़ से कोई रास्ता नहीं है, क्योंकि यह सूरः मुल्क पढ़ा करता था, फिर वे सर की तरफ़ से आएंगे, तो सर कहेगा, तुम्हारे लिए मेरी तरफ़ से कोई रास्ता नहीं है, क्योंकि यह सूरः मुल्क पढ़ा करता था। यह सूरः रोक है, यह क़ब्र के अज़ाब को रोकती है और तौरात में है कि जिसने किसी रात में इस सूरः को पढ़ा, उसने बहुत ज़्यादा सवाब हासिल किया और बहुत अच्छा काम किया।[2]

नसई में यह हदीस थोड़े में है और इन लफ़्ज़ों के साथ है कि जो हर रात तबारकल्लज़ी बियदिहिल मुल्कु पढ़ेगा, अल्लाह उसे क़ब्र के अज़ाब से बचाएगा और हम लोग उसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में 'मानिआ' कहा करते थे यानी क़ब्र के अज़ाब को रोकने वाली। अल्लाह की किताब में यह है कि यह ऐसी सूरः है कि जो इसे हर रात पढ़ेगा वह बहुत ज़्यादा सवाब कमाने वाला और बहुत उम्दा काम करने वाला होगा।[3]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जो आदमी सूरः बक़रः, सूरः आले इम्रान और सूरः निसा किसी रात में पढ़ेगा, उसे

---

1. तिर्मिज़ी, भाग 2, पृ० 176
2. हाकिम
3. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 38, कंज़, भाग 1, पृ० 223

क़ानितीन यानी फ़रमांबरदारों में लिख दिया जाएगा ।[1]

हज़रत जुबैर बिन मुतइम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया, ऐ जुबैर ! क्या तुम यह पसन्द करते हो कि जब तुम सफ़र में जाया करो तो तुम्हारी हालत सबसे अच्छी और तुम्हारा तोशा सबसे ज़्यादा हो ? मैंने कहा, जी हां, मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों। आपने फ़रमाया, तुम ये पांच सूरतें पढ़ा करो, 'क़ुल या ऐयुहल काफ़िरून', 'इज़ा जा-अ नस्रुल्लाहि वल फ़त्हु', 'क़ुल हुवल्लाहु अहद', 'क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़' और 'क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नासि', हर सूरः के शुरू में भी 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' पढ़ो और आख़िर में भी 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' पढ़ो (इस तरह सूरतें पांच होंगी और बिस्मिल्लाह छः बार होगी।)

हज़रत जुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं, हालांकि मैं ग़नी और मालदार था, लेकिन जब मैं सफ़र में जाया करता था, तो मैं सबसे ज़्यादा ख़स्ता हालत वाला और सबसे कम तोशे वाला होता था, तो जब मुझे हुज़ूर सल्ल० ने ये सूरतें सिखाईं और मैंने उन्हें पढ़ना शुरू किया तो मैं सबसे अच्छी हालत वाला और सबसे ज़्यादा तोशे वाला हो गया और पूरे सफ़र में वापसी तक मेरा यही हाल रहता है ।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक रात बहुत ज़्यादा वर्षा हुई थी और बड़ा अंधेरा छाया हुआ था, हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खोजने निकले, ताकि आप हमें नमाज़ पढ़ा दें। आख़िर आप हमें मिल गए। आपने मुझसे फ़रमाया, कहो। मैंने कुछ न कहा। आपने दोबारा फ़रमाया, कहो, मैंने कुछ न कहा। आपने तीसरी बार फ़रमाया, कहो। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं क्या कहूं ? आपने फ़रमाया, सुबह और शाम तीन बार 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' और 'मुअव्व-ज़तैन' पढ़ा करो। उनका पढ़ना

1. कंज़, भाग 1, पृ० 222,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 134

हर चीज़ से किफ़ायत करेगा।[1]

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, जो सुबह की नमाज़ के बाद दस बार 'कुल हुवल्लाहु अहद' पढ़ेगा, वह सारा दिन गुनाहों से बचा रहेगा, चाहे शैतान कितना ही ज़ोर लगाए।[2]

दिन और रात में सफ़र और हज़र में क़ुरआनी आयतों का पढ़ना

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने इस मिंबर की लकड़ियों पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि जो हर नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ेगा, उसे जन्नत में जाने से मौत के अलावा और कोई चीज़ रोकने वाली नहीं होगी और जो उसे बिस्तर पर लेटते वक़्त पढ़ेगा, अल्लाह उसे उसके घर पर उसके पड़ोसी के घर पर उसके आस-पास के कुछ और घरों पर अम्न अता फ़रमाएंगे।[3]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मुझे कोई ऐसा आदमी नज़र नहीं आता, जो पैदाइशी मुसलमान हो या बालिग़ होकर मुसलमान हुआ हो और इस आयत—

اللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ

को पढ़े बग़ैर रात गुज़ारता हो, काश कि आप लोग जान लेते कि इस आयत का दर्जा कितना बड़ा है। यह आयत आप लोगों के नबी को उस ख़ज़ाने से दी गई है जो अर्श के नीचे है और आप लोगों के नबी से पहले किसी नबी को नहीं दी गई और मैं हर रात उसे तीन बार पढ़कर सोता हूं, इशा के बाद की दो रक्अतों में और वित्र में भी उसे पढ़ता हूं और बिस्तर पर लेटते वक़्त भी पढ़ता हूं।[4]

---

1. अज़्कार, पृ० 96,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 223,
3. कंज़, भाग 1, पृ० 231,
4. कंज़, भाग 1, पृ० 221,

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने कोई ऐसा आक़िल-बालिग़ आदमी नहीं देखा, जो सूरः बक़रः की आख़िरी आयतों को पढ़े बग़ैर सो जाता हो, क्योंकि ये आयतें उस ख़ज़ाने से आई हैं जो अर्श के नीचे है।[1]

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जो आदमी रात को सूरः आले इम्रान की आख़िरी आयतें पढ़ेगा, उसके लिए रात भर की इबादत का सवाब लिखा जाएगा।[2]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जो रात को किसी घर में सूरः बक़रः की दस आयतें पढ़ेगा, उस घर में सुबह तक कोई शैतान दाख़िल नहीं होगा। वे दस आयतें ये हैं, सूरः बक़रः की शुरू की चार आयतें, आयतुल कुर्सी, इसके बाद की दो आयतें और सूरः बक़रः की आख़िरी तीन आयतें।[3]

हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु के खलियान में खजूरें रखी हुई थीं और वह उनकी निगरानी करते थे। उन्हें महसूस हुआ कि ये खजूरें कम हो रही हैं, तो उन्होंने एक रात उन खजूरों का पहरा दिया, तो उन्होंने एक जानवर देखा जो बालिग़ लड़के जैसा था। फ़रमाते हैं, मैंने उसे सलाम किया। उसने मेरे सलाम का जवाब दिया। मैंने कहा, तुम कौन हो? जिन्न हो या इंसान? उसने कहा, जिन्न हूं। मैंने कहा, ज़रा अपना हाथ मुझे दो। उसने अपना हाथ मुझे दिया, तो उसका हाथ कुत्ते के हाथ जैसा था और बाल भी कुत्ते जैसे थे।

मैंने कहा, जिन्नों की शक्ल व सूरत क्या ऐसी होती है? उसने कहा, तमाम जिन्नों को मालूम है कि उनमें मुझसे ज़्यादा ताक़तवर कोई नहीं है। मैंने कहा, तुमने (खलियान से खजूरें चुराने का काम) क्यों किया?

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 222,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 222
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 118

उसने कहा, हमें ख़बर मिली है कि आपको सदक़ा करना बहुत पसन्द है? तो हमने चाहा, हमें भी आपकी कुछ खजूरें मिल जाएं। मैंने कहा, कौन-सी चीज़ ऐसी है, जिसकी वजह से हमारी तुम लोगों से हिफ़ाज़त हो जाए? उसने कहा, यह आयतुल कुर्सी जो सूरः बक़रः में है, जो इसे शाम को पढ़ेगा, वह सुबह तक हमसे बचा रहेगा और जो इसे सुबह को पढ़ेगा वह शाम तक हमसे बचा रहेगा।

सुबह को हज़रत उबई रज़ि० ने जाकर यह सारा वाक़िया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बताया, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उस ख़बीस ने सच कहा।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं हिम्स से चला और रात को ज़मीन के एक ख़ास टुकड़े में पहुंचा, तो उस इलाक़े के जिन्न मेरे पास आ गए। इस पर मैंने सूरः आराफ़ की यह आयत आख़िरत तक पढ़ी—

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ (سورت اعراف آیت ۵۴)

'बेशक तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने सब आसमानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर क़ायम हुआ। छिपा देता है रात से दिन को ऐसे तौर पर कि वह रात उस दिन को जल्दी से आ लेती है और सूरज और चांद और दूसरे सितारों को पैदा किया ऐसे तौर पर कि सब उसके हुक्म के ताबेअ हैं। याद रखो अल्लाह ही के लिए ख़ास है पैदा करने वाला होना और हाकिम होना। बड़ी ख़ूबियों के भरे हुए हैं अल्लाह, जो तमाम दुनिया के पालनहार हैं।' (सूरः आराफ़, आयत 54)

इस पर उन जिन्नों ने एक दूसरे से कहा, अब तो सुबह तक इसका पहरा दो, (चुनांचे उन्होंने सारी रात मेरा पहरा दिया।) सुबह को मैं सवारी पर सवार होकर वहां से चल दिया।[2]

हज़रत अला बिन लजलाज रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपने बेटों से

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 221, हैसमी, भाग 10, पृ० 118,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 123,

कहा, जब तुम मुझे क़ब्र में रखने लगो, तो—

وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ

'बिस्मिल्लाहि व अला मिल्लति रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम' कहकर मुझे क़ब्र में रखना और मेरी क़ब्र पर धीरे-धीरे मिट्टी डालना और मेरे सिरहाने पर सूरः बक़रः की शुरू की और आख़िर की आयतें पढ़ना, क्योंकि मैंने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को देखा कि वह ऐसा करने को बहुत पसन्द करते थे।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जो यह चाहता है कि उसका अज्र व सवाब बहुत बड़े और मुकम्मल पैमाने में तौला जाए, तो वह ये आयतें तीन बार पढ़े—

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ (سورت صافات آیت ۱۸۰)

'आपका रब जो बड़ी अज़्मत वाला है, उन बातों से पाक है, जो ये (काफ़िर) बयान करते हैं।' (सूरः साफ़्फ़ात, आयत 180)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उबैद बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु जब अपने घर में दाख़िल होते तो उसके तमाम कोनों में आयतुल कुर्सी पढ़ते।[2]

कलिमा तैयिबा ला इला-ह इल्लल्लाहु का ज़िक्र

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क़ियामत के दिन लोगों में से किसे आपकी शफ़ाअत की सआदत सबसे ज़्यादा हासिल होगी ?

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, चूंकि मुझे मालूम था कि तुम्हें हदीसें हासिल करने का बहुत ज़्यादा शौक़ है, इस वजह से मेरा ख़्याल यही था कि तुमसे पहले यह बात मुझसे कोई नहीं पूछेगा। क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत की सआदत सबसे ज़्यादा उसे हासिल

1. कंज़, भाग 8, पृ० 119
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 128,

होगी जो 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' ख़ालिस दिल से कहेगा।[1]

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' इख़्लास से कहेगा, वह जन्नत में दाख़िल होगा। किसी ने पूछा, उसका इख़्लास क्या है? आपने फ़रमाया, उसका इख़्लास यह है कि यह कलिमा इंसान को अल्लाह के हराम किए हुए कामों से रोक दे।[2]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, एक बार हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ किया कि मुझे कोई विर्द सिखा दें, जिससे आपको याद किया करूं और आपको पुकारा करूं। अल्लाह ने फ़रमाया 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहा करो। उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ मेरे पालनहार! यह तो सारी दुनिया ही कहती है। इर्शाद हुआ 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहा करो। अर्ज़ किया, ऐ मेरे रब! मैं तो कोई ऐसी ख़ास चीज़ मांगता हूं जो मुझ ही को आता हो।

इर्शाद हुआ कि अगर सातों आसमान सातों ज़मीनें एक पलड़े में रख दी जाएं और दूसरी तरफ़ 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' रख दिया जाए तो 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' वाला पलड़ा झुक जाएगा।[3]

और एक रिवायत में यह है कि अगर सातों आसमान और मेरे अलावा उन्हें आबाद करने वाले और सातों ज़मीनें एक पलड़े में हों और 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' दूसरे पलड़े में हो, तो 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' वाला पलड़ा झुक जाएगा।[4]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें यह न

---

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 72,
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 74
3. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 75
4. हैसमी, भाग 10, पृ० 82,

बताऊं कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे को क्या वसीयत की थी? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ज़रूर बताएं। इर्शाद फ़रमाया, हज़रत नूह ने अपने बेटे को यह वसीयत की थी कि ऐ मेरे बेटे! मैं तुम्हें दो बातों की वसीयत करता हूं और दो बातों से रोकता हूं। मैं 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहने की वसीयत करता हूं, क्योंकि अगर यह कलिमा एक पलड़े में रख दिया जाए और दूसरे पलड़े में सारे आसमान और ज़मीनें रख दी जाएं तो कलिमे वाला पलड़ा झुक जाएगा और अगर सारे आसमान एक हलक़ा बन जाएं, तो भी यह कलिमा इन्हें तोड़कर आगे चला जाएगा और अल्लाह तआला तक पहुंच कर रहेगा और दूसरी वसीयत यह करता हूं कि 'सुब्हानल्लाहिल अज़ीमि व बिहम्दिही' कहा करो, क्योंकि यह सारी मख़्लूक़ की इबादत है और इसी की बरकत से उनको रोज़ी दी जाती है और फ़रमाया, तुम्हें दो बातों से रोकता हूं, एक शिर्क, दूसरा तकब्बुर, क्योंकि ये दोनों बुरी सिफ़तें अल्लाह से रोक देती हैं।

किसी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या यह बात तकब्बुर में से है कि आदमी खाना तैयार करे और उस खाने पर एक जमाअत को बुलाए और उन्हें खिलाए या साफ़-सुथरे कपड़े पहने? आपने फ़रमाया, नहीं, ये दोनों बातें तकब्बुर में से नहीं हैं। तकब्बुर तो यह है कि तुम मख़्लूक़ को बेवकूफ़ बनाओ और दूसरे लोगों को हक़ीर समझो।[1]

एक रिवायत में यह है कि अगर तमाम आसमान और ज़मीनें और जो कुछ उनमें है, यह सब एक हलक़ा बन जाए और उन पर 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' रख दिया जाए, तो यह कलिमा इन सबको तोड़ देगा।

हज़रत याला बिन शद्दाद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मेरे वालिद हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब मुझे यह वाक़िया बयान किया, उस वक़्त हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु वहां मौजूद थे और वह मेरे वालिद की तस्दीक़ कर रहे थे। मेरे वालिद

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 84

ने मुझे बताया कि एक दिन हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे।

आपने फ़रमाया, क्या तुममें कोई अजनबी आदमी अह्ले किताब में से है? हमने अर्ज़ किया, कोई नहीं। इर्शाद फ़रमाया, किवाड़ बन्द कर दो। इसके बाद फ़रमाया, हाथ उठाओ और कहो 'लाइला-ह इल्लल्लाहु' हमने थोड़ी देर हाथ उठाए रखे (और कलिमा तैयिबा पढ़ा) फिर फ़रमाया 'अल हम्दु लिल्लाहि', ऐ अल्लाह! तूने मुझे यह कलिमा देकर भेजा है और इसके पढ़ने का तूने मुझे हुक्म दिया है और इस पर तूने मुझसे जन्नत का वायदा किया है और तू वायदा के ख़िलाफ़ नहीं करता। फिर फ़रमाया कि ख़ुश हो जाओ। अल्लाह ने तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमा दी।[1]

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मुझे कुछ वसीयत फ़रमा दें। इर्शाद फ़रमाया, जब तुमसे कोई बुरा काम हो जाए तो इसके बाद फ़ौरन कोई नेकी का काम करो, इससे वह बुराई मिट जाएगी। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' भी नेकियों में से है? आपने फ़रमाया, यह तो तमाम नेकियों से अफ़ज़ल है?[2]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा कि लोग 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' और 'अल्लाहु अक्बर' कह रहे हैं, तो आपने फ़रमाया, रब्बे काबा की क़सम! यही है, यही है। लोगों ने पूछा, यही क्या है? आपने फ़रमाया, यही तक़्वा वाला कलिमा है। मुसलमान ही इसके ज़्यादा हक़दार हैं और इसके अह्ल हैं।[3]

अल्लाह ने इर्शाद फ़रमाया है—

وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى (سورت فتح آیت ٢٦)

---

1. तर्ग़ीब 75, हैसमी, भाग 10, पृ० 81,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 81,
3. कंज़, भाग 10, पृ० 107,

'और अल्लाह तआला ने मुसलमानों को तक़्वा की बात पर जमाए रखा।' (सूरः फ़त्ह, आयत 26)

इस बारे में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, यह तक़्वा वाली बात 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' है। इब्ने जरीर वग़ैरह में इसके बाद 'अल्लाहु अक्बर' भी है।[1]

सुब-हानल्लाहि, वल-हम्दु लिल्लाहि, वला इला-ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक्बर व ला हौ-ल व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहि के अज़्कार

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, 'बाकियातुन सालिहातुन' क्या चीज़ें हैं? आपने फ़रमाया—

اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

'अल्लाहु अक्बर व ला इला-ह इल्लल्लाहु व सुब्हानल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि व ला हौ-ल व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहि' कहना।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम लोग अपनी हिफ़ाज़त का सामान ले लो। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या कोई दुश्मन आ गया है? आपने फ़रमाया, नहीं, आग से हिफ़ाज़त का सामान ले लो और—

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

'सुब्हानल्लाहि, वल हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर' कहा करो, क्योंकि ये कलिमे तुमसे आगे जाकर आख़िरत में काम आएंगे और तुम्हारे अच्छे अंजाम की वजह बनेंगे और यही वे भले अमल हैं जिनका सवाब बाक़ी रहता है।

एक रिवायत में यह है कि ये निजात देने वाले कलिमे हैं और

1. कंज़, भाग 1, पृ० 265,
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 91, हैसमी, भाग 10, पृ० 87,

अवसत में तबरानी की रिवायत में 'ला हौ-ल व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहि' का इज़ाफ़ा भी है।[1]

हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या तुम इस बात की ताक़त रखते हो कि रोज़ाना उहुद पहाड़ के बराबर अमल कर लिया करो? सहाबा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! कौन रोज़ाना उहुद के बराबर अमल कर सकता है? आपने फ़रमाया, तुम सब कर सकते हो? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० कैसे? आपने फ़रमाया, सुब्हानल्लाह कहना उहुद से बड़ा है और अलहम्दु लिल्लाहि कहना उहुद से बड़ा है और ला इला-ह इल्लल्लाहु कहना उहुद से बड़ा है और अल्लाहु अक्बर कहना उहुद से बड़ा है।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं पौधा लगा रहा था कि इतने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे पास से गुज़रे और फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरह ! क्या लगा रहे हो? मैंने अर्ज़ किया, पौधा। फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें इससे बेहतर पौधा न बताऊं?

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ

'सुब्हानल्लाहि, वल हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर' कहना। इनमें से हर कलिमे के बदले में जन्नत में एक पेड़ लग जाएगा।[3]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब तुम जन्नत के बाग़ों पर गुज़रो तो ख़ूब चरो। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जन्नत के बाग़ क्या हैं? आपने फ़रमाया, मस्जिदें। मैंने अर्ज़ किया, इनमें चरने की शक्ल क्या है? आपने फ़रमाया—

---

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 92, हैसमी, भाग 10, पृ० 89
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 91, तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 94,
3. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 84

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ

'सुब्हानल्लाहि, वलहम्दु लिल्लाहि, व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर' कहना।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक टहनी पकड़कर उसे हिलाया, ताकि उसके पत्ते गिरें, लेकिन कोई पत्ता न गिरा। आपने उसे फिर हिलाया, तो फिर भी कोई पत्ता न गिरा। आपने तीसरी बार हिलाया, तो फिर पत्ते गिरने लगे। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया—

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ

'सुब्हानल्लाहि, वल हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर' कहने से गुनाह ऐसे गिर जाते हैं जैसे पेड़ से पत्ते।[2]

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक देहाती ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि आप मुझे ऐसा कलाम बता दें जिसे मैं पढ़ता रहूं। आपने फ़रमाया, तुम यह पढ़ा करो—

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ اَللّٰهُ أَكْبَرُ كَبِيْرًا وَالْحَمْدُ

لِلّٰهِ كَثِيْرًا وَسُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ

'ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू अल्लाहु अक्बर कबीरा वल-हम्दु लिल्लाहि कसीरा व सुब्हानल्लाहि रब्बिल आलमीन व ला हौ-ल व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहिल अज़ीज़िल हकीम०'

उसने कहा, ये तमाम कलिमे तो मेरे रब की तारीफ़ के हो गए, मेरे लिए क्या है? आपने फ़रमाया, तुम यह दुआ मांगा करो—

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَارْزُقْنِيْ

'अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली वर्हम्नी वह्दिनी वर्ज़ुक़्नी'

---

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 97
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 93,

(ऐ अल्लाह ! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा, मुझ पर रहम फ़रमा, मुझे हिदायत अता फ़रमा और मुझे रोज़ी नसीब फ़रमा)

हज़रत अबू मालिक अशजई की रिवायत में 'व आफ़िनी' भी है यानी 'मुझे आफ़ियत नसीब फ़रमा।'

एक रिवायत में यह है कि इस दुआ में तुम्हारी दुनिया और आख़िरत दोनों आ गईं।[1]

हज़रत इब्ने अबी औफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक देहाती ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने क़ुरआन सीखने की बहुत कोशिश की, लेकिन सीख न सका। अब आप मुझे कोई ऐसी चीज़ सिखा दें जो क़ुरआन की जगह भी हो जाए। आपने फ़रमाया—

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ

'सुब्हानल्लाहि, वलहम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर' पढ़ा करो। उसने उंगलियों पर गिनते हुए ये कलिमे कहे और फिर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ये सारे कलिमे तो मेरे रब की तारीफ़ के हो गए, ख़ुद मेरे लिए क्या हुआ? आपने फ़रमाया, तुम यह दुआ मांगा करो—

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ وَعَافِنِيْ وَارْزُقْنِيْ وَاهْدِنِيْ

'अल्लाहुम्मग़्फ़िरली वर्हम्नी व आफ़िनी वर्ज़ुक़्नी वह्दिनी'

यह सुनकर वह देहाती चल दिया। आपने फ़रमाया, यह देहाती दोनों हाथों को ख़ैर से भरकर जा रहा है।

बैहक़ी की रिवायत में 'ला हौ-ल व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहि' भी है।[2]

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या मैं तुझे वह कलाम न बताऊं, जो

1. मुस्लिम,
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 90

अल्लाह को सबसे ज़्यादा पसन्द है? मैंने अर्ज़ किया, मुझे वह कलाम ज़रूर बताएं, जो अल्लाह को सबसे ज़्यादा पसन्द है? फ़रमाया, अल्लाह को सबसे ज़्यादा पसन्द कलाम 'सुब-हानल्लाहि व बिहम्दिही' है।[1]

तिर्मिज़ी की रिवायत में 'सुब-हा-न रब्बी व बिहम्दिही' है।

मुस्लिम की एक रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा गया, कौन-सा कलाम सबसे अफ़ज़ल है? फ़रमाया, वह कलाम जो अल्लाह तआला ने अपने फ़रिश्तों के लिए या अपने बन्दों के लिए चुना और वह है 'सुब-हानल्लाहि व बिहम्दिही'।

हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो आदमी 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहेगा, वह जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगा या फ़रमाया, जन्नत उसके लिए वाजिब हो जाएगी और जो आदमी सौ बार 'सुब-हानल्लाहि व बिहम्दिही' कहेगा, उसके लिए एक लाख चौबीस हज़ार नेकियां लिखी जाएंगी। सहाबा ने अर्ज़ किया, फिर तो हममें से कोई भी हलाक न होगा। आपने फ़रमाया, हां, लेकिन बात यह है कि आदमी उतनी नेकियां लेकर आएगा कि किसी पहाड़ पर रख दी जाएं तो पहाड़ दब जाए, लेकिन फिर नेमतें आएंगी और उनके बदले में वे नेकियां सब ख़त्म हो जाएंगी। इसके बाद फिर अल्लाह तआला ही अपनी रहमत और फ़ज़्ल से दस्तगीरी फ़रमाएंगे।[2]

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे कि इतने में आपने फ़रमाया, क्या तुम लोग रोज़ाना एक हज़ार नेकियां कमाने से आजिज़ हो? पास बैठे हुए लोगों में से एक साहब ने पूछा हम किस तरह एक हज़ार नेकियां कमा सकते हैं? फ़रमाया, आदमी सौ बार 'सुब्-हानल्लाहि' कहे, तो उसके लिए हज़ार नेकियां लिखी जाएंगी या उसकी हज़ार ख़ताएं गिरा दी जाएंगी।

---

1. मुस्लिम, नसई, तिर्मिज़ी
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 81

तर्ग़ीब में है कि मुस्लिम की रिवायत में तो 'अव' है जिसका तर्जुमा 'या' लिखा गया है, लेकिन तिर्मिज़ी और नसई की रिवायत में 'व' है, जिसका तर्जुमा यह होगा कि 'और उसकी हज़ार ख़ताएं गिरा दी जाएंगी।' वल्लाहु आलम।[1]

हज़रत क़ैस बिन साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद ने मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में ख़िदमत करने के लिए पेश किया। एक दिन हुज़ूर सल्ल० मेरे पास तशरीफ़ लाए। मैं दो रक्अत नमाज़ पढ़कर बैठा हुआ था। आपने मुझे पांव मुबारक मार कर फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा न बता दूं? मैंने कहा, ज़रूर बताएं। फ़रमाया 'ला हौ-ल व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहि' (बुराइयों से बचने की ताक़त और नेकियां करने की ताक़त सिर्फ़ अल्लाह ही से मिलती है।)[2]

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे-पीछे चल रहा था कि इतने में आपने मुझसे फ़रमाया, ऐ अबूज़र! क्या मैं तुम्हें जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना बताऊं? मैंने कहा, ज़रूर बताएं। फ़रमाया, 'ला हौ-ल व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहि'०[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मुझसे हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें ऐसा कलिमा न सिखा दूं जो मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सिखाया था? मैंने कहा, ऐ चचा जान! ज़रूर सिखाएं। फ़रमाया, जब हुज़ूर सल्ल० मेरे मेहमान बने थे, तो एक दिन आपने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना न बता दूं? मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मेरे मां-बाप

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 211
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 104,
3. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 105

आप पर क़ुरबान हों, ज़रूर बता दें। फ़रमाया 'ला हौ-ल व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहि' ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ा करो।[1]

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मेराज की रात में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर गुज़र हुआ, तो उन्होंने पूछा, ऐ जिब्रील ! यह आपके साथ कौन हैं? हज़रत जिब्रील ने कहा, यह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। तो हज़रत इब्राहीम ने हुज़ूर सल्ल० से फ़रमाया, ऐ मुहम्मद ! अपनी उम्मत से कहना कि वह जन्नत के पौधे ज़्यादा से ज़्यादा लगाएं, क्योंकि जन्नत की मिट्टी बहुत अच्छी है और बहुत कुशादा ज़मीन है। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, जन्नत के पौधे क्या हैं? हज़रत इब्राहीम अलै० ने फ़रमाया, 'ला हौ-ल व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहि'।

तबरानी की रिवायत में यह भी है कि हज़रत इब्राहीम ने मुझे सलाम किया और मुझे ख़ुश आमदीद कहा और फ़रमाया, अपनी उम्मत से कहना।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, जिसने 'बिस्मिल्लाह' कहा, उसने अल्लाह का ज़िक्र किया और जिसने अल-हम्दु लिल्लाहि कहा उसने अल्लाह का शुक्र अदा किया और जिसने अल्लाहु अक्बर कहा, उसने अल्लाह की अज़्मत बयान की और जिसने ला इला-ह इल्लल्लाहु कहा, उसने अल्लाह की तौहीद बयान की और जिसने ला हौ-ल व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहि' कहा, उसने फ़रमांबरदारी ज़ाहिर की और ख़ुद को अल्लाह के सुपुर्द कर दिया और उसे जन्नत में इसकी वजह से रौनक़ और ख़ज़ाना मिलेगा।[3]

हज़रत मुतर्रिफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझसे हज़रत इम्रान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, आज मैं तुम्हें एक बात बताता हूं, जिससे

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 98,
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 105, हैसमी, भाग 10, पृ० 97
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 222,

अल्लाह तुम्हें बाद में नफ़ा देंगे और वह यह है कि तुम यह बात जान लो कि क़ियामत के दिन अल्लाह के सबसे बेहतरीन बन्दे वे होंगे, जो (दुनिया में) अल्लाह की ख़ूब हम्द व सना करने वाले होंगे।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया 'सुब्हानल्लाहि' और 'ला इला-ह इल्लल्लाह' का तो हमें पता चल गया, लेकिन 'अलहम्दु लिल्लाह' क्या है? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, यह ऐसा कलिमा है जिसे अल्लाह ने अपने लिए पसन्द फ़रमाया है और वह चाहते हैं कि उसे कहा जाए।[2]

हज़रत अबू ज़बयान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने कव्वा ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से 'सुब-हानल्लाह' के बारे में पूछा, तो हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, यह ऐसा कलिमा है जिसे अल्लाह ने अपने लिए पसन्द फ़रमाया है और इसमें हर बुरी सिफ़त से अल्लाह की पाकी बयान करना है।[3]

एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने दो आदमियों को मारने का हुक्म दिया, तो उनमें से एक 'बिस्मिल्लाह' और दूसरा 'सुब-हानल्लाह' कहने लगा। हज़रत उमर रज़ि० ने मारने वाले से कहा, तेरा भला हो 'सुब्हानल्लाह' कहने वाले की पिटाई ज़रा हल्की करना, क्योंकि अल्लाह का हर ऐब से पाक होना सिर्फ़ मोमिन ही के दिल में पक्का होता है।[4]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे, जब भी मैं तुम्हें कोई बात बताता हूं, तो उसके साथ ही अल्लाह की किताब में से वह आयत ज़रूर लाता हूं, जिससे मेरी इस बात की तस्दीक़ होती है। मुसलमान बन्दा जब—

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ وَتَبَارَكَ اللهُ

---

1. हैसमी, भाग 10,. पृ० 95
2. इब्ने अबी हातिम
3. कंज़, भाग 1, पृ० 210
4. कंज़, भाग 1, पृ० 210

'सुब-हानल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व तबा-रकल्लाहु' कहता है, तो एक फ़रिश्ता इन कलिमों को लेकर अपने पर के नीचे रख लेता है, फिर उन्हें लेकर ऊपर चढ़ता है, तो वह फ़रिश्तों की जिस जमाअत पर भी गुज़रता है, वे इन कलिमों के कहने वाले के लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं। आख़िर वह इन कलिमों को लेकर अल्लाह की ज़ाते आली तक पहुंच जाता है। फिर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने यह आयत पढ़ी—

إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ (سورت فاطر آیت ۱۰)

'अच्छा कलाम उसी तक पहुंचता है और अच्छा काम उसको पहुंचाता है।'[1] (सूरः फ़ातिर, आयत 10)

ज़्यादा अज़्कार के बजाए उन जामे अज़्कार को अख़्तियार करना जिनके लफ़्ज़ कम और मानी ज़्यादा हों

हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुबह की नमाज़ के वक़्त मेरे पास से नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले गए, (और मैं अपने मुसल्ले पर बैठी हुई थी।) हुज़ूर चाश्त की नमाज़ के बाद (दोपहर के क़रीब) तशरीफ़ लाए तो मैं उसी हाल में बैठी हुई थी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम उसी हाल पर हो जिस पर तुम्हें मैंने छोड़ा था। मैंने कहा, जी हां।

आपने फ़रमाया, मैंने तुमसे जुदा होने के बाद चार कलिमे तीन बार पढ़े। अगर उनको इस सबके मुक़ाबले में तौला जाए जो तुमने सुबह से पढ़ा है, तो वे ग़ालिब हो जाएं। वे कलिमे ये हैं—

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَرِضَاءَ نَفْسِهٖ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ

'सुब-हानल्लाहि व बिहम्दिही अ-द-द ख़ल्क़िही व रिज़ा-अ नफ़्सिही व ज़ि-न-त अर्शिही व मिदा-द कलिमातिही'

(अल्लाह की पाकी बयान करता हूं और उसकी तारीफ़ करता हूं,

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 90, तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 93

उसकी मख़्लूक़ात की तायदाद के जितना और उसकी मर्ज़ी और ख़ुश्नूदी के जितना और उसके अर्श के वज़न के जितना और उसके कलिमों के मिक़्दार के जितना ।)

मुस्लिम की रिवायत में इस तरह से है—

سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ خَلْقِهٖ سُبْحَانَ
اللّٰهِ رِضَاءَ نَفْسِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ زِنَةَ عَرْشِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ مِدَادَ كَلِمَاتِهٖ

नसई में उसके बाद यह है कि 'अल हम्दु लिल्लाहि' भी इसी तरह चार बार ।

नसई की दूसरी रिवायत में ये कलिमे इस तरह हैं—[1]

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَرِضَاءَ نَفْسِهٖ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ
وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ ـ

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक सहाबी औरत के पास तशरीफ़ ले गए, उसके सामने खजूर की गुठलियां या कंकरियां रखी हुई थीं, जिन पर वह तस्बीह पढ़ रही थी । हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं तुझे ऐसी चीज़ बताऊं जो इस गिनने से आसान हो या फ़रमाया, जो उससे अफ़ज़ल हो—

سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ فِى السَّمَاءِ سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ فِى الْاَرْضِ سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ
مَا بَيْنَ ذٰلِكَ سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا هُوَ خَالِقٌ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ مِثْلَ ذٰلِكَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِثْلَ ذٰلِكَ
وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مِثْلَ ذٰلِكَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ مِثْلَ ذٰلِكَ

'अल्लाह की तारीफ़ उस मख़्लूक़ के जितना करती हूं जो उसने आसमान में पैदा की और उस मख़्लूक़ के जितना जो उसने ज़मीन में पैदा की और उस मख़्लूक़ के जितना, जो इन दोनों ज़मीन-आसमान के दर्मियान है और उस मख़्लूक़ के जितना, जिसे वह पैदा करने वाला है और उस सबके बराबर 'अल्लाहु अक्बर' और उस सबके बराबर

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 98

'अल-हम्दु लिल्लाह' और उस सबके बराबर 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' और उस सबके बराबर 'ला हौ-ल व ला कू-व-त इल्ला बिल्लाहि०'[1]

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने देखा कि मैं अपने होंठों को हिला रहा हूं। आपने पूछा, ऐ अबू उमामा ! तुम होंठ हिलाकर क्या पढ़ रहे हो? मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं अल्लाह का ज़िक्र कर रहा हूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें ऐसा ज़िक्र न बताऊं, जो तुम्हारे दिन-रात ज़िक्र करने से ज़्यादा भी है और अफ़ज़ल भी है?

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ज़रूर बताएं। फ़रमाया, तुम ये कलिमे कहा करो—

سُبْحَانَ اللّٰہِ عَدَدَ مَا خَلَقَ

سُبْحَانَ اللّٰہِ مِلْأَ مَا خَلَقَ سُبْحَانَ اللّٰہِ عَدَدَ مَا فِی الْأَرْضِ سُبْحَانَ اللّٰہِ مِلْأَ مَا فِی الْأَرْضِ وَالسَّمَاءِ سُبْحَانَ اللّٰہِ عَدَدَ مَا أَحْصٰی كِتَابُهٗ سُبْحَانَ اللّٰہِ مِلْأَ مَا أَحْصٰی كِتَابُهٗ سُبْحَانَ اللّٰہِ عَدَدَ كُلِّ شَيْءٍ سُبْحَانَ اللّٰہِ مِلْأَ كُلِّ شَيْءٍ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَدَدَ مَا خَلَقَ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ مِلْأَ مَا خَلَقَ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ عَدَدَ مَا فِی الْأَرْضِ وَالسَّمَاءِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ مِلْأَ مَا فِی الْأَرْضِ وَالسَّمَاءِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ عَدَدَ مَا أَحْصٰی كِتَابُهٗ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ مِلْأَ مَا أَحْصٰی كِتَابُهٗ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ عَدَدَ كُلِّ شَيْءٍ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ مِلْأَ كُلِّ شَيْءٍ۔

'मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूं मख़्लूक़ की तायदाद के बराबर, अल्लाह की पाकी मख़्लूक़ के भर देने के जितना, अल्लाह की पाकी उन तमाम चीज़ों के बराबर जो ज़मीन में हैं, अल्लाह की पाकी उन तमाम चीज़ों के भर देने के जितना जो ज़मीन व आसमान में हैं, अल्लाह की पाकी उन तमाम चीज़ों की तायदाद के बराबर जिनको उसकी किताब ने गिना। अल्लाह की पाकी उन तमाम चीज़ों के भर देने जितना जिनको उसकी किताब ने गिना। अल्लाह की पाकी हर चीज़ की तायदाद के बराबर और अल्लाह की पाकी हर चीज़ को भर देने के जितना बयान करता हूं। इसी तरह अल्लाह की तारीफ़ बयान करता हूं।

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 99,

(चारों चीज़ों के गिनने और भर देने के बराबर)[1]

तबरानी में यह मज़्मून है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें ऐसी ज़बरदस्त चीज़ न बताऊं कि उसके कहने पर तुम्हें इतना ज़्यादा सवाब मिलेगा कि अगर तुम दिन-रात इबादत करके थक जाओ तो भी उसके सवाब तक न पहुंच सको? मैंने कहा, ज़रूर बताएं। आपने फ़रमाया, अल हम्दु लिल्लाह आख़िर तक, लेकिन ये कलिमे मुख़्तसर हैं। फिर आपने फ़रमाया 'सुब-हानल्लाह' इसी तरह से और अल्लाहु अक्बर इसी तरह से।

तबरानी की दूसरी रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इन कलिमों को सीख लो और अपने बाद अपनी औलाद को सिखाओ।[2]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे देखा कि मेरे होंठ हिल रहे हैं। फ़रमाया, ऐ अबुद्दर्दा! क्या पढ़ रहे हो? मैंने कहा, अल्लाह का ज़िक्र कर रहा हूं। आपने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें ऐसा ज़िक्र न सिखाऊं जो रात के शुरू से दिन तक और दिन के शुरू से रात तक लगातार ज़िक्र करने से अफ़ज़ल है। मैंने कहा, ज़रूर सिखाएं। फ़रमाया—[3]

سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ كُلِّ شَيْئٍ سُبْحَانَ اللهِ مِلْأَ مَا أَحْصٰى
كِتَابُهٗ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْأَ مَا خَلَقَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْأَ مَا أَحْصٰى كِتَابُهٗ

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं एक दिन हलक़े में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बैठा हुआ था, इतने में एक आदमी आया और उसने हुज़ूर सल्ल० को और लोगों को सलाम किया और कहा 'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि'। हुज़ूर सल्ल० ने जवाब में फ़रमाया 'व अलैकुमुस्सलामु व रहमतुल्लाहि व बरकातहू'।

जब वह आदमी बैठा, तो उसने कहा—

---

1. बुख़ारी व मुस्लिम
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 99, हैसमी, भाग 10, पृ० 93
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 94

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيْهِ كَمَا يُحِبُّ رَبُّنَا اَنْ يُّحْمَدَ وَيَنْبَغِيْ لَهٗ

'मैं अल्लाह की ऐसी तारीफ़ करता हूं, जो बहुत ज़्यादा हो, उम्दा और बरकत वाली हो और ऐसी हो जैसी हमारे रब को पसन्द है और जैसी उसकी शान के मुनासिब है।'

हुज़ूर सल्ल० ने उससे फ़रमाया, तुमने क्या कहा? उसने दोबारा यही कलिमे दोहरा दिए। आपने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, दस फ़रिश्ते इन कलिमों की ओर झपटे थे। इनमें से हर एक उन्हें लिखना चाहता था, लेकिन उन्हें समझ न आया कि इन्हें कैसे लिखें, इसलिए वे कलिमे लेकर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के दरबार में पहुंच गए तो अल्लाह ने फ़रमाया, मेरे बन्दे ने जैसे कहे हैं, वैसे ही लिख दो।[1]

हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में एक आदमी ने कहा—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيْهِ

'अलहम्दु लिल्लाहि हम्दन कसीरन तैयिबन मुबारकन फ़ीहि' तो हुज़ूर सल्ल० ने पूछा कि ये कलिमे किसने कहे? वह आदमी ख़ामोश रहा और यों समझा कि ये कलिमे जो अचानक उसकी ज़ुबान से निकले हैं, ये हुज़ूर सल्ल० को नागवार गुज़रे हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फिर फ़रमाया, वह कौन है? उसने ठीक बात ही कही है। इस पर उस आदमी ने कहा, मैंने कहे और मुझे इनसे ख़ैर की उम्मीद है। फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मैंने तेरह फ़रिश्तों को देखा कि वे तुम्हारे इन कलिमों को अल्लाह के दरबार में पेश करने के लिए झपट रहे हैं।[2]

हज़रत सईद बिन जुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा कि एक आदमी के पास तस्बीह है, जिस पर वह अल्लाह का ज़िक्र कर रहा है। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया,

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 103,
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 102,

तस्बीह पर लम्बा-चौड़ा ज़िक्र करने के बजाए उसे ये कलिमे कहना काफ़ी हैं (कि उनमें लफ़्ज़ कम हैं, लेकिन मानी बहुत ज़्यादा हैं।)

سُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْأَ السَّمٰوٰتِ وَمِلْأَ مَا شَاءَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ

'मैं अल्लाह की पाकी इतनी बयान करता हूं जो आसमानों को भर दे और आसमानों के बाद अल्लाह जिस चीज़ को चाहे, उसे भर दे।'[1]

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْأَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمِلْأَ مَا شَاءَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ مِلْأَ

السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمِلْأَ مَا شَاءَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ[2]

नमाज़ों के बाद के अज़्कार और सोने के वक़्त के अज़्कार

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि फ़ुक़हा मुहाजिरों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि मालदार लोग सारे बुलन्द दर्जे ले उड़े और हमेशा रहने वाली नेमतें उनके हिस्से में आ गईं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्यों? अर्ज़ किया, जैसे हम नमाज़ पढ़ते हैं, वैसे ये भी पढ़ते हैं, जैसे हम रोज़ा रखते हैं, ये भी रखते हैं, लेकिन ये सदक़ा-ख़ैरात करते हैं, हम नहीं कर सकते हैं। ये ग़ुलाम आज़ाद करते हैं, हम नहीं कर सकते। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बता दूं कि तुम उस पर अमल करके अपने से पहलों को पकड़ लो और बाद वालों से भी आगे बढ़े रहो और कोई आदमी तुमसे उस वक़्त तक अफ़ज़ल न हो, जब तक वह भी उस चीज़ को न कर ले।

सहाबा ने अर्ज़ किया, ज़रूर बता दीजिए। इर्शाद फ़रमाया कि हर नमाज़ के बाद 'सुब्हानल्लाह, अल्लाहु अक्बर, अलहम्दु लिल्लाहि' 33 बार पढ़ लिया करो। (इन लोगों ने शुरू कर दिया, मगर उस ज़माने के मालदार भी इसी नमूने के थे, उन्होंने भी मालूम होने पर शुरू कर दिया) तो फ़ुक़रा दोबारा हाज़िर हुए कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हमारे मालदार भाइयों ने भी सुन लिया और वे भी यही करने लगे। हुज़ूर

1. कंज़, भाग 1, पृ० 210

सल्ल० ने फ़रमाया, यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे अता फ़रमाए।

रिवायत करने वाले हज़रत समी कहते हैं, मैंने घरवालों को यह हदीस सुनाई, तो उन्होंने मुझे कहा, आपके समझने में ग़लती हो गई है। आपके उस्ताद ने यों कहा होगा 'सुब्हानल्लाहि अलहम्दु लिल्लाहि' 33-33 बार और अल्लाहु अक्बर 34 बार पढ़ा करो। इस पर मैं (अपने उस्ताद) हज़रत अबू सालेह के पास गया और घरवालों की बात उन्हें बताई। उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर फ़रमाया, अल्लाहु अक्बर व सुब्हानल्लाह व अल-हम्दु लिल्लाहि एक बार, अल्लाहु अक्बर व सुब्हानल्लाहि व अलहम्दु लिल्लाह दो बार, इस तरह उन्होंने 33 बार इन कलिमों को गिना (कि अल्लाहु अक्बर भी इस हदीस में 33 बार है, 34 बार नहीं)[1]

अबू दाऊद में यह रिवायत इस तरह है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मालदार तो सारा अज्र व सवाब ले गए। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया और इस रिवायत में यों है कि तुम हर नमाज़ के बाद अल्लाहु अक्बर 33 बार, अलहम्दु लिल्लाहि 33 बार और सुब्हानल्लाहि 33 बार कहा करो और उनके आख़िर में यह कहा करो—

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيْرٌ

'ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अला कुल्लि शैइन क़दीर०'

जब तुम यह सब कुछ कह लोगे, तो तुम्हारे सारे गुनाह माफ़ हो जाएंगे, चाहे समुद्र के झाग के बराबर हों।[2]

तिर्मिज़ी और नसई में यह रिवायत हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से नक़ल की गई है और उसमें यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ुक़रा मुहाजिरों से फ़रमाया, जब तुम नमाज़ पढ़

1. बुख़ारी, मुस्लिम
2. तिर्मिज़ी, नसई

चुको तो सुब्हानल्लाह 33 बार, अलहम्दु लिल्लाहि 33 बार, अल्लाहु अक्बर 34 बार और ला इला-ह इल्लल्लाहु 10 बार कह लिया करो।[1]

हज़रत उम्मे दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु के यहां एक मेहमान आया। हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने उससे पूछा कि तुमको ठहरना है तो हम तुम्हारी सवारी चरने के लिए भेज दें? और अगर अभी जाना है तो चारा साथ कर दें। उसने कहा, नहीं, मुझे अभी जाना है। फ़रमाया, मैं तुम्हें ऐसा अच्छा तोशा दूंगा कि अगर उससे बेहतर तोशा मुझे मिलता तो मैं तुम्हें वह देता।

मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मालदार लोग तो दुनिया और आख़िरत दोनों ले उड़े। हम भी नमाज़ पढ़ते हैं, वे भी नमाज़ पढ़ते हैं, हम भी रोज़ा रखते हैं, वे भी रोज़ा रखते हैं। वह सदक़ा देते हैं, हम सदक़ा नहीं दे सकते। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या मैं ऐसा काम न बताऊं कि जब तुम उसे करोगे तो पहले वालों में से कोई तुमसे आगे न निकल सकेगा और बाद वालों में से कोई तुमको न पा सकेगा, अलबत्ता जो यह अमल कर लेगा, वह तुम्हें पा लेगा। हर नमाज़ के बाद 33 बार सुब्हानल्लाह, 33 बार अल-हम्दु लिल्लाह और 34 बार अल्लाहु अक्बर कहा करो।[2]

हज़रत क़तादा रहमतुल्लाहि अलैहि मुरसलन रिवायत करते हैं कि कुछ मुसलमान फ़ुक़रा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मालदार तो सारा अज्र व सवाब ले गए, वे सदक़ा करते हैं, हम नहीं कर सकते, वे ख़र्च करते हैं, हम नहीं कर सकते। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ज़रा यह बताओ, अगर दुनिया का सारा माल एक दूसरे पर रखा जाए, तो क्या यह आसमान तक पहुंच जाएगा? उन्होंने

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 110, कंज़, भाग 1, पृ० 296, कंज़, भाग 3, पृ० 315, मज्मा, भाग 10, पृ० 101,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 100, कंज़, भाग 1, पृ० 296,

कहा, नहीं ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊं जिसकी जड़ ज़मीन में है और उसकी शाख़ आसमान में ? तुम हर नमाज़ के बाद

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ

'ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व सुब्हानल्लाहि, वलहम्दु लिल्लाहि' दस बार कहा करो। इन कलिमों की जड़ ज़मीन में और शाख़ आसमान में है।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी की तो उनके साथ एक चादर, चमड़े का एक गद्दा जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी, दो चक्कियां, एक मश्कीज़ा और दो घड़े भेजे। मैंने एक दिन हज़रत फ़ातिमा रज़ि० से कहा, कुंएं से डोल खींचते-खींचते मेरे सीने में तक्लीफ़ शुरू हो गई है और तुम्हारे मोहतरम वालिद के पास अल्लाह ने क़ैदी भेजे हैं, जाओ और उनसे ख़ादिम मांग लाओ। हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम ! मैंने भी इतनी चक्की पीसी है और मेरे हाथों में गट्टे पड़ गए हैं, चुनांचे वह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गईं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ बिटिया ! कैसे आई हो ? हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने कहा, बस आपको सलाम करने आई हूं और शर्म की वजह से ग़ुलाम न मांग सकीं और यों ही वापस आ गईं। मैंने उनसे पूछा कि क्या हुआ ? उन्होंने कहा, मैं तो शर्म की वजह से ग़ुलाम न मांग सकी।

फिर हम दोनों इकट्ठे हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गए और मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! कुंएं से पानी खींचते-खींचते मेरे सीने में तक्लीफ़ हो गई है। हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने कहा, चक्की पीसते-पीसते मेरे हाथों में गट्टे पड़ गए हैं। अब अल्लाह ने आपके पास

1. कंज़, भाग 1, पृ० 297

क़ैदी भेजे हैं और कुछ वुसअत अता फ़रमाई है, इसलिए हमें भी एक ख़ादिम दे दें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! सुफ़्फ़ा वाले सख़्त फ़क्र व फ़ाक़ा में हैं और भूख के मारे उनका बुरा हाल है। उन पर ख़र्च करने के लिए मेरे पास और कुछ है नहीं, इसलिए यह ग़ुलाम बेचकर मैं सारी रक़म उन पर ख़र्च करूंगा, इसलिए मैं तुम्हें कोई ख़ादिम नहीं दे सकता।

हम दोनों वापस आ गए। हमारा एक छोटा-सा कम्बल था, जब उससे सर ढांकते, तो पांव खुल जाते और जब पांव ढांकते तो सर खुल जाता। रात को हम दोनों उसमें लेटे हुए थे कि अचानक हुज़ूर सल्ल० हमारे पास तशरीफ़ ले आए। हम दोनों उठने लगे, तो फ़रमाया, अपनी जगह लेटे रहो। फिर फ़रमाया, तुमने मुझसे जो ख़ादिम मांगा है, क्या मैं तुम्हें उससे बेहतर चीज़ न बता दूं? हमने कहा, ज़रूर बता दें।

फ़रमाया, ये कुछ कलिमे हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने मुझे सिखाए हैं। तुम दोनों हर नमाज़ के बाद दस बार सुब्हानल्लाह, दस बार अलहम्दु लिल्लाहि, दस बार अल्लाहु अक्बर कहा करो और जब बिस्तर पर लेटा करो, तो 33 बार अलहम्दु लिल्लाहि, 33 बार सुब्हानल्लाह और 34 बार अल्लाहु अक्बर कहा करो। फिर हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम, जब से मैंने ये तस्बीहें हुज़ूर सल्ल० से सुनी हैं, कभी नहीं छोड़ीं।

रिवायत करने वाले कहते हैं, इब्ने कव्वा ने हज़रत अली रज़ि० से पूछा, क्या सिफ़्फ़ीन की लड़ाई की रात को भी नहीं छोड़ा? फ़रमाया, ऐ इराक़ वालो ! अल्लाह तुम्हें मारे, सिफ़्फ़ीन की लड़ाई की रात को भी नहीं छोड़ा।[1]

इब्ने अबी शैबा में हज़रत अली रज़ि० की यही हदीस इस तरह से है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या मैं तुम दोनों को ऐसी चीज़ न बताऊं जो तुम्हारे लिए ख़ादिम से भी बेहतर है? तुम

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 12, इब्ने साद, भाग 8, पृ० 25, कंज़, भाग 8, पृ० 66

दोनों हर नमाज़ के बाद 33 बार सुब्हानल्लाह, 33 बार अल-हम्दु लिल्लाह और 34 बार अल्लाहु अक्बर कहा करो। इस तरह से ये सौ हो जाएंगे और जब रात को बिस्तर पर लेटा करो तो भी यही कलिमे कहा करो।[1]

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा घर के काम-काज की शिकायत करने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आईं और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! चक्की पीसने की वजह से मेरे हाथों में गट्टे पड़ गए, ख़ुद ही चक्की पीसती हूं और ख़ुद ही आटा गूंधती हूं। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, अगर अल्लाह तुम्हें कोई चीज़ देना चाहते हैं तो वह तुम्हारे पास ख़ुद ही आ जाएगी, लेकिन मैं तुम्हें इससे बेहतर चीज़ बताऊंगा। जब तुम बिस्तर पर लेटा करो तो 33 बार सुब्हानल्लाह, 33 बार अलहम्दु लिल्लाह और 34 बार अल्लाहु अक्बर कहा करो। इस तरह ये कलिमे सौ हो जाएंगे और ये तुम्हारे लिए ख़ादिम से बेहतर हैं। सुबह की नमाज़ के बाद और मग़रिब की नमाज़ के बाद दस-दस बार ये कलिमे कहा करो—

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
يُحْيِىْ وَيُمِيْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيْرٌ

इनमें से हर कलिमा के बदले में दस नेकियां लिखी जाएंगी और दस गुनाह गिराए जाएंगे और इनमें से हर कलिमा का सवाब उतना होगा जितना इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद में से एक ग़ुलाम आज़ाद करने का और उस दिन का शिर्क के अलावा का हर गुनाह माफ़ कर दिया जाएगा।

जब तुम सुबह को इन कलिमों को कह लोगी तो शाम को कहने

1. कंज़, भाग 8, पृ० 66,

तक हर शैतान से और हर बुरी हालत से इन कलिमों की वजह से हिफ़ाज़त होगी।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ लेते तो इन कलिमों को फ़रमाते—

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ
وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ
وَلَا رَادَّ لِمَا قَضَيْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। (सारा) मुल्क उसी का है और सारी तारीफ़ें उसी के लिए हैं। वही ज़िंदा करता है और मारता है और वही हर चीज़ पर क़ादिर है। ऐ अल्लाह ! जो नेमत तू दे उसे कोई रोकने वाला नहीं और जो तू रोक ले, उसे कोई देने वाला नहीं और जो फ़ैसला तू कर दे उसे कोई टालने वाला नहीं और तेरे सामने किसी मालदार को उसकी दौलत काम नहीं देती।[2]

सुबह और शाम के अज़्कार

बनू हाशिम के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम अब्दुल हमीद की वालिदा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक साहबज़ादी की ख़िदमत किया करती थीं। उन्होंने अपने बेटे को बताया कि हुज़ूर सल्ल० की साहबज़ादी ने मुझे बताया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझे सिखाया करते थे और फ़रमाया करते थे, सुबह को ये कलिमे कहो—

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ اَعْلَمُ اَنَّ
اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا

'मैं अल्लाह की पाकी और उसकी तारीफ़ बयान करती हूं, नेकियां करने की ताक़त सिर्फ़ अल्लाह ही से मिलती है, जो अल्लाह ने चाहा,

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 108
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 103

वही हुआ और जो नहीं चाहा, वह नहीं हुआ। मैं जानती हूं कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है और अल्लाह का इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है।' जो इन कलिमों से सुबह करेगा, वह शाम तक महफ़ूज़ रहेगा और जो शाम को कहेगा, वह सुबह तक महफ़ूज़ रहेगा।[1]

हज़रत अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जो आदमी सुबह व शाम ये कलिमे सात बार कहेगा—

حَسْبِيَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْم

'अल्लाह मुझे काफ़ी है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसी पर मैंने भरोसा किया, वह बड़े अर्श का रब है।'

अल्लाह हर फ़िक्र और परेशानी से उसकी किफ़ायत करेंगे, चाहे सच्चे दिल से कहे या झूठे से।[2]

बाज़ारों में और ग़फ़लत की जगहों में अल्लाह का ज़िक्र करना

हज़रत इस्मा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह का सबसे ज़्यादा पसंदीदा अमल 'सुब्हतुल हदीस' है और अल्लाह को सबसे ज़्यादा नापसन्दीदा अमल तह्रीफ़ है। हमने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! सुब्हतुल हदीस क्या है? फ़रमाया, सुब्हतुल हदीस यह है कि लोग बातें कर रहे हों और एक आदमी तस्बीह व तह्लील और अल्लाह का ज़िक्र कर रहा हो।

फिर हमने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! तह्रीफ़ क्या है? आपने फ़रमाया, तह्रीफ़ यह है कि लोग ख़ैरियत से हों, अच्छे हाल पर हों और कोई पड़ोसी या साथी पूछे तो यों कह दें कि हम बुरे हाल में हैं?[3]

हज़रत अबू इदरीस ख़ौलानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत

1. तोहफ़तुज़्ज़ाकिरीन, पृ० 66,
2. अबू दाऊद
3. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 193, हैसमी, भाग 10, पृ० 81,

मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुम लोगों के साथ बैठते हो, तो वे लोग लामुहाला बातें शुरू कर देंगे। जब तुम देखो कि वे (अल्लाह से) ग़ाफ़िल हो गए हैं तो तुम उस वक़्त अपने रब की तरफ़ पूरे ज़ौक़ और शौक़ से मुतवज्जह हो जाना।

वलीद रिवायत करने वाले कहते हैं, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद बिन जाबिर रह० से इस हदीस का ज़िक्र किया गया, तो उन्होंने कहा, यह बात ठीक है और मुझे हज़रत अबू तलहा हकीम बिन दीनार रह० ने बताया कि सहाबा किराम रज़ि० कहा करते थे कि मक़बूल दुआ की निशानी यह है कि जब तुम लोगों को ग़ाफ़िल देखो तो उस वक़्त तुम अपने रब की तरफ़ मुतवज्जह हो जाओ।[1]

हज़रत अबू क़िलाबा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, बाज़ार में दो आदमियों की आपस में मुलाक़ात हुई। एक ने दूसरे से कहा, लोग इस वक़्त (अल्लाह से) ग़ाफ़िल हैं। आओ हम अल्लाह से इस्तग़फ़ार करें। चुनांचे दोनों ने ऐसा किया। फिर दोनों में से एक का इंतिक़ाल हो गया। दूसरे ने उसे ख़्वाब में देखा, तो उसने कहा, तुम्हें मालूम है कि जब शाम को बाज़ार में हमारी मुलाक़ात हुई थी, तो अल्लाह ने उस वक़्त हमारी मग़्फ़िरत कर दी थी।[2]

सफ़र के अज़्कार

हज़रत अबू लास ख़ुज़ाई रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें हज के सफ़र के लिए सदक़े के ऊंट दिए। हमने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमारा ख़्याल है कि ये ऊंट हमें उठा नहीं सकेंगे। फ़रमाया, हर ऊंट के कोहान पर एक शैतान होता है। जब तुम उन पर सवार होने लगो तो जैसे अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दे रखा है, तुम अल्लाह का नाम लो, फिर उन्हें अपने काम में लाओ, उनसे

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 236,
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 191,

अपनी ख़िदमत लो। यह तुम्हें अल्लाह के हुक्म से उठा लेंगे।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे सवारी पर अपने पीछे बिठाया। जब आप सवारी पर ठीक तरह से बैठ गए, तो आपने तीन बार अल्लाहु अक्बर, 3 बार सुब्हानल्लाह, और एक बार ला इला-ह इल्लल्लाह कहा, फिर मेरे ऊपर लेट कर मुस्कराने लगे, फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, जो भी आदमी अपनी सवारी पर सवार होकर वह काम करे जो मैंने किए, तो अल्लाह उसकी तरफ़ मुतवज्जह होकर ऐसे मुस्कराएंगे, जैसे मैं तुम्हें देखकर मुस्कराया हूं।[2]

हज़रत अबू मलीह बिन उसामा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मेरे वालिद उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैं सवारी पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे बैठा हुआ था कि इतने में हमारे ऊंट को ठोकर लगी। मैंने कहा, शैतान हलाक हो। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह मत कहो कि शैतान हलाक हो, क्योंकि इससे तो वह फूल कर कमरे जितना हो जाएगा, (यों कहेगा कि मुझे कुछ समझता है, तभी तो मुझे बुरा कहा) और कहेगा, मेरी ताक़त से ऐसा हुआ, बल्कि यों कहो 'बिस्मिल्लाह', इससे वह मक्खी की तरह छोटा हो जाएगा।[3]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी ऊंची जगह पर चढ़ते तो यह दुआ पढ़ते—

اَللّٰهُمَّ لَكَ الشَّرَفُ عَلٰى كُلِّ شَرَفٍ وَلَكَ الْحَمْدُ عَلٰى كُلِّ حَالٍ

'ऐ अल्लाह! हर ऊंची जगह पर तेरे लिए बुलन्दी है और हर हाल में तेरे लिए तमाम तारीफ़ें हैं।'[4]

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 131, इसाबा, भाग 4, पृ० 168
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 131,
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 132,
4. अहमद, हैसमी

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हम किसी मंज़िल पर उतरते तो कजावों के खोलने तक 'सुब्हानल्लाह' पढ़ते रहते।[1]

जिहाद के सफ़र में अल्लाह के ज़िक्र करने के उन्वान में इस बाब के कुछ क़िस्से गुज़र चुके हैं।

हज़रत औफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घर से निकलते तो यह दुआ पढ़ते—

بِسْمِ اللهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ

'बिस्मिल्लाहि तवक्कल्तु अलल्लाहि ला हौ-ल व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहि०'

(अल्लाह के नाम से निकलता हूं, मैंने अल्लाह पर तवक्कुल किया, गुनाहों से बचने की ताक़त और नेकी करने की क़ूवत सिर्फ़ अल्लाह ही से मिलती है।)

हज़रत मुहम्मद बिन काब क़ुरज़ी रहमतुल्लाहि कहते हैं, यह दुआ तो क़ुरआन में भी है—

ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللهِ (سورت ہود آیت ۴۱)

'इस नाव में सवार हो जाओ, इसका चलना और इसका ठहरना अल्लाह ही के नाम से है।' (सूरः हूद, आयत 41) और इन्होंने 'अलल्लाहि तवक्कलना' के लफ़्ज़ बयान किए।[2]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजना

हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदत शरीफ़ा यह थी कि जब रात का दो तिहाई हिस्सा गुज़र जाता, तो आप खड़े हो जाते और फ़रमाते, ऐ लोगो ! अल्लाह का ज़िक्र करो, हिला देने वाली चीज़ आ गई। (मुराद पहली बार सूर फूंकना

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 133
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 129

है) जिसके बाद एक पीछे आने वाली चीज़ आएगी। (मुराद दूसरी बार सूर फूंकना है।) मौत अपने अन्दर ली हुई मुसीबतों के साथ आ गई है।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं आप पर दरूद शरीफ़ कसरत से पढ़ना चाहता हूं, तो मैंने ज़िक्र व दुआ के लिए जितना वक़्त मुक़र्रर कर रखा है, उसमें से कितना वक़्त आप पर दरूद पढ़ने के लिए मुक़र्रर कर दूं। फ़रमाया, जितना तुम चाहो। मैंने कहा चौथाई वक़्त मुक़र्रर कर दूं? फ़रमाया, जितना तुम चाहो, लेकिन अगर इससे बढ़ा दो तो बेहतर है। मैंने कहा, आधा वक़्त मुक़र्रर कर दूं? फ़रमाया, जितना तुम चाहो, लेकिन इससे बढ़ा दो तो बेहतर है। मैंने कहा, दो तिहाई कर दूं? फ़रमाया, जितना तुम चाहो, लेकिन अगर बढ़ा दो तो बेहतर है। मैंने कहा, फिर तो मैं सारा वक़्त ही आपके लिए कर देता हूं। फ़रमाया, तो तुम्हारे हर फ़िक्र की किफ़ायत की जाएगी और तुम्हारा हर गुनाह माफ़ कर दिया जाएगा।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हममें से यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में से चार पांच सहाबी दिन-रात हुज़ूर सल्ल० के साथ रहा करते थे। कभी आपसे जुदा नहीं होते थे, ताकि आपको जो ज़रूरत पेश आए, उसमें काम आ सकें। चुनांचे एक दिन मैं आपकी ख़िदमत में आया, तो आप कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे। मैं भी आपके पीछे हो लिया। आप अन्सार के रईसों के एक बाग़ में तशरीफ़ ले गए और नमाज़ शुरू कर दी और सज्दा फ़रमाया और बहुत लम्बा सज्दा किया। मैं रोने लग पड़ा। मैं यह समझा अल्लाह ने आपकी रूह क़ब्ज़ कर ली है। फिर आपने सर उठाकर मुझे बुलाया और फ़रमाया, तुम्हें क्या हुआ? मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने बहुत लम्बा सज्दा किया, जिसकी वजह से मुझे अंदेशा हुआ कि शायद अल्लाह ने अपने रसूल की रूह क़ब्ज़ कर ली है और अब मैं आपको कभी भी ज़िंदा न देख सकूंगा।

1. कंज़, भाग 1, पृ० 215, तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 261,

आपने फ़रमाया, मेरे रब ने मुझ पर मेरी उम्मत के बारे में एक ख़ास फ़ज़्ल फ़रमाया है, उसके शुक्राने में मैंने इतना लम्बा सज्दा किया और वह यह है कि मेरी उम्मत में से जो मुझ पर एक बार दरूद भेजेगा, अल्लाह तआला उसके लिए दस नेकियां लिखेंगे और उसकी दस बुराइयां मिटा देंगे।[1]

अहमद और हाकिम की रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने मुझसे कहा, क्या मैं आपको ख़ुशख़बरी न सुनाऊं? अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं कि जो आप पर दरूद भेजेगा, मैं उस पर रहमत नाज़िल करूंगा और जो आप पर सलाम भेजेगा, मैं उस पर सलाम भेजूंगा, इसलिए मैंने शुक्राने में अल्लाह के लिए इतना लम्बा सज्दा किया।[2]

हज़रत अबू तलहा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत ख़ुश थे और ख़ुशी की निशानियां आपके चेहरे पर नज़र आ रही थीं। सहाबा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आज तो आप बहुत ही ख़ुश हैं और ख़ुशी की निशानियां चेहरे पर नज़र आ रही हैं। फ़रमाया, जी हां। मेरे पास मेरे रब की तरफ़ से एक फ़रिश्ता आया और उसने कहा, आपकी उम्मत में से जो आप पर एक बार दरूद भेजेगा, अल्लाह उसके लिए दस नेकियां लिखेंगे और उसकी दस बुराइयां मिटा देंगे और उसके दस दर्जे बुलन्द कर देंगे और जवाब में उस पर उतनी ही रहमत नाज़िल कर देंगे।[3]

हज़रत काब बिन उजरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मिंबर के क़रीब हो जाओ। हम लोग हाज़िर हो गए। जब हुज़ूर सल्ल० ने मिंबर के पहले दर्जे पर मुबारक क़दम रखा, तो फ़रमाया आमीन। जब दूसरे पर क़दम

---

1. अबू याला, इब्ने अबिद्दुन्या,
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 155, हैसमी, भाग 10, पृ० 161
3. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 157, कंज़, भाग 1, पृ० 216,

रखा, तो फिर फ़रमाया, आमीन, जब तीसरे पर क़दम रखा, तो फिर फ़रमाया, आमीन। जब आप फ़ारिग़ होकर नीचे उतरे, तो हमने अर्ज़ किया कि हमने आज आपसे (मिंबर पर चढ़ते हुए) ऐसी बात सुनी जो पहले कभी नहीं सुनी थी?

आपने इर्शाद फ़रमाया कि उस वक़्त हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरे सामने आए थे। (जब मैंने पहले दर्जे पर क़दम रखा, तो) उन्होंने कहा, हलाक हो वह आदमी, जिसने रमज़ान का मुबारक महीना पाया, फिर भी उसकी मग़फ़िरत न हुई। मैंने कहा, आमीन। फिर जब मैं दूसरे दर्जे पर चढ़ा, तो उन्होंने कहा, हलाक हो वह शख़्स जिसके सामने आपका मुबारक ज़िक्र हो और वह दरूद न भेजे। मैंने कहा, आमीन। जब मैं तीसरे दर्जे पर चढ़ा तो उन्होंने कहा, हलाक हो वह आदमी जिसके सामने उसके मां-बाप या उनमें से कोई एक बुढ़ापे को पावें और वे उसको जन्नत में दाख़िल न कराएं, मैंने कहा, आमीन।[1]

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन मैं बाहर आया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें लोगों में सबसे ज़्यादा बख़ील आदमी न बताऊं? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ज़रूर बताएं। फ़रमाया, जिसके सामने मेरा ज़िक्र हो और वह मुझ पर दरूद न भेजे, तो वह लोगों में सबसे ज़्यादा बख़ील आदमी है।[2]

हज़रत अबू मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास तशरीफ़ लाए और हमारे साथ हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु की मज्लिस में बैठ गए। हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिद हज़रत बशीर बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह ने हमें आप पर दरूद पढ़ने का हुक्म दिया है

1. तबरानी, भाग 3, पृ० 166, हैसमी, भाग 10, पृ० 166,
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 176,

तो ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप हमें बताएं कि हम आप पर किस तरह दरूद पढ़ा करें। हुज़ूर सल्ल० ने सुकूत फ़रमाया, यहां तक कि हम तमन्ना करने लगे कि काश वे हुज़ूर सल्ल० से यह बात न पूछते। फिर हुज़ूर सल्ल० ने कुछ देर बाद फ़रमाया, यों कहा करो—

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ
عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ فِى الْعَالَمِيْنَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

'अल्लाहु-म सल्लि अला मुहम्मदिंव-व अला आले मुहम्मदिन कमा सल्लै-त अला इब्राही-म व बारिक अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक-त अला इब्राही-म फ़िल आलमीन० इन्न-क हमीदुम-मजीद०'

(ऐ अल्लाह ! मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर और आले मुहम्मद सल्ल० पर ऐसे दरूद भेज जैसे तूने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) पर दरूद भेजा और मुहम्मद सल्ल० पर और आले मुहम्मद सल्ल० पर ऐसे बरकत नाज़िल फ़रमा जैसे तूने इब्राहीम पर तमाम जहानों में बरकत नाज़िल फ़रमाई। बेशक तू हर तारीफ़ का हक़दार और बड़ी शान वाला है।) और मुझ पर सलाम पढ़ने का तरीक़ा तो तुम्हें (अत्तहीयात में) मालूम हो चुका है।[1]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जब तुम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजने लगो, तो अच्छी तरह भेजा करो, क्योंकि तुम्हें पता नहीं है तुम्हारा दरूद तो हुज़ूर सल्ल० पर (फ़रिश्तों के ज़रिए) पेश किया जाता है। लोगों ने अर्ज़ किया, आप हमें सिखा दें। फ़रमाया, यों कहा करो—

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ صَلَوَاتِكَ وَرَحْمَتَكَ وَ بَرَكَاتِكَ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَاِمَامِ الْمُتَّقِيْنَ
وَخَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ اِمَامِ الْخَيْرِ وَقَائِدِ الْخَيْرِ وَرَسُوْلِ الرَّحْمَةِ اَللّٰهُمَّ
ابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا يَّغْبِطُهُ بِهِ الْاَوَّلُوْنَ وَ الْاٰخِرُوْنَ

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 217

'अल्लाहुम-मज-अल स-ल-वाति क व रहमति-क व ब-र-काति-क अला सय्यिदिल मुर्सलीन व इमामिल मुत्तक़ीन व ख़ातमिन्नबीयीन मुहम्मदिन अब्दि-क व रसूलि-क इमामिल ख़ैरि व क़ाइदिल ख़ैरि व रसूलिर्रहमति अल्लाहुम्मब-असहु मक़ामम महमूदा यग़्बितुहू बिहिल अव्वलून वल आख़िरून०'

'ऐ अल्लाह! अपनी ख़ास रहमतें, मेहरबानी और अपनी बरकतें उस ज़ात के हिस्से में कर दे, जो तमाम रसूलों के सरदार, सब मुत्तक़ियों के इमाम और आख़िरी नबी हैं, जिनका नाम मुहम्मद सल्ल० है, जो तेरे बन्दे और रसूल हैं, जो ख़ैर के इमाम और पेशवा हैं और रहमत वाले रसूल हैं। ऐ अल्लाह! उनको उस मक़ामे महमूद में उठा, जिस पर तमाम अगले- पिछले लोग रश्क करेंगे।)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ؕ

'अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्मदिंव-व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम मजीद० अल्लाहुम-म बारिक अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम मजीद०'[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु दरूद के जो लफ़्ज़ सिखाया करते थे, वे पहले गुज़र चुके हैं।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, पानी जैसे आग को मिटा देता है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजना, उससे ज़्यादा ख़ताओं को मिटाने वाला है और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सलाम भेजना ग़ुलाम आज़ाद करने से

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 165,

अफ़ज़ल है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत ग़ुलाम आज़ाद करने से और अल्लाह के रास्ते में तलवार चलाने से अफ़ज़ल है।[1]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जब तक तुम अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद नहीं भेजते, उस वक़्त तक दुआ आसमान और ज़मीन के दर्मियान रुकी रहती है, बिल्कुल ऊपर नहीं जाती।[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जब तक नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद नहीं पढ़ लिया जाता, उस वक़्त तक दुआ सारी की सारी आसमान से पहले रुकी रहती है। जब दरूद आ जाता है, फिर दुआ ऊपर जाती है।[3]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जब तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद नहीं पढ़ लिया जाता, उस वक़्त तक हर दुआ रुकी रहती है।[4]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जो आदमी जुमा के दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सौ बार दरूद पढ़ेगा, वह क़ियामत के दिन इस हाल में आएगा कि उसके चेहरे पर ख़ास क़िस्म का नूर होगा, जिसे देखकर लोग कहेंगे, यह कौन-सा अमल किया करता था? (जिसकी वजह से उसे यह नूर मिला है।)[5]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, नबियों के अलावा किसी और पर दरूद भेजना मुनासिब नहीं।[6]

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 213
2. तिर्मिज़ी,
3. कंज़, भाग 1, पृ० 213,
4. कंज़, भाग 1, पृ० 214,
5. कंज़, भाग 1, पृ० 214,
6. कंज़, भाग 1, पृ० 261,

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, किसी की तरफ़ से किसी पर दरूद भेजना मुनासिब नहीं, सिर्फ़ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजना चाहिए।[1]

इस्तिग़्फ़ार करना

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हम गिना करते थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक ही मज्लिस में सौ बार—

رَبِّ اغْفِرْلِيْ وَتُبْ عَلَيَّ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ

'रब्बिग़्फ़िर ली व तुब अलय-य इन्न-क अनतत्तव्वाबुर्रहीम०'

(ऐ मेरे रब ! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा, मेरी तौबा क़ुबूल फ़रमा, बेशक तू ही तौबा क़ुबूल करने वाला और निहायत मेहरबान है।)[2] कह लेते।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपनी ज़ुबान की तेज़ी की शिकायत की। आपने फ़रमाया, तुम इस्तिग़्फ़ार से कहां ग़फ़लत में पड़े हो? मैं तो हर दिन अल्लाह से सौ बार इस्तिग़्फ़ार करता हूं।[3]

अबू नुऐम की दूसरी रिवायत में हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरी ज़ुबान घरवालों के बारे में तेज़ी कर जाती है जिससे मुझे डर है कि यह तो मुझे आग में दाख़िल कर देगी। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक सफ़र में थे। आपने फ़रमाया, अल्लाह से इस्तिग़्फ़ार करो। हमने इस्तिग़्फ़ार किया। फ़रमाया, पूरे सत्तर बार करो। हमने सत्तर बार किया, फ़रमाया, जो बन्दा और बन्दी एक दिन

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 167
2. अबू दाऊद, तिर्मिज़ी,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 276, कंज़, भाग 1, पृ० 214,

में सत्तर बार अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करेगा, अल्लाह उसके सात सौ गुनाह माफ़ कर देंगे और वह बन्दा और बन्दी नामुराद हो गया जो दिन और रात में सात सौ से ज़्यादा गुनाह करे।[1]

हज़रत अली बिन रबीआ रहमुतल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने पीछे बिठाया और हर्रा की ओर ले गए, फिर आसमान की ओर सर उठाकर फ़रमाया, ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को माफ़ फ़रमा, क्योंकि तेरे अलावा और कोई भी गुनाहों को माफ़ नहीं करता, फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर मुस्कराने लगे। मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! पहले आपने अपने रब से इस्तिग़फ़ार किया, फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर मुस्कराने लगे, यह क्या बात है?

उन्होंने फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक दिन मुझे अपने पीछे बिठाया था, फिर मुझे हर्रा की तरफ़ ले गए थे, फिर आसमान की तरफ़ सर उठाकर फ़रमाया, ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को माफ़ फ़रमा, क्योंकि तेरे अलावा और कोई भी गुनाहों को माफ़ नहीं करता, फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर मुस्कराने लगे हैं, इसकी क्या वजह है? मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! पहले आपने अपने रब से इस्तिग़फ़ार किया, फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर मुस्कराने लगे थे। फ़रमाया, मैं इस वजह से मुस्करा रहा हूं कि मेरा रब अपने बन्दे पर ताज्जुब करके मुस्कराता है। उस बन्दे को मालूम है कि मेरे अलावा और कोई भी गुनाहों को माफ़ नहीं करता।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद किसी को आपसे ज़्यादा 'अस्तग़्फ़िरुल्लाह व अतूबु इलैहि' (मैं अल्लाह से मग़्फ़िरत तलब करता हूं और तौबा करके उसी की तरफ़ मुतवज्जह होता हूं) कहते हुए नहीं देखा।[3]

---

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 131, कंज़, भाग 1, पृ० 212,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 211,
3. कंज़, भाग 1, पृ० 212,

हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन जाबिर बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि अपने वालिद हज़रत अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि से नक़ल करते हैं। वह अपने दादा हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर दो या तीन बार कहा, हाय मेरे गुनाह, हाय मेरे गुनाह। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह कहो—

اَللّٰهُمَّ مَغْفِرَتُكَ اَوْسَعُ مِنْ ذُنُوْبِىْ وَرَحْمَتُكَ اَرْجٰى عِنْدِىْ مِنْ عَمَلِىْ

(ऐ अल्लाह! तेरी मग़्फ़िरत मेरे गुनाहों से ज़्यादा वुसअत वाली है और मुझे अपने अमल से ज़्यादा तेरी रहमत की उम्मीद है।) उसने यह कहा। हुज़ूर सल्ल० ने कहा, दोबारा कहो। उसने दोबारा कहा। हुज़ूर सल्ल० ने कहा, फिर कहो। उसने फिर कहा। हुज़ूर सल्ल० ने कहा, उठ जा, अल्लाह ने तेरी मग़्फ़िरत कर दी है।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक आदमी को यह कहते हुए सुना 'अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह व अतूबु इलैहि' (मैं अल्लाह से मग़्फ़िरत तलब करता हूं और उसके सामने तौबा करता हूं।') फ़रमाया, तेरा भला हो, इसके पीछे इसकी बहन को भी ले आ और वह यह है 'फ़ग़्फ़िर ली व तुब अलै-य' (तो तू मेरी मग़्फ़िरत कर दे और मेरी तौबा क़ुबूल फ़रमा।)[2]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मुझे उस आदमी पर ताज्जुब होता है जो हलाक हो जाए, हालांकि नजात का सामान उसके पास था। पूछा गया, नजात का सामना क्या है? फ़रमाया, इस्तिग़्फ़ार।[3]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, उस आदमी के लिए ख़ुशख़बरी है जिसके आमालनामे में थोड़ा-सा भी इस्तिग़्फ़ार पाया जाए।[4]

---

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 122,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 211,
3. कंज़, भाग 1, पृ० 211,
4. कंज़, भाग 1, पृ० 212,

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जो आदमी भी तीन बार—

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَأَتُوْبُ إِلَيْهِ

'अस्तग़्फ़िरुल्लाहल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूमु व अतूबु इलैहि०'

(मैं उस अल्लाह से मग़्फ़िरत तलब करता हूं जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, जो सदा ज़िंदा रहने वाला, सबको क़ायम रखने वाला है और मैं उसके सामने तौबा करता हूं।) कहेगा, उसकी पूरी मग़्फ़िरत कर दी जाएगी, अगरचे वह लड़ाई के मैदान से भाग कर आया हो।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अगर तुम लोगों को मेरे गुनाह मालूम हो जाएं तो मेरे पीछे दो आदमी भी न चलें और तुम लोग मेरे सर पर मिट्टी डालने लगो। अगर अल्लाह मेरे गुनाहों में से एक गुनाह भी माफ़ कर दे और मुझे उसके बदले में अब्दुल्लाह बिन रौसा (गोबर का बेटा अब्दुल्लाह कह) कर पुकारा जाए तो भी मैं उस पर राज़ी हूं।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैं हर दिन बारह हज़ार बार तौबा और इस्तिग़फ़ार करता हूं और यह मिक़्दार मेरे (गुनाहों के) क़र्ज़े के मुताबिक़ है या फ़रमाया उसके (यानी अल्लाह के मुझ पर) क़र्ज़े के मुताबिक़ है।[3]

एक रिवायत में है कि यह मेरे गुनाहों के बराबर है।[4]

एक आदमी ने हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि ऐ अबू अम्मारा! अल्लाह तआला ने फ़रमाया है—

وَلَا تُلْقُوْا بِأَيْدِيْكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ (سورت بقره آیت ۱۹۵)

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 210
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 316,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 383,
4. सिफ़तुस्सफ़वा, भाग 1, पृ० 288,

'अपने आपको अपने हाथों तबाही में मत डालो।'

(सूरः बक़रः, आयत 195)

क्या इससे मुराद वह आदमी है, जो दुश्मन से इतनी जंग करता है कि ख़ुद शहीद हो जाता है? आपने फ़रमाया, नहीं, बल्कि इससे मुराद तो वह आदमी है जो गुनाह करे और यों कहे कि अल्लाह उसे माफ़ नहीं करेंगे।[1]

ज़िक्र में कौन-कौन-सी चीज़ें शामिल हैं?

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन अल्लाह तआला कुछ क़ौमों का हश्र ऐसी तरह फ़रमाएंगे कि उनके चेहरों में नूर चमकता हुआ होगा। वे मोतियों के मिंबरों पर होंगे, लोग उन पर रश्क करते होंगे। वे अंबिया और शुहदा नहीं होंगे। एक देहाती ने घुटनों के बल बैठकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! उनका हाल बयान कर दीजिए ताकि हम उन्हें पहचान लें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह अलग-अलग जगहों के और अलग-अलग ख़ानदानों के वे लोग होंगे जो अल्लाह की वजह से आपस में मुहब्बत करें और एक जगह जमा होकर अल्लाह के ज़िक्र में मशग़ूल हों।[2]

हज़रत अम्र बिन अबसा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि रहमान के दाएं तरफ़ ऐसे लोग होंगे, जो नबी और शहीदों में नहीं होंगे और रहमान के दोनों हाथ दाएं हैं। उनके चेहरों की सफ़ेदी देखने वालों की निगाह को चकाचौंध कर देगी। उनको जो जगह और अल्लाह का क़ुर्ब नसीब होगा, उसे नबी और शहीद बहुत अच्छा समझेंगे।

किसी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ये लोग कौन हैं? आपने फ़रमाया, ये अलग-अलग क़बीलों के लोग हैं जो अल्लाह के

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 132
2. तबरानी

ज़िक्र की वजह से आपस में जमा हों और अच्छी-अच्छी बातों को ऐसे चुन लें जैसे खजूर खाने वाला अच्छी खजूरें चुनता है।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सहाबा के पास तशरीफ़ लाए। वे आपस में बातें कर रहे थे। उन लोगों ने अर्ज़ किया कि हम आपस में जाहिलियत के ज़माने के बारे में बात कर रहे थे कि किस तरह हम गुमराह थे, फिर कैसे अल्लाह ने हमें हिदायत फ़रमायी। हुज़ूर सल्ल० को उनका यह अमल बहुत पसन्द आया। आपने फ़रमाया, तुमने बहुत अच्छा काम किया, इसी तरह रहा करो, इसी तरह किया करो।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का तज़्किरा ज़्यादा से ज़्यादा किया करो, क्योंकि जब हज़रत उमर रज़ि० का ज़िक्र होगा तो अद्ल व इंसाफ़ का ज़िक्र भी होगा और जब अद्ल व इंसाफ़ का ज़िक्र होगा तो अल्लाह का ज़िक्र होगा।[3]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजकर और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का तज़्किरा करके अपनी मज्लिसों को सजाया करो।[4]

ज़िक्र की निशानियां और उसकी हक़ीक़त

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह के वली और दोस्त कौन लोग हैं? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिन्हें देखने से अल्लाह याद आ जाए।[5]

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 66, हैसमी, भाग 10, पृ० 77
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 87,
3. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 391,
4. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 394
5. हैसमी, भाग 4, पृ० 78,

हज़रत हंज़ला कातिब उसैदी रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कातिबों में से थे। वह फ़रमाते हैं, हम लोग हुज़ूर सल्ल० के पास थे। हुज़ूर सल्ल० ने हमारे सामने जन्नत और जहन्नम का ज़िक्र इस तरह फ़रमाया कि गोया हम दोनों को आंखों से देख रहे हैं। फिर मैं उठकर बीवी-बच्चों के पास चला गया और उनके साथ हंसने-खेलने में लग गया। फिर मुझे वह हालत याद आई जो (हुज़ूर सल्ल० के सामने) हमारी थी (कि दुनिया भूले हुए थे और जन्नत और जहन्नम आंखों के सामने थीं) तो मैं घर से निकला। आगे पूरी हदीस ज़िक्र की, जिस तरह कि जन्नत और जहन्नम पर ईमान लाने के उन्वान में गुज़र चुकी है।

उसके आख़िर में यह है कि आपने फ़रमाया, ऐ हंज़ला! तुम्हारी जो हालत मेरे पास होती है, वही हालत अगर घरवालों के पास जाकर भी रहे, तो फ़रिश्ते तुमसे बिस्तरों पर और रास्तों में मुसाफ़ा करने लगें, लेकिन हंज़ला! बात यह है कि कभी-कभी, कभी-कभी।[1]

एक रिवायत में है कि जैसे तुम मेरे पास होते हो, वैसे ही घर जाकर भी रहो, तो फ़रिश्ते तुम पर परों से साया करें।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! जब हम आपके पास होते हैं, तो हमारे दिल नर्म हो जाते हैं और दुनिया की बे-रग़बती और आख़िरत की रग़बत की कैफ़ियत बन जाती है, (लेकिन जब हम चले जाते हैं, तो फिर यह कैफ़ियत नहीं रहती।) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरे पास तुम्हारी जो कैफ़ियत होती है, अगर मेरे पास से जाने के बाद भी वही रहे, तो फ़रिश्ते तुम्हारी ज़ियारत करने आएं और रास्तों में तुमसे मुसाफ़ा करें। अगर तुम गुनाह नहीं करोगे तो अल्लाह ऐसे लोगों को ले आएंगे जो इतने गुनाह करेंगे कि वे आसमान के बादलों तक पहुंच जाएंगे, फिर वे अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करेंगे तो उनके जितने गुनाह होंगे,

---

1. अबू नुऐम,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 100,

अल्लाह उन सबको माफ़ कर देंगे और कोई परवाह नहीं करेंगे।[1]

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है, हम लोग तवाफ़ कर रहे थे। मैंने तवाफ़ के दौरान हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को उनकी बेटी से शादी का पैग़ाम दिया तो वे ख़ामोश रहे और मेरे पैग़ाम का कोई जवाब न दिया। मैंने कहा, अगर ये राज़ी होते, तो कोई न कोई जवाब ज़रूर देते, अब अल्लाह की क़सम ! मैं उनसे इस बारे में कोई बात नहीं करूंगा। अल्लाह की शान कि वह मुझसे पहले मदीना वापस पहुंच गए। मैं बाद में मदीना आया।

चुनांचे मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में दाख़िल हुआ और जाकर हुज़ूर सल्ल० को सलाम किया और आपकी शान के मुताबिक़ आपका हक़ अदा करने की कोशिश की। फिर हज़रत इब्ने उमर रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने ख़ुश आमदीद कहा और फ़रमाया, कब आए हो? मैंने कहा, अभी पहुंचा हूं। उन्होंने फ़रमाया, हम लोग तवाफ़ कर रहे थे और अल्लाह तआला के अपनी आंखों के सामने होने का ध्यान जमा रहे थे, क्या उस वक़्त तुमने मुझसे (मेरी बेटी) हज़रत सौदा बिन्त अब्दुल्लाह का ज़िक्र किया था, हालांकि तुम मुझसे इस बारे में किसी और जगह भी मिल सकते थे?

मैंने कहा, ऐसा होना मुक़द्दर था, इसलिए ऐसा हो गया। उन्होंने फ़रमाया, अब तुम्हारा इस बारे में क्या ख़्याल है? मैंने कहा, अब तो पहले से भी ज़्यादा तक़ाज़ा है। चुनांचे उन्होंने दोनों बेटों हज़रत सालिम और हज़रत अब्दुल्लाह को बुलाकर मेरी शादी कर दी।[2]

धीमी आवाज़ से ज़िक्र करना और ऊंची आवाज़ से ज़िक्र करना

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु

1. कंज़, भाग 1, पृ० 101,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 309, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 167

अलैहि व सल्लम बताते थे कि जिस नमाज़ के लिए मिस्वाक की जाती है, उसे उस नमाज़ पर सत्तर गुना फ़ज़ीलत हासिल हैं जिसके लिए मिस्वाक न की जाए और आपने यह भी फ़रमाया, ज़िक्र ख़फ़ी (धीमी आवाज़ का ज़िक्र) जिसे कोई न सुने उसे (ऊंची आवाज़ वाले ज़िक्र पर) सत्तर गुना फ़ज़ीलत हासिल हैं और फ़रमाते थे, जब क़ियामत का दिन आएगा और अल्लाह तमाम मख़्लूक़ात को हिसाब के लिए जमा करेंगे और लिखने वाले फ़रिश्ते अपने लिखे हुए दफ़्तर लेकर आएंगे, तो अल्लाह उन फ़रिश्तों से फ़रमाएंगे, क्या इस बन्दे का कोई अमल लिखने से रह गया है?

वे कहेंगे, ऐ हमारे रब! हमें इसके जिस अमल का पता चला वह हमने ज़रूर लिखा है, फिर अल्लाह उस बन्दे से कहेंगे, तेरा एक छिपा हुआ अमल मेरे पास है, जिसे तू भी नहीं जानता और मैं तुझे उसका बदला दूंगा और वह है ज़िक्रे ख़फ़ी यानी धीमी आवाज़ से ज़िक्र करना।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हमने जन्नतुल बक़ीअ में आग की रोशनी देखी तो हम वहां गए, तो देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ब्र में उतरे हुए हैं और फ़रमा रहे हैं, मुझे यह आदमी दो। चुनांचे उन्होंने क़ब्र के पांव की तरफ़ से वह जनाज़ा दिया। मैंने देखा तो वह सहाबी थे जो ऊंची आवाज़ से ज़िक्र किया करते थे।[2]

हज़रत इब्ने इस्हाक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे हज़रत मुहम्मद बिन इब्राहीम तैमी रहमतुल्लाहि अलैहि ने यह क़िस्सा सुनाया कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु क़बीला मुज़ैना के आदमी थे और वह ज़ुल बिजादैन यानी दो चादर वाले कहलाते थे। वह यतीम थे और अपने चचा की तर्बियत में थे और वह चचा उनके साथ बहुत अच्छा सुलूक करता था। उनके चचा को यह ख़बर मिली कि हज़रत

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 81,
2. जमउल फ़वाइद, भाग 1, पृ० 37, हुलीया, भाग 3, पृ० 351,

अब्दुल्लाह मुसलमान हो गए हैं, उसने जो कुछ हज़रत अब्दुल्लाह को दे रखा था, वह सब उनसे छीन लिया और उन्हें बिल्कुल नंगा करके निकाल दिया।

वह अपनी वालिदा के पास आए, तो उसने अपनी एक धारीदार चादर के दो टुकड़े करके उन्हें दिए। उन्होंने एक टुकड़े को लुंगी बनाकर बांध लिया और दूसरे को ओढ़ लिया। फिर वह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आ गए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आज से तुम ज़ुल बिजादैन हो और तुम मेरे दरवाज़े पर पड़ जाओ। चुनांचे वह हुज़ूर सल्ल० के दरवाज़े पर पड़ गए और वह ऊंची आवाज़ से ज़िक्र किया करते थे। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, क्या यह रियाकार है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, यह तो आहें भरकर रोने वालों में से एक है।

हज़रत तैमी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान किया करते थे कि मैं तबूक की लड़ाई में एक बार आधी रात को खड़ा हुआ तो मैंने लश्कर के एक कोने में आग जलती हुई देखी। मैं वहां गया, तो देखा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा तशरीफ़ रखते हैं और हज़रत अब्दुल्लाह ज़ुल बिजादैन का इंतिक़ाल हो चुका है और लोग उनकी क़ब्र खोद चुके हैं और हुज़ूर सल्ल० उनकी क़ब्र में उतरे हुए हैं। जब हम उन्हें दफ़न कर चुके तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! मैं इससे राज़ी हूं, तू भी इससे राज़ी होजा।[1]

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक आदमी जिन्हें ज़ुल बिजादैन कहा जाता था, उनके बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, बेशक यह आहें भरकर रोने वाला है और यह इस वजह से फ़रमाया कि वह क़ुरआन की तिलावत, दुआ और अल्लाह का ज़िक्र ज़्यादा से ज़्यादा और ऊंची आवाज़ से किया करते थे।[2]

---

1. इसाबा, भाग 2, पृ० 338,
2. अहमद, जाफ़र,

ज़िक्र और तस्बीहात को गिनना और तस्बीह का सबूत

हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे पास तशरीफ़ लाए। मेरे सामने चार हज़ार गुठलियां पड़ी हुई थीं, जिन पर मैं 'सुब्हानल्लाह' पढ़ रही थी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें इस तरह 'सुब्हानल्लाह' पढ़ना न बताऊं, जो अब तक तुम्हारे सुब्हानल्लाह पढ़ने के मिक़्दार से ज़्यादा हो ? मैंने कहा, ज़रूर बताएं। फ़रमाया, 'सुब्हानल्लाह अ-द-द ख़ल्क़िही' (अल्लाह की मख़्लूक़ की तायदाद के बराबर सुब्हानल्लाह)

हाकिम की रिवायत में है 'सुब्हानल्लाहि अ-द-द मा ख़-ल-क़ मिन शैइन' (अल्लाह ने जो कुछ पैदा किया है, उसके बराबर सुब्हानल्लाह)[1] जामेअ अज़्कार के उन्वान में भी कुछ अज़्कार गुज़र चुके हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत अबू सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में आता है कि उनके सामने चमड़े का एक बिछौना रखा जाता और एक टोकरा लाया जाता, जिसमें कंकरिया होतीं, तो वह उन पर ज़वाल तक सुब्हानल्लाह पढ़ते रहते, फिर उसे उठा लिया जाता, फिर जब ज़ुहर पढ़ लेते तो शाम तक सुब्हानल्लाह पढ़ते रहते।[2]

हज़रत यूनुस बिन उबैद रहमतुल्लाहि अलैहि अपनी वालिदा से नक़ल करते हैं, वह कहती हैं कि मैंने मुहाजिरीन के एक आदमी हज़रत अबू सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि वह गुठलियों पर तस्बीह पढ़ रहे थे।[3]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु के पास एक धागा था, जिसमें दो हज़ार गिरहें लगी हुई थीं, जब तक इन सब पर तस्बीह न पढ़ लेते,

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 99,
2. बिदाया, भाग 5, पृ० 322,
3. इसाबा, भाग 4, पृ० 109, इब्ने साद, भाग 7, पृ० 60.

उस वक़्त तक सोया न करते।[1]

हज़रत अबू नज़रा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे क़बीला तुफ़ावा के एक बड़े मियां ने अपना क़िस्सा सुनाया, कहते हैं मैं मदीना में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु का मेहमान बना। मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कोई सहाबी उनसे ज़्यादा इबादत में मेहनत करने वाला और उनसे ज़्यादा मेहमान की ख़ैर-ख़बर लेने वाला नहीं देखा। एक दिन मैं उनके पास था और वह अपने तख़्त पर थे और उनके पास एक थैली थी, जिसमें कंकरियां या गुठलियां थीं और उनके तख़्त के नीचे उनकी एक काली बांदी बैठी हुई थी और वह उन कंकरियों पर तस्बीह पढ़ रहे थे। जब थैली की तमाम कंकरियां ख़त्म हो गईं, तो उन्होंने वह थैली उस बांदी के सामने डाल दी। उस बांदी ने वे सारी कंकरियां उस थैली में डाल दीं और थैली उठाकर फिर उनके सामने रख दी। आगे लम्बी हदीस ज़िक्र की।[2]

हज़रत हकीम बिन वैलमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु कंकरियों पर सुब्हानल्लाह पढ़ा करते थे।[3]

ज़िक्र के आदाब और नेकियों का बढ़ना

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि तुम इसकी पूरी कोशिश करो कि अल्लाह का ज़िक्र सिर्फ़ तहारत (पाकी) की हालत में किया करो।[4]

हज़रत अबू उस्मान नह्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ से यह बात पहुंची कि उन्होंने फ़रमाया कि मुझे यह हदीस पहुंची है कि अल्लाह तआला अपने बन्दे को एक नेकी के बदले दस लाख नेकियां देते हैं।

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 383,
2. अबू दाऊद, भाग 3, पृ० 55
3. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 143,
4. कंज़, भाग 1, पृ० 209,

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया, बिल्कुल नहीं। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि अल्लाह उसे बीस लाख नेकियां देंगे, फिर यह आयत पढ़ी—

يُضَاعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ أَجْرًا عَظِيْمًا (سورت نساء آيت ۴۰)

'तो उसको कई गुना कर देंगे और अपने पास से और बड़ा बदला देंगे।' (सूरः निसा, आयत 40)

फिर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया, जब अल्लाह उसे बड़ा बदला कह रहे हैं, तो इसका अन्दाज़ा कौन लगा सकता है?

एक रिवायत में यह है कि हज़रत अबू उस्मान रज़ि० कहते हैं, मैंने हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि मुझे यह बात पहुंची है कि आप फ़रमाते हैं कि नेकी को दस लाख बढ़ाया जाता है। उन्होंने फ़रमाया, तुम्हें इसी बात पर हैरानी हो रही है, अल्लाह की क़सम! मैंने तो हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना, आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[1]

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 145,

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम किस तरह दुआ में अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाया करते थे और किन कामों के लिए दुआ किया करते थे और किस वक़्त दुआ किया करते थे और उनकी दुआएं कैसी हुआ करती थीं।

दुआ के आदाब

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक आदमी के पास से गुज़रे, वह यह दुआ कर रहा था, ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे सब्र की तौफ़ीक़ मांगता हूं। आपने फ़रमाया, तूने तो अल्लाह से मुसीबत को मांग लिया। (क्योंकि पहले कोई मुसीबत आएगी, फिर उसके बाद सब्र होगा) तू अल्लाह से आफ़ियत को मांग (कोई मुसीबत आ जाए तो फिर सब्र मांगना चाहिए)।

और आपका गुज़रा एक और आदमी पर हुआ, जो यह दुआ मांग रहा था, ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे पूरी नेमत मांगता हूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ओ आदम के बेटे ! तुम जानते हो कि पूरी नेमत क्या है? उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह तो मैंने ख़ैर की उम्मीद में दुआ मांग ली है। (मुझे नहीं पता कि पूरी नेमत क्या होती है?) आपने फ़रमाया, पूरी नेमत यह है कि आदमी जहन्नम की आग से बच जाए और जन्नत में चला जाए।

हुज़ूर सल्ल० एक और आदमी के पास से गुज़रे, वह कह रहा था—

يَاذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

'या ज़ल जलालि वल इकरामि'। आपने फ़रमाया, इन लफ़्ज़ों से पुकारने की वजह से तेरे लिए क़ुबूलियत का दरवाज़ा खुल गया है। अब तू मांग।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक आदमी के पास गए। वह कमज़ोरी और बीमारी की वजह से परिन्दे के उस बच्चे की तरह नज़र आ रहा था, जिसके पर किसी ने नोच लिए हों। हुज़ूर सल्ल० ने उससे पूछा, क्या तू कोई ख़ास दुआ मांगा करता था? उसने कहा, मैं यह दुआ मांगा करता था कि ऐ अल्लाह! तूने जो सज़ा मुझे आख़िरत में देनी है, वह दुनिया ही में जल्द दे दे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने यह दुआ क्यों नहीं मांगी, ऐ अल्लाह! हमें दुनिया में भी ख़ैर व ख़ूबी अता फ़रमा और आख़िरत में भी ख़ैर व ख़ूबी अता फ़रमा और हमें आग के अज़ाब से बचा ले। चुनांचे उसने अल्लाह से यह दुआ मांगी, तो अल्लाह ने उसे शिफ़ा दे दी।[2]

हज़रत बशीर बिन ख़सासीया रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें उसे अल्लाह के लिए हैं, जो तुम्हें रबीआ अल-क़शअम क़बीले से यहां लाया और फिर तुम्हें अल्लाह के रसूल के हाथ पर मुसलमान होने की तौफ़ीक़ दी। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप अल्लाह से दुआ करें कि वह मुझे आपसे पहले मौत दे दे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह दुआ मैं किसी के लिए नहीं कर सकता।[3]

हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी के लिए दुआ फ़रमाते, तो दुआ की शुरुआत

1. कंज़, भाग 1, पृ० 292
2. कंज़, भाग 1, पृ० 290
3. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 147,

अपने से फ़रमाते। चुनांचे एक बार हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र फ़रमाया, तो इर्शाद फ़रमाया, अल्लाह की रहमत हम पर हो और हज़रत मूसा अलैहि० पर हो। अगर वह सब्र करते, तो वह अपने उस्ताद (हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम) की तरफ़ से और बहुत-सी अजीब-अजीब बातें देखते, लेकिन उन्होंने यह कह दिया—

إِنْ سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصَاحِبْنِي قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا

'अगर इस बार के बाद आपसे किसी मामले के बारे में कुछ पूछूं तो आप मुझको अपने साथ न रखिए। बेशक मेरी तरफ़ से आप उज़्र (की इंतिहा) को पहुंच चुके हैं।'[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हज़रत इब्ने अबिस्साइब रहमतुल्लाहि अलैहि से फ़रमाया, जो कि मदीना वालों के वाइज़ (वाज़ कहने वाले) थे, दुआ में तकल्लुफ़ के साथ एक जैसी इबारत लाने से बचो, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा का ज़माना पाया है, वे ऐसा नहीं किया करते थे।[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक आदमी को सुना कि फ़िल्ने से पनाह मांग रहा था। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! इसकी दुआ के लफ़्ज़ों से तेरी पनाह चाहता हूं। फिर उस आदमी से फ़रमाया, क्या तुम अल्लाह से यह मांग रहे हो कि वह तुम्हें बीवी-बच्चे और माल दे? (क्योंकि क़ुरआन में माल और औलाद को फ़िल्ना कहा गया है।) तुममें से जो भी फ़िल्ने से पनाह मांगना चाहता है, उसे चाहिए कि वह गुमराह करने वाले फ़िल्नों से पनाह मांगे।[3]

हज़रत मुहारिब बिन दस्सार के चचा कहते हैं, मैं रात के आख़िर में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के घर के पास से गुज़रा करता था, तो उन्हें मैं यह दुआ फ़रमाते हुए सुनता था, ऐ

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 290, मज्मा, भाग 10, पृ० 152,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 290,
3. कंज़, भाग 1, पृ० 279

अल्लाह ! तूने मुझे बुलाया, मैंने उस पर लब्बैक कहा, तूने मुझे हुक्म दिया, मैंने तेरी इताअत की और यह सेहरी का वक़्त है, इसलिए तू मेरी मग़फ़िरत कर दे।

फिर मेरी हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० से मुलाक़ात हुई। मैंने उनसे कहा, मैंने आपको रात के आख़िर में कुछ कलिमों को कहते हुए सुना है, फिर मैंने वे कलिमे उन्हें बताए, तो उन्होंने फ़रमाया, हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने अपने बेटों से वायदा फ़रमाया था कि मैं तुम्हारे लिए अपने रब से इस्तिग़फ़ार करूंगा, तो उन्होंने रात के आख़िर में उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ की थी।[1]

दुआ में दोनों हाथ उठाना और फिर चेहरे पर दोनों हाथ फेरना

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब दुआ फ़रमाते थे, तो अपने दोनों हाथ उठाते थे और जब दुआ से फ़ारिग़ हो जाते तो दोनों हाथ अपने चेहरे पर फेर लेते।[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब दुआ में हाथ उठा लेते थे, तो जब तक उन्हें अपने चेहरे पर न फेर लेते, उस वक़्त तक हाथ नीचे न करते।[3]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को 'अहजारुज़्ज़ ज़ैत' (मस्जिदे नबवी के मग़रिब में एक जगह का नाम है) के पास देखा कि आप दुआ मांग रहे थे और आपकी हथेलियां मुंह की तरफ़ थीं। जब आप दुआ से फ़ारिग़ हो गए तो आपने हथेलियां अपने मुंह पर फेर लीं।[4]

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 155,
2. हाकिम,
3. हाकिम और तिर्मिज़ी
4. कंज़, भाग 1, पृ० 289

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुआ में इतनी देर हाथ उठाए रखते थे कि मैं थक जाती थी।[1]

अब्दुर्रज़्ज़ाक में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से इस जैसी रिवायत नक़ल की गई है, इसमें यह भी है कि हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ मांगी—

اَللّٰهُمَّ اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ فَلَا تُعَذِّبْنِيْ بِشَتْمِ رَجُلٍ شَتَمْتُهُ اَوْ آذَيْتُهُ

'ऐ अल्लाह ! मैं बशर ही तो हूं। मैंने किसी को बुरा-भला कहा हो या किसी को तक्लीफ़ पहुंचाई हो, तो इस वजह से मुझे अज़ाब न देना।[2]

एक बार हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोनों हाथ उठाकर यह दुआ कर रहे हैं, मैं बशर ही तो हूं, इसलिए मुझे सज़ा न दे। किसी मोमिन को मैंने तक्लीफ़ दी हो या उसे बुरा-भला कहा हो, तो इस वजह से मुझे सज़ा न देना।[3]

हज़रत उर्वः रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का देहातियों की एक क़ौम के पास से गुज़र हुआ। ये मुसलमान हो चुके थे और काफ़िरों के लश्करों ने उनके इलाक़े को तबाह व बर्बाद कर दिया था। हुज़ूर सल्ल० ने उनके लिए दुआ करने के लिए हाथ अपने चेहरे की तरफ़ उठाए, तो एक देहाती ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों, हाथ और लम्बे फ़रमा दें, तो आपने अपने चेहरे के आगे और बढ़ा दिए, आसमान की तरफ़ ऊपर और न उठाए।[4]

हज़रत अबू नुऐम वहब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने देखा कि हज़रत इब्ने उमर और इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम दुआ कर रहे थे

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 168,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 291,
3. अदबुल मुफ़रद, पृ० 90
4. कंज़, भाग 1, पृ० 291

और दुआ के बाद उन्होंने अपनी हथेलियां अपने चेहरे पर फेरीं।[1]

इज्तिमाई दुआ करना और ऊंची आवाज़ से दुआ करना और आमीन कहना

हज़रत क़ैस मदनी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी ने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर होकर किसी चीज़ के बारे में पूछा। उन्होंने फ़रमाया, तुम जाकर यह बात हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से पूछो, क्योंकि एक बार मैं, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० और फ़्लां आदमी हम तीनों मस्जिद में दुआ कर रहे थे और अपने रब का ज़िक्र कर रहे थे कि इतने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास तशरीफ़ लाए और हमारे पास बैठ गए तो हम ख़ामोश हो गए, फिर फ़रमाया जो तुम कर रहे थे, उसे तुम करते रहो।

चुनांचे मैंने और मेरे साथी ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से पहले दुआ की और हुज़ूर सल्ल० हमारी दुआ पर आमीन कहते रहे। फिर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने यह दुआ की, ऐ अल्लाह! मेरे इन दो साथियों ने जो कुछ तुझसे मांगा है, मैं वह भी तुझसे मांगता हूं और ऐसा इल्म भी मांगता हूं जो कभी न भूले। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आमीन! हमने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम भी अल्लाह से वह इल्म मांगते हैं जो कभी न भूले। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह दौसी नवजवान (यानी हज़रत अबू हुरैरह रज़ि०) तुम दोनों से आगे निकल गए।[2]

हज़रत जामेअ बिन शद्दाद रहमतुल्लाहि अलैहि के एक रिश्तेदार कहते हैं कि मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाते हुए सुना कि तीन दुआएं ऐसी हैं कि जब मैं यह मांगूं तो तुम उन पर आमीन कहना। ऐ अल्लाह! मैं कमज़ोर हूं, मुझे ताक़त दे दे, ऐ

---

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० 90
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 361,

अल्लाह ! मैं सख़्त हूं, मुझे नर्म कर दे, ऐ अल्लाह ! मैं कंजूस हूं, मुझे सख़ी बना दे।[1]

हज़रत साइब बिन यज़ीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने सूखे के ज़माने में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि वह सुबह के वक़्त आम सादा-सा कपड़ा पहने हुए आजिज़ और मिस्कीन बनकर जा रहे हैं और उनके जिस्म पर एक छोटी-सी चादर पड़ी हुई है जो घुटनों तक मुश्किल से पहुंच रही है, ऊंची आवाज़ से अल्लाह से माफ़ी मांग रहे हैं और उनकी आंखों से गालों पर आंसू बह रहे हैं और उनके दाहिनी तरफ़ हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, उस दिन उन्होंने क़िब्ले की तरफ़ मुंह करके हाथ आसमान की तरफ़ उठाकर बहुत गिड़गिड़ाकर दुआ मांगी। लोग भी उनके साथ दुआ मांग रहे थे, फिर हज़रत अब्बास रज़ि० के हाथ को पकड़ कर कहा, ऐ अल्लाह ! हम तेरे रसूल के चचा को तेरे सामने सिफ़ारिशी बनाते हैं। फिर हज़रत अब्बास रज़ि० बहुत देर तक हज़रत उमर रज़ि० के पहलू में खड़े होकर दुआ मांगते रहे। उनकी आंखों से भी आंसू बह रहे थे।[2]

हज़रत अबू उसैद रहमतुल्लाहि अलैहि के आज़ाद किए हुए गुलाम हज़रत अबू सईद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु इशा के बाद मस्जिद का चक्कर लगाते और उसमें जो आदमी भी नज़र आता, उसे मस्जिद से निकाल देते। जिसे खड़ा हुआ नमाज़ पढ़ते देखते, उसे रहने देते।

एक रात उनका हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ सहाबा रज़ि० पर गुज़र हुआ, जिनमें हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, ये लोग कौन हैं ? हज़रत उबई रज़ि० ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आपके घर के कुछ आदमी हैं। फ़रमाया, नमाज़ के बाद तुम लोग अब तक यहां क्यों बैठे हुए हो ? हज़रत उबई

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 275,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 321,

रज़ि० ने फ़रमाया, हम बैठकर अल्लाह का ज़िक्र कर रहे हैं। इस पर हज़रत उमर रज़ि० भी उनके पास बैठ गए और उनमें से जो उनके सबसे क़रीब था, उससे फ़रमाया, तुम दुआ कराओ। उसने दुआ कराई। इस तरह उन सबसे एक-एक दुआ करवाई। चुनांचे सबने दुआ कराई, यहां तक कि मेरी बारी आ गई। मैं आपके पहलू में बैठा हुआ था, फ़रमाया, अब तुम दुआ करो, तो मेरी ज़ुबान बन्द हो गई और मुझ पर कपकपी छा गई, जिसका उन्हें भी अन्दाज़ा हो गया, तो फ़रमाया, और कुछ नहीं, तो इतनी ही दुआ करा दो—

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَنَا اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنَا

'अल्लाहुम्मग़्फ़िर लना अल्लाहुम्मर हम्-ना'

(ऐ अल्लाह ! हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा, ऐ अल्लाह ! हम पर रहम फ़रमा।)

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने दुआ शुरू की, तो उन लोगों में सबसे ज़्यादा आंसुओं वाला और सबसे ज़्यादा रोने वाला उनके अलावा कोई नहीं था। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अब आप सब लोग भी ख़ामोश हो जाएं और बिखर जाएं।[1]

हज़रत अबू हुबैरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत हबीब बिन मस्लमा फ़हरी रज़ियल्लाहु अन्हु मुस्तजाबुद्दअवात (जिनकी दुआएं कुबूल हो जाएं) सहाबी थे। उन्हें एक फ़ौज का अमीर बनाया गया। उन्होंने रूम देश जाने के रास्ते तैयार कराए। जब दुश्मन का सामना हुआ तो उन्होंने लोगों से कहा, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि जो जमाअत एक जगह जमा हो और उनमें से एक दुआ कराए और बाक़ी सब आमीन कहें तो अल्लाह उनकी दुआ ज़रूर कुबूल फ़रमाएंगे।

फिर हज़रत हबीब रज़ि० ने अल्लाह की हम्द व सना बयान की और यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! हमारे ख़ून की हिफ़ाज़त फ़रमा और

---

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 294,

शहीदों वाला बदला हमें अता फ़रमा। अभी दुआ मांगी ही थी कि इतने में दुश्मन का सिपहसालार, जिसे रूमी ज़ुबान में बनबात कहा जाता है, वह बनबात आ गया और हज़रत हबीब के पास उनके ख़ेमे के अंदर चला गया, गोया उसने अपनी हार मान ली।[1]

शहादत की तमन्ना और शहादत की दुआ के बाब में हज़रत माक़िल बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हु की लम्बी हदीस गुज़र चुकी है, जिसमें यह भी है कि हज़रत नोमान बिन मुक़र्रिन ने फ़रमाया कि अब मैं अल्लाह तआला से दुआ करूंगा। तुममें से हर आदमी उस पर ज़रूर आमीन कहे, इसकी मेरी तरफ़ से पूरी ताकीद है, फिर यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! आज नोमान को शहादत की मौत नसीब फ़रमा और मुसलमानों की मदद फ़रमा और उन्हें फ़त्ह नसीब फ़रमा।[2]

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक सहाबी को ज़ुल बिजादैन कहा जाता था। उनके बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह आहें भरकर रोने वाला है और यह इस वजह से फ़रमाया कि यह सहाबी बहुत ज़्यादा तिलावत और अल्लाह का ज़िक्र करने वाले थे और ऊंची आवाज़ से दुआ किया करते थे।[3]

नेक लोगों से दुआ कराना

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उमरा की इजाज़त मांगी। आपने इजाज़त दे दी और फ़रमाया, ऐ मेरे छोटे से भाई! अपनी दुआओं में हमें न भूलना। हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने यह जो मुझे अपना भाई फ़रमाया, यह ऐसा कलिमा है कि अगर इसके बदले में मुझे सारी दुनिया भी मिल जाए, तो मुझे हरगिज़ ख़ुशी न हो।[4]

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 170
2. मज्मा, भाग 6, पृ० 216, हाकिम, भाग 3, पृ० 294
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 369, तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 395,
4. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 273

हज़रत अबू उमामा बाहिली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ लाए। आपने महसूस किया कि हम चाहते हैं कि आप हमारे लिए दुआ फ़रमाएं, तो आपने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा, हम पर रहम फ़रमा, हमसे राज़ी हो जा और हमारे आमाल क़ुबूल फ़रमा, हमें जन्नत में दाख़िल फ़रमा और हमें आग से निजात नसीब फ़रमा और हमारे तमाम हालों को दुरुस्त फ़रमा। फिर आपने महसूस फ़रमाया कि हम चाहते हैं कि आप हमारे लिए और दुआ फ़रमाएं, तो आपने फ़रमाया, इन दुआओं में मैंने तुम्हारे तमाम कामों की दुआ कर दी है।[1]

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक आदमी एक दिन बाहर निकल गया और कपड़े उतार कर गर्म ज़मीन पर लोट-पोट होने लगा और अपने नफ़्स से कहने लगा, जहन्नम की आग का मज़ा चख ले, तू रात को मुरदार पड़ा रहता है और दिन को बेकार। इतने में उसने देखा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक पेड़ के साए में तशरीफ़ रखते हैं, उसने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया कि मेरा नफ़्स मुझ पर ग़ालिब आ गया।

हुज़ूर सल्ल० ने उससे फ़रमाया, ग़ौर से सुनो (तुम्हारी तवाज़ो की और अपने नफ़्स को सज़ा देने की कैफ़ियत अल्लाह को बहुत पसन्द आई है) इस वजह से तुम्हारे लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए गए हैं और अल्लाह तुम्हारी वजह से फ़रिश्तों पर फ़ख़्र फ़रमा रहे हैं। फिर हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा रज़ि० से फ़रमाया, अपने इस भाई से दुआ का तोशा ले लो। (उसकी इस कैफ़ियत की वजह से उसकी दुआ अल्लाह के यहां क़ुबूल हो रही है, उससे दुआ करवाओ।)

चुनांचे एक आदमी ने कहा, ऐ फ़्लाने ! मेरे लिए दुआ कर दो। हुज़ूर सल्ल० ने उससे फ़रमाया, नहीं, सिर्फ़ एक के लिए नहीं, बल्कि सबके

1. कंज़, भाग 1, पृ० 291

लिए दुआ करो। उसने यह दुआ की, ऐ अल्लाह! तक़्वा को इनका तोशा बना दे और तमाम कामों में इनकी पूरी रहबरी फ़रमा। इस दौरान हुज़ूर सल्ल० ने उसके लिए यह दुआ की, ऐ अल्लाह! इसे सही दुआ करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, तो उसने कहा, ऐ अल्लाह! जन्नत को इनका ठिकाना बना दे।[1]

हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक सफ़र में जा रहे थे कि इतने में आपका गुज़र एक आदमी पर हुआ जो गर्म ज़मीन पर लेट कर उलट-पलट हो रहा था और कह रहा था, ऐ मेरे नफ़्स! रात भर तू सोता रहता है और दिन को बेकार रहता है और जन्नत की उम्मीद रखता है। जब वह अपने नफ़्स की सज़ा पूरी कर चुका, तो हुज़ूर सल्ल० ने हमारी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, तुम अपने इस भाई को पकड़ लो, (यानी इससे दुआ कराओ।)

हमने कहा, अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए, अल्लाह से हमारे लिए दुआ करें। इस पर उसने यह दुआ की, ऐ अल्लाह! तमाम कामों में इनकी पूरी रहबरी फ़रमा। हमने कहा, हमारे लिए और दुआ कर दें। उसने कहा, ऐ अल्लाह! तक़्वा को इनके लिए तोशा बना दे। हमने कहा, और दुआ कर दें। हुज़ूर सल्ल० ने भी फ़रमाया, इनके लिए और दुआ कर दो और हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह! इसे (जामेअ दुआ करने की) तौफ़ीक़ अता फ़रमा। चुनांचे उसने कहा, ऐ अल्लाह! जन्नत को इनका ठिकाना बना दे।[2]

हज़रत उसैर बिन जाबिर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उवैस से फ़रमाया, तुम मेरे लिए मग़्फ़िरत की दुआ करो। हज़रत उवैस ने कहा, मैं आपके लिए मग़्फ़िरत की दुआ कैसे करूं, आप तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी हैं? फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है कि तमाम ताबिईन

1. कंज़, भाग 1, पृ० 290,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 185, कंज़, भाग 1, पृ० 308,

में सबसे बेहतरीन आदमी वह है, जिन्हें उवैस कहा जाएगा।[1]

मुस्लिम की रिवायत में यह भी है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसलिए तुममें से जो भी उवैस से मिले, वह उनसे कहे कि वह उसके लिए इस्तिग़फ़ार करें।

हज़रत अब्दुल्लाह रूमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ज़ाविया बस्ती में ठहरे हुए थे। किसी ने उनसे कहा, बसरा से आपके भाई आपके पास इसलिए आए हैं, ताकि आप उनके लिए दुआ करें, तो उन्होंने यह दुआ की, ऐ अल्लाह! हमारी मग़फ़िरत फ़रमा और हम पर रहम फ़रमा और हमें दुनिया में भी बेहतरी अता फ़रमा और आख़िरत में भी ख़ैर व भलाई अता फ़रमा और हमें जहन्नम की आग के अज़ाब से बचा। उन लोगों ने और दुआ की दरख़्वास्त की तो उन्होंने वही दुआ फिर कर दी और फ़रमाया, अगर तुम्हें ये चीज़ें दे दी गईं तो दुनिया और आख़िरत की ख़ैर तुम्हें दे दी जाएगी।[2]

गुनाहगारों के लिए दुआ करना

हज़रत यज़ीद बिन असम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, शाम का एक आदमी बहुत ताक़तवर और ख़ूब लड़ाई करने वाला था। वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में आया करता था। वह कुछ दिन हज़रत उमर रज़ि० को नज़र न आया, तो फ़रमाया, फ़्लां बिन फ़्लां का क्या हुआ? लोगों ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! उसने तो शराब पीनी शुरू कर दी है और बराबर पी रहा है। हज़रत उमर रज़ि० ने अपने मुंशी को बुलाकर फ़रमाया, ख़त लिखो—

'यह ख़त उमर बिन ख़त्ताब की तरफ़ से फ़्लां बिन फ़्लां के नाम! सलामुन अलैक।

---

1. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 260, इसाबा, भाग 1, पृ० 115,
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 93,

मैं तुम्हारे सामने उस अल्लाह की तारीफ़ करता हूं जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, जो गुनाहों को माफ़ करने वाला, तौबा को क़ुबूल करने वाला, सख़्त सज़ा देने वाला और बड़ा इनाम व एहसान करने वाला है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की तरफ़ लौट कर जाना है।'

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने अपने साथियों से फ़रमाया, तुम लोग अपने भाई के लिए दुआ करो कि अल्लाह उसके दिल को अपनी तरफ़ मुतवज्जह फ़रमा दे और उसे तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे। जब उसके पास हज़रत उमर रज़ि० का ख़त पहुंचा, तो वह इसे बार-बार पढ़ने लगा और कहने लगा, वह गुनाहों को माफ़ करने वाला, तौबा को क़ुबूल करने वाला और सख़्त सज़ा देने वाला है। (इस आयत में) अल्लाह ने मुझे अपनी सज़ा से डराया है और माफ़ करने का वायदा भी फ़रमाया है।[1]

अबू नुऐम की रिवायत में और यह भी है कि वह उसे बार-बार पढ़ता रहा, फिर रोने लग गया, फिर उसने शराब पीनी छोड़ दी और मुकम्मल तौर से छोड़ दी। जब हज़रत उमर रज़ि० को उसकी यह ख़बर पहुंची तो फ़रमाया, ऐसे किया करो, जब तुम देखो कि तुम्हारा भाई फिसल गया है, उसे सीधे रास्ते पर लाओ और उसे अल्लाह की माफ़ी का यक़ीन दिलाओ, और अल्लाह से दुआ करो कि वह उसे तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और तुम उसके ख़िलाफ़ शैतान के मददगार न बनो (और उसे अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद न करो।)[2]

वे कलिमे जिनसे दुआ शुरू की जाती है

हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक आदमी को यह कहते हुए सुना—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِاَنِّیْ اَشْهَدُ اَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِیْ
لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ وَلَمْ یَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

1. इब्ने अबी हातिम, अबू नुऐम,
2. तफ़सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 70

'ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे इस वसीले से मांगता हूं कि मैं इस बात की गवाही देता हूं कि बेशक तू ही अल्लाह है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू अकेला है, बेनियाज़ है, जिससे न कोई पैदा हुआ और न वह किसी से पैदा हुआ और न कोई उसके बराबर का है।'

आपने फ़रमाया, तुमने अल्लाह के इस इस्मे आज़म के साथ मांगा है कि जब भी उसके साथ मांगा जाता है, तो अल्लाह ज़रूर देते हैं और जब भी इसके साथ उसे पुकारा जाता है, तो वे ज़रूर क़ुबूल करते हैं।[1]

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक आदमी को यह कहते हुए सुना 'या ज़ल जलालि वल इक्रामि'। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तेरे लिए क़ुबूलियत का दरवाज़ा खुल गया है, अब तू मांग।[2]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत अबू अय्याश ज़ैद बिन सामित ज़ुरक़ी रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़र हुआ। वह नमाज़ पढ़ रहे थे और यह कह रहे थे—

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِاَنَّ لَكَ الْحَمْدَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ يَا بَدِيْعَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

'ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे उस वसीले से मांगता हूं कि तमाम तारीफ़ें तेरे लिए हैं, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। ऐ बड़े मेहरबान ! ऐ बहुत देने वाले ! ऐ आसमानों और ज़मीन को किसी नमूने के बग़ैर बनाने वाले, ऐ बुज़ुर्गी और बख़्शिश वाले !' हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने अल्लाह से उसके इस इस्मे आज़म के वसीले से मांगा है कि जब उसके ज़रिए से दुआ की जाए, तो अल्लाह ज़रूर क़ुबूल फ़रमाते हैं और जब उसके वसीले से उससे मांगा जाए तो ज़रूर अता फ़रमाते हैं।[3]

---

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 145, अफ़कारुन्नवबी, पृ० 501,
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 145,
3. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 146,

एक रिवायत में ये लफ़्ज़ भी हैं, 'या हय्यु या क़य्यूम' (ऐ सदा ज़िंदा रहने वाले ! ऐ सबको क़ायम रखने वाले !)

हाकिम की रिवायत में इसके बाद ये लफ़्ज़ भी हैं 'असअलु-कल जन्न-त व अऊज़ु बि-क मिनन्नारि०' (मैं तुझसे जन्नत मांगता हूं और आग से तेरी पनाह चाहता हूं।)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक देहाती के पास से गुज़रे, वह अपनी नमाज़ में दुआ मांग रहा था और कह रहा था—

يَا مَنْ لَا تَرَاهُ الْعُيُوْنُ وَلَا
تُخَالِطُهُ الظُّنُوْنُ وَلَا يَصِفُهُ الْوَاصِفُوْنَ وَلَا تُغَيِّرُهُ الْحَوَادِثُ وَلَا يَخْشَى الدَّوَائِرَ يَعْلَمُ مَثَاقِيْلَ
الْجِبَالِ وَمَكَايِيْلَ الْبِحَارِ وَعَدَدَ قَطْرِ الْاَمْطَارِ وَعَدَدَ وَرَقِ الْاَشْجَارِ وَعَدَدَ مَا اَظْلَمَ عَلَيْهِ
اللَّيْلُ وَاَشْرَقَ عَلَيْهِ النَّهَارُ وَمَا تُوَارِيْ مِنْهُ سَمَاءٌ سَمَاءً وَلَا اَرْضٌ اَرْضًا وَلَا بَحْرٌ مَا فِيْ قَعْرِهِ وَلَا
جَبَلٌ مَا فِيْ وَعْرِهِ اِجْعَلْ خَيْرَ عُمْرِيْ آخِرَهُ وَخَيْرَ عَمَلِيْ خَوَاتِيْمَهُ وَخَيْرَ اَيَّامِيْ يَوْمَ اَلْقَاكَ فِيْهِ

'ऐ वह ज़ात, जिसको आंखें देख नहीं सकतीं और किसी का ख़्याल व गुमान उस तक नहीं पहुंच सकता और न ख़ूबियां बयान करने वाले उसकी ख़ूबियां बयान कर सकते हैं और न ज़माने के हादसे उस पर असर डाल सकते हैं और न ज़माने की गर्दिश से उसे कोई अंदेशा है, जो पहाड़ों के वज़न और समुन्दरों के पैमानों और बारिश के क़तरों की तायदाद और पेड़ों के पत्तों की तायदाद को जानता है और वह उन तमाम चीज़ों को जानता है जिन पर रात का अंधेरा छाता है और जिन पर दिन रोशनी डालता है और न उससे एक आसमान दूसरे आसमान को छिपा सकता है और न एक ज़मीन दूसरी ज़मीन को और न समुन्दर उन चीज़ों को छिपा सकता है जो उसकी तह में है और न कोई पहाड़ उन चीज़ों को छिपा सकता है जो उसकी सख़्त चट्टानों में हैं, तू मेरी उम्र के आख़िरी हिस्से को सबसे बेहतरीन हिस्सा बना दे और मेरे आख़िरी अमल को सबसे बेहतरीन अमल बना दे और मेरा बेहतरीन दिन वह

बना, जिस दिन मेरी तुझसे मुलाक़ात हो।'

आपने एक आदमी के ज़िम्मे लगाया कि जब यह देहाती नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाए तो इसे मेरे पास ले आना। चुनांचे वह नमाज़ के बाद हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्ल० के पास एक खान से कुछ सोना हदिए में आया हुआ था, हुज़ूर सल्ल० ने उसे वह सोना हदिए में दे दिया, फिर उससे पूछा कि ऐ आराबी! तुम कौन-से क़बीले में से हो?

उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! बनी आमिर बिन सासआ में से हूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम जानते हो, मैंने यह सोना तुमको क्यों हदिया किया है? उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हमारी आपकी रिश्तेदारी है, इस वजह से किया है। आपने फ़रमाया, रिश्तेदारी का भी हक़ होता है, लेकिन मैंने सोना तुम्हें इस वजह से हदिया किया है कि तुमने बड़े अच्छे तरीक़े से अल्लाह की सना बयान की है।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह दुआ मांगते हुए सुना—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ بِاسْمِکَ الطَّاهِرِ الطَّیِّبِ الْمُبَارَکِ الْاَحَبِّ اِلَیْکَ الَّذِیْ اِذَا دُعِیْتَ بِهٖ اَجَبْتَ
وَاِذَا سُئِلْتَ بِهٖ اَعْطَیْتَ وَاِذَا اسْتُرْحِمْتَ بِهٖ رَحِمْتَ وَاِذَا اسْتُفْرِجْتَ بِهٖ فَرَّجْتَ

'ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरे उस नाम के वसीले से सवाल करता हूं जो पाक, उम्दा, मुबारक और तुझे सबसे ज़्यादा महबूब है। जब तुझे उसके ज़रिए पुकारा जाता है, तो तू ज़रूर मुतवज्जह होता है और जब तुझसे उसके वसीले से मांगा जाता है, तो तू ज़रूर देता है और जब तुझसे उसके ज़रिए रहम तलब किया जाता है तो तू ज़रूर रहम फ़रमाता है और जब उसके वसीले से तुझसे कुशादगी मांगी जाती है, तो तू ज़रूर कुशादगी देता है।'

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं, एक दिन हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया,

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 158,

ऐ आइशा ! क्या तुम्हें पता चला कि अल्लाह ने मुझे वह नाम बता दिया है कि जब उस नाम के वसीले से उससे दुआ की जाती है, तो वह ज़रूर क़ुबूल फ़रमाता है। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों, वह नाम मुझे भी सिखा दें। आपने फ़रमाया, ऐ आइशा ! तुझे सिखाना मुनासिब नहीं।

वह फ़रमाती हैं, मैं एक तरफ़ होकर बैठ गई, फिर मैं खड़ी हुई और हुज़ूर सल्ल० के सर का बोसा लिया। फिर मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे वह नाम सिखा दें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ आइशा ! तुम्हारे लिए मुनासिब नहीं कि मैं तुम्हें सिखाऊं, क्योंकि तुम्हारे लिए मुनासिब नहीं तुम उसके ज़रिए दुनिया की कोई चीज़ मांगो। मैं वहां से उठी और वुज़ू करके दो रक्अत नमाज़ पढ़ी, फिर यह दुआ मांगी—

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَدْعُوْكَ اللّٰهَ وَاَدْعُوْكَ الرَّحْمٰنَ وَاَدْعُوْكَ الْبَرَّ الرَّحِيْمَ وَاَدْعُوْكَ

بِاَسْمَائِكَ الْحُسْنٰى كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَمَا لَمْ اَعْلَمْ اَنْ تَغْفِرَلِيْ وَتَرْحَمَنِيْ

'ऐ अल्लाह ! मैं तुझे अल्लाह कहकर पुकारती हूं, तुझे रहमान कहकर पुकारती हूं, तुझे नेकूकार रहीम कहकर पुकारती हूं और तुझे तेरे उन तमाम अच्छे नामों से पुकारती हूं जिनको मैं जानती हूं और जिनको नहीं जानती हूं और यह सवाल करती हूं कि तू मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दे और मुझ पर रहम फ़रमा दे।'

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्ल० मेरी यह दुआ सुनकर बहुत हंसे और फ़रमाया, तुमने जिन नामों से अल्लाह को पुकारा है, उनमें वह ख़ास नाम भी शामिल है।[1]

हज़रत सलमा बिन अकवअ अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कभी ऐसी दुआ मांगते हुए नहीं सुना कि जिसके शुरू में आपने ये लफ़्ज़ न कहे हों—

---

1. इब्ने माजा, पृ० 698,

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَلِيِّ الْاَعْلٰى الْوَهَّابِ

'सुब-हा-न रब्बियल अलीयिल आला अल-वह्हाबु०'

(मैं अपने रब की पाकी बयान करता हूं जो कि बुलन्द, बहुत बुलन्द और बहुत देने वाला है।)[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सौ दुआएं भी मांगते, तो उनके शुरू में, दर्मियान में और आख़िर में यह दुआ ज़रूर मांगते—

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

रब्बना आतिना फ़िद-दुन्या ह-स-न-तंव-व फ़िल आख़िरति ह-स-न-तंव-व क़िना अज़ाबन्नार०

(ऐ हमारे परवरदिगार! हमको दुनिया में भी बेहतरी इनायत कीजिए और आख़िरत में भी बेहतरी दीजिए और हमको दोज़ख़ के अज़ाब से बचाइए।)[2]

हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फ़रमा थे कि इतने में एक आदमी ने अन्दर आकर नमाज़ पढ़ी और फिर उसने यह दुआ मांगी—

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ

'अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली वर्हम्नी' (ऐ अल्लाह! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा और मुझ पर रहम फ़रमा) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ नमाज़ी! तुमने दुआ मांगने में जल्दी की। जब तुम नमाज़ पढ़कर बैठ जाओ तो पहले अल्लाह की शान के मुताबिक़ तारीफ़ करो और मुझ पर दरूद भेजो, फिर दुआ मांगो।

फिर एक और आदमी ने नमाज़ पढ़ी, फिर उसने अल्लाह की हम्द व सना बयान की और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 156, कंज़, भाग 1, पृ० 290,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 290

भेजा, तो हुज़ूर सल्ल० ने उससे फ़रमाया, ऐ नमाज़ी! अब तुम दुआ करो, ज़रूर क़ुबूल की जाएगी।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जब तुममें से कोई अल्लाह से मांगना चाहे, तो उसे चाहिए कि अल्लाह की शान के मुताबिक़ हम्द व सना से शुरूआत करे, फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद पढ़े, फिर अल्लाह से मांगे, तो इस तरह मक़्सद में कामियाबी की ज़्यादा उम्मीद है।[2]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अपनी उम्मत के लिए दुआएं

हज़रत अब्बास बिन मिरदास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अरफ़ात (यानी हज के दिन 9 ज़िलहिज्जा) की शाम को अपनी उम्मत के लिए मग़्फ़िरत और रहमत की दुआ मांगी और बहुत देर तक यह दुआ मांगते रहे, आख़िर अल्लाह ने वह्य भेजी कि मैंने तुम्हारी दुआ मंज़ूर कर ली और उनके जिन गुनाहों का ताल्लुक़ मुझसे था, वह मैंने माफ़ कर दिए, लेकिन उन्होंने एक दूसरे पर जो ज़ुल्म कर रखा था, उसकी माफ़ी नहीं हो सकती।

इस पर हुज़ूर सल्ल० ने बड़ी शफ़क़त की वजह से अर्ज़ किया, ऐ रब! तू यह कर सकता है कि मज़्लूम को इस ज़ुल्म से बेहतर बदला अपने पास से दे दे और ज़ालिम को माफ़ फरमा दे। उस शाम को तो अल्लाह ने यह दुआ क़ुबूल न फ़रमाई, अलबत्ता मुज़दलिफ़ा की सुबह को हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ मांगनी शुरू की तो अल्लाह ने क़ुबूल फ़रमा ली और फ़रमाया, चलो, ज़ालिमों को भी माफ़ कर दिया। इस पर हुज़ूर सल्ल० मुस्कराने लगे, तो कुछ सहाबा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! (यह तहज्जुद का वक़्त है) आप इस वक़्त तो मुस्कराया

---

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 147, मज्मा, भाग 10, पृ० 155,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 155

नहीं करते थे, क्यों मुस्करा रहे हैं?

फ़रमाया, मैं इस वजह से मुस्करा रहा हूं कि जब अल्लाह के दुश्मन इब्लीस को पता चला कि अल्लाह के ज़ालिम उम्मतियों के बारे में भी मेरी यह दुआ क़ुबूल कर ली है, तो वह हलाकत और बरबादी पुकारने लगा और सर पर मिट्टी डालने लगा। (उसे देखकर मैं मुस्करा रहा था)[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के इस क़ौल की तिलावत फ़रमाई—

رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ (سورت ابراہیم آیت ۳۶)

'ऐ मेरे परवरदिगार! इन बुतों ने बहुतेरे आदमियों को गुमराह कर दिया, फिर जो आदमी मेरी राह पर चलेगा, वह तो मेरा है ही और जो आदमी (इस बारे में) मेरा कहना न माने, सो आप तो कसीरुल मग़फ़िरत (बहुत ज़्यादा माफ़ करने वाले और) कसीरुर्रहमत (बहुत ज़्यादा रहमत फ़रमाने वाले) हैं।' (सूरः इब्राहीम, आयत 36)

और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के इस क़ौल की तिलावत फ़रमाई—

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ (سورت مائدہ آیت ۱۱۸)

'अगर आप उनको सज़ा दें तो ये आपके बन्दे हैं और अगर आप इनको माफ़ कर दें तो आप ज़बरदस्त हैं और हिक्मत वाले हैं।'

(सूरः माइदा, आयत 118)

फिर आपने दोनों हाथ उठाकर उम्मत के लिए यह दुआ शुरू कर दी—'ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत, ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत, ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत' और आप रोने लगे। इस पर अल्लाह ने इर्शाद फ़रमाया, ऐ जिब्रील! तुम्हारा रब सब कुछ अच्छी तरह जानता है, लेकिन तुम मुहम्मद के पास जाओ और उनसे पूछो कि वह क्यों रो रहे हैं?

चुनांचे हज़रत जिब्रील ने हाज़िर होकर पूछा, हुज़ूर सल्ल० ने रोने की

1. बैहक़ी,

वजह बताई (कि उम्मत के ग़म में रो रहा हूं। हज़रत जिब्रील ने वापस आकर अल्लाह तआला को वजह बताई।) अल्लाह तआला ने फ़रमाया, मुहम्मद के पास जाओ और उनसे कहो, हम तुमको तुम्हारी उम्मत के बारे में राज़ी करेंगे और तुम्हें रंजीदा और ग़मगीन न होने देंगे।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत के लिए यह दुआ मांगी—

اَللّٰهُمَّ اَقْبِلْ بِقُلُوْبِهِمْ عَلٰى طَاعَتِكَ وَحُطَّ مِنْ وَّرَائِهِمْ بِرَحْمَتِكَ

'ऐ अल्लाह! इनके दिलों को अपनी इताअत की तरफ़ मुतवज्जह फ़रमा और उनके पीछे से अपनी रहमत से उनकी हिफ़ाज़त फ़रमा।'[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, एक दिन मैंने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत ख़ुश हैं। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे लिए अल्लाह से दुआ फ़रमा दें। आपने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह! आइशा के अगले-पिछले तमाम गुनाह माफ़ फ़रमा और जो उसने छिपकर किए और एलानिया किए, वे सब भी माफ़ फ़रमा। इस दुआ से ख़ुश होकर मैं ख़ुशी के मारे लोट-पोट हो गई, जिससे मेरा सर मेरी गोद में चला गया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम्हें मेरी दुआ से बहुत ख़ुशी हो रही है? मैंने कहा, मुझे आपकी दुआ से ख़ुशी क्यों न हो? आपने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! यह दुआ तो मैं अपनी उम्मत के लिए हर नमाज़ में मांगता हूं।[3]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चारों ख़लीफ़ों के लिए दुआएं

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

---

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 540,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 69
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 244,

व सल्लम ने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! अबूबक्र रज़ि० को क़ियामत के दिन मेरे साथ मेरे दर्जे में रखना ।[1]

हज़रत उमर और हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! उमर बिन ख़त्ताब और अबू जह्ल बिन हिशाम में से जो तुझे ज़्यादा महबूब है, उसके ज़रिए इस्लाम को इज़्ज़त अता फ़रमा ।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! इस्लाम को ख़ास तौर से उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के ज़रिए इज़्ज़त अता फ़रमा ।[3]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! इस्लाम को उमर रज़ि० के ज़रिए ताक़त अता फ़रमा ।[4]

हज़रत ज़ैद बिन अस्लम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक भूरे रंग की ऊंटनी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में भेजी। हुज़ूर सल्ल० ने उनके लिए यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! इन्हें पुले सिरात (आसानी से और जल्दी से) पार करा देना ।[5]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ तीन बार फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! मैं उस्मान रज़ि० से राज़ी हूं, तू भी उनसे राज़ी हो जा ।[6]

---

1. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 345,
2. अहमद, तिर्मिज़ी, नसई,
3. इब्ने माजा, हाकिम, बैहक़ी,
4. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 370
5. इब्ने असाकिर
6. इब्ने असाकिर

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह! उस्मान रज़ि० के अगले-पिछले गुनाह और जो गुनाह छिप कर किए और जो एलानिया किए और जो पोशीदा तौर से किए और जो सबके सामने किए, सारे माफ़ फ़रमा।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार मैं बीमार हुआ। मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने मुझे अपनी जगह बिठाया और ख़ुद खड़े होकर नमाज़ शुरू फ़रमा दी और अपने कपड़े का एक किनारा मुझ पर डाल दिया। फिर नमाज़ के बाद फ़रमाया, ऐ इब्ने अबी तालिब! अब तुम ठीक हो गए हो, कोई फ़िक्र न करो। मैंने जो चीज़ भी अल्लाह से अपने लिए मांगी, वह अल्लाह ने मुझे ज़रूर दी। बस इतनी बात है कि मुझसे यों कहा गया कि आपके बाद कोई नबी नहीं होगा। चुनांचे मैं वहां से उठा, तो मैं बिल्कुल ठीक हो चुका था और ऐसे लग रहा था, जैसे मैं बीमार ही नहीं हुआ था।[2]

हज़रत ज़ैद बिन युसैअ हज़रत सईद बिन वह्ब और हज़रत अम्र बिन ज़ीमुर रहमतुल्लाहि अलैहिम कहते हैं, हमने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाते हुए सुना कि मैं हर उस आदमी को अल्लाह का वास्ता देकर कहता हूं, जिसने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को (हज्जतुल विदाअ से वापसी पर) ग़दीर ख़ुम के दिन कुछ फ़रमाते हुए सुना कि वह ज़रूर खड़ा हो जाए, चुनांचे तेरह आदमी खड़े हो गए और उन्होंने इस बात की गवाही दी कि उस दिन हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था, क्या मैं ईमान वालों के साथ ख़ुद उनकी जान से भी ज़्यादा ताल्लुक़ नहीं रखता? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, बिल्कुल रखते हैं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०!

---

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 6,
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 43,

फिर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० का हाथ पकड़ कर फ़रमाया, मैं जिसका दोस्त हूं, यह (हज़रत अली रज़ि०) उसके दोस्त हैं। ऐ अल्लाह! जो इनसे दोस्ती करे, तू उनसे दोस्ती कर और जो इनसे दुश्मनी करे, तू उनसे दुश्मनी कर और जो इनसे मुहब्बत करे, तू उनसे मुहब्बत कर और जो इनसे बुग़्ज़ रखे, तू उनसे बुग़्ज़ रख और जो इनकी मदद करे तू उसकी मदद कर और जो इनकी मदद छोड़े, तू उसकी मदद छोड़ दे।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए यह दुआ नक़ल की है, ऐ अल्लाह! अली रज़ि० की इआनत (मदद) फ़रमा, और उनके ज़रिए से इआनत (मदद) फ़रमा और उन पर रहम फ़रमा और उनके ज़रिए से दूसरों पर रहम फ़रमा और उनकी मदद फ़रमा और उनके ज़रिए से मदद फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो उनसे दोस्ती करे, तू उससे दोस्ती कर और जो उनसे दुश्मनी करे, तू उससे दुश्मनी कर।[2]

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने मेरे लिए यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह! इसकी ज़ुबान को (हक़ पर) जमा दे और इसके दिल को हिदायत नसीब फ़रमा।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से ये लफ़्ज़ नक़ल किए गए हैं, ऐ अल्लाह! इसको फ़ैसला करने का सही रास्ता दिखला।[3]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास और हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हुमा के लिए दुआएं

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 105,
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 32
3. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 35

अलैहि व सल्लम को हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए यह दुआ करते हुए सुना, ऐ अल्लाह ! इसके तीर को सीधे निशाने पर लगा और इसकी दुआ को क़ुबूल फ़रमा और इसे अपना महबूब बना।[1]

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे लिए यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! जब साद तुझसे दुआ करे, तो उसकी दुआ क़ुबूल फ़रमा।[2]

हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे लिए, मेरी औलाद के लिए और मेरी औलाद की औलाद के लिए दुआ फ़रमाई।[3]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अपने घरवालों के लिए दुआएं

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ौजा मोहतरमा हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया, अपने शौहर और दोनों बेटों को मेरे पास ले आओ। चुनांचे वे उन तीनों को ले आईं, तो आपने ख़ैबर वाली चादर, जो हमें ख़ैबर में मिली थी और मैं अपने नीचे बिछाती थी, उन पर डाली और फिर उनके लिए यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! यह मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) की आल (परिवार) है, तू मुहम्मद सल्ल० की आल पर अपनी रहमतें और बरकतें ऐसे नाज़िल फ़रमा, जैसे तूने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की आल पर नाज़िल फ़रमाई थी। बेशक तू बहुत तारीफ़ वाला और बुज़ुर्गी वाला है।[4]

हज़रत अबू अम्मार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत वासिला

---

1. इब्ने असाकिर,
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 70,
3. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 70,
4. हैसमी, भाग 9, पृ० 166,

बिन असक़अ रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बैठा हुआ था कि इतने में कुछ लोगों ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का तज़्किरा किया और उन्हें कुछ बुरा-भला कह दिया। जब वे लोग खड़े होकर चले गए तो मुझसे फ़रमाया, तुम ज़रा बैठे रहो, मैं उस हस्ती के बारे में बताता हूं जिसे उन्होंने बुरा-भला कहा है। एक दिन मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठा हुआ था कि इतने में हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुम आए। आपने उन पर अपनी चादर डालकर यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! ये मेरे घरवाले हैं, इनसे नापाकी दूर कर और इन्हें अच्छी तरह पाक फ़रमा, मैंने अर्ज़ किया, मैं भी ! हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम भी।

हज़रत वासिला रज़ि० फ़रमाते हैं, अल्लाह की क़सम ! मेरे दिल को हुज़ूर सल्ल० के इस फ़रमान पर तमाम आमाल से ज़्यादा भरोसा है और एक रिवायत में यह है कि मुझे हुज़ूर सल्ल० के इस फ़रमान से सबसे ज़्यादा उम्मीद है।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने एक चादर बिछा रखी थी, उस पर हुज़ूर सल्ल०, मैं, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुम सब बैठ गए। फिर हुज़ूर सल्ल० ने चादर के चारों कोने पकड़ कर हम पर गिरह लगा दी, फिर यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! जैसे मैं इनसे राज़ी हूं, तू भी इनसे राज़ी हो जा।[2]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हज़रात हसनैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के लिए दुआएं

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत हसन, हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 167
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 169

लिए यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! मैं इन दोनों से मुहब्बत करता हूं, तू भी इनसे मुहब्बत फ़रमा और जिसने इन दोनों से मुहब्बत की, उसने हक़ीक़त में मुझसे मुहब्बत की ।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से इस दुआ के ये लफ़्ज़ नक़ल किए गए हैं—'ऐ अल्लाह ! मैं इन दोनों से मुहब्बत करता हूं, तू भी इनसे मुहब्बत फ़रमा ।[2]

नसई और इब्ने हिब्बान में यह दुआ हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल की गई है, इसके आख़िर में यह है कि जो इन दोनों से मुहब्बत करे, तू उससे भी मुहब्बत फ़रमा और उसके शुरू में यह है कि ये दोनों मेरे बेटे हैं और मेरी बेटी के बेटे हैं ।[3]

इब्ने अबी शैबा और तयालसी में यह दुआ हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल की गई है, उसमें आगे यह भी है कि जो इनसे बुग़्ज़ रखे, तू उससे बुग़्ज़ रख ।[4]

बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से और तबरानी में हज़रत सईद बिन ज़ैद और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हुमा से नक़ल किया गया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! मुझे हसन रज़ि० से मुहब्बत है, तू भी उससे मुहब्बत फ़रमा और जो उससे मुहब्बत करे, उससे भी मुहब्बत फ़रमा ।[5]

इब्ने असाकिर में हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि से यह भी नक़ल किया गया है कि ऐ अल्लाह ! इसे बचा और इसके ज़रिए से (दूसरों को) बचा ।[6]

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 180
2. हैसमी, भाग 1, प० 180
3. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 105,
4. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 106
5. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 102,
6. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 104

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को कंधे पर उठा रखा है और यह दुआ फ़रमा रहे हैं, ऐ अल्लाह ! मुझे इससे मुहब्बत है, तू भी इससे मुहब्बत फ़रमा ।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके बेटों के लिए दुआएं

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! अब्बास की और उसकी औलाद की ज़ाहिरी-बातिनी हर तरह की मग़्फ़िरत फ़रमा और उनकी औलाद में तू उनका ख़लीफ़ा बन जा ।[2]

इब्ने असाकिर में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की यह रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! अब्बास रज़ि० के वे गुनाह, जो छिपकर किए या ऐलानिया किए या सबके सामने किए या परदे में किए, सब माफ़ फ़रमा, और आगे उनसे या उनकी औलाद से क़ियामत तक जो गुनाह हों, वे सब माफ़ फ़रमा ।

इब्ने असाकिर और ख़तीब में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की यह रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! अब्बास की, अब्बास की औलाद की और जो उनसे मुहब्बत करे, उसकी मग़्फ़िरत फ़रमा ।

इब्ने असाकिर में हज़रत आसिम रहमतुल्लाहि अलैहि के वालिद की रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अब्बास मेरे चचा और मेरे वालिद जैसे हैं और मेरे बाप-दादों में से अब यही बाक़ी हैं। ऐ अल्लाह ! इनके गुनाहों को माफ़ फ़रमा और इनके अच्छे अमलों को क़ुबूल फ़रमा और इनके बुरे अमलों से दरगुज़र फ़रमा

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 105,
2. तिर्मिज़ी,

और इनके फ़ायदे के लिए इनकी औलाद की इस्लाह फ़रमा।[1]

हज़रत अबू उसैद साइदी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, जब तक मैं कल आपके घर न आ जाऊं, उस वक़्त तक आप और आपके बेटे घर से कहीं न जाएं। मुझे आप लोगों से एक काम है। चुनांचे अगले दिन ये सब घर में हुज़ूर सल्ल० का इन्तिज़ार करते रहे।

आप चाश्त के बाद उनके पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, अस्सलामु अलैकुम, जवाब में इन लोगों ने कहा, व अलैकुम अस्सलामु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आप लोगों ने किस हाल में सुबह की ? उन लोगों ने कहा, हम अल्लाह की तारीफ़ करते हैं, (अच्छे हाल में सुबह की) आपने फ़रमाया, आप लोग सिमट जाएं और मिलकर बैठें। चुनांचे जब वे इस तरह बैठ गए तो आपने उन सब पर अपनी एक चादर डाल दी, फिर यह दुआ फ़रमाई, ऐ मेरे रब ! यह मेरे चचा और मेरे वालिद जैसे हैं और ये सब मेरे घरवाले हैं, इसलिए जैसे मैंने इनको अपनी इस चादर में छिपा रखा है, तू भी उनको ऐसे ही आग से छिपा ले। इस पर दरवाज़े की चौखट और कमरे की दीवारों ने तीन बार आमीन कहा।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैं (अपनी ख़ाला) हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में था। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए वुज़ू का पानी रखा। आपने पूछा, यह पानी मेरे लिए किसने रखा? हज़रत मैमूना रज़ि० ने अर्ज़ किया, अब्दुल्लाह ने। आपने ख़ुश होकर फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! इसे दीन की समझ अता फ़रमा और इसे क़ुरआन की तफ़्सीर सिखा।[3]

इब्ने नज्जार में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से यह दुआ इस तरह

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 207
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 270, बिदाया, भाग 6, पृ० 133, दलाइल, पृ० 154,
3. इब्ने अबी शैबा,

नक़ल की गई है, ऐ अल्लाह ! इसे किताब सिखा दे और इसे दीन की समझ अता फ़रमा दे।[1]

इब्ने माजा, इब्ने साद और तबरानी में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से ही यह दुआ इस तरह नक़ल की गई है, ऐ अल्लाह ! इसे हिक्मत और किताब की तफ़्सीर सिखा दे।

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से यह दुआ इस तरह नक़ल की गई है, ऐ अल्लाह ! इसमें बरकत अता फ़रमा, इसके ज़रिए किताब को फैला।[2]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब, उनकी औलाद, हज़रत ज़ैद बिन हारिसा और हज़रत इब्ने रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए दुआएं

तबरानी और इब्ने असाकिर में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से और अहमद व इब्ने असाकिर में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! जाफ़र की औलाद में तू उसका ख़लीफ़ा बन जा।

तयालसी, इब्ने साद और अहमद वग़ैरह में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन बार यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! तू जाफ़र के बाल-बच्चों में उसका ख़लीफ़ा बन जा और (उनके बेटे) अब्दुल्लाह के ख़रीदने-बेचने में बरकत अता फ़रमा।

इब्ने अबी शैबा में हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि से नक़ल किया गया है, बलक़ा इलाक़े के मूता की लड़ाई में हज़रत जाफ़र बिन

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 231,
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 228,

अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु जब शहीद हो गए, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! अब तक तू जितने नेक बन्दों का ख़लीफ़ा बना है, उन सबसे ज़्यादा अच्छी तरह तू जाफ़र के बाल-बच्चों में उसका ख़लीफ़ा बन जा।[1]

हज़रत अबू मैसरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत ज़ैद बिन हारिसा, हज़रत जाफ़र और हज़रत इब्ने रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हुम की शहादत की ख़बर पहुंची तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खड़े होकर इन तीनों के हालात बयान किए और शुरुआत हज़रत ज़ैद रज़ि० से फ़रमाई, फिर यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! ज़ैद की मग़फ़िरत फ़रमा, ऐ अल्लाह ! ज़ैद की मग़फ़िरत फ़रमा, ऐ अल्लाह। ज़ैद की मग़फ़िरत फ़रमा, ऐ अल्लाह ! जाफ़र और अब्दुल्लाह बिन रवाहा की मग़फ़िरत फ़रमा।[2]

हज़रत यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ानदान, हज़रत अबू सलमा और हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआएं

अहमद और इब्ने साद में हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! तू आले यासिर की मग़फ़िरत फ़रमा और तूने उनकी मग़फ़िरत फ़रमा दी है और इब्ने असाकिर में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! अम्मार में बरकत अता फ़रमा। आगे बाक़ी हदीस ज़िक्र की।[3]

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! अबू सलमा की

---

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 155, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 39,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 46,
3. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 245

मग़फ़िरत फ़रमा और मुक़र्रिबों में उनके दर्जे को बुलन्द फ़रमा और उनके पीछे रह जाने वालों में तू उनका ख़लीफ़ा बन जा और ऐ रब्बुल आलमीन ! हमारी और उनकी मग़फ़िरत फ़रमा और उनकी क़ब्र को कुशादा और मुनव्वर फ़रमा ।[1]

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझे पकड़ कर अपनी रान पर बिठा लिया करते थे और हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बाईं रान पर बिठा लिया करते, फिर हम दोनों को अपने साथ चिमटा कर यों फ़रमाते, ऐ अल्लाह ! मैं इन दोनों पर रहम करता हूं, तू भी इन दोनों पर रहम फ़रमा ।[2]

एक रिवायत में यह है कि ऐ अल्लाह ! मुझे इन दोनों से मुहब्बत है, तू भी इन दोनों से मुहब्बत फ़रमा ।

हज़र उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, (मैं फ़ौज की तैयारी के लिए मदीना से बाहर जुरुफ़ में ठहरा हुआ था) जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीमारी बढ़ गई तो मैं भी मदीना वापस आया और मेरे साथ जो लोग थे, वे भी मदीना आ गए। मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप ख़ामोश थे और बिल्कुल बात नहीं कर रहे थे। हुज़ूर सल्ल० मेरे ऊपर अपने दोनों हाथ रखकर फिर ऊपर को उठाते। हुज़ूर सल्ल० ने बार-बार ऐसा किया, जिससे मैं समझा कि आप मेरे लिए दुआ फ़रमा रहे हैं ।[3]

हज़रत अम्र बिन आस, हज़रत हकीम बिन हिज़ाम, हज़रत जरीर और आले बुस्र रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआएं

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु

---

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 219,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 62,
3. कंज़, भाग 7, पृ० 5, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 136

अलैहि व सल्लम ने यह दुआ तीन बार फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! अम्र बिन आस रज़ि० की मग़्फ़िरत फ़रमा, क्योंकि जब भी मैंने उन्हें सदक़ा देने के लिए बुलाया, वह हमेशा मेरे पास सदक़ा लेकर आए।[1]

हज़रत हकीम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे लिए यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! तू इसके हाथ के कारोबार में बरकत अता फ़रमा।[2]

हज़रत हकीम रज़ि० फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे एक दीनार देकर क़ुरबानी का जानवर ख़रीदने भेजा। मैंने एक दीनार में जानवर ख़रीद कर दो दीनार में बेच दिया और फिर एक दीनार की बकरी ख़रीदी और एक दीनार लाकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पेश कर दिया। हुज़ूर सल्ल० ने मेरे लिए बरकत की दुआ फ़रमाई और फ़रमाया, जो दीनार तुम लाए हो, उसे सदक़ा कर दो।[3]

हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं घोड़े पर जमकर बैठ नहीं सकता था, नीचे गिर जाया करता था। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इसका तज़्किरा किया। आपने अपना हाथ मेरे सीने पर मारा और आपके हाथ (की बरकत) का असर मैंने अपने सीने में महसूस किया और आपने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! इसे (घोड़े पर) जमा दे और दूसरों को हिदायत पर लाने वाला और ख़ुद हिदायत पाया हुआ बना दे। चुनांचे मैं इस दुआ के बाद कभी घोड़े से नहीं गिरा।[4]

हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मुझसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था, क्या तुम ख़लसा बुत वाला घर गिराकर मुझे राहत नहीं पहुंचाते ? यह जाहिलियत के ज़माने में क़बीला

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 250,
2. तबरानी,
3. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 169
4. तबरानी,

ख़सअम का एक घर था, जिसे यमनी काबा कहा जाता था। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! (मैं घोड़े से) गिर जाता हूं, फिर पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैं और मेरे वालिद हम दोनों अपने घर के दरवाज़े पर बैठे हुए थे कि इतने में सामने से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने ख़च्चर पर तशरीफ़ लाए। मेरे वालिद ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या आप हमारे घर नहीं आते और खाना खाकर हमारे लिए बरकत की दुआ नहीं कर देते? चुनांचे आप हमारे घर तशरीफ़ ले गए और खाना खाकर यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह! इन पर रहम फ़रमा, इनकी मग़्फ़िरत फ़रमा, और इनकी रोज़ी में बरकत नसीब फ़रमा।

तबरानी की रिवायत में इसके बाद यह भी है कि फिर हम हमेशा अल्लाह की तरफ़ से रोज़ी में फैलाव ही देखते रहे।[2]

हज़रत बरा बिन मारूर, हज़रत साद बिन उबादा और हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआएं

हज़रत नज़ला बिन अम्र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, क़बीला ग़िफ़ार का एक आदमी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, तुम्हारा नाम क्या है? उसने कहा, 'मुहान' (जिसका मतलब है इहानत यानी नीच समझे जाने के क़ाबिल) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, बल्कि तुम मुकरम यानी इज़्ज़त (सम्मान) करने के क़ाबिल हो।

हुज़ूर सल्ल० ने मदीना आने के बाद हज़रत बरा बिन मारूर रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह! बरा बिन

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 152
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 220

मारूर पर रहमत नाज़िल फ़रमा और क़ियामत के दिन इसे अपने से परदा में न रख और इसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा और तूने वाक़ई ऐसे कर दिया।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मदीना तशरीफ़ लाए तो आपने सबसे पहले हज़रत बरा बिन मारूर रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए रहमत की दुआ फ़रमाई। हुज़ूर सल्ल० सहाबा को लेकर वहां गए। सहाबा रज़ि० उनके सामने सफ़ बनाकर खड़े हो गए। हुज़ूर सल्ल० ने उनके लिए यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह! इनकी मग़्फ़िरत फ़रमा, इन पर रहम फ़रमा, इनसे राज़ी हो जा और तूने वाक़ई ऐसे कर दिया।[2]

हज़रत क़ैस बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह! अपनी ख़ास रहमत और अपनी आम रहमत साद बिन उबादा रज़ि० के ख़ानदान पर नाज़िल फ़रमा।[3]

हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग सफ़र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे। आप (नींद की वजह से) सवारी से एक तरफ़ को झुक गए। मैंने आपको सहारा दिया, यहां तक कि आपकी आंख खुल गई। फिर आपको नींद आ गई और एक तरफ़ को झुक गए। मैंने आपको फिर सहारा दिया, यहां तक कि आपकी आंख खुल गई, तो आपने मुझे यह दुआ दी, ऐ अल्लाह! अबू क़तादा की ऐसी हिफ़ाज़त फ़रमा जैसे उसने आज रात मेरी हिफ़ाज़त की और फिर मुझे फ़रमाया, मेरा ख़्याल यह है कि हमारी वजह से तुम्हें बड़ी मशक़्क़त उठानी पड़ी।[4]

---

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 144,
2. इब्ने साद, भाग 2, पृ० 620
3. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 190
4. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 161,

हज़रत अनस बिन मालिक और दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआएं

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, (मेरी वालिदा) हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अनस के लिए दुआ फ़रमा दें। आपने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! इसके माल और औलाद को ज़्यादा फ़रमा दे और इसके माल और औलाद में बरकत अता फ़रमा। आगे और हदीस ज़िक्र की।[1]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक आदमी को हरमला कहा जाता था। उसने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ईमान तो बस यहां है और ज़ुबान की तरफ़ इशारा किया और निफ़ाक़ यहां है और दिल की तरफ़ इशारा किया और मैं अल्लाह का ज़िक्र बस थोड़ा-सा करता हूं। हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! इसे ज़िक्र करने वाली ज़ुबान और शुक्र करने वाला दिल अता फ़रमा और इसे इस बात की तौफ़ीक़ अता फ़रमा कि यह उससे मुहब्बत करे, जो मुझसे मुहब्बत करता है और हर काम में इसके अंजाम को ख़ैर फ़रमा।[2]

हज़रत तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे लिए मग़्फ़िरत की दुआ फ़रमा दें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब तुम्हारे लिए दुआ करने की अल्लाह की तरफ़ से इजाज़त मिलेगी, तब करूंगा। हुज़ूर सल्ल० कुछ देर ठहरे, फिर मेरे लिए यह दुआ तीन बार फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! तलिब की मग़्फ़िरत फ़रमा और उस पर रहम फ़रमा। फिर आपने अपने चेहरे पर हाथ फेरा।[3]

---

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 142,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 402,
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 402, इब्ने साद, भाग 7, पृ० 42,

हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ फ़रमाई इस छोटे से बन्दे अबू आमिर को दर्जे में क़ियामत के दिन अक्सर लोगों से ऊपर कर देना।[1]

हज़रत हस्सान बिन शद्दाद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मेरी वालिदा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं आपकी ख़िदमत में इसलिए हाज़िर हुई हूं, ताकि आप मेरे इस बेटे के लिए दुआ कर दें और इसे बड़ा और अच्छा बना दें। आपने वुज़ू किया और वुज़ू के बचे हुए पानी को मेरे चेहरे पर फेरा और यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! इस औरत के लिए इसके बेटे में बरकत अता फ़रमा और इसे बड़ा और उम्दा बना।[2]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अपने कमज़ोर सहाबा रज़ि० के लिए दुआएँ

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ से सलाम फेरा और अभी आपका चेहरा क़िब्ले की तरफ़ था कि आपने सर उठाकर यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! सलमा बिन हिशाम, अय्याश बिन अबी रबीआ, वलीद बिन वलीद और उन तमाम कमज़ोर मुसलमानों को (ज़ालिम काफ़िरों के हाथ से) छुड़ा दे जो कोई तदबीर नहीं कर सकते और जिन्हें कोई रास्ता सुझाई नहीं देता।[3]

इब्ने साद की दूसरी रिवायत में यह है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ज्र के रुकूअ से सर उठाया, तो यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! वलीद बिन वलीद, सलमा बिन हिशाम, अय्याश बिन अबी रबीआ और मक्का के तमाम कमज़ोर मुसलमानों को (काफ़िरों से) नजात नसीब फ़रमा। ऐ अल्लाह !

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 239
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 167
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 152, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 120,

क़बीला मुज़र की सख़्त पकड़ फ़रमा और उन्हें सूखे का ऐसा शिकार बना, जैसे तूने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने में सात साल का सूखा भेजा था।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ के बाद की दुआएं

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरा हाथ पकड़ कर फ़रमाया, ऐ मुआज़! अल्लाह की क़सम! मैं तुमसे मुहब्बत करता हूं। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, अल्लाह की क़सम, मुझे भी आपसे मुहब्बत है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ मुआज़! मैं तुम्हें यह वसीयत करता हूं कि तुम नमाज़ के बाद यह दुआ कभी न छोड़ना, हमेशा मांगना—

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِکْرِکَ وَشُکْرِکَ وَحُسْنِ عِبَادَتِکَ

'अल्लाहुम-म अअिन्नी अला ज़िक्रि-क व शुक्रि-क व हुस्नि इबादतिक०'

(ऐ अल्लाह! अपने ज़िक्र में, अपने शुक्र अदा करने में और अपनी अच्छी तरह इबादत करने में मेरी मदद फ़रमा)

रिवायत करने वाले कहते हैं, हज़रत मुआज़ रज़ि० ने अपने शागिर्द (शिष्य) सुनाबही को और सुनाबही ने अबू अब्दुर्रहमान को और अबू अब्दुर्रहमान ने उक़्बा बिन मुस्लिम को इस दुआ की वसीयत फ़रमाई।[1]

हज़रत औन बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पहलू में नमाज़ पढ़ी, उसने सुना कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० सलाम के बाद यह दुआ पढ़ रहे हैं—

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

---

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 114,

'अल्लाहुम-म अन्तस्सलामु व मिन-कस्सलामु त-बारक-त या ज़ल जलालि वल इकरामि०'

(ऐ अल्लाह! तू ही सलामती देने वाला है, तेरी ही जानिब से सलामती नसीब होती है, तू बहुत ही बरकत वाला है, ऐ अज़्मत व जलाल वाले और इक्राम व एहसान वाले।)

फिर उस आदमी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पहलू में नमाज़ पढ़ी तो उसने उन्हें भी सलाम के बाद यही दुआ पढ़ते हुए सुना, तो वह हंस पड़ा। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने उससे पूछा, मियां, क्यों हंस रहे हो? उसने कहा, मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० के पहलू में नमाज़ पढ़ी थी, तो उनको भी यह दुआ पढ़ते हुए सुना था। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी यह दुआ पढ़ते थे।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ से फ़ारिग़ होते, तो दायां हाथ अपने सर पर फेरते और फ़रमाते—

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ اَللّٰھُمَّ اَذْھِبْ عَنِّی الْھَمَّ وَالْحُزْنَ

'बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हुवर्रहमानुर्रहीम अल्लाहुम-म अज़्हिब अन्नी अल-हम-म वल हुज़्-न०'

(अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूं) जिसके सिवा और कोई माबूद नहीं, वह बड़ा मेहरबान और बहुत रहम करने वाला है। ऐ अल्लाह! तू हर फ़िक्र और परेशानी को मुझसे दूर फ़रमा दे।)

एक रिवायत में यह है कि अपना दायां हाथ अपनी पेशानी पर फेरते और फ़रमाते—

اَللّٰھُمَّ اَذْھِبْ عَنِّی الْغَمَّ وَ الْحُزْنَ

'अल्लाहुम-म अज़्हिब अन्नी अल-ग़म-म वल हुज़्-न'

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 120, कंज़, भाग 1, पृ० 292, अबू दाऊद, भाग 2, पृ० 359

(ऐ अल्लाह ! तू हर ग़म और परेशानी को मुझसे दूर फ़रमा दे ।)[1]

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब भी मैंने तुम्हारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ी, तो मैंने उन्हें नमाज़ से फ़ारिग़ होकर यही कहते हुए सुना—

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ خَطَايَايَ وَذُنُوْبِيْ كُلَّهَا اَللّٰهُمَّ وَانْعَشْنِيْ وَاجْبُرْنِيْ وَاهْدِنِيْ لِصَالِحِ الْاَعْمَالِ
وَالْاَخْلَاقِ لَا يَهْدِيْ لِصَالِحِهَا وَلَا يَصْرِفُ سَيِّئَهَا اِلَّا اَنْتَ

'अल्लाहुम्मग़्फ़िर ख़ताया-य व ज़ुनूबी कुल्लहा अल्लाहुम-म वन अशनी वज-बुरनी वह्दिनी लिसालिहिल आमालि वल अख़्लाक़ि ला यह्दी लि सालिहि हा वला यस्रिफ़ु सय्यि अहा इल्ला अन-त०'

(ऐ अल्लाह ! मेरी तमाम ख़ताएं और गुनाह माफ़ फ़रमा। ऐ अल्लाह ! मुझे बुलन्दी अता फ़रमा और मेरी कमियों को दूर फ़रमा और मुझे नेक आमाल और अच्छे अख़्लाक़ की हिदायत तेरे सिवा और कोई नहीं दे सकता और बुरे काम और बुरे अख़्लाक़ को तेरे सिवा और कोई हमसे दूर नहीं कर सकता ।)[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब मैंने तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ी, तो नमाज़ से फ़ारिग़ होते ही हुज़ूर सल्ल० को यही कहते हुए सुना—

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ خَطَائِيْ وَعَمْدِيْ اَللّٰهُمَّ اهْدِنِيْ لِصَالِحِ الْاَعْمَالِ وَالْاَخْلَاقِ اِنَّهٗ لَا يَهْدِيْ
لِصَالِحِهَا وَلَا يَصْرِفُ سَيِّئَهَا اِلَّا اَنْتَ

'अल्लाहुम-मग़्फ़िरली ख़ताई व अ-म-दी अल्लाहुम-मह्दिनी लिसालिहिल आमालि वल अख़्लाक़ि इन्नहू ला यह्दी लिसालिहिहा व ला यस्रिफ़ु सय्यिअहा इल्ला अन-त०'

(ऐ अल्लाह ! मैंने जो गुनाह भूले से किए और जो जानकर किए, सब माफ़ फ़रमा ।) बाक़ी तर्जुमा गुज़र चुका ।[3]

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 110,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 111
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 173,

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़ज्र की नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ते—

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ رِزْقًا طَيِّبًا وَّعِلْمًا نَّافِعًا وَّعَمَلًا مُّتَقَبَّلًا

'अल्लाहुम-म इन्नी अस् अलु-क रिज़्क़न तैयिबन व इल्मन नाफ़िअन व अमलन मुतक़ब्बलन०'

(ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे पाकीज़ा रोज़ी, नफ़ा देने वाला इल्म और मक़बूल अमल की तौफ़ीक़ मांगता हूं ।)[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ा करते थे—

اَللّٰهُمَّ رَبَّ جِبْرِيْلَ وَمِيْكَائِيْلَ وَاِسْرَافِيْلَ اَعِذْنِيْ مِنْ حَرِّ النَّارِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ

'अल्लाहुम-म रब-ब जिब्री-ल व मीकाई-ल व इस-राफ़ी-ल अअिज़नी मिनहर्रिन्नारि व अज़ाबिल क़ब्रि०'

(ऐ अल्लाह ! ऐ जिब्रील व मीकाईल व इसराफ़ील के रब ! मुझे जहन्नम की गर्मी से और क़ब्र के अज़ाब से पनाह अता फ़रमा ।)[2]

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ा करते थे—

'अल्लाहुम-म इन्नी अअूज़ु बि-क मिनल कुफ़्रि व फ़क़्रि व अज़ाबिल क़ब्रि०'

(ऐ अल्लाह ! मैं कुफ़्र, फ़क़्र व क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूं ।)[3]

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने सुना कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ से फ़ारिग़ होते, तो यह दुआ पढ़ते—

اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 111,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 110,
3. कंज़, भाग 1, पृ० 296,

'अल्लाहु-म ला मा नि-अ लिमा आतै-त व ला मुअति-य लिमा म-नअ्-त व ला यनफ़अु ज़ल-जद्दि मिनकल जद्दु०'

(ऐ अल्लाह! जो तू दे उसे कोई रोकने वाला नहीं और जिसे तू रोके उसे कोई देने वाला नहीं और किसी दौलतमंद को उसकी दौलत तेरी पकड़ से बचा नहीं सकती।)[1]

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में वुज़ू का पानी लेकर आया। आपने वुज़ू फ़रमाकर नमाज़ पढ़ी, फिर यह दुआ पढ़ी—

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ ذَنْبِیْ وَ وَسِّعْ لِیْ فِیْ دَارِیْ وَبَارِکْ لِیْ فِیْ رِزْقِیْ

'अल्लाहुम-मग़्फ़िरली ज़म्बी व वस्सिअ ली फ़ी दारी व बारिक ली फ़ी रिज़्क़ी०'

(ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा और मेरे घर में वुसअत अता फ़रमा और मेरी रोज़ी में बरकत अता फ़रमा।)[2]

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ के बाद ये कलिमे कहा करते थे—

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَرَبَّ کُلِّ شَیْءٍ اَنَا شَهِیْدٌ اَنَّکَ اَنْتَ الرَّبُّ وَحْدَکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَرَبَّ کُلِّ شَیْءٍ اَنَا شَهِیْدٌ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُکَ وَرَسُوْلُکَ اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَرَبَّ کُلِّ شَیْءٍ اَنَا شَهِیْدٌ اَنَّ الْعِبَادَ کُلَّهُمْ اِخْوَةٌ اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَرَبَّ کُلِّ شَیْءٍ اجْعَلْنِیْ مُخْلِصًا لَکَ وَاَهْلِیْ فِیْ کُلِّ سَاعَةٍ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ یَاذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ اِسْمَعْ وَاسْتَجِبْ اَللّٰهُ اَکْبَرُ الْاَکْبَرُ اَللّٰهُمَّ نُوْرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَللّٰهُ اَکْبَرُ الْاَکْبَرُ حَسْبِیَ اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَکِیْلُ اَللّٰهُ اَکْبَرُ الْاَکْبَرُ

'ऐ अल्लाह! ऐ हमारे और हर चीज़ के रब! मैं इस बात पर गवाह हूं कि तू ही रब है, तू अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं। ऐ अल्लाह! ऐ हमारे और हर चीज़ के रब! मैं इस बात पर गवाह हूं कि हज़रत मुहम्मद

1. कंज़, भाग 1, पृ० 296,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 296,

(अलैहिस्सलाम) तेरे बन्दे और रसूल हैं। ऐ अल्लाह ! ऐ हमारे और हर चीज़ के रब ! मैं इस बात पर गवाह हूं कि तमाम बन्दे भाई हैं। ऐ अल्लाह ! ऐ हमारे और हर चीज़ के रब ! दुनिया और आख़िरत के तमाम कामों में हर घड़ी मुझे और मेरे घरवालों को मुख़्लिस बना दे। ऐ बुज़ुर्गी और अज़्मत वाले, ऐ इकराम व एहसान वाले ! सुन ले और क़ुबूल फ़रमा ले, अल्लाह सबसे बड़ा सबसे ही बड़ा है। ऐ अल्लाह ! ऐ आसमानों और ज़मीन के नूर ! अल्लाह सबसे बड़ा, सबसे ही बड़ा है। अल्लाह मुझे काफ़ी है और बेहतरीन कारसाज़ है। अल्लाह सबसे बड़ा, सबसे ही बड़ा है।"[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ से सलाम फेरते, तो यह दुआ फ़रमाते—

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ مَا قَدَّمْتُ وَمَآ اَخَّرْتُ وَمَآ اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ وَمَآ
اَسْرَفْتُ وَمَآ اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّيْ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَالْمُؤَخِّرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ

'अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली मा क़द्दम्तु व मा अख़्ख़रतु व मा असरर्तु व मा आलन्तु व मा असरफ़्तु व मा अन-त आलमु बिही मिन्नी अन्तल मुक़द्दिमु वल मुअख़्ख़िरु ला इला-ह इल्ला अन-त०'

(ऐ अल्लाह ! मेरे अगले-पिछले गुनाह माफ़ फ़रमा और वे गुनाह भी माफ़ फ़रमा जो मैंने छुप कर किए और जो मैंने एलानिया किए और मैंने जो बे-एतदालियां की हैं और मेरे जिन गुनाहों को तू मुझसे ज़्यादा जानता है, उन सबको माफ़ फ़रमा, तू ही आगे और पीछे करने वाला है। तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।)[2]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुबह और शाम की दुआएं

हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़ासिम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक पड़ोसिन ने मुझे बताया

1. अबू दाऊद, भाग 2, पृ० 358,
2. अबू दाऊद, भाग 2, पृ० 358,

कि वह हुज़ूर सल्ल० को फ़ज्र तुलू होते वक़्त यह दुआ पढ़ते हुए सुना करती थी—

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَۃِ الْقَبْرِ

'अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन अज़ाबिल क़ब्र व मिन फ़ितनतिल क़ब्र०'

(ऐ अल्लाह ! मैं क़ब्र के अज़ाब से और क़ब्र की आज़माइश (मुन्कर-नकीर के सवाल) से तेरी पनाह चाहता हूं।)[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब सुबह होती तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह पढ़ा करते—

اَصْبَحْنَا وَاَصْبَحَ الْمُلْکُ لِلّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ لَا شَرِیْکَ لَہٗ لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ وَاِلَیْہِ النُّشُوْرُ

'अस्बहना व अस्बहल मुल्कु लिल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि ला शरी-क लहू ला इला-ह इल्ला हु-व व इलैहिन्नुशूर०'

(हमने और तमाम मुल्क ने अल्लाह (की इबादत और इताअत) के लिए सुबह की और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, उसका कोई शरीक नहीं। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसी के पास मौत के बाद उठाया जाना है।)

और जब शाम होती तो यह पढ़ा करते—

اَمْسَیْنَا وَاَمْسَی الْمُلْکُ لِلّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ لَا شَرِیْکَ لَہٗ لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ وَاِلَیْہِ الْمَصِیْرُ

'अम्सैना व अम्सल मुल्कु लिल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि ला शरी-क लहू ला इला-ह इल्ला हु-व व इलैहिल मसीरु०'

(हमने और तमाम दुनिया ने अल्लाह (की इबादत व इताअत) के लिए शाम की।) आगे तर्जुमा सुबह वाली दुआ की तरह है।[2]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब शाम होती तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ये कलिमे कहते—

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 115,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 114,

أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ رَبِّ أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِي هٰذِهِ اللَّيْلَةِ وَخَيْرَ مَا بَعْدَهَا وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِي هٰذِهِ اللَّيْلَةِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهَا رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَسُوءِ الْكِبَرِ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِي النَّارِ وَعَذَابٍ فِي الْقَبْرِ

(हमने और तमाम दुनिया ने अल्लाह (की इबादत व इताअत) के लिए शाम की और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। उसी के लिए सारी बादशाही और सारी तारीफ़ें हैं और हर चीज़ की क़ुदरत रखता है। ऐ मेरे रब ! मैं तुझसे उस चीज़ की ख़ैर मांगता हूं जो उस रात में है और जो उसके बाद है और उस चीज़ के शर से तेरी पनाह मांगता हूं जो उस रात में है और जो उसके बाद है। ऐ मेरे रब ! मैं सुस्ती से और बुरे बुढ़ापे से तेरी पनाह चाहता हूं। ऐ मेरे रब ! मैं जहन्नम के अज़ाब से और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह मांगता हूं।)

और जब सुबह होती तो भी ये कलिमे कहते, अलबत्ता शुरू में 'अम्सैना व अम्सल मुल्कु लिल्लाहि' की जगह 'अस्बहना व अस्बहल मुल्कु लिल्लाहि' कहते।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अब्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुबह व शाम पढ़ा करते—

أَصْبَحْنَا عَلَى مِلَّةِ الْإِسْلَامِ أَوْ أَمْسَيْنَا عَلَى فِطْرَةِ الْإِسْلَامِ وَعَلَى كَلِمَةِ الْإِخْلَاصِ وَعَلَى دِينِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَى مِلَّةِ أَبِينَا إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

(हमने मिल्लते इस्लाम पर, इस्लामी फ़ितरत पर, कलिमा-ए-इख़्लास पर और अपने नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीन पर और अपने बाप हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मिल्लत पर सुबह की और शाम की। हज़रत इब्राहीम सबसे यकसू होकर एक अल्लाह के हो

1. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 258,

गए थे और वह मुसलमान थे और मुश्रिकों में से नहीं थे।)[1]

हज़रत अबू सल्लाम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक साहब हिम्स की मस्जिद में गुज़रे। लोगों ने कहा, इन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत की है। मैं उठकर उनके पास गया और उनसे अर्ज़ किया कि मुझे कोई ऐसी हदीस बयान करें जो हुज़ूर सल्ल० से आपने सीधे-सीधे सुनी हो और आपके और हुज़ूर सल्ल० के दर्मियान कोई वास्ता न हो। उन्होंने फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जो भी सुबह और शाम तीन-तीन बार ये कलिमे कहेगा तो उसका अल्लाह पर यह हक़ (अल्लाह के फ़ज़्ल से) होगा कि अल्लाह उसे क़ियामत के दिन राज़ी करे।

رَضِيتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَبِالْإِسْلَامِ دِيْنًا وَبِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيًّا

(मैंने अल्लाह को रब, इस्लाम को दीन और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबी मान लिया और मैं इस पर राज़ी हूं।)[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सुबह और शाम की दुआओं में यह दुआ हमेशा पढ़ते हुए सुना और आपने अपने इंतिक़ाल तक इस दुआ को कभी नहीं छोड़ा—

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ
أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِيْ دِيْنِيْ وَدُنْيَايَ وَأَهْلِيْ وَمَالِيْ اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِيْ وَآمِنْ رَوْعَاتِيْ
اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِيْ مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ وَمِنْ خَلْفِيْ وَعَنْ يَمِيْنِيْ وَعَنْ شِمَالِيْ وَمِنْ فَوْقِيْ وَأَعُوْذُ بِعَظَمَتِكَ
أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِيْ

(ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे दुनिया और आख़िरत में आफ़ियत मांगता हूं और मैं तुझसे माफ़ी मांगता हूं और अपने दीन और दुनिया में और अपने बाल-बच्चों और माल में आफ़ियत व सलामती चाहता हूं। ऐ अल्लाह ! मेरे ऐबों पर परदा डाल और मेरे ख़ौफ़ और परेशानी को अम्न व अमान से बदल दे। ऐ अल्लाह ! आगे से, पीछे से, दाएं से, बाएं से, ऊपर से मेरी

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 116,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 116,

हिफ़ाज़त फ़रमा और मैं इस बात से तेरी अज़्मत की पनाह चाहता हूं कि मुझे अचानक (ज़मीन में धंसा कर) हलाक कर दिया जाए।)[1]

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस बात का हुक्म दिया कि मैं सुबह और शाम और रात को बिस्तर पर लेटते वक़्त ये कलिमे कहा करूं—

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ رَبُّ كُلِّ شَيْئٍ وَمَلِيْكُهٗ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَشَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهٖ وَاَنْ اَقْتَرِفَ عَلٰى نَفْسِيْ سُوْءً اَوْ اَجُرَّهٗ اِلٰى مُسْلِمٍ

(ऐ अल्लाह ! ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा फ़रमाने वाले ! हर छिपे और ज़ाहिर के जानने वाले ! तू हर चीज़ का परवरदिगार और मालिक है।। मैं इस बात की गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं और हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) तेरे बन्दे और रसूल हैं और मैं अपने नफ़्स के शर से और शैतान के शर और फंदे से और इस बात से तेरी पनाह चाहता हूं कि मैं अपने नफ़्स पर किसी बुराई का इर्तिकाब करूं या किसी मुसलमान पर किसी बुराई की तोहमत लगाऊं।)[2]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक आदमी आया और उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह की क़सम ! मुझे अपनी जान, अपने घरवाले और माल के बारे में बहुत डर रहता है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, सुबह और शाम ये कलिमे कहा करो—

بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى دِيْنِيْ وَنَفْسِيْ وَوَلَدِيْ وَاَهْلِيْ وَمَالِيْ

'बिस्मिल्लाहि अला दीनी व नफ़्सी व वलदी व अह्ली व माली।'

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 294,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 294

(मैं अपने दीन पर, अपनी जान पर, अपनी औलाद पर, अपने घरवालों पर और अपने माल पर अल्लाह का नाम लेता हूं।)

उस आदमी ने ये कलिमे कहने शुरू कर दिए और फिर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया, हुज़ूर सल्ल० ने उससे पूछा, तुम्हें जो डर लगता था, उसका क्या हुआ? उसने कहा, उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है! वह डर बिल्कुल जाता रहा।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोने की वक़्त की और सोकर उठने के वक़्त की दुआएं

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब बिस्तर पर तशरीफ़ ले जाते, तो यह दुआ पढ़ते—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَکَفَانَا وَآوَانَا فَکَمْ مِمَّنْ لَا کَافِیَ لَهٗ وَلَا مُؤْوِیَ

'अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत-अ-म-ना व सक़ाना व कफ़ाना व अवाना फकम मिम्मन ला काफ़ि-य लहू व ला मुवि-य'

(उस अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है, जिसने हमें खिलाया-पिलाया और हमारी तमाम ज़रूरतें पूरी कीं और हमें (रात गुज़ारने के लिए) ठिकाना दिया, इसलिए कि कितने लोग ऐसे हैं जिनका न कोई ज़रूरत पूरी करने वाला है और न कोई ठिकाना देने वाला।)[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब बिस्तर पर लेटते, तो यह दुआ पढ़ते—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ کَفَانِیْ وَآوَانِیْ وَاَطْعَمَنِیْ وَسَقَانِیْ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ مَنَّ عَلَیَّ فَاَفْضَلَ وَاَعْطَانِیْ فَاَجْزَلَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی کُلِّ حَالٍ اَللّٰهُمَّ رَبَّ کُلِّ شَیْئٍ وَمَلِیْکَهٗ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ النَّارِ

'उस अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है जिसने मेरी तमाम ज़रूरतें पूरी

1. कंज़, भाग 1, पृ० 294
2. मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद,

कीं और मुझे ठिकाना दिया, और मुझे खिलाया-पिलाया और जिसने मुझ पर ख़ूब एहसान किए और बहुत ज़्यादा नेमतें दीं। हर हाल में अल्लाह का शुक्र है। ऐ अल्लाह! ऐ हर चीज़ के रब और मालिक! मैं आग से अल्लाह की पनाह चाहता हूं।'[1]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सोने का इरादा फ़रमाते तो अपना हाथ सर के नीचे रख लेते, फिर यह दुआ पढ़ते—

اَللّٰهُمَّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَجْمَعُ (يا تَبْعَثُ كہے) عِبَادَكَ

'अल्लाहुम-म क़िनी अजाब-क यौ-म तजमउ (या तबअसु कहे) इबा-द-क'

(ऐ अल्लाह! जिस दिन तू अपने बन्दों को जमा करेगा, उस दिन तू मुझे अपने अज़ाब से बचा दे।)[2]

हज़रत अबू अज़हर अन्मारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब रात को बिस्तर पर लेटते तो यह दुआ पढ़ते—

بِسْمِ اللّٰهِ وَضَعْتُ جَنْبِي لِلّٰهِ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِي ذَنْبِي وَاَخْسَأْ
شَيْطَانِي وَفُكَّ رِهَانِي وَاجْعَلْنِي فِي النَّدِيِّ الْاَعْلٰى

'बिस्मिल्लाहि व ज़अतु जम्बी लिल्लाहि अल्लाहुम्मग़्फ़िरली ज़म्बी व अख़सा शैतानी व फ़ुक-क रिहानी वज-अलनी फ़िन्न दीयिल आला०'

(मैंने अल्लाह के नाम के साथ अपना पहलू (सोने के लिए बिस्तर पर) रखा। ऐ अल्लाह! तू मेरे गुनाह बख़्श दे और मेरे शैतान को (मुझसे) दूर कर दे और मेरी गरदन को (हर ज़िम्मेदारी से) आज़ाद कर दे और मुझे ऊंची मज्लिस वालों में शामिल कर दे।)[3]

---

1. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 259,
2. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ०260, हैसमी, भाग 10, पृ०123, कंज़, भाग 8, पृ०67,
3. मज्मा, भाग 2, पृ० 260,

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम बिस्तर पर लेटते वक़्त यह दुआ पढ़ते—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِوَجْهِكَ الْكَرِیْمِ وَبِكَلِمَاتِكَ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ كُلِّ دَآبَّةٍ اَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِیَتِهَا اَللّٰهُمَّ اَنْتَ تَكْشِفُ الْمَغْرَمَ وَالْمَاْثَمَ اَللّٰهُمَّ لَا یُهْزَمُ جُنْدُكَ وَلَا یُخْلَفُ وَعْدُكَ - وَلَا یَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ سُبْحَانَكَ اَللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ

'ऐ अल्लाह ! मैं उस जानवर के शर से तेरी करीम ज़ात की और तेरे पूरे कलिमों की पनाह चाहता हूं जो तेरे क़ब्ज़े और क़ुदरत में है। ऐ अल्लाह ! तू ही (बन्दे के) क़र्ज़ और गुनाह को दूर करता है (इसलिए मेरा क़र्ज़ा उतार दे और मेरे गुनाह माफ़ कर दो) ऐ अल्लाह ! तेरी फ़ौज हार नहीं सकती और तेरे वायदे के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता और किसी मालदार को उसकी मालदारी तेरे क़हर व ग़ज़ब से नहीं बचा सकती। ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पाकी और तारीफ़ बयान करता हूं।'[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सोने का इरादा फ़रमाते, तो यह दुआ पढ़ते—

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَیْبِ وَالشَّهَادَةِ رَبَّ كُلِّ شَیْءٍ وَّاِلٰهَ كُلِّ شَیْءٍ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِیْكَ لَكَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ وَالْمَلَآئِكَةُ یَشْهَدُوْنَ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّیْطَانِ وَشِرْكِهٖ اَوْ اَنْ اَقْتَرِفَ عَلٰی نَفْسِیْ سُوْٓءً اَوْ اَجُرَّهٗ اِلٰی مُسْلِمٍ

'ऐ अल्लाह ! ऐ आसमानों और ज़मीन को ईजाद करने वाले, छिपे और ज़ाहिर के जानने वाले, ऐ हर चीज़ के रब, हर चीज़ के माबूद ! मैं इस बात की गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तेरे बन्दे और रसूल हैं और फ़रिश्ते भी इन्हीं दो बातों की गवाही देते हैं। ऐ अल्लाह ! मैं शैतान से और उसके (फ़रेब के) जाल से और इस

1. कंज़, भाग 8, पृ० 67

बात से तेरी पनाह चाहता हूं कि मैं ख़ुद कोई बुरा अमल करूं या किसी मुसलमान पर बुराई की तोहमत लगाऊं।'

हज़रत अबू अब्दुर्रहमान कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० को सिखाई थी और ख़ुद भी जब सोने का इरादा फ़रमाते, तो यह दुआ पढ़ा करते।[1]

एक रिवायत में यह है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन यज़ीद से फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें वे कलिमे न सिखा दूं जो हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को सोते वक़्त पढ़ने के लिए सिखाये थे, फिर पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सोने के लिए लेटते, तो यह दुआ फ़रमाते—

بِاسْمِكَ رَبِّيْ فَاغْفِرْلِيْ ذُنُوْبِيْ

'बिस्मि-क रब्बी फ़ग़्फ़िरली ज़ुनूबी'

(ऐ मेरे रब ! मैं तेरे नाम के साथ लेटता हूं, मेरे तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमा।)[3]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक रात गुज़ारी। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर जब आप बिस्तर पर लेटने लगे तो मैंने आपको यह दुआ पढ़ते हुए सुना—

اَللّٰهُمَّ اَعُوْذُ بِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ وَاَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْكَ

اَللّٰهُمَّ لَا اَسْتَطِيْعُ ثَنَاءً عَلَيْكَ وَلَوْ حَرَصْتُ وَلٰكِنْ اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ

'ऐ अल्लाह ! मैं तेरी सज़ा से, और तेरे अफ़्व व दरगुज़र की पनाह

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 122
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 123,
3. मज्मा, भाग 10, पृ० 123,

चाहता हूं और तेरे गुस्से से तेरी रिज़ा की पनाह चाहता हूं और तुझसे तेरी ही पनाह चाहता हूं और चाहे मुझे कितना ही शौक़ हो और मैं कितना ज़ोर लगाऊं, तेरी तारीफ़ का हक़ अदा नहीं कर सकता। तू तो वैसा है जैसे तूने अपनी तारीफ़ की।'[1]

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बिस्तर पर लेटते तो यह दुआ पढ़ते—

اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ اَسْلَمْتُ نَفْسِىْ وَوَجَّهْتُ وَجْهِىْ وَاِلَيْكَ فَوَّضْتُ اَمْرِىْ وَاِلَيْكَ اَلْجَاْتُ ظَهْرِىْ رَغْبَةً وَّرَهْبَةً اِلَيْكَ لَا مَلْجَاً وَلَا مَنْجَاً مِنْكَ اِلَّا اِلَيْكَ اٰمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِىْ اَنْزَلْتَ وَنَبِيِّكَ الَّذِىْ اَرْسَلْتَ

'ऐ अल्लाह ! मैंने अपनी जान तेरे सुपुर्द कर दी और अपना चेहरा तेरी तरफ़ कर दिया और अपना मामला तेरे सुपुर्द कर दिया और मैंने तेरी रहमत के शौक़ में और तेरे अज़ाब के डर से तुझे अपना सहारा बना लिया और तेरी पकड़ से बचने का तेरी रहमत के सिवा कोई ठिकाना नहीं। मैं तेरी उस किताब पर ईमान लाया जो तूने नाज़िल की और तेरे उस नबी पर ईमान लाया जो तूने भेजा।'[2]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब बिस्तर पर लेटते, तो यह दुआ पढ़ते—

بِاسْمِكَ اللّٰهُمَّ اَحْيَا وَاَمُوْتُ

'बिस्मि-कल्लाहुम-म अह्या व अमूतु'

(ऐ अल्लाह ! मैं तेरे नाम पर जीता हूं और उसी पर मरूंगा।)

और जब सुबह होती तो यह दुआ पढ़ते—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ

'अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह्याना बाद मा अमा-त-ना व इलैहिन्नुशूर'

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 124, कंज़, भाग 1, पृ० 304,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 67,

(उस अल्लाह का बहुत-बहुत शुक्र है, जिसने हमें मारने के बाद फिर ज़िंदा किया और उसी के पास मर कर जाना है ।)[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब रात को बेदार होते, तो यह दुआ पढ़ते—

لَآ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَسْتَغْفِرُكَ لِذَنْبِي وَأَسْأَلُكَ رَحْمَتَكَ اللّٰهُمَّ زِدْنِي
عِلْمًا وَلَا تُزِغْ قَلْبِي بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنِي وَهَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ

'तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पाकी और तेरी तारीफ़ बयान करता हूं और तुझसे अपने गुनाहों की माफ़ी मांगता हूं और तुझसे तेरी रहमत का सवाल करता हूं, ऐ अल्लाह ! मुझे और इल्म अता फ़रमा और हिदायत देने के बाद मेरे दिल को (गुमराह करके) टेढ़ा न कर और तू मुझे अपनी बारगाह से ख़ास रहमत अता फ़रमा । बेशक तू बड़ा अता फ़रमाने वाला है ।'[2]

मज्लिसों में और मस्जिद में और घर में दाख़िल होने और दोनों से निकलने के वक़्त की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआएं

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, बहुत कम ऐसा हुआ कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मज्लिस से उठे हों और अपने साथियों के लिए ये दुआएं न मांगी हों, (बल्कि अक्सर मांगा करते थे ।)

اَللّٰهُمَّ اقْسِمْ لَنَا مِنْ خَشْيَتِكَ مَا تَحُولُ بِهِ بَيْنَنَا وَبَيْنَ مَعْصِيَتِكَ وَمِنْ طَاعَتِكَ مَا
تُبَلِّغُنَا بِهِ جَنَّتَكَ وَمِنَ الْيَقِينِ مَا تُهَوِّنُ بِهِ عَلَيْنَا مُصِيبَاتِ الدُّنْيَا وَمَتِّعْنَا بِأَسْمَاعِنَا وَأَبْصَارِنَا
وَقُوَّتِنَا مَا أَحْيَيْتَنَا وَاجْعَلْهُ الْوَارِثَ مِنَّا وَاجْعَلْ ثَأْرَنَا عَلٰى مَنْ ظَلَمَنَا وَانْصُرْنَا عَلٰى مَنْ عَادَانَا
وَلَا تَجْعَلْ مُصِيبَتَنَا فِي دِينِنَا وَلَا تَجْعَلِ الدُّنْيَا أَكْبَرَ هَمِّنَا وَلَا مَبْلَغَ عِلْمِنَا وَلَا تُسَلِّطْ عَلَيْنَا مَنْ
لَا يَرْحَمُنَا

1. जैमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 259, कंज़, भाग 8, पृ० 67,
2. मज्मा, भाग 2, पृ० 260,

'ऐ अल्लाह ! तू हमें अपना इतना डर नसीब फ़रमा जो हमारे और तेरी नाफ़रमानी के दर्मियान रोक बन जाए और हमें ऐसी फ़रमांबरदारी नसीब फ़रमा जिसके ज़रिए तू हमें ऐसी जन्नत में पहुंचा दे और ऐसा यक़ीन नसीब फ़रमा जिससे दुनिया की मुसीबतों को झेलना हमारे लिए आसान हो जाए और तू हमें जितनी ज़िंदगी नसीब फ़रमाए, उसमें हमें अपने कानों, आंखों और अपनी ताक़त से फ़ायदा उठाने वाला बना और उन तमाम अंगों को हमारी ज़िंदगी तक बाक़ी रख कर हमारा वारिस बना और हमें इसकी तौफ़ीक़ दे कि हम सिर्फ़ उन लोगों से बदला लें जो हम पर ज़ुल्म करें और उन लोगों के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा जो हमसे दुश्मनी रखें और हमारी मुसीबत हमारे दीन पर न डाल और दुनिया को हमारा बड़ा मक़्सद न बना और न उसको हमारे इल्म की इंतिहा परदाज़ बना और जो हमारे ऊपर रहम न खाए उसको हम पर मुसल्लत न फ़रमा ।'[1]

इस बाब से मुताल्लिक़ कुछ दुआएं मज्लिस का कफ़्फ़ारा के बाब में गुज़र चुकी हैं ।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब घर से बाहर तशरीफ़ ले जाते, तो यह दुआ पढ़ते—

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَعُوْذُبِكَ اَنْ نَزِلَّ اَوْ نَضِلَّ اَوْ نَظْلِمَ اَوْ نُظْلَمَ اَوْ نَجْهَلَ اَوْ يُجْهَلَ عَلَيْنَا

'अल्लाह के नाम के साथ मैं घर से बाहर निकल रहा हूं और मैंने अल्लाह पर भरोसा किया । ऐ अल्लाह ! हम इस बात से तेरी पनाह चाहते

1. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 261

हैं कि हम ख़ुद सही रास्ते से बिचल जाएं या हम दूसरों को गुमराह कर दें या हम किसी पर ज़ुल्म करें या कोई हम पर ज़ुल्म करे या हम किसी के साथ नादानी का मामला करें या कोई हमसे नादानी का मामला करे।'[1]

हज़रत इब्ने अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में दाख़िल होते तो ये कलिमे कहते—

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

'अऊज़ु बिल्लाहिल अज़ीम व वजइ-हिल करीम व सुलतानिहिल क़दीम मिनश्शैतानिर्रजीम०'

(मैं मर्दूद शैतान से अज़्मत वाले अल्लाह, उसकी करीम ज़ात की और उसकी क़दीम सल्तनत की पनाह चाहता हूं।)

आदमी जब ये कलिमे कहता है तो शैतान कहता है, बाक़ी सारे दिन में इस आदमी की मुझसे हिफ़ाज़त हो गई।[2]

हज़रत फ़ातिमा बिन्त हुसैन रहमतुल्लाहि अलैहा अपनी दादी हज़रत फ़ातिमतुल कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा से नक़ल करती हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में दाख़िल होते तो पहले अपने ऊपर दरूद व सलाम भेजते, फिर यह दुआ पढ़ते—

رَبِّ اغْفِرْلِيْ ذُنُوْبِيْ وَافْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

रब्बिग़्फ़िर ली ज़ुनूबी वफ़्तह ली अबवा-ब रहमति-क

'ऐ मेरे रब! मेरे तमाम गुनाह माफ़ फ़रमा और अपनी रहमत के दरवाज़े मेरे लिए खोल दे।' और जब मस्जिद से बाहर निकलते तो अपने पर दरूद व सलाम भेजते और यह दुआ पढ़ते—

رَبِّ اغْفِرْلِيْ ذُنُوْبِيْ وَافْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ فَضْلِكَ

रब्बिग़्फ़िर ली ज़ुनूबी वफ़्तह ली अब-वा-ब फ़ज़्लिक

1 मज्मा, भाग 2, पृ० 261
2 अबू दाऊद

'ऐ मेरे रब ! मेरे तमाम गुनाह माफ़ फ़रमा और अपनी मेहरबानी के दरवाज़े मेरे लिए खोल दे ।'[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सफ़र में दुआएं

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़र का इरादा फ़रमाते, तो यह दुआ पढ़ते—

अल्लाहुम-म बि-क असूलु व बि-क अहूलु व बि-क असीरु०

'ऐ अल्लाह ! मैं तेरी मदद से हमला करूंगा और तेरी मदद से तदबीर करूंगा और तेरी ही मदद से चलूंगा ।'[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर सफ़र पर तशरीफ़ ले जाने के लिए अपने ऊंट पर बैठ जाते, तो तीन-तीन बार—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، سُبْحَانَ اللّٰهِ، اَللّٰهُ اَكْبَر

'अलहम्दु लिल्लाहि, सुबहानल्लाहि, अल्लाहु अक्बर' कहते, फिर यह दुआ पढ़ते—

سُبْحَانَ الَّذِی سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ وَاِنَّا اِلٰى
رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ فِیْ سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوٰى وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰى اَللّٰهُمَّ
هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هٰذَا وَاطْوِعَنَّا بُعْدَ الْاَرْضِ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِی السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِی
الْاَهْلِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَاٰبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِی الْاَهْلِ وَالْمَالِ

'पाक है वह ज़ात, जिसने इस सवारी को हमारे लिए सधाया और हम उसकी मदद के बग़ैर उस पर क़ाबू पाने वाले न थे और बेशक हमको अपने रब की ओर जाना है। ऐ अल्लाह ! हम तुझसे इस सफ़र में नेकी और परहेज़गारी का और उन आमाल का सवाल करते हैं कि जिनसे तू राज़ी होता है। ऐ अल्लाह ! हमारे इस सफ़र को हमारे लिए आसान बना और इसकी दूरी को जल्दी तै करा दे। ऐ अल्लाह ! तू सफ़र में हमारा साथी

---

1. मिश्कात, पृ० 62,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 130

और बाल-बच्चों में तू हमारा ख़लीफ़ा और नायब है। ऐ अल्लाह ! मैं सफ़र की मशक़्क़त से और तक्लीफ़ देने वाले मंज़र और बाल-बच्चों और माल व दौलत में बुरी वापसी से तेरी पनाह चाहता हूं।'

और जब सफ़र से वापस होते, तो भी यह दुआ पढ़ते और ये कलिमे भी कहते—

آئِبُوْنَ تَائِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا سَاجِدُوْنَ

आइबू-न ताइबू-न आबिदू-न लिरब्बिना साजिदून०

'हम वापस लौटने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, (अल्लाह की) इबादत करने वाले हैं और अपने रब के सामने सज्दा करने वाले हैं।'[1]

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सफ़र में तशरीफ़ ले जाते, तो यह दुआ पढ़ते—

اَللّٰهُمَّ بَلَاغًا يَبْلُغُ خَيْرًا مَغْفِرَةً مِنْكَ وَ رِضْوَانًا بِيَدِكَ
الْخَيْرُ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ وَ الْخَلِيْفَةُ فِي الْاَهْلِ اَللّٰهُمَّ
هَوِّنْ عَلَيْنَا السَّفَرَ وَ اطْوِلَنَا الْاَرْضَ اَللّٰهُمَّ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَ عْثَاءِ السَّفَرِ وَ كَاٰبَةِ الْمُنْقَلَبِ

'ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे ऐसा ज़रिया मांगता हूं जो ख़ैर तक पहुंचे और तेरी मग़्फ़िरत और रज़ामंदी का सवाल करता हूं। तमाम भलाइयां तेरे हाथ में हैं। बेशक तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। ऐ अल्लाह ! तू सफ़र में साथी और बाल-बच्चों में ख़लीफ़ा है। ऐ अल्लाह ! सफ़र हमारे लिए आसान फ़रमा और हमारे लिए ज़मीन समेट दे, यानी थोड़े वक़्त में ज़्यादा दूरी तै कर दे और सफ़र की मशक़्क़त से और तक्लीफ़ देने वाली वापसी से तेरी पनाह चाहता हूं।'[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सफ़र में होते और सेहरी का वक़्त हो जाता, तो यह दुआ पढ़ते—

---

1. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 261,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 130,

سَمِعَ سَامِعٌ بِحَمْدِ اللّٰهِ وَحُسْنِ بَلَائِهِ عَلَيْنَا رَبَّنَا صَاحِبْنَا وَأَفْضِلْ عَلَيْنَا عَائِذًا بِاللّٰهِ مِنَ النَّارِ

'सुनने वाले ने हमसे अल्लाह की हम्द व सना और अल्लाह के हमें अच्छी तरह आज़माने को सुना। ऐ हमारे रब! तू हमारा साथी हो जा और हम पर फ़ज़्ल फ़रमा, मैं जहन्नम की आग से अल्लाह की पनाह लेते हुए (यह कह रहा हूं)[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सफ़र करते थे। जब आपकी निगाह उस बस्ती पर पड़ती, जिसमें दाख़िल होने का इरादा होता तो—

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهَا

'अल्लाहुम-म बारिक लना फ़ीहा०'

(ऐ अल्लाह! तू हमारे लिए इस बस्ती में बरकत नसीब फ़रमा,) तीन बार कहते और यह दुआ पढ़ते—

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا جَنَاهَا وَحَبِّبْنَا إِلٰى أَهْلِهَا وَحَبِّبْ صَالِحِيْ أَهْلِهَا إِلَيْنَا

अल्लाहुम्मर्ज़ुक़्ना हयाहा व हब्बिबना इला अह्लिहा व हब्बिब सालिही अह्लिहा इलैना०

'ऐ अल्लाह! तू हमें इस बस्ती की तर व ताज़गी नसीब फ़रमा। बस्ती वालों के दिल में हमारी मुहब्बत डाल दे और बस्ती के नेक लोगों की मुहब्बत हमें नसीब फ़रमा।'[2]

हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिस बस्ती में दाख़िल होना चाहते, उसे देखते ही यह दुआ पढ़ते—

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ وَمَا أَظْلَلْنَ وَرَبَّ الرِّيَاحِ وَمَا ذَرَيْنَ إِنَّا نَسْأَلُكَ خَيْرَ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ وَخَيْرَ أَهْلِهَا وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ أَهْلِهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا

1. जमउल फ़वाइद, भाग 8, पृ० 262
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 134,

'ऐ अल्लाह ! सातों आसमानों और उस तमाम मख़्लूक़ के रब, जिस पर ये आसमान साया कर रहे हैं और हवाओं के और उन चीज़ों के रब जिनको हवा ने उड़ाया, हम तुझसे इस बस्ती की और इस बस्ती वालों की ख़ैर मांगते हैं और इस बस्ती के शर से और बस्ती वालों के और जो कुछ इस बस्ती में है, उसके शर से तेरी पनाह चाहते हैं।'[1]

जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह के दौरान दुआओं के एहतिमाम के बाब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सफ़र की दुआएं गुज़र चुकी हैं।

सहाबा किराम रज़ि० को रुख़सत करते वक़्त की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआएं

हज़रत क़ज़्आ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझसे इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, आओ, मैं तुम्हें इस तरह रुख़सत करूं जिस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे रुख़सत किया था और फिर ये कलिमे कहे—

أَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَكَ وَأَمَانَتَكَ وَخَوَاتِيْمَ عَمَلِكَ

'मैं तुम्हारे दीन को और तुम्हारी अमानतदारी की सिफ़त को और तुम्हारे हर अमल के आख़िरी हिस्से को अल्लाह के सुपुर्द करता हूं।'[2]

हज़रत सालिम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब कोई आदमी सफ़र में जाने का इरादा करता तो हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा उससे फ़रमाते, मेरे क़रीब आओ। मैं तुम्हें इस तरह रुख़सत करूं जिस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम हमें रुख़सत किया करते थे, फिर पिछली हदीस जैसी दुआ ज़िक्र की।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 135,
2. अबू दाऊद, भाग 3, पृ० 232,
3. तिर्मिज़ी, भाग 2, पृ० 182,

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरा सफ़र में जाने का इरादा है, आप कुछ तोशा इनायत फ़रमा दें, यानी मेरे लिए दुआ फ़रमा दें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह तुम्हें तक़्वा का तोशा दे। उसने अर्ज़ किया, कुछ और दुआ फ़रमा दें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, और अल्लाह तुम्हारे गुनाह माफ़ करे। उसने फिर अर्ज़ किया, मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, कुछ और दुआ फ़रमा दें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जहां भी तुम हो, वहां भलाई को तुम्हारे लिए आसान कर दे।[1]

हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे अपनी क़ौम का अमीर बनाया, तो मैंने आपका हाथ पकड़ कर आपको रुख़्सत किया, आपने यह दुआ पढ़ी—

جَعَلَ اللّٰهُ التَّقْوٰى زَادَكَ وَغَفَرَ ذَنْبَكَ وَوَجَّهَكَ لِلْخَيْرِ حَيْثُمَا تَوَجَّهْتَ

'अल्लाह तक़्वा को तुम्हारा तोशा बनाए और तुम्हारे गुनाह को माफ़ करे और जहां भी तुम जाओ, वहां तुम्हें ख़ैर की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।'[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक आदमी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरा सफ़र में जाने का इरादा है। आप मुझे कुछ वसीयत फ़रमा दें। आपने फ़रमाया, अल्लाह के डर को और हर बुलन्दी पर चढ़ते वक़्त तक्बीर कहने को लाज़िम पकड़े रखो। जब वह आदमी पीठ फेरकर चल दिया तो हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ फ़रमाई—

اَللّٰهُمَّ اطْوِلَهُ الْبُعْدَ وَهَوِّنْ عَلَيْهِ السَّفَرَ

'ऐ अल्लाह ! इसके सफ़र की दूरी को जल्द तै करा दे और सफ़र इस पर आसान फ़रमा दे।'[3]

---

1. तिर्मिज़ी, भाग 2, पृ० 182
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 131,
3. तिर्मिज़ी, भाग 2, पृ० 182,

ख़ाने-पीने और कपड़े पहनने के वक़्त की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआएं

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने से दस्तरख़्वान उठा लिया जाता, तो आप यह दुआ पढ़ते—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيْهِ غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَّلَا مُوَدَّعٍ وَّلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا

'तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, ऐसी तारीफ़ जो बहुत ज़्यादा हो और पाकीज़ा और बरकत वाली हो। हमारी यह तारीफ़ काफ़ी (और तेरी शान के लायक़) नहीं हो सकती और न हम इसे कभी छोड़ सकते हैं और न कभी इससे बे-नियाज़ हो सकते हैं, ऐ हमारे रब !'[1]

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब खाते या पीते, तो फ़रमाते—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत-अ-म-ना व सक़ाना व ज-अ-लना मिनल मुस्लिमीन०

'तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें खिलाया-पिलाया और हमें मुसलमानों में से बनाया।'[2]

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नया कपड़ा पहनते, तो यह दुआ फ़रमाते—

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ كَسَوْتَنِىْ هٰذَا

अल्लाहुम-म लकल हम्दु अन-त कसौतनी हाज़ा०

(इसके बाद उस कपड़े का नाम, कुरता, अमामा या चादर वग़ैरह लेते)

اَسْئَلُكَ خَيْرَهٗ وَخَيْرَ مَا صُنِعَ لَهٗ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهٗ

अस अलु-क ख़ैरहू व ख़ै-र मा सुनि-अ लहू व अऊज़ु बि-क मिन

---

1. बुख़ारी, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी
2. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 264,

शर्रिही व शर्रि मा सुनि-अ लहू

'ऐ अल्लाह ! तमाम तारीफ़ें तेरे लिए हैं। तूने ही मुझे यह कपड़ा पहनाया। मैं तुझसे इस कपड़े की ख़ैर और जिस मक़्सद के लिए बनाया गया है, उसकी ख़ैर को मांगता हूं और उसके शर से और जिस मक़्सद के लिए उसे बनाया गया है, उसके शर से तेरी पनाह मांगता हूं।'[1]

चांद देखने, कड़क सुनने, बादल आने और तेज़ हवा चलने के वक़्त की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआएं

हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नया चांद देखते, तो फ़रमाते—

اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالْيُمْنِ وَالْاِيْمَانِ وَ السَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ رَبِّيْ وَرَبُّكَ اللّٰهُ

'ऐ अल्लाह ! तू इस चांद को हम पर बरकत और ईमान के साथ, सलामती और इस्लाम के साथ निकाल। (ऐ चांद !) मेरा और तेरा रब अल्लाह है।'[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने ये लफ़्ज़ रिवायत किए हैं—

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالْاَمْنِ وَالْاَمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ وَالتَّوْفِيْقِ لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى رَبُّنَا وَرَبُّكَ اللّٰهُ

'अल्लाह सबसे बड़ा है, ऐ अल्लाह ! इस चांद को हम पर अम्न व अमान, सलामती और इस्लाम के साथ और अपने महबूब और पसंदीदा आमाल की तौफ़ीक़ के साथ निकाल। (ऐ चांद !) हमारा और तेरा रब अल्लाह है।'[3]

हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नया चांद देखते, तो फ़रमाते—

---

1. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 264
2. तिर्मिज़ी, भाग 2, पृ० 183,
3. कंज़, भाग 4, पृ० 326, हैसमी, भाग 10, पृ० 139,

هِلَالُ خَيْرٍ وَّرُشْدٍ

'यह ख़ैर और हिदायत का चांद है।'

'फिर तीन बार ये कलिमे कहते—

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ هٰذَا الشَّهْرِ وَخَيْرِ الْقَدْرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهٖ

'ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे इस महीने की भलाई और तक़्दीर की भलाई मांगता हूं और इसके शर से तेरी पनाह चाहता हूं।'[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब बादल गरजने और बिजली कड़कने की आवाज़ सुनते तो फ़रमाते—

اَللّٰهُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَلَا تُهْلِكْنَا بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذٰلِكَ

'ऐ अल्लाह ! हमें अपने ग़ज़ब से क़त्ल न फ़रमा और हमें अपने अज़ाब से हलाक न फ़रमा और हमें इससे पहले ही आफ़ियत नसीब फ़रमा।'[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, जब तेज़ हवा चलती है, तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ मांगते—

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا فِيْهَا وَخَيْرَ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ
شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا وَشَرِّ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ

'ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे इस हवा की ख़ैर और जो कुछ इसमें है, उसकी ख़ैर और जो कुछ यह हवा देकर भेजी गई, उसकी ख़ैर मांगता हूं और तुझसे इस हवा के शर से और जो कुछ इसमें है, उसके शर से और जो कुछ देकर यह हवा भेजी गई है, उसके शर से पनाह मांगता हूं।'[3]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब आसमान के किनारे में उठता हुआ बादल देखते

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 139,
2. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 264,
3. बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी,

तो काम छोड़ देते और अगर नमाज़ में होते तो उसे मुख़्तसर कर देते, फिर ये कलिमे फ़रमाते—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّهَا

'ऐ अल्लाह ! इस बादल के शर से तेरी पनाह चाहता हूं ।'

अगर बारिश हो जाती तो फ़रमाते—

اَللّٰهُمَّ صَیِّبًا هَنِیْئًا

'ऐ अल्लाह ! इसे बहुत बरसने वाला, लेकिन बरकत वाला और फ़ायदा पहुंचाने वाला बना दे ।'[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब आसमान के किसी किनारे पर गहरे बादल देखते, तो जिस काम में भी होते, उसे छोड़ देते, चाहे वह नमाज़ ही क्यों न हो और उस बादल की तरफ़ मुतवज्जह हो जाते और फ़रमाते—

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّ مَا اُرْسِلَ بِهٖ

'ऐ अल्लाह ! हम उस चीज़ के शर से तेरी पनाह चाहते हैं जिसे देकर इस बादल को भेजा गया है ।' फिर अगर बारिश हो जाती तो दो-तीन बार फ़रमाते 'सय्यिबन नाफ़िअन' (इसे बहुत बरसने वाला नफ़ा देने वाला बना दे ।)' अगर अल्लाह इस बादल को हटा देते और बारिश न होती, तो इस पर अल्लाह की हम्द व सना बयान करते ।[2]

हज़रत सलमा बिन अक्वअ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हवा तेज़ चलती, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते—

اَللّٰهُمَّ لَقْحًا لَا عَقِیْمًا

'ऐ अल्लाह ! ऐसी हवा बना दे, जिससे पेड़ों पर ख़ूब फल लगें और इसे बांझ न बना, (जिससे कोई फ़ायदा न हो ।)[3]

---

1. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 265,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 290,
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 135,

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वे दुआएं जिनका वक़्त मुक़र्रर नहीं था

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ मांगा करते थे—

اَللّٰهُمَّ لَقْحَالًا عَقِيْمًا

'ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे हिदायत, तक़्वा, पाक दामनी और दिल का ग़िना मांगता हूं।'[1]

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ मांगा करते थे—

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ خَطِیْئَتِیْ وَجَهْلِیْ وَاِسْرَافِیْ فِیْ اَمْرِیْ وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّیْ
اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ جِدِّیْ وَهَزْلِیْ وَخَطَاَیَ وَعَمْدِیْ وَکُلُّ ذٰلِکَ عِنْدِیْ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ مَا قَدَّمْتُ
وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّیْ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ وَاَنْتَ
عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

'ऐ अल्लाह ! मेरी ख़ता और मेरे नादानी वाले काम और कामों में मेरा हद से बढ़ जाना और वे गुनाह, जिन्हें तू मुझसे ज़्यादा जानता है, सब माफ़ फ़रमा और मेरे वे गुनाह, जो सच-मुच इरादे से हुए या हंसी-मज़ाक में हो गए या ग़लती से हो गए या जान-बूझकर क़स्दन किए, वे सब माफ़ फ़रमा और ये सब तरह के गुनाह मेरे पास हैं ऐ अल्लाह ! मेरे अगले-पिछले तमाम गुनाह माफ़ फ़रमा और जो गुनाह छुप कर किए और जो एलानिया किए, वे भी माफ़ फ़रमा और जिन गुनाहों को तू मुझसे ज़्यादा जानता है वह भी माफ़ फ़रमा, तू ही आगे करने वाला और पीछे करने वाला है, और तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।'[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु

---

1. मुस्लिम,
2. मुस्लिम, बुख़ारी

अलैहि व सल्लम यह दुआ मांगा करते थे—

اَللّٰهُمَّ اَصْلِحْ لِیْ دِیْنِیَ الَّذِیْ هُوَ عِصْمَةُ اَمْرِیْ وَاَصْلِحْ لِیْ دُنْيَایَ الَّتِیْ فِیْهَا مَعَاشِیْ وَاَصْلِحْ لِیْ آخِرَتِیَ الَّتِیْ فِیْهَا مَعَادِیْ وَاجْعَلِ الْحَیَاةَ زِیَادَةً لِّیْ فِیْ كُلِّ خَیْرٍ وَّاجْعَلِ الْمَوْتَ رَاحَةً لِّیْ مِنْ كُلِّ شَرٍّ

'ऐ अल्लाह ! मेरा वह दीन संवार दे जिससे मेरे तमाम कामों की हिफ़ाज़त होती है और मेरी वह दुनिया दुरुस्त फ़रमा दे, जिससे मेरी मआश का ताल्लुक़ है और मेरी आख़िरत को भी ठीक कर दे, जहां मुझे लौट कर जाना है और ज़िंदगी को मेरे लिए हर ख़ैर में बढ़ने का ज़रिया बना और मौत को मेरे लिए हर शर से राहत पाने का ज़रिया बना।'[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ मांगा करते थे—

اَللّٰهُمَّ لَكَ اَسْلَمْتُ وَبِكَ آمَنْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْكَ اَنَبْتُ وَبِكَ خَاصَمْتُ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِعِزَّتِكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَنْ تُضِلَّنِیْ اَنْتَ الْحَیُّ الَّذِیْ لَا یَمُوْتُ وَالْجِنُّ وَالْاِنْسُ یَمُوْتُوْنَ

'ऐ अल्लाह ! मैं तेरा फ़रमांबरदार हो गया और तुझ पर ईमान ले आया और तुझ ही पर भरोसा किया और तेरी तरफ़ ही मुतवज्जह हुआ और तेरी मदद से ही मैंने बातिल वालों से झगड़ा किया। ऐ अल्लाह ! मैं इस बात से तेरी इज़्ज़त की पनाह चाहता हूं कि तू मुझे गुमराह कर दे। तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। तू ही वह ज़ात है जो हमेशा ज़िंदा रहेगी और उसे मौत नहीं आएगी। बाक़ी तमाम जिन्नात और इन्सान एक दिन मर जाएंगे।'[2]

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर यह दुआ मांगा करते थे—

یَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِیْ عَلٰی دِیْنِكَ

या मुक़ल्लिबल क़ुलूबि सब्बित क़ल्बी अला दीनिक०

---

1. मुस्लिम,
2. मुस्लिम व बुख़ारी

'ऐ दिलों को पलटने वाले ! मेरे दिल को अपने दीन पर जमाए रख ।'[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ جَسَدِيْ وَعَافِنِيْ فِيْ بَصَرِيْ وَاجْعَلْهُ الْوَارِثَ مِنِّيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

'ऐ अल्लाह ! मुझे जिस्म में और निगाह में आफ़ियत नसीब फ़रमा और उस निगाह को मौत तक बाक़ी रख। तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू बुर्दबार और करीम है। मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूं जो अर्शे अज़ीम का रब है और तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है।'[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुआ में यह कहा करते थे—

رَبِّ اَعِنِّيْ وَلَا تُعِنْ عَلَيَّ وَانْصُرْنِيْ وَلَا تَنْصُرْ عَلَيَّ وَامْكُرْ لِيْ وَلَا تَمْكُرْ عَلَيَّ وَاهْدِنِيْ وَيَسِّرْ هُدَايَ وَانْصُرْنِيْ عَلٰى مَنْ بَغٰى عَلَيَّ رَبِّ اجْعَلْنِيْ لَكَ شَاكِرًا لَكَ ذَاكِرًا لَكَ رَاهِبًا لَكَ مِطْوَاعًا اِلَيْكَ مُخْبِتًا اَوْ مُنِيْبًا تَقَبَّلْ تَوْبَتِيْ وَاغْسِلْ حَوْبَتِيْ وَاَجِبْ دَعْوَتِيْ وَثَبِّتْ حُجَّتِيْ وَاهْدِ قَلْبِيْ وَسَدِّدْ لِسَانِيْ وَاسْلُلْ سَخِيْمَةَ قَلْبِيْ

'ऐ मेरे रब ! मेरी इआनत (मदद) फ़रमा और मेरे ख़िलाफ़ किसी की इआनत न फ़रमा और मेरी मदद फ़रमा और मेरे ख़िलाफ़ किसी की मदद न फ़रमा, और मेरे लिए तदबीर फ़रमा और मेरे ख़िलाफ़ कोई तदबीर न फ़रमा और मुझे हिदायत नसीब फ़रमा और हिदायत पर क़ायम रहने को मेरे लिए आसान फ़रमा और जो मुझ पर ज़्यादती करे, उसके ख़िलाफ़ मेरी मदद फ़रमा। ऐ मेरे रब ! तू मुझे अपना शुक्र करने वाला, अपना ज़िक्र करने वाला, अपने से डरने वाला, अपना फ़रमांबरदार, और अपनी तरफ़ मुतवज्जह होने वाला बना दे। मेरी तौबा क़ुबूल फ़रमा, मेरे गुनाह धो दे

---

1. तिर्मिज़ी,
2. तिर्मिज़ी,

और मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा और मेरी दलील को मज़बूत फ़रमा और मेरे दिल को हिदायत नसीब फ़रमा और मेरी ज़ुबान को ठीक रख और मेरे दिल का कीना और खोट निकाल दे।'[1]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ भी मांगा करते थे—

اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ إِثْمٍ
وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَّالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ

'ऐ अल्लाह! हम तुझसे तेरी रहमत को वाजिब करने वाले आमाल और तेरी मग़फ़िरत को ज़रूरी बनाने वाले अस्बाब और हर गुनाह से हिफ़ाज़त और हर नेकी की तौफ़ीक़ और जन्नत मे दाखिले की कामियाबी और दोज़ख़ से निजात मांगते हैं।'[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ मांगा करते थे—

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَظُلْمَنَا وَهَزْلَنَا وَجِدَّنَا وَعَمْدَنَا

'ऐ अल्लाह! हमारे तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमा, हमारे ज़ुल्म को और हंसी-मज़ाक़ के गुनाहों को और शऊरी गुनाहों को और जो गुनाह जान-बूझकर किए, उन सबको माफ़ फ़रमा।'[3]

हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर यह दुआ करते थे—

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ مَا أَخْطَأْتُ وَمَا تَعَمَّدْتُ وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ وَمَا جَهِلْتُ
وَمَا تَعَمَّدْتُ

'ऐ अल्लाह! मेरे वे तमाम गुनाह माफ़ फ़रमा, जो मुझसे ग़लती से हो गए और जो जान-बूझकर हो गए और जो मैंने छुप कर किए और जो

1. तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा,
2. किताबुल अज़्कार, पृ० 498,
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 172,

एलानिया किए और जो मैंने नादानी के काम किए और जो गुनाह जान-बूझकर किए, वे सब माफ़ फ़रमा।'[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اَحْسَنْتَ خَلْقِيْ فَاَحْسِنْ خُلُقِيْ

'ऐ अल्लाह ! तूने मेरी शक्ल अच्छी बनाई, अब सीरत भी अच्छी बना दे।'[2]

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे—

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاهْدِنِي السَّبِيْلَ الْاَقْوَمَ

'ऐ मेरे रब ! मग़फ़िरत फ़रमा और रहम फ़रमा और मुझे सीधे और पक्के रास्ते पर चला।'[3]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे—

يَا وَلِيَّ الْاِسْلَامِ وَاَهْلِهٖ ثَبِّتْنِيْ بِهٖ حَتّٰى اَلْقَاكَ

'ऐ इस्लाम के वाली और इस्लाम वालों के मददगार ! मुझे अपनी मुलाक़ात के वक़्त तक यानी मौत तक इस्लाम पर जमाए रख।'[4]

हज़रत बुस्र बिन अबी अरतात रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह दुआ मांगते हुए सुना—

اَللّٰهُمَّ اَحْسِنْ عَاقِبَتَنَا فِي الْاُمُوْرِ كُلِّهَا وَاَجِرْنَا مِنْ خِزْيِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْاٰخِرَةِ

'ऐ अल्लाह ! तमाम कामों में हमारा अंजाम अच्छा फ़रमा और हमें

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 172
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 173
3. अहमद,
4. हैसमी, भाग 10, पृ० 174, 176,

दुनिया की रुसवाई से और आख़िरत के अज़ाब से बचा।'

तबरानी की रिवायत में इसके बाद यह भी है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो यह दुआ मांगता रहेगा, वह आज़माइश में पड़ने से पहले ही मर जाएगा।[1]

हज़रत अबू सिरमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ غِنَایَ وَغِنٰی مَوْلَایَ

'ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे अपने ग़िना और अपने हर ताल्लुक़ वाले के ग़िना का सवाल करता हूं।'[2]

हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ الطَّیِّبَاتِ وَتَرْکَ الْمُنْکَرَاتِ وَحُبَّ الْمَسَاکِیْنِ وَاَنْ تَتُوْبَ عَلَیَّ وَاِنْ اَرَدْتَّ بِعِبَادِکَ فِتْنَةً اَنْ تَقْبِضَنِیْ غَیْرَ مَفْتُوْنٍ

'ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे पाकीज़ा चीज़ें और मुन्करात के छोड़ने की हिम्मत और मिस्कीनों की मुहब्बत मांगता हूं और यह भी मांगता हूं कि तू मेरी तौबा क़ुबूल फ़रमा ले और यह भी कि अगर किसी वक़्त तू अपने बंदों को आज़माइश में डालना चाहे तो मुझे उस आज़माइश में डाले बिना अपने पास बुला ले।'[3]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ اَوْسَعَ رِزْقِکَ عَلَیَّ عِنْدَ کِبَرِسِنِّیْ وَانْقِطَاعِ عُمْرِیْ

'ऐ अल्लाह ! बुढ़ापे में और आख़िर उम्र में मुझे सबसे ज़्यादा फ़राख़ रोज़ी अता फ़रमा।'[4]

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 178
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 178
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 181,
4. हैसमी, भाग 10, पृ० 182,

जामेअ दुआएं, जिनके लफ़्ज़ कम और मानी ज़्यादा हैं

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जामेअ दुआएं पसन्द फ़रमाते थे और दूसरी दुआएं छोड़ देते थे ।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, एक बार हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए और उन्होंने मुझसे छिपा कर हुज़ूर सल्ल० से कोई बात करनी चाही । मैं नमाज़ पढ़ रही थी । हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे कहा, ऐ आइशा रज़ि० ! कामिल और जामेअ दुआएं किया करो । नमाज़ से फ़ारिग़ होकर मैंने उन दुआओं के बारे में पूछा, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह कहो—

اَللّٰهُمَّ
اِنِّیْ اَسْئَلُکَ مِنَ الْخَیْرِ کُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَآجِلِهٖ وَمَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَمَا لَمْ اَعْلَمْ وَاَعُوْذُ بِکَ مِنَ الشَّرِّ
کُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَآجِلِهٖ وَمَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَمَا لَمْ اَعْلَمْ وَاَسْئَلُکَ الْجَنَّةَ وَمَا قَرَّبَ اِلَیْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْ
عَمَلٍ وَاَعُوْذُ بِکَ مِنَ النَّارِ وَمَا قَرَّبَ اِلَیْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْ عَمَلٍ وَاَسْئَلُکَ مِنْ خَیْرِ مَا سَئَلَکَ مِنْهُ
عَبْدُکَ وَرَسُوْلُکَ مُحَمَّدٌ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ وَاَسْتَعِیْذُکَ مِمَّا اسْتَعَاذَکَ مِنْهُ عَبْدُکَ
وَرَسُوْلُکَ مُحَمَّدٌ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ وَاَسْئَلُکَ مَا قَضَیْتَ لِیْ مِنْ اَمْرٍ اَنْ تَجْعَلَ عَاقِبَتَهٗ
رُشْدًا

'ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे हर क़िस्म की ख़ैर, जल्द आने वाली भी और देर से आने वाली भी, जो मैं जानता हूं, वह भी और जो मैं नहीं जानता, वह भी मांगता हूं और हर क़िस्म के शर से तेरी पनाह चाहता हूं, चाहे वह शर जल्द आने वाला हो या देर से आने वाला हो, चाहे मैं उसे जानता हूं या न जानता हूं और मैं तुझसे जन्नत और हर उस क़ौल व फ़ेल की तौफ़ीक़ मांगता हूं जो जन्नत के क़रीब करे और दोज़ख़ की आग से और हर उस क़ौल व फ़ेल से तेरी पनाह चाहता हूं जो दोज़ख़ से क़रीब करे और मैं तुझसे हर वह ख़ैर मांगता हूं जो तुझसे तेरे बन्दे और रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मांगी है और हर उस चीज़ से तेरी पनाह चाहता हूं जिससे तेरे बन्दे और रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पनाह चाही

1. कंज़, भाग 1, पृ० 291,

और मैं तुझसे इस बात का सवाल करता हूं कि जिस मामले का तू मेरे लिए फ़ैसला करे, उसका अंजाम मेरे लिए अच्छा कर दे।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे पास तशरीफ़ लाए, मैं नमाज़ पढ़ रही थी। आपको कुछ काम था, मुझे नमाज़ में देर हो गई। आपने फ़रमाया, ऐ आइशा रज़ि० ! मुज्मल और जामेअ दुआ किया करो। मैंने नमाज़ से फ़ारिग़ होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुज्मल और जामेअ दुआ क्या है? आपने फ़रमाया, तुम यह कहा करो, फिर पिछली दुआ ज़िक्र की।[2]

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बहुत ज़्यादा दुआ मांगी, लेकिन हमें उसमें से कुछ याद न रहा। हमने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने बहुत ज़्यादा दुआ मांगी, लेकिन हमें उसमें से कुछ याद न रहा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें ऐसी कोई जामेअ दुआ न बता दूं, जिसमें यह सब कुछ आ जाए? तुम यह दुआ मांगा करो—

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَئَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَنْتَ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

'ऐ अल्लाह ! हम तुझसे वे तमाम भलाइयां मांगते हैं, जो तुझसे तेरे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मांगी हैं और उन तमाम चीज़ों से तेरी पनाह मांगते हैं, जिनसे तेरे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पनाह मांगी है और तू ही वह ज़ात है जिससे मदद मांगी जाती है और (हमें मक़्सूद तक) पहुंचाना (तेरे फ़ज़्ल से) तेरे ही ज़िम्मे है, बुराइयों से बचने की ताक़त और नेकियां करने की क़ूवत तेरी तौफ़ीक़ ही से मिलती है।'[3]

1. कंज़, भाग 1, पृ० 306, अज़्कार, पृ० 506,
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 94,
3. तिर्मिज़ी, भाग 2, पृ० 190, अदबुल मुफ़रद, पृ० 99,

अल्लाह की पनाह चाहना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْکَسَلِ وَالْجُبْنِ وَالْهَرَمِ وَالْبُخْلِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ
وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَفِیْ رِوَايَةٍ وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَ غَلَبَةِ الرِّجَالِ

'ऐ अल्लाह ! मैं आजिज़ हो जाने से, काहिली से, बुज़दिली से, ज़्यादा बूढ़ा हो जाने से और कंजूसी से तेरी पनाह चाहता हूं और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूं और ज़िंदगी और मौत के फ़ित्ने से तेरी पनाह चाहता हूं।'

और एक रिवायत में है कि क़र्ज़ के बोझ से और लोगों के ग़लबे और दबाव से (तेरी पनाह चाहता हूं।)[1]

मुस्लिम में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुआ में फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّ مَا عَمِلْتُ وَمِنْ شَرِّ مَا لَمْ اَعْمَلْ

'ऐ अल्लाह ! मैंने अब तक जो कुछ किया, उसके शर से भी पनाह मांगता हूं और जो नहीं किया, उसके शर से भी पनाह मांगता हूं।'

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक दुआ यह भी थी—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِکَ وَتَحَوُّلِ عَافِيَتِکَ وَفُجَاءَةِ نِقْمَتِکَ وَجَمِيْعِ سَخَطِکَ

'ऐ अल्लाह ! मैं तेरी नेमत के चले जाने से, तेरी दी हुई आफ़ियत के हट जाने से और तेरी अचानक पकड़ से और तेरी हर तरह की नाराज़ी से पनाह चाहता हूं।'

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं तुम्हें वही दुआ

1. बुख़ारी, मुस्लिम,

बताने लगा हूं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मांगा करते थे—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْکَسَلِ وَالْجُبْنِ
وَالْبُخْلِ وَالْهَمِّ وَعَذَابِ الْقَبْرِ اَللّٰهُمَّ اٰتِ نَفْسِیْ تَقْوٰهَا وَزَكِّهَا اَنْتَ خَیْرُ مَنْ زَكّٰهَا اَنْتَ
وَلِیُّهَا وَمَوْلَاهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ عِلْمٍ لَّا یَنْفَعُ وَمِنْ قَلْبٍ لَّا یَخْشَعُ وَمِنْ نَفْسٍ لَّا تَشْبَعُ
وَمِنْ دَعْوَةٍ لَّا یُسْتَجَابُ لَهَا

'ऐ अल्लाह ! आजिज़ी, काहिली, बुज़दिली, कंजूसी, रंज व ग़म और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूं। ऐ अल्लाह ! मेरे नफ़्स को तक़्वा अता फ़रमा और उसे पाक-साफ़ कर दे। तू ही उसको बेहतरीन पाक-साफ़ करने वाला है, तू ही उसका मालिक और आक़ा है। ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह चाहता हूं उस इल्म से जो (दीन-दुनिया में) नफ़ा न दे और उस दिल से जिसमें ख़शूअ न हो और लोभी नफ़्स से जो कभी सेर न हो और उस दुआ से जो क़ुबूल न हो।'

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ فِتْنَةِ النَّارِ وَعَذَابِ النَّارِ وَمِنْ شَرِّ الْغِنٰی وَالْفَقْرِ

'ऐ अल्लाह ! आग के फ़ित्ने से, आग के अज़ाब से और मालदारी और फ़क़ीरी के शर से तेरी पनाह चाहता हूं।'[1]

हज़रत कुत्बा बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे—

'ऐ अल्लाह ! मैं बुरे अख़्लाक़ व आमाल से और बुरी नफ़्सानी ख़्वाहिशों से तेरी पनाह चाहता हूं।'[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे—

1. मुस्लिम, बुख़ारी, नसई, तिर्मिज़ी
2. तिर्मिज़ी,

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْبَرَصِ وَالْجُنُوْنِ وَالْجُذَامِ وَسَیِّئِ الْاَسْقَامِ

'ऐ अल्लाह ! बर्स (फलेरी) से, दीवानेपन से, कोढ़पन से और तमाम बुरी और पीड़ा पहुंचाने वाली बीमारियों से तेरी पनाह चाहता हूं।'[1]

हज़रत अबुल बस्र सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम यह दुआ मांगा करते थे—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْهَدْمِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنَ التَّرَدِّیْ وَاَعُوْذُبِکَ مِنَ الْغَرَقِ وَالْحَرْقِ وَالْهَرَمِ وَاَعُوْذُبِکَ اَنْ یَّتَخَبَّطَنِیَ الشَّیْطَانُ عِنْدَ الْمَوْتِ وَاَعُوْذُبِکَ اَنْ اَمُوْتَ فِیْ سَبِیْلِکَ مُدْبِرًا وَاَعُوْذُبِکَ اَنْ اَمُوْتَ لَدِیْغًا

'ऐ अल्लाह ! किसी इमारत के नीचे दबकर मरने से, किसी ऊंची जगह से गिरकर मरने से और डूबकर या जलकर मरने से और हद से ज़्यादा बूढ़ा होने से तेरी पनाह चाहता हूं और इस बात से तेरी पनाह चाहता हूं कि मौत के वक़्त शैतान मुझे ख़ब्ती बना दे यानी अक़्ल ख़राब करके गुमराह कर दे और रास्ते में लड़ाई के मैदान से पीठ फेरकर भागते हुए मरने से तेरी पनाह चाहता हूं और सांप वग़ैरह के डसने से मरने से तेरी पनाह चाहता हूं।'[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْجُوْعِ فَاِنَّهٗ بِئْسَ الضَّجِیْعُ وَاَعُوْذُبِکَ مِنَ الْخِیَانَةِ فَاِنَّهَا بِئْسَتِ الْبِطَانَةُ

'ऐ अल्लाह ! मैं भूख से तेरी पनाह चाहता हूं, क्योंकि भूख बहुत बुरा साथी है और ख़ियानत से तेरी पनाह चाहता हूं, इसलिए कि यह सबसे बुरी आदत है।'[3]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु

1. अबू दाऊद, नसई,
2. अबू दाऊद,
3. किताबुल अज़्कार, पृ० 499,

अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الشِّقَاقِ وَ النِّفَاقِ وَ سُوْءِ الْاَخْلَاقِ

'ऐ अल्लाह ! मैं आपस के झगड़े-फ़साद से, निफ़ाक़ से और बुरे अख़्लाक़ से तेरी पनाह चाहता हूं।'[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْعَجْزِ وَ الْکَسَلِ وَ اَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْقَسْوَةِ وَ الْغَفْلَةِ وَ الْعَیْلَةِ وَالذِّلَّةِ وَالْمَسْکَنَةِ وَ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْفُسُوْقِ وَ الشِّقَاقِ وَالنِّفَاقِ وَالسُّمْعَةِ وَالرِّیَاءِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنَ الصَّمَمِ وَالْبَکَمِ وَ الْجُنُوْنِ وَ الْجُذَامِ وَ سَیِّئِ الْاَسْقَامِ

'ऐ अल्लाह ! आजिज़ हो जाने और सुस्ती से तेरी पनाह मांगता हूं और दिल की सख़्ती, ग़फ़लत, फ़क़ीरी, ज़िल्लत व मस्कनत से तेरी पनाह चाहता हूं। फ़िस्क़ व फ़ुजूर, आपस की लड़ाई-झगड़े, निफ़ाक़ और शोहरत व दिखावे से तेरी पनाह चाहता हूं। बहरा और गूंगा हो जाने से, पागलपन, कोढ़ और तमाम बीमारियों से तेरी पनाह चाहता हूं।'[2]

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ یَوْمِ السُّوْءِ وَ مِنْ لَیْلَةِ السُّوْءِ وَ مِنْ سَاعَةِ السُّوْءِ وَ مِنْ صَاحِبِ السُّوْءِ وَ مِنْ جَارِ السُّوْءِ فِیْ دَارِ الْمُقَامَةِ

'ऐ अल्लाह ! बुरे दिन से, बुरी रात से, बुरी घड़ी से, बुरे साथी से और (मुस्तक़िल रिहायश वाले) वतन के बुरे पड़ोसी से मैं तेरी पनाह चाहता हूं।'[3]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पांच चीज़ों से अल्लाह की पनाह इस तरह मांगा करते थे—

---

1. तैसीरुल उसूल, भाग 2, पृ० 83,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 143,
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 144,

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْبُخْلِ وَ الْجُبْنِ وَ فِتْنَةِ الصَّدْرِ وَ
عَذَابِ الْقَبْرِ وَ سُوْءِ الْعُمُرِ

'ऐ अल्लाह ! कंजूसी और बुज़दिली से, सीने के फ़िले से, क़ब्र के अज़ाब से और बुरी उम्र यानी बहुत ज़्यादा बूढ़ा हो जाने से तेरी पनाह चाहता हूं।'[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत हसन, हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा को इन कलिमों से अल्लाह की पनाह में दिया करते थे—

اِنِّیْ اُعِیْذُ کُمَا بِکَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ مِنْ کُلِّ شَیْطَانٍ وَ هَامَّةٍ وَ مِنْ کُلِّ عَیْنٍ لَامَّةٍ

'मैं तुम दोनों को हर शैतान से, पीड़ा पहुंचाने वाले ज़हरीले जानवरों से और हर लगने वाली बुरी नज़र से और अल्लाह के इन कलिमों की पनाह में देता हूं, जो पूरे हैं।'[2]

जिन्नों से अल्लाह की पनाह चाहना

हज़रत अबू तैयाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ख़नबश तमीमी रज़ियल्लाहु अन्हु बड़ी उम्र को पहुंच चुके थे। मैंने उनसे पूछा, क्या आपने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़माना पाया है? उन्होंने कहा, जी हां। मैंने कहा, जिस रात जिन्नों ने हुज़ूर सल्ल० के साथ मकर व फ़रेब करना चाहा था, उस रात हुज़ूर सल्ल० ने क्या किया था?

उन्होंने कहा, उस रात शैतान घाटियों और पहाड़ी रास्तों से उतर कर हुज़ूर सल्ल० के पास आने लगे, उनमें से एक शैतान के हाथ में आग का एक शोला था, जिससे वह हुज़ूर सल्ल० का दमकता चेहरा जलाना चाहता था। इस पर हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आसमान से उतरकर ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ मुहम्मद ! पढ़िए। हुज़ूर

1. अहमद, अबू दाऊद, नसई,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 212,

सल्ल० ने फ़रमाया, क्या पढ़ूं ? उन्होंने कहा, यह दुआ पढ़िए—

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَ ذَرَأَ وَ بَرَأَ وَ مِنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَ
مِنْ شَرِّ مَا يَعْرُجُ فِيهَا وَ مِنْ شَرِّ فِتَنِ اللَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَ مِنْ شَرِّ كُلِّ طَارِقٍ إِلَّا
طَارِقًا يَطْرُقُ بِخَيْرٍ يَا رَحْمَانُ

'मैं अल्लाह के कामिल कलिमों की पनाह लेता हूं, उन तमाम चीज़ों के शर से जिन्हें उसने पैदा फ़रमा कर फैला दिया और जिन्हें उसने बे-मिसाल बनाया और हर उस चीज़ के शर से जो आसमान से उतरती है और हर उस चीज़ के शर से जो आसमान में चढ़ती है और रात और दिन के फ़िलों से और रात के पेश आने वाले हर हादसे के शर से सिवा उस हादसे के जो ख़ैर लेकर आए, ऐ रहमान ! (चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने ये कलिमे कहे, जिससे) इन शैतानों की आग बुझ गई और अल्लाह ने उन्हें हरा दिया।[1]

हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास था कि इतने में आपके पास एक देहाती आया और उसने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! मेरा एक भाई है, जिसे तक्लीफ़ है। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, उसे क्या तक्लीफ़ है? उसने कहा, उस पर जिन्नात का असर है। आपने फ़रमाया, उसे मेरे पास लाओ। वह देहाती अपने भाई को लाया और उसे हुज़ूर सल्ल० के सामने बिठा दिया। हुज़ूर सल्ल० ने सूरः फ़ातिहा और नीचे लिखी आयतें पढ़कर उसे अल्लाह की पनाह में दिया, सूरः बक़रः की शुरू की चार आयतें और ये दो आयतें 'व इलाहु कुम इलाहुंव्वाहिद० और आयतुल कुर्सी और सूरः बक़रः की आख़िरी तीन और आले इम्रान की एक आयत 'शहिदल्लाहु अन्नहू ला इला-ह इल्ला हु-व' और आराफ़ की एक आयत 'इन-न रब्बकुमुल्लाहु' और सूरः मोमिनून की आख़िरी आयत 'फ़-तआलल्लाहुल मलिकुल हक़्क़ु' और सूरः जिन्न की एक आयत 'वल्लाहु तआला जद्दु रब्बिना' और सूरः साफ़्फ़ात के शुरू की दस

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 117, कंज़, भाग 1, पृ० 212,

आयतें और सूरः हश्र की आख़िरी तीन आयतें और क़ुल हुवल्लाहु अहद और मुअव्वज़ैतन यानी 'क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़' और 'क़ुल अऊज़ुबिरब्बिन्नास'। (हुज़ूर सल्ल० के इस पढ़ने की बरकत से) वह आदमी वहां से इस तरह ठीक होकर उठा कि जैसे उसे कोई तक्लीफ़ ही नहीं थी।[1]

रात को जब नींद न आए या घबरा जाए तो क्या कहे

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बताया कि वह रात को कुछ डरावनी चीज़ें देखते हैं, जिनकी वजह से वह रात को तहज्जुद की नमाज़ नहीं पढ़ सकते। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ ख़ालिद बिन वलीद ! क्या मैं तुम्हें ऐसे कलिमे न सिखा दूं कि जब तुम उनको तीन बार पढ़ लोगे तो अल्लाह तुम्हारी यह तक्लीफ़ दूर कर देंगे।

हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, ज़रूर सिखाएं। मैंने आपको अपनी यह तक्लीफ़ इसीलिए तो बताई है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ये कलिमे कहा करो—

أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهٖ وَ عِقَابِهٖ وَ شَرِّ عِبَادِهٖ وَ مِنْ
هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَ اَنْ يَّحْضُرُوْنَ

'मैं अल्लाह के ग़ुस्से और उसकी सज़ा से और उसके बन्दों के शर से और शैतानों के वस्वसों से और शैतानों के मेरे पास आने से उसके कामिल कलिमों की पनाह चाहता हूं।'

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, कुछ रातें ही गुज़री थीं कि हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, उस ज़ात की क़सम, जिसने

1. कंज़, भाग 1, पृ० 213,

आपको हक़ देकर भेजा है, जो कलिमे आपने मुझे सिखाए थे, वे मैंने तीन बार ही पूरे किए थे कि अल्लाह ने मेरी वह तक्लीफ़ दूर कर दी और अब तो मेरा यह हाल है कि शेर के बन में उसके पास रात को भी बिला डर और ख़तरा महसूस किए जा सकता हूं।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब तुममें से कोई नींद में घबरा जाए, तो यह दुआ पढ़े—

أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ

'अऊज़ुबिकलिमातिल्लाहित्ताम्माति'

आगे पिछली जैसी दुआ ज़िक्र की।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० का जो बच्चा समझदार होता, उसे तो यह दुआ सिखाते और जो अभी नासमझ होता, तो यह दुआ किसी काग़ज़ पर लिखकर उसके गले में डाल देते।[2]

नसई की रिवायत में यह है कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु नींद में घबरा जाया करते थे। उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इसका ज़िक्र किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब तुम लेटा करो, तो यह दुआ पढ़ लिया करो। 'बिस्मिल्लाहि' आगे पिछली जैसी दुआ ज़िक्र की।

इमाम मालिक ने मुअत्ता में लिखा है कि मुझे यह बात पहुंची है कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मैं सोते में डर जाता हूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह दुआ पढ़ लिया करो और पिछली दुआ ज़िक्र की। हज़रत वलीद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल

---

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 116, हैसमी, भाग 1, पृ० 127
2. नसई, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी

सल्ल० ! मुझे घबराहट और वहशत महसूस होती है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब तुम बिस्तर पर लेटा करो, तो यह दुआ पढ़ा करो, फिर पिछली दुआ ज़िक्र की ।[1]

बेचैनी, परेशानी और रंज व ग़म के वक़्त की दुआएं

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे ये कलिमे सिखाए और फ़रमाया, जब तुम्हें कोई परेशानी या सख़्ती पेश आया करे, तो इन्हें पढ़ा करो—

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ تَبَارَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ
وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

'अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, जो हलीम और करीम है, अल्लाह पाक और बरकत वाला है जो कि अर्शे अज़ीम का रब है, तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जो तमाम जहानों का रब है ।'[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी बात की वजह से परेशान और बेचैन होते तो फ़रमाते—

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ

या हय्यु या क़य्यूमु बिरहमति-क अस्तग़ीसु०

ऐ हमेशा ज़िंदा रहने वाले ! ऐ दूसरों को क़ायम रखने वाले, तेरी रहमत के वास्ते से फ़रियाद करता हूं ।[3]

हज़रत अस्मा बिन्त अमीस रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ग़म या परेशानी पेश आती, तो फ़रमाया करते—

اَللّٰهُ اَللّٰهُ رَبِّيْ لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 116,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 298, तोहफ़तुज़्ज़ाकिरीन, पृ० 194, तालीमुल अज़्कार, भाग 1, पृ० 184
3. कंज़, भाग 1, पृ० 299

'अल्लाह, अल्लाह, मेरा रब है, मैं उसके साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करता।'[1]

इब्ने जरीर और इब्ने अबी शैबा में हज़रत अस्मा रज़ि० की रिवायत इस तरह से है कि मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने परेशानी के वक़्त पढ़ने के लिए ये कलिमे सिखाए और पिछले कलिमों का ज़िक्र किया।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हम सब घर में थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दरवाज़े की दोनों चौखटों को पकड़ कर फ़रमाया, ऐ बनू अब्दुल मुत्तलिब! जब तुम लोगों को कोई परेशानी, सख़्ती या तंगदस्ती पेश आए तो ये कलिमे कहा करो।[3]

اَللّٰهُ اَللّٰهُ رَبُّنَا لَا نُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम परेशानी के वक़्त ये कलिमे पढ़ा करते थे—

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْعَظِيْمُ الْحَلِيْمُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ الْعَرْشِ

الْعَظِيْمِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَرَبُّ الْاَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ

'अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, जो अज़ीम और हलीम है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं जो कि अज़ीम अर्श का रब है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, जो आसमानों और ज़मीन का रब है और करीम अर्श का रब है।'[4]

हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी चीज़ से डर महसूस करते, तो फ़रमाते[5]—

اَللّٰهُ اَللّٰهُ رَبِّيْ لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا

1. इब्ने जरीर,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 300
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 137,
4. तोहफ़तुज़्ज़ाकिरीन, पृ० 193,
5. कंज़, भाग 1, पृ० 300,

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जो बन्दा भी सात बार यह दुआ पढ़ेगा, चाहे वह सच्चे दिल से पढ़े या झूठे दिल से, अल्लाह उसके ग़म और परेशानी को ज़रूर दूर कर देंगे, वह दुआ यह है—

حَسْبِيَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

'अल्लाह मुझे काफ़ी है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसी पर मैंने भरोसा किया और वह अज़ीम अर्श का रब है।'[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जिसे कोई फ़िक्र या ग़म या परेशानी पेश आए या उसे किसी बादशाह से डर हो और वह इन कलिमों के ज़रिए से दुआ करेगा तो उसकी दुआ ज़रूर कुबूल होगी—

اَسْئَلُكَ بِلَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ وَ
اَسْئَلُكَ بِلَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ وَ اَسْئَلُكَ بِلَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ
رَبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَالْاَرَضِيْنَ السَّبْعِ وَمَا فِيْهِنَّ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

'मैं तुझसे इस बात के वास्ते से सवाल करता हूं कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। ऐ सातों आसमानों के और अज़ीम अर्श के रब! और मैं तुझसे इस बात के वास्ते से सवाल करता हूं कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। ऐ सातों आसमानों के और करीम अर्श के रब और मैं तुझसे इस बात के वास्ते से सवाल करता हूं कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, ऐ सातों आसमानों के, सातों ज़मीनों के और उन तमाम चीज़ों के रब, जो उनमें हैं, बेशक तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।'

फिर तुम अल्लाह से अपनी ज़रूरत मांगो।[2]

ज़ालिम बादशाह से डर के वक़्त की दुआएं

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे ज़ालिम बादशाह के पास और हर तरह के डर के वक़्त पढ़ने के लिए ये कलिमे सिखाए—

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 300,
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 105,

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ
وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ عِبَادِكَ

'अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं जो हलीम और करीम है। वह अल्लाह पाक है जो सातों आसमानों और अज़ीम अर्श का रब है। तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है। मैं तेरे बन्दों के शर से तेरी पनाह चाहता हूं।'[1]

हज़रत अबू राफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने (मजबूर होकर) हज्जाज बिन यूसुफ़ से अपनी बेटी की शादी की और बेटी से कहा, जब वह तुम्हारे पास अन्दर आए, तो तुम यह दुआ पढ़ना—

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ
الْعَظِيْمِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

'अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं जो हलीम और करीम है। अल्लाह पाक है, जो अज़ीम अर्श का रब है और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है।'

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कोई भारी मामला पेश आता, तो आप यह दुआ पढ़ते। रिवायत करने वाले कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० की बेटी ने यह दुआ पढ़ी, जिसकी वजह से हज्जाज उसके क़रीब न आ सका।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब तुम किसी रौबदार बादशाह के पास जाओ और तुम्हें डर हो कि वह तुम्हारे साथ ज़्यादती करेगा, तो तुम तीन बार यह दुआ पढ़ो——

اَللّٰهُ أَكْبَرُ
اَللّٰهُ أَكْبَرُ اَللّٰهُ أَعَزُّ مِنْ خَلْقِهِ جَمِيْعًا اَللّٰهُ أَعَزُّ مِمَّا أَخَافُ وَ أَحْذَرُ أَعُوْذُ بِاللّٰهِ الَّذِيْ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ
الْمُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ أَنْ يَقَعْنَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ مِنْ شَرِّ عَبْدِكَ فُلَانٍ وَ جُنُوْدِهِ وَ

1. कंज़, भाग 1, पृ० 299,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 300,

أَتْبَاعِهِ وَأَشْيَاعِهِ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ اللّٰهُمَّ كُنْ لِيْ جَارًا مِنْ شَرِّهِمْ جَلَّ ثَنَاؤُكَ وَعَزَّ جَارُكَ وَ
تَبَارَكَ اسْمُكَ وَلَا إِلٰهَ غَيْرُكَ

'अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह अपनी सारी मख़्लूक़ से ज़्यादा इज़्ज़त और ग़लबे वाला है, अल्लाह उन सबसे ज़्यादा इज़्ज़त व ग़लबे वाला है, जिनसे मैं बचना चाहता हूं। मैं उस अल्लाह की पनाह चाहता हूं जिसके सिवा कोई माबूद नहीं और जिसने अपने हुक्म से सातों आसमानों को ज़मीन पर गिरने से रोक रखा है, तेरे फ़्लां बन्दे के शर और उसके लश्करों और उसके पीछे चलने वालों और उसकी बात मानने वालों के शर से, चाहे वे जिन्नात हों या इंसान हों, ऐ अल्लाह ! तू मेरे लिए इन सबके शर से पनाह बन जा। तेरी सना बहुत बड़ी है और तेरी पनाह लेने वाला ग़ालिब होता है और तेरा नाम बरकत वाला है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।'[1]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब तुम्हें किसी हाकिम के ग़ैज़ व ग़ज़ब और ज़्यादती का डर हो, तो यह दुआ पढ़ो—

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ كُنْ
لِيْ جَارًا مِنْ فُلَانٍ وَأَحْزَابِهِ وَأَشْيَاعِهِ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ أَنْ يَفْرُطُوْا عَلَيَّ وَأَنْ يَطْغَوْا عَزَّ جَارُكَ
وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلَا إِلٰهَ غَيْرُكَ

'ऐ अल्लाह ! जो सातों आसमानों और अर्श अज़ीम का रब है, तू मेरे लिए फ़्लां के शर से और उसकी मददगार जमाअतों और उसके मानने वाले जिन्नात और इंसानों के शर से पनाह बन जा, ताकि वे मुझ पर ज़ुल्म व ज़्यादती न कर सकें। तेरी पनाह लेने वाला इज़्ज़तदार होता है और तेरी सना बहुत बड़ी है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है।'

जब तुम यह दुआ पढ़ोगे तो उस ज़ालिम हाकिम की तरफ़ से तुम्हें कोई नागवारी पेश नहीं आएगी।[2]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु

1. कंज़, भाग 1, पृ० 300, हैसमी, भाग 10, पृ० 137, अदबुल मुफ़रद, पृ०104
2. कंज़, भाग 1, पृ० 300, अदबुल मुफ़रद, पृ० 104

अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब तुममें से किसी को ज़ालिम बादशाह का ख़ौफ़ हो, तो वह यह दुआ पढ़े और फिर पिछली दुआ ज़िक्र की, अलबत्ता उस रिवायत में ये लफ़्ज़ हैं—

كُنْ لِيْ جَارًا مِنْ شَرِّ فُلَانِ بْنِ فُلَانٍ- يَعْنِى الَّذِىْ يُرِيْدُ- وَ شَرِّ الْجِنِّ وَ
الْإِنْسِ وَ اَتْبَاعِهِمْ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَىَّ اَحَدٌ مِّنْهُمْ عَزَّ جَارُكَ وَ جَلَّ ثَنَاؤُكَ وَ لَا اِلٰهَ غَيْرُكَ

'तू मेरे लिए फ़्लां बिन फ़्लां के शर से (यहां उस ज़ालिम बादशाह का नाम ले) और जिन्नात और इंसानों और उनके पीछे चलने वालों के शर से पनाह बन जा, ताकि उनमें से कोई भी मुझ पर ज़्यादती न कर सके। तेरी पनाह लेने वाला ग़ालिब होता है और तेरी सना बहुत बड़ी है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।'[1]

क़र्ज़ की अदाएगी की दुआएं

हज़रत अबू वाइल रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि एक मुकातब ग़ुलाम (मुकातब उस ग़ुलाम को कहते हैं, जिसे उसके आक़ा ने कहा हो कि अगर तुम इतना माल इतने अर्से में अदा कर दोगे, तो तुम आज़ाद हो जाओगे) ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया कि मैं किताबत में मुक़र्रर शुदा माल अदा करने से आजिज़ हो गया हूं, आप इस बारे में मेरी मदद फ़रमाएं।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें वे कलिमे न सिखाऊं जो हुज़ूर सल्ल० ने मुझे सिखाए थे? अगर तुम पर (यमन के) सीर पहाड़ के बराबर भी क़र्ज़ हो तो भी अल्लाह तुम्हारा वह क़र्ज़ अदा करा देगा, तुम यह दुआ पढ़ा करो—

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَ اَغْنِنِىْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ

'ऐ अल्लाह! मुझे अपनी हलाल रोज़ी देकर हराम से बचा दे और अपने फ़ज़्ल व करम से मुझे अपने मासिवा से बे-नियाज़ कर दे।'[2]

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 137
2. तिर्मिज़ी, भाग 2, पृ० 195,

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक दिन मस्जिद में तशरीफ़ लाए, तो अचानक आपकी नज़र एक अंसारी शख़्स पर पड़ी, जिन्हें अबू उमामा कहा जाता था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबू उमामा ! क्या बात है ? तुम आज मस्जिद में नमाज़ के वक़्त के अलावा दूसरे वक़्त में बैठे हुए हो ?

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ग़मों और क़र्ज़ों ने मुझे घेर लिया है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें ऐसा कलाम न सिखाऊं कि जब तुम उसे कहोगे तो अल्लाह तुम्हारा ग़म दूर कर देंगे और क़र्ज़ उतरवा देंगे। उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ज़रूर सिखा दें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, सुबह और शाम यह दुआ पढ़ा करो—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْهَمِّ وَ الْحُزْنِ وَ اَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْکَسَلِ وَ اَعُوْذُ بِکَ
مِنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّیْنِ وَ قَهْرِ الرِّجَالِ

'ऐ अल्लाह ! मैं हर फ़िक्र व ग़म से तेरी पनाह चाहता हूं और आजिज़ हो जाने और सुस्ती से तेरी पनाह चाहता हूं और बुज़दिली और कंजूसी से तेरी पनाह चाहता हूं और क़र्ज़ के ग़लबे और लोगों के मेरे ऊपर दबाव से तेरी पनाह चाहता हूं।'

हज़रत अबू उमामा रज़ि० फ़रमाते हैं, मैंने ऐसा किया तो अल्लाह ने मेरे ग़म भी दूर कर दिए और मेरा क़र्ज़ भी सारा अदा कर दिया।[1]

एक बार जुमा के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु को न देखा। हुज़ूर सल्ल० जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो हज़रत मुआज़ रज़ि० के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया, ऐ मुआज़ ! क्या बात है, आज तुम (जुमा की नमाज़ में) नज़र न आए। उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! एक यहूदी का मुझ पर एक ऊक़िया सोना क़र्ज़ है। मैं घर से आपकी ख़िदमत में हाज़िरी के लिए चल पड़ा, लेकिन रास्ते में वह यहूदी मिल गया, जिसकी

1. अबू दाऊद, भाग 2, पृ० 370

वजह से देर हो गई।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ मुआज़ रज़ि० ! क्या मैं तुम्हें ऐसी दुआ न सिखा दूं कि अगर (यमन के) सीर पहाड़ जितना भी तुम पर क़र्ज़ हो और तुम यह दुआ पढ़ो, तो अल्लाह तुम्हारा वह क़र्ज़ अदा करा देंगे। ऐ मुआज़ ! तो तुम यह दुआ किया करो—

اَللّٰهُمَّ مَالِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ
تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ تُوْلِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ
النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ
حِسَابٍ رَحْمٰنَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَرَحِيْمَهُمَا تُعْطِيْ مِنْهُمَا مَنْ تَشَآءُ وَتَمْنَعُ مَنْ تَشَآءُ
اِرْحَمْنِيْ رَحْمَةً تُغْنِيْنِيْ بِهَا عَنْ رَحْمَةِ مَنْ سِوَاكَ

'ऐ अल्लाह ! ऐ तमाम मुल्क के मालिक ! तू जिसको चाहे मुल्क दे देता है और जिससे चाहे मुल्क छीन लेता है और तू जिसे चाहे इज़्ज़त देता है और जिसे चाहे ज़िल्लत देता है। हर भलाई तेरे ही अख़्तियार में है। बेशक तू हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखने वाला है। तू रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल कर देता है। (कभी दिन बड़ा होता है और कभी रात) और तू ज़िंदा को मुर्दा से निकाल लेता है और मुर्दे को ज़िंदा से निकाल लेता है। (परिंदे से अंडा निकाल लेता है और अंडे से परिंदा।) और तू जिसे चाहता है, उसे बे-हिसाब रोज़ी देता है। ऐ दुनिया और आख़िरत के रहमान ! ऐ दुनिया और आख़िरत के रहीम ! तू दुनिया और आख़िरत जिसे चाहता है, दे देता है और जिससे चाहे रोक लेता है। तू मुझ पर ऐसी ख़ास रहमत नाज़िल फ़रमा, जिसके बाद मुझे तेरे सिवा किसी की ज़रूरत न रहे।"[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुआज़ को फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें ऐसी दुआ न सिखा दूं कि अगर उहुद पहाड़ जितना भी तुम पर क़र्ज़ा हो

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 186,

तो भी अल्लाह ज़रूर उतरवा देगा। ऐ मुआज़ ! तुम यह दुआ पढ़ो—

'अल्लाहुम-म मालिकल मुल्कि' पिछली दुआ जैसी दुआ ज़िक्र फ़रमाई, अलबत्ता उसमें 'तूलिजुल्लैलि' से आख़िर तक का ज़िक्र नहीं है। और उसमें ये लफ़्ज़ हैं—

رَحْمٰنَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ تُعْطِيْهِمَا مَنْ تَشَآءُ وَ تَمْنَعُ مِنْهُمَا مَنْ تَشَآءُ

आगे पिछली हदीस जैसी दुआ ज़िक्र की।[1]

क़ुरआन के हिफ़्ज़ की दुआ

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक बार हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे कि इतने में हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, यह क़ुरआन तो मेरे सीने से निकल गया। मुझे तो ऐसे लग रहा है कि मैं क़ुरआन पर क़ाबू नहीं पा सकता, उसे याद नहीं रख सकता। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें ऐसे कुछ कलिमे न सिखा दूं जिनसे तुम्हें भी फ़ायदा हो और जिसे तुम ये कलिमे सिखाओगे, उसे भी फ़ायदा होगा और जो कुछ तुम सीखोगे, वह तुम्हारे सीने में बाक़ी रहेगा।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, हां, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जी हां, मुझे ये कलिमे ज़रूर सिखा दें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब जुमे की रात आए तो अगर तुम रात के आख़िरी तिहाई हिस्से में उठ सको, (तो बहुत अच्छा है) क्योंकि यह ऐसा वक़्त है, जिसमें फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं और उसमें दुआ क़ुबूल होती है और मेरे भाई हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने अपने बेटों से कहा था—

سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ (سورت یوسف آیت ۹۸)

'बहुत जल्द तुम्हारे लिए अपने रब से मग़फ़िरत की दुआ करूंगा।'

(सूरः यूसुफ़, आयत 98)

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 186,

'बहुत जल्द' से हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की मुराद यही जुमा की रात थी। अगर तुम आख़िरी तिहाई रात में न उठ सको, तो फिर बीच रात में उठो। अगर तुम यह भी न कर सको तो फिर शुरू रात में उठो और चार रक्अत नमाज़ पढ़ो। पहली रक्अत में सूरः फ़ातिहा और सूरः यासीन और दूसरी रक्अत में सूरः फ़ातिहा और सूरः हामीम दुख़ान और तीसरी रक्अत में सूरः फ़ातिहा और सूरः अलिफ़-लाम-मीम तंज़ील सज्दा और चौथी रक्अत में सूरः फ़ातिहा और सूरः तबारकल्लज़ी पढ़ो और अब अत्तहीयात से फ़ारिग़ हो जाओ तो ख़ूब अच्छी तरह से हम्द व सना बयान करो और फिर ख़ूब अच्छी तरह मुझ पर और सारे नबियों पर दरूद पढ़ो, फिर तमाम मोमिन मर्दों और औरतों के लिए और जो भाई तुमसे पहले ईमान के साथ गुज़र चुके, उनके साथ दुआ-ए-मग़फ़िरत करो, फिर आख़िर में यह दुआ पढ़ो—

اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِيْ بِتَرْكِ الْمَعَاصِيْ اَبَدًا مَّا اَبْقَيْتَنِيْ
وَارْحَمْنِيْ اَنْ اَتَكَلَّفَ مَا لَا يَعْنِيْنِيْ وَ ارْزُقْنِيْ حُسْنَ النَّظَرِ فِيْمَا يُرْضِيْكَ عَنِّيْ اَللّٰهُمَّ بَدِيْعَ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ذَا الْجَلَالِ وَ الْاِكْرَامِ وَ الْعِزَّةِ الَّتِيْ لَا تُرَامُ اَسْئَلُكَ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ
بِجَلَالِكَ وَ نُوْرِ وَجْهِكَ اَنْ تُلْزِمَ قَلْبِيْ حِفْظَ كِتَابِكَ كَمَا عَلَّمْتَنِيْ وَ ارْزُقْنِيْ اَنْ اَتْلُوَهٗ عَلَى
النَّحْوِ الَّذِيْ يُرْضِيْكَ عَنِّيْ اَللّٰهُمَّ بَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ وَالْعِزَّةِ الَّتِيْ
لَا تُرَامُ اَسْئَلُكَ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ بِجَلَالِكَ وَ نُوْرِ وَجْهِكَ اَنْ تُنَوِّرَ بِكِتَابِكَ بَصَرِيْ وَ اَنْ
تُطْلِقَ بِهٖ لِسَانِيْ وَاَنْ تُفَرِّجَ بِهٖ عَنْ قَلْبِيْ وَاَنْ تَشْرَحَ بِهٖ صَدْرِيْ وَاَنْ تَغْسِلَ بِهٖ بَدَنِيْ فَاِنَّهٗ لَا يُعِيْنُنِيْ
عَلَى الْحَقِّ غَيْرُكَ وَلَا يُؤْتِيْهِ اِلَّا اَنْتَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

'ऐ अल्लाह! मुझ पर मेहरबानी फ़रमा, ताकि जब तक ज़िंदा रहूं, गुनाहों से बचता रहूं और मुझ पर मेहरबानी फ़रमा, जो काम मेरे मतलब और फ़ायदे के हों, मैं उनमें न पड़ूं और मुझे इस बात की तौफ़ीक़ दे कि मैं इन कामों की अच्छी तरह फ़िक्र करूं, जिनसे तू मुझसे राज़ी हो जाए। ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के लिए नमूना पैदा करने वाले, ऐ अज़्मत व जलाल वाले, ऐ इक्राम व एहसान वाले और ऐसी इज़्ज़त वाले, जिसके हासिल होने का किसी को वह्म व गुमान भी नहीं हो

सकता। ऐ अल्लाह ! ऐ रहमान ! मैं तेरी अज़्मत व जलाल का और तेरी ज़ात के नूर का वास्ता देकर तुझसे यह सवाल करता हूं कि जैसे तूने मुझे अपनी किताब का इल्म इनायत फ़रमाया है, ऐसे ही मेरे दिल को उसका याद रखना नसीब फ़रमा और मुझे उसकी इस तरह तिलावत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, जिससे तू मुझसे राज़ी हो जाए, ऐ अल्लाह ! आसमानों और ज़मीन के बे-नमूना पैदा करने वाले ! ऐ अज़्मत व जलाल वाले ! ऐ इक्राम व एहसान वाले ! और ऐसी इज़्ज़त वाले, जिसके हासिल होने का किसी को वह्म व गुमान भी नहीं हो सकता। ऐ अल्लाह ! ऐ रहमान ! मैं तेरी अज़्मत व जलाल का तेरी ज़ात के नूर का वास्ता देकर तुझसे यह सवाल करता हूं कि तू अपनी किताब की बरकत से मेरी निगाह को रोशन कर दे और उसको मेरी ज़ुबान पर जारी कर दे और उसकी बरकत से मेरे दिल के ग़म को दूर कर दे और मेरा सीना खोल दे और उसकी बरकत से मेरे बदन को (गुनाहों से) धो दे, क्योंकि हक़ बात पर तेरे सिवा कोई मेरी मदद नहीं कर सकता और तेरे सिवा और कोई मेरी यह आरज़ू पूरी नहीं कर सकता और बुराइयों से बचने की ताक़त और नेकी करने की क़ूवत सिर्फ़ अल्लाह से ही मिलती है जो कि बुज़ुर्ग व बरतर है।'

ऐ अबुल हसन ! तुम तीन जुमे या पांच जुमे या सात जुमे तक ऐसे करो, अल्लाह के हुक्म से तुम्हारी दुआ ज़रूर क़ुबूल होगी। उस ज़ात की क़सम, जिसने मुझे हक़ देकर भेजा, आज तक कभी किसी मोमिन की दुआ रद्द नहीं हुई।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं, हज़रत अली रज़ि० को पांच या सात जुमे ही गुज़रे होंगे कि वह हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! पहले मैं लगभग चार आयतें पढ़ता था और वे भी मुझे याद न होती थीं और अब लगभग चालीस आयतें पढ़ता हूं, और ऐसी याद हो जाती हैं कि जब वे आयतें पढ़ता हूं तो ऐसे लगता है कि गोया अल्लाह की किताब मेरी आंखों के सामने खुली रखी है और पहले मैं हदीस सुनता था और जब उसको

दोबारा कहता था, तो ज़ेहन से निकल जाती थी और अब बहुत-सी हदीसें सुनता हूं और जब दूसरों से नक़ल करता हूं तो एक लफ़्ज़ भी नहीं छूटता। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, ऐ अबुल हसन! रब्बे काबा की क़सम! तुम मोमिन हो।[1]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की दुआएं

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे यह बात पहुंची है कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी दुआ में फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ الَّذِیْ هُوَ خَیْرٌ فِیْ عَاقِبَةِ اَمْرِیْ اَللّٰهُمَّ
اجْعَلْ مَا تُعْطِیْنِیْ مِنَ الْخَیْرِ رِضْوَانَکَ وَالدَّرَجَاتِ الْعُلٰی فِیْ جَنَّاتِ النَّعِیْمِ

'ऐ अल्लाह! मैं तुझसे अपने हर काम के अंजाम में ख़ैर का सवाल करता हूं। ऐ अल्लाह! तू मुझे जिस ख़ैर की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, उसे अपनी रिज़ा का और अपनी नेमतों वाली जन्नतों में ऊंचे दर्जों के हासिल होने का ज़रिया बना।'[2]

हज़रत मुआविया बिन क़ुर्रा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी दुआ में फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ خَیْرَ عُمْرِیْ آخِرَهٗ وَ خَیْرَ عَمَلِیْ خَوَاتِمَهٗ وَ خَیْرَ اَیَّامِیْ یَوْمَ اَلْقَاکَ

'ऐ अल्लाह! मेरी उम्र का सबसे बेहतरीन हिस्सा वह बना जो उसका आख़िर हो और मेरा सबसे बेहतरीन अमल वह बना जो ख़ात्मे वाला हो और मेरा सबसे बेहतरीन दिन वह बना जो तेरी मुलाक़ात का दिन हो।'[3]

हज़रत अब्दुल अज़ीज़ बिन सलमा माजिशून रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे एक ऐसे साहब ने बयान किया, जिन्हें मैं सच्चा समझता हूं

1. तिर्मिज़ी, भाग 2, पृ० 196,
2. अहमद
3. कंज़, भाग 1, पृ० 303,

कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी दुआ में फ़रमाया करते थे—

أَسْأَلُكَ تَمَامَ النِّعْمَةِ فِي الْأَشْيَاءِ كُلِّهَا وَالشُّكْرَ لَكَ عَلَيْهَا حَتَّى تَرْضَى وَبَعْدَ الرِّضَا
وَالْخِيَرَةَ فِي جَمِيعِ مَا يَكُونُ فِيهِ الْخِيَرَةُ بِجَمِيعِ مَيْسُورِ الْأُمُورِ كُلِّهَا لَا بِمَعْسُورِهَا يَا كَرِيمُ

'मैं तुझसे सवाल करता हूं कि तमाम चीज़ों में तू नेमत पूरी फ़रमा दे और इन चीज़ों पर इतना शुक्र अदा करने की तौफ़ीक़ मांगता हूं कि जिससे तू राज़ी हो जाए और इसके बाद दरख़्वास्त करता हूं कि जितनी चीज़ों में किसी एक पहलू के अख़्तियार करने की शक्ल होती है, उनमें मैं आसान शक्ल अख़्तियार करूं और मुश्किल न अख़्तियार करूं ऐ क़रीम!'[1]

हज़रत अबू यज़ीद मदायनी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की एक दुआ यह भी थी—

اَللّٰهُمَّ هَبْ لِي إِيمَانًا وَيَقِينًا وَمُعَافَاةً وَنِيَّةً

'ऐ अल्लाह! मुझे ईमान का यक़ीन, आफ़ियत और सच्ची नीयत नसीब फ़रमा।'[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे—

اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ تَأْخُذَنِي عَلَى غِرَّةٍ أَوْ تَذَرَنِي فِي غَفْلَةٍ أَوْ تَجْعَلَنِي مِنَ الْغَافِلِينَ

'ऐ अल्लाह! मैं इस बात से तेरी पनाह मांगता हूं कि अचानक बेख़बरी में मेरी पकड़ करे या मुझे ग़फ़लत में पड़ा रहने दे या मुझे ग़ाफ़िल लोगों में से बना दे।'[3]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ عَمَلِي صَالِحًا وَاجْعَلْهُ لَكَ خَالِصًا وَلَا تَجْعَلْ لِأَحَدٍ فِيهِ شَيْئًا

1. इब्ने अबिद्दुन्या,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 303,
3. इब्ने अबी शैबा, अबू नुऐम

'ऐ अल्लाह ! मेरे अमल नेक बना दे और मेरे अमल को ख़ालिस अपने लिए बना दे और मेरे अमल में और किसी का ज़र्रा भर भी हिस्सा न होने दे।'[1]

हज़रत अम्र बिन मैमून रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी दुआ में यह भी कहा करते थे—

اَللّٰهُمَّ تَوَفَّنِیْ مَعَ الْاَبْرَارِ وَ لَا تَجْعَلْنِیْ فِی الْاَشْرَارِ وَ قِنِیْ عَذَابَ النَّارِ وَ اَلْحِقْنِیْ بِالْاَخْيَارِ

'ऐ अल्लाह ! तू मुझे नेक लोगों के साथ मौत दे और मुझे बुरे लोगों में से न बना और मुझे जहन्नम के अज़ाब से बचा और मुझे नेक और भले लोगों के साथ शामिल फ़रमा।'[2]

हज़रत अबुल आलिया रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने अक्सर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को यह कहते हुए सुना—

اَللّٰهُمَّ عَافِنَا وَاعْفُ عَنَّا

'ऐ अल्लाह ! हमें आफ़ियत नसीब फ़रमा और हमें माफ़ फ़रमा।'[3]

हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, मैंने अपने वालिद (हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु) को यह कहते हुए सुना—

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِیْ قَتْلًا فِیْ سَبِيْلِكَ وَوَفَاةً فِیْ بَلَدِ نَبِيِّكَ

'ऐ अल्लाह ! मुझे अपने रास्ते की शहादत और अपने नबी के शहर की मौत नसीब फ़रमा।'

मैंने कहा, आपको ये दोनों बातें कैसे हासिल हो सकती हैं? हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह जहां चाहे अपने फ़ैसले को वजूद दे सकता है।[4]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यों दुआ की—

1. अहमद,
2. अदबुल मुफ़रद,
3. कंज़, भाग 1, पृ० 303,
4. इब्ने साद, अबू नुऐम,

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ ظُلْمِيْ وَ كُفْرِيْ

'ऐ अल्लाह ! मेरे ज़ुल्म और मेरे कुफ़्र को माफ़ फ़रमा।'

एक आदमी ने कहा, यह ज़ुल्म का लफ़्ज़ तो ठीक है, लेकिन कुफ़्र का क्या मतलब है ? हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, (क़ुरआन में है)—

اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ

'सच यह है कि आदमी बहुत ही बे-इंसाफ़ और बड़ा ही नाशुक्रा है।' (यानी कुफ़्र से नाशुक्री मुराद है।)[1]

हज़रत अबू उस्मान नह्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहे थे। मैंने यह कहते हुए सुना—

اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنِيْ فِي السَّعَادَةِ

فَاَثْبِتْنِيْ فِيْهَا وَ اِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنِيْ فِي الشَّقَاوَةِ فَامْحُنِيْ مِنْهَا وَ اَثْبِتْنِيْ فِي السَّعَادَةِ فَاِنَّكَ تَمْحُوْ مَا تَشَاءُ وَ تُثْبِتُ وَ عِنْدَكَ اُمُّ الْكِتَابِ

'ऐ अल्लाह ! अगर तूने मेरा नाम ख़ुशक़िस्मत इंसानों में लिखा है तो मेरा नाम उनमें लिखा रहने दे और अगर मेरा नाम बदक़िस्मत लोगों में लिखा हुआ है, तो इसमें से मिटा कर ख़ुशक़िस्मत लोगों में लिख दे, क्योंकि तू जो चाहे मिटा सकता है और जो चाहे बाक़ी रख सकता है और तेरे पास लौहे महफ़ूज़ है।'[2]

हज़रत यज़ीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को आधी रात के वक़्त रमादा क़हत के ज़माने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हुए देखा, वह यह दुआ कर रहे थे—

اَللّٰهُمَّ لَا تُهْلِكْنَا بِالسِّنِيْنَ وَ ارْفَعْ عَنَّا هٰذَا الْبَلَاءَ

'ऐ अल्लाह ! हमें क़हत से हलाक न फ़रमा और हमसे यह मुसीबत

1. इब्ने अबी हातिम,
2. कंज़, भाग 1, पृ० 303, 304,

दूर फ़रमा', और वह यह दुआ बार-बार करते रहे।[1]

हज़रत यज़ीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने रमादा क़हत के ज़माने में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु पर चादर देखी, जिस पर सोलह पैवंद लगे हुए थे और आपकी चादर पांच हाथ और एक बालिश्त लम्बी थी और यह दुआ कर रहे थे—

اَللّٰھُمَّ لَا تُھْلِکْنَا بِالسِّنِیْنَ وَ ارْفَعْ عَنَّا ھٰذَا الْبَلَاءَ

'ऐ अल्लाह! हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत की हलाकत मेरे ज़माने में न कर।'[2]

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया—

اَللّٰھُمَّ لَا تَجْعَلْ قَتْلِیْ بِیَدِ رَجُلٍ صَلّٰی رَکْعَۃً اَوْ سَجْدَۃً وَّاحِدَۃً یُحَاجُّنِیْ بِھَا عِنْدَکَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

'ऐ अल्लाह! मेरा क़त्ल ऐसे आदमी के हाथों न कर, जिसने एक रक्अत भी पढ़ी हो या एक सज्दा भी किया हो और वह उसकी वजह से क़ियामत के दिन मुझसे झगड़ा करे।' (यानी मेरी शहादत मुसलमान के हाथों न हो।)[3]

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने कंकरियों की एक ढेरी बनाई, फिर उस पर अपने कपड़ों का किनारा डालकर उस पर सर रखकर लेट गए, फिर आसमान की तरफ़ अपने हाथ उठाकर यह दुआ की—

اَللّٰھُمَّ کَبِرَتْ سِنِّیْ وَ
ضَعُفَتْ قُوَّتِیْ وَانْتَشَرَتْ رَعِیَّتِیْ فَاقْبِضْنِیْ اِلَیْکَ غَیْرَ مُضَیِّعٍ وَّ لَا مُفَرِّطٍ

'ऐ अल्लाह! मेरी उम्र ज़्यादा हो गई और मेरे हाथ-पैर कमज़ोर हो

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 319,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 320
3. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 413,

गए और मेरी रियाया फैल गई, इसलिए अब तू मुझे अपनी ओर इस तरह उठा ले कि न तो मैं किसी का हक़ ज़ाया करने वाला हूं और न किसी के हक़ में कमी करने वाला हूं।'[1]

हज़रत अस्वद बिन बिलाल मुहारबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा बने, तो उन्होंने मिंबर पर खड़े होकर अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, ऐ लोगो ! ग़ौर से सुनो ! मैं दुआ करूंगा, तुम सब इस पर आमीन कहना—

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ غَلِيْظٌ فَلَيِّنِّيْ وَشَحِيْحٌ فَسَخِّنِيْ وَضَعِيْفٌ فَقَوِّنِيْ

'ऐ अल्लाह ! मैं सख़्त हूं, मुझे नर्म कर दे, कंजूस हूं, मुझे सख़ी बना दे, कमज़ोर हूं, मुझे मज़बूत बना दे।'[2]

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु किसी जनाज़े की नमाज़ पढ़ाते, तो फ़रमाते, तेरा यह बन्दा दुनिया से रिहाई पा गया और दुनिया दुनिया वालों के लिए छोड़कर चला गया और अब वह तेरा मुहताज है, तुझे उसकी कोई ज़रूरत नहीं। वह इस बात की गवाही दिया करता था कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तेरे बन्दे और रसूल हैं। ऐ अल्लाह ! उसकी मग़फ़िरत फ़रमा, उससे दरगुज़र फ़रमा और उसे उसके नबी के पास पहुंचा दे।[3]

हज़रत कसीर बिन मुदरिक रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब क़ब्र पर मिट्टी डाल दी जाती तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते—

اَللّٰهُمَّ اَسْلَمَهُ اِلَيْكَ الْاَهْلُ وَ الْمَالُ وَ الْعَشِيْرَةُ وَذَنْبُهُ عَظِيْمٌ فَاغْفِرْ لَهُ

'ऐ अल्लाह ! बाल-बच्चे, माल और ख़ानदान वालों ने उसे तेरे सुपुर्द कर दिया है और उसके गुनाह भी बड़े-बड़े हैं, उसकी मग़फ़िरत फ़रमा।'

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे—

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 54,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 54,
3. कंज़, भाग 8, पृ० 113,

اَعُوْذُبِکَ مِنْ جَهْدِ الْبَلَاءِ وَدَرَکِ الشَّقَاءِ وَ
شَمَاتَةِ الْاَعْدَاءِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنَ السِّجْنِ وَالْقَیْدِ وَالسَّوْطِ

'ऐ अल्लाह ! बला व मुसीबत की सख़्ती से और बदक़िस्मती के पकड़ लेने से और दुश्मनों के ख़ुश होने से तेरी पनाह चाहता हूं और जेल, बेड़ी और कोड़े से तेरी पनाह चाहता हूं।'[1]

हज़रत सौरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे यह ख़बर पहुंची है कि हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु यह दुआ किया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اِنَّ ذُنُوْبِیْ لَا تَضُرُّکَ وَاِنَّ رَحْمَتَکَ اِیَّایَ لَا تَنْقُصُکَ

'ऐ अल्लाह ! मेरा गुनाह तेरा कोई नुक़्सान नहीं कर सकते और तू मुझ पर रहम फ़रमाए तो इससे तेरे ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं आएगी।'[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु जब नया चांद देखा करते तो फ़रमाया करते—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ خَیْرَ هٰذَا الشَّهْرِ وَفَتْحَهٗ وَنَصْرَهٗ وَبَرَکَتَهٗ وَرِزْقَهٗ وَنُوْرَهٗ وَطَهُوْرَهٗ
وَهُدَاهُ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّ مَا فِیْهِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهٗ

'ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे इस महीने की ख़ैर और इसकी जीत, मदद, बरकत, रोज़ी, नूर, पाकी और हिदायत मांगता हूं और उसके शर से और जो कुछ इसमें है, उसके शर से और जो कुछ इसके बाद है, उसके शर से तेरी पनाह चाहता हूं।'[3]

हज़रत उमर बिन सईद नख़ई रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु के पीछे इब्ने मुकनिफ़ की जनाज़े की नमाज़ पढ़ी। हज़रत अली रज़ि० ने चार तक्बीरें कहीं और एक तरफ़ सलाम फेरा। फिर उन्होंने इब्ने मुकनिफ़ को क़ब्र में

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 119
2. कंज़, भाग 1, पृ० 304,
3. कंज़, भाग 4, पृ० 326,

उतारा और फिर फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! यह तेरा बन्दा है और तेरे बन्दे का बेटा है। तेरा मेहमान बना है और तू बेहतरीन मेज़बान है। ऐ अल्लाह ! जिस क़ब्र में यह दाख़िल हुआ है, उसे वसी (फैली हुई) फ़रमा दे और इसके गुनाह माफ़ फ़रमा दे। हम तो इसके बारे में ख़ैर ही जानते हैं, लेकिन तू हमसे ज़्यादा जानता है और यह शहादत का कलिमा—

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

पढ़ा करता था।[1]

हज़रत अबू हय्याज असदी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहा था कि इतने में मैंने एक आदमी देखा, जो सिर्फ़ यह दुआ मांग रहा था—

اَللّٰهُمَّ قِنِيْ شُحَّ نَفْسِيْ

'ऐ अल्लाह ! मुझे मेरे नफ़्स के बुख़्ल से बचा दे।' और कुछ नहीं मांग रहा था। मैंने उससे सिर्फ़ यही दुआ करने की वजह पूछी। उसने कहा, जब मुझे मेरे नफ़्स के शर से बचा दिया जाएगा, तो मैं न चोरी करूंगा, न ज़िना करूंगा और न कोई बुरा काम करूंगा। मैंने उनके बारे में लोगों से पूछा कि यह कौन है? तो लोगों ने बताया कि यह हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।[2]

हज़रत अबू उबैदा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, (मेरे बाप) हज़रत अब्दुल्लाह (बिन मस्ऊद) रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा गया कि जिस रात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपसे फ़रमाया था मांगो, जो मांगोगे, तुम्हें दिया जाएगा, उस रात आपने क्या दुआ मांगी थी? हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने यह दुआ मांगी थी—

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِنِعْمَتِكَ السَّابِقَةِ الَّتِيْ اَنْعَمْتَ بِهَا وَ بَلَاءِكَ الَّذِيْ اِبْتَلَيْتَنِيْ وَ بِفَضْلِكَ الَّذِيْ اَفْضَلْتَ عَلَيَّ اَنْ تُدْخِلَنِي الْجَنَّةَ اَللّٰهُمَّ اَدْخِلْنِي الْجَنَّةَ بِفَضْلِكَ وَ مَنِّكَ وَ رَحْمَتِكَ

'ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे ऐसा ईमान मांगता हूं जो बाक़ी रहे और

1. कंज़, भाग 8, पृ० 119,
2. तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 339,

ज़ायल न हो और ऐसी नेमत मांगता हूं जो कभी ख़त्म न हो और हमेशा रहने की जन्नत के आला दर्जे में तेरे-नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ मांगता हूं।'[1]

हज़रत अबू उबैदा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मेरे वालिद साहब ने फ़रमाया, एक रात मैं नमाज़ पढ़ रहा था कि इतने में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा मेरे पास से गुज़रे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मांगो, जो मांगोगे वह तुम्हें दिया जाएगा।

हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं कि मैंने बाद में जाकर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० से पूछा कि क्या दुआ मांगी थी? उन्होंने कहा, मेरी एक दुआ है जो मैं कभी नहीं छोड़ता और वह यह है—

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ اِيْمَانًا لَا يَبِيْدُ

'ऐ अल्लाह! मैं तुझसे हलाक न होने वाला ईमान मांगता हूं।' फिर आगे पीछे जैसी दुआ ज़िक्र की है और ये लफ़्ज़ भी ज़िक्र किए हैं—

وَقُرَّةَ عَيْنٍ لَا تَنْقَطِعُ

'और ख़त्म न होने वाली आंखों की ठंडक मांगता हूं।'[2]

अबू नुऐम की दूसरी रिवायत में यह है कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने वापस आकर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० से कहा, जो दुआ तुम अभी मांग रहे थे, वह ज़रा मुझे भी सुनाओ। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा, पहले मैंने अल्लाह की हम्द व सना और अज़्मत बयान की, फिर मैंने यह कहा—

لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَعْدُكَ حَقٌّ وَ لِقَاؤُكَ حَقٌّ وَ الْجَنَّةُ حَقٌّ وَ النَّارُ حَقٌّ وَ رُسُلُكَ حَقٌّ
وَ كِتَابُكَ حَقٌّ وَ النَّبِيُّوْنَ حَقٌّ وَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَقٌّ

'तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तेरा वायदा हक़ है, तेरी मुलाक़ात हक़ है, जन्नत हक़ है, दोज़ख़ हक़ है, तेरे रसूल हक़ पर हैं, तेरी किताब हक़ पर है,

1. कंज़, भाग 1, पृ० 307, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 236,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 127

सारे नबी हक़ पर हैं, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हक़ पर हैं।[1]

हज़रत शक़ीक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ये दुआएं कसरत से किया करते थे—

رَبَّنَا اَصْلِحْ بَيْنَنَا وَ اهْدِنَا سُبُلَ السَّلَامِ وَ نَجِّنَا مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلَى النُّوْرِ وَ
اصْرِفْ عَنَّا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَ مَا بَطَنَ وَ بَارِكْ لَنَا فِىْ اَسْمَاعِنَا وَ اَبْصَارِنَا وَ قُلُوْبِنَا وَ
اَزْوَاجِنَا وَ ذُرِّيَّاتِنَا وَ تُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ وَ اجْعَلْنَا شَاكِرِيْنَ لِنِعْمَتِكَ مُثْنِيْنَ
بِهَا قَابِلِيْنَ بِهَا وَ اَتْمِمْهَا عَلَيْنَا

'ऐ हमारे रब ! हमारे आपस के ताल्लुक़ात ख़ुशगवार बना दे और हमें इस्लाम के रास्ते दिखा और हमें अंधेरों से निजात देकर रोशनी में ला और हमको ज़ाहिरी-बातिनी बदकारियों से दूर रख और हमारे कानों को, हमारी आंखों को, हमारे दिलों को और हमारे बीवी-बच्चों को हमारे हक़ में बरकत की वजह बना दे और हमारी तौबा क़ुबूल फ़रमा। बेशक तू ही बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान है और हमें अपनी नेमतों का शुक्रगुज़ार, उनका सनाख़्वां और लोगों के सामने उन्हें बयान करने वाला बना दे और उन (नेमतों) को हम पर पूरा फ़रमा दे।'[2]

हज़रत अबुल अह्वस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को यह दुआ मांगते हुए सुना—

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ بِنِعْمَتِكَ السَّابِغَةِ الَّتِىْ اَنْعَمْتَ بِهَا وَ
بَلَائِكَ الَّذِىْ ابْتَلَيْتَنِىْ وَ بِفَضْلِكَ الَّذِىْ اَفْضَلْتَ عَلَىَّ اَنْ تُدْخِلَنِى الْجَنَّةَ اَللّٰهُمَّ اَدْخِلْنِى الْجَنَّةَ
بِفَضْلِكَ وَ مَنِّكَ وَ رَحْمَتِكَ

'ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे तेरी इस नेमते कामिला के वास्ते से, जो तूने मुझ पर की और उस आज़माइश के वास्ते से, जिसमें तूने मुझे मुब्तला किया था और तेरे उस फ़ज़्ल के वास्ते से जो तूने मुझ पर किया, यह सवाल करता हूं कि तू मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे, ऐ अल्लाह ! तू

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 128,
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 93,

अपने फ़ज़्ल व एहसान और रहमत से मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे।[1]

हज़रत अबू क़िलाबा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنِىْ فِىْ اَهْلِ الشَّقَاءِ فَامْحُنِىْ وَاثْبِتْنِىْ فِىْ اَهْلِ السَّعَادَةِ

'ऐ अल्लाह ! अगर तूने मेरा नाम बदबख़्ती वालों में लिखा हुआ है, तो वहां से मेरा नाम मिटा कर ख़ुशक़िस्मत लोगों में लिख दे।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उकैम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु यह दुआ मांगा करते थे—

اَللّٰهُمَّ زِدْنِىْ اِيْمَانًا وَّيَقِيْنًا وَّفِقْهًا اَوْ عِلْمًا

'ऐ अल्लाह ! मेरे ईमान व यक़ीन, समझ और इल्म को बढ़ा दे।[3]

हज़रत अबू वाइल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं एक दिन फ़ज्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में गया। हमने उनसे अन्दर आने की इजाज़त मांगी। उन्होंने फ़रमाया, अन्दर आ जाओ। हमने अपने दिल में कहा, हम कुछ देर इन्तिज़ार कर लेते हैं, शायद घर वालों में से किसी को उनसे कोई काम हो (तो वह अपना काम पूरा कर ले।)

इतने में हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० तस्बीह पढ़ते हुए हमारे पास आए और फ़रमाया, शायद तुम लोगों ने यह गुमान किया होगा कि अब्दुल्लाह के (यानी मेरे) घर वाले उस वक़्त ग़फ़लत में होंगे। फिर फ़रमाया, ऐ बांदी ! देखो, क्या सूरज निकल आया है? उसने कहा, नहीं, फिर जब उसको तीसरी बार कहा, देखो, क्या सूरज निकल आया है? तो उसने कहा, जी हां। इस पर उन्होंने कहा—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ وَهَبَنَا هٰذَا الْيَوْمَ وَاَقَالَنَا فِيْهِ
عَثَرَاتِنَا اَحْسَبُهٗ قَالَ وَلَمْ يُعَذِّبْنَا بِالنَّارِ

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 185,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 185,
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 185,

'तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने हमें यह दिन अता फ़रमाया और उसने इस दिन में हमारी तमाम लग़्ज़िशें माफ़ फ़रमा दें, (तभी तो हमें लग़्ज़िशों के बावजूद ज़िंदा रखा हुआ है।)

रिवायत करने वाले कहते हैं, मेरा ख़्याल यह है कि उन्होंने यह भी फ़रमाया था कि उसने हमें (लग़्ज़िशों की वजह से) आग से अज़ाब नहीं दिया।'[1]

हज़रत सुलैम बिन हंज़ला रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बाज़ार के दरवाज़े के पास आए और यह दुआ पढ़ी—

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ مِنْ خَیْرِھَا وَخَیْرِ

اَھْلِھَا وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّھَا وَشَرِّ اَھْلِھَا

'ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इस बाज़ार की ख़ैर और बाज़ार वालों की ख़ैर मांगता हूं और इस बाज़ार के शर और बाज़ार वालों के शर से तेरी पनाह चाहता हूं।'[2]

हज़रत क़तादा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु जब किसी बस्ती में दाख़िल होने का इरादा फ़रमाते, तो यह दुआ पढ़ते—

اَللّٰھُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ وَمَا اَظْلَلْتُ وَرَبَّ الشَّیَاطِیْنِ وَمَا اَضْلَلْتُ وَرَبَّ الرِّیَاحِ وَمَا اَذْرَتْ

اَسْئَلُکَ خَیْرَھَا وَخَیْرَ مَا فِیْھَا وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّھَا وَشَرِّ مَا فِیْھَا

'ऐ अल्लाह! जो कि तमाम आसमानों का और जिन पर आसमानों ने साया डाला है, उन तमाम चीज़ों का रब है, जो कि शैतानों का और जिनको शैतानों ने गुमराह किया है, उन सब का रब है और जो कि हवाओं का और उन तमाम चीज़ों का रब है जिन्हें हवाओं ने उड़ाया है, मैं तुझसे उस बस्ती की ख़ैर और जो कुछ उस बस्ती में है, उन सबकी

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 118,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 129

ख़ैर मांगता हूं और उसके शर से और जो कुछ उस बस्ती में है, उसके शर से तेरी पनाह चाहता हूं।'[1]

हज़रत सौर बिन यज़ीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु जब रात को तहज्जुद के लिए उठते तो यह दुआ करते—

اَللّٰهُمَّ قَدْ نَامَتِ الْعُيُوْنُ وَ غَارَتِ النُّجُوْمُ وَ اَنْتَ
حَيٌّ قَيُّوْمٌ اَللّٰهُمَّ طَلَبِيْ لِلْجَنَّةِ بَطِيْئٌ وَ هَرَبِيْ مِنَ النَّارِ ضَعِيْفٌ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِيْ عِنْدَكَ هُدًى
تَرُدُّهُ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ

'ऐ अल्लाह! आंखें सो चुकी हैं और सितारे डूब गए हैं और तू हमेशा ज़िंदा रहने वाला और सारी कायनात को क़ायम रखने वाला है। ऐ अल्लाह! मेरे अन्दर जन्नत की तलब बहुत सुस्त है और मुझ में दोज़ख़ की आग से भागने का जज़्बा बिल्कुल कमज़ोर है। ऐ अल्लाह! मुझे अपने पास से ऐसी हिदायत अता फ़रमा जो क़ियामत तक चलती रहे, बेशक तू वायदा ख़िलाफ़ी नहीं करता।'[2]

बनू नज्जार की एक औरत कहती हैं, मस्जिद के आस-पास के घरों में मेरा घर सबसे ऊंचा था। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु रोज़ाना सुबह को फ़ज्र की अज़ान मेरी छत पर दिया करते थे। सेहरी के वक़्त आकर छत पर बैठकर सुबह सादिक़ का इन्तिज़ार करते, जब सुबह सादिक़ नज़र आती तो अंगड़ाई लेते, फिर यह दुआ करते—

اَللّٰهُمَّ اَحْمَدُكَ وَ اَسْتَعِيْنُكَ عَلٰى قُرَيْشٍ اَنْ يُقِيْمُوْا دِيْنَكَ

'ऐ अल्लाह! मैं तेरी तारीफ़ करता हूं और क़ुरैश के लिए तुझसे मदद मांगता हूं ताकि वे तेरे दीन को क़ायम करें।'

फिर वह अज़ान देते, मुझे बिल्कुल याद नहीं कि किसी रात हज़रत बिलाल रज़ि० ने ये दुआ वाले कलिमे (अज़ान से पहले) छोड़े हों।[3]

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 135,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 233, हैसमी, भाग 10, पृ० 185
3. बिदाया, भाग 3, पृ० 233

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी हज़रत हिन्द कहती हैं, हज़रत बिलाल रज़ि० जब बिस्तर पर लेटते, तो यह दुआ करते—

اَللّٰهُمَّ تَجَاوَزْ عَنْ سَيِّئَاتِىْ وَاعْذِرْنِىْ بِعِلَّاتِىْ

'ऐ अल्लाह ! मेरी बुराइयों से दरगुज़र फ़रमा और मेरी बीमारियों की वजह से मुझे माज़ूर क़रार दे।'[1]

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु जब बिस्तर पर लेटते, तो यह दुआ करते—

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ غِنَى الْاَهْلِ وَالْمَوْلٰى وَاَعُوْذُبِكَ اَنْ تَدْعُوَ عَلَىَّ رَحِمٌ قَطَعْتُهَا

'ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे बाल-बच्चों के और तमाम मुताल्लिक़ लोगों के ग़िना को मांगता हूं और मैं इस बात से तेरी पनाह चाहता हूं कि मैं रिश्ता तोड़ूं और वह रिश्ता मेरे लिए बद-दुआ करे।'[2]

हज़रत उर्वः रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु यह दुआ करते—

اَللّٰهُمَّ هَبْ لِىْ حَمْدًا وَهَبْ لِىْ مَجْدًا لَا مَجْدَ اِلَّا بِفَعَالٍ وَلَا فَعَالَ اِلَّا بِمَالٍ اَللّٰهُمَّ لَا يُصْلِحُنِى الْقَلِيْلُ وَلَا اَصْلُحُ عَلَيْهِ

'ऐ अल्लाह ! मुझे तारीफ़ अता फ़रमा और मुझे बुज़ुर्गी अता फ़रमा और बुज़ुर्गी किसी बड़े काम के ज़रिए ही से हासिल हो सकती है और कोई बड़ा काम माल के ज़रिए ही से हुआ करता है, ऐ अल्लाह ! थोड़ा माल मेरे हालात दुरुस्त नहीं कर सकता और न ही थोड़े माल से मैं दुरुस्त रह सकता हूं, (इसलिए तू अपनी शान के मुताबिक़ अपने ख़ज़ानों में से अता फ़रमा।)[3]

हज़रत बिलाल बिन साद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 125,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 125,
3. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 614,

अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे—

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ تَفْرِقَۃِ الْقَلْبِ

'ऐ अल्लाह ! मैं दिल के बिखर जाने से तेरी पनाह चाहता हूं।'

किसी ने पूछा, दिल के बिखर जाने से क्या मुराद है? फ़रमाया, इससे मुराद यह है कि अल्लाह की ओर से मेरे लिए हर वादी में कुछ माल रख दिया जाए (और मुझे हर वादी में जाकर अपने मुक़द्दर का माल जमा करना पड़े।)[1]

हज़रत इस्माईल बिन उबैदुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे—

اَللّٰھُمَّ تَوَفَّنِیْ مَعَ الْاَبْرَارِ وَ لَا تُبْقِنِیْ مَعَ الْاَشْرَارِ

'ऐ अल्लाह ! मुझे नेक लोगों के साथ मौत दे और मुझे बुरे लोगों के साथ बाक़ी न रख।'[2]

हज़रत लुक़मान बिन आमिर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे—

اَللّٰھُمَّ لَا تَبْتَلِنِیْ بِعَمَلِ سُوْءٍ فَاُدْعٰی بِہٖ رَجُلَ سُوْءٍ

'ऐ अल्लाह ! मुझे किसी बुरे अमल में मुब्तला न फ़रमा, वरना मुझे बुरा आदमी कहकर पुकारा जाएगा।'

हज़रत हस्सान बिन अतीया रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे—

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ اَنْ تَلْعَنَنِیْ قُلُوْبُ الْعُلَمَاءِ

'ऐ अल्लाह ! मैं इस बात से तेरी पनाह चाहता हूं कि उलेमा के दिल मुझ पर लानत करें।' किसी ने पूछा, इनके दिल आपको कैसे लानत करेंगे? फ़रमाया, इनके लिए मुझको नापसंद करने लगें।[3]

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 219,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 220,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 223

हज़रत अब्दुल्लाह बिन यज़ीद बिन रबीआ दमिश्क़ी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि एक बार मैं शुरू रात में मस्जिद गया, वहां मेरा गुज़र एक आदमी पर हुआ जो सज्दे में यह कह रहा था, ऐ अल्लाह ! मैं डरने वाला और पनाह मांगने वाला हूं, इसलिए मुझे अपने अज़ाब से पनाह दे और मांगने वाला फ़क़ीर हूं, इसलिए अपनी मेहरबानी से रोज़ी अता फ़रमा और जो गुनाह मुझसे हुए हैं उनके बारे में मेरे पास कोई उज़्र नहीं है, जिसे मैं तेरे सामने पेश कर सकूं और न मैं ऐसा ताक़तवर हूं कि तुझसे ख़ुद को बचा सकूं, बल्कि मैं तो सर से पैर तक गुनाहगार हूं और तुझसे मग़्फ़िरत का तलबगार हूं।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत अबुद्दर्दा को दुआ के लिए ये कलिमे बहुत पसन्द आए और अपने साथियों को ये कलिमे सिखाने लगे।[1]

हज़रत तमामा बिन हज़्न रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने एक बड़े मियां को ऊंची आवाज़ से यह कहते हुए सुना—

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّرِّ لَا يَخْلِطُهُ شَيْئٌ

'ऐ अल्लाह ! मैं इस शर से तेरी पनाह मांगता हूं, जिसके साथ कुछ भी ख़ैर मिला हुआ न हो, यानी ख़ालिस शर हो।'

मैंने पूछा, ये बड़े मियां कौन हैं? लोगों ने बताया, यह हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।[2]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे, ऐ अल्लाह ! मैं इस बात से तेरी पनाह चाहता हूं कि तू मेरे भाई अब्दुल्लाह बिन रवाहा के सामने मेरा कोई ऐसा अमल पेश करे जिससे वे शर्मिंदा हों। (हज़रत इब्ने रवाहा उनके जाहिलियत में भाई थे और उनकी दावत पर मुसलमान हुए थे।)[3]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 224,
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 99,
3. कंज़, भाग 1, पृ० 306.

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा सफ़ा पर यह दुआ किया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اعْصِمْنِیْ بِدِیْنِکَ وَ طَوَاعِیَتِکَ وَ طَوَاعِیَةِ رَسُوْلِکَ اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنِیْ
حُدُوْدَکَ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ مِمَّنْ یُّحِبُّکَ وَ یُحِبُّ مَلَائِکَتَکَ وَ یُحِبُّ رُسُلَکَ وَ یُحِبُّ عِبَادَکَ
الصَّالِحِیْنَ اَللّٰهُمَّ حَبِّبْنِیْ اِلَیْکَ وَ اِلٰی مَلَائِکَتِکَ وَ اِلٰی رُسُلِکَ وَ اِلٰی عِبَادِکَ الصَّالِحِیْنَ اَللّٰهُمَّ
یَسِّرْنِیْ لِلْیُسْرٰی وَ جَنِّبْنِی الْعُسْرٰی وَاغْفِرْلِیْ فِی الْاٰخِرَةِ وَ الْاُوْلٰی وَاجْعَلْنِیْ مِنْ اَئِمَّةِ الْمُتَّقِیْنَ
اَللّٰهُمَّ اِنَّکَ قُلْتَ اُدْعُوْنِیْ اَسْتَجِبْ لَکُمْ وَ اِنَّکَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ اَللّٰهُمَّ اِذْ هَدَیْتَنِیْ لِلْاِسْلَامِ
فَلَا تَنْزِعْنِیْ مِنْهُ وَ لَا تَنْزِعْهُ مِنِّیْ حَتّٰی تَقْبِضَنِیْ وَ اَنَا عَلَیْهِ

'ऐ अल्लाह ! अपने दीन के ज़रिए से और अपनी और अपने रसूल की इताअत के ज़रिए से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा। ऐ अल्लाह ! मुझे अपने हराम किए हुए कामों से बचा। ऐ अल्लाह ! मुझे उनमें से बना दे, जो तुझसे, तेरे फ़रिश्तों से, तेरे रसूलों से और तेरे नेक बन्दों से मुहब्बत करते हैं। ऐ अल्लाह ! मुझे अपना और अपने फ़रिश्तों का, अपने रसूलों का और अपने नेक बन्दों का महबूब बना दे। ऐ अल्लाह ! मुझे नेकी की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और बुराई से बचा और दुनिया व आख़िरत में मेरी मग़फ़िरत फ़रमा और मुझे मुत्तक़ियों का इमाम बना। ऐ अल्लाह ! तूने (क़ुरआन में) फ़रमाया है, मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी दरख़्वास्त क़ुबूल करूंगा और तू वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करता। ऐ अल्लाह ! जब तूने मुझे इस्लाम की हिदायत दी है तो मुझे इस्लाम से न निकाल और न उसे मुझसे छीन, बल्कि जब तू मेरी रूह क़ब्ज़ करे तो मैं इस्लाम पर हूं।'

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० सफ़ा, मर्वः पर और अरफ़ात और मुज़दलफ़ा में और मिना के दो जुमरों के दर्मियान और तवाफ़ में अपनी लम्बी दुआ के साथ यह दुआ भी मांगते थे।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सबरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा सुबह के वक़्त यह दुआ पढ़ते—

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 308

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنْ اَعْظَمِ عِبَادِكَ عِنْدَكَ نَصِيْبًا فِىْ كُلِّ خَيْرٍ تَقْسِمُهُ الْغَدَاةَ وَنُوْرًا تَهْدِىْ بِهٖ وَرَحْمَةً تَنْشُرُهَا وَرِزْقًا تَبْسُطُهٗ وَضُرًّا تَكْشِفُهٗ وَبَلَاءً تَرْفَعُهٗ وَفِتْنَةً تَصْرِفُهَا

'ऐ अल्लाह ! मुझे अपने उन बन्दों में से बना कि आज सुबह तू जितनी ख़ैरें बांटेगा, उनका उन ख़ैरों में तेरे नज़दीक सबसे ज़्यादा हिस्सा हो और जिस नूर से तू हिदायत देता है और जिस रहमत को तू फैलाता है और जिस रोज़ी को तू वुसअत देता है और जिस तक्लीफ़ को तू दूर करता है और जिस आज़माइश को तू हटाता है और जिस फ़िले को तू फेर देता है, ये सब चीज़ें उन सबसे ज़्यादा हासिल हों।'[1]

हज़रत सईद बिन जुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الَّذِىْ اَشْرَقَتْ لَهُ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اَنْ تَجْعَلَنِىْ فِىْ حِرْزِكَ وَحِفْظِكَ وَجِوَارِكَ وَتَحْتَ كَنَفِكَ

'ऐ अल्लाह ! मैं तेरी ज़ात के उस नूर के वास्ते से, जिसकी वजह से सारे आसमान व ज़मीन रोशन हो गए, तुझसे इस बात का सवाल करता हूं कि तू अपने हिफ़्ज़ व अमान में, अपनी पनाह में अपने साए के नीचे ले ले।'[2]

हज़रत सईद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ قَنِّعْنِىْ وَبَارِكْ لِىْ فِيْهِ وَاخْلُفْ عَلٰى كُلِّ غَائِبَةٍ بِخَيْرٍ

'ऐ अल्लाह ! तूने मुझे जो कुछ दिया है, उस पर मुझे क़नाअत नसीब फ़रमा और उसमें बरकत नसीब फ़रमा और मेरी जितनी चीज़ें इस वक़्त यहां मौजूद नहीं हैं, बल्कि ग़ायब हैं, इन सब चीज़ों में तू ख़ैर के साथ मेरा ख़लीफ़ा बन जा, उन्हें अच्छी तरह संभाल ले।'[3]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 304, हैसमी, भाग 10, पृ० 184,
2. बज़्ज़ार, हैसमी,
3. अदबुल मुफ़रद, पृ० 101,

हज़रत ताऊस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को यह फ़रमाते हुए सुना—

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ شَفَاعَةَ مُحَمَّدٍ الْكُبْرٰى وَارْفَعْ دَرَجَتَهُ الْعُلْيَا وَاَعْطِهٖ سُؤْلَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى كَمَا اٰتَيْتَ اِبْرَاهِيْمَ وَمُوْسٰى عَلَيْهِمَا السَّلَامُ

'ऐ अल्लाह ! मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) की शफ़ाअते कुबरा क़ुबूल फ़रमा और उनके बुलन्द दर्जे को और ऊंचा फ़रमा और उन्होंने आपसे जो कुछ मांगा है, वह सब कुछ उन्हें दुनिया और आख़िरत में अता फ़रमा, जैसे तूने हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को अता फ़रमाया।'[1]

हज़रत उम्मे दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद रज़ियल्लाहु अन्हु यह दुआ किया करते थे—

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ الرِّضَا بِالْقَضَاءِ وَالْقَدَرِ وَبَرْدَ الْعَيْشِ بَعْدَ الْمَوْتِ وَلَذَّةَ النَّظَرِ اِلٰى وَجْهِكَ وَالشَّوْقَ اِلٰى لِقَائِكَ فِىْ غَيْرِ ضَرَّاءَ مُضِرَّةٍ وَلَا فِتْنَةٍ مُضِلَّةٍ

'ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे इस बात का सवाल करता हूं कि तेरी हर तक़्दीर और फ़ैसले पर राज़ी रहा करूं और मौत के बाद मुझे उम्दा ज़िंदगी नसीब हो और तेरे दीदार की लज़्ज़त हासिल हो और मुझे तेरी मुलाक़ात का शौक़ नसीब हो और तक्लीफ़ पहुचांने वाली मुसीबत और गुमराह करने वाले फ़िल्ते से मेरी हिफ़ाज़त हो।'

हज़रत फ़ज़ाला कहते थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ये तमाम दुआएं मांगा करते थे।[2]

हज़रत मक़्बुरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मरवान हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु के मरज़ुल वफ़ात में उनके पास गया और उसने कहा, ऐ अबू हुरैरह ! अल्लाह आपको शिफ़ा अता फ़रमाए। उन्होंने फ़रमाया—

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اُحِبُّ لِقَاءَكَ فَاَحِبَّ لِقَائِىْ

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 513,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 177

'ऐ अल्लाह ! मैं तेरी मुलाक़ात को महबूब रखता हूं, तू मेरे से मुलाक़ात को महबूब बना ले।'

चुनांचे वहां से चलकर मरवान अभी अस्हाबुल क़ता मुक़ाम तक नहीं पहुंचा था कि पीछे हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हिशाम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा साल या महीना के शुरू होने पर यह दुआ पढ़ा करते थे—

اَللّٰهُمَّ اَدْخِلْهُ عَلَيْنَا بِالْاَمْنِ وَ الْاِيْمَانِ

وَ السَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ وَ رِضْوَانٍ مِنَ الرَّحْمٰنِ وَ جِوَارٍ مِّنَ الشَّيْطَانِ

'ऐ अल्लाह ! इस साल और महीने को अम्न, ईमान, सलामती, इस्लाम, रहमान की रिज़ा और शैतान से पनाह के साथ हम पर दाख़िल फ़रमा।'[2]

हज़रत अबू उमामा बिन सह्ल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा, सहाबा जब किसी बस्ती के पास पहुंचते या उसमें दाख़िल होते तो यह दुआ पढ़ते—

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لَنَا فِيْهَا رِزْقًا

'ऐ अल्लाह ! इस बस्ती में हमारे लिए रोज़ी मुक़र्रर फ़रमा।'

वह यह दुआ किस डर से पढ़ा करते थे ? हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया, बस्ती के वाली के ज़ुल्म का और बारिश न होने का डर होता था।[3]

हज़रत साबित रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु जब अपने भाई के लिए दुआ करते, तो यह कहते, इस पर उन नेक लोगों वाली रहमतें नाज़िल फ़रमाएं जो ज़ालिम और बदकार नहीं, जो रात भर इबादत करते हैं और दिन को रोज़ा रखते हैं।[4]

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 339
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 139,
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 135,
4. अदबुल मुफ़रद, पृ० 93,

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा जब बादल गरजने की आवाज़ सुनते तो बात करना छोड़ देते और यह पढ़ते—

سُبْحَانَ الَّذِي يُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلَائِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ

'वह ज़ात पाक है जिसके डर से बिजली का फ़रिश्ता और दूसरे फ़रिश्ते उसकी हम्द के साथ पाकी बयान करते हैं' फिर फ़रमाते, यह ज़मीन वालों के लिए अल्लाह की ओर से सख़्त धमकी है।[1]

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की एक दूसरे के लिए दुआएं

हज़रत मुहम्मद, हज़रत तलहा, हज़रत मुहल्लब, हज़रत अम्र और हज़रत सईद रहमतुल्लाहि अलैहिम कहते हैं, हज़रत सिमाक बिन मख़्रमा, हज़रत सिमाक बिन उबैद और हज़रत सिमाक बिन ख़रशा रज़ियल्लाहु अन्हुम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास वफ़्द बनकर आए। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह आप लोगों में बरकत अता फ़रमाए। ऐ अल्लाह ! इनके ज़रिए से इस्लाम को बुलन्द फ़रमा और इनके ज़रिए से इस्लाम को मज़बूत फ़रमा।[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन काब बिन मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब मेरे वालिद (हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु) की आंख की रोशनी चली गई, तो मैं उनका रहबर हुआ करता था। जब मैं उनके साथ जुमा के लिए जाता और वह अज़ान सुनते तो हज़रत अबू उमामा, असद बिन ज़ुरारा रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए इस्तिग़फ़ार करते और उनके लिए दुआ करते।

मैंने उनसे पूछा, ऐ अब्बा जान ! क्या बात है ? आप जब अज़ान सुनते हैं तो अबू उमामा के लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं और उनके लिए ख़ैर की और रहमत की दुआ करते हैं, उन्होंने फ़रमाया, ऐ मेरे बेटे ! उन्होंने

---

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० 106
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 131,

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने से पहले हमें सबसे पहले जुमा पढ़ाया था और यह जुमा उन्होंने बक़ी उल ख़ज़िमात बस्ती में बनू बयाज़ा क़बीला के पथरीले मैदान के उस हिस्से में पढ़ाया था, जहां नबीत क़बीले को हार का मुंह देखना पड़ा था।

मैंने पूछा, उस दिन आप लोग कितने थे? फ़रमाया, हम चालीस आदमी थे।[1]

बनू बक्र बिन वाइल के एक साहब कहते हैं, मैं सजिस्तान में हज़रत बुरैदा अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ था। मैं हज़रत अली, हजरत उस्मान, हज़रत तलहा और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम के बारे में उनकी राय मालूम करने के लिए इन सब लोगों के कुछ ऐब बयान करने लगा। इस पर हज़रत बुरैदा रज़ि० ने क़िब्ले की तरफ़ मुंह करके हाथ उठाकर यह दुआ की, ऐ अल्लाह! उस्मान रज़ि० की मग़्फ़िरत फ़रमा, और अली बिन तालिब रज़ि० की मग़्फ़िरत फ़रमा और तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० की मग़्फ़िरत फ़रमा और ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० की मग़्फ़िरत फ़रमा, फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, तुम्हारा बाप न रहे, क्या तुम मुझे क़त्ल करना चाहते हो?

मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं आपको क़त्ल करना नहीं चाहता, बल्कि इन लोगों के बारे में आपकी राय मालूम करना चाहता था। उन्होंने फ़रमाया, इन लोगों ने अल्लाह के करम से शुरू इस्लाम में बड़े कारनामे अंजाम दिए हैं (और इनसे कुछ लग़्ज़िशें, इख़्तिलाफ़ात वग़ैरह भी हुए हैं।) अब अल्लाह की मर्ज़ी है, चाहे तो उनके कारनामों की वजह से उनकी छोटी-मोटी लग़्ज़िशें माफ़ फ़रमा दे और चाहे तो उन्हें अज़ाब दे। उनका हिसाब तो अल्लाह के ज़िम्मे है। (हमारे ज़िम्मे नहीं है।)[2]

---

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 136,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 243

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम किस तरह जुमों में, जमाअतों में, हज और लड़ाइयों में और तमाम हालात में बयान किया करते थे और लोगों को अल्लाह का हुक्म मानने की तर्ग़ीब दिया करते थे, चाहे अल्लाह के हुक्म, मुशाहदे और तजुर्बे के ख़िलाफ़ क्यों न हों और किस तरह लोगों के दिलों में दुनिया और उसकी फ़ानी लज़्ज़तों की बे-रग़बती और आख़िरत और उसकी हमेशा रहने वाली लज़्ज़तों का शौक़ पैदा किया करते थे और गोया कि वे पूरी उम्मते मुस्लिमा को मालदार और ग़रीब को, ख़्वास और अवाम को इस बात पर खड़ा करते थे कि अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से जो अहकाम उनकी तरफ़ मुतवज्जह हैं, वे अपनी जान लगाकर,

अपना माल ख़र्च करके इन अहकाम को पूरा करें, और वे उम्मते मुस्लिमा को फ़ानी माल और ख़त्म हो जाने वाले सामान पर खड़ा नहीं करते थे

हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पहला बयान

हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना में सबसे पहला बयान फ़रमाया। उसकी शक्ल यह हुई कि आपने खड़े होकर पहले अल्लाह की शान के मुताबिक़ हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, अम्मा बाद, ऐ लोगो ! अपने लिए (आख़िरत में काम आने के लिए नेक आमाल का ज़ख़ीरा) आगे भेजो, तुम अच्छी तरह जान लो, तुममें से हर आदमी को ज़रूर मरना है और अपनी बकरियां बिना चरवाहे के छोड़कर चले जाना है, फिर उसके और उसके रब के दर्मियान न कोई तर्जुमान होगा और न कोई दरबान।

और उसका रब उससे पूछेगा, क्या मेरे रसूल ने तेरे पास आकर मेरा दीन नहीं पहुंचाया था? क्या मैंने तुझे माल नहीं दिया था? और तुझ पर फ़ज़्ल व एहसान नहीं किया था? अब बता तूने अपने लिए यहां आगे क्या भेजा है? चुनांचे वह दाएं-बाएं देखेगा, तो उसे कोई चीज़ नज़र न आएगी। फिर वह अपने सामने देखेगा तो उसे जहन्नम के सिवा और कुछ नज़र न आएगा, इसलिए तुममें से जो अपने आपको जहन्नम की आग से खजूर का एक टुकड़ा देकर बचा सकता है, उसे चाहिए कि वह यह टुकड़ा देकर ही ख़ुद को बचा ले और जिसे और कुछ न मिले, तो वह अच्छी बात बोलकर ही ख़ुद को बचा ले, क्योंकि आख़िरत में नेकी का बदला दस गुना से लेकर सात सौ गुना तक मिलेगा।

वस्सलामु अला रसूलिल्लाहि व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू०

हुज़ूर सल्ल० ने एक बार फिर बयान फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया, बात यह है कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं। मैं उसकी तारीफ़ करता हूं और उससे मदद तलब करता हूं, हम अपने नफ़्स के और बुरे आमाल के शरों से अल्लाह की पनाह चाहते हैं, जिसे अल्लाह हिदायत दे दे, उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं और जिसे गुमराह करे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं और मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। सबसे अच्छा कलाम अल्लाह की किताब है। वह आदमी कामियाब हो गया, जिसके दिल को अल्लाह ने क़ुरआन से सजाया और उसे कुफ़्र के बाद इस्लाम में दाख़िल किया और उस आदम ने बाक़ी तमाम लोगों के कलाम को छोड़कर अल्लाह की किताब को अख़्तियार किया। यह अल्लाह की किताब सबसे अच्छा और सबसे ज़्यादा बलीग़ कलाम है। जो अल्लाह से मुहब्बत करे, तुम उससे मुहब्बत करो और अल्लाह से मुहब्बत इस तरह करो कि सारे दिल में रच जाए और अल्लाह के कलाम और उसके ज़िक्र से मत उकताओ और क़ुरआन से एराज़ न करो, वरना तुम्हारे दिल सख़्त हो जाएंगे, क्योंकि अल्लाह तआला (आमाल में से जो कुछ पैदा करते हैं, उसमें से कुछ (आमाल) को चुन लेते हैं, पसंद कर लेते हैं।

चुनांचे अल्लाह ने अपनी किताब का नाम पसंदीदा अमल, पसंदीदा इबादत, नेक कलाम और लोगों को हराम व हलाल वाला जो दीन दिया गया है, उसमें से नेक अमल रखा है, इसलिए तुम अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करो और उससे ऐसे डरो जैसे उससे डरने का हक़ है और तुम लोग अपने मुंह से जो नेक और भली बातें बोलते हो, उनमें तुम अल्लाह से सच कहो और अल्लाह की रहमत की वजह से तुम एक दूसरे से मुहब्बत करो। अल्लाह इस बात से नाराज़ होते हैं कि उनसे जो अह्द किया जाए, उसे तोड़ा जाए। वस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू०[1]

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 214,

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जुमा का ख़ुत्बा

हज़रत सईद बिन अब्दुर्रहमान जुम्ही रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे यह ख़बर पहुंची है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना में बनू सालिम बिन औफ़ के मुहल्ले में जो सबसे पहला जुमा पढ़ाया था उसमें यह ख़ुत्बा दिया था—

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं। मैं उसकी तारीफ़ करता हूं, उससे मदद मांगता हूं। उससे मग़्फ़िरत चाहता हूं और उससे हिदायत तलब करता हूं और उस पर ईमान लाता हूं और उसका इंकार नहीं करता, बल्कि उसका जो इंकार करता है, उससे दुश्मनी रखता हूं। मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और (हज़रत) मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) उसके बन्दे और रसूल हैं। उन्हें अल्लाह ने हिदायत, नूर और नसीहत देकर उस वक़्त भेजा जबकि रसूलों के आने का सिलसिला रुका हुआ था और इल्म बहुत कम हो गया था और लोग गुमराह हो चुके थे और ज़माने में ख़ैर व बरकत नहीं रही थी और क़ियामत क़रीब आ चुकी थी और दुनिया का मुक़र्रर वक़्त पूरा होने वाला था। अब जो अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा वह हिदायत वाला होगा और जो इन दोनों की नाफ़रमानी करेगा, वह बिचला हुआ और कोताही का शिकार होगा और बड़ी दूर की गुमराही में जा पड़ेगा।

मैं तुम्हें अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूं। एक मुसलमान, दूसरे मुसलमान को जिन बातों की ताकीद करता है, उनमें सबसे बेहतर बात यह है कि उसे आख़िरत की तर्ग़ीब दे और अल्लाह से डरने का हुक्म दे, इसलिए तुम उन तमाम कामों से बचो, जिनके बारे में तुम्हें अल्लाह ने अपनी ज़ात से डराया है। इससे बेहतर कोई नसीहत नहीं, इससे बेहतर कोई याददेहानी नहीं। अपने रब से डर कर तक़्वा पर अमल करना उन तमाम चीज़ों के हासिल होने के लिए सच्चा मददगार है, जिन्हें तुम आख़िरत में चाहते हो और जो सिर्फ़ अल्लाह की रिज़ा की

नीयत से लोगों के सामने भी और उनसे छिपकर भी अपने और अपने रब के दर्मियान के मामले को ठीक कर लेगा, तो यह उसके लिए दुनिया में ज़िक्रे ख़ैर का ज़रिया होगा और मौत के बाद आख़िरत का ज़ख़ीरा होगा, जबकि आदमी को आगे भेजे हुए अपने आमाल की बहुत ज़्यादा ज़रूरत होगी।

और जो अपने और अपने रब के दर्मियान के मामले को ठीक नहीं करेगा, वह तमन्ना करेगा, काश, मेरे और मेरे आगे भेजे हुए बुरे आमाल में बहुत ज़्यादा दूरी होती और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात (के ग़ुस्से और सज़ा) से डराता है और अल्लाह बन्दों पर बहुत मेहरबान है। अल्लाह अपनी हर बात को सच कर दिखाते हैं और अपने वायदे को पूरा करते हैं, उनके वायदे के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता, क्योंकि ख़ुद अल्लाह ने फ़रमाया है—

مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ (سورت ق آیت۲۹)

'मेरे यहां (वह) बात (ज़िक्र की गई धमकी की) नहीं बदली जावेगी और मैं (इस तज्वीज़ में) बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं हूं।'

(सूरः क़ाफ़, आयत 29)

इसलिए दुनिया व आख़िरत के तमाम मामलों में ख़ुफ़िया और एलानिया तौर से अल्लाह से डरो, क्योंकि जो अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसकी तमाम बुराइयों को मिटा देगा और उसे बड़ा बदला अता फ़रमाएगा और जो अल्लाह से डरेगा, उसे बहुत बड़ी कामियाबी मिलेगी और अल्लाह का डर ही उसके ग़ुस्से, उसकी सज़ा और नाराज़ी से बचाता है और अल्लाह के डर से ही चेहरे (क़ियामत के दिन) सफ़ेद होंगे—और रब्बे अज़ीम राज़ी होंगे और दर्जे बुलन्द होंगे, इसलिए तुम तक़्वा में से पूरा हिस्सा लो और अल्लाह की जनाब में कोताही न करो। अल्लाह ने तुम्हें अपनी किताब का इल्म अता फ़रमाया है और अपना रास्ता तुम्हारे लिए वाज़ेह किया है, ताकि अल्लाह को सच्चों और झूठों का पता चल जाए और लोगों के साथ अच्छा सुलूक करो और जैसे

उसने तुम्हारे साथ किया है और अल्लाह के दुश्मनों से दुश्मनी रखो और अल्लाह के दीन के लिए ख़ूब मेहनत करो जैसे कि मेहनत करने का हक़ है, उसी ने तुम्हें चुना है और उसी ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है, ताकि जिसे गुमराह होकर बर्बाद होना है, वह दलील और निशानी देखकर फिर बर्बाद हो और जिसे हिदायत पाकर हक़ीक़ी ज़िंदगी हासिल करनी है, वह दलील और निशानी देखकर हासिल करे और नेकियां करने की ताक़त सिर्फ़ अल्लाह से ही मिलती है।

अल्लाह का ज़िक्र ज़्यादा से ज़्यादा करो और आज के बाद वाली ज़िंदगी यानी आख़िरत के लिए अमल करो जो अपने और अल्लाह के ताल्लुक़ को ठीक कर लेगा, अल्लाह उसके और लोगों के दर्मियान के मामलात को ख़ुद ठीक कर देंगे, क्योंकि अल्लाह का फ़ैसला लोगों पर चलता है और लोगों का फ़ैसला अल्लाह पर नहीं चलता। अल्लाह लोगों की हर चीज़ के मालिक हैं और लोग अल्लाह के यहां कुछ अख़्तियार नहीं रखते। अल्लाह सबसे बड़े हैं और अज़ीम अल्लाह से ही नेकी करने की ताक़त मिलती है।[1]

लड़ाइयों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बयान

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी हज़रत जिदार रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग हुज़ूर सल्ल० के साथ एक लड़ाई में गए। जब हमारा दुश्मन से सामना हुआ, तो आपने खड़े होकर अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, ऐ लोगो ! तुम हरे, पीले और लाल रंग की अलग-अलग नेमतों वाले हो गए हो और तुम्हारे घरों और क़ियामगाहों में बहुत क़िस्म की नेमतें हैं, जब तुम दुश्मन से लड़ो, तो क़दम-क़दम आगे बढ़ो, क्योंकि जब भी कोई आदमी अल्लाह के रास्ते में दुश्मन पर हमला करता है, तो दो हूरें उसकी तरफ़ झपटती हैं और जब वह शहीद होता है, तो ख़ून के पहले क़तरे के ज़मीन पर गिरते ही अल्लाह उसके हर गुनाह को माफ़ कर देते हैं और ये दोनों हूरें उसके मुंह से ग़ुबार

1 इब्ने जरीर, भाग 2, पृ० 115, बिदाया, भाग 3, पृ० 213, क़ुर्तबी, भाग 18, पृ० 98,

को साफ़ करती है और कहती हैं, तुम्हारा वक़्त आ गया है, वह उनसे कहता है, तुम दोनों का वक़्त भी आ गया है।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तबूक की लड़ाई के सफ़र में हिजर मुक़ाम में ठहरे। वहां आपने खड़े होकर लोगों में बयान फ़रमाया, और फ़रमाया, ऐ लोगो! तुम अपने नबी से मोजज़ों की मांग न करो। यह हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम की जगह है। उन्होंने अपने नबी से मांग की कि वह उनके लिए (मोजज़े के तौर पर) एक ऊंटनी भेजें। हज़रत सालेह अलैहि० ने उनकी यह मांग पूरी कर दी।

चुनांचे वह ऊंटनी उस फैले और कुशादा रास्ते से पानी पीने आती थी और अपनी बारी के दिन वह उनका सारा पानी पी जाती थी और जितना दूध पानी के नाग़े वाले दिन देती थी, उतना ही पानी की बारी वाले दिन भी देती थी, फिर उसी फैले रास्ते से वापस चली जाती थी, फिर उन्होंने उसकी टांगें काट डालीं। अल्लाह ने उन्हें तीन दिन की मोहलत दी और अल्लाह का वायदा झूठा नहीं होता, फिर उन पर (एक फ़रिश्ते की) चीख़ आई और उस क़ौम के जितने आदमी आसमान और ज़मीन के दर्मियान थे, उन सबको अल्लाह ने उस चीख़ से हलाक कर दिया, सिर्फ़ एक आदमी बचा, जो उस वक़्त अल्लाह के हरम में था, वह अल्लाह के हरम की वजह से अल्लाह के अज़ाब से बच गया। किसी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! वह कौन था? आपने फ़रमाया, अबू रिग़ाल।[2]

हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तबूक की लड़ाई के दिन मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, ऐ लोगो! मैं तुम्हें उसी बात का हुक्म देता हूं जिसका अल्लाह तुम्हें हुक्म

---

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 275,
2. हैसमी, भाग 7, पृ० 38,

देते हैं और उसी चीज़ से तुम्हें रोकता हूं जिससे अल्लाह तुम्हें रोकते हैं। इसलिए रोज़ी की तलाश में दर्मियाना रास्ता अख़्तियार करो। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में अबुल क़ासिम की जान है, तुममें से हर आदमी को उसकी रोज़ी ऐसे ढूंढती है जैसे उसे उसकी मौत ढूंढती है। अगर तुम्हें रोज़ी में कुछ मुश्किल पेश आए तो अल्लाह की इताअत वाले आमाल (तिलावत, दुआ, ज़िक्र, तौबा, इस्तिग़फ़ार वग़ैरह) के ज़रिए आसानी तलब करो।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का पर जीत हासिल कर ली, तो आपने फ़रमाया, अब तुम हर एक से अपने हथियार रोक लो और किसी पर हथियार न चलाओ, अलबत्ता क़बीला ख़ुज़ाआ वाले क़बीला बनू बक्र पर हथियार उठा सकते हैं। चुनांचे आपने बनू ख़ुज़ाआ को हथियार उठाने की इजाज़त दी, लेकिन जब अस्र की नमाज़ पढ़ ली तो क़बीला ख़ुज़ाआ से फ़रमाया, अब तुम भी हथियार रोक लो। अगले दिन मुज़्दलफ़ा में ख़ुज़ाआ के एक आदमी को बनू बक्र का एक आदमी मिला। उसने बनू बक्र का वह आदमी क़त्ल कर दिया। हुज़ूर सल्ल० को जब यह ख़बर मिली, तो आप बयान के लिए खड़े हुए। रिवायत करने वाले कहते हैं, मैंने देखा कि हुज़ूर सल्ल० अपनी कमर से बैतुल्लाह के साथ सहारा लगाए खड़े हैं।

आपने फ़रमाया, लोगों में से अल्लाह का सबसे ज़्यादा दुश्मन वह है जो हरम में किसी को क़त्ल करे या अपने क़ातिल के अलावा किसी और को क़त्ल करे या जाहिलियत के ज़माने के क़त्ल के बदले में क़त्ल करे। एक आदमी ने खड़े होकर कहा, बेशक फ़्लां आदमी मेरा बेटा है। आपने फ़रमाया, किसी को अपना बेटा बना लेना इस्लाम में (जायज़) नहीं है। जाहिलियत की तमाम बातें अब ख़त्म हो चुकी हैं। औलाद औरत के ख़ाविंद की होगी (अगर वह औरत बांदी है, तो उसकी

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 196,

औलाद बांदी के आक़ा की होगी) और ज़िना करने वाले मर्द के लिए असलब है।

सहाबा ने पूछा, असलब क्या चीज़ है? आपने फ़रमाया, पत्थर। (यानी ज़िनाकार को पत्थर मार-मारकर मार दिया जाएगा) और फ़रमाया, फ़ज्र की नमाज़ के बाद सूरज निकलने तक कोई नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए और ऐसे ही अस्र के बाद सूरज डूबने तक कोई नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए। किसी औरत की ख़ाला या फूफी निकाह में हो, तो अब उस औरत से निकाह करना जायज़ नहीं है।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का पर जीत के दिन बैतुल्लाह की सीढ़ियों पर खड़े होकर बयान फ़रमाया, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने अपना वायदा पूरा कर दिया और अपने बन्दे की मदद की और अकेले ही तमाम फ़ौजों को हराया। ग़ौर से सुनो, ख़ता वाला मक़्तूल वह होगा जो कोड़े या लाठी से क़त्ल हुआ हो। उसका ख़ूनबहा सौ ऊंट है, जिनमें चालीस गाभिन ऊंटनियां भी हों।

तवज्जोह से सुनो! जाहिलियत की हर फ़ख्र की चीज और जाहिलियत के ज़माने का हर ख़ून मेरे इन दो क़दमों के नीचे रखा हुआ है, अलबत्ता बैतुल्लाह की ख़िदमत और हाजियों को पानी पिलाने का काम जाहिलियत में जिनके पास था, मैंने अब भी उन्हीं के पास बाक़ी रहने दिया है।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का की जीत के दिन अपनी क़सवा ऊंटनी पर बैतुल्लाह का तवाफ़ किया। आपके मुबारक हाथ में एक छड़ी थी, जिसका सिरा मुड़ा हुआ था। आप उससे बैतुल्लाह के कोनों का बोसा ले रहे थे। मस्जिदे हराम में ऊंटनी के लिए बैठने की जगह आपको न

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 178,
2. इब्ने माजा,

मिली। इसलिए आप ऊंटनी से उतरे तो लोगों ने आपको अपने हाथों में ले लिया।

फिर आप ऊंटनी को पानी बहने की जगह के दर्मियान ले गए और उसे वहां बिठा दिया। फिर अपनी सवारी पर सवार होकर लोगों में बयान फ़रमाया, पहले अल्लाह की शान के मुताबिक़ हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, ऐ लोगो! जाहिलियत के ज़माने में लोग किब्र व नख़वत में पड़े हुए थे और अपने बाप-दादों के कारनामों की बुनियाद पर ख़ुद को बड़ा समझते थे। अब अल्लाह ने ये तमाम बातें ख़त्म कर दी हैं। लोग दो तरह के हैं—एक नेक मुत्तक़ी और परहेज़गार, जो कि अल्लाह के यहां इज़्ज़त व शराफ़त वाले होते हैं, दूसरे बदकार व बदबख़्त, जिनकी अल्लाह के यहां कोई वुक़अत नहीं होती। अल्लाह फ़रमाते हैं—

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ (سورت حجرات آیت ۱۳)

'ऐ लोगो! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया है और तुमको अलग-अलग क़ौमें और अलग-अलग ख़ानदान बनाया, ताकि एक दूसरे को पहचान सको। अल्लाह के नज़दीक तुम सबमें बड़ा शरीफ़ वही है जो सबसे ज़्यादा परहेज़गार है, अल्लाह ख़ूब जानने वाला पूरा ख़बरदार है।' (सूरः हुजुरात, आयत 13)

इसके बाद आपने फ़रमाया, मैं अपनी यह बात कहता हूं और मैं अपने लिए और तुम्हारे लिए अल्लाह से मग़्फ़िरत तलब करता हूं।[1]

रमज़ान के आने पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बयानात

हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शाबान की आख़िरी तारीख़ में हम लोगों में बयान

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 218

फ़रमाया कि ऐ लोगो! तुम्हारे ऊपर एक महीना आ रहा है जो बहुत बड़ा महीना है, मुबारक महीना है। इसमें एक रात (शबे क़द्र) है, जो हज़ार महीनों से बढ़कर है। अल्लाह ने इसके रोज़े को फ़र्ज फ़रमाया और इसके रात के क़ियाम (यानी तरावीह) को सवाब की चीज़ बनाया है। जो आदमी इस महीने में किसी नेकी के साथ अल्लाह का क़ुर्ब हासिल करे, ऐसा है, जैसा कि ग़ैर रमज़ान में फ़र्ज़ अदा किया और जो शख़्स इस महीने में किसी फ़र्ज़ को अदा करे, वह ऐसा है जैसे कि ग़ैर रमज़ान में सत्तर फ़र्ज़ अदा करे। यह महीना सब्र का है और सब्र का बदला जन्नत है और यह महीना लोगों के साथ ग़म ख़्वारी करने का है। इस महीने में मोमिन की रोज़ी बढ़ा दी जाती है। जो आदमी किसी रोज़ेदार का रोज़ा इफ़्तार कराए, उसके लिए गुनाहों के माफ़ होने और आग से ख़लासी की वजह होगा और रोज़ेदार के सवाब की तरह उसको सवाब मिलेगा, मगर उस रोज़ेदार के सवाब से कुछ कम नहीं किया जाएगा।

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हममें से हर आदमी तो इतनी वुसअत नहीं रखता कि रोज़ेदार को इफ़्तार कराए, तो आपने फ़रमाया कि (पेट भर खिलाने पर मौक़ूफ़ नहीं) यह सवाब तो अल्लाह एक खजूर से कोई इफ़्तार करा दे या एक घूंट पानी पिला दे या एक घूंट लस्सी पिला दे, उस पर भी मरहमत फ़रमा देते हैं।

यह ऐसा महीना है कि इसका शुरू का हिस्सा अल्लाह की रहमत है और बीच का हिस्सा मग़्फ़िरत का है और आख़िरी हिस्सा आग से आज़ादी का है। जो आदमी इस महीने में अपने ग़ुलाम (और ख़ादिम) के बोझ को हल्का कर दे, अल्लाह उसकी मग़्फ़िरत फ़रमाते हैं और आग से आज़ादी अता फ़रमाते हैं और इसमें चार चीज़ों को ज़्यादा से ज़्यादा किया करो। जिनमें से दो चीज़ों से तुम अल्लाह को राज़ी कर लोगे और दो चीज़ें ऐसी हैं कि जिनसे तुम्हें चारा कार नहीं। वे दो चीज़ें, जिनसे तुम अपने रब को राज़ी करोगे, वह कलिमा-शहादत और इस्तिग़फ़ार की ज़्यादती है और दूसरी दो चीज़ें ये हैं कि जन्नत की तलब

करो और आग से पनाह मांगो। जो आदमी किसी रोज़ेदार को पानी पिलाए, अल्लाह (क़ियामत के दिन) मेरे हौज़ से उसको ऐसा पानी पिलाएंगे जिसके बाद जन्नत में दाख़िल होने तक प्यास नहीं लगेगी।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब रमज़ान का महीना क़रीब आ गया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मग़रिब के वक़्त थोड़ा-सा बयान फ़रमाया, उसमें इर्शाद फ़रमाया, रमज़ान तुम्हारे सामने आ गया है और तुम उसका इस्तिक़बाल करने वाले हो। ग़ौर से सुनो ! रमज़ान की पहली रात में ही क़िब्ले वाले मुसलमानों में से हर एक की मग़फ़िरत कर दी जाती है।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब रमज़ानुल मुबारक की पहली रात हुई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खड़े होकर अल्लाह की हम्द व सना बयान की और फ़रमाया, ऐ लोगो ! अल्लाह ने तुम्हारे दुश्मन जिन्नात (शैतानों) से ख़ुद ही निमट लिया है (क्योंकि उन्हें क़ैद कर दिया है) और तुमसे दुआ क़ुबूल करने का वायदा किया है और फ़रमाया है—

ادْعُوْنِيْ أَسْتَجِبْ لَكُمْ

'मुझको पुकारो, मैं तुम्हारी दरख़्वास्त क़ुबूल करूंगा।'

तवज्जोह से सुनो, अल्लाह ने हर सरकश शैतान पर सात फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमा दिए हैं, और वह रमज़ान ख़त्म होने तक छूट नहीं सकता। ग़ौर से सुनो ! रमज़ान की पहली रात से लेकर आख़िरी रात तक आसमान के तमाम दरवाज़े खुले रहेंगे और इस महीने में हर दुआ क़ुबूल होती है। जब आख़िरी अश्रे की पहली रात होती तो हुज़ूर लुंगी कस लेते और औरतों के बीच में से निकल जाते और एतिकाफ़ फ़रमाते और रात भर इबादत फ़रमाते। किसी ने पूछा, लुंगी कसने का मतलब क्या है ? हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, इन दिनों में औरतों से जुदा रहते।[3]

1. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 218, कंज़, भाग 4, पृ० 323,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 325,

जुमा की नमाज़ की ताकीद के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हममें बयान फ़रमाया, उसमें इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो! मरने से पहले तौबा कर लो। मशग़ूल होने से पहले, भले नेक कामों में जल्दी लग जाओ। तुम्हारा अल्लाह से जो ताल्लुक़ है, उसको अल्लाह के ज़्यादा ज़िक्र करने से और छुप कर और एलानिया ख़ूब सदक़ा देने से जोड़े रखो, इस तरह रोज़ी तुम्हें दी जाएगी और तुम्हारी मदद की जाएगी और तुम्हारी कमी पूरी की जाती रहेगी। जान लो कि अल्लाह ने मेरे इस खड़े होने की जगह मेरे इस महीने के इस दिन में इस साल से क़ियामत तक जुमा की नमाज़ को तुम पर फ़र्ज़ कर दिया है। इसलिए जिसका कोई आदिल या ज़ालिम इमाम हो और वह मेरी ज़िंदगी में या मेरे बाद जुमा को हल्का समझकर या उसका इन्कार करके उसे छोड़ दे, अल्लाह उसके बिखरे हुए कामों को जमा न फ़रमाए और उसके हालात ठीक न करे और उसके किसी काम में बरकत न फ़रमाए।

और ग़ौर से सुनो और जब तक वह अपने इस गुनाह से तौबा नहीं करेगा, उसकी न नमाज़ क़ुबूल होगी, न ज़कात, न हज, न रोज़ा और न कोई और नेकी। जो तौबा करेगा, अल्लाह उसकी तौबा क़ुबूल करेगा। तवज्जोह से सुनो! कोई औरत हरगिज़ किसी मर्द की इमामत न करे और न कोई बदवी किसी मुहाजिर का इमाम बने और न कोई फ़ाजिर बदकार किसी मोमिन का इमाम बने। हां, अगर वह फ़ाजिर ताक़त से उसे दबा कर मजबूर कर दे और उसे उसकी तलवार और कोड़े का डर हो।[1]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जुमा

3. कंज़, भाग 4, पृ० 323,
1. इब्ने माजा, पृ० 172, तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 31

के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खड़े होकर बयान फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया, जो आदमी मदीना से एक मील दूर रहता है और जुमा का दिन आ जाता है और वह जुमा पढ़ने नहीं आता अल्लाह उसके दिल पर मुहर लगा देगा। फिर दूसरी बार में इर्शाद फ़रमाया, जो आदमी मदीना से दो मील दूर रहता है और जुमा का दिन आ जाता है और वह जुमा पढ़ने नहीं आता, अल्लाह उसके दिल पर मुहर लगा देगा, फिर तीसरी बार में इर्शाद फ़रमाया, जो आदमी मदीना से तीन मील दूर रहता है और जुमा का दिन आ जाता है और वह जुमा पढ़ने नहीं आता, अल्लाह उसके दिल पर मुहर लगा देगा।[1]

हज में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बयानात और ख़ुत्बे

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज्जतुल विदाअ में लोगों को ख़ुत्बा दिया और फ़रमाया, शैतान इस बात से तो नाउम्मीद हो गया है कि तुम्हारी ज़मीन में उसकी इबादत की जाए, (यानी बुतों की पूजा होने लगे) लेकिन वह इस बात पर राज़ी है कि कुफ़्र व शिर्क के अलावा दूसरे ऐसे गुनाहों में उसकी मानी जाए, जिनको तुम लोग छोटा समझते हो। (चूंकि काफ़िर तो कुफ़्र व शिर्क के बड़े गुनाह में पड़े हैं, इसलिए शैतान उन्हें छोटे गुनाहों में लगाने पर ज़ोर नहीं लगाता और मुसलमान चूंकि बड़े गुनाह से बचे हुए हैं, इस वजह से शैतान उन्हें कुफ़्र व शिर्क से कम दर्जे के गुनाह क़त्ल, झूठ, ख़ियानत वग़ैरह में लगाने पर सारा ज़ोर लगाता है) इसलिए चौकन्ने हो जाओ। ऐ लोगो! मैं तुम्हारे पास ऐसी चीज़ छोड़कर जा रहा हूं कि अगर तुम उसे मज़बूती से पकड़ोगे तो कभी गुमराह नहीं होगे—अल्लाह की किताब और उसके नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत।

---

1. अबू याला,

हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है और सारे मुसलमान आपस में भाई-भाई हैं और किसी आदमी के लिए अपने मुसलमान भाई के माल को उसकी रज़ामंदी के बग़ैर लेना हलाल नहीं और ज़ुल्म न करना और मेरे बाद काफ़िर न बन जाना। (या नाशुक्रे न बन जाना) कि तुम एक दूसरे की गरदन उड़ाने लग जाओ।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम लोगों में मस्जिद ख़ीफ़ में (जो कि मिना में है) बयान फ़रमाया, अल्लाह की शान के मुताबिक़ हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, जो आख़िरत की फ़िक्र करता है और उसे मक़्सद बनाता है, अल्लाह उसके बिखरे हुए कामों को जमा कर देगा और ग़िना को उसकी आंखों के सामने कर देगा और ज़लील होकर दुनिया उसके पास आएगी और जो दुनिया को मक़्सद बनाकर उसकी फ़िक्र करता है, अल्लाह उसके जमा किए हुए कामों को बिखेर देगा और मुहताजी को उसकी आंखों के सामने कर देगा और दुनिया उसे उतनी ही मिलेगी, जो मुक़द्दर में है।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मिना की मस्जिद ख़ीफ़ में हम लोगों में बयान फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया, अल्लाह तआला उस बन्दे को तर व ताज़ा रखे, जिसने मेरी बात को सुना और कोशिश करके वह बात अपने भाई से बयान की। तीन चीज़ें ऐसी हैं, जिसमें किसी मुसलमान का दिल कभी और ख़ियानत नहीं करेगा—एक अमल को ख़ालिस अल्लाह के लिए करना और दूसरे हाकिमों और अमीरों (सरदारों) का भला चाहना, तीसरे मुसलमानों की जमाअत के साथ चिमटे रहना, क्योंकि मुसलमानों की दुआ उनको हर ओर से घेर लेती है (और शैतान के मक्र व फ़रेब से उनकी हिफ़ाज़त करती है।)[3]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

1. हाकिम, भाग 1, पृ० 93,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 202,
3. कंज़, भाग 8, पृ० 228

सल्लम के हज के बारे में एक लम्बी हदीस ज़िक्र की है जिसमें यह है कि हुज़ूर सल्ल० मिना से चले और मुज़दलफ़ा से गुज़रते हुए अरफ़ात पहुंच गए। वहां जाकर आपने देखा कि आपका ख़ेमा वादी नमरा में लगा हुआ है। आप उसमें ठहर गए। जब ज़वाल का वक़्त हो गया तो आपने हुक्म फ़रमाया, तो उस पर कजावा रखा गया। फिर आप वादी के बीच के हिस्से में तशरीफ़ ले गए और लोगों में मशहूर ख़ुत्बा बयान फ़रमाया, जिसमें आपने फ़रमाया—

तुम्हारे ख़ून और तुम्हारे माल, तुम पर ऐसे क़ाबिले एहतराम हैं जैसे कि तुम्हारा यह दिन, तुम्हारा यह महीना और तुम्हारा यह शहर क़ाबिले एहतराम है। ग़ौर से सुनो! जाहिलियत का हर ग़लत काम और तौर-तरीक़ा मेरे इन दो क़दमों के नीचे रखा हुआ है, यानी उसे ख़त्म कर दिया गया है। जाहिलियत के तमाम ख़ून भी आज से ख़त्म हैं और मैं अपने ख़ूनों में से सबसे पहले रबीआ बिन हारिस के बेटे का ख़ून ख़त्म करता हूं, जो कि बनू साद के यहां दूध पी रहा था और क़बीला हुज़ैल ने उसे क़त्ल कर दिया था।

जाहिलियत के सूद भी ख़त्म कर दिए गए हैं और मैं अपने सूदों में सबसे पहले हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का सूद माफ़ करता हूं। अब यह सारा माफ़ कर दिया है और औरतों के बारे में अल्लाह से डरो, क्योंकि तुमने अल्लाह की अमानत से उनको लिया है। (तुम उनके मालिक नहीं, बल्कि अमीन हो) और अल्लाह के मुक़र्रर किए हुए निकाह के तरीक़े के ज़रिए तुम्हारे लिए वे औरतें हलाल हुई हैं। तुम्हारा उन पर यह हक़ है कि जिसका आना तुम्हें पसन्द न हो, उसे वे तुम्हारे घर में आने न दें। अगर वे ऐसा करें तो तुम उन्हें मार लो, लेकिन यह मार सख़्त न हो और उनका तुम पर यह हक़ है कि तुम उन्हें दस्तूर के मुताबिक़ खाना और कपड़ा दो।

और मैं तुममें ऐसी चीज़ छोड़कर जा रहा हूं कि अगर तुम उसे मज़बूती से पकड़ लोगे, तो कभी गुमराह नहीं होगे और वह है अल्लाह की किताब! तुमसे मेरे बारे में पूछा जाएगा, तो तुम क्या कहोगे? सहाबा

रज़ि० ने अर्ज़ किया, हम गवाही देते हैं कि आपने (अल्लाह का दीन सारा) पहुंचा दिया और उम्मत का भला चाहा और ख़ुदा की अमानत पहुंचा दी। फिर आपने शहादत की उंगली आसमान की तरफ़ उठाई और फिर लोगों की तरफ़ नीचे झुकाई और फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! तू गवाह हो जा, ऐ अल्लाह ! तू गवाह हो जा और तीन बार ऐसे फ़रमाया।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, नह्र के दिन यानी दस ज़िलहिज्जा को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों में बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो ! यह कौन-सा दिन है? लोगों ने कहा, यह एहतिराम के क़ाबिल दिन है। आपने फ़रमाया, यह कौन-सा शहर है? लोगों ने कहा, यह एहतिराम के क़ाबिल शहर है। आपने पूछा, यह कौन-सा महीना है? लोगों ने कहा, यह एहतिराम के क़ाबिल महीना है। आपने फ़रमाया, तुम्हारे ख़ून, तुम्हारे माल और तुम्हारी इज़्ज़तें ऐसे ही एहतिराम के क़ाबिल हैं जैसे कि तुम्हारा यह दिन, तुम्हारा यह शहर और तुम्हारा यह महीना एहतिराम के क़ाबिल है और इस बात को कई बार फ़रमाया। फिर सर उठाकर फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! मैंने पहुंचा दिया है, ऐ अल्लाह ! मैंने पहुंचा दिया है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने अपनी उम्मत को ज़बरदस्त वसीयत फ़रमाई कि हाज़िर लोग (मेरा सारा दीन तमाम) ग़ायब इंसानों तक पहुंचाएं। मेरे बाद काफ़िर न हो जाना कि तुम एक दूसरे की गरदन उड़ाने लगो।[2]

हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, लोगों को चुप कराओ। फिर आपने फ़रमाया, अब तो मैं तुम्हारे हालात अच्छे देख रहा हूं लेकिन इसके बाद मेरे इल्म में यह बात न आए कि तुम लोग काफ़िर बनकर एक दूसरे की गरदन

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 148, कंज़, भाग 3, पृ० 23,
2. बिदाया, भाग 5, पृ० 194, कंज़, भाग 3, पृ० 25,

उड़ाने लगे हो।

दूसरी रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल० ने हज्जतुल विदाअ में फ़रमाया, ऐ जरीर! लोगों को चुप कराओ। फिर पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[1]

हज़रत उम्मुल हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हज्जतुल विदाअ किया। मैंने देखा कि हज़रत उसामा और हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हुमा में से एक ने हुज़ूर सल्ल० की ऊंटनी की नकेल पकड़ रखी है और दूसरा हुज़ूर सल्ल० को गर्मी से बचाने के लिए आप पर अपने कपड़े से साया किए हुए है, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० ने जमरतुल अक़बा (बड़े शैतान) को कंकरियां मारीं, फिर हुज़ूर सल्ल० ने बहुत-सी बातें इर्शाद फ़रमाईं। फिर मैंने आपको इर्शाद फ़रमाते हुए कि अगर तुम पर नाक कान कटा हुआ ग़ुलाम अमीर बना दिया जाए जो काला हो, लेकिन वह तुम्हें अल्लाह की किताब के मुताबिक़ लेकर चले तो तुम उसकी हर बात सुनो और मानो।[2]

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज्जतुल विदाअ के साल मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ुत्बे में यह फ़रमाते हुए सुना, अल्लाह ने हर हक़ वाले को उसका हक़ ख़ुद दे दिया है, इसलिए अब वारिस के लिए वसीयत नहीं हो सकती और बच्चा बिस्तर के मालिक का होगा और ज़ानी को पत्थर मिलेगा और उनका हिसाब अल्लाह के यहां होगा और जिसने अपने बाप के अलावा किसी और की तरफ़ अपने बेटे होने की निस्बत की या जिस ग़ुलाम ने अपने आक़ाओं के अलावा किसी और की तरफ़ अपने ग़ुलाम होने की निस्बत की, उस पर क़ियामत के दिन तक लगातार अल्लाह की लानत होगी।

कोई औरत अपने घर से शौहर की इजाज़त के बिना ख़र्च न करे।

---

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 197
2. बिदाया, भाग 5, पृ० 196, कंज़, भाग 3, पृ० 62, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 184.

किसी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! खाना भी नहीं दे सकती? आपने फ़रमाया, खाना तो हमारे घर की चीज़ों में से सबसे अफ़ज़ल चीज़ है। फिर आपने फ़रमाया, उधार मांगी हुई चीज वापस देनी होगी और जो जानवर दूध पीने के लिए किसी को दिया था, वह वापस करना होगा, क़र्ज़ अदा करना होगा और कफ़ील तावान का ज़िम्मेदार होगा।[1]

अबू दाऊद की रिवायत में है कि हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैंने मिना में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान सुना।

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जदआ नामी ऊंटनी पर सवार थे और उसकी रकाब में पांव रखकर आप बुलन्द हो रहे थे ताकि लोग आपकी आवाज़ सुन लें। मैंने सुना कि आपने ऊंची आवाज़ से फ़रमाया, क्या तुम्हें मेरी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही? तो मज्मे में से एक आदमी ने कहा, आप हमें क्या नसीहत फ़रमाना चाहते हैं? आपने फ़रमाया, अपने रब की इबादत करो और पांच नमाज़ें पढ़ो और एक माह के रोज़े रखो और अपने अमीर की इताअत करो, इस तरह तुम अपने रब की जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन मुआज़ तीमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग मिना में थे, वहां हममें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान फ़रमाया, अल्लाह ने हमारे सुनने की ताक़त बहुत बढ़ा दी, यहां तक कि हम में से जो लोग अपनी क़ियामगाहों में थे, वे भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान सुन रहे थे। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० उन्हें हज के हुक्म सिखाने लगे। जब आप जमरे के पास पहुंचे तो आपने दोनों कानों में शहादत की उंगलियां डालकर ऊंची आवाज़ से फ़रमाया, छोटी कंकरियां मारो।

फिर आपने हुक्म दिया तो मुहाजिरीन मस्जिद (ख़ीफ़) के सामने

---

1. अहमद, तिर्मिज़ी,
2. बिदाया, भाग 5, पृ० 198

और अंसार मस्जिद के पीछे ठहरे, फिर बाक़ी आम लोग अपनी-अपनी जगहों में ठहरे।[1]

हज़रत राफ़ेअ बिन अम्र मुज़नी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब सूरज बुलन्द हो गया, तो मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मिना में ख़ाकस्तरी रंग के ख़च्चर पर लोगों में बयान करते हुए सुना और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आपकी बात लोगों को पहुंचा रहे थे और लोग कुछ खड़े थे और कुछ बैठे।[2]

हज़रत अबू हर्रा रक़ाशी रहमतुल्लाहि अलैहि अपने चचा रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल करते हैं मैं अय्यामे तश्रीक़ के दर्मियानी दिनों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ऊंटनी की नकेल पकड़े हुए था और लोगों को आपसे हटा रहा था, तो आपने फ़रमाया, ऐ लोगो ! क्या तुम जानते हो कि यह कौन-सा महीना है? कौन-सा दिन है? और कौन-सा शहर है? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, दिन भी एहतिराम के क़ाबिल है और महीना भी एहतिराम के क़ाबिल है और शहर भी।

आपने फ़रमाया, बेशक तुम्हारे ख़ून, तुम्हारे माल और तुम्हारी इज़्ज़तें तुम्हारे लिए ऐसे ही एहतिराम के क़ाबिल हैं, जैसे यह दिन, यह महीना और यह शहर एहतिराम के क़ाबिल है और यह हुक्म अल्लाह से मुलाक़ात तक के लिए है यानी ज़िंदगी भर के लिए है। फिर आपने फ़रमाया, मेरी बात सुनो तो ज़िंदा रहोगे, ख़बरदार ज़ुल्म न करना, ख़बरदार, ज़ुल्म न करना, ख़बरदार ज़ुल्म न करना। किसी मुसलमान का माल उसकी रज़ामंदी के बग़ैर लेना जायज़ नहीं है। ग़ौर से सुनो! जाहिलियत के ज़माने का हर ख़ून, हर माल और फ़ख़्र के क़ाबिल हर काम मेरे इस क़दम के नीचे क़ियामत तक के लिए रखा हुआ है यानी हमेशा के लिए ख़त्म कर दिया गया है और सबसे पहले रबीआ बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब का ख़ून ख़त्म किया जाता है, जो बनू साद

1. इब्ने साद, भाग 2, पृ० 185,
2. बिदाया, भाग 5, पृ० 198,

में दूध पी रहा था और क़बीला हुज़ैल ने उसे क़त्ल कर दिया था।

ग़ौर से सुनो, जाहिलियत के ज़माने का हर सूद ख़त्म किया जाता है और अल्लाह ने यह फ़ैसला किया है कि सबसे पहले हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का सूद ख़त्म किया जाए। तुम्हें तुम्हारा असल सरमाया मिल जाएगा। न तुम किसी पर ज़ुल्म करोगे और न कोई तुम पर ज़ुल्म करेगा। ग़ौर से सुनो! जिस दिन अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा फ़रमाया था, उस दिन वाली हालत पर ज़माना घूम कर फिर आ गया है। फिर आपने यह आयत पढ़ी—

إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِندَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ فَلَا تَظْلِمُوا فِيهِنَّ أَنفُسَكُمْ (سورت توبہ آیت ۳۶)

'यक़ीनन गिनती महीनों की (जो कि अल्लाह की किताब में) अल्लाह के नज़दीक (भरोसेमंद है) बारह महीने (क़मरी) हैं, जिस दिन अल्लाह ने आसमान और ज़मीन पैदा किए थे, (उसी दिन से और) उनमें चार ख़ास महीने अदब के हैं। यही (ज़िक्र किया गया मामला) सीधा दीन है, सो तुम इन सब महीनों के बारे में (दीन के ख़िलाफ़ करके) अपना नुक़्सान मत करना।' (सूरः तौबा, आयत 36)

तवज्जोह से सुनो, मेरे बाद तुम लोग काफ़िर न हो जाना कि तुम एक दूसरे की गरदन उड़ाने लगो। ग़ौर से सुनो! शैतान इस बात से नाउम्मीद हो गया है कि नमाज़ी लोग यानी मुसलमान उसकी इबादत करें, अलबत्ता वह तुम्हें आपस में लड़ाने की कोशिश में लगा रहता है और औरतों के बारे में अल्लाह से डरो, क्योंकि वे औरतें तुम्हारे पास क़ैदी हैं, क्योंकि उन्हें अपनी ज़ात के बारे में कोई अख़्तियार नहीं है। उनके भी तुम्हारे ऊपर हक़ हैं और तुम्हारे भी उनके ऊपर हक़ हैं और उनमें से एक हक़ यह है कि वह तुम्हारे अलावा किसी को भी तुम्हारे बिस्तर पर आने न दें और जिसका आना तुम्हें बुरा लगे उसे घर में आने की इजाज़त न दें।

अगर तुम्हें उनकी नाफ़रमानी का डर हो तो उन्हें समझाओ, वाज़ व

नसीहत करो और बिस्तरों पर उन्हें तंहा छोड़ दो और उन्हें इस तरह मारो कि ज़्यादा तक्लीफ़ न हो, और दस्तूर के मुताबिक़ खाना-कपड़ा उनका हक़ है। अल्लाह की अमानत से तुमने उन्हें लिया है यानी तुम उनके अमीन हो, मालिक नहीं और अल्लाह के मुक़र्रर किए हुए तरीक़े से यानी निकाह के ईजाब व क़ुबूल से वे तुम्हारे लिए हलाल हुई हैं।

ग़ौर से सुनो, जिसके पास कोई अमानत है, तो वह उसे उस आदमी को वापस कर दे, जिसने उसके पास अमानत रखवाई थी, फिर आपने हाथ फैलाकर फ़रमाया, ग़ौर से सुनो! मैंने (अल्लाह का सारा दीन) पहुंचा दिया है, ग़ौर से सुनो! मैंने पहुंचा दिया है। ग़ौर से सुनो, मैंने पहुंचा दिया है और हाज़िर लोग अब ग़ैर-हाज़िर लोगों तक पहुंचाएं, क्योंकि कभी-कभी जिसे बात पहुंचाई जाती है वह सीधे सुनने वाले से ज़्यादा नेकबख़्त होता है।

हज़रत हुमैद कहते हैं, हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि जब हदीस के इस मज़्मून पर पहुंचे, तो फ़रमाया, अल्लाह की क़सम, सहाबा किराम रज़ि० ने दीन ऐसे लोगों को पहुंचाया है जो दीन की वजह से बहुत ज़्यादा नेकबख़्त हो गए।[1]

बज़्ज़ार में हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से इसी जैसी मानी वाली हदीस नक़ल की गई है, उसके शुरू में यह भी है, हज्जतुल विदाअ के सफ़र अय्यामे तश्रीक़ के दर्मियानी दिनों में मिना में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह सूरः उतरी—

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ (سورت نصر)

'(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! जब ख़ुदा की मदद और (मक्का की) फ़त्ह (मय अपने आसार के) आ पहुंचे।' (सूरः नस्र)

इस सूरः से आप समझ गए कि अब आपके दुनिया से जाने का वक़्त आ गया है, इसलिए आपके फ़रमाने पर आपकी क़सवा ऊंटनी पर कजावा रखा गया। आप उस पर सवार होकर घाटी पर आकर लोगों के

1. अहमद,

लिए खड़े हो गए, जिस पर अनगिनत मुसलमान वहां जमा हो गए।

आपने हम्द व सना के बाद फ़रमाया, अम्मा बादु, ऐ लोगो! जाहिलियत का हर ख़ून ख़त्म कर दिया गया है। इस हदीस में आगे यह भी है कि ऐ लोगो! शैतान इस बात से नाउम्मीद हो गया है कि तुम्हारे इलाक़े में आख़िरी वक़्त तक उसकी इबादत की जाए, लेकिन वह तुमसे इस बात पर राज़ी हो जाएगा कि तुम छोटे-मोटे गुनाह करो, इसलिए तुम शैतान से चौकन्ने होकर रहो, अपने दीन पर पक्के रहो और छोटे-मोटे गुनाह करके उसे ख़ुश न करो।

और उस रिवायत में यह भी है कि ऐ लोगो! मैं तुममें ऐसी चीज़ छोड़कर जा रहा हूं कि अगर तुम उसे पकड़े रहोगे तो कभी गुमराह नहीं होगे और वह है अल्लाह की किताब! इसलिए तुम उस पर अमल करो और उस रिवायत के आख़िर में यह है कि तवज्जोह से सुनो, तुम्हारे हाज़िर लोग ग़ायब लोगों तक पहुंचाएं। मेरे बाद कोई नबी नहीं है और तुम्हारे बाद कोई उम्मत नहीं है। फिर आपने हाथ उठाकर फ़रमाया, ऐ अल्लाह! तू गवाह हो जा।[1]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, अय्यामे तशरीक़ के दर्मियानी दिनों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल-विदाई बयान फ़रमाया, इर्शाद फरमाया, ऐ लोगो! तुम्हारा रब एक है और तुम्हारा बाप भी एक है यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम। ग़ौर से सुनो, किसी अरबी को अजमी पर, किसी अजमी को अरबी पर कोई फ़ज़ीलत नहीं और किसी लाल इंसान को काले पर और किसी काले को लाल पर कोई फ़ज़ीलत नहीं। एक इंसान को दूसरे इंसान पर सिर्फ़ तक़्वा से फ़ज़ीलत हो सकती है। तुममें से अल्लाह के यहां सबसे ज़्यादा शराफ़त वाला वह है जो सबसे ज़्यादा तक़्वे वाला है। तवज्जोह से सुनो! क्या मैंने (अल्लाह का दीन सारा) पहुंचा दिया है? सहाबा रज़ि० ने कहा, बिल्कुल ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आपने फ़रमाया, अब हाज़िर लोग जो मौजूद

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 202, कंज़, भाग 3, पृ० 26,

नहीं है उन तक पहुंचाएं।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अरफ़ात में अपनी कान कटी हुई ऊंटनी पर खड़े हुए और फ़रमाया, क्या तुम लोग जानते हो, यह कौन-सा दिन है? यह कौन-सा महीना है? यह कौन-सा शहर है? सहाबा रज़ि० ने कहा, यह एहतिराम के क़ाबिल शहर और एहतिराम के क़ाबिल महीना और एहतिराम के क़ाबिल दिन है? आपने फ़रमाया, ग़ौर से सुनो! तुम्हारे माल और तुम्हारे ख़ून, तुम्हारे लिए इस तरह एहतिराम के क़ाबिल हैं जैसा तुम्हारा यह महीना, तुम्हारा यह शहर और तुम्हारा यह दिन एहतिराम के क़ाबिल है। मैं तुम्हारी ज़रूरतों के लिए तुमसे पहले आगे जा रहा हूं और हौज़ (कौसर) पर तुम्हें मिलूंगा और मैं तुम्हारी तायदाद के ज़्यादा होने की वजह से दूसरी उम्मतों पर फ़ख़्र करूंगा, इसलिए (बुरे आमाल करके कल क़ियामत के दिन) मेरा मुंह काला न करना।

ग़ौर से सुनो! (कल क़ियामत के दिन) मैं बहुत-से लोगों को (शफ़ाअत करके दोज़ख़ से) छुड़ा लूंगा, लेकिन कुछ लोगों को मुझसे छुड़ा लिया जाएगा। (फ़रिश्ते छुड़ा कर दूर ले जाएंगे) मैं कहूंगा, ऐ मेरे रब! ये तो मेरे साथी हैं। अल्लाह फ़रमाएंगे, तुम्हें मालूम नहीं, इन्होंने तुम्हारे बाद क्या करतूत किए थे। (इससे वे लोग मुराद हैं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में मुसलमान थे, लेकिन हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात पर मुर्तद हो गए थे।)[2]

दज्जाल, मुसैलमा कज़्ज़ाब, याजूज-माजूज और ज़मीन में धंसाए जाने के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बयान

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हम लोग हज्जतुल विदाअ के बारे में (हज से पहले) बातें तो करते थे (कि हम लोग

1. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 392,
2. इब्ने माजा, पृ० 565, कंज़, भाग 3, पृ० 25.

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हज करेंगे, वग़ैरह) लेकिन हमें यह ख़बर नहीं थी कि हुज़ूर सल्ल० (अपनी उम्मत को) अल-विदाअ फ़रमाने के लिए यह हज कर रहे हैं। चुनांचे हज्जतुल विदाअ के इसी सफ़र में हुज़ूर सल्ल० ने एक बयान में मसीह दज्जाल का ज़िक्र किया और बहुत तफ़्सील से उसके बारे में बातें कीं, फिर फ़रमाया, अल्लाह ने जिस नबी को भेजा, उसने अपनी उम्मत को दज्जाल से ज़रूर डराया। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और उनके बाद के सारे नबियों ने उससे डराया है, लेकिन उसकी एक बात अभी तक तुम लोगों से छुपी हुई है और वह तुम लोगों से छुपी नहीं रहनी चाहिए। (कि वह काना होगा) और तुम्हारा रब तबारक व तआला काना नहीं है।[1]

हज़रत सफ़ीना रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हममें बयान फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया, मुझसे पहले हर नबी ने अपनी उम्मत को दज्जाल से डराया है। उसकी बाईं आंख कानी है और उसकी दाईं आंख में नाक की तरफ़ वाले गोशे में गोश्त का एक मोटा-सा टुकड़ा होगा जो आंख की स्याही पर चढ़ा हुआ होगा। उसकी दोनों आंखों के दर्मियान काफ़िर लिखा हुआ होगा। उसके साथ दो वादियां भी होंगी। एक जन्नत नज़र आएगी और दूसरी दोज़ख़, लेकिन उसकी जन्नत हक़ीक़त में दोज़ख़ होगी और उसकी दोज़ख़ जन्नत होगी। और उसके साथ दो फ़रिश्ते होंगे जो नबियों में से दो नबियों से मिलते-जुलते होंगे। एक फ़रिश्ता दज्जाल के दाहिनी तरफ़ होगा और दूसरा बाईं तरफ़ और उसमें लोगों की आज़माइश होगी।

दज्जाल कहेगा, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं, मैं मारता हूं और ज़िंदा करता हूं? इस पर एक फ़रिश्ता कहेगा, तू ग़लत कहता है। इस जुम्ले को उसका साथी फ़रिश्ता सुन सकेगा और कोई नहीं सुनेगा। दूसरा फ़रिश्ता पहले फ़रिश्ते को जवाब में कहेगा, तुमने ठीक कहा। इस जुम्ले को तमाम लोग सुन लेंगे। इससे लोग यह समझेंगे कि यह फ़रिश्ता उस

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 338,

दज्जाल की तस्दीक़ कर रहा है। यह भी आज़माइश की एक शक्ल होगी। फिर वह दज्जाल चलेगा और चलते-चलते मदीना पहुंच जाएगा, लेकिन उसे मदीना के अन्दर जाने की इजाज़त नहीं होगी। फिर वह कहेगा, यह तो उस अज़ीम हस्ती (यानी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बस्ती है। फिर वहां से चलकर शाम देश पहुंचेगा और अफ़ीक़ मुक़ाम की घाटी के पास अल्लाह उसे हलाक करेंगे।[1]

हज़रत जुनादा बिन अबी उमैया अज़्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं और एक अंसारी हम दोनों नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी की ख़िदमत में गए और उनसे अर्ज़ किया, हमें आप कोई ऐसी हदीस बयान करें जो आपने हुज़ूर सल्ल० से सुनी हो और उसमें हुज़ूर सल्ल० ने दज्जाल का ज़िक्र किया हो।

उन्होंने फ़रमाया, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम लोगों में बयान फ़रमाया, उसमें इर्शाद फ़रमाया, मैं तुम्हें दज्जाल से डराता हूं। यह जुम्ला तीन बार दोहराया, फिर फ़रमाया, कोई नबी ऐसा नहीं आया, जिसने दज्जाल से न डराया हो। ऐ उम्मत वालो! वह तुममें होगा, वह घुंघराले बालों वाला और गन्दुमी रंग वाला होगा। उसकी बाईं आंख पर हाथ फिरा हुआ होगा और वह मिटी हुई होगी। उसके साथ जन्नत और दोज़ख़ होगी और उसके साथ रोटी के पहाड़ और पानी की नहर होगी। वह बारिश बरसाएगा, लेकिन पेड़ नहीं उगा सकेगा और वह एक आदमी पर ग़ालिब आकर उसे क़त्ल कर देगा, उसके अलावा और किसी को क़त्ल नहीं कर सकेगा, वह ज़मीन पर चालीस दिन रहेगा और वह पानी के हर घाट पर पहुंचेगा, चार मस्जिदों के क़रीब नहीं जा सकेगा—1. मस्जिदे हराम, 2. मस्जिदे मदीना, 3. मस्जिदे तूर, 4. मस्जिदे अक़्सा और तुम पर दज्जाल मुश्तबहा नहीं होना चाहिए। वह (काना होगा) और तुम्हारा रब काना नहीं है।[2]

---

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 340
2. हैसमी, भाग 7, पृ० 343,

हज़रत अबू उमामा बाहिली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम लोगों में बयान फ़रमाया, इस बयान में आपने ज़्यादातर दज्जाल के बारे में बातें फ़रमाईं और जब दज्जाल का ज़िक्र शुरू हुआ तो फिर आख़िर तक उसी के बारे में बात-चीत करते रहे। उस दिन आपने जो कुछ हमसे फ़रमाया, उसमें यह भी था कि अल्लाह ने जो भी नबी भेजा, उसने अपनी उम्मत को दज्जाल से ज़रूर डराया और मैं आख़िरी नबी हूं और तुम आख़िरी उम्मत हो और वह यक़ीनन तुममें ही ज़ाहिर होगा। अगर मैं तुममें मौजूद हुआ और वह ज़ाहिर हुआ तो मैं हर मुसलमान की तरफ़ से दलीलों से उसका मुक़ाबला कर लूंगा और अगर मेरे बाद तुम लोगों में ज़ाहिर हुआ तो फिर हर आदमी ख़ुद अपनी तरफ़ से उसका मुक़ाबला करे और अल्लाह ही हर मुसलमान का मेरी तरफ़ से ख़लीफ़ा है और दज्जाल इराक़ और शाम के दर्मियान एक रास्ते में ज़ाहिर होगा और दाएं-बाएं फ़ौज भेजकर फ़साद बरपा करेगा। ऐ अल्लाह के बन्दो! जमे रहना, क्योंकि पहले तो वह कहेगा, मैं नबी हूं, हालांकि मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा, फिर वह कहेगा, मैं तुम्हारा रब हूं, हालांकि मरने से पहले तुम अपने रब को देख नहीं सकते और उसकी दोनों आंखों के दर्मियान काफ़िर लिखा हुआ होगा जिसे हर मोमिन पढ़ेगा, इसलिए तुममें से जो उससे मिले, वह उसके चेहरे पर थूक दे और सूरः कहफ़ की शुरू की आयतें पढ़े। वह एक आदमी पर ग़लबा पाकर पहले उसे क़त्ल करेगा और उसे ज़िंदा करेगा, लेकिन उसके बाद किसी और के साथ ऐसा नहीं कर सकेगा।

उसका एक फ़िला यह होगा कि उसके साथ जन्नत और दोज़ख़ होगी, उसकी दोज़ख़ जन्नत होगी और उसकी जन्नत दोज़ख़ होगी, इसलिए तुममें से जो उसके दोज़ख़ में डाले जाने की आज़माइश में पड़ा, उसे चाहिए कि वह अपनी आंखें बन्द कर ले और अल्लाह से मदद मांगे तो दोज़ख़ की आग उसके लिए ऐसे ठंडी और सलामती वाली हो जाएगी जैसे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए हो गई थी।

उसका एक फ़िला यह भी होगा कि वह एक क़बीले के पास से

गुज़रेगा, वे सब उस पर ईमान ले आएंगे और उसकी तस्दीक़ करेंगे तो वह उनके लिए दुआ करेगा तो उसी दिन उनके लिए आसमान से बारिश होगी और उसी दिन उनकी सारी ज़मीन सर सब्ज़ व शादाब हो जाएगी और उस दिन शाम को उनके जानवर चर कर वापस आएंगे तो वे बहुत मोटे हो चुके होंगे और उनके पेट ख़ूब भरे हुए होंगे और उनके थनों में ख़ूब दूध बह रहा होगा और वह दूसरे क़बीले के पास से गुज़रेगा, वे उसका इंकार कर देंगे और उसे झुठलाएंगे, तो वह उनके ख़िलाफ़ बद-दुआ करेगा, जिससे उनके सारे जानवर मर जाएंगे और एक भी जानवर उनके पास नहीं रहेगा।

इस दुनिया में वह कुल चालीस दिन रहेगा, जिनमें से एक दिन एक साल के बराबर होगा और एक दिन एक महीने के बराबर होगा और एक दिन एक हफ़्ते के बराबर होगा और एक दिन आम दिनों जैसा होगा और उसका आख़िरी दिन सराब की तरह बहुत मुख़्तसर होगा, इतना मुख़्तसर कि आदमी सुबह मदीने के एक दरवाज़े पर होगा और दूसरे दरवाज़े तक पहुंचने से पहले ही शाम हो जाएगी।

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इन छोटे दिनों में हम नमाज़ें कैसे पढ़ेंगे? आपने फ़रमाया, तुम इन छोटे दिनों में वक़्त का अन्दाज़ा लगाकर ऐसे ही नमाज़ें पढ़ लेना, जैसे लम्बे दिनों में अन्दाज़े से पढ़ोगे।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक दिन मिंबर पर खड़े होकर फ़रमाया, ऐ लोगो ! मैंने तुम लोगों को आसमान से आने वाली (नई) ख़बर की वजह से जमा नहीं किया। इसके बाद आपने जस्सासा का ज़िक्र किया, यानी दज्जाल के लिए जासूसी करने वाली चीज़ का ज़िक्र किया और उस हदीस में यह भी है कि वह मसीह है। चालीस दिन में उसके लिए सारी ज़मीन लपेट दी जाएगी, लेकिन तैयिबा में दाख़िल नहीं हो सकता, हुज़ूर सल्ल० ने

1. हाकिम, भाग 4, पृ० 536,

फ़रमाया, तैयिबा से मुराद मदीना है। उसके हर दरवाज़े पर तलवार सौंते हुए एक फ़रिश्ता होगा जो दज्जाल को उसमें जाने से रोकेगा और मक्का में भी इसी तरह होगा।[1]

बसरा वालों में से हज़रत सालबा बिन इबाद अब्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं एक दिन हज़रत समुरा बिन जुन्दुब रज़ियल्लाहु अन्हु के बयान में शरीक हुआ। उन्होंने अपने बयान में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से एक हदीस बयान की और सूरज गरहन वाली हदीस भी ज़िक्र की। उसमें यह भी फ़रमाया कि जब हुज़ूर सल्ल० दूसरी रक्अत में बैठ गए तो उस वक़्त सूरज साफ़ हुआ और उसका गरहन ख़त्म हुआ।

सलाम फेरने के बाद आपने अल्लाह की हम्द व सना बयान की और इस बात की गवाही दी कि आप अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं। फिर फ़रमाया, ऐ लोगो! मैं तुम्हें अल्लाह का वास्ता देकर कहता हूं, अगर तुम्हें मालूम है कि मैंने अपने रब का पैग़ाम पहुंचाने में कोई कमी की है, तो तुम लोग मुझे ज़रूर बताओ। इस पर बहुत-से आदमियों ने खड़े होकर कहा, हम इस बात की गवाही देते हैं कि आपने अपने रब के तमाम पैग़ाम पहुंचा दिए हैं और अपनी उम्मत की पूरी ख़ैर ख़्वाही की है और जो काम आपके ज़िम्मे था, वह पूरा कर दिया है।

फिर आपने फ़रमाया, अम्मा बादु! बहुत-से लोगों का यह ख़्याल है कि चांद-सूरज का गरहन होना और सितारों का अपने निकलने की जगह से हट जाना, ज़मीन के किसी बड़े आदमी के मरने की वजह से होता है, यह ख़्याल बिल्कुल ग़लत है। यह गरहन तो अल्लाह की कुदरत की निशानियों में से एक निशानी है जिसके ज़रिए अल्लाह अपने बन्दों का इम्तिहान लेते हैं और देखते हैं कि कौन इस निशानी को देखकर कुफ़्र और गुनाहों से तौबा कर लेता है और मैंने जितने वक़्त में खड़े होकर नमाज़ गरहन पढ़ाई है, उसमें मैंने दुनिया और आख़िरत में

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 346,

तुम्हें जो कुछ पेश आएगा, वह सब देख लिया है। अल्लाह की क़सम ! क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी जब तक तीस झूठे ज़ाहिर न हो जाएंगे, जिनका आख़िरी काना दज्जाल होगा। उसकी बाईं आंख मिटी हुई होगी, बिल्कुल ऐसी आंख होगी जैसे अबू तह्या की आंख। हज़रत अबू तह्या रज़ियल्लाहु अन्हु अंसार के एक बड़े मियां थे जो उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० के और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के हुजरे के दर्मियान बैठे हुए थे।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब वह ज़ाहिर होगा, तो दावा करेगा कि वह अल्लाह है जो उस पर ईमान लाएगा और उसकी तस्दीक़ करेगा और उसकी पैरवी करेगा, उसे उसका पिछला कोई नेक अमल फ़ायदा नहीं देगा और जो उसका इंकार करेगा और उसको झुठलाएगा, उसको उसके किसी अमल पर कोई सज़ा नहीं दी जाएगी और हरम और बैतुल मक़्दिस के अलावा बाक़ी सारी ज़मीन पर हर जगह जाएगा और मुसलमान बैतुल मक़्दिस में घिर जाएंगे, फिर उन पर ज़बरदस्त ज़लज़ला आएगा, फिर अल्लाह दज्जाल को हलाक कर देंगे, यहां तक कि दीवार और पेड़ की जड़ आवाज़ देगी, ऐ मोमिन ! ऐ मुस्लिम ! यह यहूदी है, यह काफ़िर है, आ, इसे क़त्ल कर और ऐसा उस वक़्त तक नहीं होगा जब तक तुम ऐसी चीज़ें न देख लो जो तुम्हारे ख़्याल में बहुत बड़ी होंगी और जिनके बारे में तुम एक दूसरे से पूछोगे कि क्या तुम्हारे नबी ने उस चीज़ के बारे में कुछ ज़िक्र किया है? और (ऐसा उस वक़्त तक नहीं होगा) जब तक कि कुछ पहाड़ अपनी जगह से हट न जाएं, फिर उसके फ़ौरन बाद आम मौत होगी यानी क़ियामत क़ायम होगी।

हज़रत सालबा कहते हैं, इसके बाद मैंने हज़रत समुरा रज़ि० का एक और बयान सुना, उसमें उन्होंने यही हदीस ज़िक्र की और एक लफ़्ज़ भी आगे-पीछे न किया।[1]

अहमद और बज़्ज़ार की रिवायत में यह भी है कि जो अल्लाह को

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 341,

मज़बूती से पकड़ेगा और कहेगा, मेरा रब अल्लाह है जो ज़िंदा है, उसे मौत नहीं आ सकती। उस पर (दज्जाल के) अज़ाब का कोई असर नहीं होगा और जो (दज्जाल से) कहेगा, तू मेरा रब है, वह फ़ितने में पड़ गया।

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ फ़रमाने से पहले ही लोगों ने मुसैलमा के बारे में बहुत बातें कीं, फिर हुज़ूर सल्ल० बयान के लिए खड़े हुए और फ़रमाया, अम्मा बादु ! इस आदमी के बारे में तुम लोग बहुत बातें कर चुके हो, यह पक्का झूठा और उन तीस झूठों में से है जो क़ियामत से पहले ज़ाहिर होंगे और हर शहर में मसीह (दज्जाल) का रौब पहुंच जाएगा।[1]

एक रिवायत में इसके बाद यह है कि लेकिन मदीने में दज्जाल मसीह का रौब दाख़िल नहीं हो सकेगा, क्योंकि उसके हर रास्ते में दो फ़रिश्ते होंगे, दज्जाल मसीह के रौब को मदीना से रोक रहे होंगे।[2]

हज़रत ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह बिन हरमला रहमतुल्लाहि अलैहि अपनी ख़ाला से नक़ल करते हैं, उनकी ख़ाला फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बिच्छू के डसने की वजह से सर पर पट्टी बांध रखी थी। उसी हालत में आपने बयान फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया, तुम लोग कहते हो, अब कोई दुश्मन बाक़ी नहीं बचा, लेकिन तुम लोग दुश्मनों से लड़ाई लड़ते रहोगे, यहां तक कि याजूज माजूज ज़ाहिर होंगे, जिनके चेहरे चपटे, आंखें छोटी, बाल सफ़ेद, मगर लाली लिए हुए होंगे। वे हर ऊंची जगह से दौड़ते चले आएंगे। उनके चेहरे ऐसे होंगे जैसे वह ढाल जिस पर खाल चढ़ाई गई हो।[3]

हज़रत क़अ-क़ाअ रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी हज़रत बुक़ीरा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, मैं औरतों के सुफ़्फ़े (चबूतरे) में बैठी हुई थी, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बयान फ़रमाते हुए सुना,

---

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 332,
2. हाकिम, भाग 4, पृ० 541,
3. हैसमी, भाग 8, पृ० 6,

आप बाएं हाथ से इशारा करते हुए फ़रमा रहे थे, ऐ लोगो ! जब तुम सुनो कि इस तरफ़ यानी मग़रिब की तरफ़ कुछ लोग ज़मीन में धंस गए हैं तो समझ लो कि क़ियामत आ गई है।[1]

ग़ीबत की बुराई में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसी ऊंची आवाज़ से बयान फ़रमाया कि घरों में परदे में बैठी हुई जवान लड़कियों ने भी सुन लिया। आपने फ़रमाया, ऐ वे लोगो ! जो ज़ुबान से ईमान लाए हैं और अभी ईमान उनके दिल में दाख़िल नहीं हुआ है, मुसलमानों की ग़ीबत न किया करो और उनके छिपे ऐब न खोजा करो, क्योंकि जो अपने भाई के छिपे ऐब खोजेगा, अल्लाह उसके ऐब तलाश करेगा और अल्लाह जिसके छिपे ऐब खोजने लगेगा, उसे उसके घर के बीच में भी रुसवा करके छोड़ेगा।[2]

तबरानी में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से इसी जैसी रिवायत नक़ल की गई है, लेकिन उसके लफ़्ज़ ये हैं कि ईमान वालों को तक्लीफ़ न पहुंचाओ और उनकी छिपी हुई ख़राबियों को न खोजो, क्योंकि जो अपने मुसलमान भाई की छिपी हुई ख़राबी खोजेगा, अल्लाह उसका परदा फाड़ देंगे और उसे रुसवा कर देंगे।[3]

भलाइयों का हुक्म देने और बुराइयों से रोकने के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे पास तशरीफ़ लाए तो मैंने चेहरा अन्वर पर ख़ास असर देखकर महसूस किया कि कोई अहम बात पेश

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 9
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 93,
3. हैसमी, भाग 8, पृ० 94, कंज़, भाग 8, पृ० 300,

आई है। हुज़ूर सल्ल० ने किसी से कोई बात न फ़रमाई, बल्कि वुज़ू फ़रमा कर मस्जिद में तशरीफ़ ले गए और मैं हुजरे की दीवार से लगकर सुनने खड़ी हो गई कि क्या इर्शाद फ़रमाते हैं?

हुज़ूर सल्ल० मिंबर पर बैठ गए और हम्द व सना के बाद फ़रमाया, ऐ लोगो! अल्लाह तुम्हें फ़रमाते हैं, भलाई का हुक्म देने और बुराई को मिटाने का काम करते रहो, शायद वह वक़्त आ जाए कि तुम दुआ करो और मैं क़ुबूल न करूं और तुम सवाल करो और मैं उसे पूरा न करूं, तुम अपने दुश्मनों के ख़िलाफ़ मदद चाहो और मैं तुम्हारी मदद न करूं, बस इतना बयान फ़रमाया और मिंबर से नीचे तशरीफ़ ले आए।[1]

बुरे अख़्लाक़ से बचाने के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान

हज़रत अब्दुलाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम लोगों में बयान फ़रमाया, उसमें इर्शाद फ़रमाया, ज़ुल्म से बचो, क्योंकि क़ियामत के दिन ये ज़ुल्म बहुत-से अंधेरे होंगे और बदकलामी और तकल्लुफ़ वाली बदकलामी से बचो और लालच से बचो, क्योंकि तुमसे पहले लोग लालच की वजह से हलाक हुए और लालच की वजह से रिश्ते तोड़ दिए और कंजूसी से काम लिया और लालच में आकर बदकारी कर बैठे।

फिर एक आदमी ने खड़े होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! इस्लाम का कौन-सा अमल सबसे अफ़ज़ल है? आपने फ़रमाया, यह कि मुसलमान तुम्हारी ज़ुबान और हाथ से बचे रहें। उसी आदमी ने या दूसरे ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हिजरत की कौन-सी शक्ल सबसे अफ़ज़ल है? फ़रमाया, यह कि तुम उन कामों को छोड़ दो जो तुम्हारे रब को नापसन्द हैं। हिजरत दो तरह की है, एक शहर वालों की हिजरत और एक देहात वालों की हिजरत। देहात वालों की हिजरत यह है कि (रहे तो अपने देहात में, लेकिन) जब उसे (तक़ाज़े के

1. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 12, मज्मा, भाग 7, पृ० 266

लिए) बुलाया जाए तो फ़ौरन हां कहे और जब उसे कोई हुक्म दिया जाए तो उसे फ़ौरन पूरा करे। शहर वालों की हिजरत में आज़माइश भी ज़्यादा है और अज्र भी ज़्यादा, (क्योंकि अपना वतन हमेशा के लिए छोड़कर मदीना आकर रहेगा और दावत के तक़ाज़ों में हर वक़्त चलेगा।)[1]

तबरानी में हज़रत हरमास बिन बिन ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु से यही हदीस मुख़्तसर तौर से नक़ल की गई है, लेकिन उसके शुरू में यह है कि ख़ियानत से बचो, क्योंकि यह बहुत बुरी अन्दरूनी सिफ़त है।[2]

बड़े गुनाहों से बचाने के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान

हज़रत ऐमन बिन ख़ुरैम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खड़े होकर बयान फ़रमाया, आपने इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो! झूठी गवाही अल्लाह के यहां शिर्क के बराबर समझी जाती है। यह बात तीन बार इर्शाद फ़रमाई, फिर आपने यह आयत तिलावत फ़रमाई—

فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّوْرِ

'तो तुम लोग गन्दगी से यानी बुतों से (बिल्कुल) किनाराकश रहो और झूठी बात से किनाराकश रहो।'[3]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हममें बयान फ़रमाया और सूद का ज़िक्र फ़रमाया और उसे बहुत बड़ा गुनाह बताया और फ़रमाया, आदमी सूद में जो एक दिरहम लेता है, अल्लाह के यहां उसका गुनाह छत्तीस बार ज़िना करने से भी ज़्यादा है और सबसे बुरा सूद मुसलमानों की आबरू रेज़ी है।[4]

---

1. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 158,
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 467,
3. कंज़, भाग 4, पृ० 7,
4. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 282

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम लोगों में बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो ! शिर्क से बचो, क्योंकि शिर्क चींटी की चाल से भी ज़्यादा छिपी हुई है और हो सकता है कि यह बात सुनकर कोई यों कहे, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जब शिर्क चींटी की चाल से भी ज़्यादा पोशीदा है, तो हम उससे कैसे बचें ? फ़रमाया, तुम यह दुआ पढ़ा करो—

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِکَ اَنْ نُشْرِکَ بِکَ وَ نَحْنُ نَعْلَمُہٗ وَ نَسْتَغْفِرُکَ لِمَالَا نَعْلَمُہٗ

'ऐ अल्लाह ! हम इस बात से तेरी पनाह चाहते हैं कि हमें मालूम हो कि यह शिर्क है और हम फिर तेरे साथ यह शिर्क करें और जिस शिर्क का हमें पता ही नहीं, उसकी हम माफ़ी चाहते हैं।'[1]

शुक्र के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मिंबर की लकड़ियों पर इर्शाद फ़रमाया, जो थोड़े पर शुक्र नहीं करता, वह ज़्यादा पर भी नहीं कर सकता और जो इंसानों का शुक्र नहीं करता, वह अल्लाह का भी नहीं कर सकता और अल्लाह की नेमतों का बयान करना भी शुक्र है और उन्हें बयान न करना नाशुक्री है। आपस का जोड़ सरासर रहमत है और आपस का तोड़ अज़ाब है।

रिवायत करने वाले कहते हैं, हज़रत अबू उमामा बाहली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, तुम सवादे आज़म को चिमटे रहो, यानी उलेमा हक़ से जुड़े रहो।

एक आदमी ने पूछा, सवादे आज़म क्या होता है? इस पर हज़रत अबू उमामा रज़ि० ने पुकार कर कहा, सूरः नूर की यह आयत—

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَیْہِ مَا حُمِّلَ وَ عَلَیْکُمْ مَا حُمِّلْتُمْ (سورت نور آیت ۵۴)

1. कंज़, भाग 2, पृ० 169,

'फिर अगर तुम लोग (इताअत से) मुंह फेरोगे, तो समझ रखो कि रसूल के ज़िम्मे वही (तब्लीग़ यानी पहुंचा देना) है जिसका उन पर बोझ रखा गया है और तुम्हारे ज़िम्मे वह है जिसका तुम पर बोझ रखा गया है और अगर तुमने उनकी इताअत कर ली, तो राह पर जा लगोगे।'

(सूरः नूर, आयत 54)

यानी न मानने से मुनाफ़िक़ों का अपना ही नुक़सान होगा, रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नहीं होगा, क्योंकि हमने उनके ज़िम्मे जो काम लगाया था, वह उन्होंने पूरा कर दिया, इसलिए ये तो कामियाब हैं, मुनाफ़िक़ मानें या न मानें।[1]

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बयान फ़रमाते हुए सुना। बयान में आपने यह आयत पढ़ी—

اِعْمَلُوْا آلَ دَاوٗدَ شُكْرًا وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِیَ الشَّكُوْرُ (سورت سبا آیت ۱۳)

'ऐ दाऊद के ख़ानदान वालो! तुम सब शुक्रिया में नेक काम किया करो और मेरे बन्दों में शुक्रगुज़ार कम ही होते हैं।'

(सूरः सबा, आयत 13)

फिर आपने फ़रमाया, जिसे तीन ख़ूबियां मिल गईं, उसे उतना मिल गया, जितना दाऊद अलैहिस्सलाम को मिला था, लोगों के सामने भी, छुपकर भी, हर हाल में अल्लाह से डरना, ख़ुशी और ग़ुस्सा दोनों हालतों में इंसाफ़ से काम लेना, फ़क़्र और ग़िना दोनों हालतों में बीच का रास्ता।[2]

बेहतरीन ज़िंदगी के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार बयान फ़रमाया, इसमें इर्शाद फ़रमाया, सिर्फ़ दो

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 218,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 226,

आदमियों की ज़िंदगी बेहतरीन है, एक वह जो सुनकर उसकी हिफ़ाज़त करे। दूसरे वह आलिम, जो हक़ बात कहने वाला हो। ऐ लोगो! आजकल तुम लोग कुफ़्फ़ार से सुलह के ज़माने में हो और तुम बहुत तेज़ी से आगे को जा रहे हो, और तुमने देख लिया कि दिन-रात के गुज़रने से हर नई चीज़ पुरानी हो रही है और हर दूर वाली चीज़ नज़दीक आ रही है और हर चीज़ के वायदे का वक़्त आ रहा है, चूंकि जन्नत में मुक़ाबले में एक दूसरे से निकलने का मैदान बहुत लम्बा-चौड़ा है, इसलिए वहां की तैयारी अच्छी तरह कर लो।

हज़रत मिक़्दाद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! सुलह से क्या मुराद है?

आपने फ़रमाया, (कुफ़्फ़ार से सुलह, जिससे) आज़माइश का दौर ख़त्म हो गया और जब अंधेरी रात के टुकड़ों की तरह तुम पर बहुत-से काम गड्ड-मड्ड हो जाएं (और पता न चले कि ठीक कौन-सा है और ग़लत कौन-सा?) तो तुम क़ुरआन को लाज़िम पकड़ लो, (जिसे क़ुरआन ठीक कहे, उसे तुम अख़्तियार कर लो) क्योंकि क़ुरआन ऐसा सिफ़ारिशी है, जिसकी सिफ़ारिश क़ुबूल की जाती है और (इंसान की तरफ़ से) ऐसा झगड़ा करने वाला है, जिसकी बात सच्ची मानी जाती है, जो क़ुरआन को अपने आगे रखेगा (और उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेगा।) क़ुरआन उसे जन्नत की तरफ़ ले जाएगा और जो उसे पीठ पीछे डाल देगा, उसे दोज़ख़ की तरफ़ ले जाएगा और यह सबसे बेहतर रास्ता दिखाने वाला है। यह टो टोक फ़ैसला करने वाला कलाम है, लग़्व और बेकार चीज़ नहीं है। इसका एक ज़ाहिर है और एक बातिन। ज़ाहिर तो शरीअत के हुक्म हैं और बातिन यक़ीन है। इसका समुन्दर बहुत गहरा है, इसकी अजीब बातें अनगिनत हैं, उलेमा इसके इल्मों से कभी सेर नहीं हो सकते। यह अल्लाह की मज़बूत रस्सी है, यही सीधा रास्ता है, यही हक़ बयान करने वाला कलाम है, जिसे सुनते ही जिन्नात एकदम बोल उठे।

إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ (سورت جن آیت ۱، ۲)

'(फिर अपनी क़ौम में वापस जाकर) उन्होंने कहा कि हमने एक अजीब कुरआन सुना है, जो सीधा रास्ता बतलाता है, सो हम तो उस पर ईमान ले आए।' (सूरः जिन्न, आयत 1-2)

जो कुरआन की बात कहता है, वह सच कहता है, जो उस पर अमल करता है, उसे अज्र व सवाब मिलता है, जो उसके मुताबिक़ फ़ैसला करता है, वह अद्ल करता है और जो उस पर अमल करता है, उसे सीधे रास्ते की हिदायत मिलती है, इसमें हिदायत के चिराग़ हैं और यह हिक्मत का मीनार और सीधे रास्ते की रहनुमाई करता है।[1]

दुनिया की बे-रग़बती के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान

हज़रत हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैंने एक बार देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सहाबा में खड़े होकर बयान फ़रमा रहे हैं। आपने इर्शाद फ़रमाया, हमारे काम के तरीक़े से ऐसा मालूम होता है कि जैसे मौत हमें नहीं आएगी, बल्कि दूसरों के मुक़द्दर में मौत लिखी हुई है और हक़ को क़ुबूल करके उस पर अमल करना हमारे ज़िम्मे नहीं है, बल्कि दूसरों के ज़िम्मे है और ऐसा मालूम होता है कि जिन मुर्दों को हम रुख़्सत कर रहे हैं, वे कुछ दिनों के लिए सफ़र में गए हैं और थोड़े ही दिनों में हमारे पास वापस आ जाएंगे और मरने वालों की मीरास हम इस तरह खाते हैं कि जैसे उनके पास हमने यहां हमेशा रहना है। हम हर नसीहत को भूल गए हैं और आने वाली मुसीबतों से हम अपने आपको अम्न में समझते हैं। ख़ुशख़बरी हो उस आदमी के लिए जो अपने ऐबों को देखनें में इस तरह लगे कि उसे दूसरे लोगों के ऐब देखने की फ़ुर्सत न मिले और ख़ुशख़बरी हो उस आदमी के लिए जिसकी कमाई पाकीज़ा हो और उसकी अन्दरूनी हालत भी ठीक हो और ज़ाहिरी आमाल भी अच्छे हों और उसका रास्ता भी सीधा हो और ख़ुशख़बरी हो उस आदमी के लिए जिसमें कोई दीनी और

1. कंज़, भाग 1, पृ० 218

अख़्लाक़ी कमी न हो और फिर वह तवाज़ो अख़्तियार करे और उस माल में से ख़र्च करे, जो उसने बग़ैर किसी गुनाह के हलाल तरीक़े से जमा किया है और दीन की समझ रखने वालों और हिक्मत व दानाई वालों से मेल-जोल रखे और कमज़ोर और मिस्कीन लोगों पर तरस खाए और ख़ुशख़बरी हो उस आदमी के लिए जो अपना ज़रूरत से ज़्यादा माल दूसरों पर ख़र्च करे और ज़रूरत से ज़्यादा बात न करे और हर हाल में सुन्नत पर अमल करे और सुन्नत छोड़कर किसी बिदअत को अख़्तियार न करे। फिर आप मिंबर से नीचे तश्रीफ़ ले आए।[1]

इब्ने असाकिर की रिवायत के शुरू में यह है कि आपने अपनी जदआ नामी ऊंटनी पर सवार होकर हमें बयान फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो! और उस रिवायत के आख़िर में यह है कि हम मुर्दों को क़ब्रों में दफ़न करते हैं और फिर उनकी मीरास खाते हैं।

एक रिवायत में यह है कि उसने सुन्नत की पैरवी की और सुन्नत छोड़कर बिदअत की तरफ़ नहीं गया और बज़्ज़ार की रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी अज़बा नामी ऊंटनी पर थे जो कि जदआ नहीं थी और उस रिवायत में यह भी है कि उन मुर्दों के घर उनकी क़ब्रें हैं और उस रिवायत में यह भी है कि उसने दीन की समझ रखने.वालों से मेल-जोल रखा और शक करने वालों और बिदअत अपनाने वालों से अलग रहा और उसके ज़ाहिरी आमाल ठीक हों और लोगों को अपने शर से बचाए रखे।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिंबर पर तश्रीफ़ रखते थे और लोग आपके आस-पास बैठे हुए थे, आपने फ़रमाया, ऐ लोगो! अल्लाह से इस तरह हया करो, जिस तरह उससे हया करने का हक़ है। एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम अल्लाह तआला से हया

---

1. हुलीया, भाग 3, पृ० 202, कंज़, भाग 8, पृ० 204,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 229,

करें? आपने फ़रमाया, तुममें से जो आदमी हया करने वाला है, उसे चाहिए कि वह रात इस तरह से गुज़ारे कि उसकी मौत उसकी आंखों के सामने हो और अपने पेट की और पेट के साथ जो और अंग (दिल, शर्मगाह वग़ैरह) हैं, उनकी हिफ़ाज़त करे और सर की और सर के अन्दर जो अंग (कान, नाक, आंख और मुंह वग़ैरह) हैं, उनकी हिफ़ाज़त करे, मौत को और क़ब्र में जाकर बोसीदा हो जाने को याद रखे और दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत छोड़ दे।[1]

हश्र के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मिंबर पर बयान फ़रमाते हुए सुना, आप फ़रमा रहे थे, तुम लोग अल्लाह की बारगाह में नंगे पांव, नंगे बदन, बग़ैर ख़त्ना के हाज़िर होंगे। एक रिवायत में पैदल भी है और एक रिवायत में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खड़े होकर हमें नसीहत फ़रमाई, इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो! तुम्हें अल्लाह की बारगाह में नंगे पांव, नंगे बदन और बग़ैर ख़त्ना के जमा किया जाएगा (अल्लाह तआला ने फरमाया है)—

كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيدُهُ وَعْدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ (سورت انبياء آيت ۱۰۴)

'(और) हमने जिस तरह पहली बार पैदा करने के वक़्त (हर चीज़ की) शुरूआत की थी, उसी तरह (आसानी से) उसको दोबारा पैदा कर देंगे। यह हमारे ज़िम्मे वायदा है और हम (ज़रूर उसको पूरा) करेंगे।'

(सूरः अंबिया, आयत 104)

ग़ौर से सुनो, (क़ियामत के दिन) तमाम इंसानों में सबसे पहले हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को कपड़े पहनाए जाएंगे। ग़ौर से सुनो! मेरी उम्मत के कुछ लोगों को लाया जाएगा, फिर उन्हें बाईं तरफ़ ले

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 200,

जाया जाएगा, तो मैं कहूंगा, ऐ मेरे रब ! ये तो मेरे साथी हैं। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, आपको मालूम नहीं है कि इन्होंने आपके बाद क्या गुल खिलाए? उस वक़्त मैं वही बात कहूंगा जो अल्लाह के नेक बन्दे (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) कहेंगे—

وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ

से लेकर

اَلْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ

तक (सूरः माइदा 117-118) 'और मुझे उनकी ख़बर मिलती रही, जब तक मैं उनमें रहा, फिर जब आपने मुझे उठा लिया, तो आप उनकी ख़बर रखते रहे और आप हर चीज़ की पूरी ख़बर रखते हैं। अगर आप उनको सज़ा दें, तो ये आपके बन्दे हैं और अगर आप उनको माफ़ फ़रमा दें, तो आप ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं।'

फिर मुझे बताया जाएगा कि जब आप उनसे जुदा हुए तो उन्होंने एड़ियों के बल वापस लौटना शुरू कर दिया था और होते-होते ये मुर्तद हो गए थे, (चुनांचे हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल के बाद अरब के कुछ लोग मुर्तद हो गए थे।)

एक रिवायत में इसके बाद यह है कि मैं कहूंगा, दूर हो जाओ, दूर हो जाओ।[1]

तक़्दीर के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार मिंबर पर तशरीफ़ ले गए, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, इसके बाद फ़रमाया, एक रजिस्टर ऐसा है जिसमें अल्लाह ने जन्नत वालों के नाम और नसब सब तफ़्सील से लिखे हुए हैं और आख़िर में उन सबकी मज्मूई तायदाद लिखी हुई है, अब

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 345

क़ियामत तक इनमें कोई कमी-बेशी नहीं होगी।

फिर फ़रमाया, एक रजिस्टर और है जिसमें अल्लाह ने दोज़ख़ के नाम और नसब सब तफ़्सील से लिखे हुए हैं और आख़िर में इन सबकी मज्मूई तायदाद लिखी हुई है। अब क़ियामत तक इनमें कोई कमी-बेशी नहीं होगी। जन्नत में जाने वाला ज़िंदगी भर कैसे भी अमल करता रहे, लेकिन उसका ख़ात्मा जन्नत वालों के अमल पर होगा और दोज़ख़ में जाने वाला ज़िंदगी भर कैसे भी अमल करता रहे, लेकिन उसका ख़ात्मा दोज़ख़ वालों के अमल पर होगा। कभी-कभी ख़ुशक़िस्मत लोग यानी जिनके मुक़द्दर में जन्नत में जाना लिखा हुआ है, वह बदक़िस्मती के रास्ते पर इस तरह चल रहे होते हैं कि यों कहा जाता है कि ये तो बदक़िस्मतों जैसे हैं, बल्कि उन्हीं में से हैं, लेकिन ख़ुशक़िस्मती उन्हें आ लेती है और उन्हें (बदक़िस्मती के रास्ते से) छुड़ा लेती है और कभी बदक़िस्मत लोग यानी जिनके मुक़द्दर में दोज़ख़ में जाना लिखा होता है, वे ख़ुशक़िस्मती के रास्ते पर इस तरह चल रहे होते हैं कि यों कहा जाता है कि ये तो बिल्कुल ख़ुशक़िस्मतों जैसे हैं, बल्कि उन्हीं में से हैं, लेकिन फिर बदक़िस्मती उन्हें पकड़ लेती हैं और (ख़ुशक़िस्मती के रास्ते से) उन्हें निकालकर (बदक़िस्मती के रास्ते पर) ले जाती है, अल्लाह ने जिसे लौहे महफ़ूज़ में ख़ुशक़िस्मत (यानी जन्नती) लिखा हुआ है, उसे उस वक़्त तक दुनिया से नहीं निकालते, जब तक उससे मरने से पहले ख़ुशक़िस्मती वाला अमल नहीं करा लेते, चाहे वह अमल मरने से उतने ही देर पहले हो, जितना कि ऊंटनी के दूध निकालने के दर्मियान वक़्फ़ा होता है और अल्लाह ने जिसे लौहे महफ़ूज़ में बदक़िस्मत (यानी दोज़ख़ी) लिखा हुआ है, उसे उस वक़्त तक दुनिया से नहीं निकालते, जब तक उससे मरने से पहले बदक़िस्मती वाला अमल नहीं करा लेते, चाहे वह अमल करने से उतनी ही देर पहले हो, जितना कि ऊंटनी के दूध निकालने के दर्मियान वक़्फ़ा होता है। आमाल का दारोमदार आख़िरी वक़्त के अमल पर है।[1]

1. कंज़, भाग 1, पृ० 87, हैसमी, भाग 7, पृ० 213,

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिश्तेदारी के फ़ायदा देने के बारे में हुज़ूर सल्ल० का बयान

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मिंबर पर यह फ़रमाते हुए सुना कि लोगों को क्या हो गया कि यों कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिश्तेदारी क़ियामत के दिन कोई फ़ायदा नहीं देगी। अल्लाह की क़सम ! मेरी रिश्तेदारी दुनिया और आख़िरत में जुड़ी हुई है, दोनों जगह फ़ायदा देगी और ऐ लोगो ! मैं तुमसे पहले (तुम्हारी ज़रूरतों का ख़्याल करने के लिए) आगे जा रहा हूं और क़ियामत के दिन हौज़ (कौसर) पर मिलूंगा। कुछ लोग (वहां) कहेंगे, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं फ़्लां बिन फ़्लां यानी आपका रिश्तेदार हूं। मैं कहूंगा कि नसब को तो मैंने पहचान लिया, लेकिन तुमने मेरे बाद बहुत-से नए काम ईजाद किए हैं और उलटे पांव कुफ़्र में वापस चले गए। (ईमान व अमल के बग़ैर मेरी रिश्तेदारी काम नहीं देती और ईमान व अमल के साथ ख़ूब काम देती है।[1]

हुक्काम और सदक़ों की वसूली का काम करने वालों के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम लोगों में बयान फ़रमाया और उस बयान में यह इर्शाद फ़रमाया, ग़ौर से सुनो ! क़रीब है मुझे (इस दुनिया से) बुला लिया जाए और मैं यहां से चला जाऊं। मेरे बाद ऐसे लोग तुम्हारे हाकिम बनेंगे जो ऐसे अमल करेंगे, जिन्हें तुम जानते-पहचानते हो, उनकी इताअत सही और असल इताअत है। कुछ अर्सा ऐसा ही होगा, लेकिन इसके बाद ऐसे लोग तुम्हारे हाकिम बन जाएंगे, जो ऐसे अमल करेंगे, जिन्हें तुम जानते-पहचानते नहीं हो, जो उनकी क़ियादत (ग़लत कामों में)

1. कंज़, भाग 1, पृ० 198, तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 256,

करेगा और (दुन्यवी कामों में) उनका फ़ायदा चाहेगा वह ख़ुद भी बर्बाद होगा और दूसरों को भी बर्बाद करेगा। जिस्मानी तौर पर तो तुम उनसे मिले-जुले हो, लेकिन ग़लत आमाल में तुम उनसे अलग रहो, अलबत्ता उनमें से जो अच्छे अमल करे तुम उसके अच्छे अमल करने की गवाही दो, जो बुरे अमल करे, तुम उसके बुरे अमल करने की गवाही दो।[1]

हज़रत अबू हुमैद साइदी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक आदमी को सदक़ात (उश्र व ज़कात) वसूल करने के लिए भेजा, वह अपने काम से फ़ारिग़ होकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया और कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह माल और जानवर तो आपके हैं और यह मुझे हदिया में मिला है। हुज़ूर सल्ल० ने उससे फ़रमाया, तुम अपने मां-बाप के घर बैठकर क्यों नहीं देख लेते कि तुम्हें हदिए मिलते हैं या नहीं।

फिर शाम को हुज़ूर सल्ल० बयान के लिए खड़े हुए। पहले कलिमा शहादत पढ़ा, फिर अल्लाह के शायाने शान तारीफ़ की, फिर फ़रमाया, अम्मा बादु, सदक़ात की वसूली के लिए जाने वाले को क्या हुआ ? हम उसे सदक़ात वसूल करने के लिए भेजते हैं, वह वापस आकर हमें कहता है, यह तो आप लोगों के काम की वजह से मिला है और यह मुझे हदिए में मिला है। वह अपने मां-बाप के घर में बैठकर क्यों नहीं देख लेता कि उसे हदिए मिलते हैं या नहीं। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) की जान है, तुममें से जो आदमी भी सदक़ों के माल में थोड़ी-सी भी ख़ियानत करेगा और सदक़े के जानवरों में से कुछ भी ले लेगा वह उसे अपनी गरदन पर उठाए हुए क़ियामत के दिन लाएगा। ऊंट, गाय और बकरी जो लिया होगा, उसे गरदन पर उठाकर लाएगा और हर जानवर अपनी आवाज़ निकाल रहा होगा। मैंने (तुम्हें अल्लाह का पैग़ाम) पहुंचा दिया है।

हज़रत अबू हुमैद रज़ि० फ़रमाते हैं, फिर हुज़ूर सल्ल० ने अपना हाथ

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 237

इतना ऊपर उठाया कि हमें आपकी बग़लों की सफ़ेदी नज़र आने लगी। यह बयान मेरे साथ हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है, इसलिए उनसे भी पूछ लो।[1]

अंसार के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान

हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने अंसार के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मिंबर पर यह फ़रमाते हुए सुना, ग़ौर से सुनो, और लोग तो मेरा ऊपर का कपड़ा हैं और अंसार मेरा अन्दर का कपड़ा हैं। यानी इनसे मेरा ख़ास ताल्लुक़ है और लोग अगर एक घाटी में चलें और अंसार किसी और घाटी में चलें, तो मैं अंसार की घाटी में चलूंगा। अगर हिजरत की फ़ज़ीलत न होती, तो मैं अंसार में से एक आदमी होता, इसलिए जो भी अंसार का हाकिम बने, उसे चाहिए कि वह उनके साथ अच्छे के साथ अच्छा सुलूक करे और उनके बुरे से दरगुज़र करे, जिसने उन्हें डराया, उसने उस चीज़ को डराया जो इन दो पहलुओं के दर्मियान है यानी मेरे दिल को। हुज़ूर सल्ल० ने अपने दिल की ओर इशारा भी फ़रमाया।[2]

हज़रत काब बिन मालिक अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु उन तीन सहाबा में से हैं, जिनकी तौबा क़ुबूल हुई थी। उनके साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी ने मेरे वालिदे मोहतरम को बताया कि एक दिन हुज़ूर सल्ल० सर पर पट्टी बांधे हुए बाहर तशरीफ़ लाए और बयान में आपने यह फ़रमाया, अम्मा बादु, ऐ मुहाजिरीन की जमाअत ! तुम्हारी तायदाद में इज़ाफ़ा होता रहेगा और लोग हिजरत करके आते रहेंगे लेकिन अंसार जितने आज हैं, उतने ही रहेंगे, उनकी तायदाद में इज़ाफ़ा न होगा। अंसार तो मेरे ज़ाती कपड़ों का संदूक़ हैं, यानी ये मेरे ख़ास

1. बुख़ारी, भाग 2, पृ० 982,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 35,

लोग हैं, जिनके पास मैं आकर ठहरा हूं, इसलिए उनके करीम आदमी का इक्राम करो और उनके बुरे आदमी से दरगुज़र करो।[1]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुख़्तलिफ़ बयान

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने मिंबर की लकड़ियों पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना, दोज़ख़ की आग से बचो, चाहे खजूर के एक टुकड़े के सदक़े के ज़रिए से ही बचो, क्योंकि यह सदक़ा टेढ़पन को सीधा कर देता है और बुरी मौत से बचाता है और जैसे पेट भरे आदमी को फ़ायदा देता है, ऐसे ही भूखे को भी फ़ायदा देता है यानी जो भी सदक़ा देगा, उसे अज्र व सवाब मिलेगा, चाहे भूखा हो या पेट भरा।[2]

हज़रत आमिर बिन रबीआ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बयान फ़रमाते हुए सुना, आप फ़रमा रहे थे, जो मुझ पर दरूद भेजेगा, तो जब वह दरूद भेजता रहेगा, फ़रिश्ते उसके लिए रहमत की दुआ करते रहेंगे, अब चाहे बन्दा अपने लिए (फ़रिश्तों से) थोड़ी दुआ करवाए, चाहे ज़्यादा।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम लोगों में खड़े होकर बयान फ़रमाया, आपने इर्शाद फ़रमाया, जिस आदमी को इस बात की ख़ुशी हो कि उसे आग से दूर कर दिया जाए और जन्नत में दाख़िल कर दिया जाए, उसे चाहिए कि उसे इस हाल में मौत आए कि उसके दिल में अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान मौजूद हो और लोगों के साथ वह मामला करे जो अपने साथ चाहता है।[4]

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 36,
2. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 134,
3. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 160,
4. कंज़, भाग 1, पृ० 76,

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम लोगों में ऐसा ज़बरदस्त बयान फ़रमाया कि मैंने वैसा बयान कभी नहीं सुना। फिर आपने फ़रमाया, जो कुछ मैं जानता हूं, अगर तुम लोग भी वह जान लो, तो तुम्हारा हंसना कम हो जाए और रोना ज़्यादा। इस पर तमाम सहाबा अपने चेहरों पर कपड़े डालकर रोने लगे।

एक रिवायत में यह है कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने सहाबा के बारे में कोई शिकायत पहुंची तो आपने बयान फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया, मेरे सामने जन्नत और जहन्नम पेश की गई और आज मैंने (जन्नत और जहन्नम देखकर) जितना ख़ैर और शर देखा है, उतना ख़ैर व शर कभी नहीं देखा और जो कुछ मैं जानता हूं अगर तुम भी वह जान लो, तो तुम हंसो कम और रोओ ज़्यादा। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० के सहाबा पर इससे ज़्यादा सख़्त दिन कोई नहीं आया, तमाम सहाबा सर ढांक कर रोने लगे।[1]

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान फ़रमाया और बयान करते-करते यह आयत पढ़ी—

إِنَّهُ مَنْ يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ (سورت طٰهٰ آيت ٧٤)

'जो आदमी (बग़ावत का) मुजरिम होकर अपने रब के पास हाज़िर होगा, सो उसके लिए दोज़ख़ (मुक़र्रर) है। उनमें न मरेगा ही और न जिएगा ही।' (सूरः ताहा, आयत 74) तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो असल दोज़ख़ वाले हैं (और हमेशा उसमें रहेंगे) वे उसमें न मरेंगे और न ही वे ज़िंदों में समझे जाएंगे, लेकिन वे लोग जो असल दोज़ख़ वाले नहीं हैं, (बल्कि गुनाहों की वजह से कुछ दिन के लिए दोज़ख़ में गए हैं) आग उनको कुछ जलाएगी, फिर सिफ़ारिश करने वाले खड़े होंगे और उन दोज़ख़ियों की सिफ़ारिश करेंगे फिर उनकी जमाअतें बनाकर उन्हें

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 226,

दोज़ख़ से निकाल कर नहर हयात या नहर हैवान पर लाया जाएगा, लोग उस नहर में ऐसे उगेंगे जैसे बाढ़ के लाए हुए कूड़े-करकट में घास उगती है।"[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार खड़े होकर बयान फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो! अल्लाह रब्बुल आलमीन के साथ अच्छा गुमान रखो। बन्दा अपने रब के साथ जैसा गुमान रखेगा, अल्लाह उसके साथ वैसा ही मामला करेगा।[2]

हज़रत अबू ज़ुहैर सक़फ़ी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बयान में यह फ़रमाते हुए सुना, ऐ लोगो! क़रीब है कि तुम दोज़ख़ वालों और जन्नत वालों को पहचान लोगे या फ़रमाया, तुम अपने भलों और बुरों को पहचान लोगे। एक आदमी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! कैसे?

आपने फ़रमाया, पहचानने का तरीक़ा यह है कि तुम लोग जिसकी तारीफ़ करोगे, वह जन्नती और भला है और जिसको बुरा कहोगे, वह दोज़ख़ी और बुरा है। तुम लोग आपस में एक दूसरे के बारे में गवाह हो। (सहाबा किराम और कामिल ईमान वाले जिसे अच्छा कहेंगे, वह यक़ीनन अच्छा होगा, और जिसे बुरा कहेंगे, वह यक़ीनन बुरा होगा।)[3]

हज़रत सालबा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खड़े होकर बयान फ़रमाया और सदक़ा फ़ित्र देने का हुक्म दिया और फ़रमाया, हर आदमी की तरफ़ से एक साअ (साढ़े तीन सेर) खजूर या एक साअ जौ सदक़ा फ़ित्र में दिए जाएं, चाहे वह आदमी छोटा हो या बड़ा, आज़ाद हो या गुलाम।[4]

1. तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 159,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 143,
3. हाकिम, भाग 4, पृ० 436,
4. कंज़, भाग 4, पृ० 338,

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जामे बयान, जिनके लफ़्ज़ कम और मानी ज़्यादा हैं

हज़रत उक़बा बिन आमिर जोह्नी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग तबूक की लड़ाई में जा रहे थे, अभी पहुंचने में एक रात का सफ़र बाक़ी था कि रात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सोते रह गए और फ़ज्र की नमाज़ के लिए आंख न खुल सकी, बल्कि सूरज निकल आया और एक नेज़े के बराबर बुलन्द हो गया। आपने फ़रमाया, ऐ बिलाल! क्या मैंने तुम्हें कहा नहीं था कि (हम तो सोने लगे हैं) तुम हमारी फ़ज्र का ख़्याल रखना।

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! (आपने तो फ़रमाया था, लेकिन) मुझे उस ज़ात ने सुला दिया, जिसने आपको सुलाए रखा। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० वहां से थोड़ा आगे गए, फिर फ़ज्र की नमाज़ क़ज़ा पढ़ी। इसके बाद अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर आपने इर्शाद फ़रमाया, अम्मा बादु, सबसे सच्ची बात अल्लाह की किताब है और सबसे मज़बूत कड़ा तक़्वा का कलिमा यानी कलिमा शहादत है और सबसे बेहतरीन मिल्लत हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मिल्लत है और सबसे बेहतरीन तरीक़ा हज़रत मुहम्मद अलैहिस्सलाम का तरीक़ा है और सबसे ऊंची बात अल्लाह का ज़िक्र है और सबसे अच्छा बयान यह क़ुरआन है। सबसे बेहतरीन काम वे हैं जो अज़ीमत और पुख़्तगी वाले हों, जिनका करना अल्लाह ने ज़रूरी क़रार दिया है और सबसे बुरे काम वे हैं जो नए ईजाद किए गए हों और सबसे अच्छी सीरत नबियों की सीरत है और सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाली मौत शहीद की है और सबसे ज़्यादा अंधापन हिदायत के बाद गुमराह होना है और बेहतरीन इल्म वह है जो नफ़ा दे और बेहतरीन सीरत वह है जिस पर चला जाए और सबसे बुरा अंधापन दिल का अंधापन है।

ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है, यानी देने वाला लेने वाले से बेहतर है और जो माल कम हो और इंसान की ज़रूरतों के लिए

काफ़ी हो, वह उस माल से बेहतर है जो ज़्यादा हो और इंसान को अल्लाह से ग़ाफ़िल कर दे और अल्लाह से माज़रत चाहने का सबसे बुरा वक़्त मौत के आने का वक़्त है और सबसे बुरी नदामत वह है जो क़ियामत के दिन होगी और कुछ लोग हर नमाज़ क़ज़ा करके पढ़ते हैं और कुछ लोग सिर्फ़ ज़ुबान से ज़िक्र करते हैं, दिल से नहीं करते और सबसे बड़ा गुनाह ज़ुबान का झूठ बोलना है और सबसे बेहतरीन मालदारी दिल का ग़िना है और बेहतरीन तोशा तक़्वा है। हिक्मत की जड़ अल्लाह का ख़ौफ़ है। जो बातें दिल में जमती हैं, उनमें सबसे बेहतरीन यक़ीन है।

(इस्लाम में) शक करना कुफ़्र है। मुर्दे पर वावैला करना जाहिलियत के कामों में से है और ग़नीमत के माल में ख़ियानत करना जहन्नम के ढेर में से है और जिस ख़ज़ाने की ज़कात न दी जाए, उसकी सज़ा यह है कि जहन्नम की आग से दाग़ लगाए जाएंगे। शेर व शायरी इब्लीस की बांसुरी है। अक्सर शेर शैतानी कामों के लिए इस्तेमाल होते हैं। शराब तमाम गुनाहों का मज्मूआ है। औरतें शैतान का जाल हैं। औरतों को ज़रिया बनाकर शैतान बहुत-से बुरे काम करा लेता है।

जवानी दीवानगी का एक हिस्सा है और सबसे बुरी कमाई सूद की है और सबसे बुरी खाने की चीज़ यतीम का माल है और ख़ुशक़िस्मत वह है जो दूसरों से नसीहत हासिल करे और बदबख़्त वह है जो अपनी मां के पेट में बदबख़्त हुआ है। आख़िरकार तुममें से हर आदमी चार हाथ जगह यानी क़ब्र में जाएगा और आमाल का दारोमदार आख़िरी वक़्त के अमल पर है।

सबसे बुरी रिवायतें वे हैं जो झूठी हों और हर आने वाली चीज़ क़रीब है। मोमिन को बुरा-भला कहने से आदमी फ़ासिक़ हो जाता है और मोमिन को क़त्ल करना कुफ़्र जैसा गुनाह है और मोमिन की ग़ीबत करना ख़ुदा की नाफ़रमानी है। उसके माल का एहतराम ऐसे ही ज़रूरी है जैसे उसके ख़ून का एहतराम ज़रूरी है। जो अल्लाह पर क़सम खाता है (जैसे कहता है, अल्लाह की क़सम ! फ़्लां जहन्नम में ज़रूर दाख़िल

होगा) अल्लाह उसका झूठा होना ज़रूर साबित करेंगे (और जिस बात के ग़लत होने की क़सम खाई थी, अल्लाह उसके ख़िलाफ़ करेंगे) जो दूसरों से दरगुज़र करेगा, अल्लाह उससे दरगुज़र फ़रमाएंगे, जो औरों को माफ़ करेगा, अल्लाह उसे माफ़ फ़रमाएंगे, जो अपना ग़ुस्सा दबाएगा, अल्लाह उसे अज्र देंगे, जो मुसीबत पर सब्र करेगा, अल्लाह उसे बदला देंगे, जो अपने नेक आमाल से दुनिया में शोहरत चाहेगा, अल्लाह क़ियामत के दिन तमाम इंसानों को सुनाएंगे कि यह अमल इख़्लास से नहीं करता था, बल्कि शोहरत के लिए करता था। जो सब्र करेगा, अल्लाह उसका अज्र बढ़ाएंगे, जो अल्लाह की नाफ़रमानी करेगा, अल्लाह उसे अज़ाब देंगे। ऐ अल्लाह! मेरी और मेरी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। ऐ अल्लाह! मेरी और मेरी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। ऐ अल्लाह! मेरी और मेरी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। मैं अपने लिए और तुम्हारे लिए अल्लाह से मग़्फ़िरत तलब करता हूं।[1]

हज़रत इयाज़ बिन हिमार मुजाशिई रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान फ़रमाया और बयान में इर्शाद फ़रमाया, मुझे मेरे रब ने इस बात का हुक्म दिया है कि आज मेरे रब ने मुझे जो कुछ सिखाया है और आप लोग उसे नहीं जानते हो, उसमें से मैं आप लोगों को भी सिखाऊं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, मैंने जो माल अपने बन्दों को दिया है, वह सारा उनके लिए हलाल है (इसलिए अरब के कुफ़्फ़ार ने, साइबा, वसीला, बहीरा वग़ैरह नाम रखकर जो कुछ अपने ऊपर हराम कर लिया है, वह हराम नहीं हुआ, बल्कि हलाल है।) मैंने अपने तमाम बन्दों को कुफ़्र व शिर्क और गुनाहों से पाक-साफ़ दीन इस्लाम पर पैदा किया है, फिर शैतानों ने आकर उन्हें दीन इस्लाम से गुमराह कर दिया और जो मैंने उनके लिए हलाल किया, वह उन पर हराम कर दिया और उन्हें इस बात का हुक्म दिया कि वे मेरे साथ ऐसी चीज़ों को शरीक करें, जिनकी मैंने कोई दलील नहीं उतारी,

1. फ़ैज़ुल क़दीर, भाग 2, पृ० 179, ज़ादुल मआद, भाग 3, पृ० 7,

फिर (मेरी बेसत से पहले) अल्लाह ने तमाम ज़मीन वालों पर नज़र डाली तो तमाम अरब व अजम को देखकर अल्लाह को गुस्सा आया (क्योंकि सब कुफ़्र व शिर्क में मुब्तला थे) लेकिन कुछ अह्ले किताब ऐसे थे, जो अपने सच्चे दीन पर क़ायम थे और उसमें उन्होंने कोई तब्दीली नहीं की थी।

फिर अल्लाह ने फ़रमाया, (ऐ हमारे नबी !) मैंने आपको इसलिए भेजा है, ताकि मैं आपका इम्तिहान लूं (कि आप मेरी मंशा पर चलते हैं या नहीं) और आपके ज़रिए से दूसरों का इम्तिहान लूं (कि वे आपकी दावत को मानते हैं या नहीं) और मैंने आप पर ऐसी किताब नाज़िल की है जिसे पानी नहीं धो सकता (उसकी लिखाई मिटने वाली नहीं, यानी आपके सीने में महफ़ूज़ रहेगी, आपको भूलेगी नहीं) और आप उसे सोते और जागते में पढ़ा करेंगे, यानी दोनों हालतों में आपको पक्का याद रहेगा।

फिर अल्लाह ने मुझे इस बात का हुक्म दिया कि मैं क़ुरैश को जला दूं, (यानी उन्हें अल्लाह की दावत दूं, जो मानेगा, वह कामियाब होगा, जो नहीं मानेगा, वह बर्बाद होगा, दोज़ख़ की आग में जलेगा।) मैंने अर्ज़ किया, ऐ मेरे रब ! फिर वे तो मेरा सर कुचल देंगे और रोटी की तरह चिपटा करके छोड़ेंगे। अल्लाह ने फ़रमाया, आप उन्हें (मक्का से) ऐसे निकालें जैसे उन्होंने आपको निकाला है। आप उनसे लड़ें, हम आपकी मदद करेंगे। आप उन पर ख़र्च करें, हम आप पर ख़र्च करेंगे। आप उनकी ओर एक फ़ौज भेजें, हम उस जैसे (फ़रिश्तों की) पांच फ़ौज भेजेंगे और अपने फ़रमांबरदारों को लेकर नाफ़रमानों से लड़ाई लड़ें और जन्नती लोग तीन क़िस्म के होते हैं। एक आदिल (न्यायी) बादशाह, जिसे अल्लाह की तरफ़ से नेक कामों की ख़ूब तौफ़ीक़ मिली हो, और वह ख़ूब सदक़ा करने वाला हो। दूसरे वह आदमी जो रहम करने वाला और हर रिश्तेदार बल्कि हर मुसलमान के बारे में नर्म दिल हो। तीसरे वह आदमी जो पाक दामन, फ़क़ीर, बाल-बच्चेदार और (फ़क़ीरी के बावजूद दूसरों पर) सदक़ा करने वाला हो, दोज़ख़ी लोग पांच क़िस्म के

होते हैं—एक वह कमज़ोर आदमी जिसमें अक़्ल बिल्कुल न हो, हर एक के पीछे लग जाता हो। दूसरे वे लोग जो तुम लोगों में दूसरों के पीछे चलने वाले और हां में हां मिलाने वाले हैं और (बदकारी में पड़े रहने की वजह से) उनमें न बाल-बच्चों की तलब है और न माल की। तीसरे वह ख़ियानत करने वाला, जिसमें लालच इतनी ज़्यादा हो कि वह छिप न सके और वह छोटी-छोटी चीज़ों में भी ख़ियानत करे। चौथे वह आदमी जिसका सुबह-शाम हर वक़्त यही काम है कि वह तुम्हें तुम्हारे बाल-बच्चों और माल व दौलत के बारे में धोखा देता रहे और पांचवें आदमी की ख़राबियों में आपने कंजूसी, झूठ, बद-अख़्लाक़ी और बुरी ज़ुबान का ज़िक्र किया।[1]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अस्र की नमाज़ पढ़ाई और क़ियामत होने तक पेश आने वाली हर अहम दीनी चीज़ को हमारे सामने ज़िक्र कर दिया। जिसने इन तमाम चीज़ों को याद रखने की कोशिश की, उसे ताम याद रहीं और जिसने उन्हें भुला दिया, उसे भूल गईं।

इस बयान में आपने यह भी इर्शाद फ़रमाया, अम्मा बादु, दुनिया हरी-भरी और मीठी है, बड़ी मज़ेदार और अच्छी लगती है, बहुत ख़ुशनुमा नज़र आती है। अल्लाह तुम्हें अपना ख़लीफ़ा बनाकर दुनिया दे कर देखना चाहते हैं कि तुम कैसे अमल करते हो अच्छे या बुरे (यानी दुनिया के असल मालिक तो अल्लाह तआला हैं और तुम लोगों को अपना नुमाइन्दा बनाया है) इसलिए दुनिया के फ़िले से बचो (ज़रूरत भर हासिल करो और ज़रूरत से ज़्यादा आ जाए तो उसे दूसरों पर ख़र्च कर दो) और औरतों के फ़िले से बचो (उनकी बातों में आकर या उनकी मुहब्बत से मग़्लूब होकर अल्लाह के किसी हुक्म के ख़िलाफ़ कोई काम न करो।)

बनी इसराईल में सबसे पहला फ़िला औरतों के ज़रिए पेश आया

1. तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 35

था। ग़ौर से सुनो, आदम की औलाद को मुख़्तलिफ़ क़िस्म का बनाकर पैदा किया गया है, कुछ तो ऐसे हैं जो मोमिन पैदा होते हैं, मोमिन बनकर सारी ज़िंदगी गुज़ारते हैं और मोमिन होने की हालत में मरते हैं और कुछ ऐसे हैं जो काफ़िर पैदा होते हैं, काफ़िर बनकर ज़िंदगी गुज़ारते हैं और काफ़िर होने की हालत में मरते हैं और कुछ ऐसे हैं जो मोमिन पैदा होते हैं और मोमिन बनकर ज़िंदगी गुज़ारते हैं, लेकिन काफ़िर बनकर मरते हैं और कुछ ऐसे हैं जो काफ़िर पैदा होते हैं और काफ़िर बनकर ज़िंदगी गुज़ारते हैं, लेकिन मोमिन बनकर मरते हैं।

तवज्जोह से सुनो, ग़ुस्सा एक अंगारा है जो इब्ने आदम के पेट में दहकता रहता है, क्या तुम देखते नहीं कि ग़ुस्से में इंसान की आंखें लाल हो जाती हैं और उसके गले की रगें फूल जाती हैं इसलिए जब तुममें से किसी को ग़ुस्सा आए तो उसे ज़मीन से चिमट जाना चाहिए (खड़ा हो तो बैठ जाए, बैठा हो तो लेट जाए, ज़मीन की तरह आजिज़ और मिस्कीन बन जाए।) ग़ौर से सुनो ! बेहतरीन मर्द वह है, जिसे ग़ुस्सा देर से आए और जल्दी चला जाए और सबसे बुरा मर्द वह है जिसे ग़ुस्सा जल्दी आए और देर से जाए और जिसे ग़ुस्सा देर से आए और देर से जाए और जिसे ग़ुस्सा जल्दी आए और जल्दी जाए तो उसका मामला बराबर-बराबर हो गया। उसमें एक अच्छी ख़ूबी है और एक बुरी।

ग़ौर से सुनो ! सबसे बेहतरीन ताजिर वह है जो उम्दा तरीक़े से दे और उम्दा तरीक़े से मुतालबा करे और सबसे बुरा ताजिर वह है जो अदा करने में भी बुरा हो और मुतालबा करने में भी बुरा हो और जो अदा करने में अच्छा हो, लेकिन मुतालबा करने में बुरा हो या अदा करने में बुरा हो और मुतालबा करने में अच्छा हो, तो उसका मामला बराबर सराबर हो गया। उसमें एक सिफ़त अच्छी है और एक बुरी।

ग़ौर से सुनो ! हर बद-अह्द को उसकी बद-अह्दी के मुताबिक़ क़ियामत के दिन झंडा मिलेगा (जिससे उसके उस बुरे काम के लोगों में शोहरत होगी)। ग़ौर से सुनो, सबसे बड़ी बद-अह्दी आम मुसलमानों के अमीर की बद-अह्दी है। ग़ौर से सुनो ! जिसे हक़ बात मालूम है उसे

लोगों की हैबत इस हक़ बात से कहने से हरगिज़ न रोके। सबसे अफ़ज़ल जिहाद ज़ालिम बादशाह के सामने हक़ बात कहना है। ग़ौर से सुनो ! दुनिया की इतनी उम्र गुज़र गई है जितना आज का दिन गुज़र गया है और उतनी बाक़ी है जितना आज का दिन बाक़ी है।[1]

हज़रत साइब बिन मेहजान रहमतुल्लाहि अलैहि शाम वालों में से हैं और उन्होंने सहाबा किराम रज़ि० का ज़माना भी पाया है। वह कहते हैं, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मुल्क शाम तशरीफ़ ले गए, तो उन्होंने (खड़े होकर बयान फ़रमाया और पहले) अल्लाह की हम्द व सना बयान की और ख़ूब वाज़ व नसीहत फ़रमाई और अम्र बिन मारूफ़ और नह्य अनिल मुन्कर फ़रमाया, फिर फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम लोगों में खड़े होकर बयान फ़रमाया, जैसे मैं आप लोगों में खड़े होकर बयान कर रहा हूं।

आपने उस बयान में हमें अल्लाह से डरने का, सिला रहमी करने का और आपस में सुलह-सफ़ाई से रहने का हुक्म दिया और फ़रमाया, तुम लोग जमाअत से चिमटे रहो और अमीर की सुनने और मानने को लाज़िम पकड़े रखो, क्योंकि अल्लाह का हाथ जमाअत पर होता है। अकेले आदमी के साथ शैतान होता है और दो आदमियों से शैतान बहुत दूर होता है। किसी मर्द को किसी अजनबी औरत के साथ तंहाई में हरगिज़ नहीं होना चाहिए, वरना उनके साथ तीसरा शैतान होगा जिसे अपनी बुराई से रंज हो और अपनी नेकी से ख़ुशी हो। यह उसके मोमिन और मुसलमान होने की निशानी है और मुनाफ़िक़ की निशानी यह है कि उसे अपनी बुराई से कोई रंज नहीं होता और नेकी से कोई ख़ुशी नहीं होती। अगर वह कोई ख़ैर का अमल कर ले तो उसे उस अमल पर अल्लाह से किसी सवाब की उम्मीद नहीं होती और अगर कोई बुरा काम कर ले तो उसे उस अमल पर अल्लाह की ओर से किसी सज़ा का डर नहीं होता, इसलिए दुनिया की तलाश में बीच का रास्ता

1. मनावी, भाग 2, पृ० 181,

अख़्तियार करो, क्योंकि अल्लाह ने तुम सबकी रोज़ी का ज़िम्मा ले रखा है और हर इंसान को जो अमल करना है, उसका वह अमल ज़रूर पूरा होकर रहेगा। अपने नेक आमाल के लिए अल्लाह से मदद मांगा करो, क्योंकि अल्लाह जिस अमल को चाहे मिटा दें और जिसको चाहें बाक़ी रखें और उसी के पास लौहे महफ़ूज़ है। (हुज़ूर सल्ल० का बयान ख़त्म हो गया और फिर हज़रत उमर रज़ि० ने भी बयान ख़त्म कर दिया—

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَعَلَيْهِ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

'और अल्लाह तआला हमारे नबी हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) और उनकी आल पर दरूद भेजे और उन पर सलाम हो और अल्लाह की रहमत, अस्सलामु अलैकुम०'[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आख़िरी बयान

हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार (मरज़ुल वफ़ात में) फ़रमाया, अलग-अलग कुंओं से सात मश्कों में (पानी भरकर) मेरे ऊपर डालो, ताकि (मुझे कुछ इफ़ाक़ा हो जाए और) मैं लोगों के पास बाहर जाकर उन्हें वसीयत करूं, चुनांचे (पानी डालने से हुज़ूर सल्ल० को कुछ इफ़ाक़ा हुआ, तो) हुज़ूर सल्ल० सर पर पट्टी बांधे हुए बाहर आए और मिंबर पर तशरीफ़ रखा, फिर अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, अल्लाह के बन्दों में से एक बन्दे को यह अख़्तियार दिया गया कि या तो वह दुनिया में रह ले या अल्लाह के यहां जो अज्र व सवाब है, उसे ले ले। उस बन्दे ने अल्लाह के यहां के अज्र व सवाब को अख़्तियार कर लिया। (यहां उस बन्दे से मुराद ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं और मतलब यह है कि आप इस दुनिया से जल्द तशरीफ़ ले जाने वाले हैं।)

हुज़ूर सल्ल० के इस फ़रमान का मतलब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 207

अन्हु के अलावा और कोई न समझ सका और इस पर वह रोने लगे और अर्ज़ किया, हम अपने मां-बाप और आल-औलाद सब आप पर क़ुरबान करते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, (ऐ अबूबक्र !) ज़रा आराम से बैठे रहो। (मत रोओ) मेरे नज़दीक साथ रहने और माल ख़र्च करने के एतबार से लोगों में सबसे अफ़ज़ल इब्ने अबी क़हाफ़ा (यानी हज़रत अबूबक्र रज़ि०) हैं। मस्जिद में जितने दरवाज़े खुले हैं, सब बन्द कर दो, सिर्फ़ अबूबक्र रज़ि० का दरवाज़ा खुला रहने दो, मैंने उस पर नूर देखा है।[1]

हज़रत अय्यूब बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने मरज़ुल वफ़ात में इर्शाद फ़रमाया, मुझ पर पानी डालो, फिर आगे पिछली जैसी हदीस ज़िक्र की और साथ ही यह भी है कि हुज़ूर सल्ल० ने अल्लाह की हम्द व सना के बाद सबसे पहले उहुद के शहीदों का ज़िक्र फ़रमाया और उनके लिए इस्तिग़फ़ार किया और दुआ की, फिर फ़रमाया, ऐ जमाअत मुहाजिरीन ! तुम्हारी तायदाद बढ़ती जा रही है और अंसार अपनी उसी हालत पर हैं। उनकी तायदाद नहीं बढ़ रही है और ये अंसार तो मेरे ख़ास ताल्लुक़ वाले हैं, जिनके पास आकर मुझे ठिकाना मिला है, इसलिए तुम उनके करीम आदमी का इक्राम करो और उनके बुरे से दरगुज़र करो।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ लोगो ! अल्लाह के बन्दों में से एक बन्दे को अख़्तियार दिया गया, फिर पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया और इस रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल० के इस फ़रमान का मतलब लोगों में से सिर्फ़ अबूबक्र रज़ि० ही समझ सके और इसी वजह से वह रोने लगे।[2]

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों में बयान फ़रमाया, आपने इर्शाद फ़रमाया, अल्लाह ने एक बन्दे को अख़्तियार दिया कि या तो वह

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 42,
2. बिदाया, भाग 5, पृ० 229,

दुनिया में रह ले, या अल्लाह के यहां जो कुछ है, उसे ले ले। चुनांचे उस बन्दे ने, अल्लाह के यहां जो कुछ है, उसको अख़्तियार कर लिया। इस पर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु रो पड़े। हम इस बात पर हैरान हुए कि हुज़ूर सल्ल० ने तो किसी बन्दे के बारे में ख़बर दी है, उस पर यह हज़रत अबूबक्र क्यों रो रहे हैं, इसमें रोने की तो कोई बात नहीं, लेकिन हमें बाद में पता चला कि जिस बन्दे को अख़्तियार दिया गया है, उससे मुराद तो ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे (और हुज़ूर सल्ल० के इस फ़रमान का मतलब यह था कि हुज़ूर सल्ल० बता रहे थे कि हुज़ूर सल्ल० बहुत जल्द इस दुनिया से तशरीफ़ ले जाने वाले हैं।)

यह बात हज़रत अबूबक्र रज़ि० हममें सबसे ज़्यादा समझने वाले थे। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अबूबक्र रज़ि० ने साथ रहकर और माल ख़र्च करके लोगों में सबसे ज़्यादा मुझ पर एहसान किया है। अगर मैं अपने रब के अलावा किसी को ख़लील यानी ख़ालिस दोस्त बनाता तो अबूबक्र को बनाता, अलबत्ता उनसे इस्लामी दोस्ती और मुहब्बत ज़रूर है। मस्जिद में खुलने वाला हर दरवाज़ा बन्द कर दिया जाए, सिर्फ़ अबूबक्र रज़ि० का दरवाज़ा रहने दिया जाए।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मरज़ुमल वफ़ात में बाहर तशरीफ़ लाए। आपने अपने सर पर काली पट्टी बांध रखी थी, कंधों पर चादर ओढ़ी हुई थी। आप आकर मिंबर पर बैठ गए। रिवायत करने वाले ने आगे हुज़ूर सल्ल० का बयान और अंसार के बारे में हुज़ूर सल्ल० की वसीयत का ज़िक्र किया। रिवायत करने वाले कहते हैं कि यह इंतिक़ाल से पहले हुज़ूर सल्ल० की आख़िरी मज्लिस और आख़िरी बयान था।[2]

हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु उन तीन सहाबा में से थे जिनकी तौबा क़ुबूल की गई। वह फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 229,
2. बिदाया, भाग 5, पृ० 230, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 251,

सल्लम ने खड़े होकर बयान फ़रमाया, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर उहुद की लड़ाई के दिन शहीद होने वाले सहाबा के लिए मग़फ़िरत की दुआ फ़रमाई, फिर फ़रमाया, ऐ मुहाजिरीन की जमाअत! फिर इसके बाद अंसार के बारे में हुज़ूर सल्ल० की वसीयत का ज़िक्र किया जैसे कि बैहक़ी की हज़रत अय्यूब वाली हदीस में गुज़र चुका।[1]

हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत अबू हुरैरह और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुम को यह फ़रमाते हुए सुना कि हम लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आख़िरी बयान में यह फ़रमाते हुए सुना कि जो इन पांच फ़र्ज़ नमाज़ों को जमाअत के साथ पाबन्दी के साथ अदा करेगा, वह कूंदती हुई बिजली की तरह से सबसे पहले पुले सिरात को पार करेगा और (नबी की) अच्छी तरह से पैरवी करने वालों की पहली जमाअत में अल्लाह उसका हश्र करेगा और जिस दिन और रात में वह इन पांच नमाज़ों की पाबन्दी करेगा, उसके बदले में अल्लाह के रास्ते में शहीद होने वाले हज़ार शहीदों जैसा अज्र मिलेगा।[2]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़ज्र से मग़रिब तक बयान

हज़रत अबू ज़ैद अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें सुबह की नमाज़ पढ़ाई। इसके बाद आपने हमें ज़ुहर तक बराबर बयान फ़रमाया, फिर मिंबर से नीचे उतर कर ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई, फिर अस्र तक बयान फ़रमाया, फिर उतर कर अस्र की नमाज़ पढ़ाई, फिर मग़रिब तक बयान फ़रमाया और जो कुछ होने वाला है, वह सब हमसे बयान फ़रमा दिया। अब जिसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ये बातें जितनी ज़्यादा याद रह गईं वह हम में उतना ज़्यादा जानने वाला है।[3]

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 371, हाकिम, भाग 3, पृ० 78
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 39,

बयान के वक़्त नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हालत

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब लोगों में बयान फ़रमाते, तो आपकी आंखें लाल हो जातीं और आवाज़ ऊंची हो जाती और ग़ुस्सा तेज़ हो जाता, जैसे कि आप लोगों को दुश्मन की फ़ौज से डरा रहे हों और फ़रमा रहे हों कि दुश्मन की फ़ौज तुम पर सुबह हमला करने वाली है, शाम को हमला करने वाली है, फिर शहादत की उंगली और बीच की उंगली को मिलाकर इर्शाद फ़रमाते, मुझे और क़ियामत को इस तरह मिलाकर भेजा गया है, फिर फ़रमाते, सबसे बेहतरीन सीरत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) की सीरत है और सबसे बुरे काम वे हैं जो नए ईजाद किए गए हों और हर बिदअत गुमराही है और जो मर जाए और माल छोड़कर जाए, तो वह माल उसके घरवालों का है और जो क़र्ज़ा या छोटे बच्चे छोड़कर जाए, जिन्हें संभालने वाला कोई न हो, तो वे मेरे ज़िम्मे हैं, वह क़र्ज़ा मैं अदा करूंगा और उन बच्चों को मैं संभालूंगा ।[1]

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के बयान

हज़रत उर्वः रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा बने, तो उन्होंने लोगों में बयान फ़रमाया, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, अम्मा बादु, ऐ लोगो ! मुझे आप लोगों का ज़िम्मेदार बनाया गया है, हालांकि मैं आप लोगों से बेहतर नहीं हूं और अब क़ुरआन नाज़िल हो चुका है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुन्नतें बयान फ़रमा चुके हैं और आपने हमें यह सिखाया है कि सबसे बड़ी अक़्लमंदी तक़्वा है और सबसे बड़ी

---

5. हाकिम, भाग 4, पृ० 487
1. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 376, अस्माउस्सिफ़ात, पृ० 144,

हिमाक़त फ़िस्क़ व फ़ुजूर है और जो तुम लोगों में सबसे ज़्यादा ताक़तवर है (और वह ताक़त के ज़ोर से कमज़ोरों के हक़ दबा लेता है) वह मेरे नज़दीक कमज़ोर है। मैं कमज़ोर को उस ताक़तवर से उसका हक़ दिलवा कर रहूंगा और जो तुममें सबसे ज़्यादा कमज़ोर है, (जिसके हक़ ताक़तवरों ने दबा रखे हैं) वह मेरे नज़दीक ताक़तवर है। मैं उसके हक़ ताक़तवरों से ज़रूर लेकर दूंगा।

ऐ लोगो! मैं तो (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पैरवी करने वाला हूं और अपनी ओर से गढ़कर नई बातें लाने वाला नहीं हूं। अगर मैं अच्छे काम करूं तो आप लोग उनमें मेरी मदद करें और अगर मैं टेढ़ा चलूं तो आप लोग मुझे सीधा कर दें। मैं अपनी बात इसी पर ख़त्म करता हूं और अपने लिए और आप लोगों के लिए अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करता हूं।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उकैम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअते ख़िलाफ़त हो गई, तो वह मिंबर पर तश्रीफ़ ले गए और मिंबर पर जहां नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैठा करते थे, उससे एक सीढ़ी नीचे बैठे। पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया—

ऐ लोगो! अच्छी तरह से समझ लो कि सबसे बड़ी अक़्लमंदी, इसके बाद पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया और आख़िर में इस मज़्मून को बढ़ा कर कहा कि अपने नफ़्स का मुहासबा करो, इससे पहले कि तुम्हारा मुहासबा (अल्लाह की तरफ़ से) किया जाए और जो क़ौम जिहाद फ़ी सबीलिल्लाहि छोड़ देगी, उन पर अल्लाह फ़क़्र मुसल्लत कर देंगे और जिस क़ौम में बेहयाई आम हो जाएगी, अल्लाह उन सब पर मुसीबत भेजेंगे, इसलिए जब तक मैं अल्लाह की इताअत करूं, तुम लोग मेरी इताअत करो और जब मैं अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करूं तो फिर मेरी इताअत तुम्हारे ज़िम्मे नहीं है। मैं अपनी

1. कंज़, भाग 3, पृ० 130,

बात इस पर ख़त्म करता हूं और अपने लिए और आप लोगों के लिए अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करता हूं।[1]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि पिछली हदीस का कुछ मज़्मून ज़िक्र करते हैं और यह जो हज़रत अबूबक्र रज़ि० का इर्शाद है, सबसे बड़ी हिमाक़त फ़िस्क़ व फ़ुजूर है, उसके बाद यह इज़ाफ़ा करते हैं। ग़ौर से सुनो, मेरे नज़दीक सच बोलना अमानतदारी है और झूठ बोलना ख़ियानत है और इसी तरह हज़रत हसन ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० के फ़रमान 'मैं आप लोगों से बेहतर नहीं हूं' के बाद यह कहा कि अल्लाह की क़सम ! हज़रत अबूबक्र रज़ि० उन सबसे बेहतर थे और इस बात में कोई उनसे मुज़ाहमत करने वाला नहीं था, लेकिन मोमिन आदमी यों ही कसरे नफ़्सी किया करता है।

इसके बाद हज़रत हसन ने यह भी नक़ल किया कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, मेरी तो दिली तमन्ना है कि आप लोगों में से कोई आदमी इस ख़िलाफ़त का बोझ उठा लेता, और मैं इस ज़िम्मेदारी से बच जाता।

हज़रत हसन कहते हैं कि अल्लाह की क़सम ! हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने यह तमन्ना वाली बात सच्चे दिल से कही थी। (वह वाक़ई ख़लीफ़ा नहीं बनना चाहते थे) फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, अगर तुम लोग यों चाहो कि जिस तरह अल्लाह वह्य के ज़रिए से अपने नबी को सीधे रास्ते पर ले आया करते थे, उसी तरह मुझे भी ले आया करेंगे, तो यह बात मुझे हासिल नहीं है। मैं तो आम इंसान ही हूं, इसलिए तुम लोग मेरी निगरानी रखो।[2]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार बयान फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया, ग़ौर से सुनो, अल्लाह की क़सम ! मैं आप लोगों में सबसे बेहतर नहीं हूं और

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 135
2. बैहक़ी, भाग 6, पृ० 353,

मैं अपने लिए ख़िलाफ़त के इस मुक़ाम को पसन्द नहीं करता था, मुझे इसकी ख़्वाहिश नहीं थी, बल्कि मेरी ख़्वाहिश थी कि आप लोगों में से कोई मेरे बजाए ख़लीफ़ा बन जाता। क्या आप लोगों का ख़्याल यह है कि मैं आप लोगों में ठीक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाले तरीक़े पर अमल कर लूंगा? तो यह ख़्याल बिल्कुल ग़लत है, मैं ऐसा नहीं कर सकूंगा, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० की तो वह्य के ज़रिए हर ग़लत बात से हिफ़ाज़त हो जाती थी और उन्हें तो ख़ुदा की अस्मत (पनाह) हासिल थी और उनके साथ ख़ास फ़रिश्ता हर वक़्त रहता था, मेरे साथ तो शैतान लगा हुआ है, जो मेरे पास आता रहता है। जब मुझे ग़ुस्सा आ जाए, तो मुझसे बचकर रहना, कहीं मैं आप लोगों की खालों और बालों पर असर-अंदाज़ न हो जाऊं। ग़ौर से सुनो, आप लोग मेरी निगरानी रखो। अगर मैं सीधा चलूं तो मेरी मदद करना और अगर मैं टेढ़ा चलूं तो मुझे सीधा कर देना।

हज़रत हसन कहते हैं, ऐसा ज़बरदस्त बयान किया था कि अल्लाह की क़सम! उसके बाद वैसा बयान तो कभी हुआ ही नहीं।[1]

एक रिवायत में यह है कि मैं तो एक आम इंसान हूं, काम ठीक भी कर लेता हूं और ग़लत भी हो जाते हैं। जब मैं ठीक काम करूं तो आप लोग अल्लाह की तारीफ़ करें, (क्योंकि उसके करम से काम ठीक हुआ) और जब ग़लत हो जाए तो मुझे सीधा कर देना।[2]

हज़रत क़ैस बिन अबी हाज़िम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के एक महीने बाद मैं हुज़ूर सल्ल० के ख़लीफ़ा अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बैठा हुआ था। इसके बाद हज़रत क़ैस ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िलाफ़त का क़िस्सा ज़िक्र किया। इसके बाद कहते हैं, तमाम लोगों को मस्जिदे नबवी में जमा करने के लिए यह एलान किया गया—

1. कंज़, भाग 3, पृ० 136,
2. कंज़, भाग 3, पृ० 136

الصَّلَاةُ جَامِعَةٌ

'अस्सलातु जामिअतुन' यानी सब लोग नमाज़ मस्जिदे नबवी में इकट्ठे पढ़ें। (मदीना की बाक़ी नौ मस्जिदों में से किसी और मस्जिद में न पढ़ें) और फिर जब लोग जमा हो गए, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० उस मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए जो उनके बयान और ख़ुत्बे के लिए बनाया गया था, यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद इस्लाम में हज़रत अबूबक्र रज़ि० का पहला बयान था।

उन्होंने अल्लाह की हम्द व सना बयान की और फिर फ़रमाया, ऐ लोगो! मेरी आरज़ू तो यह है कि कोई और मेरी जगह ख़लीफ़ा बन जाए। अगर तुम लोग मुझसे यह मांग करो कि मैं ठीक तुम्हारे नबी सल्ल० की सुन्नत के मुताबिक़ चलूं, तो यह मेरे बस में नहीं है, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० तो मासूम थे, अल्लाह ने उनकी शैतान से मुकम्मल हिफ़ाज़त फ़रमा रखी थी और उन पर आसमान से वह्य उतरती थी (और ये दोनों बातें मुझे हासिल नहीं हैं, इसलिए मैं बिल्कुल उन जैसा नहीं हो सकता)[1]

और दूसरे भाग में तबरानी की रिवायत ईसा बिन अतीया के हवाले से गुज़र चुकी है कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान में फ़रमाया, ऐ लोगो! लोग इस्लाम में ख़ुशी और नाख़ुशी दोनों तरह दाख़िल हुए हैं, लेकिन अब वे सब अल्लाह की पनाह और उसके पड़ोस में हैं, इसलिए तुम इसकी पूरी कोशिश करो कि अल्लाह तुमसे अपनी ज़िम्मेदारी की कुछ भी मांग न करे। (यानी किसी मुसलमान को किसी तरह तक्लीफ़ न पहुंचाओ) मेरे साथ भी एक शैतान रहता है। जब तुम देखो कि मुझे ग़ुस्सा आ गया है, तो फिर तुम मुझसे अलग हो जाओ कि कहीं मैं तुम्हारे बालों और खालों में तक्लीफ़ न पहुंचा दूं। ऐ लोगो! अपने ग़ुलामों की आमदनी की जांच कर लिया करो कि हलाल है या हराम, इसलिए कि जिस गोश्त की परवरिश हराम माल से हो, वह जन्नत

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 184

में दाख़िल होने के लायक़ नहीं।

हज़रत आसिम बिन अदी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के अगले दिन हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ से एक आदमी ने एलान किया कि हज़रत उसामा रज़ि० की फ़ौज की रवानगी का काम मुकम्मल हो जाना चाहिए। ग़ौर से सुनो! अब हज़रत उसामा रज़ि० की फ़ौज का कोई आदमी मदीना में बाक़ी नहीं रहना चाहिए। बल्कि जुरुफ़ में जहां उनकी फ़ौज का पड़ाव है, वहां पहुंच जाना चाहिए।

इसके बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि० लोगों में बयान के लिए खड़े हुए। पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान फ़रमाई, फिर फ़रमाया, ऐ लोगो! मैं तुम्हारे जैसा ही हूं। मुझे मालूम तो नहीं, लेकिन हो सकता है कि तुम लोग मुझे उस चीज़ का ज़िम्मेदार बनाओ, जो सिर्फ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बस में थी (और मेरे बस में नहीं।) अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) को तमाम दुनियाओं पर बरतरी अता फ़रमाई थी और उन्हें चुना था और उन्हें तमाम आफ़तों से हिफ़ाज़त अता फ़रमाई थी और मैं (उन ही के) पीछे चलने वाला हूं। अपनी तरफ़ से नई चीज़ें गढ़ने वाला नहीं हूं। अगर मैं सीधा चलूं तो तुम मेरे पीछे चलो और अगर मैं टेढ़ा चलूं, तो तुम लोग मुझे सीधा कर दो। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान तो यह थी कि जब आपका इंतिक़ाल हुआ तो उस वक़्त उम्मत में एक आदमी भी ऐसा नहीं था जो कोड़े की मार या उससे भी कम ज़ुल्म की मांग कर रहा हो।

ग़ौर से सुनो, मेरे साथ भी एक शैतान लगा हुआ है जो मेरे पास आता रहता है। जब वह मेरे पास आए, तो मुझसे तुम लोग अलग हो जाओ, कहीं मैं तुम्हारी खालों और बालों को तक्लीफ़ न पहुंचा दूं। तुम लोग सुबह और शाम उस मौत के मुंह में हो, जिसका तुम्हें इल्म नहीं कि कब आ जाएगी। तुम इसकी पूरी कोशिश करो कि जब भी तुम्हारी मौत आए तो तुम उस वक़्त नेक अमल में लगे हुए हो और तुम ऐसा सिर्फ़ अल्लाह की मदद से ही कर सकते हो, इसलिए जब तक मौत ने मोहलत

दे रखी है, उस वक़्त तुम लोग नेक आमाल में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो, इससे पहले कि मौत आ जाए और अमल करने का मौक़ा न रहे, क्योंकि बहुत-से लोगों ने मौत को भुला रखा है और अपने आमाल दूसरों के लिए कर दिए हैं, इसलिए तुम उन जैसे न बनो, ख़ूब कोशिश करो और बराबर कोशिश करो और (सुस्ती से काम न लो, बल्कि) जल्दी करो और जल्दी करो, क्योंकि मौत तुम्हारे पीछे लगी हुई है, जो तुम्हें खोज रही है और उसकी रफ़्तार बहुत तेज़ है, इसलिए मौत से चौकन्ने रहो और बाप-दादों, बेटों और भाइयों (की मौत से) सबक़ हासिल करो और ज़िंदा लोगों के उन नेक आमाल पर रश्क करो, जिन पर तुम मुर्दों के बारे में रश्क करते हो, यानी दुनियावी चीज़ों में ज़िंदा लोगों पर रश्क न करो।[1]

हज़रत सईद बिन अबी मरयम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे यह बात पहुंची है कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा बनाए गए, तो आप मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए। पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! अगर हमारे होते हुए दूसरे इज्तिमाई कामों के ख़राब न हो जाने का ख़तरा न होता, तो (मैं ख़ुद ख़लीफ़ा बनता, बल्कि) मैं यह चाहता कि जो तुममें से मुझसे ज़्यादा मब्ग़ूज़ (जो बहुत बुरा लगे) है, उसकी गरदन में ख़िलाफ़त के मामले की ज़िम्मेदारी डाल दी जाती, फिर उसके लिए उसमें कोई ख़ैर न होती।

ग़ौर से सुनो, दुनिया और आख़िरत में सबसे ज़्यादा बदबख़्त लोग बादशाह हैं, इस पर तमाम लोगों ने गरदनें ऊंची कीं और सर उठाकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० की तरफ़ देखने लगे। फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, तुम लोग अपनी जगह आराम से बैठे रहो। तुम लोग जल्दबाज़ हो, जो भी किसी मुल्क का बादशाह बनता है, तो अल्लाह उसे बादशाह बनाने से पहले उसके मुल्क को जानते हैं और बादशाह बन

1. तारीख़े तबरी, भाग 2, पृ० 460

जाने पर उसकी आधी उम्र कम कर देते हैं और उस पर ख़ौफ़ और ग़म मुसल्लत कर देते हैं और जो कुछ ख़ुद उसके अपने पास है, उससे उसका दिल हटा देते हैं और जो कुछ लोगों के पास है, उसका लालच उसमें पैदा कर देते हैं। वह चाहे कितने अच्छे खाने खाए और उम्दा कपड़े पहने, लेकिन उसकी ज़िंदगी तंग होगी, सुख-चैन उसे नसीब न होगा।

फिर जब उसका साया ख़त्म हो जाता है और उसकी जान निकल जाती है और अपने रब के पास पहुंच जाती है तो वह उससे सख़्ती से हिसाब लेता है और उसकी बख़्शिश का इम्कान बहुत कम होता है, बल्कि उसकी बख़्शिश ही नहीं होती। ग़ौर से सुनो, मिस्कीन लोगों की ही मग़फ़िरत होती है। ग़ौर से सुनो, मिस्कीन लोगों की ही मग़फ़िरत होती है।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उकैम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हम लोगों में बयान फ़रमाया, तो उसमें इर्शाद फ़रमाया, अम्मा बादु! मैं तुम्हें इस बात की वसीयत करता हूं कि तुम अल्लाह से डरो और अल्लाह की शायाने शान तारीफ़ करो और अल्लाह के अज़ाब का डर तो होना चाहिए लेकिन साथ के साथ उसकी रहमत की उम्मीद भी रखो और अल्लाह से ख़ूब गिड़गिड़ा कर मांगो, क्योंकि अल्लाह ने हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम और उनके घरवालों की क़ुरआन में तारीफ़ फ़रमाई है और इर्शाद फ़रमाया है—

إِنَّهُمْ كَانُوا يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَيَدْعُونَنَا رَغَبًا وَ
رَهَبًا وَكَانُوا لَنَا خَاشِعِينَ (سورت انبیاء آیت ۹۰)

'ये सब नेक कामों में दौड़ते थे और उम्मीद और डर के साथ हमारी इबादत किया करते थे और हमारे सामने दब कर रहते थे।'

(सूरः अंबिया, आयत 90)

फिर ऐ अल्लाह के बन्दो! तुम यह भी जान लो कि अल्लाह ने

1. कंज़, भाग 3, पृ० 162.

अपने हक़ के बदले में तुम्हारी जानों को गिरवी रखा हुआ है और इस पर अल्लाह ने तुम सबसे पक्का अह्द लिया हुआ है और उसने तुमसे (दुनिया के) थोड़े और ख़त्म हो जाने वाले माल और सामान को (आख़िरत के) ज़्यादा और हमेशा रहने वाले अज्र के बदले में ख़रीद लिया है और यह तुममें अल्लाह की किताब है, जिसकी अजीब बातें ख़त्म नहीं हो सकतीं और उसका नूर कभी बुझ नहीं सकता, इसलिए इस किताब के हर क़ौल की तस्दीक़ करो और उससे नसीहत हासिल करो और अंधेरे वाले दिन के लिए उसमें से रोशनी हासिल करो।

अल्लाह ने तुम्हें सिर्फ़ इबादत के लिए पैदा किया है और लिखने वाले करीम फ़रिश्तों को तुम पर मुक़र्रर किया है जो तुम्हारे हर काम को जानते हैं। फिर ऐ अल्लाह के बन्दो! तुम यह भी जान लो कि तुम सुबह और शाम उस मौत की तरफ़ बढ़ रहे हो, जिसका वक़्त मुक़र्रर है, लेकिन तुम्हें वह बताया नहीं गया। तुम इसकी पूरी कोशिश करो कि जब तुम्हारी उम्र का आखिरी वक़्त आए तो तुम उस वक़्त अल्लाह के किसी अमल में लगे हुए हो और ऐसा तुम सिर्फ़ अल्लाह की मदद से ही कर सकते हो, इसलिए उम्र पूरी होने से पहले तुम्हें जो मोहलत मिली हुई है, उसमें तुम नेक आमाल में एक दूसरे से आगे बढ़ो, वरना तुम्हें बुरे आमाल की तरफ़ जाना पड़ेगा, क्योंकि बहुत से लोगों ने अपने आपको भुला रखा है और अपनी उम्र दूसरों को दे दी है, यानी अपने ईमान व अमल की उन्हें कोई फ़िक्र नहीं है। मैं तुम्हें उन जैसा बनने से सख़्ती से रोकता हूं। जल्दी करो, जल्दी करो, क्योंकि तुम्हारे पीछे मौत का फ़रिश्ता लगा हुआ है जो तुम्हें तेज़ी से खोज रहा है, उसकी रफ़्तार बहुत तेज़ है।[1]

हज़रत अम्र बिन दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया, उसमें इर्शाद फ़रमाया, तुम्हारे फ़क़्र व फ़ाक़ा की वजह से मैं तुम्हें इस बात की

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 35, कंज़, भाग 8, पृ० 206,

वसीयत करता हूं कि तुम अल्लाह से डरो और उसकी शान के मुताबिक़ उसकी तारीफ़ करो और उससे मग़फ़िरत तलब करो, क्योंकि यह बहुत ज़्यादा मग़फ़िरत तलब करने वाला है। इसके बाद अब्दुल्लाह बिन उकैम रह० वाली पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया और आगे यह मज़्मून ज़िक्र किया कि तुम इस बात को भी जान लो कि जो अमल तुम ख़ालिस अल्लाह के लिए करोगे तो इस तरह तुम अपने रब की इताअत करोगे और अपने हक़ को महफ़ूज़ कर लोगे, इसलिए तुम अपने क़र्ज़ें देने के ज़माने में यानी दुन्यावी ज़िंदगी में जो तुमने कमाया है, वह सब (अल्लाह को) दे दो और अपने सामने उनको नफ़्ल के तौर पर रखो। (यानी जितना माल ख़र्च करना फ़र्ज़ है, वह तो ख़र्च करना ही है, इसके अलावा और भी ख़र्च करो) इस तरह तुम्हें बड़ी ज़रूरत के वक़्त और ठीक मुहताजी के ज़माने में अपनी इन कमाइयों का और दिए हुए अपने क़र्ज़ों का पूरा-पूरा बदला मिलेगा।

फिर ऐ अल्लाह के बन्दो! उन लोगों के बारे में सोचो जो तुमसे पहले दुनिया में थे, वह कल कहां थे और आज कहां हैं, वह बादशाह कहां हैं जिन्होंने ज़मीन को ख़ूब बोया और जोता था, ख़ूब खेती-बाड़ी की थी और सामान और तामीरात से ज़मीन को ख़ूब आबाद किया था? आज सब लोग उन्हें भूल चुके हैं और उनका तज़्किरा तक भुलाया जा चुका है, इसलिए वे आज ऐसे हैं जैसे कि वे कुछ भी न थे और उनके कुफ़्र और ज़ुल्म की वजह से उनके घर और शहर वीरान पड़े हैं और वे बादशाह ख़ुद इस वक़्त क़ब्र की तारीकियों में हैं। क्या तुम इन हलाक होने वालों में से किसी को देखते हो? या इनमें से किसी की हल्की सी भी आवाज़ सुनते हो?

तुम्हारे वे साथी और भाई आज कहां है, जिनको तुम पहचानते थे? वे उन आमाल के बदले की जगह पर पहुंच गए हैं जो उन्होंने आगे भेजे थे और बदबख़्ती या नेक बख़्ती दोनों में से किसी एक की जगह में पहुंच गए हैं। अल्लाह के और उसकी किसी मख़्लूक़ के दर्मियान कोई ऐसा नसब का रिश्ता नहीं है जिसकी वजह से अल्लाह उसे ख़ैर दे और उससे

बुराई को दूर करे। अल्लाह से ये बातें तो सिर्फ़ उसकी इताअत और उसके हुक्म के पीछे चलने से ही हासिल हो सकती हैं। वह राहत राहत नहीं है, जिसके बाद जहन्नम हो और वह तक्लीफ़ तक्लीफ़ नहीं, जिसके बाद जन्नत हो। मैं इसी पर बात ख़त्म करता हूं और अपने लिए और तुम्हारे लिए अल्लाह की मग़्फ़िरत तलब करता हूं।[1]

हज़रत नुऐम बिन नमहा रहमतुल्लाहि अलैहि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उकैम जैसी हदीस में हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान नक़ल करते हैं और आगे यह भी रिवायत करते हैं कि हज़रत अबूबक्र ने फ़रमाया, उस क़ौल में कोई ख़ैर नहीं, जिससे अल्लाह की रिज़ा मक़्सूद न हो और उस माल में कोई ख़ैर नहीं, जिसे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च न किया जाए और उस आदमी में कोई ख़ैर नहीं जिसकी नादानी उसकी बुर्दबारी पर ग़ालिब हो और उस आदमी में कोई ख़ैर नहीं, जो अल्लाह के मामले में मलामत करने वालों की मलामत से डरे।[2]

हज़रत आसिम बिन अदी रहमतुल्लाहि अलैहि ने पहले दूसरा बयान नक़ल किया जिसे हमने अभी ज़िक्र किया। फिर हज़रत आसिम कहते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु बयान के लिए खड़े हुए, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, अल्लाह सिर्फ़ वही अमल क़ुबूल करते हैं जिससे मक़्सूद सिर्फ़ उनकी ज़ाते आली हो, इसलिए तुम अपने आमाल से सिर्फ़ उसी की ज़ात को मक़्सूद बनाओ और इसका यक़ीन रखो कि तुम जो ख़ालिस अमल अल्लाह के लिए करोगे, तो यह एक नेकी है जो तुमने की है और बड़ा हिस्सा है जिसे हासिल करने में तुम कामियाब हो गए हो और यह तुम्हारी ऐसी आमदनी है जो तुमने (अल्लाह को) दे दी है और यह क़र्ज़ है जो तुमने फ़ानी दुनिया के दिनों से लेकर हमेशा बाक़ी रहने वाली आख़िरत के लिए आगे भेज दिया है और यह क़र्ज़ तुम्हें उस वक़्त काम आएगा जब तुम्हें इसकी सख़्त ज़रूरत होगी।

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 35
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 36, तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 342,

ऐ अल्लाह के बन्दो ! जो तुममें से मर गए हैं, उनसे सबक़ हासिल करो और जो तुमसे पहले थे, उनके बारे में ग़ौर करो कि वह कल कहां थे और आज कहां हैं? ज़ालिम और जाबिर लोग कहां हैं? और वे लोग कहां हैं जिनके लड़ाई के मैदान में लड़ने और ग़लबा पा लेने के तज़्करे होते थे? ज़माने ने उनको ज़लील कर दिया। आज उनकी हड्डियां बोसीदा हो चुकी हैं और अब तो उनके तज़्करे भी ख़त्म हो गए हैं। ख़बीस औरतें ख़बीस मर्दों के लिए हैं और ख़बीस मर्द ख़बीस औरतों के लिए हैं और वे बादशाह कहां हैं, जिन्होंने ज़मीन को ख़ूब बोया और जोता था और उसे हर तरह आबाद किया था? अब वे हलाक हो चुके हैं और उनका तज़्किरा भी लोग भूल चुके हैं और ऐसे हो गए हैं जैसे कि वे कुछ नहीं थे।

ग़ौर से सुनो, अल्लाह ने उनकी ख़्वाहिशों का सिलसिला तो (मौत के ज़रिए से) ख़त्म कर दिया है, लेकिन गुनाहों की सज़ा का सिलसिला बाक़ी रखा हुआ है। वे दुनिया से जा चुके और उन्होंने जो अमल किए थे, वे तो अब उनके हैं, लेकिन जो दुनिया उनके पास थी, अब वह दूसरों की हो गई है। अब हम उनके बाद आए हैं, अगर हम उनसे सबक़ हासिल करेंगे तो नजात पा लेंगे और अगर हम धोखे में पड़े रहे, तो हम भी उन जैसे हो जाएंगे।

कहां हैं वे हसीन व जमील लोग जिनके चेहरे ख़ूबसूरत थे और वे अपनी जवानी पर अकड़ते थे? अब वे मिट्टी हो चुके हैं और जिन आमाल के बारे में उन्होंने कमी-बेशी की थी, अब वे आमाल उनके लिए हसरत की वजह बने हुए हैं? कहां हैं वे लोग जिन्होंने बहुत-से शहर बनाए थे और शहरों के आस-पास बड़ी मज़बूत दीवारें बनाई थीं और उनमें अजीब व ग़रीब चीज़ें बनाई थीं? और बाद में आने वालों के लिए वे उन शहरों को छोड़कर चले गए और अब उनकी रहने की जगहें वीरान पड़ी हुई हैं और वे ख़ुद क़ब्र की अंधेरियों में हैं, क्या तुम उनमें से किसी को देखते हो या उनकी हल्की सी भी आवाज़ सुनते हो? तुम्हारे वे बेटे और भाई कहां हैं जिन्हें तुम पहचानते हो? उनकी उम्रें ख़त्म हो

गई और जो आमाल उन्होंने आगे भेजे थे, अब वे उन आमाल के पास पहुंच गए हैं और वहां ठहर गए हैं और मौत के बाद बदबख़्ती या नेकबख़्ती वाली जगह उनको मिल गई है।

ग़ौर से सुनो, अल्लाह का कोई शरीक नहीं। अल्लाह के और उसकी किसी मख़्लूक़ के दर्मियान कोई ऐसा ख़ास ताल्लुक़ नहीं है, जिसकी वजह से अल्लाह उसे ख़ैर दे और उससे बुराई को हटा दे। अल्लाह से ताल्लुक़ तो सिर्फ़ इताअत से और उसके हुक्म के पीछे चलने से बनता है और इस बात को जान लो कि तुम ऐसे बन्दे हो जिन्हें उनके आमाल का बदला ज़रूर मिलेगा और जो कुछ अल्लाह के पास है, वह सिर्फ़ उसकी इताअत से हासिल हो सकता है। ग़ौर से सुनो ! वह राहत राहत नहीं, जिसके बाद जहन्नम हो और वह तक्लीफ़ तक्लीफ़ नहीं, जिसके बाद जन्नत हो।[1]

हज़रत मूसा बिन उक़बा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु बयान में अक्सर यह फ़रमाया करते थे, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है। मैं अल्लाह की तारीफ़ करता हूं और हम उससे मदद मांगते हैं और मौत के बाद के इक्राम का उससे सवाल करते हैं, क्योंकि मेरी और तुम्हारी मौत का वक़्त क़रीब आ गया है और मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) उसके बन्दे और रसूल हैं, जिन्हें अल्लाह ने हक़ देकर ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला और रोशन चिराग़ बनाकर भेजा, ताकि जो आदमी ज़िंदा है, वे उसे डराएं और काफ़िरों पर (अज़ाब की) हुज्जत साबित हो जाए।

जिसने अल्लाह और उसके रसूल की इताअत की, वह हिदायत पाने वाला हो गया और जिसने इन दोनों की नाफ़रमानी की, वह खुली गुमराही में पड़ गया। मैं आप लोगों को इस बात की वसीयत करता हूं

1. तारीख़े तबरी, भाग 2, पृ० 460,

कि अल्लाह से डरो और अल्लाह के उस दीन को मज़बूती से पकड़ो, जो उसने तुम्हारे लिए शरीअत बनाया और जिसकी उसने तुम्हें हिदायत दी और कलिमा इख़्लास (ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) के बाद इस्लामी हिदायत की जामे बात यह है कि उस आदमी की बात सुनी और मानी जाए, जिसको अल्लाह ने तुम्हारे तमाम कामों का वाली और ज़िम्मेदार बनाया है। जिसने अम्र बिन मारूफ़ (भलाइयों का हुक्म करने) और नह्य अनिल मुन्कर (बुराइयों को रोकने) के वाली और ज़िम्मेदार की इताअत की, वह कामियाब हो गया। जो हक़ उसके ज़िम्मे था, वह उसने अदा कर दिया और अपनी ख़्वाहिश के पीछे चलने से बचो और जो आदमी ख़्वाहिश के पीछे चलने से, लालच में पड़ने से और ग़ुस्सा में आने से बचा रहा, वह कामियाब हो गया और इतराने से बचो और उस इंसान का क्या इतराना जो मिट्टी से बना है और बहुत जल्द मिट्टी में चला जाएगा, फिर उसे कीड़े खा जाएंगे, आज वह ज़िंदा है और कल वह मरा हुआ होगा।

हर दिन और हर घड़ी अमल करते रहो और मज़्लूम की बद्-दुआ से बचो और अपने आपको मुर्दों में समझो और सब्र करो, क्योंकि हर अमल सब्र के ज़रिए ही होता है और चौकन्ने रहो, क्योंकि चौकन्ना रहने से फ़ायदा होता है और अमल करते रहो, क्योंकि अमल ही क़ुबूल होते हैं और अल्लाह ने अपने जिस अज़ाब से डराया है, उससे डरते रहो और अल्लाह ने अपनी जिस रहमत का वायदा किया है, उसे हासिल करने में जल्दी करो। समझने की कोशिश करो, अल्लाह तुम्हें समझा देगा और बचने की कोशिश करो अल्लाह तुम्हें बचा देगा, क्योंकि अल्लाह ने वे आमाल तुम्हारे सामने बयान कर दिए हैं जिनकी वजह से तुमसे पहले अल्लाह ने लोगों को हलाक किया है और वे आमाल भी बयान कर दिए हैं जिनकी वजह से निजात पाने वालों को निजात मिली और अल्लाह ने अपनी किताब में अपना हलाल और हराम और अपने पसन्दीदा और नापसन्दीदा आमाल सब बयान कर दिए हैं और मैं तुम्हारे बारे में और अपने बारे में कोताही नहीं करूंगा और अल्लाह ही से मदद मांगी जाती

है और बुराई से बचने और नेकी करने की ताक़त अल्लाह ही से मिलती है और तुम इस बात को जान लो कि तुम ख़ालिस अमल अल्लाह के लिए करोगे तो इस तरह तुम अपने रब की इताअत करोगे और (आख़िरत में अज्र व सवाब के) अपने बड़े हिस्से को महफ़ूज़ कर लोगे और रश्क के क़ाबिल बन जाओगे और जो आमाल तुमने फ़र्ज़ों के अलावा किए हैं, उन्हें अपने आगे के लिए नफ़्ल बना लो, इस तरह तुम जो अल्लाह को आमाल का क़र्ज़ा दोगे, उस क़र्ज़े का तुम्हें आख़िरत में पूरा-पूरा बदला मिलेगा, जबकि तुम्हें इसकी बहुत ज़्यादा ज़रूरत होगी।

फिर ऐ अल्लाह के बन्दो ! अपने उन भाइयों और साथियों के बारे में सोचो जो दुनिया से जा चुके हैं, जो आमाल उन्होंने आगे भेजे थे, अब वे उन आमाल के पास पहुंच गए हैं और वहां ठहर गए हैं और मौत के बाद बद-बख़्ती और ख़ुशक़िस्मती की जगह में पहुंच गए।

अल्लाह का कोई शरीक नहीं। अल्लाह के और उसकी किसी मख़्लूक़ के दर्मियान कोई नसब का रिश्ता नहीं, जिसकी वजह अल्लाह उसे कोई ख़ैर दे या उससे कोई बुराई हटा दे, बल्कि ये बातें तो सिर्फ़ अल्लाह की इताअत से और उसके हुक्म के पीछे चलने से ही हासिल हो सकती हैं और वह राहत राहत नहीं, जिसके बाद जहन्नम की आग हो और वह तक्लीफ़ तक्लीफ़ नहीं, जिसके बाद जन्नत हो।

मैं इसी बात पर ख़त्म करता हूं और मैं तुम्हारे लिए और अपने लिए अल्लाह से मग़्फ़िरत तलब करता हूं और अपने नबी पर दरूद भेजो, सल्लल्लाहु अलैहि वस्सलामु अलैहि व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू०[1]

हज़रत यज़ीद बिन हारून रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार बयान फ़रमाया और उसमें इर्शाद फ़रमाया कि एक ऐसे बन्दे को क़ियामत के दिन लाया जाएगा, जिसे अल्लाह ने दुनिया में बहुत नेमतें दी थीं और उसे रोज़ी में ख़ूब फैलाव दिया था और उसे जिस्मानी सेहत की नेमत भी दी थी,

1. कंज़, भाग 8, पृ० 206,

लेकिन उसने अपने रब की नाशुक्री की थी, उसे अल्लाह के सामने खड़ा किया जाएगा और कहा जाएगा, तुमने आज के दिन के लिए क्या किया और अपने लिए कौन-से अमल आगे भेजे ?

वह कोई नेक अमल आगे भेजा हुआ नहीं पाएगा, इस पर वह रोने लगेगा और इतना रोएगा कि आंसू ख़त्म हो जाएंगे। फिर अल्लाह के अह्काम बरबाद करने की वजह से उसे शर्म दिलाई जाएगी और रुसवा किया जाएगा। इस पर वह ख़ून के आंसू रोने लगेगा, फिर उसे शर्म दिलाई जाएगी और रुसवा किया जाएगा, जिस पर वह अपने दोनों हाथों को कुहनियों समेत खा जाएगा। फिर अल्लाह के अह्काम बर्बाद करने पर उसे शर्म दिलाई जाएगी और रुसवा किया जाएगा, जिस पर वह ऊंची आवाज़ से रोएगा और उसकी आंखें निकलकर उसके गालों पर आ गिरेंगी और दोनों आंखों में से हर आंख तीन मील लम्बी और तीन मील चौड़ी होगी। फिर उसे शर्म दिलाई जाएगी और रुसवा किया जाएगा, यहां तक कि वह परेशान होकर कहेगा, ऐ मेरे रब ! मुझे दोज़ख़ में भेज दे और मुझ पर रहम फ़रमाकर मुझे यहां से निकाल दे और इसे अल्लाह ने इस आयत में बयान फ़रमाया है—

أَنَّهُ مَنْ يُحَادِدِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَأَنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ

خَالِدًا فِيهَا ذَٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ (سورت توبہ آیت ۶۳)

'जो आदमी अल्लाह की और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करेगा (जैसा ये लोग कर रहे हैं) तो यह बात ठहर चुकी है कि ऐसे आदमी को दोज़ख़ की आग इस तौर पर नसीब होगी कि वह उसमें हमेशा रहेगा। यह बड़ी रुसवाई है।'[1] (सूरः तौबा, आयत 63)

हज़रत मुहम्मद बिन इब्राहीम बिन हारिस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों में बयान फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर तुम तक़्वा और पाकदामनी अपनाओ तो थोड़ी मुद्दत ही गुज़रेगी

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 206,

कि तुम्हें पेट भरकर रोटी और घी मिलने लगेगा।[1]

हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार लोगों में बयान फ़रमाया, ऐ मुसलमानों की जमाअत! अल्लाह से हया करो। उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है! जब मैं ज़रूरत पूरी करने के लिए जंगल जाता हूं, तो अपने रब से हया की वजह से अपने ऊपर कपड़ा ओढ़े रहता हूं।[2]

हज़रत इब्ने शहाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने एक दिन बयान करते हुए फ़रमाया, अल्लाह से हया करो, क्योंकि अल्लाह की क़सम! जब से मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत हुआ, उस वक़्त से जब भी ज़रूरत पूरी करने के लिए बाहर जाता हूं, तो अपने रब से हया की वजह से मैं अपना सर कपड़े से ढांके रखता हूं।[3]

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु एक दिन मिंबर पर खड़े होकर रोने लगे, फिर फ़रमाया, पहले साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हममें बयान करने के लिए मिंबर पर खड़े हुए तो रोने लगे और इर्शाद फ़रमाया, अल्लाह से माफ़ी भी मांगो और आफ़ियत भी, क्योंकि किसी आदमी को ईमान व यक़ीन के बाद आफ़ियत से बेहतर कोई नेमत नहीं दी गई, यानी सबसे बड़ी नेमत तो ईमान व यक़ीन है और उसके बाद आफ़ियत है।[4]

हज़रत औस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक दिन हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हम लोगों में बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, पिछले साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरी इसी जगह खड़े होकर बयान फ़रमाया था, उसमें इर्शाद फ़रमाया था, अल्लाह से आफ़ियत मांगो, क्योंकि किसी को यक़ीन के बाद आफ़ियत से अफ़ज़ल नेमत नहीं दी गई और सच को लाज़िम पकड़े रहो, क्योंकि सच बोलने से आदमी नेक आमाल तक पहुंच जाता है, सच और नेक

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 206,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 34, कंज़, भाग 8, पृ० 206,
3. कंज़, भाग 5, पृ० 124,
4. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 233,

आमाल जन्नत में ले जाते हैं और झूठ से बचो, क्योंकि झूठ बोलने से आदमी फ़िस्क़ व फ़ुजूर तक पहुंच जाता है और झूठ और फ़िस्क़ व फ़ुजूर दोज़ख़ में ले जाते हैं, आपस में हसद न करो, एक दूसरे से बुग़्ज़ न रखो, ताल्लुक़ न तोड़ो, एक दूसरे से पीठ न फेरो और जैसे तुम्हें अल्लाह ने हुक्म दिया है, अल्लाह के बन्दे भाई-भाई बनकर रहो ।[1]

हज़रत अबूबक्र बिन मुहम्मद बिन अम्र बिन हज़्म रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार बयान फ़रमाया और उसमें इर्शाद फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, निफ़ाक़ वाले ख़ुशूअ से अल्लाह की पनाह मांगो। सहाबा रज़ि० ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! निफ़ाक़ वाला ख़ुशूअ क्या है? आपने फ़रमाया, दिल में तो निफ़ाक़ हो, लेकिन ज़ाहिरी बदन में ख़ुशूअ हो ।[2]

हज़रत अबुल आलिया रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हममें बयान फ़रमाया और उसमें इर्शाद फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुसाफ़िर (चार रक्अत वाली नमाज़ को) दो रक्अत पढ़ेगा और मुक़ीम चार रक्अत पढ़ेगा, मेरी पैदाइश की जगह मक्का है और मेरी हिजरत की जगह मदीना है और जब मैं ज़ुल हुलैफ़ा से मक्का की ओर रवाना होता हूं तो दो रक्अत नमाज़ पढ़ता हूं ।[3]

हज़रत अबू ज़ुमरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों में बयान फ़रमाया, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, बहुत जल्द तुम्हारे लिए शाम मुल्क जीत लिया जाएगा, फिर तुम वहां नर्म ज़मीन में जाओगे और रोटी और तेल से अपना पेट भरोगे और वहां तुम्हारे लिए मस्जिदें बनाई जाएंगी और इस बात से बचना कि अल्लाह के इल्म में यह बात आए कि तुम लोग

1. कंज़, भाग 1, पृ० 291,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 229
3. कंज़, भाग 4, पृ० 239,

खेल-कूद के लिए उन मस्जिदों में जाते हो, क्योंकि मस्जिदें तो सिर्फ़ ज़िक्र के लिए बनाई गई हैं।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ि० हममें बयान फ़रमाते, तो इंसान की पैदाइश का ज़िक्र करते और फ़रमाते, इंसान पेशाब की नाली से दो बार गुज़र कर पैदा हुआ है और उसका इस तरह ज़िक्र करते कि हम अपने आपको नापाक समझने लगते।[2]

जिहाद के बाब में मुर्तद्दीन से लड़ाई की तर्ग़ीब के बारे में और जिहाद की तर्ग़ीब के बारे में और रूम से लड़ाई के लिए जाने के बारे में और सहाबा कराम रज़ि० के शाम देश जाने के वक़्त हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के बयान गुज़र चुके हैं और सहाबा किराम के आपसी इत्तिहाद और एक राय होने के एहतिमाम के बारे में आपस के इंतिशार से डराने और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के वाक़े हो जाने और हुज़ूर सल्ल० के दीन को मज़बूती से पकड़ने और ख़िलाफ़त में क़ुरैश को तर्जीह देने और ख़िलाफ़त क़ुबूल करने से उज़्र पेश करने और बैअत मुसलमानों को वापस करने और ख़लीफ़ा की सिफ़ात के बारे में हज़रत अबूबक्र रज़ि० के बयानात गुज़र चुके हैं और अम्र बिल मारूफ़ और नह्य अनिल मुन्कर के बाब में आयत—

لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ

की तफ़्सीर के बारे में हज़रत अबूबक्र रज़ि० का बयान गुज़र चुका है।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के बयान

हज़रत हुमैद बिन हिलाल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक साहब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात के मौक़े पर मौजूद थे। उन्होंने हमें बताया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबूबक्र

1. कंज़, भाग 4, पृ० 259,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 205,

रज़ि० के दफ़न से फ़ारिग़ होकर क़ब्र की मिट्टी हाथों से झाड़ी, फिर उसी जगह खड़े होकर बयान किया और उसमें फ़रमाया, अल्लाह तुम्हारे ज़रिए से मुझे और मेरे ज़रिए से तुम्हें आज़माएंगे और अल्लाह ने मुझे मेरे दो हज़रात (रसूले पाक अलैहिस्सलाम और हज़रत अबूबक्र रज़ि०) के बाद आप लोगों में बाक़ी रखा है। अल्लाह की क़सम ! ऐसे नहीं हो सकेगा कि मेरे पास तुम्हारा कोई काम पेश हो और मेरे अलावा कोई और उस काम को करे और न ही ऐसे हो सकेगा कि तुम्हारा कोई काम मेरी ग़ैर-मौजूदगी से ताल्लुक़ रखता हो और मैं उसकी किफ़ायत करने और उसके बारे में अमानतदारी अख़्तियार करने में कोताही करूं। अगर लोग अच्छे अमल करेंगे तो मैं उनके साथ अच्छा सुलूक करूंगा और अगर बुरे अमल करेंगे, तो मैं उन्हें इबरतनाक सज़ा दूंगा।

वह बताने वाले साहब कहते हैं, अल्लाह की क़सम ! हज़रत उमर रज़ि० ने दुनिया से जाने तक पहले दिन के बयान किए हुए अपने उस उसूल के ख़िलाफ़ न किया, हमेशा उसी पर क़ायम रहे।[1]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा बने तो वह मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और फ़रमाया, अल्लाह मुझे ऐसा नहीं देखना चाहते कि मैं अपने आपको मिंबर की उस जगह बैठने का अह्ल समझूं जहां हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु बैठा करते थे, यह कहकर हज़रत उमर रज़ि० एक सीढ़ी नीचे हो गए, फिर अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, क़ुरआन पढ़ो, उसके ज़रिए से तुम पहचाने जाओगे और क़ुरआन पर अमल करो, इससे तुम क़ुरआन वालों में से हो जाओगे और आमालनामे के तौले जाने से पहले पहले तुम ख़ुद अपना मुहासबा कर लो और उस दिन की बड़ी पेशी के लिए अपने आपको (नेक आमाल) से सजा लो, जिस दिन तुम अल्लाह के सामने पेश किए जाओगे और तुम्हारी कोई छिपी से छिपी बात नहीं रह सकेगी और किसी हक़ वाले

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 27५

का हक़ इतना नहीं बनता कि उसकी बात मानकर अल्लाह की नाफ़रमानी की जाए।

ग़ौर से सुनो, मैं अल्लाह के माल यानी बैतुलमाल में से उतना लूंगा जितना यतीम के वाली को यतीम के माल में से मिलता है। अगर मुझे इसकी भी ज़रूरत न हुई तो मैं यह भी नहीं लूंगा और अगर ज़रूरत हुई तो काम करने वाले को आम तौर से जितना मिलता है, उसके मुताबिक़ लूंगा।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बयान में फ़रमाया, अल्लाह के तुमसे हिसाब लेने से पहले पहले तुम अपना मुहासबा कर लो, उससे अल्लाह का हिसाब आसान हो जाएगा और आमालनामे के तौले जाने से पहले पहले तुम अपना मुवाज़ना कर लो और उस दिन की बड़ी पेशी के लिए अपने आपको (नेक आमाल) से आरास्ता कर लो, जिस दिन तुम अल्लाह के सामने पेश किए जाओगे और तुम्हारी कोई छुपी से छुपी बात छुपी न रह सकेगी।[2]

हज़रत अबू फ़िरास रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो! ग़ौर से सुनो, पहले हमें आप लोगों के अन्दरूनी हालात इस तरह मालूम हो जाते थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे दर्मियान तश्रीफ़ रखते थे और वह्य उतरा करती थी और अल्लाह हमें आप लोगों के हालात बता दिया करते थे (कि कौन ईमान वाला है और कौन है मुनाफ़िक़ और किस मोमिन का दर्जा बड़ा है और किसका छोटा?)

ग़ौर से सुनो! हुज़ूर सल्ल० अब तश्रीफ़ ले जा चुके और वह्य का सिलसिला भी बन्द हो चुका, इसलिए अब हमारे लिए आप लोगों के हालात व दरजात मालूम करने का तरीक़ा वह होगा जो अब हम बताने

1. कंज़, भाग 8, पृ० 120, रियाज़ुन्नज़रा, भाग 2, पृ० 89,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 208,

लगे हैं। आपमें से जो ख़ैर को ज़ाहिर करेगा, हम उसके बारे में अच्छा गुमान रखेंगे और इसी वजह से उससे मुहब्बत करेंगे और जो हमारे सामने शर ज़ाहिर करेगा, हम उसके बारे में बुरा गुमान रखेंगे और इसी वजह से उससे बुग़्ज़ रखेंगे और आप लोगों के छुपे और अन्दरूनी हालात आपके और आपके रब के दर्मियान होंगे, यानी हम तो हर एक के ज़ाहिर के मुताबिक़ उसके मुताल्लिक़ फ़ैसला करेंगे।

ग़ौर से सुनो ! एक वक़्त तो ऐसा था कि मुझे इस बात का यक़ीन था कि हर क़ुरआन का पढ़ने वाला सिर्फ़ अल्लाह के लिए और अल्लाह के यहां की नेमतों के लेने के इरादे से पढ़ रहा है, लेकिन अब आख़िर में आकर कुछ ऐसा अन्दाज़ा हो रहा है कि कुछ लोग जो कुछ इंसानों के पास है, उसे लेने के इरादे से क़ुरआन पढ़ते हैं। तुम क़ुरआन के पढ़ने से और अपने आमाल से अल्लाह की रज़ामंदी का ही इरादा करो।

तवज्जोह से सुनो, अल्लाह की क़सम ! मैं अपने गवर्नर आप लोगों के पास इसलिए नहीं भेजता कि वह आप लोगों की खालों की पिटाई करें या आप लोगों के माल ले लें, बल्कि इसलिए भेजता हूं ताकि वे आप लोगों को दीन और सुन्नत सिखाएं। जो गवर्नर किसी के साथ इसके अलावा कुछ और करे, वह उस गवर्नर की बात मेरे पास लेकर आए। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है ! मैं उसे उस गवर्नर से ज़रूर बदला लेकर दूंगा।

ग़ौर से सुनो, मुसलमानों की पिटाई न करो, वरना तुम उन्हें ज़लील कर दोगे और इस्लामी सरहद से उन्हें घर जाने से न रोको, वरना तुम उन्हें फ़िल्ने में डाल दोगे और उनके हक़ उनसे न रोको (बल्कि अदा करो) वरना तुम उन्हें नाशुक्री में मुब्तला कर दोगे और घने पेड़ों वाले जंगल में उन्हें लेकर मत पड़ाव डालना, वरना (बिखर जाने की वजह से दुश्मन का दांव चल जाएगा और) वे बर्बाद हो जाएंगे।[1]

हज़रत अबुल अजफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार

1. कंज़, भाग 8, पृ० 209, हैसमी, भाग 5, पृ० 211, हाकिम, भाग 4, पृ० 439

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान में फ़रमाया, ग़ौर से सुनो, औरतों की मह्र बहुत ज़्यादा मुक़र्रर न करो, क्योंकि अगर मह्र का ज़्यादा होना दुनिया में इज़्ज़त की चीज़ होती या अल्लाह के यहां तक़्वे वाला काम समझा जाता, तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुमसे ज़्यादा उसके हक़दार होते। हुज़ूर सल्ल० ने अपनी किसी बीवी या बेटी का मह्र बारह औक़िया यानी चार सौ अस्सी दिरहम से ज़्यादा मुक़र्रर नहीं फ़रमाया। तुम लोग मह्र बहुत ज़्यादा मुक़र्रर कर लेते हो, लेकिन जब देना पड़ता है तो फिर दिल में उस औरत की दुश्मनी महसूस करते हो। तुम मह्र देते भी हो, लेकिन उस औरत से कहते हो कि मुझे तेरे मह्र की वजह से मशक भी उठानी पड़ी और बहुत मशक़्क़त उठानी पड़ी। और दूसरी बात यह है कि तुम्हारी लड़ाइयों में जो आदमी क़त्ल हो जाता है, तुम उसके बारे में कहते हो, फ़्लां शहीद होकर क़त्ल हुआ या फ़्लां ने शहीद होकर वफ़ात पाई। (बग़ैर तहक़ीक़ के किसी के शहीद होने का क़तई फ़ैसला न किया करो) क्योंकि हो सकता है कि वह तिजारत के इरादे से साथ आया हो और उसने अपनी सवारी के आख़िरी हिस्से पर और कजावे के एक तरफ़ सोना-चांदी लाद रखा हो। (यह तिजारत वाला अल्लाह के रास्ते में नहीं है) इसलिए यह बात न कहा करो, बल्कि जैसे हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वैसे कहा करो कि जो आदमी अल्लाह के रास्ते में क़त्ल हुआ या फ़ौत हुआ, वह जन्नत में जाएगा।[1]

हज़रत मस्रूक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक दिन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु मिंबर पर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ऐ लोगो! तुम लोग औरतों के मह्र ज़्यादा क्यों मुक़र्रर करते हो? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ि० के ज़माने में मह्र चार सौ दिरहम या उससे कम हुआ करता था। अगर मह्र बहुत ज़्यादा मुक़र्रर करना अल्लाह के यहां तक़्वा का या इज़्ज़त का काम होता, तो आप लोग उसमें हुज़ूर सल्ल० और सहाबा रज़ि० से आगे न

1. अहमद, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसई, इब्ने माजा

निकल सकते ।[1]

निकाह के बाब में इस बयान की कुछ रिवायतें हम ज़िक्र कर चुके हैं।

एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जाबिया शहर में बयान फ़रमाया, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, जिसे अल्लाह हिदायत दे, उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे गुमराह कर दे, उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं।

हज़रत उमर रज़ि० के सामने एक पादरी बैठा हुआ था। उसने फ़ारसी में कुछ कहा। हज़रत उमर रज़ि० ने अपने तर्जुमान से पूछा, यह क्या कह रहा है? तर्जुमान ने बताया, यह कह रहा है कि अल्लाह किसी को गुमराह नहीं करते। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ओ अल्लाह के दुश्मन! तुम ग़लत कहते हो, बल्कि अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया और उसी ने तुम्हें गुमराह किया और इनशाअल्लाह वह तुम्हें दोज़ख़ की आग में दाख़िल करेगा, अगर तुम्हारे (ज़िम्मी होने के) अह्द का पास न होता तो मैं तुम्हारी गरदन उड़ा देता।

फिर फ़रमाया, अल्लाह ने जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया, तो उनकी सारी औलाद उनके सामने बिखेर दी और जन्नत वालों के नाम और उनके आमाल (लौहे महफ़ूज़ में) उसी वक़्त लिख दिए और इसी तरह से दोज़ख़ वालों के नाम और उनके आमाल भी उसी वक़्त लिख दिए, फिर अल्लाह ने फ़रमाया, ये लोग उस (जन्नत) के लिए हैं और ये लोग उस (दोज़ख़) के लिए हैं। रिवायत करने वाले कहते हैं, फिर लोग बिखर गए और तक़्दीर के बारे में इख़्तिलाफ़ करने लगे।[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबजा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, किसी आदमी ने आकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को बताया कि कुछ लोग तक़्दीर के बारे में ग़लत बातें करते हैं। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने खड़े होकर बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो! तुमसे पहली

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 297,
2. अबू दाऊद, इब्ने जरीर,

उम्मतें तक़्दीर के बारे में ग़लत बातें करके ही हलाक हुई हैं। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में उमर की जान है! आगे जिन दो आदमियों के बारे में मैंने यह सुना कि ये तक़्दीर के बारे में (अपनी अक़्ल से) बातें कर रहे हैं तो मैं दोनों की गरदन उड़ा दूंगा।

रिवायत करने वाले कहते हैं, हज़रत उमर रज़ि० का यह एलान सुनकर तमाम लोगों ने तक़्दीर के बारे में बात करनी छोड़ दी, फिर हज्जाज के ज़माने में शाम में एक जमाअत ज़ाहिर हुई, जिसने सबसे पहले तक़्दीर के बारे में बात करनी शुरू की।[1]

हज़रत बाहिली रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु शाम देश में दाख़िल हुए, तो उन्होंने जाबिया शहर में खड़े होकर बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, क़ुरआन सीखो, उससे तुम्हारा तआरुफ़ (परिचय) होगा और क़ुरआन पर अमल करो, इससे तुम क़ुरआन वालों में से हो जाओगे और किसी हक़दार का दर्जा इतना बड़ा नहीं हो सकता कि उसकी बात मानकर अल्लाह की नाफ़रमानी की जाए और इस बात का यक़ीन रखो कि हक़ बात कहने से और किसी बड़े को नसीहत करने से न तो मौत क़रीब आती है और न अल्लाह की रोज़ी दूर होती है और इस बात को जान लो कि बन्दे और उसकी रोज़ी के दर्मियान एक परदा पड़ा हुआ है। अगर बन्दा सब्र से काम लेता है, तो उसकी रोज़ी ख़ुद उसके पास आ जाती है और अगर बे-सोचे-समझे रोज़ी कमाने में घुस जाता है, (हलाल व हराम की तमीज़ नहीं करता) तो वह उस परदे को तो फाड़ लेता है, लेकिन अपने मुक़द्दर की रोज़ी से ज़्यादा नहीं पा सकता।

घोड़ों को सधाओ और तीर चलाना सीखो और जूती पहना करो और मिस्वाक किया करो और मोटा-झोटा इस्तेमाल करो और अजमियों की आदतें अख़्तियार करने से और ज़ालिम-जाबिर लोगों के पड़ोस से बचो और इससे भी बचो कि तुम्हारे दर्मियान सलेब (क्रास) बुलन्द की

1. कंज़, भाग 1, पृ० 86,

जाए या तुम उस दस्तरख़्वान पर बैठो, जिस पर शराब पी जाए और बग़ैर लुंगी के हम्माम में दाख़िल होने से भी बचो और इससे भी बचो कि तुम औरतों को ऐसे ही छोड़ दो कि वे हम्माम में दाख़िल हों, क्योंकि हम्माम में दाख़िल होना औरतों के लिए जायज़ नहीं।

तुम जब अजमियों के इलाक़े में पहुंच जाओ और उनसे समझौता कर लो, तो फिर कमाई के ऐसे तरीक़े अख़्तियार करने से बचो जिनकी वजह से तुम्हें वहां ही रहना पड़ जाए, और अरब देश में वापस न आ सको, क्योंकि तुम्हें अपने इलाक़े में बहुत जल्दी वापस आना है और ज़िल्लत व ख़्वारी को अपनी गरदन में डालने से बचो। अरब के माल-मवेशी को लाज़िम पकड़ो। जहां भी जाओ, उन्हें साथ ले जाओ और यह बात जान लो कि शराब तीन चीज़ों से बनाई जाती है—किशमिश, शहद और खजूर, जो उसमें से पुरानी हो जाए (और उसमें नशा पैदा हो जाए) तो वह शराब है जो कि हलाल नहीं है और जान लो कि अल्लाह क़ियामत के दिन तीन आदमियों को पाक नहीं करेंगे और उन्हें (रहमत की निगाह से) नहीं देखेंगे और उन्हें अपने क़रीब नहीं करेंगे और उन्हें दर्दनाक अज़ाब होगा—एक वह आदमी, जो दुनिया लेने के इरादे से इमाम से बैअत हो। फिर अगर उसे दुनिया मिले तो वह उस बैअत को पूरा करे, वरना न करे।

दूसरा वह आदमी जो अस्र के बाद (बेचने के लिए) सामान लेकर जाए और अल्लाह की झूठी क़सम खाकर कहे, उसकी इतनी और इतनी क़ीमत लग चुकी है और उसकी इस झूठी क़सम की वजह से वह सामान बिक जाए। मोमिन को गाली देना फ़िस्क़ है और उसे क़त्ल करना कुफ़्र है और तुम्हारे लिए यह हलाल नहीं कि तुम अपने भाई को तीन दिन से ज़्यादा छोड़े रखो और जो आदमी किसी जादूगर, किसी काहिन या नजूमी के पास जाए और जो वह कहे, उसे सच्चा माने तो उसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल होने वाले दीन का इंकार कर दिया।[1]

1. कंज़, भाग 8, पृ० 207,

हज़रत मूसा बिन उक़बा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने जाबिया में यह बयान फ़रमाया था, अम्मा बादु ! मैं तुम्हें उस अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूं जो हमेशा रहेगा और उसके अलावा हर एक फ़ना हो जाएगा, जो फ़रमांबरदारी की वजह से अपने दोस्तों का इक्राम करता है और नाफ़रमानी की वजह से अपने दुश्मनों को गुमराह करता है। अब जो किसी गुमराही वाले काम को हिदायत वाला समझकर करता है और हलाक हो जाता है या किसी हक़ वाले काम को गुमराही वाला समझकर छोड़ देता है और हलाक हो जाता है, तो उस हलाक होने में उसके पास कोई उज्र नहीं है और बादशाह को अपनी रियाया के बारे में सबसे ज़्यादा निगरानी और देख-भाल इस बात की करनी चाहिए कि अल्लाह ने अपने जिस दीन की उनको हिदायत नसीब फ़रमाई, उस दीन वाले अह्काम उन लोगों पर लाज़िम हैं, ये लोग उन अह्काम को सही तरह से अदा करें और हम ख़िलाफ़त के ज़िम्मेदारों के ज़िम्मे यह भी है कि हम आप लोगों को अल्लाह की उस इताअत का हुक्म दें, जिसका अल्लाह ने आप लोगों को हुक्म दिया और अल्लाह की उस नाफ़रमानी से रोकें, जिससे अल्लाह ने आप लोगों को रोका और क़रीब और दूर के आप तमाम लोगों में अल्लाह के हुक्मों को क़ायम करें और जो हक़ को झुकाना चाहता है, हमें उसकी कोई परवाह नहीं और मुझे मालूम है कि बहुत-से लोग अपने दीन के बारे में बहुत-सी तमन्नाएं करते हैं और कहते हैं, हम नमाज़ियों के साथ नमाज़ पढ़ेंगे और मुजाहिदों के साथ मिलकर जिहाद करेंगे और हम हिजरत की निस्बत हासिल करेंगे। वे उन कामों को करते तो हैं, लेकिन उनका हक़ अदा नहीं करते और ईमान सिर्फ़ सूरत बना लेने से नहीं मिलता।

और हर नमाज़ का एक वक़्त है जो अल्लाह ने उसके लिए मुक़र्रर फ़रमाया है, उसके बग़ैर नमाज़ ठीक नहीं हो सकती। फ़ज्र का वक़्त उस वक़्त शुरू होता है जब रात ख़त्म हो जाती है और रोज़ेदार के लिए खाना-पीना हराम हो जाता है। फ़ज्र में ख़ूब ज़्यादा क़ुरआन पढ़ा करो

और ज़ुहर का वक़्त सूरज के ज़वाल से शुरू हो जाता है, लेकिन गर्मियों में उस वक़्त पढ़ो, जब तुम्हारा साया तुम्हारे जितना लम्बा हो जाए, उस वक़्त तक इंसान का दोपहर का आराम पूरा हो जाता है और सर्दियों में उस वक़्त पढ़ो, जबकि सूरज तुम्हारी दाईं अबरू पर आ जाए, यानी ज़वाल के थोड़ी देर बाद पढ़ लो और वुज़ू, रुकूअ और सज्दे में अल्लाह ने जो पाबन्दियां लगा रखी हैं, वे सब पूरी करो और यह सब इसलिए, ताकि सोता न रह जाए और नमाज़ क़ज़ा हो जाए। और अस्र का वक़्त यह है कि सूरज ज़र्द होने से पहले ऐसे वक़्त में पढ़ी जाए कि अभी सूरज सफ़ेद और साफ़ हो और नमाज़ के बाद आदमी सुस्त रफ़्तार ऊंट पर छः मील की दूरी डूबने से पहले तै कर सके और मग़रिब की नमाज़ सूरज डूबते ही रोज़ा खोलने का वक़्त होते ही पढ़ी जाए और इशा की नमाज़ लाली ग़ायब होकर रात का अंधेरा छा जाने से लेकर तिहाई रात तक पढ़ी जाए जो इससे पहले सो जाए, अल्लाह उसे आराम व सुकून वाली नींद न दे।

ये नमाज़ों के वक़्त हैं। अल्लाह ने फ़रमाया है—

إِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتَابًا مَّوْقُوْتًا (سورت نساء آیت ۱۰۳)

'यक़ीनन नमाज़ मुसलमानों पर फ़र्ज़ हैं और वक़्त के साथ महदूद है।' (सूरः निसा, आयत 103)

और एक आदमी कहता है, मैंने हिजरत की है, हालांकि उसकी हिजरत कामिल नहीं है। कामिल हिजरत वाले तो वे लोग हैं जो तमाम बुराइयां छोड़ दें और बहुत-से लोग कहते हैं, हम जिहाद कर रहे हैं, हालांकि अल्लाह के रास्ते का जिहाद यह है कि आदमी दुश्मन का मुक़ाबला भी करे और हराम से भी बचे। बहुत-से लोग ख़ूब अच्छी तरह दुश्मन से लड़ते हैं, लेकिन न उनका इरादा अज्र लेने का होता है और न अल्लाह को याद करने का और क़त्ल हो जाना भी मौत की एक शक्ल है, यानी क़त्ल होना शहादत उस वक़्त समझा जाएगा जबकि सिर्फ़ अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने की नीयत से लड़ रहा हो और हर आदमी उसी नीयत पर समझा जाएगा, जिस नीयत से उसने लड़ाई लड़ी है।

एक आदमी इसलिए लड़ता है कि उसकी तबियत में बहादुरी है और जिसे जानता है और जिसे नहीं जानता, हर एक को लड़ाई लड़कर दुश्मन से बचाता है। एक आदमी तबियत के एतबार से डरपोक होता है, वह तो अपने मां-बाप की मदद नहीं कर सकता, बल्कि उन्हें दुश्मन के हवाले कर देता है, हालांकि कुत्ता भी अपने घरवालों के पीछे से भौंकता है, यानी डरपोक आदमी कुत्ते से भी गया-गुज़रा होता है और जान लो कि रोज़ा एहतराम के क़ाबिल अमल है। आदमी रोज़ा रखकर जैसे खाने-पीने और औरतों की लज़्ज़त से बचता है, ऐसे ही अगर मुसलमानों को तक्लीफ़ देने से भी बचे तो फिर उसका रोज़ा कामिल दर्जे का रोज़ा होगा। और ज़कात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (अल्लाह के फ़रमाने से) फ़र्ज़ की है, उसे ख़ुशी-ख़ुशी अदा की जाए और ज़कात लेने वाले पर अपना एहसान न समझा जाए।

तुम्हें जो नसीहतें की जा रही हैं, उन्हें अच्छी तरह समझ लो। जिसका दीन लुट गया, उसका सब कुछ लुट गया। ख़ुशक़िस्मत वह है जो दूसरे के हालात से इबरत और नसीहत हासिल कर ले। बदबख़्त वह है जो कि मां के पेट में, यानी अज़ल से बदबख़्त हुआ हो और सबसे बुरे काम वे हैं जो नए गढ़े जाएं और सुन्नत में बीच का रास्ता अपनाना बिदअत में बहुत ज़्यादा कोशिश करने से बेहतर है।

और लोगों के दिलों में अपने बादशाह से नफ़रत हुआ करती है। मैं इस बात से अल्लाह की पनाह चाहता हूं कि मुझमें और तुममें फ़ितरी कीना पैदा हो जाए या मैं और तुम ख़्वाहिशों के पीछे चलने लग जाएं या दुनिया को आख़िरत पर तर्जीह देने लग जाएं या मुझे इस बात का डर है कि तुम लोग कहीं ज़ालिमों की तरफ़ माइल न हो जाओ और मालदारों पर तुम्हें मुतमइन नहीं होना चाहिए।

तुम इस क़ुरआन को लाज़िम पकड़ो, क्योंकि इसमें नूर और शिफ़ा है, बाक़ी सब कुछ तो बदबख़्ती का सामान है। अल्लाह ने मुझे तुम्हारे जिन कामों का वाली बनाया है, उनमें जो हक़ मेरे ज़िम्मे था, वह मैंने अदा कर दिया है और तुम्हारी ख़ैरख़्वाही के जज़्बे से तुम्हें वाज़ व

नसीहत भी कर चुका हूं।

हमने इस बात का हुक्म दे दिया है कि तुम्हें तुम्हारे हिस्से (बैतुल माल में से) दे दिए जाएं और तुम्हारी फ़ौजों को हम जमा कर चुके हैं और जहां जाकर तुमको लड़ना है, वह जगहें हम मुक़र्रर कर चुके हैं और तुम्हारे पड़ाव की जगहें भी मुक़र्रर कर दी हैं और तलवारों से लड़कर जो तुमने ग़नीमत का माल हासिल किया है, उसमें हमने तुम्हारे लिए पूरी वुसअत की है, इसलिए अब तुम्हारे पास अल्लाह के हुक्म के मुक़ाबले में कोई उज़्र नहीं है, बल्कि सारी वे दलीलें हैं जिनसे अल्लाह का हर हुक्म मानना तुम पर लाज़िम आता है। मैं इसी पर बात ख़त्म करता हूं और अपने लिए और तुम सब के लिए अल्लाह से इस्तग़फ़ार करता हूं।[1]

सैफ़ रिवायत करने वाले ने इसी रिवायत के सिलसिले में बयान किया है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना में अपनी जगह ख़लीफ़ा बनाया, फिर घोड़े पर सवार होकर चले ताकि सफ़र तेज़ी से पूरा हो चलते-चलते जाबिया शहर पहुंच गए, वहां क़ियाम फ़रमाया। वहां एक ज़बरदस्त असरदार बयान फ़रमाया, उसमें फ़रमाया, ऐ लोगो! अपने बातिन की इस्लाह कर लो, तुम्हारा ज़ाहिर ख़ुद ठीक हो जाएगा, तुम अपनी आख़िरत के लिए अमल करो, तुम्हारी दुनिया के काम अल्लाह की ओर से ख़ुद ही हो जाएंगे और किसी आदमी के और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के दर्मियान ऐसा कोई ज़िंदा बाप नहीं है जो मौत के वक़्त उसके काम आ सके और न किसी आदमी के और अल्लाह के दर्मियान नर्मी का कोई समझौता है और जो आदमी अपने लिए जन्नत का रास्ता वाज़ेह करना चाहता है, उसे चाहिए कि वह जमाअत को लाज़िम पकड़े रखे, क्योंकि शैतान अकेले आदमी के साथ होता है और दो आदमियों से बहुत दूर होता है और कोई आदमी हरगिज़ किसी अजनबी औरत के साथ तंहाई न अख़्तियार करे, वरना शैतान इन दो के

1. कंज़, भाग 8, पृ० 210,

साथ तीसरा होगा। जिसे अपनी नेकी से ख़ुशी हो और अपनी बुराई से रंज व सदमा हो, वह कामिल ईमान वाला है।

रिवायत करने वाले कहते हैं, यह बयान बहुत लम्बा है, जिसे हमने थोड़े में ज़िक्र किया है।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जाबिया में बयान फ़रमाया, उसमें इर्शाद फ़रमाया, जैसे मैं तुममें खड़े होकर बयान कर रहा हूं, ऐसे ही एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हममें खड़े होकर बयान फ़रमाया था आपने फ़रमाया था, तुम लोग मेरे सहाबा के बारे में अच्छा मामला करने की वसीयत क़ुबूल करो और फिर जो उनके बाद वाले हैं, उनके बारे में यही वसीयत क़ुबूल करो और फिर जो इनके बाद वाले हैं, उनके बारे में भी यही वसीयत क़ुबूल करो, यानी ताबईन और तबअ ताबिईन के बारे में। इन तीन तबक़ों के बाद फिर झूठ फैल जाएगा, यहां तक कि आदमी से गवाही देने का मुतालबा नहीं किया जाएगा और ख़ुद ही (झूठी) गवाही देनी शुरू कर देगा।

तुममें से जो आदमी जन्नत के ठीक बीच में जाना चाहता है, उसे चाहिए कि वह जमाअत को लाज़िम पकड़े रखे, क्योंकि शैतान अकेले के साथ होता है और दो आदमियों से बहुत दूर होता है और तुममें से कोई आदमी किसी अजनबी औरत के साथ हरगिज़ तंहाई न अख़्तियार करे, वरना शैतान इन दो के साथ तीसरा होगा। जिसे अपनी नेकी से ख़ुशी हो और अपनी बुराई से रंज व सदमा हो, वह ईमान वाला है।[2]

हज़रत सुवैद बिन ग़फ़ला रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जाबिया शहर में लोगों में बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (मर्दों को) रेशम पहनने से मना फ़रमाया है, सिर्फ़ दो, तीन या चार उंगली के बराबर रेशम पहनने

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 56
2. अहमद, भाग 1, पृ० 18,

की इजाज़त दी है। इस मौक़े पर हज़रत उमर रज़ि० ने समझाने के लिए हाथ से इशारा भी फ़रमाया।[1]

सैफ़ रिवायत करने वाले ने बयान किया कि ताऊन अमवास के बाद सन् 17 हि० के आख़िर में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु शाम देश आए। जब ज़िलहिज्जा में वहां से मदीना वापस जाने का इरादा फ़रमा लिया, तो लोगों में बयान फ़रमाया, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, ग़ौर से सुनो ! मुझे तुम्हारा अमीर बनाया गया है और अल्लाह ने मुझे तुम्हारा वाली बनाया है, इसकी वजह से जो ज़िम्मेदारियां आती हैं, मैंने माशाअल्लाह वे सब अदा कर दी हैं और तुम्हारे हिस्से का ग़नीमत का माल तुममें फैला दिया है और पड़ाव डालने की जगहें और लड़ाई करने की जगहें सब तफ़्सील से तुम्हें बता दी हैं। जो कुछ हमारे पास था, वह सब तुम्हें पहुंचा दिया है, तुम्हारी फ़ौजें जमा कर दी हैं और तुम्हारे लिए तरक़्क़ी की राहें मुहैया कर दी हैं और तुम्हें ठिकाने दे दिए हैं और शाम देश में लड़ाई करके तुमने जो ग़नीमत का माल हासिल किया है, वे सब तुम लोगों में वुसअत के साथ बांट दिया है। तुम्हारी ख़ूराक मुक़र्रर कर दी है और तुम्हें अताया, रोज़ीना और ग़नीमत का माल देने का हमने हुक्म दे दिया है। कोई आदमी ऐसी चीज़ जानता हो, जिस पर अमल करना मुनासिब हो, वह हमें बताए, हम उस पर इनशाअल्लाह ज़रूर अमल करेंगे और नेकी करने की ताक़त सिर्फ़ अल्लाह ही से मिलती है।[2]

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा और दूसरे लोग फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार बयान फ़रमाया, पहले अल्लाह की हम्द व सना उसकी शान के मुनासिब बयान की, फिर लोगों से अल्लाह और आख़िरत के दिन के बारे में याददेहानी कराई, फिर फ़रमाया, ऐ लोगो ! मुझे तुम्हारा वाली और अमीर बनाया गया है।

---

1. अहमद, भाग 1, पृ० 51,
2. बिदाया, भाग 7, पृ० 79,

अगर मुझे यह उम्मीद न होती कि मैं तुममें से तुम्हारे लिए सबसे बेहतर, सबसे ज़्यादा मज़बूत और पेश आने वाले अहम मामलों में सबसे ज़्यादा मज़बूत रहूंगा तो हरगिज़ मैं आप लोगों का अमीर न बनता और उमर के फ़िक्रमन्द और ग़मगीन होने के लिए यह बात काफ़ी है कि उसे हिसाब के ठीक निकलने का इन्तिज़ार है और हिसाब इस बात का कि तुमसे हुक़ूक़ लेकर कहां रखूं और तुम लोगों के साथ कैसे चलूं। मैं अपने रब से ही मदद चाहता हूं। अगर अल्लाह अपनी रहमत, मदद और ताईद से उमर का तदारुक न फ़रमा दें तो उमर का किसी ताक़त और तदबीर पर कोई भरोसा नहीं।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार बयान फ़रमाया, उसमें इर्शाद फ़रमाया, अल्लाह ने मुझे तुम्हारा अमीर बना दिया है। जितनी चीज़ें तुम्हारे सामने हैं, उनमें से जो चीज़ तुम्हें सबसे ज़्यादा नफ़ा देने वाली है, मैं उसे ख़ूब अच्छी तरह जानता हूं और मैं अल्लाह से सवाल करता हूं कि वह इस सबसे ज़्यादा नफ़ा देने वाली चीज़ में मेरी मदद करे और जैसे और चीज़ों में मेरी हिफ़ाज़त कर रहा है, ऐसे इसमें मेरी हिफ़ाज़त फ़रमाए और जैसे कि अल्लाह ने अमल करने का हुक्म दिया है, वह मुझे तुम लोगों की तक़्सीम में अद्ल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

मैं एक मुसलमान आदमी और कमज़ोर बन्दा हूं, लेकिन अगर अल्लाह मेरी मदद फ़रमाए, तो फिर कोई कमज़ोरी नहीं है। यह इमारत व ख़िलाफ़त जो मुझे दी गई है, यह इनशाअल्लाह मेरे अच्छे अख़्लाक़ को नहीं बदल सकेगी और अज़्मत और बड़ाई तो सिर्फ़ अल्लाह के लिए है और बन्दों के लिए इसमें से कुछ भी नहीं। इसलिए तुममें से कोई आदमी हरगिज़ यह न कहे कि जब से उमर अमीर बना है, बदल गया है। मैं अपने नफ़्स के हक़ को ख़ूब समझता हूं। (या मैं अपने बारे में हक़ बात को ख़ूब समझता हूं।)

मैं ख़ुद आगे बढ़कर अपनी बात बयान करता हूं, इसलिए जिस

1. तारीख़े तबरी, भाग 2, पृ० 281,

आदमी को कोई ज़रूरत है या उस पर किसी ने ज़ुल्म किया है या हमारी बदख़ुल्क़ी की वजह से उसे हम पर ग़ुस्सा आया हुआ है, तो वह मुझे बता दे, क्योंकि मैं भी तुममें का एक आदमी हूं और तुम लोग अपने ज़ाहिर और बातिन में और अपनी एहतराम के क़ाबिल चीज़ों और आबरू में अल्लाह से डरते रहो और जो हक़ तुम्हारे ऊपर हैं, तुम उन्हें अदा करो और तुम एक दूसरे को अपने मुक़दमे मेरे पास लेकर आने पर तैयार न करो, क्योंकि मेरे और लोगों में से किसी के दर्मियान नर्मी या तरफ़दारी का कोई समझौता नहीं। तुम लोगों की दुरुस्तगी मुझे पसन्द है और तुम्हारी नाराज़ी मुझ पर बहुत बोझ है।

तुममें से अक्सर लोग शहरों में ठहरे हुए हैं और तुम्हारे इलाक़े में न कोई ख़ास खेती-बाड़ी है और न दूध वाले जानवर ज़्यादा हैं। बस वही ग़ल्ले और जानवर यहां मिलते हैं जो अल्लाह बाहर से ले आते हैं और अल्लाह ने तुमसे बहुत ज़्यादा इक्राम का वायदा किया हुआ है और मैं अपनी अमानत का ज़िम्मेदार हूं। अमानत के बारे में मुझसे पूछा जाएगा, लेकिन अमानत का जो हिस्सा मेरे सामने है, उसकी देखभाल तो मैं ख़ुद करूंगा, यह किसी के सुपुर्द नहीं करूंगा, लेकिन अमानत का जो हिस्सा मुझसे दूर है, मैं उसकी देखभाल ख़ुद नहीं कर सकता। उसे संभालने के लिए मैं तुममें से ऐसे लोग इस्तेमाल करूंगा जो अमानतदार हैं और आम लोगों के लिए ख़ैरख़्वाही का जज़्बा रखने वाले हैं और इनशाअल्लाह अपनी अमानत ऐसे लोगों के अलावा और किसी के सुपुर्द नहीं करूंगा।[1]

एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजा, फिर फ़रमाया, ऐ लोगो ! लालच की कुछ शक्लें ऐसी हैं, जिनसे इन्सान फ़क़ीर और मोहताज हो जाता है और (लोगों के पास जो कुछ है, उससे) ना उम्मीदी की कुछ शक्लें ऐसी हैं,

1. इब्ने जरीर तबरी,

जिनसे इंसान ग़नी और बेनियाज़ हो जाता है। तुम वह चीज़ जमा करते हो, जिसको खा नहीं सकते और उन बातों की उम्मीद लगाते हो जिन्हें पा नहीं सकते।

तुम धोखे वाले घर यानी दुनिया में हो और तुम्हें मौत तक मोहलत मिली हुई है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में तो तुम लोग वह्य के ज़रिए से पकड़े जाते थे। जो अपने बातिन में कोई चीज़ छुपाता था, उसकी उस चीज़ पर पकड़ हो जाती थी। (उसके अन्दर की उस चीज़ का पता वह्य से चल जाता था) और जो किसी चीज़ को ज़ाहिर करता था, उसकी उस चीज़ पर पकड़ हो जाती थी, इसलिए अब तुम लोग हमारे सामने अपने सबसे अच्छे अख़्लाक़ ज़ाहिर करो, बाक़ी रहे तुम्हारे अन्दरूनी हालात और बातिन की नीयतें, तो अल्लाह उन्हें ख़ूब जानता है।

अब जो हमारे सामने किसी बुरी चीज़ को ज़ाहिर करेगा और यह दावा करेगा कि उसकी अन्दरूनी हालत बहुत अच्छी है, हम उसकी तस्दीक़ नहीं करेंगे और जो हमारे सामने किसी अच्छी चीज़ को ज़ाहिर करेगा, हम उसके बारे में अच्छा गुमान रखेंगे और यह बात जान लो कि कंजूसी की कुछ शक्लें निफ़ाक़ का शोबा हैं, इसलिए तुम ख़र्च करो जैसे कि अल्लाह फ़रमाते हैं—

خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ (سورت تغابن آیت ۱۶)

'और (ख़ास तौर से हुक्म के मौक़ों में) ख़र्च (भी) किया करो। यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा और जो आदमी नफ़्सानी लालच से बचा रहा, ऐसे ही लोग (आख़िरत में) फ़लाह पाने वाले हैं।'

(सूरः तग़ाबुन, आयत 16)

ऐ लोगो! अपने ठिकाने पाक-साफ़ रखो और अपने तमाम मामलों को दुरुस्त करो और अल्लाह से डरो जो तुम्हारा रब है और अपनी औरतों को क़िब्ती (मिस्री) कपड़े न पहनाओ क्योंकि उनसे अन्दर जिस्म

नज़र तो नहीं आता, लेकिन उसकी शक्ल मालूम हो जाती है।

ऐ लोगो ! मेरी तमन्ना यह है कि मैं बराबर-सराबर नजात पा जाऊं, न मुझे इनाम मिले और न मुझे सज़ा और मुझे इस बात की उम्मीद है कि आगे मुझे थोड़ी या ज़्यादा जितनी उम्र मिलेगी, मैं उसमें इनशाअल्लाहु हक़ पर अमल करूंगा और हर मुसलमान का अल्लाह के माल में जितना हिस्सा है, वह हिस्सा ख़ुद उसके पास उसके घर पहुंचेगा और उसे उस हिस्सा के लेने के लिए न कुछ करना पड़ेगा और न कभी थकना पड़ेगा और जो माल अल्लाह ने तुम्हें दे रखे हैं, उन्हें दुरुस्त करते रहो और आसानी की थोड़ी कमाई उस ज़्यादा कमाई से बेहतर है, जिसके लिए बड़ी मशक़्क़त उठानी पड़े और क़त्ल हो जाना मरने की एक शक्ल है जो नेक और बद हर आदमी को हासिल हो जाती है, लेकिन हर क़त्ल होने वाला अल्लाह के यहां शहीद नहीं होता, बल्कि शहीद वह है जिसकी नीयत अज्र व सवाब की हो और जब तुम कोई ऊंट ख़रीदना चाहो तो लंबा और बड़ा ऊंट देखो और उसे अपनी लाठी मारो, अगर तुम उसे चौकन्ना दिल वाला पाओ, तो उसे ख़रीद लो।[1]

हज़रत उर्वः रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे लोग फ़रमाते हैं, एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया, उसमें इर्शाद फ़रमाया, अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने तुम लोगों पर शुक्र वाजिब किया है और अल्लाह ने बग़ैर मांगे और बग़ैर तलब किए जो दुनिया और आख़िरत की शराफ़त तुम्हें अता फ़रमाई है, उसके बारे में तुम्हारे ऊपर कई दलीलें बना दी हैं। तुम लोग कुछ नहीं थे, लेकिन उसने तुम्हें पैदा किया और पैदा भी अपने लिए और अपनी इबादत के लिए किया, हालांकि वह तुम्हें (इंसान न बनाता, बल्कि) अपनी सबसे बे-क़ीमत मख़्लूक़ बना सकता था और अपनी सारी मख़्लूक़ तुम्हारे फ़ायदे और ख़िदमत के लिए बनाई और तुम्हें अपने अलावा और किसी मख़्लूक़ के लिए नहीं बनाया, जैसे कि अल्लाह ने फ़रमाया है—

1. तारीख़ इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 282

سَخَّرَ لَكُم مَّا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ
عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً (سورت لقمان آیت-۲۰)

'और अल्लाह ने तमाम चीज़ों को तुम्हारे काम में लगा रखा है, जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं और उसने तुम पर अपनी नेमतें ज़ाहिरी और बातिनी पूरी कर रखी हैं।' (सूरः लुक़्मान, आयत 20)

और उसने तुम्हें ख़ुश्की और समुद्र की सवारियां दीं और पाकीज़ा नेमतें अता फ़रमाईं, ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो, फिर तुम्हारे कान और आंखें बनाईं। फिर अल्लाह की कुछ नेमतें ऐसी हैं जो तमाम बनी आदम को मिली हैं और कुछ नेमतें ऐसी हैं जो सिर्फ़ तुम दीन इस्लाम वालों को मिली हैं। फिर ये तमाम ख़ास और आम नेमतें तुम्हारी हुकूमत में, तुम्हारे ज़माने में तुम्हारे तबक़े में ख़ूब फ़रावानी से हैं और उन नेमतों में से हर नेमत तुममें से हर आदमी को इतनी ज़्यादा मिक़दार में मिली हैं कि अगर वह नेमत तमाम लोगों में तक़्सीम कर दी जाए तो वे उसका शुक्र अदा करते-करते थक जाएं और उसका हक़ अदा करना उन पर भारी हो जाए, हां, अगर वे अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाएं और अल्लाह उनकी मदद करे तो फिर वे उस नेमत का शुक्र और उसका हक़ अदा कर सकते हैं और अल्लाह ने तमाम धरती पर तुम्हें अपना ख़लीफ़ा बनाया हुआ है और ज़मीन वालों पर तुम ग़ालिब आए हुए हो और अल्लाह ने तुम्हारे दीन की ख़ूब मदद की है और जिन लोगों ने तुम्हारा दीन अख़्तियार नहीं किया, उनके दो हिस्से हो गए हैं। कुछ तो इस्लाम और इस्लाम वालों के ग़ुलाम बन गए हैं, (इससे मुराद ज़िम्मी लोग हैं), जो तुम्हें जिज़्या देते हैं, ख़ून-पसीना एक करके कमाते हैं और रोज़ी की तलब में हर तरह की मशक़्क़त उठाते हैं। मशक़्क़त सारी उनके ज़िम्मे है और उनके कमाई से जिज़्या का फ़ायदा आप लोगों को मिलता है और कुछ लोग वे हैं जो दिन-रात हर वक़्त अल्लाह के लश्करों के हमलों के इन्तिज़ार में हैं (इससे मुराद वे काफ़िर हैं, जिनके पास सहाबा किराम के लश्कर जाने वाले थे)।

अल्लाह ने उनके दिलों को रौब से भर दिया है। अब उनके पास कोई ऐसी जगह नहीं है, जहां उन्हें पनाह मिल जाए या भाग कर वहां चले जाएं और इस्लामी लश्करों से किसी तरह बच जाएं। अल्लाह के लश्कर उन पर छा गए हैं और उनके इलाक़े में दाख़िल हो गए हैं और अल्लाह के हुक्म से उन लश्करों को ज़िंदगी की वुसअत, माल की बहुतात, लश्करों व तसलसुल और इस्लामी सरहदों की हिफ़ाज़त जैसी नेमतों के साथ आफ़ियत व अम्न व अमान जैसी बड़ी नेमत भी हासिल है और जब से इस्लाम शुरू हुआ है, कभी इस उम्मत के ज़ाहिरी हालात इससे ज़्यादा अच्छे नहीं रहे और हर शहर में मुसलमानों को जो बड़ी-बड़ी फ़त्हें हो रही हैं, उन पर अल्लाह ही की तारीफ़ होनी चाहिए और ये जो बेहिसाब नेमतें हासिल हैं, जिनका अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता, इनके मुक़ाबले में मुसलमान कितना ही अल्लाह का शुक्र और अल्लाह का ज़िक्र कर लें और दीन के लिए कितनी मेहनत कर लें, वे उन नेमतों के शुक्र का हक़ अदा नहीं कर सकते, हां, अल्लाह अगर उनकी मदद फ़रमाए और उनके साथ रहम और मेहरबानी का मामला फ़रमाए, तो और बात है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और इसी पर हमने ये इतने इनाम व एहसान फ़रमाए हैं, हम उससे सवाल करते हैं कि वह हमें अपनी इताअत वाले अमल करने की और अपनी रज़ा की तरफ़ जल्दी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

ऐ अल्लाह के बन्दो! अल्लाह की जो नेमतें तुम्हारे पास हैं, उन्हें अपनी मज्लिसों में दो-दो एक-एक होकर याद करो और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को पूरा लो, क्योंकि अल्लाह ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को फ़रमाया है—

أَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَ ذَكِّرْهُمْ بِأَيَّامِ اللهِ (سورت ابراہیم آیت ٥)

'अपनी क़ौम को (कुफ़्र के) अंधेरों से (ईमान की) रोशनी की तरफ़ लाओ और उनको अल्लाह के मामले (नेमत और नक़मत के) याद दिलाओ।' (सूरः इब्राहीम, आयत 5)

और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है—

وَاذْكُرُوْا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِي الْأَرْضِ (سورت انفال آیت ۲۶)

'और उस हालत को याद करो, जबकि तुम थोड़े थे, धरती पर कमज़ोर समझे जाते थे।' (सूरः अनफ़ाल, आयत 26)

जब तुम लोग इस्लाम से पहले कमज़ोर समझे जाते थे और दुनिया की ख़ैर से महरूम थे, अगर इस वक़्त तुम हक़ के किसी शोबे पर होते, उस शोबे पर ईमान लाते और उससे आराम पाते और अल्लाह और उसके दीन की मारफ़त तुम्हें हासिल होती और उस शोबे से मरने के बाद की ज़िंदगी में तुम लोग ख़ैर की उम्मीद रखते, तो यह तो कोई बात होती, लेकिन तुम तो जाहिलियत के ज़माने में लोगों में सबसे ज़्यादा सख़्त ज़िंदगी वाले और अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात से सबसे ज़्यादा जाहिल थे, फिर अल्लाह ने इस्लाम के ज़रिए तुम्हें हलाकत से बचाया, अब अच्छा यह था कि सिर्फ़ इस्लाम होता, इसके साथ तुम्हारी दुनिया का कोई हिस्सा न होता और आख़िरत में जहां तुमको लौट कर जाना है, वहां यह इस्लाम तुम्हारे लिए भरोसे की चीज़ होती और तुम जिस मशक़्क़त वाली ज़िंदगी पर थे, इस ज़िंदगी में तुम इस बात के क़ाबिल थे कि इस्लाम में से अपने हिस्से पर कंजूसी करो, उसी से चिमटे रहो और उसे दूसरों पर ज़ाहिर करो, इसलिए तुममें से जो आदमी यह चाहता है कि उसे दुनिया की फ़ज़ीलत और आख़िरत की शराफ़त दोनों बातें हासिल हो जाएं, तो उसे उसके हाल पर छोड़ो, जो वह चाहता उसे चाहने दो।

मैं तुम्हें उस अल्लाह की याददेहानी कराता हूं जो तुम्हारे और तुम्हारे दिलों के दर्मियान रोक है, तुम अल्लाह का हक़ पहचानो और उस हक़ वाले अमल करो और अपने नफ़्सों को अल्लाह की इताअत पर मजबूर करो, तुम्हें नेमतों पर ख़ुश भी होना चाहिए, लेकिन यह डर भी होना चाहिए कि न मालूम कब ये नेमतें तुमसे छिन जाएं और दूसरों को मिल जाएं, क्योंकि कोई चीज़ नाशुक्री से ज़्यादा नेमत से महरूम कराने वाली नहीं है और शुक्र करने से नेमत बदल जाने से महफ़ूज़ हो जाती है और

इससे नेमत में इज़ाफ़ा होता है और यह काम अल्लाह की तरफ़ से मेरे ज़िम्मे वाजिब है कि मैं तुम्हें फ़ायदेमंद कामों का हुक्म दूं और नुक़्सान देने वाले कामों से रोकूं।[1]

हज़रत कुलैब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जुमा के दिन बयान किया और उसमें सूरः आले इम्रान की आयतें पढ़ीं। जब इस आयत पर पहुंचे—

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ (سورت آل عمران آیت ۱۵۵)

'यक़ीनन तुममें से जिन लोगों ने पीठ फेर दी थी, जिस दिन कि दोनों जमाअतें आपस में मुक़ाबले में आईं।' (सूरः आले इम्रान, आयत 155)

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, उहुद की लड़ाई में हम हार गए। मैं भाग कर पहाड़ पर चढ़ गया। मैंने देखा कि मैं पहाड़ी बकरे की तरह छलांगे लागकर भाग रहा हूं और लोग कह रहे थे, हज़रत मुहम्मद सल्ल० क़त्ल कर दिए गए। मैंने कहा, जो यह कहेगा, हज़रत मुहम्मद सल्ल० क़त्ल कर दिए गए, मैं उसे क़त्ल कर दूंगा। फिर पहाड़ पर हम सब जमा हो गए। उस पर यह आयत—

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ

उतरी।[2]

हज़रत कुलैब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु ने हम लोगों में बयान फ़रमाया और मिंबर पर सूरः आले इम्रान पढ़ी, फिर फ़रमाया, इस सूरः का उहुद की लडाई से बहुत ताल्लुक़ है। हम उहुद की लड़ाई के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को छोड़कर इधर-उधर बिखर गए थे। मैं एक पहाड़ पर चढ़ गया। मैंने एक यहूदी को सुना, वह कह रहा था, हज़रत मुहम्मद सल्ल० क़त्ल कर दिए गए। मैंने कहा, मैं जिसे भी यह कहते हुए सुनूंगा कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० क़त्ल कर दिए गए, मैं उसकी गरदन उड़ा दूंगा।

---

1. तारीख इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 283,
2. तारीख इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 283

फिर मैंने देखा तो मुझे एक जगह हुज़ूर सल्ल० नज़र आए और लोग आपके पास लौटकर आ रहे थे, इस पर यह आयत उतरी—

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ (سورت آل عمران آیت ۱۴۴)

'और मुहम्मद निरे रसूल ही तो हैं, आपसे पहले और भी बहुत-से रसूल गुज़र चुके हैं, सो अगर आपका इंतिक़ाल हो जावे या आप शहीद ही हो जावें, तो क्या तुम लोग उलटे फिर जाओगे।'

(सूरः आले इम्रान, आयत 144)[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अदी बिन ख़ियार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने मिंबर पर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाते हुए सुना, जब बन्दा अल्लाह की वजह से तवाज़ो अपनाता है, तो अल्लाह उसकी क़द्र व मंज़िलत बढ़ा देते हैं और फ़रमाते हैं, बुलन्द हो जा, अल्लाह तुझे बुलन्द करे। यह अपने आपको हक़ीर समझता है, लेकिन लोगों की निगाह में बड़ा होता है और जब बन्दा तकब्बुर करता है और अपनी हद से आगे बढ़ता है, तो अल्लाह उसे तोड़ कर नीचे ज़मीन पर गिरा देते हैं और फ़रमाते हैं, दूर हो जा, अल्लाह तुझे दूर करे और यह अपने आपको बड़ा समझता है, लेकिन लोगों की निगाह में हक़ीर होता है, यहां तक कि वह उनके नज़दीक सुवर से भी ज़्यादा हक़ीर हो जाता है।[2]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हममें बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, हो सकता है कि मैं आप लोगों को ऐसी चीज़ से रोक देता हूं जिनमें आप लोगों का फ़ायदा हो और ऐसी चीज़ों का हुक्म दे देता हूं जिनमें आप लोगों का फ़ायदा न हो और क़ुरआन में सबसे आख़िर में सूद के हराम होने की आयत नाज़िल हुई और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे लिए सूद की इस आयत की (मोटी-मोटी और) बुनियादी

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 238,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 143,

बातें तो बयान फ़रमा पाए थे, लेकिन उसकी तफ़्सीली और बारीक-बारीक बातें बयान न कर पाए थे कि आपकी वफ़ात हो गई (क्योंकि हुज़ूर सल्ल० इससे ज़्यादा अहम कामों में मश्ग़ूल थे) इसलिए जिस शक्ल में तुम्हें कुछ सूद का खटका हुआ है उसे छोड़ दिया करो और जिसमें कोई खटका न हो, वह अख़्तियार कर लिया करो।[1]

हज़रत अस्वद बिन यज़ीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया, तुममें से जो भी हज का इरादा करे, तो वह सिर्फ़ मीक़ात से ही एहराम बांधे और एहराम बांधने के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो मीक़ात मुक़र्रर फ़रमाए हैं, वे यह हैं मदीना वालों के लिए और दूसरी जगह के रहने वाले मदीना से गुज़रें तो उनके लिए ज़ुल हुलैफ़ा मीक़ात है और शाम वालों के लिए और दूसरी जगह के रहने वाले शाम से गुज़रें तो उनके लिए जुहफ़ा मीक़ात है और नज्द वालों के लिए और दूसरी जगह के रहने वाले नज्द से गुज़रें तो उनके लिए क़र्न मीक़ात है और यमन वालों के लिए यलम लम और इराक़ वालों और बाक़ी तमाम लोगों के लिए ज़ाते इर्क़ मीक़ात है।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया और उसमें रज्म का यानी ज़िना करने वाले को संगसार करने की सज़ा का ज़िक्र किया और फ़रमाया, रज्म के बारे में धोखा न खा लेना, क्योंकि (अगरचे क़ुरआन में इसका ज़िक्र नहीं है, लेकिन) यह भी अल्लाह की मुक़र्रर की हुई सज़ाओं में से एक सज़ा है। ग़ौर से सुनो! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुद रज्म किया है और आपके बाद हमने रज्म किया है। अगर मुझे इस बात का डर न होता कि लोग यों कहेंगे कि उमर रज़ि० ने अल्लाह की किताब में वह चीज़ बढ़ा दी जो उसमें नहीं थी, तो मैं क़ुरआन के किनारे पर यह

1. कंज़, भाग 2, पृ० 232,
2. कंज़, भाग 3, पृ० 30,

लिख देता कि उमर बिन ख़त्ताब, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, फ़्लां और फ़्लां सहाबी इस बात के गवाह हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रज्म किया है और आपके बाद हमने रज्म किया है।

ग़ौर से सुनो ! तुम्हारे बाद बहुत जल्द ऐसे लोग आएंगे जो रज्म को, दज्जाल को, शफ़ाअत को, क़ब्र के अज़ाब को और उन लोगों को जो जल जाने के बाद जहन्नम से निकलेंगे, इन सब चीज़ों को झुठलाएंगे।[1]

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अनहु जब मिना से वापस हुए, तो उन्होंने पथरीले मैदान में अपनी सवारी बिठाई, फिर कंकरियों की एक ढेरी बनाकर अपने कपड़े का एक किनारा उस ढेरी पर डाला और उस पर लेट गए और आसमान की तरफ़ दोनों हाथ उठाकर यह दुआ की, ऐ अल्लाह ! मेरी उम्र ज़्यादा हो गई है और मेरी ताक़त कमज़ोर हो गई है और मेरी रियाया बहुत फैल गई है, इसलिए अब मुझे अपनी तरफ़ इस तरह उठा ले कि मैं तेरे हुक्मों को न बर्बाद करने वाला बनूं और न उनमें कमी करने वाला।

फिर जब हज़रत उमर रज़ि० मदीना पहुंचे, तो लोगों में बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो ! कुछ आमाल तुम पर फ़र्ज़ किए गए हैं और सुन्नतें तुम्हारे लिए साफ़ बयान कर दी गई हैं और तुम्हें एक वाज़ेह और साफ़ मिल्लत पर छोड़ा गया है, फिर दायां हाथ बाएं पर मार कर फ़रमाया, इसके बाद भी तुम दाएं-बाएं होकर लोगों को गुमराह करते फिरो, तो यह अलग बात है।

फिर तुम इस बात से बचो कि रज्म की आयत की वजह से हलाक हो जाओ और तुममें से कोई यों कहे कि हमें अल्लाह की किताब में ज़िना के बारे में दो सज़ाएं नहीं मिलतीं। (एक रज्म की और दूसरी कोड़े मारने की, बल्कि हमें तो सिर्फ़ एक सज़ा मिलती है यानी कोड़े मारने की) मैंने ख़ुद देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रज्म किया

1. अहमद, अबू याला, अबू उबैद,

है और आपके बाद हमने रज्म किया है। अल्लाह की क़सम! अगर मुझे यह डर न होता कि लोग कहेंगे, उमर ने अल्लाह की किताब में नई चीज़ बढ़ा दी, तो मैं यह इबारत क़ुरआन में लिख देता—

اَلشَّيْخُ وَالشَّيْخَةُ اِذَا زَنَيَا فَارْجُمُوْهُمَا

'शादीशुदा मर्द और औरत जब ज़िना करें तो दोनों को ज़रूर रज्म करो', क्योंकि (पहले यह आयत क़ुरआन में उतरी थी और) हम क़ुरआन में इसकी तिलावत किया करते थे। (बाद में ये लफ़्ज़ मंसूख़ हो गए, लेकिन उनका हुक्म अब भी बाक़ी है।) हज़रत सईद कहते हैं, अभी ज़ुलहिज्जा का महीना ख़त्म नहीं हुआ था कि हज़रत उमर रज़ि० को नेज़ा मारकर घायल कर दिया गया। (और इसी में उनका इंतिक़ाल हो गया।)[1]

हज़रत मादान बिन अबी तलहा यामुरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार जुमा के दिन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु मिंबर पर खड़े हुए पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़िक्र किया, फिर फ़रमाया, मैंने एक ख़्वाब देखा है, जिससे मैं यही समझा हूं कि मेरे दुनिया से जाने का वक़्त क़रीब आ गया है। मैंने ख़्वाब देखा कि एक लाल मुर्ग़ ने मुझे दो बार चोंच मारी है।

मैंने उस ख़्वाब का ज़िक्र (अपनी बीवी) अस्मा बिन्त उमैस रज़ि० से किया। उसने कहा, इसकी ताबीर यह है कि अजम का एक आदमी आपको क़त्ल करेगा। लोग मुझे कह रहे हैं कि मैं किसी को अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दूं। (ख़लीफ़ा मुक़र्रर करना ठीक तो है, मगर ज़रूरी नहीं है।) मुझे यक़ीन है कि अल्लाह ने जो अपना दीन और ख़िलाफ़त देकर अपने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा है, उसे हरगिज़ ज़ाया नहीं होने देंगे। अगर (दुनिया से जाने का) मेरा मामला जल्दी हो गया, तो ये छः आदमी, जिनसे दुनिया से जाते वक़्त हुज़ूर

1. कंज़, भाग 3, पृ० 91

सल्ल० राज़ी थे, आपस के मश्विरे से अपने में से किसी एक को ख़लीफ़ा बना लें—हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत तलहा, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हुम।

तुम इनमें से जिसकी भी बैअत करो, उसकी बात सुनो और मानो और मुझे मालूम है कि कुछ लोग ख़िलाफ़त के इस मामले में एतराज़ करेंगे, हालांकि ये लोग वह हैं, जिनसे मैंने अपने इस हाथ से इस्लाम पर लड़ाई लड़ी है। अगर वे लोग ऐसा करें तो वे अल्लाह के दुश्मन, काफ़िर और गुमराह होंगे, (अगर वे इस एतराज़ को जायज़ समझते हैं, फिर तो वाक़ई वे काफ़िर हो जाएंगे, वरना उनका यह अमल काफ़िरों के अमल के जैसा हो जाएगा) मैं कोई ऐसी चीज़ छोड़कर नहीं जा रहा हूं, जो मेरे नज़दीक कलाला के मामले से ज़्यादा अहम हो। (कलाला वह आदमी है जिसके न औलाद हो और न मां-बाप हों) अल्लाह की क़सम! जब से में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहा हूं हुज़ूर सल्ल० ने किसी भी चीज़ के बारे में मेरे साथ इतनी सख़्ती नहीं की, जितनी सख़्ती मेरे साथ इस कलाला के बारे में की है, यहां तक कि आपने अपनी उंगली मेरे सीने पर मारकर फ़रमाया, सूरः निसा के आख़िर में गर्मियों में जो आयत—

يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ

उतरी है, वह तुम्हारे लिए काफ़ी है। अगर मैं ज़िंदा रहा तो कलाला के बारे में ऐसा फ़ैसला करूंगा कि हर पढ़े-लिखे और अनपढ़ को उसके बारे में सब कुछ मालूम हो जाएगा और मैं अल्लाह को गवाह बनाकर कहता हूं कि मैं शहरों के गवर्नरों को इसलिए भेजता हूं ताकि वे लोगों को दीन और उनके नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत सिखाएं और जो कोई नया या पेचीदा मामला ऐसा पेश जाए जिसका उन्हें हल समझ में न आए तो वे उसे मेरे पास भेज दें।

फिर ऐ लोगो! तुम ये दो सब्ज़ियां खाते हो। मैं तो इसे बुरा ही

समझता हूं, वे लहसुन और प्याज़ हैं। अल्लाह की क़सम ! मैंने अल्लाह के नबी अलैहिस्सलाम को देखा है कि उन्हें (मस्जिद में) जिस आदमी से लहसुन या प्याज़ की बू आ जाती थी, तो उसे हुज़ूर सल्ल० के फ़रमाने पर हाथ से पकड़ कर मस्जिद से बाहर निकाल दिया जाता था और 'जन्नतुल बक़ीअ' पहुंचा दिया जाता था, इसलिए जो आदमी लहसुन या प्याज़ ज़रूर ही खाना चाहता है, वह उन्हें पका कर (उनकी बू) मार दे। हज़रत उमर रज़ि० ने यह बयान जुमा के दिन फ़रमाया और इसके बाद बुध के दिन उन्हें हमला करके घायल कर दिया गया, जबकि ज़िलहिज्जा के ख़त्म होने में चार दिन बाक़ी थे।[1]

हज़रत यसार बिन मारूर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हम लोगों में बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो ! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह मस्जिद बनाई और मस्जिद बनाने में हम मुहाजिरीन और अंसार भी आपके साथ थे। जब मस्जिद में मज्मा ज़्यादा हो जाए, तो तुममें से हर आदमी को चाहिए कि वह अपने आगे वाले भाई की पीठ पर सज्दा कर ले और हज़रत उमर रज़ि० ने कुछ लोगों को रास्ते में नमाज़ पढ़ते हुए देखा तो फ़रमाया, मस्जिद में नमाज़ पढ़ो।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा बने तो उन्होंने लोगों में बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें मुतआ की तीन दिन के लिए इजाज़त दी थी, फिर इसके बाद आपने हमेशा के लिए मुतआ को हराम फ़रमा दिया था। (मुतआ यह है कि आदमी एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए शादी करे। ख़ैबर से पहले मुतआ वाला निकाह हलाल था, ख़ैबर के बाद हुज़ूर सल्ल० ने हराम क़रार दे दिया था, फिर मक्का की जीत के मौक़े पर हुज़ूर सल्ल० ने मुतआ की सहाबा रज़ि०

1. कंज़, भाग 3, पृ० 153
2. कंज़, भाग 4, पृ० 259

को इजाज़त दी थी, फिर तीन दिन के बाद उसे हमेशा के लिए हराम क़रार दे दिया था।) अल्लाह की क़सम ! अब मुझे जिसके बारे में पता चला कि वह शादीशुदा है और उसने मुतआ वाला निकाह किया है, तो मैं उसे संगसार कर दूंगा, या वह मेरे पास चार ऐसे गवाह लेकर आए जो इस बात की गवाही दें कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुतआ को हराम करने के बाद हलाल कर दिया था और जो ग़ैर-शादीशुदा आदमी मुझे ऐसा मिला जो मुतआ वाला निकाह करे तो मैं उसे सौ कोड़े मारूंगा या वह मेरे पास ऐसे चार गवाह लेकर आए जो इस बात की गवाही दें कि हुज़ूर सल्ल० ने मुतआ हराम करने के बाद फिर हलाल कर दिया था।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सईद के दादा कहते हैं, मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को मिंबर पर फ़रमाते हुए सुना, ऐ मुसलमानों की जमाअत ! अल्लाह ने आप लोगों को अजमी मुल्कों में से उनकी औरतें और बच्चे ग़नीमत के माल में (बांदी और ग़ुलाम बनाकर) इतने दे दिए हैं कि न तो इतने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिए थे और न हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को और मुझे पता चला है कि बहुत-से मर्द उन औरतों से सोहबत करते हैं, (क्योंकि ये बांदियां हैं और बांदियों से सोहबत करना मालिक के लिए जायज़ है।) अब जिस अजमी बांदी से तुम्हारा बच्चा पैदा हो जाए, तो तुम उसे न बेचना, क्योंकि तुम अगर ऐसा करोगे तो हो सकता है कि आदमी को पता भी न चले और वह अपनी किसी महरम औरत से सोहबत कर ले (हो सकता है कि आदमी बांदी को बेच दे और बांदी से जो लड़का पैदा हुआ था, वह उसी आदमी का बेटा था, वह उसी के पास रह गया। बाद में उस लड़के ने उसी बांदी को ख़रीद लिया और उसे पता नहीं है कि यह उसकी मां है।)[2]

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 293,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 292.

हज़रत मारूर या इब्ने मारूर तमीमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु मिंबर पर चढ़े और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली जगह से दो सीढ़ी नीचे बैठ गए। वहां मैंने उनको यह फ़रमाते हुए सुना, मैं तुम्हें अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूं और जिसे अल्लाह आप लोगों का वाली और हाकिम बना दें, उसकी बात सुनो और मानो।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु अपने बयान में फ़रमाया करते थे, तुममें से वह आदमी कामियाब रहा, जो ख़्वाहिश पर चलने से, गुस्से में आने और लालच में पड़ने से महफ़ूज़ रहा और जिसे बात-चीत करने में सच बोलने की तौफ़ीक़ दी गई, क्योंकि सच उसे ख़ैर की तरफ़ ले जाएगा और जो आदमी झूठ बोलेगा, वह गुनाह के काम करेगा, वह हलाक होगा और गुनाह के कामों से बचो और उस आदमी का क्या गुनाह करना जो मिट्टी से पैदा हुआ और मिट्टी की तरफ़ लौट जाएगा, आज वह ज़िंदा है, कल मुर्दा होगा, रोज़ का काम रोज़ करो और मज़्लूम की बद्दुआ से बचो और अपने आपको मुर्दों में समझो।[2]

हज़रत क़बीसा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मिंबर पर फ़रमाते हुए सुना, जो रहम नहीं करता, उस पर रहम नहीं किया जाता। जो माफ़ नहीं करता, उसे माफ़ नहीं किया जाता, जो तौबा नहीं करता, उसकी तौबा क़ुबूल नहीं की जाती, जो (बुरे कामों से) नहीं बचता, उसे (अज़ाब से) नहीं बचाया जाता।[3]

हज़रत उर्व: रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने बयान में फ़रमाया, यह बात अच्छी तरह समझ लो कि लालच फ़क्र की निशानी है और ना उम्मीदी से इंसान ग़नी हो जाता है।

1. कंज़, भाग 8, पृ० 208
2. कंज़, भाग 8, पृ० 208
3. कंज़, भाग 8, पृ० 207,

आदमी जब किसी चीज़ से ना उम्मीद हो जाता है, तो आदमी को उसकी ज़रूरत नहीं रहती।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन खिराश रहमतुल्लाहि अलैहि के चचा कहते हैं, मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को बयान में यह फ़रमाते हुए सुना, ऐ अल्लाह ! अपनी अमान के ज़रिए हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा और हमें अपने दीन पर साबित क़दम रख।[2] अपने फ़ज़्ल से हमें रोज़ी अता फ़रमा।[3]

हज़रत अबू सईद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों में बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जिस चीज़ की चाही, इजाज़त दे दी। (चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहले सिर्फ़ हज का एहराम बांधा था, बाद में अल्लाह की इजाज़त से उसी एहराम में उमरा की नीयत भी कर ली। अब ऐसा करने की उम्मत को इजाज़त नहीं है) और अब अल्लाह के नबी अपने रास्ते पर (दुनिया से तशरीफ़ ले जा चुके हैं, इसलिए हज और उमरा को अल्लाह के लिए ऐसे पूरा करो जैसे तुम्हें अल्लाह ने हुक्म दिया है और उन औरतों की शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो।[4]

हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को बयान में फ़रमाते हुए सुना कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि जो मर्द दुनिया में रेशम पहनेगा, उसे आख़िरत में रेशम नहीं पहनाया जाएगा।[5]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु के ग़ुलाम हज़रत अबू उबैदा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने एक बार हज़रत उमर बिन

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 50, कंज़, भाग 8, पृ० 235
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 54
3. कंज़, भाग 10, पृ० 303;
4. अहमद, भाग 1, पृ० 17
5. अहमद, भाग 1, पृ० 20,

ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ ईद की नमाज़ पढ़ी, उन्होंने अज़ान और इक़ामत के बग़ैर ख़ुत्बा से पहले नमाज़ पढ़ाई, फिर ख़ुत्बा दिया और फ़रमाया, ऐ लोगो ! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन दो दिनों के रोज़े से मना फ़रमाया है, एक तो ईदुल फ़ित्र का दिन, जिस दिन तुम रमज़ान के रोज़ों से इफ़्तार करते हो और ईद मनाते हो और दूसरा वह दिन, जिस दिन तुम लोग अपनी क़ुरबानी का गोश्त खाते हो ।[1]

हज़रत अलक़मा बिन वक़्क़ास लैसी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को लोगों में बयान करते हुए सुना, वह फ़रमा रहे थे, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि को फ़रमाते हुए सुना कि अमल का दारोमदार नीयत पर है और आदमी को अमल पर वही मिलेगा, जिसकी वह नीयत करेगा, इसलिए जिसकी हिजरत अल्लाह और रसूल की तरफ़ होगी, तो उसकी हिजरत अल्लाह और रसूल की ओर ही समझी जाएगी और जिसकी हिजरत दुनिया हासिल करने या किसी औरत से शादी करने के लिए होगी, तो उसकी हिजरत उसी चीज़ के लिए समझी जाएगी, जिसकी नीयत से उसने हिजरत की होगी ।[2]

हज़रत सुलैमान बिन यसार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने रमादा के सूखे के ज़माने में बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो ! अपने बारे में अल्लाह से डरो और तुम्हारे जो काम लोगों से छिपे हुए हैं, उनमें भी अल्लाह से डरो। मुझे तुम्हारे ज़रिए से आज़माया जा रहा है और तुम्हें मेरे ज़रिए से। अब मुझे मालूम नहीं कि (अल्लाह ने नाराज़ होकर जो यह सूखा भेजा है, वह किससे नाराज़ है? वह मुझसे नाराज़ है और तुमसे नहीं या तुमसे नाराज़ है मुझसे नहीं या मुझसे और तुमसे दोनों से ही नाराज़ है। आओ हम अल्लाह से दुआ करें कि वह हमारे दिलों को ठीक कर दे और हम पर

1. अहमद, भाग 1, पृ० 34
2. अहमद, भाग 1, पृ० 43,

रहम फ़रमाए और यह सूखा हमसे दूर कर दे।

रिवायत करने वाले कहते हैं, उस दिन देखा गया कि हज़रत उमर दोनों हाथ उठाकर अल्लाह से दुआ कर रहे हैं और लोग भी दुआ कर रहे हैं। फिर हज़रत उमर रज़ि० और लोग थोड़ी देर रोते रहे, फिर हज़रत उमर रज़ि० मिंबर से नीचे तशरीफ़ ले आए।[1]

हज़रत अबू उस्मान नह्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों में बयान कर रहे थे, मैं उनके मिंबर के नीचे बैठा हुआ था। आपने बयान में फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना, मुझे इस उम्मत पर सबसे ज़्यादा डर उस मुनाफ़िक़ का है जो ज़ुबान का ख़ूब जानने वाला हो, यानी जिसे बातें बनानी ख़ूब आती हों।[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बयान सहाबा किराम रज़ि० के आपसी मेल-मिलाप और इत्तिफ़ाक़े राय के बाब में गुज़र चुके हैं।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु के बयान

हज़रत इब्राहीम बिन अब्दुर्रहमान मख़्ज़ूमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब लोग हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से बैअत कर चुके तो आपने बाहर आकर लोगों में बयान फ़रमाया, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, ऐ लोगो! पहली बार सवार होना मुश्किल होता है। आज के बाद और भी दिन हैं। अगर मैं ज़िंदा रहा तो तुम ऐसा बयान सुनोगे जो सही तर्तीब से होगा। हम तो बयान करने वाले नहीं हैं, अल्लाह हमें बयान का सही तरीक़ा सिखा देंगे।[3]

हज़रत बद्र बिन उस्मान रहमतुल्लाहि अलैहि के चचा बयान करते हैं,

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 322,
2. अहमद, भाग 1, पृ० 44
3. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 62,

जब अह्ले शूरा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से बैअत हो गए, तो उस वक़्त वह बहुत ग़मगीन थे। उनकी तबीयत पर बड़ा बोझ था। वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मिंबर पर तशरीफ़ लाए और लोगों में बयान फ़रमाया। पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजा, इसके बाद फ़रमाया, तुम ऐसे घर में हो जहां से तुम्हें कूच कर जाना है और तुम्हारी उम्र थोड़ी बाक़ी रह गई है, इसलिए तुम जो ख़ैर के काम कर सकते हो, मौत से पहले कर लो। सुबह और शाम मौत तुम्हें आने ही वाली है। ग़ौर से सुनो! दुनिया सरासर धोखा ही धोखा है। (अल्लाह तआला ने फ़रमाया है)—

فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ (سورت لقمان آیت ۳۳)

'सो तुमको दुन्यवी ज़िंदगानी धोखे में न डाले और न वह धोखेबाज़ (शैतान) अल्लाह से धोखा में डाले।' (सूरः लुक़्मान, आयत 33)

और जो लोग जा चुके हैं, उनसे इबरत हासिल करो और ख़ूब मेहनत करो और ग़फ़लत से काम न लो, क्योंकि मौत का फ़रिश्ता तुमसे कभी ग़ाफ़िल नहीं होता। कहां हैं दुनिया के भाई और बेटे, जिन्होंने दुनिया में खेती-बाड़ी की और उसे ख़ूब आबाद किया और लम्बी मुद्दत तक उससे फ़ायदा उठाया? क्या दुनिया ने उन्हें फेंक नहीं दिया? चूंकि अल्लाह ने दुनिया को फेंका हुआ है, इसलिए तुम भी उसे फेंक दो और आख़िरत को तलब करो, क्योंकि अल्लाह ने दुनिया की और आख़िरत की जो कि दुनिया से बेहतर है, दोनों की मिसाल इस आयत में बयान की—

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ

से लेकर अ-म-ला, (सूरः कहफ़, आयत 45-46)

तर्जुमा—और आप उन लोगों से दुन्यवी ज़िंदगी की हालत बयान फ़रमाइए कि वह ऐसे हैं, जैसे आसमान से हमने पानी बरसाया हो, फिर उसके ज़रिए से ज़मीन को पेड़-पौधे ख़ूब घने हो गए हों, फिर वह

रेज़ा-रेज़ा हो जावे कि उसको हवा उड़ाए लिए फिरती हो और अल्लाह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखते हैं। माल और औलाद दुन्यवी ज़िंदगी की एक रौनक़ है और जो भले काम बाक़ी रहने वाले हैं, वे आपके रब के नज़दीक सवाब के एतबार से भी हज़ार दर्जा बेहतर हैं और उम्मीद के एतबार से भी।'

बयान के बाद लोग हज़रत उस्मान रज़ि० से बैअत होने लगे।[1]

हज़रत उत्बा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने बैअत करने के बाद लोगों में बयान किया, इर्शाद फ़रमाया, अम्मा बादु ! मुझ पर ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी डाली गई है जिसे मैंने क़ुबूल कर लिया है। ग़ौर से सुनो ! मैं (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के) पीछे चलूंगा और अपने पास से गढ़ कर नई बात नहीं लाऊंगा। तवज्जोह से सुनो ! अल्लाह की किताब और उसके नबी की सुन्नत के बाद मेरे ऊपर तुम्हारे तीन हक़ हैं—

पहला हक़ यह है कि जिस चीज़ में आप लोग एक राय हैं और उसका एक रास्ता मुक़र्रर कर लिया है, उसमें मैं अपने से पहलों के तरीक़े पर चलूं और दूसरा हक़ यह है कि जिस चीज़ में आप सब लोगों ने मिलकर कोई रास्ता मुक़र्रर नहीं किया है, उसमें मैं ख़ैर वालों के रास्ते पर चलूं और तीसरा हक़ यह है कि मैं आप लोगों से अपने हाथ रोके रखूं, आप लोगों को किसी क़िस्म की सज़ा न दूं, हां, आप लोग ही ख़ुद कोई ऐसा काम कर बैठें, जिस पर सज़ा देना मेरे ज़िम्मे वाजिब हो, तो यह अलग बात है।

ग़ौर से सुनो ! दुनिया हरी-भरी है और तमाम लोगों के दिलों में उसकी रग़बत रखी हुई है और बहुत लोग उसकी ओर मायल हो चुके हैं, इसलिए तुम दुनिया की तरफ़ मत झुको और उस पर भरोसा न करो, यह भरोसे के क़ाबिल नहीं और यह अच्छी तरह समझ लो कि यह दुनिया सिर्फ़ उसे छोड़ती है जो उसे छोड़ दे।[2]

1. तारीख़े तबरी, भाग 3, पृ० 305,
2. तारीख़ इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 446,

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को मिंबर पर देखा, वह फ़रमा रहे थे, ऐ लोगो ! तुम छुप कर जो अमल करते हो, उनमें अल्लाह से डरो, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है ! जो भी कोई अमल छुप कर करता है, तो अल्लाह उसे उस अमल की चादर एलानिया ज़रूर पहनाएंगे। अगर ख़ैर का अमल किया होगा तो उसे ख़ैर की चादर पहनाएंगे और बुरा अमल किया होगा तो उसे बुरी चादर पहनाएंगे।

फिर हज़रत उस्मान रज़ि० ने यह आयत पढ़ी—

وَرِيَاشًا وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ (سورت اعراف آیت۲۶)

'व रियाशन व लिबासुत्तक़्वा ज़ालि-क ख़ैर०' (सूरः आराफ़, आयत 26)

इसमें हज़रत उस्मान रज़ि० 'व रियाशन' पढ़ा और 'रीशन' न पढ़ा (जो कि मशहूर क़िरात है) 'और ज़ीनत और तक़्वा का लिबास यह इससे बढ़कर है।'

रिवायत करने वाले कहते हैं, ज़ीनत और तक़्वा वाले लिबास से मुराद अच्छी आदतें हैं।[1]

हज़रत अब्बाद बिन ज़ाहिर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को बयान करते हुए सुना, उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम, हम लोग सफ़र व हज़र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहे। आप हमारे बीमारों की इयादत फ़रमाते थे और हमारे जनाज़ों के साथ तशरीफ़ ले जाते थे और हमारे साथ लड़ाई में जाते थे और आपके पास कम या ज़्यादा जितना होता, उसी से हमसे ग़मख़्वारी फ़रमाते और अब कुछ लोग मुझे हुज़ूर सल्ल० के बारे में कुछ बता रहे हैं, हालांकि उन लोगों ने तो शायद हुज़ूर सल्ल० को देखा भी नहीं होगा।[2]

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 137
2. कंज़, भाग 2, पृ० 44

अहमद और अबू याला की रिवायत में इसके बाद यह है, इस पर आयन बिन इमर अतुल फ़रज़ वक़ ने हज़रत उस्मान रज़ि० को मुख़ातिब करते हुए कहा, ऐ नासल ! (मिस्र के एक आदमी का नाम नासल था, उसकी दाढ़ी लम्बी थी, हज़रत उस्मान रज़ि० की दाढ़ी भी लम्बी थी। एतराज़ करने वालों को हज़रत उस्मान रज़ि० में इसके अलावा और कोई कमी न मिलती थी, इससे उसको तश्बीह देते हुए उसके नाम से पुकारा करते थे।) आपने तो सब कुछ बदल दिया है।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने पूछा, यह कौन है? लोगों ने बताया, यह आयन है, तो फ़रमाया, नहीं ऐ ग़ुलाम ! तूने बदला है। इस पर लोग आयन पर झपटे। बनू लैस का एक आदमी लोगों को आयन से हटाने लगा और वहां से बचाकर आयन को अपने घर ले गया।[1]

हज़रत मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु को बयान में फ़रमाते हुए सुना कि छोटी उम्र के ग़ुलाम को कमा कर लाने का ज़िम्मेदार न बनाओ, क्योंकि तुम अगर उसे कमाने का ज़िम्मेदार बनाओगे, तो वह छोटा होने की वजह से कमा नहीं सकेगा, इसलिए चोरी शुरू कर देगा, ऐसे ही जो बांदी कोई काम या हुनर न जानती हो, उसे भी कमा कर लाने का ज़िम्मेदार न बनाओ, क्योंकि अगर तुम उसे कमा कर लाने का ज़िम्मेदार बनाओगे तो उसे कोई काम और हुनर तो आता नहीं, इसलिए वह अपनी शर्मगाह के ज़रिए यानी ज़िना के ज़रिए कमाने लग जाएगी और पाक दामनी अख़्तियार किए रहो, क्योंकि अल्लाह ने तुम्हें पाकदामनी अता फ़रमा रखी है और खाने की सिर्फ़ वे चीज़ें इस्तेमाल करो जो हलाल और पाकीज़ा हैं।[2]

हज़रत ज़ुबैद बिन सल्त रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को मिंबर पर फ़रमाते हुए सुना, ऐ लोगो !

---

1. हैसमी, भाग 4, पृ० 228
2. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 9, कंज़, भाग 5, पृ० 47,

जुआ खेलने से बचो यानी नरौ न खेला करो, क्योंकि मुझे बताया गया है कि तुममें से कुछ लोगों के घरों में नरौ खेल के आलात हैं, इसलिए जिसके घर में ये आलात मौजूद हैं, वह या तो उन्हें जला दे या तोड़ दे और दूसरी बार हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मिंबर पर फ़रमाया, ऐ लोगो ! मैंने इस नरौ खेल के बारे में तुमसे बात की थी, लेकिन ऐसा नज़र आ रहा है कि तुम लोगों ने इस खेल के आलात को घरों से अभी नहीं निकाला है, इसलिए मैंने इरादा कर लिया है कि हुक्म देकर लकड़ियों के गट्ठर जमा कराऊं और जिन घरों में ये आलात हैं, उन सबको आग लगा दूं ।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन हुमैद के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत सालिम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मिना में नमाज़ पूरी पढ़ाई। (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हज के मौक़े पर मिना के दिनों में ज़ुहर, अस्र, इशा, तीनों नमाज़ों में दो रक्अतें नमाज़ पढ़ाते रहे। शुरू में हज़रत उस्मान रज़ि० भी दो रक्अत पढ़ाते रहे, लेकिन फिर चार रक्अत पढ़ाने लगे थे) फिर लोगों में बयान किया, फ़रमाया, ऐ लोगो ! असल सुन्नत तो वह है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने और आपके दो साथियों ने (हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि०) ने किया, लेकिन इस साल लोग हज पर बहुत आए हैं, इसलिए मुझे डर हुआ कि लोग दो रक्अत पढ़ने को मुस्तक़िल न बना लें। (इसलिए मैंने चार पढ़ाई ।)[2]

हज़रत क़ुतैबा बिन मुस्लिम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज्जाज बिन यूसुफ़ ने हममें बयान किया और उसने क़ब्र का तज़्किरा किया और बराबर कहता रहा कि यह क़ब्र तंहाई का घर है और पराएपन और बेगानगी का घर है, यहां तक कि ख़ुद भी रोने लगा और आस-पास

1. कंज़, भाग 7, पृ० 334
2. कंज़, भाग 4, पृ० 239

आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाओ। फ़ानी दुनिया पर हमेशा बाक़ी रहने वाली आख़िरत को तर्जीह दो, क्योंकि दुनिया ख़त्म हो जाएगी और हम सब ने लौट कर अल्लाह ही के पास जाना है और अल्लाह से डरो, क्योंकि अल्लाह से डरना ही उसके अज़ाब से ढाल और उसकी बारगाह में पहुंचने का वसीला है और एहतियात से चलो, कहीं अल्लाह तुम्हारे हालात न बदल दे और अपनी जमाअत से चिमटे रहो और अलग-अलग गिरोह न बन जाओ—

وَاذْكُرُوا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَآءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ
فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا (سورت آل عمران آیت ۱۰۳)

'और तुम पर जो अल्लाह का इनाम है, उसको याद करो, जबकि तुम दुश्मन थे, पर अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में उलफ़त डाली, सो तुम अल्लाह के इनाम से आपस में भाई-भाई हो गए।'[1] (सूरः आले इम्रान, आयत 103)

और जिहाद के बाब में अल्लाह के रास्ते में पहरा देने की फ़ज़ीलत में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान गुज़र चुका है।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु के बयानात

हज़रत अली बिन हुसैन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, अमीरुल मोमिनीन बनने के बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो सबसे पहला बयान फ़रमाया, उसमें पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, अल्लाह ने हिदायत देने वाली किताब नाज़िल फ़रमाई और उसमें ख़ैर व शर, सब बयान कर दिया, इसलिए तुम ख़ैर को लो और शर को छोड़ो और तमाम फ़रीज़े अदा करके अल्लाह के यहां भेज दो। अल्लाह उनके बदले में तुम्हें जन्नत में पहुंचा देंगे। अल्लाह ने बहुत-सी चीज़ों को एहतिराम के क़ाबिल बनाया है जो सबको मालूम है, लेकिन इन तमाम चीज़ों पर मुसलमान की हुर्मत को फ़ौक़ियत हासिल

1. तबरी, भाग 3, पृ० 446,

हुई है और अल्लाह ने इख़्लास और वहदानियत के यक़ीन के ज़रिए मुसलमानों को मज़बूत किया और कामिल मुसलमान वह है जिसकी ज़ुबान और हाथ की नाहक़ तक्लीफ़ से तमाम लोग महफ़ूज़ रहें। किसी मुसलमान को तक्लीफ़ पहुंचाना हलाल नहीं है, अलबत्ता क़सास और बदले में जो तक्लीफ़ देना वाजिब हो जाए, उसकी और बात है।

क़ियामत और मौत के आने से पहले-पहले भले काम कर लो, क्योंकि बहुत-से लोग तुमसे आगे जा चुके हैं और तुम्हारे पीछे क़ियामत आ रही है जो तुम्हें हांक रही है। हल्के-फुल्के रहो, यानी गुनाह न करो, अगलों से जा मिलोगे, क्योंकि अगले लोग पिछलों का इन्तिज़ार कर रहे हैं।

अल्लाह के बन्दो ! अल्लाह के बन्दों और शहरों के बारे में अल्लाह से डरो। तुमसे हर चीज़ के बारे में पूछा जाएगा, यहां तक कि ज़मीन के टुकड़ों और जानवरों के बारे में भी पूछा जाएगा। अल्लाह की इताअत करो, उसकी नाफ़रमानी न करो। जब तुम्हें ख़ैर की कोई चीज़ नज़र आए तो उसे ले लो और जब शर नज़र आए तो उसे छोड़ दो और उस वक़्त को याद रखो जब तुम थोड़े थे और मक्का की सरज़मीन में तुम कमज़ोर समझे जाते थे।[1]

एक बार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया, आदमी से उसके कुंबे को उतने फ़ायदे हासिल नहीं होते, जितने कुंबे से आदमी को हासिल होते हैं, क्योंकि अगर आदमी कुंबे की मदद से अपना हाथ रोकता है, तो सिर्फ़ एक हाथ रुकता है और कुंबे वाले अपने हाथ रोक लें, तो फिर कई हाथ रुक जाते हैं और कुंबे की तरफ़ से आदमी को मुहब्बत, हिफ़ाज़त और मदद मिलती है। कभी-कभी एक आदमी दूसरे आदमी के लिए नाराज़ होता है, हालांकि वह उस दूसरे आदमी को सिर्फ़ उसके ख़ानदानी नसब की वजह से ही जानता है। मैं तुम्हें इस बारे में अल्लाह की किताब से बहुत-सी आयतें

1. तबरी, भाग 3, पृ० 457,

पढ़कर सुनाऊंगा, फिर हज़रत अली रज़ि० ने यह आयत पढ़ी—

لَوْ اَنَّ لِیْ بِکُمْ قُوَّۃً اَوْ اٰوِیْ اِلٰی رُکْنٍ شَدِیْدٍ (سورت ہود آیت ۸۰)

'क्या ख़ूब होता अगर मेरा तुम पर कुछ ज़ोर चलता या किसी मज़बूत पाए की पनाह पकड़ता।' (सूरः हूद, आयत 80)

इसके बाद हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, यह जो हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने 'रुक्ने शदीद' यानी मज़बूत पाया फ़रमाया है, इससे मुराद कुंबा है, क्योंकि हज़रत लूत अलै० का कोई कुंबा नहीं था। उस ज़ात की क़सम, जिसके अलावा कोई माबूद नहीं, हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के बाद अल्लाह ने जो नबी भी भेजा, वह अपनी क़ौम के बड़े कुंबे में होता था।

फिर हज़रत अली रज़ि० ने हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के बारे में यह आयत पढ़ी—

وَاِنَّا لَنَرٰاکَ فِیْنَا ضَعِیْفًا (سورت ہود آیت ۹۱)

'और हम तुमको अपने में कमज़ोर देख रहे हैं।' (सूरः हूद, आयत 91)

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, हज़रत शुऐब अलै० चूंकि नाबीना थे, इसलिए उन लोगों ने आपको कमज़ोरी की तरफ़ मंसूब किया।

وَلَوْلَا رَھْطُکَ لَرَجَمْنٰکَ (سورت ہود آیت ۹۱)

'और अगर तुम्हारे ख़ानदान का पास न होता, तो हम तुमको संगसार कर चुके होते।' (सूरः हूद, आयत 91)

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं! उन्हें अपने रब के जलाल का डर तो था नहीं, अलबत्ता हज़रत शुऐब अलै० के ख़ानदान का डर था।[1]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब रमज़ान शरीफ़ आता तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते और उसमें यह इर्शाद फ़रमाते, यह वह मुबारक महीना है, जिसके रोज़े को अल्लाह ने

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 250,

फ़र्ज़ किया और उसकी तरावीह को (सवाब की चीज़ बनाया, लेकिन) फ़र्ज़ नहीं किया और आदमी को यह बात कहने से बचना चाहिए कि फ़्लां जब रोज़ा रखेगा, तो मैं भी रखूंगा और जब फ़्लां रोज़ा रखना छोड़ देगा, तो मैं भी छोड़ दूंगा। ग़ौर से सुनो! रोज़ा सिर्फ़ खाने, पीने के छोड़ने का नाम नहीं है, बल्कि इन दोनों को तो छोड़ना ही है, लेकिन असल रोज़ा यह है कि आदमी झूठ, ग़लत और बेहूदा बातों को भी छोड़ दे।

तवज्जोह से सुनो! रमज़ान के महीने को उसकी जगह से आगे न ले जाओ, वहीं रहने दो, इसलिए जब तुम्हें रमज़ान का चांद नज़र आ जाए तो रोज़े शुरू कर दो और जब ईद का चांद नज़र आए तो रोज़े रखने छोड़ दो और अगर रमज़ान की 29 को ग़ुरूब के वक़्त बादल हो, तो फिर महीने की 30 की गिनती पूरी करो।

हज़रत शाबी कहते हैं, हज़रत अली रज़ि० ये तमाम बातें फ़ज्र और अस्र के बाद कहा करते।[1]

एक बार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर मौत का तज़्किरा फ़रमाया, चुनांचे इर्शाद फ़रमाया, अल्लाह के बन्दो! अल्लाह की क़सम! मौत से किसी को छुटकारा नहीं है। अगर तुम (तैयारी करके) उसके लिए ठहर जाओगे तो भी तुम्हें वह पकड़ लेगी और अगर (उसके लिए तैयारी नहीं करोगे, बल्कि) उससे भागोगे, तो भी वह तुम्हें जा पकड़ेगी, इसलिए अपनी निजात की फ़िक्र करो, निजात की फ़िक्र करो और जल्दी करो, जल्दी करो और एक चीज़ तलाश में तुम्हारे पीछे लगी हुई है जो बहुत तेज़ है और वह है क़ब्र, इसलिए क़ब्र के बचने से, उसकी अंधेरी से और उसकी वहशत से बचो।

ग़ौर से सुनो, क़ब्र या तो जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा है या जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है। ग़ौर से सुनो, क़ब्र हर दिन तीन बार

1. कंज़, भाग 4, पृ० 322,

यह एलान करती है, मैं अंधेरे का घर हूं, मैं कीड़ों का घर हूं, मैं तंहाई का घर हूं। ग़ौर से सुनो ! क़ब्र के बाद वह जगह है जो क़ब्र से भी ज़्यादा सख़्त है, वह जहन्नम की आग है जो बहुत गर्म और बहुत गहरी है, जिसके ज़ेवर (यानी सज़ा देने के आले) लोहे के हैं, जिसके निगरां फ़रिश्ते का नाम मालिक है, जिसमें अल्लाह की तरफ़ से किसी तरह की नर्मी या रहम ज़ाहिर नहीं होगा।

और तवज्जोह से सुनो, इसके बाद ऐसी जन्नत है, जिसकी चौड़ाई आसमानों और ज़मीन के बराबर है, जो मुत्तक़ियों के लिए तैयार की गई है। अल्लाह हमें और आपको मुत्तक़ियों में से बनाए और दर्दनाक अज़ाब से बचाए।[1]

हज़रत अस्बग़ बिन नुबाला भी इसी बयान को इस तरह नक़ल करते हैं कि एक दिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु मिंबर पर तशरीफ़ लाए। पहले उन्होंने अल्लाह की हम्द व सना बयान की और मौत का ज़िक्र किया और पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया और क़ब्र जो यह एलान करती है कि मैं तंहाई का घर हूं, इसके बाद रिवायत में यह है कि ग़ौर से सुनो ! क़ब्र के बाद (क़ियामत का) एक ऐसा दिन है, जिसमें बच्चे बूढ़े हो जाएंगे और बूढ़े बेहोश, और तमाम हमल वालियां (दिन पूरे होने से पहले ही) अपना हमल डाल देंगी और (ऐ मुख़ातब !) तुम्हें लोग नशे की हालत में नज़र आएंगे, हालांकि वे नशे में नहीं होंगे, लेकिन उस दिन अल्लाह का अज़ाब बहुत सख़्त होगा और एक रिवायत में इसके बाद यह है कि फिर हज़रत अली रज़ि० रोने लगे और उनके आस-पास के तमाम मुसलमान भी रोने लगे।[2]

हज़रत सालेह अजली रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक दिन हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 110
2. बिदाया, भाग 8, पृ० 6,

व सल्लम पर दरूद भेजा, फिर फ़रमाया, अल्लाह के बन्दो ! (दुन्यावी ज़िंदगी तुम्हें धोखे में न डाल दे, क्योंकि यह ऐसा घर है, जो बलाओं से घिरा हुआ है और जिसका एक दिन फ़ना हो जाना मशहूर है और जिसकी ख़ास सिफ़त बद अहदी करना है और उसमें जो कुछ है वह ज़वाल को पहुंचने वाली है और दुनिया अपनी जगह बदलती रहती है, कभी किसी के पास और कभी किसी के पास और उसमें उतरने वाले उसके शर से हरगिज़ नहीं बच सकते और दुनिया वाले ख़ूब फ़रावानी और ख़ुशियों में होते हैं और अचानक आज़माइश और धोखे में आ जाते हैं। दुनिया के ऐश व इशरत में लगना मज़म्मत के क़ाबिल काम है और उसकी फ़रावानी हमेशा नहीं रहती और दुनिया वाले ख़ुद दुनिया के लिए निशाना हैं, उन पर दुनिया अपने तीर चलाती रहती है और मौत के ज़रिए उन्हें तोड़ती रहती है।

अल्लाह के बन्दो ! तुम्हारा दुनिया का रास्ता उन लोगों से अलग नहीं है जो दुनिया से जा चुके हैं, जिनकी उम्रें तुमसे ज़्यादा लम्बी थीं और जिनकी पकड़ तुमसे ज़्यादा सख़्त थी और जिन्होंने तुमसे ज़्यादा शहर आबाद किए थे और जिनकी आबादी के निशानात बहुत ज़्यादा अर्से तक रहे थे और उनकी आवाज़ों का शोर बहुत ज़माने तक रहा था, लेकिन अब उनकी ये आवाज़ें बिल्कुल ख़ामोश और बुझ चुकी हैं और अब उनके जिस्म बोसीदा और उनके शहर ख़ाली हो चुके हैं और उनकी तमाम निशानियां मिट चुकी हैं और क़लई और चूने वाले महल, सजे हुए तख़्तों और बिछे हुए गाँव तकियों के बजाए अब उन्हें चट्टान और पत्थर मिल गए हैं, जो उनकी बग़ली क़ब्रों में रखे हुए हैं और गारों से बने हुए हैं और उनकी क़ब्रों के सामने की जगह वीरान और बे-आबाद पड़ी हुई है और मिट्टी के गारे से उन क़ब्रों पर लिपाई की गई है। इन क़ब्रों की जगह आबादी से क़रीब है, लेकिन इनमें रहने वाले बहुत दूर चले जाने वाले मुसाफ़िर हैं, उनकी क़ब्रें आबादी के दर्मियान हैं, लेकिन इन क़ब्रों वाले वहशत और तंहाई महसूस करते हैं। उनकी क़ब्रें किसी मुहल्ले में हैं, लेकिन ये क़ब्रों वाले अपने ही में मशग़ूल हैं और इन्हें

आबादी से कोई उन्स नहीं है, हालांकि ये क़ब्रों वाले एक दूसरे के पड़ोसी हैं और इनकी क़ब्रें पास-पास हैं, लेकिन इनमें पड़ोसियों वाला कोई जोड़ नहीं है और इनमें आपस में जोड़ हो भी कैसे सकता है, जबकि बोसीदगी ने इन्हें पीस रखा है और चट्टानों और गीली मिट्टी ने इन्हें खा रखा है।

पहले ये लोग ज़िंदा थे, अब मर चुके हैं और ऐश और लज़्ज़त वाली ज़िंदगी गुज़ार कर अब रेज़ा-रेज़ा हो चुके हैं। इनके मरने पर इनके दोस्तों को बहुत दुख हुआ और मिट्टी में उन्होंने बसेरा अख़्तियार कर लिया और ऐसे सफ़र पर गए हैं, जहां से वापसी नहीं। हाय अफ़सोस ! हाय अफ़सोस ! हरगिज़ ऐसा नहीं होगा। उसकी सिर्फ़ एक बात ही बात है जिसको वह कह रहा है और उनके आगे आड़ यानी आलमे बरज़ख़ है, उस दिन तक के लिए जिस दिन लोग दोबारा ज़िंदा किए जाएंगे और तुम भी एक दिन उनकी तरह क़ब्रस्तान में अकेले रहोगे और बोसीदा हो जाओगे और तुम्हें भी उस लेटने की जगह के सुपुर्द कर दिया जाएगा और यह क़ब्र का अमानत ख़ाना तुम्हें अपने में समेट लेगा।

तुम्हारा उस वक़्त क्या हाल होगा, जब तमाम काम ख़त्म हो जाएंगे और क़ब्रों के मुर्दे ज़िंदा करके खड़े कर दिए जाएंगे और जो कुछ दिलों में है, वह सब खोलकर रख दिया जाएगा और तुम्हें जलाल व दबदबे वाले बादशाह के सामने अन्दर की सारी बातें ज़ाहिर करने के लिए खड़ा कर दिया जाएगा, फिर पिछले गुनाहों के डर से दिल उड़ने लग जाएंगे और तुम्हारे ऊपर से तमाम रुकावटें और परदे हटा दिए जाएंगे और तुम्हारे तमाम ऐब और राज़ ज़ाहिर हो जाएंगे और हर इंसान को अपने किए का बदला मिलेगा। बुरे काम करने वालों को अल्लाह बुरा बदला और अच्छे काम करने वालों को अच्छा बदला देंगे। और आमालनामा सामने रख दिया जाएगा तो आप मुजरिमों को देखेंगे कि वे उस आमालनामे में जो कुछ लिखा हुआ है, उससे डर रहे होंगे और कह रहे होंगे, हाय, हमारी बदक़िस्मती ! इस आमालनामे की अजीब हालत है कि इसने लिखे बग़ैर न छोटा गुनाह छोड़ा और न बड़ा और जो कुछ उन्होंने

दुनिया में किया था, उसे वहां सब लिखा हुआ मौजूद पाएंगे और आपका रब किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा। अल्लाह हमें और आपको अपनी किताब पर अमल करने वाला और अपने दोस्तों के पीछे चलने वाला बनाए, ताकि हमें और आपको अपने फ़ज़्ल से हमेशा रहने के घर यानी जन्नत में जगह अता फ़रमाए। बेशक वह तारीफ़ के क़ाबिल बुज़ुर्गी वाला है।[1]

इब्ने जौज़ीने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के इसी बयान को तफ़सील से ज़िक्र किया है, लेकिन शुरू में इस मज़्मून का इज़ाफ़ा किया है कि हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, मैं उसी ज़ात की तारीफ़ करता हूं और उसी से मदद तलब करता हूं और उसी पर ईमान लाता हूं और उसी पर भरोसा करता हूं और इस बात की गवाही देता हूं कि अलाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) उसके बन्दे और रसूल हैं, जिन्हें अल्लाह ने हिदायत और दीने हक़ देकर भेजा, ताकि उनके ज़रिए से अल्लाह तुम्हारी तमाम बीमारियों को दूर कर दे और तुम्हें ग़फ़लत से बेदार कर दे। और यह बात जान लो कि आप लोगों को मरना है और मरने के बाद क़ियामत के दिन आप लोगों को उठाया जाएगा और आमाल पर लाकर खड़ा कर दिया जाएगा और फिर इन आमाल का बदला तुम्हें दिया जाएगा, इसलिए दुन्यवी ज़िंदगी तुम्हें धोखे में न डाल दे। फिर आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[2]

हज़रत जाफ़र बिन मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि के दादा कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु एक जनाज़े के साथ तशरीफ़ ले गए। जब उस मैयत को क़ब्र में रखा जाने लगा, तो उसके घरवाले और रिश्तेदार

1. कंज़, भाग 8, पृ० 219, मुंतख़ब, भाग 6, पृ० 324,
2. सिफ़तुस्सफ़वा, भाग 1, पृ० 124,

सब ऊंची आवाज़ से रोने लगे। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, क्या रोते हो? ग़ौर से सुनो! अल्लाह की क़सम! इन लोगों के मरने वाले ने अब क़ब्र में जाकर जो मंज़र देख लिया है, अगर ये लोग भी वह मंज़र देख लें तो ये अपने मुर्दे को भूल जाएं। मौत के फ़रिश्ते को बार-बार इन लोगों के पास आना है, यहां तक कि उनमें से एक भी बाक़ी नहीं रहेगा।

फिर (बयान के लिए) खड़े हुए और फ़रमाया, अल्लाह के बन्दो! मैं तुम्हें उस अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूं, जिसने तुम्हारे लिए मिसालें बयान कीं और तुम्हारी मौत का वक़्त मुक़र्रर किया और तुम्हारे ऐसे कान बनाए कि उनमें जो बात पहुंचती है, उसे ये कान समझ कर महफ़ूज़ कर लेते हैं और ऐसी आंखें अता फ़रमाईं कि जो कुछ परदे में है, उसे वे ज़ाहिर कर देती हैं और ऐसे दिल दिए जो इन मुश्किलों और मुसीबतों को समझते हैं, जो उनकी सूरतों की तर्कीब में उनको पेश आते हैं और उस चीज़ को भी समझते हैं, जिसने इन दिलों को आबाद किया यानी ज़िक्रे इलाही को अल्लाह ने तुम्हें बेकार नहीं पैदा किया और तुम्हें नसीहत वाली किताब यानी क़ुरआन को हटाया भी नहीं (बल्कि तुम्हें नसीहत वाली किताब अता फ़रमाई) बल्कि पूरी नेमतों से तुम्हें नवाज़ा और पूरे अतीयात तुम्हें दिए और अल्लाह ने तुम्हारा पूरी तरह अहाता और गिनती कर रखा है और ख़ुशी और नफ़ा की हालत में और नुक़्सान और रंज की हालत में आप लोग जो कुछ करते हैं, अल्लाह ने उसका बदला तैयार किया हुआ है।

अल्लाह के बन्दो! अल्लाह से डरो और दीन की तलब में और ज़्यादा कोशिश करो और ख़्वाहिशों के टुकड़े कर देनेवाली और लज़्ज़तों को तोड़ देने वाली चीज़ यानी मौत से पहले पहले नेक अमल कर लो, क्योंकि दुनिया की नेमतें हमेशा नहीं रहेंगी और उसके दर्दनाक हादसों से अम्न नहीं है। दुनिया एक धोखा है, जिसकी शक्ल बदलती रहती है और कमज़ोर-सा साया है और ऐसा सहारा है जो झुक जाता है यानी ज़रूरत के वक़्त काम नहीं आता। शुरू में यह धोखा नया नज़र

आता है, लेकिन जल्द ही पुराना होकर गुज़र जाता है और अपने पीछे चलने वाले को अपनी शहवतों में थका कर और धोखे का दूध पिला कर हलाक कर देता है।

अल्लाह के बन्दो! इबरत की चीज़ों से नसीहत पकड़ो और क़ुरआनी आयतों और नबवी हदीसों से इबरत हासिल करो और डराने वाली चीज़ों से डर जाओ और वाज़ व नसीहत की बातों से नफ़ा हासिल करो। यों समझो कि मौत ने अपने पंजे तुममें गाड़ दिए हैं और मिट्टी के घर ने तुम्हें अपने में समेट लिया है और बड़े सख़्त और हौलनाक मनज़र तुम पर अचानक आ गए हैं।

(इन मनज़रों की तफ़्सील यह है कि) सूर फूंक दिया गया है और क़ब्रों में तमाम इंसानों को उठाया जा रहा है और अपनी ज़बरदस्त क़ुदरत से तमाम इंसानों को हांक कर महशर में ला रहे हैं और हिसाब के लिए खड़ा कर रहे हैं और हर इंसान के साथ अल्लाह ने एक फ़रिश्ता लगा रखा है जो उसे महशर की तरफ़ हांक रहा है और हर इंसान के साथ एक फ़रिश्ता है, जो उसके ख़िलाफ़ उसके बुरे आमाल की गवाही दे रहा है और ज़मीन अपने रब के नूर से चमक उठी है और आमाल के हिसाब का दफ़्तर लाकर रख दिया गया और अंबिया और गवाह सब हाज़िर कर दिए गए हैं और उनके दर्मियान इंसाफ़ के साथ फ़ैसला किया जा रहा है और उन पर किसी तरह का ज़ुल्म नहीं किया जा रहा है।

उस दिन की वजह से तमाम शहर थर्रा रहे हैं और एक एलान करने वाला एलान कर रहा है और यह पहलों और पिछलों की आपसी मुलाक़ात का दिन है और अल्लाह की तरफ़ से ख़ास तजल्ली ज़ाहिर हो रही है और सूरज बे-नूर हो रहा है। जगह-जगह वहशी जानवर घबरा कर इकट्ठा हो गए हैं और छिपे हुए तमाम राज़ खुल गए हैं और शरीर लोग हलाक हो रहे हैं और इंसानों के दिल कांप रहे हैं और जहन्नम वालों की तरफ़ से हलाक कर देने वाला रौब और रुलाने वाली सज़ा उतर रही है। जहन्नम को ज़ाहिर कर दिया गया है। उसे देखने में अब कोई आड़ नहीं है। उसमें आंकड़े और शोर है और कड़क जैसी भयानक आवाज़ है।

आता है, लेकिन जल्द ही पुराना होकर गुज़र जाता है और अपने पीछे चलने वाले को अपनी शहवतों में थका कर और धोखे का दूध पिला कर हलाक कर देता है।

अल्लाह के बन्दो! इबरत की चीज़ों से नसीहत पकड़ो और क़ुरआनी आयतों और नबवी हदीसों से इबरत हासिल करो और डराने वाली चीज़ों से डर जाओ और वाज़ व नसीहत की बातों से नफ़ा हासिल करो। यों समझो कि मौत ने अपने पंजे तुममें गाड़ दिए हैं और मिट्टी के घर ने तुम्हें अपने में समेट लिया है और बड़े सख़्त और हौलनाक मनज़र तुम पर अचानक आ गए हैं।

(इन मनज़रों की तफ़्सील यह है कि) सूर फूंक दिया गया है और क़ब्रों में तमाम इंसानों को उठाया जा रहा है और अपनी ज़बरदस्त क़ुदरत से तमाम इंसानों को हांक कर महशर में ला रहे हैं और हिसाब के लिए खड़ा कर रहे हैं और हर इंसान के साथ अल्लाह ने एक फ़रिश्ता लगा रखा है जो उसे महशर की तरफ़ हांक रहा है और हर इंसान के साथ एक फ़रिश्ता है, जो उसके ख़िलाफ़ उसके बुरे आमाल की गवाही दे रहा है और ज़मीन अपने रब के नूर से चमक उठी है और आमाल के हिसाब का दफ़्तर लाकर रख दिया गया और अंबिया और गवाह सब हाज़िर कर दिए गए हैं और उनके दर्मियान इंसाफ़ के साथ फ़ैसला किया जा रहा है और उन पर किसी तरह का ज़ुल्म नहीं किया जा रहा है।

उस दिन की वजह से तमाम शहर थर्रा रहे हैं और एक एलान करने वाला एलान कर रहा है और यह पहलों और पिछलों की आपसी मुलाक़ात का दिन है और अल्लाह की तरफ़ से ख़ास तजल्ली ज़ाहिर हो रही है और सूरज बे-नूर हो रहा है। जगह-जगह वहशी जानवर घबरा कर इकट्ठा हो गए हैं और छिपे हुए तमाम राज़ खुल गए हैं और शरीर लोग हलाक हो रहे हैं और इंसानों के दिल कांप रहे हैं और जहन्नम वालों की तरफ़ से हलाक कर देने वाला रौब और रुलाने वाली सज़ा उतर रही है। जहन्नम को ज़ाहिर कर दिया गया है। उसे देखने में अब कोई आड़ नहीं है। उसमें आंकड़े और शोर है और कड़क जैसी भयानक आवाज़ है।

जहन्नम सख़्त गुस्से में है और धमकियां दे रही है और उसकी आग भड़क रही है और उसका गरम पानी उबल रहा है और उसकी गर्म हवा में और तेज़ी आ रही है और उसमें हमेशा रहने वाले का कोई ग़म और परेशानी दूर नहीं की जाएगी और उस जहन्नम में रहने वालों की हसरतें कभी ख़त्म न होंगी और उस जहन्नम की बेड़ियां कभी तोड़ी न जाएंगी और उन जहन्नमियों के साथ फ़रिश्ते हैं जो उन्हें गर्म पानी की मेहमानी की और आग में दाख़िल होने की ख़ुशख़बरी दे रहे हैं और उन्हें अल्लाह के दीदार से रोक दिया गया है और उन्हें दोस्तों से जुदा कर दिया गया है और सब जहन्नम की आग की तरफ़ चले जा रहे हैं।

अल्लाह के बन्दो ! अल्लाह से उस आदमी की तरह डरो, जिसने दब कर आजिज़ी अख़्तियार कर ली हो और (दुश्मन से) डरकर कूच कर गया हो और जिसे बुरे कामों से डराया गया हो और वह देख-भाल कर उनसे रुक गया हो और जल्दी-जल्दी तलाश करने लगा हो और भाग कर नजात हासिल कर ली हो और आख़िरत के लिए उसने नेक आमाल आगे भेज दिए हों, जहां लौटकर जाना है और नेक आमाल के तोशे से उसने मदद हासिल की हो और बदला लेने और देखने में अल्लाह काफ़ी है और झगड़ने और हुज्जत करने में अल्लाह की किताब काफ़ी है और जन्नत सवाब के लिए और जहन्नम वबाल और सज़ा के लिए काफ़ी है और मैं अपने लिए और आप लोगों के लिए अल्लाह से मग़फ़िरत तलब करता हूं।[1]

एक बार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, अम्मा बादु ! दुनिया ने पीठ फेर ली है और जुदाई का एलान कर दिया है और आख़िरत सामने से आ रही है और बुलन्दी से झांक रही है। आज घोड़े दौड़ाने का यानी अमल का मैदान है, कल तो एक दूसरे से आगे निकलना होगा।

ग़ौर से सुनो ! तुम आजकल दुन्यावी उम्मीदों के दिनों में हो, लेकिन

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 77

उनके पीछे मौत आ रही है और जिसने उम्मीद के दिनों में मौत के आने से पहले नेक आमाल में कोताही की, वह नाकाम व नामुराद हो गया।

तवज्जोह से सुनो! जैसे तुम ख़ौफ़ के वक़्त अमल करते हो, ऐसे ही दूसरे वक़्तों में भी शौक़ और रग़बत से अमल किया करो। ग़ौर से सुनो, मैंने ऐसी कोई चीज़ नहीं देखी जो जन्नत जैसी हो और फिर भी उसका तालिब सोया हुआ हो और न ही ऐसी कोई चीज़ देखी जो जहन्नम जैसी हो और फिर भी उससे भागने वाला सोता रहे।

ग़ौर से सुनो! जो हक़ से नफ़ा नहीं उठाता उसे बातिल ज़रूर नुक़्सान पहुंचाता है। जिसे हिदायत सीधे रास्ते पर न चला सकी, उसे गुमराही सीधे रास्ते से ज़रूर हटा देगी।

ग़ौर से सुनो! आप लोगों को यहां से कूच करने का और आख़िरत के सफ़र का हुक्म मिल चुका है और इस सफ़र का तोशा भी आप लोगों को बता दिया गया है।

ऐ लोगो! ग़ौर से सुनो! यह दुनिया तो ऐसा सामान है जो सामने मौजूद है और उसमें से अच्छा-बुरा हर एक खा रहा है और अल्लाह ने आख़िरत का जो वायदा फ़रमा रखा है, वह बिल्कुल सच्चा है और वहां वह बादशाह फ़ैसला करेगा, जो बड़ी क़ुदरत वाला है।

ग़ौर से सुनो! शैतान तुम्हें फ़क़ीर और मुहताज होने से डराता है और तुम्हें बेहयाई के कामों का हुक्म देता है और अल्लाह अपनी तरफ़ से मग़फ़िरत और फ़ज़्ल का वायदा फ़रमाते हैं और अल्लाह बहुत वुसअत वाले और ख़ूब जानने वाले हैं।

ऐ लोगो! अपनी मौजूदा ज़िंदगी में अच्छे अमल कर लो, अंजामेकार महफ़ूज़ रहोगे, क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमांबरदार से जन्नत का और नाफ़रमान से जहन्नम का वायदा फ़रमा रखा है। जहन्नम की आग में जहन्नमियों का चीख़ना कभी न ख़त्म होगा। उसके क़ैदी को कभी छुड़ाया न जा सकेगा और उसमें जिसकी हड्डी टूटेगी, तो कभी जुड़ न सकेगी। उसकी गर्मी बहुत सख़्त है, वह बड़ी गहरी है और उसका पानी

ख़ून और पीप है और मुझे तुम पर सबसे ज़्यादा ख़तरा दो बातों का है, एक ख़्वाहिशों के पीछे चलने का, दूसरे उम्मीदें लम्बी रखने का।[1]

और एक रिवायत में यह भी है कि ख़्वाहिशों के पीछे चलने से इंसान हक़ से हट जाता है और लम्बी उम्मीदों की वजह से आख़िरत भूल जाता है।

हज़रत ज़ियाद आराबी रहमतुल्लाहि कहते हैं, (ख़वारिज के) फ़िले के बाद और नहरवान शहर से फ़ारिग़ होने के बाद अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु कूफ़ा के मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर आंसुओं की वजह से उनके गले में फंदा लग गया और इतना रोए कि आंसुओं से दाढ़ी तर हो गई और आंसू नीचे गिरने लगे। फिर उन्होंने अपनी दाढ़ी झाड़ी तो उसके क़तरे कुछ लोगों पर जा गिरे, तो हम यह कहा करते थे, हज़रत अली रज़ि० के आंसू जिस पर गिरे हैं, उसे अल्लाह जहन्नम पर हराम कर देंगे।

फिर हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ लोगो ! उनमें से न बनो जो बग़ैर कुछ किए आख़िरत की उम्मीद रखते हैं और लम्बी उम्मीदों की वजह से तौबा को टालते रहते हैं, दुनिया के बारे में बातें तो ज़ाहिदों जैसी करते हैं, लेकिन दुनिया का काम उन लोगों की तरह करते हैं, जिनमें दुनिया की रग़बत और शौक़ हो, अगर उन्हें दुनिया मिले, तो वे सेर नहीं होते और अगर न मिले तो उनमें क़नाअत बिल्कुल नहीं है। जो नेमतें अल्लाह उन्हें दे रहा है, उनका शुक्र अदा कर नहीं सकते और फिर चाहते हैं कि नेमतें और बढ़ जाएं, दूसरों को नेक कामों का हुक्म करते हैं, लेकिन ख़ुद नहीं करते, औरों को बुरे कामों से रोकते हैं, लेकिन ख़ुद नहीं रुकते, मुहब्बत तो नेक लोगों से करते हैं, लेकिन उनके वाले अमल नहीं करते और ज़ालिमों से बुग़्ज़ रखते हैं, लेकिन ख़ुद जालिम हैं और (दुनिया के) जिन कामों पर कुछ मिलने का सिर्फ़ गुमान ही है, उनका

1 कंज़, भाग 8, प० 220, मंतख़ब, भाग 6, पृ० 324, बिदाया, भाग 8, पृ० 7

नफ़्स उनसे वह काम तो करवा लेता है और (आख़िरत के) जिन कामों पर मिलना यक़ीनी है, वह काम उनसे नहीं करवा सकता।

अगर उन्हें माल मिल जाए तो फ़िल्ने में पड़ जाते हैं, अगर बीमार हो जाएं तो ग़मगीन हो जाते हैं। अगर फ़क़ीर हो जाएं तो नाउम्मीद होकर कमज़ोर पड़ जाते हैं। वे गुनाह भी करते हैं और नेमतें भी इस्तेमाल करते हैं। आफ़ियत मिलती है तो शुक्र नहीं करते और जब कोई आज़माइश आती है तो सब्र नहीं करते। ऐसे नज़र आता है कि जैसे दूसरों को मौत से डराया गया है, उन्हें नहीं और आख़िरत के सारे वायदे और वईदें दूसरों के लिए हैं।

ऐ मौत का निशाना बनने वालो और मौत के पास गिरवी रखे जाने वालो! ऐ बीमारियों के बरतनो! ऐ ज़माने के लूटे हुए लोगो! ऐ ज़माने पर बोझ बनने वालो! ऐ ज़माने के फलो! ऐ हादसों की कलियो! ऐ दलीलों के सामने गूंगे बन जाने वालो! ऐ फ़िल्ने में डूबे हुए लोगो! ऐ वे लोगो, जिनके और इबरत की चीज़ों के दर्मियान रुकावटें हैं! मैं हक़ बात कह रहा हूं, आदमी सिर्फ़ अपने आपको पहचान कर नजात पा सकता है और आदमी अपने हाथों ही हलाक होता है। अल्लाह ने फ़रमाया—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا (سورت تحریم آیت ۶)

'ऐ ईमान वालो! तुम अपने को और अपने घरवालों को (दोज़ख़ की) उस आग से बचाओ।' (सूरः तहरीम, आयत 6)

अल्लाह हमें और आपको उन लोगों में से बनाए जो वाज़ व नसीहत सुनकर क़ुबूल कर लेते हैं और जब उनको अमल की दावत दी जाती है, तो वे उसे क़ुबूल करके अमल कर लेते हैं।[1]

हज़रत यह्या बिन यामुर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों में बयान फ़रमाया, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, ऐ लोगो! तुमसे पहले लोग सिर्फ़ गुनाहों के करने की वजह से ही हलाक

1. कंज़, भाग 8, पृ० 220, मुंतख़ब, भाग 6, पृ० 325.

हुए, उनके उलेमा और फ़ुक़हा ने उन्हें रोका नहीं, अल्लाह ने उन पर सज़ाएं नाज़िल कीं।

ग़ौर से सुनो ! नेकी का हुक्म करो और बुराई से रोको, इससे पहले कि तुम पर भी वह अज़ाब उतरे जो उन पर उतरा था और यह समझ लो कि नेकी का हुक्म करने और बुराई से रोकने से न रोज़ी कम होती है और न मौत जल्दी आती है। आसमान से तक़्दीर के फ़ैसले बारिशों के क़तरों की तरह उतरते हैं। चुनांचे हर इंसान के अह्ल व अयाल माल व जान के बारे में कम हो जाने या बढ़ जाने का जो फ़ैसला अल्लाह ने मुक़द्दर में लिखा है, वह आसमान से उतरता है।

अब जब तुम्हारे अह्ल व अयाल, माल व जान में किसी क़िस्म का नुक़्सान हो और तुम्हें दूसरों के अह्ल व अयाल माल व जान में नुक़्सान के बजाए और इज़ाफ़ा नज़र आए तो उससे तुम फ़िल्ने में न पड़ जाना। मुसलमान आदमी अगर नीचता और कमीनापन करने वाला न हो तो उसे जब भी यह नुक़्सान याद आएगा, वह आजिज़ी, इंकिसारी, दुआ और इल्तिजा का मुज़ाहरा करेगा (और यों उसे बातिनी नफ़ा होगा) और कमीने लोगों को इस पर बहुत ग़ुस्सा आएगा जैसे कि कामियाब होने वाला जुएबाज़, तीरों से जुआ खेलने में पहली बार ही ऐसी क़ामियाबी का इंतिज़ार करता है जिससे ख़ूब माल मिले और तावान वग़ैरह उसे न देना पड़े।

ऐसे ही ख़ियानत से पाक मुसलमान आदमी जब अल्लाह से दुआ करता है, तो दो अच्छाइयों में से एक की उसे उम्मीद होती है (कि या तो जो मांगा है, वह दुनिया में मिल जाएगा और अगर वह न मिला तो फिर इस दुआ के दुनिया में क़ुबूल न होने के बदले में आख़िरत में उसे सवाब मिलेगा) जो अल्लाह के पास है, वह उसके लिए बेहतर है या फिर अल्लाह उसे माल देंगे और उसके अह्ल व अयाल में ख़ूब बढ़ोत्तरी होगी और वह ख़ूब मालदार होगा। खेती दो तरह की है, (एक दुनिया की, दूसरी आख़िरत की) दुनिया की खेती माल और बेटे हैं और आख़िरत की खेती नेक आमाल हैं और कभी अल्लाह कुछ लोगों को

दोनों क़िस्म की खेतियां अता फ़रमाते हैं।

हज़रत सुफ़ियान बिन उऐना कहते हैं, हज़रत अली बिन तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु के अलावा और कौन ऐसा है जो यह बात इतने अच्छे तरीक़े से कह सके।[1]

अल-बिदाया की रिवायत इसी जैसी है और इसके आख़िर में यह है, या तो अल्लाह उसकी दुआ दुनिया में पूरी कर देंगे और वह बहुत ज़्यादा माल और औलाद वाला हो जाएगा। ख़ानदानी शराफ़त और दीन की नेमत भी उसे हासिल होगी या फिर उसे इस दुआ का बदला आख़िरत में देंगे और आख़िरत (दुनिया से हज़ार दर्जा) बेहतर है और हमेशा रहने वाली है। खेतियां दो हैं, दुनिया की खेती माल और तक़्वा है (ज़ाहिर में माल और औलाद है) और आख़िरत की खेती बाक़ी रहने वाले नेक और भले काम हैं।[2]

हज़रत अबू वाइल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कूफ़ा में लोगों में बयान फ़रमाया। मैंने उन्हें इस बयान में यह कहते हुए सुना, ऐ लोगो! जो जान-बूझकर मुहताज बनता है, वह मुहताज हो ही जाता है और जिसकी उम्र बहुत ज़्यादा हो जाती है, वह अलग-अलग कमज़ोरियों और बीमारियों का शिकार हो जाता है, जो बला और आज़माइश के लिए तैयारी नहीं करता, जब उस पर आज़माइश आती है तो वह सब्र नहीं कर सकता। जो किसी चीज़ पर क़ाबू पा लेता है, वह अपने को दूसरों पर तर्जीह देता है। जो किसी से मश्विरा नहीं करता, उसे शर्मिन्दगी उठानी पड़ती है।

और इन बातों के बाद यह फ़रमाया था, बहुत जल्द ऐसा ज़माना आएगा कि इस्लाम का सिर्फ़ नाम और क़ुरआन का सिर्फ़ ज़ाहिरी निशान बाक़ी रह जाएगा और यह भी फ़रमाया था, ग़ौर से सुनो! आदमी को सीखने में हया नहीं करनी चाहिए और जिस आदमी से ऐसी

1. कंज़, भाग 8, पृ० 220, मुंतख़ब, भाग 6, पृ० 326,
2. बिदाया, भाग 8, पृ० 8

बात पूछी जाए जिसे वह नहीं जानता तो उसे यह कहने में हया नहीं करनी चाहिए कि मैं नहीं जानता।

तुम्हारी मस्जिदें वैसे तो उस दिन आबाद होंगी, लेकिन तुम्हारे दिल और जिस्म उजड़े हुए होंगे, हिदायत से ख़ाली होंगे, आसमान के साया तले रहने वाले तमाम इंसानों में सबसे बुरे तुम्हारे फ़ुक़हा होंगे। उनमें से ही फ़ित्ना ज़ाहिर होगा और उन्हीं में लौटकर वापस आएगा। इस पर एक आदमी ने खड़े होकर कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! ऐसा कब होगा? हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, जब इल्म तुम्हारे घटिया लोगों में होगा और तुम्हारे सरदारों में ज़िना और बेहयाई आम होगी और बादशाही तुम्हारे छोटे लोगों में होगी, (जिन्हें न तजुर्बा होगा, न समझ होगी) उस वक़्त क़ियामत क़ायम होगी।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु एक दिन लोगों में बयान के लिए खड़े हुए, इर्शाद फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जो मख़्लूक़ को पैदा करने वाला (रात में से) फाड़ कर सुबह को निकालने वाला, मुर्दों को ज़िंदा करने वाला और क़ब्रों में जो दफ़न हैं, उन्हें क़ियामत के दिन उठाने वाला है और मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और इस बात की गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) उसके बन्दे और रसूल हैं और मैं तुम्हें अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूं।

बन्दा जिन आमाल को अल्लाह के क़ुर्ब के लिए वसीला बना सकता है, उनमें सबसे अफ़ज़ल ईमान और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह है और कलिमा-ए-इख़्लास है, इसलिए कि वह ऐन इंसानी फ़ितरत के मुताबिक़ है और नमाज़ क़ायम करना है, क्योंकि वह ही असल मज़हब है और ज़कात देना है, क्योंकि वह अल्लाह के दीनी फ़राइज़ में से है और रमज़ान के रोज़े रखना है, क्योंकि यह अल्लाह के अज़ाब से ढाल है और अल्लाह के घर का हज है, क्योंकि यह फ़क़्र के दूर करने और

1. कंज़, भाग 8, पृ० 218,

गुनाहों के हटाने की वजह है और रिश्तों को जोड़ना है, क्योंकि इससे माल बढ़ता है और उम्र लम्बी होती है और घरवालों की मुहब्बत (दूसरों के दिलों में) बढ़ती है और छुपकर सदक़ा करना है, क्योंकि इससे ख़ताएं मिट जाती हैं और रब का ग़ुस्सा ठंडा पड़ जाता है और लोगों के साथ नेकी और भलाई करना है, क्योंकि यह बुरी मौत और हौलनाक जगहों से बचाता है और अल्लाह का ज़िक्र ख़ूब करो, क्योंकि अल्लाह का ज़िक्र सबसे अच्छा ज़िक्र है और अल्लाह ने मुत्तक़ी लोगों से जिन चीज़ों का वायदा फ़रमाया है, उन चीज़ों का अपने अन्दर शौक़ पैदा करो, क्योंकि अल्लाह का वायदा सबसे सच्चा वायदा है और अपने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत की इक़्तिदा करो, क्योंकि उनकी सीरत सबसे अफ़ज़ल सीरत है और उनकी सुन्नतों पर चलो, क्योंकि उनकी सुन्नतें सबसे अफ़ज़ल तरीक़ा-ए-ज़िंदगी हैं और अल्लाह की किताब सीखो क्योंकि वह सबसे अफ़ज़ल कलाम है और दीन की समझ हासिल करो, क्योंकि यही दिलों की बहार है और अल्लाह के नूर से शिफ़ा हासिल करो, क्योंकि यह दिलों की तमाम बीमारियों की शिफ़ा है। इसकी तिलावत अच्छी तरह करो, क्योंकि (इसके अन्दर) सबसे उम्दा क़िस्से हैं, जब उसे तुम्हारे सामने पढ़ा जाए, तो उसे कान लगाकर सुनो और ख़ामोश रहो, ताकि तुम पर अल्लाह की रहमत हो और जब तुम्हें उसके इल्म के हासिल करने की तौफ़ीक़ मिल गई है, तो इस इल्म पर अमल करो ताकि तुम्हें हिदायत कामिल दर्जे की मिल जाए, क्योंकि जो आलिम अपने इल्म के ख़िलाफ़ करता है वह हक़ के रास्ते से हटे हुए उस जाहिल जैसा है जो अपनी जिहालत की वजह से दुरुस्त नहीं हो सका, बल्कि मेरा ख़्याल तो यह है कि जो आलिम अपने इल्म को छोड़ बैठा है, उसके ख़िलाफ़ हुज्जत ज़्यादा बड़ी होगी और उस पर हसरत ज़्यादा अर्से तक रहेगी और उसके मुक़ाबले में जिहालत में हैरान व परेशान रहने वाले जाहिल के ख़िलाफ़ हुज्जत छोटी और उस पर हसरत कम होगी। वैसे तो दोनों गुमराह हैं और दोनों हलाक होंगे और तरद्दुद में न पड़ो, वरना तुम शक में पड़ जाओगे और

अगर तुम शक में पड़ गए तो एक दिन काफ़िर बन जाओगे और अपने लिए आसानी और रुख़्सत वाला रास्ता अख़्तियार न करो, वरना तुम ग़फ़लत में पड़ जाओगे और अगर तुम हक़ से ग़फ़लत बरतने लग गए तो फिर ख़सारे वाले हो जाओगे।

ग़ौर से सुनो, यह समझदारी की बात है कि तुम भरोसा करो, लेकिन इतना भरोसा न करो कि धोखा खा लो और तुममें से अपने आपका सबसे ज़्यादा भला चाहने वाला वह है जो अपने रब की सबसे ज़्यादा इताअत करने वाला है और तुममें से अपने आपको सबसे ज़्यादा धोखा देने वाला वह है जो अपने रब की सबसे ज़्यादा नाफ़रमानी करने वाला है जो अल्लाह की इताअत करेगा, वह अम्न में रहेगा और ख़ुश रहेगा और जो अल्लाह की नाफ़रमानी करेगा, वह डरता रहेगा और उसे शर्मिन्दगी उठानी पड़ेगी।

फिर तुम अल्लाह से यक़ीन मांगो और उसके सामने आफ़ियत का शौक़ ज़ाहिर करो। दिल की सबसे बेहतर दायमी कैफ़ियत यक़ीन है। फ़र्ज़ सबसे अफ़ज़ल अमल है और जो नए काम अपने पास से गढ़े जाते हैं, वे सबसे बड़े हैं। हर नई बात बिदअत है और हर नई बात गढ़ने वाला बिदअती है। जिसने कोई नई बात गढ़ी, उसने दीन बर्बाद कर दिया। जब कोई बिदअती नई बिदअत निकालता है, तो वह उसकी वजह से कोई न कोई सुन्नत ज़रूर छोड़ता है। असल नुक़्सान वाला वह है जिसका दीनी नुक़्सान हुआ हो और नुक़्सान वाला वह है जो अपने आपको घाटे में डाल दे। दिखावा (रियाकारी) शिर्क में से है और इख़्लास अमल व ईमान का हिस्सा है। खेल-कूद की मज्लिसें क़ुरआन भुला देती हैं और उनमें शैतान शरीक होता है और ये मज्लिसें हर गुमराही को दावत देती हैं और औरतों के साथ ज़्यादा बैठने से दिल टेढ़े हो जाते हैं और ऐसे आदमी की तरफ़ सब की निगाहें उठती हैं।

औरतें शैतान के जाल हैं। अल्लाह के साथ सच्चाई का मामला करो, क्योंकि अल्लाह सच्चे के साथ है और झूठ से बचो, क्योंकि झूठ ईमान का मुख़ालिफ़ अमल है। ग़ौर से सुनो ! सच निजात और इज़्ज़त

की ऊंची जगह पर है और झूठ हलाकत और बर्बादी की ऊंची जगह पर है। ग़ौर से सुनो ! हक़ बात कहो, इससे तुम पहचाने जाओगे और हक़ पर अमल करो, इससे तुम हक़ वालों में से हो जाओगे। जिसने तुम्हारे पास अमानत रखवाई है, उसे उसकी अमानत वापस करो।

जो रिश्तेदार तुमसे रिश्ते काटे, तुम उसके साथ रिश्ते जोड़ो और जो तुम्हें न दे, बल्कि महरूम करे, तुम उसके साथ एहसान करो। जब तुम किसी से समझौता करो तो उसे पूरा करो। जब फ़ैसला करो तो अदल व इंसाफ़ वाला करो। बाप-दादों के कारनामों पर एक दूसरे पर फ़ख्र न करो और एक दूसरे को बुरे लक़ब से न पुकारो। आपस में हद से ज़्यादा मज़ाक़ न करो और एक दूसरे को ग़ुस्सा न दिलाओ और कमज़ोर, मज़्लूम, मक़रूज़, मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह, मुसाफ़िर और मांगने वाले की मदद करो और ग़ुलामों को आज़ादी दिलवाने में मदद करो और बेवा और यतीम पर रहम करो और सलाम फैलाओ और जो तुम्हें सलाम करे, तुम उसे वैसा ही जवाब दो या उससे अच्छा जवाब दो।

नेकी और तक़्वा के कामों में एक दूसरे की मदद करो, गुनाह और ज़्यादती के कामों में एक दूसरे की मदद न करो और अल्लाह से डरो, क्योंकि अल्लाह सख़्त सज़ा वाला है और मेहमान का इक्राम करो। पड़ोसी से अच्छा सुलूक करो। बीमारों की बीमारपुर्सी करो और जनाज़े के साथ जाओ। अल्लाह के बन्दो ! भाई-भाई बनकर रहो। अम्मा बादु

दुनिया मुंह फेरकर जा रही है और अपने रुख़्सत होने का एलान कर रही है और आख़िरत साया डाल चुकी है और झांक रही है आज दौड़ाने के लिए घोड़े तैयार करने का दिन है, कल क़ियामत को एक दूसरे से आगे बढ़ना होगा और आगे बढ़कर जन्नत में जाना होगा। अगर आगे बढ़कर जन्नत में न जा सका, तो फिर उसका अंजाम जहन्नम की आग है।

तवज्जोह से सुनो ! तुम्हें इन दिनों अमल करने की मोहलत मिली हुई है। इन दिनों के बाद मौत है, जो बहुत तेज़ी से आ रही है। जो मोहलत के दिनों में मौत के आने से पहले अपने हर अमल को अल्लाह के लिए ख़ालिस करेगा, वह अपने अमल को अच्छा और ख़ूबसूरत बना

लेगा और अपनी उम्मीद को पाएगा और जिसने इसमें कोताही की, उसके अमल घाटे वाले हो जाएंगे। उसकी उम्मीद पूरी न होगी, बल्कि उम्मीद की वजह से उसका नुक़्सान होगा, इसलिए अल्लाह के सवाब के शौक़ में उसके अज़ाब से डरकर अमल करो।

अगर कभी नेक आमाल की रग़बत और शौक़ का तुम पर ग़लबा हो तो अल्लाह का शुक्र करो और इस शौक़ के साथ ख़ौफ़ पैदा करने की कोशिश करो और अगर कभी अल्लाह के ख़ौफ़ का ग़लबा हो, तो अल्लाह का ज़िक्र करो और उस ख़ौफ़ के साथ कुछ शौक़ मिलाने की कोशिश करो, क्योंकि अल्लाह ने मुसलमानों को बताया है कि अच्छे अमल पर अच्छा बदला मिलेगा और जो शुक्र करेगा, अल्लाह उसकी नेमत बढ़ाएगा।

मैंने जन्नत जैसी कोई चीज़ नहीं देखी कि जिसकी तलब वाला सो रहा हो और जहन्नम की आग जैसी कोई चीज़ नहीं देखी कि जिससे भागने वाला सो रहा हो और मैंने उससे ज़्यादा कमाने वाला नहीं देखा जो उस दिन के लिए नेक अमल कमाता है, जिस दिन के लिए अमल के ज़ख़ीरे जमा किए जाते हैं और जिस दिन दिलों के तमाम भेद खुल जाएंगे और तमाम बुरी चीज़ें उस दिन जमा हो जाएंगी। जिसे हक़ से कोई फ़ायदा न हुआ, उसे बातिल नुक़्सान पहुंचाएगा। जिसे हिदायत सीधे रास्ते पर न चला सकी, उसे गुमराही सीधे रास्ते से हटा देगी। जिसे यक़ीन से कोई फ़ायदा न हुआ, उसे शक नुक़्सान पहुंचाएगा और जिसे उसकी मौजूदा चीज़ नफ़ा न पहुंचा सकी उसे उसकी दूर वाली ग़ैर हाज़िर चीज़ बिल्कुल नफ़ा नहीं पहुंचा सकेगी। यानी जो सीधे-सीधे मुझसे बयान सुनकर फ़ायदा न उठा सके, वह मेरे न सुने हुए बयानों से तो बिल्कुल फ़ायदा नहीं उठा सकेगा। तुम्हें कूच करके सफ़र में जाने का हुक्म दिया जा चुका है और सफ़र में काम आने वाला तोशा भी तुम्हें बताया जा चुका है।

तवज्जोह से सुनो! मुझे आप लोगों पर सबसे ज़्यादा दो चीज़ों का डर है। एक लम्बी उम्मीदें, दूसरे ख़्वाहिशों पर चलना। लम्बी उम्मीदों की वजह से इंसान आख़िरत भूल जाता है और ख़्वाहिशात पर चलने

की वजह से हक़ से दूर हो जाता है।

तवज्जोह से सुनो! दुनिया पीठ फेरकर जा रही है और आख़िरत सामने से आ रही है और दोनों की तलब रखने वाले और चाहने वाले हैं। अगर तुमसे हो सके तो आख़िरत वालों में से बनो और दुनिया वालों में से न बनो, क्योंकि आज अमल करने का मौक़ा है, लेकिन आज हिसाब नहीं है, कल हिसाब होगा, लेकिन अमल का मौक़ा नहीं होगा।[1]

हज़रत अबू ख़ैरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ रहा, यहां तक कि वह कूफ़ा पहुंच गए और मिंबर पर तशरीफ़ लाए। पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, तुम उस वक़्त क्या करोगे, जब तुम्हारे नबी की आल पर तुम्हारे सामने फ़ौज हमलावर होगी? कूफ़ा वालों ने कहा, हम अल्लाह को उनके बारे में ज़बरदस्त बहादुरी दिखाएंगे।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, तुम्हारे सामने उन पर फ़ौज हमलावर होगी और तुम मुक़ाबले पर आकर उनको ख़ुद क़त्ल करोगे। फिर यह शेर पढ़ने लगे—

هُمْ اَوْرَدُوْهُ بِالْغُرُوْرِ وَغَرَّدُوْا   اَجِيْبُوْا دُعَاهُ لَا نَجَاةَ وَلَا عُذْرَا

'वे उसे धोखे से ले आएंगे और फिर ऊंची आवाज़ से यह गाएंगे कि उस (के मुख़ालिफ़ यानी यज़ीद) की दावत (बैअत) क़ुबूल कर लो। उसे क़ुबूल किए बग़ैर तुम्हें नजात नहीं मिलेगी और उसमें तुम्हारा कोई उज़्र क़ुबूल नहीं किया जाएगा।'[2]

हज़रत इब्राहीम तैमी रहमतुल्लाहि अलैहि के वालिद (हज़रत यज़ीद बिन शरीक रहमतुल्लाहि अलैहि) कहते हैं, हममें हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, जो यह कहता है कि हमारे पास अल्लाह की किताब और इस सहीफ़े के अलावा कुछ और लिखा हुआ है, जिसे हम पढ़ते रहते हैं, तो वह बिल्कुल ग़लत कहता है और उस सहीफ़ें

---

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 307
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 191,

में ज़कात और दियत के ऊंटों की उम्र और ज़ख़्मों के अलग-अलग हुक्मों के बारे में लिखा हुआ है और उस सहीफ़े में यह भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, मदीना का हरम अयर पहाड़ के सौर पहाड़ तक है। यह सारा इलाक़ा एहतिराम के क़ाबिल है, इसलिए जो इस इलाक़े में ख़ुद नई चीज़ ईजाद करे या नई चीज़ ईजाद करने वालों को ठिकाना दे तो उस पर अल्लाह, फ़रिश्तों और तमाम लोगों की लानत होगी और अल्लाह क़ियामत के दिन उसके किसी फ़र्ज़ और नफ़्ल अमल को क़ुबूल नहीं फ़रमाएंगे। और जो अपने बाप के अलावा किसी और की तरफ़ अपने नसब की निस्बत करेगा और जो गुलाम अपने आक़ा के अलावा किसी और के गुलाम होने का दावा करेगा, तो इन दोनों पर अल्लाह, फ़रिश्तों और तमाम लोगों की लानत होगी और क़ियामत के दिन उनके किसी फ़र्ज़ और नफ़्ल अमल को क़ुबूल नहीं फ़रमाएंगे।

तमाम मुसलमानों की ज़िम्मेदारी एक है, जिसके लिए कम दर्जे का मुसलमान भी सई करेगा (यानी मामूली दर्जे का मुसलमान भी किसी काफ़िर या दुश्मन के आदमी को अमान दे दे, तो अब उसे तमाम मुसलमानों की तरफ़ से अमान मिल जाएगी।)[1]

हज़रत इब्राहीम नख़ई रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अलक़मा बिन क़ैस रहमतुल्लाहि अलैहि ने उस मिंबर पर हाथ मारकर कहा, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस मिंबर पर हममें बयान किया, पहले उन्होंने अल्लाह की हम्द व सना बयान की और कुछ देर अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात का तज़्किरा किया, फिर फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद तमाम लोगों में सबसे बेहतर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, फिर हमने उनके बाद बहुत से नए काम किए हैं, जिनका अल्लाह ही फ़ैसला करेगा।[2]

1. मुस्नद अहमद, भाग 1, पृ० 81,
2. अहमद, भाग 1, पृ० 127

हज़रत अबू जुहैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु मिंबर पर तश्रीफ़ फ़रमा हुए, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजा, फिर फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० के बाद इस उम्मत में सबसे बेहतरीन आदमी हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, फिर नम्बर दो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं और अल्लाह जहां चाहते हैं, ख़ैर रख देते हैं।[1]

मुस्नद अहमद में हज़रत वह्ब सुवाई रज़ियल्लाहु अन्हु से उसी जैसी रिवायत ज़िक्र की गई है, अलबत्ता उसमें यह मज़्मून नहीं है कि फिर हमने बहुत-से नए काम किए और उसमें हज़रत अली रज़ि० का यह फ़रमान है कि हम इस बात को नामुम्किन नहीं समझते थे कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ुबान पर फ़रिश्ता बोलता है।

हज़रत अलक़मा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हम लोगों में बयान फ़रमाया, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, मुझे यह ख़बर पहुंची है कि कुछ लोग मुझे हज़रत अबूबक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा पर फ़ज़ीलत देते हैं। अगर मैं इस काम से लोगों को मना कर चुका होता तो आज मैं उस पर ज़रूर सज़ा देता और रोकने से पहले सज़ा देना मुझे पसन्द नहीं। बहरहाल अब सब सुन लें कि आगे मेरे इस बयान के बाद जो भी इस बारे में ज़रा-सी भी बात करेगा, वह मेरे नज़दीक बुहतान बांधने वाला होगा, उसे वही सज़ा मिलेगी जो बुहतान बांधने वाले की होती है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद लोगों में सबसे बेहतरीन हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। फिर हमने इन हज़रात के बाद बहुत-से नए काम किए हैं। अल्लाह इनके बारे में जो चाहेंगे, फ़ैसला करेंगे।[2]

हज़रत ज़ैद बिन वह्ब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत सुवैद

1. अहमद, भाग 1, पृ० 106
2. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 446,

बिन ग़फ़ला हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं कुछ लोगों के पास से गुज़रा जो हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की शान में नामुनासिब बातें कह रहे थे। यह सुनकर हज़रत अली रज़ि० उठे और मिंबर पर तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसने दाने को (ज़मीन में जाने के बाद) फाड़ा और जान को पैदा किया। इन दोनों हज़रात से वही मुहब्बत करेगा जो मोमिन और फ़ज़्ल व कमाल का मालिक होगा और उनसे बुग़ज़ सिर्फ़ बद-बख़्त और बे-दीन ही रखेगा। हज़रात शैख़ेन की मुहब्बत अल्लाह के कुर्ब हासिल होने का ज़रिया है और इन हज़रात से बुग़ज़ व नफ़रत बे-दीनी है। लोगों को क्या हुआ कि वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दो भाइयों, दो वज़ीरों, दो ख़ास साथियों, कुरैश के दो सरदारों और मुसलमानों के दो रूहानी बापों का नामुनासिब कलिमों से ज़िक्र करते हैं। जो भी इन लोगों का ज़िक्र बुराई से करेगा, मैं उससे बरी हूं और मैं उसे इस वजह से सज़ा दूंगा।[1]

हज़रत अली रज़ि० का यह बयान अकाबिर की वजह से नाराज़ होने के बाब में पूरी तफ़्सील से गुज़र चुका है।

हज़रत अली बिन हुसैन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु सिफ़्फ़ीन की लड़ाई से वापस आए, तो उनसे बनू हाशिम के एक नवजवान ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैंने आपको जुमा के ख़ुत्बे में यह कहते हुए सुना, ऐ अल्लाह ! तूने जिस अमल के ज़रिए से ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन की इस्लाह फ़रमाई, उसी के ज़रिए से हमारी भी इस्लाह फ़रमा, तो यह ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन कौन हैं।

इस पर हज़रत अली रज़ि० की दोनों आंखें डबडबा आईं और फ़रमाया, ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं, जो कि हिदायत के इमाम, इस्लाम के बड़े

1. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 423,

ज़बरदस्त आलिम हैं, जिनसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद हिदायत हासिल की जाती है, जो इन दोनों की पैरवी करेगा, उसे सीधे रास्ते की हिदायत मिलेगी और जो इन दोनों के पीछे चलेगा वह रुश्द वाला हो जाएगा, जो इन दोनों को मज़बूती से पकड़ेगा, वह अल्लाह की जमाअत में शामिल हो जाएगा और अल्लाह की जमाअत वाले ही फ़लाह (कामियाबी) पाने वाले हैं।[1]

बनू तमीम के एक बड़े मियां कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार हममें बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, लोगों पर ऐसा ज़माना आएगा जिसमें लोग एक दूसरे को काट खाएंगे और मालदार अपने माल को रोक कर रखेगा, बिल्कुल ख़र्च नहीं करेगा, हालांकि उसे इसका हुक्म नहीं दिया गया था (बल्कि उसे तो ज़रूरत से ज़्यादा सारा माल दूसरों पर ख़र्च करने का हुक्म दिया गया था) और अल्लाह ने फ़रमाया है—

وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ (سورت بقرہ آیت ۲۳۷)

'और आपस में एहसान करने से ग़फ़लत मत करो।'

(सूरः बक़रः, आयत 237)

बुरे लोग ज़ोर पर होंगे, ग़ालिब आ जाएंगे, नेक लोग बिल्कुल दब जाएंगे और मजबूर लोगों से ख़रीद व फ़रोख़्त की जाएगी। (या तो उन्हें ख़रीद व फ़रोख़्त पर किसी तरह मजबूर किया जाएगा या वे क़र्ज़ें वग़ैरह से मजबूर होकर अपना सामान वग़ैरह सस्ते दामों में बेचेंगे), हालांकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मजबूर इंसान से इस तरह ख़रीदने से और धोखा की ख़रीद व फ़रोख़्त से और पकने से पहले फल बेच देने से मना फ़रमाया है।[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत उबैद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ ईदुल अज़्हा की नमाज़ में शरीक हुआ। हज़रत

1. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 424
2. अहमद, भाग 1, पृ० 116,

अली रज़ि० ने ख़ुत्बे से पहले अज़ान और इक़ामत के बग़ैर ईद की नमाज़ पढ़ाई, फिर ख़ुत्बा दिया, उसमें इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुम्हें तीन दिन के बाद क़ुरबानी का गोश्त खाने से मना फ़रमाया है, इसलिए तुम लोग तीन दिन (तो गोश्त खाओ, उस) के बाद न खाओ। (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहले तो मना फ़रमाया था, लेकिन बाद में तीन दिन के बाद भी खाने की इजाज़त दे दी थी।)[1]

हज़रत रिबई बिन हिराश रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बयान में यह कहते हुए सुना कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरे बारे में झूठ न बोलो, क्योंकि जो मेरे बारे में झूठ बोलेगा, वह जहन्नम की आग में दाख़िल होगा।[2]

हज़रत अबू अब्दुर्रहमान सुलमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया, इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो! अपने ग़ुलाम और बांदियों पर शरई हदें क़ायम करो, चाहे वे शादीशुदा हों या ग़ैर शादी शुदा, क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक बांदी से ज़िना का जुर्म हो गया था, तो हुज़ूर सल्ल० ने मुझे हुक्म दिया कि मैं उस पर शरई हद क़ायम करूं। मैं उसके पास गया तो मैंने देखा कि उसके यहां कुछ देर पहले बच्चा पैदा हुआ है, तो मुझे डर हुआ कि अगर मैं उसे कोड़े मारूंगा तो वह मर जाएगी। मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर यह बात अर्ज़ की। आपने फ़रमाया, तुमने अच्छा किया।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सब्अ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हम में बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसने दाने को फाड़ा, और जान को पैदा किया। मेरी यह

---

1. अहमद, भाग 1, पृ० 141,
2. अहमद, भाग 1, पृ० 150
3. अहमद, भाग 1, पृ० 156,

दाढ़ी सर के ख़ून से ज़रूर रंगी होगी यानी मुझे ज़रूर क़त्ल किया जाएगा।

इस पर लोगों ने कहा, आप हमें बताएं कि वह (आपको क़त्ल करने वाला) आदमी कौन है? अल्लाह की क़सम, हम उसके बारे में ख़ानदान को तबाह कर देंगे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैं तुम्हें अल्लाह का वास्ता देकर कहता हूं कि मेरे क़ातिल के अलावा कोई और हरगिज़ क़त्ल न हो। लोगों ने कहा, अगर आपको यक़ीन है कि बहुत जल्द आपको क़त्ल कर दिया जाएगा, तो आप किसी को अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमा दें। फ़रमाया, नहीं, बल्कि, मैं तो तुम्हें उसी के सुपुर्द करता हूं, जिसके सुपुर्द हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम करके गए थे, (यानी हुज़ूर सल्ल० ने अपने बाद किसी को ख़लीफ़ा मुक़र्रर नहीं किया था, बल्कि अल्लाह के हवाले किया था, मैं भी ऐसे ही करता हूं।)[1]

हज़रत अता रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अनहु ने बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो! उस ज़ात की क़सम, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं! मैंने तुम्हारे माल में से उस शीशी के अलावा और कुछ नहीं लिया और अपने कुरते की आस्तीन से ख़ुश्बू की एक शीशी निकालकर फ़रमाया, यह एक गांव के चौधरी ने मुझे हदिया की है।[2]

हज़रत उमैर बिन अब्दुल मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कूफ़ा के मिंबर पर हम लोगों में बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, अगर मैं ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से न पूछता, तो आप मुझे ख़ुद बता देते और अगर मैं आपसे ख़ैर के बारे में पूछता तो आप उसके बारे में बताते। आपने अपने रब की तरफ़ से मुझे यह हदीस सुनाई है कि अल्लाह फ़रमाते हैं, मेरे अपने

---

1. अहमद, भाग 1, पृ० 156,
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 54,

दाढ़ी सर के ख़ून से ज़रूर रंगी होगी यानी मुझे ज़रूर क़त्ल किया जाएगा।

इस पर लोगों ने कहा, आप हमें बताएं कि वह (आपको क़त्ल करने वाला) आदमी कौन है? अल्लाह की क़सम, हम उसके बारे में ख़ानदान को तबाह कर देंगे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैं तुम्हें अल्लाह का वास्ता देकर कहता हूं कि मेरे क़ातिल के अलावा कोई और हरगिज़ क़त्ल न हो। लोगों ने कहा, अगर आपको यक़ीन है कि बहुत जल्द आपको क़त्ल कर दिया जाएगा, तो आप किसी को अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमा दें। फ़रमाया, नहीं, बल्कि, मैं तो तुम्हें उसी के सुपुर्द करता हूं, जिसके सुपुर्द हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम करके गए थे, (यानी हुज़ूर सल्ल० ने अपने बाद किसी को ख़लीफ़ा मुक़र्रर नहीं किया था, बल्कि अल्लाह के हवाले किया था, मैं भी ऐसे ही करता हूं।)[1]

हज़रत अता रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अनहु ने बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो! उस ज़ात की क़सम, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं! मैंने तुम्हारे माल में से उस शीशी के अलावा और कुछ नहीं लिया और अपने कुरते की आस्तीन से ख़ुश्बू की एक शीशी निकालकर फ़रमाया, यह एक गांव के चौधरी ने मुझे हदिया की है।[2]

हज़रत उमैर बिन अब्दुल मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कूफ़ा के मिंबर पर हम लोगों में बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, अगर मैं ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से न पूछता, तो आप मुझे ख़ुद बता देते और अगर मैं आपसे ख़ैर के बारे में पूछता तो आप उसके बारे में बताते। आपने अपने रब की तरफ़ से मुझे यह हदीस सुनाई है कि अल्लाह फ़रमाते हैं, मेरे अपने

1. अहमद, भाग 1, पृ० 156,
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 54,

अर्श के ऊपर बुलन्द होने की क़सम ! जिस बस्ती वाले और जिस घर वाले और जंगल में अकेले रहने वाले सब मेरी नाफ़रमानी पर हों, जो कि मुझे नापसन्द है, फिर ये उसे छोड़कर मेरी इताअत अख़्तियार कर लें, जो मुझे पसन्द है, तो मेरा अज़ाब जो उन्हें नापसन्द है, उनसे हटा कर अपनी रहमत को उनकी तरफ़ मुतवज्जह कर दूंगा जो उन्हें पसन्द है और जिस बस्ती वाले और जिस घर वाले और जंगल में अकेले रहने वाले सब मेरी इताअत पर हों, जो मुझे पसन्द है, वे उसे छोड़कर मेरी नाफ़रमानी अख़्तियार कर लें, जो मुझे नापसन्द है तो मेरी रहमत, जो उन्हें पसन्द है, वह उनसे हटाकर अपना ग़ुस्सा उनकी तरफ़ मुतवज्जह कर दूंगा जो उन्हें नापसन्द है।[1]

अमीरुल मोमिनीन हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अनहुमा के बयानात

हज़रत हुबैरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु का इंतिक़ाल हो गया तो हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा खड़े होकर मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और फ़रमाया, ऐ लोगो ! आज रात ऐसी हस्ती दुनिया से उठा ली गई है जिनसे पहले लोग आगे नहीं जा सके और जिन्हें पिछले लोग पा नहीं सकेंगे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हें किसी जगह भेजते तो उन्हें दाईं तरफ़ से हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम और बाईं तरफ़ से हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम अपने घेरे में ले लेते और जब तक अल्लाह उन्हें फ़त्ह न देते, ये वापस न आते। यह सिर्फ़ सात सौ दिरहम छोड़कर गए हैं। आप उससे एक ख़ादिम ख़रीदना चाहते थे। आज सत्ताईस रमज़ान की रात में उनकी रूह क़ब्ज़ की गई है। उसी रात में हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम को आसमानों की तरफ़ उठाया गया।

एक रिवायत में है, वह सोना-चांदी कुछ नहीं छोड़कर गए, सिर्फ़

1. कंज़, भाग 8, पृ० 203,

सात सौ दिरहम छोड़कर गए हैं जो उनके बैतुल माल में से मिलने वाले वज़ीफ़ा में से बचे हैं। इस रिवायत में इससे आगे नहीं है।[1]

जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हो गए, तो हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने खड़े होकर बयान फ़रमाया, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, अम्मा बादु, आज रात तुमने एक आदमी को क़त्ल कर दिया है, इसी रात में क़ुरआन पाक नाज़िल हुआ। इसी में हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम को उठाया गया और इसी रात में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ख़ादिम हज़रत यूशअ बिन नून रहमतुल्लाहि अलैहि को शहीद किया गया और इसी में बनी इस्राईल की तौबा क़ुबूल हुई।[2]

तबरानी की रिवायत में इसके बाद यह है कि फिर हज़रत हसन रज़ि० ने फ़रमाया, जो मुझे जानता है, वह तो जानता हूं और जो मुझे नहीं जानता, मैं उसे अपना तआरुफ़ करा देता हूं। मैं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बेटा हसन है। (मैं हुज़ूर सल्ल० को अपना बाप इसलिए कह रहा हूं कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्हाक़ अलैहिमस्सलाम को अपना बाप कहा है, हालांकि ये दोनों उनके दादा-परदादा थे) फिर उन्होंने यह आयत पढ़ी, जिसमें हज़रत यूसुफ़ अलै० का क़ौल है—

اَتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَاۗءِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ (سورت یوسف آیت ۳۸)

'और मैंने अपने इन बाप-दादाओं का मज़हब अख़्तियार कर रखा है, इब्राहीम का, इस्हाक़ का याक़ूब का' (सूरः यूसुफ़, आयत 38)

फिर अल्लाह की किताब में से कुछ और पढ़ने लगे, फिर (हुज़ूर सल्ल० के अलग-अलग नाम लेकर फ़रमाया, मैं ख़ुशख़बरी देने वाले का बेटा हूं। मैं डराने वाले का बेटा हूं। मैं नबी का बेटा हूं। मैं अल्लाह के हुक्म से अल्लाह की दावत देने वाले का बेटा हूं। मैं रौशन चिराग़

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 38, हुलीया, भाग 1, पृ० 65, अहमद, भाग 1, पृ० 199,
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 161,

का बेटा हूं। मैं उस ज़ात का बेटा हूं जिन्हें रहमतुल-लिल आलमीन बनाकर भेजा गया है। मैं उस घराने का आदमी हूं जिनसे अल्लाह ने गन्दगी दूर कर दी और जिन्हें ख़ूब अच्छी तरह पाक किया। मैं उस घराने का आदमी हूं जिनकी मुहब्बत और दोस्ती को अल्लाह ने फ़र्ज़ क़रार दिया।

चुनांचे जो क़ुरआन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अल्लाह ने उतारा, उसमें अल्लाह ने फ़रमाया है—

قُلْ لَا أَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ (سورت شوریٰ آیت ۲۳)

'आप (उनसे) यों कहिए कि मैं तुमसे कुछ मतलब नहीं चाहता, अलावा रिश्तेदारी की मुहब्बत के।'[1] (सूरः शूरा, आयत 33)

तबरानी की दूसरी रिवायत में यह मज़्मून भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हें झंडा दिया करते और जब लड़ाई में घमसान का रन पड़ जाता, तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम उनके दाहिनी ओर आकर लड़ते।

रिवायत करने वाले कहते हैं, यह रमज़ान की इक्कीसवीं रात थी।[2]

हाकिम की रिवायत में यह भी है कि मैं नबवी घराने में से हूं। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम (आसमान से) उतर कर हमारे पास आया करते थे और हमारे पास से (आसमान को) ऊपर जाया करते थे।

इस रिवायत में उसी आयत का यह हिस्सा भी है—

وَمَنْ يَقْتَرِفْ حَسَنَةً نَزِدْ لَهُ فِيهَا حُسْنًا (سورت شوریٰ آیت ۲۳)

'और जो आदमी कोई नेकी करेगा, हम उसमें और ख़ूबी ज़्यादा कर देंगे।' (सूरः शूरा, आयत 23)

यहां नेकी करने से मुराद हमारे सारे घराने से मुहब्बत करना है।[3]

---

1. तबरानी, इब्ने साद,
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 146
3. मुस्तदरक, भाग 3, पृ० 172

हज़रत अबू जमीला रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा ख़लीफ़ा बने। एक बार वे लोगों को नमाज़ पढ़ा रहे थे कि इतने में एक आदमी ने आगे बढ़कर उनकी सुरीन पर ख़ंजर मारा, जिससे वह घायल हो गए और कुछ माह बीमार रहे।

फिर खड़े होकर उन्होंने बयान फ़रमाया, तो उसमें फ़रमाया, ऐ इराक़ वालो ! हमारे बारे में अल्लाह से डरो, क्योंकि हम तुम्हारे अमीर (सरदार) भी हैं और मेहमान भी और हम उस घराने के हैं जिसके बारे में अल्लाह ने फ़रमाया है—

إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ
عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا (سورت احزاب آیت ۳۳)

'अल्लाह को यह मंज़ूर है कि ऐ घरवालो ! तुमसे आलूदगी (मैल-कुचैल) को दूर रखे और तुमको (हर तरह ज़ाहिर और बातिन से) पाक-साफ़ रखे।' (सूरः अहज़ाब, आयत 33)

हज़रत हसन रज़ि० इस मौज़ू पर काफ़ी देर बातें करते रहे, यहां तक कि मस्जिद का हर आदमी रोता हुआ नज़र आने लगा।[1]

इब्ने अबी हातिम की रिवायत में यह है कि हज़रत हसन रज़ि० इन बातों को बार-बार कहते रहे, यहां तक कि मस्जिद का हर आदमी आवाज़ से रोने लगा।[2]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा से नुख़ैला नामी जगह पर समझौता किया, तो हज़रत मुआविया रज़ि० ने उनसे कहा, जब यह (समझौते की) बात तै हो गई तो आप खड़े होकर बातें करें और लोगों को बता दें कि आपने ख़िलाफ़त छोड़ दी है और उसे मेरे हवाले कर दिया है।

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 172,
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 486,

चुनांचे हज़रत हसन रज़ि० उठे और मिंबर पर बयान किया। हज़रत शाबी रह० कहते हैं, मैं उस बयान को सुन रहा था। हज़रत हसन रज़ि० ने पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, अम्मा बाद ! सबसे ज़्यादा समझदारी तक़्वा अख़्तियार करना है और सबसे बड़ी हिमाक़त गुनाहों में मुब्तला होना है। मेरा और हज़रत मुआविया रज़ि० का ख़िलाफ़त के बारे में आपस में इख़्तिलाफ़ था, या तो यह मेरा हक़ था, जिसे मैंने हज़रत मुआविया रज़ि० के लिए इसलिए छोड़ दिया ताकि इस उम्मत का आपस का मामला ठीक रहे और उनके ख़ून महफ़ूज़ रहें, या कोई और इस ख़िलाफ़त का मुझसे ज़्यादा हक़दार है, तो अब मैंने यह ख़िलाफ़त उसके हवाले कर दी है और यह आयत तिलावत फ़रमायी—

وَإِنْ أَدْرِي لَعَلَّهُ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ

'और मैं (यक़ीनी तौर पर) नहीं जानता (कि क्या मस्लहत है) शायद वह (अज़ाब की देरी) तुम्हारे लिए (देखने में) इम्तिहान हो और एक वक़्त (यानी मौत) तक (ज़िंदगी से) फ़ायदा पहुंचाना हो।'[1]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु से समझौता किया तो उन्होंने नुख़ैला मक़ाम में हम में बयान किया और खड़े होकर अल्लाह की हम्द व सना बयान की और पिछली हदीस जैसा मज़्मून बयान किया और आख़िर में आगे यह भी है, मैं इसी पर अपनी बात ख़त्म करता हूं और मैं अपने लिए और तुम्हारे लिए अल्लाह से इस्तग़्फ़ार करता हूं।[2]

हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने अपने उस बयान में यह भी फ़रमाया, अम्मा बादु ! ऐ लोगो ! अल्लाह ने हमारे पहलों के ज़रिए से (यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रिए से) तुम्हें

1. हैसमी, भाग 4, पृ० 208,
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 175, बैहक़ी, भाग 8, पृ० 173,

हिदायत दी और हमारे पिछलों के ज़रिए (यानी मेरे ज़रिए) तुम्हारे ख़ून की हिफ़ाज़त की। इस ख़िलाफ़त की तो एक ख़ास मुद्दत है और दुनिया तो आने-जाने वाली चीज़ है, कभी किसी के पास होती है, कभी किसी के पास। अल्लाह ने अपने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़रमाया है—

وَإِنْ أَدْرِي لَعَلَّهُ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ (سورت انبیاء آیت ۱۱۱)

(सूरः अंबिया, आयत 111) तर्जुमा गुज़र चुका है।[1]

अमीरुल मोमिनीन हज़रत मुआविया बिन अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हुमा का बयान

हज़रत मुहम्मद बिन काब क़ुरज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हुमा एक दिन मदीने में बयान फ़रमा रहे थे, इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो! अल्लाह जो चीज़ देना चाहे, उसे कोई रोक नहीं सकता और जिसे वह रोक ले, उसे कोई देने वाला नहीं और किसी मालदार को उसकी मालदारी अल्लाह के यहां कोई काम नहीं दे सकती। अल्लाह जिसके साथ ख़ैर का इरादा फ़रमाते हैं, उसे दीन की समझ अता फ़रमाते हैं। मैंने ये सारी बातें (मिंबर की) उन लकड़ियों पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुनी हैं।[2]

हज़रत हुमैद बिन अब्दुर्रहमान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने हम में बयान फ़रमाया। मैंने उन्हें बयान में यह कहते हुए सुना कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि जिसके साथ अल्लाह भलाई का इरादा फ़रमाते हैं, उसे दीन की समझ अता फ़रमाते हैं और मैं तो सिर्फ़ तक़्सीम करने वाला ही हूं और देते तो सिर्फ़ अल्लाह ही हैं और यह उम्मत हमेशा हक़ पर और अल्लाह के दीन पर क़ायम रहेगी और जो इनकी मुख़ालफ़त

---

1. तारीख़ इब्ने जरीर, भाग 4, पृ० 144,
2. जामेअ बयानुल इल्म, भाग 1, पृ० 20,

करेगा, वह इन्हें नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेगा और यह सूरतेहाल अल्लाह के हुक्म के आने तक यानी क़ियामत के क़ायम होने तक ऐसे ही रहेगी।[1]

हज़रत उमैर बिन हानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत मुआविया बिन अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने लोगों में बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना, मेरी उम्मत में से हमेशा एक जमाअत अल्लाह के दीन को लेकर खड़ी रहेगी, उनकी मुख़ालफ़त करने वाले और उनकी मदद छोड़ने वाले कोई भी उनका नुक़्सान न कर सकेंगे और अल्लाह के हुक्म के आने तक यानी क़ियामत के क़ायम होने तक वे ऐसे ही रहेंगे और एक रिवायत में यह है कि वे लोगों पर ग़ालिब रहेंगे।

हज़रत उमैर बिन हानी कहते हैं, इस पर हज़रत मालिक बिन युख़ामिर रहमतुल्लाहि अलैहि ने खड़े होकर कहा, मैंने हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाते हुए सुना कि (मेरे ख़्याल में) यह जमाअत आजकल शाम में है।[2]

हज़रत यूनुस बिन हलबस जुबलानी से इसी जैसी हदीस रिवायत की गई है और उसमें आगे यह भी है। फिर हज़रत मुआविया रज़ि० ने इस आयत को दलील के तौर पर ज़िक्र किया—

يَا عِيسَىٰ إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَجَاعِلُ الَّذِينَ

اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ (سورت آل عمران آیت ۵۵)

'ऐ ईसा! (कुछ ग़म न करो) बेशक मैं तुमको वफ़ात देने वाला हूं और (फ़िलहाल) मैं तुमको अपनी तरफ़ उठाए लेता हूं और तुमको उन लोगों से पाक करने वाला हूं जो मुन्किर हैं और जो लोग तुम्हारा कहना मानने वाले हैं, उनको ग़ालिब रखने वाला हूं उन लोगों पर जो कि (तुम्हारे) मुन्किर हैं

1. जामेअ बयानुल इल्म, भाग 1, पृ० 20,
2. अहमद, अबू याला, याक़ूब वग़ैरह,

क़ियामत के दिन तक।'[1] (सूरः आले इम्रान, आयत 55)

हज़रत मक्हूल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने मिंबर पर बयान करते हुए फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना, ऐ लोगो! इल्म तो सीखने से आता है और दीन की समझ तो हासिल करने से आती है और जिसके साथ अल्लाह ख़ैर का इरादा फ़रमाते हैं, उसे दीन की समझ अता फ़रमाते हैं और अल्लाह के बन्दों में से अल्लाह से सिर्फ़ वही डरते हैं (जो उसकी क़ुदरत का) इल्म रखते हैं और मेरी उम्मत में से एक जमाअत हमेशा हक़ पर क़ायम रहेगी, जो लोगों पर ग़ालिब रहेगी और मुख़ालिफ़ों और दुश्मनों की उन्हें कोई परवाह नहीं होगी और ये लोग क़ियामत तक यों ही ग़ालिब रहेंगे।[2]

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के बयानात

हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सक़फ़ी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज के मौक़े पर मैं हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के ख़ुत्बे में शरीक हुआ। हमें उनके बारे में उसी वक़्त पता चला, जब वह यौमुत्तरविया (आठवीं ज़िलहिज्जा) से एक दिन पहले एहराम बांधकर हमारे पास बाहर आए। वह अधेड़ उम्र के ख़ूबसूरत आदमी थे। वह सामने से आ रहे थे, लोगों ने कहा, यह अमीरुल मोमिनीन हैं, फिर वह मिंबर पर तशरीफ़ लाए। उस वक़्त उन पर एहराम की दो सफ़ेद चादरें थीं।

फिर उन्होंने लोगों को सलाम किया। लोगों ने उन्हें सलाम का जवाब दिया। फिर उन्होंने बड़ी अच्छी आवाज़ से लब्बैक कहा, ऐसी अच्छी आवाज़ मैंने कभी सुनी होगी। फिर अल्लाह की हम्द व सना बयान की, इसके बाद फ़रमाया, अम्मा बादु! तुम लोग अलग-अलग

1. इब्ने असाकिर
2. कंज़, भाग 7, पृ० 130

इलाक़ों से वफ़्द बनकर अल्लाह के पास आए हो, इसलिए अल्लाह पर भी उसकी मेहरबानी से यह ज़रूरी है कि वह अपने पास वफ़्द बनकर आने वालों का इक्राम करे।

अब जो उन आख़िरत वाली नेमतों की तलब रखने वाला बनकर आया है जो अल्लाह के पास है, तो अल्लाह से तलब करने वाला महरूम नहीं रहता, इसलिए अपने क़ौल की अमल से तस्दीक़ करो, क्योंकि क़ौल का सहारा अमल है और असल नीयत दिल की होती है। इन दिनों में अल्लाह से डरो, अल्लाह से डरो, क्योंकि इन दिनों में अल्लाह तमाम गुनाहों को माफ़ कर देते हैं। आप लोग अलग-अलग इलाक़ों से आए हैं, आप लोगों का मक़्सद न तिजारत है और न माल हासिल करना और न ही दुनिया लेने की उम्मीद में आप लोग यहां आए हैं।

फिर हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने लब्बैक कहा और लोगों ने भी पढ़ा। फिर उन्होंने लम्बी बातचीत फ़रमाई, फिर फ़रमाया, अम्मा बादु ! अल्लाह ने अपनी किताब में फ़रमाया है—

اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمَاتٌ (سورت بقرہ آیت ۱۹۷)

'हज का ज़माना, कुछ महीने हैं, जो मालूम हैं' (सूरः बक़रः, आयत 197)

फ़रमाया, वे तीन महीने हैं, शव्वाल, ज़ीक़ादा और ज़िलहिज्जा के दस दिन।

فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ

'सो जो आदमी उनमें हज मुक़र्रर करे, तो फिर (उसको) न कोई फ़ह्श बात (जायज़) है।' यानी बीवी से सोहबत करना।

وَلَا فُسُوْقَ

'और न कोई बे-हुक्मी (दुरुस्त) है' यानी मुसलमानों को बुरा-भला कहना।

وَلَا جِدَالَ

'और न किसी क़िस्म का झगड़ा मुनासिब है', यानी लड़ाई-झगड़ा करना।

وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ اللّٰهُ وَ تَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى

'और जो नेक काम करोगे, अल्लाह तआला को उसकी ख़बर होती है और (जब हज को जाने लगो) ख़र्च ज़रूर ले लिया करो, क्योंकि सबसे बड़ी बात ख़र्च में (गदागरी से) बचा रहना है।'

और अल्लाह ने फ़रमाया—

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ

'तुमको इसमें ज़रा भी गुनाह नहीं कि (हज में) रोज़ी खोजो।' चुनांचे अल्लाह ने हजियों को तिजारत की इजाज़त दे दी, फिर अल्लाह ने फ़रमाया—

فَإِذَا أَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفَاتٍ

'फिर जब तुम लोग अरफ़ात से वापस आने लगो'

और अरफ़ात ठहरने की वह जगह है, जहां हाजी लोग सूरज के डूबने तक ठहरा करते हैं। फिर वहां से वापस आते हैं—

فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ

'तो मशअरे हराम के पास (मुज़दलफ़ा में रात को क़ियाम करके) अल्लाह को याद करो।'

ये मुज़दलफ़ा के वह पहाड़ हैं जहां हाजी रात को ठहरते हैं—

وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ

'और इस तरह याद करो जिस तरह तुमको बतला रखा है।'

हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने फ़रमाया, यह हुक्म आम नहीं है, बल्कि सिर्फ़ मक्का शहर वालों के लिए है क्योंकि मक्का वाले मुज़दलफ़ा में वक़ूफ़ करते थे और अरफ़ात नहीं जाते थे, इसलिए मुज़दलफ़ा से वापस आते थे, जबकि बाक़ी लोग अरफ़ात जाते थे और वहां से वापस आते थे, तो अल्लाह ने उनके फ़ेल पर इंकार करते हुए फ़रमाया—

ثُمَّ أَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ

'फिर तुम सबको ज़रूरी है कि इसी जगह होकर वापस आओ, जहां

और लोग जाकर वहां से वापस आते हैं।' यानी वहां से वापस आकर अपने हज के मनासिक पूरे करो।

जाहिलियत के ज़माने के हाजियों का दस्तूर यह था कि वे हज से फ़ारिग़ होकर अपने बाप-दादों के कारनामों का ज़िक्र करके एक दूसरे पर फ़ख़्र करते थे, इस पर अल्लाह ने ये आयतें नाज़िल फ़रमाई—

فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا فَمِنَ
النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ وَمِنْهُمْ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَا آتِنَا فِي
الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ (سورت بقره آيت ۲۰۰ و ۲۰۱)

'तो हक़ तआला का ज़िक्र किया करो, जिस तरह तुम अपने बाप (दादों) का ज़िक्र किया करते हो, बल्कि यह ज़िक्र उससे (कई दर्जे) बढ़कर हो, सो कुछ आदमी (जो कि काफ़िर हैं) ऐसे हैं जो कहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमको (जो कुछ देना हो) दुनिया में दे दीजिए और ऐसे आदमी को आख़िरत में (आख़िरत के इंकार की वजह से) कोई हिस्सा न मिलेगा और कुछ आदमी (जो कि मोमिन हैं) ऐसे हैं, जो कहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमको दुनिया में भी बेहतरी दीजिए और आख़िरत में भी बेहतरी दीजिए और हमको दोज़ख़ के अज़ाब से बचाइए।' (सूरः बक़रः, आयत 200) यानी दुनिया में रहकर दुनिया के लिए भी मेहनत करते हैं और आख़िरत के लिए भी।

फिर हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने इस आयत की तिलावत फ़रमाई—

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِي أَيَّامٍ مَّعْدُوْدَاتٍ (سورت بقره آيت ۲۰۳)

'और अल्लाह का ज़िक्र करो कई दिन तक' (सूरः बक़रः, आयत 203)

और फ़रमाया, इससे तशरीक़ के दिन मुराद हैं और इन दिनों के ज़िक्र में—

سُبْحَانَ اللّٰهِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

'सुब्हानल्लाहि, अलहम्दु लिल्लाह' कहना, ला इला-ह इल्लल्लाहु कहना, अल्लाहु अक्बर कहना और अल्लाह की अज़्मत वाले कलिमे कहना सब शामिल है।

फिर हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने मीक़ात यानी लोगों के एहराम बांधने की जगहों का ज़िक्र किया, चुनांचे फ़रमाया, मदीना वालों के लिए एहराम बांधने की जगह ज़ुल हुलैफ़ा है और इराक़ वालों के लिए अक़ीक़ है और नज्द वालों और तायफ़ वालों के लिए क़रन है और यमन वालों के लिए यलमलम है। इसके बाद अह्ले किताब के काफ़िरों के लिए यह बद्-दुआ की, ऐ अल्लाह! अह्ले किताब के इन काफ़िरों को अज़ाब दे जो तेरी आयतों का इंकार करते हैं और तेरे रसूलों को झुठलाते हैं और तेरे रास्ते से रोकते हैं। ऐ अल्लाह! इन्हें अज़ाब भी दे और इनके दिल बदकार औरतों जैसे बना दे। इस तरह बहुत लम्बी दुआ की।

फिर फ़रमाया, यहां कुछ लोग ऐसे हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने ऐसा अंधा कर दिया जैसे उनकी आंखों को अंधा किया। वह हज तमत्तोअ का यह फ़त्वा देते हैं कि एक आदमी, जैसे ख़ुरासान से हज का एहराम बांधकर आया, तो यह उससे कहते हैं कि उमरा करके हज का एहराम खोल दो, फिर यहां से हज का एहराम बांध लेना। (हालांकि जब वह हज का एहराम बांधकर आया है, तो वह हज करके एहराम खोल सकता है, इससे पहले नहीं) अल्लाह की क़सम! हज का एहराम बांधकर आने वाले को सिर्फ़ एक सूरत में तमत्तोअ की यानी उमरा करके एहराम खोल देने की इजाज़त है, जबकि उसे हज से रोक दिया जाए। फिर हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने लब्बैक पढ़ा और तमाम लोगों ने पढ़ा।

रिवायत करने वाले कहते हैं, मैंने लोगों को उस दिन से ज़्यादा रोते हुए किसी दिन नहीं देखा।[1]

हज़रत हिशाम बिन उर्व: रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने अपने बयान में फ़रमाया, अच्छी तरह समझ लो कि बत्ने उरना के अलावा सारा अरफ़ात ठहरने की जगह है और ख़ूब जान लो कि बत्ने मुहस्सर के अलावा सारा

1. हैसमी, भाग 3, पृ० 250, हुलीया, भाग 1, पृ० 336,

मुज़दलफ़ा ठहरने की जगह है।[1]

हज़रत अब्बास बिन सह्ल बिन साद साइदी अंसारी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने मक्का के मिंबर पर हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बयान में यह फ़रमाते हुए सुना, ऐ लोगो! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे, अगर इब्ने आदम को सोने की एक वादी दे दी जाए तो वह दूसरी वादी की तमन्ना करने लगेगा और अगर उसे दूसरी वादी दे दी जाए तो तीसरी की तमन्ना करने लगेगा और इब्ने आदम के पेट को (क़ब्र की) मिट्टी के सिवा और कोई चीज़ नहीं भर सकती और जो अल्लाह के सामने तौबा करता है अल्लाह उसकी तौबा क़ुबूल फ़रमा लेते हैं।[2]

हज़रत अता बिन अबी रबाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने हम लोगों में बयान करते हुए फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरी इस मस्जिद में एक नमाज़ मस्जिदे हराम के अलावा दूसरी मस्जिदों की हज़ार नमाज़ से अफ़ज़ल है और मस्जिदे हराम की एक नमाज़ (मेरी मस्जिद की नमाज़ पर) सौ गुना फ़ज़ीलत रखती है।

हज़रत अता रह० कहते हैं, इस तरह मस्जिदे हराम की नमाज़ को (दूसरी मस्जिद की नमाज़ पर) लाख गुना फ़ज़ीलत हासिल हो जाएगी। हज़रत अता कहते हैं, मैंने हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० से पूछा, ऐ अबू मुहम्मद! यह लाख गुना फ़ज़ीलत सिर्फ़ मस्जिदे हराम में है या सारे हरम में है? उन्होंने फ़रमाया, नहीं, सारे हरम में है, क्योंकि सारा हरम मस्जिद (के हुक्म में) है।[3]

हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत वह्ब बिन कैसान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने ज़ुबैर

---

1. तफ़्सीरे इब्ने जरीर, भाग 2, पृ० 168,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 337,
3. अबू दाऊद, अत्तयालसी, पृ० 195

रज़ि० ने ईद के दिन ईद की नमाज़ पढ़ाई, फिर खड़े होकर ख़ुत्बा पढ़ा। मैंने उन्हें ख़ुत्बे में यह कहते हुए सुना, ऐ लोगो ! ईद की नमाज़ से पहले ख़ुत्बा पढ़ना हरगिज़ दुरुस्त नहीं। ईद के बाद ख़ुत्बा पढ़ना अल्लाह और रसूल की तरफ़ से मुक़र्रर किया हुआ तरीक़ा है।[1]

हज़रत साबित रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बयान में यह कहते हुए सुना कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है, जो मर्द दुनिया में रेशम पहनेगा, वह आख़िरत में नहीं पहन सकेगा।[2]

हज़रत अबुज़्ज़ुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को इस मिंबर पर यह फ़रमाते हुए सुना, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के बाद सलाम फेरते तो यह कलिमे पढ़ते—

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيْرٌ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا نَعْبُدُ اِلَّآ اِيَّاهُ اَهْلَ النِّعْمَةِ وَ الْفَضْلِ وَالثَّنَاءِ الْحَسَنِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَ لَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ

'अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह यकता है, उसका कोई शरीक नहीं। सारी बादशाही उसी के लिए है। तमाम तारीफ़ें उसी के लिए हैं। वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है, बुराई से बचने और नेकी करने की ताक़त सिर्फ़ उसी से मिलती है। हम सिर्फ़ उसी की इबादत करते हैं। वह नेमत, फ़ज़्ल और अच्छी तारीफ़ वाला है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। हम पूरे इख़्लास के साथ दीन पर चल रहे हैं चाहे यह काफ़िरों को बुरा लगे।[3]

हज़रत सुवैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को मिंबर पर यह फ़रमाते हुए सुना कि

1. मुस्नद अहमद, भाग 4, पृ० 5,
2. मुस्नद अहमद, भाग 4, पृ० 5
3. मुस्नद अहमद, भाग 4, पृ० 5

यह आशूरा (दस मुहर्रम) का दिन है, इसमें रोज़ा रखो, क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस दिन के रोज़े का हुक्म दिया है।[1]

हज़रत कुलसूम बिन जब्र रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा दीनी मामलों में बड़ी मुश्किल से रियायत करते थे। उन्होंने एक बार हम में बयान फ़रमाया, उसमें इर्शाद फ़रमाया, ऐ मक्का वालो ! मुझे क़ुरैश के कुछ लोगों के बारे में यह ख़बर पहुंची है कि ये नर व शेर खेल खेलते हैं। (यह शतरंज जैसा खेल है) हालांकि अल्लाह ने तो फ़रमाया है—

إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ (سورت مائدہ آیت ۹۰)

'बात यही है कि शराब और जुआ और बुत वग़ैरह और क़ुरआ के तीर ये सब गन्दी बातें, शैतानी काम हैं, सो इनसे बिल्कुल अलग रहो ताकि तुमको फ़लाह हो।' (सूरः माइदा, आयत 90)

और मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूं कि मेरे पास जो आदमी ऐसा लाया गया जो यह खेल खेलता होगा तो मैं उसके बाल और खाल उधेड़ दूंगा और सख़्त सज़ा दूंगा और उसका सामान उसे दे दूंगा जो उसे मेरे पास लाएगा।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के बयानात

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने थोड़े में बयान फ़रमाया। बयान से फ़ारिग़ होकर आपने फ़रमाया, ऐ अबूबक्र ! तुम खड़े होकर बयान करो। चुनांचे उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से कम बयान किया।

जब वह बयान से फ़ारिग़ हुए, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उमर ! अब तुम उठो और बयान करो। चुनांचे वह खड़े हुए और उन्होंने

1. मुस्नद अहमद, भाग 4, पृ० 6,
2. अदबुल मुफ़रद, भाग 186,

हुज़ूर सल्ल० से भी और हज़रत अबूबक्र रज़ि० से भी कम बयान किया। जब वह बयान से फ़ारिग़ हो गए तो आपने फ़रमाया, ऐ फ़्लाने! अब तुम खड़े होकर बयान करो। उसने खड़े होकर ख़ूब मुंह भरकर बातें कीं। हुज़ूर सल्ल० ने उसे फ़रमाया, ख़ामोश हो जाओ और बैठ जाओ, क्योंकि ख़ूब मुंह भरकर बातें करना शैतान की तरफ़ से है और कुछ बयान जादू की तरह असरअंदाज़ होते हैं।

फिर आपने (हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से) फ़रमाया, ऐ इब्ने उम्मे अब्द! अब तुम खड़े होकर बयान करो। उन्होंने खड़े होकर पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर कहा, ऐ लोगो! अल्लाह हमारे रब हैं और इस्लाम हमारा दीन है और क़ुरआन हमारा इमाम है और बैतुल्लाह हमारा क़िब्ला है और हाथ से हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ इशारा करके कहा और यह हमारे नबी हैं और अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ने जो कुछ हमारे लिए पसन्द किया, हमने भी उसे अपने लिए पसन्द किया और जो कुछ अल्लाह और उसके रसूल ने हमारे लिए नापसन्द किया, हमने भी उसे अपने लिए नापसन्द किया। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इब्ने उम्मे अब्द ने ठीक कहा, इब्ने उम्मे अब्द ने ठीक और सच कहा। अल्लाह ने जो कुछ मेरे लिए और मेरी उम्मत के लिए पसन्द किया, वह मुझे भी पसन्द है और जो कुछ इब्ने उम्मे अब्द ने पसन्द किया, वह भी मुझे पसन्द है।[1]

इब्ने असाकिर की रिवायत में इसके बाद यह भी है कि जो कुछ अल्लाह ने मेरे लिए और मेरी उम्मत के लिए नापसन्द किया, वह मुझे भी नापसन्द है और जो कुछ इब्ने उम्मे अब्द ने नापसन्द किया, वह मुझे भी नापसन्द है।[2]

इब्ने असाकिर की दूसरी रिवायत में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० से फ़रमाया, अब तुम बात करो।

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 290,
2. इब्ने असाकिर.

चुनांचे शुरू में उन्होंने अल्लाह की हम्द व सना बयान की और हुज़ूर सल्ल० पर दरूद व सलाम भेजा, फिर कलिमा-ए-शहादत पढ़ा, फिर यह कहा, हम अल्लाह के रब होने पर और इस्लाम के दीन होने पर राज़ी हैं और मैंने भी आप लोगों के लिए वही पसन्द किया, जो अल्लाह और उसके रसूल ने पसन्द किया, इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं भी तुम्हारे लिए वही पसन्द करता हूं जो तुम्हारे लिए इब्ने उम्मे अब्द यानी हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने पसन्द किया।[1]

हज़रत अबुल अह्वस जुशमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक दिन हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमा रहे थे कि इतने में उन्हें दीवार पर सांप चलता हुआ नज़र आया। उन्होंने बयान छोड़कर छड़ी से उसे इतना मारा कि वह मर गया, फिर फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि जिसने किसी सांप को मारा तो गोया उसने ऐसे मुश्रिक आदमी को मारा है, जिसका ख़ून बहाना हलाल हो गया हो।[2]

हज़रत अबू वाइल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते, जब हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा बने, तो हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना से कूफ़ा को रवाना हुए, आठ दिन सफ़र करने के बाद उन्होंने एक जगह बयान किया, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, अम्मा बादु ! अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का इंतिक़ाल हुआ तो हमने लोगों को उस दिन से ज़्यादा रोते हुए किसी दिन नहीं देखा, फिर हम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा जमा हुए और ऐसे आदमी के तलाश करने में कोई कमी नहीं की, जो हममें सबसे बेहतर हो और हर लिहाज़ से हम पर फ़ौक़ियत रखने वाला हो। चुनांचे हमने अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से बैअत कर ली

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 237
2. अहमद, भाग 1, पृ० 421

है। आप लोग भी उनसे बैअत हो जाएं।[1]

हज़रत उत्बा बिन ग़ज़्वान रज़ियल्लाहु अन्हु के बयानात

हज़रत ख़ालिद बिन उमैर अदवी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उत्बा बिन ग़ज़्वान रज़ियल्लाहु अन्हु बसरा के गवर्नर थे। एक बार उन्होंने हम लोगों में बयान किया, तो पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, अम्मा बादु ! दुनिया ने अपने ख़त्म हो जाने का एलान कर दिया है और पीठ फेरकर तेज़ी से जा रही है और दुनिया में से बस थोड़ा-सा हिस्सा बाक़ी रह गया है, जैसे बरतन में अख़ीर में थोड़ा-सा रह जाता है और आदमी उसे चूस लेता है और तुम यहां से मुंतक़िल होकर ऐसी दुनिया में चले जाओगे जो कभी ख़त्म नहीं होगी, इसलिए जो अच्छे आमाल तुम्हारे पास मौजूद हैं, उनको लेकर अगली दुनिया में जाओ, हमें यह बताया गया है कि जहन्नम के किनारे से एक पत्थर फेंका जाएगा जो सत्तर साल तक जहन्नम में गिरता रहेगा, लेकिन फिर भी उसकी तह नहीं पहुंच सकेगा। अल्लाह की क़सम ! यह जहन्नम भी एक दिन इंसानों से भर जाएगी, क्या तुम्हें इस पर ताज्जुब हो रहा है? और हमें यह भी बताया गया है कि जन्नत के दरवाज़े के दो पट्टों के दर्मियान चालीस साल का फ़ासला है, लेकिन एक दिन ऐसा आएगा कि जन्नतियों के हुजूम की वजह से इतना चौड़ा दरवाज़ा भी भरा हुआ होगा और मैंने वह ज़माना भी देखा है कि हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सिर्फ़ सात आदमी थे और मैं उनमें शामिल था, हमें खाने को सिर्फ़ पेड़ों के पत्ते मिलते थे जिन्हें बराबर खाने की वजह से हमारे जबड़े भी घायल हो गए थे और मुझे एक गिरी पड़ी चादर मिली थी। मैंने उसके दो टुकड़े किए। एक टुकड़े को मैंने लुंगी बना लिया और एक को हज़रत साद बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने।

एक ज़माने में तो हमारे फ़क्र व फ़ाक़ा का यह हाल था और आज

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 63

हममें से हर एक किसी न किसी शहर का गवर्नर बना हुआ है और मैं इस बात से अल्लाह की पनाह चाहता हूं कि मैं अपनी निगाह में तो बड़ा हूं और अल्लाह के यहां छोटा हूं ?[1]

हाकिम की रिवायत के आख़िर में यह मज़्मून भी है कि हर नुबूवत की लाइन दिन ब दिन कम होती चली गई है और आख़िरकार उसकी जगह बादशाही ने ले ली है और मेरे बाद तुम और गवर्नरों का तर्जुबा कर लोगे।[2]

इब्ने साद में इस रिवायत के शुरू में यह मज़्मून है कि हज़रत उत्बा रज़ियल्लाहु अन्हु ने बसरा में सबसे पहला यह बयान किया कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, मैं इसकी तारीफ़ बयान करता हूं और उससे मदद मांगता हूं और उस पर ईमान लाता हूं और उसी पर भरोसा करता हूं और इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) उसके बन्दे और रसूल हैं। अम्मा बादु ! ऐ लोगो ! आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया है।[3]

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हु के बयान

हज़रत अबू अब्दुर्रहमान सुलमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हु मदाइन शहर के गवर्नर थे, हमारे और मदाइन के दर्मियान एक फ़रसख़ यानी तीन मील का फ़ासला था। मैं अपने वालिद के साथ मदाइन जुमा पढ़ने गया, चुनांचे वह मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए। पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, क़ियामत क़रीब आ गई और चांद के टुकड़े हो गए।

ग़ौर से सुनो ! चांद के तो टुकड़े हो चुके हैं। तवज्जोह से सुनो ! दुनिया ने जुदाई का एलान कर दिया है। ग़ौर से सुनो ! आज तो तैयारी

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 179;
2. मुस्तदरक, भाग 3, पृ०261, सिफ़तुस्सफ़्वा, भाग 1, पृ०152, ज़ख़ाइरुल मवारीस, भाग 2, पृ० 229, मुस्नद अहमद, भाग 4, पृ० 174, हुलीया, भाग 1, पृ० 171
3. इब्ने साद, भाग, पृ० 6

का दिन कल को एक दूसरे से आगे निकलने का मुक़ाबला है। मैंने अपने वालिद से कहा, उनके नज़दीक आगे निकलने का क्या मतलब है? उन्होंने कहा, इसका मतलब यह है, कौन जन्नत की तरफ़ आगे बढ़ता है।[1]

इब्ने जरीर की रिवायत के शुरू में यह मज़्मून है, ग़ौर से सुनो, अल्लाह ने फ़रमाया है—

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ (سورت قمر آیت ۱)

'क़ियामत नज़दीक आ पहुंची और चांद शक़ हो गया।' (सूरः क़मर, आयत 1) ग़ौर से सुनो, बेशक क़ियामत क़रीब आ चुकी है।

इस रिवायत के आख़िर में यह है कि मैंने अपने वालिद से पूछा, क्या सचमुच कल लोगों का आगे निकलने में मुक़ाबला होगा? मेरे वालिद ने कहा, ऐ मेरे बेटे! तुम तो बिल्कुल नादान हो, इससे तो आमाल में एक दूसरे से आगे बढ़ना मुराद है, फिर अगला जुमा आया, हम जुमा में आए। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने फिर बयान किया और फ़रमाया, ग़ौर से सुनो, अल्लाह ने फ़रमाया है—

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ

तवज्जोह से सुनो! दुनिया ने जुदाई का एलान कर दिया है। ग़ौर से सुनो, आज तैयारी का दिन है, कल एक दूसरे से आगे निकलने का मुक़ाबला होगा और (तैयारी न करने वाले का) अंजाम जहन्नम की आग है और आगे निकल जाने वाला वह है जो जन्नत की तरफ़ सबक़त ले जाएगा।[2]

हज़रत कुरदूस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने मदाइन शहर में बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो! तुमने अपने ग़ुलामों के ज़िम्मे लगाया कि वे माल कमा कर तुम्हें दें। वे अपनी कमाई लाकर तुम्हें देते हैं, उनकी कमाइयों का ख़्याल

1. हुलीया भाग 1, पृ० 281
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 261, मुस्तदरक, भाग 4, पृ० 609

रखो, अगर ये हलाल की हों तो खा लो, वरना छोड़ दो, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि जो गोश्त हराम से परवरिश पाएगा, वह जन्नत में नहीं आ सकेगा।[1]

हज़रत अबू दाऊद अहमदी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने मदाइन शहर में हम लोगों में बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो! अपने गुलामों की कमाई की तह्क़ीक़ करते रहो और यह मालूम करो कि वे कहां से कमा कर तुम्हारे पास लाते हैं, क्योंकि हराम से परवरिश पाने वाला गोश्त कभी भी जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकेगा, और यह बात जान लो कि शराब बेचने वाला, ख़रीदने वाला और अपने लिए बनाने वाला ये सब शराब पीने वाले की तरह हैं।[2]

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान

हज़रत क़सामा बिन ज़ुहैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने बसरा में लोगों में बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो! रोया करो, अगर रोना न आए, तो रोने जैसी शक्ल ही बना लिया करो, क्योंकि जहन्नम वाले इतना रोएंगे कि उनके आंसू ख़त्म हो जाएंगे, फिर वे ख़ून के इतने आंसू रोएंगे कि अगर इन आंसुओं में नावें चलाई जाएं, तो ये भी चल जाएं।[3]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का बयान

हज़रत शक़ीक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा एक बार हज मौसम के अमीर थे। उन्होंने हममें बयान फ़रमाया, उन्होंने सूरः बक़रः शुरू कर दी। आयतें पढ़ते जाते थे और उनकी तफ़्सीर करते जाते थे। मैं अपने दिल में कहने लगा, न तो

1. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 281
2. कंज़, भाग 2, पृ० 218,
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 110, हुलीया, भाग 1, पृ० 261

मैंने उन जैसा आदमी देखा और न उन जैसा कलाम कभी सुना। अगर फ़ारस और रूम वाले उनका कलाम सुन लें तो सब मुसलमान हो जाएं।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान

हज़रत अबू यज़ीद मदयनी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने मदीना में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मिंबर पर खड़े होकर बयान फ़रमाया और हुज़ूर सल्ल० के खड़े होने की जगह से एक सीढ़ी नीचे खड़े हुए और इर्शाद फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने अबू हुरैरह रज़ि० को इस्लाम की हिदायत दी और तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने अबू हुरैरह को क़ुरआन सिखाया और तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत में रहने का मौक़ा देकर अबू हुरैरह रज़ि० पर बड़ा एहसान फ़रमाया। तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने मुझे ख़मीरी रोटी खिलाई और अच्छा कपड़ा पहनाया, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने बिन्ते ग़ज़वान से मेरी शादी करा दी, हालांकि पहले मैं पेट भर खाने के बदले उसके पास मज़दूरी पर काम करता था और वह मुझे सवारी दिया करती थी और अब मैं उसे सवारी देता हूं, जैसे वह दिया करती थी। फिर फ़रमाया, अरबों के लिए हलाकत हो कि एक बहुत बड़ा शर क़रीब आ गया है और उनके लिए हलाकत हो कि बहुत जल्द बच्चे हाकिम बन जाएंगे और लोगों में अपनी मर्ज़ी और ख़्वाहिश के फ़ैसले करेंगे और ग़ुस्से में आकर लोगों को नाहक़ क़त्ल करेंगे।

ऐ (हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बेटे) फ़रूख़ के बेटो! यानी अजम के रहने वालो! (हज़रत इब्राहीम के उस बेटे की औलाद अजम कहलाती है) तुम्हें ख़ुशख़बरी हो उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है! अगर दीन सुरैया सितारे के पास लटका हुआ होता तो भी

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 324,

तुम्हारे कुछ आदमी उसे ज़रूर हासिल कर लेते।[1]

हज़रत अबू हबीबा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जिन दिनों हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घर में क़ैद थे, मैं उनकी ख़िदमत में उनके घर गया। वहां मैंने देखा कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उस्मान रज़ि० से लोगों से बात करने की इजाज़त मांग रहे हैं। हज़रत उस्मान रज़ि० ने उन्हें इजाज़त दे दी। चुनांचे वह बयान के लिए खड़े हुए।

पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि मेरे बाद तुम पर एक बड़ा फ़ित्ना और बड़ा इख़्तिलाफ़ ज़ाहिर होगा। एक सहाबी रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! इन हालात में आप हमें क्या करने का हुक्म करते हैं? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अमीर और उसके साथियों को मज़बूती से पकड़े रहना, यह फ़रमाते हुए हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० हज़रत उस्मान रज़ि० की तरफ़ इशारा फ़रमा रहे थे।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु के पोते हज़रत मुहम्मद बिन यूसुफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज्जाज बिन यूसुफ़ से अन्दर आने की इजाज़त मांगी। उसने मुझे इजाज़त दे दी। मैंने अन्दर जाकर सलाम किया। हज्जाज के तख़्त के क़रीब दो आदमी बैठे हुए थे। हज्जाज ने उनसे कहा, इन्हें जगह दे दो। उन्होंने मुझे जगह दे दी। मैं वहां बैठ गया।

हज्जाज ने मुझसे कहा, अल्लाह ने आपके वालिद को बहुत ख़ूबियां अता फ़रमाई थीं। क्या आप वह हदीस जानते हैं, जो आपके वालिद ने अब्दुल मलिक बिन मरवान को आपके दादा हज़रत अब्दुल्लाह बिन

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 383,
2. हाकिम, भाग 4, पृ० 433,

सलाम की तरफ़ से सुनाई थी? मैंने कहा, आप पर अल्लाह रहम फ़रमाए, कौन-सी हदीस? हदीसें तो बहुत हैं।

हज्जाज ने कहा, मिस्रियों ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का घेराव किया था, उनके बारे में हदीस? मैंने कहा, हां, वह हदीस मुझे मालूम है और वह यह है कि हज़रत उस्मान रज़ि० क़ैद थे, हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० तशरीफ़ लाए और हज़रत उस्मान रज़ि० के घर में दाख़िल होना चाहा, तो अन्दर मौजूद लोगों ने उनके लिए रास्ता बना दिया, जिससे वे अन्दर दाख़िल हो गए और उन्होंने हज़रत उस्मान रज़ि० से कहा, अस्सलामु अलैकुम ऐ अमीरुल मोमिनीन! हजरत उस्मान रज़ि०ने फ़रमाया, व अलैकस्सलामु ऐ अब्दुल्लाह बिन सलाम! कैसे आना हुआ?

हज़रत इब्ने सलाम रज़ि० ने कहा, मैं तो यह पक्का इरादा करके आया हूं कि यहां से ऐसे ही नहीं जाऊंगा, (बल्कि आपकी तरफ़ से इन मिस्रियों से लडूंगा) फिर या तो शहीद हो जाऊंगा या अल्लाह आपको जीत दिला देंगे। मुझे तो यही नज़र आ रहा है कि ये लोग आपको क़त्ल कर देंगे। अगर इन लोगों ने आपको क़त्ल कर दिया तो यह आपके लिए तो बेहतर होगा, लेकिन उनके लिए बहुत बुरा होगा।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, आपके ऊपर मेरा जो हक़ है उसका वास्ता देकर कहता हूं कि आप उनके पास ज़रूर जाएं और उन्हें समझाएं। हो सकता है कि अल्लाह आपके ज़रिए से ख़ैर को ले आएं और शर को ख़त्म कर दें। हज़रत इब्ने सलाम रज़ि० ने अपना इरादा छोड़ दिया और हज़रत उस्मान रज़ि० की बात मान ली और उन मिस्रियों के पास बाहर आए, जब मिस्रियों ने उनको देखा, तो वे सब उनके पास इकट्ठे हो गए। वे यह समझते थे कि हज़रत इब्ने सलाम रज़ि० कोई ख़ुशी की बात लाए हैं।

चुनांचे हज़रत इब्ने सलाम रज़ि० बयान के लिए खड़े हुए। पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, अम्मा बादु! अल्लाह

ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा था, जो उनकी इताअत करता था, उसे जन्नत की ख़ुशख़बरी देते थे और जो नाफ़रमानी करता था, उसे जहन्नम की आग से डराते थे।

आख़िर अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० की पैरवी करने वालों को तमाम दीन वालों पर ग़ालिब कर दिया, अगरचे यह बात मुश्रिकों को बहुत नागवार गुज़री। अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० के लिए बहुत-सी रहने की जगहें पसन्द कीं और उनमें से मदीना मुनव्वरा को मुंतख़ब फ़रमाया और उसे हिजरत का घर और ईमान का घर क़रार दिया। (हर जगह से मुसलमान हिजरत करके वहां आते रहे और ईमान सीखते रहे।) अल्लाह की क़सम ! जब से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए हैं, उस वक़्त से लेकर आज तक हर वक़्त फ़रिश्ते उसे हर तरफ़ से घेरे रहते हैं और जब से हुज़ूर सल्ल० मदीना तशरीफ़ लाए हैं, उस वक़्त से लेकर आज तक अल्लाह की तलवार आम लोगों से नियाम में है, (यानी मुसलमान क़त्ल नहीं हो रहे हैं।)

फिर फ़रमाया अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सललम को हक़ देकर भेजा, इसलिए जिसे हिदायत मिली उसे अल्लाह के हिदायत देने से हिदायत मिली और जो गुमराह हुआ वह वाज़ेह और खुली दलील के आने के बाद गुमराह हुआ। पहले ज़माने में जो भी नबी शहीद किया गया, उसके बदले में सत्तर (70) हज़ार जंगजू जवान क़त्ल किए गए। उनमें हर एक उस नबी के बदले में क़त्ल हुआ और जो भी ख़लीफ़ा शहीद किया गया, उसके बदले में 35 हज़ार जंगजू जवान क़त्ल किए गए, उनमें से हर एक उस ख़लीफ़ा के बदले में क़त्ल हुआ, इसलिए तुम जल्दबाज़ी में कहीं उन बड़े मियां को क़त्ल न कर दो। अल्लाह की क़सम ! तुममें से जो आदमी भी उन्हें क़त्ल करेगा, वह क़ियामत के दिन अल्लाह के यहां इस हाल में पेश होगा कि उसका हाथ कटा होगा और शल होगा और यह बात अच्छी तरह जान लो कि एक बाप का अपने बेटे पर जितना हक़ होता है, उतना ही उन बड़े मियां

का तुम्हारे ऊपर है।

रिवायत बयान करने वाले कहते हैं, यह सुनकर वे सारे बाग़ी खड़े हो गए और कहने लगे, यहूदी झूठे हैं, यहूदी झूठे हैं। (चूंकि हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० पहले यहूदी थे और बाद में मुसलमान हुए, इसलिए ताने के तौर पर उन्होंने ऐसा कहा) हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने फ़रमाया, तुम ग़लत कहते हो? अल्लाह की क़सम! यह बात कहकर तुम गुनाहगार हो गए हो। मैं यहूदी नहीं हूं। मैं तो मुसलमान हूं। यह बात अल्लाह और उसके रसूल और सारे मोमिन जानते हैं। अल्लाह ने मेरे बारे में क़ुरआन की यह आयत नाज़िल फ़रमाई है—

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَ بَيْنَكُمْ وَ مَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ (سورت رعد آيت ۴۳)

'आप फ़रमा दीजिए कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान (मेरी नुबूवत पर) अल्लाह और वह आदमी जिसके पास किताबे (आसमानी) का इल्म है, काफ़ी गवाह हैं।' (सूरः राद, आयत 43) (जिसके पास पिछली आसमानी किताब का इल्म है, उससे मुराद हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० और उन जैसे यहूदी दूसरे उलेमा हैं जो तौरात की बताई हुई निशानियां देखकर मुसलमान हो गए थे) और मेरे बारे में अल्लाह ने यह आयत भी नाज़िल फ़रमाई है—

قُلْ اَرَاَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَ كَفَرْتُمْ بِهٖ وَ شَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ بَنِيْٓ اِسْرَآئِيْلَ

عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَ اسْتَكْبَرْتُمْ (سورت احقاف آيت ۱۰)

'आप कह दीजिए कि तुम मुझको यह बताओ कि अगर यह क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से हो और तुम उसके इंकारी हो और बनी इसराईल में से कोई गवाह उस जैसी किताब पर गवाही देकर ईमान लावे और तुम तकब्बुर ही में रहो।' (सूरः अह्क़ाफ़, आयत 10)

फिर रिवायत करने वाले ने हज़रत उस्मान रज़ि० की शहादत के बारे में हदीस ज़िक्र की।[1]

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 93

हज़रत हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा का बयान

हज़रत मुहम्मद बिन हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब उमर बिन साद ने (फ़ौज लेकर) हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पड़ाव किया और हज़रत हुसैन रज़ि० को यक़ीन हो गया कि ये लोग उन्हें क़त्ल कर देंगे, तो उन्होंने अपने साथियों में खड़े होकर बयान किया, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, जो मामला तुम देख रहे हो, वह सर पर आन पड़ा है। (हमें क़त्ल करने के लिए यह फ़ौज आ गई है) दुनिया बदल गई है और ऊपरी हो गई है, उसकी नेकी पीठ फेरकर चली गई है और दुनिया की नेकी में से सिर्फ़ इतना रह गया जितना बरतन के निचले हिस्से में रह जाया करता है। बस घटिया ज़िंदगी रह गई है जैसे सेहत को नुक़्सान पहुंचाने वाली चरागाह हुआ करती है, जिसकी घास खाने से हर जानवर बीमार हो जाता है।

क्या आप लोग देखते नहीं हैं कि हक़ पर अमल नहीं किया जा रहा और बातिल से रुका नहीं जा रहा। (इन हालात में) मोमिन को अल्लाह से मुलाक़ात का शौक़ होना चाहिए। मैंने उस वक़्त मौत को बड़ी सआदत की चीज़ और ज़ालिमों के साथ ज़िंदगी को परेशानी और बेचैनी की चीज़ समझता हूं।[1]

हज़रत उक़्बा बिन अबिल ऐज़ार की रिवायत तारीख़ इब्ने जरीर में इस तरह है कि हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने ज़ी हुसुम मक़ाम में खड़े होकर बयान किया और अल्लाह की हम्द व सना बयान की और पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[2]

हज़रत उक़्बा बिन अबिल ऐज़ार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने बैज़ा मक़ाम में अपने साथियों में और हुर बिन यज़ीद के साथियों में बयान किया, पहले अल्लाह की हम्द व

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 193,
2. तारीख़ इब्ने जरीर, भाग 4, पृ० 305

सना बयान की, फिर फ़रमाया, ऐ लोगो ! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जो आदमी ऐसे ज़ालिम सुलतान को देखे जो अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों को हलाल समझे और अल्लाह से किए हुए वायदे को तोड़े और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत का मुख़ालिफ़ हो और अल्लाह के बन्दों के बारे में गुनाह और ज़्यादती के काम करता हो और फिर वह आदमी उस बादशाह को अपने फ़ेल और क़ौल से न बदले, तो अल्लाह पर हक़ होगा कि वह उसे इस जुर्म के लायक़ जगह यानी जहन्नम में दाख़िल करे।

ग़ौर से सुनो, इन लोगों ने शैतान की इताअत को लाज़िम पकड़ लिया है और रहमान की इताअत छोड़ दी है और फ़साद को ग़ालिब कर दिया है और अल्लाह की मुक़र्रर की हुई हदों को छोड़ दिया है और ग़नीमत के माल पर ख़ुद क़ब्ज़ा कर लिया है और अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों को हलाल और अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ों को हराम क़रार दे दिया है। इन लोगों को बदलने का सबसे ज़्यादा हक़ मुझ पर है।

तुम्हारे ख़त मेरे पास आए थे और तुम्हारे क़ासिद भी बराबर आते रहे कि तुम मुझसे बैअत होना चाहते हो और तुम मुझे बे-यार व मददगार नहीं छोड़ोगे। अब अगर तुम अपनी बैअत पर पूरे उतरते हो तो तुम्हें पूरी हिदायत मिलेगी और फिर मैं भी अली का बेटा हुसैन हूं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साहबज़ादी फ़ातिमा का बेटा हूं। मेरी जान तुम्हारी जान के साथ है और मेरे घरवाले तुम्हारे घरवालों के साथ हैं। तुम लोगों के लिए मैं बेहतरीन नमूना हूं और अगर तुमने ऐसा न किया और अह्द तोड़ दिया और मेरी बैअत को अपनी गरदन से उतार फेंका तो मेरी जान की क़सम ! ऐसा करना तुम लोगों के लिए कोई अजनबी और ऊपरी चीज़ नहीं है, बल्कि तुम लोग तो ऐसा मेरे वालिद, मेरे भाई और मेरे चचेरे भाई (मुस्लिम बिन अक़ील) के साथ कर चुके हो।

जो तुम लोगों से धोखा खाए, वह असल धोखे में पड़ा हुआ है। तुम लोग अपने हिस्से से चूक गए और तुमने (ख़ुशक़िस्मती में से)

अपना हिस्सा ज़ाया कर दिया और जो अह्द तोड़ेगा तो उसका नुक़्सान ख़ुद उसी को होगा और बहुत जल्द अल्लाह तुम लोगों से मुस्तग़्नी कर देगा, तुम लोगों की मुझे ज़रूरत न रहेगी। वस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू०

हज़रत यज़ीद बिन शजरा रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत यज़ीद बिन शजरा रज़ियल्लाहु अन्हु उन लोगों में से थे जिनका अमल उनके क़ौल की तस्दीक़ करता था। उन्होंने एक बार हममें बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो ! अल्लाह ने जो नेमतें तुम्हें दी हैं, उन्हें याद रखो और अल्लाह की ये नेमतें कितनी अच्छी हैं। हम लाल, हरे, पीले रंग-बिरंगे कपड़े देख रहे हैं और घरों में जो सामान है, वह इसके अलावा है।

हज़रत यज़ीद रज़ि० यह भी फ़रमाते थे कि जब लोग नमाज़ के लिए सफ़ें बना लेते हैं और लड़ाई के लिए सफ़ें बना लेते हैं तो आसमान के, जन्नत के और दोज़ख़ के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और मोटी आंखों वाली हूरें सजाई जाती हैं और वे झांक कर देखने लग जाती हैं। जब आदमी आगे बढ़ता है तो वे कहती हैं, ऐ अल्लाह ! इसकी मदद फ़रमा और जब आदमी पीठ फेरता है और पीछे हटता है तो वे इससे परदा कर लेती हैं और कहती हैं, ऐ अल्लाह ! इसकी मग़्फ़िरत फ़रमा, इसलिए तुम पूरे ज़ोर से लड़ो।

मेरे मां-बाप तुम पर क़ुरबान हों और मोटी आंखों वाली हूरों को रुसवा न करो, क्योंकि जब ख़ून का पहला क़तरा ज़मीन पर गिरता है तो उसने जितने गुनाह किए होते हैं, वे सब माफ़ हो जाते हैं और दो हूरें आसमान से उतरती हैं और उसके चेहरे को साफ़ करती हैं और कहती हैं, हमसे मुलाक़ात का वक़्त आ गया है। यह शहीद कहता है, तुम्हारे लिए भी मुलाक़ात का वक़्त क़रीब आ गया है, फिर इसे सौ जोड़े पहनाए जाते हैं जो बनी आदम की बुनाई के नहीं होते हैं, बल्कि जन्नत की पैदावार के होते हैं और वे इतने बारीक और लतीफ़ होते हैं कि वे

सौ जोड़े दो उंगलियों के दर्मियान रख दिए जाएं तो सारे दोनों के दर्मियान आ जाएं और हज़रत यज़ीद फ़रमाया करते थे कि मुझे बताया गया है कि तलवारें जन्नत की चाबियां हैं।[1]

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत यज़ीद बिन शजरा रबादी रज़ियल्लाहु अन्हु शाम के गवर्नरों में से एक गवर्नर थे। हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु उन्हें फ़ौजों का अमीर बनाया करते थे। एक दिन उन्होंने हम लोगों में बयान फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो ! अल्लाह ने जो नेमतें अता फ़रमाई हैं, उन्हें याद रखो। अगर तुम ग़ौर से देखो तो तुम्हें भी वे काली, लाल, हरी और उजली, रंग-बिरंगी नेमतें नज़र आएंगी जो मुझे नज़र आ रही हैं और घरों में भी कितनी नेमतें हैं। और जब नमाज़ खड़ी होती है, तो आसमान के, जन्नत के और जहन्नम के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और हूरों को सजाया जाता है और वे ज़मीन की तरफ़ झांकती हैं (और जब लड़ाई के मैदान में लोग सफ़ें बनाते हैं, तो उस वक़्त भी यह सब कुछ होता है) और जब मुसलमान लड़ाई की ओर मुतवज्जह होकर आगे बढ़ता है, तो वे हूरें कहती हैं, ऐ अल्लाह ! इसको जमा दे। ऐ अल्लाह ! इसकी मदद फ़रमा और जब कोई पीठ फेरकर मैदान से भागता है, तो वे हूरें उससे परदा कर लेती हैं और कहती हैं, ऐ अल्लाह ! इसकी मग़्फ़िरत फ़रमा। ऐ अल्लाह ! इस पर रहम फ़रमा, इसलिए तुम दुश्मन के चेहरों पर पूरे ज़ोर से हमला करो; मेरे मां-बाप तुम पर क़ुरबान हों।

जब कोई आगे बढ़ते हुए घायल होकर गिरता है तो ख़ून के पहले क़तरे के गिरते ही उसके गुनाह ऐसे गिर जाते हैं जैसे पतझड़ में पेड़ों के पत्ते गिरते हैं और मोटी आंखों वाली दो हूरें उतर कर उसके पास आती हैं और उसके चेहरे से गर्द व ग़ुबार साफ़ करती हैं। वह उन दोनों से कहता है, मैं तुम दोनों के लिए हूं। वे कहती हैं, नहीं, हम दोनों आपके लिए हैं और उसे ऐसे सौ जोड़े पहनाए जाते हैं कि अगर उन्हें इकट्ठे होकर के मेरी

---

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 294

इन दो उंगलियों (बीच की और शहादत की उंगलियों) के बीच रखा जाए तो यह बारीकी और लताफ़त की वजह से सारे उनके बीच आ जाएं और वे बनी आदम के बुने हुए नहीं हैं, बल्कि जन्नत के कपड़ों में से हैं।

तुम लोगों के नाम, निशानियां, हुलिए, तंहाई की बातें और मज्लिसें सब चीज़ें अल्लाह के पास लिखी हुई हैं। जब क़ियामत का दिन आएगा, तो किसी से कहा जाएगा, ऐ फ़्लाने ! यह तेरा नूर है और किसी से कहा जाएगा, ऐ फ़्लाने तेरे लिए कोई नूर नहीं है और जैसे समुद्र का साहिल होता है, ऐसे ही जन्नत का भी साहिल है। वहां कीड़े-मकोड़े, हशरातुलअर्ज़ और खजूर के पेड़ जितने लम्बे सांप और खच्चर के बराबर बिच्छू हैं। जब जहन्नम वाले अल्लाह से फ़रियाद करेंगे कि हमारा जहन्नम का अज़ाब हलका कर दिया जाए, तो उनसे कहा जाएगा कि जहन्नम से निकलकर साहिल पर चले जाओ।

वे निकलकर वहां आ जाएंगे, तो वे कीड़े-मकोड़े हशरातुलअर्ज़ उनके होंठों, चेहरों और दूसरे अंगों को पकड़ लेंगे और उन्हें नोंच खाएंगे, तो अब वे फ़रियाद करने लगेंगे कि हमें उनसे छुड़ाया जाए और जहन्नम में वापस जाने दिया जाए और जहन्नम वालों पर ख़ारिश का अज़ाब भी मुसल्लत किया जाएगा और जहन्नमी इतना खुजाएगा कि उसकी हड्डी नंगी हो जाएगी। फ़रिश्ता कहेगा, ऐ फ़्लाने ! क्या तुझे इस ख़ारिश से तक्लीफ़ हो रही है ? वह कहेगा, हां। फ़रिश्ता कहेगा, तू जो मुसलमानों को तक्लीफ़ दिया करता था, यह उसके बदले में है।[1]

हज़रत उमैर बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान

हज़रत सईद बिन सुवैद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमैर बिन साद रज़ियल्लाहु अनहु नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में से थे, वह हिम्स के गवर्नर थे। वह मिंबर पर फ़रमाया करते थे। ग़ौर से सुनो ! इस्लाम की एक मज़बूत दीवार है और उसका

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 494, इसाबा, भाग ३, पृ० 658,

एक मज़बूत दरवाज़ा है। इस्लाम की दीवार अद्ल व इंसाफ़ है और उसका दरवाज़ा हक़ है, इसलिए जब दीवार तोड़ दी जाएगी और दरवाज़े के टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएंगे, तो इस्लाम मफ़्तूह हो जाएगा और जब तक सुलतान मज़बूत होगा, इस्लाम मज़बूत रहेगा और बादशाह की ताक़त तलवार से क़त्ल करने या कोड़े मारने से नहीं है, बल्कि हक़ के फ़ैसले करने और अद्ल व इंसाफ़ करने से है।[1]

हज़रत उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिद हज़रत साद बिन उबैद अल क़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान

हज़रत साद बिन उबैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों में बयान फ़रमाया, तो इर्शाद फ़रमाया, क़ल दुश्मन से हमारी मुठभेड़ होगी और कल हम शहीद हो जाएंगे, इसलिए हमारे जिस्म पर जो ख़ून लगा हुआ होगा, उसे मत धोना और हमारे जिस्म पर जो कपड़े होंगे, वही हमारे कफ़न होंगे।[2]

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान

हज़रत सलमा बिन सबरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुल्क शाम में हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु ने हम लोगों में बयान फ़रमाया, तो इर्शाद फ़रमाया, तुम लोग ईमान वाले हो, तुम लोग जन्नती हो। अल्लाह की क़सम ! मुझे उम्मीद है कि तुम लोगों ने रूम व फ़ारस के जिन लोगों को क़ैदी बना लिया है, अल्लाह उन्हें भी जन्नत में दाख़िल करेगा और इसकी वजह यह है कि इनमें से कोई जब तुम्हारा कोई काम कर देता है, तो तुम शुक्रिए में उसे यह तारीफ़ी और दुआ भरे कलिमे कहते हो। तुमने अच्छा किया, तुम पर अल्लाह रहम फ़रमाए। तुमने अच्छा किया, तुमको अल्लाह बरकत अता फ़रमाए। (तुम्हारी इन दुआओं की बरकत से) अल्लाह उन्हें ईमान देकर जन्नत में दाख़िल कर देगा।

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 375
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 458

फिर हज़रत मुआज़ रज़ि० ने यह आयत पढ़ी—

وَ يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ آمَنُوْا وَ عَمِلُوْا الصَّالِحَاتِ وَ يَزِيْدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ (سورت شوریٰ آیت ۲۶)

'और (अल्लाह) उन लोगों की इबादत क़ुबूल करता है, जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए और उनको अपने फ़ज़्ल से और ज़्यादा (सवाब) देता है।'[1] (सूरः शूरा, आयत 26)

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान

हज़रत हौशब फ़ज़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु को मिंबर पर बयान में यह फ़रमाते हुए सुना कि मैं उस दिन से बहुत डरता हूं जिस दिन मेरा रब मुझे पुकार कर कहेगा, ऐ उवैमर ! मैं कहूंगा लब्बैक ! फिर मेरा रब कहेगा, तूने अपने इल्म पर क्या अमल किया ? अल्लाह की किताब की वह आयत भी आएगी जो किसी बुरे अमल से रोकने वाली है और वह आयत भी आएगी जो किसी नेक अमल का हुक्म देने वाली है और हर आयत मुझसे अपने हक़ की मांग करेगी। अब अगर मैंने उस नेक अमल को नहीं किया होगा तो वह हुक्म देने वाली आयत मेरे ख़िलाफ़ गवाही देगी और अगर मैंने उस बुरे काम को नहीं छोड़ा होगा तो वह रोकने वाली आयत मेरे ख़िलाफ़ गवाही देगी। अब बताओ मैं कैसे छूट सकता हूं।[2]

---

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 115,
2. कंज़, भाग 7, पृ० 78,

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम किस तरह सफ़र और हज़र में लोगों को वाज़ व नसीहत किया करते थे और दूसरों की नसीहत क़ुबूल किया करते थे और किस तरह दुनिया की ज़ाहिरी चीज़ों और उसकी लज़्ज़तों से निगाह हटा कर आख़िरत की नेमतों और लज़्ज़तों की तरफ़ फेर लेते थे और अल्लाह से इस तरह डराते थे कि आंखों से आंसू जारी हो जाते और दिल डरने लग जाते, गोया कि आख़िरत उनके सामने एक नुमायां और खुली हुई हक़ीक़त थी और महशर के हालात उनकी आंखों के सामने हर वक़्त रहते थे और वे किस तरह अपने वाज़ व नसीहत के ज़रिए उम्मते मुहम्मदिया के हाथों को पकड़ कर उन्हें आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले की तरफ़

मुतवज्जह करते और इस तरह अपने वाज़ व नसीहत के ज़रिए शिर्के जली और ख़फ़ी की तमाम बारीक रगों को काट देते।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नसीहतें

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के सहीफ़े (किताबें) क्या थे ?

आपने फ़रमाया, उन सहीफ़ों में सिर्फ़ मिसालें और नसीहतें थीं (जैसे उनमें यह मज़्मून भी था) ऐ मुसल्लत होने वाले बादशाह ! जिसे आज़माइश में डाला जा चुका है और जो धोखे में पड़ा हुआ है, मैंने तुझे इसलिए नहीं भेजा था कि तू जमा करके दुनिया के ढेर लगा ले, मैंने तो तुझे इसलिए भेजा था कि किसी मज़्लूम की बद्-दुआ को मेरे पास न आने दे, क्योंकि जब किसी मज़्लूम की बद्-दुआ मेरे पास पहुंच जाती है, तो फिर मैं उसे रद्द नहीं करता, चाहे वह मज़्लूम काफ़िर ही क्यों न हो और जब तक अक़्लमंद आदमी की अक़्ल मग़्लूब न हो जाए, उस वक़्त तक उसे चाहिए कि वह अपने औक़ात की तक़्सीम करे। कुछ वक़्त अपने रब से राज़ व नियाज़ की बातें करने के लिए होना चाहिए, कुछ वक़्त अपने नफ़्स के मुहासबे के लिए होना चाहिए, कुछ वक़्त अल्लाह की कारीगरी और उसकी मख़्लूक़ात में ग़ौर व फ़िक्र करने के लिए होना चाहिए और कुछ वक़्त खाने-पीने की ज़रूरतों के लिए फ़ारिग़ होना चाहिए।

और अक़्लमंद को चाहिए कि सिर्फ़ तीन कामों के लिए सफ़र करे या तो आख़िरत का तोशा बनाने के लिए या अपनी रोज़ी ठीक करने के लिए या किसी हलाल लज़्ज़त और राहत को हासिल करने के लिए और

अक़्लमंद को चाहिए कि वह अपने ज़माने (के हालात) पर निगाह रखे और अपनी हालत की तरफ़ मुतवज्जह रहे और अपनी ज़ुबान की हिफ़ाज़त करे और जो भी अपनी बातों का अपने अमल से मुहासबा करेगा वह कोई बेकार बात नहीं करेगा, बल्कि सिर्फ़ मक़्सद की बात करेगा।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के सहीफ़े क्या थे? आपने फ़रमाया, इनमें सब इबरत की बातें थीं (जैसे उनमें यह मज़्मून भी था कि) मुझे उस आदमी पर ताज्जुब है जिसे मौत का यक़ीन है और वह फिर ख़ुश होता है। मुझे उस आदमी पर ताज्जुब है, जिसे जहन्नम का यक़ीन है और वह फिर हंसता है। मुझे उस आदमी पर ताज्जुब है जिसे तक़्दीर का यक़ीन है और वह फिर अपने आपको बिला ज़रूरत थकाता है। मुझे उस आदमी पर ताज्जुब है, जिसने दुनिया को देखा और यह भी देखा कि दुनिया आनी-जानी चीज़ है, एक जगह रहती नहीं और फिर मुतमइन होकर उससे दिल लगाता है। मुझे उस आदमी पर ताज्जुब है जिसे कल क़ियामत के हिसाब-किताब पर यक़ीन है और फिर अमल नहीं करता।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप मुझे कुछ वसीयत फ़रमा दें। आपने फ़रमाया, मैं तुम्हें अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूं, क्योंकि यह तमाम कामों की जड़ है।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! कुछ और फ़रमा दें। आपने फ़रमाया, क़ुरआन की तिलावत और अल्लाह के ज़िक्र की पाबन्दी करो, क्योंकि यह ज़मीन पर तुम्हारे लिए नूर है और आसमान में तुम्हारे लिए ज़ख़ीरा है।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! कुछ और फ़रमा दें। आपने फ़रमाया, ज़्यादा हंसने से बचो, क्योंकि इससे दिल मुर्दा हो जाता है और चेहरे का नूर जाता रहता है।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! कुछ और फ़रमा दें।

आपने फ़रमाया, जिहाद को लाज़िम पकड़ लो, क्योंकि यही मेरी उम्मत की रहबानियत है।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! कुछ और फ़रमा दें। आपने फ़रमाया, ज़्यादा देर ख़ामोश रहा करो, क्योंकि इससे शैतान दूर हो जाता है और इससे तुम्हें दीन के काम में मदद मिलेगी।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे कुछ और फ़रमा दें। आपने फ़रमाया, मिस्कीनों से मुहब्बत रखो और उनके साथ उठना-बैठना रखो।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! कुछ और फ़रमा दें। आपने फ़रमाया, (दुन्यावी माल व दौलत और साज़ व सामान में) हमेशा अपने से नीचे वाले को देखा करो, ऊपर वाले को मत देखा करो, क्योंकि इस तरह करने से तुम अल्लाह की दी हुई नेमतों को हक़ीर नहीं समझोगे।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! कुछ और फ़रमा दें। आपने फ़रमाया, हक़ बात कहो, चाहे वह कड़वी क्यों न हो।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! कुछ और फ़रमा दें। आपने फ़रमाया, जब तुम्हें अपने ऐब मालूम हैं, तो दूसरों (के ऐब देखने) से रुक जाओ और जो बुरे काम तुम ख़ुद करते हो, उनकी वजह से दूसरों पर नाराज़ मत हो। तुम्हें ऐब लगाने के लिए यह बात काफ़ी है कि तुम अपने ऐबों को तो जानते नहीं और दूसरों में ऐब तलाश कर रहे हो और जिन हरकतों को ख़ुद करते हो, उनकी वजह से दूसरों पर नाराज़ होते हो।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने मेरे सीने पर हाथ मारकर फ़रमाया, ऐ अबूज़र ! अच्छे उपाय के बराबर कोई अक़्लमंदी नहीं और नाजायज़, मुश्तबहा और नामुनासिब कामों से रुकने के बराबर कोई तक़्वा नहीं और हुस्ने अख़्लाक़ जैसी कोई ख़ानदानी शराफ़त नहीं।[1]

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 473, हुलीया, भाग 1, पृ० 166, कंज़, भाग 8, पृ० 201,

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा से पूछा, तुम्हारी और तुम्हारे बाल-बच्चों और माल व अमल की क्या मिसाल है? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं। आपने फ़रमाया, तुम्हारी और तुम्हारे बाल-बच्चों की मिसाल, माल और अमल की मिसाल उस जैसी है जिसके तीन भाई हों। जब उसकी मौत का वक़्त क़रीब आया, तो उसने भाइयों को बुलाकर एक भाई से कहा, तुम देख ही रहे हो, मेरे मरने का वक़्त क़रीब आ गया है, अब तुम मेरे क्या काम आ सकते हो?

उसने कहा, मैं तुम्हारे यह काम आ सकता हूं कि मैं तुम्हारी देखभाल करूंगा और तुम्हारी ख़िदमत से उकताऊंगा नहीं और तुम्हारा हर काम करूंगा और जब तुम मर जाओगे, तुम्हें ग़ुस्ल दूंगा और तुम्हें कफ़न पहनाऊंगा और दूसरों के साथ तुम्हारे जनाज़े को उठाऊंगा, कभी तुम्हें उठाऊंगा और कभी रास्ते की तक्लीफ़ देने वाली चीज़ तुमसे हटाऊंगा और जब दफ़ना कर वापस आऊंगा तो पूछने वालों के सामने तुम्हारी ख़ूबियां बयान करके तुम्हारी तारीफ़ करूंगा। उसका यह भाई तो उसके बाल-बच्चे और रिश्तेदार हैं। इस भाई के बारे में तुम लोगों का क्या ख़्याल है? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इसके कोई ख़ास फ़ायदे की बात तो हमने सुनी नहीं।

आपने फ़रमाया, फिर उसने अपने दूसरे भाई से कहा, क्या तुम देख रहे हो कि मौत की मुसीबत मेरे सर पर आ गई है, तो अब तुम मेरे क्या काम आ सकते हो? उसने कहा, जब तक आप ज़िंदा हैं, मैं तो उसी वक़्त तक आपके काम आ सकूंगा। जब आप मर जाओगे तो आपका रास्ता अलग और मेरा रास्ता अलग। यह भाई उसका माल है, यह तुम्हें कैसा लगा? सहाबा रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इसके फ़ायदे की कोई बात तो हमारे सुनने में तो नहीं आई।

आपने फ़रमाया, फिर उसने तीसरे भाई से कहा, तुम देख ही रहे हो, मौत मेरे सर पर आ गई है और तुमने मेरे बाल-बच्चों और माल का

जवाब भी सुन लिया है, तो अब तुम मेरे काम आ सकते हो? उसने कहा, मैं क़ब्र में तुम्हारा साथी रहूंगा और वहशत में तुम्हारा जी लगाऊंगा और आमाल तुलने के दिन तराज़ू में बैठकर उसे भारी करूंगा। यह भाई उसका अमल है। इसके बारे में तुम लोगों का क्या ख़्याल है? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह बेहतरीन भाई और बेहतरीन साथी है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बात भी इसी तरह है।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन कुर्ज़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने खड़े होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या आप मुझे इस बात की इजाज़त देते हैं कि मैं इस मिसाल के बारे में कुछ शेर (पद) कहूं? आपने फ़रमाया, हां, इजाज़त है।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० चले गए और एक ही रात के बाद शेर (पद) तैयार करके हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उन्हें देखकर लोग भी जमा हो गए। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० के सामने खड़े होकर ये शेर पढ़े—

فَإِنِّي وَأَهْلِي وَالَّذِي قَدَّمَتْ يَدِي   كَدَاعٍ إِلَيْهِ صَحْبَهُ ثُمَّ قَائِلِ
لِإِخْوَتِهِ إِذْ هُمْ ثَلَاثَةُ إِخْوَةٍ   أَعِينُوا عَلَى أَمْرٍ بِيَ الْيَوْمَ نَازِلِ

'मैं और मेरे बाल-बच्चे और मेरे वे अमल जो मेरे हाथों ने आगे भेज दिए हैं, उन सबकी मिसाल ऐसी है कि जैसे एक आदमी के तीन भाई थे। उसने साथियों और भाइयों को बुलाकर उनसे कहा, आज मुझ पर मौत की मुसीबत आने वाली है, इस बारे में मेरी मदद करो।'

فِرَاقٌ طَوِيلٌ غَيْرُ مُتَّشَقٍ بِهِ   فَمَاذَا لَدَيْكُمْ فِي الَّذِي هُوَ غَائِلِ

'बहुत लम्बी जुदाई है, जिसका कोई भरोसा नहीं। अब बताओ उस हलाक करने वाली मौत के बारे में तुम लोग मेरी क्या मदद कर सकते हो?

فَقَالَ امْرُؤٌ مِنْهُمْ أَنَا الصَّاحِبُ الَّذِي   أُطِيعُكَ فِيمَا شِئْتَ قَبْلَ التَّزَايُلِ

'उन तीनों में से एक बोला कि मैं तुम्हारा साथी हूं, लेकिन जुदा होने से पहले तुम जो कहोगे, तुम्हारी वह बात मानूंगा।'

فَأَمَّا إِذَا جَدَّ الْفِرَاقُ فَإِنَّنِي   لِمَا بَيْنَنَا مِنْ خُلَّةٍ غَيْرُ وَاصِلِ

'और जब जुदाई हो जाएगी, तो फिर मैं आपस की दोस्ती को बाक़ी नहीं रख सकता, उसे नहीं निबाह सकता।'

فَخُذْ مَا أَرَدْتَ الْآنَ مِنِّيْ فَإِنَّنِيْ سَيُسْلَكُ بِيْ فِيْ مَهِيْلٍ مِّنْ مَّهَائِلِ

'अब तो तुम मुझसे जो चाहे ले लो, लेकिन जुदाई के बाद मुझे किसी हौलनाक रास्ते पर चला दिया जाएगा, फिर कुछ नहीं ले सकोगे।'

فَإِنْ تُبْقِنِيْ لَا تُبْقِ فَاسْتَنْفِدَنَّنِيْ وَعَجِّلْ صَلَاحًا قَبْلَ حَتْفٍ مُّعَاجِلِ

'फिर अगर तुम मुझे बाक़ी रखना चाहोगे तो बाक़ी नहीं रख सकोगे, इसलिए मुझे ख़र्च करके ख़त्म कर दो और जल्द आने वाली मौत से पहले जल्दी से अपने अमल ठीक कर लो।'

وَقَالَ امْرُؤٌ قَدْ كُنْتُ جِدًّا أُحِبُّهُ وَأُوْثِرُهُ مِنْ بَيْنِهِمْ فِي التَّفَاضُلِ

'फिर वह आदमी बोला, जिससे मुझे बहुत मुहब्बत थी और ज़्यादा देने और बढ़ाने में मैं उसे बाक़ी तमाम लोगों पर तर्जीह देता था।'

غَنَائِيْ أَنِّيْ جَاهِدٌ لَكَ نَاصِحٌ إِذَا جَدَّ جِدُّ الْكَرْبِ غَيْرُ مُقَاتِلِ

'उसने कहा, मैं आपका इतना काम कर सकता हूं कि जब परेशान करने वाली मौत वाक़े हो जाएगी, तो आपको बचाने की कोशिश करूंगा, आपका भला चाहूंगा, लेकिन मैं आपकी तरफ़ से लड़ नहीं सकूंगा।'

وَلٰكِنَّنِيْ بَاكٍ عَلَيْكَ وَمُعْوِلٌ وَمُثْنٍ بِخَيْرٍ عِنْدَ مَنْ هُوَ سَائِلِ

'अलबत्ता आपके मरने पर रोऊंगा और ख़ूब ऊंची आवाज़ से रोऊंगा और आपके बारे में जो भी पूछेगा, मैं उसके सामने आपकी ख़ूबियां बयान करके आपकी तारीफ़ करूंगा।'

وَمُتَّبِعُ الْمَاشِيْنَ أَمْشِيْ مُشَيِّعًا أُعِيْنُ بِرِفْقٍ عُقْبَةً كُلَّ حَامِلِ

'और आपके जनाज़े को लेकर जो लोग चलेंगे, मैं भी रुख़्सत करने के लिए उनके पीछे चलूंगा और हर उठाने वाले की बारी में नर्मी से उठाकर मैं उसकी मदद करूंगा।'

إِلٰى بَيْتِ مَثْوَاكَ الَّذِيْ أَنْتَ مُدْخَلٌ أُرَجِّعُ مَقْرُوْنًا بِمَا هُوَ شَاغِلِ

'मैं जनाज़े के साथ उस घर तक जाऊंगा जो आपका ठिकाना है,

जिसमें लोग आपको दाख़िल कर देंगे, फिर वापस आकर मैं उन कामों में लग जाऊंगा जिनमें मैं मशग़ूल था।'

كَأَنْ لَمْ يَكُنْ بَيْنِي وَبَيْنَكَ خُلَّةٌ   وَلَا حُسْنُ وُدٍّ مَرَّةً فِي التَّبَاذُلِ

'और कुछ ही दिनों के बाद ऐसी हालत हो जाएगी कि गोया मेरे और तेरे दर्मियान कोई दोस्ती ही नहीं थी और न ही कोई उम्दा मुहब्बत थी, जिसकी वजह से हम एक दूसरे पर ख़र्च करते थे।'

فَذَلِكَ أَهْلُ الْمَرْءِ ذَاكَ غَنَاؤُهُمْ   وَلَيْسَ وَإِنْ كَانُوا حِرَاصًا بِطَائِلِ

'ये मरने वाले के बाल-बच्चे और रिश्तेदार हैं। ये बस इतना ही काम आ सकते हैं। अगरचे इन्हें मरने वाले को फ़ायदा पहुंचाने का बहुत तक़ाज़ा है, लेकिन ये इससे ज़्यादा फ़ायदा नहीं पहुंचा सकते।'

وَقَالَ امْرُؤٌ مِنْهُمْ أَنَا الْأَخُ لَا تَرَى   أَخَا لَكَ مِثْلِي عِنْدَ كَرْبِ الزَّلَازِلِ

'उनमें से तीसरे भाई ने कहा, मैं आपका असली भाई हूं और हिला देने वाली परेशानी यानी मौत के आने पर आपको तेरे जैसा कोई भाई नज़र नहीं आएगा।'

لَدَى الْقَبْرِ تَلْقَانِي هُنَالِكَ قَاعِدًا   أُجَادِلُ عَنْكَ الْقَوْلَ رَجْعَ التَّجَادُلِ

'आप मुझे क़ब्र के पास मिलेंगे, मैं वहां बैठा हुआ हूंगा और बातों में आपकी तरफ़ से झगड़ा करूंगा और हर सवाल का जवाब दूंगा।'

وَأَقْعُدُ يَوْمَ الْوَزْنِ فِي الْكِفَّةِ الَّتِي   تَكُونُ عَلَيْهَا جَاهِدًا فِي التَّثَاقُلِ

'और आमाल तोले जाने के दिन यानी क़ियामत के दिन उस पलड़े में बैठूंगा, जिसको भारी करने की आप पूरी कोशिश कर रहे होंगे।'

فَلَا تَنْسَنِي وَاعْلَمْ مَكَانِي فَإِنَّنِي   عَلَيْكَ شَفِيقٌ نَاصِحٌ غَيْرُ خَاذِلِ

'इसलिए आप मुझे भुला न देना और मेरे मरतबे को जान लो, क्योंकि मैं आपका बड़ा शफ़ीक़ (मेहरबान) और भलाई चाहने वाला हूं और कभी आपको बे-यार व मददगार नहीं छोड़ूंगा।'

فَذَلِكَ مَا قَدَّمْتَ مِنْ كُلِّ صَالِحٍ   تُلَاقِيهِ إِنْ أَحْسَنْتَ يَوْمَ التَّوَاصُلِ

'ये आपके वे नेक आमाल हैं, जो आपने आगे भेजे हैं। अगर आप

उनको अच्छी तरह करेंगे तो एक दूसरे से मुलाक़ात के दिन यानी क़ियामत के दिन आपकी उन आमाल से मुलाक़ात हो जाएगी।'

ये शेर सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी रोने लगे और सारे मुसलमान भी। उसके बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन करज़ रज़ि० मुसलमानों की जिस जमाअत के पास से गुज़रते, वे उन्हें बुलाकर उनसे इन शेरों की फ़रमाइश करते और जब हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० उन्हें शेर सुनाते तो वे सब रोने लग जाते।[1]

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें

एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक आदमी को यह नसीहत फ़रमाई, लोगों में लगकर अपने से ग़ाफ़िल न हो जाओ, क्योंकि तुमसे अपने बारे में पूछा जाएगा, लोगों के बारे में नहीं पूछा जाएगा। इधर-उधर फिरकर दिन न गुज़ार दिया करो, क्योंकि तुम जो भी अमल करोगे, वह महफ़ूज़ कर लिया जाएगा। जब तुमसे कोई बुरा काम हो जाया करे, तो उसके बाद फ़ौरन कोई नेकी का काम कर लिया करो, क्योंकि जिस तरह नई नेकी पुराने गुनाह को बहुत ज़्यादा तलाश करती है और उसे जल्दी से पा लेती है। इस तरह उससे ज़्यादा तलाश करने वाली मैंने कोई चीज़ नहीं देखी।[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जो चीज़ तुम्हें तक्लीफ़ देती है, इससे तुम किनारा कशी अख़्तियार कर लो और नेक आदमी को दोस्त बनाओ, लेकिन ऐसा आदमी मुश्किल से मिलेगा और अपने मामलों में उन लोगों से मश्विरा लो, जो अल्लाह से डरते हैं।[3]

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों के लिए अठारह बातें

1. कंज़, भाग 8, पृ० 124, इसाबा, भाग 2, पृ० 36
2. कंज़, भाग 8, पृ० 208
3. कंज़, भाग 8, पृ० 208

मुक़र्रर कीं, जो सबकी सब हिक्मत व दानाई की बातें थीं। उन्होंने फ़रमाया—

1. जो तुम्हारे बारे में अल्लाह की नाफ़रमानी करे, तुम उसे उस जैसी और कोई सज़ा नहीं दे सकते कि तुम उसके बारे में अल्लाह की इताअत करो,

2. और अपने भाई की बात को किसी अच्छे रुख़ की तरफ़ ले जाने की पूरी कोशिश करो, हां, अगर वह बात ही ऐसी हो कि उसे अच्छे रुख़ की तरफ़ ले जाने की तुम कोई शक्ल न बना सको तो और बात है,

3. और मुसलमान की ज़ुबान से जो बोल भी निकला है और तुम उसका कोई भी ख़ैर का मतलब निकाल सकते हो, तो इससे बुरे मतलब का गुमान मत करो,

4. जो आदमी ख़ुद ऐसे काम करता है जिससे दूसरों को बदगुमानी का मौक़ा मिले, तो वह अपने से बदगुमानी करने वाले को हरगिज़ मलामत न करे,

5. जो अपने राज़ को छिपाएगा, अख़्तियार उसके हाथ में रहेगा,

6. और सच्चे भाइयों के साथ रहने को लाज़िम पकड़ो, उनके भले साए में ज़िंदगी गुज़ारो, क्योंकि वुसअत और अच्छे हालात में वे लोग तुम्हारे लिए ज़ीनत का ज़रिया और मुसीबत में हिफ़ाज़त का सामान होंगे,

7. और हमेशा सच बोलो, चाहे सच बोलने से जान ही चली जाए।

8. बे-फ़ायदा और बेकार कामों में न लगो,

9. जो बात अभी पेश नहीं आई, उसके बारे में मत पूछो, क्योंकि जो पेश आ चुका है, उसके तक़ाज़ों से ही कहां फ़ुर्सत मिल सकती है,

10. अपनी ज़रूरत उसके पास न ले जाओ, जो यह नहीं चाहता कि तुम उसमें कामियाब हो जाओ।

11. झूठी क़सम को हलका न समझो, वरना अल्लाह तुम्हें हलाक कर देंगे,

12. बदकारों के साथ न रहो, वरना तुम उनसे बदकारी सीख लोगे।

13. अपने दुश्मन से अलग रहो।

14. अपने दोस्त से भी चौकन्ने रहो, लेकिन अगर वह अमानतदार है, तो फिर इसकी ज़रूरत नहीं और अमानतदार सिर्फ़ वही हो सकता है जो अल्लाह से डरने वाला हो।

15. और क़ब्रस्तान में जाकर ख़ुशूअ अख़्तियार करो।

16. और जब अल्लाह की फ़रमांबरदारी का काम करो तो आजिज़ी और तवाज़ोअ अख़्तियार करो,

17. और जब अल्लाह की नाफ़रमानी हो जाए तो अल्लाह की पनाह चाहो।

18. और अपने तमाम मामलों में उन लोगों से मश्विरा कर लिया करो जो अल्लाह से डरते हैं, क्योंकि अल्लाह फ़रमाते हैं—

إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ (سورت فاطر آیت ۲۸)

'ख़ुदा से उसके वही बन्दे डरते हैं जो (उसकी अज़्मत का) इल्म रखते हैं।'[1] (सूरः फ़ातिर, आयत 28)

हज़रत मुहम्मद बिन शहाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, लायानी कामों में न लगो और अपने दुश्मन से किनाराकशी अख़्तियार कर लो और अपने दोस्त से अपनी हिफ़ाज़त करो, लेकिन अगर वह अमानतदार है, तो फिर ज़रूरत नहीं, क्योंकि अमानतदार इंसान के बराबर कोई चीज़ नहीं हो सकती और किसी बदकार की सोहबत में न रहो, वरना वह तुम्हें भी बदकारी सिखा देगा और किसी बदकार को अपना राज़दार न बनाओ अपने तमाम कामों में उन लोगों से मश्विरा लो जो अल्लाह से डरते हैं।[2]

हज़रत समुरा बिन जुन्दुब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मर्द भी तीन क़िस्म के होते हैं और औरतें भी तीन क़िस्म की होती है—

1. कंज़, भाग 8, पृ० 235,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 55,

1. एक औरत तो वह है, जो पाक दामन, मुसलमान, नर्म तबियत, मुहब्बत करने वाली, ज़्यादा बच्चे देने वाली हो और ज़माने के फ़ैशन के ख़िलाफ़ अपने घरवालों की मदद करती हो (सादा रहती हो) और घरवालों को छोड़कर ज़माने के फ़ैशन पर न चलती हो, लेकिन तुम्हें ऐसी औरतें कम मिलेंगी।

2. दूसरी औरत वह है जो शौहर से बहुत ज़्यादा मांगें करती हो और बच्चे जनने के अलावा उसका और कोई काम नहीं।

3. तीसरी वह औरत है जो शौहर के गले का तौक़ हो और जूं की तरह चिमटी हुई हो, (यानी बदअख़्लाक़ भी हो और उसका मह्र भी ज़्यादा हो, जिसकी वजह से उसका शौहर उसे छोड़ न सकता हो।) ऐसी औरत को अल्लाह जिसकी गरदन में चाहते हैं, डाल देते हैं और जब चाहते हैं, उसकी गरदन से उतार लेते हैं। और मर्द तीन क़िस्म के होते हैं—

1. एक पाक-दामन, नर्म मिज़ाज, नर्म तबियत, दुरुस्त राय वाला, अच्छे मश्विरे देने वाला, जब उसे कोई काम पेश आता है, तो ख़ुद सोचकर फ़ैसला करता है और हर काम को उसकी जगह रखता है।

2. दूसरा वह मर्द है जो समझदार नहीं। उसकी अपनी कोई राय नहीं है, लेकिन जब उसे कोई काम पेश आता है, तो वह समझदार, दुरुस्त राय वाले लोगों से जाकर मश्विरा लेता है और उनके मश्विरे पर अमल करता है।

3. तीसरा वह मर्द जो हैरान व परेशान हो, उसे सही और ग़लत का पता नहीं चलता, यों ही हलाक हो जाता है, क्योंकि अपनी समझ पूरी नहीं और समझदार और सही मश्विरा देने वालों की मानता नहीं।[1]

हज़रत अहनफ़ बिन क़ैस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझसे फ़रमाया, ऐ अहनफ़ ! जो आदमी ज़्यादा हंसता है, उसका रौब कम हो जाता है, जो मज़ाक़ ज़्यादा करता है, लोग उसे हल्का और बे-हैसियत समझते हैं, जो बातें ज़्यादा करता है,

1. कंज़, भाग 8, पृ० 235,

उसकी लग़्ज़िशें ज़्यादा हो जाती हैं। जिसकी लग़्ज़िशें ज़्यादा हो जाती हैं, उसकी हया कम हो जाती है और जिसकी हया कम हो जाती है उसकी परहेज़गारी कम हो जाती है और जिसकी परहेज़गारी कम हो जाती है, उसका दिल मुर्दा हो जाता है।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जो ज़्यादा हंसता है, उसका रौब कम हो जाता है और जो मज़ाक़ ज़्यादा करता है, लोगों की निगाह में वह बे-हैसियत हो जाता है और जो किसी काम को ज़्यादा करता है, वह उसी काम के साथ मशहूर हो जाता है। इसके बाद पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया है।[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, अल्लाह के कुछ बन्दे ऐसे हैं जो बातिल को पूरी तरह छोड़कर उसे मिटा देते हैं और हक़ का बार-बार ज़िक्र करके उसे ज़िंदा करते हैं। जब उन्हें किसी अमल की तर्ग़ीब दी जाती है, तो वे उसका असर लेते हैं और उस अमल का उनमें शौक़ पैदा हो जाता है और जब उन्हें अल्लाह के गुस्से और अज़ाब से डराया जाता है, तो वे डर जाते हैं और डर की वजह से वे कभी बे-ख़ौफ़ नहीं होते हैं। जिन चीज़ों को उन्होंने आंख से नहीं देखा, उन्हें वे यक़ीन की ताक़त से देख लेते हैं और यक़ीन को उन ग़ैबी मामलों के साथ मिलाते हैं, जिनसे वे कभी अलग नहीं होते। अल्लाह के ख़ौफ़ ने उनको ऐबों से बिल्कुल पाक-साफ़ कर दिया। हमेशा बाक़ी रहने वाली नेमतों की वजह से दुनिया की फ़ानी लज़्ज़तों को छोड़ देते हैं, दुनिया की ज़िंदगी उनके लिए नेमत है और मौत उनके लिए इज़्ज़त की वजह है और बड़ी आंखों वाली हूरों से उनकी शादी की जाएगी और हमेशा नव उम्र रहने वाले लड़के उनकी ख़िदमत करेंगे।[3]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, तुम अल्लाह की किताब

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 302,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 235,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 55

के बरतन और इल्म के चश्मे बन जाओ यानी कुरआन अपने अन्दर उतार लो, फिर इल्म अन्दर से फूट कर निकलेगा और अल्लाह से एक दिन में एक दिन की रोज़ी मांगो।

और एक रिवायत में यह भी है कि ज़्यादा से ज़्यादा तौबा करने वालों के पास बैठा करो, क्योंकि उनके दिल सबसे ज़्यादा नर्म होते हैं।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जो अल्लाह से डरेगा, वह कभी किसी पर अपना गुस्सा नहीं निकालेगा, यानी किसी से इंतिक़ाम नहीं लेगा, बल्कि अपना गुस्सा पिएगा और जो अल्लाह से डरेगा, वह अपनी मर्ज़ी का हर काम नहीं कर सकेगा और अगर क़ियामत का दिन न होता तो जो तुम्हें नज़र आ रहा है, वह न होता, बल्कि अफ़रा-तफ़री का कुछ और आलम होता।[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जो लोगों के साथ इंसाफ़ करता है और उसके लिए अपनी जान पर जो मशक़्क़त झेलनी पड़े, उसे झेलता है, उसे अपने तमाम कामों में कामियाबी मिलेगी और अल्लाह की फ़रमांबरदारी की वजह से ज़िल्लत उठाना नाफ़रमानी की इज़्ज़त के मुक़ाबले में नेकी के ज़्यादा क़रीब है।[3]

हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे यह रिवायत पहुंची है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, आदमी तक़्वा से इज़्ज़त पाता है और उसे दीन से शराफ़त मिलती है। आदमी की मुरव्वत और मरदानगी उम्दा अख़्लाक़ हैं, बहादुरी और बुज़दिली ख़ुदा की दी हुई सिफ़तें हैं। बहादुर आदमी तो उन लोगों की तरफ़ से भी लड़ता है, जिन्हें जानता है और उनकी तरफ़ से भी लड़ता है, जिन्हें नहीं जानता और बुज़दिल आदमी तो अपने मां-बाप को भी छोड़कर भाग जाता है, दुनिया वालों की निगाह में इज़्ज़त माल से मिलती है, लेकिन अल्लाह के यहां तक़्वा से मिलती है,

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 51,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 235,
3. कंज़, भाग 8, पृ० 235,

तुम किसी फ़ारसी अजमी और नबती से सिर्फ़ तक़्वा की वजह से बेहतर हो सकते हो, अरबी होने की वजह से नहीं हो सकते ।[1]

हज़रत सुफ़ियान सौरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त में यह लिखा कि हिक्मत व दानाई उमर बड़ी होने से हासिल नहीं होती, बल्कि यह तो अल्लाह की देन है जिसे अल्लाह चाहता है, अता फ़रमा देते हैं और कमीने कामों और घटिया अख़्लाक़ से बचो ।[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को ख़त में यह लिखा, अम्मा बादु ! मैं तुम्हें अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूं, क्योंकि जो अल्लाह से डरता है, अल्लाह उसे हर शर और फ़िले से बचाते हैं और जो अल्लाह पर तवक्कुल करता है, अल्लाह उसके तमाम कामों की किफ़ायत करते हैं और जो अल्लाह को क़र्ज़ देता है, यानी दूसरों पर अपना माल अल्लाह के लिए ख़र्च करता है, अल्लाह उसे बेहतरीन बदला अता फ़रमाते हैं और जो अल्लाह का शुक्र अदा करता है, अल्लाह उसको नेमत बढ़ाते हैं और तक़्वा हर वक़्त तुम्हारा नस्बुल ऐन और तुम्हारे आमाल का सहारा और स्तून और तुम्हारे दिल की सफ़ाई करने वाला होना चाहिए, जिसकी कोई नीयत नहीं होगी, उसका कोई अमल एतबार के क़ाबिल नहीं होगा, जिसने सवाब लेने की नीयत से अमल न किया, उसे कोई अज्र नहीं मिलेगा, जिसमें नर्मी नहीं होगी, उसे अपने माल से भी फ़ायदा नहीं होगा, जब तक पहला कपड़ा पुराना न हो जाए, नया नहीं पहनना चाहिए ।[3]

हज़रत जाफ़र बिन बुरक़ान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे यह रिवायत पहुंची है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 235
2. कंज़, भाग 8, पृ० 235
3. कंज़, भाग 8, पृ० 207

अपने एक गवर्नर को ख़त लिखा। ख़त के आख़िर में यह मज़्मून था, फ़राख़ी और वुसअत वाले हालात में सख़्ती वाले हिसाब से पहले (जो क़ियामत के दिन होगा) अपने नफ़्स का ख़ुद मुहासबा करो, क्योंकि जो फ़राख़ी और वुसअत वाले हालात में सख़्ती के हिसाब से पहले अपने नफ़्स का मुहासबा करेगा, वह अंजामेकार ख़ुश होगा, बल्कि उसके हालात रश्क के क़ाबिल होंगे और जिसको दुनिया की ज़िंदगी ने (अल्लाह से, आख़िरत से और दीन से) ग़ाफ़िल रखा और वह बुराइयों में मशग़ूल रहा तो अंजामेकार वह नदामत उठाएगा और हसरत व अफ़सोस करता रहेगा। जो तुम्हें नसीहत की जा रही है उसे याद रखो, ताकि तुम्हें जिन कामों से रोका जा रहा है, तुम उनसे रुक सको।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हुमा को ख़त में यह मज़्मून लिखा, अम्मा बादु ! हक़ को हर हाल में लाज़िम पकड़ो, इस तरह हक़ तुम्हारे लिए हक़ वालों के मरतबे खोल देगा और हमेशा हक़ के मुताबिक़ फ़ैसला किया करो।[2]

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, ऐ अबुल हसन ! मुझे कुछ नसीहत करो। हज़रत अली रज़ि० ने कहा, आप अपने यक़ीन को शक न बनाएं। (यानी रोज़ी का मिलना यक़ीनी है, उसकी तलाश में इस तरह और इतना न लगें कि गोया आपको इसमें कुछ शक है) और अपने इल्म को जिहालत न बनाएं (जो इल्म पर अमल नहीं करता, वह और जाहिल दोनों बराबर होते हैं) और अपने गुमान को हक़ न समझें, (यानी आप अपनी राय को वह्य की तरह हक़ न समझें।) और यह बात आप जान लें कि आपकी दुनिया तो सिर्फ़ इतनी है कि

1. कंज़, भाग 8, पृ० 208
2. कंज़, भाग 8, पृ० 208,

जो आपको मिली और आपने उसे आगे चला दिया या तक़्सीम करके बराबर कर दिया या पहन कर पुराना कर दिया। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अबुल हसन ! आपने सच कहा।[1]

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अगर आपकी ख़ुशी यह है कि आप अपने दोनों साथियों हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से जा मिलें, तो आप अपनी उम्मीदें कम करें और खाना खाएं, लेकिन पेट न भरें और लुंगी भी छोटी पहनें और कुरते पर पैवन्द लगी और अपने हाथ से जूती गांठें। इस तरह करेंगे, तो उन दोनों से जा मिलेंगे।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ख़ैर यह नहीं है कि तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद ज़्यादा हो जाए, बल्कि ख़ैर यह है कि तुम्हारा इल्म ज़्यादा हो और तुम्हारी बुर्दबारी की सिफ़त बड़ी हो और अपने रब की इबादत में तुम लोगों से आगे निकलने की कोशिश करो। अगर तुमसे नेकी का काम हो जाए, तो अल्लाह की तारीफ़ करो और अगर बुराई का काम हो जाए तो अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करो और दुनिया में सिर्फ़ दो आदमियों में से एक के लिए ख़ैर है—

एक तो वह आदमी जिससे कोई गुनाह हो गया हो और फिर उसने तौबा करके उसकी तलाफ़ी कर ली,

दूसरा वह आदमी जो नेक कामों में जल्दी करता हो और जो अमल तक़्वा के साथ हो, वह कम नहीं समझा जा सकता, क्योंकि जो अमल अल्लाह के यहां क़ुबूल हो, वह कैसे कम समझा जा सकता है, (क्योंकि क़ुरआन में है कि अल्लाह मुत्तक़ियों के अमल को क़ुबूल फ़रमाते हैं।[3]

हज़रत उक़्बा बिन अबुस्सहबा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब

1. कंज़, भाग 8, पृ० 221
2. कंज़, भाग 8, पृ० 219
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 75, कंज़, भाग 1, पृ० 221,

हज़रत इब्ने मुलजम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को खंजर मारा तो हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुए। हज़रत हसन रज़ि० रो रहे थे। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ मेरे बेटे! क्यों रो रहे हो? अर्ज़ किया कि मैं क्यों न रोऊं? जबकि आज आपका आख़िरत का पहला दिन और दुनिया का आख़िरी दिन है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, चार और चार (कुल आठ) चीज़ों को पल्ले बांध लो। इन आठ चीज़ों को तुम अपनाओगे, तो फिर तुम्हारा कोई अमल तुम्हें नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेगा। हज़रत हसन रज़ि० ने अर्ज़ किया, अब्बा जान! वे चीज़ें क्या हैं? फ़रमाया—

1. सबसे बड़ी मालदारी अक़्लमंदी है यानी माल से भी ज़्यादा काम आने वाली चीज़ अक़्ल और समझ है, और

2. सबसे बड़ी फ़क़ीरी हिमाक़त और बेवक़ूफ़ी है।

3. सबसे ज़्यादा वहशत की चीज़ और सबसे बड़ी तंहाई उज्ब और ख़ुद पसन्दी है,

4. सबसे ज़्यादा बड़ाई अच्छे अख़्लाक़ हैं।

हज़रत हसन रज़ि० फ़रमाते हैं, मैंने कहा, ऐ अब्बा जान! ये चार चीज़ें तो हो गईं, मुझे बाक़ी चार चीज़ें भी बता दें। फ़रमाया—

1. बेवक़ूफ़ की दोस्ती से बचना, क्योंकि वह फ़ायदा पहुंचाते-पहुंचाते तुम्हारा नुक़्सान कर देगा, और

2. झूठे की दोस्ती से बचना, क्योंकि जो तुमसे दूर है, यानी तुम्हारा दुश्मन है, उसे तुम्हारे क़रीब कर देगा और जो तुम्हारे क़रीब है, यानी तुम्हारा दोस्त है, उसे तुमसे दूर कर देगा, (या वह दूर वाली चीज़ को नज़दीक और नज़दीक वाली चीज़ को दूर बताएगा और तुम्हारा नुक़्सान कर देगा,) और

3. कंजूस की दोस्ती से भी बचना, क्योंकि जब तुम्हें उसकी सख़्त ज़रूरत होगी, वह उस वक़्त तुमसे दूर हो जाएगा, और

4. बदकार की दोस्ती से भी बचना, क्योंकि वह तुम्हें मामूली-सी

चीज़ के बदले में बेन्न देगा।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तौफ़ीक़े ख़ुदावन्दी सबसे बेहतरीन क़ाइद है और अच्छे अख़्लाक़ बेहतरीन साथी हैं। अक़्लमंदी बेहतरीन मुसाहिब है, हुस्ने अदब बेहतरीन मीरास है और उज्ब व ख़ुद पसन्दी से ज़्यादा सख़्त तंहाई और वहशत वाली कोई चीज़ नहीं है।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, इसे मत देखो कि कौन बात कर रहा है, बल्कि यह देखो कि क्या बात कह रहा है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हर भाईचारा ख़त्म हो जाता है, सिर्फ़ वही भाईचारा बाक़ी रहता है, जो लालच के बग़ैर हो।[3]

हज़रत उबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें

हज़रत इम्रान बिन मिख़्मर अबुल हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु लश्कर में चले जा रहे थे, फ़रमाने लगे, बहुत से लोग ऐसे हैं जो अपने कपड़ों को तो ख़ूब उजला और सफ़ेद कर रहे हैं, लेकिन अपने दीन को मैला कर रहे हैं यानी दीन का नुक़्सान करके दुनिया और ज़ाहिरी शान व शौकत हासिल कर रहे हैं।

ग़ौर से सुनो, बहुत से लोग देखने में तो अपने नफ़्स का इक्राम करने वाले होते हैं, लेकिन हक़ीक़त में वह अपने नफ़्स की बेइज़्ज़ती करने वाले होते हैं। पुराने गुनाहों को नई नेकियों के ज़रिए से ख़त्म करो। अगर तुममें से कोई इतने गुनाह कर ले, जिससे ज़मीन व आसमान के दर्मियान का ख़ला भर जाए और फिर वह एक नेकी कर ले तो यह नेकी उन सब गुनाहों पर ग़ालिब आ जाएगी।[4]

हज़रत सईद बिन अबी सईद मक़्बुरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं,

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 236,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 236,
3. दलाइल
4. कंज़, भाग 8, पृ० 236,

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र उर्दुन में है। जब वह ताऊन के शिकार हुए, तो वहां जितने मुसलमान थे, उन सबको बुलाकर फ़रमाया, मैं तुम्हें वसीयत करने लगा हूं। अगर तुम उसे क़ुबूल करोगे, तो हमेशा ख़ैर पर रहोगे, नमाज़ को क़ायम करो, ज़कात अदा करो, रमज़ान के रोज़े रखो, सदक़ा ख़ैरात दो, हज और उमरा करते रहो, एक दूसरे को वसीयत करो, अपने अमीरों की भलाई चाहो, उनको धोखा न दो।

और दुनिया तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न करने पाए। अगर किसी आदमी को हज़ार बरस की ज़िंदगी भी मिल जाए, तो आख़िर में उसे उसी जगह जाना होगा, जहां आज तुम मुझे जाता हुआ देख रहे हो। अल्लाह ने तमाम बनी आदम (आदम की औलाद) पर मौत लिख दिया है, इसलिए इन सबको मरना है और इनमें सबसे ज़्यादा अक़्लमंद वह है जो अपने रब की सबसे ज़्यादा इताअत करने वाला और अपनी आख़िरत के लिए सबसे ज़्यादा अमल करने वाला है, वस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। ऐ मुआज़ बिन जबल! आप लोगों को नमाज़ पढ़ाएं और फिर हज़रत अबू उबैदा रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया।

फिर हज़रत मुआज़ रज़ि० ने लोगों में खड़े होकर फ़रमाया, ऐ लोगो! तुम अल्लाह के सामने अपने गुनाहों से सच्ची तौबा करो, क्योंकि जो बन्दा भी गुनाहों से तौबा करके अल्लाह के सामने हाज़िर होगा, तो उसका अल्लाह पर यह हक़ होगा कि अल्लाह उसके सारे गुनाह माफ़ कर दे, लेकिन इस तौबा से क़र्ज़ माफ़ नहीं होगा, वह तो अदा ही करना होगा, क्योंकि बन्दा अपने क़र्ज़े के बदले में गिरवी रख दिया जाएगा।

तुममें से जिसने अपने भाई को छोड़ा हुआ है, उसे चाहिए कि वह ख़ुद जाकर अपने भाई से मुलाक़ात करे और उससे मुसाफ़ा करे। किसी मुसलमान को अपना भाई तीन दिन से ज़्यादा नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि यह बहुत बड़ा गुनाह है।[1]

---

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 74

हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मोमिन के दिल की मिसाल चिड़िया जैसी है, जो हर दिन ना मालूम कितनी बार इधर-उधर पलटता रहता है, (इसलिए आदमी मश्विरा के ताबे होकर चले।)[1]

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें

हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु के पास उनके साथी बैठे हुए थे, जो उन्हें सलाम करने और रुख़्सत करने आए हुए थे, इतने में हज़रत मुआज़ रज़ि० के पास एक आदमी आया। हज़रत मुआज़ रज़ि० ने उससे फ़रमाया—

मैं तुम्हें दो बातों की वसीयत करता हूं। अगर तुमने इन दोनों की पाबन्दी की, तो तुम हर शर और फ़िल्ने से बचे रहोगे। दुनिया का जो तुम्हारा हिस्सा है, उसकी भी तुम्हें ज़रूरत है, उसके बग़ैर भी गुज़ारा नहीं, लेकिन तुम्हें आख़िरत के हिस्से की इससे ज़्यादा ज़रूरत है, इसलिए दुनिया के हिस्से पर आख़िरत के हिस्से को तर्जीह दो और आख़िरत का ऐसा इंतिज़ाम करो कि तुम जहां भी जाओ, वह तुम्हारे साथ जाए।[2]

हज़रत अम्र बिन मैमून औदी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु ने हम लोगों में खड़े होकर फ़रमाया, ऐ बनी औद! मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क़ासिद हूं। अच्छी तरह जान लो कि हम सबको लौटकर अल्लाह के यहां जाना है, फिर जन्नत में जाना होगा या जहन्नम में और वहां जाकर हमेशा रहना होगा। वहां से आगे कहीं जाना नहीं होगा और ऐसे जिस्मों में हम हमेशा रहेंगे जिन्हें मौत नहीं आएगी।[3]

हज़रत मुआविया बिन क़ुर्रा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने बेटे से फ़रमाया, जब तुम

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 102,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 234,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 236

नमाज़ पढ़ने लगो तो दुनिया से जाने वाले की तरह नमाज़ पढ़ा करो और यों समझा करो कि अब दोबारा नमाज़ पढ़ने का मौक़ा नहीं मिलेगा और ऐ मेरे बेटे! यह बात जान लो कि मोमिन जब मरता है तो उसके पास दो क़िस्म की नेकियां होती हैं—

एक तो वह नेकी, जो उसने आगे भेज दी,

दूसरी वह, जिसे वह दुनिया में छोड़कर जा रहा है, यानी सदक़ा जारिया।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलमा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में अर्ज़ किया, मुझे कुछ सिखा दें। फ़रमाया, तुम मेरी बात मानोगे? उसने कहा, मुझे तो आपकी बात मानने का बड़ा शौक़ है।

फ़रमाया, कभी रोज़ा रखा करो, कभी इफ़्तार किया करो और कभी रात को नमाज़ पढ़ा करो और कभी सो जाया करो और कमाई करो और गुनाह न करो और तुम पूरी कोशिश करो कि तुम्हारी मौत मुसलमान होने की हालत में आए और मज़्लूम की बद-दुआ से बचो।[2]

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तीन काम ऐसे हैं, जो उन्हें करेगा, वह अपने आपको बेज़ारी और नफ़रत के लिए पेश करेगा, यानी लोग उससे बेज़ार होकर नफ़रत करेंगे—

1. बग़ैर ताज्जुब की बात के हंसना, और

2. बग़ैर जागे रात भर सोना, और

3. बग़ैर भूख के खाना।[3]

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तंगदस्ती की आज़माइश से तुम लोगों का इम्तिहान लिया गया, उसमें तो तुम कामियाब हो गए। तुमने सब्र से काम लिया। अब ख़ुशहाली की

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 234,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 233
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 237,

आज़माइश में डालकर तुम्हारा इम्तिहान लिया जाएगा और मुझे तुम पर सबसे ज़्यादा डर औरतों की आज़माइश का है, जब वे सोने-चांदी के कंगन पहन लेंगी और शाम की बारीक और यमन की फूलदार चादरें पहन लेंगी तो वे मालदार मर्द को थका देंगी और फ़क़ीर मर्द के ज़िम्मे ऐसी चीज़ें लगा देंगी, जो उसे मयस्सर नहीं होंगी।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मुझे उस आदमी पर बहुत ग़ुस्सा आता है जो मुझे फ़ारिग़ नज़र आता है, न आख़िरत के किसी अमल में लगा हुआ है और न दुनिया के किसी काम में।[2]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मुझे तुममें से कोई आदमी ऐसा नहीं मिलना चाहिए जो रात को मुर्दा पड़ा रहे और दिन को क़तरब कीड़े की तरह फुदकता फिरे, यानी रात भर तो पड़ा सोता रहे और दिन भर दुनिया के कामों में ख़ूब भाग-दौड़ करे।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, दुनिया का साफ़ हिस्सा तो चला गया और गदला हिस्सा रह गया है, इसलिए आज तो मौत हर मुसलमान के लिए तोहफ़ा है।[4]

एक रिवायत में यह है कि दुनिया तो पहाड़ की चोटी के तालाब की तरह है जिसका साफ़ हिस्सा जा चुका हो और गदला हिस्सा रह गया हो।[5]

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ग़ौर से सुनो, दो नागवार और नापसन्दीदा चीज़ें क्या ही अच्छी हैं, एक मौत और दूसरी फ़क़ीरी और अल्लाह की क़सम! इंसान की दो ही हालतें होती हैं या

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 237
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 130, कंज़, भाग 8, पृ० 232
3. हुलीया,
4. हुलीया, भाग 1, पृ० 131,
5. हुलीया, भाग 1, पृ० 132,

मालदारी या फ़क़ीरी और मुझे इसकी कोई परवाह नहीं है कि इन दोनों में से कौन-सी हालत में मुझे मुब्तला किया जाता है। अगर मालदारी की हालत होगी तो मैं अपने माल के ज़रिए से लोगों के साथ ग़मख़्वारी और मेहरबानी का मामला करूंगा। (और यों अल्लाह का हुक्म पूरा करूंगा) और अगर फ़क़ीरी की हालत होगी तो सब्र करूंगा (और यों अल्लाह का हुक्म पूरा करूंगा।)[1]

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कोई बन्दा उस वक़्त तक ईमान की हक़ीक़त तक नहीं पहुंच सकता जब तक वह ईमान की चोटी तक न पहुंच जाए और उस वक़्त तक ईमान की चोटी तक नहीं पहुंच सकता, जब तक कि उसके नज़दीक फ़क़ीरी मालदारी से और छोटा बनना बड़े बनने से ज़्यादा महबूब न हो जाए और उसकी तारीफ़ करने वाला और उसकी बुराई करने वाला दोनों उसके नज़दीक बराबर न हो जाएं। (न तारीफ़ से असर ले और न बुराई से)।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० के शागिर्दों ने उसकी वज़ाहत करते हुए बताया कि उसका मतलब यह है कि हलाल कमाई के साथ फ़क़ीरी हराम कमाई की मालदारी से और अल्लाह की इताअत करते हुए छोटा बनना अल्लाह की नाफ़रमनी के साथ बड़ा बनने से ज़्यादा महबूब हो और हक़ बात में तरीफ़ करने वाला और बुराई करने वाला बराबर हो।[2]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, उस अल्लाह की क़सम, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, जो बन्दा इस्लाम की हालत पर सुबह और शाम करता है, दुनिया की कोई मुसीबत उसका नुक़्सान नहीं कर सकती।[3]

हज़रत ज़ुहैरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु जब बयान के लिए बैठते, तो फ़रमाते, तुम सब

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 132
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 132,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 132,

दिन और रात की गुज़रगाह में हो, तुम्हारी उम्रें कम हो रही हैं और सारे आमाल हिफ़ाज़त से रखे जा रहे हैं और मौत अचानक आ जाएगी। जो ख़ैर बोएगा, वह अपनी पसन्द की चीज़ काटेगा और जो शर बोएगा, वह नदामत व हसरत काटेगा। इंसान जैसा बोएगा, वैसा उसे मिलेगा (और हर इंसान को उसके मुक़द्दर का ज़रूर मिलकर रहेगा, इसलिए) सुस्त आदमी के मुक़द्दर में जो लिखा हुआ है, वह उसे मिलकर रहेगा और कोई तेज़ आदमी उससे आगे बढ़कर उसके मुक़द्दर का नहीं ले सकता और ख़ूब ज़्यादा कोशिश करने वाला इंसान वह चीज़ हासिल नहीं कर सकता जो उसके मुक़द्दर में नहीं है।

और जिसे कोई ख़ैर मिलती है, वह अल्लाह के देने से ही मिलती है और जिसकी किसी शर से हिफ़ाज़त होती है, वह अल्लाह ही के करने से होती है। तक़्वा वाले लोग ही सरदार होते हैं और फ़ुक़हा लोग उम्मत के क़ाइद (रहनुमा) हैं। उनके साथ बैठने से दीन की समझ बढ़ती है।[1]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, तुममें से हर एक मेहमान है और उसके पास जितना माल है, वह सब उसे उधार मिला है और मेहमान को हर हाल में आगे जाना ही होता है और उधार ली हुई चीज़ उसके मालिक को वापस करनी ही पड़ती है।[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी ने मेरे वालिद (हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु) की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया कि मुझे काम आने वाले कलिमे सिखा दें जो मुख़्तसर हों, लेकिन उनके मानी ज़्यादा हों।

फ़रमाया, अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करो और क़ुरआन के ताबे बनो। वह जिधर चले, तुम भी उधर को उसके साथ चलो और जो भी तुम्हारे पास हक़ लेकर आए, तुम उसे क़ुबूल करो, चाहे वह लेकर आने वाला दूर का दुश्मन हो और तुम्हें

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 134, सिफ़तुस्सफ़वा, भाग-1, पृ० 161,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 134,

नापसन्द हो और जो भी तुम्हारे पास बातिल और ग़लत बात लेकर आए, उसे रद्द कर दो, चाहे वह लेकर आने वाला तुम्हारा महबूब और रिश्तेदार या दोस्त हो।[1]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हक़ (नफ़्स पर) भारी होता है, लेकिन उसका अंजाम अच्छा होता है और बातिल हलका लगता है, लेकिन उसका अंजाम बुरा होता है और इंसान की बहुत-सी ख़्वाहिशें ऐसी होती हैं कि जिनके नतीजे में इंसान को बड़े लम्बे ग़म उठाने पड़ते हैं।[2]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कभी दिलों में नेक आमाल का बड़ा शौक़ और जज़्बा होता है और कभी शौक़ और जज़्बा बिल्कुल नहीं रहता, तो जब दिल में शौक़ और जज़्बा हो तो उसे तुम लोग ग़नीमत समझो और जब शौक़ और जज़्बा बिल्कुल न हो तो दिल को उसके हाल पर छोड़ दो।[3]

हज़रत मुंज़िर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, कुछ चौधरी साहिबान हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उनकी मोटी-मोटी गरदनें और जिस्मानी सेहत देखकर लोग ताज्जुब करने लगे। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हें कुछ ऐसे काफ़िर नज़र आएंगे जिनकी जिस्मानी सेहत सबसे ज़्यादा अच्छी होगी, लेकिन उनके दिल सबसे ज़्यादा बीमार रहेंगे और तुम्हें कुछ ऐसे मोमिन मिलेंगे, जिनके दिल सबसे ज़्यादा तन्दुरुस्त होंगे, लेकिन उनके जिस्म सबसे ज़्यादा बीमार होंगे। अल्लाह की क़सम! अगर तुम्हारे दिल तो बीमार हों (उनमें कुफ़्र व शिर्क की बीमारियां हों) लेकिन तुम्हारे जिस्म ख़ूब सेहतमंद हों तो अल्लाह की निगाह में तुम्हारा दर्जा गंदगी के कीड़े से भी कम होगा।[4]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 134,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 134
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 134,
4. हुलीया, भाग 1, पृ० 135

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अल्लाह की मुलाक़ात के बिना मोमिन को चैन नहीं आ सकता और जिसका चैन और राहत अल्लाह की मुलाक़ात में है, तो समझ लो उसकी अल्लाह से मुलाक़ात हो गई।[1]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुममें से कोई आदमी दीन में किसी ज़िंदा इंसान के पीछे हरगिज़ न चले, क्योंकि ज़िंदा आदमी का क्या एतबार, न मालूम कब तक ईमान की हालत में रहे और कब काफ़िर हो जाए। (ख़ुद सीधे-सीधे क़ुरआन व हदीस से तुम अपने लिए दीनी रहनुमाई हासिल करो और किसी के पीछे न चलो, लेकिन अगर ऐसा न कर सको) और तुम ज़रूर ही किसी दूसरे की पैरवी करना चाहो, तो फिर उन लोगों की पैरवी करो जो दुनिया से जा चुके हैं, क्योंकि ज़िंदा आदमी के बारे में कोई इत्मीनान नहीं कि कब किसी फ़ित्ने में पड़ जाए।[2]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुममें से कोई आदमी हरगिज़ अमआ न बने। लोगों ने पूछा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान! अमआ कौन होता है?

फ़रमाया, अमआ वह होता है (जिसकी अपनी अक़्ल-समझ कुछ न हो और) यों कहे कि मैं तो लोगों के साथ हूं। अगर ये हिदायत वाले रास्ते पर चलेंगे तो मैं भी हिदायत वाले रास्ते पर चलूंगा और अगर ये गुमराही वाले रास्ते पर चलेंगे तो मैं भी गुमराही वाले रास्ते पर चलूंगा। ग़ौर से सुनो! तुममें से हर आदमी अपने दिल को इस पर ज़रूर पक्का रखे कि अगर सारी दुनिया के लोग भी काफ़िर हो जाएं, तो भी वह कुफ़्र नहीं अख़्तियार करेगा।[3]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तीन बातों पर मैं

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 136
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 136,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 136,

क़सम खाता हूं, बल्कि चौथी बात पर भी क़सम खा लूं तो मैं उस क़सम में सच्चा हूंगा—

1. जिस आदमी का इस्लाम में हिस्सा है, उसे अल्लाह उस आदमी जैसा नहीं बनाएंगे जिसका इस्लाम में कोई हिस्सा न हो, और

2. यह हरगिज़ नहीं हो सकता कि अल्लाह किसी बन्दे से दुनिया में मुहब्बत करें और क़ियामत के दिन उसे किसी दूसरे के सुपुर्द कर दें, और

3. आदमी दुनिया में जिन लोगों से मुहब्बत करेगा, क़ियामत के दिन उन्हीं के साथ आएगा और,

4. चौथी बात, जिस पर मैं क़सम खाऊं तो मैं सच्चा हूंगा, वह यह कि अल्लाह दुनिया में जिसके ऐबों पर परदा डालेंगे, आख़िरत में भी इसके ऐबों पर परदा ज़रूर डालेंगे।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जो दुनिया को चाहेगा, वह आख़िरत का नुक़्सान करेगा और जो आख़िरत को चाहेगा, वह दुनिया का नुक़्सान करेगा, इसलिए हमेशा बाक़ी रहने वाली आख़िरत की वजह से फ़ानी दुनिया का नुक़्सान कर लो, (लेकिन आख़िरत का न करो)।[2]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, सबसे सच्ची बात अल्लाह की किताब है और सबसे मज़बूत हलक़ा तक़्वा का कलिमा है और सबसे बेहतरीन मिल्लत हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मिल्लत है और सबसे उम्दा तरीक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा है और सबसे बेहतरीन सीरत अंबिया अलैहिमुस्सलाम वाली सीरत है और सबसे बड़ी बात अल्लाह का ज़िक्र है और बेहतरीन क़िस्से क़ुरआन में हैं।

और बेहतरीन काम वे हैं जिनका अंजाम बेहतरीन हो और सबसे बुरे काम वे हैं जो नए गढ़े जाएं और जो माल कम हो, लेकिन इंसान की

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 137
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 138

ज़रूरतों के लिए काफ़ी हो, वह उस माल से बेहतर है जो ज़्यादा हो और इंसान को अल्लाह से और आख़िरत से ग़ाफ़िल कर दे।

तुम किसी जान को (बुरे कामों से और ज़ुल्म से) बचा लो। यह तुम्हारे लिए उस इमारत से बेहतर है जिसमें तुम अद्ल व इंसाफ़ से काम न ले सको और मौत के वक़्त की मलामत सबसे बुरी मलामत है और क़ियामत के दिन की शर्मिंदगी सबसे बुरी शर्मिंदगी है और हिदायत मिलने के बाद गुमराह हो जाना सबसे बुरी गुमराही है।

दिल का ग़ना सबसे बेहतरीन ग़ना है। (पैसा पास न हो, लेकिन दिल ग़नी हो) और सबसे बेहतरीन तोशा तक़्वा है और अल्लाह दिल में जितनी बातें डालते हैं, उनमें सबसे बेहतरीन बात यक़ीनी है और शक करना कुफ़्र में शामिल है और दिल का अंधापन सबसे बुरा अंधापन है और शराब तमाम गुनाहों का मज्मूआ है और औरतें शैतान का जाल हैं।

और जवानी पागलपन की एक क़िस्म है और मैयत पर नौहा करना जाहिलियत के कामों में से है और कुछ लोग जुमा में सबसे आख़िर में आते हैं और सिर्फ़ ज़ुबान से अल्लाह का ज़िक्र करते हैं। दिल बिल्कुल मुतवज्जह नहीं होता और सबसे बड़ी ख़ता झूठ बोलना है और मुसलमान को गाली देना फ़िस्क़ है और उससे जंग करना कुफ़्र है और उसके माल का एहतिराम करना इसी तरह ज़रूरी है, जिस तरह उनके ख़ून का एहतिराम करना।

जो लोगों को माफ़ करेगा अल्लाह उसे माफ़ करेगा। जो ग़ुस्सा पी जाए, अल्लाह उसे अज्र देगा और जो अल्लाह से दरगुज़र करेगा, अल्लाह उससे दरगुज़र करेगा और जो मुसीबत पर सब्र करेगा, अल्लाह उसे बहुत उम्दा बदला देंगे और सबसे बुरी कमाई सूद की है और सबसे बुरा खाना यतीम का माल है और ख़ुशक़िस्मत वह है जो दूसरों से नसीहत हासिल करे और बदक़िस्मत वह है जो मां के पेट में शुरू दिन से बद-बख़्त हो गया हो और तुममें से हर एक को इतना काफ़ी है जिससे उसके दिल में क़नाअत पैदा हो जाए।

तुममें से हर एक को आख़िरकार चार हाथ जगह यानी क़ब्र में जाना

है और असल मामला आख़िरत का है और अमल का दारोमदार उसके अंजाम पर है और सबसे बुरी रिवायतें झूठी रिवायतें हैं और सबसे बड़ी मौत शहादत वाली मौत है और जो अल्लाह की आज़माइश को पहचानता है, वह उस पर सब्र करता है और जो नहीं पहचानता वह उसका इंकार करता है और जो बड़ा बनता है, अल्लाह उसे नीचा करते हैं।

जो दुनिया से दोस्ती करता है, दुनिया उसके क़ाबू में नहीं आती। जो शैतान की बात मानेगा, वह अल्लाह की नाफ़रमानी करेगा। जो अल्लाह की नाफ़रमानी करेगा अल्लाह उसे अज़ाब देंगे।[1]

हज़रत इब्ने मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जो दुनिया में दिखावे की वजह से अमल करेगा, अल्लाह क़ियामत के दिन उसके गुनाह और ऐब लोगों को दिखाएंगे और जो दुनिया में शोहरत के लिए अमल करेगा, अल्लाह उसके गुनाह क़ियामत के दिन लोगों को सुनाएंगे और जो बड़ा बनने के लिए ख़ुद को ऊंचा करेगा, अल्लाह उसे नीचा करेंगे और जो आजिज़ी की वजह से ख़ुद को नीचा करेगा, अल्लाह उसे बुलन्द करेंगे।[2]

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें

हज़रत जाफ़र बिन बुरक़ान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हमें यह बात पहुंची है कि हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि मुझे तीन आदमियों पर हंसी आती है और तीन चीज़ों से रोना आता है—

1. एक तो उस आदमी पर हंसी आती है जो दुनिया की उम्मीदें लगा रहा है, हालांकि मौत उसे खोज रही है,

2. दूसरे उस आदमी पर, जो ग़फ़लत में पड़ा हुआ है और उससे ग़फ़लत नहीं बरती जा रही, यानी फ़रिश्ते उसका हर बुरा अमल लिख रहे हैं और उसे हर अमल का बदला मिलेगा,

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 138,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 138,

3. तीसरे मुंह भर कर हंसने वाले पर, जिसे मालूम नहीं है कि उसने अपने रब को ख़ुश कर रखा है या नाराज़ और मुझे तीन चीज़ों से रोना आता है—

1. पहली चीज़ महबूब दोस्तों यानी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनकी जमाअत की जुदाई,

2. दूसरी मौत की सख़्ती के वक़्त आख़िरत के नज़र आने वाले मंज़रों की हौलनाकी,

3. तीसरी अल्लाह रब्बुल आलमीन के सामने खड़ा होना, जबकि मुझे यह मालूम नहीं होगा कि मैं जहन्नम में जाऊंगा या जन्नत में।[1]

हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जब अल्लाह किसी बन्दे के साथ बुराई और हलाकत का इरादा फ़रमाते हैं तो उससे हया निकाल लेते हैं जिसका नतीजा यह होता है कि तुम देखोगे कि लोग भी उससे बुग़्ज़ रखते हैं और वह भी लोगों से बुग़्ज़ रखता है। जब वह ऐसा हो जाता है तो फिर उससे रहम करने और तरस खाने की सिफ़त निकाल दी जाती है जिसका नतीजा यह होता है कि तुम देखोगे कि वह बद-अख़्लाक़, अक्खड़ तबियत और सख़्त दिल हो गया है।

जब वह ऐसा हो जाता है तो फिर उससे अमानतदारी की सिफ़त छीन ली जाती हैं, जिसका नतीजा यह होता है कि तुम देखोगे कि वह लोगों से ख़ियानत करता है और लोग भी उससे ख़ियानत करते हैं। जब वह ऐसा हो जाता है तो फिर इस्लाम का पट्टा उसकी गरदन से उतार लिया जाता है और फिर अल्लाह और उसकी मख़्लूक़ भी उस पर लानत करती है और वह भी दूसरों पर लानत करता है।[2]

हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, इस दुनिया में मोमिन की मिसाल उस बीमार जैसी है जिसका तबीब और डाक्टर उसके साथ हो जो उसकी बीमारी और उसके इलाज दोनों को जानता हो। जब उसका दिल किसी ऐसी चीज़ को चाहता है, जिसमें उसकी सेहत का

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 207,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 204,

नुक़्सान हो, तो वह डाक्टर उसे उससे मना कर देता है और कह देता है, इसके क़रीब भी न जाओ, क्योंकि अगर तुमने इसे खाया, तो यह तुम्हें हलाक कर देगी। इसी तरह वह डाक्टर उसे नुक़्सान पहुंचाने वाली चीज़ों से रोकता रहता है, यहां तक कि वह बिल्कुल तन्दुरुस्त हो जाता है और उसकी बीमारी ख़त्म हो जाती है।

इसी तरह मोमिन का दिल बहुत-सी ऐसी दुन्यावी चीज़ों को चाहता रहता है, जो दूसरों को इससे ज़्यादा दी गई हैं, लेकिन अल्लाह मौत तक उसे उनसे मना करते रहते हैं और उन चीज़ों को उससे दूर करते रहते हैं और मरने के बाद उसे जन्नत में दाख़िल कर देते हैं।[1]

हज़रत यह्या बिन सईद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु (दमिश्क़ में रहते थे, उन्हों) ने हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त में लिखा कि आप (दमिश्क़) की पाक सरज़मीन में तशरीफ़ ले आएं। हज़रत सलमान रज़ि० ने उन्हें जवाब में लिखा कि ज़मीन किसी को पाक नहीं बनाती, इन्सान तो अपने अमल से पाक और मुक़द्दस बनता है और मुझे यह बात पहुंची है कि आपको वहां तबीब (यानी क़ाज़ी) बना दिया गया है। अगर आपके ज़रिए से बीमारों को सेहत मिल रही है, यानी आप अद्ल व इंसाफ़ वाले फ़ैसले कर रहे हैं, तो फिर तो बहुत अच्छी बात है, शाबाश हो आपको और अगर आपको तिब (डाक्टरी) नहीं आती और ज़बरदस्ती हकीम और तबीब बने हुए हैं, तो फिर आप किसी इंसान को (ग़लत फ़ैसला करके) मार डालने से बचें, वरना आपको जहन्नम में जाना होगा।

चुनांचे हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० जब भी दो आदमियों में फ़ैसला करते और वे दोनों पीठ फेरकर जाने लगते तो उन्हें देखकर फ़रमाते, मैं तो अल्लाह की क़सम, अनाड़ी हकीम हूं। तुम दोनों मेरे पास वापस आकर अपना सारा क़िस्सा दोबारा सुनाओ (यानी बार-बार तहक़ीक़ करके फ़ैसला करते।)[2]

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 207
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 205

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें

हज़रत हस्सान बिन अतीया रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे, तुम लोग उस वक़्त तक ख़ैर पर रहोगे, जब तक कि तुम अपने भले लोगों से मुहब्बत करते रहोगे और तुममें हक़ बात कही जाए और तुम उसे पहचानते रहोगे, क्योंकि हक़ बात को पहचानने वाला हक़ पर अमल करने की तरह समझा जाता है।[1]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुम लोगों को उन चीज़ों का ज़िम्मेदार न बनाओ, जिनके वे (अल्लाह की ओर से) ज़िम्मेदार नहीं हैं। लोगों का रब तो उनकी पकड़ न करे और तुम उनकी पकड़ करो, यह ठीक नहीं। ऐ इब्ने आदम ! तू अपनी फ़िक्र कर, क्योंकि जो लोगों में नज़र आने वाले ऐब तलाश करेगा, उसका ग़म लम्बा होगा और उसका ग़ुस्सा ठंडा नहीं हो सकेगा।[2]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अल्लाह की इबादत इस तरह करो कि गोया तुम उसे देख रहे हो और अपने आपको मुर्दों में समझो और जान लो कि थोड़ा माल जो तुम्हारी ज़रूरतों के लिए काफ़ी हो, वह उस ज़्यादा माल से बेहतर है जो तुम्हें अल्लाह से ग़ाफ़िल कर दे और यह भी जान लो कि नेकी कभी पुरानी नहीं होती और गुनाह भुलाया नहीं जाता।[3]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ख़ैर यह नहीं है कि तुम्हारा माल या तुम्हारी औलाद ज़्यादा हो जाए, बल्कि ख़ैर यह है कि तुम्हारी बुर्दबारी बढ़ जाए और तुम्हारा इल्म ज़्यादा हो और तुम अल्लाह की इबादत में लोगों से आगे निकलने में मुक़ाबला करो। अगर तुम नेकी करो तो अल्लाह की तारीफ़ करो और अगर कोई बुरा काम हो

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 210, कंज़, भाग 8, पृ० 224,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 211,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 212,

जाए तो अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करो ।[1]

हज़रत सालिम बिन अबिल जाद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, आदमी को इससे बचते रहना चाहिए कि ईमान वालों के दिल उससे नफ़रत करने लग जाएं और उसे पता भी न चले, फिर फ़रमाया, क्या तुम जानते हो, ऐसा क्यों होता है?

मैंने कहा, नहीं, फ़रमाया बन्दा ख़लवत में अल्लाह की नाफ़रमानी करता है, इस वजह से अल्लाह उसकी नफ़रत मोमिनों के दिल में डाल देते हैं और उसे पता भी नहीं चलता ।[2]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे, ईमान की चोटी अल्लाह के फ़ैसले की वजह से पेश आने वाली तक्लीफ़ों पर सब्र करना और तक़्दीर पर राज़ी होना और तवक्कुल में मुख़्लिस होना और अल्लाह की हर बात को बे-चून व चरा मान लेना और अल्लाह के सामने गरदन झुका लेना है ।[3]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे, हलाकत हो उस आदमी के लिए जो बहुत ज़्यादा माल जमा करने वाला हो और माल के लालच में इस तरह मुंह फाड़े हुए हो कि गोया पागल हो गया है और लोगों के पास जो दुनिया है बस उसे देखता रहता है कि किसी तरह मुझे मिल जाए और जो अपने पास है, न उसे देखता है, न उस पर शुक्र करता है। अगर उसके बस में हो तो रात को भी दिन से मिला दे यानी दिन को तो कमाता है, उसका बस चले तो वह रात को भी कमाया करे। उसके लिए हलाकत हो, उसका हिसाब भी सख़्त होगा और उस पर अज़ाब भी सख़्त होगा ।[4]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे, ऐ दमिश्क़ वालो! क्या तुम्हें शर्म नहीं आती? इतना माल जमा कर रहे हो, जिसे तुम खा

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 212,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 215,
3. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 216,
4. हुलीया, भाग 1, पृ० 217,

तुम किसी फ़ारसी अजमी और नबती से सिर्फ़ तक़्वा की वजह से बेहतर हो सकते हो, अरबी होने की वजह से नहीं हो सकते।[1]

हज़रत सुफ़ियान सौरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त में यह लिखा कि हिक्मत व दानाई उमर बड़ी होने से हासिल नहीं होती, बल्कि यह तो अल्लाह की देन है जिसे अल्लाह चाहता है, अता फ़रमा देते हैं और कमीने कामों और घटिया अख़्लाक़ से बचो।[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को ख़त में यह लिखा, अम्मा बादु ! मैं तुम्हें अल्लाह से डरने को वसीयत करता हूं, क्योंकि जो अल्लाह से डरता है, अल्लाह उसे हर शर और फ़िले से बचाते हैं और जो अल्लाह पर तवक्कुल करता है, अल्लाह उसके तमाम कामों की किफ़ायत करते हैं और जो अल्लाह को क़र्ज़ देता है, यानी दूसरों पर अपना माल अल्लाह के लिए ख़र्च करता है, अल्लाह उसे बेहतरीन बदला अता फ़रमाते हैं और जो अल्लाह का शुक्र अदा करता है, अल्लाह उसकी नेमत बढ़ाते हैं और तक़्वा हर वक़्त तुम्हारा नस्बुल ऐन और तुम्हारे आमाल का सहारा और स्तून और तुम्हारे दिल की सफ़ाई करने वाला होना चाहिए, जिसकी कोई नीयत नहीं होगी, उसका कोई अमल एतबार के क़ाबिल नहीं होगा, जिसने सवाब लेने की नीयत से अमल न किया, उसे कोई अज्र नहीं मिलेगा, जिसमें नर्मी नहीं होगी, उसे अपने माल से भी फ़ायदा नहीं होगा, जब तक पहला कपड़ा पुराना न हो जाए, नया नहीं पहनना चाहिए।[3]

हज़रत जाफ़र बिन बुरक़ान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे यह रिवायत पहुंची है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने

1. कंज़, भाग 8, पृ० 235
2. कंज़, भाग 8, पृ० 235
3. कंज़, भाग 8, पृ० 207

अपने एक गवर्नर को ख़त लिखा। ख़त के आख़िर में यह मज़्मून था, फ़राख़ी और वुसअत वाले हालात में सख़्ती वाले हिसाब से पहले (जो क़ियामत के दिन होगा) अपने नफ़्स का ख़ुद मुहासबा करो, क्योंकि जो फ़राख़ी और वुसअत वाले हालात में सख़्ती के हिसाब से पहले अपने नफ़्स का मुहासबा करेगा, वह अंजामेकार ख़ुश होगा, बल्कि उसके हालात रश्क के क़ाबिल होंगे और जिसको दुनिया की ज़िंदगी ने (अल्लाह से, आख़िरत से और दीन से) ग़ाफ़िल रखा और वह बुराइयों में मश्ग़ूल रहा तो अंजामेकार वह नदामत उठाएगा और हसरत व अफ़सोस करता रहेगा। जो तुम्हें नसीहत की जा रही है उसे याद रखो, ताकि तुम्हें जिन कामों से रोका जा रहा है, तुम उनसे रुक सको।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हुमा को ख़त में यह मज़्मून लिखा, अम्मा बादु ! हक़ को हर हाल में लाज़िम पकड़ो, इस तरह हक़ तुम्हारे लिए हक़ वालों के मरतबे खोल देगा और हमेशा हक़ के मुताबिक़ फ़ैसला किया करो।[2]

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, ऐ अबुल हसन ! मुझे कुछ नसीहत करो। हज़रत अली रज़ि० ने कहा, आप अपने यक़ीन को शक न बनाएं। (यानी रोज़ी का मिलना यक़ीनी है, उसकी तलाश में इस तरह और इतना न लगें कि गोया आपको इसमें कुछ शक है) और अपने इल्म को जिहालत न बनाएं (जो इल्म पर अमल नहीं करता, वह और जाहिल दोनों बराबर होते हैं) और अपने गुमान को हक़ न समझें, (यानी आप अपनी राय को वह्य की तरह हक़ न समझें।) और यह बात आप जान लें कि आपकी दुनिया तो सिर्फ़ इतनी है कि

1. कंज़, भाग 8, पृ० 208
2. कंज़, भाग 8, पृ० 208,

जो आपको मिली और आपने उसे आगे चला दिया या तक़्सीम करके बराबर कर दिया या पहन कर पुराना कर दिया। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अबुल हसन ! आपने सच कहा ।[1]

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अगर आपकी ख़ुशी यह है कि आप अपने दोनों साथियों हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से जा मिलें, तो आप अपनी उम्मीदें कम करें और खाना खाएं, लेकिन पेट न भरें और लुंगी भी छोटी पहनें और कुरते पर पैवन्द लगी और अपने हाथ से जूती गांठें। इस तरह करेंगे, तो उन दोनों से जा मिलेंगे ।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ख़ैर यह नहीं है कि तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद ज़्यादा हो जाए, बल्कि ख़ैर यह है कि तुम्हारा इल्म ज़्यादा हो और तुम्हारी बुर्दबारी की सिफ़त बड़ी हो और अपने रब की इबादत में तुम लोगों से आगे निकलने की कोशिश करो। अगर तुमसे नेकी का काम हो जाए, तो अल्लाह की तारीफ़ करो और अगर बुराई का काम हो जाए तो अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करो और दुनिया में सिर्फ़ दो आदमियों में से एक के लिए ख़ैर है—

एक तो वह आदमी जिससे कोई गुनाह हो गया हो और फिर उसने तौबा करके उसकी तलाफ़ी कर ली,

दूसरा वह आदमी जो नेक कामों में जल्दी करता हो और जो अमल तक़्वा के साथ हो, वह कम नहीं समझा जा सकता, क्योंकि जो अमल अल्लाह के यहां क़ुबूल हो, वह कैसे कम समझा जा सकता है, (क्योंकि क़ुरआन में है कि अल्लाह मुत्तक़ियों के अमल को क़ुबूल फ़रमाते हैं।)[3]

हज़रत उक़्बा बिन अबुस्सहबा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 221
2. कंज़, भाग 8, पृ० 219
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 75, कंज़, भाग 1, पृ० 221,

हज़रत इब्ने मुलजम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को खंजर मारा तो हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुए। हज़रत हसन रज़ि० रो रहे थे। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ मेरे बेटे! क्यों रो रहे हो? अर्ज़ किया कि मैं क्यों न रोऊं? जबकि आज आपका आख़िरत का पहला दिन और दुनिया का आख़िरी दिन है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, चार और चार (कुल आठ) चीज़ों को पल्ले बांध लो। इन आठ चीज़ों को तुम अपनाओगे, तो फिर तुम्हारा कोई अमल तुम्हें नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेगा। हज़रत हसन रज़ि० ने अर्ज़ किया, अब्बा जान! वे चीज़ें क्या हैं? फ़रमाया—

1. सबसे बड़ी मालदारी अक़्लमंदी है यानी माल से भी ज़्यादा काम आने वाली चीज़ अक़्ल और समझ है, और

2. सबसे बड़ी फ़क़ीरी हिमाक़त और बेवक़ूफ़ी है।

3. सबसे ज़्यादा वहशत की चीज़ और सबसे बड़ी तंहाई उज्ब और ख़ुद पसन्दी है,

4. सबसे ज़्यादा बड़ाई अच्छे अख़्लाक़ हैं।

हज़रत हसन रज़ि० फ़रमाते हैं, मैंने कहा, ऐ अब्बा जान! ये चार चीज़ें तो हो गईं, मुझे बाक़ी चार चीज़ें भी बता दें। फ़रमाया—

1. बेवक़ूफ़ की दोस्ती से बचना, क्योंकि वह फ़ायदा पहुंचाते-पहुंचाते तुम्हारा नुक़्सान कर देगा, और

2. झूठे की दोस्ती से बचना, क्योंकि जो तुमसे दूर है, यानी तुम्हारा दुश्मन है, उसे तुम्हारे क़रीब कर देगा और जो तुम्हारे क़रीब है, यानी तुम्हारा दोस्त है, उसे तुमसे दूर कर देगा, (या वह दूर वाली चीज़ को नज़दीक और नज़दीक वाली चीज़ को दूर बताएगा और तुम्हारा नुक़्सान कर देगा,) और

3. कंजूस की दोस्ती से भी बचना, क्योंकि जब तुम्हें उसकी सख़्त ज़रूरत होगी, वह उस वक़्त तुमसे दूर हो जाएगा, और

4. बदकार की दोस्ती से भी बचना, क्योंकि वह तुम्हें मामूली-सी

तुम उनमें जा मिले हो,

4. अपनी आबरू को अल्लाह की ख़ातिर क़ुरबान कर दो, इसलिए जो तुम्हें बुरा-भला कहे, या गाली दे या तुमसे लड़े, तुम उसे अल्लाह के लिए छोड़ दो, और

5. जब तुमसे कोई बुरा काम हो जाए, तो फ़ौरन अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करो।[1]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, इंसान का दिल दुनिया की मुहब्बत में जवान रहता है, अगरचे बुढ़ापे की वजह से उसकी हंसुली की दोनों हड्डियां आपस में मिल जाएं, लेकिन जिनके दिलों को अल्लाह ने तक़्वा के लिए आज़मा लिया है, उनके दिल दुनिया की मुहब्बत में जवान नहीं रहते और ऐसे कामिल मुत्तक़ी लोग बहुत कम होते हैं।[2]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तीन काम ऐसे हैं जिनको करने से इब्ने आदम के सारे काम क़ाबू में आ जाएंगे—

1. तुम अपनी मुसीबत का किसी से शिकवा न करो, और

2. अपनी बीमारी को किसी से मत बताओ, और

3. अपनी ज़ुबान से अपनी ख़ूबियां न बयान करो और अपने आपको मुक़द्दस और पाकीज़ा न समझो।[3]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया, मज़्लूम की और यतीम की बद-दुआ से बचो, क्योंकि इन दोनों की बद-दुआ रात को अल्लाह की ओर चलती है, जबकि लोग सोए हुए होते हैं।

एक रिवायत में यह है कि मुझे लोगों में उस पर ज़ुल्म करना सबसे ज़्यादा मब्ग़ूज़ है जो बिल्कुल बेबस और बेकस हो और अल्लाह के अलावा किसी और से मेरे ख़िलाफ़ मदद न ले सके।[4]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 222,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 223, कंज़, भाग 8, पृ० 224,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 224,
4. हुलीया, भाग 1, पृ० 221,

हज़रत मामर रहमतुल्लाहि अलैहि अपने एक साथी से रिवायत करते हैं कि हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत सलमान को ख़त में यह लिखा कि ऐ मेरे भाई ! अपनी सेहत और फ़राग़त को उस बला के आने से पहले ग़नीमत समझो, जिसको तमाम बन्दे मिलकर टाल नहीं सकते। (उस बला से मुराद मौत है) और मुसीबत के मारे की दुआ को ग़नीमत समझो। और ऐ मेरे भाई ! मस्जिद तुम्हारा घर होना चाहिए यानी मस्जिद में ज़्यादा वक़्त आमाल में गुज़रे, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि मस्जिद हर मुत्तक़ी का घर है और मस्जिद जिन लोगों का घर होगी, उनके लिए अल्लाह ने यह ज़िम्मेदारी ले रखी है कि उन्हें ख़ुशी और राहत नसीब होगी और वे पुले सिरात पार करके अल्लाह की रज़ामंदी हासिल करेंगे। और ऐ मेरे भाई ! यतीम पर रहम करो, उसे अपने क़रीब करो और उसे अपने खाने में से खिलाओ, क्योंकि एक बार एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अपने दिल की सख़्ती की शिकायत की तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारा दिल नर्म हो जाए। उसने कहा, जी हां। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यतीम को अपने से क़रीब करो, उसके सर पर हाथ फेरो और उसे अपने खाने में से खिलाओ, इससे तुम्हारा दिल नर्म हो जाएगा और तुम्हारी हर ज़रूरत पूरी होगी। और ऐ मेरे भाई ! इतना जमा न करो, जिसका तुम शुक्र अदा न कर सको, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि वह दुनिया वाला इंसान, जिसने इस दुनिया के ख़र्च करने में अल्लाह की इताअत की थी, उसे क़ियामत के दिन इस हाल में लाया जाएगा कि वह आगे-आगे होगा और उसका माल पीछे होगा। वह जब भी पुले सिरात पर लड़खड़ाएगा तो उसका माल उसे कहेगा, तुम बेफ़िक्र होकर चलते रहो, (तुम जहन्नम में नहीं गिर सकते, क्योंकि) माल का जो हक़ तुम्हारे ज़िम्मे था, वह तुमने अदा किया था।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जिस आदमी ने इस दुनिया के बारे में

अल्लाह की इताअत नहीं की थी, उसे इस हाल में लाया जाएगा कि उसका माल उसके कंधों के दर्मियान होगा और उसका माल उसे ठोकर मारकर कहेगा, तेरा नास हो तूने मेरे बारे में अल्लाह के हुक्म पर अमल क्यों नहीं किया? यह माल उसके साथ बार-बार ऐसे ही करता रहेगा, यहां तक कि वह हलाकत को पुकारने लगेगा। और ऐ मेरे भाई! मुझे यह बताया गया है कि तुमने एक ख़ादिम ख़रीदा है, हालांकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि बन्दे का अल्लाह से और अल्लाह का बन्दे से ताल्लुक़ उस वक़्त तक रहता है जब तक कि उसकी ख़िदमत न की जाए। अपने काम को वह ख़ुद करे और जब उसकी ख़िदमत होने लगती है, तो उस पर हिसाब वाजिब हो जाता है। उम्मे दर्दा ने एक ख़ादिम मांगा था और मैं उन दिनों मालदार भी था, लेकिन मैंने चूंकि हिसाब वाली हदीस सुन रखी थी, इस वजह से मुझे ख़ादिम ख़रीदना पसन्द न आया।

और ऐ मेरे भाई! मेरे लिए और तुम्हारे लिए कौन इस बात की ज़मानत दे सकता है कि हम क़ियामत के दिन एक दूसरे से मिल सकेंगे और हमें हिसाब का कोई डर न होगा?

और ऐ मेरे भाई! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी होने की वजह से धोखे में मत आ जाना, क्योंकि हमने हुज़ूर सल्ल० के बाद बहुत लम्बी मुद्दत गुज़ार ली है और अल्लाह ही ख़ूब जानता है कि हमने हुज़ूर सल्ल० के बाद क्या किया है।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद मुहारिबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे यह बात पहुंची है कि हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने एक भाई को ख़त में यह लिखा, अम्मा बादु! तुम्हारे पास जितनी दुनिया है, वह तुमसे पहले दूसरों के पास थी, और तुम्हारे बाद फिर दूसरों के पास चली जाएगी, उसमें से तुम्हारी सिर्फ़ उतनी है, जो तुमने अपने लिए आगे भेज दी, यानी अल्लाह के नाम पर दूसरों पर ख़र्च कर दी, इसलिए

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 214, कंज़, भाग 8, पृ० 224,

अपने आपको अपनी नेक औलाद पर तर्जीह दो।

यानी दूसरों पर ख़र्च कर जाओगे तो तुम्हारे काम आएगी वरना तुम्हारे बाद तुम्हारी औलाद को मिल जाएगी, क्योंकि तुम ऐसी ज़ात के पास जाओगे जो तुम्हारा कोई उज़्र क़ुबूल नहीं करेगी।

और तुम उन लोगों के लिए जमा कर रहे हो जो तुम्हारी कभी तारीफ़ नहीं करेंगे और तुम दो तरह के आदमियों के लिए जमा कर रहे हो—

1. या तो वह तुम्हारे माल में अल्लाह के हुक्म पर अमल करेगा और तुम तो उस माल को दूसरों पर ख़र्च करने की सआदत हासिल न कर सके, लेकिन यह सआदत उसे मिल जाएगी,

2. या वह उसके माल में अल्लाह की नाफ़रमानी पर अमल करेगा और चूंकि यह माल तुमने उसको जमा करके दिया है, इसलिए उसके ग़लत ख़र्च का ज़रिया बनने की वजह से तुम ख़ुद बदबख़्त बन जाओगे।

बहरहाल अल्लाह की क़सम ! इन दोनों में से कोई भी इस बात का हक़दार नहीं है कि तुम उसकी वजह से अपनी कमर पर बोझ लाद कर उसकी सज़ा को कम करवाओ, इसलिए तुम उसे अपनी ज़ात पर तर्जीह मत दो और जो जा चुके हैं, उनके लिए अल्लाह की रहमत की उम्मीद रखो और जो बाक़ी रह गए हैं, उनके बारे में अल्लाह के दिए पर एतमाद करो। वस्सलाम।[1]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मस्लमा बिन मख़्लद रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त में यह लिखा, अम्मा बाद !

बन्दा जब अल्लाह के हुक्म पर अमल करता है तो अल्लाह उससे मुहब्बत करने लगते हैं, और जब अल्लाह उससे मुहब्बत करने लगते हैं, तो उसकी मुहबबत अपनी मख़्लूक़ में डाल देते हैं और जब बन्दा अल्लाह की नाफ़रमानी वाला अमल करता है तो अल्लाह उससे नफ़रत करने लगते हैं और जब अल्लाह उससे नफ़रत करने लगते हैं तो उसकी

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 216,

नफ़रत अपनी मख़्लूक़ में डाल देते है।[1]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, इस्लाम सिर्फ़ बे चून व चरा हुक्म मानने का नाम है। ख़ैर सिर्फ़ जमाअत में है और इंसान अल्लाह और ख़लीफ़ा और आम मुसलमानों के साथ ख़ैरख़्वाही करे।[2]

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें

हज़रत सुफ़ियान सौरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने काबा के पास खड़े होकर फ़रमाया, ऐ लोगो ! मैं जुन्दुब ग़िफ़ारी हूं, इस भाई के पास आ जाओ जो तुम्हारा भला चाहने वाला और बड़ा मेहरबान है।

इस पर लोगों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया तो फ़रमाया, ज़रा यह बताओ कि जब तुममें से किसी का सफ़र का इरादा होता है, तो क्या वह इतना मुनासिब रास्ते के लिए सामान नहीं लेता जिससे वह चाही मंज़िल तक पहुंच जाए? लोगों ने कहा, लेता है।

फ़रमाया, क़ियामत के रास्ते का सफ़र तो सबसे लम्बा सफ़र है, इसलिए इतना रास्ते का सामान ले लो जिससे यह सफ़र ठीक तरह हो जाए। लोगों ने कहा, वह रास्ते का सामान क्या है, जिससे हमारा यह सफ़र ठीक तरह हो जाए?

फ़रमाया, हज करो, इससे तुम्हारे बड़े-बड़े काम हो जाएंगे और सख़्त गर्म दिन में रोज़े रखो, क्योंकि क़ियामत का दिन बहुत लम्बा है और रात के अंधेरे में दो रक्अत नमाज़ पढ़ो। ये दो रक्अतें क़ब्र की तंहाई में काम आएंगी। या तो ख़ैर की बात कहो, या चुप रहो। शर की बात मत करो, क्योंकि एक बहुत बड़े दिन अल्लाह के सामने खड़े होना है। अपना माल सदक़ा करो, ताकि क़ियामत की मुश्किलों से निजात पा सको।

इस दुनिया में दो बातों के लिए किसी मज्लिस में बैठो—

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 225,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 227

1. या तो आख़िरत की तैयारी के लिए,

2. या हलाल रोज़ी हासिल करने के लिए। इन कामों के अलावा किसी और काम के लिए मज्लिस में बैठने से तुम्हारा नुक़्सान होगा, फ़ायदा नहीं होगा। ऐसी मज्लिस का इरादा भी न करो।

माल के दो हिस्से करो—

1. एक हिस्सा अपने बाल-बच्चों पर ख़र्च करो, और

2. दूसरा हिस्सा अपनी आख़िरत के लिए आगे भेज दो। इन दो जगहों के अलावा कहीं और ख़र्च करोगे, तो इससे तुम्हारा नुक़्सान होगा, फ़ायदा नहीं होगा, इसलिए इसका इरादा भी न करो।

फिर हज़रत अबूज़र रज़ि० ने ऊंची आवाज़ से फ़रमाया, ऐ लोगो! दुनिया के लालच ने तुम्हें मार डाला और तुम जितना लालच करते हो, उसको तुम कभी हासिल नहीं कर सकते।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने एक भरोसे वाले इंसान को यह कहते हुए सुना कि हमें यह बात पहुंची है कि हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे, ऐ लोगो! मैं तेरा भला चाहने वाला और बड़ा मेहरबान हूं, रात के अंधेरे में नमाज़ पढ़ा करो। यह नमाज़ क़ब्र की तंहाई में काम आएगी। दुनिया में रोज़े रखो। क़ब्रों से उठाए जाने के दिन की गर्मी में काम आएंगे और दुश्वार दिन से डरकर सदक़ा दिया करो। ऐ लोगो! मैं तुम्हारा भला चाहने वाला और बड़ा मेहरबान हूं।[2]

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, लोगों के बच्चे पैदा होते हैं, जो एक दिन मर जाएंगे और लोग इमारतें बनाते हैं, जो एक दिन गिर जाएंगी। लोगों को फ़ना हो जाने वाली दुनिया का बड़ा शौक़ है और हमेशा रहने वाली आख़िरत को छोड़ देते हैं।

ग़ौर से सुनो! दो चीज़ें आम लोगों को नापसन्द हैं, लेकिन हैं वे

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 165,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 165

बहुत अच्छी—एक मौत, दूसरा फ़क्र।[1]

हज़रत हब्बान बिन अबी जबला रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबूज़र और हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया—

तुम्हारे बच्चे पैदा हो रहे हैं जो एक दिन मर जाएंगे और तुम इमारतें बना रहे हो जो एक दिन उजड़ जाएंगी। फ़ना होने वाली दुनिया के तुम लालची हो, लेकिन बाक़ी रहने वाली आख़िरत को छोड़ देते हो। ग़ौर से सुनो, तीन चीजें लोगों को पसन्द नहीं हैं, लेकिन हैं बहुत अच्छी—

1. एक मौत, 2. दूसरे बीमारी, 3. तीसरे फ़क्र।[2]

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें

हज़रत अबू तुफ़ैल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को यह फ़रमाते हुए सुना कि ऐ लोगो! और लोग तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़ैर के बारे में पूछा करते थे, लेकिन मैं शर के बारे में पूछा करता था, तो क्या तुम लोग ज़िंदों में से मुर्दे के बारे में नहीं पूछते?

फिर फ़रमाया, अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रसूल बनाकर भेजा। उन्होंने लोगों को गुमराही की तरफ़ और कुफ़्र से ईमान की तरफ़ बुलाया। फिर जिसका मुक़द्दर अच्छा था, उसने हुज़ूर सल्ल० की दावत को क़ुबूल कर लिया और जो लोग मुर्दा थे, वे हक़ को क़ुबूल करके ज़िंदा हो गए और ज़िंदा थे, वे बातिल पर चलते रहने की वजह से मुर्दा हो गए।

फिर (हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल से) नुबूवत चली गई, फिर नुबूवत के तरीक़े पर ख़िलाफ़त आ गई। अब इसके बाद ज़ुल्म वाली बादशाहत हो गई, जो उनके ज़ुल्म पर दिल, ज़ुबान और हाथ से इंकार करेगा, तो वह पूरे हक़ पर अमल करने वाला होगा और जो हाथ को रोक लेगा और सिर्फ़

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 213,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 224,

दिल और ज़ुबान से इंकार करेगा, वह हक़ के एक हिस्से को छोड़ने वाला होगा और जो हाथ और ज़ुबान को रोक लेगा और सिर्फ़ दिल से इंकार करेगा, वह हक़ के दो हिस्सों को छोड़ने वाला होगा और जो दिल से भी इंकार नहीं करेगा, वह इंसान ज़िंदों में से मुर्दा है।[1]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, दिल चार क़िस्म के होते हैं—

एक वह दिल, जिस पर परदा पड़ा हुआ है, यह तो काफ़िर का दिल है—

दूसरा दो मुंह वाला दिल, वह मुनाफ़िक़ का दिल है,

तीसरा वह साफ़-सुथरा दिल, जिसमें चिराग़ रोशन है, यह मोमिन का दिल है,

चौथा वह दिल, जिसमें निफ़ाक़ भी है और ईमान भी।

ईमान की मिसाल पेड़ जैसी है जो अच्छे पानी से बढ़ता है और निफ़ाक़ की मिसाल फोड़े जैसी है जो पीप और ख़ून से बढ़ता है। ईमान और निफ़ाक़ में से जिसकी सिफ़तें ग़ालिब आ जाएंगी, वही ग़ालिब आ जाएगा।[2]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, फ़िला दिलों पर डाला जाता है, तो जिस दिल में वह फ़िला पूरी तरह दाख़िल हो जाता है, उसमें एक काला दाग़ लग जाता है और जो दिल इस फ़िल्ने से इंकार करता है उसमें सफ़ेद नुक्ता लग जाता है। अब तुममें से जो यह जानना चाहता है कि उस पर फ़िल्ने का असर पड़ा है या नहीं, वह यह देखे कि जिस चीज़ को पहले वह हलाल समझता था, अब उसे हराम समझने लग गया है या जिस चीज़ को वह पहले हराम समझता था, अब उसे हलाल समझने लग गया है, तो बस समझ लो, उस पर फ़िल्ने का पूरा असर हो गया है।[3]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 274,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 276,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 272

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, फ़ित्नों से बचकर रहो और कोई आदमी ख़ुद उठकर फ़ित्ने की तरफ़ न जाए, क्योंकि अल्लाह की क़सम ! जो भी ख़ुद से उठकर फ़ित्नों की तरफ़ जाएगा, उसे फ़ित्ने ऐसे बहा कर ले जाएंगे जैसे बाढ़ कूड़े के ढेरों को बहा कर ले जाता है।

फ़ित्ना जब आता है तो बिल्कुल हक़ जैसा लगता है, यहां तक कि जाहिल कहता है कि यह तो हक़ जैसा है। (इस वजह से लोग फ़ित्ने में पड़ जाते हैं) लेकिन जब जाता है तो उस वक़्त साफ़ पता चल जाता है कि यह तो फ़ित्ना था, इसलिए जब तुम फ़ित्ने को देखो, तो उससे बचकर रहो और घरों में बैठ जाओ और तलवारें तोड़ डालो और कमान के तांत के टुकड़े कर दो।[1]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, फ़ित्ने रुक जाते हैं और फिर अचानक शुरू हो जाते हैं, इसलिए इसकी पूरी कोशिश करो कि तुम्हें इन दिनों में मौत आ जाए, जिन दिनों फ़ित्ना रुका हुआ हो। (मरने की कोशिश से मुराद मरने की तमन्ना और उसकी दुआ है।)[2]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, फ़ित्ना तीन आदमियों के ज़रिए से आता है—

1. एक तो उस माहिर और ताक़तवर आलिम के मुलहिद हो जाने के ज़रिए से जो उठने वाली हर चीज़ का तलवार के ज़रिए से जड़ काट देता है,

2. दूसरे उस बयान वाले के ज़रिए से जो फ़ित्ने की दावत देता है,

3. तीसरे सरदार और हाकिम के ज़रिए से।

आलिम और बयान करने वाले को तो फ़ित्ना मुंह के बल गिरा देता है, अलबत्ता सरदार को फ़ित्ना ख़ूब कुरेदता है और फिर जो कुछ उसके पास होता है, उस सबको फ़ित्ने में डाल देता है।[3]

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 273,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 274,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 274

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, फ़ित्ना ख़ालिस शराब से भी ज़्यादा अक़्ल को ले जाता है।[1]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, लोगों पर ऐसा ज़माना ज़रूर आएगा कि उस ज़माने में फ़ित्नों से सिर्फ़ वही आदमी निजात हासिल कर सकेगा जो डूबने वाले की तरह दुआ करेगा।[2]

हज़रत आमश रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे यह बात पहुंची है कि हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे, तुममें वे लोग सबसे बेहतरीन नहीं हैं जो दुनिया को आख़िरत की वजह से छोड़ देते हैं या आख़िरत को दुनिया की वजह से छोड़ देते हैं, बल्कि सबसे बेहतरीन लोग वे हैं जो दुनिया और आख़िरत दोनों के लिए मेहनत करते हैं।[3]

हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें

हज़रत अबुल आलिया रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में अर्ज़ किया, मुझे कुछ वसीयत फ़रमा दें।

फ़रमाया, अल्लाह की किताब को इमाम बना लो और उसको क़ाज़ी और फ़ैसला करने वाला, हकम होने पर राज़ी रहो, क्योंकि उसी को तुम्हारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम्हारे लिए पीछे छोड़कर गए हैं।

यह ऐसा सिफ़ारिशी है, जिसकी सिफ़ारिश मानी जाती है और यह ऐसा गवाह है जिस पर कोई तोहमत नहीं लगाई जा सकती। इसमें तुम्हारा और तुमसे पहले के लोगों का तज़्किरा है और इसमें तुम्हारे आपस के झगड़ों का फ़ैसला है और इसमें तुम्हारे और बाद वालों के हालात हैं।[4]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 274
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 274
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 278
4. हुलीया, भाग 1, पृ० 253,

हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जो बन्दा भी किसी चीज़ को अल्लाह के लिए छोड़ देता है, अल्लाह उसके बदले में उससे बेहतर चीज़ उसको वहां से देते हैं, जहां से मिलने का उसे गुमान नहीं होता और जो बन्दा किसी चीज़ को हल्का समझकर उसे वहां से ले लेता है, जहां से लेना ठीक नहीं, तो फिर अल्लाह उसे उससे ज़्यादा सख़्त चीज़ वहां से देते हैं जहां से मिलने का उसे गुमान भी नहीं होता।[1]

हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया—

मोमिन चार हालतों के दर्मियान रहता है :

(1) अगर किसी तक्लीफ़ में पड़ता है, तो सब्र करता है, और

(2) अगर कोई नेमत मिलती है, तो शुक्र करता है, और

(3) अगर बात करता है, तो सच बोलता है, और

(4) अगर कोई फ़ैसला करता है, तो इंसाफ़ वाला फ़ैसला करता है और ऐसे मोमिन के बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है 'नूरुन अला नूर' (सूरः नूर, आयत 35)

यह मोमिन पांच क़िस्म के नूरों में चलता-फिरता है—

1. इसका कलाम नूर है, और 2. इसका इल्म नूर है, 3. यह अन्दर जाता है, तो नूर में जाता है, 4. यह बाहर निकलता है, तो नूर से बाहर निकलता है, और 5. क़ियामत के दिन यह नूर की तरफ़ लौट कर जाएगा, और

काफ़िर पांच क़िस्म के अंधेरों में चलता-फिरता है—

1. उसका कलाम अंधेरा है, 2. उसका अमल अंधेरा है, 3. अन्दर जाता है, तो अंधेरे में और 4. बाहर आता है तो अंधेरे से, 5. और क़ियामत के दिन यह अनगिनत अंधेरों की ओर लौटकर जाएगा।[2]

हज़रत अबू नज़रा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी को जब्र या जुबैबिर कहा जाता था। उन्होंने कहा, मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 253,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 255

अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में उनसे एक बांदी लेने का इरादा किया। मैं सफ़र करके रात के वक़्त मदीना पहुंचा। मुझे अल्लाह ने बड़ी ज़हानत और बात करने का बड़ा सलीक़ा अता फ़रमाया हुआ है।

मैं हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत में गया और दुनिया के बारे में बात शुरू की और दुनिया के छोटे होने को बयान करने लगा और उसका ऐसा हाल बनाकर छोड़ा कि गोया दुनिया किसी चीज़ के बराबर नहीं है। हज़रत उमर रज़ि० के पहलू में एक साहब बैठे हुए थे।

जब मैं बात पूरी कर चुका, तो उन्होंने फ़रमाया, तुम्हारी सब बात लगभग ठीक थी लेकिन तुमने दुनिया की जो बुराई बयान की, वह ठीक नहीं थी और तुम जानते हो कि दुनिया क्या है? दुनिया के ज़रिए से तो हम जन्नत तक पहुंचेंगे और यही आख़िरत के लिए ज़ादे राह है और दुनिया ही में तो तुम्हारे वे आमाल हैं, जिनका बदला तुमको आख़िरत में मिलेगा।

ग़रज़ यह कि उन्होंने दुनिया के बारे में जो बात करनी शुरू की तो पता चला कि यह तो दुनिया को मुझसे ज़्यादा जानते हैं। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! यह आपके पहलू में बैठे हुए साहब कौन हैं? फ़रमाया, यह मुसलमानों के सरदार हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।[1]

एक आदमी ने हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अबुल मुंज़िर! आप मुझे कुछ वसीयत फ़रमा दें।

फ़रमाया, लायानी वाले काम में हरगिज़ न लगो और दुश्मन से किनारा कश रहो और दोस्त के साथ चौकन्ने होकर चलो। दोस्ती में तुमसे कोई ग़लत काम न करवा ले। ज़िंदा आदमी की उन्हीं बातों पर रश्क करो, जिन बातों पर मर जाने वाले पर रश्क करते हो यानी नेक आमाल और अच्छी सिफ़तों पर और अपनी हाजत उस आदमी से न तलब करो जिसे तुम्हारी हाजत पूरी करने की परवाह नहीं है।[2]

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 136,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 224

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें

हज़रत अब्दुल्लाह बिन दीनार बहरानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत ज़ैद बिन साबित ने हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हुमा को ख़त में यह लिखा, अम्मा बादु अल्लाह ने ज़ुबान को दिल का तर्जुमान बनाया और दिल को ख़जाना और हुक्मरां बनाया। दिल ज़ुबान को जो हुक्म देता है ज़ुबान उसे पूरा करती है। जब दिल ज़ुबान का साथ देता है तो बात-चीत ढंग की और मुनासिब होती है और न ज़ुबान से कोई लग़्ज़िश होती है और न ज़ुबान ठोकर खाती है और जिस इंसान का दिल उसकी ज़ुबान से पहले न हो, यानी दिल उसकी निगरानी और देख-भाल न करे, तो उसकी बात अक़्ल और समझ वाली नहीं होगी।

जब आदमी अपनी ज़ुबान को बात करने में खुला और आज़ाद छोड़ देगा और ज़ुबान दिल की मुख़ालफ़त करेगी तो इस तरह वह आदमी अपनी नाक काट डालेगा यानी ख़ुद को ज़लील कर लेगा और जब आदमी अपने क़ौल का अपने फ़ेल से मुक़ाबला करेगा तो अमली शक्ल से ही उसके क़ौल की तस्दीक़ होगी और यह कहावत आम तौर से बयान की जाती है कि जो बख़ील भी तुम्हें मिलेगा, वह बातों में तो बड़ा सख़ी होगा, लेकिन अमल में बिल्कुल कंजूस होगा। इसकी वजह यह है कि उसकी ज़ुबान उसके दिल से आगे रहती है, यानी बोलती बहुत है और दिल के क़ाबू में नहीं है।

और यह कहावत भी आम तौर से बयान की जाती है कि जब कोई आदमी अपने कहे की पाबन्दी न करे, यानी उस पर अमल न करे, हालांकि इस बात को कहते वक़्त वह जानता था कि बात हक़ है और उस पर अमल करना वाजिब है, तो क्या तुम उसके पास शरफ़ व इज़्ज़त और मरदानगी पाओगे?

और आदमी को चाहिए कि वह लोगों के ऐबों को न देखे, क्योंकि जो लोगों के ऐब देखता है और अपने ऐबों को हलका समझता है, वह

उस आदमी की तरह है जो तकल्लुफ़ के साथ ऐसा काम कर रहा है जिसका उसे हुक्म नहीं दिया गया। वस्सलामु।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की नसीहतें

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, ऐ गुनाह करने वाले! गुनाह के बुरे काम से मुतमइन न हो जाना। गुनाह करने के बाद कुछ ऐसी बातें होती हैं जो गुनाह से भी बड़ी होती हैं। गुनाह करते हुए तुम्हें अपने दाएं-बाएं के फ़रिश्तों से शर्म न आई। तुमने जो गुनाह किया है, यह उससे भी बड़ा गुनाह है। तुम्हें मालूम नहीं है कि अल्लाह तुम्हारे साथ क्या करेंगे।

और फिर तुम हंसते हो? तुम्हारा यह हंसना गुनाह से भी बड़ा है और जब तुम्हें गुनाह करने में कामियाबी हासिल हो जाती है और तुम उस गुनाह पर ख़ुश होते हो, तो तुम्हारी यह ख़ुशी उस गुनाह से भी बड़ी है और जब तुम गुनाह न कर सको और उस पर तुम ग़मगीन हो जाओ तो तुम्हारा यह ग़मगीन होना उस गुनाह के कर लेने से ज़्यादा बड़ा है। गुनाह करते हुए हवा के चलने से तुम्हारे दरवाज़े का परदा हिल जाए, इससे तुम डरते हो, अल्लाह तुम्हें देख रहा है, इससे तुम्हारा दिल परेशान नहीं होता तो यह कैफ़ियत उस गुनाह के कर लेने से ज़्यादा बड़ा गुनाह है।

तुम्हारा भला हो, क्या तुम जानते हो, हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम से क्या चूक हुई थी, जिसकी वजह से अल्लाह ने उनके जिस्म को एक बीमारी में मुब्तला कर दिया था और उनका सारा माल ख़त्म कर दिया था? उनसे चूक यह हुई थी कि एक मिस्कीन पर ज़ुल्म हो रहा था। उस मिस्कीन ने हज़रत अय्यूब अलै० से मदद मांगी थी और कहा था कि यह ज़ुल्म रुकवा दें। हज़रत अय्यूब अलै० ने उसकी मदद नहीं की थी और ज़ालिम को उस मिस्कीन पर ज़ुल्म करने से नहीं रोका था, इस पर अल्लाह ने उन्हें इस आज़माइश में डाला था?[2]

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 224
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 324, कंज़, भाग 2, पृ० 248

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, फ़र्ज़ों का एहतिमाम करो और अल्लाह ने जो हक़ तुम्हारे ज़िम्मे लगाए हैं, उन्हें अदा करो और उनकी अदाएगी में अल्लाह से मदद मांगो, क्योंकि जब अल्लाह को किसी बन्दे के बारे में पता चलता है कि वह सच्ची नीयत से और अल्लाह के यहां जो सवाब है, उसे हासिल करने के शौक़ में अमल कर रहा है, तो अल्लाह उससे नागवारियां ज़रूर हटा देते हैं और अल्लाह हक़ीक़ी बादशाह हैं, जो चाहते हैं, करते हैं।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, अल्लाह ने हर मोमिन और फ़ाजिर बन्दे के लिए हलाल रोज़ी मुक़र्रर फ़रमा रखी है। अगर वह इस रोज़ी के आने तक सब्र करता है, तो अल्लाह उसे हलाल रोज़ी देते हैं और अगर वह बे-सब्री करता है और हराम में से कुछ ले लेता है, तो अल्लाह उसकी उतनी हलाल रोज़ी कम कर देते हैं।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की नसीहतें

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, बन्दे को जब भी दुनिया की कोई चीज़ मिलती है, तो उसकी वजह से अल्लाह के यहां उसका दर्जा कम हो जाता है, अगरचे वह अल्लाह के यहां इज़्ज़त व शरफ़ वाला हो।[3]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, बन्दा उस वक़्त तक ईमान की हक़ीक़त को नहीं पहुंच सकता, जब तक कि आख़िरत पर दुनिया को तर्जीह देने की वजह से लोगों को कम अक़्ल न समझे।[4]

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के साथ चला जा रहा था कि इतने में उनका एक

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 326,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 246,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 306,
4. हुलीया, भाग 1, पृ० 306,

वीरान जगह पर गुज़र हुआ। उन्होंने मुझसे फ़रमाया, तुम यह कहो, ऐ वीराने ! तेरे यहां रहने वालों का क्या बना ?

मैंने कहा, ऐ वीराने ! तेरे यहां रहने वालों का क्या बना ? हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, वे सब ख़ुद तो चले गए, अलबत्ता उनके आमाल बाक़ी रह गए।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की नसीहतें

हज़रत वह्ब बिन कैसान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने मुझे यह नसीहत लिखकर भेजी, अम्माबाद,

तक़्वा वाले लोगों की कुछ निशानियां होती हैं जिनसे वे पहचाने जाते हैं और वे ख़ुद भी जानते हैं कि उनके अन्दर ये निशानियां हैं और वे निशानियां ये हैं—

1. मुसीबत पर सब्र करना, 2. रज़ा बर क़ज़ा, 3. नेमतों पर शुक्र करना और 4. क़ुरआन के हुक्म के सामने झुक जाना।

इमाम की मिसाल बाज़ार जैसी है, जो चीज़ बाज़ार में चलती है और जिसका रिवाज होता है, वही चीज़ बाज़ार में लाई जाती है। इसी तरह इमाम के पास अगर हक़ का रिवाज चल पड़े तो उसके पास हक़ ही लाया जाएगा और हक़ वाले ही उसके पास आएंगे और अगर उसके पास बातिल का रिवाज चल पड़े तो बातिल वाले ही उसके पास आएंगे और बातिल ही उसके पास चलेगा।[2]

हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा की नसीहतें

हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, जो दुनिया को तलब करता है, दुनिया उसे ले बैठती है और जो दुनिया से बे-रग़बती

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 312
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 336,

अख़्तियार कर लेता है, तो उसे उसकी परवाह भी नहीं होती कि कौन दुनिया को इस्तेमाल कर रहा है, दुनिया की तलब वाला उस आदमी का गुलाम होता है, जो दुनिया का मालिक होता है और जिसके दिल में दुनिया की तलब नहीं होती, उसे थोड़ी दुनिया काफ़ी हो जाती है और जिसके दिल में तलब होती है, उसे सारी दुनिया भी मिल जाए, तो भी उसका काम नहीं चलता।

और जिसका आज का दिन दीनी एतबार से बीते कल की तरह है, तो वह धोखे में है और जिसका आज का दिन बीते कल से बेहतर है, यानी आने वाले कल में उसकी दीनी हालत आज से ख़राब हो गई तो वह भारी नुक़्सान में है और जो अपनी ज़ात के बारे में नुक़्सान की छान-बीन नहीं करता, तो वह भी नुक़्सान में है और जो नुक़्सान में चल रहा है, उसका मर जाना ही बेहतर है।[1]

हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, यह जान लो कि हिल्म और बुर्दबारी ज़ीनत है और वायदा पूरा करना मरदानगी है और जल्दबाज़ी बेवक़ूफ़ी है और सफ़र करने से इंसान कमज़ोर हो जाता है और कमीने लोगों के साथ बैठना ऐब का काम है और फ़ासिक़ व फ़ाजिर लोगों के साथ मेल-जोल रखने से इंसान पर तोहमत लगती है।[2]

हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, लोग चार क़िस्म के होते हैं—

1. एक तो वह, जिसे भलाई में बहुत हिस्सा मिला, लेकिन उसके अख़्लाक़ अच्छे नहीं,

2. दूसरा वह, जिसके अख़्लाक़ तो अच्छे हैं, लेकिन भलाई के कामों में उसका कोई हिस्सा नहीं,

3. तीसरा वह, जिसके न अख़्लाक़ अच्छे हैं और न भलाई के कामों में उसका कोई हिस्सा है, यह तमाम लोगों में सबसे बुरा है,

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 222,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 237,

4. चौथा वह, जिसके अख़्लाक़ भी अच्छे हैं और भलाई के कामों में उसका हिस्सा भी ख़ूब है। यह लोगों में सबसे अफ़ज़ल है।[1]

हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें

हज़रत ज़ियाद बिन माहिक रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे, आप लोगों ने ख़ैर नहीं देखी, उसके अस्बाब देखे हैं और शर नहीं देखा, उसके अस्बाब देखे हैं। सारी की सारी ख़ैर अपनी तमाम शक्लों के साथ जन्नत में है और सारा का सारा शर अपनी तमाम सूरतों के साथ जहन्नम की आग में है।

और दुनिया तो वह सामान है जो सामने मौजूद है, नज़र आ रहा है, जिसमें से नेक और बुरे सब खा रहे हैं और आख़िरत एक सच्चा वायदा है, जिसमें सब पर ग़ालिब आने वाले बादशाह यानी अल्लाह फ़ैसला करेंगे और दुनिया और आख़िरत में से हर एक के बेटे यानी हर एक के चाहने वाले हैं, इसलिए तुम आख़िरत के बेटों में से बनो और दुनिया के बेटों में से न बनो।

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कुछ लोगों को इल्म तो मिल जाता है, लेकिन बुर्दबारी नहीं मिलती और हज़रत अबू याला रज़ियल्लाहु अन्हु (यह हज़रत शद्दाद की कुन्नियत यानी उपनाम है) को इल्म भी मिला और बुर्दबारी भी।[2]

हज़रत जुन्दुब बजली रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें

हज़रत जुन्दुब बजली रज़ियललाहु अन्हु ने फ़रमाया, अल्लाह से डरो और क़ुरआन पढ़ो, क्योंकि क़ुरआन अंधेरी रात का नूर है और चाहे दिन में मशक़्क़त और फ़ाक़ा हो, लेकिन क़ुरआन पढ़ने से दिन में रौनक़ आ जाती है और जब कोई मुसीबत तुम्हारे माल और तुम्हारे जिस्म में से किसी एक पर आने लगे तो कोशिश करो कि माल का नुक़्सान हो जाए

1. कंज़, भाग 8, पृ० 237,
2. हलीया, भाग 1, पृ० 264

और जान का न हो और जब मुसीबत तुम्हारी जान और तुम्हारे दीन में से किसी एक पर आने लगे तो कोशिश करो कि जान का नुक़्सान हो जाए, लेकिन दीन का न हो और असल नाकाम और नामुराद वह है जो अपने दीन में नाकाम व नामुराद हो और हक़ीक़त में हलाक होने वाला वह है जिसका दीन बर्बाद हो जाए।

ग़ौर से सुनो ! जन्नत में जाने के बाद कोई फ़क़्र व फ़ाक़ा नहीं होगा और जहन्नम में जाने के बाद ग़िना और मालदारी की कोई सूरत बाक़ी नहीं रहेगी, क्योंकि जहन्नम का क़ैदी कभी छूट नहीं सकेगा और उसका ज़ख़्मी कभी ठीक नहीं हो सकेगा और न उसकी आग कभी बुझेगी और अगर किसी मुसलमान ने किसी मुसलमान का मुट्ठी भर ख़ून बहाया होगा, तो वह मुट्ठी भर ख़ून उसके लिए जन्नत में जाने से रुकावट बन जाएगा और जब भी जन्नत के किसी दरवाज़े से दाख़िल होना चाहेगा तो वहां उसे यह ख़ून धक्के देता हुआ मिलेगा।

और जान लो कि आदमी को मरने के बाद जब दफ़न कर दिया जाता है, तो सबसे पहले उसका पेट सड़ता है और उसमें से बदबू आने लगती है, इसलिए उस बदबू के साथ हराम रोज़ी से गन्दगी का इज़ाफ़ा न करो और अपने मुसलमान भाइयों के माल के बारे में अल्लाह से डरो और ख़ून बहाने से भी बचो।[1]

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें

हज़रत आमिर बिन सुलैम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हम एक जनाज़े के साथ बाब दमिश्क़ में गए। हमारे साथ हज़रत अबू उमामा बाहली रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। जब वह जनाज़े की नमाज़ पढ़ा चुके और लोग जनाज़े को दफ़न करने लगे, तो उन्होंने फ़रमाया, ऐ लोगो ! तुम अब तो सुबह व शाम ऐसी जगह कर रहे हो जहां तुम लोग अपने-अपने हिस्से की नेकियां और बुराइयां जमा कर रहे हो।

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 222,

फिर हज़रत अबू उमामा रज़ि० ने क़ब्र की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया, बहुत जल्द यहां से कूच करके इस (क़ब्र वाली) जगह आ जाओगे। यह क़ब्र तंहाई का घर है, अंधेरे का घर है, कीड़ों का घर है और तंगी का घर है, लेकिन जिसके लिए अल्लाह क़ब्र को कुशादा कर दें, तो यह अलग बात है।

फिर क़ियामत के दिन तुम लोग यहां से मुंतक़िल होकर हश्र के मैदान में पहुंच जाओगे और वहां अल्लाह का एक हुक्म आएगा, जिससे बहुत से चेहरे सफ़ेद और बहुत से स्याह हो जाएंगे, फिर वहां से दूसरी जगह चले जाओगे। उस जगह सब लोगों पर सख़्त अंधेरा छा जाएगा।

फिर नूर बांटा जाएगा, मोमिन लोगों को तो नूर मिल जाएगा, लेकिन काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों को ऐसे ही छोड़ दिया जाएगा, उन्हें कुछ भी नूर नहीं मिलेगा और अल्लाह ने अपनी किताब में इस मिसाल को इन लफ़्ज़ों में बयान किया है—

اَوْ كَظُلُمَاتٍ فِىْ بَحْرٍ لُّجِّىٍّ يَّغْشَاهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ظُلُمَاتٌ
بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ اِذَا اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰهَا وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَالَهٗ مِنْ نُّوْرٍ
(سورت نور آیت ۴۰)

'या वे ऐसे हैं जैसे बड़े गहरे समुन्दर में अन्दरूनी अंधेरे कि उसको एक बड़ी लहर ने ढांक लिया हो। उस (लहर) के ऊपर दूसरी लहर, उसके ऊपर बादल (है, ग़रज़) ऊपर तले बहुत से अंधेरे (ही अंधेरे) हैं कि अगर (कोई ऐसी हालत में) अपना हाथ निकाले (और देखना चाहे) तो देखने का एहतमाम भी नहीं और जिसको अल्लाह ही (हिदायत का) नूर न दे, उसको (कहीं से भी) नूर नहीं मयस्सर हो सकता।'

(सूरः नूर, आयत 40)

और काफ़िर व मुनाफ़िक़ मोमिन के नूर से रोशनी हासिल नहीं कर सकेंगे जैसे अंधा आंख वाले की देखने की ताक़त से कोई फ़ायदा हासिल नहीं कर सकता। मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें ईमान वालों से (पुले सिरात पर) कहेंगे—

انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا (سورۃ حدید آیت ۱۳)

'हमारा इन्तिज़ार कर लो, हम भी तुम्हारे नूर से कुछ रोशनी हासिल कर लें। उनको जवाब दिया जाएगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ, फिर (वहां से) रोशनी तलाश करो।' (सूरः हदीद, आयत 13)

इस तरह अल्लाह मुनाफ़िक़ों को उनकी चालबाज़ी की सज़ा देंगे, जैसे कि अल्लाह ने फ़रमाया है—

يُخَادِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ (سورۃ نساء آیت ۱۴۲)

'चालबाज़ी करते हैं अल्लाह से, हालांकि अल्लाह इस चाल की सज़ा उनको देने वाले हैं।' (सूरः निसा, आयत 142)

फिर कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ उसी जगह वापस आएंगे जहां नूर तक़्सीम हुआ था, लेकिन उन्हें वहां कुछ नहीं मिलेगा, फिर वे दोबारा मुसलमानों के पास आएंगे, फिर उनके और मुसलमानों के बीच एक दीवार क़ायम कर दी जाएगी, जिसमें एक दरवाज़ा (भी) होगा—

بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ (سورۃ حدید آیت ۱۳)

'(जिसकी कैफ़ियत यह है कि) उसके भीतरी तरफ़ रहमत होगी और बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा।' (सूरः हदीद, आयत 13)

हज़रत सुलैम बिन आमिर रज़ि० कहते हैं, यों मुनाफ़िक़ धोखे में पड़े रहेंगे, यहां तक कि नूर बंट जाएगा और अल्लाह मुनाफ़िक़ और मोमिनों को अलग-अलग कर देंगे।[1]

हज़रत सुलैमान बिन हबीब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं एक जमाअत के साथ हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, तो मैंने देखा कि वह तो दुबले-पतले, बड़े उम्र वाले बड़े मियां हैं और उनका ज़ाहिरी मंज़र जो नज़र आ रहा था, उनकी अक़्ल और उनकी बातें उससे कहीं ज़्यादा अच्छी थीं।

उन्होंने सबसे पहले हमसे यह बात की कि इस मज्लिस में बैठने की

---

1. तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 308, बैहक़ी, पृ० 346,

वजह से अल्लाह अपने अहकाम तुम तक पहुंचा रहे हैं और यह मज्लिस तुम पर अल्लाह की हुज्जत है, क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो कुछ देकर भेजा गया था, आपने वह सब कुछ अपने सहाबा रज़ि० को पहुंचा दिया और आपके सहाबा रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से जो कुछ सुना था, वह सब आगे पहुंचा दिया, इसलिए तुम जो कुछ सुन रहे हो, उसे आगे पहुंचा देना।

तीन आदमी ऐसे हैं जो अल्लाह की ज़िम्मेदारी में हैं, यहां तक कि अल्लाह या तो उन्हें जन्नत में दाख़िल करेंगे या अज्र व सवाब और ग़नीमत देकर उन्हें वापस करेंगे—

1. एक तो वह आदमी जो अल्लाह के रास्ते में निकला, वह भी अल्लाह की ज़िम्मेदारी में है, यहां तक कि अल्लाह या तो उसे (शहादत का दर्जा देकर) जन्नत में दाख़िल करेंगे या अज्र व सवाब और माले ग़नीमत देकर वापस करेंगे।

2. दूसरा वह आदमी जिसने वुज़ू किया, फिर मस्जिद गया, वह भी अल्लाह की ज़िम्मेदारी में है, यहां तक कि अल्लाह या तो उसे (मौत देकर) जन्नत में दाख़िल करेंगे या अज्र व सवाब और ग़नीमत का माल देकर वापस करेंगे।

3. तीसरा वह आदमी जो अपने घर में सलाम करके दाख़िल हो।

फिर फ़रमाया, जहन्नम एक बड़ा पुल है, जिससे पहले सात छोटे पुल हैं, इनमें से दर्मियान वाले पुल पर बन्दों के हक़ों का फ़ैसला होगा। चुनांचे एक बन्दे को लाया जाएगा। जब वह बीच वाले पुल पर पहुंच जाएगा, तो उससे पूछा जाएगा कि तुम पर क़र्ज़ा कितना था? वह अपने क़र्ज़े का हिसाब लगाने लगेगा।

फिर हज़रत अबू उमामा रज़ि० ने यह आयत पढ़ी—

وَلَا يَكْتُمُونَ اللّٰهَ حَدِيثًا (سورۃ نساء آیت ۴۲)

'और अल्लाह से किसी बात को न छिपा सकेंगे।'

(सूरः निसा, आयत 42)

फिर वह बन्दा कहेगा, ऐ मेरे रब ! मुझ पर इतना-इतना क़र्ज़ा था। अल्लाह फ़रमाएंगे, अपना क़र्ज़ा अदा करो। वह कहेगा, मेरे पास तो कोई चीज़ नहीं है और मुझे मालूम भी नहीं कि मैं किस चीज़ से क़र्ज़ा उतार सकता हूं। फिर फ़रिश्तों से कहा जाएगा, इसकी नेकियां ले लो (और इसके क़र्ज़ ख़्वाहों को दे दो) चुनांचे उसकी नेकियां लेकर क़र्ज़ ख़्वाहों को दी जाती रहेंगी, यहां तक कि उसके पास एक भी नेकी बाक़ी नहीं रहेगी।

जब उसकी तमाम नेकियां ख़त्म हो जाएंगी, तो कहा जाएगा, इससे मुतालबा करने वालों के गुनाह लेकर इस पर डाल दो। चुनांचे मुझे यह बात पहुंची है कि बहुत से लोग पहाड़ों के बराबर नेकियां लेकर आएंगे और अपने हक़्क़ों का उनसे मुतालबा करने वालों को उनसे नेकियां लेकर दी जाती रहेंगी, यहां तक कि उनकी एक भी नेकी बाक़ी नहीं रहेगी, फिर मुतालबा करने वालों के गुनाह उन पर डाले जाएंगे, यहां तक कि वह गुनाह पहाड़ों के बराबर हो जाएंगे।

फिर हज़रत अबू उमामा रज़ि० ने फ़रमाया, झूठ से बचो, क्योंकि झूठ फ़िस्क़ व फ़ुजूर की रहबरी करता है और फ़िस्क़ व फ़ुजूर जहन्नम का रास्ता दिखाते हैं और सच बोलने को लाज़िम पकड़ो, क्योंकि सच नेकी का रास्ता दिखाता है और नेकी जन्नत का रास्ता दिखाती है।

फिर फ़रमाया, ऐ लोगो ! तुम तो जाहिलियत के ज़माने वालों से ज़्यादा गुमराह हो। अल्लाह ने तुम्हें दिरहम व दीनार इसलिए दिए हैं कि तुम एक दिरहम और एक दीनार अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करके सात सौ दिरहम और सात सौ दीनार का सवाब हासिल करो और फिर तुम लोग थैलियों में दिरहम व दीनार बन्द करके रखते हो और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं करते हो।

ग़ौर से सुनो, अल्लाह की क़सम ! ये तमाम फ़त्हें ऐसी तलवारों के ज़रिए से हुई हैं जिनमें ज़ीनत के लिए सोना और चांदी लगा हुआ नहीं था, बल्कि कच्चा पट्ठा, सीसा और लोहा लगा हुआ था।[1]

1. कंज़, भाग 8, पृ० 223,

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहतें

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मुत्तक़ी लोग सरदार हैं और उलेमा, क़ाइद व रहनुमा हैं। उनके साथ बैठना इबादत है, बल्कि इबादत से बढ़कर है और दिन व रात के गुज़रने की वजह से तुम्हारी उम्रें कम होती जा रही हैं, लेकिन तुम्हारे आमाल को बड़ी हिफ़ाज़त से रखा जा रहा है, इसलिए तुम सफ़र का सामान तैयार कर लो और यों समझो कि तुम लौटने की जगह यानी आख़िरत में पहुंच गए हो।[1]

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 224,

जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने माद्दी अस्बाब को छोड़ दिया और रूहानी अस्बाब को मज़बूती से पकड़ लिया और हुज़ूर सल्ल० की तरह से सहाबा किराम रज़ि० को दुनिया की क़ौमों की हिदायत का और उन्हें दावत देने का फ़िक्र था और वे हज़रात दावत व जिहाद के सिलसिले में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़्लाक़ व आदात के साथ मुत्तसिफ़ हो गए थे, तो किस तरह से उन्हें हर वक़्त ग़ैबी ताईद हासिल रहती थी।

फ़रिश्तों के ज़रिए मदद

हज़रत सह्ल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, हज़रत अबू उसैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने आंख की रोशनी जाने के बाद फ़रमाया, ऐ मेरे भतीजे! मैं और तुम अगर बद्र के मैदान में होते और अल्लाह मेरी रोशनी वापस कर देते, तो मैं तुम्हें वह घाटी दिखाता जहां से फ़रिश्ते निकलकर हमारी फ़ौज में आते थे और इस बात में किसी क़िस्म का शक व शुबहा नहीं है।[1]

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 280, हैसमी, भाग 6, पृ० 84,

हज़रत उर्वः रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम बद्र की लड़ाई के दिन हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु की शक्ल व सूरत पर उतरे थे। उन्होंने सर पर पीले रंग की पगड़ी बांधी हुई थी, जिसका कुछ कपड़ा उनके चेहरे पर भी था।[1]

हज़रत अब्बाद बिन अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु के सर पर बद्र की लड़ाई के दिन पीली पगड़ी थी, जिसका कुछ कपड़ा उनके चेहरे पर था। चुनांचे फ़रिश्ते आसमान से उतरे तो उनके सरों पर पीली पगड़ियां थीं।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, बद्र की लड़ाई के दिन फ़रिश्तों की निशानी सफ़ेद पगड़ियां थीं, जिनके शिमले पीठ पर लटके हुए थे। (कुछ फ़रिश्तों की पगड़ियां सफ़ेद थीं और कुछ की पीली) और हुनैन की लड़ाई के दिन उनकी निशानी सफ़ेद पगड़ियां थीं और बद्र की लड़ाई के दिन तो फ़रिश्तों ने लड़ाई लड़ी थी, बाक़ी किसी और लड़ाई के दिन लड़ाई नहीं लड़ी थी अलबत्ता शरीक होकर मुसलमानों की तायदाद बढ़ाते थे और उनकी मदद करते थे, किसी काफ़िर पर हमला नहीं करते थे।[3]

हज़रत इक्रिमा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत अबू राफ़ेअ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैं हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु का ग़ुलाम था और इस्लाम हमारे घर में दाख़िल हो चुका था। चुनांचे हज़रत अब्बास रज़ि० उनकी बीवी हज़रत उम्मे फ़ज़्ल रज़ियल्लाहु अन्हुमा और मैं हम सब मुसलमान हो चुके थे।

लेकिन हज़रत अब्बास रज़ि० अपनी क़ौम से डरते थे और उनके ख़िलाफ़ करने को पसन्द नहीं करते थे और अपने इस्लाम को छिपाते थे

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 84,
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 361, कंज़, भाग 5, पृ० 268,
3. दलाइल, पृ० 170,

और बहुत ज़्यादा मालदार थे। उनका बहुत-सा माल उनकी क़ौम में बिखरा हुआ था, अबू लहब भी बद्र की लड़ाई में नहीं गया था और उसने अपनी जगह आस बिन हिशाम बिन मुग़ीरह को भेजा था। बाक़ी तमाम काफ़िरों ने भी यही किया था, जो ख़ुद उस लड़ाई में नहीं गया था, उसने अपनी जगह किसी न किसी को भेजा था। जब उसे बद्र की लड़ाई में क़ुरैशी कुफ़्फ़ार से हार जाने की ख़बर मिली तो अल्लाह ने उसे ख़ूब रुसवा और ज़लील किया और हमें इस ख़बर से अपने अन्दर बहुत क़ूवत और ग़लबा महसूस किया।

हज़रत अबू राफ़ेअ रज़ि० कहते हैं, मैं एक कमज़ोर आदमी था और ज़मज़म के ख़ेमे में तीर बनाया करता था, उन्हें छीला करता था। अल्लाह की क़सम! मैं ख़ेमे में बैठा हुआ तीर छील रहा था और हज़रत उम्मे फ़ज़्ल रज़ि० मेरे पास बैठी हुई थीं और यह जो ख़बर आई थी, उससे हम बहुत ख़ुश थे कि इतने में अबू लहब बुरी तरह पांव घसीटता हुआ आया और ख़ेमे की रस्सी पर आकर बैठ गया। उसकी पीठ मेरी पीठ की ओर थी। वह यों बैठा हुआ था कि इतने में लोगों ने कहा, यह अबू सुफ़ियान है जो बद्र की लड़ाई से वापस आया।

इस अबू सुफ़ियान का नाम मुग़ीरह बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब है। (यह अबू सुफ़ियान और हैं और जो अबू सुफ़ियान क़ुरैश के सरदार और हर लड़ाई के सिपहसालार थे, वे और हैं। इनका नाम सख़र बिन हर्ब बिन उमैया है) अबू लहब ने अबू सुफ़ियान से कहा, मेरे पास आओ, क्योंकि मेरी ज़िंदगी की क़सम! सही ख़बर तो तुम्हारे पास है।

वह अबू लहब के पास आकर बैठ गया और लोग भी पास आकर खड़े हो गए। अबू लहब ने कहा, ऐ मेरे भतीजे! ज़रा यह तो बताओ कि लोगों को क्या हुआ? कैसे हार हो गई? उसने कहा, अल्लाह की क़सम! हम लड़ने के लिए मुसलमानों के सामने खड़े ही हुए थे कि मुसलमान हम पर छा गए और जिसे चाहते थे, क़त्ल कर देते थे और जिसे चाहते थे क़ैद कर लेते थे।

और अल्लाह की क़सम ! मैं उसमें अपनी फ़ौज का क़ुसूर नहीं समझता, क्योंकि हमारा मुक़ाबला तो मुसलमानों से हुआ ही नहीं, बल्कि हमारे मुक़ाबले में तो ऐसे लोग आ गए थे जिनका रंग सफ़ेद था और वे ज़मीन पर आसमान के बीच चितकबरे घोड़ों पर सवार थे और वे लोग तो किसी चीज़ को छोड़ते नहीं थे। उनके सामने कोई चीज़ ठहर नहीं सकती थी।

हज़रत अबू राफ़ेअ रज़ि० कहते हैं, मैंने ख़ेमे की रस्सी हाथ में उठाई और मैंने कहा, अल्लाह की क़सम ! ये तो फ़रिश्ते थे। (चूंकि कुफ़्फ़ार कुरैश फ़रिश्तों को मानते थे, इस वजह से) अबू लहब ने हाथ उठाकर मुझे ज़ोर से मारा। मैं उससे गुथ गया। उसने मुझे उठाकर ज़मीन पर पटका और फिर मेरे सीने पर बैठकर मुझे मारने लगा। मैं कमज़ोर आदमी था।

इस पर हज़रत उम्मे फ़ज़्ल रज़ि० ने खड़े होकर ख़ेमे का एक खूंटा लिया और ज़ोर से अबू लहब के सर पर मारा, जिससे उसके सर पर बड़ा घाव हो गया और यों कहा, चूंकि इस ग़ुलाम का आक़ा मौजूद नहीं है, इसलिए तूने उसे कमज़ोर समझ रखा है।

अबू लहब उठा और रुसवा होकर पीठ फेरकर चला गया (कि मक्का के उस सरदार ने आज एक ग़ुलाम और एक औरत से मार खाई।) अल्लाह की क़सम ! वह इसके बाद सिर्फ़ सात दिन ही ज़िंदा रहा। फिर अल्लाह ने उसे चेचक में मुब्तला कर दिया, जिससे वह मर गया।

यूनुस की रिवायत में आगे यह भी है, अबू लहब के दो बेटे थे। उन्होंने उसकी लाश को मरने के बाद तीन दिन वैसे ही पड़ा रहने दिया। उसे दफ़न नहीं किया, यहां तक कि वह सड़ गया और उसमें बदबू पैदा हो गई और क़ुरैश के लोग ताऊन की तरह चेचक से भी बहुत डरते थे और उससे बचते थे।

आख़िर क़ुरैश के एक आदमी ने उन दोनों से कहा, तुम लोगों का नास हो ! क्या तुम्हें शर्म नहीं आती, तुम्हारा बाप घर में सड़ रहा है, तुम उसे दफ़न नहीं करते। दोनों ने कहा, यह चेचक और उसका ज़ख़्म एक

छूत की बीमारी है, इसलिए हमें डर है कि कहीं हमें न हो जाए, उसने कहा, चलो, मैं तुम्हारी मदद करता हूं।

चुनांचे तीनों ने दूर से उस पर पानी फेंककर ग़ुस्ल दिया, उसके क़रीब न गए। फिर उसे उठाकर मक्का के ऊपरी हिस्से में ले गए और एक दीवार के सहारे उसे लिटाकर उस पर पत्थर डाल दिए।[1]

हज़रत उम्मे बुरसुन रहमतुल्लाहि अलैहा के ग़ुलाम हज़रत अब्दुर्रहमान उन सहाबी से नक़ल करते हैं जो हुनैन की लड़ाई में कुफ़्र की हालत में शरीक हुए थे और बाद में मुसलमान हुए थे, वह फ़रमाते हैं, जब लड़ाई के मैदान में हमारा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आमना-सामना हुआ, तो मुसलमान हमारे सामने इतनी देर भी नहीं ठहर सके जितनी देर में एक बकरी का दूध निकाला जाता है। उनके पांव उखड़ गए और उन्हें हार का मुंह देखना पड़ा और हम तलवारें हिलाते हुए हुज़ूर सल्ल० के सामने पहुंच गए।

जब हम हुज़ूर सल्ल० पर छा गए, तो एक दम हमारे और हुज़ूर सल्ल० के दर्मियान ऐसे लोग आ गए, जिनके चेहरे बड़े ख़ूबसूरत थे। उन्होंने कहा, (तुम्हारे) चेहरे बिगड़ जाएं, इसलिए तुम वापस चले जाओ। बस उन लोगों की इतनी बात से हमें हार का मुंह देखना पड़ा।[2]

हज़रत इब्ने बुरसुन रहमतुल्लाहि अलैहि के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत अब्दुर्रहमान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक साहब जो हुनैन की लड़ाई के दिन मुश्रिकों के साथ थे, उन्होंने मुझे वाक़िया यों बताया कि जब हुनैन की लड़ाई के दिन हमारे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा का आमना-सामना हुआ तो सहाबा हमारे सामने इतनी देर भी न ठहर सके, जितनी देर में एक बकरी का दूध निकाला जाता है।

जब हमने उन्हें हरा दिया, तो हम उनका पीछा कर रहे थे, यहां तक

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 308, तबक़ात इब्ने साद, भाग 4, पृ० 73, मुस्तदरक, भाग 3, पृ० 321, हैसमी, भाग 6, पृ० 89, हाकिम, भाग 3, पृ० 322, दलाइल, पृ० 170,
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 332,

कि हम लोग सफ़ेद ख़च्चर वाले सवार तक पहुंच गए। हमने देखा तो वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे। हुज़ूर सल्ल० के पास हमें गोरे-चिट्टे ख़ूबसूरत चेहरे वाले लोग मिले। उन्होंने हमसे कहा, (तुम्हारे) चेहरे बिगड़ जाएं, तुम वापस चले जाओ, बस इस पर हमारी हार हो गई और सहाबा रज़ि० हमारे ऊपर सवार हो गए और वे जीत गए। यह था हमारी हार का क़िस्सा।[1]

हज़रत जुबैर बिन मुतइम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुनैन की लड़ाई के दिन हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे और लोग लड़ रहे थे। मेरी आसमान पर अचानक नज़र पड़ी तो मुझे एक काली चादर आसमान से उतरती हुई नज़र आई जो हमारे और काफ़िरों के दर्मियान आकर गिर पड़ी। वे चींटियां थीं, जो बिखर गईं और सारी घाटी में फैल गईं। इसके बाद काफ़िरों को एकदम हार हो गई। हमें इन चींटियों के फ़रिश्ता होने में कोई शक नहीं था।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन फ़ज़्ल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उहुद की लड़ाई के दिन हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु को झंडा दिया। जब हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० शहीद हो गए, तो एक फ़रिश्ते ने उस झंडे को पकड़ लिया जो कि हज़रत मुस्अब रज़ि० की शक्ल में था।

दिन के आख़िरी हिस्से में हुज़ूर सल्ल० उससे फ़रमाने लगे, ऐ मुस्अब! आगे बढ़ो। उस फ़रिश्ते ने हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहा, मैं मुस्अब रज़ि० नहीं हूं, तब हुज़ूर सल्ल० को पता चला कि यह फ़रिश्ता है जो हज़रत मुस्अब रज़ि० की मदद व नुसरत के लिए आया है।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु

---

1. तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 345
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 334,
3. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 121

अलैहि व सल्लम क़बीला बनू कुरैज़ा की तरफ़ तशरीफ़ ले गए। उस वक़्त हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम अपनी सवारी पर सवार होकर क़बीला बनी ग़नम की गली में से गुज़रे थे, जिससे उस गली में ग़ुबार उड़ा था। वह ग़ुबार अब भी गोया कि मुझे नज़र आ रहा है।[1]

हज़रत हुमैद बिन हिलाल रहमतुल्लाहि अलैहि ने बनू कुरैज़ा की लड़ाई के बारे में पूरी हदीस बयान की है और उसमें यह भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ि० ने (ख़ंदक़ की लड़ाई से फ़ारिग़ होकर) हथियार रख दिए, तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए।

हुज़ूर सल्ल० हज़रत जिब्रील अलै० के पास बाहर तशरीफ़ लाए। हज़रत जिब्रील अलै० अपने घोड़े के सीने पर सहारा लेकर खड़े हुए थे और उनकी पलकों पर ख़ूब ग़ुबार पड़ा हुआ था, हुज़ूर सल्ल० नीचे तशरीफ़ लाए, तो हज़रत जिब्रील अलै० ने अर्ज़ किया, हमने तो अभी तक हथियार नहीं रखे, बनू कुरैज़ा की तरफ़ तशरीफ़ ले चलें (उनसे लड़ाई लड़नी है)।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मेरे साथी थके हुए हैं। आप उन्हें कुछ दिन की मोहलत दे दें, तो अच्छा है। हज़रत जिब्रील ने अर्ज़ किया, नहीं। अभी आप वहां तशरीफ़ ले चलें। मैं अपने इस घोड़े को उनके क़िले में घुसा दूंगा और उनके सारे क़िले गिराकर ज़मीन के बराबर कर दूंगा।

चुनांचे हज़रत जिब्रील और उनके साथ जितने फ़रिश्ते थे, ये सब वहां से पीठ फेरकर चले तो अंसार के क़बीला बनी ग़नम की गलियों में ग़ुबार उड़ने लगा।[2]

फ़रिश्तों का मुश्रिकों को क़ैद करना और उनसे लड़ना

हज़रत सुहैल बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैंने बद्र की लड़ाई के दिन बहुत-से गोरे-चिट्टे आदमी देखे जो चितकबरे घोड़ों पर

1. दलाइल, पृ० 182, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 76,
2. इब्ने साद, भाग 2, पृ० 77

आसमान और ज़मीन के दर्मियान सवार थे। उन पर निशानियां लगी हुई थीं, वे बाद में लड़ाई भी लड़ रहे थे और काफ़िरों को क़ैद भी कर रहे थे।[1]

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु वग़ैरह हज़रात फ़रमाते हैं, एक अंसारी सहाबी हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु को क़ैद करके लाए। (हज़रत अब्बास रज़ि० ने उस वक़्त तक अपना मुसलमान होना ज़ाहिर नहीं किया था, इसलिए वे बद्र की लड़ाई में काफ़िरों के साथ थे।)

हज़रत अब्बास रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इन्होंने मुझे क़ैद नहीं किया, बल्कि मुझे तो ऐसे आदमी ने क़ैद किया है जिसके सर का शुरू का हिस्सा गंजा था और उसकी शक्ल व सूरत ऐसी और ऐसी थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन अंसारी से फ़रमाया, अल्लाह ने एक करीम फ़रिश्ते के ज़रिए तुम्हारी मदद फ़रमायी है।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बद्र की लड़ाई के बारे में एक लम्बी हदीस बयान फ़रमाई है, उसमें यह भी है कि एक अंसारी सहाबी हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियलाहु अन्हु को क़ैद करके लाए।

हज़रत अब्बास रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह की क़सम ! उन्होंने मुझे क़ैद नहीं किया, मुझे तो उस आदमी ने क़ैद किया है जो कनपटी से गंजा था। उसका चेहरा सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत था और चितकबरे घोड़े पर सवार था। अब वह मुझे मुसलमानों में नज़र नहीं आ रहा। उन अंसारी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने इन्हें क़ैद किया है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अरे मियां ! ख़ामोश रहो, अल्लाह ने एक करीम फ़रिश्ते के ज़रिए तुम्हारी मदद फ़रमायी है।[3]

---

1. कंज़, भाग 5, पृ० 268,
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 76,
3. कंज़, भाग 5, पृ० 226, हैसमी, भाग 6, पृ० 175

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु को बनू सलमा के हज़रत अबुल यसर बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ैद किया था। हज़रत अबुल यसर एक छोटे क़द के आदमी थे और हज़रत अब्बास रज़ि० ऊंचे क़द के और बड़े डील-डौल वाले थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबुल यसर रज़ि० से फ़रमाया, ऐ अबुल यसर रज़ि० ! तुमने अब्बास रज़ि० को कैसे क़ैद कर लिया?

उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! उन्हें क़ैद करने में एक आदमी ने मेरी मदद की है। मैंने न लड़ाई से पहले उसे देखा है और न अब लड़ाई के बाद वह नज़र आ रहे हैं। उसकी शक्ल व सूरत ऐसी और ऐसी थी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, एक करीम फ़रिश्ते ने इसमें तुम्हारी मदद की है।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक मुश्रिक आगे था और एक अंसारी मुसलमान उसके पीछे दौड़ रहा था कि इतने में उस मुसलमान ने अपने ऊपर कोड़ा मारने की आवाज़ सुनी और एक घोड़ेसवार को यह कहते हुए सुना, ऐ हैज़ूम ! (यह हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के घोड़े का नाम है) आगे बढ़। उस मुसलमान ने देखा, तो वह मुश्रिक पीठ के बल नीचे गिरा हुआ था और कोड़े की मार से उसकी नाक ज़ख़्मी थी और चेहरा फटा हुआ था और यह सारा हिस्सा नीला हो चुका था।

उस अंसारी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर यह वाक़िया बयान किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम सच कहते हो। यह तीसरे आसमान से मदद आई थी। चुनांचे मुसलमानों ने उस दिन सत्तर काफ़िरों को क़त्ल किया और सत्तर को क़ैद किया।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि क़बीला बनी

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 12, हैसमी, भाग 6, पृ० 86, दलाइल, पृ० 169,
2. बिदाया, भाग 3, पृ० 279, दलाइल, भाग 2, पृ० 170,

ग़िफ़ार के एक आदमी ने बयान किया कि मैं और मेरे एक चचेरे भाई, हम दोनों एक पहाड़ पर चढ़े जहां से हमें बद्र का मैदान अच्छी तरह नज़र आ रहा था। हम दोनों उन दिनों मुश्रिक थे और यह इंतिज़ार कर रहे थे कि किसे हार का मुंह देखना पड़ता है, ताकि हम जीतने वालों के साथ मिलकर लूट-मार करें।

हम अभी पहाड़ पर थे कि इतने में हमारे क़रीब से एक बादल गुज़रा, जिसमें से हमें घोड़े के हिनहिनाने की आवाज़ सुनाई दी और किसी को यह कहते हुए सुना, ऐ हैज़ूम ! आगे बढ़। यह सुनकर मेरे चचेरे भाई के दिल का परदा फट गया और वह वहीं मर गया और मैं भी मरने के क़रीब हो गया था, लेकिन मुश्किल से अपने आपको संभाला।[1]

हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग एक लड़ाई में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे। दुश्मन से मुक़ाबला हुआ। मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह दुआ करते हुए सुना—

يَا مَالِكَ يَوْمِ الدِّيْنِ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ

'ऐ बदले के दिन के मालिक ! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद मांगते हैं।'

मैंने देखा कि दुश्मन के आदमी गिरते चले जा रहे हैं और फ़रिश्ते उन्हें आगे से पीछे से मार रहे हैं।[2]

हज़रत अबू उमामा बिन सह्ल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मेरे वालिद (हज़रत सह्ल रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया, ऐ मेरे बेटे ! हमने बद्र की लड़ाई में अल्लाह की ग़ैबी मदद की वजहसे अपना यह हाल देखा था कि हममें से कोई आदमी किसी मुश्रिक के सर की तरफ़ इशारा कर देता, तो उसका सर तलवार लगने से पहले ही जिस्म से कटकर नीचे गिर आता।[3]

1. दलाइल, भाग 2, पृ० 170
2. दलाइल, भाग 2, पृ० 164,
3. बिदाया, भाग 3, पृ० 281, हाकिम, भाग 3, पृ० 409, हैसमी, भाग 6, पृ० 84।

हज़रत अबू वाक़िद लैसी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं एक मुश्रिक का पीछा कर रहा था, ताकि मैं उस पर तलवार का वार करूं, लेकिन मेरी तलवार के उस तक पहुंचने से पहले ही उसका सर कटकर ज़मीन पर गिर गया, जिससे मैं समझ गया कि मेरे अलावा किसी और (नज़र न आने वाली मख़्लूक़ यानी फ़रिश्ते) ने उसे क़त्ल किया है।[1]

हज़रत सह्ल बिन अबी हसना रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत अबू बरज़ा हारिसी रज़ियल्लाहु अन्हु बद्र की लड़ाई के दिन (मुश्रिकों के) तीन सर उठाए हुए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्ल० ने जब उन्हें देखा तो फ़रमाया, तुम्हारा दायां हाथ कामियाब रहा।

उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इनमें से दो को तो मैंने क़त्ल किया और तीसरे की शक्ल यह हुई कि मैंने एक ख़ूबसूरत, ख़ुबरू और गोरा-चिट्टा आदमी देखा, जिसने उसका सर तन से जुदा कर दिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह फ़्लां फ़रिश्ता था।[2]

हज़रत महमूद बिन लबीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत हारिस बिन सिम्मा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक घाटी में थे। आपने मुझसे पूछा, क्या तुमने अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को देखा?

मैंने अर्ज़ किया, जी हां ! ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने उन्हें पहाड़ के दामन में देखा था और काफ़िरों की एक फ़ौज ने उन पर हमला किया हुआ था। इसलिए मैं नीचे उतरने लगा, (ताकि मैं उनकी मदद करूं) लेकिन रास्ते में आप मुझे नज़र आ गए, तो मैं उन्हें छोड़कर आपके पास आ गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ग़ौर से सुनो, फ़रिश्ते उनके साथ मिलकर काफ़िरों से लड़ाई लड़ रहे हैं।

हज़रत हारिस रज़ि० कहते हैं, मैं वहां से हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि०

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 281, हैसमी, भाग 6, पृ० 83, दलाइल, पृ० 176
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 83,

की तरफ़ चल पड़ा। मैंने वहां जाकर देखा कि मुश्रिकों का लश्कर जा चुका है और हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० के चारों ओर सात मुश्रिक क़त्ल हुए पड़े हैं।

मैंने कहा, आपका दाहिना हाथ कामियाब हो गया। क्या आपने अकेले इन सबको क़त्ल किया है?

उन्होंने कहा, यह अरतात बिन अब्द शुरहबील और यह काफ़िर, इन दो को तो मैंने क़त्ल किया है और बाक़ी इन पांच को उस आदमी ने क़त्ल किया है जो मुझे नज़र नहीं आ रहा था। मैंने कहा, अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ने सच कहा।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में कुछ लोगों के पास से गुज़रे। वह पीछे से इशारा करके हुज़ूर सल्ल० के बारे में कहने लगे कि यह वह आदमी है जो यह दावा करता है कि वह नबी है और उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० के साथ हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम भी थे।

हज़रत जिब्रील अलै० ने उन काफ़िरों की तरफ़ उंगली से इशारा किया, तो एकदम उनके जिस्म पर नाख़ून जैसे निशान पड़ गए, जो बाद में ज़ख्म बन गए और सड़ गए, जिससे उनमें बदबू पैदा हो गई और इस वजह से कोई भी उनके क़रीब न जा सका। इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ (سورت حجر آیت ۹۵)

'ये लोग जो हंसते हैं (और) अल्लाह के साथ दूसरा माबूद क़रार देते हैं, उनसे आपके लिए हम काफ़ी हैं।'[2] (सूरः हिज्र, आयत 95)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, अल्लाह ने फ़रमाया है—

إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ

---

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 114, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 76,
2. हैसमी, भाग 7, पृ० 46,

तो ये हंसने वाले और मज़ाक़ उड़ाने वाले काफ़िर वलीद बिन मुग़ीरह, अस्वद बिन अब्द यग़ूस, अस्वद बिन मुत्तलिब अबू ज़मआ, जो कि क़बीला बनू असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा में से था, हारिस बिन अबतल सहमी और आस बिन वाइल थे।

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए तो हुज़ूर सल्ल० ने उनसे इन काफ़िरों की शिकायत की। हज़रत जिब्रील अलैहि० ने कहा, आप मुझे ये लोग दिखा दें। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें वलीद बिन मुग़ीरह दिखाया। हज़रत जिब्रील ने वलीद के बाज़ू की बड़ी रग की तरफ़ बस एक इशारा ही किया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आपने तो कुछ भी नहीं किया? हज़रत जिब्रील अलैहि० ने कहा, अब आपको कुछ करने की ज़रूरत नहीं। मैंने उसकी सज़ा का इंतिज़ाम कर दिया है। फिर हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें हारिस बिन अबतल सहमी दिखाया। हज़रत जिब्रील अलैहि० ने उसके पेट की तरफ़ इशारा किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आपने कुछ किया तो है नहीं? हज़रत जिब्रील अलैहि० ने कहा, अब आपको कुछ करने की ज़रूरत नहीं। मैंने उसका इंतिज़ाम कर दिया है।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने आस बिन वाइल दिखाया। हज़रत जिब्रील अलैहि० ने उसके तलवे की तरफ़ इशारा किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आपने कुछ किया तो है नहीं? हज़रत जिब्रील अलैहि० ने कहा, अब आपको कुछ करने की ज़रूरत नहीं। मैंने उसका इन्तिज़ाम कर दिया है।

चुनांचे वलीद बिन मुग़ीरह का यह हुआ कि वह क़बीला ख़ुज़ाआ के एक आदमी के पास से गुज़रा, जो अपना तीर छील रहा था। वह तीर वलीद के बाज़ू की बड़ी रग को लग गया, जिससे वह रग कट गई और अस्वद बिन मुत्तलिब अंधा हो गया। कुछ कहते हैं, वैसे ही अंधा हो गया।

कुछ कहते हैं, वह एक पेड़ के नीचे उतरा। वह कहने लगा, ऐ मेरे बेटो! क्या तुम मुझसे हटाते नहीं, मैं तो हलाक हो गया। मेरी आंखों में

कांटे चुभ रहे हैं। उनके बेटों ने कहा, हमें तो कुछ नज़र नहीं आ रहा। कुछ देर उसे यों ही कांटे चुभते रहे। फिर उसकी दोनों आंखें अंधी हो गईं। और अस्वद बिन अब्द यग़ूस के सर में फोड़े निकल आए, जिनसे वह मर गया और हारिस बिन अबतल के पेट में सफ़रा यानी पीले पानी का ज़ोर हो गया, आख़िर पाख़ाना मुंह के रास्ते से आने लगा, जिससे वह मर गया और आस बिन वाइल चला जा रहा था, उसके पांव में शिबरिक़ा नामी कांटेदार झाड़ी का कांटा लग गया, जिससे उसका पांव सूज गया और वह मर गया।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी की कुन्नियत अबू मेलक़ थी और वह व्यापारी थे। अपने और दूसरों के माल से तिजारत किया करते थे और वह बहुत इबादतगुज़ार और परहेज़गार थे। एक बार वह सफ़र में गए। उन्हें रास्ते में एक हथियारों से मुसल्लह डाकू मिला। उसने कहा, अपना सारा सामान यहां रख दो, मैं तुम्हें क़त्ल करूंगा।

उस सहाबी ने कहा, तुमने माल लेना है, वह ले लो। उस डाकू ने कहा, नहीं, मैं तो तुम्हारा ख़ून बहाना चाहता हूं। उन सहाबी ने कहा, मुझे ज़रा मोहलत दो, मैं नमाज़ पढ़ लूं। उसने कहा, जितनी पढ़नी है, पढ़ लो।

चुनांचे उन्होंने वुज़ू करके नमाज़ पढ़ी और यह दुआ तीन बार मांगी—

يَا وَدُوْدُ يَا ذَا الْعَرْشِ الْمَجِيْدِ يَا فَعَّالًا لِمَا يُرِيْدُ اَسْأَلُكَ بِعِزَّتِكَ الَّتِيْ لَا تُرَامُ وَمُلْكِكَ
الَّذِيْ لَا يُضَامُ وَ بِنُوْرِكَ الَّذِيْ مَلَأَ اَرْكَانَ عَرْشِكَ اَنْ تَكْفِيَنِيْ
شَرَّ هٰذَا اللِّصِّ يَا مُغِيْثُ اَغِثْنِيْ

'ऐ बहुत मुहब्बत करने वाले! ऐ बड़े अर्श वाले! ऐ हर उस काम को कर लेने वाले, जिसका तू इरादा कर ले, मैं तेरी उस इज़्ज़त के वास्ते से, जिसको कोई मांगने का सोच भी नहीं सकता और तेरी उस बादशाहत के वास्ते से, जिस पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता और तेरे उस नूर के वास्ते से, जिसने तेरे अर्श के तमाम कोनों को भरा हुआ है,

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 47

यह सवाल करता हूं कि तू मुझे इस डाकू के शर से बचा ले। ऐ फ़रियाद को सुनने वाले ! मेरी फ़रियाद को पहुंच।'

तो अचानक एक घोड़े सवार आया, जिसके हाथ में एक नेज़ा था, जिसे उठाकर उसने अपने घोड़े के कानों के दर्मियान बुलन्द किया हुआ था, उसने उस डाकू को नेज़ा मारकर क़त्ल कर दिया, फिर वह उस व्यापारी की ओर मुतवज्जह हुआ। व्यापारी ने पूछा, तुम कौन हो? अल्लाह ने तुम्हारे ज़रिए से मेरी मदद फ़रमाई है।

उसने कहा, मैं चौथे आसमान का फ़रिश्ता हूं। जब आपने (पहली बार) दुआ की, तो मैंने आसमान के दरवाज़ों की खड़खड़ाहट सुनी। जब आपने दोबारा दुआ की तो मैंने आसमान वालों की चीख़-पुकार सुनी। फिर आपने तीसरी बार दुआ की, तो किसी ने कहा, यह एक मुसीबत के मारे की दुआ है।

मैंने अल्लाह के दरबार में अर्ज़ किया कि इस डाकू को क़त्ल करने का काम मेरे ज़िम्मे कर दें। फिर उस फ़रिश्ते ने कहा, आपको ख़ुशख़बरी हो कि जो आदमी भी वुज़ू करके चार रक्अत नमाज़ पढ़े और फिर यह दुआ मांगे, उसकी दुआ ज़रूर क़ुबूल होगी, चाहे वह मुसीबत का मारा हो या न हो।[1]

हज़रत लैस बिन साद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे यह बात पहुंची है कि हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपना क़िस्सा इस तरह सुनाया कि मैंने तायफ़ में एक आदमी से किराए पर ख़च्चर लिया, किराए पर देने वाले ने यह शर्त लगाई कि वह रास्ते में जिस मंज़िल पर चाहेगा, मुझे ठहराएगा।

चुनांचे वह मुझे एक वीराने की ओर लेकर चल पड़ा और वहां पहुंचकर उसने कहा, यहां उतर जाओ। मैं वहां उतर गया तो देखा कि बहुत से लोग वहां क़त्ल हुए पड़े थे। जब वह मुझे क़त्ल करने लगा, तो मैंने कहा, मुझे ज़रा दो रक्अत नमाज़ पढ़ने दो। उसने कहा, पढ़ लो,

1. इसाबा, भाग 4, पृ० 182

तुमसे पहले उन लोगों ने भी नमाज़ पढ़ी थी, लेकिन नमाज़ से उन्हें कोई फ़ायदा नहीं हुआ था।

जब मैं नमाज़ पढ़ चुका, तो वह मुझे क़त्ल करने के लिए आगे बढ़ा, तो मैंने कहा—

يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

'या अरहमर्राहिमीन०'

तो उसने एक आवाज़ सुनी कि इसे क़त्ल न करो। वह एक दम डर गया और उस आवाज़ को तलाश करने गया तो उसे कोई न मिला। वह वापस आया तो मैंने ऊंची आवाज़ से कहा—

يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

'या अरहमर्राहिमीन०'

इस तरह तीन बार हुआ। फिर अचानक घोड़े पर एक सवार सामने आ गया। उसके हाथ में लोहे का एक नेज़ा था। उस नेज़े के सर से एक शोला निकल रहा था। उस सवार ने उसको इस ज़ोर से नेज़ा मारा कि पार होकर कमर की तरफ़ निकल आया और वह मर कर ज़मीन पर गिर गया, फिर मुझसे कहा, जब तुमने पहली बार—

يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

'या अरहमर्राहिमीन' कहकर पुकारा था, तो उस वक़्त मैं सातवें आसमान पर था। जब तुमने दोबारा पुकारा था, तो मैं आसमाने दुनिया पर था। जब तुमने तीसरी बार पुकारा था, तो मैं आपके पास पहुंच गया।[1]

सहाबा किराम रज़ि० का फ़रिश्तों को देखना

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी आदमी की आवाज़ सुनी तो आप जल्दी से उठे और घर के बाहर उसके पास गए। मैं भी देखने के लिए आपके पीछे गई, तो मैंने देखा कि एक आदमी अपने तुर्की घोड़े

1. इस्तीआब, भाग 1, पृ० 548,

की गरदन के बालों पर सहारा लगाए खड़ा है। जब मैंने ज़रा ग़ौर से देखा तो ऐसे लगा कि यह हज़रत दिह्या कल्बी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं और वह पगड़ी बांधे हुए हैं जिसका शमला उनके कंधों के दर्मियान लटका हुआ है।

जब हुज़ूर सल्ल० मेरे पास तशरीफ़ लाए, तो मैंने अर्ज़ किया कि आप बहुत तेज़ी से उठकर बाहर गए थे। मैंने भी बाहर जाकर देखा तो वह तो हज़रत दिह्या कल्बी थे (उनकी वजह से आपको इतनी जल्दी करने की ज़रूरत नहीं थी।) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुमने उन्हें देखा है? मैंने अर्ज़ किया, जी हां। फ़रमाया, यह हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम थे। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं बनू कुरैज़ा पर हमला करने के लिए चलूं।[1]

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि बनू कुरैज़ा के बारे में लम्बी हदीस बयान करते हैं, जिसमें यह मज़्मून भी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बनू कुरैज़ा तशरीफ़ ले चले, तो रास्ते में हुज़ूर सल्ल० का सहाबा किराम की कई मज्लिसों पर गुज़र हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे पूछा, क्या अभी तुम्हारे पास से कोई गुज़रा है? उन सबने कहा, जी हां। अभी दिह्या कल्बी गुज़रे थे जो सफ़ेद ख़च्चर पर सवार थे। उनके नीचे एक रेशमी चादर भी थी।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह हज़रत दिह्या नहीं थे, बल्कि हज़रत जिब्रील अलैहि० थे जिन्हें बनू कुरैज़ा इसलिए भेजा गया है, ताकि वे उनके क़िलों को हिलाकर उनके दिलों में रौब डाल दें।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार एक अंसारी की बीमारपुर्सी के लिए तशरीफ़ ले गए। जब हुज़ूर सल्ल० उनके घर के क़रीब पहुंचे तो हुज़ूर सल्ल० ने सुना कि वह अंसारी घर के अन्दर किसी से बात कर रहे हैं। जब हुज़ूर सल्ल० इजाज़त लेकर अन्दर तशरीफ़ ले गए, तो आपको वहां कोई नज़र न आया।

1. दलाइल, पृ० 182, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 250
2. अबू नुऐम, पृ० 184,

आपने उनसे पूछा, अभी मैं सुन रहा था कि तुम किसी से बातें कर रहे थे? उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! लोगों ने मेरे बुख़ार की वजह से जो बातें कीं, उनसे मुझे बहुत ग़म व सदमा हुआ। इस वजह से मैं अन्दर आ गया।

फिर मेरे पास अन्दर एक आदमी आया। आपके बाद मैंने ऐसा कोई आदमी नहीं देखा जो इससे ज़्यादा अच्छी मज्लिस वाला और ज़्यादा अच्छी बात वाला हो। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह हज़रत जिब्रील अलैहि० थे और तुममें कुछ लोग ऐसे भी हैं कि अगर वह अल्लाह पर क़सम खा लें तो अल्लाह उनकी क़सम ज़रूर पूरी कर दे।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैं अपने वालिद के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर था। आपके पास एक आदमी था, जो आपके कान में चुपके-चुपके बातें कर रहा था, जिसकी वजह से आप मेरे वालिद से बचते रहे।

जब हम हुज़ूर सल्ल० के पास से बाहर आए, तो मेरे वालिद ने कहा, ऐ मेरे बेटे! क्या तुमने अपने चचेरे भाई को नहीं देखा कि वह मुझसे मुंह फेरे रहे। मैंने कहा, उनके पास तो एक आदमी था जो उनके कान में चुपके-चुपके बातें कर रहा था।

हम फिर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में दोबारा गए। मेरे वालिद ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने अपने बेटे अब्दुल्लाह से यह और यह बात कही। उसने मुझे बताया, आपके पास एक आदमी था जो आपसे चुपके-चुपके बातें कर रहा था, तो आपके पास कोई था?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अब्दुल्लाह! क्या तुमने उसे देखा है? मैंने कहा, जी हां। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम थे। इन्हीं की वजह से मैं आपकी तरफ़ मुतवज्जह न हो सका।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, हज़रत अब्बास

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 41,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 276,

रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे किसी काम से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में भेजा। हुज़ूर सल्ल० के पास कोई आदमी बैठा हुआ था। इसलिए हुज़ूर सल्ल० से मैंने कोई बात नहीं की, बल्कि वैसे ही वापस आ गया। बाद में हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, क्या तुमने उस आदमी को देखा था? मैंने अर्ज़ किया, जी हां।

फ़रमाया, यह हज़रत जिब्रील अलैहि० थे। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने मेरे बारे में फ़रमाया, इन्हें इल्म ख़ूब दिया जाएगा, लेकिन मरने से पहले इनकी रोशनी जाती रहेगी। (चुनांचे बाद में अल्लाह ने ऐसे ही किया।)[1]

हज़रत उर्व: बिन रुवैम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इरबाज़ बिन सारिया रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में से थे। बहुत बूढ़े हो गए थे और चाहते थे कि उन्हें मौत आ जाए, इसलिए यह दुआ किया करते थे, ऐ अल्लाह! मेरी उम्र बड़ी हो गई और मेरी हड्डियां पतली और कमज़ोर हो गईं, इसलिए मुझे अपने पास उठा ले।

हज़रत इरबाज़ रज़ि० फ़रमाते हैं, एक दिन मैं दमिश्क़ की मस्जिद में था, वहां मुझे एक नवजवान नज़र आया जो बहुत हसीन व जमील था। उसने हरा जोड़ा पहना हुआ था। उसने कहा, आप यह क्या दुआ करते हैं? मैंने उससे कहा, ऐ मेरे भतीजे! फिर मैं क्या दुआ करूं?

उसने कहा, यह दुआ करें, ऐ अल्लाह! अमल अच्छे कर दे और मुझे मौत तक पहुंचा दे। मैंने कहा, अल्लाह तुम पर रहम करे, तुम कौन हो? उसने कहा, मैं रीबाईल (वह फ़रिश्ता) हूं, जो ईमान वालों के दिलों से तमाम ग़म निकालता हूं।[2]

फ़रिश्तों का सहाबा किराम रज़ि० को सलाम करना और उनसे मुसाफ़ा करना

हज़रत मुतर्रिफ़ बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 277,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 184,

इम्रान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने मुझे फ़रमाया, ऐ मुतर्रिफ़ ! यह बात जान लो कि फ़रिश्ते मेरे सिर के पास और मेरे कमरे के पास और हतीम काबा के पास आकर मुझे सलाम किया करते थे और अब मैंने अपने आपको (इलाज के लिए) लोहे से दाग़ दिया तो यह बात जाती रही। चुनांचे जब उनके ज़ख़्म ठीक हो गए, तो मुझसे फ़रमाया, ऐ मुतर्रिफ़ ! जान लो कि जो बात जाती रही थी, वह अब फिर दोबारा शुरू हो गई है, लेकिन ऐ मुतर्रिफ़ ! मेरे मरने तक मेरा यह राज़ छिपाए रखना।[1]

हज़रत मुतर्रिफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने मुझसे फ़रमाया, क्या तुम्हें पता चला कि फ़रिश्ते मुझे सलाम किया करते थे? लेकिन जब मैंने अपने आपको दाग़ दिया तो फिर सलाम का यह सिलसिला ख़त्म हो गया। मैंने कहा, वे फ़रिश्ते आपके सर की तरफ़ से आते थे या पैरों की तरफ़ से।

उन्होंने फ़रमाया, नहीं ! वे तो सर की तरफ़ से आते थे। मैंने कहा, मेरा ख़्याल यह है कि आपके मरने से पहले यह सिलसिला फिर शुरू हो जाएगा। कुछ दिनों के बाद मुझसे उन्होंने फ़रमाया, क्या तुम्हें पता चला कि सलाम का सिलसिला फिर शुरू हो गया है। उसके कुछ दिनों बाद ही उनका इंतिक़ाल हो गया।[2]

हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे, फ़रिश्ते हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मुसाफ़ा किया करते थे, लेकिन जब उन्होंने अपने आपको दाग़ दिया तो फ़रिश्ते हट गए।[3]

सहाबा किराम रज़ि० का फ़रिश्तों से बातें करना

हज़रत सलमा बिन अतीया असदी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु एक आदमी की बीमारपुर्सी के लिए

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 472,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 289,
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 288,

गए। वह आख़िरी सांस से गुज़र रहा था, तो हज़रत सलमान रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ फ़रिश्ते ! इनके साथ नर्मी करो। उस बीमार ने कहा, वह फ़रिश्ता कह रहा है, मैं हर ईमान वाले के साथ नर्मी करता हूं।[1]

सहाबा किराम रज़ि० का फ़रिश्तों की बातें सुनना

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैं मस्जिद में जाऊंगा और अल्लाह की ऐसी तारीफ़ करूंगा कि वैसी तारीफ़ किसी ने न की होगी। चुनांचे जब वह नमाज़ पढ़कर अल्लाह की हम्द व सना बयान करने के लिए बैठे, तो उन्होंने अचानक अपने पीछे से एक ऊंची आवाज़ सुनी कि कोई कहने वाला कह रहा है—

'ऐ अल्लाह ! तमाम तारीफ़ें तेरे लिए हैं और सारी बादशाही तेरी है और सारी भलाइयां तेरे हाथ में हैं और सारे छिपे और पोशीदा मामले तेरी तरफ़ ही लौटते हैं। सारी तारीफ़ें तेरे लिए हैं, तू हर चीज़ पर क़ादिर है। मेरे पिछले सारे गुनाह माफ़ फ़रमा और आगे की ज़िंदगी में हर गुनाह और हर नागवारी से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा और उन पाक कामों की मुझे तौफ़ीक़ अता फ़रमा, जिनसे तू मुझसे राज़ी हो जाए और मेरी तौबा क़ुबूल फ़रमा।'

हज़रत उबई रज़ि० ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर सारा क़िस्सा सुनाया। आपने फ़रमाया, यह हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम थे।[2]

फ़रिश्तों का सहाबा किराम रज़ि० की ज़ुबान पर बोलना

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से बुग़्ज़ किया, उसने मुझसे बुग़्ज़ किया और जिसने उमर रज़ि० से मुहब्बत की,

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 204,
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 101,

उसने मुझसे मुहब्बत की और अरफ़ात की शाम को अल्लाह ने मुसलमानों पर आम तौर से फ़ख़्र किया, लेकिन उमर रज़ि० पर ख़ास तौर से फ़ख़्र किया। और अल्लाह ने जो नबी भी भेजा, उसकी उम्मत में एक मुहद्दिस ज़रूर पैदा किया और अगर मेरी उम्मत में कोई मुहद्दिस होगा तो वह उमर रज़ि० होंगे।

सहाबा रज़ि० ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुहद्दिस कौन होता है ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जिसकी ज़ुबान पर फ़रिश्ते बात करते हैं।[1]

हज़रत अनस बिन हुलैस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, फ़ारस वाले हमसे हारकर बहुर सियर क़िले के अन्दर चले गए थे और हमने बहुर सियर का घेराव किया हुआ था, तो बादशाह के क़ासिदने क़िले के ऊपर से झांक कर हमें कहा, बादशाह आप लोगों से यह कह रहा है, क्या आप लोग इस शर्त पर समझौता करने के लिए तैयार हैं कि दजला नदी का जो किनारा हमारी तरफ़ है, वहां से लेकर हमारे पहाड़ तक की जगह हमारी हो और दूसरे किनारे से लेकर तुम्हारे पहाड़ तक की जगह तुम्हारी हो ? क्या अभी तक तुम्हारा पेट नहीं भरा ? अल्लाह कभी तुम्हारा पेट न भरे।

तो हज़रत अबू मुफ़ज़्ज़िर अस्वद बिन क़ुत्बा रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों से आगे बढ़े और अल्लाह ने उनसे ऐसी बात कहलवा दी, जिसका न उन्हें पता चला कि उन्होंने क्या कहा है और न हमें। वह क़ासिद वापस चला गया और हमने देखा कि वह टुकड़ियां बनकर बहुर सियर से मदाइन शहर जा रहे हैं।

हमने कहा, ऐ अबुल मुफ़ज़्ज़िर ! आपने इसे क्या कहा था ?

उन्होंने कहा, उस ज़ात की क़सम ! जिसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हक़ देकर भेजा है, मुझे कुछ पता नहीं, मैंने क्या कहा था ? मुझे तो बस इतना पता है कि उस वक़्त मुझ पर ख़ास क़िस्म का सकीना नाज़िल हुआ था और मुझे उम्मीद है कि मुझसे ख़ैर की बात कहलवाई गई है।

1. हैसमी, भाग ९, पृ० 69

लोग बारी-बारी आकर उनसे यह बात पूछते रहे, यहां तक कि हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस बारे में सुना। वह हमारे पास तश्रीफ़ लाए और फ़रमाया, ऐ अबू मुफ़ज़्ज़िर ! तुमने क्या कहा था? अल्लाह की क़सम ! वे तो सारे भाग रहे थे। हज़रत अबू मुफ़ज़्ज़िर ने उन्हें भी वही जवाब दिया जो हमें दिया था।

फिर हज़रत साद रज़ि० ने लोगों में (क़िले पर हमला करने का) एलान कराया और उनको लेकर सफ़ें तैयार कर लीं और तोपें क़िले पर बराबर पत्थर फेंकने लगीं। इस पर क़िले की दीवार पर कोई आदमी ज़ाहिर न हुआ और न उस शहर में से निकलकर कोई बाहर आया। बस एक आदमी अमान पुकारता हुआ बाहर आया। हमने उसे अमान दे दी।

उसने कहा, अब इस शहर में कोई नहीं रहा, तो तुम क्यों रुके हुए हो? इस पर फ़ौज वाले दीवार फांद कर अन्दर चले गए और हमने उसे जीत लिया। हमें उसमें न कोई चीज़ मिली और न कोई इंसान, बस शहर से बाहर कुछ आदमी मिले, जिन्हें हमने क़ैद कर लिया। हमने उन लोगों से और अम्न लेने वाले आदमी से पूछा कि ये सब लोग क्यों भाग गए?

उन्होंने कहा, बादशाह ने क़ासिद भेजा था, जिसने आप लोगों से सुलह करना चाहा। आप लोगों ने उसे यह जवाब दिया कि हमारी और तुम्हारी सुलह जब होगी जब हम अफ़रीज़ीन शहर के शहद को कूसा शहर के तुरंज के साथ मिलाकर खा लेंगे।

इस पर बादशाह ने कहा, हाय ! हमारी बर्बादी। ग़ौर से सुनो ! फ़रिश्ते उनकी ज़ुबानों पर बोलते हैं और अरबों की तरफ़ से हमें जवाब देते हैं। अल्लाह की क़सम ! अगर फ़रिश्ता उस आदमी की ज़ुबान पर नहीं भी बोला, तो भी यह जवाब ऐसा है, जो अल्लाह की तरफ़ से उसकी ज़ुबान पर जारी किया गया है, ताकि हम उनके मुक़ाबले में बाज़ आ जाएं। इस पर सारे शहर वाले दूर वाले शहर मदाइन चले गए।[1]

1. तारीख़ इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 118,

सहाबा किराम रज़ि० के क़ुरआन को सुनने के लिए फ़रिश्तों का उतरना

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने खलिहान में क़ुरआन पढ़ रहे थे कि इतने में उनका घोड़ा बिदकने लगा। वह रुक गए, तो घोड़ा भी रुक गया। उन्होंने दोबारा पढ़ना शुरू किया, तो वह फिर बिदकने लगा। वह रुक गए तो घोड़ा भी रुक गया। उन्होंने फिर तीसरी बार पढ़ना शुरू किया तो वह फिर बिदकने लगा।

हज़रत उसैद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मुझे डर हुआ कि कहीं यह घोड़ा (मेरे बेटे) यह्या को न रौंद डाले। मैं खड़ा होकर घोड़े के पास गया तो मुझे अपने सर के ऊपर एक सायबान सा नज़र आया, जिसमें बहुत-से चिराग़ थे। फिर उस सायबान ने आसमान पर चढ़ना शुरू किया, यहां तक कि मेरी निगाहों से ओझल हो गया।

मैंने सुबह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आज आधी रात को मैं अपने खलिहान में क़ुरआन पढ़ रहा था कि इतने में मेरा घोड़ा बिदकने लगा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम अपने मामूल के मुताबिक़ आधी रात को क़ुरआन पढ़ते रहो।

मैंने अगली रात फिर क़ुरआन पढ़ा। वह घोड़ा फिर बिदका। मैंने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, पढ़ते रहो, ऐ इब्ने हुज़ैर रज़ि० ! मैंने फिर पढ़ा, वह फिर बिदका। हुज़ूर सल्ल० ने फिर फ़रमाया, ऐ इब्ने हुज़ैर रज़ि० ! पढ़ते रहो।

यह्या घोड़े के क़रीब था, मुझे डर हुआ कि कहीं घोड़ा उसे रौंद न डाले, इसलिए मैंने क़ुरआन पढ़ना छोड़ दिया, तो मुझे सायबान सा नज़र आया, जिसमें बहुत से चिराग़ थे। वह आसमान में चढ़ने लगा, यहां तक कि निगाहों से ओझल हो गया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ये फ़रिश्ते थे जो

तुम्हारा क़ुरआन सुनने आए थे। अगर तुम क़ुरआन पढ़ते रहते, तो सुबह को सारे लोग इन फ़रिश्तों को देखते और ये फ़रिश्ते उन लोगों से छिप न सकते।[1]

हाकिम की रिवायत में है कि हज़रत उसैद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने उधर देखा तो मुझे चिराग़ की तरह बहुत-सी चीज़ें नज़र आईं, जो ज़मीन-आसमान के दर्मियान लटकी हुई थीं। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! उसे देखकर मेरे बस में न रहा कि मैं आगे बढ़ूं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ये फ़रिश्ते थे, जो तुम्हारे क़ुरआन पढ़ने की वजह से उतरे थे। अगर तुम आगे पढ़ते तो बहुत-सी अजीब चीज़ें देखते।[2]

एक रिवायत में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ये फ़रिश्ते तुम्हारी आवाज़ की वजह से इतने क़रीब आए थे और अगर तुम पढ़ते रहते तो सुबह को लोग उनको देखते और ये उनसे छिप न सकते।

फ़रिश्तों का सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के जनाज़ों को ख़ुद ग़ुस्ल देना

हज़रत महमूद बिन लबीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, उहुद की लड़ाई के दिन क़बीला बनू अम्र बिन औफ़ के हज़रत हंज़ला बिन अबी आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु का और हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हर्ब रज़ियल्लाहु अन्हु का (जो कि उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे) मुक़ाबला हुआ।

जब हज़रत हंज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि० पर ग़ालिब आ गए तो शद्दाद बिन अस्वद, जिसे इब्ने शऊब कहा जाता था, ने देखा कि हज़रत हंज़ला रज़ि० हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि० पर चढ़

1. बुख़ारी, मुस्लिम
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 13, कंज़, भाग 7, पृ० 7

बैठे हैं, तो उसने तलवार के वार से हज़रत हंज़ला रज़ि० को शहीद कर दिया।

लड़ाई के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम्हारे इस साथी को यानी हज़रत हंज़ला रज़ि० को फ़रिश्ते ग़ुस्ल दे रहे हैं। उनके घरवालों से पूछो, कि क्या बात है?

उनकी बीवी से पूछा गया, तो उन्होंने बताया, ज्यों ही उन्होंने मुसलमानों के हारने की आवाज़ सुनी थी, उसी वक़्त घर से चल पड़े थे और उस वक़्त उन्हें नहाने की हाजत थी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसी वजह से फ़रिश्तों ने उन्हें ग़ुस्ल दिया है।[1]

हज़रत महमूद बिन लबीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब ख़ंदक़ की लड़ाई के दिन हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु के बाज़ू की रग में तीर लगने से ज़ख़्म हो गया, तो वह बहुत ज़्यादा बीमार हो गए। इसलिए रफ़ीदा नामी औरत के पास उन्हें मुंतक़िल कर दिया गया। आगे और भी हदीस ज़िक्र की है।

उसमें यह भी है कि उनके इंतिक़ाल की ख़बर पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले गए और हम भी आपके साथ चल पड़े। आप इतनी तेज़ी से चले कि हमारी जूतियों के तस्मे टूटने लगे और हमारे कंधों से चादरें गिरने लगीं। सहाबा रज़ि० ने शिकायत के तौर पर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने तेज़ चलकर हमें थका दिया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुझे इस बात का डर था कि जैसे फ़रिश्तों ने हज़रत हंज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु को ग़ुस्ल दिया था, कहीं उनको भी फ़रिश्ते हमसे पहले ग़ुस्ल न दे दें।[2]

हज़रत आसिम बिन उमर बिन क़तादा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सो गए। जब आप बेदार हुए,

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 357, इसाबा, भाग 1, पृ० 361, हाकिम, भाग 3, पृ० 204
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 427,

तो आपके पास हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम या कोई और फ़रिश्ता आया और उसने कहा, आपकी उम्मत में से आज रात कौन फ़ौत हुआ है, जिनके मरने पर आसमान वाले ख़ुश हो रहे हैं?

आपने फ़रमाया, और तो मुझे कोई मालूम नहीं, अलबत्ता साद रज़ियल्लाहु अन्हु रात को बहुत बीमार थे, साद रज़ि० का क्या हुआ? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! उनका इंतिक़ाल हो गया था। उनकी क़ौम के लोग उन्हें उठाकर अपने मुहल्ले में ले गए हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई, फिर हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ तशरीफ़ ले चले। आपके साथ सहाबा रज़ि० भी थे। आप इतनी तेज़ चले कि सहाबा किराम रज़ि० को दिक़्क़त पेश आने लगी और तेज़ी की वजह से उनके जूतों के तस्मे टूटने लगे और उनकी चादरें कंधों से गिरने लगीं।

एक आदमी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! आपने तो लोगों को मशक़्क़त में डाल दिया। आपने फ़रमाया, मुझे यह डर है कि जैसे फ़रिश्तों ने हमसे पहले हनज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु को ग़ुस्ल दे दिया था, कहीं उनको भी न दे दें।[1]

फ़रिश्तों का सहाबा किराम रज़ि० के जनाज़ों का इकराम करना

जब हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिद शहीद हुए, तो वह इनके चेहरे से कपड़ा हटा कर रोने लगे। लोगों ने उन्हें मना किया, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम अपने वालिद को रोओ या न रोओ, तुम्हारी मर्ज़ी है, लेकिन (अल्लाह के यहां उनका इतना बड़ा दर्जा है कि) आप लोगों के उठाने तक फ़रिश्ते उन पर अपने परों से साया करते रहे।[2]

---

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 423,
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 44,

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु की दूसरी रिवायत में भी यही है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जनाज़े के उठाने तक फ़रिश्ते अपने परों से उन पर साया करते रहे।[1]

हज़रत सलमा बिन अस्लम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग दरवाज़े पर थे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी थे। हमारा इरादा था कि जब हुज़ूर सल्ल० अन्दर तशरीफ़ ले जाएंगे, तो हम भी आपके पीछे अन्दर चले जाएंगे। अन्दर कमरे में सिर्फ़ हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु थे, जिन्हें कपड़े से ढका हुआ था और कोई भी नहीं था।

आप (सल्ल०) अन्दर तशरीफ़ ले गए, तो मैंने देखा कि आप बहुत धीरे-धीरे क़दम रख रहे हैं और ऐसे चल रहे हैं कि गोया किसी की गरदन फलांग रहे हैं। यह देखकर मैं रुक गया और हुज़ूर सल्ल० ने मुझे इशारे से फ़रमाया, ठहर जाओ। मैं ख़ुद भी रुक गया और जो मेरे पीछे था, उनको भी रोक दिया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुछ देर वहां बैठे, फिर बाहर तशरीफ़ ले आए। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! मुझे तो अन्दर कोई नज़र नहीं आ रहा था, लेकिन आप धीरे-धीरे इस तरह चल रहे थे कि जैसे आप किसी की गरदन फलांग रहे हों।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अन्दर फ़रिश्ते बहुत ज़्यादा थे, मुझे भी बैठने की जगह तब मिली, जब एक फ़रिश्ते ने अपने दो परों में से एक पर को समेट लिया, फिर मैं बैठ सका और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमा रहे थे, ऐ अबू अम्र ! (यह हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु की कुन्नियत है) तुम्हें मुबारक हो। ऐ अबू अम्र ! तुम्हें मुबारक हो, ऐ अबू अम्र ! तुम्हें मुबारक हो।[2]

---

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 561
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 428,

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु की वजह से ऐसे सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उतरे हैं, जिन्होंने उससे पहले कभी ज़मीन पर क़दम नहीं रखा और जब हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु दफ़न हो गए, तो आपने फ़रमाया, सुब्हानल्लाह ! अगर किसी क़ब्र को भींचने से किसी को छुटकारा मिलता तो साद रज़ियल्लाहु अन्हु को ज़रूर मिल जाता ।[1]

हज़रत साद बिन इब्राहीम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु का जनाज़ा बाहर निकाला गया तो कुछ मुनाफ़िक़ों ने कहा, साद रज़ियल्लाहु अन्हु का जनाज़ा कितना हलका है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उतरे हैं जो साद रज़ियल्लाहु अन्हु के जनाज़े में शरीक हुए हैं और उन फ़रिश्तों ने आज से पहले कभी ज़मीन पर क़दम नहीं रखा ।[2]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु बड़े भारी भरकम जसीम आदमी थे। जब उनका इंतिक़ाल हुआ और लोग उनका जनाज़ा लेकर जा रहे थे तो मुनाफ़िक़ उनके जनाज़े के पीछे चल रहे थे। मुनाफ़िक़ कहने लगे, हमने आज जैसा हल्का आदमी तो कभी देखा नहीं। (यह उनके गुनाहगार होने की निशानी है) और आप जानते हैं, ऐसा क्यों है? इस वजह से कि उन्होंने बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों के बारे में ग़लत फ़ैसला किया था।

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस बात का तज़्किरा किया गया, तो आपने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, फ़रिश्ते उनका जनाज़ा उठाए हुए थे, (इसलिए उनका जनाज़ा) हलका लग रहा था।)[3]

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 308, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 229
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 430,
3. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 430,

दुश्मनों के दिलों में सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का रौब

हज़रत मुआविया बिन हैदा क़ुशैरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िरी के इरादे से आया। जब मुझे आपकी ख़िदमत में लाया गया, तो आपने फ़रमाया, ग़ौर से सुनो, मैंने अल्लाह से सवाल किया है कि वह दो चीज़ों से मेरी मदद करे—

एक तो तुम लोगों पर वह ऐसा सूखा डाले जो तुम्हें जड़ से उखाड़ दे,

और दूसरे तुम्हारे दिलों में हमारा रौब डाल दे।

मैंने दोनों हाथों से इशारा करते हुए अर्ज़ किया, आप भी ग़ौर से सुन लें। मैंने इतनी और इतनी बार (यानी उंगलियों की तायदाद के मुताबिक़ दस बार) क़सम खाई थी कि न आप पर ईमान लाऊंगा और न आपकी पैरवी करूंगा, लेकिन आपकी इस बद-दुआ की वजह से सूखा मेरी जड़ें उखेड़ती रही और मेरे दिल में आपका रौब बढ़ता रहा, यहां तक कि मैं आज आपके सामने खड़ा हूं।[1]

हज़रत साइब बिन यसार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत यज़ीद बिन आमिर सुवाई रज़ियल्लाहु अन्हु से हम लोग पूछते थे कि अल्लाह ने हुनैन की लड़ाई के दिन जो रौब मुश्रिकों के दिल में डाला था, उसकी क्या शक्ल हुई थी?

तो हज़रत यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हु हमें समझाने के लिए कंकरी लेकर तश्त में फेंकते थे जिससे तश्त में आवाज़ होती थी, फिर हज़रत यज़ीद रज़ि० फ़रमाते थे, बस उस जैसी आवाज़ हम अपने पेट में महसूस करते थे। (हज़रत यज़ीद रज़ि० हुनैन की लड़ाई में मुश्रिकों के साथ थे, इसलिए अपना हाल बता रहे हैं।)[2]

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 66,
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 333

अल्लाह की तरफ़ से सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के दुश्मनों की पकड़

हज़रत ज़ैद बिन अस्लम वग़ैरह हज़रात कहते हैं, हज़रत सुराक़ा बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु (अभी मुसलमान नहीं हुए थे, हिजरत के मौक़े पर उन्हों) ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तलाश में जाने के बारे में तीन बार तीरों से फ़ाल निकली थी। हर बार फ़ाल में न जाना निकलता था, लेकिन वह फिर भी हुज़ूर सल्ल० की खोज में घोड़े पर सवार होकर चल पड़े और हुज़ूर सल्ल० और आपके साथियों तक पहुंच गए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके लिए बद-दुआ की कि उनके घोड़े के पांव ज़मीन में गड़ जाएं, चुनांचे ऐसे ही हुआ और उनके घोड़े के पांव ज़मीन में धंस गए। इस पर उन्होंनें कहा, ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! आप अल्लाह से दुआ करें कि वह मेरे घोड़े को छोड़ दे, मैं आपकी खोज में आने वालों को वापस करूंगा।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उनके लिए दुआ की, ऐ अल्लाह! अगर यह सच है तो उसके घोड़े को छोड़ दे। इस पर उनके घोड़े के पांव ज़मीन से बाहर निकल आए।[1]

हज़रत उमैर बिन इस्हाक़ रहमतुल्लाहि अलैहि की रिवायत में यह है कि हज़रत सुराक़ा ने कहा, ऐ दोनों हज़रात! मेरे लिए अल्लाह से दुआ करें। मैं आप दोनों से वायदा करता हूं कि दोबारा आप हज़रात का पीछा नहीं करूंगा। चुनांचे इन दोनों हज़रात ने दुआ की तो उसका घोड़ा बाहर निकल आया, उसने फिर पीछा करना शुरू कर दिया, जिस पर घोड़े के पांव ज़मीन में धंस गए, तो उन्होंने कहा, मेरे लिए अल्लाह से दुआ कर दें और अब पक्का वायदा करता हूं कि अब पीछा नहीं करूंगा और हज़रत सुराक़ा ने उन लोगों की ख़िदमत में ज़ादे सफ़र और

1. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 188,

सवारी भी पेश की।

इन लोगों ने फ़रमाया, इसकी तो ज़रूरत नहीं है, बस तुम हमारा पीछा छोड़ दो। अपनी ज़ात से हमें नुक़्सान न पहुंचाओ। उन्होंने कहा, बहुत अच्छा, ऐसा ही करूंगा।[1]

हज़रत अबू माबद ख़ुज़ाई रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हिजरत के सफ़र की लम्बी हदीस बयान करते हैं। उसमें यह भी है कि हज़रत सुराक़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप अल्लाह से दुआ कर दें कि वह मेरे घोड़े को छोड़ दे, मैं वापस चला जाऊंगा और जितने लोग मुझे आपकी तलाश में मिलेंगे, मैं उन सबको वापस ले जाऊंगा।

चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ फ़रमाई, जिससे उनका घोड़ा बाहर निकल आया। उन्हें वापसी में बहुत से लोग मिले जो हुज़ूर सल्ल० को तलाश कर रहे थे। उन्होंने उन सबसे कहा, वापस चले जाओ। उस तरफ़ का सारा इलाक़ा मैं अच्छी तरह देख आया हूं और तुम्हें मालूम ही है कि क़दम के निशान पहचानने के बारे में मेरी निगाह कितनी तेज़ है। चुनांचे वे सब वापस चले गए।[2]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु हिजरत की हदीस बयान करते हैं, उसमें यह भी है कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुड़कर देखा, तो उन्हें एक घोड़ा सवार नज़र आया, जो बिल्कुल क़रीब आ चुका था। उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! यह घोड़ा सवार हमारे बिल्कुल पास आ गया है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस तरफ़ मुतवज्जह होकर दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! इसे पछाड़ दे। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुआ मांगते ही घोड़े ने उसे पछाड़ दिया और ख़ुद हिनहिनाते हुए खड़ा हो गया।

---

1. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 232,
2. साद, भाग 1, पृ० 232

चुनांचे उस सवार ने कहा, ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! आप मुझे जो भी हुक्म दें, मैं उसके लिए तैयार हूं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, आगे मत आओ, अपनी जगह ठहरे रहो, (बल्कि वापस चले जाओ) और किसी को हमारी तरफ़ न आने देना।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि वह सवार यानी हज़रत सुराक़ा रज़ियल्लाहु अन्हु दिन के शुरू में तो हुज़ूर सल्ल० के ख़िलाफ़ कोशिश करने वाले थे और दिन के आख़िर में हथियार की तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए हिफ़ाज़त का ज़रिया बन गए।[1]

और पहले हिस्से में हिजरत के बाब में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत के बारे में हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में हज़रत सुराक़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का क़िस्सा गुज़र चुका है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, अरबद बिन क़ैस और आमिर बिन तुफ़ैल मदीना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिलने आए। जब ये दोनों हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए तो हुज़ूर सल्ल० बैठे हुए थे। ये दोनों भी हुज़ूर सल्ल० के पास बैठ गए।

आमिर बिन तुफ़ैल ने कहा, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! अगर मैं इस्लाम ले आऊं, तो आप मुझे क्या ख़ास चीज़ देंगे ?

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम्हें भी वे तमाम हक़ हासिल होंगे जो सारे मुसलमानों को हासिल है और तुम पर भी वे तमाम ज़िम्मेदारियां होंगी जो उन पर हैं।

आमिर बिन तुफ़ैल ने कहा, अगर मैं इस्लाम ले आऊं तो क्या आप अपने बाद ख़लीफ़ा बनने का हक़ मुझे देंगे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, यह हक़ न तुम्हें मिल सकता है और न तुम्हारी क़ौम को, अलबत्ता तुम्हें घोड़े सवार दस्ते

1. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 235

का कमांडर बना देंगे।

आमिर ने कहा, मैं तो अब भी नज्द की घोड़े सवार फ़ौज का कमांडर हूं। अच्छा आप ऐसा करें, देहात की हुकूमत मुझे दे दें और शहरों की हुकूमत आप ले लें।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, नहीं ऐसे नहीं हो सकता।

जब दोनों हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से वापस जाने लगे तो आमिर ने कहा, ख़बरदार! अल्लाह की क़सम! मैं सारे मदीना को आपके ख़िलाफ़ घोड़े सवार और पैदल फ़ौज से भर दूंगा।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तुम्हें ऐसा करने से रोक देगा, तुम ऐसा नहीं कर सकोगे।

जब अरबद और आमिर बाहर निकले तो आमिर ने कहा, ऐ अरबद! मैं मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बातों में मशगूल कर लूंगा, तुम तलवार से उनका काम तमाम कर देना, क्योंकि जब तुम मुहम्मद (सल्ल०) को क़त्ल कर दोगे तो लोग ज़्यादा से ज़्यादा ख़ूनबहा पर राज़ी हो जाएंगे, उससे ज़्यादा की मांग नहीं करेंगे और लड़ाई को अच्छा नहीं समझेंगे। हम उन्हें ख़ूनबहा दे देंगे। अरबद ने कहा, ठीक है, मैं तैयार हूं।

चुनांचे दोनों वापस आए और आमिर ने कहा, ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप ज़रा मेरे साथ खड़े हों। मैं आपसे बात करना चाहता हूं। हुज़ूर सल्ल० उठकर उसके साथ गए। वे दोनों एक दीवार के साथ बैठ गए। हुज़ूर सल्ल० भी उनके साथ बैठ गए और आमिर से बातें करने लगे।

अरबद ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर तलवार सौंतने का इरादा किया। जब उसने तलवार के क़ब्ज़े पर हाथ रखा, तो उसका हाथ ख़ुश्क हो गया और वह तलवार न सौंत सका। इस तरह उसे काफ़ी देर हो गई। हुज़ूर सल्ल० ने मुड़कर अरबद की तरफ़ देखा तो उसकी यह बुज़दिली वाली हरकत नज़र आई। हुज़ूर सल्ल० दोनों को छोड़कर आ

गए। आमिर और अरबद हुज़ूर सल्ल० के पास से चले और जब हर्रा राक़िम यानी पथरीले मैदान में पहुंचे तो दोनों वहां ठहर गए।

हज़रत साद बिन मुआज़ और हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा दोनों उनके पास गए और उनसे कहा, ऐ अल्लाह के दुश्मनो! उठो और यहां से चले जाओ। अल्लाह तुम दोनों पर लानत करे। आमिर ने पूछा, ऐ साद! यह आपके साथ कौन है? हज़रत साद रज़ि० ने कहा, यह उसैद बिन हुज़ैर अल-कातिब यानी पढ़े-लिखे आदमी हैं।

चुनांचे वे दोनों वहां से चल पड़े। जब वे मक़ाम रक़म में पहुंचे तो अल्लाह ने अरबद पर ऐसी बिजली गिरायी, जिससे वह वहीं मर गया। आमिर वहां से आगे चला। जब वह मक़ाम खुरैम पहुंचा, अल्लाह ने उसके जिस्म में एक फोड़ा पैदा कर दिया और उसे क़बीला बनी सलूल की एक औरत के घर में रात गुज़ारनी पड़ी। (यह क़बीला अरबों में घटिया समझा जाता था)

वह फोड़ा हलक़ में हुआ था। वह अपने फोड़े को हाथ लगाता और यह कहता, यह इतनी बड़ी गिलटी है जितनी बड़ी ऊंट की होती है। मैं सलूलिया औरत के घर में पड़ा हुआ हूं और मैं इस के घर में मरना नहीं चाहता। (पहले तो क़बीला सबसे घटिया है, फिर औरत का घर है। ये दोनों बातें ज़िल्लत की हैं) फिर वह अपने घोड़े पर सवार हुआ और उसे एड़ लगाई और यों वापसी में अपने घोड़े पर ही मर गया और इन दोनों के बारे में अल्लाह ने ये आयतें उतारी—

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى

से लेकर

وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ تک (سورت رعد آیت ۸-۱۱)

तक (सूरः राद, आयत 8-11)

'अल्लाह को सब ख़बर रहती है जो कुछ किसी औरत को हमल रहता है और जो कुछ रहम में कमी-बेशी होती है और हर चीज़ अल्लाह के नज़दीक एक ख़ास अन्दाज़ से (मुक़र्रर) है। वह तमाम छिपी और ज़ाहिर

चीज़ों को जानने वाला है। सबसे बड़ा (और) आलीशान है। तुममें से जो आदमी चुपके से कहे और जो पुकार कर कहे, और जो आदमी रात में कभी छिप जावे और जो दिन में चले-फिरे, ये सब बराबर हैं। हर आदमी (की हिफ़ाज़त) के लिए फ़रिश्ते (मुक़र्रर) हैं, जिनकी बदली होती रहती है। कुछ उसके आगे और कुछ उसके पीछे कि वे ख़ुदा के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं। वाक़ई अल्लाह किसी क़ौम की (अच्छी) हालत में तब्दीली नहीं करता, जब तक वे लोग ख़ुद अपनी (सलाहियत की) हालत को नहीं बदल देते और जब अल्लाह किसी क़ौम पर मुसीबत डालना तज्वीज़ कर लेता है, तो फिर उसके हटने की कोई शक्ल ही नहीं और कोई ख़ुदा के सिवा उनका मददगार नहीं रहता।'

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अल्लाह के हुक्म से बारी-बारी आने वाले फ़रिश्ते हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त करते हैं। फिर उन्होंने अरबद पर बिजली गिरने का वाक़िया बयान किया और फ़रमाया—

وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ (سورت رعد آیت ۱۳)

'और वह बिजलियां भेजता है।' (सूरः राद, आयत 13)[1]

कंकरिया और मिट्टी फेंकने से सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के दुश्मनों की हार

हज़रत हारिस बिन बदल रहमतुल्लाहि अलैहि एक सहाबी से नक़ल करते हैं, वह सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं हुनैन की लड़ाई के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुक़ाबले पर मुश्रिकों के साथ था। पहले तो हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब और हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हुमा के अलावा हुज़ूर सल्ल० के तमाम सहाबा हार खा गए। हुज़ूर सल्ल० ने ज़मीन से एक मुट्ठी उठाकर हमारे चेहरों पर फेंकी जिससे हमें हार हो गई और मुझे ऐसा

1. तफ़्सीर, इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 500,

महसूस हो रहा था कि हर पेड़ और हर पत्थर हमारे पीछे दौड़ रहा है।[1]

हज़रत अम्र बिन सुफ़ियान सक़फ़ी रज़ियल्लाहु अन्हु वग़ैरह हज़रात फ़रमाते हैं, हुनैन की लड़ाई के दिन पहले मुसलमानों को हार हुई और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब और हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु के अलावा और कोई न रहा। फिर हुज़ूर सल्ल० ने कंकरियों की एक मुट्ठी उठाकर काफ़िरों के चेहरों पर फेंकी, जिससे हमें हार हो गई और हमें यह महसूस हो रहा था कि हर पत्थर और हर पेड़ घोड़े पर सवार है जो हमें तलाश कर रहा है।

हज़रत अम्र सक़फ़ी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, मैंने अपने घोड़े को तेज़ दौड़ाया, यहां तक कि तायफ़ में दाख़िल हो गया।[2]

हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हमने सुना कि एक आवाज़ आसमान से ज़मीन की ओर आई। वह आवाज़ ऐसी थी, जैसे तश्त में कंकरी के गिरने की होती है और हुज़ूर सल्ल० ने वह कंकरी उठाकर हमारी ओर फेंक दी, जिससे हम हार गए।[3]

हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, बद्र की लड़ाई के दिन अल्लाह ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हुक्म दिया, जिस पर आपने कंकरियों की मुट्ठी ली और हमारे सामने आकर उसे हम पर फेंक दिया और फ़रमाया, तुम्हारे चेहरे बिगड़ जाएं, इस पर हमें हार हो गई और इसी पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى (سورت انفال آیت ۱۷)

'और आपने ख़ाक की मुट्ठी नहीं फेंकी, जिस वक़्त आपने फेंकी थी, लेकिन अल्लाह ने वह फेंकी।'[4] (सूरः अंफ़ाल, आयत 17)

1. कंज़, भाग 5, पृ० 304,
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 332,
3. हैसमी, भाग 6, पृ० 84,
4. हैसमी, भाग 6, पृ० 84

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, मुझे एक मुट्ठी कंकरियां दो। हज़रत अली रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० को एक मुट्ठी कंकरियां दीं। हुज़ूर सल्ल० ने वह मुट्ठी में लेकर काफ़िरों के चेहरों पर फेंक दीं। अल्लाह की क़ुदरत से हर काफ़िर की दोनों आंखें कंकरियों से भर गईं। फिर यह आयत उतरी।[1]

وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى (سورت انفال آیت ۱۷)

हज़रत यज़ीद बिन आमिर सुवाई रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़मीन से एक मुट्ठी ली और मुश्रिकों की तरफ़ मुतवज्जह होकर उनके चेहरों पर फेंक दी और फ़रमाया, वापस चले जाओ, तुम्हारे चेहरे बिगड़ जाएं। चुनांचे जो काफ़िर भी अपने भाई से मिलता था, उससे अपनी दोनों आंखों में धूल पड़ जाने की शिकायत करता।[2]

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को दुश्मनों का कम दिखाई देना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, बद्र के दिन कुफ़्फ़ार हमें बहुत थोड़े दिखाई दे रहे थे, यहां तक कि मेरे क़रीब जो साथी था, मैंने उससे कहा, तुम्हारे ख़्याल में ये काफ़िर सत्तर होंगे। उसने कहा, मेरे ख़्याल में सौ होंगे। फिर हमने उनके एक आदमी को पकड़ा और उससे इस बारे में पूछा, तो उसने कहा, हम हज़ार थे।[3]

पुरवा हवा के ज़रिए सहाबा किराम रज़ि० की मदद

हज़रत सईद बिन जुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, ख़ंदक़ की लड़ाई मदीने में हुई थी। हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हर्ब रज़ियल्लाहु

---

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 84,
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 333
3. मज्मा, भाग 6, पृ० 84, तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 315

अन्हु (उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे, वह) क़ुरैश को और अपने पीछे चलने वाले अरब के तमाम क़बीलों को लेकर मदीने पर हमलावर हुए थे। इन क़बीलों में किनाना, उऐना बिन हिस्न, ग़तफ़ान, तुलैहा, बनू असद, अबुल आवर और बनू सुलैम शामिल थे और क़ुरैज़ा के यहूदियों और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सलल्म के दर्मियान पहले से समझौता था, जिसे उन्होंने तोड़ दिया और मुश्रिकों की मदद से उनके बारे में अल्लाह ने यह आयत उतारी—

وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِنْ اَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ (سورت احزاب آیت ۲۶)

'और जिन अहले किताब ने उनकी मदद की थी, उनको उनके क़िलों से नीचे उतार दिया।' (सूरह अहज़ाब, आयत 26)

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हवा को साथ लेकर आए। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत जिब्रील अलैहि० को देखा तो तीन बार फ़रमाया, ग़ौर से सुनो! तुम्हें ख़ुशख़बरी हो। फिर अल्लाह ने उन पर ऐसी हवा भेजी, जिसने उनके ख़ेमे फाड़ दिए और उनकी देगें उलट दीं और उनके कजावे मिट्टी में दबा दिए और ख़ेमों के बांधने के खूंटे तोड़ दिए और वे लोग ऐसे घबराकर भागे कि कोई मुड़कर दूसरे को नहीं देखता था।

इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

اِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا (سورت احزاب آیت ۹)

'जब तुम पर बहुत-सी फ़ौजें चढ़ आईं, फिर हमने उन पर एक आंधी भेजी और ऐसी फ़ौज भेजी जो तुमको दिखाई न देती थी।'

(सूरः अहज़ाब, आयत 9)

कुफ़्फ़ार के भागने के बाद हुज़ूर सल्ल० मदीना वापस आ गए।[1]

हज़रत हुमैद बिन बिलाल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और क़ुरैज़ा के बीच कच्चा-पक्का समझौता था, जब ख़ंदक़ की लड़ाई में कुफ़्फ़ार के गिरोह अपनी फ़ौज

1. इब्ने साद, भाग 2, पृ० 71,

लेकर आए तो क़ुरैज़ा ने वह समझौता तोड़ दिया और मुश्रिकों की मदद की। फिर अल्लाह ने फ़रिश्तों के लश्कर और हवा भेजी, जिससे ये गिरोह भाग गए और क़ुरैज़ा के यहूदियों ने अपने क़िले में पनाह ली। इसके बाद बनू क़ुरैज़ा की लड़ाई के बारे में हदीस ज़िक्र की।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, ख़ंदक़ की लड़ाई की एक रात को पूरबी हवा उत्तरी हवा के पास आई और कहने लगी, चल और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मदद कर। उत्तरी हवा ने कहा, आज़ाद और शरीफ़ औरत रात को नहीं चला करती (इसलिए मैं नहीं चलूंगी।)

चुनांचे जिस हवा के ज़रिए हुज़ूर सल्ल० की मदद की गई, वह पुरवा यानी पूर्वी हवा थी।[2]

दुश्मनों का ज़मीन में धंस जाना और हलाक होना

हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक काफ़िर ने उहुद की लड़ाई के दिन कहा, ऐ अल्लाह! अगर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हक़ पर हैं, तो तू मुझे ज़मीन में धंसा दे, चुनांचे वह उसी वक़्त ज़मीन में धंस गया।[3]

हज़रत नाफ़ेअ बिन आसिम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, बनू हुज़ैल के अब्दुल्लाह बिन क़मिआ ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरे को ज़ख़्मी किया था। अल्लाह ने उस पर एक बकरा मुसल्लत कर दिया, जिसने उसे सींग मार-मारकर मार डाला।[4]

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुमा की बद-दुआ से बीनाई का चला जाना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल मुज़नी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते

1. इब्ने साद, भाग 2, पृ० 77,
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 66, तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 470,
3. हैसमी, भाग 6, पृ० 142,
4. दलाइल, पृ० 176

हैं, हम हुदैबिया में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे। इसके बाद हुदैबिया की सुलह के बारे में हदीस ज़िक्र की है।

उसमें यह भी है कि हम इसी हाल में थे कि तीस नवजवान हथियार लगाए हुए सामने आए और हमारे मुक़ाबले के लिए तैयार हो गए। हुज़ूर सल्ल० ने उनके लिए बद-दुआ फ़रमाई, तो अल्लाह ने उसी वक़्त उनकी बीनाई ख़त्म कर दी और हमने जाकर उन्हें पकड़ लिया।

हुज़ूर सल्ल० ने उनसे पूछा कि क्या तुम लोग किसी से समझौता करके आए हो? क्या किसी ने तुम्हें अम्न दिया है? उन्होंने कहा, नहीं, तो हुज़ूर सल्ल० ने उनहें छोड़ दिया। इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُم بِبَطْنِ مَكَّةَ مِن بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا (سورت فتح آیت ۲۴)

'और वह ऐसा है कि उसने उनके हाथ तुमसे (यानी तुम्हारे क़त्ल से) और तुम्हारे हाथ उन (के क़त्ल) से ठीक मक्का (के क़ुर्ब) में रोक दिए, बाद इसके कि तुमको उन पर क़ाबू दे दिया था और अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा था।'[1] (सूरः फ़त्ह, आयत 24)

हज़रत ज़ाज़ान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक हदीस बयान की, एक आदमी ने उस हदीस को झुठलाया। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, अगर तू झूठा है, तो मैं तेरे लिए बद-दुआ करूंगा। उसने कहा, कर दें।

चुनांचे हज़रत अली रज़ि० ने उसके लिए बद-दुआ की तो उसी मज्लिस में उसकी रोशनी जाती रही।[2]

हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक आदमी से हदीस बयान की। उसने हदीस को झुठला दिया, तो वह आदमी वहां से उठने से पहले ही अंधा हो गया।[3]

---

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 145, तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 192,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 116
3. दलाइल, पृ० 211,

हज़रत ज़ाज़ान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से एक हदीस बयान की। हज़रत अली रज़ि० ने कहा, मेरे ख़्याल में तुम मुझसे झूठ बोल रहे हो। उसने कहा, नहीं, मैंने झूठ नहीं बोला।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, अगर तुमने झूठ बोला है, तो मैं तुम्हारे लिए बद-दुआ करूंगा। उसने कहा, कर दें। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बद-दुआ की। वह उसी मज्लिस में अंधा हो गया।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, अरवा बिन्त उवैस औरत ने किसी चीज़ के बारे में हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु से झगड़ा कर रखा था। मरवान ने कुछ लोगों को हज़रत सईद रज़ि० के पास भेजा, ताकि वह अरवा के बारे में उनसे बात-चीत करें।

हज़रत सईद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ये लोग समझते हैं कि मैं उस औरत पर ज़ुल्म कर रहा हूं, हालांकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि जो ज़ुल्म करके किसी से एक बालिश्त ज़मीन लेगा तो क़ियामत के दिन सातों ज़मीनों में से एक बालिश्त ज़मीन तौक़ बनाकर उसके गले में डाल दी जाएगी।

ऐ अल्लाह ! अगर अरवा झूठी है, तो उसे मौत न दे, जब तक कि वह अंधी न हो जाए और उसकी क़ब्र उसके कुएं में बना दे। अल्लाह की क़सम ! उसे मौत तभी आई जब उसकी रोशनी जाती रही। एक बार वह अपने घर में बड़ी एहतियात से चल रही थी कि वह अपने कुएं में गिर गई और वह कुंआं ही उसकी क़ब्र बन गया।[2]

हज़रत अबूबक्र बिन मुहम्मद बिन अम्र बिन हज़्म रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, अरवा नामी औरत ने हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़ुल्म की झूठी शिकायत करके मरवान से मदद चाही। हज़रत सईद रज़ि० ने यह बद-दुआ की, ऐ अल्लाह ! यह अरवा दावा कर रही

---

1. बिदाया, भाग 8, पृ० 5
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 96,

है कि मैंने उस पर ज़ुल्म किया है। अगर यह झूठी है, तो तू इसे अंधा कर दे और इसे उसके कुंएं में गिरा दे और मेरे हक़ में ऐसी रोशन दलील ज़ाहिर कर दे, जिससे सारे मुसलमानों को साफ़ नज़र आ जाए कि मैंने उस पर ज़ुल्म नहीं किया।

इसी बीच अक़ीक़ घाटी में ऐसी ज़बरदस्त बाढ़ आई कि उससे पहले कभी ऐसी बाढ़ नहीं आई थी। बाढ़ की वजह से वह हद साफ़ हो गई जिसमें हज़रत सईद रज़ि० और अरवा का इख़्तिलाफ़ था और उसमें हज़रत सईद रज़ि० बिल्कुल सच्चे निकले।

फिर एक महीना नहीं गुज़रा था कि अरवा अंधी हो गई और एक बार वह अपनी उसी ज़मीन का चक्कर लगा रही थी कि अचानक अपने कुंएं में गिर गई और जब हम छोटे बच्चे थे तो सुना करते थे कि लोग एक दूसरे को कहा करते थे, अल्लाह तुझे ऐसे अंधा करे जैसे अरवा को अंधा किया।

हम यही समझते थे कि अरवा से मुराद जंगली पहाड़ी बकरियां हैं। (क्योंकि अरबी भाषा में अरवा का यही तर्जुमा है) यह तो बाद में हमें इस क़िस्से का पता चला और इससे मालूम हुआ कि अरवा से मुराद तो एक औरत है जिसे हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि० की बद-दुआ लगी थी और चूंकि अल्लाह ने उनकी बद-दुआ पूरी कर दी थी, इसलिए लोग यह बात कहते थे।[1]

हज़रत अबू रजा उतारदी रहमतुल्लाहि अलैहि ने कहा, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घराने में से किसी को बुरा-भला न कहो, क्योंकि हमारा एक पड़ोसी बनू हुजैम का था। उसने गुस्ताख़ी की और यों कहा, क्या तुम लोगों ने उस फ़ासिक़ हुसैन बिन अली को नहीं देखा? अल्लाह उन्हें क़त्ल करे।

यह गुस्ताख़ी करते ही अल्लाह ने उसकी दोनों आंखों में दो सफ़ेद नुक़्ते पैदा कर दिए और उसकी आंख की रोशनी को ख़त्म कर दिया।[2]

---

1. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 97,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 196,

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की दुआ से आंख की रोशनी का वापस आ जाना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिदे हराम में ऊंची आवाज़ से क़ुरआन पढ़ रहे थे, जिससे क़ुरैश के कुछ लोगों को तक्लीफ़ हुई और वे हुज़ूर सल्ल० को पकड़ने के लिए खड़े हुए, तो एकदम उनके हाथ उनकी गरदनों के साथ बंध गए और वे अंधे हो गए। उन्हें कुछ नज़र नहीं आ रहा था।

उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर कहा, ऐ मुहम्मद (सल्ल०)! हम तुम्हें अल्लाह का और रिश्तेदारी का वास्ता देते हैं (कि दुआ करके हमें इस मुसीबत से निकाल दें) क़ुरैश के हर ख़ानदान की हुज़ूर सल्ल० से रिश्तेदारी थी।

चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ की तो उनकी यह मुसीबत जाती रही, इस पर ये आयतें उतरीं—

يٰسٓ ۝ وَالْقُرْآنِ الْحَكِيْمِ ۝ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ

से लेकर

سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ تک (سورت یٰس آیت ۱-۱۰)

तक। 'यासीन! क़सम है क़ुरआन बा हिक्मत की कि बेशक आप पैग़म्बरों में से हैं और उनके हक़ में आपका डराना या न डराना, दोनों बराबर हैं, ये ईमान न लाएंगे।' (सूरः यासीन, आयत 1 से 10 तक)

चुनांचे उन लोगों में से कोई आदमी ईमान नहीं लाया।[1]

हज़रत क़तादा बिन नोमान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, किसी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हदिए में कमान दी, जो उहुद की लड़ाई के दिन हुज़ूर सल्ल० ने मुझे अता फ़रमाई। मैं हुज़ूर सल्ल० के सामने खड़ा होकर उससे तीर चलाता रहा, यहां तक कि उसका एक

1. दलाइलुन्नुबूवः, पृ० 63,

किनारा टूट गया। फिर मैं हुज़ूर सल्ल० के चेहरे के सामने उसी जगह खड़ा रहा और आने वाले तीरों को अपने चेहरों पर लेता रहा।

जब भी कोई तीर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरे की तरफ़ आता तो मैं हुज़ूर सल्ल० के चेहरे को बचाने के लिए अपना चेहरा और सर उसके आगे कर देता और यह सब कुछ बग़ैर तीर चलाए कर रहा था, (क्योंकि कमान तो टूट चुकी थी) आख़िरी तीर मुझे इस तरह लगा कि मेरी आंख निकलकर मेरे गाल पर गिर गई। फिर मुश्रिकों की फ़ौज बिखर गई।

फिर मैं अपनी आंख हथेली में पकड़ कर दौड़कर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गया। जब हुज़ूर सल्ल० ने मेरी आंख को देखा तो हुज़ूर सल्ल० की दोनों आंखों में आंसू आ गए। फिर आपने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह! क़तादा ने अपने चेहरे को तेरे नबी के सामने रखा था (जिसकी वजह से उसकी आंख बाहर निकल आई है। अब उसकी इस आंख को दोनों आंखों में से ज़्यादा ख़ूबसूरत और ज़्यादा तेज़ नज़र वाली बना दे। (फिर हुज़ूर सल्ल० ने वह आंख अपने हाथ से अन्दर रख दी।)

चुनांचे वह आंख दोनों आंखों में से ज़्यादा ख़ूबसूरत और ज़्यादा तेज़ नज़र वाली हो गई थी।[1]

हज़रत महमूद बिन लबीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, उहुद की लड़ाई के दिन हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु की आंख ज़ख़्मी हो गई थी और बाहर निकलकर उनके गाल पर गिर गई थी, जिसे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी जगह वापस रख दिया तो वह आंख दूसरी आंख से भी ज़्यादा अच्छी हो गई थी।[2]

अबू नुऐम की रिवायत में है कि वह आंख दोनों आंखों से ज़्यादा ख़ूबसूरत और ज़्यादा तेज़ हो गई थी।[3]

---

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 297, दलाइल, पृ० 174, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 453,
2. इसाबा, भाग 3, पृ० 225
3. दलाइल, पृ० 174,

हज़रत आसिम बिन उमर बिन क़तादा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत क़तादा बिन नोमान रज़ियल्लाहु अन्हु की आंख बद्र की लड़ाई के दिन ज़ख़्मी हो गई थी और आंख का डेला निकलकर उनके गाल पर आ गया था। सहाबा रज़ि० ने उसे काटना चाहा, तो कुछ लोगों ने कहा, नहीं, ठहरो, पहले हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मश्विरा कर लें।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मश्विरा किया तो आपने फ़रमाया, मत काटो। फिर हज़रत क़तादा रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० ने बुलाया और हथेली डेले पर रखकर उसे दबाया और अन्दर कर दिया। चुनांचे वह आंख ऐसी ठीक हुई कि पता नहीं चलता था कि कौन-सी बर्बाद हुई थी।[1]

हज़रत उबैदा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, उहुद की लड़ाई के दिन हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु की आंख ज़ख़्मी हो गई थी। हुज़ूर सल्ल० ने उस पर अपना लुआब लगाया तो वह दूसरी से भी ज़्यादा अच्छी हो गई थी।[2]

हज़रत रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, बद्र की लड़ाई के दिन मुझे एक तीर लगा, जिससे मेरी आंख फूट गई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस पर लुआब लगाया और मेरे लिए दुआ फ़रमाई, जिससे मुझे आंख में कोई तक्लीफ़ महसूस न हुई।[3]

क़बीला बनू सलामान के एक आदमी की मां बयान करती हैं कि मेरे मामूं हज़रत हबीब बिन फ़ुवैक रहमतुल्लाहि अलैहि ने मुझे बताया कि उनके बाप को लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में ले गए। उनकी आंखें बिल्कुल सफ़ेद थीं और उन्हें कुछ नज़र नहीं आता था।

1. इसाबा, भाग 3, पृ० 225, हैसमी, भाग 8, पृ० 298
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 298
3. दलाइल, पृ० 223,

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे आंखें सफ़ेद होने की वजह पूछी। मेरे वालिद ने कहा, मैं अपने एक ऊंट को सधा रहा था कि इतने में मेरा पांव किसी सांप के अंडे पर पड़ गया, जिससे मेरी आंख की रोशनी जाती रही। हुज़ूर सल्ल० ने उनकी आंखों पर दम फ़रमाया, जिससे वह एकदम आंख वाले हो गए।

मेरे मामूं कहते हैं, मैंने देखा कि मेरे पिता की उम्र अस्सी साल हो चुकी थी और उनकी दोनों आंखें सफ़ेद थीं, लेकिन वह सूई में धागा डाल लेते थे।[1]

तबरानी की रिवायत में यह है कि मेरे वालिद ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह बताया कि (जब मेरा पांव सांप के अंडे पर पड़ा तो) उस वक़्त मैं ऊंटनियों के थनों पर दूध निकालने के लिए हाथ फेर रहा था।[2]

अबू नुऐम की रिवायत में यह है कि मैं अपने ऊंट को सधा रहा था।

हज़रत साद बिन इब्राहीम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत ज़िन्नीरा रज़ियल्लाहु अन्हा रूमी बांदी थी। वह मुसलमान हुई तो उनकी आंख की रोशनी जाती रही। इस पर मुश्रिकों ने कहा, लात व उज़्ज़ा, हमारे बुतों ने उनको अंधा किया है। हज़रत ज़िन्नीरा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा, (नहीं, उन्होंने नहीं किया) मैं लात व उज़्ज़ा के माबूद होने का इंकार करती हूं। फिर अल्लाह ने उनकी आंखों की रोशनी वापस कर दी।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मुझसे हज़रत उम्मे हानी बिन्त अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया, जब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ज़िन्नीरा रज़ियल्लाहु अन्हा को आज़ाद किया तो उनकी आंखों की रोशनी जाती रही। इस पर क़ुरैश के कुफ़्फ़ार ने

1. इसाबा, भाग 1, पृ० 308,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 298, दलाइल, पृ० 223,
3. अल फ़ाकही

कहा, उन्हें तो लात व उज़्ज़ा ही ने अंधा किया है।

हज़रत ज़िन्नीरा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा, ये लोग ग़लत कहते हैं, बैतुल्लाह की क़सम! लात व उज़्ज़ा किसी काम नहीं आ सकते और कुछ नफ़ा नहीं दे सकते। चुनांचे अल्लाह ने उनकी रोशनी वापस कर दी।[1]

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के ला इला-ह इल्लल्लाहु और अल्लाहु अक्बर कहने से दुश्मनों के बालाख़ानों का हिल जाना

हज़रत हिशाम बिन आस उमवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, (हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में) मुझे और एक और आदमी को रूम के बादशाह हिरक़्ल के पास इस्लाम की दावत देने के लिए भेजा गया। चुनांचे हम सफ़र में रवाना हुए और दमिश्क़ के ग़ौता नामी जगह पर पहुंचे और जबला बिन ऐहम ग़स्सानी (ग़स्सान का बादशाह) के यहां ठहरे।

हमने जबला के पास जाना चाहा तो उसने अपना क़ासिद हमसे बात करने के लिए भेजा। हमने कहा, अल्लाह की क़सम! हम किसी क़ासिद से बात नहीं करेंगे हमें तो बादशाह के पास भेजा गया है। अगर बादशाह हमें इजाज़त दे तो हम उससे बात करेंगे वरना हम इस क़ासिद से बात नहीं करेंगे।

क़ासिद ने वापस जाकर बादशाह को सारी बात बताई, जिस पर बादशाह ने हमें इजाज़त दे दी (हम अन्दर गए) उसने कहा बात करो। चुनांचे मैंने उससे बात की और उसे इस्लाम की दावत दी।

उसने काले कपड़े पहने हुए थे। मैंने कहा, आपने ये काले कपड़े क्यों पहन रखे हैं? उसने कहा, मैंने ये कपड़े पहनकर क़सम खाई है कि जब तक तुम्हें शाम देश से निकाल न दूं, ये कपड़े नहीं उतारूंगा।

1. इसाबा, भाग 4, पृ० 314,

हमने कहा, तुम्हारे बैठने की इस जगह की क़सम! इनशाअल्लाह, यह जगह भी हम आपसे ले लेंगे, बल्कि शहंशाहे आज़म (शाहे रूम) का मुल्क भी ले लेंगे। हमें यह बात हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताई है।

उसने कहा, तुम वह लोग नहीं हो, (जो हमसे हमारा मुल्क छीन लें) बल्कि वे तो वह लोग होंगे, जो दिन को रोज़े रखते होंगे और रात को इबादत करते होंगे, तो बताओ, तुम्हारे रोज़े किस तरह हैं? हमने उसको रोज़े के बारे में बताया, तो उसका सारा चेहरा काला पड़ गया और उसने कहा, चलो। फिर उसने हमारे साथ शाह रूम के पास एक क़ासिद भेजा।

चुनांचे हम वहां से चले। जब हम शहर के क़रीब पहुंचे, तो हमारे साथ जो क़ासिद था, उसने हमसे कहा, आप लोगों की ये सवारियां बादशाह के शहर में दाख़िल नहीं हो सकतीं। अगर आप लोग कहें तो हम सवारी के लिए तुर्की घोड़े और ख़च्चर दे दें। हमने कहा, अल्लाह की क़सम! हम तो इन्हीं सवारियों पर शहर में दाख़िल होंगे।

उन लोगों ने बादशाह के पास पैग़ाम भेजा कि ये लोग तो नहीं मान रहे हैं। बादशाह हिरक़्ल ने उन्हें हुक्म दिया कि हम लोग अपनी सवारियों पर ही आ जाएं।

चुनांचे हम तलवारें लटकाए हुए शहर में दाख़िल हुए और बादशाह के बालाख़ाने तक पहुंच गए। हमने बालाख़ाने के नीचे अपनी सवारियां बिठा दीं। वह हमें देख रहा था हमने—

لا إله إلا الله والله أكبر

'ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर' कहा, तो अल्लाह जानता है कि वह बालाख़ाना हिलने लगा और ऐसे हिल रहा था, जैसे पेड़ की टहनी को हवा हिला रही हो।

हिरक़्ल ने हमारे पास पैग़ाम भेजा कि तुम लोगों को इस बात की इजाज़त नहीं है कि तुम अपने दीन की बातें हमारे सामने ज़ोर से कहो।

फिर उसने पैग़ाम भेजा कि अन्दर आ जाओ। हम उसके पास गए। वह अपने क़ीमती बिछौने पर बैठा हुआ था और उसके पास रूम के सभी जरनैल और सेनापति बैठे हुए थे।

उसकी मज्लिस में हर चीज़ लाल थी। उसके चारों तरफ़ लाली थी और उसके कपड़े भी लाल थे। हम उसके क़रीब गए तो वह हंसने लगा और कहने लगा, अगर आप लोग मुझे वैसे ही सलाम करते जैसे आपस में करते हो, तो इसमें क्या हरज था? उसके पास एक आदमी था, जो बहुत अच्छी अरबी बोलता था और बहुत बातें करता था, (जो तर्जुमानी कर रहा था)

हमने कहा, जिस तरह हम आपस में सलाम करते हैं, इस तरह आपको सलाम करना हमारे लिए जायज़ नहीं और जिस तरह आपको सलाम किया जाता है, इस तरह सलाम करना वैसे जायज़ नहीं। उसने पूछा, आप लोग आपस में कैसे सलाम करते हैं? हमने कहा, 'अस्सलामु अलैकुम'। उसने कहा, आप लोग अपने बादशाह को किस तरह सलाम करते हैं? हमने कहा, इसी तरह। उसने कहा, वह आप लोगों को जवाब कैसे देता है? हमने कहा, इन्हीं लफ़्ज़ों से।

फिर उसने पूछा, आप लोगों का सबसे बड़ा कलाम क्या है? हमने कहा—

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ

'ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर'

अल्लाह जानता है, इन कलिमों के कहते ही वह बालाख़ाना फिर हिलने लगा और बादशाह सर उठाकर देखने लगा। फिर उसने कहा, अच्छा, ये हैं वे कलिमे, जिनके कहने से यह बालाख़ाना हिलने लगा था, तो जब ये कलिमे आप लोग अपने घरों में कहते हैं, तो क्या वे भी हिलने लगते हैं? हमने कहा, नहीं यह बात तो हमने सिर्फ़ आपके यहां देखी है।

उसने कहा, मेरी आरज़ू है कि आप लोग जब भी ये कलिमे कहें, तो

आप लोगों की हर चीज़ हिलने लगे, चाहे मुझे उसके लिए आधा मुल्क देना पड़े। हमने कहा, क्यों? उसने कहा, इसलिए कि अगर ऐसा हो जाए तो फिर यह नुबूवत की निशानी न होगी, बल्कि लोगों की शोबदाबाज़ी में से होगा।

फिर उसने बहुत से सवाल किए, जिनके हमने जवाब दिए। फिर उसने कहा, आप लोगों के नमाज़-रोज़े किस तरह के होते हैं, उसकी हमने तफ़सील बताई। फिर उसने कहा, आप लोग उठें और चले जाएं। फिर उसके हुकम देने पर हमें बहुत अच्छे मकान में ठहराया गया और हमारी बहुत ज़्यादा मेहमानी का एहतिमाम किया गया। हम वहां तीन दिन ठहरे रहे।

फिर एक रात उसने हमारे पास पैग़ाम भेजा। हम उसके पास गए। उसने कहा, अपनी बात दोबारा कहो। हमने अपनी सारी बात कह दी। फिर उसने एक चीज़ मंगवाई जो बड़ी चौकोर पिटारी की तरह थी और उस पर सोने के पानी का काम किया हुआ था। उसमें छोटे-छोटे ख़ाने बने हुए थे, जिनके दरवाज़े थे।

उसने ताला खोलकर ख़ाना खोला और उसमें से काले रंग के रेशम का एक कपड़ा निकाला। उसे हमने फैलाया तो उस पर एक आदमी की लाल रंग की तस्वीर बनी हुई थी, जिसकी आंखें बड़ी और सुरीन मोटे थे और इतनी लम्बी गरदन मैंने किसी की नहीं देखी। उसकी दाढ़ी नहीं थी, अलबत्ता सर के दो बालों की दो मेंढ़ियां थीं। अल्लाह ने जितने इंसान बनाए, उनमें सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत था।

बादशाह ने कहा, क्या आप लोग इसे पहचानते हैं? हमने कहा, नहीं, उसने कहा, यह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हैं। इनके बाल आम लोगों से ज़्यादा थे।

फिर उसने दूसरा दरवाज़ा खोलकर काले रेशम का एक कपड़ा निकाला, जिस पर सफ़ेद तस्वीर बनी हुई थी। उस आदमी के बाल घुंघराले जैसे थे, आंखें लाल, सर बड़ा और दाढ़ी ख़ूबसूरत थी। उसने

कहा, क्या इसे पहचानते हैं? हमने कहा, नहीं, उसने कहा, यह हज़रत नूह अलैहिस्सलाम हैं।

फिर उसने एक दरवाज़ा खोलकर काले रेशम का एक कपड़ा निकाला। उस पर एक आदमी की तस्वीर थी, जो बहुत सफ़ेद था। उसकी आंखें ख़ूबसूरत, पेशानी सुती हुई, गाल लम्बे, दाढ़ी सफ़ेद थी। ऐसे लग रहा था, जैसे मुस्करा रहा हो। उसने कहा, क्या आप लोग इसे पहचानते हैं? हमने कहा, नहीं। उसने कहा, यह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं।

फिर उसने एक और दरवाज़ा खोला। उसमें सफ़ेद तस्वीर थी। अल्लाह की क़सम! वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तस्वीर थी। उसने कहा, क्या इन्हें पहचानते हैं? हमने कहा, हां, यह हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं और हम ख़ुशी के मारे रोने लगे और अल्लाह जानता है कि वह अपनी जगह से एकदम उठा और कुछ देर खड़ा रहा, फिर बैठ गया। फिर कहा, अल्लाह की क़सम! यह वही हैं।

हमने कहा, हां, बेशक यह वही हैं, गोया कि आप उनको ही देख रहे हैं। फिर कुछ देर वह उसी तस्वीर को देखता रहा, फिर कहने लगा, यह तस्वीर थी तो आख़िरी ख़ाने में, लेकिन मैंने आप लोगों का इम्तिहान लेने के लिए ज़रा जल्दी निकाली, ताकि पता चले कि आप लोगों की मालूमात क्या हैं।

फिर उसने एक और दरवाज़ा खोलकर उसमें से काले रंग के रेशम का एक कपड़ा निकाला, जिस पर गेंहुआ रंग वाले स्याही मायल आदमी की तस्वीर थी, जिसके बाल बहुत ज़्यादा घुंघराले, आंखें अन्दर घुसी हुई, निगाह तेज़, मुंह चढ़ा हुआ और दांत एक दूसरे पर चढ़े हुए और होंठ सिमटा हुआ था और ऐसे मालूम हो रहा था जैसे कि ग़ुस्से में हों।

उसने कहा, क्या इन्हें पहचानते हैं? हमने कहा, नहीं। उसने कहा, यह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम हैं और उनके पहलू में एक और तस्वीर थी जो बिल्कुल उन जैसी थी, अलबत्ता उनके सर पर तेल लगा हुआ

था। पेशानी चौड़ी थी और उनकी आंखों में कुछ भींगापन था।

उसने कहा, क्या इन्हें पहचानते हैं? हमने कहा, नहीं। उसने कहा, यह हज़रत हारून बिन इम्रान अलैहिस्सलाम हैं।

फिर उसने एक और दरवाज़ा खोलकर सफ़ेद रेशम का एक कपड़ा निकाला, जिस पर एक आदमी की तस्वीर थी, जिसका रंग गेंहुआ, बाल सीधे और क़द दर्मियाना था और वह ऐसे नज़र आ रहे थे कि जैसे गुस्से में हों। उसने कहा, क्या इनको पहचानते हैं? हमने कहा, नहीं। उसने कहा, यह हज़रत लूत अलैहिस्सलाम हैं।

फिर उसने एक और दरवाज़ा खोलकर सफ़ेद रेशम का एक कपड़ा निकाला, जिस पर एक सफ़ेद आदमी की तस्वीर थी। सफ़ेदी में कुछ लाली मिली हुई थी, नाक ऊंची, गाल हलके और चेहरा ख़ूबसूरत था। उसने कहा, क्या इन्हें पहचानते हैं? हमने कहा, नहीं। उसने कहा, यह हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम हैं।

फिर एक और दरवाज़ा खोलकर उसमें से सफ़ेद रेशम का एक कपड़ा निकाला, उस पर एक तस्वीर थी, जो हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम से मिलती-जुलती थी। सिर्फ़ यह फ़र्क़ था कि उनके होंठ पर तिल था। उसने कहा, क्या इन्हें पहचानते हैं? हमने कहा, नहीं। उसने कहा, यह हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम हैं।

फिर उसने एक और दरवाज़ा खोलकर काले रेशम का एक कपड़ा निकाला, जिसमें एक सफ़ेद आदमी की तस्वीर थी, जिसका चेहरा ख़ूबसूरत, नाक ऊंची और क़द अच्छा था। उसके चेहरे पर नूर बरस रहा था, उसके चेहरे से ख़ुशूअ मालूम हो रहा था और रंग का सुर्ख़ी की तरफ़ झुकाव था। उसने कहा, क्या आप लोग इन्हें पहचानते हैं? हमने कहा, नहीं। उसने कहा, यह तुम्हारे नबी के दादा हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम हैं।

फिर उसने एक और दरवाज़ा खोलकर सफ़ेद रेशम का एक कपड़ा निकाला जिसमें हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जैसी तस्वीर थी और उनका

चेहरा सूरज की तरह चमक रहा था। उसने कहा, क्या इन्हें पहचानते हैं? हमने कहा, नहीं। उसने कहा, यह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम हैं।

फिर उसने एक और दरवाज़ा खोलकर सफ़ेद रेशम का एक कपड़ा निकाला, जिसमें लाल रंग के आदमी की तस्वीर थी, जिसकी पिंडुलियां पतली, आंखें छोटी और कमज़ोर, पेट बड़ा और क़द बीच का था, तलवार भी गले में लटकी हुई थी। उसने पूछा, क्या इन्हें पहचानते हैं? हमने कहा, नहीं। उसने कहा, यह हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम हैं।

फिर उसने एक और दरवाज़ा खोलकर उसमें से सफ़ेद रेशम का एक कपड़ा निकाला, जिसमें एक आदमी की तस्वीर थी, जिसके सुरीन बड़े, पांव लम्बे थे और वह एक घोड़े पर सवार थे। उसने कहा, क्या आप इन्हें पहचानते हैं? हमने कहा, नहीं। उसने कहा, यह हज़रत सुलैमान बिन दाऊद अलैहिस्सलाम हैं।

फिर उसने एक और दरवाज़ा खोलकर उसमें से काले रेशम का एक कपड़ा निकाला, जिसमें सफ़ेद तस्वीर थी। वह बिल्कुल जवान थे, दाढ़ी बे-इंतिहा काली और बाल बहुत ज़्यादा, आंखें और चेहरा बहुत ख़ूबसूरत था। उसने कहा, क्या इन्हें पहचानते हैं? हमने कहा, नहीं, उसने कहा, यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हैं।

हमने पूछा, आपको ये तस्वीरें कहां से मिली हैं? क्योंकि हमें यक़ीन है कि नबियों (अलैहिमुस्सलाम) को जो शक्ल व सूरत अता फ़रमाई गई थी, ये उसके मुताबिक़ है, इसलिए कि हमने अपने पाक नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तस्वीर उनकी शक्ल व सूरत के मुताबिक़ बनी हुई देखी है।

उसने कहा, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अपने रब से यह सवाल किया था कि मेरी औलाद में से जितने नबी होंगे, वे मुझे दिखा दें। इस पर अल्लाह ने नबियों (अलैहिमुस्सलाम) की ये तस्वीरें हज़रत आदम पर उतारी थीं और सूरज डूबने की जगह के पास, जो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का ख़ज़ाना था, उसमें ये तस्वीरें रखी हुई थीं, जिसको

वहां से निकालकर ज़ुलक़रनैन ने हज़रत दानियाल अलैहिस्सलाम को दी थी।

फिर हिरक़्ल ने कहा, ग़ौर से सुनें। अल्लाह की क़सम ! इसके लिए मैं दिल से तैयार हूं कि मैं अपने मुल्क को छोड़ दूं और आप लोगों में से जो अपने ग़ुलामों के साथ सबसे बुरा सुलूक करता हो, मैं उसका मरते दम तक के लिए ग़ुलाम बन जाऊं, (लेकिन इस्लाम में दाख़िल होने के लिए तैयार नहीं।) फिर उसने बहुत अच्छे तोहफ़े देकर हमें विदा किया।

जब हम हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पहुंचे तो हमने उनको सारी कारगुज़ारी सुनाई। हिरक़्ल ने हमें जो कुछ दिखाया, जो कुछ कहा, जो तोहफ़े दिए, वे सब हमने उनको बताए।

यह सुनकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० रो पड़े और फ़रमाया, यह बेचारा हिरक़्ल मिस्कीन है। अगर अल्लाह का इसके साथ भलाई का इरादा होता, तो यह भलाई का काम कर लेता यानी इस्लाम में दाख़िल हो जाता और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह भी फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें बताया था कि यहूदियों और ईसाइयों की किताबों में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुलिया मुबारक और सिफ़ात का ज़िक्र मौजूद है।[1]

हज़रत हिशाम बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु की इस हदीस में तो उन तस्वीरों में हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की तस्वीर का ज़िक्र नहीं है, लेकिन बैहक़ी ने हज़रत जुबैर बिन मुतइम रज़ियल्लाहु अन्हु से यही हदीस रिवायत की है, इसमें हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की तस्वीर का ज़िक्र इस तरह है (कि बसरा शहर के ईसाई मुझे एक गिरजाघर में ले गए, उसमें बहुत-सी तस्वीरें थीं)

फिर उन्होंने मुझसे कहा, देखो, क्या इस नबी की तस्वीर इनमें नज़र आ रही है? मैंने देखा तो उनमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 151, कंज़, भाग 5, पृ० 322, दलाइलुन्नुबूवः पृ० 9

तस्वीर भी थी और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की तस्वीर भी थी। वह हुज़ूर सल्ल० की एड़ी पकड़े हुए थे। उन्होंने मुझसे कहा, क्या तुम्हें उनकी तस्वीर नज़र आई? मैंने कहा, जी हां।

उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की तस्वीर की तरफ़ इशारा करके कहा, क्या वह यह हैं? मैंने कहा, जी हां, मैं गवाही देता हूं कि वह यही हैं।

फिर उन्होंने कहा, तुम इनको पहचानते हो जो इनकी एड़ी पकड़े हुए हैं? मैंने कहा, जी हां। उन्होंने कहा, हम गवाही देते हैं कि यह तुम्हारे हज़रत यानी तुम्हारे नबी हैं और यह उनके बाद उनके ख़लीफ़ा हैं।[1]

तबरानी की रिवायत में यह है कि मैंने कहा, यह उनकी एड़ी के पास खड़ा हुआ आदमी कौन है? उस नसरानी ने कहा, तुम्हारे नबी के अलावा हर नबी के बाद नबी ज़रूर होता था, लेकिन तुम्हारे नबी के बाद कोई नबी नहीं आएगा और यह उनके बाद उनके ख़लीफ़ा हैं, तो यह हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की तस्वीर थी।[2]

(पहले नबियों की शरीअत में जानदार की तस्वीर की इजाज़त थी, लेकिन हमारी शरीअत में इजाज़त नहीं।)

क़बीला ग़स्सान और क़बीला बनू क़ैन के कुछ बुज़ुर्ग बयान करते हैं कि हिम्स की लड़ाई में अल्लाह ने मुसलमानों के सब्र का बदला यह दिया कि हिम्स वालों पर ज़लज़ला आया और उसकी शक्ल यह हुई कि मुसलमान उनके मुक़ाबले के लिए खड़े हुए, तो उन्होंने ज़ोर से अल्लाहु अक्बर कहा, जिसकी वजह से शहर हिम्स में रूमियों पर ज़लज़ला आ गया और दीवारें फट गईं तो वे सब घबरा कर अपने उन सरदारों और शूरा वालों के पास गए जो उनको मुसलमानों से सुलह करने की दावत देने लगे, लेकिन उन लोगों ने उन सरदारों और शूरा वालों की यह बात न मानी, बल्कि इस पर उनके साथ ज़िल्लत भरा रवैया अपनाया।

---

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 63,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 334, दलाइलुन्नुबूवः पृ० 9

मुसलमानों ने दोबारा फिर ज़ोर से अल्लाहु अक्बर कहा, जिससे बहुत से घर और दीवारें गिर गईं और शहर वाले फिर घबरा कर सरदारों और शूरा वालों के पास गए तो उन्होंने कहा, क्या तुम देखते नहीं कि यह अल्लाह का अज़ाब है। इस पर शहर वालों ने सुलह की बात मान ली। आगे और भी हदीस है।[1]

बहुत दूर के इलाक़ों तक सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की आवाज़ का पहुंच जाना

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक फ़ौज भेजी और उनका अमीर एक आदमी को बनाया, जिन्हें सारिया रज़ियल्ललाहु अन्हु कहा जाता था।

एक बार हज़रत उमर रज़ि० जुमा का ख़ुत्बा दे रहे थे कि एकदम उन्होंने पुकार कर तीन बार कहा, ऐ सारिया रज़ि० ! फ़ौज को लेकर पहाड़ की तरफ़ हो जाओ। फिर उस फ़ौज का क़ासिद आया। हज़रत उमर रज़ि० ने उससे हालात पूछे। उसने कहा—

'ऐ अमीरुल मोमिनीन ! हम हार रहे थे कि इतने में हमने एक ऊंची आवाज़ तीन बार सुनी, ऐ सारिया ! पहाड़ की तरफ़ हो जाओ।'

चुनांचे हमने अपनी पीठें पहाड़ की तरफ़ कर दीं, जिस पर अल्लाह ने कुफ़्फ़ार को हरा दिया। फिर लोगों ने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, आपने ही तो ऊंची आवाज़ से यह कहा था।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जुमा के दिन ख़ुत्बा दे रहे थे, तो ख़ुत्बा में कहने लगे, ऐ सारिया ! पहाड़ की तरफ़ हो जाओ और जिसने भेड़िए को बकरियों का चरवाहा बनाया, उसने बकरियों पर ज़ुल्म किया।

लोग एक दूसरे को हैरान होकर देखने लगे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु

1. इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 97,
2. बैहक़ी, इब्नुल आराबी,

अन्हु ने उनसे फ़रमाया, परेशान मत हो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ुद बताएंगे कि उन्होंने यह क्यों कहा है?

जब हज़रत उमर रज़ि० नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो लोगों ने उनसे पूछा। उन्होंने फ़रमाया, मेरे दिल में एकदम यह ख़्याल आया कि मुश्रिकों ने हमारे भाइयों को हरा दिया है और वे एक पहाड़ के पास से गुज़र रहे हैं। ये हमारे भाई अगर पहाड़ की तरफ़ मुड़ जाएं, तो उनको सिर्फ़ एक तरफ़ से ही लड़ना पड़ेगा (और इस तरह उनको जीत हो जाएगी) और अगर ये लोग पहाड़ से आगे निकल गए, तो फिर (इनको हर तरफ़ से लड़ना पड़ेगा और) ये हलाक हो जाएंगे। बस इस पर मेरी ज़ुबान से वे कलिमे निकल गए, जो आप लोगों ने सुने हैं।

फिर एक महीने के बाद (उस फ़ौज की ओर से जीत की) ख़ुशख़बरी देने वाला आया और उसने बताया कि हम लोगों ने उस दिन हज़रत उमर रज़ि० की आवाज़ सुनी थी और आवाज़ सुनकर हम लोग पहाड़ की ओर हो गए थे, जिससे अल्लाह ने हम लोगों को जीत दिला दी।[1]

ख़तीब और इब्ने असाकिर की रिवायत में यह है कि लोगों ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, क्या आपने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मिंबर पर ख़ुत्बे के दौरान 'या सारिया!' कहते हुए नहीं सुना?

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुम्हारा भला हो, हज़रत उमर रज़ि० को कुछ न कहो, वह जो भी काम करते हैं, उसकी कोई न कोई वजह ज़रूर होती है।

अबू नुऐम की रिवायत में यह है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मेरे दिल में यह ख़्याल आया कि दुश्मन ने हज़रत सारिया रज़ि० को पहाड़ की पनाह लेने पर मजबूर कर दिया है तो इस ख़्याल से मैंने यह कह दिया कि शायद अल्लाह का कोई बन्दा मेरी आवाज़

1. इसाबा, भाग 2, पृ० 3, दलाइल, पृ० 210, मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 386, बिदाया, भाग 7, पृ० 131,

हज़रत सारिया रज़ि० तक पहुंचा दे, यानी कोई फ़रिश्ता या मुसलमान जिन्न पहुंचा दे।[1]

अबू नुऐम की दूसरी रिवायत में यह है कि फिर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ि० के पास गए। हज़रत उमर रज़ि० को हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु पर पूरा इत्मीनान और भरोसा था। हज़रत अब्दुर्रहमान ने कहा, मुझे आपकी वजह से लोगों को बुरा-भला कहना पड़ता है। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि आप हमेशा ऐसा काम कर देते हैं, जिसकी ज़ाहिर में कोई वजह नज़र नहीं आती और यों लोगों को बातें करने का मौक़ा मिल जाता है। आपने यह क्या कहा कि ख़ुत्बा देते-देते आप एकदम 'ऐ सारिया रज़ि० ! पहाड़ की तरफ़ हो जाओ', ज़ोर से कहने लगे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, अल्लाह की क़सम ! मैं अपने आपको क़ाबू में न रख सका, मैंने देखा कि हज़रत सारिया रज़ि० की फ़ौज एक पहाड़ के पास लड़ रही है और उन पर आगे से, पीछे से हर तरफ़ से हमला हो रहा है। इस पर मैं अपने आपको अपने क़ाबू में न रख सका और एकदम मेरी ज़ुबान से निकल गया, 'ऐ सारिया रज़ि० ! पहाड़ की तरफ़ हो जाओ' और मैंने यह इसलिए कहा ताकि ये लोग पहाड़ की तरफ़ हो जाएं, (और उन्हें सिर्फ़ एक तरफ़ से लड़ना पड़े।)

कुछ ही दिनों के बाद हज़रत सारिया रज़ि० का क़ासिद उनका ख़त लेकर आया, जिसमें लिखा था कि जुमा के दिन हमारा दुश्मन से मुक़ाबला हुआ। हमने सुबह की नमाज़ पढ़कर लड़ाई शुरू की, यहां तक कि जुमा का वक़्त हो गया और सूरज का किनारा ढल गया तो हमने सुना कि किसी आदमी ने दो बार ज़ोर से यह एलान किया, 'ऐ सारिया रज़ि० ! पहाड़ की तरफ़ हो जाओ।' चुनांचे हम पहाड़ की तरफ़ हो गए। इस तरह हम दुश्मन पर ग़ालिब आने लगे, यहां तक कि अल्लाह ने उन्हें हरा दिया और उनको क़त्ल कर दिया।

1. दलाइल, पृ० 210

हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, लोगों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस अमल पर ख़ामख़ाही एतराज़ किया था। इस आदमी को छोड़े रखो, इसे कुछ न कहो, क्योंकि इसकी उलटी भी सीधी होती है।[1]

वाक़दी में ज़ैद बिन अस्लम और याक़ूब बिन ज़ैद की रिवायत में इस तरह है कि लोगों ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा, यह आपने क्या कह दिया था?

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! मैंने हज़रत सारिया रज़ि० को वही बात कही जो अल्लाह की तरफ़ से मेरी ज़ुबान पर जारी हो गई।

हज़रत इज़्ज़ा बिन्त अयाज़ बिन अबी क़िरसाफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहा कहती हैं, रूमियों ने हज़रत अबू क़िरसाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के एक बेटे को गिरफ़्तार कर लिया था। जब नमाज़ का वक़्त होता तो हज़रत अबू क़िरसाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु अस्क़लान शहर की फ़सील की दीवार पर चढ़कर ज़ोर से कहते, ऐ फ़्लाने! नमाज़ का वक़्त हो गया है और उनका बेटा रूम के शहर में उनकी यह आवाज़ सुन लिया करता।[2]

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का ग़ैबी आवाज़ें सुनना, जिनका बोलने वाला नज़र नहीं आता था

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ, तो ग़ुस्ल देने वालों में इख़्तिलाफ़ हो गया कि ग़ुस्ल के लिए हुज़ूर सल्ल० का कुरता उतारा जाए या न उतारा जाए, तो उन सबने एक ग़ैबी आवाज़ को सुना कि कोई कह रहा है, तुम अपने नबी सल्ल० को कुरते ही में ग़ुस्ल दे दो।

1. दलाइल, पृ० 211, बिदाया, भाग 7, पृ० 31
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 396,

आवाज़ तो आ रही थी, लेकिन बोलने वाले का पता नहीं चल रहा था कि कौन है? चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कुरते ही में ग़ुस्ल दिया गया।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत में यह है कि किसी कहने वाले ने कहा, तुम इन्हें कपड़ों समेत ही ग़ुस्ल दे दो। कहने वाले का पता नहीं चल रहा था।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने समुन्दर का सफ़र करने वाली एक फ़ौज का हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु को अमीर बनाया, तो रात के वक़्त नाव उनको लिए जा रही थी कि अचानक एक मुनादी ने ऊपर से उन्हें पुकार कर कहा, क्या मैं तुम्हें वह फ़ैसला न बता दूं जो अल्लाह ने अपने बारे में किया हुआ है?

और वह यह है कि जो आदमी (रोज़ा रखकर) गर्म दिन में अल्लाह के लिए प्यासा रहेगा तो अल्लाह पर उसका यह हक़ है कि उसे बड़ी प्यास वाले दिन यानी क़ियामत के दिन अच्छी तरह पानी पिलाए।[2]

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हम लोग समुद्री लड़ाई में गए। चुनांचे हम समुद्र में सफ़र कर रहे थे, हवा बिल्कुल मुवाफ़िक़ थी और बादबान उठे हुए थे। हमने एक मुनादी को एलान करते हुए सुना, ऐ कश्ती वालो! ठहर जाओ, मैं तुम्हें एक ख़बर देना चाहता हूं। उसने यह एलान लगातार सात बार किया।

मैंने कश्ती के अगले हिस्से पर खड़े होकर कहा, तू कौन है? और कहां से आया है? क्या तुझे नज़र नहीं आ रहा है कि हम कहां हैं? क्या हम यहां रुक सकते हैं? तो उसने जवाब में कहा, क्या मैं आप लोगों को वह फ़ैसला न बताऊं, जो अल्लाह ने आपके बारे में किया है? मैंने कहा, ज़रूर बताओ।

---

1. इब्ने साद, भाग 2, पृ० 276,
2. हाकिम, भाग 2, पृ० 467,

उसने कहा, अल्लाह ने अपने बारे में यह फ़ैसला किया है कि जो गरम दिन में अपने आपको अल्लाह के लिए (रोज़ा रखकर) प्यासा रखेगा, उसका अल्लाह पर यह हक़ होगा कि अल्लाह उसे क़ियामत के दिन सेराब करे। चुनांचे हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु उस सख़्त गर्म दिन की खोज में रहते, जिसमें इंसान की खाल जल जाए और उस दिन रोज़ा रखते।[1]

हज़रत सईद बिन जुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का ताइफ़ में इंतिक़ाल हुआ। मैं उनके जनाज़े में शरीक हुआ तो इतने में एक परिंदा आया। उस जैसी शक्ल व सूरत का परिंदा कभी किसी ने नहीं देखा था। वह परिंदा आकर उनके जिस्म में दाख़िल हो गया।

हम देखते रहे और सोचते रहे कि क्या अब बाहर निकलेगा, लेकिन किसी ने उसे बाहर निकलते न देखा और जब उन्हें दफ़न किया गया, तो किसी ने क़ब्र के किनारे पर यह आयत पढ़ी और पढ़ने वाले का कुछ पता न चला—

يَاأَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ٥ ارْجِعِي إِلَى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ٥ فَادْخُلِي فِي
عِبَادِي وَادْخُلِي جَنَّتِي (سورت فجر آیت ۲۷-۳۰)

'(और जो अल्लाह के फ़रमांबरदार थे, उनको इर्शाद होगा कि) ऐ इत्मीनान वाली रूह! तू अपने परवरदिगार (की रहमत के दामन) की तरफ़ चल, इस तरह से कि तू उससे ख़ुश और वह तुझसे ख़ुश, फिर (इधर चलकर) तू मेरे (ख़ास) बन्दों में शामिल हो जा (कि यह भी रूहानी नेमत है) और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा।'[2] (सूरः फ़ज्र आयत 27-30)

हाकिम में इस्माईल बिन अली और ईसा बिन अली की रिवायत में यह है कि वह सफ़ेद परिंदा था और हैसमी की रिवायत में यह है कि वह सफ़ेद परिंदा था जिसे बगुला कहा जाता है। मैमून बिन मेहरान की

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 260
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 543, हैसमी, भाग 9, पृ० 285

रिवायत में है कि जब उन पर मिट्टी डाल दी गई तो हमने एक आवाज़ सुनी, आवाज़ तो हम सुन रहे थे, लेकिन बोलने वाला नज़र नहीं आ रहा था।[1]

मैमून बिन मेहरान की दूसरी रिवायत में है कि जब हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का इंतिक़ाल हुआ और उन्हें कफ़न पहनाया जाने लगा, तो एक सफ़ेद परिन्दा तेज़ी से उन पर गिरा और उनके कफ़न के अन्दर चला गया, उसे बहुत खोजा, लेकिन न मिला।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के आज़ाद किए गए ग़ुलाम हज़रत इक्रिमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, क्या तुम लोग बेवक़ूफ़ हो? (जो परिंदा खोज रहे हो) यह तो उनकी आंख की रोशनी है, जिसके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे वायदा किया था कि वफ़ात के दिन उन्हें वापस मिल जाएगी।

फिर जब लोग जनाज़ा क़ब्र पर ले गए और उन्हें लहद में रख दिया गया तो ग़ैबी आवाज़ ने कुछ कलिमे कहे, जिन्हें उन सब लोगों ने सुना, जो क़ब्र के किनारे पर थे। फिर मैमून ने पिछली आयतों का ज़िक्र किया।

जिन्नात और ग़ैबी आवाज़ों का सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की मदद करना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत ख़ुरैम बिन फ़ातिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! क्या आपको न बताऊं कि मेरे इस्लाम लाने की शुरूआत कैसे हुई। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ज़रूर बताओ।

उन्होंने कहा, मैं एक बार अपने जानवर तलाश कर रहा था और उनके निशानों पर चल रहा था कि उसी में अबरक़ुल अज़्ज़ाफ़ नामी जगह पर मुझे रात आ गई तो मैंने अपनी ऊंची आवाज़ से पुकार कर

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 329, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 236.

कहा, मैं इस घाटी के (जिन्न) बादशाह की पनाह चाहता हूं, उसकी क़ौम के बेवक़ूफ़ों से, तो ग़ैब से किसी ने ऊंची आवाज़ से कहा—

وَيْحَكَ عُذْ بِاللّٰهِ ذِي الْجَلَالِ   وَالْمَجْدِ وَالنَّعْمَاءِ وَالْإِفْضَالِ

'तेरा भला हो, अल्लाह की पनाह मांग जो जलाल, बुज़ुर्गी, नेमत और फ़ज़्ल वाला है।'

وَاقْرَأْ آيَاتٍ مِنَ الْأَنْفَالِ   وَوَحِّدِ اللّٰهَ وَلَا تُبَالِ

'सूरः अंफ़ाल की आयतें पढ़ और अल्लाह को एक मान और किसी की परवाह न कर।'

यह सुनकर मैं बहुत ज़्यादा डर गया। जब मेरी जान में जान आई तो मैंने कहा—

يَا أَيُّهَا الْهَاتِفُ مَا تَقُوْلُ   أَرُشْدٌ عِنْدَكَ أَمْ تَضْلِيْلُ
بَيِّنْ لَنَا هُدِيْتَ مَا الْحَوِيْلُ

'ऐ ग़ैबी आवाज़ देने वाले! तू क्या कह रहा है? क्या तू सही रास्ता दिखाना चाहता है या गुमराह करना चाहता है? अल्लाह तुझे हिदायत दे, हमें साफ़-साफ़ बता कि क्या सूरत है?'

उसने जवाब में कहा—

إِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ذُو الْخَيْرَاتِ   بِيَثْرِبَ يَدْعُوْ إِلَى النَّجَاةِ
يَأْمُرُ بِالصَّوْمِ وَالصَّلَاةِ   وَيَزْجُرُ النَّاسَ عَنِ الْهَنَاتِ

'तमाम ख़ैरों को लेकर आने वाले अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यसरिब में नजात की दावत दे रहे हैं, वह नमाज़ और रोज़े का हुक्म देते हैं और शर वाले कामों से लोगों को रोकते हैं।'

मैंने अपनी सवारी आगे बढ़ाकर कहा—

أَرْشِدْنِيْ رُشْدًا هُدِيْتَ   لَا جُعْتَ وَلَا عُرِيْتَ
وَلَا بَرِحْتَ سَيِّدًا مُقِيْتًا   لَا تُؤْثِرَنِّيْ عَلَى الْخَيْرِ الَّذِيْ أُتِيْتَ

'मुझे सीधा रास्ता बता, अल्लाह तुझे हिदायत दे, तू कभी भूखा-नंगा न हो और तू हमेशा ताक़तवर सरदार बना रहे और जो ख़ैर तुझे मिली

है, उसका मुझ पर ज़्यादा बोझ न डाल।'

वह ये शेर पढ़ता हुआ मेरे पीछे आया—

صَاحَبَكَ اللّٰهُ وَسَلَّمَ نَفْسَكَا وَبَلَّغَ الْأَهْلَ وَأَدّٰى رَحْلَكَا
آمِنْ بِهِ أَفْلَحَ رَبِّى حَقَّكَا وَانْصُرْهُ أَعَزَّ رَبِّى نَصْرَكَا

'अल्लाह हमेशा तेरा साथी हो और तेरी जान को सही-सालिम रखे और तुझे घरवालों तक पहुंचाए और तेरी सवारी को भी पहुंचाए।'

'तू अल्लाह के रसूल पर ईमान ला। तेरा रब तेरे हक़ को बामुराद करे और उस रसूल की मदद कर। मेरा रब तेरी अच्छी तरह मदद करे।'

मैंने कहा, अल्लाह तुझ पर रहम करे, तू कौन है?

उसने कहा, मैं उसाल का बेटा अम्र हूं और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से नज्द के मुसलमान जिन्नात का अमीर हूं। तुम्हारे घर पहुंचने तक तुम्हारे ऊंटों की हिफ़ाज़त होगी। तुम्हें अब फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं है।

चुनांचे मैं जुमा के दिन मदीना दाख़िल हुआ। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे पास बाहर आए और कहा, अल्लाह तुझ पर रहम करे, अन्दर आ जाओ। हमें तुम्हारे मुसलमान होने की ख़बर पहुंच चुकी है।

मैंने कहा, मुझे अच्छी तरह वुज़ू करना नहीं आता। चुनांचे उन्होंने मुझे सिखाया, फिर मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मिंबर पर बयान करते हुए देखा। आप बिल्कुल चौदहवीं रात की चांद की तरह लग रहे थे।

आप फ़रमा रहे थे, जो मुसलमान वुज़ू करता है और फिर सोच-समझकर ध्यान से ऐसी नमाज़ पढ़ता है, जिसकी हर तरह हिफ़ाज़त करता है, वह जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगा।

फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझसे कहा, तुम अपनी इस हदीस पर गवाह लाओ, नहीं तो मैं तुम्हें सज़ा दूंगा। चुनांचे क़ुरैश के बुज़ुर्ग हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेरे

हक़ में गवाही दी, जिसे हज़रत उमर रज़ि० ने क़ुबूल किया।[1]

अबू नुऐम ने दलाइलुन्नुबूवः में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से इसी जैसी हदीस नक़ल की है, जिनमें शेर इस तरह हैं—

أَرْشِدْلِي رُشْدًا بِمَا هُدِيتَا   لَا جُعْتَ يَا هٰذَا وَلَا عَرِيتَا
وَلَا صَحِبْتَ صَاحِبًا مَقِيتَا   لَا يَثْوِيَنَّ الْخَيْرُ إِنْ ثَوَيْتَا

'मुझे सही रास्ता बता, अल्लाह तुझे हिदायत अता फ़रमाए, ऐ फ़्लाने ! तू न कभी भूखा हो और न कभी नंगा।'

'और न कभी ऐसे साथी के साथ रहे जिससे लोग नफ़रत करते हों और अगर तू मर जाए तो तेरी ख़ैर ख़त्म न हो, बल्कि हमेशा बाक़ी रह।'[2]

हज़रत हसन कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से फ़रमाया, मुझे कोई ऐसी हदीस सुनाओ जिससे हैरत भी हो और ख़ुशी भी हो, तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने कहा, मुझे हज़रत ख़ुरैम बिन फ़ातिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह वाक़िया सुनाया, फिर पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[3]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैंने जब भी सुना कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने किसी चीज़ के बारे में कहा हो कि मेरा गुमान यह है कि यह इस तरह है, तो वह उसी तरह होती, जिस तरह उनका गुमान होता।

चुनांचे एक बार वह बैठे हुए थे कि उनके पास से एक ख़ूबसूरत आदमी गुज़रा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, या तो मेरा अन्दाज़ा ग़लत है या यह आदमी अभी तक अपने जाहिलियत वाले दीन पर है या फिर यह जाहिलियत में काहिन था, इसे मेरे पास लाओ।

लोग उस आदमी को बुलाकर लाए, तो हज़रत उमर रज़ि० ने उससे

1. कंज़, भाग 7, पृ० 34,
2. दलाइलुन्नूबुवः, पृ० 30,
3. इसाबा, भाग 3, पृ० 353, हैसमी, भाग 8, पृ० 251, हाकिम, भाग 3, पृ० 621, बिदाया, भाग 2, पृ० 353

अपनी बात कही। उसने कहा, मैंने आज जैसा दिन कभी नहीं देखा कि किसी मुसलमान आदमी के मुंह पर ऐसी बात साफ़ कह दी गई हो। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैं तुम्हें ज़ोरदार ताकीद करता हूं कि तुम मुझे सारी बात बताओ।

उस आदमी ने कहा, मैं जाहिलियत में काहिन था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, जो जिन्न तुम्हारे पास आता था, उसका सबसे अजीब व ग़रीब क़िस्सा क्या है?

उसने कहा, एक दिन मैं बाज़ार में था, वह जिन्न मेरे पास घबराया हुआ आया और उसने ये शेर पढ़े—

أَلَمْ تَرَ الْجِنَّ وَإِبْلَاسَهَا   وَيَأْسَهَا مِنْ بَعْدِ إِنْكَاسِهَا
وَلُحُوقَهَا بِالْقِلَاصِ وَأَحْلَاسِهَا

'क्या तुमने देखा नहीं कि तमाम जिन्नात हैरान व परेशान हैं और (पहले तो आसमान पर चढ़ जाते थे और) अब आसमान से नाउम्मीद होकर वापस आ रहे हैं, बल्कि इस्लाम में दाख़िल होकर जवान ऊंटनियों और उन पर कजावे के नीचे, बिछाई जाने वाली चादरों वाले अरबों के साथ मिल रहे हैं।'

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, इसने सच कहा है, मैं भी एक दिन कुफ़्फ़ार के माबूदों के पास सोया हुआ था कि एक आदमी एक बछड़ा लाया और उसने उसे ज़िब्ह किया। फिर किसी चीख़ने वाले ने ज़ोर से चीख़ कर कहा, मैंने इससे ज़्यादा सख़्त चीख़ कभी नहीं सुनी थी।

उसने कहा, ऐ जलीह! (यह किसी आदमी का नाम है) यह कामियाबी वाला काम है। एक फ़सीह आदमी—

'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कह रहा है।

सब लोग घबरा कर उठ गए। मैंने कहा, मैं तो यहां ही रहूंगा। जब पता चल जाएगा कि इस आवाज़ के परदे के पीछे क्या है, जब यहां से जाऊंगा। उसने फिर पुकार कर कहा, ऐ जलीह! यह कामियाबी वाला

काम है। एक फ़सीह आदमी—

لا إله إلا الله

'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कह रहा है।

फिर मैं वहां से उठा, कुछ दिनों बाद ही हमें बताया गया कि यह नबी हैं।

यह रिवायत सिर्फ़ बुखारी में हैं और यह काहिन आदमी हज़रत सवाद बिन क़ारिब रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन काब क़ुरज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक दिन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु बैठे हुए थे कि इतने में उनके पास से एक आदमी गुज़रा। किसी ने पूछा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! क्या आप इस गुज़रने वाले को जानते हैं?

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा, यह कौन है? लोगों ने कहा, यह सवाद बिन क़ारिब रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, जिन्हें उनके पास आने वाले जिन्न ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़ाहिर होने की ख़बर दी थी।

चुनांचे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें पैग़ाम देकर बुलाया और फ़रमाया, क्या आप ही सवाद बिन क़ारिब हैं? उन्होंने कहा, जी हां। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, क्या तुम जाहिलियत के ज़माने में कहानत का काम करते थे? इस पर हज़रत सवाद रज़ि० को ग़ुस्सा आ गया और कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! जब से मैं मुसलमान हुआ हूं, कभी किसी ने मेरे मुंह पर ऐसी बात नहीं कही है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, सुब्हानल्लाह! हम तो जाहिलियत में शिर्क पर थे और यह शिर्क तुम्हारी कहानत से ज़्यादा बुरा था। तुम्हारे ताबे (मातहत) जिन्न ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़ाहिर होने की जो ख़बर दी थी, वह मुझे बताओ।

उन्होंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! जी हां, एक रात मैं लेटा हुआ

1 बुख़ारी,

था और बेदारी और नींद के दर्मियान की हालत में था। मेरा जिन्न मेरे पास आया और मुझे पांव मारकर कहा, ऐ सवाद बिन क़ारिब ! उठ और मेरी बात सुन और अगर तेरे अन्दर अक़्ल है तो तू समझ ले कि (क़ुरैश की शाख़) लुवई बिन ग़ालिब में एक रसूल आया है, जो अल्लाह की और उसकी इबादत की दावत देता है, फिर यह शेर पढ़ने लगा—

عَجِبْتُ لِلْجِنِّ وَتَطْلَابِهَا   وَشَدِّهَا الْعِيْسَ بِأَقْتَابِهَا
تَهْوِي إِلَى مَكَّةَ تَبْغِي الْهُدَى   مَا صَادِقُ الْجِنِّ كَكَذَّابِهَا
فَارْحَلْ إِلَى الصَّفْوَةِ مِنْ هَاشِمٍ   لَيْسَ قُدَامَاهَا كَأَذْنَابِهَا

'मुझे इस बात पर ताज्जुब है कि जिन्नात हक़ को तलाश कर रहे हैं और सफ़ेद ऊंटों पर कजावे बांधकर हर तरफ़ का सफ़र कर रहे हैं।'

'ये सब हिदायत हासिल करना चाहते हैं, इसलिए मक्का जा रहे हैं। सच्चा जिन्न और झूठा जिन्न दोनों एक जैसे नहीं हो सकते।'

'इसलिए तुम सफ़र करके उस हस्ती के पास जाओ जो बनू हाशिम में चुने हुए और उम्दा हैं और हिदायत में पहल करने वाला देर करने वाले की तरह नहीं होगा, बल्कि उससे अफ़ज़ल होगा।'

मैंने उस जिन्न से कहा, मुझे सोने दो। मुझे शाम से बहुत नींद आ रही है। अगली रात वह मेरे पास फिर आया और उसने फिर पांव मारकर कहा, ऐ सवाद बिन क़ारिब ! उठ और मेरी बात सुन और अगर तेरे अन्दर अक़्ल है तो समझ ले कि लुवई बिन ग़ालिब में एक रसूल आया है जो अल्लाह की और उसकी इबादत की दावत दे रहा है, फिर वह ये शेर पढ़ने लगा—

عَجِبْتُ لِلْجِنِّ وَتَخْيَارِهَا   وَشَدِّهَا الْعِيْسَ بِأَكْوَارِهَا
تَهْوِي إِلَى مَكَّةَ تَبْغِي الْهُدَى   مَا مُؤْمِنُو الْجِنِّ كَكُفَّارِهَا
فَارْحَلْ إِلَى الصَّفْوَةِ مِنْ هَاشِمٍ   بَيْنَ رَوَابِيْهَا وَأَحْجَارِهَا

'मुझे इस बात पर ताज्जुब है कि जिन्नात हैरान-परेशान हैं और सफ़ेद ऊंटों पर कजावे बांधकर हर तरफ़ का सफ़र कर रहे हैं।'

'ये सब हिदायत हासिल करना चाहते हैं, इसलिए मक्का जा रहे हैं। मोमिन जिन्न काफ़िर जिन्न जैसे नहीं हो सकते।'

'इसलिए तुम सफ़र करके उस हस्ती के पास जाओ जो बनी हाशिम में चुने हुए बर्गज़ीदा हैं और मक्का के टीलों और पत्थरों के दर्मियान रहते हैं।'

मैंने उससे कहा, मुझे सोने दो, मुझे शाम से बहुत नींद आ रही है। तीसरी रात वह फिर मेरे पास आया और फिर पांव मारकर कहा, ऐ सवाद बिन क़ारिब ! उठ और मेरी बात सुन और अगर तेरे अन्दर अक़्ल है तो समझ ले कि लुवई बिन ग़ालिब में एक रसूल आया है जो अल्लाह की ओर उसकी इबादत की दावत दे रहा है, फिर वह शेर पढ़ने लगा—

عَجِبْتُ لِلْجِنِّ وَتَجْسَاسِهَا وَشَدِّهَا الْعِيْسَ بِأَحْلَاسِهَا
تَهْوِىْ إِلَىٰ مَكَّةَ تَبْغِى الْهُدٰى مَا خَيِّرُ الْجِنِّ كَأَنْجَاسِهَا
فَارْحَلْ إِلَى الصَّفْوَةِ مِنْ هَاشِمٍ وَاسْمُ بِعَيْنَيْكَ إِلَىٰ رَأْسِهَا

'मुझे इस बात पर ताज्जुब है कि जिन्नात हक़ को तलाश कर रहे हैं और सफ़ेद ऊंटों पर कजावे के नीचे टाट रखकर हर तरफ़ का सफ़र कर रहे हैं।'

'ये सब हिदायत हासिल करना चाहते हैं, इसलिए मक्का जा रहे हैं और ख़ैर वाला जिन्न नापाक जिन्न की तरह नहीं हो सकता।'

'इसलिए तुम सफ़र करके उस हस्ती के पास जाओ जो बनी हाशिम में बुज़ुर्ग हैं और आंखें ऊंची करके मक्का की चोटी की तरफ़ देखो।'

चुनांचे मैं उठा और मैंने कहा, अल्लाह ने मेरे दिल को अच्छी तरह जांच लिया है, यानी जिन्न की बात सही मालूम होती है और मैं ऊंटनी पर सवार होकर चल दिया, फिर मैं मदीना आया तो वहां हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सहाबा रज़ि० में तशरीफ़ रखते थे।

मैंने क़रीब जाकर अर्ज़ किया, मेरी दरख़्वास्त भी सुन लें। आपने फ़रमाया, कहो, मैंने ये शेर पढ़े—

أَتَانِي نَجِيِّي بَعْدَ هَدْءٍ وَرَقْدَةٍ ... وَلَمْ يَكُ فِيمَا قَدْ بَلَوْتُ بِكَاذِبِ
ثَلَاثَ لَيَالٍ قَوْلُهُ كُلَّ لَيْلَةٍ ... أَتَاكَ رَسُولٌ مِنْ لُؤَيِّ بْنِ غَالِبِ
فَشَمَّرْتُ عَنْ ذَيْلِ الْإِزَارِ وَوَسَّطَتْ ... بِيَ الذِّعْلِبُ الْوَجْنَاءُ غُبْرَ السَّبَاسِبِ
فَأَشْهَدُ أَنَّ اللّٰهَ لَا شَيْءَ غَيْرُهُ ... وَأَنَّكَ مَأْمُونٌ عَلَى كُلِّ غَائِبِ
وَأَنَّكَ أَدْنَى الْمُرْسَلِينَ وَسِيلَةً ... إِلَى اللّٰهِ يَا ابْنَ الْأَكْرَمِينَ الْأَطَايِبِ
فَمُرْنَا بِمَا يَأْتِيكَ يَا خَيْرَ مَنْ مَشَى ... وَإِنْ كَانَ فِيمَا جَاءَ شَيْبُ الذَّوَائِبِ
وَكُنْ لِي شَفِيعًا يَوْمَ لَا ذُو شَفَاعَةٍ ... سِوَاكَ بِمُغْنٍ عَنْ سَوَادِ بْنِ قَارِبِ

'शुरू रात के कुछ हिससे के गुज़र जाने के बाद और मेरे कुछ सो लेने के बाद मुझसे कानाफूसी करने वाला जिन्न',

'मेरे पास तीन रात आता रहा और जहां तक मैंने उसे आज़माया, वह झूठा नहीं था और हर रात मुझसे यही कहता रहा कि तुम्हारे पास एक रसूल आया है जो क़बीला लुवई बिन ग़ालिब में से है।'

'इस पर मैंने सफ़र के लिए अपनी लुंगी चढ़ा ली और (मैंने सफ़र शुरू कर दिया और) तेज़ रफ़्तार बड़े रुख़्सारों वाली ऊंटनी मुझे लेकर हमवार और फैले हुए धूल भरे मैदानों में चलती रही।'

'मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई चीज़ (इबादत के लायक़) नहीं और आप ग़ैब की हर बात के बारे में भरोसे लायक़ हैं।'

'और ऐ एहतराम के क़ाबिल और पाकीज़ा लोगों के बेटे! आप अल्लाह तक पहुंचने के लिए तमाम रसूलों में सबसे ज़्यादा क़रीबी वसीला हैं।'

'और ऐ रू-ए-ज़मीन पर चलने वालों में सबसे अच्छे! आप हमें उन तमाम आमाल का हुक्म दें जो आपके पास अल्लाह की तरफ़ से आ रहे हैं।' हम उन आमाल को ज़रूर करेंगे, चाहे उन आमाल की मेहनत में हमारे बाल सफ़ेद हो जाएं।'

'और आप उस दिन मेरे सिफ़ारिशी बन जाएं जिस दिन आपके अलावा और कोई सिफ़ारिशी सवाद बिन क़ारिब के किसी काम नहीं आ सकता।'

मेरे शेर सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और तमाम

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम बहुत ज़्यादा ख़ुश हुए। यहां तक कि उन सबके चेहरों में ख़ुशी झलकती नज़र आने लगी।

हज़रत मुहम्मद बिन काब कुरज़ी रिवायत करने वाले कहते हैं, यह क़िस्सा सुनते ही हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उठकर हज़रत सवाद रज़ि० से चिमट गए और फ़रमाया, मेरी दिली ख़्वाहिश थी कि मैं तुमसे यह सारा क़िस्सा सुनूं। क्या अब भी वह जिन्न तुम्हारे पास आता है?

हज़रत सवाद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, जब से मैंने क़ुरआन पढ़ना शुरू किया है, वह नहीं आया और उस जिन्न की जगह अल्लाह की किताब अच्छा बदल है।

फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हम एक दिन क़ुरैश के एक क़बीले में थे जिनको आले ज़रीह कहा जाता है। उन्होंने एक बछड़ा ज़िब्ह किया और क़साई उसका गोश्त बना रहा था कि इतने में हम सबने बछड़े के पेट में से आवाज़ सुनी और बोलने वाली कोई चीज़ हमें नज़र नहीं आ रही थी। वह यह कह रहा था—

'ऐ आले ज़रीह! यह कामियाबी वाला काम है। एक पुकारने वाला पुकार कर फ़सीह ज़ुबान में कह रहा है कि वह इस बात की गवाही देता है कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं।'[1]

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है कि हज़रत सवाद बिन क़ारिब रज़ि० ने फ़रमाया, मैं हिन्दुस्तान में ठहरा हुआ था तो एक रात मेरा ताबे जिन्न मेरे पास आया। फिर सारे क़िस्से सुनाने के बाद, आख़िरी शेर सुनाने के बाद यह है कि शेर सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इतने हंसे कि आपके मुबारक दांत नज़र आने लगे और आपने फ़रमाया, ऐ सवाद! तुम कामियाब हो गए।

हज़रत मुहम्मद बिन काब कुरज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि की दूसरी रिवायत में है कि हज़रत सवाद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जिन्न की बातों से मेरे दिल में इस्लाम की मुहब्बत बैठ गई और इस्लाम का

1. बिदाया, भाग 2, पृ० 332,

शौक़ पैदा हो गया। सुबह को मैंने ऊंटनी पर कजावा कसा और मक्का की तरफ़ चल पड़ा। रास्ते में लोगों ने बताया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो हिजरत करके मदीना जा चुके हैं।

चुनांचे मैं मदीना चला गया। मैंने वहां जाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में पूछा, लोगों ने बताया कि हुज़ूर सल्ल० मस्जिद में हैं। मैं मस्जिद गया और ऊंटनी के पांवों को रस्सी बांधकर अन्दर गया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ रखते थे और लोग आपके आस-पास थे।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मेरी दरख़्वास्त सुन लें। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, हुज़ूर सल्ल० के क़रीब आ जाओ। मैं आगे बढ़ता रहा, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० के सामने पहुंच गया, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, कहो, और तुम्हारा जिन्न, जो तुम्हारे पास आता रहा, उसके बारे में बताओ।[1]

हज़रत अब्बास बिन मिरदास सुलमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मेरे इस्लाम लाने की शुरुआत इस तरह हुई कि जब मेरे बाप मिरदास के मरने का वक़्त क़रीब आया, तो उन्होंने मुझे ज़िमार नामी अपने बुत के ख़्याल रखने की वसीयत की। मैंने उस बुत को एक कमरे में रख लिया और मैं हर दिन उसके पास जाने लगा।

जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़ुहूर हुआ, तो एक बार मैंने आधी रात को एक आवाज़ सुनी जिससे मैं डर गया और छलांग लगाकर उठा और मदद के लिए ज़िमार के पास गया तो मैंने देखा कि उसी के पेट में से आवाज़ आ रही है और ज़िमार ये शेर पढ़ रहा है—

قُلْ لِلْقَبِيْلَةِ مِنْ سُلَيْمٍ كُلِّهَا   هَلَكَ الْأَنِيْسُ وَعَاشَ أَهْلُ الْمَسْجِدِ
أَوْدَى ضِمَارٌ وَكَانَ يُعْبَدُ مُدَّةً   قَبْلَ الْكِتَابِ إِلَى النَّبِيِّ مُحَمَّدِ
إِنَّ الَّذِي وَرِثَ النُّبُوَّةَ وَالْهُدَى   بَعْدَ ابْنِ مَرْيَمَ مِنْ قُرَيْشٍ مُهْتَدِ

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 208, मज्मा, भाग 8, पृ० 248, इसाबा, भाग 2, पृ० 96,

'सारे क़बीला सुलैम से कह दो कि बुत और उनके पूजने वाले मुर्दाबाद और मस्जिद वाले ज़िंदाबाद।'

'ज़मार बुत हलाक हो गया और नबी करीम हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास किताब के आने से पहले उसकी इबादत की जाती थी।'

'और क़बीला कुरैश की जो हस्ती (हज़रत ईसा) बिन मरयम (अलैहिस्सलाम) के बाद नुबूवत और हिदायत की वारिस हुई है, वह हिदायत पाई हुई है।'

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने यह सारी बात लोगों से छिपाकर रखी और किसी को न बताई। जब कुफ़्फ़ार अहज़ाब की लड़ाई से वापस आए तो एक बार मैं ज़ाते इर्क़ के पास अक़ीक़ नामी जगह के एक किनारे पर अपने ऊंटों में सोया हुआ था। मैंने एकदम आवाज़ सुनी, (जिससे मेरी आंख खुल गई) और मैंने देखा कि एक आदमी शुतुरमुर्ग़ के पर के ऊपर बैठा हुआ कह रहा है—

'वह नूर हासिल कर लो जो मंगल की रात को अज़्बा नामी ऊंटनी वाले पर बनू अनक़ा के भाइयों के इलाक़े में यानी मदीना में उतरा है।'

उसके जवाब में उसकी बाईं जानिब से एक ग़ैबी आवाज़ देने वाले ने ये शेर पढ़े—

بَشِّرِ الْجِنَّ وَإِبْلَاسَهَا   أَنْ وَضَعَتِ الْمَطِيُّ أَحْلَاسَهَا
وَكَلَأَتِ السَّمَاءَ أَحْرَاسُهَا

'जिन्नात को ख़बर दे दो कि जिन्नात इस वजह से हैरान व परेशान हैं कि ऊंटनियों ने अपने पालान रख दिए हैं।'

'और आसमान के चौकीदारों ने आसमान की हिफ़ाज़त शुरू कर दी है।'

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, मैं ख़ौफ़ खाकर एकदम उठा और समझ गया कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (अल्लाह के भेजे हुए) रसूल हैं। चुनांचे मैं घोड़े पर सवार हुआ और बहुत तेज़ी से सफ़र किया, यहां तक कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम की ख़िदमत में पहुंचकर आपसे बैअत हो गया। फिर वापस आकर मैंने ज़िमार को आग से जला दिया।

मैं दोबारा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और ये शेर आपको सुनाए—

لَعَمْرُكَ إِنِّيْ يَوْمَ أَجْعَلُ جَاهِلًا   ضِمَارًا لِرَبِّ الْعَالَمِيْنَ مُشَارِكَا
وَتَرْكِيْ رَسُوْلَ اللّٰهِ وَالْأَوْسُ حَوْلَهُ   أُولٰئِكَ أَنْصَارٌ لَهُ مَا أُولَائِكَا
كَتَارِكِ سَهْلِ الْأَرْضِ وَالْحَزْنَ يَبْتَغِيْ   لِيَسْلُكَ فِيْ وَعْثِ الْأُمُوْرِ الْمَسَالِكَا
فَآمَنْتُ بِاللّٰهِ الَّذِيْ أَنَا عَبْدُهُ   وَخَالَفْتُ مَنْ أَمْسٰى يُرِيْدُ الْمَهَالِكَا
وَوَجَّهْتُ وَجْهِيْ نَحْوَ مَكَّةَ قَاصِدًا   أُبَايِعُ نَبِيَّ الْأَكْرَمِيْنَ الْمُبَارَكَا
نَبِيٌّ أَتَانَا بَعْدَ عِيْسٰى بِنَاطِقٍ   مِنَ الْحَقِّ فِيْهِ الْفَصْلُ فِيْهِ كَذٰلِكَا
أَمِيْنٌ عَلَى الْفُرْقَانِ أَوَّلُ شَافِعٍ   وَأَوَّلُ مَبْعُوْثٍ يُجِيْبُ الْمَلَائِكَا
تَلَافٰى عُرَى الْإِسْلَامِ بَعْدَ انْتِقَاضِهَا   فَأَحْكَمَهَا حَتّٰى أَقَامَ الْمَنَاسِكَا
عَنَيْتُكَ يَا خَيْرَ الْبَرِيَّةِ كُلِّهَا   تَوَسَّطْتَ فِي الْفَرْعَيْنِ وَالْمَجْدِ مَالِكَا
وَأَنْتَ الْمُصَفّٰى مِنْ قُرَيْشٍ إِذَا سَمَتْ   عَلٰى ضُمْرِهَا تَبْقَى الْقُرُوْنُ الْمُبَارِكَا
إِذَا انْتُسِبَ الْحَيَّانِ كَعْبٌ وَمَالِكٌ   وَجَدْنَاكَ مَحْضًا وَالنِّسَاءَ الْعَوَارِكَا

'आपकी ज़िंदगी की क़सम! जब मैं जाहिल था तो मैंने ज़िमार बुत को दुनियाओं के रब का शरीक बना रखा था',

'और मैंने अल्लाह के रसूल को छोड़ा हुआ था और क़बीला औस हर वक़्त आपके चारों तरफ़ जां-निसार था। ये सब आपके मददगार बने हुए थे और ये क्या ही अच्छे लोग हैं।'

'और मेरी मिसाल उस आदमी जैसी थी जो नर्म ज़मीन को छोड़कर सख़्त ज़मीन को तलाश करे ताकि मुश्किल कामों के रास्ते पर चले।'

'फिर मैं उस अल्लाह पर ईमान ले आया जिसका मैं बन्दा हूं और मैंने उस आदमी की मुख़ालफ़त की जो (ईमान छोड़कर) हलाकत के रास्तों पर चलना चाहता है।'

'और मैंने करीम लोगों के मुबारक नबी से बैअत होने के इरादे से

अपना रुख़ मक्का की ओर कर लिया।'

'ईसा अलैहिस्सलाम के बाद हमारे पास ऐसे नबी आए हैं जो बोलता हुआ हक़ यानी क़ुरआन लेकर आए हैं और उसमें ऐसी बातें हैं जिनसे हक़ और बातिल जुदा-जुदा हो जाता है और वाक़ई उसमें ऐसी बातें हैं।'

'हुज़ूर क़ुरआन के अमीन हैं (और क़ियामत के दिन) सबसे पहले सिफ़ारिश करेंगे और सबसे पहले उठाए जाएंगे और फ़रिश्तों को जवाब देंगे।'

'इस्लाम के दस्ते टूट चुके थे। आपने उन सबको जोड़ दिया और उन्हें ख़ूब मज़बूत किया और अल्लाह के सारे अह्काम ज़िंदा कर दिये।'

'ऐ सारी मख़्लूक़ में सबसे बेहतरीन शख़्स ! आप ही मेरे मक़्सूद हैं, आप अगलों, पिछलों में आला नसब वाले हैं और क़बीला मालिक में बुज़ुर्गी में सबसे आगे हैं।'

'जब क़ुरैश भूख और कमज़ोरी के बावजूद बुलन्दियां हासिल कर रहे हैं तो आप उनमें से सबसे ज़्यादा साफ़-सुथरे और पाकीज़ा हैं और तमाम ज़मानों में बाबरकत रहेंगे।'

'जब क़बीला काब और क़बीला मालिक अपना-अपना नसब बयान करेंगे तो हम आपको ख़ालिस नसब वाला और औरतों को गन्दा पाएंगे।'[1]

और ख़राइती की रिवायत में पहले तीन शेर के बाद यह है कि हज़रत अब्बास बिन मिरदास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ख़ौफ़ज़दा होकर निकला और अपनी क़ौम के पास आया और उन्हें सारा क़िस्सा सुनाया और अपनी क़ौम बनू हारिसा के तीन सौ आदमी लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में मदीना गया।

वहां जाकर मस्जिद में दाख़िल हुए। जब हुज़ूर सल्ल० ने मुझे देखा, तो फ़रमाया, ऐ अब्बास रज़ि० ! तुम्हारे इस्लाम लाने की क्या शक्ल हुई? मैंने आपको सारा क़िस्सा सुनाया, जिससे आप बहुत ख़ुश हुए और यों मैं और मेरी क़ौम वाले सब मुसलमान हो गए।

1. दलाइल, पृ० 34, बिदाया, भाग 2, पृ० 341, 342, हैसमी, भाग 8, पृ० 247,

हज़रत ज़ाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी बनाए जाने की ख़बर मदीना में सबसे पहले इस तरह मिली कि मदीने की एक औरत का एक जिन्न ताबे था। एक दिन वह एक सफ़ेद परिन्दे की शक्ल में आया और उनकी दीवार पर बैठ गया।

उस औरत ने उससे कहा, तुम नीचे क्यों नहीं आते, ताकि हम आपस में बातें करें और एक-दूसरे को हालात बताएं। उसने कहा, मक्के में एक नबी भेजे गए हैं, जिन्होंने ज़िना को हराम क़रार दिया है और हमारा चैन-सुकून छीन लिया है। (पहले हम आसमान पर जाकर वहां की ख़बरें ले आते थे, अब वहां नहीं जा सकते, इसलिए परेशान हैं।)[1]

हज़रत अली बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में मदीना में सबसे पहली ख़बर इस तरह आई कि एक औरत का नाम फ़ातमा था। उसके पास एक जिन्न आया करता था।

चुनांचे एक दिन वह जिन्न आया और दीवार पर खड़ा हो गया। उस औरत ने कहा, तुम नीचे क्यों नहीं आते? उसने कहा, नहीं, अब वह रसूल आ गए हैं, जिन्होंने ज़िना को हराम कर दिया है।[2]

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के भेजे जाने से पहले हम एक तिजारती क़ाफ़िले में शाम मुल्क गए। जब हम शाम मुल्ककी हदो में दाख़िल हो गए, तो वहां एक नजूमी औरत सामने आई और उसने कहा कि मेरा (जिन्न) साथी मेरे दरवाज़े पर आकर खड़ा हो गया।

मैंने कहा, क्या तू अन्दर नहीं आएगा? उसने कहा, अब इसकी कोई शक्ल नहीं है, क्योंकि अहमद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़ुहूर हो गया है और ऐसा हुक्म आ गया है जो बस में नहीं है।

---

1. दलाइल, पृ० 29, हैसमी, भाग 8, पृ० 243, इब्ने साद, भाग 1, पृ० 190
2. बिदाया, भाग 2, पृ० 328,

मैं वहां से जब मक्का वापस आया तो देखा कि मक्का में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़ुहूर हो चुका है और वह अल्लाह की दावत दे रहे हैं।[1]

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बड़े मियां ने जाहिलियत का ज़माना पाया था, उन्हें इब्ने ईसा कहा जाता था। रुअस की लड़ाई में हम और वह इकट्ठे थे। (रुअस शाम देश का एक जज़ीरा (द्वीप) है।) उन्होंने मुझे अपना वह वाक़िया सुनाया कि मैं अपने ख़ानदान की एक गाय हांके जा रहा था कि इतने में मैंने उसके पेट में से यह आवाज़ सुनी, ऐ आले ज़रीह! एक साफ़ और वाज़ेह बात है कि एक आदमी ऊंची आवाज़ से—

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

'ला इला-ह इल्लल्लाह' कह रहा है, वह बड़े मियां कहते हैं। फिर हम मक्का आए तो हमने देखाकि वहां नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़हूर हो चुका है।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक काफ़िर जिसने मक्का में अबू क़ुबैस पहाड़ पर आवाज़ दी, वह नज़र नहीं आ रहा था। उसने ये शेर कहे—

قَبَّحَ اللّٰهُ رَأْيَ كَعْبِ بْنِ فِهْرٍ ... مَا أَرَقَّ الْعُقُولَ وَالْأَحْلَامِ
دِيْنُهَا أَنَّهَا يُعَنِّفُ فِيْهَا ... دِيْنَ آبَائِهَا الْحُمَاةِ الْكِرَامِ
خَالَفَ الْجِنَّ جِنُّ بُصْرَى عَلَيْكُمْ ... وَرِجَالُ النَّخِيْلِ وَالْآطَامِ
هَلْ كَرِيْمٌ لَكُمْ لَهُ نَفْسُ حُرٍّ ... مَاجِدُ الْوَالِدَيْنِ وَالْأَعْمَامِ
يُوْشِكُ الْخَيْلُ أَنْ تَرَوْهَا تَهَادَى ... تَقْتُلُ الْقَوْمَ فِيْ بِلَادِ التِّهَامِ
ضَارِبٌ ضَرْبَةً تَكُوْنُ نَكَالًا ... وَرَوَاحًا مِنْ كُرْبَةٍ وَاغْتِمَامِ

'काब बिन फ़ह यानी क़ुरैश की राय को अल्लाह बुरा करे। उनकी

1. बिदाया, भाग 2, पृ० 338, दलाइल, पृ० 29,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 243,

अक़्ल और समझ किस क़दर कमज़ोर है।'

'(क़ुरैश में से जो मुसलमान हो चुके हैं) उनका दीन यह है कि वे अपनी हिफ़ाज़त करने बुज़ुर्ग बाप-दादों के दीन यानी बुतपरस्ती को बुरा-भला कहते हैं।'

'बुसरा के जिन्नात ने और खजूर के पेड़ों और क़िलों के इलाक़े यानी मदीना के रहने वाले अंसार ने (इस्लाम लाकर और उसे फैलाने की मेहनत करके) आम जिन्नात की मुख़ालफ़त की है और इस तरह तुम्हें नुक़्सान पहुंचाया है।'

'क्या तुममें ऐसा अख़्लाक़ वाला आदमी नहीं है जो इंतिहाई शरीफ़ हो और जिसके मां-बाप और सारे चचा बुज़ुर्गी वाले हों?'

'बहुत जल्द तुम घोड़ों वाली फ़ौज देखोगे जो एक दूसरे से आगे बढ़ रही होगी और तिहामा के इलाक़े में (मुसलमानों की) उस क़ौम को क़त्ल करेंगे।'

'और मुसलमानों पर तलवारों से एसी चोट मारेंगे जिसमें उनके लिए सबक़ देने वाली सज़ा होगी और तुम्हारे लिए बेचैनी और ग़म से राहत होगी। (यह काफ़िर जिन्न मुश्रिकों को झूठी ख़ुशख़बरी दे रहा है।)'

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, यह बात सारे मक्का में फैल गई और मुश्रिक एक दूसरे को ये शेर सुनाने लगे और ईमान वालों को और ज़्यादा तक्लीफ़ देने और मार डालने के इरादे करने लगे। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, यह एक शैतान था, जिसने लोगों से बुतों के बारे में बात की है, उसे मिसअर कहा जाता है। अल्लाह उसे रुसवा करेंगे।

चुनांचे तीन दिन गुज़रने के बाद उसी पहाड़ पर एक ग़ैबी आवाज़ देने वाले ने ये शेर पढ़े—

نَحْنُ قَتَلْنَا مِسْعَرًا   لَمَّا طَغَىٰ وَاسْتَكْبَرَا

وَسَفَّهَ الْحَقَّ وَسَنَّ الْمُنْكَرَا   قَنَّعْتُهُ سَيْفًا جَرُوفًا مُبْتِرَا

بِشَتْمِهِ نَبِيَّنَا الْمُطَهَّرَا

'हमने मिसअर को क़त्ल कर दिया जब उसने सरकशी और तकब्बुर किया।'

'और हक़ को बेवक़ूफ़ी की चीज़ बताया और मुन्कर चीज़ को चलाया। मैंने ऐसी तलवार से उसके सर पर वार किया जो काम पूरा कर देने वाली और टुकड़े-टुकड़े करने वाली है।'

'यह सब कुछ इस वजह से किया कि उसने हमारे पाक नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में बुरे कलिमे इस्तेमाल किए थे।'

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, यह एक मज़बूत जिस्म वाला जिन्न था, जिसे सुमजह कहा जाता था। मैंने उसका नाम अब्दुल्लाह रखा था। यह मुझ पर ईमान लाया था। उसने मुझे बताया है कि वह मिसअर को तीन दिन से खोज रहा था।

इस पर हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह उसे भला बदला दे।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन महमूद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मुझे यह ख़बर पहुंची है कि क़बीला ख़सअम के कुछ आदमी कहते थे कि जिन बातों की वजह से हमें इस्लाम की दावत मिली, उनमें से एक बात यह है कि हम बुतपरस्त क़ौम थे। एक दिन हम लोग अपने एक बुत के पास थे कि कुछ लोग उस बुत के पास अपना एक फ़ैसला लेकर आए। उन्हें उम्मीद थी कि जिस बात में हमारा इख़्तिलाफ़ हो रहा है, उसका हल हमें इस बुत से मिल जाएगा कि इतने में एक ग़ैबी आवाज़ देने वाले ने उन्हें आवाज़ देकर कहा—

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ذَوُو الْأَجْسَامِ   مِنْ بَيْنِ أَشْيَاخٍ إِلَى غُلَامٍ
مَا أَنْتُمْ وَطَائِشُ الْأَحْلَامِ   وَمُسْنِدُ الْحُكْمِ إِلَى الْأَصْنَامِ
أَكُلُّكُمْ فِي حَيْرَةٍ نِيَامِ   أَمْ لَا تَرَوْنَ مَا الَّذِي أَمَامِي
مِنْ سَاطِعٍ يَجْلُو دُجَى الظَّلَامِ   قَدْ لَاحَ لِلنَّاظِرِ مِنْ تِهَامِ
ذَاكَ نَبِيٌّ سَيِّدُ الْأَنَامِ   قَدْ جَاءَ بَعْدَ الْكُفْرِ بِالْإِسْلَامِ

1. दलाइल, पृ० 30, बिदाया, भाग 2, पृ० 348, इसाबा, भाग 2, पृ० 78

أَكْرَمَهُ الرَّحْمَانُ مِنْ إِمَامِ — وَمِنْ رَسُولٍ صَادِقِ الْكَلَامِ
أَعْدَلُ ذِي حُكْمٍ مِنَ الْأَحْكَامِ — يَأْمُرُ بِالصَّلَاةِ وَالصِّيَامِ
وَالْبِرِّ وَالصِّلَاتِ لِلْأَرْحَامِ — وَيَزْجُرُ النَّاسَ عَنِ الْآثَامِ
وَالرِّجْسِ وَالْأَوْثَانِ وَالْحَرَامِ — مِنْ هَاشِمٍ فِي ذِرْوَةِ السَّنَامِ
مُسْتَعْلِنًا فِي الْبَلَدِ الْحَرَامِ

'ऐ जिस्म वाले इंसानो ! ऐ बूढ़े-बच्चे, छोटे-बड़े तमाम इंसानो !'

'तुम बिल्कुल बे-अक़्ल हो और अपने फ़ैसले तुमने बुतों के सुपुर्द कर रखे हैं।'

'क्या तुम सब हैरत में सोए हुए हो ? क्या तुम्हें वह चीज़ नज़र नहीं आ रही है जो मेरे सामने है ?'

'वह एक रोशन नूर है, जो अंधेरे की अंधेरी को भी दूर कर रहा है। वह नूर देखने वालों के लिए तिहामा के पहाड़ों से ज़ाहिर हो रहा है।'

'यह वह नबी है जो तमाम मख़्लूक़ के सरदार हैं और कुफ़्र के बाद इस्लाम लेकर आए हैं।'

'रहमान ने इनका ख़ास इक्राम फ़रमाया है। यह इमाम, रसूल, सच्ची बात-चीत वाले',

'और सबसे ज़्यादा इंसाफ़ वाला फ़ैसला करने वाले हैं। यह नमाज़, रोज़े का हुक्म देते हैं,

'और नेकी और सिलारहमी का भी और लोगों को गुनाहों से रोकते हैं।'

'पलीदी, बुतों और हराम कामों से भी रोकते हैं और वह क़बीला बनू हाशिम में से हैं और सबसे आला नसब वाले हैं।'

'और अल्लाह के क़ाबिले एहतराम शहर मक्का में वह ये सारे काम एलानिया कर रहे हैं।'

जब हमने यह सुना तो हम उस बुत के पास से उठकर आ गए और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर

मुसलमान हो गए।[1]

हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नबी बनाए गए, उस वक़्त मैं शाम में था। मैं अपनी किसी ज़रूरत से सफ़र में निकला तो मुझे रास्ते में रात आ गई। मैंने कहा, मैं आज रात इस घाटी के बड़े सरदार (जिन्न) की पनाह में हूं। (जाहिलियत के ज़माने में अरबों का ख़्याल था कि हर जंगल और हर घाटी में किसी जिन्न की हुकूमत होती है।)

जब मैं बिस्तर पर लेटा तो एक मुनादी ने आवाज़ लगाई, वह मुझे नज़र नहीं आ रहा था। उसने कहा, तुम अल्लाह की पनाह मांगो, क्योंकि जिन्नात अल्लाह के मुक़ाबले में किसी को पनाह नहीं दे सकते। मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! तुम क्या कह रहे हो? उसने कहा, अनपढ़ों में अल्लाह की तरफ़ से आने वाले रसूल ज़ाहिर हो चुके हैं। हमने (मक्का में) जहून नामी जगह पर उनके पीछे नमाज़ पढ़ी है और हम मुसलमान हो गए हैं और हमने उनकी पैरवी अख़्तियार कर ली है और अब जिन्नात से तमाम मक्र व फ़रेब ख़त्म हो गए हैं। अब (वह आसमान पर जाना चाहते हैं तो) उनको सितारे मारे जाते हैं, तुम मुहम्मद अलैहिस्सलाम के पास जाओ जो दुनियाओं के रब के रसूल हैं और मुसलमान हो जाओ।

हज़रत तमीम रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, मैं सुबह को दैरे अय्यूब बस्ती में गया और वहां एक पादरी को सारा क़िस्सा सुनाकर उससे उसके बारे में पूछा। उसने कहा, जिन्नात ने तुमसे सच कहा है, वह नबी हरम (मक्का) में ज़ाहिर होंगे और हिजरत करके हरम (मदीना) जाएंगे। वह तमाम नबियों से बेहतर हैं। कोई और तुमसे पहले उन तक न पहुंच पाए, इसलिए जल्दी जाओ।

हज़रत तमीम रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, मैं हिम्मत करके चल पड़ा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर

1. बिदाया, भाग 2, पृ० 343, दलाइल, पृ० 33,

मुसलमान हो गया।[1]

हज़रत वासिला बिन असक़अ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत हज्जाज बिन इलात बहज़्री सुलमी रज़ियल्लाहु अन्हु के मुसलमान होने की शक्ल यह हुई कि वह अपनी क़ौम के कुछ सवारों के साथ मक्का के इरादे से निकले। रात को ये लोग एक वहशतनाक और ख़ौफ़नाक घाटी में पहुंचे तो घबरा गए।

उनके साथियों ने उनसे कहा, ऐ अबू किलाब! (यह हज़रत हज्जाज की कुन्नियत है) उठो और अपने लिए और अपने साथियों के लिए (इस घाटी के सरदार जिन्न से) अम्न मांगो। हज़रत हज्जाज ने खड़े होकर ये शेर पढ़े—

أُعِيْذُ نَفْسِيْ وَأُعِيْذُ صَحْبِيْ مِنْ كُلِّ جِنِّيٍّ بِهٰذَا النَّقْبِ
حَتّٰى أَؤُوْبَ سَالِمًا وَرَكْبِيْ

'मैं अपने आपको और अपने साथियों को हर उस जिन्न से पनाह देता हूं जो इस पहाड़ी रास्ते में मौजूद है',

'ताकि मैं और मेरे साथी सही सालिम अपने घर वापस पहुंच जाएं।'

इसके बाद हज़रत हज्जाज ने किसी नज़र न आने वाले को यह आयत पढ़ते हुए सुना—

يَامَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوْا
لَا تَنْفُذُوْنَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ (سورت رحمان آیت ۳۳)

'ऐ जिन्न और इंसान के गिरोह! अगर तुमको यह क़ुदरत है कि आसमान और ज़मीन की हदों से कहीं बाहर निकल जाओ, तो (हम भी देखें) निकलो, मगर ज़ोर के बग़ैर नहीं निकल सकते। (और ज़ोर है नहीं, बस निकलने का वक़ू भी मुह्तमल नहीं।' (सूरः रहमान, आयत 33)

जब ये लोग मक्का पहुंचे, तो उन्होंने क़ुरैश की एक मज्लिस में यह बात बताई। क़ुरैश ने कहा, ऐ अबू किलाब! आप ठीक कह रहे हो,

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 350

अल्लाह की क़सम ! यह कलाम भी उसी कलाम में से है, जिसके बारे में मुहम्मद अलैहिस्सलाम दावा करते हैं कि उन पर यह कलाम अल्लाह की ओर से नाज़िल हुआ है।

हज़रत हज्जाज रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, अल्लाह की क़सम ! ख़ुद मैंने भी सुना है और मेरे साथ इन लोगों ने भी सुना है।

ये बातें हो रही थीं कि इतने में आस बिन वाइल आया। लोगों ने उससे कहा, ऐ अबू हिशाम ! अबू किलाब जो कह रहा है, क्या आपने वह नहीं सुना? उसने पूछा, अबू किलाब क्या कह रहा है? लोगों ने उसे सारी बात बताई। उसने कहा, आप लोग इस पर ताज्जुब क्यों कर रहे हैं? जिस जिन्न ने उनको वहां यह कलाम सुनाया है, वहीं जिन्न मुहम्मद (सल्ल०) की ज़ुबान पर यह कलाम जारी करता है।

हज़रत हज्जाज रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, आस की इस बात की वजह से मेरे साथी मेरी राय से यानी इस्लाम लाने से रुक गए, लेकिन इस सबसे मेरी बसीरत में इज़ाफ़ा हुआ। (फिर हम लोग अपने इलाक़े में वापस आ गए।)

एक अर्से के बाद मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में पूछा तो मुझे बताया गया कि वह मक्का से मदीना तशरीफ़ ले जा चुके हैं। मैं ऊंटनी पर सवार होकर चल दिया और मदीना हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंच गया और मैंने घाटी में जो सुना था, वह हुज़ूर सल्ल० को बताया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! तुमने हक़ बात सुनी है। अल्लाह की क़सम ! यह उसी कलाम में से है जो मेरे रब ने मुझ पर उतारा है। ऐ अबू किलाब ! तुमने हक़ बात सुनी है। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप मुझे इस्लाम सिखा दें। हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे इख़्लास कलिमे की गवाही तलब फ़रमाई और फ़रमाया, अब तुम अपनी क़ौम के पास वापस जाओ और उन्हें उन तमाम बातों की दावत दो, जिनकी मैंने तुम्हें दावत दी है, क्योंकि ये हक़ है।[1]

---

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 163,

हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कुछ लोग मक्का के इरादा से चले और रास्ते से भटक गए। जब उन्होंने देखा कि अब तो मौत आने वाली है तो उन्होंने कफ़न पहने और मरने के लिए लेट गए। इतने में पेड़ों के बीच में से एक जिन्न निकलकर उनके पास आया और कहने लगा, मैं उन लोगों में से अकेला बाक़ी रह गया हूं, जिन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़ुरआन पढ़ते हुए सुना था।

मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह भी फ़रमाते हुए सुना कि मोमिन मोमिन का भाई है और सफ़र में आगे जाकर हालात मालूम करके उसे बताने वाला है और रास्ता भटक जाने की शक्ल में उसे रास्ता बताने वाला है, उसे बेयार व मददगार नहीं छोड़ता। यह है पानी और यह है तुम्हारा रास्ता। फिर उसने उन्हें पानी की जगह बताई और रास्ता दिखाया।[1]

क़बीला बनू सह्म बिन मुर्रा के सईद बिन शियैम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मेरे वालिद साहब ने मुझे यह वाक़िया बयान किया कि उऐना बिन हिस्न जो फ़ौज ख़ैबर के यहूदियों की मदद के लिए लेकर गया था, मैं भी उस फ़ौज में था। हमने उऐना की फ़ौज में यह आवाज़ सुनी, ऐ लोगो! अपने घरवालों की ख़बर लो। दुश्मन ने उन पर हमला कर दिया है।

यह सुनते ही सारे फ़ौज वाले वापस चले गए। एक दूसरे का इंतिज़ार भी नहीं किया, हमें उस आवाज़ का कुछ पता न चला कि कहां से आई थी। इसलिए हमें यक़ीन है कि यह आवाज़ आसमान से आई थी।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए जिन्नों और शैतानों का सधा हुआ होना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु

1. दलाइल, पृ० 128,

अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, एक बार मैं सोया हुआ था, एक शैतान मेरे सामने आया। मैंने उसका गला पकड़ कर इस ज़ोर से घोंटा कि उसकी ज़ुबान बाहर निकल आई और अपने अंगूठे पर मुझे उसकी ज़ुबान की ठंडक महसूस होने लगी। अल्लाह हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम पर रहम फ़रमाए। अगर उनकी दुआ न होती तो यह शैतान बंधा हुआ होता और तुम सब उसे देखते।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, आज रात एक सरकश जिन्न छूट कर मेरे पास नमाज़ ख़राब करने आ गया। अल्लाह ने मुझे उसके पकड़ने की क़ुदरत दे दी। मैंने उसे पकड़ लिया। मेरा इरादा था कि मैं उसे मस्जिद के किसी स्तून से बांध दूं ताकि सुबह को आप सब लोग उसे देख लें, लेकिन मुझे अपने भाई हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की यह दुआ याद आ गई—

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَّا يَنْبَغِي لِأَحَدٍ مِّنْ بَعْدِي

'ऐ मेरे रब ! मेरा (पिछला) क़ुसूर माफ़ कर और (आगे के लिए) मुझको ऐसी सल्तनत दे कि मेरे सिवा (मेरे ज़माने में) किसी को मयस्सर न हो।' (सूरः स्वाद, आयत 35)

आपने फ़रमाया, मैंने उसे ज़लील और रुसवा करके वापस कर दिया।[2]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में यह है कि अगर हमारे भाई हज़रत सुलैमान अलैहि० की दुआ न होती, तो वह सुबह को बंधा हुआ होता और मदीना वालों के बच्चे उससे खेल रहे होते।

हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मुझे यह ख़बर पहुंची कि हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में शैतान को पकड़ा था। मैं हज़रत मुआज़

1. दलाइल, पृ० 130,
2. दलाइल, पृ० 130,

रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गया और मैंने कहा, मुझे यह ख़बर पहुंची है कि आपने हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में शैतान को पकड़ा था। उन्होंने कहा, जी हां।

हुज़ूर सल्ल० ने सदक़ा की खजूरें जमा करके मुझे दीं। मैंने वे खजूरें अपने एक कमरे में रख दीं। मुझे हर दिन उन खजूरों में कमी नज़र आती थी। मैंने हुज़ूर सल्ल० से उसकी शिकायत की। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह शैतान का काम है, तुम उसकी घात लगाओ।

चुनांचे मैं रात को उसकी घात में बैठा। जब कुछ रात बीत गई तो शैतान हाथी की शक्ल में आया। जब दरवाज़े के पास पहुंचा तो शक्ल बदल कर दरवाज़े के दुर्ज़ों से अन्दर दाख़िल हो गया और खजूरों के पास जाकर उन्हें लुक़्मा बनाकर खाने लग गया। मैंने अपने कपड़े अच्छी तरह से बांधे और जाकर उसे बीच में पकड़ लिया और मैंने कहा—

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

'अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०'

(मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं और यह कि मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं।)

ऐ अल्लाह के दुश्मन! तू आकर सदक़े की खजूरों में से ले रहा है, हालांकि फ़ुक़रा सहाबा तुझसे ज़्यादा इन खजूरों के हक़दार हैं। मैं तुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास ले जाऊंगा, वह तुझे रुसवा करेंगे। उसने मुझसे वायदा किया कि वह दोबारा नहीं आएगा।

मैं सुबह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम्हारे क़ैदी ने क्या किया? मैंने कहा, उसने मुझसे वायदा किया है कि वह दोबारा नहीं आएगा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह ज़रूर आएगा, इसलिए उसकी घात लगाना।

चुनांचे मैंने दूसरी रात उसकी घात लगाई, तो उसने पहली रात की तरह फिर किया। मैंने भी उनके साथ वही मामला किया। उसने फिर मुझसे

वायदा किया कि वह दोबारा नहीं आएगा, इस पर मैंने उसे छोड़ दिया और मैं सुबह-सुबह बताने के लिए हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गया तो हुज़ूर सल्ल० का एलानची यह एलान कर रहा था, मुआज़ कहां हैं ?

(मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गया) हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया, ऐ मुआज़ ! तुम्हारे क़ैदी का क्या हुआ ? मैंने सारा क़िस्सा बताया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह ज़रूर आएगा। तुम उसकी घात में रहना।

मैं तीसरी रात फिर उसकी घात में बैठा तो उसने उसी तरह किया। मैंने भी उसके साथ उसी तरह किया और बिगड़ कर उससे कहा, ऐ अल्लाह के दुश्मन ! तू दो बार मुझसे वायदा कर चुका है। अब तीसरी बार है। मैं तुझे हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ज़रूर ले जाऊंगा, वह तुझे रुसवा करेंगे।

उसने कहा, मैं बाल-बच्चेदार शैतान हूं और मैं नसीबीन से आपके पास आता हूं (जो कि शामदेश की एक जगह है।) अगर मुझे इन खजूरों के अलावा कुछ और मिल जाता तो मैं आपके पास न आता। हम आपके इसी शहर में रहा करते थे, लेकिन जब आपके हज़रत पैग़म्बर बनाकर भेजे गए और उन पर दो आयतें उतरीं तो इन आयतों ने हमें यहां से भगा दिया और हम जाकर नसीबीन रहने लगे और जिस घर में ये दो आयतें पढ़ी जाती हैं, उस घर में शैतान तीन दिन तक दाख़िल नहीं होता। अगर आप मुझे छोड़ दें तो मैं आपको वे दोनों आयतें सिखा दूंगा।

मैंने कहा, ठीक है।

उसने कहा आयतुल कुर्सी और सूरः बक़रः की आख़िरी आयतें 'आम-नर्रसूलु' से लेकर आख़िर तक।

फिर मैंने उसे छोड़ दिया और सुबह हुज़ूर सल्ल० को बताने के लिए गया तो हुज़ूर सल्ल० का एलानची एलान कर रहा था कि मुआज़ बिन जबल कहां हैं ?

जब मैं आपकी ख़िदमत में पहुंचा तो आपने फ़रमाया, तुम्हारे क़ैदी का क्या बना ? मैंने कहा, उसने मुझसे वायदा किया है कि वह दोबारा

नहीं आएगा और उसने जो कुछ कहा था, वह भी मैंने हुज़ूर सल्ल० को बताया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ख़बीस है तो झूठा, लेकिन इस बार उसने तुमसे सच्ची बात कही है।

हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, मैं बाद में ये आयतें पढ़ने लग गया तो फिर खजूरों का कम होना ख़त्म हो गया।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रमज़ान के सदक़ा-फ़ित्र की हिफ़ाज़त मेरे ज़िम्मे लगाई। एक दिन एक आदमी आकर उसमें से लपें भर-भरकर लेने लगा। मैंने उसे पकड़ लिया और कहा, मैं तुम्हें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास ज़रूर ले जाऊंगा। उसने कहा, मैं मुहताज हूं और मुझ पर बच्चों की ज़िम्मेदारी है और मुझे बहुत ही ज़्यादा ज़रूरत है। मैंने उसे छोड़ दिया।

सुबह को हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरह ! आज रात तुम्हारे क़ैदी का क्या हुआ? मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! उसने सख़्त ज़रूरतमंद होने और बाल-बच्चों की शिकायत की। मुझे उस पर तरस आ गया। मैंने उसे छोड़ दिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ग़ौर से सुन लो। उसने तुमसे झूठ कहा है और वह फिर आएगा।

चूंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि वह फिर आएगा, इसलिए मुझे यक़ीन हो गया कि वह ज़रूर आएगा। मैं उसकी घात में बैठ गया। वह आकर लपें भरकर फिर लेने लग गया। मैंने उसे पकड़ कर कहा, मैं तुम्हें हुज़ूर सल्ल० के पास ज़रूर ले जाऊंगा। उसने कहा, मुझे छोड़ दो, क्योंकि मैं मुहताज हूं। बहुत-से बच्चों की मुझ पर ज़िम्मेदारी है। अब मैं दोबारा नहीं आऊंगा।

मुझे उस पर फिर तरस आ गया, इसलिए मैंने उसे छोड़ दिया। सुबह को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरह रज़ि० ! तुम्हारे क़ैदी का क्या हुआ? मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! उसने सख़्त ज़रूरतमंद होने की और बच्चों

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 322, दलाइल, पृ० 217

की शिकायत की, मुझे उस पर तरस आ गया। मैंने उसे छोड़ दिया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ग़ौर से सुन लो, उसने तुमसे झूठ कहा, वह फिर आएगा। चूंकि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था कि वह फिर आएगा, इसलिए मैं समझ गया कि वह फिर आएगा। मैं उसकी घात में बैठ गया।

वह आकर फिर लपें भरकर लेने लगा। मैंने उसे पकड़ कर कहा, मैं तुम्हें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास ले जाऊंगा। दो बार तुम कह चुके हो कि दोबारा नहीं आऊंगा लेकिन तुम फिर आ जाते हो। अब यह तीसरी बार और आख़िरी बार है।

उसने कहा, मुझे अब छोड़ दो। मैं तुम्हें ऐसे कलिमे सिखाऊंगा, जिनसे अल्लाह तुम्हें नफ़ा पहुंचाएगा। जब तुम बिस्तर पर लेटा करो तो आयतुल कुर्सी—

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ

आख़िर तक पढ़ा करो तो सुबह तक अल्लाह की तरफ़ से तुम्हारे लिए एक हिफ़ाज़त करने वाला फ़रिश्ता मुक़र्रर रहेगा और सुबह तक कोई शैतान तुम्हारे क़रीब नहीं आ सकेगा। मैंने उसका रास्ता छोड़ दिया। सुबह हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया, तुम्हारे क़ैदी का क्या हुआ?

मैंने कहा, उसने कहा था कि वह मुझे कुछ ऐसे कलिमे सिखाएगा जिनसे अल्लाह मुझे नफ़ा देंगे।

आपने फ़रमाया, ग़ौर से सुनो, है तो वह झूठा, लेकिन तुमसे उसने बात सच्ची कही है और तुम जानते हो कि तुम तीन रातों से किससे बातें कर रहे हो? मैंने कहा, नहीं। आपने फ़रमाया, यह एक शैतान है।[1]

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मेरा एक ताक़ था, जिसमें खजूरें रखी रहती थीं। एक भुतनी आकर उनमें से खजूरें ले जाया करती थी। मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उसकी शिकायत की। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जाओ, जब

1. मिश्कात, पृ० 185,

तुम उसे देखो, तो कहना, बिस्मिल्लाह ! हुज़ूर सल्ल० तुम्हें बुला रहे हैं, उनके पास चलो।

मैंने उसे पकड़ लिया तो उसने क़सम खाई कि वह दोबारा नहीं आएगी, फिर आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[1]

और इसी तीसरे हिस्से में पीछे हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु की इसी जैसी हदीस गुज़र चुकी है।

हज़रत अबू वाइल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी रज़ि० को एक शैतान मिला तो उन्होंने उस शैतान से कुश्ती की और उसे गिराकर उसके अंगूठे को दांतों से काटा। उस शैतान ने कहा, मुझे छोड़ दो, मैं तुम्हें ऐसी आयत सिखाऊंगा कि हममें से जो भी इस आयत को सुनता है, वह पीठ फेरकर भाग जाता है।

उस मुसलमान ने उसे छोड़ दिया, तो शैतान ने यह आयत सिखाने से इंकार कर दिया। उस मुसलमान ने उससे फिर कुश्ती की और उसे गिराकर उसके अंगूठे को काटा और उससे कहा, मुझे वह आयत बता। (उसने कहा, मुझे छोड़ दो, मैं बताऊंगा। मुसलमान ने उसे छोड़ दिया, लेकिन) उसने बताने से इंकार कर दिया।

जब मुसलमान ने तीसरी बार उसे कुश्ती में गिरा दिया, तो उस शैतान ने कहा, यह सूरः बक़रः की आयत—

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ

आख़िर तक है।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से किसी ने पूछा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान ! वह मुसलमान कौन था? हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने फ़रमाया, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के अलावा और कौन हो सकता है ?[2]

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 33, दलाइल, पृ० 277, हैसमी, भाग 6, पृ० 323,
2. तबरानी

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी रज़ि० को एक जिन्न मिला। उन्होंने उस जिन्न से कुश्ती लड़ी और उसे गिरा दिया। जिन्न ने उनसे कहा, दोबारा कुश्ती लड़ो, दोबारा कुश्ती हुई, तो फिर उन्होंने उस जिन्न को गिरा दिया।

उन सहाबी रज़ि० ने उस जिन्न से कहा, तुम मुझे दुबले-पतले नज़र आ रहे हो और तुम्हारा रंग भी बदला हुआ है और तुम्हारे बाज़ू कुत्ते के बाज़ुओं की तरह छोटे-छोटे हैं, तो क्या तुम सब जिन्न ऐसे ही होते हो या इनमें से तुम ही ऐसे हो?

उस जिन्न ने कहा, नहीं, अल्लाह की क़सम! मैं तो इनमें बड़े जिस्म वाला और ताक़तवर हूं। आप मुझसे तीसरी बार कुश्ती करो। अगर आपने मुझे इस बार गिरा दिया तो मैं आपको ऐसी चीज़ सिखाऊंगा जिससे आपको फ़ायदा होगा।

चुनांचे तीसरी बार कुश्ती हुई, तो उस मुसलमान ने उस जिन्न को फिर गिरा दिया, और उससे कहा, लाओ, मुझे सिखाओ। उस जिन्न ने कहा, क्या आप आयतुल कुर्सी पढ़ते हैं। उस मुसलमान ने कहा, जी हां। उस जिन्न ने कहा, आप इस आयत को जिस घर में पढ़ेंगे, उस घर से शैतान निकल जाएगा और निकलते हुए गधे की तरह उसकी हवा ख़ारिज हो रही होगी, और सुबह तक फिर उस घर में नहीं आएगा।

हाज़िर लोगों में से एक आदमी ने कहा, ऐ अब्दुर्रहमान! यह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कौन से सहाबी थे?

इस सवाल पर बिगड़ कर हज़रत अब्दुल्लाह उसकी ओर मुतवज्जह हुए और फ़रमाया, यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के अलावा और कौन हो सकता है?[1]

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया, हमें यह बताया जाता था कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 71, दलाइल, पृ० 131,

शैतान ज़ंजीरों में बंधे हुए थे। जब वह शहीद हो गए, तो फिर ये आज़ाद होकर फैल गए।[1]

हज़रत आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा कुरैश के सवारों की एक जमाअत के साथ उमरा से वापस आ रहे थे। जब यनासिब पहाड़ के पास पहुंचे तो उन्हें एक पेड़ के पास एक आदमी नज़र आया।

हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने साथियों से आगे बढ़कर उस आदमी के पास पहुंचे और उसे सलाम किया। उस आदमी ने उनकी परवाह न की और हल्की आवाज़ से सलाम का जवाब दिया। हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० सवारी से नीचे उतरे। उस पर भी उस आदमी ने कोई असर न लिया और अपनी जगह से बिल्कुल न हिला।

हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, साए से परे हट जाओ, तो वह नागवारी के साथ एक ओर को हट गया।

हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं वहां बैठ गया और मैंने उसका हाथ पकड़ कर कहा, तू कौन है?

उसने कहा, मैं जिन्न हूं।

उसके यह कहते ही (ग़ुस्से की वजह से) मेरे जिस्म का हर बाल खड़ा हो गया। मैंने उसे ज़ोर से खींचकर कहा, तुम जिन्न होकर इस तरह मेरे सामने आते हो। अब जो मैंने ग़ौर से देखा तो उसके पांव जानवरों जैसे थे। मैंने जो ज़रा ज़ोर दिखाया, तो वह नर्म पड़ गया। मैंने उसे डांटा और कहा, तुम ज़िम्मी होकर मेरे सामने आए हो, वह वहां से भाग गया।

इतने में मेरे साथी भी आ गए। उन्होंने मुझसे पूछा कि आपके पास जो आदमी था, वह कहां गया? मैंने कहा, यह जिन्न था जो भाग गया। यह सुनते ही, उनमें से हर एक अपनी सवारी से नीचे गिर गया। फिर मैंने सबको उठाकर उनकी सवारी से बांध दिया और मैं उनको फिर

1. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 385,

लेकर हज को गया, लेकिन उस वक़्त तक उनकी अक़्लें ठीक नहीं हुई थीं।[1]

हज़रत अहमद बिन अबिल हवारी कहते हैं, मैंने हज़रत अबू सुलैमान दारानी को यह वाक़िया बयान करते हुए सुना कि हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा चांदनी रात में अपनी सवारी पर निकले और जाकर तबूक में पड़ाव डाला।

उनकी अचानक नज़र पड़ी तो उन्हें अपनी सवारी पर एक बूढ़ा बैठा हुआ नज़र आया, जिसके सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद थे। हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने उस पर हमला किया, जिससे वह सवारी से एक तरफ़ हो गया और हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० अपनी सवारी पर सवार होकर आगे चल दिए।

उस बूढ़े ने ऊंची आवाज़ से कहा, ऐ इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ! अल्लाह की क़सम ! अगर आपके दिल में मेरा डर बाल के बराबर भी बैठ जाता तो मैं आपकी अक़्ल ख़राब कर देता !

हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ओ मलऊन ! क्या तेरी वजह से मेरे दिल में ज़र्रा बराबर डर पैदा हो सकता है ?[2]

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का जमादात यानी बेजान चीज़ों की आवाज़ें सुनना

हज़रत सुवैद बिन यज़ीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने एक दिन हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु को मस्जिद में अकेले बैठे हुए देखा। मैंने मौक़ा ग़नीमत देखा और जाकर उनके पास बैठ गया। मैंने उनसे हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का तज़्किरा किया।

उन्होंने फ़रमाया, मैं तो हज़रत उस्मान रज़ि० के बारे में हमेशा ख़ैर की बात कहता हूं, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के

---

1. इब्नुल मुबारक,
2. बिदाया, भाग 8, पृ० 335

पास उनके बारे में एक ख़ास चीज़ देखी है। मैं हुज़ूर सल्ल० की तंहाई के मौक़ों को तलाश करता रहता था और उस तंहाई में हुज़ूर सल्ल० से सीखा करता था।

चुनांचे एक दिन मैं गया तो हुज़ूर सल्ल० बाहर तशरीफ़ लाए और एक ओर चल दिए। मैं भी आपके पीछे हो लिया। एक जगह जाकर आप बैठ गए। मैं भी आपके पास बैठ गया। आपने फ़रमाया, अबूज़र! क्यों आए हो? मैंने अर्ज़ किया, अल्लाह और रसूल सल्ल० की मुहब्बत की वजह से।

फिर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु आए और सलाम करके हुज़ूर सल्ल० के दाहिनी तरफ़ बैठ गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे पूछा, ऐ अबूबक्र रज़ि०! कैसे आना हुआ? उन्होंने कहा, अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत की वजह से।

फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आ गए और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के दाहिनी तरफ़ बैठ गए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उमर! कैसे आना हुआ? उन्होंने कहा, अल्लाह और रसूल सल्ल० की मुहब्बत की वजह से।

फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु आए और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दाहिनी तरफ़ बैठ गए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उस्मान रज़ि०! कैसे आना हुआ? उन्होंने कहा, अल्लाह और रसूल सल्ल० की मुहब्बत की वजह से।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने सात या नौ कंकरियां अपने हाथ में लीं। वे कंकड़ियां तस्बीह पढ़ने लगीं और मैंने शहद की मक्खी की तरह उनकी भनभनाहट सुनी। फिर हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें रख दिया तो वे ख़ामोश हो गईं।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने वे कंकड़ियां उठाकर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में रख दीं। वे कंकड़ियां फिर तस्बीह पढ़ने लगीं और मैंने

शहद की मक्खी जैसी उनकी भनभनाहट सुनी। फिर हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें रख दिया, तो वे ख़ामोश हो गईं।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें लेकर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में रख दिया, वे कंकड़ियां फिर तस्बीह पढ़ने लगीं और मैंने शहद की मक्खियों जैसी भनभनाहट सुनी, फिर हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें रख दिया, तो वे ख़ामोश हो गईं।[1]

बैहक़ी की रिवायत में यह भी है कि फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वे कंकड़ियां लेकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में रख दीं। वे तस्बीह पढ़ने लगीं और मैंने शहद की मक्खी जैसी भनभनाहट सुनी। फिर हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें रख दिया तो वे ख़ामोश हो गईं, इस रिवायत के आख़िर में यह भी है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह नुबूवत की ख़िलाफ़त है।[2]

तबरानी की रिवायत में यह भी है कि फिर हुज़ूर सल्ल० ने वे कंकड़ियां हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को दीं (तो वे तस्बीह पढ़ने लगीं) फिर हुज़ूर सल्ल० ने वे कंकड़ियां रख दीं, तो वे ख़ामोश हो गईं।[3]

तबरानी की दो सनदों में से एक सनद में यह भी है कि हलक़े में जितने आदमी थे, उन सबने हर एक के हाथ में उन कंकड़ियों की तस्बीह सुनी। फिर हुज़ूर सल्ल० ने वे कंकड़ियां हमें दे दीं, तो हममें से किसी के पास भी इन कंकड़ियों ने तस्बीह न पढ़ी।[4]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम क़ुरआनी आयतों को और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मोजज़ों को बरकत समझा करते थे, लेकिन आप लोग यह समझते हो कि ये कुफ़्फ़ार को डराने के लिए हुआ करते थे। हम एक सफ़र में नबी

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 299, बिदाया, भाग 5, पृ० 132
2. दलाइल, पृ० 215,
3. हैसमी, भाग 5, पृ० 179, भाग 8, पृ० 299,
4. दलाइल, पृ० 54

करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे। पानी कम हो गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बचा हुआ पानी लाओ। सहाबा रज़ि० एक बरतन में थोड़ा-सा पानी लाए। हुज़ूर सल्ल० ने उस बरतन में अपना हाथ डाला, फिर फ़रमाया, आओ पाक और बरकत वाले पानी की तरफ़ और बरकत अल्लाह की तरफ़ से आ रही है।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, मैंने देखा कि हुज़ूर सल्ल० की उंगलियों के बीच में से पानी फूट रहा था (और यह हुज़ूर सल्ल० का मोजज़ा था)।

(इसी तरह दूसरा मोजज़ा यह है कि) कभी खाना खाया जा रहा होता था और हम उसकी तस्बीह सुन रहे होते थे।[1]

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुआ करने के बाब में यह गुज़र चुका है कि दरवाज़े की चौखट और कमरे की दीवारों ने तीन बार आमीन कहा।[2]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जुमा के दिन खजूर के तने के सहारे से ख़ुत्बा दिया करते थे। एक अंसारी मर्द या औरत ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या हम आपके लिए मिंबर न बना दें। आपने फ़रमाया, अगर तुम चाहो, तो बना दो।

चुनांचे उन्होंने हुज़ूर सल्ल० के लिए मिंबर बनाया, (जो मस्जिद में मेहराब के पास रख दिया) जब जुमा के दिन हुज़ूर सल्ल० मिंबर के पास पहुंचे तो वह तना बच्चे की तरह चीखने लगा। हुज़ूर सल्ल० मिंबर से नीचे उतर कर उसके पास आए और उसे अपने से चिमटा लिया, तो वह उस बच्चे की तरह रोने लगा जिसे चुप कराया जा रहा हो।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, वह तना इस वजह से रो रहा था कि वह पहले अपने पास अल्लाह का ज़िक्र सुना करता था

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 97
2. तबरानी, हैसमी, इब्ने माजा

(और अब नहीं सुन सकेगा ।)[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु की दूसरी रिवायत में यह है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए मिंबर बन गया और उसे मस्जिद में लाकर रखा गया और हुज़ूर सल्ल० उस पर तशरीफ़ फ़रमा हुए तो हमने उस तने में से हामिला ऊंटनी जैसी आवाज़ सुनी, जिसे सुनकर हुज़ूर सल्ल० उसके पास तशरीफ़ लाए और अपना हाथ उस पर रखा, जिससे उसे सुकून हुआ और वह ख़ामोश हो गया ।[2]

अहमद की एक रिवायत में यह है कि जब हुज़ूर सल्ल० का मिंबर बन गया और आप उस पर तशरीफ़ फ़रमा हुए तो वह तना बेचैन हो गया और ऊंटनी की तरह रोने लगा, जिसे तमाम मस्जिद वालों ने सुना । आप मिंबर से उतर कर उसके पास तशरीफ़ ले गए और उसे गले लगा लिया जिससे वह ख़ामोश हो गया ।[3]

अबू नुऐम की रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अगर मैं उसे अपनी बग़ल में न लेता, तो यह क़ियामत तक रोता रहता ।

इमाम अहमद ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से भी मिंबर बनाने की हदीस नक़ल की है, उसमें हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुत्बा देने के लिए उस लकड़ी के बजाए मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए तो मैंने इस लकड़ी को परेशान हाल आशिक़ की तरह रोते हुए सुना और वह लकड़ी रोती ही रही, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० मिंबर से नीचे उतरे और चलकर उसके पास तशरीफ़ लाए और उसे सीने से लगाया, तो फिर उस लकड़ी को सुकून हुआ ।

अल्लामा बग़वी ने भी इस हदीस को हज़रत अनस रज़ि० से ज़िक्र किया है और उसमें यह भी है कि जब हज़रत हसन इस हदीस को बयान

1. बुख़ारी,
2. बुख़ारी,
3. बिदाया, भाग 6, पृ० 129, जामेअ बयानुल इल्म, भाग 2, पृ० 197, दलाइल, पृ० 142

किया करते तो रोया करते और फ़रमाते, ऐ अल्लाह के बन्दो ! चूंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अल्लाह के यहां बड़ा दर्जा है, इस वजह से यह लकड़ी हुज़ूर सल्ल० के शौक़ में रोई थी, तो आप लोगों को हुज़ूर सल्ल० की ज़ियारत का शौक़ इससे ज़्यादा होना चाहिए।[1]

अबू याला की रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद सल्ल० की जान है, अगर मैं उसे अपने से न चिमटाता, तो यह अल्लाह के रसूल की जुदाई के ग़म में यों ही क़ियामत तक रोती रहती फिर हुज़ूर सल्ल० के फ़रमाने पर उसे दफ़न कर दिया गया।[2]

हज़रत अबुल बख़्तरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी हंडिया के नीचे आग जला रहे थे और हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु उनके यहां आए हुए थे। हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हंडिया में से आवाज़ सुनी, फिर वह आवाज़ ऊंची हुई और वह बच्चे की तरह तस्बीह पढ़ने की आवाज़ थी, फिर वह हंडिया नीचे गिर पड़ी और उलटी हो गई, फिर अपनी जगह वापस चली गई, लेकिन उसमें से कोई चीज़ न गिरी।

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० पुकार कर कहने लगे, ऐ सलमान ! अजीब काम देखो, ऐसा अजीब काम तो न आपने देखा होगा और न आपके अब्बाजान ने। हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, अगर आप ख़ामोश रहते तो अल्लाह की और बड़ी-बड़ी निशानियां सुनते।[3]

हज़रत क़ैस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त लिखते या हज़रत सलमान रज़ि० हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० को ख़त लिखते तो प्याले वाली निशानी उन्हें ज़रूर याद दिलाते।

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 127,
2. बिदाया, भाग 2, पृ० 125, 126,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 224,

हज़रत क़ैस रह० कहते हैं, हम यह बात बयान किया करते थे कि ये दोनों लोग प्याले में से खाना खा रहे थे तो प्याला और प्याले के अन्दर का खाना दोनों तस्बीह पढ़ते रहे।[1]

हज़रत जाफ़र बिन अबी इम्रान कहते हैं, हमें यह रिवायत पहुंची है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने एक बार आग की आवाज़ सुनी, तो उन्होंने कहा, मैं भी। किसी ने पूछा, ऐ इब्ने अम्र ! आपने यह क्या कहा?

उन्होंने कहा, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है ! यह आग जहन्नम की बड़ी आग में वापस लौटाए जाने से पनाह मांग रही है।[2]

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का क़ब्र वालों की बातें सुनना

हज़रत यह्या बिन अबी अय्यूब ख़ुज़ाई रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने एक साहब को यह वाक़िया बयान करते हुए सुना, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में एक इबादतगुज़ार नवजवान था, जो हर वक़्त मस्जिद में रहता था और हज़रत को बहुत पसन्द था, उसका एक बूढ़ा बाप था। वह नवजवान इशा की नमाज़ पढ़कर अपने बाप के पास चला जाता था। उसके घर का रास्ता एक औरत के दरवाज़े पर पड़ता था। वह औरत उस पर लट्टू हो गई और इस नवजवान की वजह से वह उसके रास्ते पर खड़ी रहती।

एक रात वह नवजवान उसके पास से गुज़रा, तो वह औरत उसे बहलाने-फुसलाने लगी। आख़िर नवजवान उसके पीछे चल पड़ा। जब उस औरत के घर का दरवाज़ा आया तो वह अन्दर चली गई, लेकिन जब यह नवजवान अन्दर जाने लगा, तो उसे एक दम अल्लाह का ध्यान आ गया और वह ग़लत ख़्याल दिल से सब जाता रहा और यह आयत उसकी ज़ुबान पर जारी हो गई—

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 224,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 289,

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَائِفٌ مِّنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ

(سورت اعراف آیت ۲۰۱)

'यक़ीनन जो लोग ख़ुदा तरस हैं, जब उनसे कोई ख़तरा शैतान की तरफ़ से आ जाता है, तो वे याद में लग जाते हैं, सो यकायक उनकी आंखें खुल जाती हैं।' (सूरः आराफ़, आयत 201)

यह आयत पढ़ते ही वह नवजवान बेहोश होकर गिर गया, तो उस औरत ने एक बांदी को बुलाया और दोनों ने मिलकर उसे उठाया और उसके घर के दरवाज़े पर जाकर उसे बिठा दिया और दरवाज़ा खटखटा कर वापस आ गई।

उसका बाप उसकी तलाश में बाहर निकला तो देखा कि वह बेहोश पड़ा हुआ है। बापने अपने घरवालों को बुलाया और उसे उठाकर अन्दर पहुंचाया। काफ़ी रात गुज़रने के बाद उसे होश आया, तो उसके बाप ने उससे पूछा, ऐ बेटे! तुझे क्या हुआ? उसने कहा, ख़ैर है। बाप ने कहा, तुझे अल्लाह का वास्ता देता हूं, ज़रूर बता।

उसने सारा वाक़िया बताया। बाप ने कहा, तुमने कौन-सी आयत पढ़ी थी? उसने वही आयत पढ़ी। पढ़ते ही बेहोश होकर फिर गिर गया। अब उसे हिलाकर देखा तो उसकी रूह निकल चुकी थी। उसे नहला कर बाहर आए और रात को ही उसे दफ़न कर दिया।

सुबह को उन लोगों ने हज़रत उमर रज़ि० को सारा क़िस्सा सुनाया। हज़रत उमर रज़ि० ने उसके वालिद के पास जाकर ताज़ियत की और फ़रमाया, मुझे क्यों न ख़बर दी? बाप ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! रात ज़्यादा हो गई थी। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हमें उसकी क़ब्र पर ले जाओ। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० और उनके साथी क़ब्र पर गए।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ फ़्लाने—

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ (سورۂ رحمان آیت ۴۶)

'और जो आदमी अपने रब के सामने खड़े होने से (हर वक़्त) डरता रहता है, उसके लिए (जन्नत में) दो बाग़ होंगे।' (सूरः रहमान, आयत 46)

तो उस नवजवान ने क़ब्र के अन्दर से जवाब दिया और दो बार कहा, ऐ उमर रज़ि० ! मेरे रब ने मुझे जन्नत में दो-दो बाग़ दे दिए हैं।[1]

बैहक़ी की रिवायत में है कि उस नवजवान ने कहा, ऐ चचा जान ! हज़रत उमर रज़ि० को जाकर मेरा सलाम कहो और उनसे पूछो कि जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरे, उसको क्या बदला मिलेगा ?

उस रिवायत के आख़िर में है कि हज़रत उमर रज़ि० ने उसकी क़ब्र पर खड़े होकर कहा, तुम्हारे लिए दो बाग़ हैं, तुम्हारे लिए दो बाग़ हैं।

हज़रत मुहम्मद बिन हिमयर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का बक़ीउल ग़रक़द क़ब्रस्तान पर गुज़र हुआ, तो उन्होंने फ़रमाया—

'अस्सलामु अलैकुम ऐ क़ब्रस्तान वालो ! हमारे यहां की ख़बरें तो यह हैं कि तुम्हारी औरतों ने और शादी कर ली, तुम्हारे घरों में दूसरे लोग रहने लग गए, तुम्हारा सारा माल बांट दिया गया।'

जवाब में ग़ैब से यह आवाज़ आई कि हमारे यहां की ख़बरें ये हैं कि हमने जो नेक आमाल आगे भेजे थे, उनका अज्र व सवाब हमने पा लिया और जो माल हमने अल्लाह के लिए दूसरों पर ख़र्च किया, उसका हमें यहां नफ़ा मिल गया और जो माल हम पीछे छोड़ आए, उतना हमें नुक़्सान हुआ।[2]

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का अज़ाब में पड़े लोगों के अज़ाब को देखना

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक बार मैं बद्र के मैदान के किनारे चला जा रहा था कि इतने में एक आदमी एक गढ़े से बाहर निकला। उसकी गरदन में ज़ंजीर पड़ी हुई थी। उसने मुझे पुकार कर कहा, ऐ अब्दुल्लाह ! मुझे पानी पिला दे ! ऐ अब्दुल्लाह ! मुझे पानी

1. कंज़, भाग 1, पृ० 267, तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 279
2. कंज़, भाग 8, पृ० 123,

पिला दे। ऐ अब्दुल्लाह ! मुझे पानी पिला दे। अब मुझे मालूम नहीं कि उसे मेरा नाम मालूम था या उसने वैसे ही अरबों के दस्तूर के मुताबिक़ अब्दुल्लाह कहकर पुकारा और नाम मालूम नहीं था।

फिर उसी गढ़े से एक और आदमी बाहर निकला। उसके हाथ में कोड़ा था। उसने मुझे पुकार कर कहा, ऐ अब्दुल्लाह ! इसे पानी न पिलाना, क्योंकि यह काफ़िर है। फिर उसे कोड़ा मारा, जिस पर वह आदमी अपने गढ़े में वापस चला गया।

मैं जल्दी से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गया और सारा वाक़िया हुज़ूर सल्ल० को बताया। आपने मुझसे फ़रमाया, क्या तुमने उसे देखा है? मैंने कहा, जी हां। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह अल्लाह का दुश्मन अबू जह्ल था और उसे क़ियामत के दिन तक यों ही अज़ाब होता रहेगा।[1]

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का मरने के बाद बातें करना

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, क़बीला बनू हारिस बिन ख़ज़रज के हज़रत ज़ैद बिन ख़ारिजा रज़ियल्लाहु अन्हु का हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में इंतिक़ाल हुआ तो लोगों ने उन पर कपड़ा डाल दिया, फिर लोगों ने उनके सीने में आवाज़ की हरकत सुनी, फिर वह बोल पड़े और कहने लगे—

'हज़रत अहमद, हज़रत अहमद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का नाम लौहे महफ़ूज़ में है।'

'हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने सच कहा, सच कहा। वह अपनी ज़ात के बारे में कमज़ोर थे, लेकिन अल्लाह के मामले में ताक़तवर थे, यह सब कुछ लौहे महफ़ूज़ में है।'

'हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने सच कहा, सच कहा,

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 81

वह ताक़तवर और अमानतदार थे। यह बात भी लौहे महफ़ूज में है।'

'हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु ने सच कहा, सच कहा। वे इन तीनों हज़रात के तरीक़े पर हैं।'

'अम्न व अमान के चार साल गुज़र गए, दो साल रह गए हैं, फिर फ़ित्ने आएंगे और ज़ोरदार आदमी कमज़ोर को खा जाएगा और क़ियामत क़ायम हो जाएगी और बहुत जल्द तुम्हारी फ़ौज की ओर ज़बरदस्त ख़बर आएगी।'

'अरीस का कुंवा एक ज़बरदस्त चीज़ है और यह कुंवां क्या ज़बरदस्त चीज़ है?'

हज़रत सईद रह० कहते हैं कि फिर बनू ख़ज़्मा के एक आदमी का इंतिक़ाल हुआ, लोगों ने उस पर कपड़ा डाला तो उसके सीने में भी आवाज़ की हरकत सुनी, फिर वह भी बोल पड़ा, कहने लगा, बनू हारिस बिन ख़ज़रज के आदमी ने सच कहा, सच कहा।[1]

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत ज़ैद बिन ख़ारिजा रज़ियल्लाहु अन्हु ज़ुहर-अस्र के दर्मियान मदीने के एक रास्ते पर चले जा रहे थे। चलते-चलते उनका इंतिक़ाल हो गया। और वह ज़मीन पर गिर गए। उठाकर उन्हें उनके घर लाया गया और दो कपड़ों और एक चादर से उन्हें ढांप दिया गया। मग़्रिब और इशा के दर्मियान अंसार की औरतें उनके पास जमा होकर ऊंची आवाज़ से रोने लगीं, इतने में उन्होंने चादर के नीचे से दो बार यह आवाज़ सुनी—

'ऐ लोगो! ख़ामोश हो जाओ।'

हज़रत ज़ैद के चेहरे और सीने से कपड़ा हटाया गया तो उन्होंने कहा—

'मुहम्मद रसूलुल्लाह, जो कि अनपढ़ नबी हैं और तमाम नबियों के लिए मुहर हैं, यह बात लौहे महफ़ूज़ में है।' (इसके बाद वह ख़ामोश हो गए।)

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 156, 293,

फिर कुछ देर बाद उनकी ज़ुबान पर ये लफ़्ज़ जारी हो गए—

'हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने सच कहा, सच कहा, जो कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़लीफ़ा हैं, मज़बूत और अमीन हैं, वह अपने बदन के एतबार से तो कमज़ोर थे, लेकिन अल्लाह के मामले में बहुत मज़बूत और ताक़तवर थे और यह बात पहली किताब यानी लौहे महफ़ूज़ में है।'

फिर उनकी ज़ुबान से ये लफ़्ज़ तीन बार अदा हुए—

'सच कहा, सच कहा और दर्मियाने जो कि अल्लाह के बन्दे अमीरुल मोमिनीन हैं, रज़ियल्लाहु अन्हु जो अल्लाह के बारे में किसी की मलामत से नहीं डरते थे और ताक़तवर को कमज़ोर के खा जाने से रोकते थे, यह बात भी पहली किताब यानी लौहे महफ़ूज़ में है।'

फिर उनकी ज़ुबान से ये लफ़्ज़ अदा हुए सच कहा, सच कहा। फिर उन्होंने कहा—

'हज़रत उस्मान अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हु जो कि मुसलमानों पर बहुत मेहरबान हैं, दो गुज़र गए, चार रह गए, फिर लोगों में इख़्तिलाफ़ हो जाएगा और जोड़ बाक़ी न रह सकेगा और पेड़ भी रोएंगे, यानी किसी का एहतराम व इक्राम बाक़ी न रहेगा और क़ियामत क़रीब आ जाएगी और लोग एक दूसरे को खाने लगेंगे।'[1]

दूसरी रिवायत में है कि हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब हज़रत ज़ैद बिन ख़ारिजा रज़ियल्लाहु अन्हु का इन्तिक़ाल हुआ तो मैं हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का इन्तिज़ार कर रहा था। मैंने सोचा कि मैं दो रक्अत नमाज़ ही पढ़ लूं, (और नमाज़ शुरू कर दी)

इतने में हज़रत ज़ैद रज़ि० ने अपने चेहरे से कपड़ा हटा कर कहा, 'अस्सलामु अलैकुम ! अस्सलामु अलैकुम'

घर वाले बातें कर रहे थे। मैंने नमाज़ ही में कहा, 'सुब्हानल्लाह !

1. तबरानी,

सुब्हानल्लाह !'

फिर हज़रत ज़ैद रज़ि० ने कहा, 'सब ख़ामोश हो जाएं, सब ख़ामोश हो जाएं।' बाक़ी हदीस पिछली हदीस जैसी है।[1]

तबरानी ने अवसत में यह रिवायत ज़िक्र की है कि तीन ख़लीफ़ों में सबसे ज़्यादा मज़बूत जो अल्लाह के बारे में किसी की मलामत की परवाह नहीं करते थे और किसी ताक़तवर को किसी कमज़ोर को खाने नहीं देते थे, वह अल्लाह के बन्दे और अमीरुल मोमिनीन थे। उन्होंने सच कहा, उन्होंने सच कहा, यह लौहे महफ़ूज़ में है।

फिर हज़रत ज़ैद रज़ि० ने कहा, हज़रत उस्मान अमीरुल मोमिनीन हैं और वह लोगों के बहुत ज़्यादा क़ुसूर माफ़ कर देते हैं। दो गुज़र गए हैं, चार बाक़ी हैं, फिर लोगों में इख़्तिलाफ़ हो जाएगा और एक दूसरे को खाने लग जाएंगे और कोई नज़्म बाक़ी न रह सकेगा और बड़े-बड़े बहादुर रोएंगे, फिर मुसलमानों की तरक़्क़ी रुक जाएगी और यह भी कहा कि यह बात अल्लाह ने लिखी हुई है और उसे मुक़द्दर फ़रमा रखा है।

ऐ लोगो ! अपने अमीर की तरफ़ मुतवज्जह हो जाओ, उसकी बात सुनो और मानो, फिर जो वली बनाया जाएगा, उसका ख़ून महफ़ूज़ न रहेगा और अल्लाह का फ़ैसला मुक़द्दर हो चुका है। 'अल्लाहु अक्बर' यह जन्नत है और यह जहन्नम है और सारे नबी और सिद्दीक़ 'अस्सलामु अलैकुम' कह रहे हैं।

ऐ अब्दुल्लाह बिन रुवाहा ! क्या आपको मेरे वालिद हज़रत ख़ारिज़ा रज़ि० का और हज़रत साद रज़ि० का कुछ पता चला ? ये दोनों हज़रात उहुद की लड़ाई में शहीद हुए थे—

كَلَّا إِنَّهَا لَظَى ۝ نَزَّاعَةً لِّلشَّوَى

تَدْعُو مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّى ۝ وَجَمَعَ فَأَوْعَى (سورة معارج آيت ١٥-١٨)

'यह हरगिज़ न होगा (बल्कि) वह आग ऐसी भड़क रही है जो खाल

---

1 हैसमी भाग ५ पृ० १८०

(तक) उतार देगी (और) वह उस आदमी को (खुद) बुलावेगी, जिसने (दुनिया में हक़ से) पीठ फेरी होगी और (इताअत से) बेरुख़ी की होगी और जमा किया होगा, फिर उसको उठाकर रखा होगा।'

(सूरः मआरिज, आयत 15-18)

हज़रत ज़ैद रज़ि० की आवाज़ बन्द हो गई। इस हदीस में यह भी है कि हज़रत ज़ैद रज़ि० ने यह भी कहा, यह हज़रत अहमद अल्लाह के रसूल हैं, 'सलामुन अलैक या रसूलल्लाह ! व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू'।[1]

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हममें से एक आदमी का इंतिक़ाल हुआ, जिन्हें हज़रत ज़ैद बिन ख़ारिजा रज़ि० कहा जाता था। हमने कपड़े से उन्हें ढांक दिया और मैं खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगा। इतने में कुछ शोर सुनाई दिया तो मैं उनकी तरफ़ मुतवज्जह हुआ। मैंने देखा कि उनका जिस्म हरकत कर रहा है।

फिर वह कहने लगे, लोगों में सबसे ज़्यादा ताक़तवर (तीन ख़लीफ़ों में) दर्मियान वाले अल्लाह के बन्दे अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि० हैं, जो अपने काम में भी ख़ूब ताक़तवर और अल्लाह के काम में भी ख़ूब ताक़तवर थे और अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० पाक दामन और इंतिहाई पाकबाज़ हैं जो बहुत से क़ुसूर माफ़ कर देते हैं। दो रातें गुज़र गई हैं और चार बाक़ी हैं, फिर लोगों में इख़्तिलाफ़ हो जाएगा और उनमें कोई नज़्म बाक़ी नहीं रह सकेगा।

ऐ लोगो ! अपने इमाम की तरफ़ मुतवज्जह हो जाओ और सुनो और मानो, यह अल्लाह के रसूल और अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० हैं, फिर (हज़रत इब्ने रवाहा रज़ि० से) कहा, मेरे वालिद हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ैद रज़ि० का क्या बना? फिर कहा, अरीस कुंवा ज़ुल्मन ले लिया गया, इसके बाद उनकी आवाज़ बन्द हो गई।[2]

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 157, इसाबा, भाग 2, पृ० 24,
2. हैसमी, भाग 7, पृ० 230, बिदाया, भाग 6, पृ० 157,

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के मुर्दों का ज़िंदा होना

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम एक अंसारी जवान की बीमारपुर्सी के लिए गए, जल्द ही उसका इंतिक़ाल हो गया। हमने उसकी आंखें बन्द करके उस पर कपड़ा डाल दिया। हममें से एक आदमी ने उसकी मां से कहा, अपने बेटे के सदमे पर सब्र करो और उस पर सवाब की उम्मीद रखो।

उसकी मां ने कहा, क्या उसका इंतिक़ाल हो गया है? हमने कहा, जी हां। उस पर उसकी मां ने अपने दोनों हाथ आसमान की तरफ़ उठाए और यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! मैं तुझ पर ईमान लाई और मैं हिजरत करके तेरे पास आई और जब भी मुझ पर कोई मुसीबत या सख़्ती आई और मैंने तुझसे दुआ की, तूने वह मुसीबत और सख़्ती ज़रूर हटाई है। मैं तुझसे सवाल करती हूं कि तू मुझ पर यह मुसीबत मत डाल।

उसके यह दुआ मांगते ही (उसका बेटा ज़िंदा हो गया और) चेहरे से कपड़ा हटाकर बैठ गया और थोड़ी देर बाद जब हमने खाना खाया तो उसने भी हमारे साथ खाया।[1]

बैहक़ी की रिवायत में यह है कि यह हज़रत उम्मुसाइब रज़ियल्लाहु अन्हा बूढ़ी और नाबीना (अंधी) थीं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन औन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, उस उम्मत में ऐसी तीन बातें पाई जाती हैं कि वह अगर बनी इसराईल में होतीं तो कोई उम्मत उनका मुक़ाबला और उनकी बराबरी न कर सकती।

हमने कहा, ऐ अबू हमज़ा! वे तीन बातें क्या हैं? उन्होंने फ़रमाया, एक बार हम लोग सुफ़्फ़ा में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे कि इतने में एक मुहाजिर औरत हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में

1. बैहक़ी,

आई और उसके साथ उसका बेटा भी था जो कि बालिग़ था। हुज़ूर सल्ल० ने उस औरत को (मदीना की) औरतों के सुपुर्द कर दिया और उसके बेटे को हमारे साथ शामिल कर दिया।

कुछ ही दिनों के बाद वह मदीना की वबा में फंस गया और कुछ दिन बीमार रहकर फ़ौत हो गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी आंखें बन्द कीं और हमें उसका जनाज़ा तैयार करने का हुक्म दिया। जब हमने उसे ग़ुस्ल देना चाहा, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जाकर उसकी मां को बता दो।

चुनांचे मैंने उसे बता दिया। वह आई और बेटे के पैरों के पास बैठ गई और उसके दोनों पांव पकड़ कर उसने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! मैं अपनी ख़ुशी से मुसलमान हुई और मेरे दिल का झुकाव बुतों से बिल्कुल हट गया, इसलिए मैंने उसे छोड़ा है और तेरी वजह से बड़े शौक़ से मैंने हिजरत की और मुझ पर यह मुसीबत भेजकर बुतों के पूजने वालों को ख़ुश न कर जो मुसीबत मैं उठा नहीं सकती, वह मुझ पर न डाल।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं, अभी उसकी मां की दुआ ख़त्म नहीं हुई थी कि उसके बेटे ने अपने क़दमों को हिलाया और अपने चेहरे से कपड़ा हटाया (और ज़िंदा होकर बैठ गया) और बहुत दिनों तक ज़िंदा रहा, यहां तक कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो गया और उसके सामने उसकी मां का भी इंतिक़ाल हुआ। फिर आगे और हदीस ज़िक्र की, जिसे कि हम बहुत जल्द ज़िक्र करेंगे।[1]

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के शहीदों में ज़िंदगी की निशानियां

हज़रत अबू नज़रा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, जब उहुद की लड़ाई का वक़्त हुआ, तो रात को मेरे वालिद ने बुलाकर कहा, मेरा ख़्याल यही है कि मैं

1. हाकिम, भाग 2, पृ० 203, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 503,

कल को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में से सबसे पहले शहीद हो जाऊंगा और अल्लाह की क़सम ! मैं किसी को ऐसा नहीं छोड़कर जा रहा हूं जो हुज़ूर सल्ल० की ज़ात के बाद मुझे तुमसे ज़्यादा प्यारा हो और मुझ पर क़र्ज़ा भी है, वह मेरी तरफ़ से अदा कर देना और अपनी बहनों के बारे में अच्छे व्यवहार की वसीयत क़ुबूल करो।

चुनांचे सुबह को सबसे पहले वही शहीद हुए और मैंने उन्हें एक और सहाबी के साथ एक क़ब्र में दफ़न कर दिया। फिर मेरा जी न माना कि उन्हें एक क़ब्र में किसी दूसरे के साथ रहने दूं, तो मैंने उन्हें छः महीने के बाद क़ब्र से निकाला, तो वह बिल्कुल ऐसे थे, जैसे कि उस दिन थे, जिस दिन मैंने उन्हें क़ब्र में रखा था, सिर्फ़ उनके कान में कुछ फ़र्क़ आया हुआ था।[1]

इब्ने साद की रिवायत में इस तरह से है कि छः महीने गुज़रने के बाद मेरी तबीयत में ज़ोरदार तक़ाज़ा हुआ कि मैं उन्हें अलग दफ़न करूं। चुनांचे मैंने उन्हें क़ब्र से निकाला, तो मैं देखकर हैरान रह गया कि ज़मीन ने उनके जिस्म को बिल्कुल नहीं खाया था, सिर्फ़ कान के लौ पर कुछ असर था।

और इब्ने साद की दूसरी रिवायत में यह है कि मुझे उनके जिस्म में कोई फ़र्क़ नज़र न आया, अलबत्ता उनकी दाढ़ी के कुछ बालों में कुछ फ़र्क़ था जो ज़मीन से लगे हुए थे।[2]

हज़रत अबू ज़ुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जब हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने पानी का चश्मा जारी किया तो एलान किया गया कि हम अपने उहुद की लड़ाई के शहीदों को मुंतक़िल कर लें। चुनांचे हमने उन्हें चालीस साल के बाद निकाला तो उनके जिस्म बिल्कुल नर्म थे और उनके हाथ-पांव मुड़ जाते थे।[3]

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 563
2. हाकिम भाग 3, पृ० 203, बिदाया, भाग 4, पृ० 43
3. इब्ने साद भाग 3, पृ० 563, दलाइल, पृ० 207

अबू नुऐम की एक रिवायत में यह है कि हज़रत अबुज़्ज़ुबैर कहते हैं, हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, लोगों ने अपने शहीदों को चालीस साल के बाद क़ब्रों से निकाला तो वे बिल्कुल तर व ताज़ा थे।[1]

इब्ने इस्हाक़ ने मग़ाज़ी में इस क़िस्से को ज़िक्र किया है, वह कहते हैं, मेरे वालिद ने अंसार के कुछ बुज़ुर्गों से नक़ल किया है कि जब हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने पानी का वह चश्मा चलाया जो शहीदों की क़ब्रों के पास से गुज़रता था, तो उसका पानी उन क़ब्रों में जाने लगा।

हमने जाकर हज़रत अम्र रज़ि० और हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० को निकाला, तो उन पर दो चादरें थीं, जिनसे उनके चेहरों को ढांका हुआ था और दोनों के पैरों पर कुछ घास पड़ी हुई थी और उनके जिस्म इधर-उधर मुड़ जाते थे और ऐसे मालूम होता था कि जैसे कल ही ये दोनों दफ़न किए गए हों।[2]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत मुआविया बिन अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में एक आदमी मेरे पास आया और उसने कहा, हज़रत मुआविया रज़ि० के कारिंदों ने आपके वालिद की क़ब्र को उखाड़ फेंका और उनके जिस्म का कुछ हिस्सा ज़ाहिर हो गया है।

मैंने जाकर देखा तो वह बिल्कुल वैसे ही थे जैसे कि मैंने उनको दफ़न किया था, उनके जिस्म में कोई तब्दीली नहीं आई थी। लड़ाई के मैदान में जो घाव उनको आए थे, बस वही आए थे, उसके बाद मैंने उनको फिर दफ़न कर दिया।[3]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान बिन अबी सासआ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे यह बात पहुंची है कि हज़रत

1. कंज़, भाग 5, पृ० 274,
2. फ़त्हुल बारी, भाग 3, पृ० 142,
3. वफ़ाउल वफ़ा, भाग 2, पृ० 116, अवजज़, भाग 2, पृ० 108,

अम्र बिन जमूह अंसारी सलमी और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र अंसारी सलमी रज़ियल्लाहु अन्हुमा दोनों उहुद की लड़ाई में शहीद हुए और दोनों को एक क़ब्र में दफ़न किया गया था। दोनों की क़ब्रों के पास से एक बरसाती नाला गुज़रता था।

एक बार बरसाती नाले के पानी से इन हज़रात की क़ब्र खुल गई। इस पर जगह बदलने के लिए उनकी क़ब्र को खोदा गया, तो इन हज़रात के जिस्मों में कोई तब्दीली नहीं आई थी और ऐसे मालूम होता था कि जैसे कल ही दफ़न किए गए हों। दोनों में से एक साहब ज़ख़्मी हुए थे और उनका हाथ ज़ख़्म पर रखकर उन्हें दफ़न कर दिया गया था। अब उनका हाथ ज़ख़्म से हटा कर छोड़ा गया तो वह अपनी जगह ज़ख़्म पर वापस आ गया जैसे कि पहले था। क़ब्र खोदने का यह वाक़िया उहुद की लड़ाई के छियालीस साल बाद पेश आया था।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु लाल रंग के थे और उनके सर पर बाल नहीं थे और उनका क़द लम्बा नहीं था और हज़रत अम्र बिन जमूह रज़ियल्लाहु अन्हु लम्बे क़द वाले थे, इसलिए उहुद की लड़ाई के दिन सहाबा ने दोनों हज़रात को पहचान लिया था और दोनों को एक ही क़ब्र में दफ़न किया था।

इन हज़रात की क़ब्र एक बरसाती नाले के क़रीब थी। एक बार उसका पानी उनकी क़ब्र में दाख़िल हो गया था जिसकी वजह से उनकी क़ब्र खोदी गई तो दोनों हज़रात पर दो काली सफ़ेद धारियों वाली चादरें थीं।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० के चेहरे पर ज़ख़्म था। उनका हाथ उनके ज़ख़्म पर रखा हुआ था। जब उनका हाथ ज़ख़्म से हटाया गया तो ख़ून फिर बहने लगा और जब ज़ख़्म पर रखा गया तो ख़ून रुक गया।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैंने देखा तो ऐसे लगा कि जैसे मेरे वालिद अपनी क़ब्र में सो रहे हों और उनकी जिस्मानी

1. अवजज़, भाग 4, पृ० 107

हालत में किसी क़िस्म की कोई तब्दीली नहीं आई थी।

हज़रत जाबिर रज़ि० से पूछा गया कि आपने उनका कफ़न देखा था। उन्होंने कहा, हां। उन्हें सिर्फ़ एक धारीदार चादर में कफ़न दिया गया था, जिससे उनका चेहरा छिप गया था और उनके पांव पर हरमल पौधे डाल दिए गए थे। हमें वह चादर भी उसी हाल में ठीक मिली और उनके पैरों पर हरमल पौधे भी अपनी असली हालत पर थे, हालांकि दफ़नाने के छियालीस साल बाद उनकी क़ब्र खोदी गई थी।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने उहुद की लड़ाई के चालीस साल बाद उहुद के शहीदों के पास से नहर चलाई तो उनकी तरफ़ से हम शहीदों के वारिसों में एलान किया गया कि हम अपने शहीदों को संभाल लें, हमने वहां जाकर उन्हें निकाला। कुदाल हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के पांव को लगा तो उसमें से ख़ून बहने लगा।[2]

हज़रत अम्र बिन दीनार और हज़रत अबू ज़ुबैर रहमतुल्लाहि अलैहिमा कहते हैं, कुदाल हज़रत हमज़ा रज़ि० के पांव को लगा तो उसमें से ख़ून बहने लगा, हालांकि उनको दफ़न हुए चालीस साल हो चुके थे।[3]

शेख़ समहूदी रहमतुल्लाहि अलैहि की तहक़ीक़ यह है कि यह घटना तीन बार घटी। एक बार दफ़न के छः महीने बाद, दूसरी बार चालीस साल बाद, जब वहां नहर चलाई गई और तीसरी बार छियालीस साल बाद, जब बरसाती नाले का पानी क़ब्र में दाख़िल हुआ था। इसकी वजह यह है कि हर वाक़िया के बारे में बहुत-सी रिवायतें नक़ल की गई हैं और यह सहाबा रज़ि० की खुली करामत है और इसी वजह से यह वाक़िया बार-बार पेश आया।[4]

---

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 562,
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 43,
3. दलाइल, पृ० 207,
4. वफ़ाउल वफ़ा, भाग 2, पृ० 116-117, अवजज़, भाग 4, पृ० 111

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की क़ब्रों से मुश्क की ख़ुश्बू का आना

हज़रत मुहम्मद बिन शुरहबील रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र से एक मुट्ठी मिट्टी ली। जब उसने मुट्ठी खोली तो वह मुश्क थी। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुश होकर फ़रमाया—

سُبْحَانَ اللّٰهِ سُبْحَانَ اللّٰهِ

'सुब्हानल्लाह ! सुब्हानल्लाह !'

और ख़ुशी की निशानियां हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरे पर नज़र आ रही थीं।[1]

इब्ने साद में दूसरी रिवायत यह है कि हज़रत मुहम्मद बिन शुरहबील कहते हैं, एक आदमी ने हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० की क़ब्र से मुट्ठी भर मिट्टी ली और मिट्टी लेकर चला गया, फिर कुछ देर बाद उसने मिट्टी को देखा तो वह मुश्क थी।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं भी उन लोगों में था, जिन्होंने बक़ीअ में हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र खोदी थी। हम जब भी मिट्टी खोदते तो उसमें से हमें मुश्क की ख़ुश्बू आती और ख़ुश्बू का सिलसिला यों ही रहा, यहां तक कि हम लहद तक पहुंच गए।[2]

मक़्तूल सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का आसमान की तरफ़ उठाया जाना

हज़रत उर्वः रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब सहाबा रज़ि० बेरे मऊना की लड़ाई में शहीद हो गए और हज़रत अम्र बिन उमैया ज़मरी

---

1. कंज़, भाग 7, पृ० 41, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 431,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 431,

रज़ियल्लाहु अन्हु क़ैद हो गए, तो आमिर बिन तुफ़ैल ने एक शहीद सहाबी की ओर इशारा करके पूछा कि यह कौन है? हज़रत अम्र बिन उमैया ने कहा, यह हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरा रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

आमिर बिन तुफ़ैल कहता है, मैंने उनके शहीद होने के बाद देखा कि उनको आसमान की तरफ़ उठाया जा रहा है। फिर मैंने आसमान की तरफ़ देखा तो आसमान उनके और ज़मीन के दर्मियान था, फिर उनकी लाश को वापस ज़मीन पर रख दिया गया। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास उन शहीद सहाबा रज़ि० की ख़बर पहुंची तो आपने सहाबा को उनकी शहादत की ख़बर दी और फ़रमाया, तुम्हारे साथी शहीद कर दिए गए हैं। और उन्होंने अपने रब से यह सवाल किया कि ऐ हमारे रब! हमारे भाइयों को हमारी ख़बर कर दे और यह भी बता दे कि हम तुमसे राज़ी हैं और तू हमसे राज़ी है। इस तरह हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा को उनकी ख़बर दी।

इन शहीद होने वालों में हज़रत उर्वः बिन अस्मा बिन सल्त रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मुन्ज़िर बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे, जो नेक फ़ाल लेने की नीयत से हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने एक बेटे का नाम उर्वः और दूसरे का नाम मुंज़िर रखा।[1]

और वाक़दी ने ज़िक्र किया कि हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरा के क़ातिल जब्बार बिन सुलमा किलाबी थे। वह कहते हैं, जब मैंने उन्हें नेज़ा मारा, तो उन्होंने कहा, काबा के रब की क़सम! मैं कामियाब हो गया।

मैंने बाद में पूछा कि यह ख़ुद क़त्ल हो रहे हैं, लेकिन कह रहे हैं, मैं कामियाब हो गया, तो इस कामियाबी का क्या मतलब? लोगों ने कहा, वह कामियाबी जन्नत की है। मैंने कहा, उन्होंने सच कहा, फिर इसी बात पर मैं मुसलमान हो गया, रज़ियल्लाहु अन्हु।

हज़रत उर्वः रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, बाद में हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरा रज़ियल्लाहु अन्हु का जिस्म वहां कहीं न मिला। सहाबा रज़ि०

1. बुख़ारी, बैहक़ी, वाक़दी

यही समझते हैं कि फ़रिश्तों ने उन्हें दफ़न कर दिया था।[1]

वाक़दी में है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, फ़रिश्तों ने उनके जिस्म को दफ़न किया और उनको इल्लीयीन में जगह दी गई।[2]

हज़रत उर्वः रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, आमिर बिन तुफ़ैल ने शहीद होने वाले सहाबा में से एक के बारे में कहा था कि जब वह क़त्ल हो गए तो उन्हें आसमान और ज़मीन के दर्मियान में उठा लिया गया, यहां तक कि आसमान मुझे उनके नीचे नज़र आ रहा था। लोगों ने बताया कि वह हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरा रज़ियल्लाहु अन्हु थे।[3]

हज़रत ज़ोहरी कहते हैं, मुझे यह बात पहुंची है कि इन लोगों ने हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरा रज़ि० के जिस्म को बहुत तलाश किया, लेकिन उन्हें कहीं न मिला, इसलिए लोगों को यक़ीन है कि फ़रिश्तों ने उन्हें दफ़न कर दिया।[4]

मरने के बाद सहाबा किराम रज़ि० के जिस्म की हिफ़ाज़त

हज़रत अम्र बिन उमैया रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे अकेले को जासूस बनाकर क़ुरैश की तरफ़ भेजा। मैं हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हु की (उस) लकड़ी के पास गया, (जिस पर हज़रत ख़ुबैब रज़ि० को सूली पर चढ़ाया गया था और उनका जिस्म अभी तक उस पर लटक रहा था) और मुझे जासूसी का भी डर था कि कहीं उनको पता न लग जाए।

चुनांचे लकड़ी पर चढ़कर मैंने हज़रत ख़ुबैब रज़ि० को खोला, जिससे वह ज़मीन पर गिर गए। फिर मैं (छिपने के लिए) थोड़ी दूर एक तरफ़ को चला गया।

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 72, दलाइल, पृ० 186,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 231,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 110,
4. दलाइल, पृ० 186, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 231,

फिर मैंने आकर देखा तो हज़रत ख़ुबैब रज़ि० मुझे कहीं नज़र न आए और ऐसे लगा कि जैसे ज़मीन उन्हें निगल गई हो और उस वक़्त तक उनका कोई निशान नज़र नहीं आया।[1]

हज़रत अम्र बिन उमैया रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे अकेले को जासूस बनाकर भेजा था। मैं हज़रत ख़ुबैब रज़ि० की लकड़ी के पास गया, फिर आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[2]

हज़रत ज़ह्हाक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मिक़्दाद और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हु को सूली की लकड़ी से नीचे उतारने के लिए भेजा। वे दोनों तनईम पहुंचे, (जहां मक्का से बाहर हज़रत ख़ुबैब रज़ि० को सूली दी गई थी) तो उन्हें वहां हज़रत ख़ुबैब रज़ि० के चारों ओर चालीस आदमी नशे में बदमस्त मिले।

उन दोनों ने हज़रत ख़ुबैब रज़ि० को लकड़ी से उतारा। फिर हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने उनकी लाश को अपने घोड़े पर रख लिया। उनका जिस्म बिल्कुल तर व ताज़ा था। उसमें कोई तब्दीली नहीं आई थी। फिर मुश्रिकों को इन हज़रात का पता चल गया। उन्होंने इन हज़रात का पीछा किया।

जब मुश्रिक उनके पास पहुंच गए तो हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने (मजबूर होकर) हज़रत ख़ुबैब रज़ि० की लाश को नीचे फेंक दिया, जिसे फ़ौरन ज़मीन ने निगल लिया। इसी वजह से हज़रत ख़ुबैब रज़ि० का नाम बलीउल अर्ज़ रखा गया। (उसका तर्जुमा यह है, वह आदमी जिसे ज़मीन ने निगल लिया था।)[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने इस उम्मत में ऐसी

---

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 321,
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 67, दलाइल, पृ० 227, इसाबा, भाग 1, पृ० 419
3. इसाबा, भाग 1, पृ० 419,

तीन बातें पाई हैं कि अगर वे बनी इसराईल में होतीं तो कोई उम्मत उनका मुक़ाबला और उनकी बराबरी न कर सकती, इसके बाद हदीस का कुछ हिस्सा अभी गुज़रा है।

इसके बाद यह मज़्मून है कि कुछ मुद्दत ही गुज़री थी कि हज़रत हज़रमी का इंतिक़ाल हो गया और हमने ग़ुस्ल देकर उनका जनाज़ा तैयार कर दिया, फिर क़ब्र खोद कर उन्हें दफ़न कर दिया। दफ़न के बाद एक आदमी आया और उसने पूछा, यह कौन है? हमने कहा, यह उस ज़माने के इंसानों में सबसे बेहतरीन हैं। यह हज़रत इब्ने हज़रमी हैं।

उसने कहा, यह ज़मीन मुर्दों को बाहर फेंक देती है। अगर आप लोग इनको एक दो मील दूर ले जाकर दफ़न कर दो, तो अच्छा है, क्योंकि वहां की ज़मीन मुर्दों को क़ुबूल कर लेती है। हमने कहा, हमारे इस साथी के लिए उनके एहसानात और नेकी का यह बदला तो मुनासिब नहीं है कि हम उन्हें यहां दफ़न रहने दें। इस तरह तो उनकी लाश बाहर आ जाएगी और उन्हें दरिन्दे खा जाएंगे।

चुनांचे हम सबने इस पर इत्तिफ़ाक़ किया कि क़ब्र खोद कर उन्हें निकाला जाए और दूसरी जगह दफ़न किया जाए। हमने क़ब्र खोदनी शुरू की। जब हम लहद पर पहुंचे, तो हम देखकर हैरान हर गए, क्योंकि लहद में उनकी लाश मौजूद नहीं थी, और उसमें जहां तक निगाह जा रही थी, नूर चमक रहा था। हमने लहद पर दोबारा मिट्टी डाल दी और वहां से चल दिए।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इस वाक़िए को बयान किया है। उसमें यह मज़्मून है कि हज़रत इब्ने हज़रमी रज़ि० को हम लोगों ने रेत में दफ़न कर दिया, वहां से कुछ दूर ही हम गए थे तो हमने कहा, कोई दरिंदा आकर इन्हें खा जाएगा। हमने वापस आकर उन्हें क़ब्र में देखा तो वह हमें नज़र न आए।[2]

---

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 155, 292
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 376,

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हमने उनके लिए तलवारों से क़ब्र खोदी, लेकिन लहद न बनाई और उन्हें दफ़न करके आगे चल दिए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी ने कहा, हमने उनको दफ़न तो कर दिया है, लेकिन क़ब्र में उनके लिए लहद न बनाई। यह हमने अच्छा न किया। इस पर लहद बनाने के लिए वापस आए तो हमें उनकी क़ब्र की जगह ही न मिली।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक फ़ौज भेजी और उन पर हज़रत आसिम बिन साबित बिन अबिल अफ़लह रज़ियल्लाहु अन्हु को अमीर बनाया फिर आगे हज़रत ख़ुबैब बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हु का लम्बा क़िस्सा ज़िक्र किया है और उसके बाद यह है कि हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, मैं किसी मुश्रिक के अह्द में आना नहीं चाहता। (आख़िर शहीद हो गए)

उन्होंने अल्लाह से यह अह्द किया था कि यह किसी मुश्रिक को हाथ नहीं लगाएंगे और न कोई मुश्रिक उन्हें हाथ लगा सके।

हज़रत आसिम रज़ि० ने बद्र की लड़ाई के दिन क़ुरैश के एक बड़े सरदार को क़त्ल किया था, इसलिए क़ुरैश ने एक जमाअत भेजी जो उनके जिस्म का कुछ हिस्सा काटकर ले आए, तो अल्लाह ने शहद की मक्खियों का या भिड़ों का एक ग़ोल भेज दिया, जिसने उनके बदन को चारों तरफ़ से घेरकर उन्हें काफ़िरों से बचा लिया, इसी वजह से उन्हें हमीयुद्दब्र कहा जाता था। (इसका तर्जुमा है वह आदमी जिसे शहद की मक्खियों या भिड़ों ने दुश्मन से बचाया।)[2]

हज़रत उर्वः रहमतुल्लाहि अलैहि उसी क़िस्से में यह ज़िक्र करते हैं कि मुश्रिकों ने इस बात का इरादा किया कि उनका सर काट कर मक्का के मुश्रिकों के पास भेज दें, लेकिन अल्लाह ने शहद की मक्खियां या

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 363, दलाइल, पृ० 208,
2. इसाबा, भाग 2, पृ० 245,

भिड़ें भेज दीं, जिन्होंने उन्हें हर तरफ़ से घेर लिया। वे मुश्रिकों के चेहरों पर उड़ती थीं और उन्हें काटती थीं। इस तरह उन्होंने मुश्रिकों को हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु अन्हु का सर काटने न दिया।[1]

दरिन्दों का सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के ताबे होना और उनसे बातें करना

हज़रत हमज़ा बिन अबी उसैद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक अंसारी के जनाज़े के लिए बक़ीअ तशरीफ़ ले गए। रास्ते में एक भेड़िया अपने बाज़ू फैलाए हुए बैठा था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह तुम्हारी बकरियों में से अपना हिस्सा मुक़र्रर करवाने आया है, इसलिए इसका हिस्सा मुक़र्रर कर दो।

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, जो आपकी राय हो, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने फ़रमाया, हर चरने वाले रेवड़ में से हर साल एक बकरी (उसे दे दिया करो) सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, यह तो ज़्यादा है। हुज़ूर सल्ल० ने इशारा करके भेड़िए से कहा, तुम चुपके से झपट्टा मारकर ले जाया करो। फिर वह भेड़िया चला गया।[2]

हज़रत मुत्तलिब बिन अब्दुल्लाह बिन हंतब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम मदीने में थे। एक भेड़िया आकर आपके सामने खड़ा हो गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, यह दरिंदों की तरफ़ से नुमाइन्दा बनकर आया है। अगर तुम चाहो तो इसके लिए कुछ हिस्सा मुक़र्रर कर दो। यह उसे लेगा और इससे ज़्यादा लेने की कोशिश नहीं करेगा और अगर चाहो तो उसे उसके हाल पर छोड़ दो और अपने जानवर उससे बचाने की कोशिश करो और यह दाव लगाकर तुम्हारे जानवर जितने ले गया, वह उसका हिस्सा।

सहाबा किराम रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमारा

1. दलाइल, पृ० 183,
2. बैहक़ी,

दिल तो नहीं चाहता कि हम उसे कुछ अपने हाथ से ख़ुद दें। हुज़ूर सल्ल० ने तीन उंगलियों से इशारा करके भेड़िए से कहा, तुम झपट्टा मारकर ले जाया करो। चुनांचे वह भेड़िया आवाज़ निकालता हुआ वापस चला गया।[1]

क़बीला जुहैना के एक साहब कहते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ चुके तो सौ के क़रीब भेड़िए भेड़ियों के नुमाइन्दे बनकर आए और आकर बैठ गए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह भेड़ियों का वफ़्द आप लोगों के पास आया है। ये लोग चाहते हैं कि आप लोग अपने जानवरों में से उनका हिस्सा मुक़र्रर करके उन्हें दे दिया करें और बाक़ी जानवरों के बारे में आप लोग बिल्कुल बे-फ़िक्र और बे-ख़ौफ़ होकर रहा करें।

सहाबा रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से फ़क्र व फ़ाक़ा और तंगी की शिकायत की। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इन्हें वापस भेज दो (और बता दो कि आप लोग इनकी तज्वीज़ पर अमल नहीं कर सकते) चुनांचे वे भेड़िए आवाज़ें निकालते हुए मदीना से बाहर चले गए।[2]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत सफ़ीना रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं समुद्र में सफ़र कर रहा था। जिस कश्ती में मैं था, वह टूट गयी। मैं उसके एक तख़्ते पर बैठ गया। उस तख़्ते ने मुझे ऐसे घने जंगल में ला फेंका जिसमें शेर थे। एक शेर मुझे खाने के लिए आया।

मैंने कहा, ऐ अबुल हारिस ! (यह शेर की कुन्नियत यानी उपनाम है) मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ग़ुलाम हूं। इस पर उसने अपना सर झुका दिया और आगे बढ़कर मुझे कंधा मारा, (और मेरे आगे-आगे चल पड़ा) यहां तक कि मुझे जंगल से बाहर लाकर रास्ते पर डाल दिया, फिर धीरे से आवाज़ निकाली, जिससे मैं यह समझा कि यह

---

1. वाक़दी,
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 146,

मुझे रुख़सत कर रहा है। यह मेरी उस शेर से आख़िरी मुलाक़ात थी।[1]

हज़रत सफ़ीना रज़ियल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं, मैं समुन्दर में सफ़र कर रहा था। हमारी नाव टूट गई। (हम एक जंगल में पहुंच गए) हमें आगे रास्ता नहीं मिल रहा था। वहां एक शेर एकदम हमारे सामने आया, जिसे देखकर मेरे साथी पीछे हट गए। मैंने शेर के क़रीब जाकर कहा, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सहाबी सफ़ीना हूं। हम रास्ते से भटक गए हैं, (हमें रास्ता बताओ।) वह मेरे आगे चल पड़ा और चलते-चलते हमें रास्ते पर ला खड़ा किया, फिर उसने मुझे ज़रा धक्का दिया, गोया कि वह मुझे रास्ता दिखा रहा था, फिर एक तरफ़ को हट गया। मैं समझ गया कि यह अब हमें रुख़सत कर रहा है।[2]

हज़रत इब्ने मुन्कदिर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आज़ाद किए हुए गुलाम हज़रत सफ़ीना रज़ियल्लाहु अन्हु रूम देश में अपनी फ़ौज से बिछड़ गए या उनको वहां रूमियों ने क़ैद कर लिया था। यह किसी क़ैद से भाग निकले और अपनी फ़ौज खोज रहे थे, तो वह अचानक एक शेर के पास पहुंचे।

उन्होंने कहा, ऐ अबुल हारिस! मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का गुलाम हूं और मेरे साथ ऐसे और ऐसे हुआ। (उन्होंने लश्कर से बिछुड़ने, क़ैद से भागने का सारा वाक़िया तफ़्सील से उसे सुनाया।) वह शेर दुम हिलाता हुआ आगे आकर उनके पास खड़ा हो गया (और इस तरह उसने अपने ताल्लुक़ और फ़रमांबरदारी को ज़ाहिर किया, फिर आगे-आगे चलकर) और रास्ते में जब किसी जानवर की आवाज़ किसी की तरफ़ से सुनता तो दौड़कर उसकी तरफ़ जाता और उसे भगा देता, फिर उनके पास उनके पहलू में आ जाता।

सारे रास्ते में वह ऐसे ही करता रहा, यहां तक कि उसने उन्हें उनकी

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 606, अत-तारीख़ुल कबीर, भाग 2, पृ० 179, हुलीया, भाग 1, पृ० 369, दलाइल, पृ० 212, बिदाया, भाग 5, पृ० 316, मज्मा, भाग 9, पृ० 366
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 367

फ़ौज तक पहुंचा दिया और फिर वापस चला गया।[1]

हज़रत वह्ब बिन अबान क़ुरशी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा एक सफ़र में गए। वह चले जा रहे थे कि रास्ते में एक जगह उन्हें कुछ लोग खड़े हुए मिले। उन्होंने पूछा, क्या बात है? ये लोग क्यों खड़े हुए हैं?

लोगों ने बताया, आगे रास्ते पर एक शेर है, जिससे ये डरे हुए हैं। हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी सवारी से नीचे उतरे और चलकर उस शेर के पास गए और उसके कान को पकड़ कर मरोड़ा और उसकी गरदन पर थप्पड़ मारकर उसे रास्ते से हटा दिया। फिर (वापस आते हुए अपने आपसे) फ़रमाया—

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुम्हें ग़लत बात नहीं फ़रमाई। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना, इब्ने आदम पर वही चीज़ मुसल्लत होती है, जिससे इब्ने आदम डरता है। अगर इब्ने आदम अल्लाह के सिवा किसी और चीज़ से न डरे, तो उस पर अल्लाह के अलावा और कोई चीज़ मुसल्लत न हो, इब्ने आदम उसी चीज़ के हवाले कर दिया जाता है, जिस चीज़ से उसे नफ़ा या नुक़्सान मिलने का यक़ीन होता है। अगर इब्ने आदम अल्लाह के अलावा किसी और चीज़ से नफ़ा या नुक़्सान का यक़ीन न रखे तो अल्लाह उसे किसी और चीज़ के बिल्कुल हवाले न करे।[2]

हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं अरीहा मक़ाम के एक गिरजाघर में दोपहर को सो रहा था, अब तो यह मस्जिद बन चुकी है और उसमें नमाज़ पढ़ी जाती है। जब मेरी आंख खुली तो मैंने देखा कि कमरे में एक शेर है जो मेरी तरफ़ आ रहा है। मैं घबरा कर अपने हथियारों की तरफ़ उठा। शेर ने मुझसे कहा, ठहर जाओ, मुझे एक पैग़ाम देकर तुम्हारे पास भेजा गया है, ताकि तुम उसे आगे पहुंचा दो।

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 147
2. कंज़, भाग 7, पृ० 59

मैंने कहा, तुम्हें किसने भेजा है?

उसने कहा, मुझे अल्लाह ने आपके पास इसलिए भेजा है ताकि आप बहुत सफ़र करने वाले मुआविया रज़ि० को बता दें कि वह जन्नत वालों में से हैं।

मैंने कहा, यह मुआविया रज़ि० कौन से हैं?

उसने कहा, हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे। (रज़ियल्लाहु अन्हु)[1]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक भेड़िए ने एक बकरी पर हमला करके उसे पकड़ लिया। बकरी का चरवाहा भेड़िए के पीछे भागा और उसने ज़ोर लगाकर भेड़िए से बकरी को छुड़वा दिया, तो भेड़िया अपनी दुम पर बैठकर कहने लगा, क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते, जो रोज़ी अल्लाह ने मुझे पहुंचाई है, वह तुम मुझसे छीनते हो।

उस चरवाहे ने कहा, क्या अजीब बात है कि भेड़िया मुझसे इंसानों की तरह बात कर रहा है! भेड़िए ने कहा, क्या मैं तुम्हें इससे ज़्यादा अजीब बात न बताऊं? यसरिब में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पिछले ज़माने की ख़बरें लोगों को बता रहे हैं। यह सुनते ही वह चरवाहा अपनी बकरियां हांक कर मदीना पहुंच गया और बकरियों को मदीना के एक कोने में एक जगह इकट्ठा करके हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हो गया और आपको सारा क़िस्सा सुनाया।

हुज़ूर सल्ल० के फ़रमाने पर मदीना में एलान किया गया कि आज सब (मस्जिदे नबवी में) नमाज़ इकट्ठे पढ़ें, (अपनी मस्जिदों में न पढ़ें) जब लोग जमा हो गए तो आपने बाहर आकर उस चरवाहे से फ़रमाया, इन्हें वह वाक़िया सुनाओ। उसने तमाम लोगों के सामने यह वाक़िया बयान किया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उसने सच कहा है, उस ज़ात की क़सम,

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 357,

जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है, उस वक़्त तक क़ियामत न क़ायम होगी, जब तक दरिंदे इंसानों से बातें न करने लगें और आदमी से उसके कोड़े का सिरा और उसकी जूती का तस्मा बात न करने लगे। उसके घरवालों ने उसके बाद जो गड़बड़ की है, वह उसे उसकी रान न बताए।[1]

क़ाज़ी अयाज़ ने ज़िक्र किया है कि भेड़िए से हज़रत उह्बान बिन औस रज़ियल्लाहु अन्हु ने बात की थी, इसलिए उन्हें भेड़िए से बात करने वाला कहकर पुकारा जाता था और इब्ने वह्ब ने रिवायत की है कि भेड़िए से बात करने का वाक़िया हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हर्ब और हज़रत सफ़वान बिन उमैया रज़ियल्लाहु अन्हुमा के साथ भी पेश आया था। उन्होंने देखा कि एक भेड़िया एक हिरन को पकड़ने की कोशिश कर रहा है। इतने में हिरन हरम में दाख़िल हो गया तो वह भेड़िया वापस जाने लगा। इससे उन दोनों को ताज्जुब हुआ।

इस पर उस भेड़िए ने कहा, इससे ज़्यादा अजीब बात यह है कि हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मदीना में तुम्हें जन्नत की दावत दे रहे हैं और तुम उन्हें जहन्नम की आग की दावत दे रहे हो। (ये दोनों हज़रात उस वक़्त तक इस्लाम में दाख़िल नहीं हुए थे, इसलिए हज़रत सफ़वान रज़ि० से) हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि० ने कहा, लात व उज़्ज़ा की क़सम ! अगर तुमने मक्का में इस बात का तज़्किरा कर दिया तो सारे मक्का वाले मक्का छोड़ देंगे और मदीना चले जाएंगे।)[2]

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए दरियाओं और समुंदरों का मुसख़्ख़र होना

हज़रत क़ैस बिन हज्जाज अपने उस्ताद से नक़ल करते हैं कि हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब मिस्र जीत लिया तो अजमी महीनों में से बूना महीने के शुरू होने पर मिस्र वाले उनके पास आए

1. अहमद, भाग 3, पृ० 83, बिदाया, भाग 6, पृ० 143, 44, 45
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 146,

और कहा अमीर साहब ! हमारे पास नील नदी की एक आदत है, जिसके बग़ैर यह चलता नहीं। हज़रत अम्र रज़ि० ने उनसे पूछा, यह आदत क्या है?

उन्होंने कहा, जब इस महीने की बारह रातें गुज़र जाती हैं, तो हम ऐसी कुंवारी लड़की तलाश करते हैं जो अपने मां-बाप की इकलौती लड़की होती हैं। उसके मां-बाप को राज़ी करते हैं और उसे सबसे अच्छे कपड़े और ज़ेवर पहनाकर उस नील नदी में डाल देते हैं। हज़रत अम्र रज़ि० ने कहा, यह काम तो इस्लाम में हो नहीं सकता, क्योंकि इस्लाम अपने पहले के तमाम (ग़लत) तरीक़े ख़त्म कर देता है।

चुनांचे मिस्र वाले बूना, अबीब और मिस्री तीन महीने ठहरे रहे और धीरे-धीरे नील नदी का पानी बिल्कुल ख़त्म हो गया। यह देखकर मिस्र वालों ने मिस्र छोड़कर कहीं और चले जाने का इरादा कर लिया। जब हज़रत अम्र रज़ि० ने यह देखा तो उन्होंने इस बारे में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त लिखा।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब में लिखा कि आपने बिल्कुल ठीक किया, बेशक इस्लाम अपने से पहले के तमाम ग़लत तरीक़े ख़त्म कर देता है। मैं आपको एक परचा भेज रहा हूं। जब आपको मेरा ख़त मिले तो आप मेरा वह परचा नील नदी में डाल दें।

जब ख़त हज़रत अम्र रज़ि० के पास पहुंचा, तो उन्होंने वह परचा खोला, उसमें यह लिखा हुआ था, 'अल्लाह के बन्दे अमीरुल मोमिनीन उमर रज़ि० की तरफ़ से मिस्र की नील नदी के नाम ! अम्मा बादु ! अगर तुम अपने पास से चलती हो, तो मत चलो और अगर तुम्हें अल्लाह वाहिद क़ह्हार चलाते हैं तो हम अल्लाह वाह्दि क़ह्हार से सवाल करते हैं कि वह तुझे चला दे।'

चुनांचे हज़रत अम्र रज़ि० ने सलेब के दिन से एक दिन पहले यह परचा नील नदी में डाला। उधर मिस्र वाले मिस्र से जाने की तैयारी कर चुके थे, क्योंकि उनकी सारी रोज़ी-रोटी और खेती नील नदी के पानी

पर टिकी हुई थी। सलेब के दिन सुबह लोगों ने देखा कि नील नदी में सोलह हाथ पानी चल रहा है, इस तरह अल्लाह ने मिस्र वालों की उस बुरी रस्म को ख़त्म कर दिया।[1] (उस दिन से लेकर आज तक नील नदी बराबर चल रही है।)

क़बीला बनू साद के ग़ुलाम हज़रत उर्वः आमा कहते हैं, हज़रत अबू रैहाना रज़ियल्लाहु अन्हु एक बार समुद्र का सफ़र कर रहे थे। वह अपनी कुछ कापियां सी रहे थे। अचानक उनकी सूई समुन्दर में गिर गई। उन्होंने उसी वक़्त यों दुआ मांगी, ऐ मेरे रब ! मैं तुझे क़सम देता हूं कि तू मेरी सूई ज़रूर वापस कर दे। चुनांचे उसी वक़्त वह सूई (समुन्दर की सतह पर) ज़ाहिर हुई और हज़रत अबू रैहाना ने वह सूई पकड़ ली।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु को बहरैन की तरफ़ भेजा, तो मैं भी उनके पीछे हो लिया। मैंने उनकी तीन बातें देखीं, मुझे यह पता नहीं कि इनमें से सबसे ज़्यादा अजीब बात कौन-सी है—

एक बात तो यह है कि जब हम समुन्दर के किनारे पर पहुंचे तो उन्होंने कहा, 'बिस्मिल्लाह पढ़कर समुद्र में घुस जाओ।' चुनांचे हम बिस्मिल्लाह पढ़कर (बग़ैर कश्तियों के) समुद्र में घुस गए और हमने (अपने जानवरों पर सवार होकर) समुद्र पार कर लिया और हमारे ऊंटों के पांव भी गीले नहीं हुए।

दूसरी बात यह है कि वहां से जब हम वापस आ रहे थे तो बड़े बयाबान में हमारा गुज़र हुआ। हमारे पास पानी बिल्कुल नहीं था। हमने उनसे शिकायत की। उन्होंने दो रकअत नमाज़ पढ़कर दुआ मांगी तो एकदम आसमान पर ढाल की तरह का बादल आया और वह ख़ूब बरसा और उसने अपने सारे दहाने खोल दिए। हमने ख़ुद भी पानी

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 380, तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 464,
2. इसाबा, भाग 2, पृ० 157

पिया और अपने जानवरों को भी पिलाया।

तीसरी बात यह है कि उनका इन्तिक़ाल हो गया। हमने उनको रेत में दफ़न कर दिया। अभी हम वहां से थोड़ा-सा आगे गए थे कि हमें ख़्याल आया कि उस इलाक़े की ज़मीन पक्की नहीं है। रेतीला इलाक़ा है। कोई दरिन्दा आकर उनकी क़ब्र खोद कर उन्हें खा जाएगा। इस ख़्याल से हम वापस आए तो क़ब्र तो उनकी सही सालिम थी, लेकिन जब हमने उनकी क़ब्र खोदी, तो हमें उनकी लाश क़ब्र में नज़र न आई।[1]

अबू नुऐम की रिवायत में यह भी है कि जब (हम समुन्दर पार करके जज़ीरे में गए और) हमें किसरा की तरफ़ से मुक़र्रर करदा गवर्नर इब्ने मुकाबिर ने यों जानवरों पर आते देखा तो उसने कहा, नहीं अल्लाह की क़सम ! नहीं, हम उनका मुक़ाबला नहीं कर सकते, फिर कश्ती में बैठकर ईरान चला गया।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने इस उम्मत में तीन अजीब बातें पाई हैं, फिर इसके बाद लम्बी हदीस ज़िक्र की है। उसमें यह मज़्मून भी है कि फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक लश्कर तैयार किया और हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु को उनका अमीर बनाया। मैं भी उस लड़ाई में गया था।

जब हम लड़ाई की जगह पहुंचे तो हमने देखा कि दुश्मन को हमारा पता चल गया था और वह पानी के तमाम निशान मिटाकर वहां से जा चुका है। गर्मी सख़्त पड़ रही थी और प्यास के मारे हमारा और हमारे जानवरों का बुरा हाल हो गया था और जुमा का दिन था। जब सूरज डूबने लगा तो हज़रत अला रज़ि० ने हमें दो रक्अत नमाज़ पढ़ाई, फिर उन्होंने आसमान की तरफ़ हाथ उठाए और हमें आसमान में बादल का कहीं नाम व निशान नज़र नहीं आ रहा था।

अल्लाह की क़सम ! हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने हाथ अभी

---

1. दलाइल, पृ० 208, हुलीया, भाग 1, पृ० 8
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 376,

नीचे नहीं किए थे कि अल्लाह ने हवा भेज दी और एक बादल ज़ाहिर कर दिया और वह बादल इतने ज़ोर से बरसा कि सारे तालाब, नाले और वादियां पानी से भर गईं और हमने ख़ुद पानी पिया और अपने जानवरों को पानी पिलाया और अपने मश्कीज़ों और बरतनों को भर लिया।

फिर हम अपने दुश्मन के पास पहुंचे। वे लोग अपनी जगह छोड़कर ख़लीज पार करके समुद्र में एक जज़ीरे में जा चुके थे। उस ख़लीज के किनारे खड़े होकर हज़रत अला रज़ि० ने इन लफ़्ज़ों से अल्लाह को पुकारा—

يَا عَلِيُّ يَا عَظِيْمُ يَا حَلِيْمُ يَا كَرِيْمُ

'या अलीमु या अज़ीमु या हलीमु या करीम०'

फिर हमसे कहा, अल्लाह का नाम लेकर इस समुद्र को पार करो। चुनांचे हम वह समुद्र पार करने लगे, हमारे जानवरों के खुर भी गीले नहीं हो रहे थे।

थोड़ी ही देर में हमने दुश्मन को जा लिया। हमने उन्हें क़त्ल भी किया और गिरफ़्तार भी किया और उन्हें ग़ुलाम भी बनाया। इसके बाद हम फिर उसी ख़लीज के किनारे पर आए और हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह को फिर उन्हीं नामों से पुकारा और हम फिर उस ख़लीज को इस तरह पार करने लगे कि हमारे जानवरों के खुर गीले नहीं हो रहे थे। आगे और हदीस भी ज़िक्र की।[1]

हज़रत सह्म बिन मिनजाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हम हज़रत अला बिन हज़्रमी रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ लड़ाई में गए, फिर सारा वाक़िया ज़िक्र किया और दुआ में इन लफ़्ज़ों का ज़िक्र किया—

يَا عَلِيْمُ يَا حَلِيْمُ يَا عَلِيُّ يَا عَظِيْمُ

'या अलीमु या हलीमु या अलीयु या अज़ीमु'

हम तेरे बन्दे हैं और तेरे रास्ते में और तेरे दुश्मन से लड़ने के इरादे से निकले हैं। हमें ऐसी बारिश अता कर, जिससे हमारे पीने और वुज़ू

1. बैहक़ी, बुख़ारी

के पानी का इन्तिज़ाम हो जाए और जब हम उसे छोड़कर जाएं तो हमारे अलावा और किसी का उसमें हिस्सा न हो और समुन्दर की दुआ में ये लफ़्ज़ हैं और हमारे लिए अपने दुश्मन तक पहुंचने का रास्ता बना दे।[1]

अबू नुऐम की रिवायत में है कि हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हु हमें लेकर समुन्दर में घुस गए। जब हम अन्दर गए, तो पानी हमारी सवारियों के नम्दों तक भी नहीं पहुंचा और हम दुश्मन तक पहुंच गए।

इब्ने जरीर ने अपनी तारीख़ में और इब्ने कसीर ने अल-बिदाया में यह क़िस्सा यों बयान किया है कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु को बहरैन के मुर्तद लोगों से लड़ने के लिए भेजा और उसमें यह क़िस्सा भी ज़िक्र किया कि जिन ऊंटों पर लश्कर का ज़ादे सफ़र और ख़ेमे और पीने का पानी लदा हुआ था, वे सारे ऊंट सामान समेत भाग गए थे और फिर ख़ुद ही सामान समेत आ गए थे।

और यह क़िस्सा भी ज़िक्र किया कि अल्लाह ने मुसलमानों के पड़ाव की जगह के साथ ही साफ़-शफ़्फ़ाफ़ ख़ालिस पानी का हौज़ पैदा फ़रमा दिया और यह भी ज़िक्र किया कि इन लोगों ने मुर्तद लोगों से लड़ाई लड़ी।[2]

इब्ने कसीर ने यह क़िस्सा यों ज़िक्र किया है कि हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुसलमानों से कहा, आओ, (बहरैन जज़ीरे के इलाक़े) दारैन चलते हैं, ताकि वहां जाकर दुश्मन से लड़ाई लड़ें। इस पर सारे मुसलमान फ़ौरन तैयार हो गए। वे उन मुसलमानों को लेकर चल पड़े, यहां तक कि समुद्र के साहिल पर पहुंच गए।

पहले तो उनका ख़्याल हुआ कि कश्तियों के ज़रिए दारैन का सफ़र कर लें, लेकिन फिर यह सोचा कि सफ़र काफ़ी लम्बा है, कश्तियों में जाते-जाते देर लग जाएगी, इतने में अल्लाह के दुश्मन वहां से आगे चले

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 155, हुलीया, भाग 1, पृ० 7
2. तारीख़ इब्ने जरीर, भाग 2, पृ० 522, बिदाया, भाग 1, पृ० 328

जाएंगे और फिर यह दुआ पढ़ते हुए अपने घोड़े को लेकर समुद्र में घुस गए—

يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ، يَا حَكِيْمُ، يَا كَرِيْمُ، يَا أَحَدُ، يَا صَمَدُ، يَا حَيُّ، يَا مُحْيِيْ،
يَا قَيُّوْمُ، يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ، لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ يَا رَبَّنَا،

और लश्कर को भी हुक्म दिया कि वे यह दुआ पढ़ते हुए समुद्र में घुस जाएं। चुनांचे उन्होंने भी ऐसा किया और इस तरह अल्लाह के हुक्म से इन सबको लेकर हज़रत अला रज़ि० ख़लीज को पार कर गए। वह समुद्र में नर्म रेत जैसी जगह पर चल रहे थे, जिस पर इतना पानी कम था कि ऊंटों के पांव भी नहीं डूबते थे और वह पानी घोड़ों के घुटनों तक भी नहीं पहुंच रहा था।

यह सफ़र कश्ती में एक रात एक दिन में तै होता था, लेकिन हज़रत अला रज़ि० ने समुन्दर पार किया और जज़ीरा के साहिल पर पहुंच गए। वहां जाकर दुश्मन से लड़ाई लड़ी और उन पर ग़लबा हासिल किया और उनका माले ग़नीमत समेटा और फिर अपनी पहली जगह वापस भी आ गए और ये सारे काम एक दिन में हो गए।[1]

हज़रत इब्ने रुफ़ैल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, बहुरसीर क़रीब वाला शहर था और दिजला नदी के पार वाला शहर था। जब हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने बहुरसीर को जीत करके उसमें पड़ाव डाल दिया तो उन्होंने नावें तलाश कीं, ताकि लोग दिजला नदी पार करके दूर वाले शहर जा सकें और उसे जीत सकें, लेकिन उन्हें कोई कश्ती न मिल सकी, क्योंकि ईरानी लोग तमाम कश्तियां समेट कर वहां से ले जा चुके थे।

चुनांचे मुसलमान सफ़र महीने के कई दिन बहुरसीर में ठहरे रहे और हज़रत साद रज़ि० के सामने यह बात ज़ाहिर करते रहे कि (नावों के बिना ही) दरिया पार कर लिया जाए, लेकिन मुहब्बत की वजह से वह मुसलमानों को ऐसा करने नहीं देते थे।

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 329, इब्ने असीर, भाग 2, पृ० 520,

फिर वहां के कुछ अजमी काफ़िरों ने आकर उन्हें दरिया पार करने के लिए वह घाट बताया जो वादी की सख़्त जगह पहुंचा देता था, लेकिन हज़रत साद रज़ि० तरद्दुद में पड़ गए और उस घाट में से जाने से इंकार कर दिया। इतने में नदी का पानी चढ़ गया।

फिर हज़रत साद रज़ि० ने ख़्वाब देखा कि नदी में पानी बहुत ज़्यादा चढ़ा हुआ है, लेकिन मुसलमानों के घोड़े दरिया में घुसे हैं और पार हो गए हैं। इस ख़्वाब को देखकर उन्होंने दरिया पार करने का पक्का इरादा कर लिया और लोगों को जमा करके बयान किया और अल्लाह की हम्द व सना के बाद फ़रमाया—

तुम्हारा दुश्मन इस नदी की वजह से तुमसे बचा हुआ है, तुम लोग तो उन तक पहुंच नहीं सकते, लेकिन वे लोग जब चाहें नावों में बैठकर तुम पर हमलावर हो सकते हैं, तुम्हारे पीछे ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिससे तुम पर हमले का ख़तरा हो। मैंने पक्का इरादा कर लिया है कि नदी पार करके दुश्मन पर हमला किया जाए। तमाम मुसलमानों ने एक ज़ुबान होकर कहा, आप ज़रूर ऐसा करें, अल्लाह हमें और आपको हिदायत पर पक्का रखे।

फिर हज़रत साद रज़ि० ने लोगों को दरिया पार करने की दावत देते हुए फ़रमाया, आप लोगों में से कौन इस बात के लिए तैयार है कि पहल करे और नदी पार करके घाट के दूसरे किनारे पर क़ब्ज़ा करे और उस किनारे के दुश्मन से हिफ़ाज़त करे, ताकि दुश्मन मुसलमानों को उस किनारे तक पहुंचने से न रोक सके।

इस पर हज़रत आसिम बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ौरन तैयार हो गए और उनके बाद और छः सौ बहादुर आदमी तैयार हो गए।

हज़रत साद रज़ि० ने हज़रत आसिम रज़ि० को उनका अमीर बनाया। हज़रत आसिम रज़ि० उनको लेकर चले, फिर दिजला के किनारे खड़े होकर अपने साथियों से कहा, आपमें से कौन मेरे साथ चलने को तैयार है, ताकि हम घाट के परले किनारे को दुश्मन से महफ़ूज़

कर लें। इस पर उनमें से साठ (60) आदमी तैयार हो गए।

हज़रत आसिम रज़ि० ने उनको दो हिस्सों में बांट दिया। आधे लोगों को घोड़ों पर और आधे लोगों को घोड़ियों पर बिठाया, ताकि घोड़ों के लिए तैरने में आसानी रहे, फिर वे लोग दजिला में दाख़िल हो गए (और दरिया को अल्लाह की मदद से पार कर लिया) जब हज़रत साद रज़ि० ने देखा कि हज़रत आसिम रज़ि० ने घाट के परले किनारे पर क़ब्ज़ा करके महफ़ूज़ कर लिया है, तो उन्होंने तमाम लोगों को दरिया में घुस जाने का हुक्म दे दिया और फ़रमाया, यह दुआ पढ़ो—

نَسْتَعِينُ بِاللّٰهِ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَحَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا
بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

और लश्कर के अक्सर लोग एक दूसरे के पीछे चलने लगे और गहरे पानी पर भी चलते रहे, हालांकि दजिला नदी बहुत जोश में थी और बहुत झाग फेंक रही थी और रेत और मिट्टी की वजह से उसका रंग काला हो रहा था और लोगों की दो-दो की जोड़ियां बनी हुई थीं और वे दरिया पार करते हुए आपस में इस तरह बातें कर रहे थे जिस तरह ज़मीन पर चलते हुए किया करते थे।

ईरान वाले यह मंज़र देखकर हैरान रह गए, क्योंकि उन्हें इसका वह्म व गुमान भी नहीं था, वे लोग घबरा कर ऐसे जल्दी में भागे कि अपना अक्सर माल वहां ही छोड़ गए और 16 हिजरी सफ़र के महीने में मुसलनमान उस शहर में दाख़िल हुए और किसरा के ख़ज़ानों में जो तीन अरब थे, उन पर भी मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो गया और शेरवैह और उसके बाद के बादशाहों ने जो कुछ जमा किया था, उस पर भी क़ब्ज़ा हो गया।[1]

हज़रत अबूबक्र बिन हफ़्स बिन उमर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, घोड़े मुसलमानों को लेकर पानी पर तैर रहे थे। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु चल रहे थे और साद

1. दलाइल, पृ० 208, तारीख़े तबरी, भाग 3, पृ० 119, बिदाया, भाग 7, पृ० 64,

रज़ि० कह रहे थे, अल्लाह हमें काफ़ी है और वह बेहतरीन कारसाज़ है। अल्लाह की क़सम! अगर हमारे लश्कर में बदकारी और गुनाह इतने नहीं हैं जो नेकियों पर ग़ालिब आ जाएं तो अल्लाह ज़रूर अपने दोस्त की मदद करेंगे और अपने दीन को ग़ालिब करेंगे और अपने दुश्मन को हरा देंगे।

हज़रत सलमान रज़ि० ने उनसे कहा, इस्लाम अभी नया है और अल्लाह की क़सम! मुसलमानों के लिए आज समुद्र और नदी ऐसे सधा दिए गए हैं, जैसे उनके लिए ख़ुश्की मुसख़्ख़र थी। ग़ौर से सुनें, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में सलमान की जान है, मुसलमान जैसे नदी में फ़ौज दर फ़ौज दाख़िल हुए हैं, ऐसे ही उससे फ़ौज दर फ़ौज निकल भी ज़रूर जाएंगे।

चुनांचे मुसलमान दरिया के एक किनारे से दूसरे किनारे तक ऐसे छा गए कि पानी किसी जगह भी नज़र नहीं आ रहा था और ख़ुश्की पर चलते हुए वे जितनी बातें आपस में करते थे, अब उससे ज़्यादा कर रहे थे और जैसे हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा था, मुसलमान आख़िर दरिया से बाहर निकल गए, न उनकी कोई चीज़ गुम हुई और न उनमें से कोई डूबा।[1]

हज़रत अबू उस्मान नह्दी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, सारे मुसलमान सही-सालिम पार हो गए, अलबत्ता बारिक़ चश्मे का रहने वाला, जिसे ग़रक़दा कहा जाता था, वह अपनी लाल घोड़ी की पीठ से नीचे गिर गया और वह मंज़र अब भी मेरी आंखों के सामने है कि उसकी घोड़ी अपनी गरदन के बालों से पसीना झाड़ रही थी। गिरने वाले साहब पानी के ऊपर ही थे।

हज़रत क़ाक़ाअ बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने घोड़े की लगाम उनकी ओर मोड़ी और अपने हाथ से उन्हें पकड़ कर खींचते रहे, यहां तक कि वह भी दरिया के पार हो गए और लश्कर में से किसी की

1. दलाइल, पृ० 209, तारीख़े इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 121,

भी कोई चीज़ पानी में नहीं गिरी। सिर्फ़ एक प्याला गिरा था जो एक पुरानी रस्सी से बंधा हुआ था। वह रस्सी टूट गई, इसलिए प्याला गिर गया और पानी उसे बहाकर ले गया।

प्याले वाले के जोड़ीदार ने शर्म दिलाते हुए उससे कहा, तुम्हारे प्याले को तक़्दीर का ऐसा तीर लगा कि वह पानी में गिर गया। प्याले वाले ने कहा, नहीं, अल्लाह की क़सम! मुझे इस बात का यक़ीन है कि अल्लाह पूरे लश्कर में से सिर्फ़ मेरा प्याला हरगिज़ नहीं लेंगे। चुनांचे दरिया की मौजों ने वह प्याला साहिल पर फेंक दिया।

और घाट के परले किनारे के पहरा देने वालों में से एक आदमी की निगाह उस प्याले पर पड़ी। उसने अपने नेज़े से उसे उठा लिया और जब सारा लश्कर दरिया पार कर गया तो वह प्याला लेकर लश्कर में आ गया और प्याले के मालिक को तलाश करने लगा। आख़िर वह मालिक मिल गया और उसने अपना प्याला ले लिया।[1]

हज़रत उमैर साइदी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों को लेकर दजिला में दाख़िल होने लगे, तो सब लोगों ने जोड़ियां बना लीं। हज़रत सलमान रज़ि० हज़रत साद रज़ि० के जोड़ीदार थे और पानी पर उनके साथ-साथ चल रहे थे। हज़रत साद रज़ि० ने यह आयत पढ़ी—

ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ (سورت یاسین آیت ۳۸)

'यह अन्दाज़ा बांधा हुआ है उस (ख़ुदा) का जो ज़बरदस्त इल्म वाला है।' (सूरः यासीन, आयत 38)

दरिया में पानी बहुत चढ़ा हुआ था और घोड़ा कुछ देर सीधा खड़ा रहता, जब थक जाता तो दरिया में एक टीला ज़ाहिर हो जाता, जिस पर वह ज़मीन की तरह खड़ा होकर आराम कर लेता। मदाइन शहर में इससे ज़्यादा अजीब मंज़र कभी पेश नहीं आया था, चूंकि पानी के बहुत ज़्यादा होने के बावजूद जगह-जगह टीले ज़ाहिर हुए थे, इस वजह से उस

1. दलाइल, पृ० 209, तारीख़े तबरी, भाग 3, पृ० 122

दिन को टीलों का दिन कहा जाता था।[1]

अबू नुऐम ने भी हज़रत उमैर साइदी से इसी जैसी रिवायत नक़ल की है, लेकिन उसकी रिवायत में मज़्मून इस तरह से है कि मदाइन में इससे ज़्यादा अजीब वाक़िया कभी पेश नहीं आया था और चूंकि जो भी थक जाता था, उसके सामने फ़ौरन एक टीला नमूदार हो जाता था, जिस पर वह आराम कर लेता था, इसलिए उस दिन को टीलों वाला दिन कहा जाता था।[2]

हज़रत क़ैस बिन अबी हाज़िम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हम दजिला में दाख़िल हुए तो वह किनारों तक लबालब भरा हुआ था। जब हम उस जगह पहुंचे जहां पानी सबसे ज़्यादा था, वहां घोड़सवार कुछ देर खड़ा रहा, तो पानी उसकी पेटी तक भी न पहुंचा।[3]

हज़रत हबीब बिन सोह्बान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुसलमानों में से एक आदमी जिनका नाम हुज्र बिन अदी था, उन्होंने कहा, क्या तुम्हें पार करके दुश्मन तक जाने से सिर्फ़ पानी का यह क़तरा रोक रहा है। पानी के क़तरे से मुराद दरिया दजिला ले रहे थे, हालांकि अल्लाह ने फ़रमाया है—

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتَابًا مُّؤَجَّلًا (سورت آل عمران آیت ۱۴۵)

'और किसी आदमी को मौत आना मुम्किन नहीं अलावा अल्लाह के हुक्म के इस तौर से कि उसकी तै मीयाद लिखी हुई रहती है।'

(सूरः आले इम्रान, आयत 145)

फिर उन्होंने अपना घोड़ा दजिला नदी में डाल दिया। जब उन्होंने डाला तो तमाम लोगों ने अपने घोड़े डाल दिए। जब दुश्मन ने उन्हें यों दरिया पार करते हुए देखा, तो कहने लगे, यह तो देव हैं, और फिर वे सारे भाग गए।[4]

1. तारीख इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 122,
2. दलाइल, पृ० 209,
3. तारीख इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 123,
4. तारीख इब्ने कसीर, भाग 1, पृ० 410,

हज़रत हबीब बिन सोह्बान अबू मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब मुसलमान मदाइन वाले दिन दजिला नदी पार कर रहे थे, तो दुश्मन उन्हें दरिया पार करता हुआ देखकर फ़ारसी में कहने लगा, ये तो देव हैं और फिर आपस में एक दूसरे से कहने लगे, अल्लाह की क़सम ! तुम्हें अब इंसानों से नहीं, बल्कि जिन्नात से लड़ना होगा। इससे वे रौब खा गए और हार गए।[1]

हज़रत आमश रहमतुल्लाहि अलैहि अपने एक साथी से नक़ल करते हैं कि जब हम दजिला के पास पहुंचे, तो वह बहुत चढ़ा हुआ था और अजमी लोग दरिया के उस पार थे। एक मुसलमान ने बिस्मिल्लाह पढ़कर अपना घोड़ा दरिया में डाल दिया और वह डूबा नहीं, बल्कि उसका घोड़ा पानी के ऊपर चलने लगा। यह देखकर बाक़ी तमाम लोगों ने भी बिस्मिल्लाह पढ़कर अपने घोड़े दरिया में डाल दिए और वे सब पानी के ऊपर चलने लगे।

जब अजमी लोगों ने उन्हें देखा तो कहने लगे, ये तो देव हैं, देव हैं, फिर उनका जिधर मुंह उठा, उधर भाग गए।[2]

आग का सहाबा किराम की इताअत करना

हज़रत मुआविया बिन हरमल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं मदीना मुनव्वरा गया तो हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु मुझे अपने साथ खाने के लिए ले गए। मैंने खाना तो ख़ूब खाया, लेकिन मुझे भूख बहुत ज़्यादा थी, इस वजह से मेरा पेट पूरी तरह नहीं भरा, क्योंकि मैं तीन दिन से मस्जिद में ठहरा हुआ था और कुछ नहीं खाया था।

एक दिन अचानक मदीने के पथरीले मैदान में आग ज़ाहिर हुई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आकर हज़रत तमीम रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, उठो और इस आग के बुझाने का इन्तिज़ाम करो। हज़रत तमीम रज़ि० ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं कौन होता हूं? और मेरी क्या

1. दलादल, पृ० 210, इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 123,
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 155,

हैसियत है? लेकिन हज़रत उमर रज़ि० इसरार फ़रमाते रहे, जिस पर वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ चल दिए। मैं भी इन दोनों हज़रात के पीछे चल दिया।

वे दोनों हज़रात आग के पास गए। वहां जाकर हज़रत तमीम रज़ियल्लाहु अन्हु अपने हाथ से आग को इस तरह धक्के देने लगे, यहां तक कि आग घाटी में उसी जगह वापस दाख़िल हो गई, जहां से निकली थी। आग के पीछे हज़रत तमीम रज़ि० भी अन्दर दाख़िल हो गए और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमा रहे थे (यह ईमानी मंज़र) न देखने वाला देखने वाले जैसा नहीं हो सकता।[1]

हज़रत मुआविया बिन हरमल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपके लश्कर के क़ाबू पाने से पहले ही मैंने तौबा कर ली है। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, तुम कौन हो? मैंने कहा, मैं मुसैलमा कज़्ज़ाब का दामाद मुआविया बिन हरमल हूं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, जाओ और जो मदीना वालों में सबसे बेहतरीन आदमी है, उसके मेहमान बन जाओ।

मैं हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु का मेहमान बन गया। एक बार मदीना के पथरीले मैदान में आग निकल आई, उस वक़्त हम लोग बातें कर रहे थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आकर हज़रत तमीम रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, (चलो और इस आग का इन्तिज़ाम करो।) हज़रत तमीम रज़ि० ने कहा, मेरी क्या हैसियत है? और क्या आप इस बात से नहीं डरते कि मेरे छिपे ऐब आप पर ज़ाहिर हों?

इस तरह हज़रत तमीम रज़ियल्लाहु अन्हु कसर नफ़्सी कर रहे थे, (लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसरार फ़रमाया तो) हज़रत तमीम रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और आग को धक्के देते रहे, यहां तक कि जिस दरवाज़े से निकली थी, उसी में उसे वापस कर दिया और फिर

1. दलाइल, पृ० 212, बिदाया, भाग 6, पृ० 153

खुद भी आग के पीछे उस दरवाज़े के अन्दर चले गए, फिर बाहर आ गए और इस सबके बावजूद आग उन्हें कुछ नुक़्सान न पहुंचा सकी।[1]

और अबू नुऐम की रिवायत में यह भी है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत तमीम रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, इन्हीं जैसे कामों के लिए हमने तुम्हें छिपा रखा है, ऐ अबू रुक़ैया ! (यह हज़रत तमीम रज़ि० की कुन्नियत है)[2]

सहाबा किराम रज़ि० के लिए रोशनी का चमकना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ इशा की नमाज़ पढ़ रहे थे। हुज़ूर सल्ल० जब सज्दे में जाते तो हज़रत हसन और हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा कूद कर आपकी पीठ पर चढ़ जाते। जब आप सज्दे से सर उठाते तो नर्मी से पकड़ कर उन दोनों को पीठ से उतार देते। आप जब दोबारा सज्दे में जाते तो ये दोनों फिर चढ़ जाते।

हुज़ूर सल्ल० ने जब नमाज़ पूरी कर ली, तो दोनों को अपनी रान पर बिठा लिया। मैं खड़े होकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गया और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इन दोनों को घर छोड़ आऊं। इतने में बिजली चमकी, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन दोनों से फ़रमाया, अपनी मां के पास चले जाओ। बिजली की रोशनी इतनी देर रही कि ये दोनों अपनी वालिदा के पास पहुंच गए।[3]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से बहुत ज़्यादा मुहब्बत थी। एक बार अंधेरी रात में हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्ल० के पास थे। हज़रत हसन रज़ि० ने कहा, मैं अपनी अम्मी के पास चला जाऊं?

---

1. इसाबा, भाग 2, पृ० 497,
2. दलाइल, पृ० 212,
3. हैसमी, भाग 119, बिदाया, भाग 6, पृ० 152,

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! मैं इसके साथ चला जाऊं? आपने फ़रमाया, नहीं। इतने में आसमान में बिजली चमकी और उसकी रोशनी इतनी देर रही कि उसमें चल कर हज़रत हसन रज़ि० अपनी वालिदा के पास पहुंच गए।[1]

इमाम अहमद ने जुमा की ख़ास घड़ी के क़िस्से में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से एक लम्बी हदीस नक़ल की है, जिसमें यह भी है कि फिर उस रात को आसमान पर बहुत ज़्यादा बादल आए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब इशा की नमाज़ के लिए बाहर तशरीफ़ लाए तो एकदम बिजली चमकी जिसमें हुज़ूर सल्ल० को हज़रत क़तादा बिन नोमान रज़ियल्लाहु अन्हु नज़र आए। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे पूछा कि ऐ क़तादा ! रात के अंधेरे में कैसे आना हुआ? उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे ख़्याल हुआ कि बारिश की वजह से आज लोग नमाज़ में कम आएंगे, इसलिए मैं आ गया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो मेरे आने तक ठहरे रहना। जब हुज़ूर सल्ल० नमाज़ पढ़कर वापस आए तो उन्हें खजूर की एक टहनी दी और फ़रमाया, यह ले लो। यह रास्ते में तुम्हारे आगे दस हाथ और पीछे दस हाथ रोशनी करेगी। जब तुम घर में दाख़िल हो जाओ और वहां तुम्हें एक कोने में काली चीज़ नज़र आए तो बात करने से पहले उसे उस टहनी से मारना, क्योंकि वह शैतान है।[2]

तबरानी की रिवायत में यह है कि नमाज़ के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे खजूर की एक टहनी दी और फ़रमाया, तुम्हारे पीछे तुम्हारे घरवालों के पास शैतान आया है, तुम यह टहनी ले जाओ और घर पहुंचने तक इसे मज़बूती से पकड़े रहना और घर के कोने में शैतान को पकड़ कर उस टहनी से ख़ूब मारना।

चुनांचे मैं मस्जिद से निकला तो उस टहनी से मोमबत्ती की तरह

1. दलाइल, पृ० 205
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 167

रोशनी निकलने लगी और मैं उसकी रोशनी में चलने लगा। मैं घर पहुंचा तो घरवाले सो रहे थे। मैंने कोने में देखा, तो उसमें एक सैह बैठा हुआ था। मैं उसे उस टहनी से मारने लगा, यहां तक कि घर से निकल गया।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दो सहाबी एक अंधेरी रात में हुज़ूर सल्ल० के पास से निकले, तो उन दोनों के साथ दो चिराग़ थे जो उन दोनों के सामने रोशनी कर रहे थे। जब दोनों अलग हुए तो हर एक के साथ एक एक चिराग़ हो गया, यहां तक कि वे दोनों अपने घर पहुंच गए।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उसैद बिन हुज़ैर अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु और एक अंसारी सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपनी किसी ज़रूरत के बारे में बात कर रहे थे। उसमें रात का एक हिस्सा गुज़र गया, उस रात अंधेरा भी बहुत था।

जब ये दोनों वापस जाने के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से निकले, तो दोनों के पास एक-एक छोटी लाठी थी। उनमें से एक की लाठी में से रोशनी निकलने लगी वे, दोनों उसकी रोशनी में चलने लगे। जब दोनों के रास्ते अलग हो गए, तो फिर दूसरे की लाठी में से भी रोशनी निकलने लगी और वे उसकी रोशनी में चलने लगे। यों ही रोशनी में चलते-चलते अपने घर पहुंच गए।[3]

बुख़ारी की एक रिवायत में है कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत इबाद बिन बिश्र और हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से बाहर निकले और पिछली जैसी हदीस ज़िक्र की।[4]

---

1. मज्मा, भाग 2, पृ० 40,
2. बुख़ारी,
3. इब्ने इस्हाक़,
4. बिदाया, भाग 6, पृ० 152, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 606, दलाइल, पृ० 205

हज़रत हमज़ा बिन अम्र अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग एक सफ़र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे, सख़्त अंधेरी रात थी। उसमें हम लोग इधर-उधर बिखर गए, तो मेरी उंगलियों में से रोशनी निकलने लगी, यहां तक कि लोगों ने अपनी सवारियां भी जमा कीं और उनका जो सामान गिर गया था, उसे भी जमा किया और इतनी देर मेरी उंगलियों में से रोशनी निकलती रही।[1]

हज़रत हमज़ा बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हम तबूक में थे तो वहां घाटी में मुनाफ़िक़ों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ऊंटनी को छेड़ा जिससे वह बिदकी और हुज़ूर सल्ल० का कुछ सामान नीचे गिर गया। फिर मेरी पांचों उंगलियां रोशन हो गईं और उनकी रोशनी में मैंने गिरा हुआ सामान कोड़ा-रस्सी वग़ैरह उठाया।[2]

हज़रत मैमून बिन ज़ैद बिन अब्स रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे मेरे वालिद ने बताया कि हज़रत अबू अब्स रज़ियल्लाहु अन्हु तमाम नमाज़ें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ पढ़ा करते थे। फिर क़बीला बनू हारिसा के मुहल्ले में वापस चले जाते। एक रात सख़्त अंधेरा था और बारिश हो चुकी थी, वह मस्जिद से निकले तो उनकी लाठी में से रोशनी निकलने लगी और वह उस रोशनी में चलकर बनू हारिसा के मुहल्ले में पहुंच गए।

हज़रत बैहक़ी कहते हैं, हज़रत अबू अब्स बद्री सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम में से थे।[3]

हज़रत ज़ह्हाक फ़रमाते हैं, जब हज़रत अबू अबीस बिन जब्र रज़ियल्लाहु अन्हु की आंख की रोशनी कमज़ोर हो गई, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको एक लाठी दी और फ़रमाया, इससे रोशनी हासिल करो। चुनांचे उस लाठी से उनके लिए यहां से

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 152, हैसमी, भाग 9, पृ० 411, बिदाया, भाग 8, पृ० 213, दलाइल, पृ० 206,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 315,
3. बिदाया, भाग 6, पृ० 152, दलाइल, पृ० 205, हाकिम, भाग 3, पृ० 350

वहां तक की सारी जगह रोशन हो जाती थी।[1]

हज़रत अम्र बिन तुफ़ैल दौसी रज़ियल्लाहु अन्हु नूर वाले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० में से थे। हुज़ूर सल्ल० ने उनके लिए दुआ फ़रमाई थी, तो उनके कोड़े में से रोशनी निकलने लगी, जिसमें वे चलते रहे।[2]

पहले भाग के अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ दावत देने के बाब में हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र दौसी रज़ियल्लाहु अन्हु के दावत देने के उन्वान में यह गुज़र चुका है कि उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निशानी मांगी, जिससे अपनी क़ौम को दावत देने में मदद मिले। आपने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! इसको कोई निशानी अता फ़रमा।

हज़रत तुफ़ैल रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, चुनांचे मैं अपनी क़ौम की तरफ़ चल पड़ा। जब मैं उस घाटी पर पहुंचा जहां से मैं अपनी आबादी वालों को नज़र आने लगा तो मेरी दोनों आंखों के दर्मियान चिराग़ की तरह एक चमकता हुआ नूर ज़ाहिर हुआ। मैंने दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! इस नूर को मेरे चेहरे के अलावा किसी और जगह ज़ाहिर कर दे, क्योंकि मुझे ख़तरा है कि मेरी क़ौम वाले आंखों के बीच नूर देखकर यह समझेंगे कि उनके दीन को छोड़ने की वजह से मेरा चेहरा बदल गया है।

चुनांचे वह नूर बदल कर मेरे कोड़े के सिर पर आ गया। जब मैं घाटी से आबादी की तरफ़ उतर रहा था, तो आबादी वालों को मेरे कोड़े का यह नूर लटके हुए क़िन्दील की तरह नज़र आ रहा था, जिसे वह एक दूसरे को दिखा रहे थे, यहां तक कि मैं उनके पास पहुंच गया।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु अक्सर फ़रमाया करते थे, मैंने

1. इसाबा, भाग 4, पृ० 130,
2. कंज़, भाग 7, पृ० 78,

तो यही देखा है कि जब भी मैंने किसी के साथ अच्छा सुलूक किया, तो मेरे और उसके दर्मियान रोशनी पैदा हो गई और जब भी मैंने किसी के साथ बुरा सुलूक किया तो मेरे और उसके दर्मियान अंधेरा पैदा हो गया, इसलिए तुम अच्छा सुलूक और नेकी करने को लाज़िम पकड़ो, क्योंकि यह बुरी मौत से बचाता है।[1]

बादलों का सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन पर साया करना

हज़रत काब रज़ियल्लाहु अन्हु के आज़ाद किए हुए एक ग़ुलाम कहते हैं, हम हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद, हज़रत अम्र बिन अब्सा और हज़रत शानेअ बिन हबीब हुज़ली रज़ियल्लाहु अन्हुम के साथ एक सफ़र में गए। हज़रत अम्र बिन अब्सा रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी बारी पर एक दिन जानवर चराने गए।

मैं दोपहर के वक़्त उन्हे देखने गया, तो मैंने देखा कि एक बादल उन पर साया किए हुए है जो उनसे जुदा ही नहीं होता। (वह जिधर जाते हैं, बादल भी उधर ही जाता है) मैंने यह बात उन्हें बताई, तो उन्होंने फ़रमाया, यह मेरा ख़ास राज़ है, किसी को मत बताना। अगर मुझे पता चला कि तुमने किसी को बताया है, तो फिर तुम्हारी ख़ैर नहीं।

वह ग़ुलाम कहते हैं, चुनांचे उनके इंतिक़ाल तक मैंने यह बात किसी को नहीं बताई।[2]

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की दुआओं से बारिश का होना

बुख़ारी में है कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार जुमा के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खड़े हुए ख़ुत्बा दे रहे थे, मिंबर के सामने एक दरवाज़ा था, उससे एक आदमी दाख़िल हुआ

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 312,
2. इसाबा, भाग 3, पृ० 6

और आकर हुज़ूर सल्ल० के सामने खड़ा हो गया और उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! सारे जानवर हलाक हो गए, (क्योंकि बहुत दिनों से बारिश नहीं हुई) और सूखे और पानी की कमी की वजह से सारे रास्ते बन्द हो गए। लोगों ने सफ़र करना छोड़ दिया, इसलिए आप अल्लाह से दुआ करें कि अल्लाह हमें बारिश दे दे।

आपने उसी वक़्त दोनों हाथ उठाकर यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! हमें बारिश दे दे। ऐ अल्लाह ! हमें बारिश दे दे। ऐ अल्लाह ! हमें बारिश दे दे।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं, अल्लाह की क़सम ! हमें आसमान में बादल का टुकड़ा वग़ैरह कुछ नज़र नहीं आ रहा था और हमारे और सलअ पहाड़ के बीच कोई मकान या घर वग़ैरह भी नहीं था, यानी मतला नज़र आने में कोई रुकावट नहीं थी और मतला बिल्कुल साफ़ था कि इतने में सलअ पहाड़ के पीछे से ढाल जितना एक बादल ज़ाहिर हुआ जो आसमान के बीच में पहुंच कर फैल गया और बरसने लगा और फिर लगातार बारिश होती रही।

अल्लाह की क़सम ! हमने छः दिन तक सूरज ही नहीं देखा, यहां तक कि अगला जुमा आ गया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खड़े होकर ख़ुत्बा दे रहे थे कि उसी दरवाज़े से एक आदमी दाख़िल हुआ और हुज़ूर सल्ल० के सामने खड़े होकर कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम ! बारिश इतनी ज़्यादा हो गयी है कि सारे जानवर हलाक हो गए, सारे रास्ते बन्द हो गए, आप अल्लाह से दुआ करें कि वह बारिश रोक ले।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दोनों हाथ उठाकर दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! आस-पास बारिश हो, हम पर बारिश न हो। ऐ अल्लाह ! टीलों, पहाड़ियों, पहाड़ों और पेड़ और घास के उगने की जगह पर बारिश हो। चुनांचे उसी वक़्त बारिश रुक गई और मस्जिद से बाहर निकले तो हम धूप में चल रहे थे।

बुख़ारी की एक रिवायत में है कि मैंने देखा कि बादल फटकर दाएं-बाएं चला गया और सब जगह तो बारिश होती थी, मदीना में नहीं होती थी।

बुख़ारी की एक और रिवायत में इस तरह है कि हुज़ूर सल्ल० ने दुआ के लिए अपने दोनों हाथ उठाए। हमें आसमान में बादल का एक टुकड़ा-सा नज़र आ रहा था। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है! अभी हुज़ूर सल्ल० ने हाथ नीचे नहीं रखे थे कि एकदम आसमान पर पहाड़ों जैसे बादल छा गए और आप मिंबर से नीचे नहीं उतरे थे कि मैंने बारिश का पानी हुज़ूर सल्ल० की दाढ़ी से टपकते हुए देखा।[1]

हज़रत अबू लुबाबा बिन अब्दुल मुंज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जुमा के दिन लोगों में ख़ुत्बा दे रहे थे। आपने फ़रमाया, हमें बारिश दे दे। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! खजूरें खलिहानों में पड़ी हुई हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! जब तक अबू लुबाबा कपड़े उतार कर अपने खलिहान का नाली अपनी लुंगी से न बन्द करे, उस वक़्त तक तू हम पर बारिश फ़रमाता रह। उस वक़्त तक हमें आसमान में कोई बादल नज़र नहीं आ रहा था, लेकिन थोड़ी ही देर में ज़बरदस्त बारिश हुई, तो हज़रात अंसार ने मुझे घेर लिया और कहने लगे, उस वक़्त तक बारिश नहीं रुकेगी, जब तक आप वह काम न कर लें, जो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था।

चुनांचे मैं उठा और कपड़े उतार कर मैंने अपनी लुंगी से अपने खलिहान का नाला बन्द किया, तो बरिश रुकी।[2]

पहले हिस्से में मशक़्क़तें बर्दाश्त करने के बाब में हज़रत उमर

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 88, दलाइल, पृ० 160, तबक़ात, भाग 1, पृ० 176
2. दलाइल, पृ० 166, बिदाया, भाग 6, पृ० 92,

रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस गुज़र चुकी है, जिसमें यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने दोनों हाथ आसमान की तरफ़ उठाए (और अल्लाह से दुआ मांगी) और अभी हाथ नीचे नहीं किए थे कि आसमान में बादल आ गए, पहले बूंदा-बांदी हुई, फिर मूसलाधार बारिश शुरू हो गई।

सहाबा किराम रज़ि० ने जितने बरतन साथ थे, वे सारे भर लिए, (फिर बारिश बन्द होने के बाद) हम देखने गए (कि कहां तक बारिश हुई है) तो देखा कि जहां तक लश्कर था, सिर्फ़ वहां तक बारिश हुई है, लश्कर के बाहर बारिश नहीं हुई।[1]

हज़रत अब्बास बिन सह्ल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब सुबह हुई तो लोगों के पास पानी बिल्कुल नहीं था। लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शिकायत की। आपने अल्लाह से दुआ की तो अल्लाह ने उसी वक़्त एक बादल भेजा जो ख़ूब ज़ोर से बरसा, यहां तक कि लोग सेराब हो गए और उन्हें जितने पानी की ज़रूरत थी, वह भी उन्होंने बरतनों में साथ ले लिया।[2]

हज़रत ख़व्वात बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में बड़ा सख़्त क़हत पड़ा तो हज़रत उमर रज़ि० लोगों को लेकर शहर से बाहर गए और उन्हें दो रक्अत नमाज़ इस्तिस्क़ा पढ़ाई और अपनी चादर के दोनों किनारों को बदला। दाएं को बाईं तरफ़ और बाएं को दाहिनी तरफ़ किया, फिर अपने दोनों हाथ फैलाकर यह दुआ की—

'ऐ अल्लाह! हम तुझसे माफ़ी मांगते हैं और तुझसे बारिश मांगते हैं।'

हज़रत उमर रज़ि० के उस जगह से हटने से पहले ही बारिश शुरू हो गई और ख़ूब बारिश हुई।

कुछ दिनों के बाद देहाती लोगों ने आकर हज़रत उमर रज़ि० की

1. दलाइल, पृ० 190,
2. दलाइल, पृ० 190

ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! फ़्लां दिन और फ़्लां वक़्त हम अपने खेत और जंगलों में थे कि अचानक बादल हमारे सरों पर आ गए। हमने उनमें से यह आवाज़ सुनी, ऐ अबू हफ़्स (यह हज़रत उमर रज़ि० की कुन्नियत है) आपके पास मदद आ गई, ऐ अबू हफ़्स! आपके पास मदद आ गई।[1]

हज़रत मालिक अद्दार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में ज़बरदस्त क़हत पड़ा। एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़ब्रे अतहर पर हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! अपनी उम्मत के लिए अल्लाह से बारिश मांग दीजिए, क्योंकि सारी उम्मत हलाक हो गई है।

उस आदमी को जवाब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, जाकर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मेरा सलाम कहो और उसे बता दो कि बारिश होगी और उसे कह दो कि समझदारी से काम ले और अक़्लमंदी अख़्तियार करे।

उस आदमी ने आकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को सारा वाक़िया सुनाया। हज़रत उमर रज़ि० रोने लगे और कहने लगे, ऐ मेरे रब! मेहनत करने और समझदारी से काम लेने में मैं किसी तरह कमी नहीं करता हूं, अलबत्ता कोई काम ही मेरे बस से बाहर हो, तो और बात है।[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन काब बिन मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मदीना मुनव्वरा और उसके आस-पास की बस्तियों मे एक अर्से तक बारिश बन्द रही, जिससे खाने की तमाम चीज़ ख़त्म हो गईं और सारे इलाक़े में ज़बरदस्त क़हत फैल गया। लोग भूखों मरने लगे। इस क़हत का नाम क़हतुर्रमादा पड़ गया। (रमादा का मतलब है राख), यानी इस क़हत से लोगों के रंग राख जैसे हो गए थे।

1. कंज़ भाग 4, पृ० 290
2. कंज़, भाग 4, पृ० 289, बिदाया, भाग 7, पृ० 92,

यहां तक कि जंगली जानवर भूख के मारे बस्तियों का रुख़ करने लगे थे और पालतू जानवरों को भी घास और पानी नहीं मिलता था जिसकी वजह से उनके जिस्म में गोश्त ख़त्म हो गया था, बिल्कुल सूखे और दुबले-पतले हो गए थे, यहां तक कि आदमी को सख़्त भूख लगी होती थी और वह बकरी ज़िब्ह करना चाहता, लेकिन बकरी की बुरी हालत देखकर उसका ज़िब्ह करने को दिल न करता और उसे छोड़ देता।

लोग इसी हाल मे थे और मिस्र, शाम और इराक़ जैसे मुल्कों के मुसलमानों से ग़िज़ाई मदद मंगवाने की तरफ़ हज़रत उमर रज़ि० की तवज्जोह नहीं थी। एक दिन हज़रत बिलाल बिन हारिस मुज़नी रज़ियल्लाहु अन्हु आए और इन लफ़्ज़ों से हज़रत उमर रज़ि० से अन्दर आने की इजाज़त मांगी कि—

'मैं आपके पास अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क़ासिद बनकर आया हूं। अल्लाह के रसूल सल्ल० आपसे फ़रमा रहे हैं, मैं तो तुमको बड़ा समझदार समझता था और अब तक तुम बिल्कुल ठीक चलते रहे, अब तुम्हें क्या हो गया है?'

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा, तुमने यह ख़्वाब कब देखा? हज़रत बिलाल रज़ि० ने कहा, आज रात।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बाहर जाकर लोगों में एलान किया—

اَلصَّلٰوۃُ جَامِعَۃٌ

'अस्सलातुजामिअतुन'

आज सब मस्जिदे नबवी में इकट्ठे नमाज़ पढ़ें, अपनी मस्जिदों में न पढ़ें। लोग जमा हो गए, तो उन्हें दो रक्अत नमाज़ पढ़ाई, फिर खड़े होकर फ़रमाया, ऐ लोगो! मैं तुम्हें अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूं कि मैं तो अपनी समझ के मुताबिक़ हर काम की सबसे बेहतर सूरत निकालता हूं, तो क्या आप लोगों के ख़्याल में मैंने कोई ऐसा काम किया है जो बेहतर न हो, बल्कि दूसरा काम उससे बेहतर हो?

लोगों ने कहा, नहीं ! फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, लेकिन बिलाल बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु तो यह और यह कह रहे हैं। (हज़रत उमर रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के फ़रमान का मतलब न समझ सके, लेकिन लोग समझ गए।)

लोगों ने कहा, हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अनहु ठीक कह रहे हैं। आप अल्लाह से भी मदद मांगें और (मिस्र, शाम, इराक़ के) मुसलमानों से भी मदद मांगें। चुनांचे मुसलमानों से ग़ल्ला मंगवाने की तरफ़ हज़रत उमर रज़ि० की तवज्जोह न थी, अब हो गई और उन्हें इस सिलसिले में ख़त भेजे।

बहरहाल लोगों की बात सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ने ख़ुश होकर फ़रमाया, अल्लाहु अक्बर ! क़हत की आज़माइश अपने ख़ात्मे पर पहुंच गई। हज़रत उमर रज़ि० पर यह हक़ीक़त खुली कि जिस क़ौम को अल्लाह से मांगने की तौफ़ीक़ मिल जाती है, उसकी आज़माइश ख़त्म हो जाती है।

चुनांचे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने तमाम शहरों के गवर्नरों को यह ख़त लिखा कि मदीना और उसके आस-पास वाले सब सख़्त क़हत की मुसीबत में हैं, इसलिए उनकी मदद करो और लोगों को पानी चाहने की नमाज़ के लिए शहर के बाहर ले गए और हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु को भी साथ ले गए और पैदल तशरीफ़ ले गए।

पहले मुख़्तसर बयान किया, फिर नमाज़ पढ़ाई, फिर घुटनों के बल बैठकर यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझसे ही मदद मांगते हैं। ऐ अल्लाह ! हमारी मग़फ़िरत फ़रमा और हम पर रहम फ़रमा और हमसे राज़ी हो जा। फिर वहां से वापस आए तो ज़ोरदार बारिश शुरू हो गई और रास्ते के तमाम गढ़े और छोटे तालाब बारिश के पानी से भर गए और उन सब में से गुज़र कर ये लोग अपने घरों को पहुंच सके।[1]

---

1. तारीख़े तबरी, पृ० 3, पृ० 192

तारीख़े तबरी में ही हज़रत आसिम बिन उमर बिन ख़त्ताब रहमतुल्लाहि अलैहि से भी यह क़िस्सा नक़ल हुआ है, उसमें यह भी है कि क़बीला मुज़ैना का एक घराना देहात में रहता था, उन्होंने अपने घरवाले से कहा, फ़ाक़े की इंतिहा हो गई। हमारे लिए एक बकरी ज़िब्ह कर दो, उसने कहा, इन बकरियों में कुछ नहीं है, लेकिन घरवाले इसरार करते रहे। आख़िर उसने एक बकरी ज़िब्ह की और उसकी खाल उतारी, तो सिर्फ़ लाल हड्डी थी, गोश्त का नाम व निशान नहीं था। तो उसकी एकदम चीख़ निकल गई, हाय, मुहम्मद अलैहिस्सलाम (अगर वह होते, तो ऐसा न होता।)

फिर उसने ख़्वाब देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके पास तशरीफ़ लाए हैं और फ़रमा रहे हैं कि तुम्हें बारिश की ख़ुशख़बरी हो, जाकर उमर रज़ि० को मेरा सलाभ कहो और उनसे कहो, ऐ उमर रज़ि० ! मैंने तो यही देखा है कि तुम अह्द के पूरा करने वाले और बात के पक्के थे, अब तुम्हें क्या हो गया है? इसलिए अक़्लमंदी अख़्तियार करो, अक़्लमंदी अख़्तियार करो।

वह साहब देहात से चले और हज़रत उमर रज़ि० के दरवाज़े पर पहुंचे और हज़रत उमर रज़ि० के ग़ुलाम से कहा, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़ासिद को अंदर जाने की इजाज़त दे दो, फिर आगे पिछली जैसी हदीस ज़िक्र की।

हज़रत सुलैम बिन आमिर ख़बाइरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार बारिशें बन्द हो गईं, तो हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हुमा और दमिश्क़ वाले नमाज़ इस्तिस्क़ा (बारिश के लिए पढ़ी गई नमाज़) के लिए शहर से बाहर गए। जब हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु मिंबर पर बैठ गए, तो फ़रमाया, हज़रत यज़ीद बिन अस्वद जुरशी कहां हैं?

इस पर लोगों ने उन्हें ज़ोर से पुकारा, तो वह फलांगते हुए आए और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़रमाने पर उनके क़दमों के पास

मिंबर पर बैठ गए। हज़रत मुआविया रज़ि० ने यों दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह! आज हम तेरे सामने अपने सबसे बेहतरीन और सबसे अफ़ज़ल आदमी को सिफ़ारिशी बनाकर लाए हैं। ऐ अल्लाह! हम यज़ीद बिन अस्वद जुरशी को सिफ़ारिशी बनाकर लाए हैं। ऐ यजीद! अपने दोनों हाथ अल्लाह के सामने उठाओ।

चुनांचे हज़रत यजीद ने अपने हाथ उठाए और लोगों ने भी उठाए तो थोड़ी ही देर में मग़रिब की तरफ़ ज़ोर से बादल आ गए और हवा उन्हें जल्दी से हमारे ऊपर ले आई और बारिश शुरू हो गई और इतनी ज़्यादा हुई कि लोगों को अपने घर पहुंचना मुश्किल हो गया।[1]

हज़रत सुमामा बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार गर्मी के ज़माने में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु के बाग़ के माली ने आकर उनसे बारिश के न होने और ज़मीन के प्यासी होने की शिकायत की। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने पानी मंगवाकर वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ी, फिर उससे कहा, क्या आसमान में तुम्हें कुछ बादल नज़र आ रहा है? उसने कहा, मुझे तो कुछ नज़र नहीं आ रहा।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु अन्दर गए और फिर नमाज़ पढ़ी, फिर तीसरी या चौथी बार में फ़रमाया, अब जाकर देखो। उसने कहा, परिन्दे के पर के बराबर बादल नज़र आ रहा है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फिर नमाज़ पढ़ते रहे और दुआ करते रहे, यहां तक कि बाग़ के इन्तिज़ामकार ने अन्दर आकर कहा, सारे आसमान पर बादल छाए हुए हैं और ख़ूब बारिश हो चुकी है।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने उससे कहा, जो घोड़ा बिश्र बिन शग़ाफ ने भेजा है, उस पर सवार होकर जाओ और देखो, कहां तक बारिश हुई है? वह उस पर सवार हो गया और देखकर आया और बताया कि बारिश मुसय्यिरीन के महलों से आगे और ग़ज़बान के महलों से आगे नहीं हुई।[2] (यहां हज़रत अनस रज़ि० की ज़मीन ख़त्म हो जाती थी।)

1. इब्ने साद, भाग 7, पृ० 444,

तबक़ाते इब्ने साद में यही रिवायत हज़रत साबित बुनानी ने ज़रा थोड़े में नक़ल की गई है और उसमें यह है कि हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़मीन के इन्तिज़ामकार ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से बारिश न होने और ज़मीन के प्यासी होने की शिकायत की।

उस रिवायत के आख़िर में यह भी है कि उस इन्तिज़ामकार ने जाकर देखा तो बारिश सिर्फ़ उनकी ज़मीन पर हुई, आगे नहीं हुई थी।

हज़रत हुज्र बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हु को एक बार (हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ैद में) नहाने की ज़रूरत हो गई। जो आदमी उनकी निगरानी के लिए मुक़र्रर था, उससे उन्होंने कहा, पीने वाला पानी मुझे दे दो, ताकि मैं उससे ग़ुस्ल कर लूं और कल मुझे पीने के लिए कुछ न देना। उसने कहा, मुझे डर है कि आप प्यास से मर जाएंगे, तो हज़रत मुआविया रज़ि० मुझे क़त्ल कर देंगे।

उन्होंने अल्लाह से पानी के लिए दुआ मांगी, फ़ौरन एक बादल आया, जिससे बारिश बरसने लगी। उन्होंने अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ उसमें से पानी लिया, फिर उनके साथियों ने उनसे कहा, आप अल्लाह से दुआ करें कि वह हमें क़ैद से ख़लासी दे। उन्होंने यह दुआ की, ऐ अल्लाह! जो हमारे लिए ख़ैर हो, उसे मुक़द्दर फ़रमा (क़ैद से ख़लासी या शहादत)।

चुनांचे उन्हें और उनके साथियों में से एक जमाअत को शहीद कर दिया गया।[1]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, अंसार के एक क़बीले को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह दुआ हासिल थी कि जब भी उनमें से कोई मरेगा, तो उसकी क़ब्र पर बादल आकर ज़रूर बरसेगा।

एक बार उस क़बीले के एक आज़ाद किए हुए ग़ुलाम का इंतिक़ाल हुआ, तो मुसलमानों ने कहा, आज हम हुज़ूर सल्ल० के इस फ़रमान को

5. इब्ने साद, भाग 7, पृ० 21

1. इसाबा, भाग 1, पृ० 315,

भी देख लेंगे कि क़ौम का आज़ाद किया हुआ ग़ुलाम क़ौमवालों में से ही गिना जाता है। चुनांचे जब उस ग़ुलाम को दफ़न किया गया, तो एक बादल आकर उसकी क़ब्र पर बरसा।[1]

आसमान से आने वाले डोल के ज़रिए पानी पिलाया जाना

हज़रत उस्मान बिन क़ासिम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा ने हिजरत की तो रौहा से पहले ही मुन्सरफ़ नामी जगह पर उन्हें शाम हो गई। यह रोज़े से थीं। उनके पास पानी भी नहीं था और प्यास के मारे उनका बुरा हाल था तो आसमान से सफ़ेद रस्सी से बंधा हुआ पानी का एक डोल आया।

हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा ने वह डोल लेकर उसमें से ख़ूब पानी पिया, यहां तक कि अच्छी तरह सेराब हो गईं। वह फ़रमाया करती थीं, इसके बाद मुझे कभी प्यास नहीं लगी, हालांकि मैं कड़ी गर्मियों में रोज़ा रखा करती थी, ताकि मुझे प्यास लगे, लेकिन फिर भी प्यास नहीं लगती थी।[2]

पानी में बरकत

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, अस्र का वक़्त हो गया तो लोगों ने वुज़ू के लिए पानी तलाश किया, लेकिन पानी बिल्कुल न मिला। मैंने देखा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास वुज़ू का थोड़ा-सा पानी लाया गया। हुज़ूर सल्ल० ने उस पानी में अपना हाथ रख दिया और लोगों से फ़रमाया कि वह उस बरतन से पानी लेकर वुज़ू करें।

मैंने देखा कि हुज़ूर सल्ल० की उंगलियों के नीचे से पानी फूट रहा था और उस थोड़े से पानी से तमाम लोगों ने वुज़ू कर लिया।[3]

---

1. कंज़, भाग 7, पृ० 136,
2. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 224, इसाबा, भाग 4, पृ० 432
3. बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, नसई,

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नमाज़ के लिए अज़ान हुई तो जिनके घर मस्जिद से क़रीब थे, वे तो उठकर अपने घर वुज़ू करने चले गए और जिनके घर मस्जिद से दूर थे, वे मस्जिद में बाक़ी रह गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पत्थर का एक प्याला लाया गया, वह इतना छोटा था कि उसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हाथ फैलकर नहीं आ सकता था, आख़िर हुज़ूर सल्ल० ने उंगलियां समेट कर उसमें हाथ डाला (तो उनमें से पानी निकलने लगा और) जितने आदमी बाक़ी रह गए थे, उन सब ने उस पानी से वुज़ू कर लिया।

हज़रत हुमैद रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा गया कि ये वुज़ू करने वाले कितने थे? फ़रमाया, अस्सी या उससे भी ज़्यादा थे। यह रिवायत बुख़ारी में है।

बुख़ारी में इस जैसी एक और रिवायत भी है। एक और रिवायत में इस तरह है कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना में ज़ौरा नामी जगह में थे। वहां आपके पास एक बरतन लाया गया। आपने उस बरतन में अपना हाथ रखा, तो पानी आपकी उंगलियों के दर्मियान में से फूटने लगा, जिस से सबने वुज़ू कर लिया।

हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, मैंने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा, आप लोग कितने थे? आपने फ़रमाया, तीन सौ या तीन सौ के क़रीब।[1]

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुदैबिया समझौते के मौक़े पर हम लोग चौदह सौ थे। हुदैबिया एक कुंवां है। हमने उसमें का पानी निकाला और इतना निकाला कि उसमें एक बूंद पानी न बचा।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (को पता चला कि कुंएं में पानी बिल्कुल ख़त्म हो गया, तो आप) कुंएं के उस किनारे पर बैठ गए और

पानी मंगवा कर उससे कुल्ली की और उस कुल्ली का पानी कुंएं में फेंक दिया, तो थोड़ी देर में कुंवां पानी से भर गया। हमने ख़ुद भी पिया और अपनी सवारियों को भी पिलाया, यहां तक कि हम भी सेराब हो गए और हमारी सवारियां भी।[1]

पहले भाग में बुख़ारी के हवाले से हुदैबिया-समझौते का यह क़िस्सा हज़रत मिस्वर और हज़रत मरवान की रिवायत से गुज़र चुका है।[2]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुदैबिया-समझौते के दिन लोगों को प्यास लगी और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने एक प्याला रखा हुआ था, जिससे आप वुज़ू फ़रमा रहे थे। लोग रोनी शक्ल बनाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा, आप लोगों को क्या हुआ?

लोगों ने अर्ज़ किया, न वुज़ू के लिए पानी है और न पीने के लिए, सिर्फ़ यही पानी है जो आपके सामने है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस प्याले में अपना हाथ रखा, तो चश्मे की तरह हुज़ूर सल्ल० की उंगुलियों के दर्मियान में से पानी उबलने लगा। चुनांचे हमने वह पानी पिया भी और उससे वुज़ू भी किया।

रिवायत करने वाले कहते हैं, मैंने पूछा, आप लोग कितने थे? हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हम थे तो पन्द्रह सौ, लेकिन अगर हम एक लाख भी होते, तो वह पानी हमें काफ़ी हो जाता।[3]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक सफ़र में थे कि इतने में नमाज़ का वक़्त हुआ और हमारे पास थोड़ा-सा पानी था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पानी मंगवा कर एक प्याले में डाला,

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 94, दलाइल, पृ० 145
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 97, इब्ने साद, भाग 1, पृ० 179,
3. बिदाया, भाग 6, पृ० 96, दलाइल, पृ० 144, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 98,

फिर हुज़ूर सल्ल० ने उस प्याले में अपना हाथ डाला, तो हुज़ूर सल्ल० की उंगलियों के दर्मियान में से पानी फूटने लगा।

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एलान फ़रमाया, ग़ौर से सुनो, आओ वुज़ू कर लो और अल्लाह की तरफ़ से आई हुई बरकत हासिल कर लो। लोग आ-आकर वुज़ू करने लगे और मैं लोगों से आगे बढ़-बढ़कर वह पानी पीने लगा, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था, अल्लाह की तरफ़ से आई हुई बरकत हासिल कर लो।[1]

हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम एक सफ़र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, क्या तुम्हारे पास पानी है? मैंने कहा, जी हां, मेरे पास वुज़ू का बरतन है, जिसमें थोड़ा-सा पानी है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उसे लाओ। मैं वह बरतन हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ले गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसमें से थोड़ा-थोड़ा पानी ले लो।

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वुज़ू फ़रमाया, फिर उस बरतन में एक घूंट पानी बच गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबू क़तादा! इसे संभाल कर रखो, बहुत जल्द इस पानी के साथ अजीब व ग़रीब वाक़िया पेश आएगा।

जब दोपहर को गर्मी सख़्त हुई, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उठे और हुज़ूर सल्ल० पर लोगों की नज़र पड़ी। लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम तो प्यास के मारे हलाक हो गए, हमारी गरदनें टूट गईं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, तुम हलाक नहीं हो सकते।

फिर फ़रमाया, ऐ अबू क़तादा! वुज़ू का बरतन ले आओ। मैं वह बरतन हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ले आया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मेरा प्याला खोलकर ले आओ। मैं खोलकर ले आया। हुज़ूर सल्ल० बरतन में से उस प्याले में डालकर लोगों को पिलाने लगे और हुज़ूर

1. दलाइल, पृ० 144, बिदाया, भाग 6, पृ० 97,

सल्ल० के इर्द-गिर्द लोगों की बहुत ज़्यादा भीड़ हो गई।

आपने फ़रमाया, ऐ लोगो! अच्छे अख़्लाक़ अख़्तियार करो। (एक दूसरे को धक्के मत दो) तुममें से हर एक सेराब होकर ही वापस जाएगा। चुनांचे सब ने पानी पी लिया, मेरे और हुज़ूर सल्ल० के अलावा और कोई न बचा। आपने मेरे लिए पानी डालकर फ़रमाया, ऐ अबू क़तादा! तुम भी पी लो। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप नोश फ़रमाएं।

आपने फ़रमाया, नहीं, जो लोगों को पिलाता है, वह सबसे आख़िर में पीता है। चुनांचे पहले मैंने पिया, फिर मेरे बाद हुज़ूर सल्ल० ने पिया और वुज़ू के बरतन में इतना पानी बचा हुआ था जितना पहले था और उन पीने वालों की तायदाद तीन सौ थी। इब्राहीम बिन हज्जाज रिवायत करने की हदीस में यह है कि पीने वाले सात सौ थे।[1]

मुस्लिम में तबूक की लड़ाई के बारे में हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस नक़ल की गई है, जिसमें पहले तो दो नमाज़ों को जमा करने का ज़िक्र है। इसके बाद यह है कि फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इनशाअल्लाह, कल तुम लोग तबूक के चश्मे पर पहुंच जाओगे और वहां तक पहुंचते-पहुंचते चाश्त का वक़्त हो ही जाएगा। तुममें से जो भी उस चश्मे पर पहुंच जाए, वह मेरे आने तक उसके पानी को हाथ बिल्कुल न लगाए।

चुनांचे हम जब चश्मे पर पहुंचे तो हमसे पहले दो आदमी वहां पहुंचे हुए थे और चश्मे से जूते के तस्मे की तरह थोड़ा-थोड़ा पानी बह रहा था। हुज़ूर सल्ल० ने उन दोनों से पूछा, क्या तुम दोनों ने इस चश्मे के पानी को हाथ लगाया है? उन्होंने कहा, जी हां, लगाया है। इस पर आपने उन दोनों को कुछ बुरा-भला कहा। फिर (हुज़ूर सल्ल० के फ़रमाने पर) लोगों ने चुल्लुओं से थोड़ा-थोड़ा पानी एक बरतन में जमा किया।

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस बरतन में अपना

1. दलाइल, पृ० 144, बिदाया, भाग 6, पृ० 98

चेहरा और हाथ धोए, फिर वह पानी उस चश्मे में डाल दिया। पानी डालते ही उस चश्मे में से ज़ोर-शोर से बहुत ज़्यादा पानी बहने लगा, जिसे पीकर सब लोग सेराब हो गए। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ मुआज़ रज़ि० ! अगर तुम्हारी ज़िंदगी लम्बी हुई तो तुम देखोगे कि यह सारी जगह बाग़ों से भरी हुई होगी।[1]

हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि सहाबा किराम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक सफ़र में थे। फिर आगे और हदीस ज़िक्र की।

इसके बाद हज़रत इम्रान रज़ि० फ़रमाते हैं कि हमें बहुत ज़्यादा प्यास लगी। हम हुज़ूर सल्ल० के साथ जा रहे थे कि इतने में हमें एक औरत मिली जो दो बड़ी मश्कों के दर्मियान पांव लटकाए हुए ऊंटनी पर बैठी हुई थी। हमने उससे पूछा, पानी कहां है? उसने कहा, यहां तो कहीं पानी नहीं है। हमने उससे कहा, तुम्हारे घर से पानी कितने फ़ासले पर है? उसने कहा, एक दिन एक रात की दूरी पर है।

हमने कहा, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास चलो। उसने कहा, अल्लाह के रसूल कौन होते हैं? हमने उसे न कुछ करने दिया, न बोलने दिया और न भागने दिया, बल्कि उस पर क़ाबू पाकर उसे हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ले आए। उसने हुज़ूर सल्ल० के सामने भी वैसी बातें कीं, जैसे हमारे सामने की थीं, अलबत्ता उसने यह भी हुज़ूर सल्ल० को बताया कि उसके बच्चे यतीम हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़रमाने पर उसकी दोनों बड़ी मश्कें हम हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ले आए। हुज़ूर सल्ल० ने उन मश्कों के मुंह पर मुबारक हाथ फेरा। हम चालीस आदमी थे और सख़्त प्यासे थे। पहले तो इन मश्कों से हम सब ने ख़ूब सेर होकर पिया, फिर हमारे साथ जितने मश्कीज़े और बरतन थे, वह सब भर लिए और इतने ज़्यादा भरे कि बिल्कुल फटने वाले हो गए थे।

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 100

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो कुछ तुम लोगों के पास है, वह ले आओ। चुनांचे हमने रोटी के टुकड़े और खजूरें जमा करके उस औरत को दे दीं। फिर वह औरत अपने घरवालों के पास गई और उन्हें बताया कि मैं या तो सबसे बड़े जादूगर से मिलकर आई हूं या फिर वह सचमुच नबी हैं, जैसे कि उनके साथी कह रहे थे।

चुनांचे उस औरत के ज़रिए अल्लाह ने उस डेरे वालों को हिदायत अता फ़रमाई और वह औरत भी मुसलमान हो गई और डेरे वाले भी मुसलमान हो गए। इस हदीस का बुख़ारी और मुस्लिम दोनों ने ज़िक्र किया है।

इन दोनों की दूसरी हदीस में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस औरत से फ़रमाया, यह खाने का सामान अपने साथ अपने बच्चों के लिए ले जाओ और तुम्हें मालूम होना चाहिए कि हमने तुम्हारे पानी में से कुछ नहीं लिया। हमें तो यह सारा पानी अल्लाह ने अपने ग़ैबी ख़ज़ाने से पिलाया है।[1]

हज़रत ज़ियाद बिन हारिस सुदाई रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक सफ़र में था। आपने पूछा, क्या तुम्हारे पास पानी है? मैंने कहा, है, लेकिन थोड़ा है, आपको काफ़ी नहीं होगा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, किसी बरतन में डालकर मेरे पास ले आओ।

मैं आपकी ख़िदमत में ले आया। आपने अपना मुबारक हाथ उसमें रखा, तो मैंने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हर दो उंगलियों के दर्मियान में से पानी का चश्मा फूट रहा है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अगर मुझे अपने रब से हया न होती तो हम यों ही पानी पीते-पिलाते रहते। (क्योंकि यों जिस्म से पानी निकलने में रब की शान ज़ाहिर होती है, इसलिए इस मोजज़े का थोड़ी देर के लिए होना ही मुनासिब है।) जाओ और जाकर मेरे सहाबा

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 98, दलाइल, पृ० 146

रज़ि० में एलान कर दो कि जो भी पानी लेना चाहता है, वह जितना चाहे, आकर चुल्लू भर-भरकर ले ले।

हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, मेरी क़ौम का एक वफ़्द मुसलमान होकर फ़रमांबरदार बनकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया। वफ़्द के एक आदमी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमारा एक कुंवां है। सर्दियों में तो वह हमें काफ़ी हो जाता है, इसलिए सर्दियों में तो हम उस कुंएं के पास जमा हो जाते हैं और गर्मियों में इसका पानी कम हो जाता है, तो फिर हम अपने आस-पास के चश्मों पर बिखर जाते थे, लेकिन अब हम बिखर नहीं सकते, क्योंकि हमारे आस-पास के तमाम लोग (इस्लाम लाने की वजह से) हमारे दुश्मन हो गए हैं। आप अल्लाह से दुआ करें कि उसका पानी हमें गर्मियों में भी काफ़ी हो जाए करे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सात कंकड़ियां मंगवाईं और उनको अपने हाथ पर अलग-अलग रखकर दुआ की, फिर फ़रमाया, जब तुम लोग कुंएं के पास पहुंचो, तो कंकड़ियां एक-एक करके उसमें डाल दो और उन पर अल्लाह का नाम लेते रहो। चुनांचे वापस जाकर उन्होंने ऐसे ही किया तो अल्लाह ने उस कुंएं का पानी इतना ज़्यादा कर दिया कि फिर उन्हें इस कुंएं की गहराई कभी नज़र नहीं आई।[1]

हज़रत अबू औन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा मक्का के इरादे से मदीना से निकले, तो वे इब्ने मुतीअ के पास से गुज़रे जो अपना कुंवां खोद रहे थे। आगे और हदीस ज़िक्र की है, जिसमें यह भी है कि इब्ने मुतीअ ने उनसे कहा, मैंने अपने इस कुंवें को इसलिए ठीक किया है, ताकि इसमें दोबारा पानी आ जाए, लेकिन अभी तक डोल ख़ाली ही निकला है, उसमें कुछ पानी नहीं आया। अगर आप हमारे लिए उस कुंएं में अल्लाह की बरकत की दुआ कर दें, तो आपकी बहुत मेहरबानी होगी।

1. दलाइल, पृ० 147, बिदाया, भाग 6, पृ० 101,

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कुंएं का थोड़ा-सा पानी लाओ। इब्ने मुतीअ डोल में उस कुंएं का थोड़ा-सा पानी लाए। हज़रत हुसैन रज़ि० ने उसमें कुछ पानी पिया, फिर कुल्ली की, फिर वह पानी उसी कुंएं में डाल दिया तो उस कुंएं का पानी मीठा भी हो गया और ज़्यादा भी हो गया।[1]

लड़ाइयों के सफ़र के दौरान खाने में बरकत

हज़रत अबू अमरा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम एक लड़ाई में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे। लोगों को सख़्त भूख लगी, तो लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुछ ऊंट ज़िब्ह करने की इजाज़त ली और अर्ज़ किया, यह गोश्त खाने से अल्लाह हमें इतनी ताक़त दे देंगे, जिससे हम मंज़िल तक पहुंच जाएंगे।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुछ ऊंट ज़िब्ह करने की इजाज़त देने का इरादा कर लिया है, तो अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! कल जब हम भूखे और पैदल दुश्मन का मुक़ाबला करेंगे तो हमारा क्या हाल होगा, इसलिए मेरी राय यह है कि अगर आप मुनासिब समझें तो लोगों के पास जो तोशे बचे हुए हैं, वे मंगवा कर जमा कर लें और फिर अल्लाह से उसमें बरकत की दुआ करें। अल्लाह आपकी दुआ की बरकत से खाने में बरकत भी दे देंगे और मंज़िल तक भी पहुंचा देंगे।

चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों से उनके बचे हुए तोशे मंगवा लिए, तो लोग लाने लगे। कोई मुट्ठी भर खाने की चीज़ लाया, कोई उससे ज़्यादा। सबसे ज़्यादा एक आदमी साढ़े तीन सेर खजूर लाया। हुज़ूर सल्ल० ने उन तमाम चीज़ों को जमा किया, फिर खड़े होकर कुछ देर दुआ की, फिर लश्कर वालों से फ़रमाया, अपने-अपने बरतन ले आओ और उसमें से लपें भरकर बरतनों में डाल लो।

---

1. इब्ने साद, भाग 5, पृ० 144

चुनांचे लश्कर वालों ने अपने तमाम बरतन भर लिए और खाने का जितना सामान पहले था, उतना फिर बच गया। इसे देखकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इतना हंसे कि मुबारक दांत नज़र आने लगे।

आपने फ़रमाया, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं इस बात की गवाही देता हूं कि मैं अल्लाह का रसूल हूं, जो बन्दा इन दोनों गवाहियों पर ईमान रखता होगा, वह क़ियामत के दिन अल्लाह से इस हाल में मिलेगा कि जहन्नम के उससे दूर रहने का फ़ैसला हो चुका होगा।[1]

हज़रत अबू ख़नैस ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं तिहामा की लड़ाई में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ था। जब हम उस्फ़ान पहुंचे तो सहाबा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के पास आए। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया, लेकिन हुज़ूर सल्ल० के हंसने से लेकर आख़िर तक का मज़्मून ज़िक्र नहीं किया, बल्कि यह ज़िक्र किया है कि फिर हुज़ूर सल्ल० ने वहां से कूच का हुक्म दिया। जब उस्फ़ान से आगे चले गए तो फिर बारिश हुई और हुज़ूर सल्ल० और सहाबा रज़ि० नीचे उतरे और सब ने बारिश का पानी पिया।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, तबूक की लड़ाई के सफ़र में लोगों को सख़्त भूख लगी, तो सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! अगर आप हमें इजाज़त दें, तो हम अपने ऊंट ज़िब्ह करके उनका गोश्त खा लें और उनकी चर्बी का तेल इस्तेमाल कर लें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, कर लो।

इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, फिर आगे हज़रत अबू उमरा

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 114, इब्ने साद, भाग 1, पृ० 180, दलाइल, पृ० 148, बिदाया, भाग 6, पृ० 113
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 114, मज्मा, भाग 8, पृ० 313, इसाबा, भाग 6, पृ० 53

रज़ियल्लाहु अन्हु जैसी हदीस ज़िक्र की।[1]

हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग ख़ैबर की लड़ाई में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे, हमारे तोशों में जितनी खजूरें थीं, हुज़ूर सल्ल० ने हमें उन्हें जमा करने का हुक्म दिया और चमड़े का एक दस्तरख़्वान बिछा दिया। हमने अपने तोशों की खजूरें लाकर उस पर फैला दीं।

फिर मैंने अंगड़ाई ली और (मज्मा की ज़्यादती की वजह से) लम्बे होकर देखा और अन्दाज़ा लगाया तो बैठी हुई बकरी जितना ढेर था। हम चौदह सौ आदमी थे। हमने वे खजूरें खाईं। फिर मैंने लम्बे होकर देखा तो अब भी बैठी हुई बकरी जितना ढेर था। इसके बाद पानी में बरकत का क़िस्सा ज़िक्र किया।[2]

एक रिवायत में है कि हमने इतनी खजूरें खाईं कि हम सेर हो गए और अपने चमड़े के तमाम थैले खजूरों से भर लिए।[3]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ंदक़ खोदी और आपके सहाबा रज़ि० ने भूख की वजह से अपने पेट पर पत्थर बांधे हुए थे। जब हुज़ूर सल्ल० ने यह हालत देखी, तो फ़रमाया, क्या तुम्हें ऐसा आदमी मालूम है जो हमें एक वक़्त का खाना खिला दे।

एक आदमी ने कहा, जी हां, मैं जानता हूं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इसके अलावा औ कोई शक्ल नहीं है, तो फिर तुम आगे बढ़ो और उस आदमी के घर ले चलो। चुनांचे ये हज़रात उस आदमी के घर तशरीफ़ ले गए तो वह घरवाला वहां घर में नहीं था, बल्कि वह अपने हिस्से की ख़ंदक़ खोद रहा था। उनकी बीवी ने पैग़ाम भेजा कि जल्दी से आओ, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० हमारे यहां तशरीफ़ लाए

1. दलाइल, पृ० 149, बिदाया भाग 6, पृ० 114,
2. अबू याला,

हैं। वह आदमी दौड़ता हुआ आया और कहने लगा, आप पर मेरे मां-बाप क़ुरबान हों।

उस आदमी की एक बकरी थी, जिसका एक बच्चा भी था। वह आदमी (ज़िब्ह करने के लिए) बकरी की तरफ़ जल्दी से बढ़ा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बकरी के बाद इसके बच्चे का क्या होगा? इसलिए बकरी ज़िब्ह न करो।

चुनांचे उसने बकरी का बच्चा ज़िब्ह किया और उसकी बीवी ने थोड़ा-सा आटा लेकर गूंधा और उसकी रोटी पकाई। इतने में हंडिया भी तैयार हो गई। उसकी बीवी ने प्याले में सरीद बनाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के और हुज़ूर सल्ल० के साथियों रज़ि० के सामने पेश किया। हुज़ूर सल्ल० ने अपनी उंगली उस सरीद में रखकर फ़रमाया कि बिस्मिल्लाह! ऐ अल्लाह! इसमें बरकत अता फ़रमा। (फिर साथियों से फ़रमाया) खाओ।

चुनांचे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने उसमें से पेट भरकर खाया, लेकिन सिर्फ़ एक हिस्सा खा सके और दो हिस्से फिर भी बच गए। आपके साथ जो दस सहाबी थे, आपने उनसे फ़रमाया, अब आप लोग जाओ और अपने जितने और आदमी भेज दो। चुनांचे वे दस सहाबी रज़ि० चले गए और दूसरे दस आ गए और उन्होंने भी ख़ूब सेर होकर खाया।

फिर आप खड़े हुए और उस घर वाली औरत और बाक़ी तमाम लोगों के लिए बरकत की दुआ फ़रमाई। फिर ये हज़रात ख़ंदक़ की ओर चल पड़े। आपने फ़रमाया, हमें सलमान रज़ि० के पास ले चलो। वहां पहुंचे तो देखा हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने एक सख़्त चट्टान है जो उनसे टूट नहीं रही। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, छोड़ो, मैं इसे सबसे पहले तोड़ता हूं।

फिर आपने बिस्मिल्लाह पढ़कर उस चट्टान पर ज़ोर से कुदाल मारी जिससे उसका एक तिहाई टुकड़ा टूटकर गिर गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाहु अक्बर ! रब्बे काबा की क़सम ! शाम के महल जीते जाएंगे। आपने फिर ज़ोर से कुदाल मारी तो एक और टुकड़ा टूटकर गिर गया। आपने फ़रमाया, अल्लाहु अक्बर ! रब्बे काबा की क़सम ! फ़ारस के महल भी जीते जाएंगे। इस पर मुनाफ़िक़ों ने कहा, हमें तो अपनी हिफ़ाज़त के लिए ख़ंदक़ खोदनी पड़ रही है और यह हमसे फ़ारस और रूम के महलों के वायदे कर रहे हैं।[1]

और ख़र्च करने के बाब में यह हदीस गुज़र चुकी है कि हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने साढ़े तीन सेर जौ के आटे की रोटी पकाई और बकरी के बच्चे को ज़िब्ह करके उसका सालन बनाया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खाने की दावत दी। हुज़ूर सल्ल० ने तमाम ख़ंदक़ वालों को खाने पर बुला लिया, जो कि हज़ार के क़रीब थे। सबने पेट भरकर खा लिया और खाना फिर भी वैसे का वैसा सारा बच गया।

जगह पर रहते हुए सहाबा किराम रज़ि० के खाने में बरकत

हज़रत समुरा बिन जुन्दुब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे कि इतने में हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में सरीद का एक प्याला पेश किया गया। हुज़ूर सल्ल० ने भी वह सरीद खाया और लोगों ने भी खाया और लगभग ज़ुहर तक लोग आकर बारी-बारी खाते रहे। कुछ लोग खाकर चले जाते, फिर कुछ लोग और आकर खा जाते।

एक आदमी ने पूछा, क्या इसमें और सरीद लाकर डाला जाता था? हज़रत समुरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ज़मीन से लाकर तो नहीं डाला जा रहा था, अल्बत्ता आसमान से ज़रूर डाला जा रहा था।

दूसरी रिवायत में यों है कि एक आदमी ने पूछा, क्या इसमें और सरीद डाला जा रहा था? हज़रत समुरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, फिर इसमें ताज्जुब की क्या बात होती? फिर आसमान की तरफ़ इशारा

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 100, हैसमी, भाग 6, पृ० 132,

करके फ़रमाया, सिर्फ़ वहां से लाकर डाला जा रहा था।[1]

हज़रत वासला बिन असक़अ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं अस्हाबे सुफ़्फ़ा (चबूतरे वालों) में से था। एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे रोटी का एक टुकड़ा मंगवाया और उसके टुकड़े करके एक प्याले में डाले और उसमें गरम पानी डाला, फिर चर्बी डाली, फिर उनको अच्छी तरह मिलाया, फिर उनकी ढेरी बनाकर बीच में से ऊंचा कर दिया, फिर फ़रमाया, जाओ और अपने समेत दस आदमी मेरे पास बुला लाओ।

मैं दस आदमी बुला लाया। आपने फ़रमाया, खाओ, लेकिन नीचे से खाना, ऊपर से न खाना, क्योंकि बरकत ऊपर यानी दर्मियान में उतरती है। चुनांचे उन सब ने उसमें से पेट भरकर खाया।[2]

हज़रत वासला बिन अस्क़अ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं अस्हाबे सुफ़्फ़ा में से था, मेरे साथियों ने भूख की शिकायत की और मुझसे कहा, ऐ वासला ! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में जाओ और हमारे लिए कुछ खाना मांग लाओ। मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जाकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे साथी भूख की शिकायत कर रहे हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा, क्या तुम्हारे पास कुछ है? हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! और तो कुछ नहीं अलबत्ता रोटी के कुछ टुकड़े हैं। आपने फ़रमाया, वही मेरे पास ले आओ। हज़रत आइशा रज़ि० चमड़े का बरतन ले आईं। (जिसमें रोटी के टुकड़े थे)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक प्याला मंगवा कर उसमें से टुकड़े डाले, और अपने हाथ से सरीद बनानी शुरू कर दी तो वह रोटी बढ़ने लगी, यहां तक कि प्याला भर गया। फिर हुज़ूर सल्ल० ने

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 112, दलाइल, पृ० 153,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 305,

फ़रमाया, ऐ वासला ! जाओ और अपने साथियों में से अपने समेत दस आदमी बुला लाओ। मैं गया और अपने साथियों में से अपने समेत दस आदमी बुला लाया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, बैठ जाओ और अल्लाह का नाम लेकर खाना शुरू करो, लेकिन प्याले के किनारों से खाना, ऊपर से यानी बीच में से न खाना, क्योंकि बीच में बरकत उतरती है। चुनांचे साथियों ने पेट भरकर खाना खाया और जब वे उठे तो प्याले में सरीद उतना ही बाक़ी था जितना पहले था। हुज़ूर सल्ल० फिर अपने हाथ से सरीद बनाने लगे और सरीद बढ़ने लगा, यहां तक कि प्याला भर गया।

फिर आपने फ़रमाया, ऐ वासला रज़ि० ! जाओ और अपने साथियों में से दस आदमी ले आओ। मैं दस साथी ले आया। आपने फ़रमाया, बैठ जाओ। वे लोग बैठ गए और ख़ूब पेट भरकर खाया, फिर उठकर चले गए। आपने फ़रमाया, जाओ और अपने दस साथी और ले आओ। मैं जाकर दस साथी और ले आया। उन्होंने पेट भरकर खाया और चले गए।

आपने पूछा, क्या कोई और बाक़ी रह गया है? मैंने कहा, जी हां, दस साथी रह गए हैं। आपने फ़रमाया, जाओ और उन्हें भी ले आओ। मैं जाकर उन्हें ले आया। आपने फ़रमाया, बैठ जाओ। वे बैठ गए। उन्होंने पेट भरकर खाया, फिर उठकर चले गए और प्याले में इतना सरीद बच गया जितना पहले था। फिर आपने फ़रमाया, ऐ वासला ! यह आइशा रज़ि० के पास ले जाओ।

एक रिवायत में है कि मैं सुफ़्फ़ा में था। हम सुफ़्फ़ा में लगभग बीस आदमी थे। फिर पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया, अलबत्ता इस हदीस में रोटी के टुकड़े और कुछ दूध का ज़िक्र है।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कई दिन तक हुज़ूर

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 305, दलाइल, पृ० 150,

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खाने को कुछ न मिला। जब भूख ने हुज़ूर सल्ल० को ज़्यादा सताया तो आप अपनी तमाम पाक बीवियों के घरों में तशरीफ़ ले गए, लेकिन आपको किसी के यहां खाने को कुछ न मिला। फिर आप हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के यहां तशरीफ़ ले गए, और फ़रमाया, ऐ बिटिया! क्या तुम्हारे पास खाने की कोई चीज़ है? क्योंकि मुझे बहुत भूख लगी हुई है? हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा, मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, अल्लाह की क़सम! कुछ नहीं है।

जब आप हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास से तशरीफ़ ले गए तो हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की एक पड़ोसिन ने उनके यहां दो रोटियां और गोश्त का एक टुकड़ा भेजा, हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने खाना लेकर अपने एक प्याले में रख दिया और अपने दिल में कहा, अल्लाह की क़सम! मैं यह खाना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खिलाऊंगी, न ख़ुद खाऊंगी और मेरे पास जो बच्चे हैं, न उनको खिलाऊंगी, हालांकि ये सब भूखे थे और पेट भर खाने की उन्हें भी ज़रूरत थी।

उन्होंने हज़रत हसन या हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा में से एक को हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में बुलाने भेजा। हुज़ूर सल्ल० हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के यहां दोबारा तशरीफ़ ले आए। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया, मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, अल्लाह ने कुछ भेजा है, जो मैंने छिपाकर आपके लिए रखा है। आपने फ़रमाया, बिटिया! ले आओ।

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, मैं वह प्याला ले आयी। उसे खोला तो मैं देखकर हैरान रह गई, क्योंकि सारा प्याला रोटी और गोश्त से भरा हुआ था। मैं समझ गई, यह बरकत अल्लाह की तरफ़ से हुई है। मैंने अल्लाह की तारीफ़ की और उसके नबी पर दरूद भेजा और खाना हुज़ूर सल्ल० के सामने रख दिया।

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खाना देखा तो फ़रमाया,

अलहम्दु लिल्लाह ! ऐ बिटिया ! यह खाना तुम्हें कहां से मिला है? मैंने कहा, ऐ अब्बा जान ! यह खाना अल्लाह के यहां से आया है और अल्लाह जिसे चाहता है, उसको बेहिसाब और बे-गुमान रोज़ी देता है। आपने अल्लाह की तारीफ़ बयान की और फ़रमाया, ऐ बिटिया ! तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने तुझे बनी इसराईल की औरतों की सरदार (हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा) के मुशाबेह बनाया है, क्योंकि जब अल्लाह उन्हें रोज़ी देते और उनसे उस रोज़ी के बारे में पूछा जाता, तो वह कहतीं, यह अल्लाह के पास से आया है और अल्लाह जिसे चाहता है, उसे बे-हिसाब और बे-गुमान रोज़ी देता है।

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आदमी भेजकर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया, फिर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि०, हज़रत फ़ातिमा रज़ि०, हज़रत हसन रज़ि०, हज़रत हुसैन रज़ि० ने और हुज़ूर सल्ल० की पाक बीवियों ने और आपके तमाम घरवालों ने पेट भरकर खाना खाया।

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, सबके खा लेने के बाद खाना ज्यों का त्यों का बाक़ी था और वह बचा हुआ खाना तमाम पड़ोसियों को पूरा आ गया। उस खाने में अल्लाह ने बड़ी ख़ैर व बरकत डाली।[1]

पहले भाग में अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की तरफ़ दावत देने के बाब में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस गुज़र चुकी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू हाशिम को बुलाया। वे लगभग चालीस आदमी थे। हुज़ूर सल्ल० ने एक मुद्द (चौदह छटांक) का खाना पकाकर उनके सामने रखा। उन्होंने पेट भरकर खाना खाया, लेकिन जब वे खाकर उठे, तो खाना उसी तरह बचा हुआ था जैसे पहले था।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक प्याला मशरूब (पीने की चीज़) उन्हें पिलाया जिसे उन्होंने ख़ूब सेर होकर पिया। जब वे पी चुके तो

1. तफ़सीर इब्ने कसीर, भाग 1, पृ० 360,

वह मश्रूब भी उसी तरह बचा हुआ था जैसे पहले था। आप तीन दिन उन्हें ऐसे ही खिलाते-पिलाते रहे, फिर उन्हें अल्लाह की ओर दावत दी।

इसी तरह पहले हिस्से में सख़्तियां बर्दाश्त करने के बाब में अह्ले सुफ़्फ़ा के खाने में बरकत के क़िस्से गुज़र चुके हैं, जिन्हें हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे सहाबा रज़ि० ने रिवायत किया है और दूसरे हिस्से में ख़र्च करने के बाब में मेहमानों की मेहमानी के कुछ क़िस्से गुज़र चुके हैं। इनमें हज़रत अबू तलहा और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा की मेहमानी में बरकत और रहमत ज़ाहिर होने के क़िस्से भी गुज़र चुके हैं और हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के निकाह के क़िस्सों में वलीमा में बरकत का ज़ाहिर होना भी गुज़र चुका है।

सहाबा किराम के ग़ल्लों और फलों में बरकत

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, क़बीला दौस की एक औरत थीं, जिन्हें उम्मे शुरैक कहा जाता था। वह रमज़ान में मुसलमान हुईं, फिर उन्होंने मदीना की तरफ़ हिजरत की। सफ़र में एक यहूदी भी साथ था। उन्हें सख़्त प्यास लगी। यहूदी के पास पानी था। उन्होंने उससे पानी मांगा। उसने कहा, जब तक तुम यहूदी नहीं हो जाओगी, तुम्हें पानी नहीं पिलाऊंगा।

यह सो गईं तो ख़्वाब में देखा कि कोई उन्हें पानी पिला रहा है। जब यह उठीं तो यह बिल्कुल सेराब हो चुकी थीं और प्यास बिल्कुल ख़त्म हो चुकी थी। जब यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंचीं, तो सारा क़िस्सा हुज़ूर सल्ल० को सुनाया। हुज़ूर सल्ल० ने उनको शादी का पैग़ाम दिया। उन्होंने अपने आपको इस क़ाबिल न समझा और अर्ज़ किया, आप अपने अलावा जिससे चाहें, मेरी शादी कर दें।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु से शादी कर दी और हुज़ूर सल्ल० ने हुक्म दिया कि उन्हें तीस साअ (लगभग ढाई मन) जौ दिया जाए और फ़रमाया, उसे खाते रहो, लेकिन उसे किसी पैमाने से मत नापना और उनके साथ घी

की एक कुप्पी थी, जिसे वह हुज़ूर सल्ल० के लिए हदिया के तौर पर लाई थीं।

हज़रत उम्मे शुरैक रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपनी बांदी से कहा कि यह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ले जाओ उस बांदी ने जाकर हुज़ूर सल्ल० के घर में वह कुप्पी ख़ाली कर दी और घी हुज़ूर सल्ल० के बरतन में डाल दिया। हुज़ूर सल्ल० ने बांदी से कहा, उस कुप्पी को घर जाकर लटका देना और उसका मुंह डोरी से बन्द न करना। उस बांदी ने ऐसे ही किया।

हज़रत उम्मे शुरैक रज़ियल्लाहु अन्हा ने अन्दर जाकर देखा तो कुप्पी घी से भरी हुई थी। उन्होंने बांदी से कहा कि मैंने तुमसे नहीं कहा था कि जाकर यह कुप्पी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में दे आओ। बांदी ने कहा, मैं तो दे आई हूं। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० को यह बात बताई। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उस कुप्पी का मुंह कभी बन्द न करना।

चुनांचे बहुत दिनों तक ये लोग उसमें से घी निकालकर खाते रहे। आख़िर एक बार हज़रत उम्मे शुरैक रज़ि० ने उस कुप्पी का मुंह बन्द कर दिया। फिर यह सिलसिला बन्द हुआ, फिर उन लोगों ने जौ को पैमाने से नापा तो वह भी तीस साअ ही थे, कुछ कम न हुए थे।[1]

हज़रत यह्या बिन सईद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उम्मे शुरैक दौसिया रज़ियल्लाहु अन्हा ने हिजरत की। रास्ते में एक यहूदी का साथ हो गया। यह रोज़े से थीं और शाम हो चुकी थी। यहूदी ने अपनी बीवी से कहा, अगर तूने उस औरत को पानी पिलाया, तो मैं तेरी अच्छी तरह ख़बर लूंगा। आख़िर यह प्यासी ही सो गईं।

रात के आख़िरी हिस्से में उनके सीने पर एक डोल और एक थैला (अल्लाह की तरफ़ से) लाकर रखा गया। उन्होंने उस डोल में से ख़ूब पानी पिया, फिर उन्होंने उस यहूदी को और उसकी बीवी को उठाया, ताकि रात के आख़िरी हिस्से में सफ़र शुरू कर सकें। यहूदी ने कहा,

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 104,

मुझे इस औरत की आवाज़ से ऐसा लग रहा है कि जैसे उसने पानी पी लिया हो। हज़रत उम्मे शुरैक रज़ि० ने कहा, पानी तो मैंने ज़रूर पिया है, लेकिन अल्लाह की क़सम ! तुम्हारी बीवी ने पानी नहीं पिलाया है।

रिवायत करने वाले कहते हैं, हज़रत उम्मे शुरैक की एक घी की कुप्पी थी। उसके बाद घी में बरकत का क़िस्सा ज़िक्र किया।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक आदमी ने आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ग़ल्ला मांगा। हुज़ूर सल्ल० ने उसे आधा वसक़ जौ दिए (एक वसक़ 5 मन 10 सेर का होता है, इसलिए आधा वसक़ 2 मन 25 सेर का हुआ) वह आदमी, उसकी बीवी, और उसका ख़ादिम बहुत दिनों तक यह जौ खाते रहे। फिर एक दिन उसे पैमाने से नाप लिया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पता चला तो आपने फ़रमाया, अगर तुम लोग इसे न नापते, तो इसे हमेशा खाते रहते और ये जौ ख़त्म न होते और हमेशा बाक़ी रहते।[2]

हज़रत नौफ़ल बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपनी शादी के बारे में मदद चाही। आपने एक औरत से मेरी शादी कर दी और मुझे देने के लिए आपने तलाश किया तो आपको कुछ न मिला। आपने अपनी ज़िरह देकर अबू राफ़ेअ रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा।

उन्होंने एक यहूदी के पास वह ज़िरह रेहन रखी और उससे तीन साअ (दो मन बीस सेर) जौ उधार लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आए। हुज़ूर सल्ल० ने वह जौ मुझे दे दिए। हम यह जौ छः महीने तक खाते रहे। फिर हमने वह जौ पैमाने से नापे तो वे उतने ही निकले जितने हम लेकर आए थे, कुछ कम न हुए। मैंने इस बात का हुज़ूर

1. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 157
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 104,

सल्ल० से ज़िक्र किया, तो आपने फ़रमाया, अगर तुम उसे न नापते तो जब तक ज़िंदा रहते, उसमें से खाते रहते।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ तो उस वक़्त मेरे पास इंसान के खाने के क़ाबिल कोई चीज़ नहीं थी, बस सिर्फ़ कुछ जौ थे जो मेरे एक ताक़ में रखे हुए थे, जिन्हें मैं बहुत अर्से तक खाती रही। फिर एक दिन मैंने उन्हें तौला, तो उसके बाद वे ख़त्म हो गए।[2]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मेरे वालिद साहब का इंतिक़ाल हुआ तो उन पर क़र्ज़ा था। मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, मेरे वालिद अपने ज़िम्मे क़र्ज़ छोड़कर गए हैं। क़र्ज़ अदा करने के लिए मेरे पास कोई चीज़ नहीं है। वालिद साहब का खजूरों का एक बाग़ है, बस उसकी आमदनी है और उसकी आमदनी इतनी कम है कि कई सालों में क़र्ज़ अदा होगा। आप मेरे साथ तशरीफ़ ले चलें, ताकि क़र्ज़ देने वाले मुझे बुरा-भला न कह सकें।

चुनांचे आप मेरे साथ तशरीफ़ ले गए और खजूर के एक ढेर के गिर्द चक्कर लगाया और दुआ फ़रमाई। फिर दूसरे ढेर के गिर्द चक्कर लगाया, फिर उसके बाद बैठ गए और क़र्ज़ देने वालों से फ़रमाया, इसमें से लेना शुरू करो। (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको देना शुरू किया) और उन सबको उनके क़र्ज़ के मुताबिक़ पूरा-पूरा दे दिया और जितना उन्हें दिया, उतना बच भी गया।[3]

अबू नुऐम की रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल० उस ढेर के पास गए, फिर फ़रमाया, जाओ और अपने क़र्ज़ मांगने वाले साथियों को बुला लाओ। मैं उन्हें बुला लाया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 246, बिदाया, भाग 6, पृ० 119,
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 165
3. बिदाया, भाग 6, पृ० 116, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 563, दलाइल, पृ० 156,

उन्हें तौल-तौल कर देते रहे, यहां तक कि अल्लाह ने मेरे वालिद का सारा क़र्ज़ा अदा करवा दिया। हालांकि अल्लाह की क़सम! मैं तो इस बात पर भी राज़ी था कि अल्लाह मेरे वालिद का सारा क़र्ज़ा उतरवा देते और मैं एक भी खजूर अपनी बहनों के पास वापस लेकर न जाता, लेकिन अल्लाह ने खजूर के सारे ढेर बचा दिए, बल्कि मुझे तो वह ढेर, जिस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैठे थे, वह भी सही सालिम नज़र आ रहा था और ऐसे लग रहा था कि जैसे उसमें से एक खजूर भी कम न हुई हो।

हज़रत साद बिन मीना रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत बशीर बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी, जो कि हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की बहन हैं, वह फ़रमाती हैं, मुझे मेरी वालिदा हज़रत अमरा बिन्त रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बुलाया और मुट्ठी भर खजूरें मेरी झोली में डालकर फ़रमाया, ऐ बेटी! अपने वालिद और अपने मामूं हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास उनको दोपहर का खाना ले जाओ।

मैं वह खजूरें लेकर चल पड़ी और अपने वालिद और मामूं को ढूंढती हुई हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से गुज़री। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ बेटी! यहां आओ, यह तुम्हारे पास क्या है? मैंने कहा, ये खजूरें हैं जिन्हें देकर मेरी वालिदा ने वालिद और मामूं के पास भेजा है, ताकि वे यह खा लें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुझे दे दो। मैंने वे खजूरें हुज़ूर सल्ल० के दोनों हाथों में डाल दीं। वे खजूरें इतनी थोड़ी थीं कि उनसे हुज़ूर सल्ल० के दोनों हाथ न भर सके।

फिर आपके हुक्म पर एक कपड़ा बिछाया गया, जिस पर आपने वे खजूरें डाल दीं। वे खजूरें कपड़े पर बिखर गईं। एक आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास था। आपने उससे फ़रमाया, ख़ंदक़ वालों में एलान कर दो कि खाने के लिए आ जाएं।

चुनांचे ख़ंदक़ वाले सब जमा हो गए और खजूरें खानी शुरू कर दीं

तो खजूरें बढ़ती जा रही थीं, यहां तक कि सब ख़ंदक़ वाले खाकर वापस चले गए और खजूरें इतनी ज़्यादा हो गई थीं कि कपड़े से नीचे गिर रही थीं।[1]

हज़रत इरबाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं सफ़र में, हज़र में हमेशा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरवाज़े पर पड़ा रहता था। एक बार हम तबूक में थे। हम रात को किसी काम से कहीं गए थे। जब हम हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस आए तो आप भी और आपके पास जितने सहाबा थे, वे सब भी रात का खाना खा चुके थे। हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे पूछा, आज रात तुम कहां थे? मैंने आपको बताया।

इतने में हज़रत जुआल बिन सुराक़ा और हज़रत अब्दुल्लाह बिन माक़िल मुज़नी रज़ियल्लाहु अन्हुमा भी आ गए और यों हम तीन हो गए और तीनों को भूख लगी हुई थी। हुज़ूर सल्ल० हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के ख़ेमे में तशरीफ़ ले गए और उनसे हमारे खाने के लिए कोई चीज़ तलब फ़रमाई, लेकिन आपको कुछ न मिला।

फिर पुकार कर आपने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, कुछ है? हज़रत बिलाल रज़ि० चमड़े के थैले पकड़ कर झाड़ने लगे तो उनमें सात खजूरें निकल आईं। हुज़ूर सल्ल० ने वे खजूरें एक बड़े प्याले में डालीं और फिर उन पर हाथ रखा और अल्लाह का नाम लिया और फ़रमाया, अल्लाह का नाम लेकर खाओ। हमने वे खजूरें खाईं।

मैं खजूरें गिनता जा रहा था और उनकी गुठलियां दूसरे हाथ में पकड़ता जा रहा था। मैंने गिना तो मैंने 54 खजूरें खाई थीं। मेरे दोनों साथी भी मेरी तरह ही कर रहे थे और खजूरें गिन रहे थे। उन्होंने पचास-पचास खजूरें खाई थीं। जब हमने खाने से हाथ उठाए तो सातों खजूरें वैसी की वैसी थीं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ बिलाल! इनको अपने थैले में रख लो।

जब दूसरा दिन हुआ तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वे

1. दलाइल, पृ० 180, बिदाया, भाग 6, पृ० 113

खजूरें प्याले में डालीं, और फ़रमाया, अल्लाह का नाम लेकर खाओ। हम दस आदमी थे। हमने पेट भरकर वे खजूरें खाईं, फिर जब हमने खाने से हाथ हटाए, तो वे खजूरें उसी तरह सात थीं। फिर आपने फ़रमाया, अगर मुझे अपने रब से हया न आती तो हम सब मदीना पहुंचने तक ही खजूरें खाते रहते।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मदीना पहुंच गए तो मदीना से एक छोटा-सा लड़का आपके सामने आया। आपने उसे यह खजूरें दे दीं। वह खजूरें खाता हुआ चला गया।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, इस्लाम में मुझ पर तीन ऐसी बड़ी मुसीबतें आई हैं कि वैसी कभी भी मुझ पर नहीं आईं—

1. एक तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इंतिक़ाल का हादसा, क्योंकि मैं आपके हमेशा साथ रहने वाला मामूली सा साथी था,

2. दूसरे हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत का हादसा,

3. तीसरे तोशादान का हादसा।

लोगों ने पूछा, ऐ अबू हुरैरह रज़ि० ! तोशादान के हादसे का क्या मतलब ? फ़रमाया, हम एक सफ़र में हुज़ूर सल्ल० के साथ थे। आपने फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरह ! तुम्हारे पास कुछ है ? मैंने कहा, तोशादान में कुछ खजूरें हैं। आपने फ़रमाया, ले आओ। मैंने खजूरें निकालकर आपकी ख़िदमत में पेश कर दीं। आपने उन पर हाथ फेरा और बरकत के लिए दुआ फ़रमाई।

फिर फ़रमाया, दस आदमियों को बुला लाओ। मैं दस आदमियों को बुला लाया, उन्होंने पेट भरकर खजूरें खाईं। फिर इसी तरह दस-दस आदमी आकर खाते रहे, यहां तक कि सारी फ़ौज ने खा लिया और तोशादान में फिर भी खजूरें बची रहीं। आपने फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरह ! जब तुम इस तोशादान में से खजूरें निकालना चाहो, तो उसमें हाथ डालकर निकालना और उसे उलटाना नहीं।

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 118,

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सारी ज़िंदगी में उसमें से निकाल कर खाता रहा, फिर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की सारी ज़िंदगी मैं उसमें से खाता रहा, फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की सारी ज़िंदगी मैं उसमें से खाता रहा, फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की सारी ज़िंदगी मैं उसमें से खाता रहा।

फिर जब हज़रत उस्मान रज़ि० शहीद हो गए, तो मेरा सामान भी लुट गया और वह तोशादान भी लुट गया। क्या मैं आम लोगों को न बता दूं कि मैंने उसमें से कितनी खजूरें खाई हैं? मैंने उनमें से दो सौ वसक़ यानी एक हज़ार पचास मन से भी ज़्यादा खजूरें खाई हैं।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मेरी मां मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास ले गईं और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! यह आपका छोटा-सा ख़ादिम है, इसके लिए दुआ फ़रमा दें, तो हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह! इसके माल और औलाद को ज़्यादा फ़रमा और इसकी उम्र लम्बी फ़रमा और इसके तमाम गुनाह माफ़ फ़रमा।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं अपने दो कम सौ यानी अठानवे बच्चे दफ़न कर चुका हूं, या फ़रमाया, दो ऊपर सौ यानी एक सौ दो बच्चे दफ़न कर चुका हूं और मेरे बाग़ का फल साल में दो बार आता है और मेरी ज़िंदगी इतनी लम्बी हो चुकी है कि अब ज़िंदगी से दिल भर चुका है। (सन् 93 हिजरी में उनका बसरा में 103 साल की उम्र में इंतिक़ाल हुआ और हुज़ूर सल्ल० की चौथी दुआ को पूरा होने का मुझे यक़ीन है, यानी गुनाहों की मग़्फ़िरत की दुआ।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मेरी मां हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 117, दलाइल, पृ० 155
2. इब्ने साद, भाग 7, पृ० 19

अलैहि व सल्लम ! अनस के लिए दुआ फ़रमाएं। हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! इसके माल और औलाद को ज़्यादा फ़रमा और इनमें बरकत अता फ़रमा, तो मैं पोतों के अलावा अपने एक सौ पचीस (125) बच्चे दफ़न कर चुका हूं और मेरी ज़मीन साल में दो बार फल देती है और सारे इलाक़े में और कोई ज़मीन साल में दो बार फल नहीं देती।[1]

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के दूध और घी में बरकत

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उम्मे मालिक बहज़ीया रज़ियल्लाहु अन्हा अपनी कुप्पी में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में घी हदिया भेजा करती थीं। एक बार उनके बेटों ने सालन मांगा। उस वक़्त उनके पास कोई चीज़ नहीं थी। वह अपनी उस कुप्पी के पास गईं, जिसमें वह हुज़ूर सल्ल० को घी हदिया भेजा करती थीं, उसमें उन्हें घी मिल गया, (हालांकि उसे ख़ाली करके टांगा था) वह बहुत अर्से तक अपने बेटों को वह घी सालन के तौर पर देती रहीं।

आख़िर एक बार उन्होंने इस कुप्पी को निचोड़ लिया, (जिसके बाद यह सिलसिला ख़त्म हो गया।) उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में जाकर सारा वाक़िआ अर्ज़ किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुमने उसे निचोड़ा था? उन्होंने कहा, जी हां। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तू इसे इसी तरह रहने देती और न निचोड़ती तो तुझे इस कुप्पी में हमेशा घी मिलता रहता।[2]

हज़रत उम्मे मालिक अंसारिया रज़ियल्लाहु अन्हा घी की एक कुप्पी लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गईं। आपने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को उनसे घी लेने का हुक्म दिया।

---

1. कंज़, भाग 7, पृ० 9
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 104,

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने निचोड़ कर उस कुप्पी में से सारा घी निकाल लिया और ख़ाली कुप्पी हज़रत उम्मे मालिक रज़ियल्लाहु अन्हा को वापस कर दी।

जब वह वापस घर पहुंचीं तो देखा कि कुप्पी तो घी से भरी हुई है। उन्होंने जाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या मेरे बारे में आसमान से कोई वह्य उतरी है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उम्मे मालिक रज़ि० क्यों? क्या बात पेश आई है? उन्होंने कहा, आपने मेरा हदिया क्यों वापस कर दिया?

आपने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाकर उनसे इस बारे में पूछा, हज़रत बिलाल रज़ि० ने कहा, उस ज़ात की क़सम ! जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, मैंने तो कुप्पी में से सारा घी निकाल लिया था, बल्कि उसे इतना निचोड़ा था कि मुझे शर्म आने लगी थी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उम्मे मालिक ! तुम्हें मुबारक हो, अल्लाह ने तुम्हें हदिए का बदला जल्दी दे दिया।

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें सिखाया कि हर नमाज़ के बाद दस बार सुब्हानल्लाह, दस बार अलहम्दु लिल्लाह और दस बार अल्लाहु अक्बर कहा करें।[1]

हज़रत उम्मे औस बहज़ीया रज़ियल्लाहु अन्हा ने घी पकाकर एक कुप्पी में डाला, फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हदिया में पेश किया। हुज़ूर सल्ल० ने उसे क़ुबूल फ़रमा लिया और कुप्पी में जितना घी था वह ले लिया और उनके लिए बरकत की दुआ फ़रमायी और वह कुप्पी उन्हें वापस फ़रमा दी।

उन्होंने घर जाकर देखा तो वह कुप्पी घी से भरी हुई थी। वह समझीं कि शायद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनका हदिया क़ुबूल नहीं फ़रमाया। चीख़तीं-पुकारतीं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आईं,

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 309, दलाइल, पृ० 204, इसाबा, भाग 4, पृ० 494

(और अर्ज़ किया, आपने मेरा हदिया क़ुबूल नहीं फ़रमाया?) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इन्हें वाक़िया तफ़्सील से बताओ कि हमने तो क़ुबूल कर लिया था। (अब यह अल्लाह ने बरकत अता फ़रमाई है।)

चुनांचे वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी में वह घी खाती रहीं, फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि० और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुम की ख़िलाफ़त के ज़माने में वह घी खाती रहीं। फिर जब हज़रत अली और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हुमा में इख़्तिलाफ़ पैदा हुए तो उस वक़्त तक वह खाती रहीं।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मेरी मां की एक बकरी थी। वह उसका घी एक कुप्पी में जमा करती रहीं। जब वह कुप्पी भर गई तो अपनी लयपालक लड़की के हाथ वह कुप्पी भेजी और उससे कहा, ऐ बेटी! यह कुप्पी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंचा दो। आप उसे सालन बना लिया करेंगे।

वह लड़की कुप्पी लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंची और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! यह घी की कुप्पी हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० ने आपकी ख़िदमत में भेजी है। हुज़ूर सल्ल० ने घरवालों से फ़रमाया, इसकी कुप्पी ख़ाली करके दे दो। घरवालों ने ख़ाली करके उसे दे दी। वह लेकर चली गई और घर आकर एक खूंटी पर लटका दिया।

उस वक़्त हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा घर में नहीं थीं। जब वह घर वापस आईं तो देखा कि कुप्पी भरी हुई है और उसमें से घी टपक रहा है। उन्होंने कहा, ऐ लड़की! क्या मैंने तुझे नहीं कहा था कि यह कुप्पी जाकर हुज़ूर सल्ल० को दे आओ। उसने कहा, मैं तो दे आई हूं। अगर आपको मेरी बात पर इत्मीनान नहीं है तो आप ख़ुद जाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछ लें।

हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा उस लड़की को लेकर हुज़ूर

1. इसाबा, भाग 4, पृ० 431, हैसमी, भाग 8, पृ० 310, बिदाया, भाग 6, पृ० 104,

सल्ल० की ख़िदमत में गईं और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने इस लड़की के हाथ एक कुप्पी आपकी ख़िदमत में भेजी थी, जिसमें घी था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, वह कुप्पी लेकर आई थी। हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० ने कहा, उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ और सच्चा दीन देकर भेजा है, वह कुप्पी तो भरी हुई है और उसमें से घी टपक रहा है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ उम्मे सुलैम। क्या तुम इस बात पर ताज्जुब कर रही हो कि जिस तरह तुमने अल्लाह के नबी को खिलाया है, उस तरह अल्लाह तुम्हें खिला रहे हैं। उसमें से तुम ख़ुद भी खाओ और दूसरों को भी खिलाओ।

हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, मैं घर वापस आई और एक बड़े प्याले में और दूसरे बरतनों में डालकर मैंने वह घी तक़सीम किया और कुछ उसमें छोड़ दिया, जिसे हम एक या दो महीने तक सालन बनाकर इस्तेमाल करते रहे।[1]

हज़रत उम्मे शुरैक रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, मेरे पास एक कुप्पी थी, जिसमें मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को घी हदिया किया करती थी। एक दिन मेरे बच्चों ने मुझसे घी मांगा और घी था नहीं। मैं देखने के लिए उठकर कुप्पी की तरफ़ गई (कि शायद उसमें से कुछ बचा हुआ घी मिल जाए।)

मैंने जाकर देखा तो कुप्पी तो घी से भरी हुई थी और उसमें से घी बह रहा था। मैंने बच्चों के लिए उंडेल कर उसमें से कुछ निकाला, जिसे बच्चे कुछ देर खाते रहे। फिर मैं देखने गई कि कुप्पी में कितना घी बाक़ी रह गया है। मैंने उसे उंडेल कर सारा घी निकाला, जिससे वह सारा घी ख़त्म हो गया। फिर मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गई।

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 103, हैसमी, भाग 8, पृ० 309, दलाइल, पृ० 204, इसाबा, भाग 4, पृ० 320

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया, क्या तुमने इसे बिल्कुल उलटा दिया था? ग़ौर से सुनो, अगर तुम इसे उलटा न करतीं, तो एक अर्से तक यह घी बाक़ी रहता।[1]

हज़रत यह्या बिन सईद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उम्मे शुरैक रज़ियल्लाहु अन्हा की एक कुप्पी थी, जो उनके पास आता, उसे वह कुप्पी उधार दे देतीं। एक आदमी ने उनसे उस कुप्पी का सौदा करना चाहा, तो उन्होंने कहा, उसमें कुछ नहीं है। फिर उसमें फूंक मार कर उसे धूप मे लटका दिया, (ताकि घी पिघल कर एक जगह जमा हो जाए) तो क्या देखती हैं कि वह घी से भरी हुई है।

इसी वजह से कहा जाता था कि हज़रत उम्मे शुरैक रज़ियल्लाहु अन्हा की कुप्पी अल्लाह की निशानियों में से एक निशानी है।[2] इस हदीस का कुछ हिस्सा पहले गुज़र चुका है।

हज़रत हमज़ा बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० का खाना अलग-अलग सहाबा रज़ि० बारी-बारी पका कर लाते। एक रात यह लाते, दूसरी रात दूसरे सहाबी रज़ि० पका कर लाते। चुनांचे एक रात मेरी बारी आई। मैंने हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० का खाना तैयार किया और घी की मशक को ऐसे ही छोड़ दिया और उसके मुंह को डोरी से बांधा नहीं।

जब मैं खाना हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ले जाने लगा तो मशक हिल गई और उसमें से घी गिरने लगा, तो मैंने कहा, क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खाने को मेरे ही हाथों गिरना था? जब मैं खाना लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचा, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क़रीब आ जाओ, तुम भी खाओ। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! गुंजाइश नहीं। (खाना कम है)

खाना खिलाकर मैं अपनी जगह वापस आया तो देखा कि मशक से

1. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 157
2. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 157

ग़टग़ट घी के गिरने की आवाज़ आ रही थी। मैंने कहा, यह आवाज़ कैसी? जो घी उसमें बच रहा होगा, वह गिर रहा होगा। मैं उसे देखने गया तो मशक सीने तक भरी हुई थी। मैं वह मशक लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गया और सारा वाक़िया आपको बताया।

आपने फ़रमाया, अगर तुम उसको हाथ न लगाते और वैसे ही रहने देते तो यह मुंह तक भर जाती, फिर उसके मुंह पर डोरी बांधी जाती।[1]

एक रिवायत में है, अगर तुम उसे ऐसे ही रहने देते तो सारी घाटी में घी बहने लगता।

हज़रत हमज़ा बिन अम्र अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तबूक की लड़ाई में तशरीफ़ ले गए और उस सफ़र में घी की मशक संभालने की ज़िम्मेदारी मुझ पर थी। मैंने उस मशक को देखा तो उसमें थोड़ा-सा घी था। मैंने हुज़ूर सल्ल० के लिए घी तैयार किया और उस मशक को धूप में रख दिया और ख़ुद सो गया।

फिर (अल्लाह तआला ने उस मशक को घी से भर दिया और) मशक से घी बहने की आवाज़ से मेरी आंख खुली। मैंने अपने हाथ से उसके सर को पकड़ा। हुज़ूर सल्ल० मुझे देख रहे थे। आपने फ़रमाया, अगर तुम इसका सर न पकड़ते, ऐसे ही रहने देते तो सारी वादी में यह घी बहने लगता।[2]

हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त की साहबज़ादी रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाती हैं कि मेरे वालिद एक लड़ाई में तशरीफ़ ले गए और हमारे लिए सिर्फ़ एक बकरी छोड़कर गए और हमसे कहकर गए कि जब इसका दूध निकालने लगो, तो इसे सुफ़्फ़ा वालों के पास ले जाना, वे दूध निकाल देंगे।

चुनांचे हम वह बकरी सुफ़्फ़ा ले गए, तो वहां हुज़ूर सल्लल्लाहु

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 310,
2. दलाइल, पृ० 155,

अलैहि व सल्लम तशरीफ़ रखते थे। हुज़ूर सल्ल० ने उस बकरी को लिया और उसकी टांग बांधकर उसका दूध निकालने लगे और हमसे फ़रमाया, तुम्हारे यहां जो सबसे बड़ा बरतन है वह ले आओ। मैं गई और तो मुझे कोई बरतन मिला नहीं, सिर्फ़ एक बड़ा प्याला मिला, जिसमें हम आटा गूंधते थे, मैं वह ले आई।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसमें दूध निकाला, तो वह भर गया। फिर फ़रमाया, जाओ ख़ुद भी पियो और पड़ोसियों को भी पिलाओ और जब उस बकरी का दूध निकालना हो, उसे मेरे पास ले आया करो, मैं उसका दूध निकाल दिया करूंगा। हम वह बकरी हुज़ूर सल्ल० के पास ले जाते रहे और हमारे ख़ूब मज़े हो गए।

फिर मेरे वालिद आ गए और उन्होंने उस बकरी की टांग बांधकर उसका दूध निकाला तो वह अपने पहले दूध पर आ गई। मेरी मां ने कहा, आपने तो हमारी बकरी ख़राब कर दी। मेरे वालिद ने कहा, क्यों? मां ने कहा, यह तो आपके पीछे इतना दूध दिया करती थी, जिससे यह बड़ा प्याला भर जाया करता था। वालिद ने कहा, इसका दूध कौन निकालता था, मां ने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

वालिद ने कहा, तुम तो मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बराबर कर रही हो। अल्लाह की क़सम! उनके हाथ में तो मेरे हाथ से बहुत ज़्यादा बरकत है।[1]

पहले हिस्से में 'सख़्तियां बरदाश्त करने' के बाब में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की हदीस और 'अल्लाह की दावत देने' के बाब में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस गुज़र चुकी है।

गोश्त में बरकत

हज़रत मसऊद बिन ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक बकरी भेजी और मैं

1. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 291,

ख़ुद किसी काम से कहीं चला गया। हुज़ूर सल्ल० ने मेरे घर बकरी का कुछ गोश्त भेजा। मैं अपनी बीवी हज़रत उम्मे ख़ुनास रज़ियल्लाहु अन्हा के पास वापस आया तो मैंने देखा कि उसके पास गोश्त रखा हुआ है। मैंने पूछा, ऐ उम्मे ख़ुनास ! यह गोश्त कहां से आया?

मेरी बीवी ने कहा, आपने अपने ख़लील सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो बकरी भेजी थी, उसमें से यह गोश्त उन्होंने हमें भेजा है। मैंने कहा क्या बात है, तुमने बच्चों को यह गोश्त अभी तक खिलाया नहीं? मेरी बीवी ने कहा, मैं तो सबको खिला चुकी हूं, यह तो उनका बचा हुआ है।

हज़रत मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, थोड़े से गोश्त से सब घरवालों ने खा लिया और फिर भी गोश्त बच गया, हालांकि ये लोग दो-तीन बकरियां ज़िब्ह करते थे और फिर भी काफ़ी नहीं होती थीं।[1]

हज़रत ख़ालिद बिन अब्दुल उज़्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में ज़िब्ह करने के क़ाबिल एक बकरी पेश की, जिसे हुज़ूर सल्ल० ने भी खाया और आपके कुछ सहाबा रज़ि० ने भी खाया, लेकिन फिर भी गोश्त बच गया जो हुज़ूर सल्ल० ने मुझे अता फ़रमा दिया, जिसे मैंने और मेरे तमाम बाल-बच्चों ने खाया और फिर भी बच गया, हालांकि मेरे बच्चे बहुत सारे थे।[2]

जहां से रोज़ी मिलने का गुमान न हो, वहां से रोज़ी मिलना

हज़रत सलमा बिन नुफ़ैल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा, क्या कभी आपके लिए आसमान से भी खाना उतारा गया? आपने फरमाया, हां। मैंने पूछा, क्या उसमें से कुछ बचा था? आपने फ़रमाया, हां, मैंने पूछा, उसका क्या हुआ? आपने फ़रमाया, उसे आसमान की तरफ़ उठा लिया गया।[3]

---

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 310,
2. इसाबा, भाग 1, पृ० 409,

हज़रत सलमा बिन नुफ़ैल सुकूनी रज़ियल्लाहु अन्हु नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में से थे। वह फ़रमाते हैं, एक बार हम लोग हुज़ूर सल्ल० के पास बैठे हुए थे कि इतने में एक आदमी आया और उसने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! क्या कभी आपके पास आसमान से खाना आया है? आपने फ़रमाया, हां। देगची में गर्म गर्म आया था।

उस आदमी ने पूछा, क्या आपके खाने के बाद कुछ खाना बचा था? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां। उसने कहा, फिर उस बचे हुए खाने का क्या हुआ था? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उसे आसमान की तरफ़ उठा लिया गया था और वह चुपके-चुपके मुझे यह कह रहा था कि मैं आप लोगों में थोड़ा अर्सा ही रहूंगा और आप लोग भी मेरे बाद थोड़ा अर्सा ही रहोगे, बल्कि ज़िंदगी लम्बी मालूम होने लगेगी और तुम लोग कहोगे, हम यहां दुनिया में कब तक पड़े रहेंगे? फिर आप लोग अलग-अलग जमाअतें बनकर आओगे और एक दूसरे को फ़ना करोगे और क़ियामत से पहले बहुत ज़्यादा मौतें वाक़े होंगी और इसके बाद ज़लज़ले के साल होंगे।[1]

एक लम्बी हदीस में हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भूख की शिकायत की। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बहुत जल्द अल्लाह तुम्हें खिलाएंगे।

चुनांचे हम लोग समुन्दर के किनारे पहुंचे तो समुन्दर में एक ज़बरदस्त मौज आई, जिससे एक बहुत बड़ी मछली बाहर आ गई। हमने उसका एक टुकड़ा काटा और आग जलाकर कुछ गोश्त भूना और बाक़ी पका लिया और ख़ूब पेट भरकर खाया। वह मछली इतनी बड़ी थी कि मैं उसकी आंख के हलक़े के अन्दर दाख़िल हो गया और मेरे अलावा फ़्लां और फ़्लां पांच आदमी दाख़िल हो गए और वह हलक़ा इतना

1. हाकिम, भाग 4, पृ० 447, इसाबा, भाग 2, पृ० 68,

बड़ा था कि हम बाहर के किसी आदमी को नज़र नहीं आ रहे थे।

फिर हम उसमें से बाहर आए। उसके जिस्म में बड़े-बड़े कांटे थे। हमने एक कांटा लेकर कमान की तरह खड़ा किया और क़ाफ़िले के सबसे लम्बे आदमी को और सबसे लम्बे ऊंट को और सबसे ऊंची काठी को मंगवाया। उस काठी को उस ऊंट पर रखकर उस आदमी को उस पर बिठाया। वह आदमी उस कांटे के नीचे से गुज़र गया, लेकिन उसका सर उस कांटे को न लगा।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन सौ सहाबा रज़ि० का एक लश्कर समुन्दर के साहिल की तरफ़ भेजा और हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु को उनका अमीर बनाया। चुनांचे हम मदीना से चले। रास्ते में तोशा ख़त्म हो गया। हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने हुक्म दिया कि लश्कर के तमाम तोशे जमा किए जाएं।

चुनांचे तमाम तोशे जमा किए गए, तो खजूर के दो तोशेदान बन गए। हज़रत अबू उबैदा हमें उनमें से थोड़ा-थोड़ा रोज़ देते। फिर ये तोशेदान भी ख़त्म हो गए और हमें रोज़ाना सिर्फ़ एक खजूर मिलने लगी।

रिवायत करने वाले ने हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, एक खजूर से क्या बनता होगा? हज़रत जाबिर रज़ि० ने फ़रमाया, उस एक खजूर का फ़ायदा हमें तब मालूम हुआ जब वह भी मिलनी बन्द हो गई। फिर जब हम समुन्दर के साहिल पर पहुंचे, तो वहां छोटे पहाड़ जितनी ऊंची एक मछली मिली, जिसके गोश्त को सारा लश्कर 18 दिन तक खाता रहा।

(दूसरी रिवायत से मालूम होता है कि कुछ सहाबा रज़ि० एक महीने तक खाते रहे) फिर हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़रमाने पर उस मछली के दो कांटे खड़े किए गए और एक ऊंटनी पर कजावा रखा

1. मुस्लिम, भाग 2, पृ० 418,

गया। फिर वह ऊंटनी उन कांटों के नीचे से गुज़री और उसका सर या कोहान कांटों को न लगा।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें तीन सौ सवारों के लश्कर में भेजा। हमारे अमीर हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु थे। हम कुरैश के एक तिजारती क़ाफ़िले की घात में गए थे। उस सफ़र में हमें सख़्त भूख लगी और खाने के तमाम सामान ख़त्म हो गए और पेड़ों के गिरे हुए पत्ते खाने पड़े और इस वजह से उस लश्कर का नाम पत्तों वाला लश्कर पड़ गया।

एक आदमी ने लश्कर के लिए तीन ऊंट ज़िब्ह किए, फिर तीन ऊंट ज़िब्ह किए, फिर तीन ऊंट ज़िब्ह किए। फिर हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने उस आदमी को और ऊंट ज़िब्ह करने से मना कर दिया। फिर समुन्दर की तेज़ मौज ने एक बहुत बड़ी मछली किनारे पर ला डाली, जिसे अंबर कहा जाता है। आधे महीने तक हम उसका गोश्त खाते रहे और उसकी चर्बी को जिस्म पर लगाते रहे, जिससे हमारे जिस्मों की कमज़ोरी और दुबलापन वग़ैरह सब जाता रहा और जिस्म पहले की तरह ठीक-ठाक हो गए। इसके बाद कांटे का क़िस्सा ज़िक्र किया।[2]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें क़ुरैश के एक तिजारती क़ाफ़िले पर हमला करने के लिए भेजा और हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु को हमारा अमीर बनाया और हुज़ूर सल्ल० ने खजूरों का एक थैला हमें ज़ादे सफ़र के लिए दिया। देने के लिए आपको इसके अलावा और कुछ न मिला। हज़रत अबू उबैदा रज़ि० हमें हर दिन एक खजूर दिया करते।

रिवायत करने वाले कहते हैं, मैंने हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि आप लोग एक खजूर का क्या करते

1. मालिक, पृ० 371, बिदाया, भाग 4, पृ० 276,
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 276, दलाइल, पृ० 214,

होंगे? हज़रत जाबिर रज़ि० ने कहा, हम बच्चे की तरह उसे चूसते थे, फिर उसके बाद पानी पी लेते और एक दिन रात इसी पर गुज़ार लेते। फिर हम लाठी मारकर पेड़ के पत्तों को झाड़ लेते और उन्हें पानी में भिगोकर खा लेते।

हम चलते-चलते समुन्दर के किनारे पर पहुंचे, तो हमें दूर से एक बहुत बड़े टीले जैसी कोई चीज़ नज़र आई। हमने वहां पहुंच कर देखा तो वह अंबर नामी बहुत बड़ी मछली थी। पहले तो हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, यह मुरदार है, इसे मत खाओ। फिर फ़रमाया, अच्छा नहीं, हम तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के भेजे हुए हैं और अल्लाह के रास्ते में हैं और तुम लोग इज़्तिरार की हालत में पहुंच चुके हो (जिसमें मुरदार हलाल हो जाता है) इसलिए इसे खा लो।

हम तीन सौ आदमी थे, एक महीने तक उसका गोश्त खाते रहे, यहां तक कि हम मोटे हो गए और उसकी आंख के हलक़े में से बड़े-बड़े मटके भरकर चरबी निकालते थे और बैल जितने बड़े उसके गोश्त के टुकड़े काटते थे और हज़रत उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसकी आंख के हलक़े में चरबी निकालने के लिए तेरह आदमी दाख़िल किए थे और उसका एक कांटा लेकर उसे खड़ा किया और सबसे लम्बे ऊंट पर कजावा कस कर उस पर आदमी बिठाकर उसे उस कांटे के नीचे से गुज़ारा, तो वह गुज़र गया और उसके गोश्त के बड़े-बड़े टुकड़े हमने वापसी के सफ़र में अपने साथ रख लिए।

जब हम मदीना पहुंचे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर हम लोगों ने मछली का सारा वाक़िआ ज़िक्र किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह वह रोज़ी है जो अल्लाह ने अपने ग़ैबी ख़ज़ाने से तुम्हें अता फ़रमाई है। हमें खिलाने के लिए क्या इस मछली का गोश्त तुम लोगों के पास है?

इस पर हमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में

कुछ गोश्त भेजा, जिसे आपने खाया। (आपने यह गोश्त इसलिए खाया कि यह बरकत वाला था) और ताकि सहाबा रज़ि० को यह भी मालूम हो जाए कि यह मछली मुरदार नहीं थी, बल्कि हलाल थी, मछली को ज़िब्ह करने की ज़रूरत नहीं है।)[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक आदमी अपने घर में दाख़िल हुआ, जब उसने घर में फ़क़्र व फ़ाक़ा की हालत देखी, तो वह जंगल की तरफ़ चला गया। जब उसकी बीवी ने यह देखा तो वह उठी और चक्की के ऊपर वाला पाट नीचे वाले पर रखा और फिर तन्दूर में आग लगाई, फिर दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! हमें रोज़ी अता फ़रमा। वह औरत क्या देखती है कि बड़ा प्याला आटे से भरा हुआ है और फिर जाकर तन्दूर को देखा तो वह रोटियों से भरा हुआ था।

इतने में उसका ख़ाविंद भी वापस आ गया। उसने पूछा, क्या मेरे बाद तुम्हें कुछ मिला? उसकी बीवी ने कहा, हां। हमारे रब की तरफ़ से कुछ आया है। वह मर्द उठा और उसने चक्की के ऊपर वाला पाट उठा लिया। (फिर चक्की का चलना बन्द हो गया) किसी ने जाकर इस बात का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ज़िक्र किया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ग़ौर से सुनो! अगर यह चक्की का पाट न उठाता तो यह चक्की क़ियामत तक चलती रहती।[2]

दूसरी रिवायत में है कि उस औरत ने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! हमें वह चीज़ अता फ़रमा जिसे हम पीसें और गूंधें और उसकी रोटी पकाएं। फिर उसने देखा कि बड़ा प्याला रोटियों से भरा हुआ है और चक्की आटा पीस रही है और तंदूर भुनी हुई चांपों से भरा हुआ है। फिर उसके ख़ाविंद ने आकर पूछा, तुम्हारे पास कुछ है?

उसकी बीवी ने कहा, अल्लाह ने रोज़ी अता फ़रमाई है। ख़ाविंद ने चक्की का पाट उठाया, चक्की के इर्द-गिर्द को अच्छी तरह साफ़

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 276, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 411, कंज़, भाग 8, पृ० 52
2. अहमद,

किया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब मालूम हुआ तो आपने फ़रमाया, अगर ये चक्की को अपने हाल पर रहने देते तो चक्की क़ियामत तक पीसती रहती।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक अंसारी बहुत ही ज़रूरतमंद और ग़रीब था। उसके घरवालों के पास कुछ नहीं था। वह घर से बाहर चला गया। उसकी बीवी ने अपने दिल में कहा, अगर मैं चक्की चलाऊं या तन्दूर में खजूर की टहनियां डालकर आग जलाऊं तो मेरे पड़ोसी चक्की की आवाज़ सुनेंगे और धुवां देखेंगे। इससे वे यह समझेंगे कि हमारे पास खाने को कुछ है और हमारे यहां फ़क़्र व फ़ाक़ा नहीं है।

उसने उठकर तन्दूर में आग जलाई और बैठकर चक्की चलाने लगी। इतने में उसका ख़ाविंद आ गया और उसने बाहर से चक्की की आवाज़ सुनी, फिर दरवाज़ा खटखटाया। बीवी ने खड़े होकर दरवाज़ा खोला। ख़ाविंद ने पूछा, तुम क्या पीस रही हो? बीवी ने सारी कारगुज़ारी सुनाई। वे दोनों अन्दर गए तो देखा चक्की अपने आप चल रही है और उसके अन्दर से आटा निकल रहा है। बीवी बरतनों में आटा भरने लगी, तो घर के सारे बरतन आटे से भर गए। फिर उसने बाहर जाकर तन्दूर को देखा तो वह रोटियों से भरा हुआ था।

ख़ाविंद ने जाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सारा वाक़िया सुनाया। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, फिर चक्की का क्या हुआ? ख़ाविंद ने कहा, मैंने उसे उठाकर झाड़ दिया था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुम चक्की को उसके हाल पर रहने देते, तो वह मेरी ज़िंदगी तक यों ही चलती रहती या फ़रमाया, तुम्हारी ज़िंदगी तक यों ही चलती रहती।[2]

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 256
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 119

अलैहि व सल्लम के साथ मक्का से चला। चलते-चलते हम अरब के एक क़बीले के पास पहुंचे। क़बीले के किनारे एक घर पर हुज़ूर सल्ल० की निगाह पड़ी। हुज़ूर सल्ल० वहां तशरीफ़ ले गए। जब हम वहां पहुंच कर सवारियों से नीचे उतरे, तो वहां सिर्फ़ एक औरत थी।

उस औरत ने कहा, ऐ अल्लाह के बन्दे ! मैं औरत ज़ात हूं, मेरे साथ कोई और नहीं है, अकेली हूं, आप लोग मेहमान बनना चाहते हैं, तो क़बीले के सरदार के पास चले जाएं। हुज़ूर सल्ल० ने उसकी यह बात क़ुबूल न फ़रमाई, बल्कि वहीं ठहर गए। शाम का वक़्त था। थोड़ी देर में उस औरत का बेटा अपनी बकरियां हांकता हुआ आया। उस औरत ने बेटे से कहा, ऐ बेटे ! यह बकरी और छुरी उन दो आदमियों के पास ले जाओ और उनसे कहा, मेरी मां कह रही हैं, यह बकरी ज़िब्ह करके आप दोनों ख़ुद भी खाएं और हमें भी खिलाएं।

जब वह लड़का आया, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे फ़रमाया, छुरी ले जाओ और (दूध निकालने के लिए) प्याला ले आओ। उस लड़के ने कहा, यह बकरी तो चरागाह से दूर रही थी और इसका दूध भी नहीं है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, तुम जाओ। वह जाकर प्याला ले आया। हुज़ूर सल्ल० ने उसके थन पर हाथ फेरकर दूध निकालना शुरू किया तो इतना दूध निकला कि सारा प्याला भर गया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जाकर अपनी मां को दे आओ। चुनांचे उसकी मां ने ख़ूब सेर होकर दूध पिया। वह प्याला ले आया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह बकरी ले जा और दूसरी ले आ। वह दूसरी ले आया। हुज़ूर सल्ल० ने उसका दूध निकालकर मुझे पिलाया। फिर वह लड़का तीसरी ले आया। उसका दूध निकालकर हुज़ूर सल्ल० ने ख़ुद पिया। फिर वह रात हमने वहां गुज़ारी और सुबह वहां से आगे चले।

उस औरत ने आपका नाम मुबारक रख दिया था। फिर अल्लाह ने उसकी बकरियों में ख़ूब बरकत डाली और वह बेचने के लिए बकरियों

का रेवड़ लेकर मदीना आई। मेरा वहां से गुज़र हुआ तो उस औरत के बेटे ने देखकर मुझे पहचान लिया और कहने लगा, ऐ मां ! यह आदमी वही है जो उस मुबारक हस्ती के साथ था।

वह औरत खड़ी होकर मेरे पास आई और कहने लगी, ऐ अल्लाह के बन्दे ! वह मुबारक आदमी जो तुम्हारे साथ था, वह कौन था? मैंने कहा, अच्छा, तुम्हें मालूम नहीं कि वह कौन है? उस औरत ने कहा, नहीं। मैंने कहा, वह तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। उसने कहा, मुझे उनके पास ले चलो।

चुनांचे मैं उसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में ले गया। हुज़ूर सल्ल० ने उसे खाना खिलाया, दिरहम व दीनार दिए और हदिए में उसे पनीर और देहातियों वाला सामान दिया। पहनने के कपड़े भी दिए और वह मुसलमान भी हो गई।[1]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं उक़्बा बिन अबी मुऐत की बकरियां चरा रहा था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे पास से गुज़रे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ लड़के ! क्या दूध है? मैंने कहा, है, लेकिन ये बकरियां और इनका दूध मेरे पास अमानत के तौर पर है और मैं अमानतदार हूं (मालिक की इजाज़त के बग़ैर दूध नहीं दे सकता)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या ऐसी कोई बकरी है जो अब तक ब्याही न गई हो? (वह ले आओ) मैं ऐसी बकरी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ले आया। हुज़ूर सल्ल० ने उसके थन पर हाथ फेरा तो उसके थन में दूध उतर आया। हुज़ूर सल्ल० ने एक बरतन में उसका दूध निकाला और ख़ुद पिया और हज़रत अबूबक्र रज़ि० को पिलाया, फिर आपने थन को फ़रमाया, सिकुड़ जा तो वह सिकुड़ गया।

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं इसके बाद हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल

1. कंज़, भाग 8, पृ० 330,

सल्ल० ! मुझे भी यह कलाम सिखा दें। आपने मेरे सर पर हाथ फेरकर फ़रमाया, अल्लाह तुझ पर रहम फ़रमाए, तू तो सीखा-सिखाया है।[1]

बैहक़ी में इस जैसी रिवायत है, उसमें यह है कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में बकरी का एक बच्चा लाया, जिसकी उम्र एक साल से कम थी। आपने उसकी टांग को अपनी टांग से दबाया। फिर आपने उसके थन पर हाथ फेरा और दुआ फ़रमाई। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु आपके पास एक प्याला लाए। आपने उसमें दूध निकाला। फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० को वह दूध पिलाया। इसके बाद आपने ख़ुद पिया।[2]

हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें एक लश्कर में भेजा। उस सफ़र में हमें बहुत सख़्त प्यास लगी और हमारे पास पानी बिल्कुल नहीं था। इतने में हमारे एक साथी की ऊंटनी बैठ गई और उसके थन दूध से इतने भर गए कि मश्केज़े की तरह नज़र आने लगे, फिर हमने उसका दूध ख़ूब पिया।[3]

हुज़ैर बिन अबी इहाब की बांदी हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हा, जो कि बाद में मुसलमान हो गई थीं, वह फ़रमाती हैं, हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हु को मेरे घर में क़ैद किया गया था। एक बार मैंने दरवाज़े की दरज़ से झांका, तो उनके हाथ में इंसान के सर के बराबर अंगूर का एक ख़ोशा था, जिसमें से वह खा रहे थे। मेरे इल्म में उस वक़्त धरती पर कहीं भी खाने के लिए अंगूर नहीं थे।[4]

हज़रत सालिम बिन अबिल जाद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने किसी काम के लिए दो आदमी भेजे। इन दोनों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमारे पास ज़ादे राह बिल्कुल नहीं है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, एक मशक ढूंढ कर

1. अहमद
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 102,
3. हैसमी, भाग 6, पृ० 210
4. इसाबा, भाग 1, पृ० 419

मेरे पास लाओ। वे दोनों हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में एक मशक ले आए। हुज़ूर सल्ल० ने हुक्म दिया कि इसे (पानी से) भर दो। हमने उसे पानी से भर दिया।

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके मुंह को रस्सी से बांध दिया और फ़रमाया, इसे ले जाओ। जब तुम चलते-चलते फ़्लां जगह पहुंचोगे, तो वहां अल्लाह तुम्हें ग़ैब से रोज़ी देंगे। चुनांचे वे दोनों चल पड़े। और जब चलते-चलते दोनों हुज़ूर सल्ल० की बताई हुई जगह पर पहुंचे तो मशक का मुंह अपने आप खुल गया। उन्होंने देखा तो मशक (पानी के बजाए) बकरी के दूध और मक्खन से भरी हुई थी। उन्होंने पेट भरकर मक्खन खाया और दूध पिया।[1]

सहाबा किराम रज़ि० का ख़्वाब में पानी पीकर सेराब हो जाना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घर में महसूर (क़ैद) थे। मैं सलाम करने के लिए हज़रत उस्मान रज़ि० की ख़िदमत में अन्दर गया, तो आपने फ़रमाया, ख़ुशआमदेद मेरे भाई को। मैंने आज रात इस खिड़की में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा था।

आपने फ़रमाया, ऐ उस्मान रज़ि० ! इन लोगों ने तुम्हारा घेराव कर रखा है? मैंने कहा, जी हां। फिर फ़रमाया, इन्होंने तुम्हें प्यासा रखा हुआ है? मैंने कहा, जी हां। फिर हुज़ूर सल्ल० ने पानी का एक डोल लटकाया, जिसमें से ख़ूब सेर होकर मैंने पानी पिया और अब मैं भी उसकी ठंडक अपने सीने और कंधों के दर्मियान महसूस कर रहा हूं।

फिर आपने मुझसे फ़रमाया, अगर तुम चाहो (तो अल्लाह की तरफ़ से) तुम्हारी मदद की जाए और अगर तुम चाहो, तो हमारे पास इफ़्तार कर लो। मैंने उन दोनों बातों में से इफ़्तार को अख़्तियार कर लिया है।

1. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 172,

चुनांचे उसी दिन आपको शहीद कर दिया गया।[1]

हज़रत उम्मे शुरैक रज़ि० का क़िस्सा गुज़र चुका कि वह सोई तो ख़्वाब में देखा कि कोई उन्हें पानी पिला रहा है। जब वह सो कर उठीं तो सेराब थीं।

ऐसी जगह से माल का मिल जाना, जहां से मिलने का गुमान न हो

हज़रत मिक़्दाद रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी हज़रत ज़ुबाआ बिन्त ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाती हैं, लोग दो या तीन दिन के बाद ज़रूरत पूरी करने के लिए जाते थे। (क्योंकि खाने को मिलता नहीं था और जो खाने को मिलता था, वह ऐसा सूखा होता था कि) ऊंट की तरह मेंगनी किया करते थे।

एक दिन हज़रत मिक्दाद ज़रूरत पूरी करने के लिए बक़ीउल ग़रक़द में हजबा मुक़ाम में एक बे-आबाद जगह ज़रूरत पूरी करने के लिए बैठ गए। इतने में एक बड़ा-सा चूहा एक दीनार अपने बिल में से बाहर लाया और उनके सामने रखकर अपने बिल में चला गया और एक-एक दीनार लाता रहा, यहां तक कि सत्तरह दीनार हो गए।

हज़रत मिक़्दाद रज़ि० वह सत्तरह दीनार लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और सारा वाक़िया अर्ज़ किया। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, क्या तुमने अपना हाथ बिल में दाख़िल किया था? हज़रत मिक्दाद रज़ि० ने कहा, नहीं, उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, (चूंकि यह दीनार तुमने अपनी मेहनत से हासिल नहीं किए हैं, बल्कि अल्लाह ने अपनी क़ुदरत से ग़ैबी ख़ज़ाने से दिए हैं, इसलिए) इन दीनारों में से ख़ुम्स देना तुम पर लाज़िम नहीं आता, अल्लाह तुम्हें इन दीनारों में बरकत अता फ़रमाए।

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 182,

हज़रत ज़ुबाआ रज़ि० कहती हैं, अल्लाह ने उन दीनारों में बहुत बरकत अता फ़रमाई और वे उस वक़्त ख़त्म हुए, जब मैंने हज़रत मिक़्दाद रज़ि० के घर में चांदी के दिरहमों की बोरियां देखीं।[1]

हज़रत साइब बिन अक़रअ रज़ियल्लाहु अन्हु को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मदाइन का गवर्नर बनाया। एक बार वह किसरा के दरबार में बैठे हुए थे, उनकी नज़र दीवार पर बनी हुई एक तस्वीर पर पड़ी जो अपनी उंगली से एक जगह की तरफ़ इशारा कर रही थी। हज़रत साइब रज़ि० फ़रमाते हैं, मेरे दिल में यह ख़्याल आया कि यह किसी ख़ज़ाने की तरफ़ इशारा कर रही हैं। चुनांचे मैंने उस जगह को खोदा तो बहुत बड़ा ख़ज़ाना वहां से निकल आया।

मैंने ख़त लिखकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़ज़ाना मिलने की ख़बर दी और यह भी लिखा कि यह ख़ज़ाना अल्लाह ने मेरी मेहनत से मुझे दिया है, इसमें किसी मुसलमान ने मेरी मदद नहीं की है, (इसलिए यह ख़ज़ाना मेरा होना चाहिए)। हज़रत उमर रज़ि० ने जवाब में लिखा, बेशक यह ख़ज़ाना है तो तुम्हारा, लेकिन तुम हो मुसलमानों के अमीर, इसलिए इसे मुसलमानों में बांट दो।[2]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मेहरजान की जीत में हज़रत साइब रज़ियल्लाहु अन्हु शरीक हुए थे। वह हुरमुज़ान के महल में दाख़िल हुए, तो उन्हें वहां पत्थर और चूने की हिरनी नज़र आई, जिसने अपना हाथ आगे बढ़ाया हुआ था। वह कहने लगे, मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूं कि यह किसी क़ीमती ख़ज़ाने की तरफ़ इशारा कर रही है। उन्होंने उस जगह को देखा तो उन्हें वहां हुरमुज़ान का ख़ज़ाना मिल गया, जिसमें बहुत क़ीमती जवाहरात वाली थैली भी थी।[3]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद बिन जाबिर रहमतुल्लाहि अलैहि

---

1. दलाइल, पृ० 165
2. कंज़, भाग 3, पृ० 305,
3. इसाबा, भाग 2, पृ० 8,

कहते हैं, हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु की एक बांदी (जो कि पहले ईसाई थीं, उन्हों) ने मुझे यह वाक़िया बयान किया कि हज़रत अबू उमामा रज़ि० को दूसरों पर ख़र्च करना बहुत पसन्द था और वह इसके लिए माल जमा किया करते थे और किसी मांगने वाले को ख़ाली हाथ वापस नहीं करते थे और कुछ न होता तो एक प्याज़ या एक खजूर या खाने की कोई चीज़ ही दे देते।

एक दिन एक मांगने वाला उनके पास आया। उस वक़्त उनके पास उनमें से कोई चीज़ नहीं थी, सिर्फ़ तीन दीनार थे। उस सवाल करने वाले ने मांगा तो एक दीनार उसे दे दिया, फिर दूसरा आया, तो एक दीनार उसे दे दिया, फिर तीसरा आया तो एक उसे दे दिया। जब तीनों दे दिए तो मुझे ग़ुस्सा आ गया। मैंने कहा, आपनें हमारे लिए कुछ भी नहीं छोड़ा।

फिर वह दोपहर को आराम करने लेट गए। जब ज़ुहर की अज़ान हुई तो मैंने उन्हें उठाया, वह वुज़ू करके अपनी मस्जिद चले गए। चूंकि उनका रोज़ा था, इसलिए मुझे उन पर तरस आ गया और मेरा ग़ुस्सा उतर गया। फिर मैंने क़र्ज़ लेकर उनके लिए रात का खाना तैयार किया और शाम को उनके लिए चिराग़ भी जलाया। फिर मैं चिराग़ ठीक करने के लिए उनके बिस्तर के पास गई और बिस्तर उठाया तो उसके नीचे सोने के दीनार रखे हुए थे। मैंने उन्हें गिना तो वे पूरे तीन सौ थे।

मैंने कहा, चूंकि इतने दीनार रखे हुए थे, इस वजह से उन्होंने तीन दीनार की सख़ावत की है। फिर वह इशा के बाद घर वापस आए तो दस्तरख़्वान और चिराग़ देखकर मुस्कराए और कहने लगे, मालूम होता है, यह सब कुछ अल्लाह के यहां से आया है, (क्योंकि उनका ख़्याल यह था कि घर में कुछ भी नहीं था, इसलिए न खाना होगा, न चिराग़) मैंने खड़े होकर उन्हें खाना खिलाया।

फिर मैंने कहा, अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए, आप इतने सारे दीनार यों ही छोड़ गए, जहां से उनके गुम होने का ख़तरा था। मुझे

बताया भी नहीं कि उठाकर रख लेती। कहने लगे, कौन से दीनार? मैं तो कुछ भी नहीं छोड़कर गया, फिर मैंने बिस्तर उठाकर उन्हें वे दीनार दिखाए। देखकर वह ख़ुश भी हुए और बहुत हैरान भी हुए (कि अल्लाह ने अपने ग़ैबी ख़ज़ाने से अता फ़रमाए हैं।) यह देखकर मुझ पर भी बड़ा असर हुआ और मैंने खड़े होकर ज़ुन्नार काट डाला। (ज़ुन्नार उस धागे या ज़ंजीर को कहते हैं जिसे ईसाई कमर में बांधते थे) और मुसलमान हो गई।

हज़रत इब्ने जाबिर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने उस बांदी को हिम्स की मस्जिद में देखा कि वह औरतों को कुरआन, फ़र्ज़ और सुन्नतें सिखा रही थी और दीन की बातें समझा रही थी।[1]

सहाबा किराम रज़ि० के माल में बरकत

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु ग़ुलाम थे। उन्हें उनके मालिक ने मकातिब बना दिया यानी यह कह दिया कि इतना माल कमा कर या किसी और तरह लाकर दे दोगे तो तुम आज़ाद हो जाओगे। वह बदले किताबत यानी इतना माल न अदा कर सके और इसी बीच वह मुसलमान हो गए।

वह लम्बी हदीस में अपने इस्लाम लाने का क़िस्सा बयान करते हैं और फ़रमाते हैं कि माले किताबत मेरे ज़िम्मे रह गया। फिर एक कान से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास मुर्ग़ी के अंडे के बराबर सोना आया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उस फ़ारसी मुकातिब का क्या हुआ? लोगों ने मुझे बताया कि हुज़ूर सल्ल० तुम्हें याद कर रहे हैं, तो मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ।

आपने फ़रमाया, ऐ सलमान! यह ले लो और जितना माल तुम्हारे ज़िम्मे है वह इससे अदा कर दो। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! यह तो थोड़ा-सा है, मेरे ज़िम्मे जितना माल है, वह कैसे अदा

1. हुलीया, भाग 10, पृ० 149,

हो सकता है? आपने फ़रमाया, यह ले लो, इससे अल्लाह सारा अदा करा देंगे।

मैंने वह सोना लिया और अपने मालिक को तौल-तौल कर देने लगा। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में सलमान की जान है, चालीस ऊक़िया मेरे ज़िम्मे थे, वे सारे के सारे उससे अदा हो गए और मैं आज़ाद हो गया।

और एक रिवायत में यह है कि हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जब मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह तो थोड़ा-सा है, मेरे ज़िम्मे जितना माल है, वह इससे कैसे अदा हो सकता है? हुज़ूर सल्ल० ने वह सोना लेकर अपनी मुबारक ज़ुबान पर उलटा-पलटा, फिर फ़रमाया, यह ले लो और इससे उनका हक़ चालीस औक़िया सारा अदा कर दो।[1]

हज़रत उर्वः बारिक़ी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक क़ाफ़िला मिला जो बाहर से तिजारत का सामान लेकर आया था। हुज़ूर सल्ल० ने एक दीनार मुझे देकर फ़रमाया, इसकी हमारे लिए एक बकरी ख़रीद लाओ। मैंने जाकर एक दीनार की दो बकरियां ख़रीदीं। फिर मुझे एक आदमी मिला। मैंने उसके हाथ एक बकरी एक दीनार में बेच दी। फिर एक दीनार और एक बकरी लाकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पेश कर दी।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुश होकर यह दुआ दी कि अल्लाह तेरे हाथ के सौदे में बरकत अता फ़रमाए।

हज़रत उर्वः रज़ि० फ़रमाते हैं, (कूफ़ा के मशहूर) बाज़ार कुनासा से मैं कारोबार के लिए उठता हूं और घर जाने से पहले चालीस (40) हज़ार नफ़ा कमा लेता हूं। (यह हुज़ूर सल्ल० की दुआ की बरकत है।)[2]

हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि० की रिवायत में यह है कि मैंने अपने

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 336, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 75,
2. दलाइल, पृ० 165,

आपको देखा है कि कूफ़ा के कनासा बाज़ार में खड़ा हुआ और घर जाने से पहले चालीस दीनार नफ़ा कमा लिया।[1]

अब्दुर्रज़्ज़ाक़ और इब्ने अबी शैबा की रिवायत में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उर्व: के लिए कारोबार में बरकत की दुआ फ़रमाई। चुनांचे वह अगर मिट्टी भी ख़रीदते तो उसमें भी उन्हें नफ़ा हो जाता।

हज़रत अबू अक़ील रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे मेरे दादा हज़रत अब्दुल्लाह बिन हिशाम रज़ियल्लाहु अन्हु बाज़ार लेकर जाते और ग़ल्ला ख़रीदते। हज़रत इब्ने ज़ुबैर और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुम की मेरे दादा से मुलाक़ात होती। वे दोनों मेरे दादा से फ़रमाते, अपने कारोबार में हमें भी शरीक कर लें, क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपके लिए बरकत की दुआ फ़रमाई है। मेरे दादा उन्हें शरीक कर लेते। चुनांचे उन्हें ऊंटनी ज्यों की त्यों सारी नफ़ा में मिल जाती जिसे वह घर भेज देते।[2]

तक्लीफ़ों और बीमारियों का (इलाज के बग़ैर) दूर हो जाना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मुस्तनीर बिन रिज़ाम यहूदी ने शौहत पेड़ की टेढ़ी लाठी मेरे चेहरे पर मारी जिससे मेरे सर की हड्डी टूटकर अपनी जगह से हट गई और घाव का असर दिमाग़ तक पहुंच गया। मैं उसी हालत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने कपड़ा हटाकर उस पर दम फ़रमाया, तो घाव और हड्डी वग़ैरह सब कुछ एकदम ठीक हो गया। मैंने देखा तो वहां मुझे कुछ भी घाव वग़ैरह नज़र न आया।[3]

1. इसाबा, भाग 2, पृ० 76, कंज़, भाग 7, पृ० 63
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 166,
3. हैसमी, भाग 8, पृ० 298,

हज़रत शुरहबील रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मेरी हथेली में एक ग़दूद निकल आया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में जाकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! इस ग़दूद की वजह से मेरे हाथ में वरम हो गया है और मैं न तलवार का दस्ता पकड़ सकता हूं और न सवारी की लगाम।

आपने फ़रमाया, मेरे क़रीब आ जाओ, मैं आपके क़रीब हो गया। आपने मेरी हथेली खोल कर उस पर दम फ़रमाया। फिर आप अपना हाथ उस ग़दूद पर रखकर कुछ देर मलते रहे। जब आपने हाथ हटाया तो मुझे ग़दूद का ज़र्रा बराबर भी निशान नज़र न आया।[1]

हज़रत अबयज़ बिन हम्माल मआरबी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरे चेहरे पर दाद की बीमारी थी, जिसने नाक को घेर रखा था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे बुलाया और मेरे चेहरे पर मुबारक हाथ फेरा तो शाम तक उस बीमारी का कुछ भी असर बाक़ी न रहा।[2]

हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गया। वहां एक हांडी में गोश्त पक रहा था। चर्बी का एक टुकड़ा मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने उसे लिया और खाकर निगल गया और उसकी वजह से मैं साल भर बीमार रहा।

फिर मैंने उसका हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तज़्किरा किया। आपने फ़रमाया, उस चर्बी को सात इंसानों की नज़र लगी हुई थी। फिर आपने मेरे पेट पर हाथ फेरा, जिसकी बरकत से अल्लाह ने चर्बी का वह टुकड़ा मेरे पेट से निकाल दिया और उस ज़ात की क़सम, जिसने हुज़ूर सल्ल० को हक़ देकर भेजा, उसके बाद आज तक मेरे पेट में कोई तक्लीफ़ नहीं हुई।[3]

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 298,
2. दलाइल, पृ० 223, इब्ने साद, भाग 5, पृ० 524,
3. दलाइल, पृ० 223,

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार मैं बीमार हुआ। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मेरे पास से गुज़र हुआ। उस वक़्त मैं यह दुआ मांग रहा था, ऐ अल्लाह ! अगर मेरी मौत का वक़्त आ गया है, तो मुझे मौत देकर राहत अता फ़रमा, और अगर इसमें देर है, तो फिर मुझे शिफ़ा अता फ़रमा और अगर आज़माइश ही मक़्सूद है, तो फिर मुझे सब्र की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुमने क्या कहा? मैंने अपनी दुआ दोहरा दी। आपने मुझे अपना पांव मारकर फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! इसे शिफ़ा अता फ़रमा। इस दुआ के बाद यह बीमारी मुझे कभी नहीं हुई।[1]

पहले हिस्से में दावत के बाब में हज़रत सहल रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस गुज़र चुकी है कि ख़ैबर की लड़ाई के दिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की आंखें दुख रही थीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी आंखों पर दम फ़रमाया, तो उसी वक़्त उनकी आंखें ठीक हो गईं और उसके बाद कभी दुखने न आईं।

और नुसरत के बाब में अबू राफ़ेअ के क़त्ल के क़िस्से में पहले हिस्से में हज़रत बरा रज़ि० की हदीस गुज़र चुकी है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उतैक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इस वाक़िए में मेरी टांग टूट गई थी।

जब मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंचा तो मैंने आपको बताया। आपने फ़रमाया, अपनी टांग फैलाओ। मैंने टांग फैलाई। आपने उस पर अपना मुबारक हाथ फेरा, तो वह एकदम ऐसे ठीक हो गई कि गोया उसमें कोई तक्लीफ़ ही नहीं थी।

हज़रत हंज़ला बिन हिज़यम बिन हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैं अपने वालिद हज़रत हिज़यम के साथ एक वफ़्द के हमराह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मेरे

1. दलाइल, पृ० 161

वालिद ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे कुछ बेटे हैं, जिनमें से कुछ की दाढ़ी है और कुछ की नहीं है। यह उनमें सबसे छोटा है। हुज़ूर सल्ल० ने मुझे अपने क़रीब किया और मेरे सर पर हाथ फेरा और फ़रमाया, अल्लाह तुझ में बरकत अता फ़रमाए।

हज़रत ज़ियाल रिवायत करने वाले कहते हैं कि मैंने देखा कि हज़रत हज़ंला रज़ि० के पास वह आदमी लाया जाता जिसके चेहरे पर वरम होता या वह बकरी लाई जाती, जिसका थन सूजा हुआ होता, तो वह फ़रमाते—

بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى مَوْضِعِ كَفِّ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

यानी 'अल्लाह के नाम से और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे सर पर जिस जगह हाथ फेरा है, उस जगह की बरकत से।'

फिर उस वरम पर हाथ फेरते और वह वरम उसी वक़्त ख़त्म हो जाता।[1]

अहमद की एक रिवायत में है कि हज़रत ज़ियाल कहते हैं, मैंने देखा कि हज़रत हंज़ला रज़ि० के पास वह आदमी लाया जाता जिसके चेहरे पर वरम होता। हज़रत हंज़ला रज़ि० कहते 'बिस्मिल्लाह', फिर अपने सर पर उस जगह हाथ फेरते, जहां हुज़ूर सल्ल० ने हाथ रखा था, फिर अपने हाथ पर दम फ़रमाते, फिर वरम वाली जगह पर अपना हाथ फेरते, तो वरम उसी वक़्त चला जाता।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन कुरत रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार मेरा एक ऊंट चलते-चलते थक गया और खड़ा हो गया। मैं हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ था। पहले तो मेरा इरादा हुआ कि ऊंट को वहीं छोड़ दूं, लेकिन फिर मैंने अल्लाह से दुआ की तो अल्लाह ने ऊंट को उसी वक़्त ठीक कर दिया और मैं उस पर सवार होकर चल पड़ा।[3]

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 408,
2. इसाबा, भाग 1, पृ० 359, इब्ने साद, भाग 7, पृ० 72
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 185,

ज़हर के असर का चले जाना

हज़रत अबू सफ़र रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ारस के एक गवर्नर के यहां मेहमान बने। लोगों ने उनसे कहा, इन अजमी लोगों से बच के रहना कहीं यह आपको ज़हर न पिला दें। उन्होंने फ़रमाया, ज़रा वह ज़हर मेरे पास लाओ। लोग ज़हर ले आए, उन्होंने वह ज़हर हाथ में लिया और बिस्मिल्लाह पढ़कर सारा निगल गए। उन पर ज़हर का कुछ भी असर न हुआ।[1]

इसाबा की रिवायत में यह है कि ज़हर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास लाया गया। उन्होंने उसे अपनी हथेली पर रखा और बिस्मिल्लाह पढ़कर उसे पी गए। उन पर इसका कुछ भी असर न हुआ।[2]

हज़रत ज़िल जौशन ज़ियाबी रज़ियल्लाहु अन्हु वग़ैरह हज़रात फ़रमाते हैं, (अम्र) इब्ने बुक़ैला के साथ उसका एक ख़ादिम था, जिसकी पेटी में एक थैली लटकी हुई थी। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने वह थैली ली और उसमें जो कुछ था, वह अपनी हथेली पर डाला और अम्र से कहा, ऐ अम्र! यह क्या है? उसने कहा, अल्लाह की क़सम! यह ऐसा ज़हर है जो इंसान को फ़ौरन मार देता है।

हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कहा, तुमने अपने साथ ज़हर क्यों रखा हुआ है? उसने कहा, मुझे यह ख़तरा था कि आप लोगों को मेरी राय के ख़िलाफ़ फ़त्ह मिल जाएगी, तो मैं इससे पहले ही ज़हर खाकर मर जाऊंगा, क्योंकि यों ख़ुदकुशी कर लेना मुझे अपनी क़ौम और अपने शहर वालों की ज़िल्लत भरी हार का ज़रिया बनने से ज़्यादा महबूब है।

हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने फ़रमाया, कोई इंसान अपने वक़्त से पहले नहीं मर सकता। फिर हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने यह दुआ पढ़ी—

بِسْمِ اللّٰهِ خَيْرِ الْاَسْمَاءِ رَبِّ الْاَرْضِ وَرَبِّ السَّمَاءِ الَّذِيْ لَيْسَ
يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ دَاءٌ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 350, दलाइल, पृ० 159, इसाबा, भाग 1, पृ० 414,
2. इब्ने साद,

'अल्लाह का नाम लेकर मैं यह ज़हर पीता हूं। लफ़्ज़ अल्लाह उसके नामों में सबसे बेहतरीन नाम है जो ज़मीन व आसमान का रब है और उसके नाम के साथ कोई बीमारी नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और वह निहायत मेहरबान और बहुत रहम करने वाला है।'

इस पर लोग हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को रोकने के लिए आगे बढ़े, लेकिन हज़रत ख़ालिद रज़ि० लोगों के आने से पहले ही जल्दी से वह ज़हर पी गए और उन्हें कुछ भी न हुआ। यह देखकर अम्र ने कहा, ऐ अरब के लोगो! जब तक तुम सहाबा रज़ि० में से एक आदमी भी बाक़ी रहेगा, उस वक़्त तक तुम जो चाहोगे, हासिल कर लोगे।

फिर अम्र ने हियरा वालों की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहा, मैंने आज जैसा वाज़ेह इक़्बाल वाला दिन नहीं देखा।[1]

गर्मी और सर्दी का असर न करना

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु सर्दियों में एक लुंगी और एक चादर ओढ़ कर बाहर निकला करते थे और ये दोनों कपड़े पतले होते थे और गर्मियों में मोटे कपड़े और ऐसा जुब्बा पहनकर निकला करते थे, जिसमें रूई भरी हुई होती थी।

लोगों ने मुझसे कहा, आपके अब्बा जान रात को हज़रत अली रज़ि० से बातें करते हैं, आप अपने अब्बा जान से कहें कि वह हज़रत अली रज़ि० से इस बारे में पूछें। मैंने अपने वालिद से कहा, लोगों ने अमीरुल मोमिनीन का एक काम देखा है जिससे वे हैरान हैं। मेरे वालिद ने कहा, वह क्या है?

मैंने कहा, वह सख़्त गर्मी में रूई वाले जुब्बे में और मोटे कपड़ों में बाहर आते हैं और उन्हें गर्मी की कोई परवाह नहीं होती और सख़्त सर्दी में पतले कपड़ों में बाहर आते हैं, उन्हें सर्दी की कोई परवाह नहीं होती और न वह सर्दी से बचने की कोशिश करते हैं, तो क्या आपने उनसे इस बारे में कुछ सुना है? लोगों ने मुझे कहा है कि आप जब रात को

1. तारीख़े इब्ने जरीर, भाग 2, पृ० 567,

उनसे बातें करें तो यह बात भी उनसे पूछ लें।

चुनांचे जब रात को मेरे वालिद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए, तो उनसे कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! लोग आपसे एक चीज़ के बारे में पूछना चाहते हैं। हज़रत अली रज़ि० ने कहा, वह क्या ? मेरे वालिद ने कहा, आप सख़्त गर्मी में रूई वाला जुब्बा और मोटे कपड़े पहन कर आते हैं और सख़्त सर्दी में दो पतले कपड़े पहन कर बाहर आते हैं। न आपको सर्दी की परवाह होती है और न उससे बचने की कोशिश करते हैं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ऐ अबू लैला ! क्या आप ख़ैबर में हमारे साथ नहीं थे ? मेरे वालिद ने कहा, अल्लाह की क़सम ! मैं आप लोगों के साथ था। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहले हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा। वह लोगों को लेकर क़िले पर हमलावर हुए, लेकिन क़िला जीता न जा सका। वह वापस आ गए। हुज़ूर सल्ल० ने फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा, वह लोगों को लेकर हमलावर हुए, लेकिन क़िला जीता न जा सका। वह भी वापस आ गए। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अब मैं झंडा ऐसे आदमी को दूंगा, जिसे अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० से बहुत मुहब्बत है। अल्लाह उसके हाथों फ़त्ह नसीब फ़रमाएगा और वह भगोड़ा भी नहीं है।

चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आदमी भेजकर मुझे बुलाया। मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मेरी आंखें दुख रही थीं। मुझे कुछ नज़र नहीं आ रहा था। हुज़ूर सल्ल० ने मेरी आंखों पर अपना लुआब लगाया और यह दुआ की—

'ऐ अल्लाह ! गर्मी और सर्दी से इसकी हिफ़ाज़त फ़रमा।'

इसके बाद मुझे न कभी गर्मी लगी और न कभी सर्दी।[1]

अबू नुऐम की रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी दोनों हथेलियों पर लुआब लगाया और फिर दोनों

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 44, दलाइल, पृ० 166

हथेलियां मेरी आंखों पर मल दीं और यह दुआ फ़रमाई—

'ऐ अल्लाह ! इससे गर्मी और सर्दी दूर कर दे।'

उस ज़ात की क़सम, जिसने हुज़ूर सल्ल० को हक़ देकर भेजा है, उसके बाद से आज तक गर्मी और सर्दी ने मुझे कुछ तक्लीफ़ नहीं पहुंचाई।[1]

तबरानी की एक रिवायत में यह है कि हज़रत सुवैद बिन ग़फ़ला रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हमारी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से सर्दियों में मुलाक़ात हुई। उन्होंने सिर्फ़ दो कपड़े पहने हुए थे। हमने उनसे कहा, आप हमारे इलाक़े से धोखा न खाएं। हमारा इलाक़ा आपके इलाक़े जैसा नहीं है। यहां सर्दी बहुत ज़्यादा पड़ती है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मुझे सर्दी बहुत लगा करती थी। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझे ख़ैबर भेजने लगे तो मैंने अर्ज़ किया कि मेरी आंखें दुख रही हैं। आपने मेरी आंखों पर लुआब लगाया और उसके बाद मुझे न कभी गर्मी लगी और न कभी सर्दी और न कभी मेरी आंखें दुखने आई।[2]

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने सर्दी की एक रात में सुबह की अज़ान दी, लेकिन कोई आदमी न आया। मैंने फिर अज़ान दी, लेकिन फिर भी कोई न आया। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ बिलाल ! लोगों को क्या हुआ ? मैंने अर्ज़ किया, मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों। सर्दी बहुत ज़्यादा है, इस वजह से लोग हिम्मत नहीं कर रहे हैं, इस पर हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ फ़रमाई—

'ऐ अल्लाह ! लोगों से सर्दी दूर कर दे।'

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, फिर मैंने देखा कि लोग सुबह की नमाज़ में और इशराक़ की नमाज़ में बड़े आराम से आ रहे हैं, उन्हें सर्दी महसूस नहीं हो रही, बल्कि कुछ लोग तो पंखा करते हुए आ रहे थे।[3]

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 122
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 144
3. दलाइल, पृ० 166, बिदाया, भाग 6, पृ० 166,

भूख के असर का चले जाना

हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक बार मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठा हुआ था कि इतने में हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा आईं और आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने खड़ी हो गईं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ फ़ातिमा ! क़रीब आ जाओ। वह क़रीब आ गईं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, और क़रीब आ जाओ। वह और क़रीब आ गईं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ फ़ातिमा ! और क़रीब हो जाओ। वह बिल्कुल क़रीब होकर सामने खड़ी हो गईं।

मैंने देखा कि उनके चेहरे पर भूख और कमज़ोरी की वजह से ज़र्दी (पीलापन) छाई हुई है और ख़ून का नाम व निशान नहीं है। (उस वक़्त तक औरतों के लिए परदे का हुक्म नहीं आया था। (हुज़ूर सल्ल० ने अपनी उंगलियां फैलाकर हाथ उनके सीने पर रखा और सर उठाकर यह दुआ की—

'ऐ अल्लाह ! ऐ भूखों का पेट भरने वाले ! ऐ हाजतों को पूरा करने वाले ! और ऐ गिरे-पड़े लोगों को ऊंचा करने वाले ! मुहम्मद की बेटी फ़ातिमा को भूखा मत रख।'

मैंने देखा कि हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के चेहरे से वह ज़र्दी चली गई और ख़ून की सुर्ख़ी आ गई। फिर मैंने इसके बाद हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा, उन्होंने कहा, इम्रान ! इसके बाद मुझे कभी भूख नहीं लगी।[1]

बुढ़ापे के असर का चला जाना

हज़रत अबू ज़ैद अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया, मेरे क़रीब आ जाओ। आपने मेरे सर पर हाथ फेरा और यह दुआ फ़रमाई—

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 204, दलाइल, पृ० 166,

'ऐ अल्लाह ! इसे ख़ूबसूरत बना दे और फिर इसकी ख़ूबसूरती हमेशा बाक़ी रख।'

रिवायत करने वाले कहते हैं, हज़रत अबू ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र सौ साल हो गई थी और उनकी दाढ़ी में थोड़े-से सफ़ेद बाल थे और उनका चेहरा खिला रहता था और मौत तक उनके चेहरे पर झुर्रियां नहीं पड़ी थीं।[1]

इमाम अहमद की एक रिवायत में यह है कि हज़रत अबू नहीक रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मुझसे अबू ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि मुझसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पानी तलब फ़रमाया। मैं एक प्याले में पानी लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गया। उसमें एक बाल था। वह मैंने पकड़ कर निकाल दिया। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने दुआ दी—

'ऐ अल्लाह ! इसे खूबसूरत बना दे।'

हज़रत अबू नहीक कहते हैं, मैंने हज़रत अबू ज़ैद को देखा कि उनकी उम्र चौरानवे साल हो चुकी थी और उनकी दाढ़ी में एक भी सफ़ेद बाल नहीं था।[2]

अबू नुऐम की रिवायत में यह है कि हज़रत अबू नहीक कहते हैं, मैंने देखा कि उनकी उम्र तिरानवे साल हो चुकी थी और उनके सर और दाढ़ी में एक भी सफ़ेद बाल नहीं था।

हज़रत अबुल अला रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत क़तादा बिन मिलहान रज़ियल्लाहु अन्हु का जिस जगह इंतिक़ाल हुआ, मैं उस जगह उनके पास था। घर के पिछले हिस्से में एक आदमी गुज़रा, उसका अक्स मुझे हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अनहु के चेहरे में नज़र आया। इसकी वजह यह थी कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके चेहरे पर हाथ फेरा था। (उसकी बरकत से हर वक़्त ऐसा लगता

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 166,
2. इसाबा, भाग 3, पृ० 78, दलाइल, पृ० 165,

था कि उनके चेहरे पर तेल लगा हुआ है।) इससे पहले जब भी मैंने हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा तो ऐसे लगता था कि उनके चेहरे पर तेल लगा हुआ है।[1]

हज़रत हय्यान बिन उमैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत क़तादा बिन मिलहान रज़ियल्लाहु अन्हु के चेहरे पर अपना हाथ फेरा, उसका असर यह हुआ कि जब वह बहुत बूढ़े हो गए थे और उनके जिस्म के हर हिस्से पर बुढ़ापे के निशान ज़ाहिर हो गए थे, तो चेहरे पर कोई असर नहीं था।

चुनांचे मैं वफ़ात के दिन उनके पास था। उनके पास से एक औरत गुज़री, तो मुझे उस औरत का अक्स उनके चेहरे में इस तरह नज़र आया जैसे कि शीशे में नज़र आता है।[2]

हज़रत नाबग़ा जादी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह शेर सुनाया, जो हुज़ूर सल्ल० को बहुत पसन्द आया—

بَلَغْنَا السَّمَاءَ مَجْدُنَا وَثَرَانَا   وَإِنَّا لَنَرْجُو فَوْقَ ذٰلِكَ مَظْهَرًا

'हमारी बुज़ुर्गी और बुलन्दी आसमान तक पहुंच गई है और हमें उससे भी ऊपर चढ़ने का यक़ीन है।'

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अबू लैला! और ऊपर कहां चढ़ना है? मैंने कहा, जन्नत में। आपने फ़रमाया, ठीक है, इनशाअल्लाह! और शेर पढ़ो। फिर मैंने ये शेर पढ़े—

وَلَا خَيْرَ فِي حِلْمٍ إِذَا لَمْ يَكُنْ لَهُ   بَوَادِرُ تَحْمِي صَفْوَهُ أَنْ يُكَدَّرَا
وَلَا خَيْرَ فِي جَهْلٍ إِذَا لَمْ يَكُنْ لَهُ   حَلِيمٌ إِذَا مَا أَوْرَدَ الْأَمْرَ أَصْدَرَا

'बुर्दबारी में उस वक़्त तक ख़ैर नहीं हो सकती, जब तक कि जल्दी-जल्दी किए जाने वाले कुछ काम ऐसे न हों जो बुर्दबारी को गदला होने से बचाएं और सख़्त कलामी में उस वक़्त तक ख़ैर नहीं हो

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 166,
2. इसाबा, भाग 3, पृ० 225,

सकती जब तक कि इंसान बुर्दबार न हो कि जब वह कोई काम शुरू करे तो उसे पूरा करके छोड़े।'

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने बहुत उम्दा शेर कहे। अल्लाह तुम्हारे दांतों को गिरने न दे।

याला रिवायत करने वाले कहते हैं, मैंने हज़रत नाबग़ा को देखा कि उनकी उम्र सौ साल से ज़्यादा हो चुकी थी, लेकिन उनका एक भी दांत नहीं गिरा था।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जराद कहते हैं, बनू जादा क़बीला के हज़रत नाबग़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को मैंने यह फ़रमाते हुए सुना कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपना यह शेर—

عَلَوْنَا السَّمَاءَ

सुनाया, हुज़ूर सल्ल० को ग़ुस्सा आ गया। आपने फ़रमाया, ऐ अबू याला! चढ़कर ऊपर कहां जाना है? मैंने कहा, जन्नत में। आपने फ़रमाया, हां, ठीक है, इनशाअल्लाह! मुझे अपने और शेर सुनाओ।

इस पर मैंने—

وَلَا خَيْرَ فِيْ حِلْمٍ

वाले दोनों शेर सुनाए, तो आपने मुझसे फ़रमाया, तुमने बहुत अच्छे शेर कहे हैं। अल्लाह तुम्हारे दांतों को गिरने न दे।

हज़रत अब्दुल्लाह कहते हैं, मैंने देखा, तो मुझे हज़रत नाबग़ा रज़ि० के दांत लगातार गिरने वाले ओलों की तरह चमकदार नज़र आए और न कोई दांत टूटा हुआ था और न कोई मुड़ा हुआ।

आसिम लैसी की रिवायत में है कि हज़रत नाबग़ा रज़ि० के दांत उम्र भर बड़े ख़ूबसूरत रहे। जब भी उनका कोई दांत गिर जाता, तो उसकी जगह दूसरा निकल आता और उनकी उम्र बहुत ज़्यादा हुई थी।[2]

1. दलाइल, पृ० 164, बिदाया, भाग 6, पृ० 168,
2. इसाबा, भाग 3, पृ० 539,

सदमे के असर का चले जाना

हज़रत उम्मे इस्हाक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाती हैं, मैं अपने भाई के साथ मदीना मुनव्वरा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हिजरत के लिए चली। रास्ते में एक जगह पहुंच कर मेरे भाई ने मुझसे कहा, ऐ उम्मे इस्हाक़! तुम ज़रा यहां बैठो, मैं अपना ख़र्चा मक्का में भूल आया हूं। जाकर मैं ले आता हूं। मैंने अपने ख़ाविंद के बारे में कहा, मुझे तुम पर उस गुंडे से ख़तरा है। तुम्हें वह कहीं क़त्ल न कर दे। उसने कहा, इनशाअल्लाह, ऐसा नहीं होगा।

मैं कुछ दिन वहां ठहरी रही। फिर एक आदमी मेरे पास से गुज़रा जिसे मैंने पहचान लिया। अब मैं उसका नाम नहीं लेती। उसने कहा, ऐ उम्मे इस्हाक़! तुम यहां क्यों बैठी हो? मैंने कहा, मैं अपने भाई का इन्तिज़ार कर रही हूं। उसने कहा, आज के बाद से तुम्हारा कोई भाई नहीं। उसे तुम्हारे ख़ाविंद ने क़त्ल कर दिया है।

मैंने सब्र से काम लिया और वहां से चल दी और मदीना पहुंच गई। जब मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंची, तो आप वुज़ू कर रहे थे। मैं जाकर आपके सामने खड़ी हो गई और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मेरा भाई इस्हाक़ क़त्ल हो गया है। जब भी मैं हुज़ूर सल्ल० को देखती, आप वुज़ू के पानी की तरफ़ सर झुका लेते। फिर आपने पानी लेकर मेरे चेहरे पर छिड़का।

बश्शार रिवायत करने वाले कहते हैं, मेरी दादी ने बताया कि (हुज़ूर सल्ल० के पानी छिड़कने की बरकत यह हुई कि) हज़रत उम्मे इस्हाक़ रज़ियल्लाहु अन्हा पर जब भी कोई मुसीबत आती, तो उनकी आंखों में तो आंसू नज़र आते, लेकिन रुख़सारों पर न गिरते।[1]

एक रिवायत में है कि हज़रत उम्मे इस्हाक़ रज़ि० फ़रमाती हैं, मैंने रोते हुए अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! (मेरा भाई) इस्हाक़ क़त्ल हो

1. दलाइल, पृ० 168, इसाबा, भाग 1, पृ० 32,

गया है, तो हुज़ूर सल्ल० ने एक चुल्लू पानी लेकर मेरे चेहरे पर छिड़का।

हज़रत उम्मे हकीम कहती हैं, हज़रत उम्मे इस्हाक़ रज़ि० पर बड़ी से बड़ी मुसीबत भी आती तो आंसू उनकी आंखों में तो नज़र आते, लेकिन रुख़सार पर न गिरते।[1]

दुआ के ज़रिए बारिश से हिफ़ाज़त

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने एक बार फ़रमाया, आओ, अपनी क़ौम की ज़मीन पर चलते हैं, यानी ज़रा अपने देहात देख लेते हैं। चुनांचे हम लोग चल पड़े।

मैं और हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु जमाअत से कुछ पीछे रह गए थे। इतने में एक बादल तेज़ी से आया और बरसने लगा। हज़रत उबई ने दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! इस बारिश की तक्लीफ़ हमसे दूर फ़रमा दे। (चुनांचे हम बारिश में चलते रहे, लेकिन हमारी कोई चीज़ बारिश से न भीगी।)

जब हम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और बाक़ी साथियों के पास पहुंचे तो उनके जानवर और कजावे और सामान वग़ैरह सब कुछ भीगा हुआ था। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हमें तो रास्ते में बहुत बारिश मिली, तो क्या आप लोगों को नहीं मिली? मैंने कहा, अबुल मुंज़िर यानी हज़रत उबई रज़ि० ने अल्लाह से यह दुआ की थी कि इस बारिश की तक्लीफ़ हमसे दूर फ़रमा दे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुम लोगों ने अपने साथ हमारे लिए दुआ क्यों न की?[2]

टहनी का तलवार बन जाना

हज़रत ज़ैद बिन अस्लम वग़ैरह हज़रात फ़रमाते हैं, बद्र की लड़ाई के

1. इसाबा, भाग 3, पृ० 430, भाग 1, पृ० 32
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 132,

दिन हज़रत उकाशा बिन मिह्सन रज़ियल्लाहु अन्हु की तलवार टूट गई थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको पेड़ की एक टहनी दी जो उनके हाथ जाते ही काटने वाली तलवार बन गई, जिसका लोहा बड़ा साफ़ और मज़बूत था।[1]

दुआ से शराब का सिरका बन जाना

हज़रत ख़ैसमा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास एक आदमी आया। उसके पास शराब की एक मशक थी। हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने दुआ की, ऐ अल्लाह ! इसे शहद बना दे। चुनांचे वह शराब उसी वक़्त शहद बन गई।

दूसरी रिवायत में यह है कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से एक आदमी गुज़रा जिसके पास शराब की एक मशक थी। हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने पूछा, यह क्या है ? उस आदमी ने कहा, सिरका है। हज़रत ख़ालिद रज़ि०ने कहा, अल्लाह इसे सिरका ही बना दे। लोगों ने उसे देखा तो वह वाक़ई सिरका ही था, हालांकि इससे पहले वह शराब थी।[2]

एक रिवायत में यह है कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से एक आदमी गुज़रा, जिसके पास एक शराब की मशक थी। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उससे पूछा, यह क्या है ? उसने कहा, शहद है। हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने दुआ की, ऐ अल्लाह ! इसे सिरका बना दे। वह आदमी जब अपने साथियों के पास वापस गया, तो उसने कहा, मैं आप लोगों के पास ऐसी शराब लेकर आया हूं कि उस जैसी शराब अरबों ने कभी पी न होगी। फिर उस आदमी ने मशक खोली तो उसमें सिरका था, तो उसने कहा, अल्लाह की क़सम ! इसको हज़रत ख़ालिद रज़ि० की दुआ लगी है।

1. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 188
2. इसाबा, भाग 1, पृ० 414, बिदाया, भाग 7, पृ० 114,

क़ैदी का क़ैद से रिहा हो जाना

हज़रत मुहम्मद बिन इस्हाक़ कहते हैं, हज़रत मालिक अशजई रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि मेरा बेटा औफ़ क़ैद हो गया है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उसके पास यह पैग़ाम भेज दो कि हुज़ूर सल्ल० उसे फ़रमा रहे हैं कि वह

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ

'ला हौ-ल वला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहि०'

ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े।

चुनांचे क़ासिद ने जाकर हज़रत औफ़ रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० का पैग़ाम पहुंचा दिया। हज़रत औफ़ रज़ि० ने—

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ

'ला हौ-ल व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहि' ख़ूब कसरत से पढ़ना शुरू कर दिया।

काफ़िरों ने हज़रत औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु को तांत से बांधा हुआ था। एक दिन वह तांत टूटकर गिर गई तो हज़रत औफ़ क़ैद से बाहर निकल आए। बाहर आकर उनहोंने देखा कि उन लोगों की एक ऊंटनी वहां मौजूद है। हज़रत औफ़ रज़ि० उस पर सवार हो गए।

आगे गए तो देखा कि उन काफ़िरों के सारे जानवर एक जगह जमा हैं। उन्होंने उन जानवरों को आवाज़ लगाई तो सारे जानवर उनके पीछे चल पड़े और उन्होंने अचानक अपने मां-बाप के दरवाज़े पर जाकर आवाज़ लगाई तो उनके वालिद ने कहा, रब्बे काबा की क़सम! यह तो औफ़ है। उनकी वालिदा ने कहा, यह औफ़ कैसे हो सकता है? औफ़ तो तांत की तक्लीफ़ में गिरफ़्तार है।

बहरहाल वालिद और नौकर दौड़कर दरवाज़े पर गए तो देखा कि वाक़ई हज़रत औफ़ रज़ि० मौजूद हैं और सारा मैदान ऊंटों से भरा हुआ

है। हज़रत औफ़ रज़ि० ने अपने वालिद से अपना और ऊंटों का सारा क़िस्सा सुनाया। उनके वालिद ने जाकर हुज़ूर सल्ल० को यह सब कुछ बताया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया, इन ऊंटों के साथ तुम जो करो, (ये ऊंट तुम्हारे हैं, इसलिए) अपने ऊंटों के साथ तुम जो कुछ करते हो, वही उनके साथ करो। फिर यह आयत उतरी—

وَمَنْ يَتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ وَمَنْ
يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ (سورت طلاق آیت ۳)

'जो सिर्फ़ अल्लाह से डरता है, अल्लाह उसके लिए (नुक़्सानों से) निजात की शक्ल निकाल देता है और उसको ऐसी जगह से रोज़ी पहुंचाता है जहां उसका गुमान भी नहीं होता और जो आदमी अल्लाह पर तवक्कुल करेगा तो अल्लाह उस (की इस्लाहे मुहिम्मात) के लिए काफ़ी है।'[1] (सूरः तलाक़, आयत 3)

इब्ने जरीर की रिवायत में यह भी है कि औफ़ के वालिद हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होते और अपने बेटे के क़ैद में होने और उसकी परेशानी की शिकायत करते। हुज़ूर सल्ल० उन्हें सब्र की ताकीद फ़रमाते और इर्शाद फ़रमाते, अल्लाह बहुत जल्द उसके लिए इस परेशानी से निकलने का रास्ता बनाएंगे।

सहाबा किराम रज़ि० को तक्लीफ़ें पहुंचाने की वजह से नाफ़रमानों पर क्या-क्या मुसीबतें आईं

हज़रत अब्बास बिन सह्ल बिन साद साइदी रज़ियल्लाहु अन्हु या हज़रत अब्बास बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौमे समूद के इलाक़े) हिज्र के पास से गुज़रे और वहां पड़ाव डाला तो लोगों

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 105, तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 380 तफ़्सीरे इब्ने जरीर, भाग 28, पृ० 89

ने वहां के कुंएं से पानी निकालकर बरतनों में भर लिया।

जब वहां से आगे रवाना हुए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों से फ़रमाया, इस कुंएं का पानी बिल्कुल न पियो और न इससे नमाज़ के लिए वुज़ू करो और इसके पानी से जो आटा गूंधा है, वह ऊंटों को खिला दो, ख़ुद उसे बिल्कुल न खाओ। आज रात जो भी बाहर निकले, वह अपने साथ अपने किसी साथी को ज़रूर लेकर जाए, अकेला न निकले।

तमाम लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तमाम बातों पर अमल किया, अलबत्ता क़बीला बनू साइदा के आदमी अकेले बाहर निकल गए। एक ज़रूरत पूरी करने गया था, दूसरा अपना ऊंट ढूंढने गया था। रास्ते में उसका किसी (जिन्न) ने गला घोंट दिया और जो अपना ऊंट ढूंढने गया था, उसे आंधी ने उठाकर क़बीला तै के दो पहाड़ों के दर्मियान (यमन में) जा फेंका।

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इन दोनों के बारे में बताया गया, तो आपने फ़रमाया, साथी के बग़ैर अकेले बाहर निकलने से क्या तुम लोगों को मना नहीं किया गया था? फिर आपने उसके लिए दुआ फ़रमाई जिसका रास्ते में किसी ने गला घोंटा, वह ठीक हो गया। दूसरा आदमी तबूक से हुज़ूर सल्ल० के पास पहुंचा।[1]

इब्ने इस्हाक़ से ज़ियाद ने जो रिवायत की है, उसमें यह है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना मुनव्वरा वापस पहुंचे, तो क़बीला तै वालों ने उस आदमी को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास भेजा।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु मिंबर पर बयान फ़रमा रहे थे। हज़रत जहजाह ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने खड़े होकर हज़रत उस्मान रज़ि० के हाथ से लाठी

---

1. इब्ने इस्हाक़
2. बिदाया, भाग 5, पृ० 11, दलाइल, पृ० 190

ली और इस ज़ोर से उनके घुटने पर मारी कि घुटना फट गया और लाठी भी टूट गई। अभी साल भी नहीं गुज़रा था कि अल्लाह ने हज़रत जहजाह के हाथ पर जिस्म को खा जाने वाली बीमारी लगा दी, जिससे उनका इंतिक़ाल हो गया।[1]

इब्ने सुक्न की रिवायत में है कि हज़रत जहजाह बिन सईद ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु उठकर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ गए और उनके हाथ से छड़ी ले ली और हज़रत उस्मान रज़ि० के घुटने पर इस ज़ोर से मारी कि वह टूट गई। इस पर लोगों ने शोर मचा दिया। हज़रत उस्मान रज़ि० मिंबर से उतर कर अपने घर तशरीफ़ ले गए। अल्लाह ने हज़रत ग़िफ़ारी रज़ि० के घुटने में बीमारी पैदा कर दी और साल गुज़रने से पहले ही उसी बीमारी में उनका इंतिक़ाल हो गया।

हज़रत अब्दुल मलिक बिन उमैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुसलमानों में से एक आदमी हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया और उसने ये शेर पढ़े। (हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु बीमारी की वजह से उस लड़ाई में शरीक नहीं हो सके थे, जिस पर उसने ये शेर तंज़ के तौर पर पढ़े।)

نُقَاتِلُ حَتّٰى يُنْزِلَ اللّٰهُ نَصْرَهُ   وَسَعْدٌ بِبَابِ الْقَادِسِيَّةِ مُعْصِمُ

فَأُبْنَا وَقَدْ آمَتْ نِسَاءٌ كَثِيْرَةٌ   وَنِسْوَةُ سَعْدٍ لَيْسَ فِيْهِنَّ أَيِّمُ

'हम तो इसलिए लड़ाई लड़ रहे थे, ताकि अल्लाह अपनी मदद नाज़िल कर दे और (हज़रत) साद क़ादसिया के दरवाज़े से चिमटे खड़े रहे।'

'जब हम वापस आए तो बहुत-सी औरतें बेवा हो चुकी थीं, लेकिन (हज़रत) साद की बीवियों में से कोई भी बेवा नहीं हुई।'

जब हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु को इन शेरों का पता चला तो उन्होंने हाथ उठाकर यह दुआ मांगी—

'ऐ अल्लाह! इसकी ज़ुबान और हाथ को मुझसे तू जिस तरह चाहे रोक दे।'

---

1. दलाइल, पृ० 211, इसाबा, भाग 1, पृ० 253,

चुनांचे क़ादसिया की लड़ाई के दिन उसे एक तीर लगा, जिससे उसकी ज़ुबान भी कट गई और हाथ भी कट गया और वह क़त्ल भी हो गया।[1]

हज़रत क़बीसा बिन जाबिर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हमारे एक चचेरे भाईने क़ादसिया की लड़ाई के मौक़े पर (हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु पर तंज़ करने के लिए) ये दो शेर कहे, जो गुज़र गए। अलबत्ता पहले शेर में लफ़्ज़ दूसरे हैं, जिनका तर्जुमा यह है कि—

'क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने अपनी मदद को कैसे उतारा ?'

जब हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु को पता चला, तो उन्होंने फ़रमाया, ख़ुदा करे इसकी ज़ुबान और हाथ बेकार हो जाएं। चुनांचे एक तीर उसके मुंह पर लगा, जिससे वह गूंगा हो गया, फिर लड़ाई में उसका हाथ भी कट गया।

अपनी मजबूरी लोगों को बताने के लिए हज़रत साद रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे उठाकर दरवाज़े के पास ले चलो। चुनांचे लोग उन्हें उठाकर बाहर ले आए, फिर उन्होंने अपनी पीठ से कपड़ा उठाया, तो उस पर बहुत से घाव थे, जिन्हें देखकर तमाम लोगों को पूरा यक़ीन हो गया कि यह वाक़ई मजबूर थे और कोई भी उन्हें बुज़दिल नहीं समझता था।[2]

'अपने बड़ों की वजह से नाराज़ होने के बाब में' (तबरानी वाली) हज़रत आमिर बिन साद की रिवायत में हज़रत साद रज़ि० का हज़रत अली रज़ि०, हज़रत तलहा रज़ि० और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम को बुरा-भला कहने वाले को बद-दुआ देना गुज़र चुका है, जिसमें यह भी है कि एक बख़्ती ऊंटनी तेज़ी से आई। लोग उसे देखकर इधर-उधर हट गए। उस ऊंटनी ने उस आदमी को रौंद डाला।

और हज़रत क़ैस बिन अबी हाज़िम की रिवायत में हज़रत साद रज़ि० का हज़रत अली रज़ि० को बुरा-भला कहने वाले के लिए बद-दुआ करना भी गुज़र चुका है, जिसमें यह भी है कि हमारे बिखरने

---

1. दलाइल, पृ० 207
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 154,

से पहले ही अल्लाह की क़ुदरत ज़ाहिर हुई और उसकी सवारी के पांव ज़मीन में धंसने लगे, जिससे वह सर के बल उन पत्थरों पर ज़ोर से गिरा, जिससे उसका सर फट गया और उसका भेजा बाहर निकल आया और वह वहीं मर गया।

अबू नुऐम की रिवायत में है कि हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि एक भड़का हुआ ऊंट आया और लोगों के दर्मियान में से गुज़रता हुआ उस आदमी के पास पहुंच गया और उसे मारकर नीचे गिराया और फिर उस पर बैठकर अपने सीने से उसे ज़मीन पर रगड़ता रहा, यहां तक कि उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह० कहते हैं कि मैंने लोगों को देखा कि वे दौड़ते हुए हज़रत साद रज़ि० के पास जा रहे थे और कह रहे थे कि आपको दुआ का क़ुबूल होना मुबारक हो।[1]

हज़रत इब्ने शौज़ब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को यह ख़बर मिली कि ज़ियाद हिजाज़े मुक़द्दस का भी वाली बनना चाहता है। उन्हें उसकी बादशाही में रहना पसन्द न आया, तो उन्होंने यह दुआ की—

'ऐ अल्लाह ! तू अपनी मख़्लूक़ में से जिसके बारे में चाहता है, उसे क़त्ल करवा कर उसके गुनाहों के कफ़्फ़ारे की सूरत बना देता है। (ज़ियाद) बिन सुमैया अपनी मौत मरे, क़त्ल न हो।'

चुनांचे ज़ियाद के अंगूठे में उसी वक़्त ताऊन की गिलटी निकल आई और जुमा आने से पहले ही मर गया।[2]

हज़रत (अब्दुल जब्बार) बिन वाइल या हज़रत अलक़मा बिन वाइल कहते हैं, जो कुछ वहां (करबला में) हुआ था, मैं उस मौक़े पर वहां मौजूद था। चुनांचे एक आदमी ने खड़े होकर पूछा, क्या आप लोगों में हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) हैं? लोगों ने कहा, हां, हैं। उस आदमी ने

---

1. दलाइल, पृ० 206,
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 231

हज़रत हुसैन रज़ि० को गुस्ताख़ी के अन्दाज़ में कहा, आपको जहन्नम की ख़ुशख़बरी हो।

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मुझे दो ख़ुशख़बरियां हासिल हैं। एक तो निहायत मेहरबान रब वहां होंगे, दूसरे वह नबी सल्ल० वहां होंगे जो सिफ़ारिश करेंगे और उनकी सिफ़ारिश क़ुबूल की जाएगी।

लोगों ने पूछा, तू कौन है? उसने कहा, मैं इब्ने जुवैरह या इब्ने जुवैज़ा हूं। हज़रत हुसैन रज़ि० ने यह दुआ की, ऐ अल्लाह! इसके टुकड़े-टुकड़े करके इसे जहन्नम में डाल दे।

चुनांचे उसकी सवारी ज़ोर से बिदकी, जिससे वह सवारी से इस तरह नीचे गिरा कि उसका पांव रकाब में फंसा रह गया और सवारी तेज़ भागती रही और उसका सिर और जिस्म ज़मीन पर घसिटता रहा, जिससे उसके जिस्म के टुकड़े गिरते रहे। अल्लाह की क़सम! आख़िर में सिर्फ़ उसकी टांग रकाब में लटकी रह गई।[1]

हज़रत कलबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु पानी पी रहे थे। एक आदमी ने उनको तीर मारा, जिससे उनके दोनों जबड़े बेकार हो गए तो हज़रत हुसैन रज़ि० ने कहा, अल्लाह तुझे कभी सेराब न करे। चुनांचे उसने पानी पिया, लेकिन प्यास न बुझी। आख़िर इतना पानी पिया कि उसका पेट फट गया।[2]

उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद का दरबान बयान करता है कि जब उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद करके आया तो मैं उसके पीछे महल में दाख़िल हुआ। मैंने देखा कि महल में एकदम आग भड़क उठी जो उसके चेहरे की ओर बढ़ी। उसने फ़ौरन अपनी आस्तीन चेहरे के सामने कर दी और मुझसे पूछा, तुमने भी यह आग देखी है। मैंने कहा, हां। उसने कहा, उसे छिपाकर रखना, किसी

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 193,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 196,

को मत बताना।[1]

हज़रत सुफ़ियान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मेरी दादी ने मुझे बताया कि क़बीला जोफ़ी के दो आदमी हज़रत हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा की शहादत के वक़्त वहां मौजूद थे। उनमें से एक की शर्मगाह इतनी लम्बी हो गई थी कि वह उसे लपेटा करता था और दूसरे को इतनी ज़्यादा प्यास लगती थी कि मशक को मुंह लगाकर सारी पी जाया करता था।

हज़रत सुफ़ियान कहते हैं, मैंने उन दोनों में से एक का बेटा देखा, वह बिल्कुल पागल नज़र आ रहा था।[2]

हज़रत आमश रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र पर पाख़ाना करने की गुस्ताख़ी की तो उससे उसके घरवालों में पागलपन, कोढ़ और ख़ारिश की वजह से खाल सफ़ेद हो जाने की बीमारियां पैदा हो गईं और सारे घरवाले फ़क़ीर हो गए।[3]

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के क़त्ल होने की वजह से पूरी दुनिया के निज़ाम में क्या-क्या तब्दीलियां आईं

हज़रत रबीआ बिन लक़ीत रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जिस साल हज़रत अली और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हुमा की जमाअतों में लड़ाई हुई, उस साल मैं हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ था। उनकी जमाअत वापस जा रही थी। रास्ते में ताज़ा ख़ून की बारिश हुई। मैं बरतन बारिश में रखता था तो वह ताज़ा ख़ून से भर जाता था। लोग समझ गए कि लोगों ने जो एक दूसरे का ख़ून बहाया है, उसकी वजह से यह बारिश हुई है।

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 196
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 197,
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 197,

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु बयान के लिए खड़े हुए। पहले अल्लाह के शायाने शान हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, अगर तुम अपने और अल्लाह के दर्मियान का ताल्लुक़ ठीक कर लोगे, (हर हाल में उसका हुक्म पूरा करोगे) तो अगर ये दो पहाड़ भी आपस में टकरा जाएंगे तो भी तुम्हारा कुछ नुक़्सान नहीं होगा।[1]

हज़रत ज़ोह्री रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, अब्दुल मलिक ने मुझसे कहा, अगर आप मुझे यह बता दें कि हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के दिन कौन-सी निशानी पाई गई थी, तो फिर वाक़ई आप बहुत बड़े आलिम हैं। मैंने कहा, उस दिन बैतुल मक़्दिस में जो भी कंकरी उठाई जाती, उसके नीचे ताज़ा ख़ून मिलता।

अब्दुल मलिक ने कहा, इस बात को रिवायत करने में मैं और आप दोनों बराबर हैं। (मुझे भी यह बात मालूम है।)[2]

हज़रत ज़ोह्री रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जिस दिन हज़रत हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा को शहीद किया गया, उस दिन शाम में जो भी पत्थर उठाया जाता, उसके नीचे ख़ून होता।[3]

हज़रत उम्मे हकीम रहमतुल्लाहि अलैहा कहती हैं, जिस दिन हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया गया, उस दिन मैं कम उम्र लड़की थी, तो कई दिन तक आसमान ख़ून की तरह सुर्ख़ रहा।[4]

हज़रत अबू क़बील रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हजरत हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा को शहीद किया गया तो उसी वक़्त सूरज को इतना ज़्यादा गरहन लगा कि ठीक दोपहर के वक़्त सितारे नज़र आने लगे और हम लोग समझे कि क़ियामत आ गई।[5]

---

1. कंज़, भाग 4, पृ० 291,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 196,
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 196
4. हैसमी, भाग 9, पृ० 197
5. हैसमी, भाग 9, पृ० 197, बिदाया, भाग 8, पृ० 201

सहाबा किराम रज़ि० के क़त्ल होने पर जिन्नात का नौहा करना

हज़रत मलिक बिन दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया गया तो यमन के तबाला पहाड़ पर एक आवाज़ सुनी गई कि किसी ने ये दो शेर पढ़े—

لِيَبْكِ عَلَى الْإِسْلَامِ مَنْ كَانَ بَاكِيًا   فَقَدْ أَوْشَكُوْا هَلْكَى وَمَا قَدُمَ الْعَهْدُ
وَأَدْبَرَتِ الدُّنْيَا وَأَدْبَرَ خَيْرُهَا   وَقَدْ مَلَّهَا مَنْ كَانَ يُوْقِنُ بِالْوَعْدِ

'इस्लाम पर जिसने रोना है वह रो ले, क्योंकि सब लोग हलाक हो गए, हालांकि अभी इस्लाम को ज़्यादा अर्सा नहीं हुआ था।'

'और दुनिया और दुनिया की ख़ैर ने पीठ फेर ली है और जो आख़िरत के वायदों पर यक़ीन रखता है, उसका दिल दुनिया से उकता गया है।'

लोगों ने इधर-उधर बहुत देखा, लेकिन उन्हें पहाड़ पर कोई बोलने वाला नज़र न आया (क्योंकि ये शेर मैंने पढ़े थे।)[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रात के वक़्त किसी को इन शेरों के ज़रिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात की ख़बर देते हुए सुना और मुझे यक़ीन है कि वह ख़बर देने वाला इंसान नहीं था, (बल्कि जिन्न था)

جَزَى اللّٰهُ خَيْرًا مِّنْ أَمِيْرٍ وَّبَارَكَتْ   يَدُ اللّٰهِ فِيْ ذَاكَ الْأَدِيْمِ الْمُمَزَّقِ
فَمَنْ يَّمْشِ أَوْ يَرْكَبْ جَنَاحَيْ نَعَامَةٍ   لِيُدْرِكَ مَا قَدَّمْتَ بِالْأَمْسِ يُسْبَقِ
قَضَيْتَ أُمُوْرًا ثُمَّ غَادَرْتَ بَعْدَهَا   بَوَائِقَ فِيْ أَكْمَامِهَا لَمْ تُفَتَّقِ

'अल्लाह अमीरुल मोमिनीन को भला बदला अता फ़रमाए और अल्लाह अपनी क़ुदरत से उस खाल में बरकत अता फ़रमाए, जिसको टुकड़े कर दिया गया।'

'(ऐ अमीरुल मोमिनीन!) आप जो कारनामे सर अंजाम दे गए हैं,

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 94, दलाइल, पृ० 210, मज्मा, भाग 9, पृ० 79

उन तक पहुंचने के लिए कोई थोड़ी मेहनत करे या ज़्यादा, वह कभी भी उन तक नहीं पहुंच सकता, बल्कि पीछे रह जाएगा।'

'बहुत बड़े काम तो आप कर गए, लेकिन इनके बाद ऐसी मुसीबतें छोड़ गए जो ऐसी कलियों में हैं, जो अभी फूटी नहीं।'[1]

हज़रत सुलैमान बिन यसार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक जिन्न ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर नौहा करते हुए ये शेर पढ़े—

عليك سلام من أمير وباركت   يد الله في ذاك الأديم الممزق

'ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप पर सलामती हो, और अल्लाह अपनी क़ुदरत से उस खाल में बरकत अता फ़रमाए, जिसको फाड़ दिया गया।'

قضيت أمورا ثم غادرت بعدها   بوائق في أكمامها لم تفتق
فمن يسع أو يركب جناحي نعامة   ليدرك ما قدمت بالأمس يسبق

इन दोनों शेरों का तर्जुमा गुज़र चुका है।

أبعد قتيل بالمدينة أظلمت   له الأرض تهتز العضاه بأسوق

'वह शख़्सियत जिनके क़त्ल होने की वजह से सारी ज़मीन अंधेरी हो गई है, क्या उनके क़त्ल होने के बाद कीकर के पेड़ अपने तनों पर लहलहा रहे हैं? यानी नहीं, बल्कि ये पेड़ भी उनकी शहादत पर दुखी हैं और उन्होंने लहलहाना छोड़ दिया है।'[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के इंतिक़ाल के तीन दिन बाद जिन्नात ने ये शेर पढ़कर उनकी शहादत पर नौहा किया और फिर यही पिछले चार शेर दूसरी तर्तीब से ज़िक्र किए और फिर पांचवां शेर यह ज़िक्र किया

فلقاك ربي في الجنان تحية   ومن كسوة الفردوس ما لم يمزق

'मेरा रब आपको जन्नतों में सलाम पहुंचाए और आपको जन्नतुल

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 314
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 374

फ़िरदौस के ऐसे कपड़े पहनाए जो कभी नहीं फटेंगे।'[1]

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, मैंने जिन्नात को हज़रत हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा पर नौहा करते हुए सुना है।[2]

एक बार हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया, जब से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ है, मैंने कभी भी जिन्न को किसी के मरने पर नौहा करते हुए नहीं सुना, लेकिन आज रात मैंने सुना है और मेरा ख़्याल यह है कि मेरा बेटा (हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़ौत हो गया है। चुनांचे उन्होंने अपनी बांदी से कहा, बाहर जा और पता करके आ।

चुनांचे बांदी ने आकर बताया कि वाक़ई हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हो गए हैं। फिर हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बताया कि एक जिन्न औरत यह शेर पढ़कर नौहा कर रही थी—

أَلَا يَا عَيْنُ فَاحْتَفِلِي بِجَهْدِي ۝ وَمَنْ يَبْكِي عَلَى الشُّهَدَاءِ بَعْدِي
عَلَى رَهْطٍ تَقُودُهُمُ الْمَنَايَا ۝ إِلَى مُتَجَبِّرٍ فِي مُلْكِ عَبْدِ

'ऐ आंख! ग़ौर से सुन और मैं जो रोने की कोशिश और मेहनत कर रही हूं, उसका एहतिमाम कर। मैं अगर नहीं रोऊंगी तो मेरे बाद शहीदों पर कौन रोएगा?'

'शहीदों की वह जमाअत, जिनको मौत खींच कर ऐसे ज़ालिम और जाबिर इंसान के पास ले गई (यानी उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद), जो कि एक ग़ुलाम यानी यज़ीद की बादशाही में फ़ौज का सिपहसालार है।'[3]

हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, मैंने जिन्नात को हज़रत हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा पर नौहा करते हुए सुना।[4]

---

1. दलाइल, पृ० 210
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 199
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 199
4. हैसमी, भाग 9, पृ० 199

सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखना

(हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं) हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं एक ऐसी जगह हूं जहां बहुत-से रास्ते हैं, फिर सारे रास्ते ख़त्म हो गए और सिर्फ़ एक रास्ता रह गया। मैंने उस पर चलना शुरू कर दिया और चलते-चलते एक पहाड़ पर पहुंच गया, जिसके ऊपर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फ़रमा थे और उनके पास हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु बैठे हुए थे और हुज़ूर सल्ल० हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को इशारा करके फ़रमा रहे थे कि यहां आ जाओ।

यह ख़्वाब देखकर मैंने कहा, 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०' अल्लाह की क़सम ! अमीरुल मोमिनीन (हज़रत उमर रज़ि०) के इंतिक़ाल का वक़्त आ गया है।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, मैंने कहा, आप यह ख़्वाब हज़रत उमर रज़ि० को नहीं लिख देते ? उन्होंने फ़रमाया, मैं ख़ुद उनको उनकी मौत की ख़बर क्यों दूं ?[1]

हज़रत कसीर बिन सल्त रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जिस दिन हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हुए, उस दिन वह सोए और उठने के बाद फ़रमाया, अगर लोग यह न कहें कि उस्मान रज़ि० फ़ित्ना पैदा करना चाहता है, तो मैं आप लोगों को एक बात बताऊं। हमने कहा, आप हमें बता दें, हम वह बात नहीं कहेंगे जिसका दूसरे लोगों से ख़तरा है।

उन्होंने फ़रमाया, मैंने अभी ख़्वाब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, आपने मुझसे फ़रमाया, तुम इस जुमा में हमारे पास

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 332,

पहुंच जाओगे।

इब्ने साद की रिवायत में यह भी है कि यही जुमा का दिन था।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, सुबह के वक़्त हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, आज रात मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उस्मान ! हमारे पास इफ़्तारी करना। चुनांचे उस दिन हज़रत उस्मान रज़ि० ने रोज़ा रखा और उसी दिन उनको शहीद कर दिया गया।[2]

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत मुस्लिम अबू सईद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उस्मान रज़ि० ने बीस ग़ुलाम आज़ाद किए और शलवार मंगवा कर उसे पहना और उसे अच्छी तरह बांध लिया, हालांकि उन्होंने इससे पहले न जाहिलियत में शलवार पहनी थी और न इस्लाम में।

और फ़रमाया, पिछली रात मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को और हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को ख़्वाब में देखा। इन लोगों ने मुझसे फ़रमाया, सब्र करो, क्योंकि तुम कल रात हमारे पास आकर इफ़्तार करोगे, फिर क़ुरआन शरीफ़ मंगवाया और खोल कर अपने सामने रख लिया। चुनांचे जब वे शहीद हुए तो क़ुरआन उसी तरह उनके सामने था।[3]

हज़रत हसन या हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ख़्वाब में मुझे मेरे महबूब यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिले। मैंने हुज़ूर सल्ल० से उनके बाद इराक़ वालों की तरफ़ से पेश आने वाली तक्लीफ़ों की शिकायत की, तो आपने मुझसे वायदा फ़रमाया कि बहुत जल्द तुम्हें उनसे राहत मिल जाएगी। चुनांचे इसके बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अलैहि सिर्फ़

---

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 99, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 75, हैसमी, भाग 7, पृ० 232
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 103, मज्मा, भाग 7, पृ० 232, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 74
3. हैसमी, भाग 7, पृ० 232

तीन दिन ही ज़िन्दा रहे।[1]

हज़रत अबू सालेह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैंने ख़्वाब में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा तो मैंने आपसे आपकी उम्मत की शिकायत की कि वे मुझे झुठलाते हैं और तक्लीफ़ पहुंचाते हैं। फिर मैं रोने लगा।

आपने फ़रमाया, मत रोओ और इधर देखो। मैंने उधर देखा, तो मुझे दो आदमी नज़र आए जो बेड़ियों में बंधे हुए थे। (बज़ाहिर यह हज़रत अली रज़ि० का क़ातिल इब्ने मुलजिम और उसका साथी होगा) और बड़े-बड़े पत्थर इन दोनों के सर पर मारे जा रहे थे, जिससे उनके सर टुकड़े-टुकड़े हो जाते, फिर सर ठीक हो जाते। (यों ही इन दोनों को लगातार अज़ाब दिया जा रहा था।)

हज़रत अबू सालेह कहते हैं, मैं अगले दिन अपने हर दिन के प्रोग्राम के मुताबिक़ सुबह के वक़्त घर से हज़रत अली रज़ि० की ओर चला। जब मैं क़साइयों के मुहल्ले में पहुंचा तो मुझे कुछ लोग मिले जिन्होंने बताया कि अमीरुल मोमिनीन को शहीद कर दिया गया है।[2]

हज़रत फ़िलफ़िला जोफ़ी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा को फ़रमाते हुए सुना कि मैंने ख़्वाब में देखा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अर्श से चिमटे हुए हैं और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्ल० की कमर को पकड़े हुए हैं और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की कमर को पकड़े हुए हैं और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ि० की कमर को पकड़े हुए हैं और मैंने देखा कि आसमान से ज़मीन पर ख़ून गिर रहा है।

जब हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह ख़्वाब सुनाया तो वहां कुछ शीआ लोग भी बैठे हुए थे। उन्होंने पूछा, क्या आपने हज़रत अली

1. अदनी
2. मुंत० क. भाग 5, पृ० 61,

रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़्वाब में नहीं देखा?

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मुझे सबसे ज़्यादा तो यही पसन्द है कि मैं हज़रत अली रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० की कमर पकड़े हुए देखता, लेकिन क्या करूं, मैंने ख़्वाब में देखा ही वही है जो मैंने आप लोगों को सुनाया है। आगे और भी हदीस है।[1]

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ऐ लोगो! मैंने आज रात अजीब ख़्वाब देखा। मैंने देखा कि अल्लाह अपने अर्श पर हैं, इतने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और आकर अर्श के पाए के पास खड़े हो गए। फिर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु आए और आकर हुज़ूर सल्ल० के कंधे पर हाथ रखकर खड़े हो गए, फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आए और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के कंधे पर हाथ रखकर खड़े हो गए, फिर हज़रत उस्मान रज़ि० आए और उन्होंने हाथ से इशारा करके अर्ज़ किया—

'ऐ मेरे रब! अपने बन्दों से पूछ, उन्होंने मुझे किस वजह से क़त्ल किया?'

इसके बाद आसमान से ज़मीन की तरफ़ ख़ून के दो परनाले बहने लगे!

जब हज़रत हसन रज़ि० ख़्वाब बयान कर चुके तो किसी ने हज़रत अली रज़ि० से कहा, क्या आपने देखा नहीं कि हज़रत हसन रज़ि० क्या बयान कर रहे हैं? हज़रत अली रज़ि० ने कहा, जो उन्होंने ख़्वाब में देखा है, वही बयान कर रहे हैं।

एक रिवायत में है कि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, इस ख़्वाब को देखने के बाद अब मैं किसी लड़ाई में शरीक नहीं हूंगा।

इस रिवायत में यह भी है कि हज़रत हसन रज़ि० ने फ़रमाया कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर अपना हाथ रखा हुआ था। मैंने इन हज़रात के पीछे बहुत-सा ख़ून देखा। मैंने पूछा, यह ख़ून क्या है? किसी ने जवाब में कहा, यह हज़रत

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 96,

उस्मान रज़ि० का ख़ून है, जिसकी वह अल्लाह से मांग कर रहे हैं।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैंने दोपहर के वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा कि आपके बाल बिखरे हुए हैं और आप पर गर्द व ग़ुबार पड़ा हुआ है और आपके हाथ में एक शीशी है। मैंने पूछा, यह शीशी कैसी? आपने फ़रमाया, इसमें हुसैन रज़ि० और उसके साथियों का ख़ून है, जिसे मैं सुबह से जमा कर रहा हूं। फिर हमने देखा तो वाक़ई हज़रत हुसैन रज़ि० उसी दिन शहीद हुए थे।[2]

इब्ने अब्दुलबर्र की रिवायत में यह भी है कि आपके हाथ में एक शीशी है, जिसमें ख़ून है।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का एक दूसरे को ख़्वाब में देखना

हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का पड़ोसी था। मैंने उनसे बेहतर कभी कोई आदमी नहीं देखा, रात भर नमाज़ पढ़ते और दिन भर रोज़ा रखते और लोगों के कामों में लगे रहते। जब उनका इंतिक़ाल हुआ, तो मैंने अल्लाह से दुआ की कि वह मुझे ख़्वाब में हज़रत उमर रज़ि० की ज़ियारत करा दे।

चुनांचे मैंने उन्हें ख़्वाब में देखा कि वह कंधे पर चादर डाले हुए मदीना के बाज़ार से आ रहे हैं। मैंने उन्हें सलाम किया। उन्होंने मेरे सलाम का जवाब दिया। मैंने पूछा, क्या हाल है? फ़रमाया, ख़ैरियत है। फिर मैंने पूछा, आपने क्या पाया? फ़रमाया, मैं अब हिसाब से फ़ारिग़ हुआ हूं। अगर मैं रहम करने वाले रब को न पाता, तो मेरा वक़ार गिर जाता।[3]

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 96,
2. तारीख़े ख़तीब, भाग 1, पृ० 142, इस्तीआब, भाग 1, पृ० 381,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 54,

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे बड़े गहरे दोस्त थे। जब उनका इंतिक़ाल हुआ, तो मैं साल भर अल्लाह से दुआ करता रहा कि अल्लाह ख़्वाब में हज़रत उमर रज़ि० की ज़ियारत करा दे। आख़िर साल गुज़रने के बाद मैंने उन्हें ख़्वाब में देखा कि वह अपनी पेशानी से पसीना पोंछ रहे हैं।

मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपके रब ने आपके साथ क्या मामला किया? उन्होंने कहा, अब मैं (हिसाब से) फ़ारिग़ हुआ हूं। अगर मेरा रब शफ़क़त और मेहरबानी का मामला न करता तो मेरी इज़्ज़त और वक़ार सब गिर जाता।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैंने एक साल अल्लाह से दुआ की कि मुझे ख़्वाब में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ियारत करा दे। चुनांचे मैंने उन्हें ख़्वाब में देखा, तो मैंने अर्ज़ किया, आपके साथ क्या हुआ? फ़रमाया, बड़े शफ़ीक़ और निहायत मेहरबान रब से वास्ता पड़ा। अगर मेरे रब की रहमत न होती तो मेरी इज़्ज़त ख़ाक में मिल जाती।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मुझे इस बात का बहुत शौक़ था कि मुझे किसी तरह यह पता चल जाए कि मरने के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ क्या हुआ। आख़िर अल्लाह ने फ़ज़्ल फ़रमाया और मैंने ख़्वाब में एक महल देखा। मैंने पूछा, यह किसका है? लोगों ने बताया कि यह हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० का है।

इतने में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु महल से बाहर तशरीफ़ लाए। उन्होंने चादर ओढ़ी हुई थी। ऐसे लग रहा था अभी ग़ुस्ल करके आए हों। मैंने पूछा, आपके साथ कैसा मामला हुआ? फ़रमाया, अच्छा मामला हुआ। अगर मेरा रब बख़्शने वाला न होता, तो मेरी इज़्ज़त

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 375,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 375,

ख़ाक में मिल जाती।

फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, आप लोगों से जुदा हुए मुझे कितना अर्सा हो गया है? मैंने कहा, बारह साल। फ़रमाया, अब मैं हिसाब से छूटा हूं।[1]

हज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने एक अंसारी सहाबी रज़ि० को कहते हुए सुना कि मैंने अल्लाह से दुआ की कि मुझे ख़्वाब में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ियारत करा दे। मैंने दस साल के बाद उन्हें ख़्वाब में देखा कि पेशानी से पसीना पोंछ रहे थे। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपका क्या बना? फ़रमाया, अब मैं हिसाब से फ़ारिग़ हुआ हूं। अगर मेरे रब की मेहरबानी न होती, तो मैं हलाक हो जाता।[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज से वापसी पर मैं (मक्का और मदीना के दर्मियान) सुक़्या नामी जगह पर सो रहा था। मैंने ख़्वाब में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि चलते हुए मेरे पास आए और (मेरी बीवी) हज़रत उम्मे कुलसूम बिन्त उक़्बा रज़ियल्लाहु अन्हा मेरे पहलू में सो रही थी। हज़रत उमर रज़ि० ने आकर उसे पांव से हिला कर जगाया।

फिर वह पीठ फेरकर चल दिए। लोग उनकी तलाश में चल पड़े। मैंने अपने कपड़े मंगवा कर पहने और मैं भी लोगों के साथ उन्हें ढूंढने लगा और सबसे पहले मैं उन तक पहुंचा, लेकिन अल्लाह की क़सम! मैं उन्हें ढूंढने में बेहद थक गया। मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपने तो लोगों को मशक़्क़त में डाल दिया। जब तक कोई थक न जाए, उस वक़्त तक वह आपको ढूंढ नहीं सकता। अल्लाह की क़सम! जब मैं अच्छी तरह थक गया, तब आप मुझे मिले।

उन्होंने फ़रमाया, मेरे ख़्याल में मैं तो कोई ख़ास तेज़ नहीं चला।

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 54
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 376,

(यहां तक ख़्वाब है, इसके बाद हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० फ़रमाते हैं) उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है। यह हज़रत उमर रज़ि० का सबसे आगे निकल जाना उनके आमाल की वजह से है।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझसे कहा, ऐ मेरे भाई! हम दोनों में से जो पहले मर जाए, वह इस बात की कोशिश करे कि जो साथी दुनिया में रह गया है, वह जाने वाला उसे ख़्वाब में नज़र आए। मैंने कहा, क्या ऐसे हो सकता है?

हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, हां, क्योंकि मोमिन की रूह आज़ाद रहती है। ज़मीन पर जहां चाहे चली जाती है और काफ़िर की रूह क़ैद में होती है। चुनांचे हज़रत सलमान रज़ि० का पहले इंतिक़ाल हो गया।

एक दिन दोपहर को मैं अपनी चारपाई पर सोने के लिए लेटा, अभी मुझे हल्की सी नींद आई थी कि एकदम ख़्वाब में हज़रत सलमान रज़ि० आ गए। उन्होंने कहा—

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

'अस्सलामु अलै-क व रहमतुल्लाहि'

मैंने कहा, ऐ अबू अब्दुल्लाह!

'अस्सलामु अलै-क व रहमतुल्लाहि' आपको कैसा ठिकाना मिला?

फ़रमाया, बहुत उम्दा और तवक्कुल को लाज़िम पकड़े रहना, क्योंकि तवक्कुल बहुत उम्दा चीज़ है। तवक्कुल को लाज़िम पकड़े रहना, क्योंकि तवक्कुल बहुत उम्दा चीज़ है। तवक्कुल को लाज़िम पकड़े रहना, क्योंकि तवक्कुल बहुत उम्दा चीज़ है।[2]

अबू नुऐम की रिवायत में इस तरह है कि फिर हज़रत सलमान

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 376,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 93, हुलीया, भाग 1, पृ० 205

रज़ियल्लाहु अन्हु का पहले इंतिक़ाल हो गया तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़्वाब में उन्हें देखा। उनसे पूछा, ऐ अबू अब्दुल्लाह ! आपका क्या हाल है? हज़रत सलमान ने कहा, ख़ैरियत है। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने पूछा, आपने कौन-से अमल को सबसे अफ़ज़ल पाया? हज़रत सलमान रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने तवक्कुल को अजीब चीज़ पाया।[1]

हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैंने ख़्वाब में खाल का ख़ेमा और हरी-भरी चरागाह देखी और ख़ेमे के इर्द-गिर्द बकरियां बैठी हुई थीं, जो जुगाली कर रही थीं और मेंगनी की जगह अजवा खजूरें निकल रही थीं। मैंने पूछा, यह ख़ेमा किसका है? किसी ने बताया, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु का है।

चुनांचे हम लोगों ने कुछ देर इन्तिज़ार किया, फिर हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ेमे से बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, यह सब कुछ हम को अल्लाह ने क़ुरआन की वजह से दिया है, लेकिन अगर तुम इस घाटी से परली तरफ़ झांको, तो तुम्हें ऐसी नेमतें नज़र आएंगी, जिन्हें तुम्हारी आंख ने कभी देखा नहीं और तुम्हारे कान ने सुना नहीं और जिनका ख़्याल भी तुम्हारे दिल में नहीं आया होगा। ये नेमतें अल्लाह ने हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए तैयार की हैं, क्योंकि वे दोनों हाथों और सीने से दुनिया को धक्के दिया करते थे। (बड़े ज़ाहिद थे।)[2]

इमाम वाक़दी के बहुत से उस्ताद फ़रमाते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हराम रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैंने उहुद की लड़ाई से पहले ख़्वाब में हज़रत मुबश्शिर बिन अब्दुल मुंज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा, वह मुझसे कह रहे हैं, तुम कुछ दिनों में हमारे पास आने वाले हो। मैंने पूछा, आप कहां हैं? फ़रमाया, हम जन्नत में हैं और जहां चाहते हैं जाकर चर लेते हैं।

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 93,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 210

मैंने कहा, क्या आप बद्र की लड़ाई के दिन क़त्ल नहीं हुए थे? फ़रमाया, हां, क़त्ल तो हुआ था, लेकिन फिर ज़िंदा हो गया। मैंने जाकर यह ख़्वाब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया, तो फ़रमाया, ऐ अबू जाबिर! इस ख़्वाब की ताबीर यह है कि तुम्हें (उहुद की लड़ाई में) शहादत का दर्जा मिलेगा।[1]

---

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 204,

किन वज्हों से सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की ग़ैबी मदद हुआ करती थी और वे किस तरह उन वज्हों के साथ चिमटे रहते थे और इन लोगों ने किस तरह अपनी निगाह माद्दी अस्बाब और फ़ानी सामान से हटा रखी थी

नागवारियों और सख़्तियों को बरदाश्त करना

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, इस्लाम नागवारियों और सख़्तियों को लेकर उतरा है, यानी नागवारियां और सख़्तियां बरदाश्त करने से इस्लाम को तरक़्क़ी मिलती है। हमने सबसे ज़्यादा भलाई नागवारी में पाई। चुनांचे हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मक्का से (हिजरत करके बड़ी नागवारी के साथ) निकले, लेकिन अल्लाह ने उसी हिजरत की वजह से हमें बुलन्दी और कामियाबी अता फ़रमाई।

इसी तरह हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बद्र की लड़ाई में गए थे। उस वक़्त हमारा हाल वह था, जिसे अल्लाह ने इन आयतों में बयान फ़रमाया है—

وَاِنَّ فَرِيْقًا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكَارِهُوْنَ يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ (سورت انفال آیت ٥-٧)

'और मुसलमानों की एक जमाअत उसको गरां समझती थी (और) वे इस मस्लहत (के काम) में बाद इसके कि उसका ज़हूर हो गया था, (अपने बचाव के लिए) आपसे (मश्विरे के तौर पर) इस तरह झगड़ रहे थे कि गोया कोई उनको मौत की तरफ़ हांके लिए जाता है और वे देख रहे

है और तुम लोग उस वक़्त को याद करो जबकि अल्लाह तुमसे इन दो जमाअतों में से एक का वायदा करते थे कि वह तुम्हारे हाथ आ जाएगी और तुम इस तमन्ना में थे कि ग़ैर-मुसल्लह जमाअत (यानी क़ाफ़िला) तुम्हारे हाथ आ जाए।' (सूरः अंफ़ाल, आयत 75)

और मुसल्लह जमाअत कुरैश की थी। चुनांचे अल्लाह ने उस सफ़र में भी हमारे लिए बुलन्दी और कामियाबी रख दी। (हालांकि यह ग़ज़्वा हमारी मर्ज़ी के बिल्कुल ख़िलाफ़ हुआ था)। ख़ुलासा यह कि हमने भलाई की भलाई नागवारी में पाई।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन इस्हाक़ बिन यसार रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु का क़िस्सा ज़िक्र किया है। जब हज़रत ख़ालिद रज़ि० यमामा से फ़ारिग़ हुए, तो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें यमामा यह ख़त लिखा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़लीफ़ा और अल्लाह के बन्दे अबूबक्र रज़ि० की तरफ़ से हज़रत ख़ालिद बिन वलीद के नाम और उन मुहाजिरीन अंसार और इख़्लास के साथ उनकी पैरवी करने वालों के नाम, जो हज़रत ख़ालिद रज़ि० के साथ हैं, सलामुन अलैकुम!

मैं आप लोगों के सामने उस अल्लाह की तारीफ़ करता हूं जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। अम्मा बादु तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने अपना वायदा पूरा किया, और अपने बन्दे की मदद की और अपने दोस्त को इज़्ज़त दी और अपने दुश्मन को ज़लील किया और तमाम गिरोहों पर अकेला ही ग़ालिब आ गया। वह अल्लाह, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसने यह फ़रमाया है—

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ آمَنُوْا مِنْكُمْ وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَ لَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ
دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ (سورت نور آيت ٥٥)

'ऐ उम्मत के मज्मूए! तुममें जो लोग ईमान लाएं और नेक अमल

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 27

करें, उनसे अल्लाह वायदा फ़रमाता है कि उनको (इस पैरवी की बरकत से) ज़मीन में हुकूमत अता फ़रमाएगा, जैसा इनसे पहले (हिदायत वालों को) हुकूमत दी थी और जिस दीन को (अल्लाह ने) उनके लिए पसन्द फ़रमाया है (यानी इस्लाम) उसको उनकी (आख़िरत के नफ़ा के लिए) ताक़त देगा।' (सूरः नूर, आयत 55)

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह आयत पूरी लिखी, इसके बाद लिखा, यह अल्लाह का वायदा है, जिसके ख़िलाफ़ कभी नहीं हो सकता और अल्लाह का ऐसा फ़रमान है, जिसमें कोई शक नहीं है। अल्लाह ने मुसलमानों पर जिहाद फ़र्ज़ किया है और क़ुरआन में फ़रमान है—

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَ هُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ (سورت بقرہ آیت ۲۱۶)

'जिहाद करना तुम पर फ़र्ज़ किया गया है और वह तुमको (तबियत के एतबार से) बोझ (मालूम होता है) है।' (सूरः बक़रः, आयत 216)

आयतों के लिखने के बाद लिखा, अल्लाह ने तुमसे जो वायदे किए हैं, वे सारे अल्लाह से पूरे कराओ। (जिसकी शक्ल यह है कि अल्लाह ने इन वायदों के लिए जो शर्तें लगाई हैं, तुम वे शर्तें पूरी करो।) और अल्लाह ने तुम पर जो काम फ़र्ज़ किए हैं, उनमें अल्लाह की इताअत करो, चाहे उसमें कितनी मशक़्क़त उठानी पड़े और कितनी ज़्यादा मुसीबतें बरदाश्त करनी पड़ें और कितने दूर-दूर के सफ़र तै करने पड़ें और कितने माली और जानी नुक़्सान उठाने पड़ें, क्योंकि अल्लाह के बड़े अज्र के मुक़ाबले में, ये सब कुछ भी नहीं।

अल्लाह तुम पर रहम करे, तुम हलके हो या भारी, हर हाल में अल्लाह के रास्ते में निकलो और माल व जान लेकर ख़ूब जिहाद करो। फिर उसके बारे में आयतें लिखीं, फिर लिखा, ग़ौर से सुनो, मैंने ख़ालिद बिन वलीद को इराक़ जाने का हुक्म दिया है और कहा है कि वहां जाकर मेरे दूसरे हुक्म का इन्तिज़ार करे।

इसलिए आप सब लोग उनके साथ जाओ और उनका साथ छोड़कर ज़मीन से मत चिमटो, क्योंकि यह ऐसा रास्ता है जिसमें अल्लाह उस

आदमी को बहुत बड़ा अज्र अता फ़रमाते हैं, जिसकी नीयत अच्छी हो और जिसे ख़ैर के कामों का बहुत ज़्यादा शौक़ हो। जब आप लोग इराक़ पहुंच जाओ तो मेरे हुक्म के आने तक वहीं रहो। अल्लाह हमारी और तुम्हारी दुनिया और आख़िरत के तमाम ज़रूरी कामों की किफ़ायत फ़रमाए—

وَالسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

'वस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू'[1]

और सख़्तियां और तक्लीफ़ें बरदाश्त करने के बाब में, हिजरत के बाब में, नुसरत के बाब में और जिहाद के बाब वग़ैरह में सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के सख़्तियां और तक्लीफ़ें बरदाश्त करने के क़िस्से तफ़्सील से गुज़र चुके हैं।

ज़ाहिर के ख़िलाफ़ अल्लाह के हुक्म को पूरा करना

हज़रत उत्बा बिन अब्द सुलमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा रज़ि० से फ़रमाया, उठो (और इन काफ़िरों से) लड़ो। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ज़रूर, हम बिल्कुल तैयार हैं। और हम वह नहीं कहेंगे जो बनी इसराईल ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कहा था कि आप जाएं और आपका रब जाए और आप दोनों लड़ें, हम तो यहां बैठे हैं।

बल्कि हम तो यह अर्ज़ करें कि ऐ मुहम्मद सल्ल० ! आप जाएं, आपका रब जाए, हम भी आपके साथ रहकर लड़ाई लड़ेंगे।[2]

जिहाद के बाब में हज़रत मिक़्दाद रज़ियल्लाहु अन्हु का इसी जैसा क़ौल गुज़र चुका है, जिसे इब्ने अबी हातिम और इब्ने मरदवैह वग़ैरह ने रिवायत किया है और हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु का यह क़ौल भी पहले हिस्से में गुज़र चुका है कि उस ज़ात की क़सम, जिसके

1. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 179,
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 75,

क़ब्ज़े में मेरी जान है! अगर आप हमें इस बात का हुक्म दें कि हम बर्कुल ग़िमाद तक अपनी सवारियों पर सफ़र करें तो हम ऐसा ज़रूर करेंगे।

इसी तरह हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत से मुस्नद अहमद में और हज़रत अलक़मा बिन वक़्क़ास लैसी रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत से इब्ने मरदवैह की किताब में हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु का यह क़ौल गुज़र चुका है कि उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको यह शरफ़ बख़्शा और आप पर किताब नाज़िल फ़रमाई, न तो मैं कभी उस रास्ते पर चला हूं और न मुझे इसका कुछ इल्म है, लेकिन अगर आप यमन के बरकुल ग़िमाद तक जाएंगे तो हम भी आपके साथ-साथ वहां तक ज़रूर जाएंगे और हम उन लोगों की तरह नहीं होंगे जिन्होंने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कह दिया था—

اِذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا اِنَّا هٰهُنَا قَاعِدُوْنَ

'आप जाएं और आपका रब भी जाए। आप दोनों लड़ाई करें, हम तो यहां बैठे हैं।' बल्कि हम तो यह कहते हैं—

اِذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا اِنَّا مَعَكُمْ مُتَّبِعُوْنَ

'आप भी जाएं और आपका रब भी जाए, आप दोनों लड़ाई करें, और हम भी आपके साथ-साथ हैं।'

हो सकता है कि आप तो किसी और इरादे से चले हों और अब अल्लाह कुछ और काम करवाना चाहते हों, यानी आप तो अबू सुफ़ियान के क़ाफ़िले के मुक़ाबले के इरादे से चले थे, लेकिन अब अल्लाह चाहते हैं कि काफ़िरों के उस लश्कर से लड़ा जाए, तो जो अल्लाह करवाना चाहते हैं, आप उसे देखें और उसे करें, इसलिए अब (हमारी तरफ़ से आपको हर तरह का पूरा अख़्तियार है) आप जिससे चाहें, ताल्लुक़ात बनाएं और जिससे चाहें, ताल्लुक़ात ख़त्म कर दें और जिससे चाहें दुश्मनी रखें और जिससे चाहें, सुलह कर लें और हमारा माल जितना चाहें ले लें।

चुनांचे हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु के इस जवाब पर यह कुरआन नाज़िल हुआ।

كَمَا اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
لَكٰرِهُوْنَ (سورت انفال آیت ٥)

'जैसा कि आपके रब ने अपने घर (और बस्ती) से मस्लहत के साथ आपको (बद्र की तरफ़) रवाना किया और मुसलमानों की एक जमाअत उसको बोझ समझती थी।' (सूरः अंफ़ाल, आयत 5)

उमवी ने अपनी मग़ाज़ी में इस हदीस को ज़िक्र किया है और इसमें इतना और मज़्मून है कि आप हमारा जितना माल चाहें, ले लें और जितना चाहें, हमें दे दें और जो माल आप हम से लेंगे, वह हमें उससे ज़्यादा महबूब होगा जो आप हमारे पास छोड़ देंगे और आप जो हुक्म देंगे, हमारा मामला उस हुक्म के मातहत होगा।

अल्लाह पर तवक्कुल करना और बातिल वालों को झूठा समझना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन औफ़ बिन अह्मर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु अंबार शहर से नह्रवान वालों की तरफ़ जाने लगे तो मुसाफ़िर बिन औफ़ बिन अह्मर ने उनसे कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप इस घड़ी में न चलें, बल्कि जब दिन चढ़े को तीन घड़ियां गुज़र जाएं, फिर यहां से चलें।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा, क्यों? उसने कहा, अगर आप इस घड़ी में चलेंगे तो आपको और आपके साथियों को बहुत तक्लीफ़ें आएंगी और सख़्त नुक़्सान होगा और अगर आप उस घड़ी में सफ़र शुरू करें, जो मैंने बताई है, तो आप कामियाब होंगे और दुश्मन पर ग़लबा पाएंगे और आपको मक़्सद हासिल हो जाएगा।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, न तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कोई नजूमी था और न उनके बाद हमारे यहां अब तक कोई था, क्या तुम्हें मालूम है कि मेरी इस घोड़ी के

पेट में क्या है? उसने कहा, अगर मैं हिसाब लगाऊं तो पता चला सकता हूं। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, जो तुम्हारी इस बात को सच्चा मानेगा, वह क़ुरआन को झुठलाने वाला होगा, क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है—

اَللّٰھُمَّ اِنَّ ذُنُوْبِیْ لَا تَضُرُّکَ وَاِنَّ رَحْمَتَکَ اِیَّایَ لَا تَنْقُصُکَ

'बेशक अल्लाह ही को क़ियामत की ख़बर है और वही बारिश बरसाता है और वही जानता है जो कुछ मां के पेट में है।'

(सूरः लुक़मान, आयत 34)

जिस चीज़ के जानने का तुमने दावा किया है, उसके जानने का तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी दावा नहीं किया था और क्या तुम यह भी कहते हो कि तुम उस घड़ी को भी जानते हो जिसमें सफ़र शुरू करने वाले को नुक़्सान होगा? उसने कहा, हां, मैं जानता हूं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जो तुम्हारी इस बात को सच्चा मान लेगा उसे तो नागवारियों और परेशानियों के दूर करने में अल्लाह की ज़रूरत नहीं रहेगी और जो तुम्हारी इस बात को मान लेगा, वह तो अपने रब अल्लाह को छोड़कर अपना हर काम तुम्हारे सुपुर्द कर देगा, क्योंकि तुम दावा कर रहे हो कि तुम वह घड़ी जानते हो जिसमें सफ़र शुरू करने वाला हर शर और तक्लीफ़ से महफ़ूज़ रहेगा।

इसलिए इस बात पर जो ईमान ले आएगा, मुझे तो उसके बारे में यही ख़तरा है कि वह उस आदमी की तरह हो जाएगा जो अल्लाह के अलावा किसी और को अल्लाह का मुक़ाबिल और हमसर बना ले। ऐ अल्लाह! अच्छा और बुरा शगून (शकुन) वही है, जो तूने मुक़द्दर फ़रमाया है और ख़ैर वही है जो तू अता फ़रमाए और तेरे अलावा कोई माबूद नहीं।

(ऐ मुसाफ़िर!) हम तुझे झुठलाते हैं, इसलिए हम तेरी मुख़ालफ़त करेंगे और हम उसी घड़ी में सफ़र शुरू करेंगे जिसमें सफ़र करने से तू मना कर रहा है। फिर हज़रत अली रज़ि० ने लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, ऐ लोगो! इन सितारों का इल्म सीखने से बचो,

अलबत्ता सितारों का सिर्फ़ इतना इल्म सीखो जिससे ख़ुश्की और समुन्दर की तारीकी में रास्ता मालूम हो सके। नजूमी तो काफ़िर की तरह है और काफ़िर जहन्नम में जाएगा।

(फिर मुसाफ़िर की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया) अल्लाह की क़सम ! अगर मुझे यह ख़बर मिली कि तू सितारों को देखकर उनके मुताबिक़ अमल करता है तो जब तक तू ज़िंदा रहा और मैं ज़िंदा रहा, उस वक़्त तक मैं तुझे क़ैद में रखूंगा और जब तक मेरी ख़िलाफ़त रहेगी, तुझे वज़ीफ़ा नहीं दूंगा।

फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसी घड़ी में सफ़र शुरू किया जिससे मुसाफ़िर ने मना किया था और जाकर नहरवान वालों पर ग़लबा पाकर उन्हें क़त्ल किया, फिर फ़रमाया, अगर हम उस घड़ी में सफ़र शुरू करते, जिसको मुसाफ़िर कह रहा था और फिर हम कामियाब होते और दुश्मन पर ग़ालिब आते, तो लोग यही कहते कि नजूमी ने जिस घड़ी में सफ़र शुरू करने को कहा था, उस घड़ी में हज़रत अली रज़ि० ने सफ़र शुरू किया था, इस वजह से दुश्मन पर ग़ालिब आ गए।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यहां कोई नजूमी नहीं था और उनके बाद हमारे यहां भी कोई नहीं था, लेकिन फिर अल्लाह ने किसरा और क़ैसर के मुल्कों पर और दूसरे मुल्कों पर हमें जीत दी। ऐ लोगो ! अल्लाह पर तवक्कुल करो और उसी पर भरोसा करो, क्योंकि अल्लाह जिसके काम बनाएगा, उसे किसी और की ज़रूरत नहीं रहेगी।[1]

अल्लाह ने जिन कामों से इज़्ज़त दी है, उन कामों से इज़्ज़त तलाश करना

हज़रत तारिक़ बिन शिहाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु हमारे साथ शाम देश में थे। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु वहां तशरीफ़ लाए थे। हज़रत

1. कंज़, भाग 5, पृ० 235,

उमर रज़ि० के साथ और सहाबा रज़ि० भी चल रहे थे। चलते-चलते रास्ते में पानी का एक घाट आ गया। हज़रत उमर रज़ि० अपनी ऊंटनी पर सवार थे, वह ऊंटनी से नीचे उतरे और मोज़े उतार कर अपने कंधे पर रख लिए और अपनी ऊंटनी की नकेल पकड़ कर उस घाट में से गुज़रने लगे, तो हज़रत उबैदह रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप यह क्या कर रहे हैं कि मोज़े उतार कर कंधे पर रख लिए हैं और ऊंटनी की नकेल पकड़ कर इस घाट में गुज़रने लगे हैं? मुझे इस बात से बिल्कुल ख़ुशी न होगी कि इस शहर वाले आपको (इस हाल में) देखें।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, ओहो, ऐ अबू उबैदह ! अगर आपके अलावा कोई और यह बात कहता, तो मैं उसे ऐसी सख़्त सज़ा देता, जिससे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सारी उम्मत को इबरत होती। हम तो सबसे ज़्यादा ज़लील क़ौम थे, अल्लाह ने हमें इस्लाम के ज़रिए इज़्ज़त अता फ़रमाई। अब जिस इस्लाम के ज़रिए अल्लाह ने हमें इज़्ज़त अता फ़रमाई है, हम जब भी उसके अलावा किसी और चीज़ से इज़्ज़त हासिल करना चाहेंगे तो अल्लाह हमें ज़लील कर देंगे।[1]

हज़रत तारिक़ बिन शिहाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु शाम पहुंचे तो (शाम के) लश्कर हज़रत उमर रज़ि० को मिलने के लिए आए, उस वक़्त हज़रत उमर रज़ि० ने चादर बांधी हुई थी और मोज़े पहने हुए थे और पगड़ी बांधी हुई थी और अपने ऊंट की नकेल पकड़ कर पानी में से गुज़र रहे थे, तो हज़रत उमर रज़ि० से एक आदमी ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! (शाम के) लश्कर और शाम के जरनैल आपसे मिलने के लिए आए हैं और आपका यह हाल है?

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हमें अल्लाह ने इस्लाम के

1. हाकिम, भाग 1, पृ० 61,

ज़रिए से इज़्ज़त दी है, इसलिए हम इस्लाम के अलावा किसी और चीज़ में इज़्ज़त तलाश नहीं कर सकते।[1]

हज़रत तारिक़ बिन शिहाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आपने तो ऐसा काम कर दिया है जो इस इलाक़े वालों के नज़दीक बहुत बड़ा (यानी बड़े ऐब वाला) काम है। आपने अपने मोज़े उतार दिए हैं और अपनी सवारी (से नीचे उतर कर उस) की नकेल पकड़ रखी है और बेतकल्लुफ़ घाट में घुस गए हैं।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू उबैदह रज़ियल्लाहु अन्हु के सीने पर हाथ मारकर फ़रमाया, ओहो ! ऐ अबू उबैदह ! काश, यह बात तुम्हारे अलावा कोई और कहता। तुम्हारी तायदाद लोगों में सबसे कम थी और तुम लोगों में सबसे ज़्यादा ज़लील थे। अल्लाह ने इस्लाम के ज़रिए तुम्हारी इज़्ज़त फ़रमाई, तो अब जब भी तुम इस्लाम के अलावा किसी और चीज़ में इज़्ज़त तलाश करोगे, अल्लाह तुम्हें ज़लील कर देंगे।[2]

हज़रत क़ैस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु शाम तशरीफ़ लाए, तो वह ऊंट पर सवार थे। तमाम लोग उनके इस्तिक़बाल के लिए बाहर आए। लोगों ने कहा, यहां के बड़े और नुमायां लोग आपसे मिलने आए हैं, इसलिए अच्छा यह है कि आप तुर्की घोड़े पर सवार हो जाएं।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, बिल्कुल नहीं। फिर आसमान की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया, तुम लोग इज़्ज़त यहां से यानी ज़मीन के सामान से समझते हो, हालांकि इज़्ज़त तो वहां से (अल्लाह के देने से) मिलती है। मेरे ऊंट का रास्ता छोड़ दो।[3]

---

1. हाकिम, भाग 1, पृ० 62,
2. हाकिम, भाग 2, पृ०82, हुलीया, भाग 1, पृ०47, मुतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ०400
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 47.

हज़रत अबुल ग़ालिया शाही रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बैतुल मक़्दिस के रास्ते में जाबिया शहर में पहुंचे तो वह एक ख़ाकी ऊंट पर सवार थे और उनके सर का वह हिस्सा धूप में चमक रहा था जहां से बाल उतर गए थे। उनके सर पर न टोपी थी और न पगड़ी और रकाब न होने की वजह से उनके दोनों पांव कजावे के दोनों तरफ़ हिल रहे थे।

अनजान शहर की ऊनी चादर ऊंट पर डाली हुई थी। जब ऊंट पर सवार होते तो उसे ऊंट पर डाल लेते और जब नीचे उतरते तो उसे बिछौना बना लेते और उनका थैला एक धारीदार चादर थी, जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी जब सवार होते तो उसे थैला बना लेते और जब सवारी से उतरते तो उसे तकिया बना लेते और उन्होंने धारीदार खद्दर का कुरता पहना हुआ था, जिसका एक पहलू फटा हुआ था।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मेरे पास क़ौम के सरदार को बुलाकर लाओ। लोग वहां के पादरियों के सरदार को बुलाकर लाए। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मेरे इस कुरते को सी कर धो दो और इतनी देर के लिए कोई कपड़ा या कुरता उधार दे दो। वह पादरी कत्तान कपड़े का कुरता ले आया। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, यह कौन-सा कपड़ा है? लोगों ने बताया, यह कत्तान है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा, कत्तान कपड़ा क्या होता है? लोगों ने उस कपड़े की तफ़्सील बताई। हज़रत उमर रज़ि० ने अपना कपड़ा उतार कर उसे दिया। उसने उसमें पैवन्द लगाया और धोकर ले आया। हज़रत उमर रज़ि० ने उनका जो कुरता पहन रखा था, वह उतार कर उन्हें दे दिया और अपना कुरता पहन लिया।

उस पादरी ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, आप अरबों के बादशाह हैं, हमारे इस इलाक़े में ऊंट की सवारी ठीक नहीं है (और न आपका यह कुरता ठीक है) इसलिए अगर आप किसी और अच्छे कपड़े का कुरता पहन लें और तुर्की घोड़े की सवारी करें, इससे रूमियों की

निगाह में आपकी क़द्र व मंज़िलत बढ़ जाएगी। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हम लोगों को अल्लाह ने इस्लाम के ज़रिए इज़्ज़त अता फ़रमाई है, इसलिए अल्लाह के (दीन के) अलावा किसी और का हम सोच भी नहीं सकते।

इसके बाद उनकी ख़िदमत में एक तुर्की घोड़ा लाया गया। उस पर काठी और कजावे के बग़ैर ही एक मोटी चादर डाल दी गई। वह उस पर सवार हुए। (वह घोड़ा अकड़ कर चलने लगा तो) हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, इसे रोको। (क्योंकि यह शैतान की तरह चल रहा है) इससे पहले मैंने लोगों को शैतान पर सवार होते हुए कभी नहीं देखा था, फिर उनका ऊंट लाया गया और वह घोड़े से उतर कर उसी पर सवार हो गए।[1]

ग़लबा व इज़्ज़त की हालत में भी ज़िम्मियों की रियायत करना

हज़रत अबू नहीक और हज़रत अब्दुल्लाह बिन हंज़ला रहमतुल्लाहि अलैहिमा कहते हैं, हम एक लश्कर में हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ थे। एक आदमी ने सूरः मरयम पढ़ी तो दूसरे आदमी ने हज़रत मरयम और उनके बेटे (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) को बुरा-भला कहा, (ज़ाहिर में यह आदमी यहूदी होगा) हमने उसे मार-मार कर लहूलुहान कर दिया। जिस इंसान पर ज़ुल्म होता था, वह जाकर हज़रत सलमान रज़ि० से शिकायत किया करता था।

चुनांचे उस आदमी ने भी जाकर हज़रत सलमान रज़ि० से शिकायत कर दी। इससे पहले उसने कभी उनसे कोई शिकायत नहीं की थी। हज़रत सलमान रज़ि० हमारे पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, तुमने इस आदमी को क्यों मारा है? हमने कहा, हमने सूरः मरयम पढ़ी थी। इसने हज़रत मरयम अलै० और उनके बेटे को बुरा-भला कहा।

उन्होंने कहा, तुम लोगों ने उन्हें सूरः मरयम क्यों सुनाई? क्या आप

---

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 60

लोगों ने अल्लाह का यह फ़रमान नहीं सुना ?

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ (سورت انعام آيت ۱۰۸)

'और गाली न दो उनको जिनकी ये लोग ख़ुदा को छोड़कर इबादत करते हैं, क्योंकि फिर वे जिहालत की हदों से गुज़र अल्लाह की शान में गुस्ताख़ी करेंगे।' (सूरः अनआम, आयत 108)

ऐ अरब के लोगो ! क्या आप लोगों का मज़हब सबसे ज़्यादा बुरा नहीं था ? आप लोगों का इलाक़ा सबसे ज़्यादा बुरा नहीं था ? क्या आप लोगों की ज़िंदगी सबसे ज़्यादा बुरी नहीं थी ? फिर अल्लाह ने आप लोगों को इज़्ज़त दी और आप लोगों को सब कुछ दिया, क्या आप लोग यह चाहते हो कि अल्लाह की दी हुई इज़्ज़त की वजह से लोगों की पकड़ करते रहो ? अल्लाह की क़सम ! या तो आप लोग इस काम से बाज़ आ जाओ, वरना जो कुछ आप लोगों के हाथ में है, अल्लाह उसे तुमसे लेकर दूसरों को दे देंगे।

फिर हज़रत सलमान रज़ि० हमें सिखाने लगे और फ़रमाया, मग़रिब और इशा के दर्मियान नफ़्ल पढ़ा करो, क्योंकि इन नफ़्लों में बहुत-सा क़ुरआन पढ़ लेने की वजह से तुम्हारे रोज़ के क़ुरआन पढ़ने की मुक़र्ररा मिक़्दार में कमी हो जाएगी और इस तरह रात का शुरू का हिस्सा बेकार होने से बच जाएगा, क्योंकि जिसका रात का शुरू का हिस्सा बेकार गुज़र जाएगा तो उस रात का आख़िरी हिस्सा यानी तहज्जुद का वक़्त भी बेकार गुज़रेगा।[1]

जो लोग अल्लाह के हुक्म को छोड़ दें, उनकी बुरी हालत से सबक़ हासिल करना

हज़रत जुबैर बिन नुफ़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब क़ुबरुस जज़ीरा जीत लिया गया, तो वहां के रहने वाले सारे ग़ुलाम बना लिए गए और उन्हें मुसलमानों में बांट दिया गया। वे एक दूसरे की जुदाई पर

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 201

रो रहे थे। मैंने देखा कि हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु अकेले बैठे हुए रो रहे हैं।

मैंने पूछा, ऐ अबुद्दर्दा रज़ि० ! आज जो अल्लाह ने इस्लाम और इस्लाम वालों को इज़्ज़त फ़रमाई है, तो आप क्यों रो रहे हैं? फ़रमाया, ऐ जुबैर ! तेरा भला हो, इस मख़्लूक़ ने जब अल्लाह के हुक्म को छोड़ दिया तो यह अल्लाह के यहां कितनी बे-क़ीमत हो गई। पहले तो यह ज़बरदस्त और ग़ालिब क़ौम थी और इन्हें बादशाही हासिल थी, लेकिन इन्होंने अल्लाह का हुक्म छोड़ दिया तो अब इनका वह बुरा हाल हो गया जो तुम देख रहे हो।[1]

इब्ने जरीर की रिवायत में इसके बाद यह भी है कि अब तो उनका वह बुरा हाल हो गया जो तुम देख रहे हो कि उन पर अल्लाह ने ग़ुलामी मुसल्लत कर दी और जब किसी क़ौम पर अल्लाह ग़ुलामी मुसल्लत कर दें, तो समझ लो कि अल्लाह को उनकी कोई ज़रूरत नहीं ! (क्योंकि उनकी अल्लाह के यहां कोई क़ीमत नहीं रही।)[2]

नीयत को अल्लाह के लिए ख़ालिस करना और आख़िरत को मक़्सूद बनाना

हज़रत इब्ने अबी मरयम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रे, तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, वे आमाल कौन से हैं, जिनसे इस उम्मत के सारे काम ठीक रहते हैं?

हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, तीन आमाल हैं और तीनों निजात दिलाने वाले हैं—

1. एक इख़्लास है और इख़्लास फ़ितरत का वह अमल है, जिस पर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया है, और

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 216,
2. तारीख़े इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 318,

2. दूसरा अमल नमाज़ है और वह मज़हब का अहम शोबा है। और

3. तीसरा अमल अमीर की इताअत है और इताअत ही बचाव का सामान है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, आपने ठीक कहा। जब हज़रत उमर रज़ि० वहां से आगे चले गए, तो हज़रत मुआज़ रज़ि० ने अपने पास बैठने वालों से फ़रमाया, ग़ौर से सुनो ! (ऐ उमर !) आपका ज़माना बाद वालों के ज़माने से बेहतर है, क्योंकि आपके बाद उम्मत में इख़्तिलाफ़ हो जाएगा, (और सुनो) अब यह हज़रत उमर रज़ि० भी दुनिया में थोड़ा अर्सा ही रहेंगे।[1]

हज़रत अबू अब्दहुल अंबरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब मुसलमान मदाइन फ़त्ह करके उसमें दाख़िल हुए और माले ग़नीमत जमा करने लगे, तो एक आदमी अपने साथ एक डिब्बा लाया और लाकर माले ग़नीमत जमा करने वाले ज़िम्मेदार को दे दिया। उस ज़िम्मेदार के साथियों ने कहा, इस डिब्बे जैसा क़ीमती सामान तो हमने कभी देखा नहीं, (क्योंकि उसमें बादशाह ने सबसे ज़्यादा क़ीमती हीरे-जवाहरात रखे हुए थे) और हमारे पास जितना ग़नीमत का माल आ चुका है, उस सबकी क़ीमत, उसके बराबर क्या उसके क़रीब भी नहीं हो सकती।

फिर उन लोगों ने लाने वाले से पूछा, क्या आपने इसमें से कुछ लिया है? उसने कहा, ग़ौर से सुनो, अल्लाह की क़सम ! अगर अल्लाह का डर न होता, तो मैं उसे आप लोगों के पास कभी न लाता। इस जवाब से वे लोग समझ गए कि यह आदमी बड़ी शान वाला है। उन्होंने पूछा, आप कौन हैं?

फ़रमाया, नहीं, अल्लाह की क़सम ! नहीं, अपने बारे में मैं न तो आप लोगों को बताऊंगा, क्योंकि आप लोग मेरी तारीफ़ करने लग जाएंगे और न किसी और को बताऊंगा, क्योंकि फिर लोग मेरी सच्ची-झूठी

1. कंज़, भाग 8, पृ० 226

तारीफ़ करने लग जाएंगे, बल्कि मैं तो अल्लाह की तारीफ़ बयान करता हूं और उसके सवाब पर मैं राज़ी हूं।

(फिर वह आदमी चला गया) तो उन लोगों ने एक आदमी उसके पीछे भेजा, वह आदमी (उसके पीछे चलते-चलते) उसके साथियों के पास पहुंच गया। फिर उसने उसके साथियों से उसके बारे में पूछा, तो वह हज़रत आमिर बिन अब्दे क़ैस रहमतुल्लाहि अलैहि निकले।[1]

हज़रत मुहम्मद, हज़रत तलहा और हज़रत मुहल्लब वग़ैरह हज़रात कहते हैं (क़ादसिया की लड़ाई के मौक़े पर) हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! यह लश्कर बड़ा अमानतदार है। अगर बद्र वालों को पहले फ़ज़ीलत न मिली होती, तो अल्लाह की क़सम ! मैं कहता, इस लश्कर की भी बद्र वालों जैसी फ़ज़ीलत है। बहुत-सी क़ौमों को मैंने बड़े ग़ौर से देखा, उनमें ग़नीमत का माल जमा करने के बारे में बहुत-सी कमज़ोरियां नज़र आईं, लेकिन मेरे ख़्याल में इस लश्कर वालों में ऐसी कोई कमज़ोरी नहीं और न मैंने उनकी किसी कमज़ोरी के बारे में किसी से कुछ सुना है।[2]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, उस अल्लाह की क़सम, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, क़ादसिया वालों में से किसी के बारे में हमें यह इत्तिला नहीं मिली कि वह आख़िरत के साथ-साथ दुनिया भी चाहता हो, अलबत्ता हमें (हज़ारों के लश्कर में से सिर्फ़ तीन आदमियों के बारे में) शुबहा हुआ (कि शायद ये दुनिया भी चाहते हों) लेकिन जांच-पड़ताल के बाद वे भी अमानतदार और बड़े ज़ाह्दि निकले। वे तीन हज़रात ये हैं—

1. हज़रत तुलैहा बिन ख़ुवैलद, 2. हज़रत अम्र बिन मादीकर्ब और 3. हज़रत क़ैस बिन मकशूह रज़ियल्लाहु अन्हुम।[3]

---

1. तारीख़े इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 128,
2. तारीख़े इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 128,
3. तारीख़े इबने जरीर, भाग 3, पृ० 128,

हज़रत क़ैस इजली रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास किसरा की तलवार, कमर की पेटी और ज़ेब व ज़ीनत का सामान लाया गया, तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, जिन लोगों ने यह सारा का सारा माले ग़नीमत यहां पहुंचा दिया है, वे वाक़ई बड़े अमानतदार हैं।

इस पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, चूंकि आप ख़ुद पाकदामन हैं, इसलिए रियाया भी पाकदामन हो गई।[1]

अल्लाह से क़ुरआन मजीद और अज़्कार के ज़रिए मदद चाहना

हज़रत ज़ैद बिन अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा कि मिस्र जीते जाने में देर लग रही है, तो उन्होंने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को यह ख़त लिखा—

'अम्मा बादु, मुझे इस बात पर बहुत ताज्जुब है कि मिस्र के जीतने में आप लोगों को देर लग रही है। आप उनसे कई सालों से लड़ रहे हैं और इसकी वजह सिर्फ़ यह है कि आप लोगों ने नए-नए काम शुरू कर दिए हैं और जैसे आप लोगों के दुश्मन को दुनिया से मुहब्बत है, ऐसे ही आप लोगों के दिलों में भी दुनिया की मुहब्बत आ गई है और अल्लाह लोगों की मदद सिर्फ़ उनकी सच्ची नीयत की वजह से करते हैं और मैंने आपके पास चार आदमी भेजे हैं और आपको बता रहा हूं कि मेरे इल्म के मुताबिक़ इनमें से हर आदमी हज़ार आदमियों के बराबर है। हां, दुनिया की मुहब्बत, जिसने दूसरों को बदला है, वह उनको भी बदल दे, तो और बात है।

जब मेरा यह ख़त आपको मिले तो आप लोगों में बयान करें और उनसे दुश्मन से लड़ने के लिए उभारें और उनको सब्र की और नीयत

1. तारीख़े इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 128,

ख़ालिस करने की तर्ग़ीब दें और इन चारों को सब लोगों से आगे रखें और लोगों से कहें कि वे सब इकट्ठे मिलकर एकदम दुश्मन पर हमला करें और यह हमला जुमा के दिन ज़वाल के वक़्त करें, क्योंकि यह ऐसी घड़ी है जिसमें रहमत नाज़िल होती है और दुआ क़ुबूल होती है और सब अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाएं और उससे अपने दुश्मन के ख़िलाफ़ मदद मांगें।'

जब यह ख़त हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पहुंचा तो हज़रत अम्र रज़ि० ने लोगों को जमा करके यह ख़त सुनाया, फिर उन चार आदमियों को बुलाकर लोगों के आगे किया और फिर लोगों से कहा कि वुज़ू करके दो रक्अत नमाज़ पढ़ें और फिर अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह होकर उससे मदद मांगें।

चुनांचे ऐसा करने से अल्लाह ने उनके लिए मिस्र जिता दिया।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र और अय्याश बिन अब्बास वग़ैरह हज़रात कुछ कमी-बेशी के साथ रिवायत करते हैं कि जब हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को मिस्र पर जीत पाने में देर लगी तो उन्होंने मदद तलब करने के लिए हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त लिखा।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी मदद के लिए चार हज़ार आदमी भेजे और हर हज़ार पर एक आदमी को अमीर बनाया और उनको हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने यह ख़त लिखा कि मैं आपकी मदद के लिए चार हज़ार आदमी भेज रहा हूं। हर हज़ार पर एक ऐसा अमीर मुक़र्रर किया है जो हज़ार के बराबर हैं। वे चार हज़रात ये हैं—

1. हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि०, 2. हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद बिन अम्र रज़ि०, 3. हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० और 4. हज़रत मस्लमा बिन मख़ल्लद रज़ि०।

और आपको मालूम होना चाहिए कि आपके साथ बारह हज़ार

1. इब्ने अब्दुल हकम

आदमी हैं और बारह हज़ार का लश्कर तायदाद की कमी की वजह से मग़लूब नहीं हो सकता। (किसी गुनाह की वजह से हो सकता है।)[1]

हज़रत अयाज़ अशअरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं यरमूक की लड़ाई में शरीक था। उस लड़ाई में मुसलमानों के लश्कर के पांच अमीर थे—

1. हज़रत अबू उबैदह रज़ि०, 2. हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान, 3. हज़रत शुरहबील बिन हसना रज़ि०, 4. हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० और 5. हज़रत अयाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु। यह हज़रत अयाज़ दूसरे साहब हैं, इस हदीस को रिवायत करने वाले नहीं हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, जब लड़ाई हो, तो आप लोगों के अमीर हज़रत अबू उबैदह रज़ि० हुआ करेंगे।

फिर हमने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मदद तलब करने के लिए ख़त में यह लिखा कि मौत बड़े जोश व ख़रोश से हमारी तरफ़ बढ़ रही है। उन्होंने हमें जवाब में यह लिखा कि मदद तलब करने के लिए आप लोगों का ख़त मेरे पास आया। मैं आप लोगों को ऐसी ज़ात बताता हूं जिसकी मदद बड़ी ज़ोरदार है और जिसका लश्कर हर जगह मौजूद है और वह अल्लाह की ज़ात है, इसलिए उसी से मदद मांगो, क्योंकि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बद्र की लड़ाई में मदद हुई, हालांकि उनकी तायदाद तुमसे कम थी।[2]

अहमद की रिवायत में यह भी है कि जब आप लोगों को मेरा यह ख़त मिले तो आप लोग इनसे लड़ाई करें और मुझसे दोबारा मदद न तलब करें।

रिवायत करने वाले कहते हैं, हमने उनसे लड़ाई लड़ी और उन्हें ख़ूब क़त्ल किया और उन्हें चार फ़रसख़ यानी बारह मील तक हराया और हमें बहुत-सा ग़नीमत का माल मिला। फिर हमने मश्विरा किया, तो

1. कंज़, भाग 3, पृ० 151,
2. कंज़, भाग 3, पृ० 145,

हज़रत अयाज़ रज़ि० ने हमें यह मश्विरा दिया कि हर मुसलमान के छुड़वाने के बदले दस काफ़िर दे दें।

रिवायत करने वाले कहते हैं, हज़रत अबू उबैदह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, घोड़े दौड़ाने में कौन मुझसे बाज़ी लगाता है? इस पर एक नवजवान ने कहा, अगर आप ख़फ़ा न हो, तो मैं। चुनांचे यह नवजवान दौड़ में हज़रत अबू उबैदह रज़ि० से आगे निकल गया। मैंने देखा कि हजरत अबू उबैदह रज़ि० बग़ैर ज़ीन के घोड़े पर सवार हैं और उस नवजवान के पीछे दौड़ रहे हैं और उनके बालों की दोनों मेंढियां ज़ोर-ज़ोर से हिल रही हैं।[1]

हज़रत मुहम्मद, हज़रत तलहा और हज़रत ज़ियाद रहमतुल्लाहि अलैहिम अपनी-अपनी सनद से बयान करते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक नवजवान हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मुस्तक़िल लगा रखा था जो कि क़ारियों में से था।

जब हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ज़ुहर की नमाज़ पढ़ा चुके तो उस नवजवान को हुक्म दिया कि वह सूरः जिहाद यानी सूरः अंफ़ाल पढ़े और तमाम मुसलमान यह सूरः सीखे हुए थे।

चुनांचे लश्कर का जो हिस्सा क़रीब था, उस नवजवान ने उसके साथ वह सूरः जिहाद पढ़ी, फिर वह सूरः लश्कर के हर दस्ते में पढ़ी गई, जिससे तमाम लोगों के दिलों में ज़ौक़-शौक़ बढ़ गया और सबने उसके पढ़ते ही सुकून महसूस किया।[2]

हज़रत मसऊद बिन ख़राश की रिवायत में यह है कि लोग सूरः जिहाद सीखे हुए थे, इसलिए हज़रत साद रज़ि० ने लोगों को हुक्म दिया कि वे एक दूसरे के सामने सूरः जिहाद पढ़ें।[3]

हज़रत इब्राहीम बिन हारिस तीमी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, हुज़ूर

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 213, तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 1, पृ० 400
2. तारीख़े इब्ने ज़रीर, भाग 3, पृ० 47,
3. तारीख़े इब्ने जरीर

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें एक लश्कर में भेजा और हमें हुक्म दिया कि हम सुबह और शाम—

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا (سورت مؤمنین آیت۱۱۵)

'अ-फ़-हसिब्तुम अन्नमा ख़लक़्ना कुम अब्सा०'

(सूरः मोमिनून, आयत 15)

पढ़ा करें। चुनांचे हम यह आयत पढ़ते रहे, जिससे हम ख़ुद सही सालिम रहे और हमें ग़नीमत का माल भी मिला।[1]

हज़रत मुहम्मद, हज़रत तलहा और हज़रत ज़ियाद रहमतुल्लाहि अलैहिम अपनी-अपनी सनद से यह बयान करते हैं कि हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, आप सब लोग अपनी जगह ठहरे रहें और ज़ोहर की नमाज़ पढ़ने तक कुछ हरकत न करें। आप पढ़ लेंगे, तो मैं ज़ोर से अल्लाहु अक्बर कहूंगा। उस वक़्त आप लोग भी अल्लाहु अक्बर कहें और तैयारी शुरू कर दें और आप लोगों को मालूम होना चाहिए कि ज़ोर से अल्लाहु अक्बर कहना आप लोगों से पहले किसी को नहीं दिया गया और यह आप लोगों को मज़बूत और ताक़तवर बनाने के लिए दिया गया है।

फिर जब आप लोग दूसरी बार अल्लाहु अक्बर सुनें, तो आप लोग भी अल्लाहु अक्बर कहें और अपनी तैयारी मुकम्मल कर लें। फिर जब मैं तीसरी बार अल्लाहु अक्बर कहूं तो आप लोग भी अल्लाहु अक्बर कहें और आप लोगों में जो घोड़े सवार हैं, वे लड़ाई के मैदान में उतरने और दुश्मन पर हमला करने के लिए पैदल साथियों का हौसला बढ़ाएं, फिर जब मैं चौथी बार अल्लाहु अक्बर कहूं, तो आप सब लोग इकट्ठे चल पड़ें और दुश्मन में घुस जाएं और—

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ پڑھتے رہیں

'ला हौ-ल व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहि' पढ़ते रहें।[2]

1. कंज़, भाग 2, पृ० 327, इसाबा, भाग 1, पृ० 15
2. तारीख़े इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 47

हज़रत मुहम्मद, हज़रत तलहा और हज़रत ज़ियाद रहमतुल्लाहि अलैहिम अपनी-अपनी सनद से बयान करते हैं कि जब क़ारी लोग जिहाद की आयतों की तिलावत से फ़ारिग़ हो गए तो हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने ज़ोर से अल्लाहु अक्बर कहा। इस तरह एक दूसरे से सुनकर सारे लोगों ने अल्लाहु अक्बर कहा। इससे लोगों में हमले की तैयारी की हरकत शुरू हो गई।

फिर हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने दोबारा अल्लाहु अक्बर कहा तो लोगों ने तैयारी मुकम्मल कर ली। फिर उन्होंने तीसरी बार अल्लाहु अक्बर कहा तो लश्कर के बहादुर जवान आगे बढ़े और उन्होंने घमासान की लड़ाई शुरू कर दी। आगे और भी हदीस ज़िक्र की है।[1]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक बाल के ज़रिए मदद तलब करना

हज़रत जाफ़र बिन अब्दुल्लाह बिन हकम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यर्मूक की लड़ाई के दिन अपनी एक टोपी न पाई तो साथियों से फ़रमाया, उसे तलाश करो। उन्होंने तलाश किया तो उन्हें न मिली, फ़रमाया, और तलाश करो। और तलाश किया तो मिल गई। लोगों ने देखा तो वह बिल्कुल पुरानी टोपी थी।

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उमरा किया, फिर बाल मुंडवाए। लोग आपके बालों पर झपट पड़े। मैंने भी आगे बढ़कर आपकी पेशानी के बाल उठा लिए और इस टोपी में रख लिए। जब मैं किसी लड़ाई में शरीक होता हूं और यह टोपी मेरे पास होती है तो मुझे अल्लाह की ग़ैबी मदद ज़रूर मिलती है।[2]

हज़रत जाफ़र रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत ख़ालिद बिन

1. तारीख़े इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 47
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 349, हाकिम, भाग 3, पृ० 299, दलाइल, पृ० 159

वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु की टोपी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ मुबारक बाल रखे हुए थे। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जब भी मेरा किसी लश्कर से मुक़ाबला होता है और यह टोपी मेरे सर पर होती है, तो मुझे जीत ज़रूर मिलती है।[1]

फ़ज़ीलत वाले आमाल में एक दूसरे से आगे बढ़ने का शौक़

हज़रत शक़ीक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हमने दिन के शुरू में क़ादसिया की लड़ाई में लड़ाई शुरू की। जब हम वापस आए तो नमाज़ का वक़्त हो चुका था और मुअज़्ज़िन साहब घायल हो चुके थे, इसलिए हर मुसलमान चाहने लगा कि अज़ान की सआदत उसे ही नसीब हो, और इतना तक़ाज़ा बढ़ा कि क़रीब था कि आपस में तलवारों से लड़ पड़ें। आख़िर हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनमें अज़ान के लिए क़ुरआअंदाज़ी की और एक आदमी का नाम क़ुरआ में निकला और उसने अज़ान दी।[2]

दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत को बे-क़ीमत समझना

हज़रत माक़िल बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत नोमान बिन मुक़र्रिन रज़ियल्लाहु अन्हु की इमारत (सरदारी) में अस्फ़हान के जीतने के बारे में लम्बी हदीस ज़िक्र करते हैं। उसमें यह भी है कि हज़रत नोमान रज़ि० लश्कर लेकर अस्फ़हान के क़रीब पहुंचे तो उनके और अस्फ़हान के दर्मियान दरिया था। हज़रत नोमान रज़ि० ने हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु को क़ासिद बनाकर अस्फ़हान भेजना चाहा।

उन दिनों अस्फ़हान में ज़ुल हाजिबैन बादशाह था। उसने आने वाले सहाबी को मरऊब करने के लिए अपने साथियों से मश्विरा किया कि क्या मैं अपना दरबार फ़ौजी अंदाज़ से सजा कर बैठूं या शाहाना शान

1. कंज़, भाग 7, पृ० 31
2. तारीख़ इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 70

व शौकत से सजाऊं। उसके साथियों ने शाहाना शान व शौकत का मश्विरा दिया।

चुनांचे उसने शाही तरीक़े से अपना दरबार सजाया, ख़ुद शाही तख़्त पर बैठा और सर पर शाही ताज रखा और दरबारी उसके गिर्द दो सफ़ें बनाकर खड़े हो गए। उन लोगों ने दीबाज के रेशमी कपड़े पहन रखे थे। उनके कानों में बालियां और हाथों में कंगन थे।

हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु दरबार में आए। वह सर झुकाए तेज़ी से चल रहे थे। उनके हाथ में नेज़ा और ढाल थी और लोग दो सफ़ें बनाए बादशाह के गिर्द क़ालीन पर खड़े थे। हज़रत मुग़ीरह रज़ि० नेज़े पर टेक लेकर चल रहे थे, जिससे वह क़ालीन फट गया। ऐसा उन्होंने जान-बूझकर किया, ताकि यह उन लोगों के लिए बद-फ़ाली हो।

ज़ुल हाजिबैन ने उनसे कहा, ऐ अरब के लोगो! तुम लोग सख़्त फ़ाक़े और मशक़्क़त में मुब्तला हो, इसलिए अपने मुल्क से निकलकर हमारे यहां आ गए हो। अगर तुम चाहो तो हम तुम्हें ग़ल्ला दे देते हैं, उसे लेकर तुम अपने मुल्क वापस चले जाओ।

फिर हज़रत मुग़ीरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने बात-चीत शुरू फ़रमाई, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, हम अरब लोग वाक़ई बहुत बुरे थे, मुरदार जानवर खाया करते थे और बड़े कमज़ोर थे, तमाम लोगों का हम पर ज़ोर चलता था, हमारा किसी पर नहीं चलता था। फिर अल्लाह ने हम में एक रसूल भेजा जो हमारे शरीफ़ ख़ानदान का था, जिसका हसब हम में सबसे ऊंचा था, जिसकी बात सबसे ज़्यादा सच्ची थी।

उन्होंने हमसे वायदा किया था कि यह जगह जीती जाकर हमें मिलेगी और अब तक हम उनके तमाम वायदों को सच्चा पा चुके हैं और मैं यहां बड़े शानदार कपड़े और क़ीमती सामान देख रहा हूं। मुझे यक़ीन है कि मेरे साथी इन्हें लिए बग़ैर यहां से नहीं जाएंगे। आगे और भी हदीस है।[1]

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 293, हैसमी, भाग 6, पृ० 217

हज़रत मुहम्मद, हज़रत तलहा, हज़रत अम्र, और हज़रत ज़ियाद रहमतुल्लाहि अलैहिम अपनी-अपनी सनद से रिवायत करते हैं कि हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने आदमी भेजकर हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु और सहाबा की एक जमाअत को बुलाया और फ़रमाया, मैं आप लोगों को इन लोगों (रुस्तम वग़ैरह) के पास भेजना चाहता हूं, इस बारे में आप लोगों की क्या राय है?

इन सब लोगों ने कहा, आप जो हुक्म फ़रमाएंगे, हम ताबेदार हैं और उस पर पक्के रहेंगे (यानी हम जाने के लिए तैयार हैं) और वहां जाकर जब कोई ऐसा मसला पेश होगा, जिसमें आपकी तरफ़ से कोई फ़ैसला नहीं हुआ होगा तो हम उस चीज़ के बारे में ग़ौर करेंगे जो ज़्यादा मुनासिब और लोगों के लिए ज़्यादा मुफ़ीद है और जो समझ में आएगा, वह हम उन लोगों को बताएंगे।

हज़रत साद रज़ि० ने फ़रमाया, अक़्लमंद तजुर्बेकार लोग ऐसे ही किया करते हैं। अब आप लोग जाएं और जाने की तैयारी करें। हज़रत रिबई बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, अजमी लोगों के अपने तौर-तरीक़े और आदाब हैं। जब हम सब इनके पास जाएंगे, तो वे समझेंगे कि हमने उनका बड़ा एहतिमाम किया, इसलिए आप उनके पास एक से ज़्यादा आदमी न भेजें।

बाक़ी तमाम लोगों ने भी इस बात में हज़रत रिबई की ताईद की। इसके बाद हज़रत रिबई रज़ि० ने कहा, आप सब मुझे भेज दें। इस पर हज़रत साद रज़ि० ने उन्हें भेजने का फ़ैसला कर दिया। चुनांचे हज़रत रिबई रज़ि० रुस्तम के लश्कर गाह में उससे मिलने के लिए रवाना हुए। पुल पर जो सिपाही मुक़र्रर थे, उन्होंने हज़रत रिबई रज़ि० को रोक लिया और उनके आने की ख़बर के लिए आदमी रुस्तम के पास भेजा।

रुस्तम ने फ़ारस के बड़े सरदारों से मश्विरा किया और यह सवाल किया कि हम क्या सिर्फ़ अपनी तायदाद के ज़्यादा होने पर फ़ख़्र करें या शाही और क़ीमती सामान दिखाकर अरबों का बेहैसियत होना ज़ाहिर

करें और इस तरह उन्हें मरऊब करें। सबका इसी पर इत्तिफ़ाक़ हुआ कि शाही और क़ीमती सामान का मुज़ाहरा किया जाए।

चुनांचे ख़ज़ाने से निकालकर उन्होंने ज़ेब व ज़ीनत का सारा सामान सजा डाला और हर तरफ़ क़ीमती गद्दे, बिछौने और क़ालीन बिछा दिए और ख़ज़ाने में कोई चीज़ न रहने दी। रुस्तम के लिए सोने का तख़्त रखा गया। उसे क़ीमती से क़ीमती शानदार कपड़े पहनाए गए और क़ीमती क़ालीन बिछाए गए और ऐसे तकिए रखे गए जो सोने के तारों से बने हुए थे।

(हज़रत रिबई रज़ि० को पुल के सिपाहियों ने आगे जाने की इजाज़त दे दी, तो) हज़रत रिबई रज़ि० अपने घोड़े पर चल पड़े। घोड़े के बाल ज़्यादा और क़द छोटा था। उनके पास एक चमकदार तलवार थी और उसे पुराने कपड़े में लपेटा हुआ था और उनके नेज़े पर चमड़े के तस्मे बंधे हुए थे और उनके पास गाय की खाल की बनी हुई ढाल थी, जिस पर रोटी के मानिंद गोल लाल चमड़ा लगा हुआ था और उनके साथ उनकी कमान और तीर भी थे।

जब उस शाही दरबार के क़रीब पहुंचे और सबसे पहला बिछा हुआ क़ालीन आ गया तो उन लोगों ने उनसे कहा कि नीचे उतर आएं, लेकिन यह अपने घोड़े को उस क़ालीन पर ले गए। जब वह पूरी तरह क़ालीन पर चढ़ गया, जब यह उससे नीचे उतरे और फिर दो तकियों को लेकर उन्हें झाड़ा और घोड़े के लगाम की रस्सी उसमें से गुज़ार कर घोड़े को उससे बांध दिया। वे लोग उन्हें ऐसा करने से न रोक सके।

हज़रत रिबई रज़ि० देखते ही समझ गए थे कि ये लोग अपना शाही ठाट-बाट दिखाकर हमें मरऊब करना चाहते हैं। इसलिए उन्होंने यह काम जान-बूझकर किया ताकि उन लोगों को पता चले कि उन्होंने इस सब कुछ से असर न लिया और उन्होंने ज़िरह पहनी हुई थी, जो हौज़ की तरह लम्बी-चौड़ी थी और ऊंट के गद्दे में से बीच में से काट कर क़िबा के तौर पर उसे पहन रखा था और सन की रस्सी से उसे बीच से बांध

रखा था और यह अरबों में सबसे ज़्यादा बालों वाले थे।

उन्होंने ऊंट की चमड़ी वाले लगाम से अपने बालों को बांधा हुआ था और उनके सर के बालों की चार मेंढियां थीं, जो पहाड़ी बकरों के सींगों की तरह खड़ी हुई थीं। उन लोगों ने कहा, आप अपने हथियार उतार कर यहां रख दें। उन्होंने कहा, मैं आप लोगों के पास ख़ुद नहीं आया हूं जो मैं आप लोगों के कहने पर अपने हथियार उतार दूं। आप लोगों ने मुझे बुलाया है, जैसे मैं चाहता हूं, वैसे मुझे आने देते हैं, फिर तो ठीक है, वरना मैं वापस चला जाता हूं।

उन लोगों ने रुस्तम को बताया। रुस्तम ने कहा, उसे ऐसे ही आने दो। वह एक ही तो आदमी है। उनके नेज़े के आगे नोकदार तेज़ फल लगा हुआ था। वह छोटे-छोटे क़दम रखकर उसे नेज़े पर टेक लगाकर चलने लगे और वह यों क़ालीनों और बिछौनों में छेद करते जा रहे थे और इस तरह उन्होंने उनके तमाम क़ालीन फाड़ दिए और ख़राब कर दिए।

जब यह रुस्तम के क़रीब पहुंचे तो पहरेदारों ने उन्हें घेरे में ले लिया और यह बिछौने में नेज़ा गाड़ कर ख़ुद ज़मीन पर बैठ गए। उन लोगों ने कहा, आपने ऐसा क्यों किया? फ़रमाया, हम तुम्हारी ज़ीनत के इस सामान पर बैठना नहीं चाहते। फिर रुस्तम ने उनसे बात शुरू की और कहा, आप लोग अरब देश से क्यों आए हैं?

फ़रमाया, अल्लाह ने हमें भेजा है और वही हमें यहां लेकर आया है, ताकि हम जिसे वह चाहे, उसे बन्दों की इबादत से निकाल कर अल्लाह की इबादत की तरफ़ और दुनिया की तंगी से निकाल कर दुनिया की वुसअत की तरफ़ और ज़ुल्म वाले दीनों से निकाल कर अद्ल वाले दीने इस्लाम की तरफ़ ले आएं। इसके बाद आगे वैसे हदीस ज़िक्र की है जैसे हज़रत उमर रज़ि० की ख़िलाफ़त के ज़माने में सहाबा रज़ि० के दावत देने के बाब में गुज़र चुकी है।

आगे हदीस में यह है कि रुस्तम ने अपनी क़ौम के सरदारों से कहा,

तुम्हारा नास हो, कपड़ों को मत देखो, समझदारी, बात-चीत और सीरत को देखो। अरब के लोग कपड़े और खाने का ख़ास एहतिमाम नहीं करते, हां, ख़ानदानी सिफ़तों की बड़ी हिफ़ाज़त करते हैं।

इस हदीस में यह भी है कि फिर वे लोग हज़रत रिबई रज़ि० के हथियारों पर एतराज़ करने लगे और उनके हथियारों को मामूली और घटिया बताने लगे, इस पर उन्होंने उनसे कहा, तुम अपनी जंगी महारत मुझे दिखाओ, मैं अपनी तुम्हें दिखाता हूं। यह कहकर चीथड़े में से अपनी तलवार बाहर निकाली तो वह आग के शोले की तरह चमक रही थी। उन लोगों ने कहा, बस करें और इसे नियाम में रख लें, चुनांचे उन्होंने उसे नियाम में रख लिया।

फिर हज़रत रिबई रज़ि० ने उनकी ढाल पर तीर मारा, तो वह फट गई और उन लोगों ने उनकी ढाल पर तीर मारा, तो वह न फटी, बल्कि सही-सालिम रही। फिर फ़रमाया, ऐ फ़ारस वालो! तुम लोगों ने खाने-पीने और लिबास को बड़ा काम बना रखा है, हम इन्हें छोटे काम समझते हैं। फिर हज़रत रिबई रज़ि० उन्हें ग़ौर करने के लिए (तीन दिन की) मोहलत देकर वापस चले गए।

अगले दिन रुस्तम ने पैग़ाम भेजा कि उसी आदमी को फिर भेज दें। इस पर हज़रत साद रज़ि० ने हज़रत हुज़ैफ़ा बिन मिह्सन रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा। वह भी हज़रत रिबई रज़ि० की तरह मामूली कपड़ों में और सीधी-सादी हालत में चले। जब पहले क़ालीन के पास पहुंचे, तो वहां वालों ने कहा, अब आप सवारी से नीचे उतर जाएं।

उन्होंने फ़रमाया, मैं तब उतरता, अगर मैं अपनी ज़रूरत के लिए आता। तुम जाकर अपने बादशाह से पूछो कि मैं उसकी ज़रूरत की वजह से आया हूं या अपनी ज़रूरत की वजह से? अगर वह कहे, मैं अपनी ज़रूरत की वजह से आया हूं तो बिल्कुल ग़लत कहता है और मैं तुम्हें छोड़कर वापस चला जाऊंगा और अगर यह कहे मैं उसकी ज़रूरत से आया हूं तो फिर तुम लोगों के पास वैसे आऊंगा जैसे मैं चाहूंगा।

इस पर रुस्तम ने कहा, उसे अपने हाल पर छोड़ दो जैसे आता है, आने दो। चुनांचे हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० वहां से आगे चले और रुस्तम के पास जाकर खड़े हो गए। रुस्तम अपने तख़्त पर बैठा हुआ था। उसने कहा, नीचे उतर जाएं। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने कहा, मैं नहीं उतरूंगा। जब उन्होंने उतरने से इंकार कर दिया, तो रुस्तम ने उनसे पूछा कि क्या बात है, आज आप आए हैं, हमारे कल वाले साथी नहीं आए?

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, हमारे अमीर सख़्ती-नर्मी हर हाल में हमारे दर्मियान बराबरी करना चाहते हैं। कल वह आए थे, आज मेरी बारी है। रुस्तम ने कहा, आप लोग क्यों आए हैं?

फ़रमाया, अल्लाह ने हमें अपना दीन अता फ़रमा कर हम पर बड़ा एहसान फ़रमाया, हमें अपनी निशानियां दिखाईं, यहां तक कि हमने उसे पहचान लिया, हालांकि हम इससे पहले उसे बिल्कुल नहीं जानते थे। फिर अल्लाह ने हमें हुक्म दिया कि हम तमाम लोगों को तीन बातों में से एक बात की दावत दें। इन बातों में से जिसे भी वह मान लेंगे, उसे हम क़ुबूल कर लेंगे—

पहली बात यह है कि इस्लाम ले आओ। अगर इस्लाम ले आओगे तो हम तुम्हें छोड़कर वापस चले जाएंगे।

दूसरी बात यह है कि अगर इस्लाम नहीं लाते तो फिर जिज़्या अदा करो। अगर जिज़्या अदा करोगे और तुम्हें ज़रूरत पड़ी तो हम तुम्हारी दुश्मन से हिफ़ाज़त करेंगे।

तीसरी बात यह है कि ये दोनों बातें मंज़ूर न हों, तो फिर लड़ाई और मुक़ाबला।

रुस्तम ने कहा, क्या कुछ दिनों तक के लिए समझौता हो सकता है? फ़रमाया, हां, तीन दिन तक के लिए हो सकता है, लेकिन वे तीन दिन गुज़रे कल से गिने जाएंगे। जब रुस्तम ने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० से भी वही जवाब पाया, जो हज़रत रिबई रज़ि० से सुना था, तो उसने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० को वापस कर दिया और अपने साथियों की तरफ़ मुतवज्जह होकर

कहने लगा, तुम्हें मेरी राय समझ में क्यों नहीं आ रही है?

कल हमारे पास पहला आदमी आया, वह हम पर ग़ालिब आ गया और हमारे क़ालीन पर न बैठा, (बल्कि हमारे इन्तिज़ामों को छोड़कर) हमारी ज़मीन पर बैठ गया और उसने हमारा घोड़ा हमारी ज़ीनत के सामान के ऊपर खड़ा किया और हमने ज़ीनत के लिए जो तकिए रखे थे उनके साथ अपना घोड़ा बांध दिया। उसे अच्छी फ़ाल लेने का मौक़ा मिल गया, क्योंकि वह हमारी ज़मीन को भी अपने साथियों के पास ले गया और ज़मीन में जो कुछ था, उसे भी ले गया। इन तमाम बातों के बावजूद वह अक़्लमंद भी बहुत था।

आज यह दूसरा आदमी हमारे पास आया तो यह आकर हमारे सर पर खड़ा हो गया। यह भी अच्छी फ़ाल लेकर गया है। यह तो हमें निकाल कर हमारी ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लेगा। (रुस्तम के साथियों ने रुस्तम की बातों का सख़्त जवाब दिया) और उनमें बातचीत इतनी बढ़ी कि रुस्तम को भी ग़ुस्सा आ गया। और उसके साथियों को भी आ गया।

अगले दिन रुस्तम ने पैग़ाम भेजा कि हमारे पास एक आदमी भेजो। चुनांचे मुसलमानों ने हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ि० को भेजा।[1]

हज़रत अबू उस्मान नह्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत मुग़ीरह रज़ियल्लाहु अन्हु पुल पर पहुंचे और पुल पार करके फ़ारस वालों के पास जाना चाहा तो उन्हें पहरेदारों ने रोका और रुस्तम से उनके बारे में इजाज़त तलब की और उन्होंने सहाबा किराम रज़ि० को मरऊब करने के लिए जो शाही इन्तिज़ाम कर रखे थे, वे सारे उसी तरह थे, उन्होंने कोई तब्दीली नहीं की थी। उन लोगों ने ताज और क़ीमती कपड़े जो कि सोने के तारों से बुने हुए थे, पहने हुए थे और तीर फेंकने से तीर जितनी दूर जाता है, उतनी दूर तक क़ालीन बिछाए हुए थे, उन पर चलकर ही आदमी उनके बादशाह तक पहुंच सकता था।

1. तारीख़े इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 33,

बरहाल रुस्तम के इजाज़त देने पर हज़रत मुग़ीरह रज़ि० वहां से आगे चले। उनके सर के बालों की चार मेंढियां बनी हुई थीं। वे चलते-चलते जाकर रुस्तम के साथ उसके तख़्त पर गद्दे पर बैठ गए। इस पर वे सब लोग हज़रत मुग़ीरह रज़ि० पर झपटे और बड़बड़ाए और झिंझोड़ कर उन्हें तख़्त से नीचे उतार दिया।

हज़रत मुग़ीरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हमें तो यह ख़बर पहुंची थी कि आप लोग बड़े समझदार हैं, लेकिन मैंने आप लोगों से ज़्यादा बेवक़ूफ़ क़ौम कोई नहीं देखी। हम तमाम अरब लोग आपस में बराबर हैं। हममें से कोई किसी को अपना ग़ुलाम नहीं बनाता, हां, किसी से लड़ाई हो तो फिर और बात है। मेरा ख़्याल है कि आप लोग भी आपस में हमारी तरह कहते होंगे और आप लोगों ने जो कुछ किया, उससे अच्छा तो यह था कि मुझे पहले ही बता देते कि आप लोग आपस में बराबर नहीं, बल्कि एक दूसरे के रब हैं।

अगर रुस्तम के साथ बैठना आप लोगों के ख़्याल में ठीक नहीं है, आगे हम ऐसा नहीं करेंगे। आप लोगों के पास मैं ख़ुद नहीं आया हूं। आप लोगों ने मुझे बुलाया तो मैं आया हूं। आज मुझे पता चला है कि तुम्हारा निज़ाम ढीला पड़ चुका है और तुम लोग मग़लूब होने वाले हो और इस तौर-तरीक़े पर और इस समझ पर मुल्क बाक़ी नहीं रह सकता।

ये बातें सुनकर आम लोग कहने लगे, अल्लाह की क़सम ! यह अरबी बिल्कुल ठीक कह रहा है। इनके चौधरी कहने लगे, अल्लाह की क़सम, इसने तो ऐसी बात कही है कि हमारे ग़ुलाम हमें हमेशा इसकी तरफ़ खींचते रहेंगे। अल्लाह हमारे पहलों को ग़ारत करे। किस क़दर मूरख थे कि इन अरबों की बात को मामूली समझते रहे। (आज ये इतने ज़ोरों पर आ गए हैं। इन्हें चाहिए था कि इन अरबों को शुरू में ही कुचल देते।)

इसके बाद रिवायत करने वाले ने बाक़ी हदीस ज़िक्र की है, जिसमें रुस्तम के सवालों का और हज़रत मुग़ीरह रज़ि० के जवाबों का ज़िक्र है।[1]

---

1. इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 36,

दुश्मन की तायदाद और उनके सामान के ज़्यादा होने की तरफ़ तवज्जोह न करना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं मूता की लड़ाई में शरीक हुआ। जब मुश्रिक हमारे क़रीब पहुंचे, तो हमें बहुत ज़्यादा सामान, हथियार, घोड़े, रेशमी कपड़े, और सोना नज़र आया और यह सब कुछ इतना ज़्यादा था कि उसका मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता था। उसे तो देखकर मेरी आंखें चुंधिया गईं। मुझ पर यों असर होता हुआ देखकर हज़रत साबित बिन अकरम रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया—

ऐ अबू हुरैरह रज़ि० ! ऐसे नज़र आ रहा है कि तुम बहुत ज़्यादा लश्कर देख रहे हो ? मैंने कहा, जी हां। उन्होंने फ़रमाया, तुम हमारे साथ बद्र की लड़ाई में नहीं थे, तायदाद या सामान की ज़्यादती की वजह से हमारी मदद नहीं हुई थी।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को यह ख़त लिखा—

'सलामुन अलैक, अम्मा बादु आपका ख़त मेरे पास आया, जिसमें आपने इस बात का ज़िक्र किया है कि रूमियों ने बहुत ज़्यादा फ़ौज जमा कर ली। अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हमारी मदद सामान की या फ़ौज की ज़्यादती की वजह से नहीं की थी। हम हुज़ूर सल्ल० के साथ लड़ाइयों में जाया करते थे और हमारे पास सिर्फ़ दो घोड़े होते थे और ऊंट भी ज़रूरत से कम होते थे। इसलिए उन पर बारी-बारी सवार होते थे और उहुद की लड़ाई के दिन हम हुज़ूर सल्ल० के साथ थे और हमारे पास सिर्फ़ एक घोड़ा था जिस पर हुज़ूर सल्ल० सवार थे। इस बे-सर व सामानी में अल्लाह मुख़ालिफ़ों के ख़िलाफ़ हमारी मदद करते थे।'

---

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 244, इसाबा, भाग 1, पृ० 190

'ऐ अम्र ! आपको मालूम होना चाहिए कि अल्लाह की सबसे ज़्यादा मानने वाला वह है जो गुनाहों और मआसी (नाफ़रमानियों) से सबसे ज़्यादा नफ़रत करने वाला है, इसलिए आप अल्लाह की इताअत करो और अपने साथियों को उसकी इताअत का हुक्म करो।'[1]

हज़रत उबादा और हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक आदमी ने हज़रत ख़ालिद रज़ि० से कहा, रूमी कितने ज़्यादा हैं और मुसलमान कितने कम हैं। हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने फ़रमाया, रूमी कितने कम हैं और मुसलमान कितने ज़्यादा हैं, लश्कर का कम-ज़्यादा होना आदमियों की तायदाद से नहीं होता, बल्कि जिस लश्कर को अल्लाह की मदद हासिल हो, वह ज़्यादा है और जो अल्लाह की मदद से महरूम हो, वह कम है।

(मैं इराक़ से शाम तक का सफ़र बड़ी तेज़ी से करके आया हूं, इसलिए) ज़्यादा चलने की वजह से मेरे घोड़े अशक़र के खुर घिस गए हैं और उसके खुरों में दर्द हो रहा है। काश, कि मेरा घोड़ा ठीक होता और इन रूमियों की तायदाद दोगुनी होती, तो फिर मज़ा आता।[2]

सहाबा किराम रज़ि० के ग़ालिब आने के बारे में दुश्मनों ने क्या कहा?

हज़रत ज़ोहरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब अल्लाह ने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़लीफ़ा बना दिया और अरब के बहुत-से लोग मुर्तद होकर इस्लाम से ख़ारिज हो गए तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० मुक़ाबले के लिए मदीना से चले। जब बक़ीअ की तरफ़ एक पानी पर पहुंचे तो उन्हें मदीना के बारे में ख़तरा महसूस हुआ, इसलिए हज़रत अबूबक्र रज़ि० मदीना वापस आ गए (और दूसरों को भेजने का इरादा किया) और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद बिन मुग़ीरह सैफ़ुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु को अमीर मुक़र्रर फ़रमाकर लोगों को उनके साथ जाने

1. कंज़, भाग 3, पृ० 135, हैसमी, भाग 6, पृ० 117
2. तारीख़े इब्ने जरीर, भाग 2, पृ० 594,

की दावत दी और हज़रत ख़ालिद रज़ि० को हुक्म दिया कि वह क़बीला मुज़र के इलाक़े में जाएं और वहां जितने लोग मुर्तद हो गए हैं उनसे लड़ाई लड़ें। फिर वहां से यमामा जाकर मुसैलमा कज़्ज़ाब से लड़ाई लड़ें।

चुनांचे हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु वहां से लश्कर लेकर चले और पहले तुलैहा कज़्ज़ाब असदी से जंग की। अल्लाह ने तुलैहा को हराया। उऐना बिन हिस्न बिन हुज़ैफ़ा फ़ज़ारी भी तुलैहा कज़्ज़ाब के पीछे लग गया था। जब तुलैहा ने देखा कि उसके साथियों को बहुत ज़्यादा हार हो रही है, तो उसने कहा, तुम्हारा नास हो, तुम लोगों को हार क्यों हो जाती है?

इस पर उसके साथी ने कहा, आपको बताता हूं कि हमें हार क्यों हो जाती है? इसकी वजह यह है कि हममें से हर आदमी यह चाहता है कि उसका साथी उससे पहले मर जाए और हमारा मुक़ाबला ऐसे लोगों से है जिनमें से हर आदमी अपने साथी से पहले मरना चाहता है। तुलैहा लड़ने में सख़्त हमलावर था, चुनांचे उसने हज़रत उकाशा बिन मिह्सन और हज़रत इब्ने अक़रम रज़ियल्लाहु अन्हुमा को शहीद किया। जब तुलैहा ने हक़ को ग़ालिब आते देखा तो पहले तो पैदल भागा, फिर बाद में इस्लाम ले आया और उमरे का एहराम बांधा, इसके बाद बाक़ी हदीस ज़िक्र की।[1]

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मुसलमानों का एक लश्कर रवाना हुआ। मैं उनका अमीर था। चलते-चलते हम स्कन्दरिया पहुंचे तो वहां के बादशाह ने पैग़ाम भेजा कि अपना एक आदमी मेरे पास भेजो, ताकि मैं उससे बात करूं और वह मुझसे बात करे। मैंने साथियों से कहा, मैं ख़ुद उसके पास जाऊंगा। चुनांचे मैं तर्जुमान लेकर गया। उसके पास भी तर्जुमान था। हमारे लिए दो मिंबर रखे गए।

1. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 175,

उसने पूछा, आप लोग कौन हैं? मैंने कहा, हम अरब हैं। हमारे यहां कांटेदार पेड़ और कीकर होते हैं। (खेतियां और बाग़ नहीं होते) अलबत्ता हमारे यहां बैतुल्लाह है। हमारा इलाक़ा सबसे ज़्यादा तंग था और हमारे माली हालात सबसे ज़्यादा सख़्त थे, हम मुरदार खा लेते थे और एक दूसरे का माल लूट लेते थे, ग़रज़ यह कि हमारी ज़िंदगी सबसे ज़्यादा बुरी थी।

फिर एक आदमी हमारे भीतर ज़ाहिर हुआ जो हमारा सबसे बड़ा सरदार नहीं था और हममें सबसे ज़्यादा मालदार नहीं था। उसने कहा, मैं अल्लाह का रसूल हूं, वह हमें उन कामों का हुक्म करते, जिन्हें हम जानते नहीं थे और जिन कामों पर हम और हमारे बाप-दादा पड़े हुए थे, उनसे हमें रोकते थे। हमने उनकी मुख़ालफ़त की और उन्हें झुठलाया और उनकी बात को रद्द कर दिया, यहां तक कि उनके पास दूसरी क़ौम के लोग आए और उन्होंने कहा, हम आपकी तस्दीक़ करते हैं। आप पर ईमान लाते हैं, आपकी पैरवी करते हैं और जो आपसे लड़ाई करेगा, हम उससे लड़ेंगे।

वह हमें छोड़कर उनके पास चले गए। हमने वहां जाकर उनसे कई बार लड़ाई लड़ी। उन्होंने हमारे बहुत से आदमी क़त्ल कर दिए और हम पर ग़ालिब आ गए। फिर वह आस-पास के अरबों की तरफ़ मुवतज्जह हुए और लड़ाई करके उन पर भी ग़ालिब आ गए। अब जो लोग मेरे पीछे हैं, अगर उनको आप लोगों की इस ऐश व इशरत का पता चल जाए, तो वे सब आकर इस ऐश व इशरत में आपके शरीक हो जाएं।

यह बात सुनकर वह बादशाह हंसा और उसने कहा, आपके रसूल ने सच कहा है और हमारे पास हमारे रसूल भी वही चीज़ें लाते रहे हैं, जो आपके रसूल आपके पास लाए हैं। हम उन रसूलों की बातों पर अमल करते रहे।

फिर हममें कुछ बादशाह ज़ाहिर हुए जो इन नबियों की बातों को छोड़कर हमें अपनी ख़्वाहिशों पर चलाते। अगर आप लोग अपने नबी

की बात को मज़बूती से पकड़े रहेंगे तो जो भी आप लोगों से लड़ेगा, आप लोग उस पर ज़रूर ग़ालिब आ जाएंगे और जो भी आप लोगों की तरफ़ हाथ बढ़ाएगा आप लोग ज़रूर उस पर हावी हो जाएंगे।

फिर जब आप लोग इस तरह करेंगे, जिस तरह हमने किया और नबियों की बात छोड़कर हमारे बादशाहों की तरह ख़्वाहिशों पर अमल करेंगे तो फिर आप और हम बराबर हो जाएंगे यानी आप लोग भी हमारी तरह अल्लाह की मदद से महरूम हो जाएंगे। फिर न आपकी तायदाद हमसे ज़्यादा होगी और न ताक़त। (इसलिए हम आप पर ग़ालिब आएंगे)

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने कभी किसी ऐसे आदमी से बात नहीं की जो उससे ज़्यादा नसीहत करने वाला हो।[1]

हज़रत अबू इस्हाक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा के सामने दुश्मन मुक़ाबले के वक़्त इतनी देर भी नहीं ठहर पाता था जितनी देर ऊंटनी के दो बार दूध निकालने में होती है। (ऊंटनी के दूध निकालने की शक्ल यह होती है कि उसका दूध ऊपर चढ़ा हुआ होता है, थनों में कम होता है। पहले ऊंटनी के बच्चे को दूध पीने के लिए लाया जाता है, वह दूध पीता है तो दूध नीचे उतर आता है। बच्चे को हटाकर आदमी दूध निकालने लग जाता है। ऊंटनी अपना दूध ऊपर चढ़ा लेती है, इसलिए दोबारा बच्चा लाया जाता है। वह पीने लगता है, तो दूध फिर नीचे उतर आता है तो बच्चे को हटाकर फिर दूध दोबारा निकाला जाता है, इस तरह एक वक़्त में ऊंटनी का सारा दूध दो बार निकालने से हासिल होता है तो इन दो बार दूध निकालने का वक़्फ़ा कुछ मिनटों का होता है।)

(दूसरी शक्ल यह हो सकती है कि जब ऊंटनी का दूध निकालते हैं, उस वक़्त वह खड़ी होती है, तो निकालने वाला एक टांग पर खड़ा होता है और दूसरी टांग उठाकर उसका पांव पहली टांग के घुटने पर रख

1. हैसमी, भाग 6, पृ॰ 218, 238,

लेता है और इस दूसरी टांग के घुटने और रान पर बरतन रखकर उसमें दूध निकालता है। इस तरह निकालने वाला थक जाता है और एक टांग पर खड़े होने की वजह से गिरने वाला हो जाता है तो वह बरतन नीचे रखकर और दोनों टांगें सीधी ज़मीन पर टिकाकर कुछ देर आराम करता है, फिर इसी तरह एक टांग पर खड़े होकर दोबारा दूध निकालता है तो यह आराम का बीच का वक़्फ़ा मुराद है। यह वक़्फ़ा भी कुछ मिनटों का होता है।)

रूम का बादशाह हिरक़्ल अन्ताकिया में ठहरा हुआ था। जब रूमी फ़ौज मुसलमानों से हार कर वहां पहुंची तो उसने फ़ौज से कहा, तुम्हारा नास हो, तुम मुझे उन लोगों के बारे में बताओ जो तुमसे लड़ रहे हैं, क्या ये तुम्हारे जैसे इंसान नहीं हैं? उन सब जनरलों ने कहा, हैं। हिरक़्ल ने कहा, तुम्हारी तायदाद ज़्यादा है या उनकी? उन्होंने कहा, नहीं। हर लड़ाई में हमारी तायदाद उनसे कई गुना ज़्यादा थी। हिरक़्ल ने कहा, फिर क्या बात है, तुम हार क्यों जाते हो?

इस पर एक बूढ़े जनरल ने कहा, इसकी वजह यह है कि वे लोग रात को इबादत करते हैं, दिन को रोज़ा रखते हैं और समझौते को पूरा करते हैं और नेकी का हुक्म करते हैं, बुराई से रोकते हैं और आपस में इंसाफ़ करते हैं।

इसके ख़िलाफ़ हम लोग शराब पीते हैं, ज़िना करते हैं, हर हराम काम करते हैं, समझौता तोड़ देते हैं, एक दूसरे का माल छीन लेते हैं और ज़ुल्म करते हैं और उनका भी हुक्म करते हैं जिनसे अल्लाह नाराज़ होता है और जिन कामों से अल्लाह राज़ी होता है, उनसे हम रोकते हैं और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं। हिरक़्ल ने कहा, तुमने मुझसे सच्ची बात कही है।[1]

यह्या बिन यह्या ग़स्सानी रहमतुल्लाहि अलैहि अपनी क़ौम के दो आदमियों से नक़ल करते हैं कि जब मुसलमानों ने जार्डन के किनारे पर

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 15, इब्ने असाकिर, भाग 1, पृ० 143,

पड़ाव डाला, तो हमने आपस में कहा, दमिश्क़ का बहुत जल्द घेराव होने वाला है, इसलिए हम दमिश्क़ गए, ताकि घेराव शुरू होने से पहले ही वहां से ख़रीद व फ़रोख़्त कर लें।

हम अभी दमिश्क़ में थे कि दमिश्क़ के कमांडर ने हमारे पास बुलाने के लिए क़ासिद भेजा। हम उसके पास गए। उसने कहा, क्या तुम दोनों अरब हो? हमने कहा, जी हां। उसने कहा, क्या तुम्हारा मज़हब ईसाइयत है? हमने कहा, जी हां। उसने कहा, तुम दोनों में से एक जाकर इन मुसलमानों के हालात मालूम करके आए, दूसरा उसके सामान के पास ठहर जाए।

चुनांचे हम दोनों में से एक गया और मुसलमानों में कुछ देर ठहर कर वापस आया और उसने कहा, मैं ऐसे लोगों के पास से आ रहा हूं जो दुबले-पतले हैं, उम्दा और असील घोड़ों पर सवार होते हैं, रात के इबादतगुज़ार और दिन के शहसवार हैं, तीर में पर लगाते हैं, उसे तराशते हैं, नेज़े को बिल्कुल सीधा करते हैं, वे इतनी ऊंची आवाज़ से क़ुरआन पढ़ते हैं और अल्लाह का ज़िक्र करते हैं कि अगर आप उनमें बैठकर अपने हमनशीं से कोई बात करें, तो वह शोर की वजह से आपकी बात को समझ नहीं सकेगा।

इस पर दमिश्क़ के कमांडर ने अपने साथियों की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहा, मुसलमानों के इन हालात के मालूम हो जाने के बाद अब तुम इनका मुक़ाबला नहीं कर सकते।[1]

हज़रत उर्वः रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं (जब यरमूक की लड़ाई के दिन) दोनों फ़ौजें एक दूसरे के क़रीब हो गईं, तो रूमी जनरल क़ुबुक़ लार ने जासूसी के लिए मुसलमानों में एक अरबी आदमी भेजा और उससे कहा, उन लोगों में दाख़िल हो जाओ और उनमें एक दिन और एक रात रहो और फिर आकर मुझे उनके हालात बताओ।

हज़रत उर्वः कहते हैं कि मुझे बताया गया कि यह अरबी आदमी

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 15, इब्ने असाकिर, भाग 1, पृ० 143,

क़बीला क़ुज़ाआ की शाख़ तज़ीद बिन हैदान में से था। जिसे इब्ने हुज़ारिफ़ कहा जाता था। चुनांचे वह मुसलमानों में दाखिल हो गया और अरबी होने की वजह से अजनबी मालूम नहीं हो रहा था और एक दिन एक रात उनमें रहा। फिर क़ुबुक़ लार के पास वापस आया।

कुबुक़ लार ने उससे पूछा, तुमने क्या देखा? उसने कहा, ये लोग रात को इबादत करते हैं और दिन घोड़ों की पीठों पर गुज़ारते हैं। अगर इनके बादशाह का बेटा चोरी करे तो उसका भी हाथ काट देते हैं और अगर ज़िना करे तो उसे संगसार कर देते हैं। ये अपने समाज में हक़ को क़ायम करते हैं।

इस पर क़ुबुक़ लार ने उससे कहा, अगर तुमने मुझसे कहा है, तो फिर ज़मीन के अन्दर दफ़न हो जाना धरती पर रहकर उनका मुक़ाबला करने से बेहतर है और मैं दिल से चाहता हूं कि अल्लाह मेरी इतनी बात मान ले कि मैदान में मुझे और इन मुसलमानों को रहने दे, ख़ुद मैदान में न आए, न मेरी मदद करे, न इनकी। (क्योंकि इस तरह मैं जीत जाऊंगा, इसलिए कि इस तरह जीत-हार का फ़ैसला तायदाद और लड़ाई के सामान पर होगा और वह मेरे पास इनसे बहुत ज़्यादा है।)[1]

हज़रत इब्ने रुफ़ैल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब रुस्तम ने नजफ़ में पड़ाव डाला तो उसने नजफ़ से एक जासूस मुसलमानों में भेजा जो क़ादसिया जाकर मुसलमानों में ऐसे घुस गया जैसे कि उन्हीं में से गया था और अब वापस आया है।

उसने देखा कि मुसलमान हर नमाज़ के वक़्त मिस्वाक करते हैं, फिर सब मिलकर नमाज़ पढ़ते हैं और नमाज़ के बाद सब अपनी क़ियामगाहों को चले जाते हैं। फिर उस जासूस ने वापस आकर सारे हालात रुस्तम और उसके साथियों को बताए और रुस्तम ने भी उससे बहुत से सवाल किए, यहां तक कि यह भी पूछा कि ये लोग क्या खाते हैं? उस जासूस ने कहा, मैंने मुसलमानों में सिर्फ़ एक रात गुज़ारी है, अल्लाह की क़सम!

1. तारीख़े इब्ने जरीर, भाग 2, पृ० 610,

मैंने तो उनमें से किसी को कुछ भी खाते नहीं देखा। अलबत्ता मैंने उन्हें शाम को सोते वक़्त और सुबह से कुछ देर पहले कुछ लकड़ियां चूसते हुए देखा है।

रुस्तम वहां से चलकर जब हिस्न और अतीक़ नामी जगहों के बीच पहुंचा, तो वह सुबह की नमाज़ का वक़्त था। हज़रत साद रज़ि० के मुअज़्ज़िन ने सुबह की अज़ान दी। रुस्तम ने देखा कि अज़ान सुनते ही सारे मुसलमान हरकत में आ गए। रुस्तम ने हुक्म दिया कि फ़ारस वालों में एलान कर दिया जाए कि सब सवार हो जाएं।

साथियों ने पूछा, क्यों? उसने कहा, क्या तुम देख नहीं रहे हो कि एलान होते ही तुम्हारा दुश्मन तुम पर हमला करने के लिए हरकत में आ गया है? उसके उस जासूस ने कहा, ये लोग तो उस वक़्त नमाज़ के लिए हरकत में आए हैं। इस पर रुस्तम ने फ़ारसी ज़ुबान में कहा, जिसका तर्जुमा यह है कि आज सुबह मैंने एक ग़ैबी आवाज़ सुनी और वह उमर रज़ि० ही की आवाज़ थी जो कि कुत्तों से यानी अरबों से बातें करता है और उन्हें दानाई और समझ सिखाता है।

जब रुस्तम के लश्कर ने नदी पार कर लिया, तो वह आकर ठहर गया। इतने में हज़रत साद रज़ि० के मुअज़्ज़िन ने नमाज़ के लिए अज़ान दी। फिर हज़रत साद रज़ि० ने नमाज़ पढ़ाई और रुस्तम ने कहा, उमर रज़ि० ने मेरा जिगर खा लिया।[1]

क़बीला बनू क़ुशैर के एक साहब बयान करते हैं, जब (शाहे रूम) हिरक़्ल क़ुस्तुन्तुन्या (जिसे आजकल इस्तंबोल कहा जाता है) की तरफ़ रवाना हुआ, तो एक रूमी आदमी पीछे से आकर उसे मिला, जोकि मुसलमानों के यहां क़ैद था और वहां से छूटकर आया था। हिरक़्ल ने उससे कहा, मुझे इन मुसलमान लोगों के बारे में कुछ बताओ। उसने कहा, मैं इनके हालात इस तरह तफ़्सील से बताता हूं कि गोया आप उनको देख रहे हैं—

1. तारीख़ इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 45

वे दिन के शहसवार और रात के इबादतगुज़ार हैं और अपने मातहत ज़िम्मियों के खाने की चीज़ क़ीमत देकर ही लेते हैं। जब भी किसी के पास जाते हैं, तो सलाम ज़रूर करते हैं और जो उनसे लड़े तो जब तक उसका काम तमाम न कर लें, मुक़ाबले पर डटे रहते हैं। हिरक़्ल ने कहा, अगर तुमने मुझसे सच कहा है, तो वे लोग मेरे इन क़दमों के नीचे की ज़मीन के ज़रूर मालिक बनेंगे।[1]

(ईरान के बादशाह) यज़्द जर्द ने मदद हासिल करने के लिए चीन के बादशाह को ख़त लिखा। चीन के बादशाह ने ख़त लाने वाले क़ासिद से कहा, मुझे मालूम है कि जब किसी बादशाह पर दुश्मन ग़ालिब आ जाए और वह दूसरे बादशाह से मदद तलब करे, तो उसका हक़ है कि वह दूसरा बादशाह उसकी मदद करे, लेकिन पहले तुम मुझे इन लोगों की सिफ़ात और हालात बताओ जिन्होंने तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दिया है।

क्योंकि मैं देख रहा हूं कि तुमने उनकी तायदाद की कमी और अपनी तायदाद की कसरत का ज़िक्र किया है और मैंने भी सुना है कि तुम लोगों की तायदाद बहुत ज़्यादा है, इसके बावजूद ये थोड़ी तायदाद वाले तुम पर ग़ालिब आ रहे हैं। इसकी वजह सिर्फ़ यह है कि तुममें कुछ ख़राबियां हैं और उनमें कुछ अच्छाइयां हैं।

क़ासिद (दूत) कहता है, मैंने चीन के बादशाह से कहा, आप उनके बारे में मुझसे जो चाहें पूछें। उसने कहा, क्या वे अह्द व पैमान को पूरा करते हैं? मैंने कहा, जी हां। उसने कहा, वे लोग जंग करने से पहले तुमसे क्या कहते हैं? मैंने कहा, वे हमें तीन बातों में से एक बात की दावत देते हैं—

1. पहले तो वे हमें अपने दीन की दावत देते हैं। अगर हम उसे क़ुबूल कर लें, तो वे हमारे साथ वह सुलूक करते हैं जो वह अपने साथ करते हैं,

1. तारीख इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 99

2. फिर वे हमें इस बात की दावत देते हैं कि हम जिज़या अदा करें, वे हमारी हिफ़ाज़त करेंगे।

3. हम अगर इन दोनों बातों को न मानें, तो फिर वे हमसे लड़ाई लड़ेंगे। फिर उसने पूछा, वे अपने अमीरों की इताअत करने में कैसे हैं? मैंने कहा, वे अपने अमीर की सबसे ज़्यादा इताअत करने वाले लोग हैं। फिर उसने पूछा, वे किन चीज़ों को हलाल समझते हैं और किन चीज़ों को हराम? मैंने उसे मुसलमानों के हलाल व हराम की तफ़्सील बताई। उसने पूछा, क्या वे हलाल को हराम और हराम को हलाल कर लेते हैं? मैंने कहा, नहीं। उसने कहा, जब तक ये लोग हलाल को हराम और हराम को हलाल नहीं करेंगे उस वक़्त तक ये हलाक नहीं होंगे।

पूछा, मुझे उनके लिबास के बारे में बताओ। मैंने उनके लिबास की तफ़्सील बताई। फिर उसने कहा, उनकी सवारियों के बारे में बताओ। मैंने कहा, उनकी सवारियां अरबी घोड़े हैं। फिर मैंने अरबी घोड़ों की सिफ़तों का ज़िक्र किया। उसने कहा, ये तो बहुत अच्छे क़िले हैं। फिर मैंने कहा, उनकी सवारी ऊंट भी हैं और ऊंट के बैठने और बोझ उठाकर खड़े होने का सारा अन्दाज़ बताया। उसने कहा, ये तमाम बातें लम्बी गरदन वाले जानवर में हुआ करती हैं। (शायद चीन के बादशाह ने ऊंट न देखा होगा)

फिर उसने यज़्द जर्द के जवाब में यह लिखा कि मेरे पास इतनी बड़ी फ़ौज है कि अगर मैं उसे आपकी मदद के लिए भेजूं तो उसका पहला हिस्सा ईरान के शहर मर्व में होगा और आख़िरी चीन में, लेकिन मैं इसे नहीं भेजूंगा और इसे न भेजने की वजह यह नहीं है कि आपका जो मुझ पर हक़ है, मैं उसे नहीं जानता, बल्कि इसकी वजह यह है कि आपका जिन लोगों से मुक़ाबला है, आपके क़ासिद ने उनके तमाम हालात मुझे तफ़्सील से बताए हैं।

ये ऐसे ज़बरदस्त लोग हैं कि अगर ये पहाड़ों से टकरा जाएं तो पहाड़ टुकड़े-टुकड़े हो जाएं। अगर ये अपनी सिफ़तों पर बाक़ी रहे और

यों ही बढ़ते रहे, तो एक दिन मुझे भी मेरी सलतनत से हटा देंगे, इसलिए आप इनसे सुलह कर लें और सुलह-सफ़ाई के साथ उनके साथ रहने पर राज़ी हो जाएं और वे जब तक आपको न छेड़ें, आप उन्हें कुछ न कहें।[1]

हम इस किताब में जो कुछ लिखना चाहते हैं, यह उसका आख़िरी मज़्मून है।

فَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي هَدَانَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللّٰهُ

'तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें इस ख़ैर की हिदायत नसीब फ़रमाई, अगर अल्लाह हमें हिदायत न देते तो हम ख़ुद से हिदायत न पा सकते।'

اَللّٰهُمَّ لَوْلَا أَنْتَ مَا اهْتَدَيْنَا وَلَا تَصَدَّقْنَا وَلَا صَلَّيْنَا
فَأَنْزِلَنْ سَكِينَةً عَلَيْنَا إِذَا أَرَادُوا فِتْنَةً أَبَيْنَا

'ऐ अल्लाह! अगर तेरी मेहरबानी शामिले हाल न होती, तो हमें हिदायत न मिलती और न हम सदक़ा देते और न नमाज़ पढ़ते, तू हम पर इत्मीनान और सुकून नाज़िल फ़रमा। जब मुश्रिक लोग हमसे फ़िले वाला काम कराना चाहते हैं तो हम इंकार कर देते हैं।'

आज बुध के दिन मुहर्रमुल हराम के महीने में हिजरते नबवी अला ज़ालि-क अल्फ़ अल्फ़ि सलातिंव-व तहीयतिन के तेरह सौ उनासी वाले साल में अब्दे ज़ईफ़ मुहम्मद यूसुफ़ सल्लल्लाहु तआला अनित-तलत्तुफ़ि वत्तअस्सुफ़ के हाथों किताब 'हयातुस्सहाबा' मुकम्मल हुई।

अल्लाह की तौफ़ीक़ से किताब के तीसरे हिस्से का हिन्दी तर्जुमा आज 31 जुलाई 2000 ई० को मुकम्मल हुआ।

अहमद नदीम नदवी
नई दिल्ली-25

1. तारीखे इब्ने, भाग 3, पृ० 249,